सम्पूर्ण दो जिल्दों में

बृहद् विशाल सामुद्रिक विज्ञान

जिल्द — दूसरी

इस दूसरी जिल्द में निम्नलिखित पांच ग्रंथ जोड़े गए हैं

	मूल्य
1—स्वास्थ्य रेखा (LINE OF HEALTH) पृष्ठ 184 चित्र 357	7.50
2—प्रभाव रेखाएं (LINES OF INFLUENCE) पृष्ठ 356 चित्र 757	10 50
3—हस्त चिह्न विचार (विज्ञान) THE SIGNS OF MOUNTS पृष्ठ 368 चित्र 755	10 50
4—शरीर लक्षण विज्ञान (तिल-मस्सा, लहसुन विचार) (MOLES WARTS & BIRTH MARKS) पृष्ठ 432 चित्र 312	10 50
5—स्त्री सामुद्रिक (PALMISTRY OF THE WOMEN) पृष्ठ 384 चित्र 415	15 00
इस दूसरी जिल्द में कुल पृष्ठ 1724 : चित्र 2596	54 00

सम्पूर्ण दो जिल्दों में

बृहद् विशाल सामुद्रिक विज्ञान

(दूसरी जिल्द)

हस्त रेखा तथा शरीर लक्षण विज्ञान पर ससार का सबसे बड़ा ग्रन्थ जो भारत के प्राचीन ग्रन्थो तथा योरुप, अमेरिका के विद्वानो के मतो का सार लेकर नवीन शैली मे लिखा गया है। हस्त रेखा व शरीर लक्षण विज्ञान पर इससे ज्यादा प्रामाणिक और कोई ग्रन्थ नहीं है। इस जिल्द मे १७२४ पृष्ठ २५६६ चित्र हैं।

लेखक
राजेश दीक्षित

देहाती पुस्तक भण्डार
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

●

प्रकाशक

देहाती पुस्तक भण्डार
चावडी बाजार, दिल्ली-६

●

●

मूल्य

स्वदेश मे चव्वन रुपये

विदेश मे सात पौंड

●

मुद्रक

टैक्निकल प्रिंटिंग प्रेस,
सोनीपत (निकट दिल्ली)

स्वास्थ्य-रेखा

(तथा अन्य रेखाएं)

'बृहद् सामुद्रिक विज्ञान' खण्ड—८

स्वास्थ्य-रेखा

[इस पुस्तक मे हाथ पर पाई जाने वाली स्वास्थ्य-रेखा (Line of Health) तथा मगल-रेखा, शुक्र-मुद्रिका, शनि-मुद्रिका, वृहस्पति-मुद्रिका, यात्रा-रेखा, भ्रातृ-रेखा, अतीन्द्रिय-ज्ञान-रेखा, कामुकता की रेखा, प्रवृत्ति रेखा, छाया-पथ-रेखा, भ्रमण-रेखा, परधन प्राप्ति-रेखा, रवि-मुद्रिका एव बुध-मुद्रा की स्थिति और प्रभाव का प्राच्य तथा पाश्चात्य मतानुसार विस्तृत वर्णन किया गया है]

लेखक
राजेश दीक्षित

देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली ६

"सर्वाङ्गुली मूल भवोर्द्ध रेखा पर्वण्यधस्तान्मुनिभिः प्रशस्ता।
अरोग्य नाम स्तुति लाभ पुत्रान् धत्ते कनिष्ठादि भव क्रमेण॥"

●

प्रकाशक
देहाती पुस्तक भण्डार
चावडी बाजार, दिल्ली-६

●

मूल्य
स्वदेश मे : साढ़े सात रुपये
विदेश मे : पन्द्रह शिलिंग

●

मुद्रक
टेक्निकल प्रिंटिंग प्रेस
सोनीपत (निकट दिल्ली)

दो शब्द

'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के प्रस्तुत खण्ड मे हथेली पर पाई जाने वाली स्वास्थ्य-रेखा (Line of Health) की स्थिति और उसके प्रभाव का विस्तृत विवेचन प्रस्तुत किया गया है। यह रेखा मणिवन्ध के समीप अथवा हथेली के मध्य भाग से आरम्भ होकर बुध-क्षेत्र पर पहुचती है।

स्वास्थ्य-रेखा के अतिरिक्त मङ्गल-रेखा, शुक्र-मुद्रिका, शनि-मुद्रिका, वृहस्पति-मुद्रिका, यात्रा-रेखा, भ्रातृ-रेखा, अतीन्द्रिय-ज्ञान-रेखा, कामुकता की रेखा, प्रवृत्ति-रेखा, छाया-पथ-रेखा, भ्रमण-रेखा, ज्ञान-रेखा, पर-धन-प्राप्ति रेखा, रवि-मुद्रा तथा बुध-मुद्रा की विभिन्न स्थितियो एवं उनके प्रभाव का विस्तृत वर्णन भी इसी खण्ड मे कर दिया गया है।

'स्वास्थ्य-रेखा' सहित उक्त सभी क्षुद्र तथा विशिष्ट रेखाए प्रत्येक जातक के हाथ पर नही पाई जाती। स्वास्थ्य-रेखा ५० प्रतिशत हाथों पर पाई जाती है तथा अन्य क्षुद्र तथा विशिष्ट रेखाए हजारो-लाखो मे से किसी एक या दो व्यक्ति के हाथो पर ही देखने को मिलती हैं।

स्वास्थ्य-रेखा तथा उक्त क्षुद्र एवं विशिष्ट रेखाओ के सम्बन्ध में प्राच्य (भारतीय) ग्रथो मे कुछ विशेष विवरण नही मिलता। प्राच्यमतानुसार 'स्वास्थ्य-रेखा' को ऊर्ध्व रेखाओ मे से एक तथा धन-रेखा की सहायिका-रेखा माना जाता है, परन्तु लगता है कि पाश्चात्य विद्वानो ने इस रेखा की स्थिति एवं प्रभाव के सम्बन्ध मे अधिक खोज की है। उनके मतानुसार इस रेखा द्वारा मुख्य रूप से जातक के स्वास्थ्य तथा गौण रूप से व्यवसाय आदि के सम्बन्ध मे विचार करना चाहिए। ऐसी ही वात क्षुद्र तथा विशिष्ट रेखाओ के विषय मे भी है। प्राच्य ग्रथों मे इन छोटी रेखाओ के सम्बन्ध मे भी अधिक विवरण उपलब्ध नही होता, परन्तु पाश्चात्य विद्वानो ने इनकी स्थिति एव प्रभाव के सम्बन्ध मे वहुत विस्तारपूर्वक लिखा है।

प्रस्तुत पुस्तक मे 'स्वास्थ्य-रेखा' तथा अन्य छोटी रेखाओ के सम्बन्ध मे प्राच्य तथा पाश्चात्य—दोनो ही मतो को प्रस्तुत किया गया है। प्राच्य मत की भिन्नता का उल्लेख यथा स्थान हुआ है, परन्तु जिन रेखाओ के सम्बन्ध मे प्राच्य ग्रथो मे कोई विवरण ही नही मिलता, उनके विषय मे केवल पाश्चात्य विद्वानो के मत को ही प्रस्तुत किया गया है। विषय को अधिकाधिक बोध्य-गम्य बनाने के हेतु प्रत्येक रेखा की प्रत्येक स्थिति से सम्बन्धित चित्र भी सर्वत्र दिये गए हैं।

प्रस्तुत पुस्तक के लिए सामग्री-चयन मे हमे जिन प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानो की कृतियो से सहायता प्राप्त हुई है, उन सभी के प्रति हम हृदय से आभारी हैं। हमे आशा है कि सुधी-पाठक 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के प्रस्तुत खण्ड को भी स्नेह पूर्वक अपनाएगे।

महोली की पौर
मथुरा

—राजेश दीक्षित

विषय-सूची

आगरा-निवासी
साहित्य-सङ्गीत-कला-सस्नेही
अपने परम आत्मीय
श्री ताराचन्द शिवहरे
[लाइफ मैजिस्ट्रेट]
को
सस्नेह समर्पित

स्वास्थ्य-रेखा

(प्राच्य-पद्धति)

मणिबंध अथवा हथेली के मध्य भाग से आरभ होकर कनिष्ठा उंगली के मूल तक जो रेखा जाती है, उसकी गणना प्राच्य-मतानुसार ऊर्ध्व रेखाओ मे की गई है तथा उसके प्राचीन आचार्यो ने लिखा है—

"कनिष्ठायां मूल रेखा प्रतिष्ठावान् महायश. ।।"

अर्थात् कनिष्ठा उगली के मूल की ओर जाने वाली रेखा मान-प्रतिष्ठा तथा यश को बढाने वाली होती है ।

इस रेखा द्वारा स्वास्थ्य-सम्बन्धी विचार करने के सम्बन्ध मे निम्न-लिखित श्लोक पाया जाता है—

"सर्वाङ्ग लीमूल भवोर्द्ध रेखा, पर्वण्यधस्तान्मुनिभि. प्रशस्ता ।
आरोग्य नामस्तुति लाभपुत्रान् धत्ते कनिष्ठादि भव क्रमेण ।।"

अर्थात् कनिष्ठा उगली के मूल मे जो लम्बी रेखा हो, उससे स्वास्थ्य-सम्बन्धी विचार किया जाता है । यह रेखा सुन्दर, स्पष्ट, दीर्घ तथा बलवान् हो तो जातक का स्वास्थ्य अच्छा रहता है और उसे यश, लाभ तथा पुत्रादि की प्राप्ति होती है ।

प्राच्य ग्रन्थो मे इस रेखा की मुख्यत भाग्य-रेखाओ के अन्तगत ही गणना की गई है तथा इसके फलाफल का अलग से विशेष वर्णन नही मिलता । जबकि पाश्चात्य विद्वानों ने इस रेखा की स्थिति एवं प्रभाव के सम्बन्ध मे अत्यन्त विस्तारपूर्वक प्रकाश डाला है । पाश्चात्य विद्वानो के मत का अगले प्रकरण मे विस्तृत उल्लेख किया गया है ।
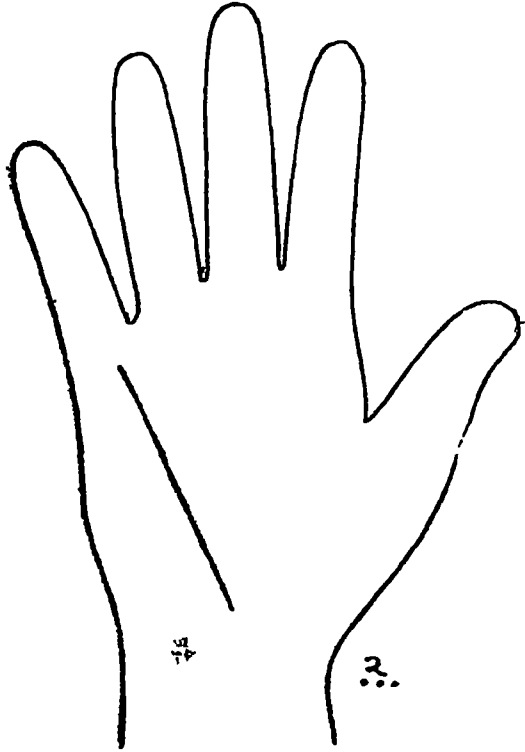
[हथेली पर स्वास्थ्य-रेखा की स्थिति]

स्वास्थ्य-रेखा
(पाश्चात्य-पद्धति)

चन्द्र-क्षेत्र अथवा हथेली के नीचे किसी भी भाग से आरभ होकर जो रेखा कनिष्ठा उगली के नीचे बुध-क्षेत्र पर आकर समाप्त होती है, उसे स्वास्थ्य–रेखा अथवा आरोग्य-रेखा (Line of health) कहा जाता है। पाश्चात्य विद्वान् इस रेखा को 'हिपेटिक'(Hepatic) नाम से भी पुकारते हैं। चूंकि यह रेखा बुध-क्षेत्र की ओर जाती है, अत. कुछ विद्वान् इस रेखा को 'बुध-रेखा' के नाम से भी पुकारते है।

जैसाकि पिछले प्रकरण मे बताया जा चुका है, प्राच्य (भारतीय) विद्वान् इस रेखा की गणना ऊर्ध्व रेखाओ मे करते है और इसके द्वारा जातक के व्यवसाय, सौभाग्य, आर्थिक स्थिति एव सम्मान आदि के सम्बन्ध मे विचार करते है।

यह रेखा प्रत्येक व्यक्ति के हाथ मे पाई जाती हो—ऐसी बात नहीं है। पचास प्रतिशत हाथो मे यह रेखा बिल्कुल ही देखने को नही मिलती। सामुद्रिक-शास्त्रियो के मतानुसार इस रेखा का हाथ पर बिल्कुल न होना एक शुभ लक्षण ही है। जिन व्यक्तियो के हाथ मे यह रेखा बिल्कुल ही नही होती; वे अपेक्षाकृत अधिक स्वस्थ रहते है, परन्तु जिन व्यक्तियो के हाथ मे यह रेखा हो, तो रेखा का स्पष्ट, सुन्दर, सबल तथा निर्दोष होना आवश्यक है। दोष पूर्ण रेखा जातक के स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव डालती है, अत दोष पूर्ण रेखा होने के स्थान पर इस रेखा का बिल्कुल ही न होना प्रत्येक स्थिति मे अच्छा है।

पाश्चात्य हस्तरेखाविद् इस रेखा द्वारा जातक के स्वास्थ्य, बीमारी तथा क्रियाशीलता आदि का विचार करते है । प्रेम मे सफलता; व्यवसाय मे सफलता, भाग्योदय, प्रसिद्धि, यश-सम्मान आदि सभी बातें व्यक्ति के अच्छे स्वास्थ्य पर ही निर्भर करती हैं, अत स्वास्थ्य-रेखा की स्थिति के द्वारा इन सब बातो पर भी विचार किया जाता है। स्वास्थ्य-रेखा के खराब होने पर जातक को विभिन्न प्रकार के रोगों का शिकार होना पडता है, जिसका प्रभाव उसकी मानसिक, शारीरिक, आर्थिक तथा अन्य स्थितियो पर भी पडना स्वाभाविक है ।

अन्य मुख्य-रेखाओ की भाति स्वास्थ्य-रेखा जन्म समय से ही जातक के हाथ मे रहती हो—ऐसी बात नही है। यह रेखा आयु के किसी भी भाग मे जातक के हाथ मे प्रकट हो सकती है । जिस प्रकार यह रेखा किसी भी समय प्रकट हो सकती है, उसी प्रकार यह रेखा हथेली मे किस भाग से आरम्भ होगी—यह भी कोई निश्चित नियम नही है । यह रेखा मणिबध, चन्द्र-क्षेत्र, भाग्य-रेखा, जीवन-रेखा अथवा अन्य किसी भी स्थान से आरभ हो सकती है, परन्तु इसका अन्तिम सिरा बुध-क्षेत्र की ओर ही उन्मुख रहता है । अर्थात् जो रेखा बुध-क्षेत्र की ओर मु ह किये हुए हो अथवा बुध-क्षेत्र पर जाकर समाप्त होती हो, केवल उसी को 'स्वास्थ्य-रेखा' अथवा 'बुध-रेखा' माना जाता है। किसी सूर्य, शनि अथवा किसो अन्य ग्रह-क्षेत्र की ओर जाने वाली रेखा को स्वास्थ्य-रेखा नही माना जा सकता ।

स्वास्थ्य-रेखा की स्थिति एव प्रभाव के सम्बन्ध में पाश्चात्य-सामुद्रिक-शास्त्रियो के मत का सार निम्नानुसार समझना चाहिए—

स्वास्थ्य-रेखा का प्रारम्भ

स्वास्थ्य-रेखा का प्रारभ प्राय निम्नलिखित स्थानो से होता है—

(१) चन्द्र-क्षेत्र से,

(२) जीवन-रेखा से,

(३) भाग्य-रेखा से,

(४) हथेली के मध्य भाग से ।

उपर्युक्त स्थानों से स्वास्थ्य-रेखा का प्रारभ होने पर उसका क्या प्रभाव होता है, इसे सक्षेप मे निम्नानुसार समझना चाहिए—

चित्र ३—यदि स्वास्थ्य-रेखा चन्द्र-क्षेत्र से आरभ होकर बुध-क्षेत्र पर समाप्त हो तो इसे रेखा की स्वाभाविक तथा श्रेष्ठ स्थिति समझना चाहिए। ऐसी रेखा यदि सरल, स्पष्ट, गहरी तथा निर्दोष हो तो उस जातक का स्वास्थ्य अच्छा रहता है।
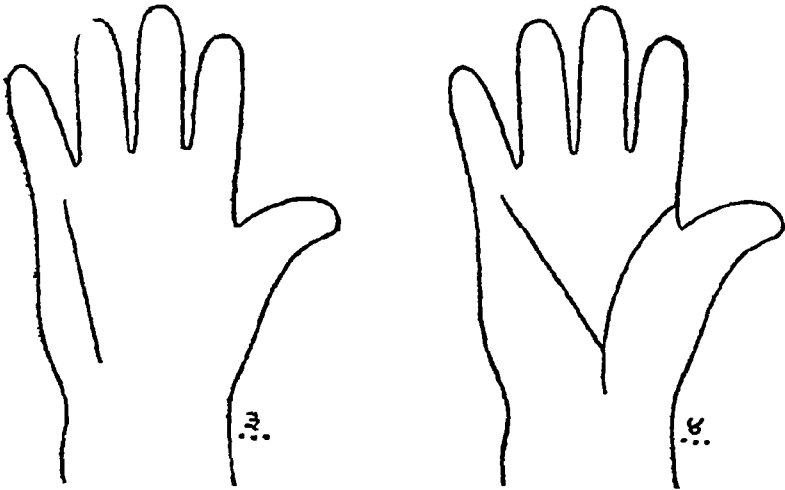
चित्र ४—यदि स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा से आरभ होकर बुध-क्षेत्र पर समाप्त होती हो तो ऐसी रेखा वाला जातक पूर्ण स्वस्थ नही रह पाता, उसे कोई-न-काई बीमारी लगी ही रहतो है।

चित्र ५—यदि स्वास्थ्य-रेखा भाग्य-रेखा से आरभ होकर बुध-क्षेत्र पर समाप्त होती हो और यह स्पष्ट, सुन्दर तथा निर्दोष हो तो ऐसी

रेखा जातक को व्यवसाय मे उन्नति देती है—ऐसा कुछ विद्वानों का कहना है।
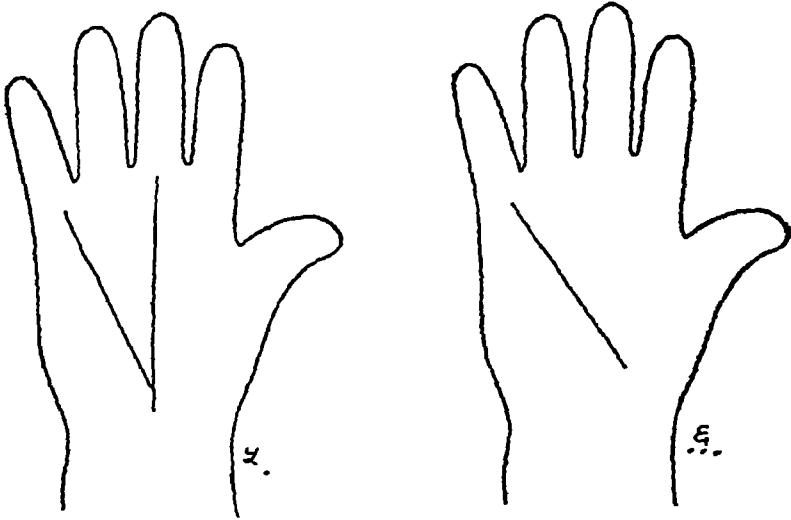
चित्र ६—यदि स्वास्थ्य-रेखा हथेली के मध्य भाग से आरभ होकर बुध-क्षेत्र पर समाप्त हो और वह निर्दोष, स्पष्ट तथा गहरी हो तो ऐसी रेखा भी जातक के लिए शुभ-फल-कारक कही गई है।

स्वास्थ्य-रेखा की विभिन्न स्थितियां और उनका जातक पर प्रभाव

स्वास्थ्य-रेखा की विभिन्न स्थितियो, अन्य रेखाओ के साथ उसका मेल तथा दूसरे लक्षणो का जातक के स्वास्थ्य तथा जीवन पर क्या प्रभाव पडता है—इस सम्बन्ध मे पाश्चात्य विद्वानो के मत का सचित्र विवरण चित्रानुसार समझना चाहिए—

चित्र ७—यदि स्वास्थ्य-रेखा मणिबध अथवा जीवन-रेखा से अलग हथेली के मध्य भाग से निकलकर बुध-क्षेत्र तक अखण्ड, स्पष्ट, निर्दोष,

तथा गहरी गई हो तो ऐसी रेखा वाले जातक का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। स्वास्थ्य अच्छा होने से जातक मे स्मरण शक्ति एवं बुद्धिमत्ता आदि श्रेष्ठ गुण भी पाये जाते हैं।
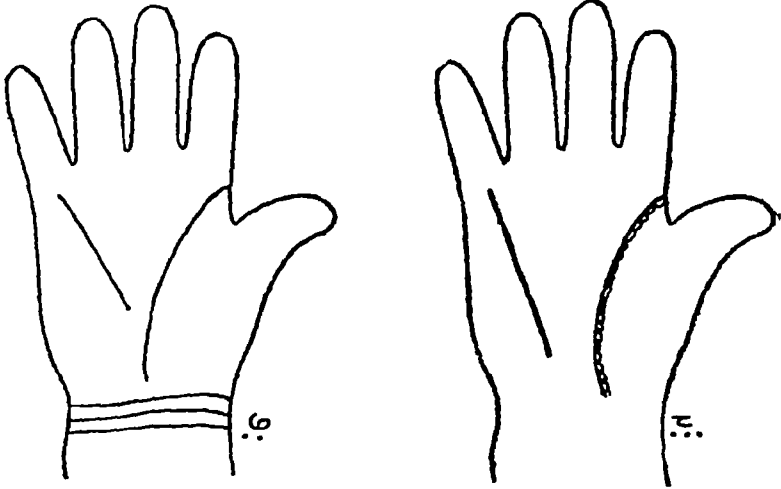
चित्र ८—यदि जीवन-रेखा पतली अथवा शृंखलाकार हो अथवा उसमे कोई दोष हो, परन्तु स्वास्थ्य-रेखा पुष्ट तथा निर्दोष दिखाई दे तो अच्छी स्वास्थ्य-रेखा जोवन-रेखा के दोष को कम करके जातक को श्रेष्ठ स्वास्थ्य एव जीवनीय-शक्ति प्रदान करतो है।

चित्र ९—यदि मस्तक-रेखा अच्छो तथा निर्दोष हो परन्तु स्वास्थ्य-रेखा सदोष अथवा निर्बल हो तो मस्तक-रेखा के शुभफल मे कमी आ जाती है, जिसके कारण जातक की दिमागी शक्ति दुर्बल रहती है।

चित्र १०—यदि हृदय-रेखा दोष युक्त हो परन्तु स्वास्थ्य-रेखा अच्छी हो तो वह हृदय-रेखा की त्रुटियो को कुछ अशो में कम कर देती है। अच्छी स्वास्थ्य-रेखा वाला जातक हृदय-रेखा के दुर्बल होने पर भी हृदय जन्य रोगो से प्राय: सुरक्षित बना रहता है।
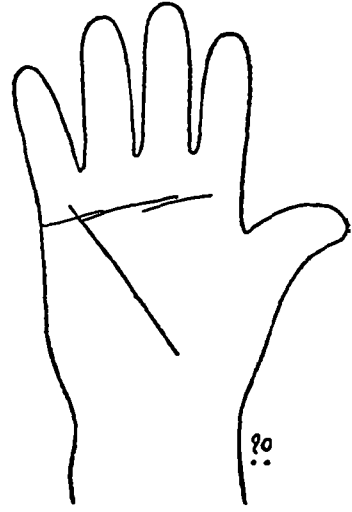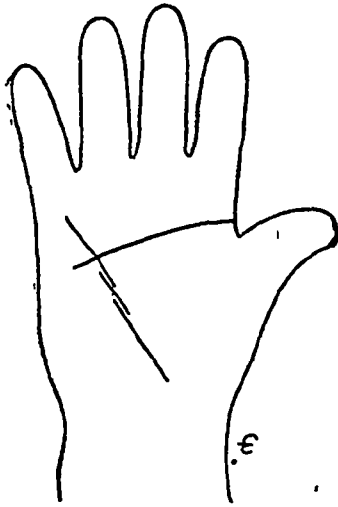
चित्र ११—यदि स्वास्थ्य-रेखा चन्द्र-क्षेत्र से आरंभ हुई हो और वह निर्दोष अर्थात् पुष्ट हो तथा जीवन-रेखा से आरभ होने वाली कोई शाखा स्वास्थ्य-रेखा से मिल रही हो तो उसे अशुभ लक्षण नही समझना चाहिए। स्वास्थ्य-रेखा का जीवन-रेखा से आरभ होना अशुभ

होता है, परन्तु जीवन-रेखा मे से किसी शाखा का निकलकर निर्दोष स्वास्थ्य-रेखा मे मिल जाना अशुभ-फल-कारक नही होता।

चित्र १२—यदि जीवन-रेखा, मस्तक-रेखा, हृदय-रेखा तथा मगल-रेखा के साथ स्वास्थ्य-रेखा भी अच्छी हो अर्थात् ये सभी रेखाए पुष्ट तथा निर्दोष हो तो ऐसा जातक पूर्ण स्वस्थ वना रहता है और उसे किसी गभीर वीमारी का शिकार नही वनना पड़ता।

चित्र १३—गहरी स्वास्थ्य-रेखा अच्छी होती है इसके विपरीत स्वास्थ्य-रेखा यदि पतली हो परन्तु उसमे किसी प्रकार का दोप न हो तो उसे भी अच्छे स्वास्थ्य को निशानी माना जाता है, परन्तु दोषयुक्त पतली स्वास्थ्य-रेखा जातक के लिए अस्वास्थ्यकर रहती है।
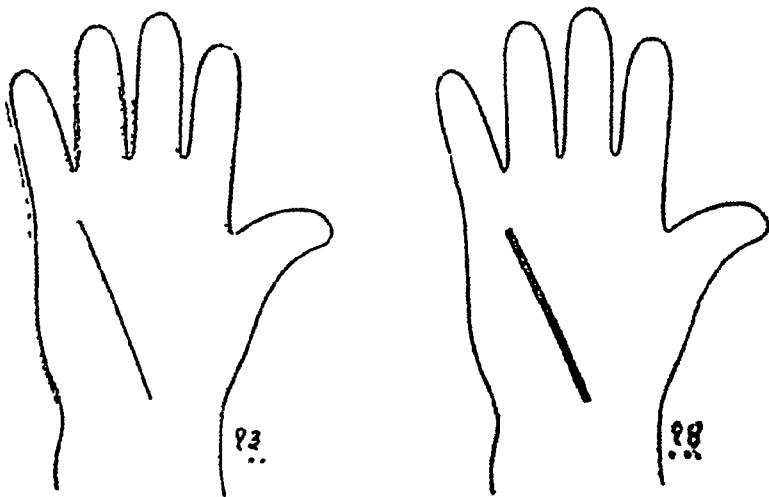
चित्र १४—यदि स्वास्थ्य-रेखा सामान्य से अधिक चौड़ी तथा उथली हो तो जातक का जिगर कमजोर होता है और उसे तनिक-सी वदपरहेजी से ही मन्दाग्नि, अपच, जलन, सिर दर्द तथा अन्य उदर-विकारो का शिकार वनना पडता है।

ऐसी रेखा वाले व्यक्ति का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है; जिसके कारण उसे जीवन के अन्य क्षेत्रो मे भी असफलताओ एव निराशाओं का सामना करना पड़ता है।

चित्र १५—यदि स्वास्थ्य-रेखा शृ खलाकार हो तो उससे जातक को जिगर तथा पेट सम्बधी रोग होते है। ऐसी रेखा वाले व्यक्ति उदर विकारो से ग्रस्त तो रहते ही है, उनकी दिमागी-शक्ति भी कमजोर हो जाती है। वे मिजाज के शक्की तथा स्वभाव के चिड़चिडे हो जाते है, जिसके कारण उन्हे व्यावसायिक क्षेत्र मे भी निराशा एवं असफलताए घेरे रहती है।
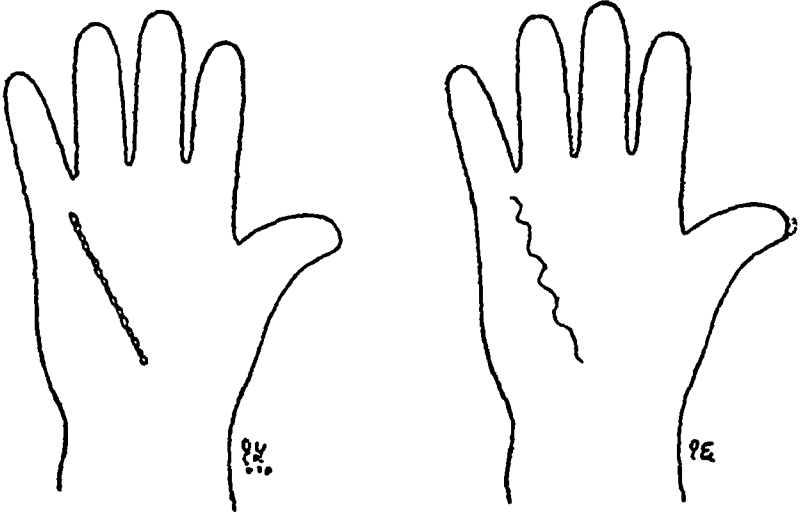
चित्र १६—यदि स्वास्थ्य-रेखा लहरदार हो तो ऐसी रेखा वाला जातक जिगर सम्बन्धी बीमारियो से निरन्तर घिरा रहता है। पित्त ज्वर मलेरिया, मदाग्नि, हृदय-रोग, आतो मे सूजन, वात-विकार तथा गठिया आदि अनेक बीमारिया इस प्रकार की रेखा वाले जातक को हो जाया करती है।

चित्र १७—यदि स्वास्थ्य-रेखा कही निर्दोष और कही दोषयुक्त (टूटी-फूटी आदि) दिखाई दे तो जिस वयोमान मे रेखा दोषयुक्त हो उस आयु मे जातक के स्वास्थ्य मे खराबी रहेगी—ऐसा समझना चाहिए। जिस वयोमान मे रेखा निर्दोष होगी, उस आयु मे जातक का स्वास्थ्य अच्छा रहेगा। यह रेखा प्राय चन्द्र-क्षेत्र से आरम्भ होकर बुध-क्षेत्र पर समाप्त होती है, अत इसी के अनुसार इस रेखा द्वारा आयुमान निर्धारित कर लेना चाहिए।
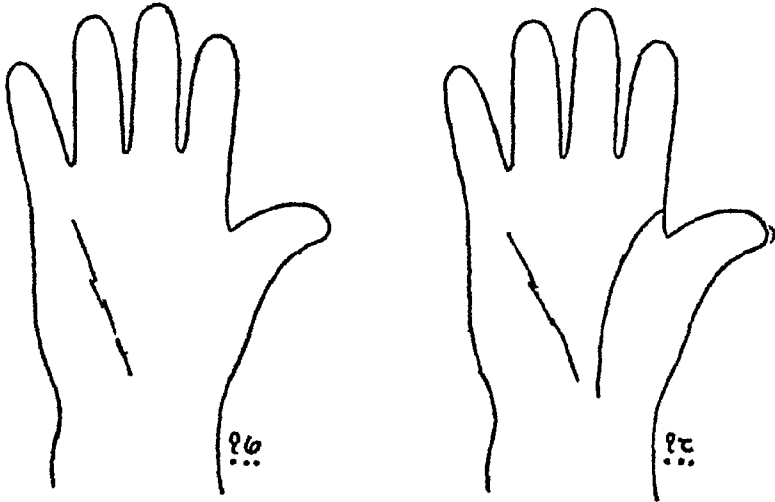
चित्र १८—जिस वयोमान मे स्वास्थ्य-रेखा दोषयुक्त हो, उसी वयोमान मे यदि जीवन-रेखा निर्दोष तथा पुष्ट दिखाई दे तो जातक के स्वास्थ्य को अधिक हानि नही पहुंचेगी—ऐसा समझना चाहिए, परन्तु यदि एक ही वयोमान मे ये दोनो रेखाए दोषपूर्ण दिखाई दें, तो जातक को किसी कठिन बीमारी तथा दुर्बलता का शिकार बनना पडेगा—यह निश्चित है।

चित्र १९—यदि सम्पूर्ण स्वास्थ्य-रेखा शृखलाकार न होकर किसी एक या दो स्थानो मे शृंखलाकार हो, शेष मे निर्दोष दिखाई देती हो

तो जिस वयोमान मे स्वास्थ्य-रेखा शृंखलाकार होगी, केवल उसी वयोमान मे जातक को किसी बीमारी का सामना करना पडेगा—यह समझना चाहिए ।
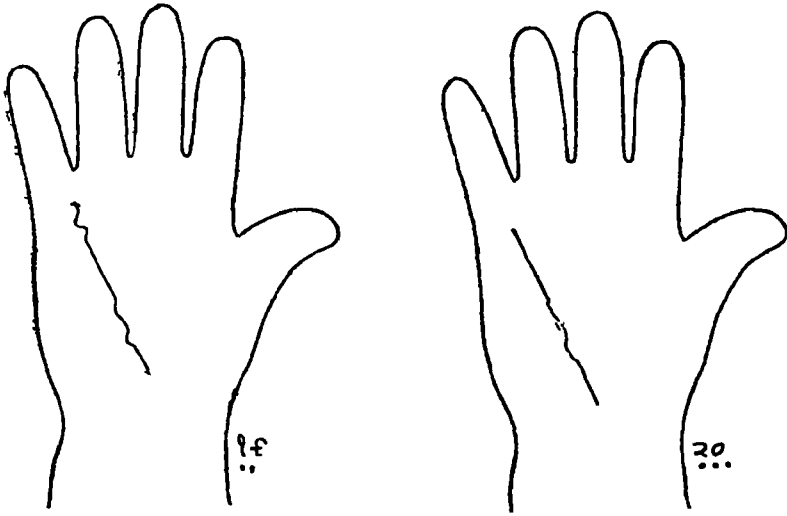
चित्र २०—उक्त प्रकार से ही यदि सम्पूर्ण स्वास्थ्य-रेखा लहरदार न होकर किसी एक मे ही लहरदार हो, शेष मे निर्दोष दिखाई देती हो तो जिस वयोमान मे स्वास्थ्य-रेखा लहरदार होगी, केवल उसी वयोमान मे जातक को किसी बीमारी का शिकार होना पड़ेगा—ऐसा समझना चाहिए ।

चित्र २१—जिस वयोमान मे स्वास्थ्य-रेखा शृखलाकार हो, उसी वयोमान मे यदि मस्तक-रेखा पर कोई द्वीप-चिन्ह आदि हो तो यह समझना चाहिए कि उस आयु मे जातक को किसी मस्तिष्क सम्बधी बीमारी, उन्माद, पागलपन, स्मरण शक्ति की कमी आदि का शिकार होना पड़ेगा ।

चित्र २२—जिस वयोमान मे स्वास्थ्य-रेखा शृखलाकार हो, उसी वयोमान मे यदि हृदय-रेखा पर कोई द्वीप-चिन्ह आदि हो तो यह

समझना चाहिए कि उस आयु में जातक को हृदय सम्बंधी किसी बीमारी हृदय-दुर्बल्य, मूर्च्छा, रक्तचाप आदि का शिकार होना पड़ेगा।
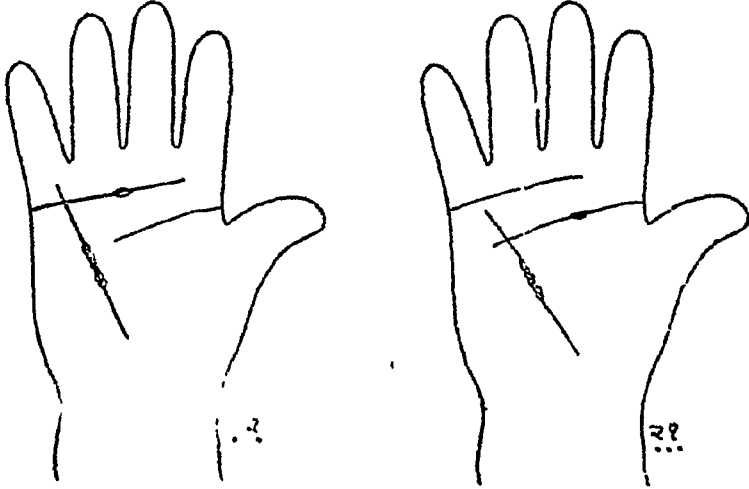
चित्र २३—यदि स्वास्थ्य-रेखा प्रारम्भ मे अन्त मे अथवा बीच में कहीं पर लुप्त सी दिखाई दे, शेष सर्वत्र निर्दोष स्थिति में स्पष्ट हो तो
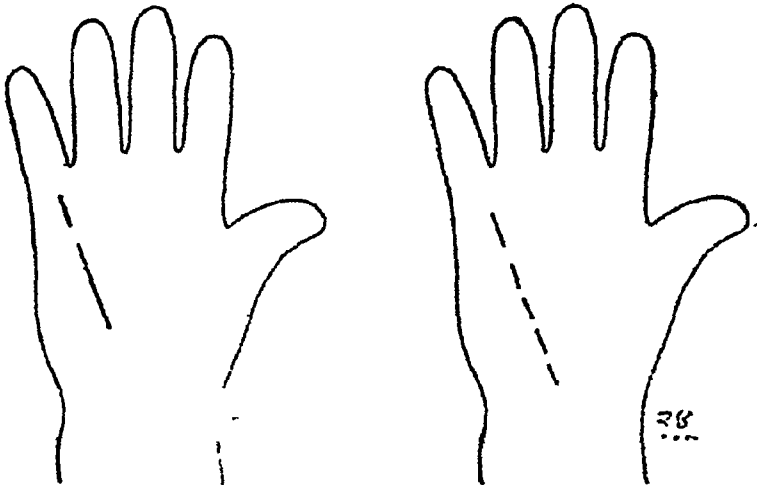
जिस वयोमान मे स्वास्थ्य-रेखा लुप्त दिखाई दे, उस वयोमान मे जातक अस्वस्थ रहेगा तथा यदि आगे चलकर स्वास्थ्य-रेखा पुन स्पप्ट हो गई हो तो उस वयोमान मे जातक का स्वास्थ्य ठीक हो जायगा—यह समझना चाहिए।

चित्र २४—यदि स्वास्थ्य-रेखा बीच-बीच मे टूटी हुई दिखाई दे तो जिस वयोमान में रेखा टूटी हुई हो, उस वयोमान मे उतने ही समय तक जातक अस्वस्थ रहेगा—ऐसा समझना चाहिए। यदि रेखा कई स्थानो पर टूटी हुई हो तो जातक को उदर विकार परेशान करते रहेगे—यह मानना चाहिए।
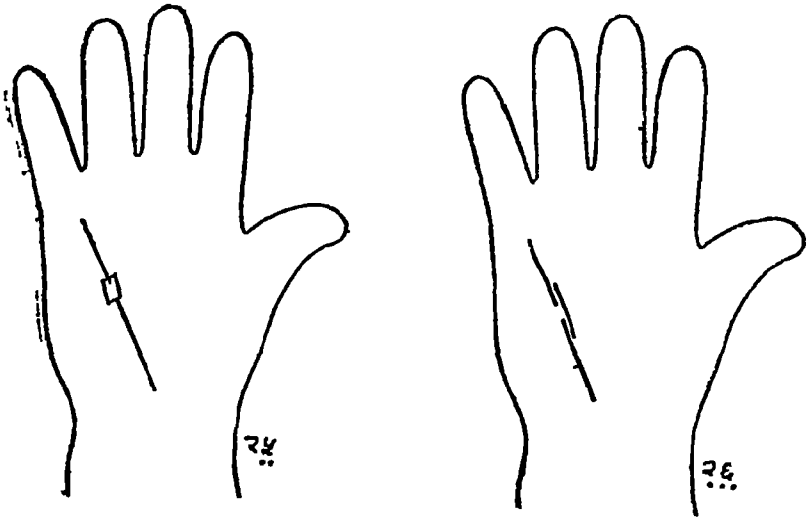
चित्र २५—यदि स्वास्थ्य-रेखा बीच मे किसी स्थान पर टूटी हुई हो, परन्तु वहीं उस टूटे हुए स्थान को घेरे हुए कोई चतुष्कोण-चिह्न भी हो तो वह टूटी हुई रेखा के अशुभ फल से जातक की रक्षा करता है। ऐसे चिन्ह वाले जातक की अत्यधिक बीमार पड जाने पर भी प्राण-रक्षा हो जाती है।

चित्र २६—स्वास्थ्य-रेखा जिस स्थान पर टूटी हुई हो, उसी स्थान पर उस टूटे हुए भाग को ढकने वाली कोई समानान्तर छोटी-सी सहायक रेखा भी हो तो वह भी टूटी हुई स्वास्थ्य-रेखा के दोष को कम कर देती है। ऐसी सहायक रेखा वाले जातक को कोई गहरी बीमारी हो जाने पर भी प्राणान्त होने का भय नही रहता।

चित्र २७—यदि स्वास्थ्य-रेखा को कोई आडी रेखा काट रही हो तो जिस वयोमान मे आडी-रेखा ने काटा हो, उस आयु मे जातक को कोई बीमारी होगी—यह समझना चाहिए। यदि काटने वाली रेखा अधिक गहरी तथा मोटी हो तो कोई कठिन बीमारी होगी—यह समझना चाहिए और यदि काटने वाली रेखा पतली तथा सामान्य हो तो वह साधारण बीमारी की सूचक होती है।
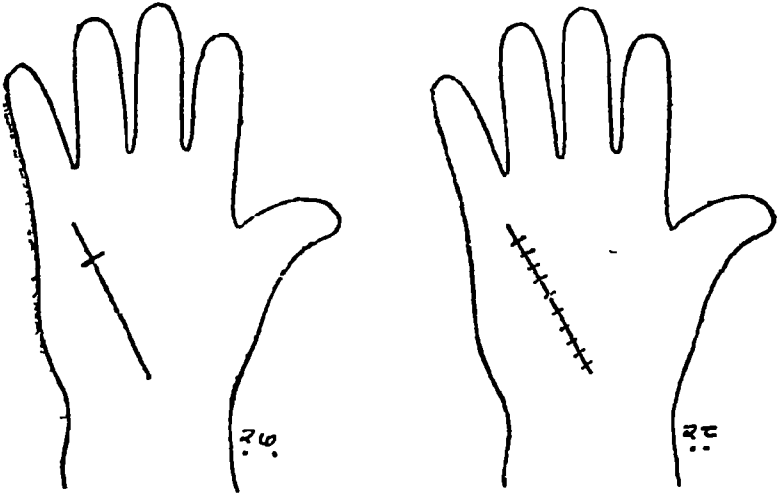
चित्र २८—यदि स्वास्थ्य-रेखा को अनेक छोटी-छोटी महीन रेखाएं काट रही हो तो जातक को जिगर की खराबी के कारण पित्त के प्रकोप तथा सिर दर्द का शिकार होना पड़ता है और उसे छोटे-मोटे रोग लगे ही रहते है।

चित्र २९—यदि स्वास्थ्य-रेखा छोटी-मोटी आडी रेखाओ से नसेनी (सीढी) की भाति बनी हुई दिखाई दे, तो ऐसी रेखा वाले जातक को तीव्र उदर-रोग, आतो की सूजन, मदाग्नि आदि का निरन्तर शिकार बने रहना पडता है। ऐसी रेखा जातक को जीवन भर अस्वस्थ बनाये रखती है।
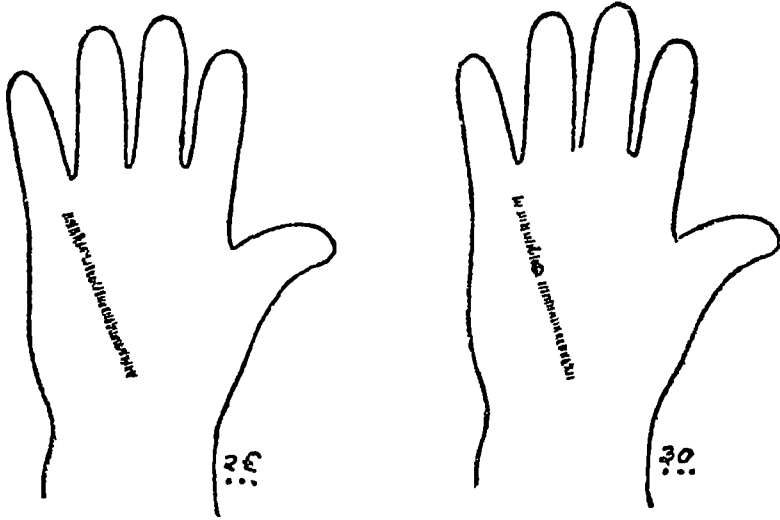
चित्र ३०—यदि स्वास्थ्य-रेखा पूर्वोक्त प्रकार की हो अर्थात् नसेनी की भाति छोटी-छोटी रेखाओ से मिलकर बनी हो और उस पर कहीं कोई रगीन बिन्दु-चिह्न भी हो तो जिस वयोमान मे वह बिन्दु-चिह्न होगा, उस आयु मे जातक को कोई कठिन बीमारी होगी—ऐसा समझना चाहिए। यदि बिन्दु-चिह्न हल्का हो तो बीमारी साधारण होती है। लाल रग का बिन्दु-चिह्न तीव्र ज्वर का लक्षण है तथा श्वेत रग का बिन्दु-चिह्न लम्बे समय तक बीमार रखने का प्रतीक होता है।

चित्र ३१—यदि स्वास्थ्य-रेखा पर कोई बिन्दु-चिह्न हो और उस बिन्दु-चिह्न से आरम्भ होकर कोई शाखा-रेखा किसी ग्रह-क्षेत्र पर जाती हो और उस स्थान पर किसी दोष-चिह्न से मिलती हो तो जिस

ग्रह-क्षेत्र पर तथा जिस प्रकार के दोष-चिन्ह से उस शाखा-रेखा का योग हो, उसी के अनुरूप जातक के स्वास्थ्य तथा रोग के सम्बंध में विचार करना चाहिए।
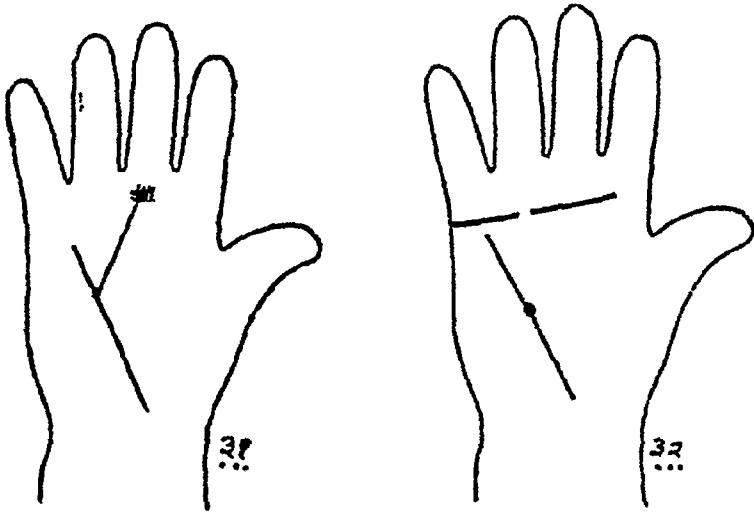
चित्र ३२—यदि स्वास्थ्य-रेखा पर कोई बिन्दु-चिन्ह हो और हृदय-रेखा सूर्य-क्षेत्र के नीचे टूटी हुई हो अथवा उस पर द्वीप आदि का कोई चिन्ह हो तो उस वयोमान में पाचन-शक्ति की खराबी से जातक को हृदय-रोग का शिकार होना पड़ता है। यदि सूर्य-क्षेत्र पर लाल चिन्ह भी हो तो इस लक्षण की पुष्टि हो जायगी।

चित्र ३३—यदि स्वास्थ्य-रेखा पर बिन्दु-चिन्ह हो और मंगल के प्रथम क्षेत्र पर जाल-चिन्ह अथवा अर्गला-चिन्ह हो तो ऐसी रेखा वाले जातक को आंतों की सूजन आदि बीमारियां होती हैं।

स्वास्थ्य-रेखा पर बिन्दु-चिन्ह वाला जातक पक्का चोर होता है—ऐसा भी कुछ आचार्यों का कथन है।

चित्र ३४—यदि स्वास्थ्य-रेखा पर विन्दु-चिन्ह हो और चन्द्र-क्षेत्र के ऊपरी तृतीयांश मे जाल-चिन्ह हो तो भी जातक को आंतों की सूजन आदि रोगो का शिकार होना पड़ता है।

चित्र ३५—यदि स्वास्थ्य-रेखा पर बिन्दु-चिन्ह हो और चन्द्र-क्षेत्र के मध्य तृतीयांश मे जाल-चिन्ह अथवा अन्य कोई दोष-चिन्ह हो तो जातक को वात-सम्बधी विकार का सामना करना पड़ता है।
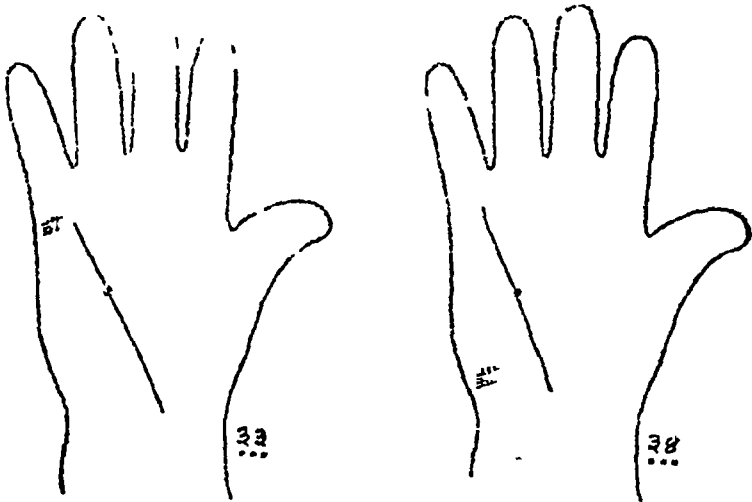
चित्र ३६—यदि स्वास्थ्य-रेखा पर बिन्दु-चिन्ह हो और स्वास्थ्य-रेखा बुध-क्षेत्र पर पहुंचकर दोषयुक्त अथवा खण्डित हो जाय तो जिस वयोमान मे बिन्दु-चिन्ह होगा; उसी वयोमान मे जातक को पित्तज्वर अथवा पित्त जनित किसी बीमारी का शिकार होना पड़ता है।

चित्र ३७—यदि स्वास्थ्य-रेखा पर विन्दु-चिन्ह हो और शनि-क्षेत्र पर कोई जाल-चिन्ह अथवा अन्य दोष-चिन्ह हो तो जातक को वायु-विकार अथवा पित्त ज्वर का शिकार बनना पड़ता है।

चित्र ३८—यदि स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप-चिन्ह हो तो जिस वयोमान में द्वीप-चिन्ह होगा, उस आयु मे जातक को किसी बामारी का सामना
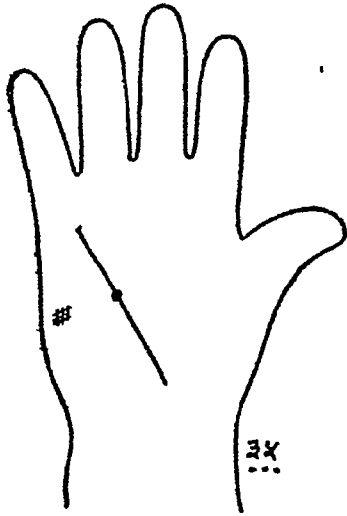
करना पड़ेगा, जिसके कारण उसके स्वास्थ्य को हानि पहुंचेगी—ऐसा समझना चाहिए। स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप-चिन्ह का होना पेट सम्बंधी बीमारी, आंतों की सूजन, जिगर की खराबी आदि को प्रकट करता है।

चित्र ३९—यदि स्वास्थ्य-रेखा पर दो-तीन अथवा अधिक द्वीप-चिन्ह दिखाई दें तो ऐसी रेखा वाले जातक को कण्ठ अथवा फेफड़े सम्बन्धी कोई रोग होता है। यदि स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप-चिन्ह के साथ ही बृहस्पति के क्षेत्र पर भी द्वीप-चिन्ह दिखाई दे तो इस लक्षण की पुष्टि होती है। स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप-चिन्ह होने से जातक को ऑपरेशन कराने की आवश्यकता भी पड़ सकती है।
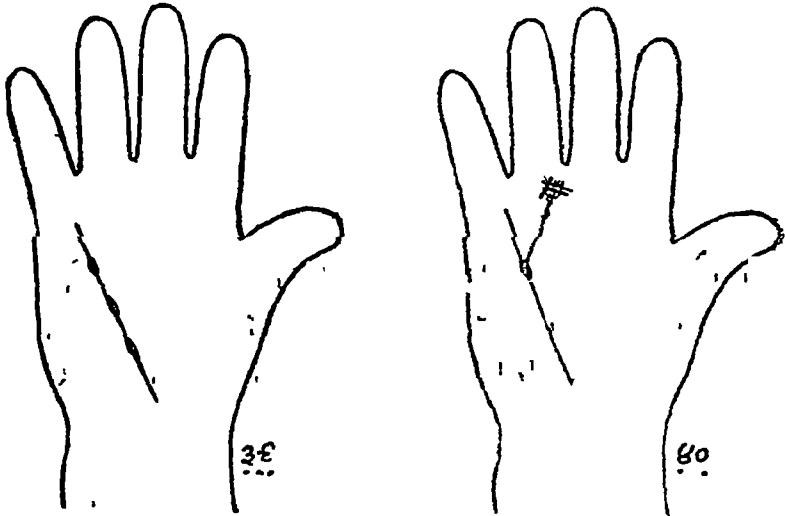
चित्र ४०—यदि स्वास्थ्य-रेखा पर कोई द्वीप-चिन्ह हो और उस द्वीप-चिन्ह से कोई शाखा-रेखा निकलकर किसी ग्रह-क्षेत्र पर जा रही हो और वहा किसी अशुभ-चिन्ह से योग कर रही हो तो जातक को उस ग्रह-क्षेत्र से सम्बन्धित किसी बीमारी का शिकार होना पड़ेगा— ऐसा समझना चाहिए।

चित्र ४१—जिस स्थान पर स्वास्थ्य-रेखा मस्तक-रेखा को काटती हो, उस स्थान पर अथवा उसके समीप ही कोई नक्षत्र-चिन्ह हो तो ऐसे चिन्ह वाली स्त्री जातक को गर्भाशय सम्बन्धी रोगो का शिकार होना पड़ता है और उन्हे प्रसव के समय बहुत कष्ट होता है। यदि

चन्द्र-क्षेत्र के नीचे के एक तिहाई भाग में जाल-चिन्ह भी हो तो इस लक्षण की पुष्टि होती है।
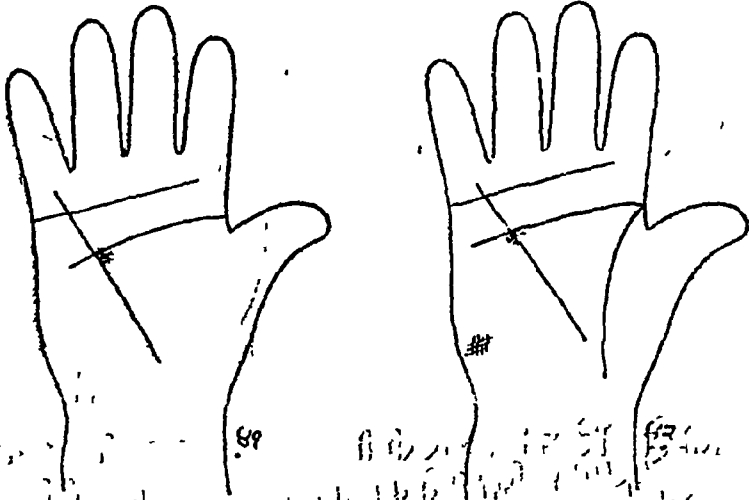
चित्र ४२—स्वास्थ्य-रेखा जिस स्थान पर मस्तक-रेखा को काटती हो, उस स्थान पर नक्षत्र-चिन्ह हो, जीवन-रेखा का घुमाव कम हो, शुक्र-क्षेत्र छोटा हो तथा चन्द्र-क्षेत्र के निचले तृतीयांश में जाल-चिन्ह भी हो तो ऐसी रेखाओ तथा लक्षण वाली स्त्री के सन्ताने प्रायः नहीं होती और उसे गर्भाशय सम्बन्धी अन्य रोगों का शिकार भी होना पड़ता है।

चित्र ४३—यदि स्वास्थ्य-रेखा आरी के दांतों के समान आकार वाली तथा लहराती हुई हो तो ऐसे जातक को पित्त विकार तथा फेफड़े सम्बन्धी रोग होते हैं। ऐसी रेखा वाला मनुष्य विश्वासघाती भी होता है—यह सामुद्रिक वेत्ताओं का कहना है।

चित्र ४४—यदि स्वास्थ्य-रेखा रस्सी को भांति बल खाती हुई-सी हो अथवा असमान दिखाई देती हो तो ऐसे जातक को पित्त सम्बन्धी रोगों का शिकार होना पड़ता है। यदि यह रेखा कुछ दूर बल खाती
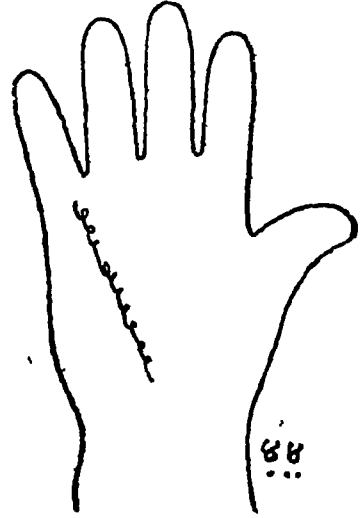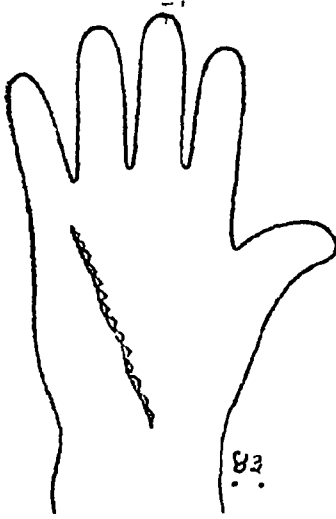
हुई चली हो और आगे चलकर सीधी हो गई हो अथवा कहीं वल खाती हुई और कही सीधी हो तो जिस वयोमान मे रेखा बलखाती हुई दिखाई दे, उस वयोमान मे जातक रोगी रहता है और जिस वयोमान में सीधी तथा निर्दोष हो, उसमे स्वस्थ रहता है ।
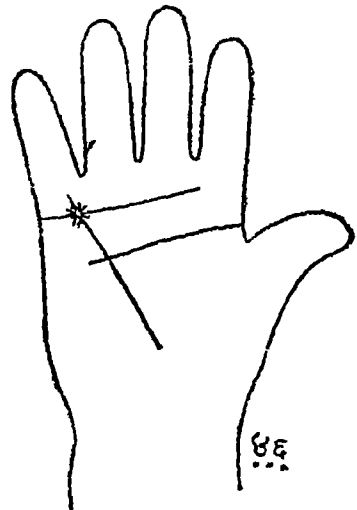
चित्र ४५—स्वास्थ्य-रेखा पर जिस वयोमान में नक्षत्र-चिन्ह दिखाई दे उस आयु में जातक के शरीर मे कोई भीतरी रोग होता है और उस स्थिति में उसे चीर-फाड़ (ऑपरेशन) कराने की आवश्यकता भी पड़ सकती है। स्वास्थ्य-रेखा पर नक्षत्र-चिन्ह का होना स्वास्थ्य के लिए हानिकारक ही होता है।

चित्र ४६—जिस स्थान पर स्वास्थ्य-रेखा हृदय-रेखा को काटती हो, वहां यदि कोई नक्षत्र-चिन्ह हो तो ऐसे चिन्ह वाली स्त्री को प्रसव के समय अत्यधिक पीड़ा होती है।

चित्र ४७—यदि स्वास्थ्य-रेखा पर 'क्रास-चिन्ह' दिखाई दे तो ऐसे चिन्ह वाला जातक जीवन भर किसी-न-किसी बीमारी से ग्रस्त बना रहता है।
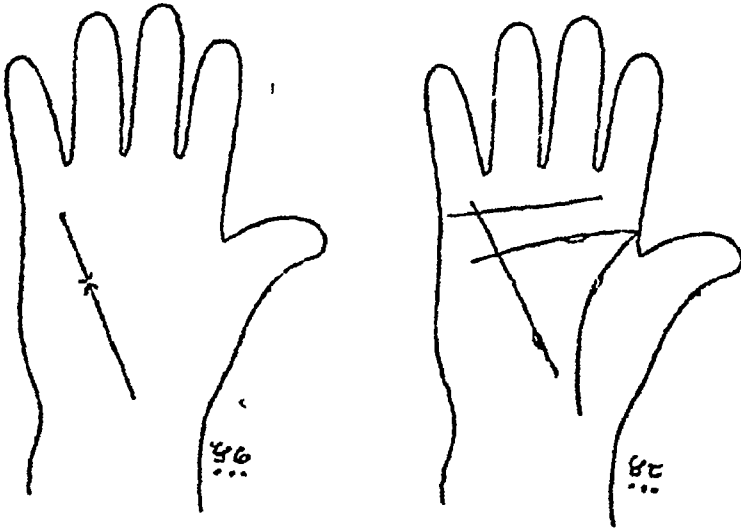
चित्र ४८—यदि मस्तक-रेखा, जीवन-रेखा तथा स्वास्थ्य-रेखा, तीनों पर ही 'यव (द्वीप) चिह्न' दिखाई दे, तो ऐसे जातक को तपेदिक (टी. बी.) की बीमारी हो जाती है। यदि हाथ मे स्वास्थ्य-

रेखा न हो और मस्तक-रेखा तथा जीवन-रेखा पर हो यव चिन्ह हो तो भी जातक को यक्ष्मारोग (टी. बी.) का शिकार होना पड़ता है।

चित्र ४६—यदि स्वास्थ्य-रेखा केवल हृदय-रेखा तथा मध्य-रेखा मस्तक-रेखा के मध्य भाग मे ही हो और इन दोनो रेखाओं को मिला रही हो तो जातक को ज्वर का कष्ट भोगना पड़ता है तथा उसका मस्तिष्क विकृत हो जाने का भय बना रहता है।
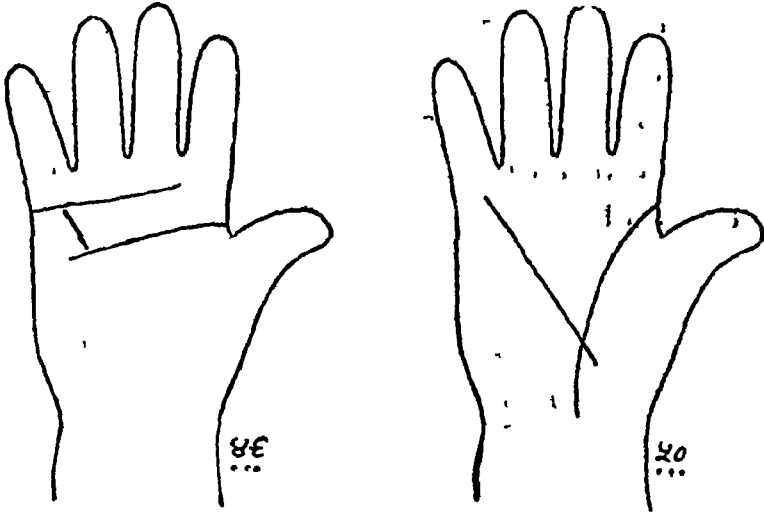
चित्र ५०—यदि स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा को काट रही हो तो जिस वयोमान में स्वास्थ्य-रेखा ने जीवन-रेखा को काटा हो, उस आयु मे जातक को उदर विकार होता है, जिसको दूर कर पाना कष्ट-साध्य हो जाता है। ऐसा अवसर प्राय ४८ वर्ष अथवा उसके बाद की आयु मे आता है।

चित्र ५१—जीवन-रेखा क्षीण तथा पतली हो और स्वास्थ्य-रेखा अधिक स्पष्ट दिखाई देती हो तो ऐसी रेखाओ वाले जातक प्रायः बीमार रहा करते हैं और उनकी किसी भी समय मृत्यु हो जाने का भय बना रहता है।

चित्र ५२—यदि स्वास्थ्य-रेखा बाल की भांति अत्यन्त पतली तथा सीधी हो तो ऐसी रेखा वाला जातक अत्यन्त निर्दयी होता है। यदि जीवन-रेखा भी दोषपूर्ण हो तो ऐसा जातक निरन्तर बीमार रहता है और उसकी शीघ्र मृत्यु हो जाने की संभावना रहती है।
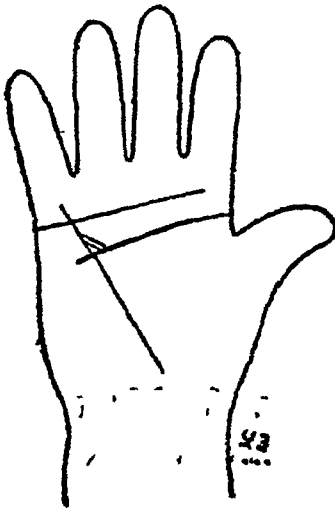
चित्र ५३—यदि स्वास्थ्य-रेखा के ऊपरी भाग में शाखाएं निकली हुई हो और उसकी एक या दो शाखाएं मस्तक-रेखा से मिलकर त्रिकोण-चिह्न बनाती हो तो ऐसी रेखा वाले व्यक्ति सद्गुणी, प्रतिष्ठित, गुप्त विद्याओं के ज्ञाता तथा शीरर से हृष्ट-पुष्ट होते हैं।

चित्र ५४—स्वास्थ्य-रेखा पर 'यव' चिन्ह हो तो ऐसे जातक नीद मे जोर-जोर से बडबड़ाते हैं तथा उन्हे प्रवास (यात्रा) सम्वन्धी स्वप्न अधिक दिखाई देते है—ऐसा कुछ विद्वानो का कहना है।

चित्र ५५—यदि स्वास्थ्य-रेखा चन्द्र-पर्वत से चक्कर खाती हुई आगे बढी हो तो ऐसी रेखा वाला जातक सदैव अत्यधिक चिन्ता-ग्रस्त रहता है और उसे अनेक प्रकार की बीमारिया भी भोगनी पड़ती हैं।
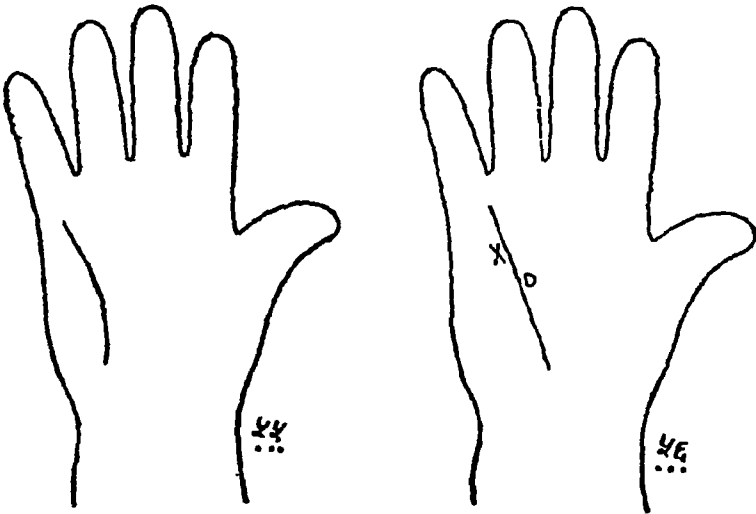
चित्र ५६—यदि स्वास्थ्य-रेखा के समीप ही कोई 'क्रास-चिन्ह' अथवा 'वर्तुल-चिन्ह' हो तो जातक के शरीर मे किसी भी स्थान पर घाव का चिन्ह होता है।

चित्र ५७—यदि लाल या गुलाबी रंग की स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा से आरम्भ होकर मस्तक-रेखा पर ही समाप्त हो जाये तो ऐसी रेखा वाले जातक को सिरदर्द, चक्कर आना, रतौंध, उन्माद, आंखों में जलन अथवा भारीपन तथा अन्य प्रकार के मस्तिष्क सम्बन्धी रोगों का शिकार होना पड़ता है।

५७

५८
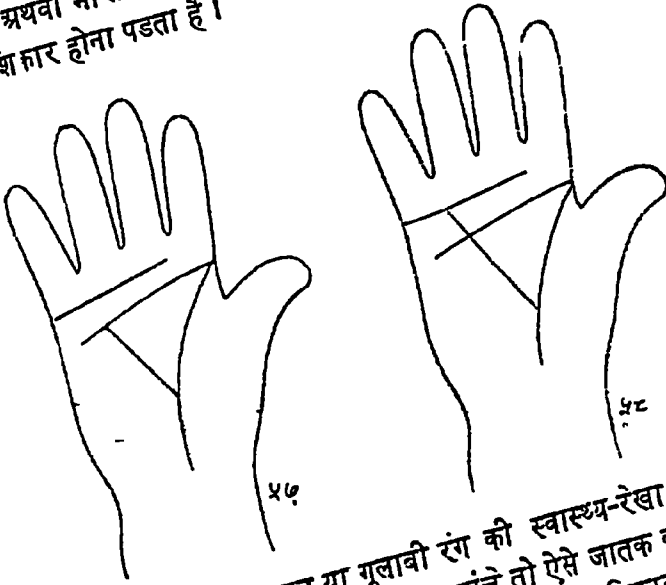
चित्र ५८—यदि लाल या गुलाबी रंग की स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा से आरम्भ होकर हृदय-रेखा तक पहुंचे तो ऐसे जातक का हृदय अत्यन्त दुर्बल होता है और वह मन्दाग्नि आदि उदर विकारों से ग्रस्त रहता है, जिसके कारण उसके स्वभाव में चिड़चिड़ापन आ जाता है।

चित्र ५९—यदि जीवन-रेखा छोटी, गहरी, फैली हुई तथा लाल रंग की हो और स्वास्थ्य-रेखा उसमें से निकलकर ऊपर की ओर जा रही हो तो ऐसी रेखा वाला जातक अर्श, रक्तपित्त, जिगर, तिल्ली, मंदाग्नि आदि रोगों का शिकार बनता है और उसको अपने जीवन का अन्तिम समय बड़ी बीमारी में व्यतीत करना पड़ता है।
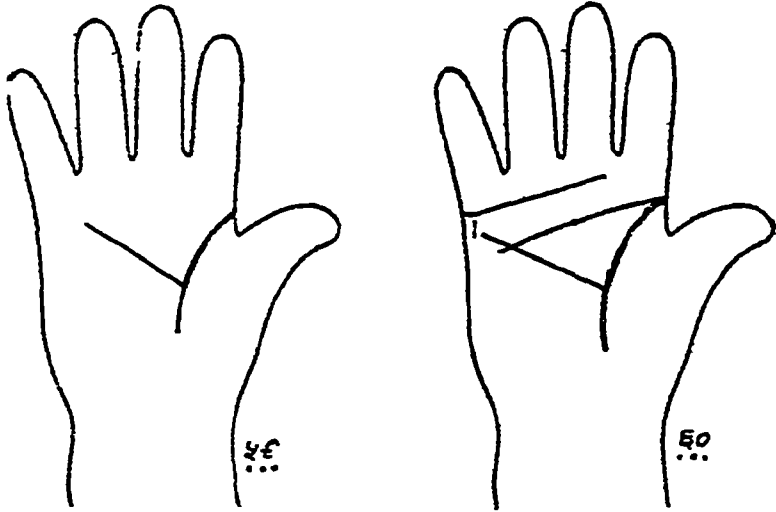
चित्र ६०—छोटी, चौड़ी तथा गहरी जीवन-रेखा में से निकलने वाली स्वास्थ्य-रेखा यदि मस्तक-रेखा को काटती हुई प्रजापति के क्षेत्र को जाती हो अथवा वरुण के क्षेत्र मे ही रुक जाती हो अथवा मस्तक-रेखा पर ही ठहर हो जाती हो, तो ऐसी रेखा वाले जातक को प्रमेह, अर्श,सूजाक, कब्ज, पेचिश, रक्त-विकार आदि बीमारियो से जीवन भर घिरा रहना पड़ता है।

चित्र ६१—यदि,स्वास्थ्य-रेखा हृदय-रेखा पर ही आकर रुक जाय अथवा उसे काटती हुई थोड़ा-सा ही आगे-बढ़कर ठहर जाय तो ऐसे जातक को तिल्ली, जिगर; कब्ज आदि की शिकायते बनी रहती हैं और धातु क्षीणता, प्रमेह आदि रोगो का शिकार होना पड़ता है।

चित्र ६२—स्वास्थ्य-रेखा का रंग गुलाबी हो, उसमे इधर-उधर से अनेक छोटी-छोटी रेखाएं आकर मिल रही हों तथा गुरु-क्षेत्र पर झाड़ू की सीको जैसा जाल बिछा हुआ हो तो ऐसी रेखाओं तथा चित्रों वाला जातक रक्तचाप, रक्त-विकार, रक्तार्श आदि रोगो का शिकार बनता है।
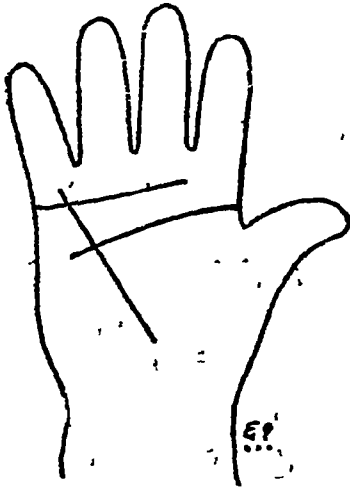
चित्र ६३—हृदय-रेखा तथा स्वास्थ्य-रेखा गुलाबी रंग की हों तथा शनिमुद्रिका (जिसका वर्णन 'शुद्र रेखाएं' नामक खण्ड मे किया गया है) अपूर्ण अथवा खण्डित हो उस व्यक्ति को वायु सम्बन्धिती-रोगों का
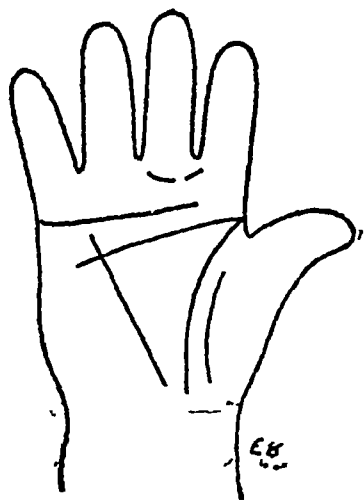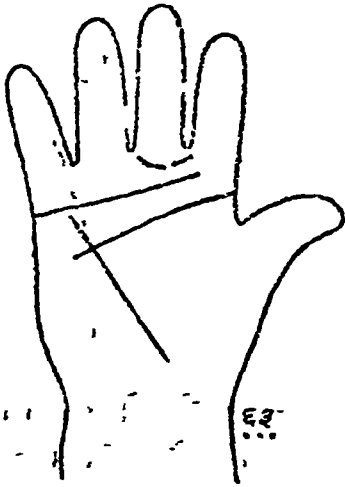
शिकार बनना पडता है। पेट मे दर्द, गैस, छाती में जलन, डकारें, आना आदि बीमारियां उसे घेरे रहती हैं।

चित्र ६४—यदि हृदय-रेखा तथा स्वास्थ्य-रेखा पूर्वोक्त प्रकार की हों, शनिमुद्रिका अपूर्ण हो तथा हाथ में मगल-रेखा भी स्पष्ट दिखाई देती हो तो ऐसे जातक को बादी-बवासीर की बीमारी हो जाती है।

चित्र ६५—यदि स्वास्थ्य-रेखा अनेक छोटी-छोटी रेखाओ से मिलकर बनी हो तो ऐसी रेखा वाले जातक लम्बी चलने वाली बीमारियो से ग्रस्त बने रहते हैं और स्वस्थ नही रह पाते । यदि स्वास्थ्य-रेखा सम्बन्धो यह दोष केवल मस्तक रेखा के समोप हो तो मस्तिष्क-रोग और यदि हृदय-रेखा के समोप हो तो हृदय सम्बन्धी बीमारियां होती हैं।
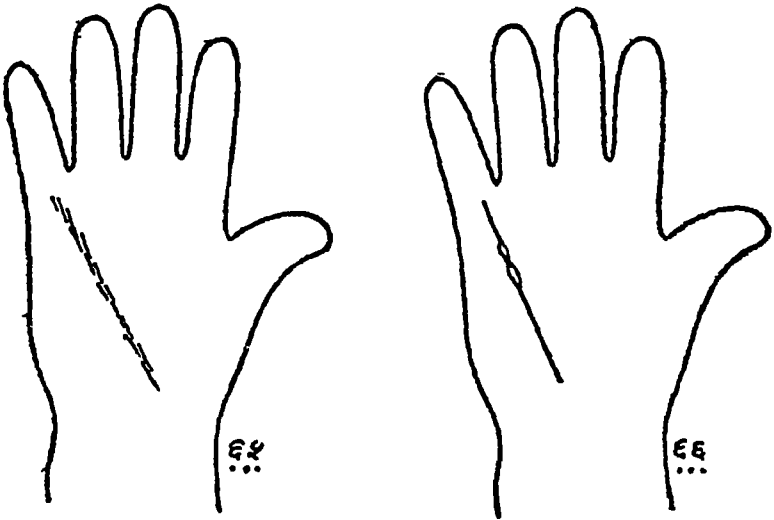
चित्र ६६—यदि स्वास्थ्य-रेखा पर पास-पास ही दो द्वीप-चिह्न एक साथ दिखाई देते हो तो ऐसा जातक रात मे सोते समय बिस्तर

पर ही पेशाब कर देता है। उसे वायु-विकार तथा पेट-सम्बन्धी रोग भी बने रहते है।

चित्र ६७—यदि स्वास्थ्य-रेखा पर चार द्वीप-चिह्न हों तो ऐसे जातक को असाध्य तपेदिक (टी० बी० की बीमारी) होती है और वह आरोग्य हुए बिना ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।
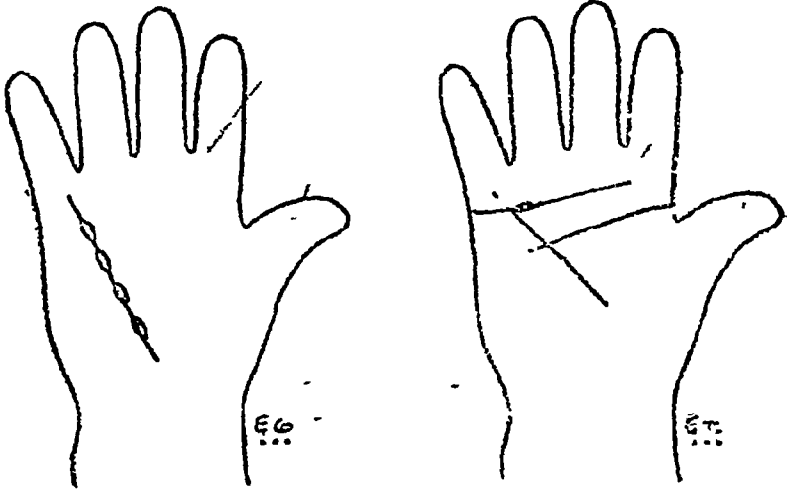
चित्र ६८—जिस स्थान पर स्वास्थ्य-रेखा हृदय-रेखा को काटता हो, उस स्थान पर यदि हृदय-रेखा पर अथवा उससे स्पर्श करता हुआ द्वीप-चिह्न हो तो जातक को हृदय तथा फेफडे सम्बन्धी रोग होते हैं। बाल्यावस्था मे पसली चलना, निमोनिया तथा बड़े होने पर मियादी बुखार एवं शीत के कारण उत्पन्न होने वाले अन्य रोग ऐसे चिह्न वाले जातक को घेरे ही रहते हैं।

चित्र ६९—जिस स्थान पर स्वास्थ्य-रेखा मस्तक रेखा-को काटती हो, उस स्थान पर यदि मस्तक-रेखा पर अथवा उससे स्पर्श करता हुआ द्वीप-चिह्न हों तो ऐसे चिह्न वाले जातक को मस्तिष्क

सम्बन्धी रोग तथा नकसीर फूटना, मुंह से खून आना, जीभ में छाले पड़ जाना, टांसिल वढ़ जाना आदि बीमारियां परेशान करती है।
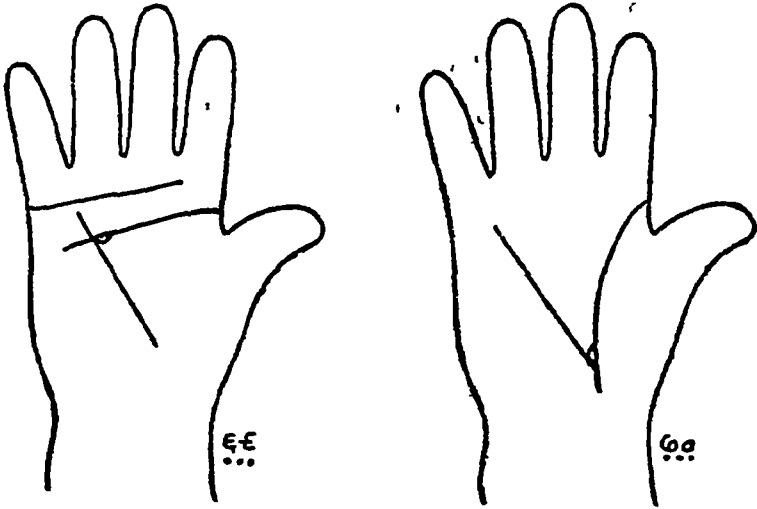
चित्र ७०—यदि स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा से मिलकर चली हो और उस मिलन-स्थान पर कोई द्वीप-चिन्ह हो तो ऐसे जातक को अपने जीवन के अन्तिम काल मे किसी बड़ी तथा लम्बो बीमारी का दुःख भोगना पड़ता है और उस बीमारी की स्थिति में ही मृत्यु भी हो जाती है।

चित्र ७१—यदि स्वास्थ्य-रेखा, भाग्य रेखा तथा मस्तक-रेखा—इन तीनों के मेल से हथेली पर त्रिभुज बनता हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यधिक कामी तथा गुप्त रोगो से पीड़ित रहता है। यदि स्वास्थ्य-रेखा दोष मुक्त भी हो तो वह जातक को निरंतर बीमार बनाये रखती है।

चित्र ७२—यदि स्वास्थ्य-रेखा अथवा उनकी कोई शाखा मस्तक-रेखा त्रिभुज बनाती हो तो ऐसी रेखा वाले व्यक्ति का स्वास्थ्य अच्छा

रहता है और वह यश, कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा धन तथा शक्ति प्राप्त करने की इच्छा रखता है, जिसमें उसे सफलता भी मिलती है।
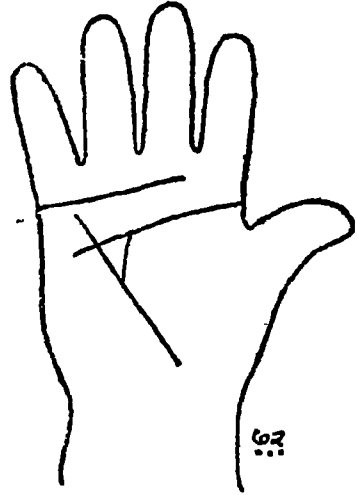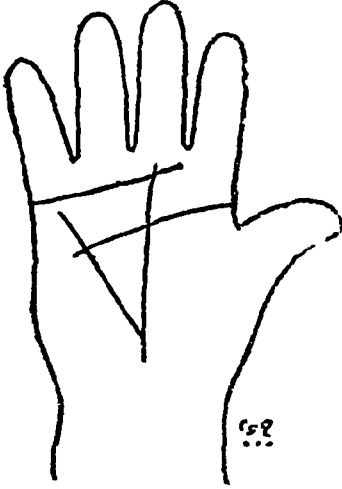
चित्र ७३—यदि स्वास्थ्य-रेखा बुध-क्षेत्र पर पहुंचकर द्वि-जिह्व
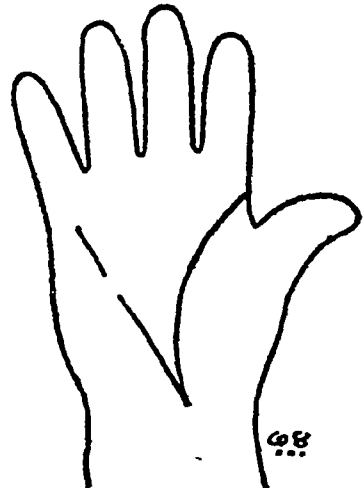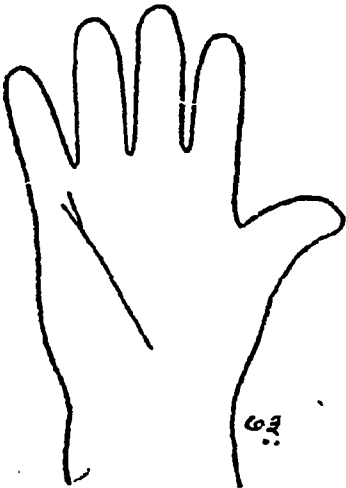
हो जाय तो जातक को अपने जीवन के अन्तिम समय मे बीमारियों का शिकार होना पड़ता है ।

चित्र ७४--यदि स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा के अन्तिम सिरे से मिलकर आरम्भ हुई हो और वह आगे चलकर टूट गई हो तो ऐसी रेखा वाले जातक की पाचन-शक्ति अत्यन्त दुर्बल होती है, फलतः उसका हृदय भी कमजोर हो जाता है और उसे हृदय-रोग तथा अनेक प्रकार की बीमारियो का शिकार होना पडता है ।

चित्र ७५—यदि स्वास्थ्य-रेखा ऊपर की ओर गहरी होकर अपनी एक शाखा सूर्य-क्षेत्र की ओर भेजे तथा स्वय हथेली मे ऊची चले तथा नीचे की अपेक्षा ऊपर की तरफ ज्यादा गहरी तथा लाल हो तो ऐसी रेखा वाले जातक का स्वास्थ्य युवावस्था मे कमजोर रहता है, मध्यावस्था मे सुधर जाता है तथा वृद्धावस्था आने पर शिरो रोग (मस्तिष्क शूल आदि) उत्पन्न हो जाते है।
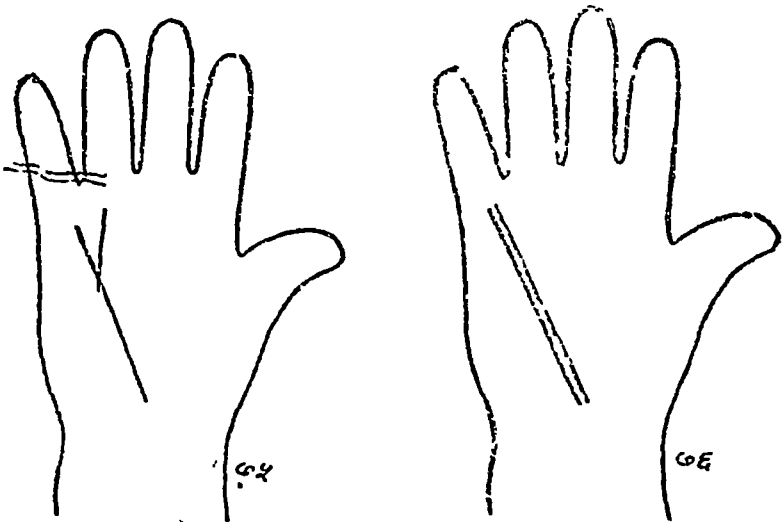
चित्र ७६—यदि स्वास्थ्य-रेखा दुहरी हो अर्थात् मुख्य स्वास्थ्य-रेखा के समानान्तर ही एक सहायक-रेखा और भी हो तो वह जातक

के स्वास्थ्य तथा सौभाग्य की वृद्धि करती है। ऐसी रेखाएं यदि स्पष्ट लम्बी, गहरी तथा निर्दोष हो तो जातक का स्वास्थ्य बहुत उत्तम रहता है तथा आर्थिक-क्षेत्र मे भी उसे सफलता प्राप्त होती है।

चित्र ७७—यदि निर्दोष स्वास्थ्य-रेखा चन्द्र-स्थान से आरम्भ होकर बुध-क्षेत्र को गई हो तो जीवन-रेखा के निर्बल होने पर भी वह निर्बल जीवन-रेखा के दूषित प्रभाव को नष्ट कर देती है। ऐसा व्यक्ति पूर्ण स्वस्थ तथा दीर्घायु होता है।
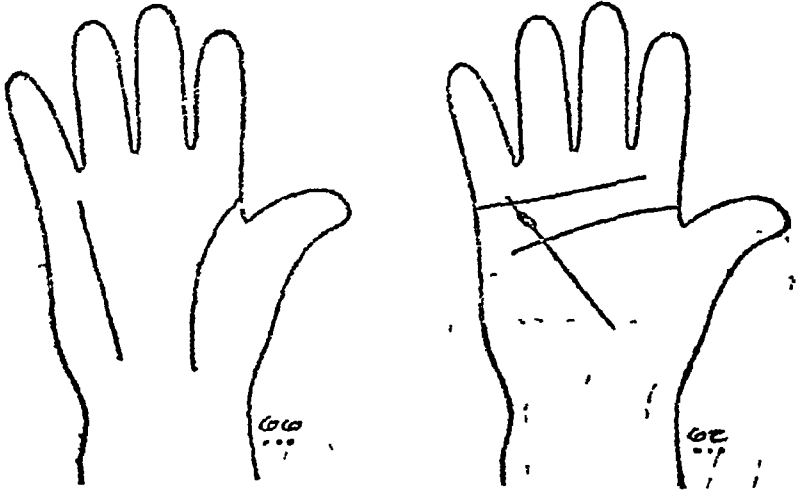
चित्र ७८—यदि हृदय-रेखा तथा मस्तक-रेखा के बीच वाले भाग मे स्वास्थ्य-रेखा के ऊपर द्वीप-चिह्न हो तो जातक को हृदय तथा फेफड़े सम्बन्धी रोगो का शिकार होना पडता है।

चित्र ७९—यदि स्वास्थ्य-रेखा मस्तक-रेखा को पार करते समय अधिक गहरी तथा चौड़ी हो गई हो तो जातक को भारी सिर दर्द का शिकार होना पडता है। यदि रेखा का रग गहरा लाल हो तो ज्वर का प्रकोप होते रहना भी एक साधारण-सी बात हो जाती है।
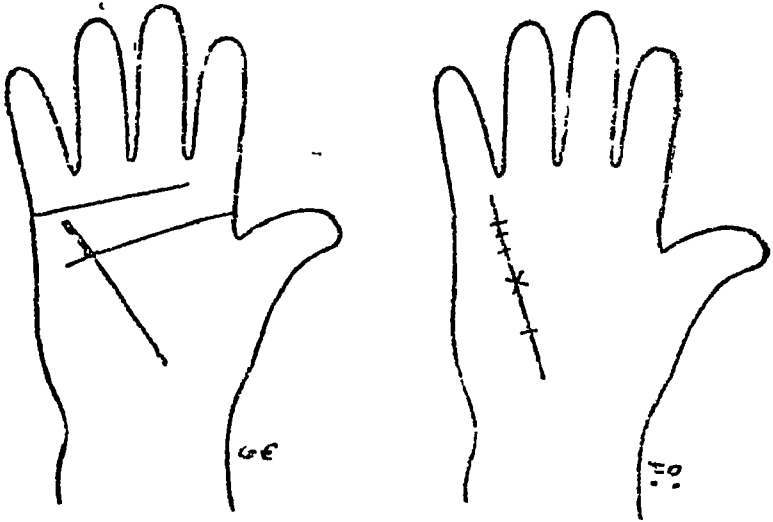
चित्र ८०—स्वास्थ्य-रेखा को काटने वाली अवरोध रेखाएं तथा क्रास-चिह्न जातक के भविष्य के जीवन मे उत्पन्न होने वाले रोगों के सूचक होते है। जो रोग पहले हो चुके होते है, वे रेखा को पतली कर जाते है अथवा तोड़ जाते है।
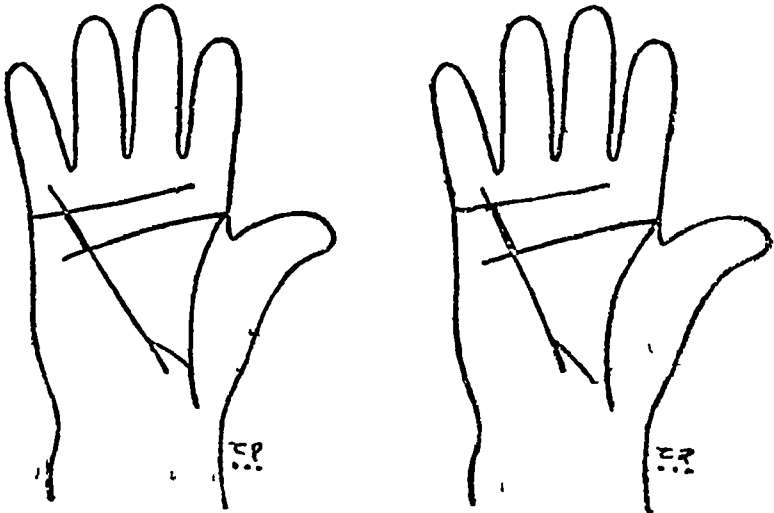
चित्र ८१—यदि स्वास्थ्य-रेखा हृदय-रेखा एवं मस्तक-रेखा के बीच गहरी तथा मोटी हो साथ ही स्वास्थ्य-रेखा की एक शाखा जीवन-रेखा से भी मिल रहा हो तो ऐसा जातक कठिन शारीरिक परिश्रम करने के कारण रोग ग्रस्त रहता है तथा जिस वयोमान में उसकी शाखा रेखा जीवन-रेखा से मिलती है, उसी आयु मे उसकी मृत्यु भी हो जाती है। मृत्यु से पूर्व उसे अनेक प्रकार की चिन्ताओं, कष्टों तथा अभावों का सामना भी करना पड़ता है।

चित्र ८२—यदि पूर्वोक्त हृदय-रेखा मस्तक-रेखा के बीच वाली मोटी तथा गहरी स्वास्थ्य-रेखा की शाखा-रेखा जीवन-रेखा को स्पर्श न करे और वह पतली, सरल तथा निर्दोष हो तो ऐसी रेखाओं वाले जातक को बीमारी में पड़े रहकर मत्यु नही होती और उसे कोई दुःख या चिन्ता भी परेशान नहीं करते हैं।

चित्र ८३—यदि अशुभ स्वास्थ्य-रेखा मंगल-क्षेत्र को पार करती हुई बुध-क्षेत्र पर पहुंचे, बुध-क्षेत्र निम्न हो तथा उस पर नक्षत्र-चिह्न भो हो, साथ ही स्वास्थ्य-रेखा भी असलग्न (भिन्न-भिन्न) हो तो
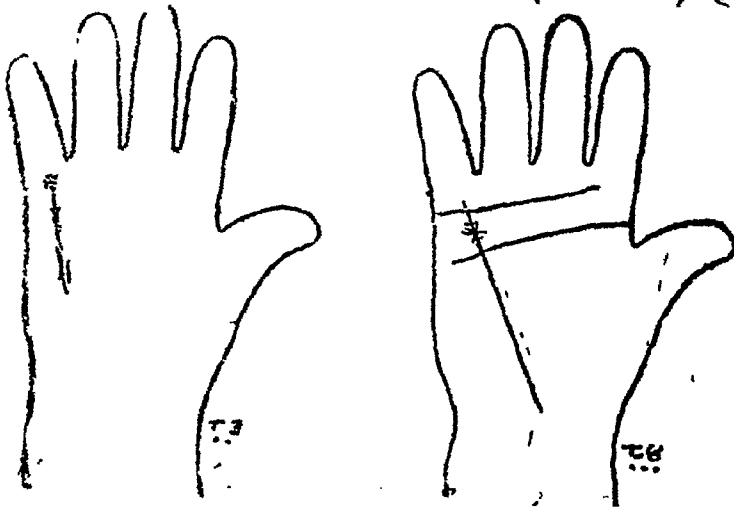
ऐसी रेखा वाले जातक को दुर्भाग्य का सामना करना पड़ता है और व्यवसाय तथा सामान की हानि के कारण वह आत्महत्या करने पर भी उतारू हो जाता है।

चित्र ८४—यदि स्वास्थ्य-रेखा बड़ी हो और मस्तक-रेखा तथा हृदय-रेखा के बीच उस स्वास्थ्य-रेखा पर नक्षत्र-चिन्ह हो तो ऐसी रेखा वाले पुरुष जातक को गुप्तेन्द्रिय मे रोग होता है और उसे अपरेशन कराने की जरूरत भी पड सकती है। यदि स्त्री के हाथ मे ऐसा चिह्न हो तो उसे प्रथम सहवास तथा प्रसव के समय अत्यधिक कष्ट होता है।

चित्र ८५—यदि स्वास्थ्य-रेखा पतली तथा सीधी हो और वह मस्तक-रेखा को काट रही हो तथा मस्तक-रेखा के नीचे स्वास्थ्य-रेखा पर 'क्रास-चिन्ह' भी हो तो ऐसा जातक निरन्तर अस्वस्थ बना रहता है। ऐसी रेखा वाले व्यक्ति झगड़ालू, निर्दयी, क्रोधी तथा कपटी भी होते है।
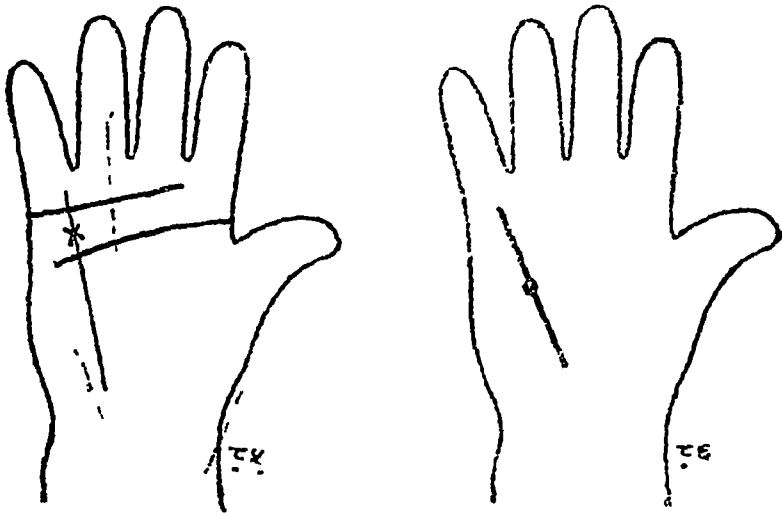
चित्र ८६—यदि स्वास्थ्य-रेखा का रग श्वेत हो, वह अधिक चौड़ी हो तथा उसके ऊपर बिन्दु-चिन्ह भी हो तो ऐसे जातक को उदर रोगो से

पीड़ित रहना पडता है। वह क्रोधी, चोर, छली, भयभीत, दुष्ट प्रकृति तथा प्रवासी जीवन व्यतीत करने वाला होता है। उसे अर्थोपार्जन के क्षेत्र मे भी अत्यधिक कठिनाइयो तथा कष्टो का सामना करना पड़ता है।

चित्र ८७–यदि स्वास्थ्य-रेखा भाग्य-रेखा के समीप से उठकर बुध-क्षेत्र पर जा रही हो तथा उसके बीच मे स्वास्थ्य-रेखा के समीप ही गुणक तथा वृत्त-चिन्ह भी हो तो ऐसा जातक हृदय-शूल, चाट, अर्धाङ्ग वायु आदि रोगो से ग्रस्त रहता है, परन्तु ऐसी रेखाओ वाला व्यक्ति परोपकारी तथा अतिथि सेवी भी अवश्य होता है।
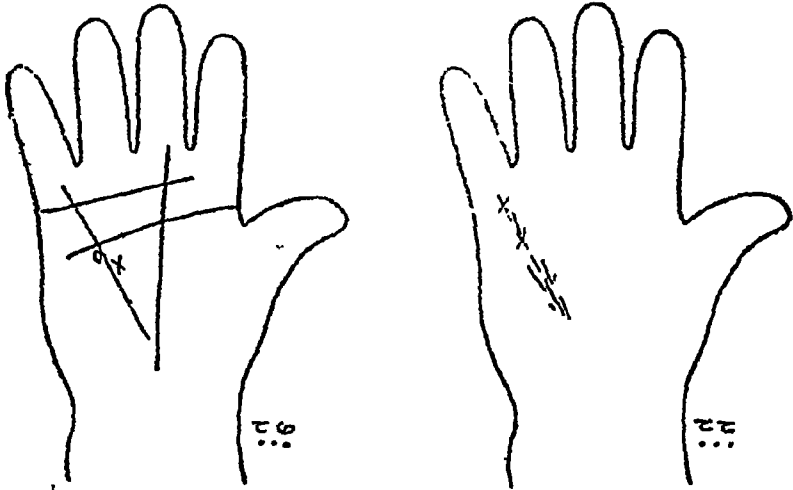
चित्र ८८—यदि स्वास्थ्य-रेखा छोटी-छोटी रेखाओं से युक्त तथा छिन्न-भिन्न भी हो तो ऐसा जातक अग्निमांद्य, सिर दर्द, थकावट, ज्वर आदि रोगों से पीड़ित रहकर अल्पायु होता है।

चित्र ८९—यदि स्वास्थ्य-रेखा मध्य हथेली से उत्पन्न हुई हो और उसकी एक शाखा चन्द्र-क्षेत्र पर पहुची हो तो ऐसी रेखाओं वाला

व्यक्ति प्रमेह रोगी तथा अव्यवस्थित हृदय का होता है। वह अभक्ष्य भोजी, शत्रुओं से पीड़ित परन्तु सन्तान से सुखी रहता है।
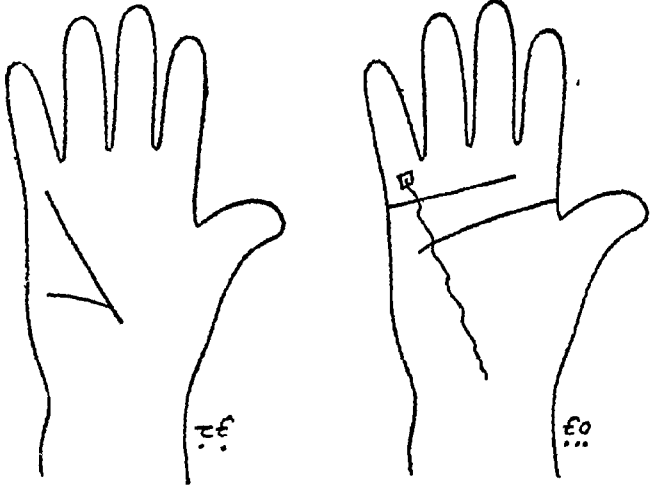
चित्र ९०—यदि लहरदार स्वास्थ्य-रेखा हृदय-रेखा को पार करती हुई बुध-क्षेत्र पर पहुचे और वहां एक चतुष्कोण भी हो अथवा सूर्य का क्षेत्र उच्च हो तो ऐसा जातक माता-पिता एवं बन्धु-बांधवों का प्रेमी, परन्तु रोगग्रस्त रहता है और जीवन भर औषधियों का सेवन करता है। ऐसे व्यक्ति कोमल तथा प्रेमी स्वभाव के, कामासक्त एवं दीर्घजीवी भी होते है।

चित्र ९१—यदि स्वास्थ्य-रेखा लम्बी, सरल तथा निर्दोष हो; जीवन-रेखा छोटी हो परन्तु वह स्वास्थ्य-रेखा के ऊपर ही हो, उसे काटती न हो तथा हृदय-रेखा मध्यमा उगली के नीचे आकर ही समाप्त हो गई हो तो ऐसी रेखाओ वाला व्यक्ति दीर्घजीवी होता है। वह अपने जीवन मे एक बार मृत्यु तुल्य कष्ट तो अवश्य भोगता है; परन्तु फिर स्वस्थ हो जाता है। उसी समय से उसके भाग्य की वृद्धि भी आरम्भ होती है।
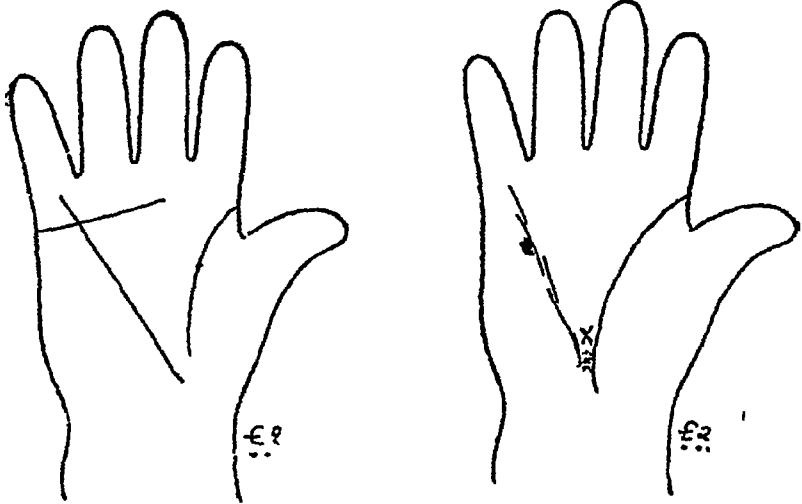
चित्र ६२—यदि स्वास्थ्य-रेखा बुध-क्षेत्र तक फैली हो तो उस पर नक्षत्र-चिह्न भी हो तो ऐसा पुरुष जीवन भर बीमारियों से घिरा रहता है। यदि किसी स्त्री के हाथ मे ऐसा चिन्ह हो तो वह प्रसूती-रोग से पीडित होती है। यदि यह रेखा छिन्न-भिन्न तथा काले रग की होकर जीवन-रेखा से जा मिले और वही नक्षत्र तथा क्रास-चिन्ह हो तो उस स्त्री की प्रसव-पीड़ा के समय मृत्यु हो जाती है।

चित्र ६३—यदि स्वास्थ्य-रेखा छोटी हो और वह छोटी-छोटी समानान्तर महीन रेखाओं से बनी हो तो ऐसा व्यक्ति अजीर्ण सम्बन्धी रोगों से ग्रस्त बना रहता है और स्वभाव से भी निर्दयी होता है।

चित्र ६४—यदि स्वास्थ्य-रेखा मस्तक-रेखा तथा हृदय-रेखा के बीच अधिक चौड़ी हो, हाथ मे भाग्य-रेखा अथवा सूर्य-रेखा लुप्त प्रायः हो तथा जीवन-रेखा आधी दूर जाकर ही समाप्त हो गई हो तो ऐसी रेखाओं वाला जातक मिर्गी, मूर्च्छा आदि रोगो से ग्रस्त रहता है और अनेक प्रकार के अपवाद तथा दुःखों को प्राप्त करता है। यदि स्वास्थ्य-

रेखा निर्दोष होकर भाग्य-रेखा से मिल रही हो तो उसके सौभाग्य की वृद्धि भी हो सकती है।
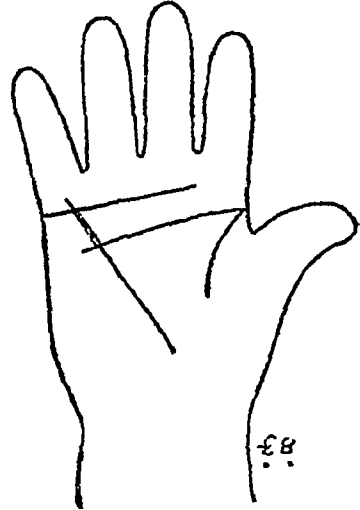
चित्र ९५—यदि स्वास्थ्य-रेखा सर्पाकार होकर मस्तक-रेखा से जा मिली हो और वहा से आगे न बढ़ी हो, शनि-क्षेत्र उच्च हो तथा
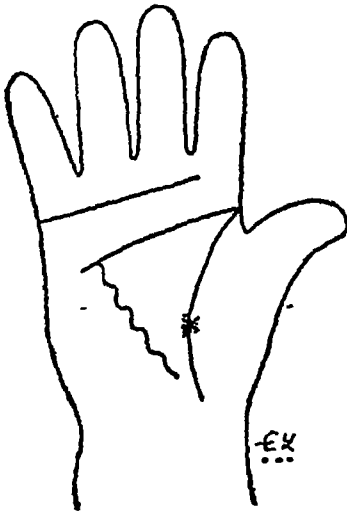
जीवन-रेखा पर नक्षत्र-चिन्ह हो तो ऐसी रेखाओं वाला जातक थोडे ही परिश्रम से अधिक थक जाता है। यदि उक्त लक्षणो के साथ ही स्वास्थ्य-रेखा किसी स्थान पर खडित भी हो तो वह किसी समय जीवन से ऊबकर आत्म-हत्या भी कर लेता है।

चित्र ६६—स्वास्थ्य-रेखा बहुत छोटी हो और जीवन-रेखा पर नीला दाग हो अथवा मस्तक-रेखा अथवा हृदय-रेखा पर काला दाग हो तो ऐसे चिन्ह वाला जातक निरंतर अस्वस्थ तथा रोग ग्रस्त रहता है। उसे ज्वर, मदाग्नि तथा अन्य प्रकार के उदर-विकार घेरे रहते हैं।

चित्र ६७—यदि स्वास्थ्य-रेखा खण्डित हो अथवा उसे छोटी-छोटी रेखाए काट रही हो तथा शनि का क्षेत्र उच्च हो तो ऐसे जातक दन्त-रोग तथा नेत्र-विकार से ग्रस्त रहते है। ऐसी रेखा वाले व्यक्ति शंकालु तथा अपव्ययी भी होते है। यदि राहु क्षेत्र निम्न हो तो उन्हे मित्रो एवं बन्धु-बान्धवो द्वारा धोखा भी खाना पडता है।

६७

६६
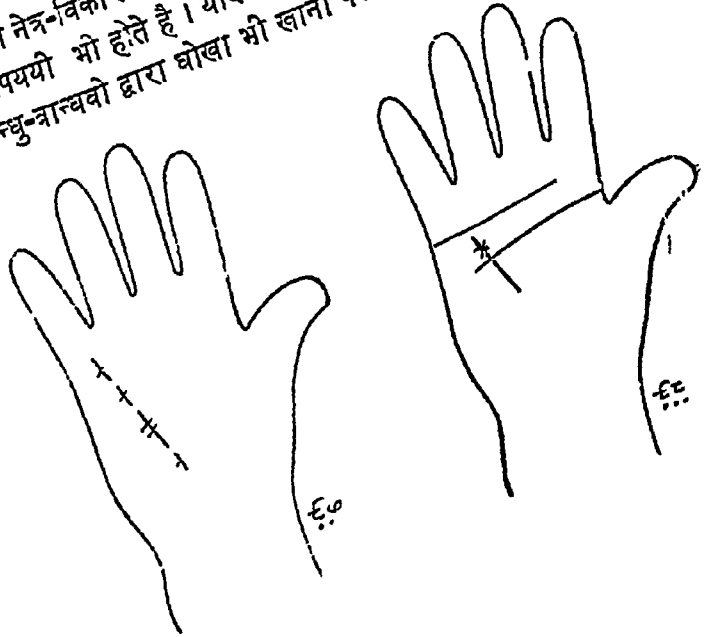
चित्र ९८—स्वास्थ्य-रेखा छोटी और गहरी हो, नख अधिक चपटे तथा कौडी के आकार के हो, हाथ की आकृति अशुभ हो, उक्त स्वास्थ्य-रेखा मस्तक-रेखा को काट रही हो तथा हृदय-रेखा और मस्तक-रेखा के बोच उक्त स्वास्थ्य-रेखा के ठीक ऊपर हो नक्षत्र-चिन्ह भी हो तो ऐसे लक्षणो वाला जातक अपमृत्यु को प्राप्त होता है। यदि सूर्य-रेखा अच्छी हो और वह मस्तक-रेखा तक आकर एक चतुष्कोण बना रही हो तो मृत्युयोग नष्ट हो जाता है तथा रोगो से भी छुटकारा मिलता है।

चित्र ९९—स्वास्थ्य-रेखा पर यव-चिन्ह हो, जीवन-रेखा भाग्य-रेखा का स्पर्श न कर रही हो तथा नाखून बादाम की आकृति के लम्बे हो तो ऐसा जातक फेफडे की कमजोरी तथा तपेदिक आदि रोगो से ग्रस्त रहता है। ऐसे लोग कामी, व्याभिचारी तथा चिन्तान्तुर भी होते है, परन्तु यदि स्वास्थ्य-रेखा भाग्य-रेखा का स्पर्श कर रही हो तो उस वयोमान मे बीमार रहने पर भी जातक की मृत्यु नही होती।
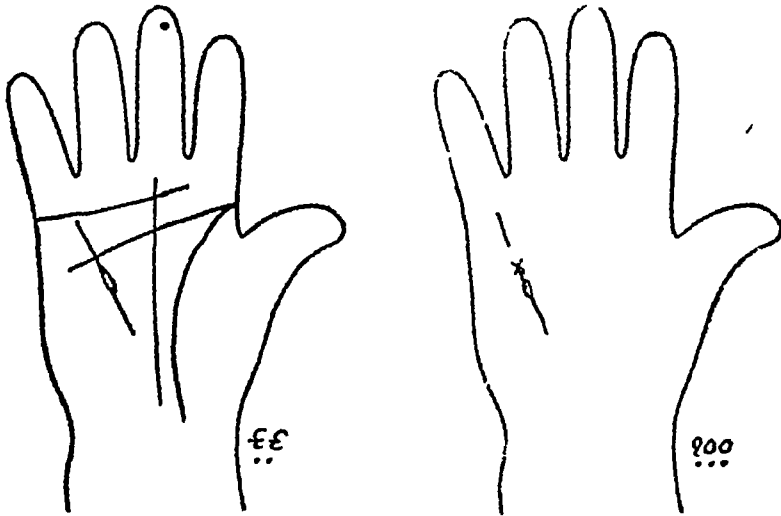
चित्र १००—यदि स्वास्थ्य-रेखा पर यव-चिन्ह हो और उसके बाद

रेखा टूट जाए, कट जाए अथवा नक्षत्र-चिन्ह तथा हथेली का मध्य-भाग नीचा हो तो ऐसे जातक की फेफड़े सम्बधी रोग से मृत्यु हो जाती है और मृत्यु से पूर्व वह निर्धनता का जीवन व्यतीत करता है।

चित्र १०१—यदि असलग्न स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा से मिल रही हो और उसके ऊपर क्रास, द्वीप आदि कोई अशुभ चिन्ह भी हो तो ऐसी रेखा वाले जातक को दुर्भाग्य का सामना करना पड़ता है और उसका स्वास्थ्य भी अच्छा नही रहता।

१०१
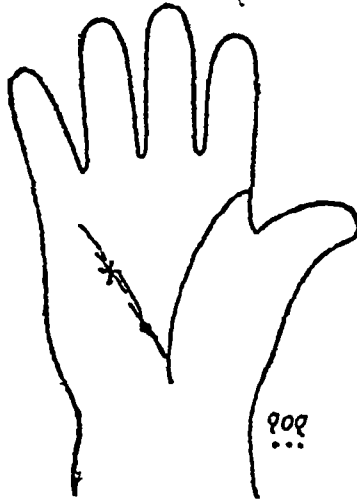
स्वास्थ्य-रेखा द्वारा अन्य बातों का विचार

जैसा कि आरभ मे बताया जा चुका है, प्राच्य-विद्वान् स्वास्थ्य-रेखा की गणना ऊर्ध्व-रेखाओ मे करते है और इसके द्वारा जातक के व्यवसाय, रुचि, सौभाग्य, समृद्धि, स्वभाव आदि विषयों के सम्बधा मे विचार करना बतलाते हैं। ठीक उसी प्रकार कुछ पाश्चात्य-विद्वान् भी इस रेखा द्वारा रोग तथा स्वास्थ्य के अतिरिक्त जातक के व्यवसाय, स्वभाव, सौभाग्य, समृद्धि आदि विषयो की जानकारी प्राप्त करने को सम्मति देते हैं।

स्वास्थ्य-रेखा की विभिन्न स्थितियो का जातक के स्वास्थ्य पर क्या प्रभाव पड़ता है—इस सम्बन्ध में पाश्चात्य मत का उल्लेख पिछले पृष्ठो मे किया जा चुका है। अब हम इस रेखा द्वारा जातक के स्वभाव, समृद्धि, व्यवसाय आदि विषयो की जानकारी प्राप्त करने के सम्बन्ध मे पाश्चात्य विद्वानो के मत को प्रस्तुत कर रहे है, परन्तु यहां इतना स्पष्ट कर देना और आवश्यक है कि किसी एक रेखा की स्थिति को देखकर ही किसो निष्कर्ष पर पहुंचना ठीक नही रहता। फलादेश करते समय जातक के हाथ की बनावट, ग्रह-क्षेत्र तथा अन्य रेखाओ की स्थिति को भी ध्यान मे रखना अत्यन्त आवश्यक है।

'*अन्य बाते*' शीर्षक प्रस्तुत पुस्तक के अन्तिम प्रकरण मे दिये गए निर्देशो का पालन करना तथा उल्लिखित विषयों पर ध्यान देना भी प्रत्येक हस्त-परीक्षक का मुख्य कर्तव्य है। यदि सभीबातो पर ध्यान नही दिया गया तो फलादेश ठीक नही बैठेगा—यह स्मरण रखना चाहिए।

स्वास्थ्य-रेखा द्वारा अन्य विषयो की जानकारी प्राप्त करने के सम्बध मे विभिन्न विद्वानो के मत का सार-सक्षेप निम्नानुसार है—

चित्र १०२—यदि स्वास्थ्य-रेखा उत्तम तथा निर्दोष हो और उसके साथ ही भाग्य-रेखा अथवा सूर्य-रेखा अथवा भाग्य-रेखा और सूर्य-रेखा दोनो ही हाथ पर अच्छी उठी हुई, स्पष्ट, निर्दोष तथा लम्बी हो तो ऐसा जातक सदव स्वस्थ सुखी तथा धन-यश सम्पन्न रहता है और उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे सफलता प्राप्त होती है।

चित्र १०३—यदि बुध का पर्वत अच्छा उठा हुआ हो और किसी भी स्थान से आरभ होने वाली लम्बी, गहरी, स्पष्ट तथा निर्दोष स्वास्थ्य-रेखा उस पर पहुच रही हो तो ऐसा जातक स्वतत्र रूप से किसी व्यवसाय द्वारा अत्यधिक उन्नति करता है और उसे सर्वत्र सम्मान की प्राप्ति होती है। ऐसी रेखा वाले जातक का स्वास्थ्य अच्छा रहता है और वह दीर्घायु भी होता है।
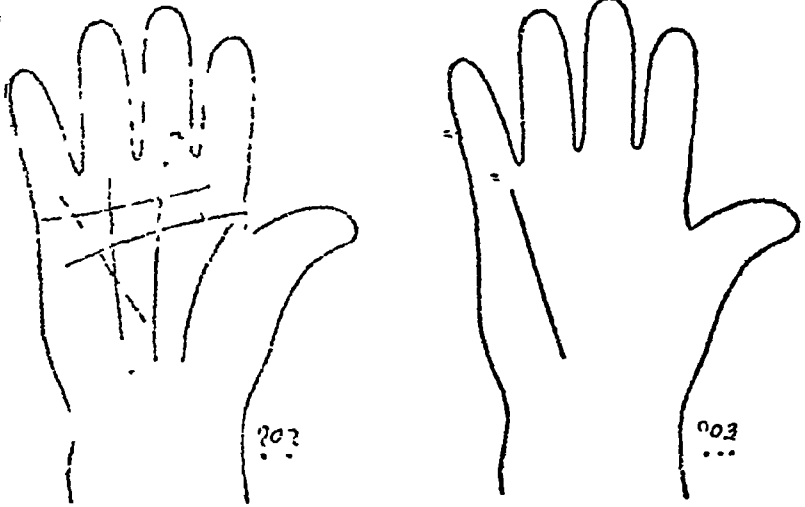
चित्र १०४—यदि स्वास्थ्य-रेखा तथा भाग्य-रेखा के सयोग से मस्तक-रेखा के नीचे स्पष्ट त्रिकोण बनता हो तो ऐसा जातक दूरदर्शी, यशस्वी, शास्त्रज्ञ, ज्ञानी, मीमासक तथा गुप्त विद्याओं का जानकार
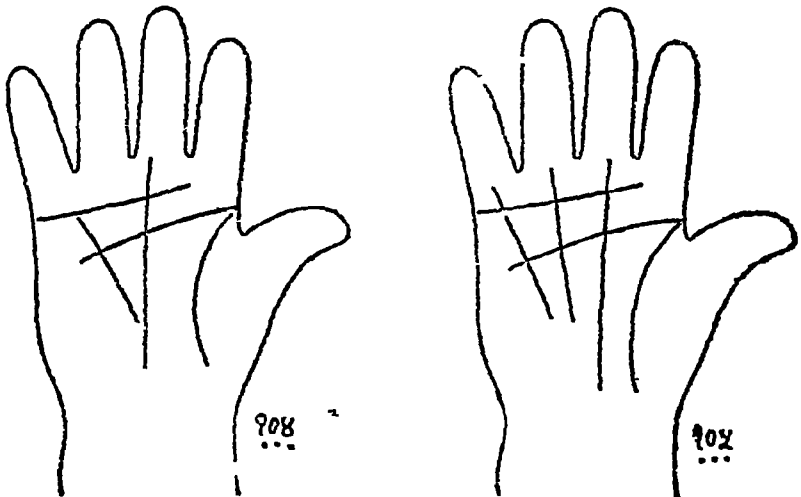
होता है। ऐसे त्रिकोण-चिह्न वाले व्यक्ति जादू, योग, तंत्र आदि विद्याओं के भी ज्ञाता होते हैं।

चित्र १०५—यदि स्वास्थ्य-रेखा का उदय जीवन-रेखा से न होकर हथेली के मध्यभाग मे सूर्य-रेखा के पूर्व भाग मे से हुआ हो तो उसे अत्युत्तम समझना चाहिए। ऐसे मनुष्य को स्वास्थ्य, व्यवसाय तथा प्रतिष्ठा—इन तीनों क्षेत्रो मे सफलता प्राप्त होती है।

चित्र १०६—यदि स्वास्थ्य-रेखा बुध के क्षेत्र पर पहुंची हो और वही पर सूर्य से एक तिरछी शाखा भी उत्पन्न होकर बुध-क्षेत्र पर ही रह गई हो तो ऐसी रेखा वाला जातक अनेक कामो में हाथ डालता है, परन्तु उनमें से वह एक को भी पूरा नही कर पाता। फलतः वह व्यवसाय आदि के क्षेत्र मे असफल ही रहता है।
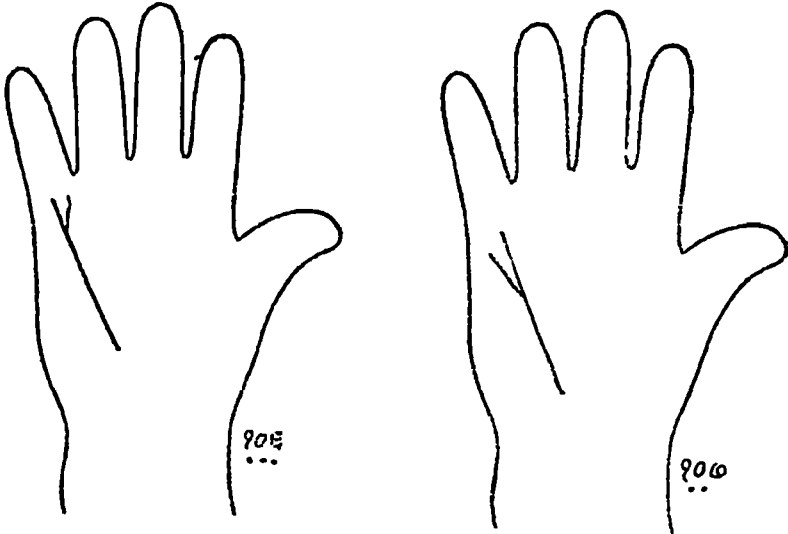
चित्र १०७—यदि स्वास्थ्य-रेखा बुध-क्षेत्र के मध्य भाग तक गई हो और उसमे से एक शाखा रेखा निकलकर ऊपर की ओर जा रही हो तो ऐसी रेखा वाले जातक का स्वास्थ्य अच्छा रहता है तथा उसे

व्यवसायिक क्षेत्र में भी सफलता प्राप्त होती है। ऊर्ध्वगामी शाखा-रेखा का होना एक शुभ लक्षण माना गया है।

चित्र १०८—यदि पूर्वोक्त प्रकार की स्वास्थ्य-रेखा में से एक शाखा-रेखा निकलकर ऊपर की ओर न जाकर नीचे की ओर चली गई हो तो ऐसे जातक को अत्यन्त कठिन परिश्रम करने के बाद ही सफलता प्राप्त होती है। सामान्य परिश्रम करने से वह व्यवसायिक क्षेत्र मे असफल रहता है।
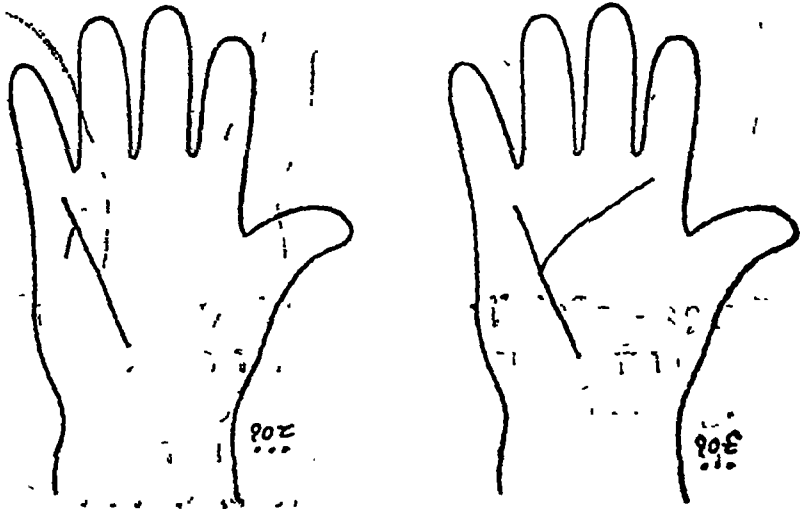
चित्र १०९—यदि स्वास्थ्य-रेखा पुष्ट तथा निर्दोष हो और उसमें से शाखा-रेखा निकलकर बृहस्पति के पर्वत पर चली गई हो तो ऐसा व्यक्ति व्यवसायिक क्षेत्र में अत्यधिक महत्वाकांक्षी होता है तथा अपने अधीनस्थ लोगों से काम लेने में कुशल होता है अर्थात् ऐसी रेखा वाला व्यक्ति सफल प्रशासक सिद्ध होता है।

चित्र ११०—यदि सबल तथा निर्दोष स्वास्थ्य-रेखा मे से कोई शाखा-रेखा निकलकर मस्तक-रेखा पर जा रही हो तो ऐसा व्यक्ति

बुद्धिमान, दूरदर्शी, सावधान, मितव्ययी तथा कर्मठ होता है जिसके कारण उसे जोवन के सभी क्षेत्रों में, विशेषकर व्यवसायिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है ।
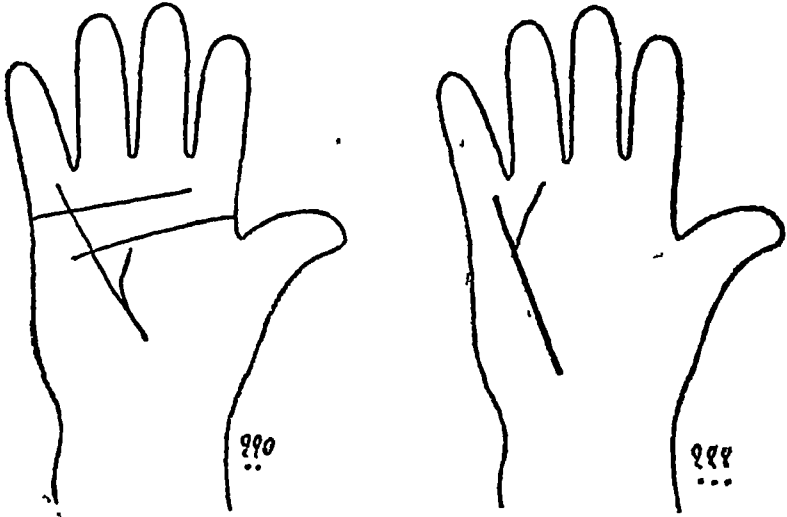
चित्र १११—यदि निर्दोष स्वास्थ्य-रेखा में से कोई शाखा-रेखा निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर जा रही हो तो ऐसा जातक अत्यधिक बुद्धिमान, मधुरभाषी, मिलनसार तथा दूरदर्शी होता है और इन्ही सद्गुणों के कारण धन, यश तथा उन्नति प्राप्त करता है। उक्त शाखा-रेखाएं अपना प्रभाव तभी प्रकट करती हैं, जब मस्तक, भाग्य तथा हृदय-रेखाए भी बलवान हो ।

चित्र ११२—यदि चन्द्र-क्षेत्र से कोई रेखा आकर निर्दोष स्वास्थ्य-रेखा मे मिलता हो तो जातक की कल्पना शक्ति बहुत तीव्र होती है। ऐसी रेखाओ वाला व्यक्ति यदि कवि या लेखक हो तो उसकी कृतियां विषेश सम्मान प्राप्त करती हैं और यदि सट्टेबाज हो तो सट्टे के काम अ यधिक सफलता प्राप्त करता है ।

चित्र ११३—यदि निर्दोष स्वास्थ्य-रेखा से कोई शाखा-रेखा निकल
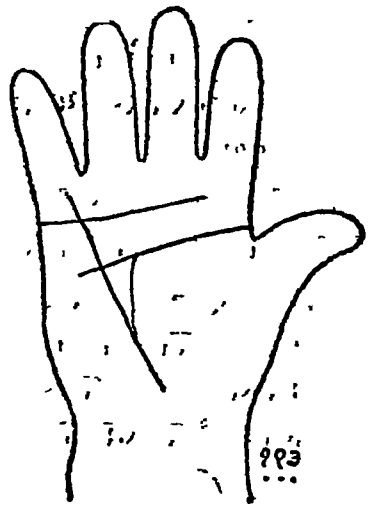
कर मस्तक-रेखा में जा मिले तो ऐसी रेखा वाले जातक की बुद्धि अत्यन्त प्रखर होती है और अपनी तीव्र बुद्धि के कारण वह मस्तिष्क सम्बन्धी कार्यों मे विशेष सफलता प्राप्त करता है।

११५
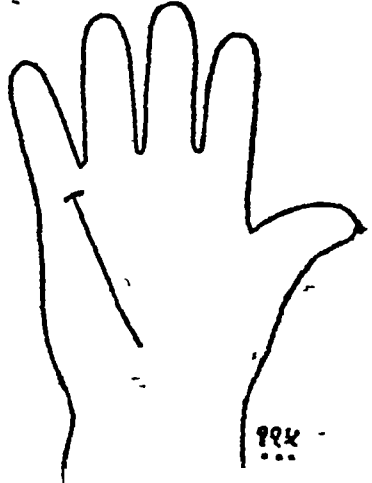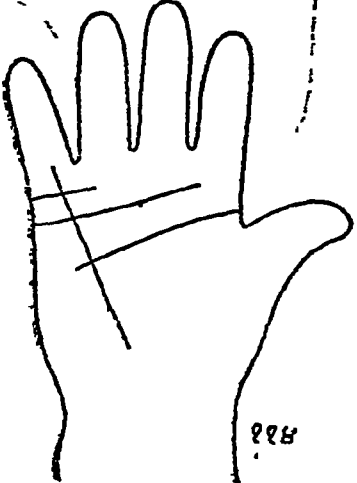
चित्र ११४—यदि बुध-क्षेत्र पर विवाह-रेखा आगे बढकर स्वास्थ्य-रेखा को काट रही हो तो विवाह अथवा प्रेम-सम्बन्ध के कारण जातक की उन्नति तथा स्वास्थ्य में बाधा पड़ती है।

चित्र ११५—यदि बुध-क्षेत्र पर स्वास्थ्य-रेखा के अन्त मे कोई आड़ी रेखा हो तो ऐसी रेखा वाले जातक के स्वास्थ्य, व्यवसाय तथा उन्नति के क्षेत्र मे अनेक प्रकार की बाधाए आती है।

चित्र ११६—यदि बुध-क्षेत्र पर स्वास्थ्य-रेखा के अन्त में क्रास-चिह्न हो तो उसका फल भी पूर्वोक्त प्रकार का होता है अर्थात् ऐसे चिह्न वाले जातक को स्वास्थ्य,व्यवसाय तथा उन्नति के क्षेत्र मे अनेक प्रकार के विघ्नों का सामना करना पड़ता है।
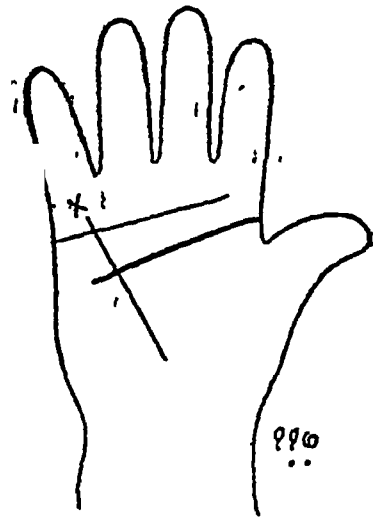
चित्र ११७—यदि स्वास्थ्य-रेखा के अन्त मे क्रास-चिह्न हो, हृदय-रेखा पतली हो तथा उगलियां भी टेढी हो तो ऐसा जातक धोखेबाज होता है और इसी दुर्गुण के कारण उसकी सफलता तथा उन्नति रुक जाती है।

चित्र ११८—यदि स्वास्थ्य-रेखा के अन्त मे जाल-चिह्न हो तो ऐसे

चिन्ह वाला जातक बेईमान होता है और उसका स्वास्थ्य भी खराब होता है। अस्वास्थ्य तथा बेईमानी की नीयत के कारण ऐसे व्यक्ति को किसी भी क्षेत्र में सफलता प्राप्त नही होती।
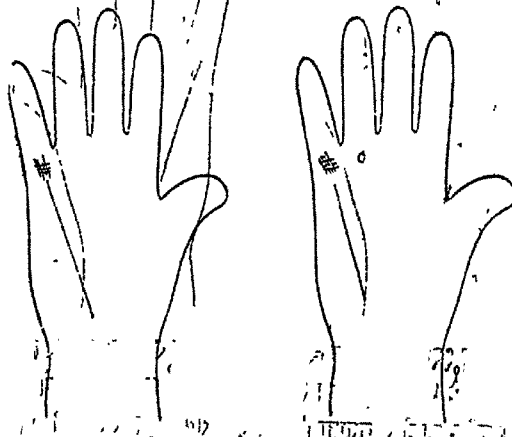
चित्र ११९—यदि स्वास्थ्य-रेखा के अन्त में जाल-चिह्न हो तथा सूर्य-क्षेत्र पर बिन्दु-चिह्न हो तो ऐसा जातक दिवालिया होता है और व्यवसाय के क्षेत्र मे उसे काफी बदनामी उठानी पड़ती है।

चित्र १२०—यदि स्वास्थ्य-रेखा के अन्त में नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक को पूर्ण सफलता प्राप्त होती है। यदि भाग्य-रेखा और सूर्य-रेखा भी अच्छी हो तो जातक को अत्यधिक उन्नति होने में कोई सन्देह नही रहता।

चित्र १२१—यदि स्वास्थ्य-रेखा बुध-क्षेत्र पर पहुंच कर द्विजिह्व हो गई हो और उसकी दोनों जिह्वाएं एक-दूसरी के समानान्तर हों तो ऐसी रेखा वाला जातक अपनी दिमागी ताकत को एक से अधिक कामो मे एक साथ लगाता है, जिसके कारण उसे पूर्ण सफलता प्राप्त नही हो पाती।
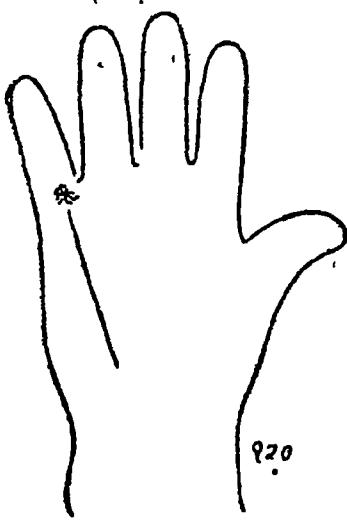
चित्र १२२—यदि बुधक्षेत्र पर पहुंचकर स्वास्थ्य-रेखा कई शाखाओं मे विभक्त हो जाय तो ऐसा जातक अपनी बुद्धि को एक साथ अनेक कामों में लगाता है और उसे सर्वत्र असफलता ही प्राप्त होती है।
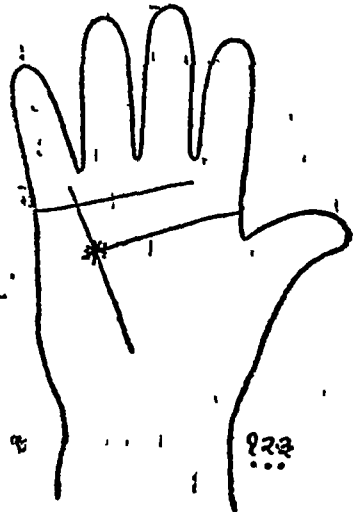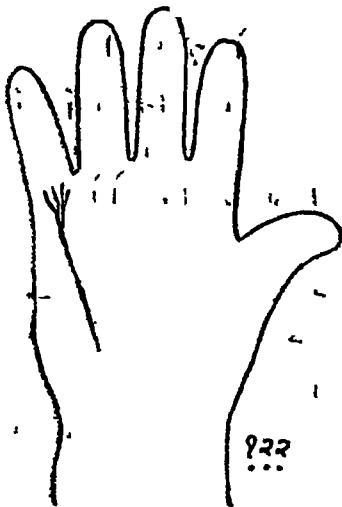
चित्र १२३—जिस स्थान पर स्वास्थ्य-रेखा मस्तक-रेखा को काटती हो उसी स्थान पर यदि नक्षत्र-चिह्न हो, साथ ही अन्य लक्षण भी अच्छे हों तो ऐसे चिह्न वाला पुरुष जातक अत्यन्त प्रखर बुद्धि का होता है, परन्तु यदि स्वास्थ्य-रेखा और मस्तक-रेखा दोनों ही दोष-युक्त हो तो उसे दिमागी बीमारी (पागलपन आदि) का शिकार होना पड़ता है।

चित्र १२४—यदि स्वास्थ्य-रेखा लहरदार हो और उस पर द्वीप-चिह्न अथवा अन्य कोई अशुभ चिह्न हो तो जातक को स्वास्थ्य, व्यवसाय तथा प्रतिष्ठा आदि सभी क्षेत्रों में हानि उठानी पड़ती है। सामान्य-रेखा मे भी अशुभ लक्षण अशुभ फल ही देते हैं, परन्तु लहरदार अथवा अन्य प्रकार के दोषो से युक्त रेखा में अशुभ लक्षणों का फल और अधिक हानिकर सिद्ध होता है।
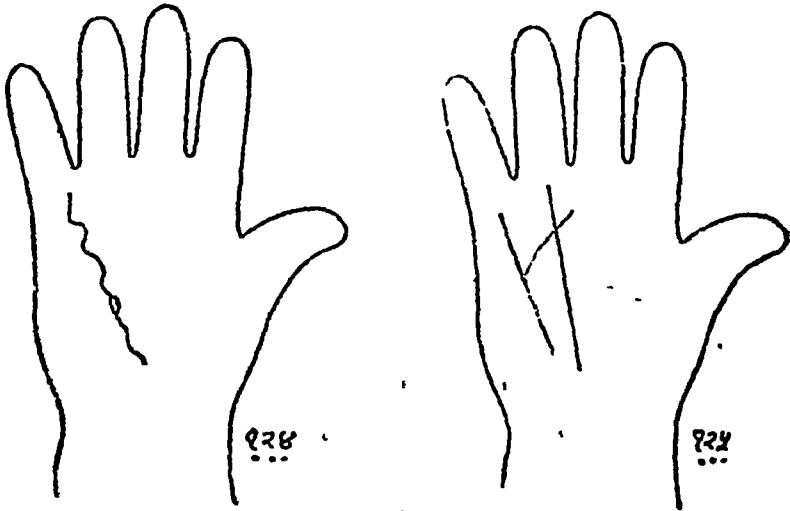
चित्र १२५—यदि व्यवसायिक हाथ में स्वास्थ्य-रेखा की कोई शाखा सूर्य-रेखा को काटती हुई आगे बढ़ जाये तो ऐसी रेखा वाले जातक

को व्यवसाय के क्षेत्र मे हानि उठानी पड़ती है और उसकी प्रतिष्ठा को भारी धक्का लगता है।

चित्र १२६—यदि स्वास्थ्य-रेखा हृदय-रेखा में से निकलकर सीधी बुध-क्षेत्र पर गई हो तो ऐसी रेखा वाले जातक को अत्यधिक परिश्रम करने पर ही व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता प्राप्त होती है। जातक जितना अधिक परिश्रम करेगा उसे सफलता भी उतनी ही अधिक मिलेगी।
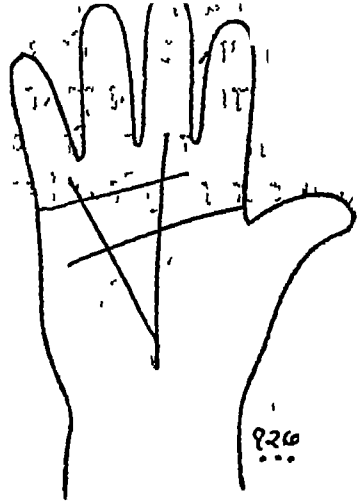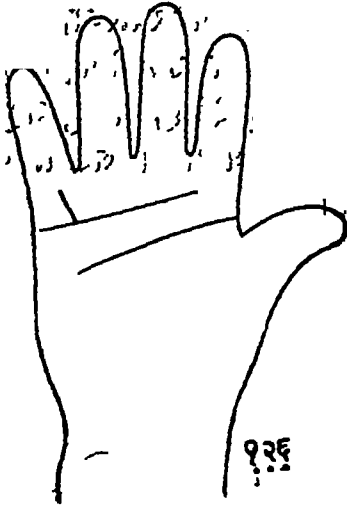
चित्र १२७—यदि स्वास्थ्य-रेखा भाग्य-रेखा में से निकल कर सीधी बुध-क्षेत्र पर चली गई हो तो ऐसी रेखा वाला जातक अपने पिता अथवा किसी रिश्तेदार की सम्पत्ति का स्वामी बनता है और उसे व्यवसायिक क्षेत्र मे अधिक परिश्रम किए बिना ही सफलता प्राप्त होती है।

चित्र १२८—यदि स्वास्थ्य-रेखा भाग्य-रेखा से निकलकर कुछ दूर आगे चलकर रुक गई हो तथा उसी स्थान से एक दूसरी रेखा चल कर मस्तक-रेखा पर पहुचकर समाप्त हो गई हो तो ऐसी रेखा को

व्यापारिक क्षेत्र में हलचल मचा देने वाली समझना चाहिए। जिस स्थान पर रेखा रुकी हो, उसी स्थान पर जातक का व्यापार ठप्प पड़ जाता है।
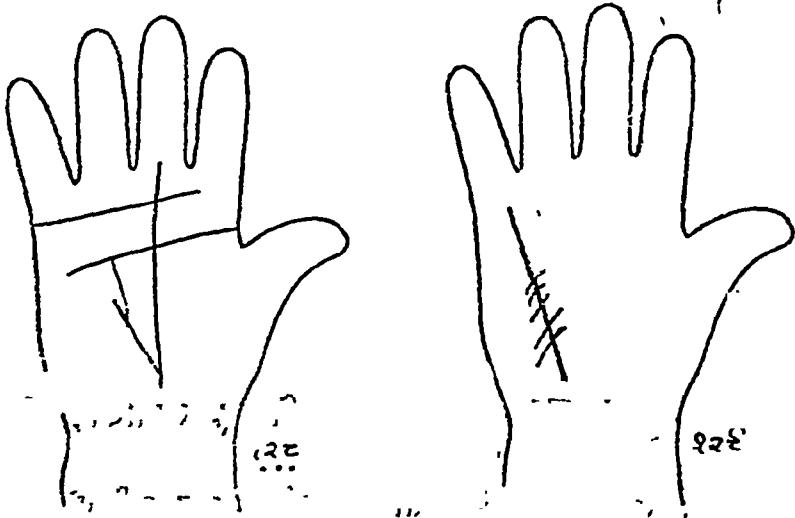
चित्र १२९—यदि चन्द्र-क्षेत्र से कुछ छोटी-छोटी रेखाएं निकल कर स्वास्थ्य-रेखा को काट रही हों तो ऐसे व्यक्ति को अपने व्यवसाय में किसी विश्वस्त मित्र अथवा रिश्तेदार के कारण धोखा खाना पडता है और उसे काफी नुकसान भी पहुंचता है। जिस-जिस वयोमान में छोटी रेखाए काट रही हो, उन्हीं आयु वर्षों में जातक को नुकसान पहुंचेगा—ऐसा समझना चाहिए।

चित्र १३०—यदि स्वास्थ्य-रेखा के साथ में एक और सहायक स्वास्थ्य-रेखा भी हो अर्थात् स्वास्थ्य-रेखा दुहरी हो तो ऐसी रेखा वाले जातक का स्वास्थ्य तो अच्छा रहता ही है, साथ ही उसके भाग्य की भी विशेष उन्नति होती है।

चित्र १३१—स्वास्थ्य-रेखा चाहे छिन्न-भिन्न अथवा असंलग्न हो परन्तु बुध-क्षेत्र उच्च हो और उस पर नक्षत्र-चिह्न भी हो तो ऐसे
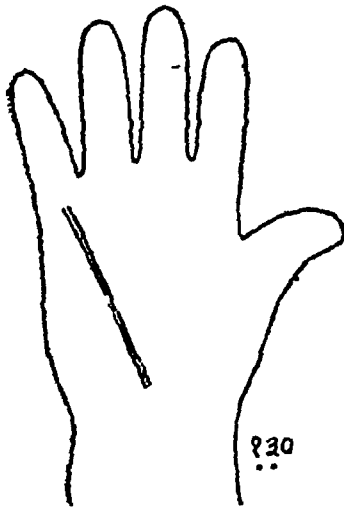
लक्षणों वाला जातक अच्छा साहित्यकार, विद्वान्, सम्पादक; श्रेष्ठ कवि तथा नीतिज्ञ होता है।

चित्र १३२—यदि स्वास्थ्य-रेखा मध्य हथेली तक गई हो और वह स्पष्ट तथा निर्दोष हो, साथ ही उसके ऊपर एक नक्षत्र-चिह्न भी
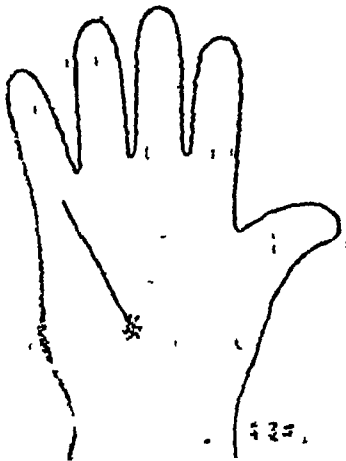
हो तो ऐसा जातक उच्चाधिकारी, श्रेष्ठ साहित्यिक, कवि अथवा विद्वान् होता हुआ भी अत्यधिक परिश्रम करने के कारण खराब स्वास्थ्य वाला होता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति असन्तोषी, वाचाल तथा चपल होते है और अनेक प्रकार के व्यापार करते है।

चित्र १३३—यदि निर्दोष स्वास्थ्य-रेखा सूर्य-क्षेत्र पर घूमती हुई बुध-क्षेत्र पर पहुंचे और हाथ की छोटी-सी भाग्य-रेखा को स्पर्श करे तथा बुध और सूर्य के क्षेत्र निम्न हो, तो ऐसा व्यक्ति भयकर दुर्घटनाओं का शिकार होता है। उसे धन-जन की हानि, बन्धु-बान्धवो का विरोध तथा अपनी मातृभूमि का परित्याग आदि कष्ट भोगने पड़ते हैं।

चित्र १३४—यदि स्वास्थ्य-रेखा मस्तक-रेखा पर ही रुक गई हो तथा उसे काटती हुई भाग्य-रेखा भी मस्तक-रेखा पर समाप्त हो गई हो, जिसके कारण (मस्तक-रेखा; भाग्य-रेखा तथा स्वास्थ्य-रेखा के सयोग से) एक त्रिकोण वनता हो तो ऐसा चिह्न जातक के लिए अत्यन्त शुभ फलदायक होता है। इस चिह्न के साथ ही यदि राहु-

१३४

१३५
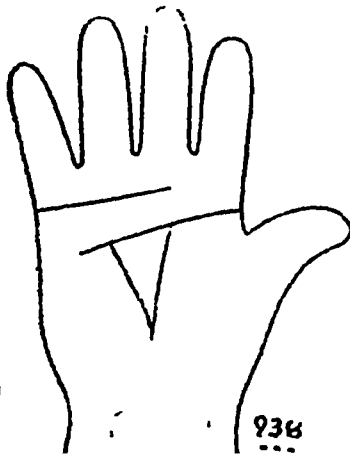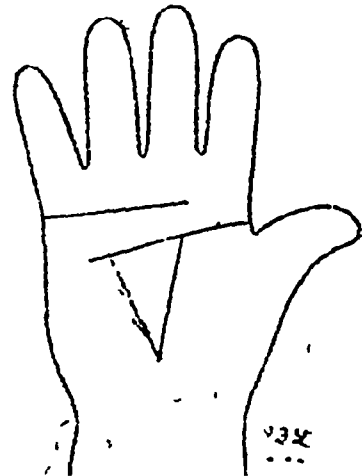
क्षेत्र भी उच्च हो तो वह जातक तत्वज्ञानी, भविष्यवक्ता, अलौकिक कार्यों को करने वाला तथा यशस्वी होता है।

चित्र १३५—यदि पूर्वोक्त प्रकार से स्वास्थ्य-रेखा, मस्तक-रेखा तथा भाग्य-रेखा के मिलन से हथेली पर त्रिकोण तो वनता हो; परन्तु त्रिकोण की एक भुजा, जो स्वास्थ्य-रेखा से वनी हो; वह पतली अथवा छिन्न-भिन्न हो तो ऐसे चिह्न वाला जातक अनिश्चयी, घोखा खाने वाला, भाग्य-हीन तथा आलसी होता है। ऐसे व्यक्तियो का स्वास्थ्य भी विभिन्न मानसिक चिन्ताओ के कारण खराव ही रहता है।

चित्र १३६—यदि स्वास्थ्य-रेखा चन्द्र-क्षेत्र से आरम्भ हुई हो और उसमे से एक शाखा निकलकर मणिबन्ध मे मिल गई हो तो ऐसा जातक प्रसिद्धि प्राप्त करने के उपरान्त शत्रुओं द्वारा किसी दुर्घटना का शिकार बनता है, जिसमे उसकी मृत्यु भी हो सकती है।
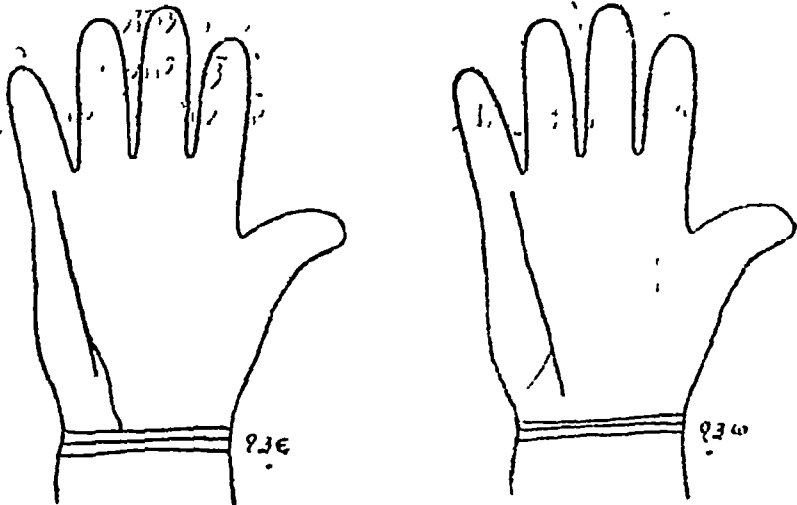
चित्र १३७—यदि पूर्वोक्त प्रकार की स्वास्थ्य-रेखा की शाखा मणिवन्ध मे न मिलकर हथेली के वाहर निकल गई हो तो ऐसा जातक दुर्घटनाओ से वचकर सुखी जीवन व्यतीत करता है। उसके मित्र

उसे संकटों से बचाते रहते हैं, यद्यपि उसके शत्रु-गण छल-कपट का प्रयोग करते रहने से बाज नहीं आते।

चित्र १३८—यदि हाथ में दो स्वास्थ्य-रेखाएं हों परन्तु उनमें एक बड़ी और दूसरी छोटी हो और वे एक दूसरी के समानान्तर चल रही हो तथा उन दोनों का भाग्य-रेखा से कोई सम्बन्ध न हो तो ऐसे व्यक्ति सच्चरित्र, पवित्र, स्वस्थ, कलाप्रवीण, नीतिज्ञ, विचारवान् तथा ज्ञानी होते हैं। ऐसी रेखा वाले जातक मानव-चरित्र के कुशल ज्ञाता तथा आध्यात्मिक विचारों के भी होते है।
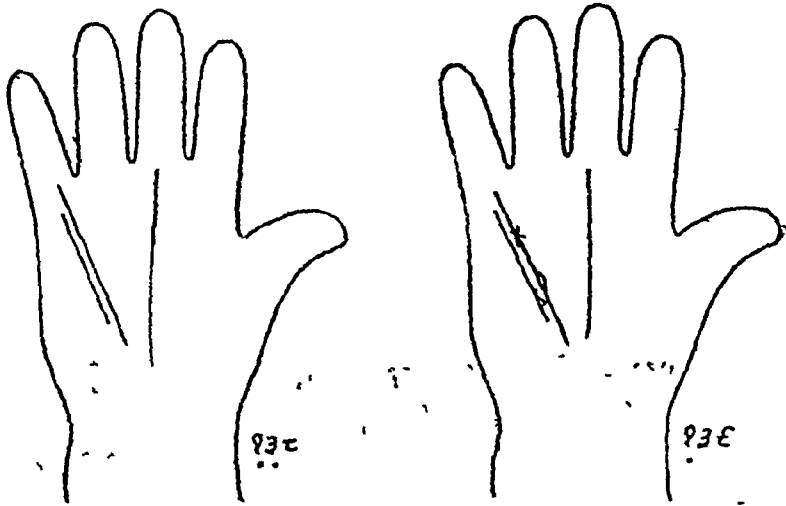
चित्र १३९—यदि हाथ मे पूर्वोक्त प्रकार की दो छोटी-बड़ी समानांतर दो स्वास्थ्य-रेखाएं हों और उनमें से किसी एक रेखा पर द्वीप या क्रास आदि का कोई अशुभ चिह्न भी हो तो ऐसे चिह्न वाला जातक किसी दुर्घटना द्वारा पीड़ित तो अवश्य होता है, परन्तु दूसरी रेखा के शुभ प्रभाव से वह उस विपत्ति से बच जायेगा। यदि उसे कोई रोग हुआ हो तो उसे भी उचित चिकित्सा द्वारा समाप्त कर देगा।

चित्र १४०—यदि स्वास्थ्य-रेखा लहरदार तथा पीले रंग की हो

श्रौर वह मस्तक-रेखा को काट रही हो तो ऐसे जातक बेईमान, निर्लज्ज, झगडालू तथा धूर्त प्रकृति के होते हैं। अपने स्वभाव के कारण उनका सब लोगों से विरोध रहता है। ऐसे व्यक्ति विरोध के कारण अपने रहने के स्थान का परिवर्तन भी किया करते है।
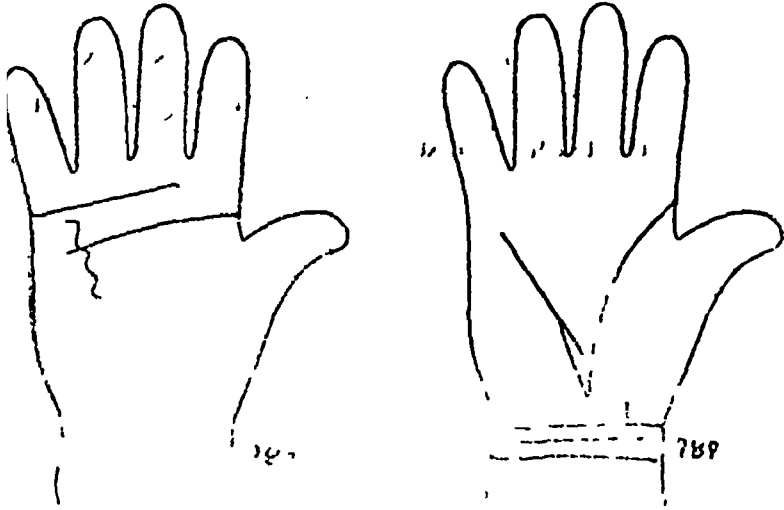
चित्र १४१—यदि स्वास्थ्य-रेखा सरल, स्पष्ट तथा निर्दोष हो श्रौर जीवन-रेखा मे मिलन-स्थल पर द्विभुज हो गई हो जिसके कारण जीवन रेखा पर मणिवन्ध से नीचे एक त्रिभुज बनता हा तो ऐसी रेखा वाले जातक अत्यन्त सौभाग्यशाले, यशस्वी तथा ज्योतिष, विज्ञान आदि विषयो के ज्ञाता होते हैं। उनकी विद्या से समाज के अन्य लोगो को भी लाभ पहुंचता है।

चित्र १४२—यदि पूर्वोक्त प्रकार की द्विभुज स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा से मिलकर मणिवन्ध के समीप त्रिभुज-चिह्न बनाती हो श्रौर उस त्रिभुज की तीनों भुजाए मणिवन्ध से मिल रही हो अथवा तोनो भुजाओं मे से कोई एक शाखा मणिवन्ध से मिल रही हो तो उपयुक्त

फलादेश में अन्तर आ जाता है और वह जातक के लिए दुर्भाग्य का सूचक होता है।
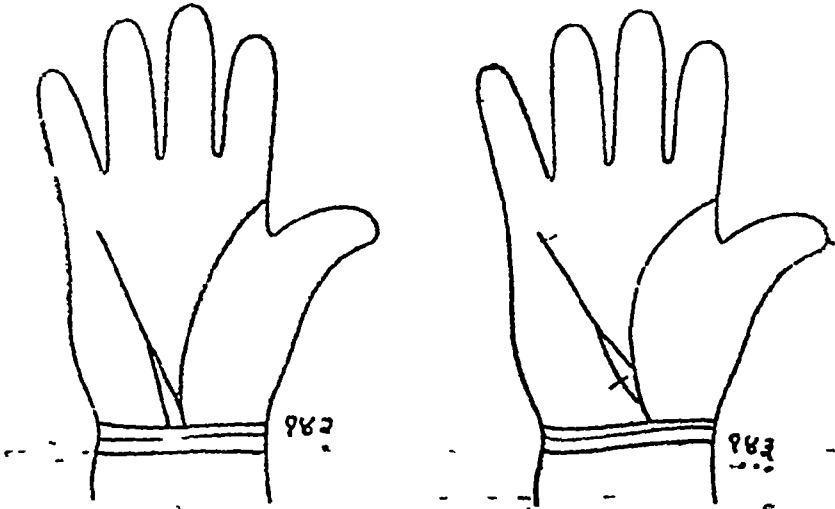
चित्र १४३—यदि पूर्वोक्त प्रकार के त्रिभुज-चिह्न में स्वास्थ्य-रेखा की दोनों भुजाओं अथवा जीवन-रेखा पर ही कोई अशुभ चिह्न हो अथवा कोई छोटी-सी रेखा उस त्रिभुज को खण्डित कर रही हो तो वह भी जातक के लिए अत्यन्त दुर्भाग्य का सूचक होती है।

चित्र १४४—जिस स्थान पर स्वास्थ्य-रेखा मस्तक-रेखा को काट रही हो, उससे पहले मंगल-क्षेत्र पर यदि 'गुणक' (क्रास) चिह्न हो मंगल-क्षेत्र उन्नत हो तथा मस्तक-रेखा शुद्ध और स्पष्ट हो तो ऐसा जातक साहित्यकार, गुणवान, सर्वप्रिय, कुशल तथा कलाकार होता है, फिर भी उसका स्वभाव शकालु होता है और कोई-न-कोई व्यक्ति उसका शत्रु भी बना रहता है।

चित्र १४५—यदि निर्दोष तथा सरल स्वास्थ्य-रेखा एक ओर हृदय-रेखा को स्पर्श कर रही हो और दूसरी ओर भाग्य-रेखा को पार करके जीवन-रेखा से मिल रही हो तो ऐसा जातक उन्नतिशील
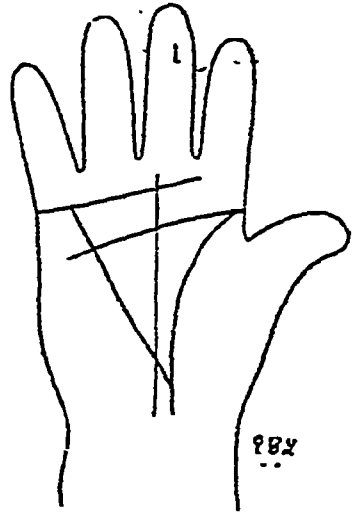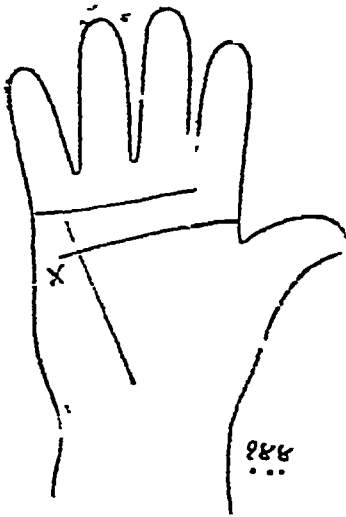
तथा उच्चाभिलाषी होता है और जिस वयोमान में स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा से मिली हो उस आयु में उसकी हृदय-रोग से मृत्यु होती है।

चित्र १४६—यदि असंलग्न (छिन्न-भिन्न) स्वास्थ्य-रेखा जीवन-

रेखा से मिलती हो और उसके ऊपर कोई अशुभ चिह्न भी हो तो वह जातक के लिए दुर्भाग्य की सूचक होती है। ऐसी रेखा वाले व्यक्ति रोगी तो रहते ही हैं, यश तथा धन के क्षेत्र मे भी उन्हे अनेक प्रकार की कठिनाइयां तथा हानियां सहन करनी पड़ती है।
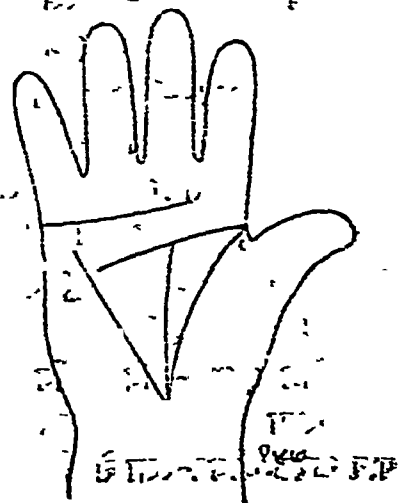
चित्र १४७—यदि स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा से मिलकर निकली हो और उसी स्थान से भाग्य-रेखा उठकर मस्तक रेखा का स्पर्श कर रही हो, जिसके कारण (मस्तक-रेखा, जीवन-रेखा तथा भाग्य रेखा से) एक त्रिकोण का निर्माण हो रहा हो—तो ऐसे चिह्न वाला जातक शास्त्रज्ञ, नीतिज्ञ भविष्यवक्ता, जनप्रिय, आध्यात्मिक विद्याओ का ज्ञाता तथा दैवी-शक्ति सम्पन्न होता है ऐसे व्यक्ति शुद्ध हृदय के तथा, स्पष्ट वक्ता होते हैं।

चित्र १४८—यदि हाथ मे मस्तक-रेखा जीवन-रेखा से तथा भाग्य-रेखा के मिलन से पूर्वोक्त प्रकार का त्रिकोण चिह्न बनता हो तो उस स्थति में यदि स्वास्थ्य-रेखा असलग्न हो अथवा उसके ऊपर कोई दोष-चिह्न हो तो भी जातक के जीवन पर उसका कोई विशेष प्रभाव नही

१४८

१४९
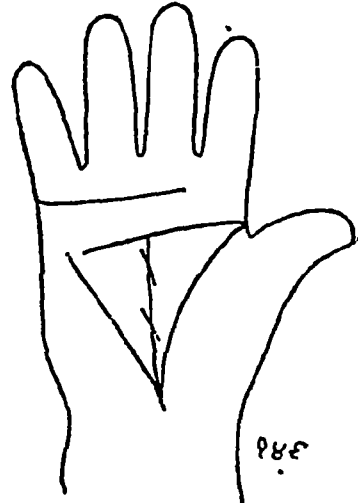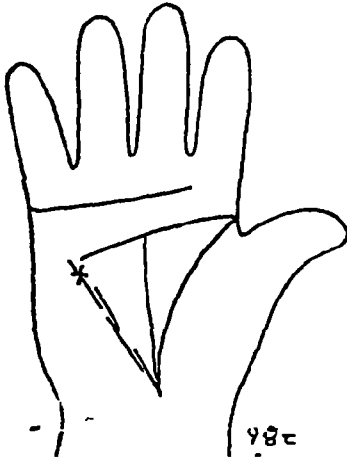
पड़ता। अर्थात् ऐसे त्रिकोण चिह्न वाले व्यक्ति की अशुभ स्वास्थ्य-रेखा का फल भी शुभ हो जाता है।

चित्र १४९—यदि हाथ मे उक्त प्रकार का त्रिकोण हो परन्तु वह भाग्य-रेखा मे दो स्थानो पर कटा हुआ हो तो ऐसा व्यक्ति शत्रुओ से घिरा रहता है और उसे पूर्ण श्रम करने पर भी पूर्ण सफलता नही मिलती। परन्तु यदि गुरु और बुध दोनो के क्षेत्र उच्च हो तो अशुभ फल मे कमी आ जाती है और जातक अपना जीवन सन्तोषपूर्वक व्यतीत करता है।

चित्र १५०—यदि स्वास्थ्य-रेखा मध्य हथेली से चलकर बुध क्षेत्र तक गई हो तथा वह बीच-बीच मे छोटी-छोटी रेखाओ द्वारा कटी हुई हो तो जितने स्थानो पर वह क्षुद्र-रेखाओ से कटी होगी उतनी ही वार बीमार पडेगा तथा उतनी ही बार उसे व्यवसाय मे आर्थिक हानि उठानी पडेगी।
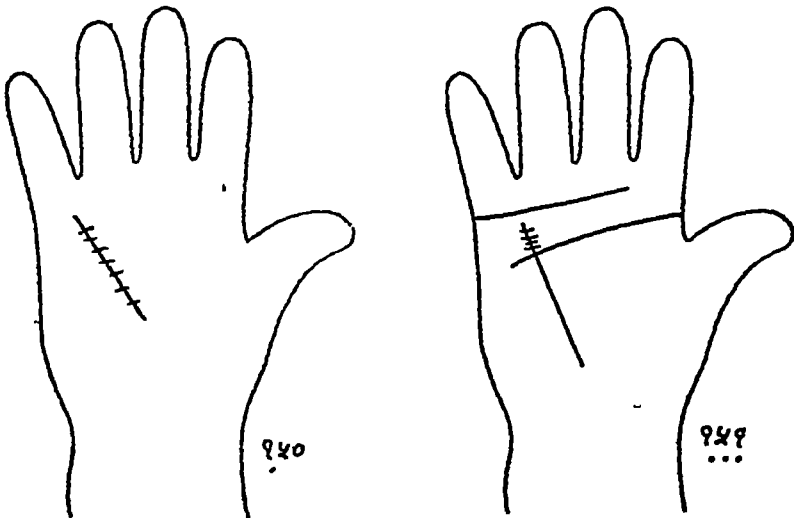
चित्र १५१—यदि स्वास्थ्य-रेखा को हृदय-रेखा तथा मस्तक-रेखा के बीच मे क्षुद्र रेखाएं काट रही हो तो जातक मूर्छा रोग से पीड़ित

तथा दिवालिया होता है और उसे बदनामो का शिकार भी बनना पडता है ।

चित्र १५२—यदि स्वास्थ्य-रेखा को क्षुद्र-रेखाए हृदय-रेखा के ऊपर काट रही हो तो ऐसो रेखा वाला जातक शकालु, कपटो, दुर्बल हृदय वाला तथा बुद्धि-हीन होता है। ऐसे व्यक्ति काम को बिना विचारे ही कर बैठते हैं, जिसके कारण उन्हे हानि तथा दु:ख उठाना पड़ता है। यदि बुध क्षेत्र उच्च हो तो उसके सभल जाने तथा विपत्तियो से त्राण पाने की सभावना हो सकती है ।
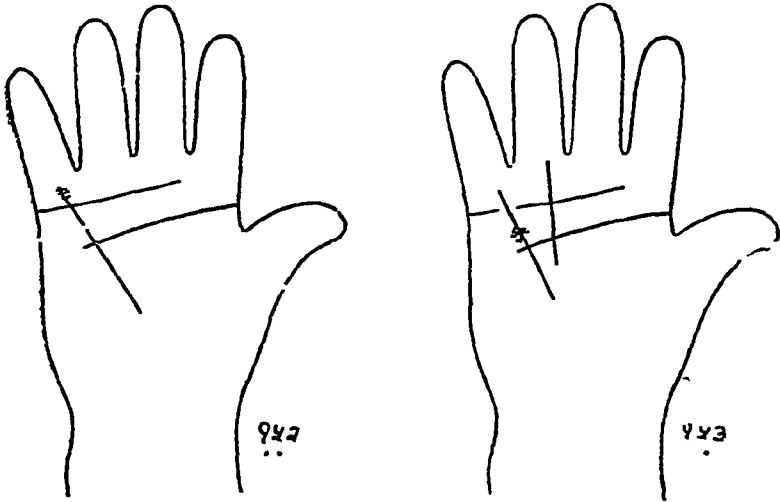
चित्र १५३—यदि छोटो स्वास्थ्य रेखा मस्तक रेखा को काट रहो हो तया मस्तक रेखा और हृदय रेखा के ठीक बीच मे स्वास्थ्य रेखा पर नक्षत्र चिन्ह हो तथा हाथ मे अच्छी सूर्य रेखा भी हो, जिसके कारण एक चतुष्कोण चिन्ह बन जाता हो तो ऐसे चिन्ह वाले जातक का मृत्यु योग नष्ट हो जाता है और वह स्वस्थ, यशस्वी, बुद्धिमान तथा साहित्यकार होता है ।

चित्र १५४—यदि मणिबन्ध से उठी हुई भाग्य-रेखा जीवन रेखा

से मिलकर स्वास्थ्य-रेखा के रूप में बदलकर बुध क्षेत्र मे चली गई हो तो ऐसी रेखा वाला जातक जीवन मे स्वस्थ, सुखी तथा सम्पन्न बना रहता है। ऐसे लोग उच्चाधिकारी कलाकार तथा कुशल व्यापारी होते है। इस रेखा को 'ज्ञान-रेखा' भी कहते है। ऐसी रेखा वाला व्यक्ति गुणवान तथा ज्ञानी होता है।
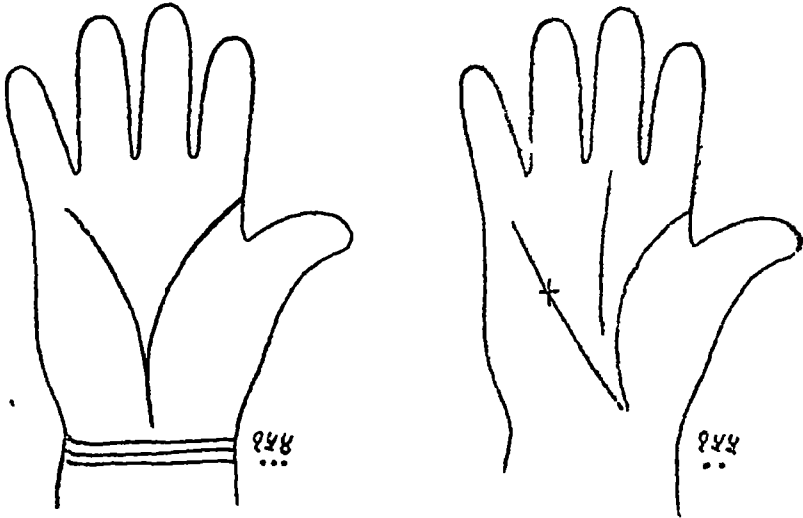
चित्र १५५—निर्दोष भाग्य-रेखा शनि क्षेत्र पर गई हो, स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा से मिल रही हो परन्तु उसके ऊपर कोई अशुभ चिन्ह भी हो तथा ग्रह क्षेत्र उभरे हुए हो तो भाग्य-रेखा के बलवान होने के कारण ऐसी रेखा वाले जातक की शीघ्र मृत्यु नही होती। यह स्वस्थ बना रहकर दीर्घजीवी होता है क्योकि स्वास्थ्य-रेखा के दोष को निर्दोष तथा सबल भाग्य-रेखा नष्ट कर देती है।

चित्र १५६—यदि भाग्य रेखा सबल तथा निर्दोष हो और स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा तथा मस्तक-रेखा से मिलकर मस्तक-रेखा पर त्रिकोण बना रही हो तो उसी आयु वर्ष मे जातक को सम्मान मिलता है।
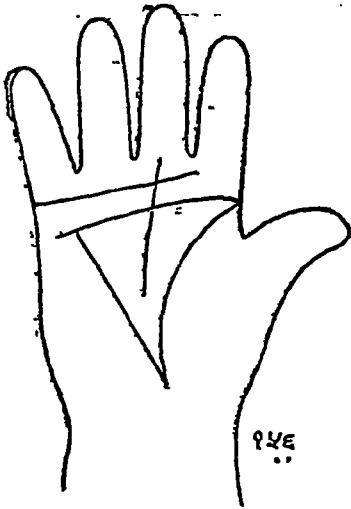
चित्र १५७—यदि स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा से मिली हुई हो, परन्तु सूर्य-रेखा बलवान हो साथ ही सूर्य, गुरु तथा शुक्र के क्षेत्र भी उच्च हो तो ऐसा जातक अपने प्रत्येक कार्य मे सफलता प्राप्त करता है। वह स्वभाव का कोमल होता है और उसे अपनी उन्नति के लिए विशेष परिश्रम करने की आवश्यकता भी नही होती।

चित्र १५८—यदि हाथ मे स्वास्थ्य-रेखा बिलकुल ही न हो तथा अन्य मुख्य रेखाए—जीवन-रेखा, भाग्य-रेखा, हृदय-रेखा मस्तक-रेखा तथा सूर्य-रेखा—सबल तथा निर्दोष हो तो ऐसे जातक को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे सफलता प्राप्त होती है। स्वास्थ्य-रेखा का हाथ मे न होना अशुभ लक्षण नही है परन्तु दोषयुक्त स्वास्थ्य-रेखा का होना अशुभ फलकारक अवश्य होता है।

स्वास्थ्य-रेखा सम्बन्धी अन्य बातें

स्वास्थ्य-रेखा के सम्बन्ध मे विचार करते समय हस्त परीक्षक को निम्नलिखित बातों तथा निर्देषों का हर समय ध्यान रखना चाहिए—

स्वास्थ्य रेखा केवल उसी रेखा को ही माना जाता है, जो हथेली के नीचे किसी भी भाग से आरम्भ होकर बुध क्षेत्र पर अथवा बुध-क्षेत्र की ओर गई हो। जिस रेखा का अन्त का रुख बुध-क्षेत्र की ओर न हो उसे स्वास्थ्य-रेखा नही समझना चाहिए।

(२) अन्य रेखाओ की भाति स्वास्थ्य-रेखा के सम्बन्ध मे विचार करते समय भी जातक के हाथ की बनावट-अगूठे तथा उंगलियों की बनावट ग्रह क्षेत्रो की उच्चता 'अथवा अनुच्चता, अन्य रेखाओ की स्थिति एव हस्त-चिह्नो पर ध्यान देना आवश्यक है। हथेली पर ग्रह-क्षेत्रो की स्थिति को चित्र सख्या १५२ मे प्रदर्शित किया गया है। इन सब वातो पर विचार किए विना केवल रेखा की स्थिति को देखकर ही फलादेश कर बैठना ठीक नही रहता।

(३) स्वास्थ्य-रेखा के साथ अन्य रेखाओ की स्थिति पर ध्यान देना भो अत्यन्त आवश्यक है क्योकि सबल तथा निर्दोष भाग्य-रेखा—सूर्य-रेखा—जीवन रेखा, मस्तक-रेखा अथवा हृदय-रेखा अपने शुभ प्रभाव से दोषयुक्त स्वास्थ्य-रेखा के अशुभ फल को नष्ट अथवा कम कर देती है।

इसी प्रकार ये रेखाए अच्छी स्वास्थ्य-रेखा के शुभ प्रभाव में भी कमी ला देती है। पहिचान के लिए हाथ पर मुख्य रेखाओ की स्थिति को चित्र सख्या १६० में प्रदर्शित किया गया है।
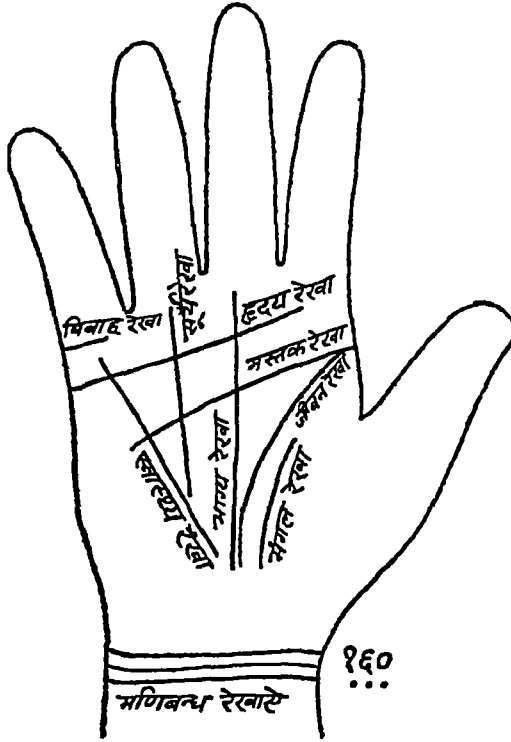
[हथेली पर मुख्य-रेखाओ की स्थिति]

(४) अन्य मुख्य रेखाओ की भाति स्वास्थ्य रेखा भी जातक के जन्म समय से ही हाथो में उपस्थित हो यह आवश्यक नही है। यह रेखा जीवन के किसी भी काल मे उदय हो सकती है तथा घट-बढ सकती है। एक बार उदय हुई स्वास्थ्य-रेखा पुन· लुप्त भो हो सकती है। जातक के कर्म, पुण्य तथा स्वभाव के अनुरूप हस्त-रेखा की स्थिति मे परिवर्तन होना सभव है, अत हस्त-परीक्षक को इन सब सम्भावनाओं पर विचार करने के उपरान्त ही स्वास्थ्थ-रेखा के सम्बन्ध मे फलादेश करना चाहिए।

(५) स्वास्थ्य-रेखा का हाथ पर विल्कुल ही न होना एक शुभ लक्षण है। प्राय· ५० प्रतिशत मे यह रेखा विल्कुल ही नही पाई जाती। दोषयुक्त स्वास्थ्य-रेखा की वजाय स्वास्थ्य-रेखा विल्कुल ही न हो तो उसे अच्छा समझना चाहिए।

(६) यदि हाथ मे स्वास्थ्य-रेखा विल्कुल ही न हो और जीवन-रेखा पतली हो तो जातक के किसी समय वीमार हो जाने पर उसका स्वास्थ्य शीघ्र सुधर जाने की सम्भावना रहती है, परन्तु यदि जीवन-रेखा पतली हो और स्वास्थ्य-रेखा भी हाथ मे दिखाई दे तो उस स्थिति मे स्वास्थ्य-रेखा अपनी आकृति के अनुरूप जातक के स्वास्थ्य पर प्रभाव अवश्य डालती है।

(७) जीवन-रेखा तथा स्वास्थ्य-रेखा जिस स्थान पर एक दूसरे से मेल करती हैं उस वयोमान मे जातक को कुछ-न-कुछ शारीरिक अथवा अन्य प्रकार का कष्ट अवश्य होता है। अत स्वास्थ्य-रेखा का जीवन-रेखा से अलग रहना ही अच्छा माना जाता है।

(८) यदि जीवन-रेखा तथा स्वास्थ्य-रेखा एक जैसी समान लम्वाई की तथा गहरी हो तो उस वयोमान मे जातक की मृत्यु होने की आशका रहती है। परन्तु यदि हृदय-रेखा, मस्तक-रेखा, भाग्य-रेखा तथा सूर्य-रेखा की स्थिति वहुत अच्छी हो तो जातक की मृत्यु नही होती फिर भी उसे अत्यधिक कष्ट तो भोगना ही पड़ता है।

(९) स्वास्थ्य-रेखा जितनी अधिक चौडी तथा दोप पूर्ण होती है। जातक को उतनी ही अधिक स्नायदिक कमजोरी का शिकार बनाती है तथा जातक उतना ही अधिक अस्वस्थ रहता है।

(१०) यदि स्वास्थ्य-रेखा वुध-क्षेत्र पर न जाकर हृदय-रेखा पर ही समाप्त हो गई हो और जिस स्थान पर वह जीवन-रेखा से मिलती हो उस स्थान पर चौड़ी हो, साथ ही उगलियो के नखो पर अर्द्धचन्द्र

चिन्ह भी न हो तो उसका दुष्प्रभाव कम होता है, परन्तु यदि नखों पर अर्द्ध चन्द्र-चिन्ह आवश्यकता से अधिक बडे हो तो उसका दुष्प्रभाव बढ जाता है। उस स्थिति मे जातक को हृदय-रोग का शिकार बनना पडता है। ऐसी रेखा तथा लक्षण वाले लोगो को गाजा, भाग, शराब आदि मादक वस्तुओ का सेवन नही करना चाहिए।

(११) यदि स्वास्थ्य-रेखा मे छोटे-छोटे द्वीप हो और उगलियो के नाखून लम्बे हो तो जातक का फेफडा कमजोर होता है और उसे फेफडे सम्बन्धी रोगो का शिकार होना पडता है।

(१२) यदि स्वास्थ्य-रेखा मे छोटे-छोटे द्वीप हो और उगलियो के नाखून चौडे हो तो जातक को गले (कण्ठ) सम्बन्धी रोग अधिक होते है।

(१३) यदि स्वास्थ्य-रेखा मस्तक-रेखा तथा हृदय-रेखा के बीच गहरी तथा लाल रग की हो तो जातक को मस्तिष्क सम्बधी रोग, मूर्च्छा, मृगी, पक्षाघात, उन्माद आदि—होने की आशका रहती है।

(१४) स्वास्थ्य-रेखा का गहरे लाल रग का होना जातक के रक्त मे गरमी अथवा ज्वर होने का लक्षण समझना चाहिए। ऐसे रग की रेखा वाले जातक का स्वभाव चिडचिडा होता है।

(१५) यदि स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा के नीचे की ओर लाल रंग की हो तो जातक के हृदय मे सामान्य दुर्बलता तो रहती है, परन्तु उसे हृदय दौर्बल्य सम्बन्धी कोई बडा रोग नही होता।

(१६) युवावस्था बीत जाने पर जातक के हाथ में अच्छी स्वास्थ्य रेखा बहुत कम दिखाई देती है।

(१७) यदि प्रौढावस्था अथवा वृद्धावस्था मे भी हाथ पर स्वास्थ्य-रेखा बिल्कुल न हो अथवा पूर्णत. निर्दोष हो तो उस आयु मे भी जातक का स्वास्थ्य अच्छा बन जाता है।

(१८) जिस व्यक्ति के हाथ मे स्वास्थ्य-रेखा विल्कुल ही नही होती उसके स्वभाव मे चचलता अधिक होती है। ऐसा व्यक्ति प्रत्येक काम को तेजी तथा फुर्ती से करता है और सदैव प्रसन्न वना रहता है।

(१९) स्पष्ट तथा निर्दोष स्वास्थ्य-रेखा जातक की स्मरण शक्ति तथा व्यवसायिक योग्यता मे वृद्धि की सूचक होती है।

(२०) चौडी तथा विन्दुदार स्वास्थ्य-रेखा जातक को भविष्य में विशेषकर वृद्धावस्था मे शारीरिक दुर्बलता प्रदान करने की सूचक होती है।

(२१) स्वास्थ्य-रेखा पर टूटे हुए स्थान तथा क्रास-चिह्न भूत तथा भविष्य मे रोग होने के सूचक होते है। यदि रोग कठिन होगा तो उसके चिह्न जीवन-रेखा, मस्तक-रेखा अथवा हृदय-रेखा पर भी दिखाई देगे।

(२२) स्वास्थ्य-रेखा का रग यदि प्रारभ मे अधिक लाल हो तो उस जातक के पेट मे गडवडी तथा सिर दर्द आदि होने का सूचक समझना चाहिए।

(२३) स्वास्थ्य-रेखा किसी क्षुद्र-रेखा द्वारा काटी गई हो तो उस वयोमान मे जातक को किसी वीमारी का सामना करना पड़ता है। यदि काटने वाली रेखा हल्की हो तो रोग साधारण होगा और गहरी हो तो रोग गहरा तथा दु साध्य होगा—यह समझना चाहिए।

(२४) यदि किसी व्यक्ति के हाथ मे स्वास्थ्य-रेखा ऊपर की ओर चले और वीच मे अधिक गहरी होकर अपनी एक शाखा सूर्य-क्षेत्र की ओर भेजे तथा स्वय वुध-क्षेत्र की ओर वढे, साथ ही वह नीचे की अपेक्षा ऊपर की ओर अधिक गहरी तथा लाल हो तो ऐसी रेखा वाले व्यक्ति का स्वास्थ्य युवावस्था मे कमजोर रहता है, वीच मे कुछ समय के लिए वह सुधर जाता है, तत्पश्चात् वृद्धावस्था आरम्भ होते ही उसे

मस्तिष्क-पीडा का शिकार बनना पडता है। ऐसे व्यक्ति को यश पाने की लालसा भी रहती, परन्तु रुग्ण रहने के कारण उसे अपनी इच्छा को पूर्ण करने में सफलता नही मिल पाती। जीवन के अन्तिम समय मे भले हो उसे थोडा बहुत यश प्राप्त हो जाय।

(२५) भाग्य-रेखा तथा मस्तक-रेखा के साथ स्वास्थ्य-रेखा का सयोग से जो एक त्रिकोण बनता है, उसके विषय मे कुछ विद्वानो का मत है कि ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति को भूत-प्रेत दिखाई देते है और वह तांत्रिक होता है। परन्तु अधिकतर ऐसी बात देखने को नही मिलती अलबत्ता ऐसे त्रिकोण-चिह्न वाले व्यक्ति मृगी तथा घबराहट के रोगी अवश्य पाये जाते है। ऐसे लोग सकोची तथा शकालु स्वभाव के भी होते है।

(२) यदि हाथ मे सहायक स्वास्थ्य-रेखा भी हो, अर्थात् स्वास्थ्य रेखा दुहरी हो और उस सहायक रेखा अथवा दोनो रेखाओ का रग हल्का गुलाबी हो तो उसके प्रभाव से स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव कम ही पडता है।

(२७) स्वास्थ्य-रेखा का रग हल्का गुलाबी हो और वह निर्दोष हो तो ऐसा जातक अमोद-प्रमोद प्रिय, स्वस्थ, दीर्घायु, तथा बलवान होता है।

(२८) यदि मस्तक-रेखा के समीप छोटी सी स्वास्थ्य-रेखा हो और उसका रग गहरा लाल हो तो ऐसो रेखा वाला जातक ज्वर, मदाग्नि, सिर दर्द आदि रोगो से ग्रस्त रहता है। यदि रेखा का रग काला हो तो उसे किसी वाहन द्वारा दुर्घटना ग्रस्त हो जाने का भय बना रहेगा।

(२९) जीवन रेखा से स्वास्थ्य-रेखा के मिलन-बिन्दु को तब तक जातक के प्राणान्त होने का समय नही मान लेना चाहिए जब तक कि स्वास्थ्य रेखा पर कोई अशुभ चिह्न न हो अथवा ग्रह क्षेत्र अत्युच्च

हाथ की वनावट अशुभ अथवा जातक का हाथ भाग्य-रेखा हीन न हो यदि ग्रह-क्षेत्र उच्च हो और भाग्य-रेखा प्रवल हो तथा स्वास्थ्य-रेखा पर भी कोई अशुभ-चिह्न न हो तो ऐसी स्थिति मे स्वास्थ्य-रेखा के जीवन-रेखा के साथ मिलन-बिन्दु के वयोमान मे भी जातक की मृत्यु हो जाना निश्चित नही है। उस अवस्था मे जातक का किसी मृत्यु तुल्य कष्ट का सामना करना पड़े, यह सभव हो सकता है।

(३०)यदि जातक पर वृहस्पति का प्रभाव अधिक हो और स्वास्थ्य-रेखा खराव हो तो उसके रोग का कारण अधिक भोजन करना समझना चाहिए।

(३१) यदि मस्तक-रेखा मे कोई अशुभ लक्षण हो और स्वास्थ्य-रेखा भी खराव हो तो जातक को यकृत एव पेट सम्वन्धी बीमारियां होती हैं।

(३२) यदि हृदय-रेखा मे कोई अशुभ लक्षण हो और स्वास्थ्य-रेखा भी खराव हो तो जातक को हृदय रोग होता है।

(३३) जिस वयोमान मे भाग्य-रेखा खराव हो, उसी वयोमान में स्वास्थ्य-रेखा भी दोष पूर्ण हो तो उस आयु मे जातक के स्वास्थ्य में खरावी हो जाने के कारण भाग्य मे हानि पहुचेगी–यह समझना चाहिये

(३४) यदि स्वास्थ्य-रेखा खण्डित अथवा दूषित हो और हाथ में पतली-पतली अनेक रेखाओ का जाल हो तो जातक को यकृत-सम्बन्धी रोग समझना चाहिए। उसके कारण जातक का स्वभाव भी चिडचिडा हो जाता है। यदि जातक का यकृत और पेट ठीक काम कर रहा होता है तथा काई स्वभाविक दुर्वलता भी नही होती तो उस स्थिति मे हाथ पर पतली-पतली वहुत सी रेखाए दिखाई नही देती। यहा तक कि कभी-कभी स्वास्थ्य- रेखा भी दिखाई नही देती अथवा वह लुप्त हो जाती है।

(३५) यदि जीवन-रेखा, मस्तक-रेखा, हृदय-रेखा, स्वास्थ्य-रेखा तथा मगल-रेखा—ये सभी रेखाए अच्छी हो मगल का क्षेत्र उन्नत हो तथा हाथो पर बाल हो, तो ऐसे लक्षणो वाला जातक तामसी प्रकृति का तथा अत्यन्त बलवान होता है। ऐसे व्यक्ति को खेल-कूद तथा व्यायाम आदि मे अपनी शक्ति लगानी चाहिए, अन्यथा उसकी शारीरिक-शक्ति उसे दुष्कार्यो की ओर प्रेरित कर देगी।

(३६) स्वास्थ्य-रेखा पर कही भी छोटी अवरोध-रेखा काटने वाली, रेखा, क्रास, द्वीप, अथवा बिन्दु-चिह्न दिखाई दे तो उसे किसी रोग का लक्षण समझना चाहिए। यह चिह्न जिस वयोमान पर होगे उसी आयु मे जातक को रोग का शिकार होना पडेगा। यदि इन चिह्नो के बाद स्वास्थ्य रेखा ठीक तथा निर्दोष चली हो तो जातक को रोग से छुटकारा मिलकर स्वास्थ्य लाभ हो जाता है, परन्तु यदि ये चिह्न रेखा के अन्तिम भाग पर दिखाई दे तो जातक को पूर्ण रोग का लाभ नही हो पाता।

(३७) बृहस्पति, शुक्र अथवा सूर्य के प्रभाव से युक्त जातक की हथेली का रग गुलाबी होता है तथा मगल का प्रभाव अधिक हो तो हथेली का रग गहरा लाल होता है। ऐसे रग वाले हाथ मे स्वास्थ्य-रेखा का रग यदि पीला दिखाई दे तो उसे अत्यधिक दोषपूर्ण समझना चाहिए। इसके विपरीत बुध अथवा शनि से प्रभावित जातक की हथेली मे अधिक ललाई नही होती। अत: यदि वैसी हथेली मे स्वास्थ्य-रेखा का रग कुछ पीलापन लिए हो तो उसे अधिक दोषपूर्ण नही समझना चाहिए।

जिन लोगो पर चन्द्रमा का प्रभाव अधिक होता है, उनके हाथ पर सफेदी अथवा पीलापन दिखाई देता है। ऐसे हाथ मे यदि स्वास्थ्य-रेखा का रग भी पीला हो तो उसे जिगर की खराबी अथवा पित्त का प्रकोप समझना चाहिए। ऐसी रेखा तथा रग वाले जातक उत्साहहीन

दु:खी तथा चिड़चिडे स्वभाव के पाये जाते हैं। ऐसे हाथों मे यदि स्वास्थ्य-रेखा दोषपूर्ण भी हो तो वह अधिक अनिष्टकारी होती है।

(३७) स्वास्थ्य-रेखा पर विन्दु-चिह्न का होना उदर-विकार का लक्षण समझना चाहिए। यदि विन्दु का रग लाल हो तो वह तीव्र ज्वर को प्रकट करता है और यदि सफेद रग हो तो यह समझना चाहिए कि जातक को अधिक समय तक बीमारी का शिकार रहना पड़ेगा।

(३८) बुध-क्षेत्र से व्यापारिक तथा वुद्धि सम्बन्धी विषयो का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। स्वास्थ्य-रेखा चूकि बुध-क्षेत्र पर जाती है, इसी लिए कुछ विद्वान् इस रेखा द्वारा जातक की बुद्धि एव व्यवसाय सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त करने के सम्बन्ध मे कहते है। उनके मत को पिछले प्रकरण मे दिया जा चुका है। यहा यह वात स्मरण रखनी चाहिए कि वुद्धि अथवा व्यवसाय-क्षेत्र मे कोई व्यक्ति विना अच्छे स्वास्थ्य के सफलता प्राप्त नही कर पाता। इसी लिए इस रेखा द्वारा जातक के वुद्धि, व्यवसाय तथा स्वास्थ्य–इन तीनो वातो का विचार किया जाता है।

(३९) स्वास्थ्य-रेखा द्वारा जातक की वुद्धि, व्यवसाय अथवा स्वास्थ्य सम्बन्धी-विचार करने समय उगलियो की वनावट तथा उनके पर्वों की न्यूनाधिक लम्बाई पर भी विचार करना आवश्यक है, अत: हस्त परीक्षक को हाथ के सभी लक्षणो पर ध्यान देना चाहिए।

(४०) यदि स्वास्थ्य-रेखा अत्यधिक सवल, सुन्दर, लम्बी, गहरी तथा पुष्ट हो तो उस पर पड़े हुए सामान्य दोष-चिह्न भी अधिक हानिकारक सिद्ध नही होते, परन्तु यदि रेखा छोटी, पतली, उथली तथा अपुष्ट हो तो दोष-चिह्न भी अपना प्रभाव अधिक प्रदर्शित करते हैं।

(४१) जिन लोगो के हाथ मे आरम्भ से ही स्वास्थ्य-रेखा नही होती, स्वास्थ्य मे सुधार अथवा व्यवसाय आदि मे उन्नति और यश

प्राप्त करने के समय उन लोगो के हाथ मे भी यह रेखा-उभर कर दिखाई देने लगती है।

(४२) यदि स्वास्थ्य-रेखा खण्डित हो और शनि का पर्वत ऊचा उठा हुआ तथा फैला हुआ हो तो ऐसे लक्षण वाला जातक दन्त-रोगी होता है।

(४३) बुध के पर्वत पर पहुचते समय यदि रेखा अधिक लाल रंग की तथा पतली दिखाई देती हो तो जातक को सिर सम्बन्धी रोग मस्तक शूल आदि होता है।

(४४) यदि स्वास्थ्य-रेखा अपने मध्यमान मे गहरे लाल रग की हो तो जातक को बारम्बार ज्वर पीडा का शिकार होना पडता है।

(४५) यदि स्वास्थ्य-रेखा अपने आरम्भिक भाग मे अधिक लाल रग की दिखाई दे तो जातक की छाती मे कमजोरी बनी रहती है। अर्थात् उसे हृदय-दुर्बलता की बीमारी होती है।

(४६) यदि सम्पूर्ण स्वास्थ्य-रेखा गहरे लाल रग की हो तो मनुष्य अत्यन्त अहकारी तथा पशु के समान आचरण करने वाला होता है।

(४७) यदि स्वास्थ्य-रेखा श्वेत रग की तथा अधिक चौडी हो तो जातक को अधिक समय तक अजीर्ण रोग का शिकार बना रहना पड़ता है।

(४८) यदि स्वास्थ्य-रेखा कुछ अधिक गहरी तथा लाल रग की हो तो जातक नाजुक प्रकृति का होता है और वह किसी-न-किसा बीमारी से ग्रस्त वना रहता है।

(४९) यदि स्वास्थ्य-रेखा अधिक गहरो तो न हो परन्तु उसका रंग गहरा लाल हो तो ऐसा जातक अत्यन्त निर्दयी, कामो, कठोर, घमडी, मूर्ख, तथा मर्यादाओ का उल्लघन करने वाला होता है। डकत, खूनी लोगो के हाथो मे ऐसी रेखा प्राय देखने को मिलती है।

(५०) हथेली का रग सफेद हो और स्वास्थ्य-रेखा का रग पीला हो तो एसे जातक को जिगर, तिल्ली तथा कष्ण रोग की शिकायत बनी रहती है।

(५१) हथेली का रग पीला अथवा हल्का गुलावी हो और स्वा-स्थ्य-रेखा का रग सफेद हो तो ऐसे जातक को प्रमेह, धातु क्षीणता आदि रोगो की शिकायत रहती है।

(५२) स्वास्थ्य-रेखा हृदय-रेखा के समीप लहरदार हो तो जातक को हृदय-रोग होता है। इसी प्रकार यदि मस्तक-रेखा पर लहरदार हो तो मस्तक-सम्वन्धो रोग भाग्य-रेखा पर लहरदार हो तो धन-जन की हानि, सूर्य-रेखा पर लह रदार हो तो यश प्रतिष्ठा की हानि, जीवन-रेखा पर लहरदार हो तो किसो गहरो बीमारी के कारण स्वास्थ्य की हानि, प्रजापति-क्षेत्र पर लहरदार हो तो किसी दुर्घटना की सम्भावना वरुण-क्षेत्र पर लहरदार हो तो बुद्धि विनाश, चन्द्र-क्षेत्र पर लहरदार हो तो जल से भय अथवा हानि एव जुकाम, खासी, सर्दी आदि जल.य रोग एवं राहु अथवा केतु-क्षेत्र पर लहरदार हो तो धन एव सौभाग्य की हानि होतो है। यदि यह रेखा बढकर शुक्र-क्षेत्र तक चली गई हो और वहां लहरदार हो तो धातु क्षीणता, दन्त-पीड़ा, प्रेम मे निराशा, पानी मे डूवना आदि हानियो को प्रकट करती है।

(५३) यदि हथेली का रग सफेद तथा पीला मिश्रित रंग का हो और उसके ऊपर स्वास्थ्य-रेखा का रग सफेदी तथा कालिमा लिए हुए मिश्रित हो तो ऐसा जातक कफ प्रकृति का होता है। यदि उसके चन्द्र अथवा शुक्र-क्षेत्र भी अउन्नत हो तो वह व्यक्ति नजला, जुकाम, खांसी तथा सर्दी के अन्य रोगो से पीड़ित रहता है।

(५४) यदि उगलियां और नाखून लम्बे हो तथा नाखूनो पर चन्द्र-चिह्न अव्यवस्थित हो साथ ही स्वास्थ्य-रेखा हृदय-रेखा पर अपना

पूर्ण प्रभाव डाल रही हो तो ऐसे जातक को फेफड़े सम्बन्धी-रोगो का शिकार होना पडता है।

(५५) बुध-क्षेत्र पर जो एक छोटी-सी खडी रेखा किसी-किसी हाथ पर दिखाई देती है, उसे स्वास्थ्य-रेखा नही समझना चाहिए। उस रेखा के प्रभाव का वर्णन 'विवाह रेखा' खण्ड मे बुध-क्षेत्र पर पाई जाने वाली रेखाओ के अन्तर्गत किया जा चुका है।
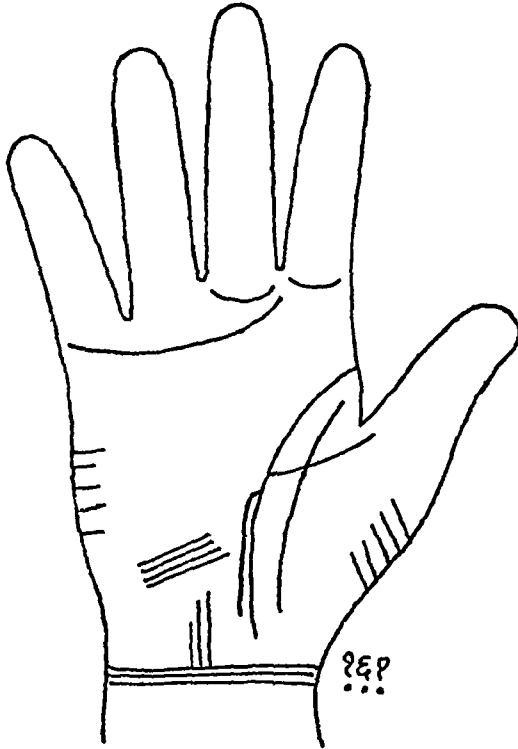
[हथेली पर क्षुद्र-रेखाओं की स्थिति]

क्षुद्र-रेखाएं

(प्राच्य तथा पाश्चात्य पद्धति)

हाथ पर पाई जाने वालो मुख्य सात रेखाए—

(१) जोवन-रेखा, (२) मस्तक-रेखा, (३) हृदय-रेखा, (४) भाग्य-रेखा, (५) सूर्य-रेखा, (६) विवाह-रेखा तथा (७) स्वास्थ्य-रेखा—का विस्तृत वर्णन वृहद् 'सामुद्रिक विज्ञान' के पिछले खण्डो मे किया गया है। सन्तानो का विषय चूकि मनुष्य के विवाह से सम्बन्धित है, अत 'विवाह-रेखा' के साथ ही 'सन्तान-रेखाओ, का वर्णन भी किया जा चुका है।

'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के प्रस्तुत खण्ड के पिछले पृष्ठो मे 'स्वास्थ्य-रेखा' के सम्बन्ध मे प्राच्य तथा पाश्चात्य-मत का विस्तृत उल्लेख किया गया है। अब हम हाथ पर पाई जाने वाली उन मुख्य-मुख्य क्षुद्र रेखाओ (छोटी-छोटी रेखाओ) का प्राच्य तथा पाश्चात्य-मतानुसार विस्तृत तथा सचित्र विवरण प्रस्तुत करने जा रहे हैं, जो जातक के जीवन पर अथवा विशेष प्रभाव डालने वालो सिद्ध होती है। वे रेखाएं निम्नलिखित हैं—

(१) मगल-रेखा ।

(२) शुक्र-मुद्रिका।

(३) शनि-मुद्रिका।

(४) वृहस्पति मुद्रिका ;

(५) यात्रा-रेखाएं ।

(६) भाई-बहिन को रेखाए।

हथेली, ग्रह-क्षेत्र, मणिबन्ध, अगूठा, उगली तथा कर-पृष्ठ पर पाई जाने वाली अन्य छोटी-छोटी रेखाओ तथा हस्त-चिह्नों का विस्तृत वर्णन 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के 'प्रभाव रेखाए और हस्त चिह्न' नामक नवे खण्ड मे किया गया है अत पूर्वोक्त क्षुद्र-रेखाओ के अतिरिक्त अन्य क्षुद्र-रेखाओ तथा हस्त-चिह्नो के सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त करने के लिए प्रस्तुत पुस्तक का अगला खण्ड पढना आवश्यक है।

- क्षुद्र-रेखाओ की स्थिति एव प्रभाव के सम्बन्ध मे प्राच्य पाश्चात्य विद्वानो के मत मे कही-कही अन्तर पाया जाता है। सामुद्रिक-विद्या सम्बन्धी प्राचीन भारतीय ग्रन्थो मे क्षुद्र-रेखाओ के सम्बन्ध मे बहुत कम विवरण प्राप्त होता है, जबकि पाश्चात्य-विद्वानो ने इन रेखाओं के प्रभाव के सम्बन्ध मे भी विस्तृत खोजे की है। यहा पर हम क्षुद्र-रेखाओ के सम्बन्ध मे प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानो के मत का एक साथ ही वर्णन कर रहे है। जहा दोनो पद्धतियो मे कोई विशेष अन्तर पाया जाता है, उसका उल्लेख यथा-स्थान पर दिया गया है।

हस्त-परीक्षक के लिए आवश्यक है कि वह क्षुद्र-रेखाओ के फलाफल के सम्बन्ध मे विचार करते समय भी हाथ की आकृति, अगूठे तथा उगलियो को बनावट, हस्त-चिह्न एव अन्य रेखाओ की स्थिति और उनका जातक के जीवन पर प्रभाव आदि विषयो पर भी पूरा-पूरा ध्यान दें। केवल किसी एक रेखा की स्थिति को देखकर ही फलादेश कर बैठना कभी भी युक्ति सगत नही होता, यह बात बार-बार कही जा चुकी है।

मंगल-रेखा

मंगल-रेखा को अग्रेजी में 'Line of Mars' कहा जाता है। सामुद्रिक शास्त्री-इसे जीवन-रेखा की सहायक रेखा मानते है।

चित्र १६२—यह रेखा-मगल रेखा के द्वितोय क्षेत्र से प्रारम्भ होकर जीवन-रेखा के समानान्तर गोलाई लिये हुए शुक्र-क्षेत्र पर चलतो है। यह रेखा प्रत्येक व्यक्ति के हाथ पर नही पाई जाती, परन्तु जिन लोगो के हाथ मे यह रेखा रहती है, उनमे प्राण-शक्ति अधिक होती है।

मगल-रेखा जीवन-रेखा के दोषो को निवृत्त करने वाली तथा आयु एव स्वास्थ्य वृद्धि करने वाली कही जातो है। वलवान मगल रेखा वाले जातक अत्यधिक उत्साही, परिश्रमी, स्वस्थ, सहनशील, कुशाग्रबुद्धि, आलस्य-हीन तथा कर्मठ होते हैं। वे उन कामों को करना अधिक पसन्द करते है, जिनमे शारीरिक श्रम की आवश्यकता पडे।

उपर्युक्त गुणो मे वृद्धि करने वाली होने पर भी मंगल-रेखा की सवसे वडी बात यह है कि इस रेखा वाले जातक का हृदय अपेक्षाकृत कुछ दुर्वल होता है, इसलिए वह लड़ाई-झगड़ो से हमेशा बचा ही रहना चाहता है। शरीर से स्वस्थ होने पर भी वह झझटो मे नहीं उलझना और अपनो अप्रतिष्ठा को सहन करने तथा प्रतिशोध की भावना रखने के वावजूद भो विपक्षी से हाथापाई आदि नही करता।

मगल-रेखा वाले व्यक्ति कला-कौशल, विज्ञान, दार्शनिकता आदि के क्षेत्र मे प्रवीणता प्राप्त करने वाले होते है। उनका मुखमण्डल तेजस्वी तथा दूसरो को प्रभावित करने वाला होता है।

चित्र १६३—मगल-रेखा की दूसरी स्थिति वह होती है, जबकि वह द्वितीय मगल-क्षेत्र के पास जीवन-रेखा से हो आरम्भ होकर उसके साथ न्यून कोण बनाती हुई जीवन-रेखा से दूर हटकर शुक्र-क्षेत्र पर पहुचती है। ऐसी मगल-रेखा वाले जातक अपनी आयु मे वृद्धि होने के साथ-ही-साथ हठी, ईर्ष्यालु, लापरवाह, जिद्दी, चिडचिडे तथा झगडालू स्वभाव के होते चले जाते है। उनमे प्रतिशोध की भावना अत्यधिक होती है और वे शीघ्र ही लडाई-झगडा करने पर उतारू हो जाते है। ऐसी मगल-रेखा वाले जातक अपशब्दो (गालियो) का प्रयोग भी करते है और हसी-हसी मे ही खिसिया जाते है।

मगल-रेखा की विभिन्न स्थितियो के सम्बन्ध मे अन्य बातें निम्नानुसार समझनी चाहिए—

चित्र १६४—यदि मगल-रेखा प्रारम्भ से अन्त तक जीवन-रेखा के साथ-साथ चल रही हो तो ऐसी रेखा वाले जातक मे प्राण-शक्ति की
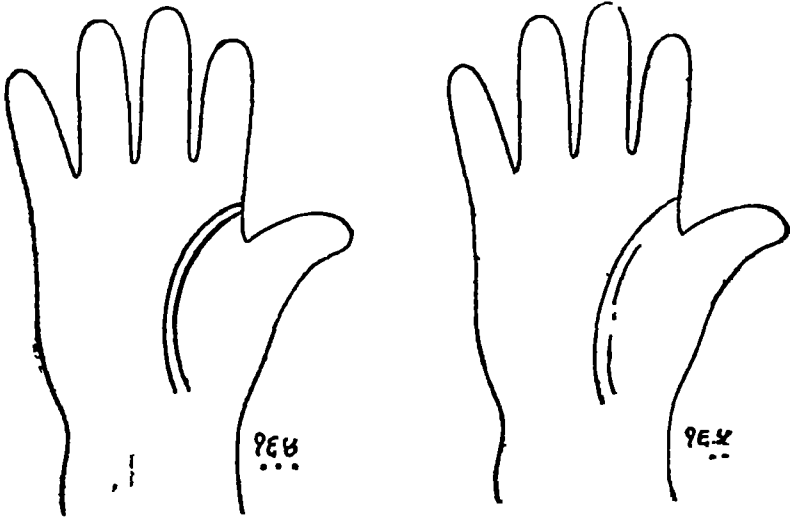
अधिकता होती है। वह शरीर से स्वस्थ, कर्मठ, उत्साही, परिश्रमी तथा दीर्घजीवी होता है।

चित्र १६५—यदि मगल-रेखा पूर्वोक्त प्रकार से जीवन-रेखा के प्रारम्भ से अन्त तक साथ-साथ न चली हो, परन्तु प्रारम्भ मे, अन्त मे अथवा मध्य मे किसी स्थान पर जीवन-रेखा के साथ दिखाई देती हो तो जिस वयोमान मे निर्दोष मगल-रेखा जीवन-रेखा के समानान्तर चल रही होगी, उस वयोमान मे जातक स्वस्थ, उत्साही, परिश्रमी तथा कर्मण्ता आदि अन्य गुणों से सुसम्पन बना रहेगा।

चित्र १६६—यदि मगल-रेखा से कोई शाखा-रेखा निकल कर जीवन-रेखा को काटती हुई ऊपर की ओर निकल जाय तो वह जातक के लिए परिश्रम के फलस्वरूप भाग्योदय की परिचायिका होती है। ऐसी शाखा-रेखा वाला जातक जितना अधिक परिश्रम करता है, उतनी हा अधिक उसके भाग्य मे वृद्धि होती है।
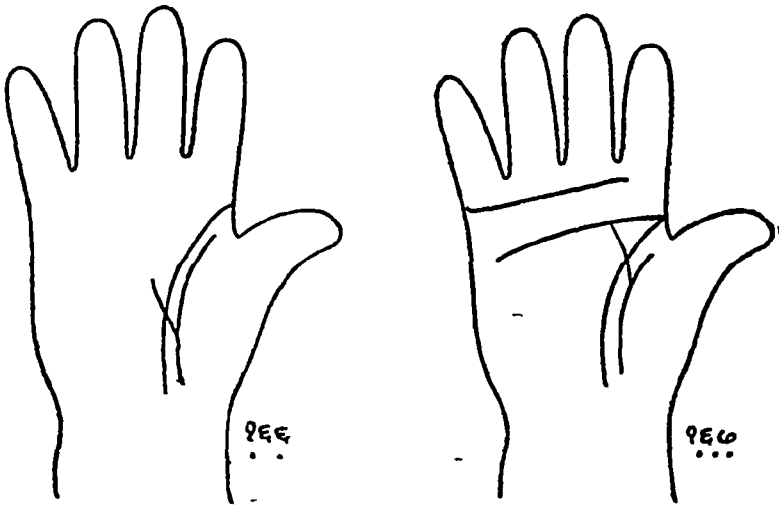
चित्र १६७—यदि मंगल-रेखा मे कोई ऊर्ध्वगामी शाखा-रेखा निकल कर मस्तक-रेखा मे जा मिले तो जातक की प्राण शक्ति उसके

मस्तिष्क को बलवान बनाती है। ऐसी रेखा वाले जातक को मस्तिष्क-शक्ति तथा स्मरण-शक्ति अत्यधिक तीव्र होती है।

चित्र १६८—यदि मगल-रेखा मे से कोई ऊर्ध्वगामी शाखा-रेखा निकल कर भाग्य-रेखा मे जा मिले तो वह जातक के भाग्य मे वृद्धि करती है। परन्तु वही शाखा-रेखा यदि भाग्य-रेखा को काटती हुई आगे निकल जाय तो उसे अशुभ फलदायक समझना चाहिए। उस स्थिति मे जातक की भाग्य-हानि होती है।
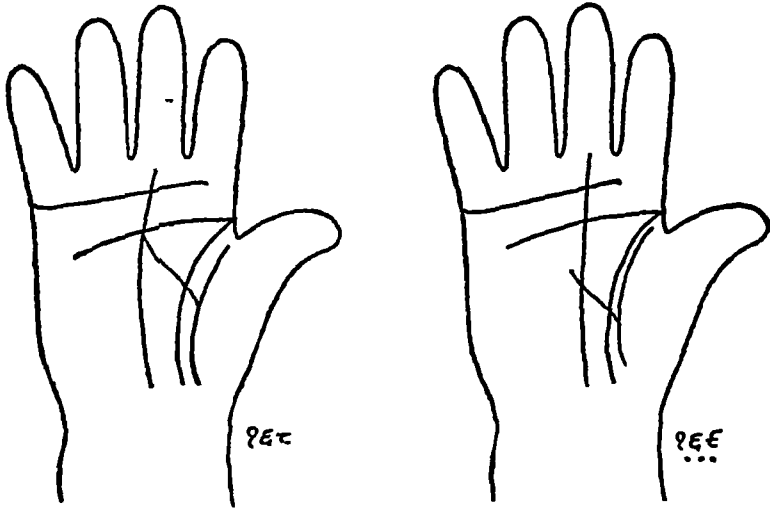
चित्र १६९—यदि मगल-रेखा मे से कोई शाखा-रेखा निकल कर भाग्य-रेखा को काटे तो जातक अत्यधिक विषयी (कामी) होता है, जिसके कारण उसके भाग्य तथा यश की हानि होती है। यदि भाग्य-रेखा पर कोई बिन्दु-चिह्न, क्रास अथवा खड़ी रेखा भी हो तो वह हानि अधिक बढ जाती है।

चित्र १७०—यदि मंगल-रेखा में से कोई शाखा-रेखा निकल कर मस्तक-रेखा को काट दे तो जातक की मस्तिष्क-शक्ति को हानि पहुचती है, फलतः उसका दिमाग कमजोर हो जाता है। यदि मस्तक-रेखा पर कोई अशुभ लक्षण भी हो तो इस फलादेश की पुष्टी होती है।
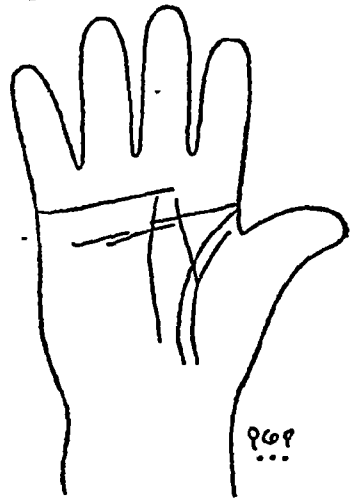
चित्र १७१—यदि मंगल-रेखा मे से कोई शाखा-रेखा निकलकर मस्तक-रेखा को काटती हुई आगे बढ़ जाय और मस्तक-रेखा दोष-पूर्ण हो तो जातक को गहरी दिमागी कमजोरी होती है। यदि सदोष मस्तक-रेखा पर नक्षत्र-चिह्न भी हो तो जातक पागल हो जाता है।

चित्र १७२—यदि मगल-रेखा मे से कोई शाखा-रेखा निकल कर चन्द्र-क्षेत्र पर पहुचे तो ऐसी रेखा वाला जातक अत्यन्त विलासी, भ्रमणशील, नृत्य-गायन का प्रेमी तथा चचल प्रकृति का होता है। अपने ऐसे स्वभाव के कारण वह यश, धन तथा स्वास्थ्य की भी हानि करता रहता है।

चित्र १७३—यदि मंगल-रेखा में से कोई शाखा-रेखा निकल कर चन्द्र-क्षेत्र पर गई हो और उस शाखा-रेखा के अन्तिम छोर पर कोई क्रास, नक्षत्र, बिन्दु अथवा खडी रेखा का चिह्न हो तो जातक अत्यधिक विषयी होता है, जिसके कारण उसकी शारीरिक-शक्ति नष्ट हो जाती है और वह अचानक ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

चित्र १७४—यदि पूर्वोक्त प्रकार से मगल-रेखा से कोई शाखा-रेखा निकल कर चन्द्र-क्षेत्र को गई हो और उसके अन्तिम भाग पर कोई क्रास, नक्षत्र, आदि का चिह्न हो तथा जीवन-रेखा के अन्त पर भी 'क्रास' अथवा 'नक्षत्र' का चिह्न हो तो जातक अत्यधिक विलासी होता है, और उसकी शारीरिक शक्ति
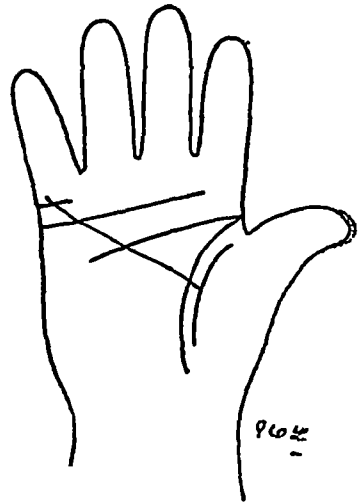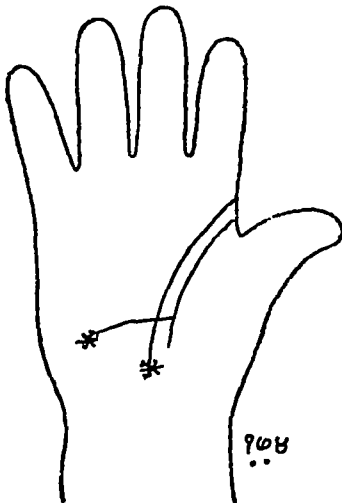
जल्दी ही क्षीण हो जाती है, जिसके कारण वह शीघ्र तथा आकस्मिक मृत्यु को प्राप्त हो जाता है ।

चित्र १७५—यदि मगल-रेखा से कोई शाखा-रेखा निकल कर विवाह-रेखा को काट रही हो तो जातक पर-स्त्री (अथवा पर पुरुष) होता है, जिसके कारण उसका वैवाहिक जीवन दुखमय हो जाता है ।

चित्र १७६—यदि पूर्वोक्त प्रकार से मगल-रेखा से कोई शाखा-रेखा निकल कर विवाह-रेखा को काट रही हो तथा विवाह-रेखा भी द्वि-जिह्व हो तो जातक के अनुचित-प्रेम सम्बन्धो की सख्या अधिक होती है, जिसके कारण उसके विवाहित-जीवन के सुख मे अत्यधिक बाधा पड़ती है ।
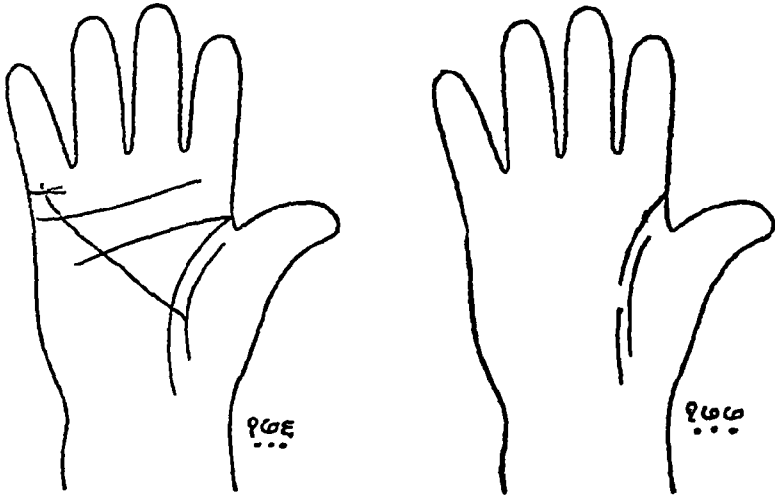
टिप्पणी—मगल-रेखा से उत्पन्न होने वाली उक्त शाखा-रेखाओं के प्रभाव का वर्णन 'विवाह-रेखा' खण्ड में भी किया जा चुका है। पाठकों की जानकारी के लिए, मगल-रेखा से सम्बन्धित होने के कारण ही इन रेखाओ का यहां दुबारा वर्णन कर दिया गया है ।

चित्र १७७—यदि जीवन-रेखा किसी स्थान पर खण्डित हो, परन्तु

उसके समानान्तर चलने वाली मगल-रेखा उस स्थान पर निर्दोष हो अर्थात् वह उस रिक्त स्थान की पूर्ति कर रही हो तो खण्डित जीवन-रेखा का दोष दूर हो जाता है। ऐसी स्थिति मे खण्डित जीवन-रेखा वाले वयोमान मे जातक की मृत्यु नही होती। पुष्ट तथा जीवन-रेखा की सहायक मगल-रेखा उस दोष को दूर कर जातक की प्राण-रक्षा करती है।

चित्र १७८—जीवन-रेखा लहरदार अथवा जजीरदार हो तो वह जातक की बीमारी अस्वास्थ्य तथा प्राण शक्ति मे कमी की सूचक होती है, परन्तु उसी के समानान्तर यदि मगल-रेखा पुष्ट तथा निर्दोष हो तो वह जीवन-रेखा के दोष को दूर कर देती है और जातक की बीमारियो आदि से रक्षा करती है।
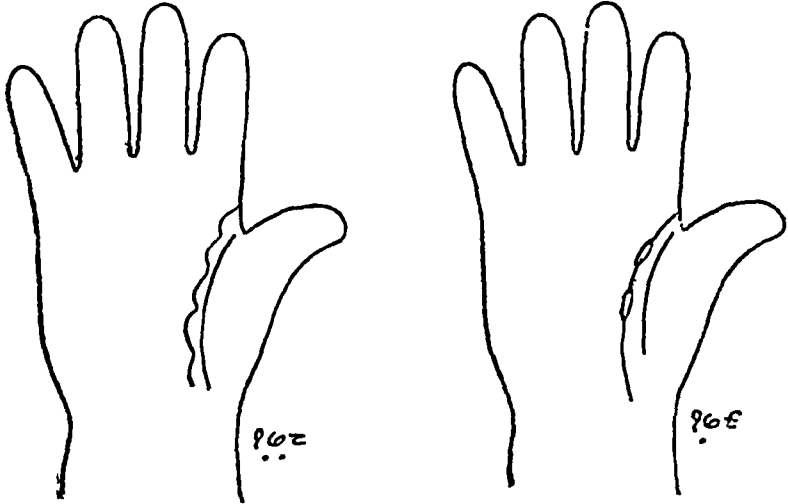
चित्र १७९--जीवन-रेखा द्वीपदार हो तो वह भी जातक के लिए उस वयोमान मे बीमारी की सूचक होती है, परन्तु ऐसी द्वीपदार जीवन-रेखा के समानान्तर ही यदि मगल-रेखा पुष्ट तथा निर्दोष स्थिति मे विद्यमान हो तो वह जीवन-रेखा के उक्त दोष को कम कर

देती है। ऐसी स्थिति मे यदि जातक बीमार पडता भी है तो वह बीमारी साधारण होती है और उसे आरोग्य लाभ भी शीघ्र हो जाता है।

चित्र १८०—यदि मगल-रेखा जीवन-रेखा से एक दम सटी हुई समानान्तर जा रही हों तो ऐसी रेखा वाला जातक अत्यधिक प्राण शक्ति से सम्पन्न तथा स्वदेश-प्रेमी होता है जन-समाज के ऊपर उसका व्यापक प्रभाव होता है और उसे सर्वत्र यश तथा सम्मान की प्राप्ति भी होती है।
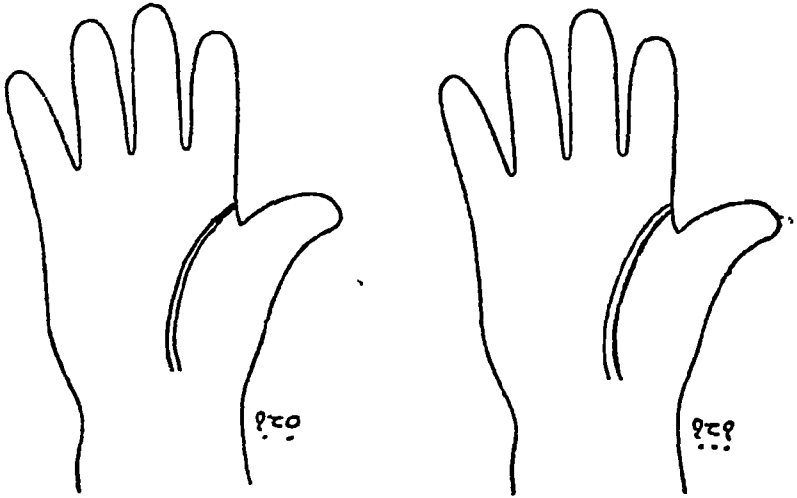
चित्र १८१—यदि जीवन-रेखा पतली हो और मगल-रेखा अधिक गहरी तथा पुष्ट दिखाई दे तो यह समझना चाहिए कि जातक को वाह्य रूप से जो शक्ति दिखाई देती है, उसकी प्राण-शक्ति उससे भी कही अधिक बलवान है। ऐसी रेखा वाले व्यक्ति बड़े परिश्रमी तथा गंभीर स्वभाव के होते हैं।

चित्र १८२—यदि जीवन-रेखा अधिक गहरी हो और मगल-रेखा पतली हो तो उस स्थिति मे मगल-रेखा को जीवन-रेखा की

सहायिका रेखा के रूप मे ही समझना चाहिए। ऐसी मगल-रेखा जातक की जीवन-शक्ति मे वृद्धि करती है तथा उसे वाह्य रूप से भी शक्ति-शाली बनाती है।
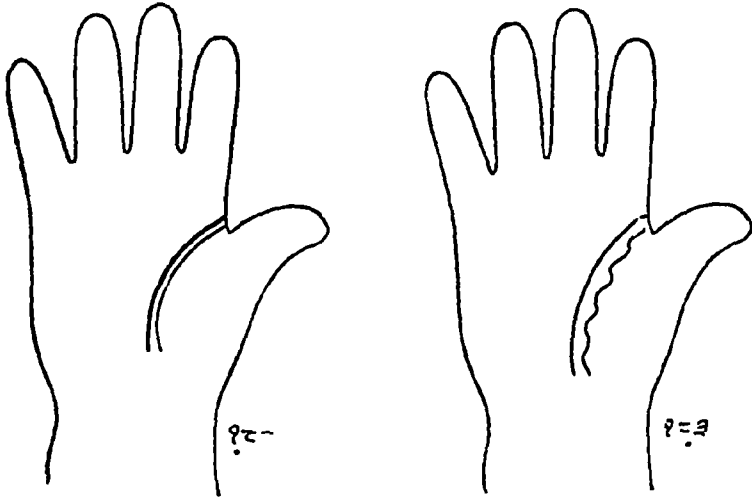
चित्र १८३—यदि जीवन-रेखा तो स्पष्ट हो, परन्तु मगल-रेखा लहरदार दिखाई दे तो ऐसी रेखाओ वाला जातक सेना अथवा पुलिस विभाग मे कोई छोटी-मोटी नौकरी करने वाला तथा साहसी होता है। उसमे प्राण शक्ति उतनी अधिक नही पाई जाती, जितनो कि मगल-रेखा के निर्दोष होने पर होती है।

चित्र १८४—यदि मगल-रेखा पर कोई द्वीप-चिह्न हो और जीवन-रेखा स्पष्ट तथा निर्दोष हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक अर्श (बवासीर रोग) से पीडित होता है। वह मासाहारी हृष्टपुष्ट तथा बलवान होता है और पुलिस अथवा सेना विभाग मे नौकरी करता है। ऐसे लोग चौकीदारो अथवा लडाई-झगडे के काम करते हुए भी पाये जाते हैं।

चित्र १८५—यदि मगल-रेखा द्वीप-चिह्न युक्त हो, हृदय-रेखा
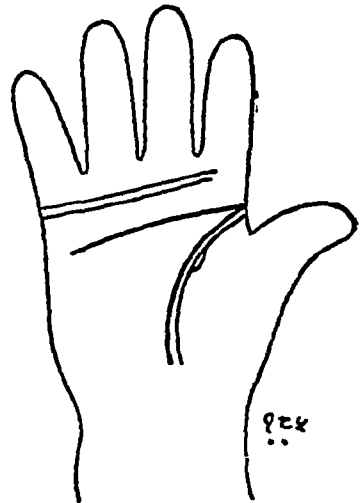
दुहरी हो तथा जीवन-रेखा निर्दोष एवं पुष्ट हो तो ऐसे जातक हिंसक स्वभाव के, डाकू, आतंकवादी अथवा षड्यंत्रकारी होते हैं। वे हर समय लड़ने-झगड़ने के लिए तैयार रहते हैं। वे शरीर से भी अत्यन्त हृष्ट-पुष्ट तथा बलवान होते हैं।
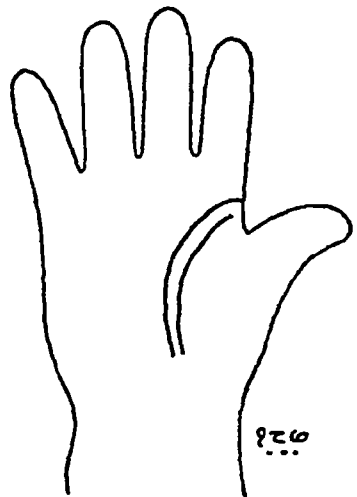
चित्र १८६—यदि मगल-रेखा पर कोई क्रास-चिह्न हो और उसकी एक शाखा जीवन-रेखा का स्पर्श कर रही हो अथवा उसे काट कर बाहर निकल गई हो तो ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति शासन द्वारा दण्डित किए जाते है अर्थात् उन्हे जेल यात्रा करनी पडती है। मगल-रेखा पर द्वीप, नक्षत्र, बिन्दु, चतुष्कोण आदि का प्रभाव हस्त चिह्नो के प्रभाव के अनुरूप ही समझना चाहिए।

चित्र १८७—यदि मगल-क्षेत्र असाधारण रूप से विस्तृत हो और मगल-रेखा निर्दोप हो तो ऐसे व्यक्ति अत्यन्त साहसी होते है और पुलिस तथा सेना आदि विभागो मे उच्च पद प्राप्त करते है। यदि मगल-रेखा दोष युक्त हो तो वे सामान्य पद (सैनिक, सिपाही आदि) पर काम करते है।

चित्र १८८—यदि शुक्र-क्षेत्र अत्यधिक उन्नत तथा विस्तृत हो और जीवन-रेखा तथा मगल-रेखा दोनो ही पुष्ट और निर्दोष हो तो ऐसी रेखाओ वाले जातक अत्यधिक विलासी (कामी) होते है; परन्तु अधिक भोग-विलास करने पर भी उनके स्वास्थ्य पर कोई विशेष बुरा
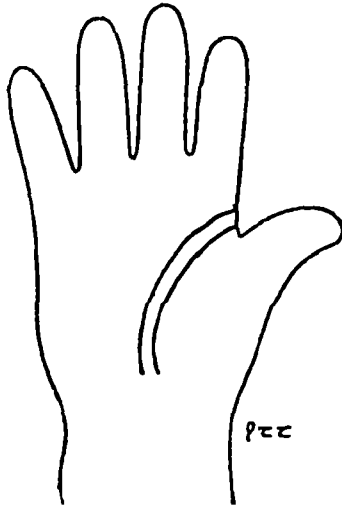
प्रभाव नही पड़ता। इसके लिए हृदय तथा मस्तक-रेखाओं का पुष्ट होना भी आवश्यक है।

शुक्र-मुद्रिका

तर्जनी अथवा मध्यमा उगली के नीचे से आरम्भ होकर अनामिका अथवा कनिष्ठा उगली के नीचे समाप्त होने वाली अर्द्धवृताकार रेखा को 'शुक्र-मुद्रिका' 'शुक्र-मेखला' अथवा 'शुक्र-कङ्कण' के नाम से पुकारा जाता है। अग्रेजो में इस रेखा को "Girdle of Venus" अथवा "Rings of Venus" कहा जाता है।

चित्र १८९—स्मरणीय है कि यह शुक्र-मुद्रिका पूर्वोक्त किन्ही दो उगलियो के नीचे ही रहती है अर्थात् या तो तर्जनी उगली के नीचे से आरम्भ होकर मध्यमा उगली के नीचे जाकर समाप्त हो जाती है या फिर मध्यमा उगली के नीचे से आरम्भ होकर कनिष्ठा उंगली के नीचे पहुचकर समाप्त होती है।
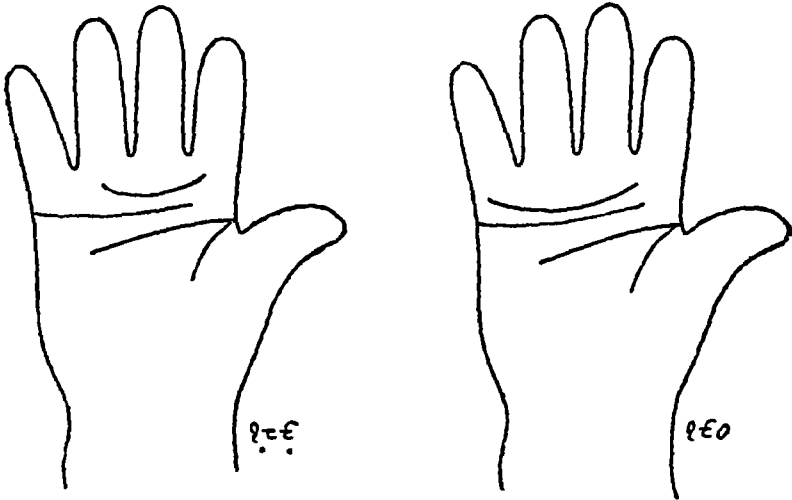
चित्र १९०—कुछ विद्वानो के मतानुसार 'शुक्र-मुद्रिका' केवल दो

उंगलियों के नीचे ही नही होती अपितु उसकी दो अन्य स्थितिया भी होती हैं—

(१) तर्जनी उंगली के नीचे से आरम्भ होकर कनिष्ठा उंगली के नीचे जाकर समाप्त होने वाली रेखा।

(२) मध्यमा तथा अनामिका उगलियो के आरम्भिक भाग से अन्तिम भाग तक को वृत्ताश मे घेरकर समाप्त हो जाने वाली रेखा।

चित्र १९१—शुक्र-मुद्रिका प्रत्येक व्यक्ति के हाथ मे नही होती। हजार मे से दो चार लोगो के हाथ मे ही यह रेखा दिखाई देती है, परन्तु जिन व्यक्तियो के हाथ मे यह रेखा होती है, उनके उपर अपना विशेष प्रभाव अवश्य प्रदर्शित करती है।
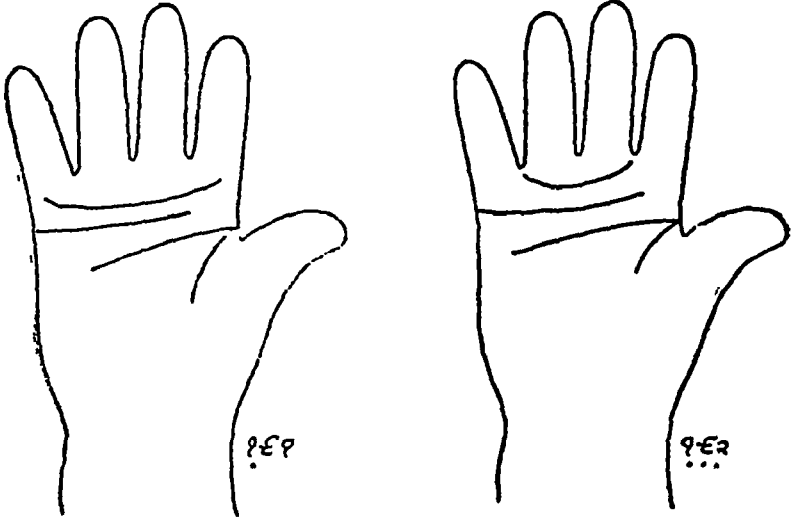
चित्र १९२—यद्यपि यह रेखा शुक्र-क्षेत्र पर नही होती फिर भी इसे शुक्र-मुद्रिका के नाम से पुकारा जाता है—इसका कारण यह है कि शुक्र को काम वासना का देवता माना गया है तथा शुक्र-क्षेत्र को काम-वासना का क्षेत्र माना जाता है। 'शुक्र-मुद्रिका' जिन व्यक्तियों के हाथ

मे होती है वे काम-विकारों के अधिक शिकार होते है तथा काम-विकारो से सम्बन्धित ईर्ष्या द्वेष, कलह, क्रोध आदि दुर्गुण तथा सौन्दर्य-प्रियता, कला-प्रियता सगीत-प्रियता आदि सद्‌गुण उनमे अधिक मात्रा में पाये जाते हैं। इसी कारण इस रेखा को शुक्र-क्षेत्र पर व्यवस्थित न होने पर भी 'शुक्र-मुद्रिका' का नाम दिया गया है।

शुक्र-मुद्रिका के प्रभाव के सम्बन्ध मे प्राचीन सामुद्रिक शास्त्रियो ने कहा है कि जिस व्यक्ति के हाथ मे यह रेखा होती है, वह व्यभिचारी होता है चूकि ऐसी रेखा वाले व्यक्ति मे काम-वासना अधिक पाई जाती है, अत. वह उसकी पूर्ति के लिए विपरीत-लिङ्गी जातको के अधिकाधिक सम्पर्क मे आता है। परन्तु सुप्रसिद्ध हस्त-रेखाविद् 'कीरो' का यह कहना है कि यदि जातक का हाथ चौडा और मोटा हो तो उस स्थिति मे शुक्र-मेखला की उपस्थिति जातक को व्यभिचारी बनाती है, परन्तु यदि जातक के हाथ की उगलिया नुकीली और पतली हो अथवा हाथ पतला, लम्बा और मुलायम हो तो उस स्थिति मे शुक्र-मेखला की उपस्थिति जातक को अत्यधिक बुद्धिमान्, सौन्दर्य-प्रिय कला-प्रिय, सगीत-प्रिय, चिन्तातुर, निराश, शीघ्र उत्साह मे आ जाने वाला, अस्थिर चित्त वृत्ति वाला तथा साधारण-सी बात पर ही नाराज हो जाना अथवा घबरा जाने वाला बनाती है। पतले और नुकीले हाथ तथा उंगलियों वाले व्यक्ति कुछ अधिक विलासी प्रवृति के तो हो सकते हैं, परन्तु वे व्यभिचारी भी हो, यह आवश्यक नही है।

शुक्र-मुद्रिका चूकि हृदय-रेखा के नीचे होती है, अतः इसे इस प्रकार से हृदय-रेखा की सहायिका-रेखा भी कहा जा सकता है फिर भी यह हृदय पर सयम रखने मे सहायक सिद्ध नही होती। अपितु हृदय में निवास करने वाले काम-विकारों को अधिक मात्रा में उत्तेजित ही करती है। 'शुक्र-मुद्रिका' केवल इसी मायने में हृदय-रेखा की सहायिका मानी जा सकती है कि यदि जातक हृदय-रेखा की

स्थिति के कारण अविक प्रेमी, विलासी तथा सौन्दर्य-प्रिय स्वभाव का हो तो शुक्र-मुद्रिका की उपस्थिति उसके इन भावो को और अधिक उत्तेजित कर देती है।

शुक्र-मुद्रिका दार्शनिक, विषम अथवा सूच्याकार हाथों मे अधिक पाई जाती है।

शुक्र-मुद्रिका के सम्बन्ध मे विभिन्न विद्वानो के मत का सार-सक्षेप निम्नानुसार समझना चाहिए—

(१) यदि शुक्र-क्षेत्र छोटा हो, हाथ ढीला तथा शक्तिहीन-सा हो, हाथ का रग सफेदी लिए हुए हो तथा उगलियो के तृतीय पर्व बीच में पतले हो, तो ऐसे हाथ मे शुक्र-मुद्रिका की उपस्थिति को काम-वासना का द्योतक न समझकर उसे जातक के लिए चिन्ता तथा घबराहट का लक्षण समझना चाहिए।

(२) यदि शुक्र-क्षेत्र बहुत बडा हो, शुक्र का पर्वत ऊचा उठा हुआ हो और उसपर आडी-तिरछी अनेक रेखाए हो, हाथ की उगलियो के तीसरे पर्व मोटे तथा पहले पर्व छोटे हो, मगल का क्षेत्र भी उन्नत हो, हथेली के रग मे लालिमा अधिक हो, कर-पृष्ठ पर बाल हों तथा हृदय-रेखा गहरी और लाल रग की हो तो ऐसे लक्षणो वाले जातक के हाथ मे शुक्र-मुद्रिका की उपस्थिति को चिन्ता अथवा घबराहट की द्योतक न समझकर काम-वासना की अधिकता तथा प्रबल व्यभिचार प्रवृति का लक्षण ही समझना चाहिए।

(३) यदि चन्द्र-क्षेत्र का नीचे वाला तृतीयाश अधिक उन्नत हो, हाथ पतला हो तथा उस पर अधिक मास न हो, शुक्र-क्षेत्र दबा हुआ हो तथा मगल का क्षेत्र भी नीचा हो तो ऐसे जातक के हाथ मे भी शुक्र-मुद्रिका को उपस्थिति का उसकी व्यभिचार-प्रवृत्ति का लक्षण ही समझना चाहिए। परन्तु ऐसे जातको की काम-वासना अथवा व्यभिचार-प्रवृत्ति सीमित दायरे मे ही रहती है।

(४) यदि जातक का शरीर-दुबला पतला हो, हाथ भी पतला हो और वह अनेक पतली-पतली रेखाओ से भरा हुआ हो तो ऐसे जातक के हाथ मे शुक्र-मुद्रिका की उपस्थित उसे चिन्ता, ईर्ष्या घबराहट आदि का शिकार वनाती है काम वासना को उत्तेजित करने वाली नही होती।

(५) यदि जातक का शरीर भारी हो, हाथ चौकोर हो तथा उस पर अधिक रेखाएं भी न हो, शुक्र-क्षेत्र उन्नत हो तथा हथेली का रग लालिमा लिए हुए हो तो ऐसे जातक के हाथ मे शुक्र-मुद्रिका की उपस्थिति काम-वासना को उत्तेजित करने का लक्षण होती है

(६) शुक्र-मुद्रिका जितने हाथ मे हो ऐसे प्राय. सभी स्त्री-पुरुष न्यूनाधिक मात्रा मे बुद्धिमान चतुर दूरदर्शी, अस्थिर स्वभाव वाले, चचल, आवेश मे आ जाने वाले तथा चिडचिडे स्वभाव के होते हैं। वे सभी अत्यधिक प्रसन्न और उत्साही तथा कभी अत्यधिक उदास और निराश से दिखाई देते हैं।

(७) शुक्र-मुद्रिका के प्रभाव के सम्वन्ध मे यह वात अन्तिम रूप से समझ लेनी चाहिए कि जव तक हाथ मे कामासक्ति के अन्य लक्षण दिखाई न दें तव तक इस रेखा वाला जातक अधिक कामासक्त नही होता। यह रेखा जिन स्त्रियो के हाथ मे होती है वे प्राय हिस्टीरिया एवं मूर्च्छा रोग की शिकार वनी रहती है। शुक्र-मुद्रिका की विभिन्न स्थितियो तथा अन्य-रेखाओ एव लक्षणो के साथ उसके सामजस्य का जातक के जीवन पर क्या प्रभाव पडता है, इसका सचित्र विवरण नीचे दिया जा रहा है—

चित्र १६३—शुक्र-मुद्रिका रेखा यदि तर्जनी उगली और मध्यमा उगली के नीचे मध्य भाग से आरम्भ होकर अनामिका तथा कनिष्ठ उगली के नीचे मध्य भाग मे जाकर गोलाई लिए हुए समाप्त हुई हो

ओर निर्दोष तथा स्पष्ट हो तो ऐसा जातक परमार्थी एव कविता तथा साहित्य मे रुचि रखने वाला होता है ऐसा जातक विलासी-प्रकृति का भी होता है अर्थात् उसमे काम-वासना कुछ अधिक होती है।
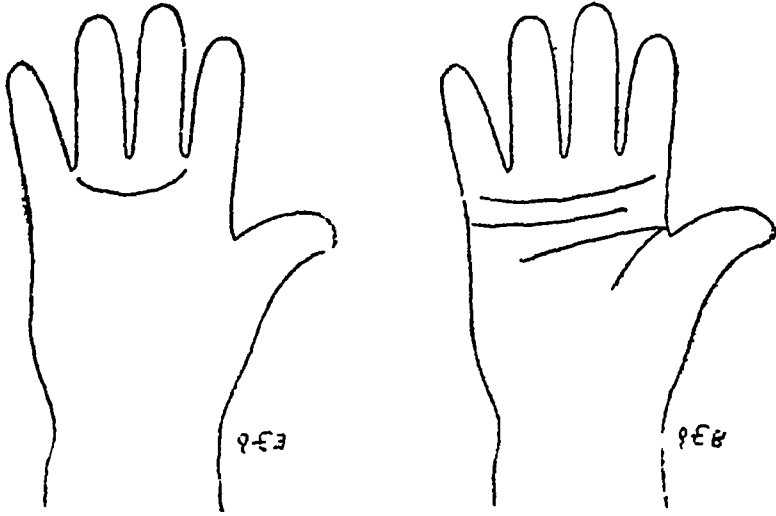
चित्र १६४—यदि शुक्र-मुद्रिका तर्जनी उगली के मूल से कनिष्ठा उगली के मूल तक फैली हुई हो तो ऐसा व्यक्ति महापापी, लम्पट तथा व्यभिचारी होता है। ऐसी रेखा वाले व्यक्ति को ध्वज भग आदि अनेक प्रकार के जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोग भी हो जाते है, फिर भी वह अपनी व्यभिचारी-प्रवृत्ति को नही छोडता।

चित्र १६५—यदि शुक्र-मुद्रिका कनिष्ठ उगली के मूल से आरम्भ होकर हृदय-रेखा का स्पर्श करके हृदय-रेखा को स्वय मे मिलाती हुई वृहस्पति के पर्वत पर गई हो अर्थात् शुक्र-मुद्रिका और हृदय-रेखा अपने मध्य भाग मे मिलकर एक हो गई हो और वे वृहस्पति के क्षेत्र पर समाप्त होती हो तो ऐसा व्यक्ति सच्चरित्र तथा अनेक विद्याओ का ज्ञाता होता है—

चित्र १६६—यदि शुक्र-मुद्रिका बीच मे टूटी हुई हो तो ऐसी रेखा
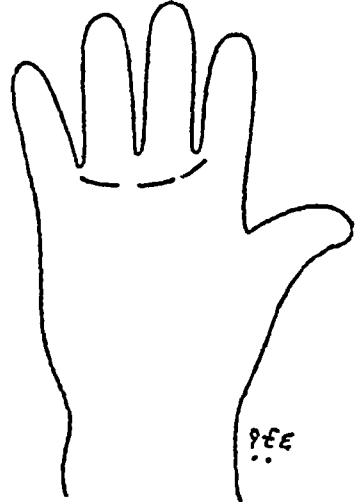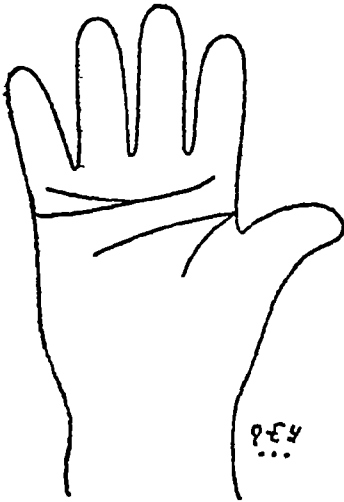
वाले व्यक्ति के चरित्र सम्बन्धी दोषो मे कुछ कमी आ जाती है, परन्तु ऐसी रेखा वाला जातक किसी भी कारण से बहुत शीघ्र विचलित तथा घबरा जाने वाला होता है।

चित्र १९७—यदि शुक्र-मुद्रिका छोटे-छोटे टुकड़ों से बनी हो तो
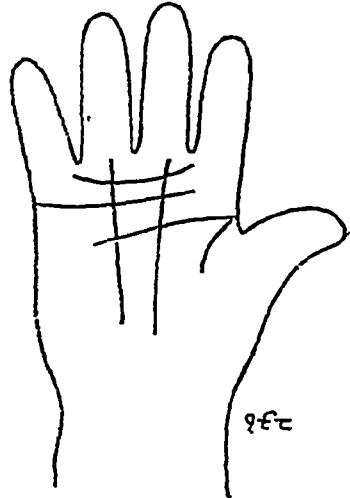
ऐसी रेखा वाला जातक बिना किसी नियम के पापाचार मे प्रवृत्त रहता है ऐसे व्यक्ति मे घबराहट, चिन्ता, तथा स्वाभाविक अस्थिरता बहुत अधिक पाई जाती है। ऐसी रेखा वाले व्यक्ति सदैव असन्तुष्ट, उदास तथा दुःखी से बने रहते हैं।

चित्र १९८—यदि सूर्य-रेखा और भाग्य-रेखा पुष्ट तथा निर्दोष हों और वे दोनों शुक्र-मुद्रिका को काट रही हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक अत्यन्त विद्वान, लेखक तथा प्रेमी स्वभाव का होता है परन्तु यदि शुक्र-मुद्रिका अधिक पुष्ट हो और ऐसा प्रतीत होता हो कि वह स्वयं भाग्य-रेखा तथा सूर्य-रेखा को काट रही है तो उस स्थित मे वह जातक के दुर्भाग्य की सूचक होती है और ऐसी रेखा वाले जातक की बुद्धि नष्ट हो जाती है।

चित्र १९९—यदि शुक्र-मुद्रिका गहरी तथा निर्दोष हो और वह भाग्य-रेखा सूर्य-रेखा के साथ ही वृहस्पति क्षेत्रस्थ किसी अन्य रेखा को भी काट रही हो तो ऐसी रेखा वाला जातक सौभाग्य विहीन होता है और उसकी बुद्धि भी कुण्ठित हो जाती है।
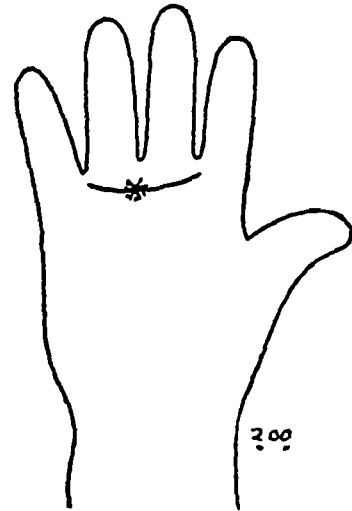
चित्र २००—यदि शुक्र-मुद्रिका के ऊपर कोई नक्षत्र चिह्न हो तो ऐसा जातक वीर्य-सम्बन्धी रोगो का शिकार होता है।

चित्र २०१—यदि शुक्र-मुद्रिका दोहरी हो तथा उसके ऊपर पूर्वोक्त नक्षत्र चिह्न भी हो तो ऐसे चिह्न वाला जातक वीर्य-सम्वन्धी किसी ऐसे रोग का शिकार बनता है जो कभी भी ठीक नही हो पाता।
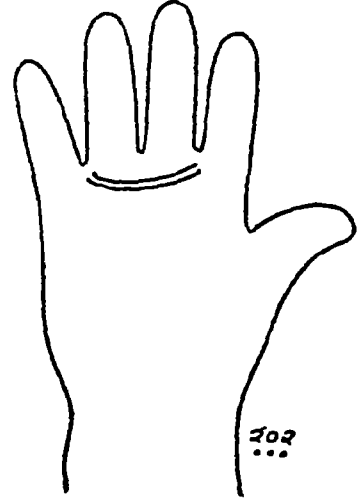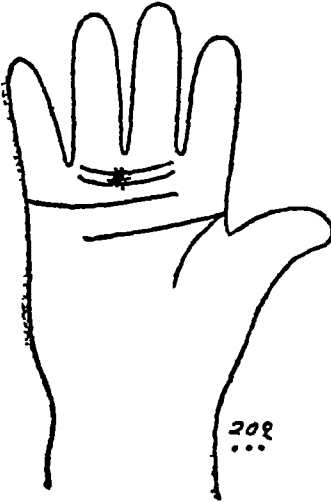
चित्र २०२—यदि किसी व्यक्ति के हाथ मे शुक्र-मुद्रिका दोनों हाथों में दिखाई दे तो वह जातक किसी पशु के साथ मैथुन कर्म करने में प्रवृत्त रहता है। ऐसी दुहरी रेखा यदि केवल हाथ में एक ही हो तो उक्त फलादेश मे कुछ कमी आ जाती है।

चित्र २०३—यदि शुक्र-मुद्रिका बुध-क्षेत्र पर पहुंच कर विवाह-रेखा का स्पर्श कर रही हो तो ऐसी रेखा वाला जातक अपनी पत्नी (अथवा पति) को अपने शिकजे मे रखना चाहता है। वह अपने जीवन-साथी के चरित्र पर शका करता रहता है तथा उसके हृदय मे अकारण ही ईर्ष्या बनी रहती है। जिसके कारण उसका वैवाहिक जीवन दु खमय हो जाता है।
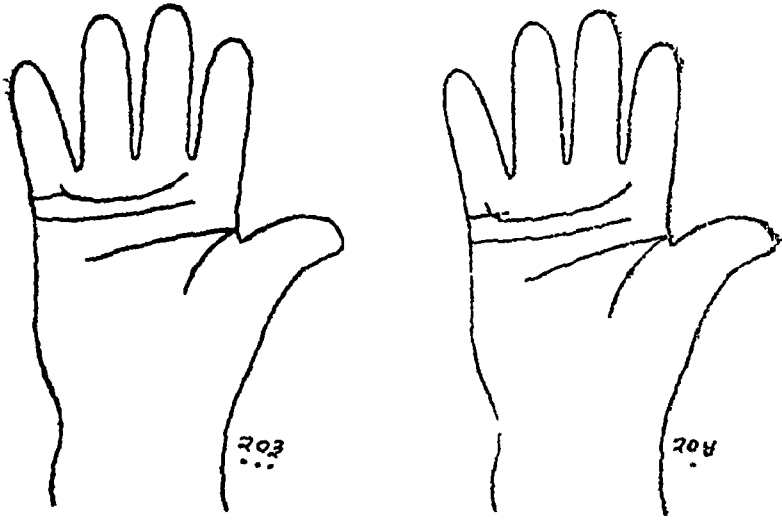
चित्र २०४—यदि शुक्र-मुद्रिका बुध-क्षेत्र पर पहुंचकर विवाह-रेखा को काट दे तो उस स्थिति मे पूर्वोक्त दुष्प्रभाव और भी अधिक होता है। इस प्रकार की रेखा वाले पुरुष अपनी पत्नी के प्रति शकालु तथा असवृत शील होते है तथा स्त्रियां अपने पति के प्रति असहिष्णु होती हैं, जिसके कारण उनके वैवाहिक जीवन का सुख नष्ट हो जाता है।

चित्र २०५—यदि शुक्र-मुद्रिका बीच-बीच में टूटी हुई हो तो जातक की स्नायविक दुर्बलता तथा अस्थिरता की सूचक होती है। ऐसी रेखा वाले पुरुष को मूर्छा तथा हृदय-सम्बन्धी रोग एव स्त्री को हिस्टीरिया आदि रोग हो जाते है। ऐसी रेखा वाले जातक बहुत जल्दी घबरा जाते हैं। और उन्हे चिन्ता, दु ख, उदासी तथा मानसिक परेशानियां हर समय घेरे रहती है।

चित्र २०६—यदि शुक्र-मुद्रिका बीच मे टूटी हुई अथवा छोटे-छोटे टुकड़ों से मिल कर बनी हो तथा जीवन-रेखा और मस्तक-रेखा भी दोष युक्त हो तो जातक को स्नायविक एवं मानसिक विकार होते हैं।
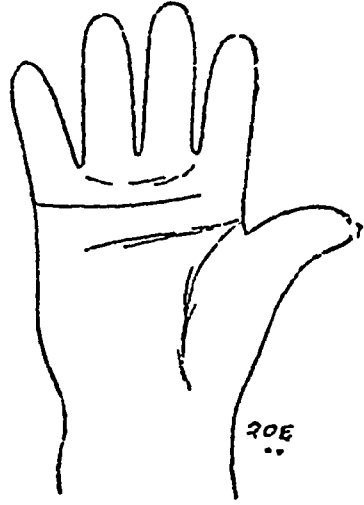
चित्र २०७—यदि पूर्वोक्त प्रकार की खण्डित शुक्र-मुद्रिका के साथ ही जीवन-रेखा तथा मस्तक-रेखाए भी दोषयुक्त हो और मस्तक-रेखा के ऊपर द्वीप क्रास अथवा नक्षत्र-चिह्न भी हो तो ऐसी रेखाओ तथा चिह्नो वाला जातक मस्तिष्क-विकृति उन्माद अथवा पागलपन का
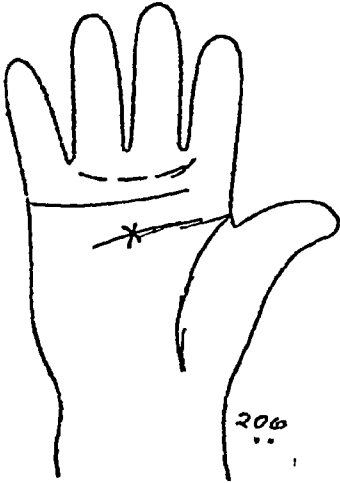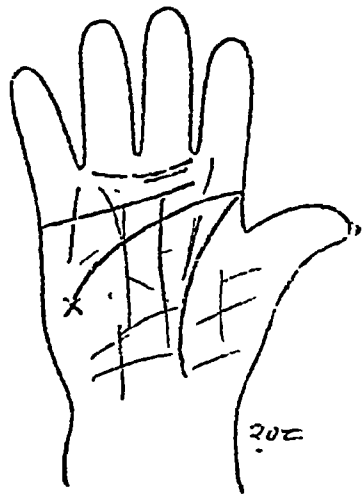
शिकार हो जाता है ।

चित्र २०८—यदि मस्तक-रेखा घूमकर चन्द्र-क्षेत्र के निचले भाग पर गई हो और उसके अन्तिम भाग पर नक्षत्र, क्रास, बिन्दु, अथवा द्वीप बहुत अधिक चिह्न हो, हाथो मे रेखाए हो तथा टूटी हुई हो तो ऐसे लक्षणो वाला जातक विकृत तथा अत्यधिक कल्पना करने के कारण पागल हो जाता है ।

चित्र २०९—यदि शुक्र-मुद्रिका गहरी होकर विवाह-रेखा को काट रही हो तथा हृदय-रेखा से छोटी-छोटी पतली शाखाए निकलकर नीचे की ओर जा रही हो, मस्तक-रेखा का अन्तिम भाग दोषपूर्ण हो और वहा नक्षत्र-चिह्न हो तथा भाग्य-रेखा को कोई छोटी रेखा अवरुद्ध किए हो तो ऐसे लक्षणो वाला जातक अत्यधिक कामुक होने के कारण अपने वैवाहिक जीवन के सुख को नष्ट कर लेता है। उसके स्वास्थ्य तथा व्यवसाय का नाश हो जाता है और उसका मस्तिष्क भी विकृत हो जाता है ।
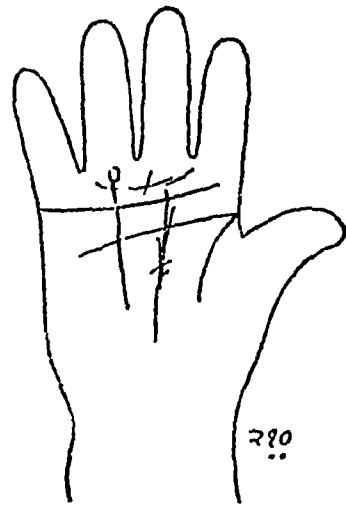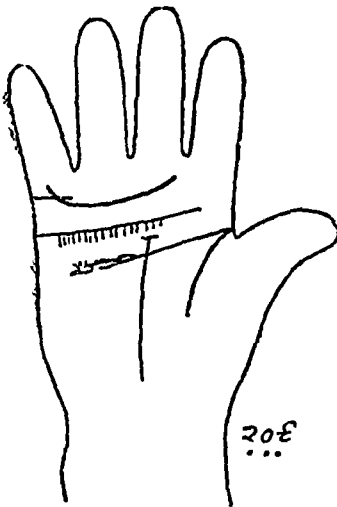
चित्र २१०—यदि भाग्य-रेखा दोषयुक्त हो, सूर्य रेखा के ऊपर

अथवा उसके अन्त पर बिन्दु-चिह्न हो तथा शुक्र-मुद्रिका हो तो ऐसे लक्षणों वाला जातक अत्यधिक विषयी (कामुक) होने के कारण अपने वयवसाय अथवा नौकरी तथा स्वास्थ्य को नष्ट कर देता है। साथ ही अपयश का भागी भी बनता है।

चित्र २११—यदि शनि-क्षेत्र पर क्रास-चिह्न हो, शनि-क्षेत्र के नीचे मस्तक-रेखा पर बिन्दु अथवा द्वीप-चिह्न हो, नाखूनो पर खड़ी रेखाए हो और वे शीघ्र टूट जाने वाले हो तथा शुक्र-मुद्रिका टूटी हुई हो तो ऐसे लक्षणों वाले जातक को पक्षाघात (लक्वा) का शिकार होना पडता और उसका जीवन दुखमय रहता है।
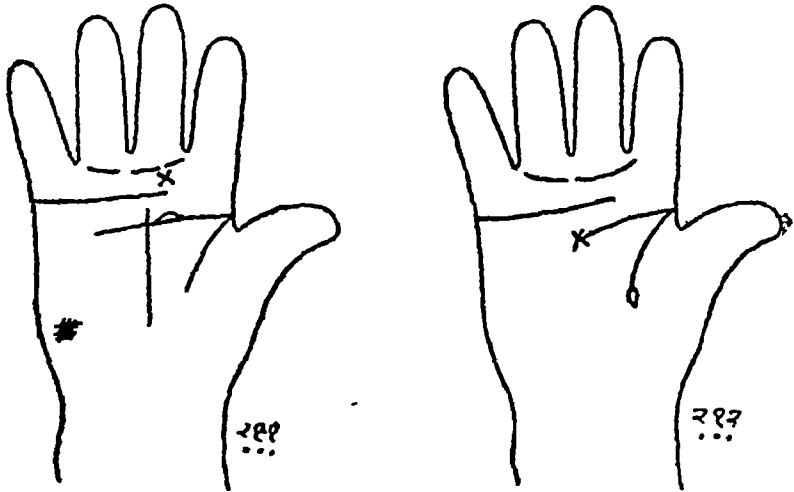
चित्र २१२—यदि हाथ का नीचे का भाग मोटा हो, उगलियाँ मोटी हो, हथेली का रंग लाल हो तथा उस पर सभी रेखाए भी गहरी तथा लाल रग की हो, जीवन-रेखा तथा मस्तक-रेखा छोटी हों और इन दोनो के अन्तिम भाग पर अशुभ लक्षण हो तथा शुक्र-मुद्रिका बलवान अथवा टूटा हुई हो तो ऐसे लक्षणो वाला जातक अत्यधिक विलासो (कामी) होने के कारण अल्पायु मे ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

चित्र २१३—यदि शुक्र-मुद्रिका दुहरी अथवा तिहरी हो तो इस रेखा के ऊपर जिस स्थान पर जितने भी दोष बताये हैं वे और अधिक बढ जाते है। यदि यह रेखा अथवा रेखाए गहरी तथा स्पष्ट हो तो उस जातक मे काम-वासना अत्यधिक मात्रा मे पाई जाती है।
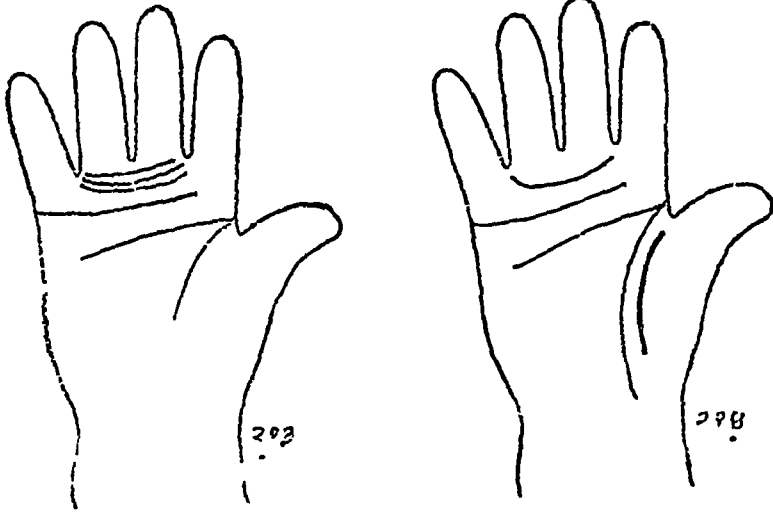
चित्र २१४—यदि शुक्र-मुद्रिका तर्जनी उगली तथा मध्यमा उंगली के नीचे मध्य भाग से आरम्भ होकर अनामिका तथा कनिष्ठा उगली के नीचे मध्य भाग मे जाकर समाप्त हो जाती हो अर्थात् केवल शनि और सूर्य-क्षेत्र को ही घेरे हुए हो, हाथ की बनावट अच्छी न हो, शुक्र तथा चन्द्र क्षेत्र निम्न हो मगल-रेखा अधिक चौडी तथा गहरे लाल रग की हो तो ऐसे लक्षणो वाला जातक अत्यधिक दुष्ट, दुराचारी व्यभिचारी तथा लम्पट होता है।

चित्र २१५—यदि शुक्र-मुद्रिका पतली, हल्की तथा निर्दोष हो और भाग्य-रेखा तथा सूर्य-रेखा का न तो स्पर्श करती हो और न उन्हें काट रही हो तो ऐसी रेखा वाला जातक अत्यधिक समझदार, चतुर प्रेमी, कला तथा प्रकृति प्रिय एवं समझदार होता है।
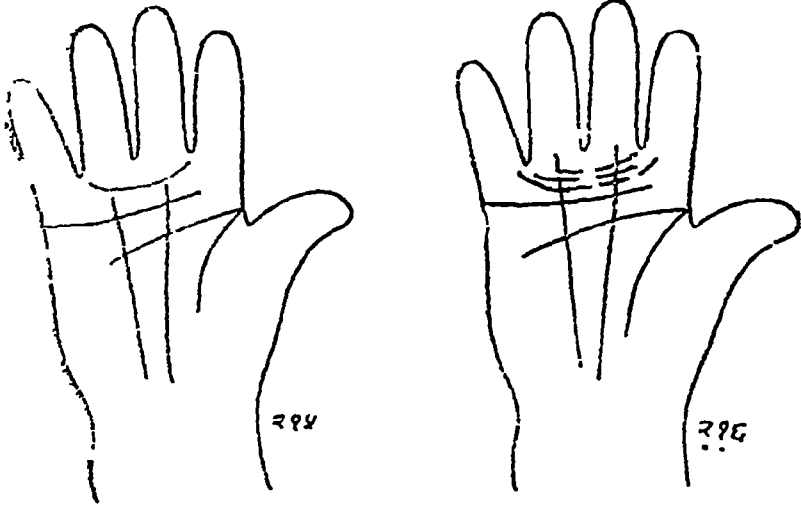
चित्र २१६—यदि शुक्र-मुद्रिका दुहरी, तिहरी अथवा चौहरी हो साथ ही वह खडित तथा भाग्य एव सूर्य-रेखा को काटने वाली भी हो तो ऐसी रेखाओं वाले जातक मृगी, हिस्टीरिया, उन्माद, हृदय-रोग आदि के शिकार होते है। उनका हृदय तथा मस्तिष्क दुर्बल होता है और वे उसे उत्तेजितवस्था मे बने-बनाये काम को भी बिगाड लेने वाले होते हैं।

चित्र २१७—यदि शुक्र-मुद्रिका को इधर-उधर से आने वाली अवरोध रेखाए काट रही हो तो ऐसा जातक अत्यधिक कामान्ध होता है और वह अपनी व्यभिचारी एव विषयी प्रवृत्ति के कारण धन, स्वास्थ्य तथा यश तीनों को नष्ट कर बैठता है

चित्र ११८—यदि शुक्र-मुद्रिका को काटने वाली अवरोध रेखाएं शुक्र-मुद्रिका के साथ ही भाग्य-रेखा को भी काट रही हो तो जातक भाग्यहीन होता है। यदि सूर्य-रेखा को भी काट रही हो तो जातक क्रियाहीन तथा अपयशी होता है।

चित्र २१९—यदि शनि-क्षेत्र पर भाग्य-रेखा, शुक्र-मुद्रिका तथा अवरोध रेखाओं के मिलने से नक्षत्र-चिन्ह बन रहा हो तो ऐसे चिन्ह
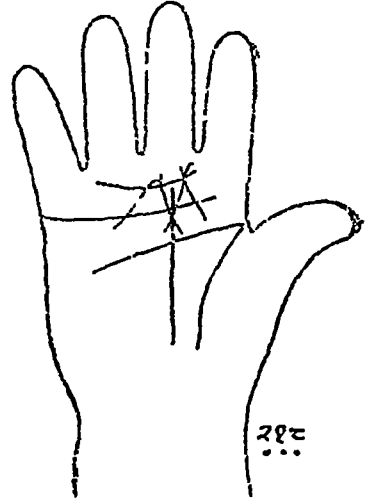
वाले जातक की मृत्यु किसी हथियार से होती है अर्थात् उसे कत्ल कर दिया जाता है।
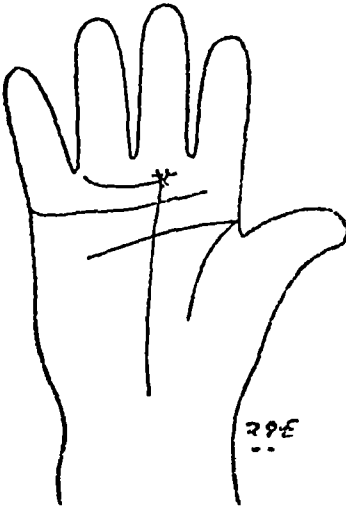
चित्र २२०—यदि शुक्र-मुद्रिका का बाहरी सिरा नीचे उतर कर मगल क्षेत्र पर जा पहुचे तो ऐसा जातक उचित अनुचित का विचार

करते हुए ही अवैध व्यभिचार में लिप्त होता है। यदि ऐसी रेखा के साथ बुध-क्षेत्र उन्नत हो तो जातक झूठ बोलने तथा धोखा देने मे माहिर होता है।

चित्र २२१—यदि शुक्र-मुद्रिका निर्दोष हो, साथ ही शनि तथा शुक्र के क्षेत्र ऊंचे हों, गुरु-क्षेत्र पर क्रास-चिह्न हो तथा सूर्य-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा पर पालकी, मन्दिर अथवा ध्वजा के समान चिह्न हो तो ऐसे लक्षणों वाला जातक धर्म-परायण, शास्त्रज्ञ, नीतिज्ञ धन-धान्य पूर्ण, मीमांसक, राजयोगी, यशस्वी, सदाचारी तथा त्रिकालज्ञ महात्मा होता है।
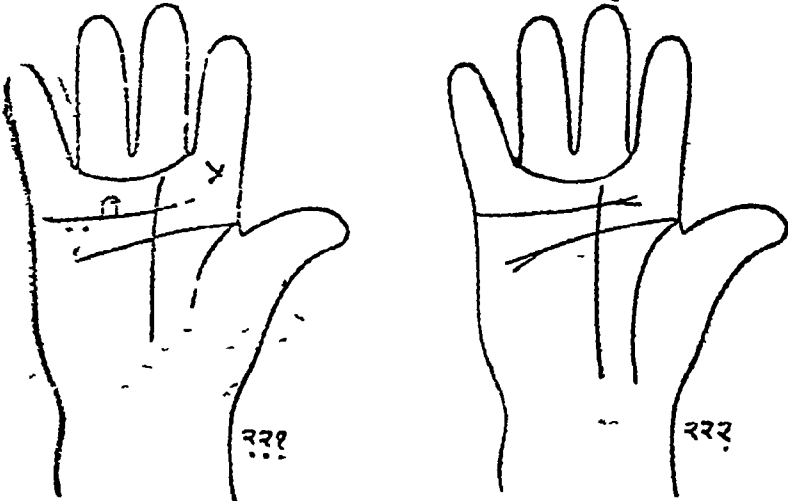
चित्र २२२—शुक्र-मुद्रिका निर्दोष हो, साथ ही भाग्य-रेखा, मस्तक-रेखा और हृदय-रेखा भी स्पष्ट तथा निर्दोष हो हृदय-रेखा तथा मस्तक-रेखा अन्त मे शाखा युक्त हों तो ऐसी रेखाओ वाला जातक विद्वान्, लेखक सम्पादक, वेदान्ती, नीतिज्ञ तथा सच्चरित्र होता है। उसके लिए शुक्र-मुद्रिका दुष्प्रभाव कारक नही होती।

चित्र २२३—यदि शुक्र-मुद्रिका अर्द्धचन्द्राकार होकर शनि तथा सूर्य-

क्षेत्र को घेरती हुई हृदय-रेखा को भी स्पर्श कर रही हो तो ऐसी रेखा वाला जातक श्रेष्ठ कवि, लेखक, चित्रकार, अभिनेता अथवा ऐन्द्रजालिक होता है। वह व्यसनी (मद्यपी आदि) तो हो सकता है, परन्तु व्यभिचार एव जुआ आदि से दूर रहता है।
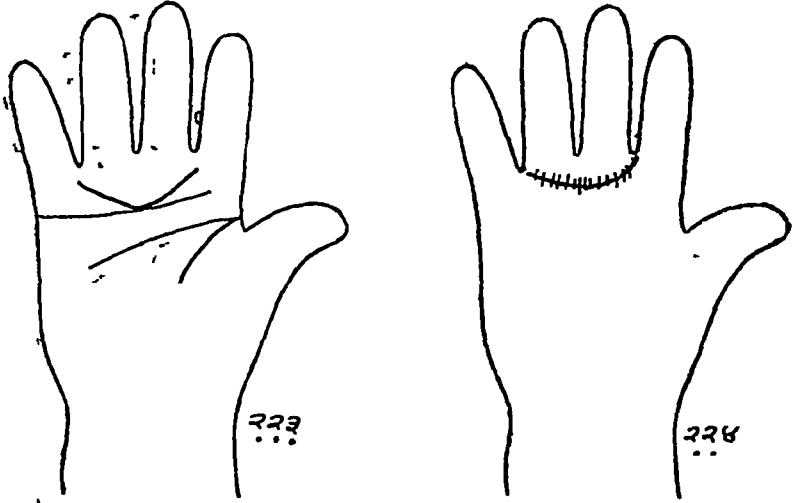
चित्र २२४—यदि शनि-क्षेत्र नीचा हो, शुक्र-मुद्रिका एक गहरी रेखा वाली हो तथा उसे अनेक छोटी-छोटी रेखाए काट रही हो तो ऐसा व्यक्ति असयमी, पापी, क्रोधी, बन्धु-बाधवो से परित्यक्त और उनका विरोधी होता है उसके चापलूस तथा दगाबाज मित्र उसे धोखा देते है।

चित्र २२५—यदि शुक्र-मुद्रिका छिन्न-भिन्न हो और कई स्थानों पर छोटी-छोटी खडी रेखाओ से कटी हुई भी हो तो ऐसी रेखा वाला जातक साधारण बात पर ही उत्तेजित तथा सामान्य कारण से ही विचलित हो जाने वाला होता है। उसका स्वभाव उन्माद-रोगी जैसा होता है। ऐसा व्यक्ति मक्कार, धोखेबाज तथा धूर्त भी होता है।

चित्र २२६—यदि शुक्र-मुद्रिका से कोई शाखा-रेखा निकलकर
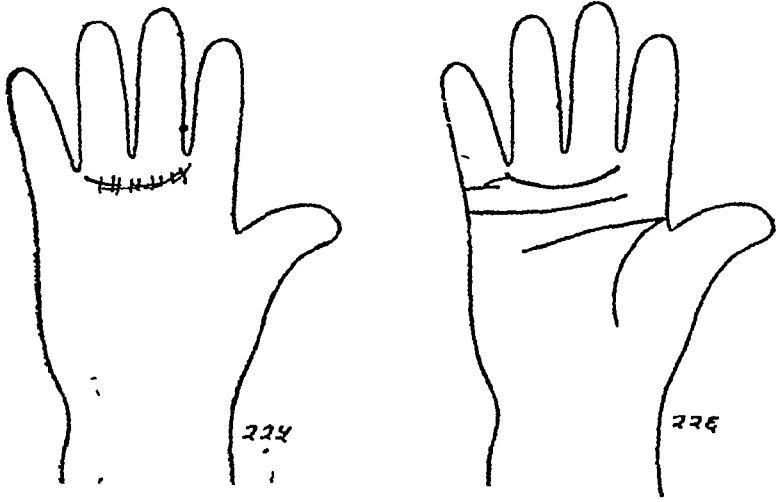
विवाह-रेखा का स्पर्श करे तो ऐसी रेखा वाले जातक का वैवाहिक जीवन कलहपूर्ण होता है। वह अपनी पत्नी (अथवा पति) से असम्भव आकाक्षाओ की तृप्ति प्राप्त करने का इच्छुक रहता है, जिसकी पूर्ति न होने पर निराश होकर झगडा करता है। ऐसी रेखा वाले व्यक्ति स्नायविक दुर्बलता के शिकार भी होते है।

चित्र २२७—यदि पूर्वोक्त प्रकार से शुक्र-मुद्रिका से कोई शाखा-रेखा निकल कर विवाह-रेखा को काट दे तो ऐसी रेखा वाले जातक का वैवाहिक-जीवन घोर दुखमय होता है। ऐसे व्यक्ति स्वार्थी, निष्ठुर, शकालु तथा झगडालु प्रकृति के होते है।

चित्र २२८—यदि शुक्र-मुद्रिका को सूर्य क्षेत्र पर एक सरल तथा छोटी रेखा काट रही हो तो ऐसी रेखा वाला व्यक्ति दुष्ट तथा चरित्रहीन होता है। उसके मित्र लोग ही निन्दनीय कामों में लगाकर उसके धन का नाश करा देते है।
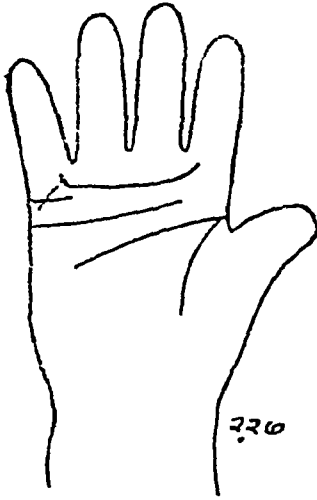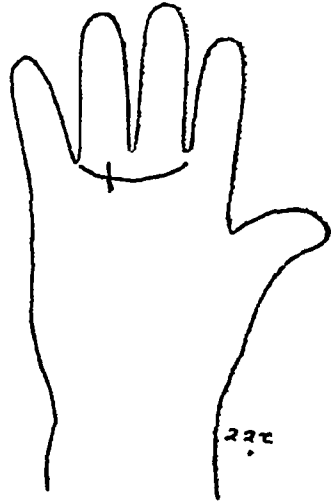
चित्र २२९—यदि शनि-क्षेत्र पर एक रेखा उठकर शुक्र-मुद्रिका तथा हृदय-रेखा दोनों को काट रही हो तो ऐसी रेखा वाला जातक चिन्ता, कलह, रोग एवं दरिद्रता का शिकार बनकर दुःखी जीवन व्यतीत करता है। परन्तु यदि चन्द्र और शुक्र-क्षेत्र उन्नत हो तो
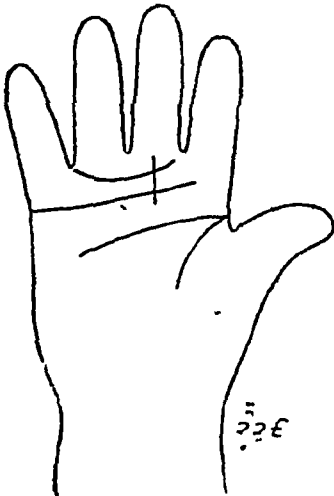
चिकित्सा कराने पर वह रोगों से छुटकारा पा जायगा।

चित्र २३०—यदि शुक्र-मुद्रिका निर्दोष स्थिति मे हो, परन्तु शनि-क्षेत्र से निकली हुई रेखाए हृदय तथा मस्तक-रेखाओं को काट रही हो तथा मस्तक-रेखा पर बिन्दु चिन्ह भी हो तो ऐसे लक्षण वाला जातक साहसी, धनधान्यपूर्ण, सर्वप्रिय तथा मधुरभाषी होता है परन्तु उसे गठिया रोग का शिकार होना पड़ता है।

चित्र २३१—यदि शनि-क्षेत्र तथा सूर्य-क्षेत्र उन्नत हों, परन्तु मस्तक-रेखा ठीक शनि-क्षेत्र के नीचे टूटी हुई हो साथ-ही-हाथ में निर्दोष शुक्र-मुद्रिका तथा कई रेखाओ से कटी हुई शनि-मुद्रिका (जिसका वर्णन आगे किया जायगा) भी हो तो ऐसे लक्षणो वाला जातक उदर रोग, आंतों की सूजन तथा वायु रोगो का शिकार होता है और उसे अपने जीवन में अनेक प्रकार के सकटों का सामना करना पडता है।
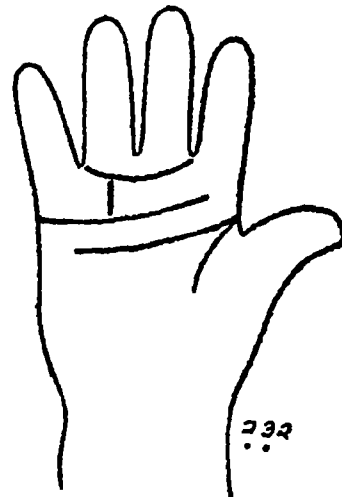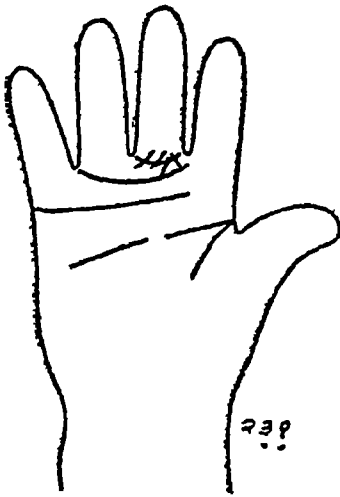
चित्र २३२—यदि शुक्र-मुद्रिका निर्दोष तथा स्पष्ट हो, सूर्य-रेखा केवल सूर्य-क्षेत्र पर हो तथा मस्तक-रेखा नीचे की ओर झुकी हुई हो

तो ऐसा जातक ऐश्वर्यवान् तथा धनी होते हुए भी जुआरी और सट्टेबाज होता है।

चित्र २३३—यदि मध्यमा उगली के तृतीय पर्व से एक रेखा ठीक सूर्य तथा शनि-क्षेत्र के बीच से चलकर शुक्र-मुद्रिका को काटती हुई भाग्य-रेखा मे जा मिले तो ऐसे लक्षण वाला जातक धन-धान्य सम्पन्न होने पर भी वक्ष.स्थल मे पीडा; मस्तिष्क सम्बन्धी विकार तथा अन्य प्रकार के कठिन रोगो से ग्रस्त बना रहता है।
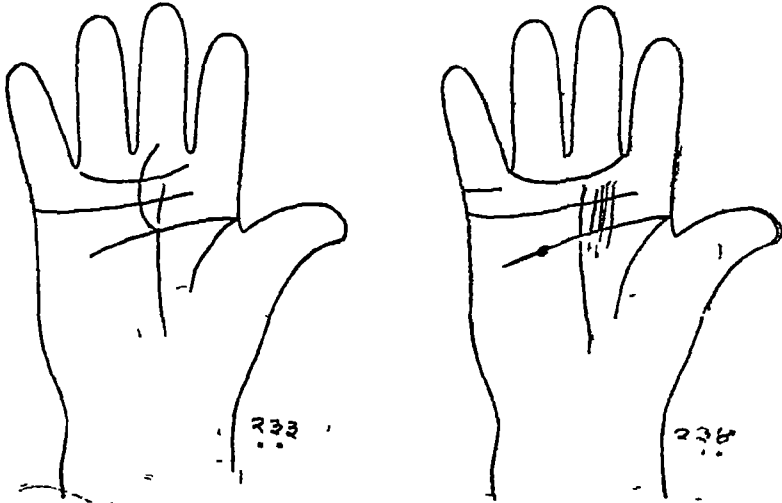
चित्र २३४—यदि शुक्र-मुद्रिका निर्दोष और स्पष्ट हो, शनि-क्षेत्र से कटी रेखाए निकल कर हृदय तथा मस्तक-रेखाओ को काट रही हों तथा मस्तक रेखा बिन्दु-चिन्ह युक्त सीधी और लम्बी हो तो ऐसा व्यक्ति धन-धान्यपूर्ण तथा हुडी का व्यापार करने वाला होता है।

शनि-मुद्रिका

चित्र २३५—यह रेखा मध्यमा उगली के नीचे केवल शनि-क्षेत्र पर ही अर्द्ध-चन्द्राकार रूप मे पाई जाती है। अग्रेजी मे इस रेखा को

'Ring of Satern' कहा जाता है। हिन्दी में कुछ लोग इसे 'शनि की अंगूठी' अथवा 'शनि का वर्तुल' भी कहते हैं।

इस रेखा का उद्गम तर्जनी तथा मध्यमा उगली के बीच वाले खाली भाग से होता है और यह गोलाई लिए हुए शनि-क्षेत्र को घेरती हुई मध्यमा तथा अनामिका उगली के मूल मे बीच वाले खाली भाग पर समाप्त हो जाती है। इस प्रकार यह रेखा शनि-क्षेत्र तथा शनि की उगली मध्यमा को अगूठी की भाति घेर लेती है।

शनि-मुद्रिका भी प्रत्येक व्यक्ति के हाथ मे नहीं पाई जाती। हजारो लोगो मे से दो-चार के हाथ पर ही यह रेखा दिखाई देती है। यह रेखा अविच्छिन्न रूप से चन्द्राकार ही हो ऐसा कोई निश्चित नियम नही है। कुछ हाथो मे यह रेखा खण्डित अथवा असम्पूर्ण भी पाई जाती है।
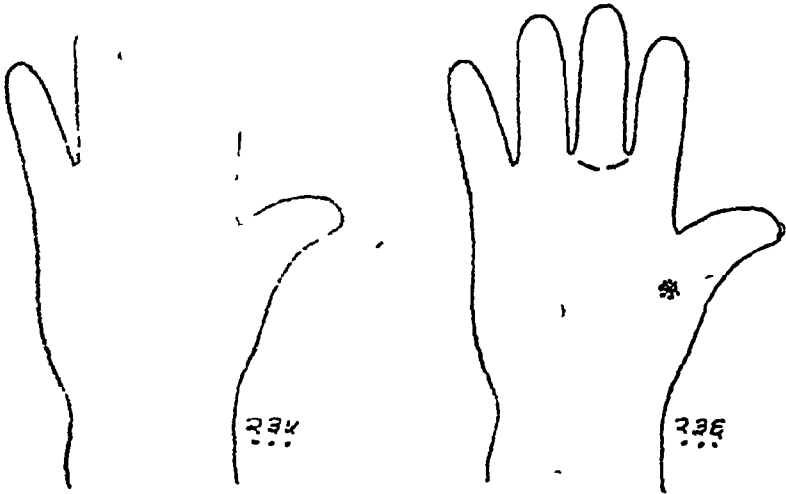
चित्र २३५—जिस व्यक्ति के हाथ में यह रेखा अविच्छिन्न, गहरी, स्पष्ट तथा निर्दोप हो, वह व्यक्ति आत्म-चिन्तक, ब्रह्म-निष्ठ ज्ञानी, ईश्वरभक्त, दार्शनिक तथा महात्माओ की सगति

करने वाला होता है उसे ससार तथा पारिवारिक जीवन से वैराग्य होता है और वह एकनिष्ठ ब्रह्मचारी रह कर अपने जीवन को आध्यात्मिक-चिन्तनमय बना लेता है। कुछ विद्वान ऐसी रेखा वाले व्यक्ति को सिद्धान्तहीन, अभागा तथा दृढ निश्चय से रहित दुर्भाग्य-शाली भी मानते है।

चित्र २३६—यदि शनि-मुद्रिका बीच मे से खण्डित हो और शुक्र के पर्वत पर नक्षत्र-चिह्न हो तो ऐसी रेखा वाले व्यक्ति स्त्रियों के मोह पास मे फसकर योग-भ्रष्ट हो जाते हैं और उनके आत्मज्ञान मे बाधा पड़ती है। परन्तु शनि-मुद्रिका सम्बन्धी अन्य अवगुणो मे कमी आ जाती है।

चित्र २३७—यदि किसी व्यक्ति के हाथ मे शनि-मुद्रिका के साथ ही शुक्र-मुद्रिका भी हो (ऐसा चिह्न लाखो व्यक्तियो मे से किसी एक के हाथ मे ही पाया जाता है) तो ऐसे चिन्ह वाले जातक के विषय मे उसके हाथ के अन्य चिह्न तथा रेखाओ की शुभ अथवा अशुभ स्थिति
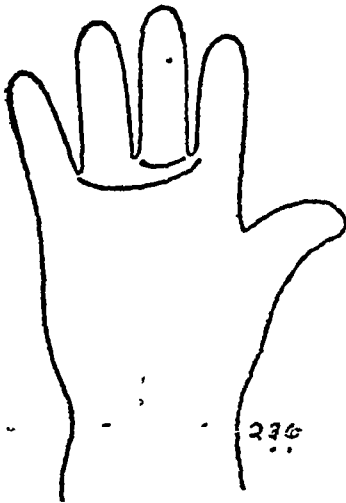
को देखकर ही शुभ अथवा अशुभ फलादेश करना चाहिए, प्रायः ऐसे

चिह्न वाले जातकों की अन्य रेखाएं भी शुभ लक्षणों से युक्त होती हैं वे सांसारिक तथा पारमार्थिक दोनो ही उद्देश्यो तथा कर्मो मे पूर्ण सफलता प्राप्त करने वाले महापुरुष होते है। ऐसे लोग महाविद्वान वेदान्ती, शान्त, निश्चल, दृढ प्रतिज्ञ, आत्मदर्शी, तत्व ज्ञानी, सच्चरित्र अत्यन्त यशस्वी तथा धन-धान्य कीर्ति एव ऐश्वर्य सम्पन्न होते है।

अन्य लक्षणो के योग से शनि-मुद्रिका के फलादेश के सम्बन्ध में कुछ विद्वानो का मत इस प्रकार है—

चित्र २३८—यदि मस्तक-रेखा घूमकर चन्द्र-क्षेत्र पर आई हो, चन्द्र-क्षेत्र उन्नत तथा जाल-चिह्न युक्त हो तथा शनि-मुद्रिका निर्दोष हो तो ऐसे लक्षण वाले जातक अत्यधिक काल्पनिक होते हैं, जिसके कारण उनके मन में सदैव अधीरता, चचलता एव बेचैनी बनी रहती है और वे किसी भी क्षेत्र मे सफलता प्राप्त नही कर पाते।

चित्र २३९—यदि भाग्य-रेखा खण्डित तथा दोष युक्त हो तथा शनि-मुद्रिका स्पष्ट हो तो ऐसा जातक किसी एक ही काम मे मन नहीं लगा पाता। वह एक को अधूरा छोड़ कर दूसरे काम मे जुट जाता है,
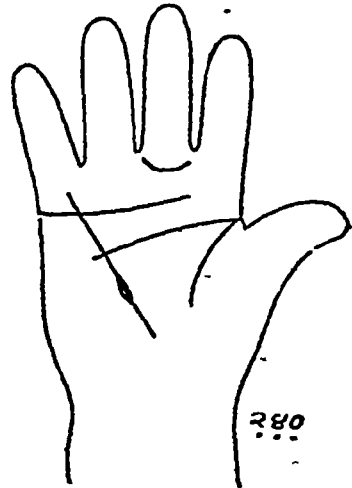
जिसके कारण उसे असफलता एवं दुर्भाग्य का सामना करना पड़ता है।

चित्र २४०—यदि मगल-क्षेत्र नीचा हो, अगूठा छोटा हो, स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप अथवा नक्षत्र-चिन्ह हो तथा शनि-मुद्रिका स्पष्ट हो तो ऐसे लक्षणो वाला जातक किसी सम्बन्ध में निराश होकर पागल हो जाता है अथवा आत्महत्या करने पर उतारू होता है।

चित्र २४१—यदि मस्तक-रेखा दोषपूर्ण हो, हाथ कोमल तथा निर्जीव-सा हो, चन्द्र-क्षेत्र अत्यधिक उन्नत तथा मगल-क्षेत्र दबा हुआ हो, साथ ही शनि-मुद्रिका स्पष्ट हो तो ऐसे लक्षणो वाला जातक अधैर्यवान होता है जिसके कारण उसे हर समय निराश्य एव चिन्ताएं घेरे रहती है।
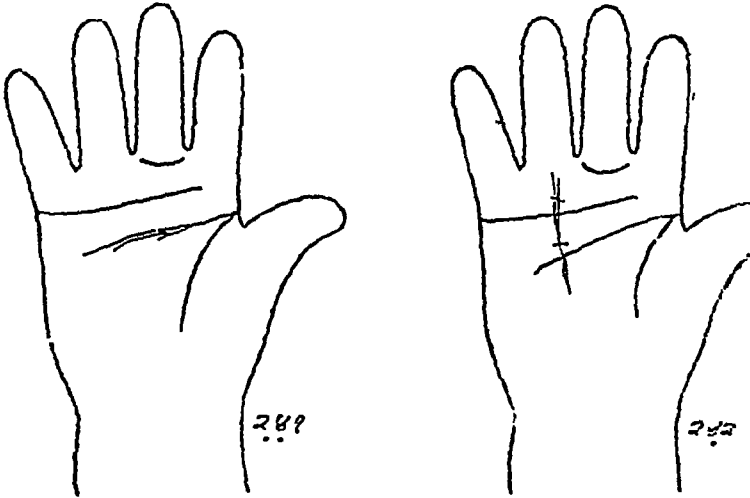
चित्र २४२—यदि सूर्य-रेखा दोपपूर्ण हो और शनि-मुद्रिका स्पष्ट हो तो जातक एक काम को अधूरा छोडकर दूसरे काम मे हाथ डालते रहने की प्रवृत्ति के कारण असफलता, निराशा एवं दरिद्रता का शिकार बनता है।

चित्र २४३—यदि मस्तक-रेखा द्वीप युक्त अथवा खण्डित हो और शनि-

मुद्रिका स्पष्ट हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक भी अस्थिर स्वभाव वाला होता है, जिसके कारण उसे निराशा, असफलता, चिन्ता, दुख एवं दुर्भाग्य का सामना करना पड़ता है।
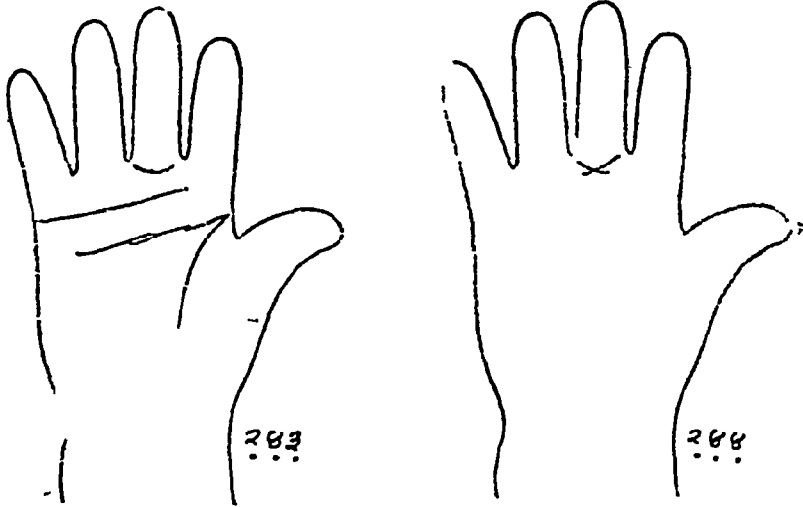
चित्र २४४—यदि टूटी हुई शनि-मुद्रिका के दोनो खण्ड एक-दूसरे के ऊपर इस प्रकार मिल रहे हो कि उनसे एक क्रास-चिन्ह सा बन गया हो तो उसके फलस्वरूप जातक को दुर्भाग्य एव दुर्घटनाओ का शिकार होना पड़ता है।

शनि-मुद्रिका के सम्बन्ध मे निम्नलिखित बातो को और स्मरण रखना चाहिए—

(१) शनि-मुद्रिका जितनी खण्डित होगी उसके दुष्प्रभाव मे उतनी ही कमी आ जायगी और जितनी पुष्ट तथा निर्दोष होगी, उसका बुरा प्रभाव उतना ही अधिक होगा।

(२) चन्द्र-क्षेत्र का अनुन्नति एव अन्य दोषो के कारण जातक के मन मे जो चचलता और अस्थिरता होती है, हाथ मे शनि-मुद्रिका की उपस्थिति उस दोष में और अधिक वृद्धि कर देती है।

(३) यदि हाथ मे अन्य लक्षण शुभ हो तो शनि-मुद्रिका का दुष्प्रभाव कम हो जाता है और यदि अन्य लक्षण अशुभ हो तो शुक्र मुद्रिका उनके कुप्रभाव को और अधिक बढा देती है ।

(४) प्रत्येक स्थिति मे हाथ पर शनि मुद्रिका की उपस्थिति दुर्भाग्य का लक्षण ही है । गृहस्थ लोगो के लिए तो इस रेखा को अभिशाप के समान ही समझना चाहिए ।

बृहस्पति-मुद्रिका

यह रेखा तर्जनी और मध्यमा उगली के नीचे वाले मध्य भाग से आरम्भ होकर अर्द्ध चन्द्राकार रूप मे वृहस्पति-क्षेत्र को अगूठो की भाति घेर लेती है अग्रेजी मे इसे "Ring of Solomon" कहा जाता है ।

चित्र २४५—यह रेखा भी हजारो लाखो व्यक्तियों मे से किसी एक के हाथ मे दिखाई देती है, सब लोगो के हाथ मे नही होती । जिन व्यक्तियो के हाथ मे यह रेखा दिखाई देती है वे तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र, ज्योतिष, इन्द्रजाल आदि गुप्त विद्याओ के ज्ञाता तथा उनमे विशेष रुचि रखने वाले होते है । ऐसे व्यक्ति धन-लोलुप उच्चाभिलाषी, यश काक्षी तथा अहकारी होते है । वे दूसरो को अपने प्रभाव मे लाने के लिए लालायित बने रहते हैं । अस्तु, उन्हे गुप्त विद्याओं के ज्ञान में सफलता भले ही मिल जाय, परन्तु लौकिक, व्यावहारिक, सामाजिक तथा पारिवारिक दृष्टि से ऐसे लोगो का जीवन असफल ही रहता है और उनकी विशेष आर्थिक उन्नति नही हो पाती । यश के क्षेत्र मे भी वे अपना कोई चिरस्थायी एव महत्वपूर्ण स्थान नही बना पाते । यदि ऐसी रेखा वाले व्यक्तियों का गुरु-क्षेत्र भी शुभ हो तो उन्हे आशिक सफलता मिलती है और वे सौन्दर्य, कला तथा प्रकृति के प्रेमी भी होते हैं । कुल मिलाकर इस रेखा का होना शुभ लक्षण नही है ।
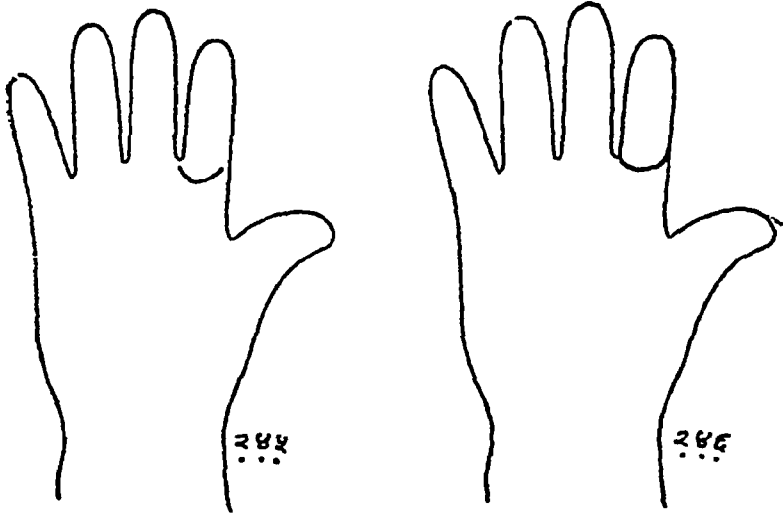
चित्र २४६—यदि तर्जनी उंगली के तृतीय पर्व के मूल मे एक सरल रेखा उगली के चारो ओर परिक्रमा कर रही हो और उसकी सन्धि (गाठ) भी स्पष्ट दिखाई देती हो तो ऐसी रेखा वाला जातक विद्वान, कल्पज्ञ, अल्प-भोजी, परन्तु दु ख, चिन्ता, शत्रु एव रोगों से घिरा हुआ रहता हैं। किसी समय उसके मस्तक मे दुर्घटना भी अवश्य होती है।

चित्र २४७—यदि गुरु के क्षेत्र पर शुद्ध वृत्त अर्थात् गोलाकार चिह्न हो तो ऐसे लक्षण वाला जातक दयालु, परोपकारी, दानी, साहित्य-प्रेमी विद्वान तथा अच्छे स्वभाव का होता है। उसे सर्वत्र सम्मान तथा सफलताओ की प्राप्ति होती है। ऐसी रेखा वाले व्यक्ति अपने जीवन में अत्यधिक उन्नति करते है।

विशेष: (१) उक्त चित्र संख्या २४६ तथा २४७ मे प्रदर्शित रेखाएं 'वृहस्पति-मुद्रिका' से भिन्न है। इनका वर्णन इस स्थान-पर केवल इसी दृष्टि से किया गया है कि पाठको के लिए 'वृहस्पति-मुद्रिका' के
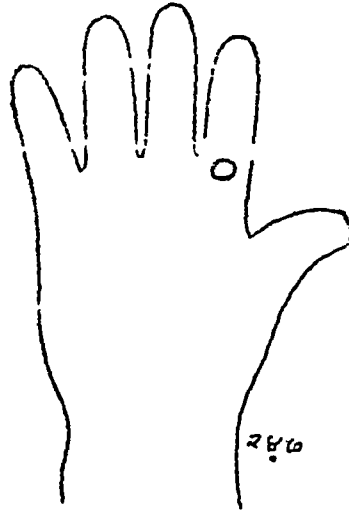
इनका अन्तर स्पष्ट हो जाय और हस्त-परीक्षक फलादेश करते समय इन रेखाओ को 'वृहस्पति-मुद्रिका' न समझ बैठें।

(२) बुध-क्षेत्र तथा सूर्य-क्षेत्र पर पाई जाने वाली अर्द्ध-चन्द्राकार रेखाओ को कुछ विद्वानो ने 'बुध-मुद्रिका' तथा सूर्य-मुद्रिका' का नाम दिया है और 'शुक्र मुद्रिका' तथा 'शनि मुद्रिका' की ही भाति उनके प्रभाव के सम्बन्ध मे भी अपना मत प्रकट किया है। परन्तु अधिकाश विद्वानो की सम्मति में इस प्रकार की 'बुध-मुद्रिका' एव 'सूर्य-मुद्रिका' नामक रेखाए नही होती। इन ग्रह-क्षेत्रो पर जो अर्द्ध-चन्द्राकार रेखाए किसी-किसी हाथ मे पाई जाती है, उनका फलादेश ग्रह-क्षेत्रस्थ प्रभाव रेखाओ के वर्णन मे किया गया है।

यात्रा-रेखाएं

यात्रा-सम्बन्धी रेखाए हथेली पर निम्नलिखित तीन स्थानो पर होती है—

(१) चन्द्रमा के क्षेत्र से प्रारम्भ होने वाली रेखाए।

(२) मणिबन्ध से आरम्भ होकर ऊपर की ओर जाने वाली रेखाएं।

(३) जीवन-रेखा से निकलकर उसके सहारे चलने वाली रेखाए।

चित्र २४८—चित्र सख्या २४८ मे उक्त तीनो स्थानों पर पाई जाने वाली यात्रा रेखाओ को प्रदर्शित किया गया है।

विभिन्न क्षेत्रो पर पाई जाने वाली यात्रा-रेखाओ के प्रभाव के सम्बन्ध मे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चन्द्र-क्षेत्र पर यात्रा-रेखाएं

समुद्र-यात्रा की रेखाए चन्द्र-क्षेत्र पर पाई जाती है। समुद्र-यात्रा से वर्तमान समय मे तात्पर्य लम्बी विदेश यात्रओ से समझना चाहिए, फिर भले ही वे वायुयान द्वारा ही क्यो न की जायं।

चन्द्र-क्षेत्र पर पाई जाने वाली यात्रा-रेखाओ के प्रभाव का सचित्र विवरण इस प्रकार है—

चित्र २४—यदि चन्द्र-क्षेत्र से निकलकर कोई स्पष्ट तथा निर्दोष

रेखा भाग्य-रेखा से जा मिले तो यात्रा लम्बी होती है और उसका जातक के जीवन पर गहरा तथा उन्नतिकारक प्रभाव पड़ता है।
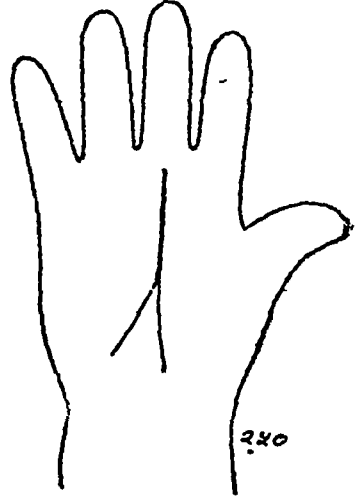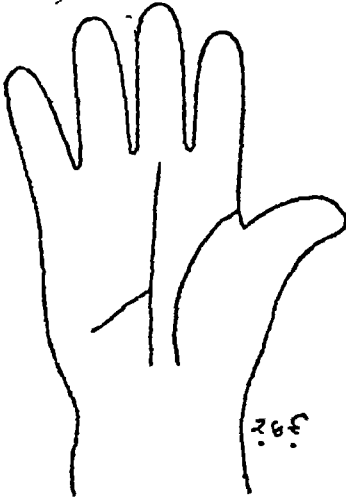
चित्र २५०—यदि चन्द्र-क्षेत्र से निकली हुई यात्रा-रेखा भाग्य-रेखा में जाकर मिल जाय और उस स्थान से भाग्य-रेखा अधिक गहरी होकर
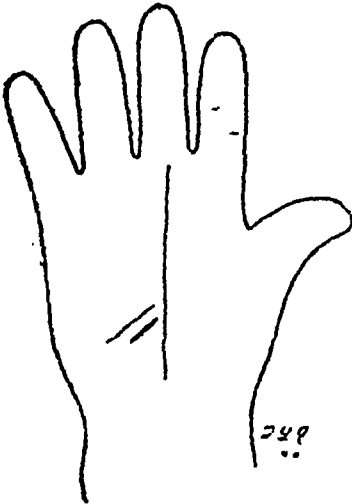
आगे बढे तो यह समझना चाहिए कि उस यात्रा के फलस्वरूप जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होगी।

चित्र २५१—यदि यात्रा-रेखा छोटी तथा गहरी हो, परन्तु भाग्य-रेखा से मिल नही रही हो तो यात्रा भी छोटी होती है और उसका जातक की भाग्योन्नति मे कोई विशेष महत्व नही होता।

चित्र २५२—यदि यात्रा-रेखा उगलियो की ओर कुछ उठी हुई हो तो यात्रा द्वारा जातक की उन्नति होगी ऐसा समझना चाहिए।

चित्र २५३—यदि यात्रा-रेखा नीचे कलाई की ओर कुछ झुकी हुई हो तो वह यात्रा मे बाधक होती है। ऐसी रेखा वाला जातक यदि यात्रा करे भी तो उसे कोई लाभ नही होता।
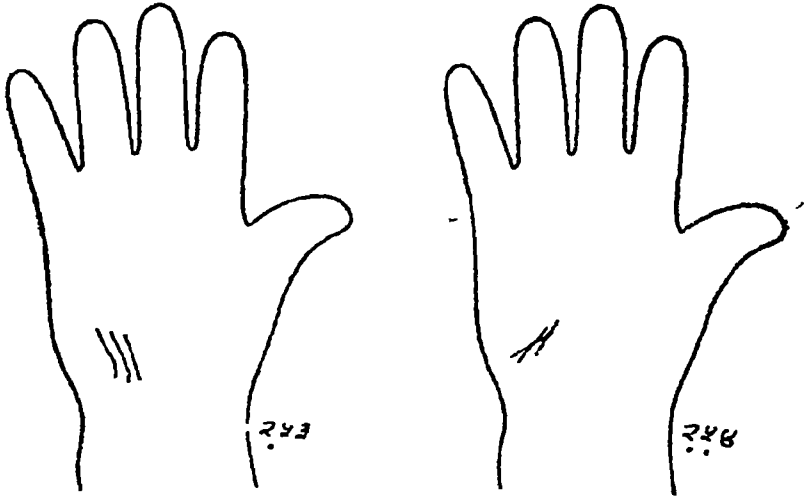
चित्र २५४—यदि एक यात्रा-रेखा दूसरी यात्रा-रेखा को काट रही हो तो जातक को किसी कारणवश दो बार यात्रा करनी होगी—ऐसा समझना चाहिए।

चित्र २५५—यदि यात्रा-रेखा मस्तक-रेखा से मिल रही हो और उस स्थान पर कोई बिन्दु अथवा द्वीप-चिन्ह हो अथवा मस्तक-रेखा

ही खडित हो तो जातक को यात्रा के फलस्वरूप या तो किसी बीमारी का शिकार होना पडेगा अथवा उसके सिर मे चोट लगेगी।
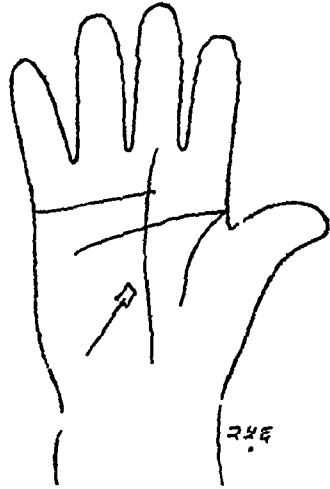
चित्र २५६—यदि यात्रा-रेखा के अन्त पर कोई वर्ग-चिन्ह हो तो जातक को यात्रा में किसी दुर्घटना का शिकार होना पडता है, परन्तु

वर्ग-चिन्ह की उपस्थिति के कारण उसकी प्राण-रक्षा हो जाती है।

चित्र २५७—यदि यात्रा-रेखा चन्द्र-पर्वत से निकलते ही मगल के पर्वत को काटे तो छोटी-छोटी यात्राए होती है।

चित्र २५८—छोटी-बड़ी यात्रा-रेखाए जितनी अधिक सख्या में दिखाई दें जातक को उतनी ही बार छोटी-बडी यात्राए करनी पड़ेगी—ऐसा समझना चाहिए। यदि यात्रा-रेखा का चिह्न केवल बाये हाथ मे ही हो दाये हाथ मे न हो तो जातक केवल यात्रा का विचार ही करता है। वास्तव मे यात्रा नही कर पाता।

चित्र २५९—यदि यात्रा-रेखा खण्डित हो अथवा उसमे कोई द्वीप-चिह्न हो तो जातक को यात्रा मे खतरा होने की सम्भावना रहती है।
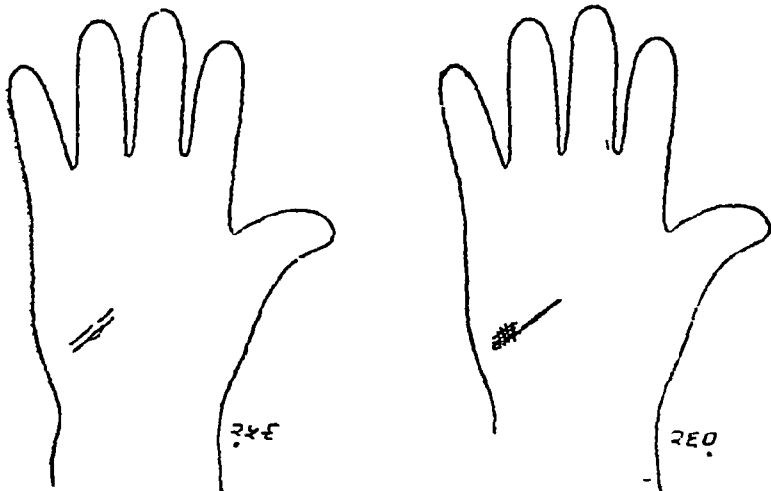
चित्र २६०—चन्द्रमा के पर्वत पर जाल-चिह्न हो और वह यात्रा-रेखा के समीप अथवा उससे सलग्न हो तो यात्रा मे सकट एवं कठिनाइयो का सामना करना पडता है। इसी प्रकार यदि यात्रा-रेखा किसी अन्य छोटी रेखा द्वारा काट दी गई हो, खण्डित हो, लहरदार

हो अथवा किसी अन्य दोष-चिह्न से युक्त हो तो उस स्थिति मे जातक को यात्रा से हानि होगी—ऐसा समझना चाहिए ।

मणिबन्ध से आरम्भ होने वाली यात्रा-रेखाएं

मणिवन्ध से आरम्भ होने वाली यात्रा-रेखाए मणिवन्ध की पहली रेखा से आरम्भ होकर चन्द्रमा के क्षेत्र पर ऊपर की ओर जाती है । चित्र-सख्या २६१ मे इन रेखाओ के स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है ।

चित्र २६१—मणिवन्ध को प्रथम रेखा से जितनी रेखाएं ऊपर की ओर निकलकर चन्द्र-क्षेत्र पर पहुचे, जातक को उतनी ही बार लम्बी यात्राए करनी पड़ेंगी—ऐसा समझना चाहिए । मणिवन्ध-रेखा से चन्द्र अथवा मगल के पर्वत की ओर जाने वाली रेखाए लम्बी यात्राओं की सूचक होती है ।
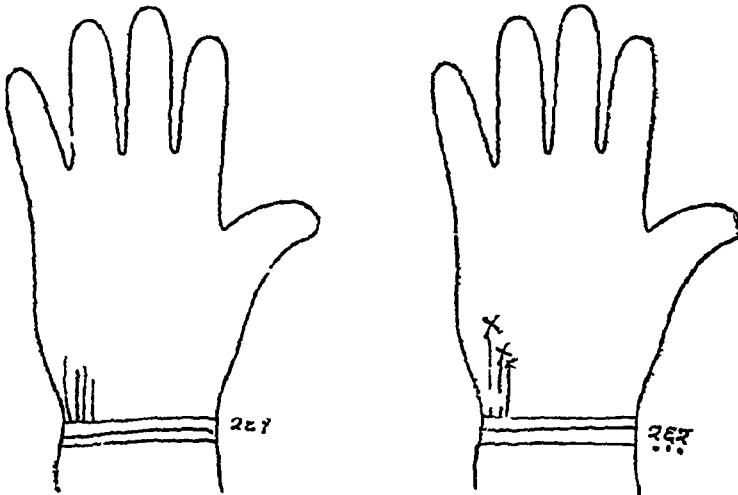
चित्र २६२—यदि यात्रा-रेखा के अन्त मे 'क्रास' चिह्न हो तो यात्रा का परिणाम अच्छा नही रहता । वह निष्फल सिद्ध होती है और उसके कारण मन को दु.ख तथा निराशा रहती है ।

चित्र २६३—यदि यात्रा-रेखा के अन्त मे कोई द्वीप-चिह्न हो तो यात्रा के कारण जातक को आर्थिक हानि उठानी पड़ती है अथवा अन्य किसी प्रकार की असफलता और निराशा का सामना करना पडता है।
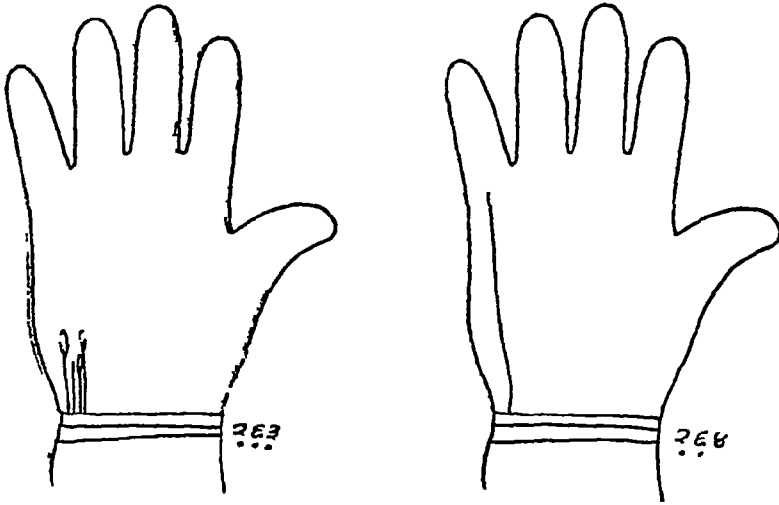
चित्र २६४—यदि यात्रा-रेखा मणिबन्ध-रेखा से आरम्भ हो कर बुध-क्षेत्र पर गई हो तो जातक को यात्रा के कारण आकस्मिक धन की प्राप्ति होती है।

चित्र २६५—यदि यात्रा-रेखा मणिबन्ध-रेखा से आरम्भ होकर सूर्य-क्षेत्र पर गई हो तो जातक को यात्रा के कारण यश-प्रतिष्ठा तथा धन की प्राप्ति होती है।

चित्र २६६—यदि यात्रा-रेखा मणिबन्ध-रेखा से आरम्भ होकर शनि के क्षेत्र पर गई हो तो जातक की यात्रा किसी गहरे घटना चक्र से सम्बन्धित होती है और उसके कारण धन की विशेष प्राप्ति भी हो सकती है।
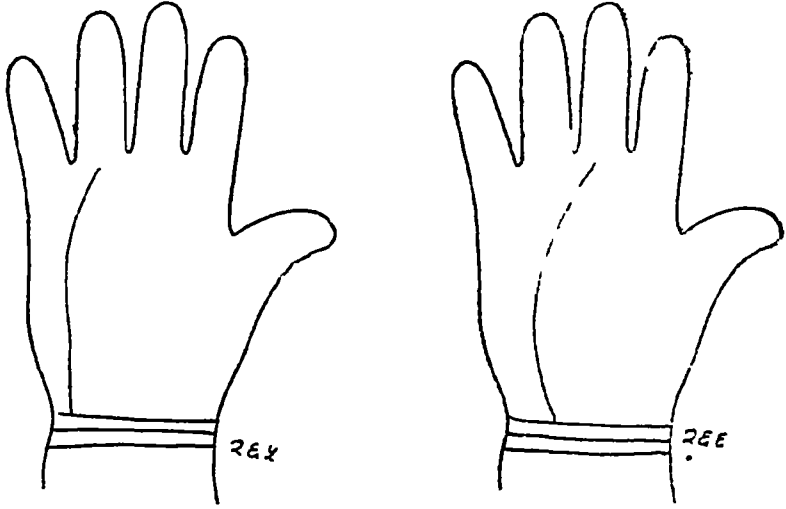
चित्र २६७—यदि यात्रा-रेखा मणिबन्ध-रेखा से आरम्भ होकर वृहस्पति के क्षेत्र पर गई हो तो जातक को यात्रा के कारण किसी विशेष पद, अधिकार अथवा प्रभुत्व की प्राप्ति होती है।
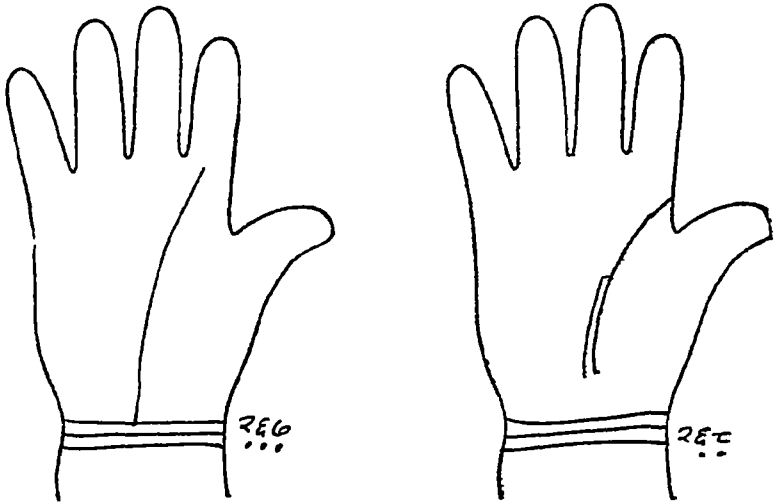
जीवन-रेखा से आरम्भ होने वाली यात्रा-रेखाएं

जीवन-रेखा से आरम्भ होने वाली यात्रा-रेखा जीवन-रेखा में से एक शाखा के रूप मे निकल कर उसके समानान्तर मणिवन्ध की ओर चलती है। चित्र सख्या २६८ मे इस रेखा के स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है।

चित्र २६८—इस रेखा के फल स्वरूप जातक अपने जन्म स्थान को छोड़ कर किसी दूर देश मे जाकर नौकरी अथवा व्यवसाय करता है और वह या तो हमेशा के लिए ही वही वस जाता है या फिर अपने जीवन का एक वहुत वडा भाग विदेश मे व्यतीत करता है।

प्राच्य मतानुसार यात्रा-रेखाएं

प्राचीन भारतीय मतानुसार यात्रा-रेखाओं का उद्गम स्थान अगुष्ठ मूल माना गया है। यथा—

"यात्रा रेखांगुष्ठ मूर्लान्निर्गता पितृसंगता।"

अर्थात् यात्रा-रेखा अगुष्ठ मूल से निकल कर पितृ-रेखा (पाश्चात्यमतानुसार जीवन-रेखा) से जाकर मिलती है।

चित्र २६९—चित्र सख्या २६८ मे प्राच्य मतानुसार यात्रा-रेखा के स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है। ये रेखाए सख्या मे जितनी अधिक होती हैं, जातक को उतनी ही वार यात्राए करनी पडती है। यदि ये रेखाए भिन्न-भिन्न अथवा नक्षत्र, विन्दु आदि चिह्नो से युक्त हो तो यात्रा या तो होती ही नही और यदि होती भी है तो उसके कारण जातक को कष्ट उठाना पडता है।

चित्र २७०—खण्डित तथा दोष-चिह्न युक्त पौर्वात्यमत की यात्रा-रेखाओ के स्वरूप को चित्र सख्या २७० मे प्रदर्शित किया गया है।
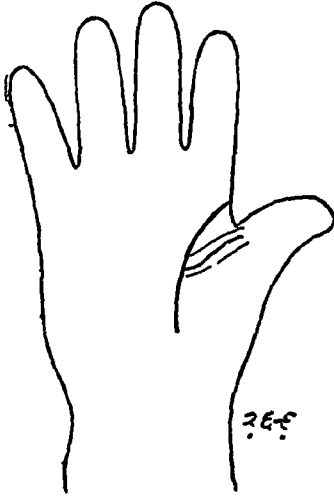
अन्य-रेखाओं द्वारा यात्रा सम्बन्धी विचार

जिन अन्य रेखाओं तथा चिह्नो द्वारा यात्रा सम्बन्धी विभिन्न विचार किये जाते हैं, उनके सम्बन्ध में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

चित्र २७१—यदि कोई रेखा मंगल-क्षेत्र से चलकर जीवन-रेखा से राहु-क्षेत्र पर जा मिली हो तथा मध्यमा उगली के नाखून पर सफेद कौड़ी जैसा चिह्न हो तो जातक सौ मील से अधिक दूरी की लाभदायक यात्रा करता है।

चित्र २७२—प्रजापति-क्षेत्र से निकलकर कोई रेखा सूर्य-क्षेत्र पर पर पहुच रही हो और नाखून पर श्वेत कौडी जैसा चिह्न तीन मास तक स्थिर वना रहे तो जातक समुद्र अथवा आकाश मार्ग द्वारा लम्बी यात्रा करता है।

चित्र २७३—मणिवन्ध से ऊपर तथा जीवन-रेखा मे से निकल कर जो रेखाएं-चन्द्र पर्वत की ओर जाती है, उन्हे 'छाया' पथ-रेखा' कहा जाता है। इन रेखाओ द्वारा भी यात्रा-सम्वन्धी विचार किया जाता है। छाया-पथ रेखाओ द्वारा यात्रा-सम्वन्धी विचार नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।
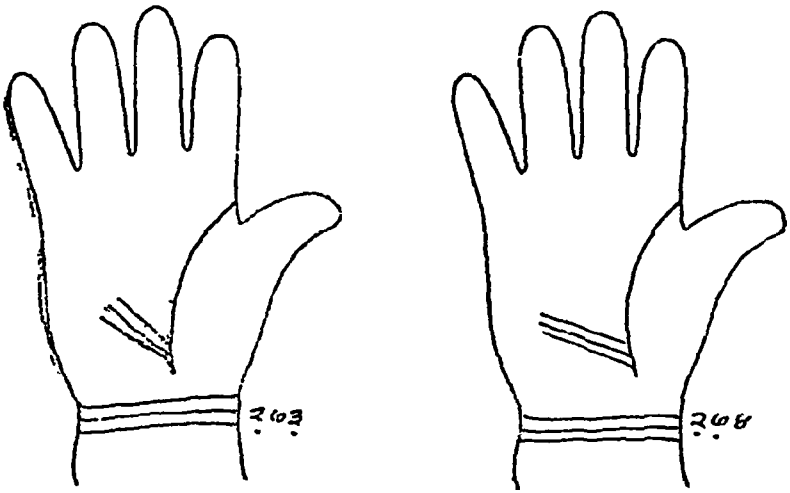
चित्र २७४—यदि छाया-पथ रेखाएं जीवन-रेखा से निकल कर सरल 'स्पष्ट तथा निर्दोष रूप में चन्द्र-पर्वत पर गई हों तो ऐसी

रेखाओ वाला जातक लाभदायक यात्राए करने वाला होता है। वह विवेकशील, विचारवान् तथा तीव्र स्मरण शक्ति सम्पन्न भी होता है। ये रेखाए जितनी अधिक सख्याओ मे होगी, जातक को उतनी ही अधिक यात्राए भी करनी पड़ेगी।

चित्र २७५—यदि छाया-पथ रेखाए छिन्न-भिन्न हो अथवा छोटी-आडी रेखाओ द्वारा उनका मार्ग अवरुद्ध हो अथवा उनके ऊपर क्रास-चिह्न हो तो जातक की यात्राए निष्फल तथा हानिकारक होती हैं यदि छाया-पथ रेखाए बुध-क्षेत्र की ओर हो और उन पर नक्षत्र-चिह्न भी दिखाई देता हो तो जातक को यात्राओ से भरपूर लाभ होता है तथा उसकी समस्त कामनाए पूरी होती है।
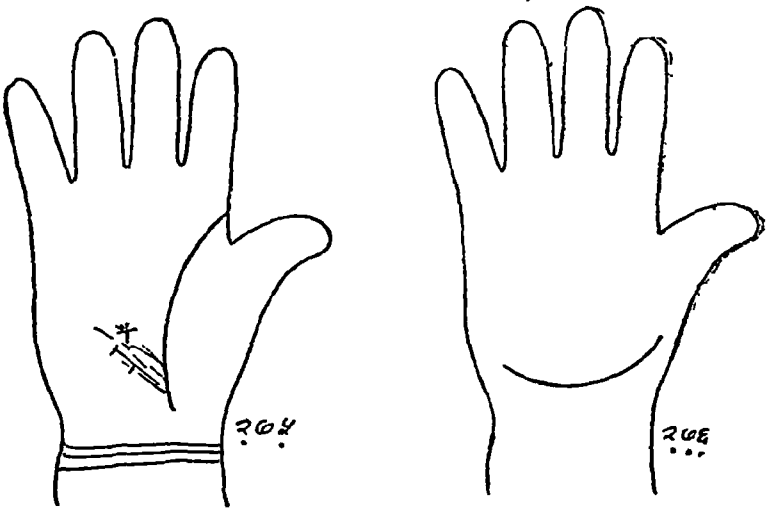
चित्र २७६—यदि शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होकर कोई निर्दोष अर्द्ध-चन्द्राकार रेखा चन्द्र-क्षेत्र को गई हो और उसे कोई अवरोध-रेखा न काटती हो तो जातक को लम्बी समुद्र-यात्रा करनी पड़ती है।

चित्र २७७—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर चार रेखाओ के सयोग से बादाम की शक्ल जैसा चतुर्भुज चिह्न बन गया हो तो जातक को समुद्र-यात्रा करनी पडती है।
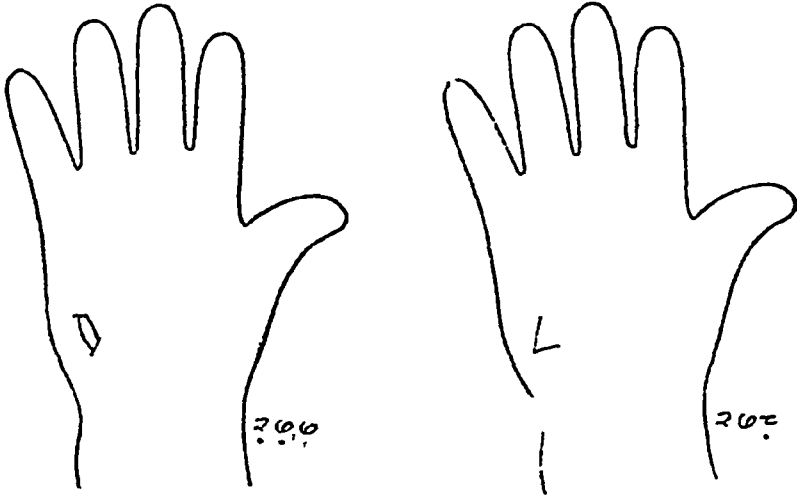
चित्र २७८—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर दो रेखाओ के सयोग से कोई ४५ अश का कोण बन रहा हो और वह स्पष्ट तथा निर्दोष हो तो जातक को अचानक ही पाच सौ से दो हजार मील लम्बी यात्रा करनी पड़ती है।

चित्र २७९—यदि भाग्य-रेखा से कोई शाखा-रेखा निकल कर पूर्वोक्त कोण की बढी हुई भुजा से आकर मिलती हो तो जातक को ऐसी यात्रा करनो पड़ती है जिसमे जल तथा स्थल दोनो की यात्रा सम्मिलित हो। इस प्रकार की यात्राए तीर्थ भ्रमण सम्बन्धी भी हो सकती है।

चित्र २८०—यदि मस्तक-रेखा से कोई एक शाखा-रेखा निकल कर प्रजापति के क्षेत्र को जा रही हो और उसकी दूसरी शाखा-रेखा चन्द्रमा तथा वरुण के क्षेत्र को अलग-अलग करती हुई उन दोनों के
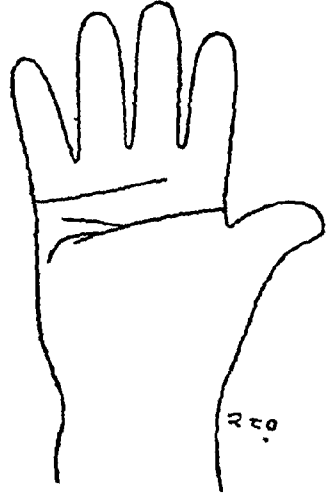
बीच में होकर जा रही हो तो जातक को किसी बड़ी लम्बी यात्रा पर जाना पडता है ।

चित्र २८१—यदि जीवन-रेखा दो शाखाओं में बट गई हो और उसकी एक शाखा चन्द्र-क्षेत्र पर चली गई हो तो ऐसी रेखा वाले जातक को अपने जीवन-भर यात्राएं करनी पड़ती हैं ।
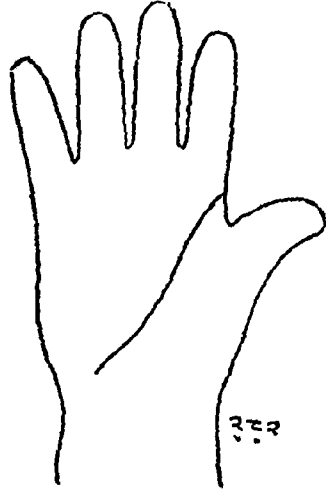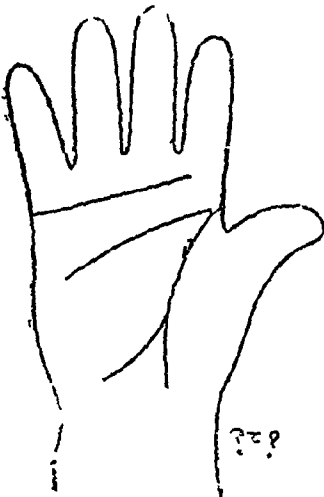
चित्र २८२—यदि जीवन-रेखा अपने निश्चित मार्ग को छोड कर चन्द्रमा के पर्वत पर चली गई हो तो ऐसी रेखा वाले जातक को भी जीवन भर भ्रमण करना पड़ता है तथा उसकी मृत्यु भी परदेश मे ही होती है।

चित्र २८३—यदि जीवन-रेखा से कोई शाखा-रेखा निकल कर अर्द्धवृत्ताकार होती हुई मगल-क्षेत्र के चारों ओर घूम गई हो तो ऐसा जातक कभी यात्रा नही करता। वह अपने जन्म स्थान मे ही बन्दा रहता है।
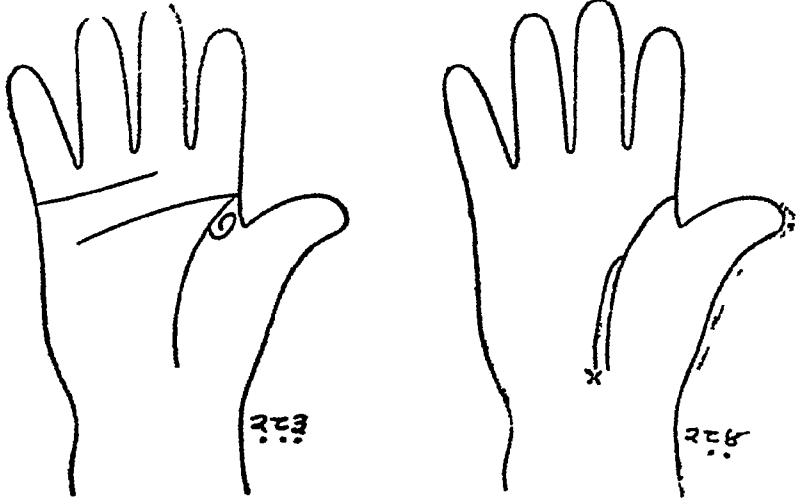
चित्र २८४—यदि यात्रा-रेखा जीवन-रेखा से निकली हो और उसके समाप्ति स्थल पर एक छोटा सा क्रास-चिह्न हो तो ऐसी रेखा वाले जातक की यात्रा दु:ख तथा निराशा देने वाली होती है।

चित्र २८५—यदि यात्रा-रेखा जीवन-रेखा से निकली हो और उसके समाप्ति-स्थल पर कोई द्वीप-चिह्न हो तो ऐसी रेखा वाले जातक को यात्रा के कारण हानि उठानी पड़ती है।

चित्र २९० — यदि चन्द्र-क्षेत्र पर यात्रा-रेखा स्पष्ट हो और शनि-क्षेत्र अथवा उसके कुछ नीचे से आकर कोई रेखा जीवन-रेखा को काट रही हो तो जातक को यात्रा मे किसी दुर्घटना का शिकार वनना पड़ता है।

चित्र २९१—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर यात्रा-रेखा स्पष्ट हो, परन्तु मस्तक रेखा पर कोई अशुभ-चिह्न हो तो जातक को मस्तक मे चोट लगने के कारण मृत्यु का शिकार होना पडता है।

इसी प्रकार जिन जातकों के हाथ मे यात्रा-रेखाए स्पष्ट हो और साथ ही हृदय-रेखा, जीवन-रेखा, मस्तक-रेखा, भाग्य-रेखा अथवा सूर्य-रेखा पर कोई अशुभ लक्षण भी दिखाई देता हो तो जातक को यात्रा-काल मे उस रेखा से सम्वन्धित कष्ट का शिकार होना पड़ेगा ऐसा समझना चाहिए।

भाई-वहिन की रेखाएं

भाई-वहिन की रेखाओं के सम्वन्ध मे प्राच्य ग्रन्थों मे निम्नलिखित वर्णन किया गया है—

आयुलखा बसानाभिर्नेखाभिर्मणिबंधत: ।
स्पष्टाभिर्भ्रातरीऽस्प्रष्टतराभि जमिय. पुन ॥
अस्पष्टाभिरदीर्घाभीभ्रतिरस्ययुषा स्त्रुटी. ।
अंगुष्ठमूले रेखास्तु भ्रातृ भांडानिशंसतो ॥
मणेरंगुष्ठमूलांतं या रेखास्तल संमुखा ।
सूक्ष्म स्ताहो भगिन्यास्तु भ्रातर स्थूलरेखिता: ॥
तासुया अस्फुटा रेखा स्तावतोनिधनंगता. ।
या स्फुटा स्तय जोवंतीइति सामुद्रिकंवच. ॥

चित्र २६२—भावार्थ—मणिबन्ध से जोवन-रेखा तक के बोच वाले स्थान मे जितनी स्पष्ट रेखाए हों उतने ही भाई और जितनी अस्पष्ट रेखाएं हों, उतनो बहनो की सख्या समझनो चाहिए।
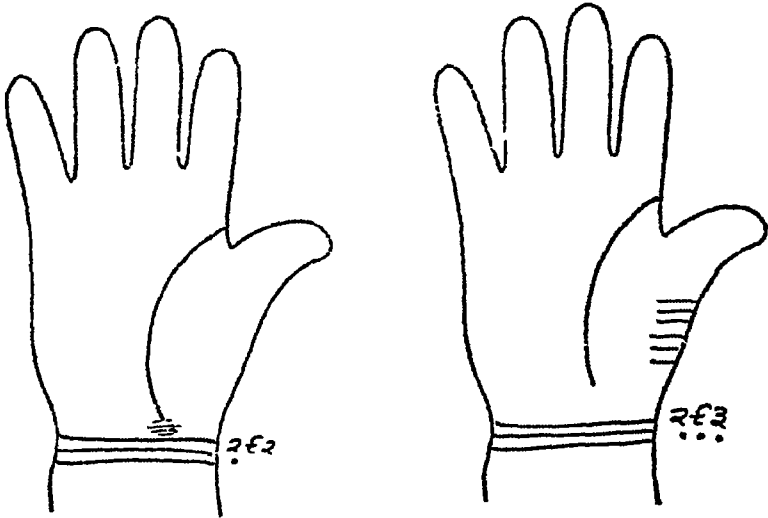
चित्र २६३—दूसरे आचार्यों का यह कहना है कि मणिबन्ध से लेकर अंगुष्ठ मूल तक के स्थान मे जितनो-जितनी रेखाए बाहरी भाग की ओर नीचे की ओर मुह किये हुए पुष्ट तथा निर्दोष हः उतने ही भाई तथा जितनी रेखाए सूक्ष्म अर्थात् पतली हों, उतनी ही बहनें समझनी चाहिए।

चित्र २९४—इन रेखाओ मे जितनी रेखाए अस्पष्ट अथवा दोषपूर्ण दिखाई देती हो, उतने ही भाई-बहनों की मृत्यु हो चुकी है और जितनी रेखाए स्पष्ट दिखाई देती हो, उतने ही भाई बहन जीवित हैं—ऐसा समझना चाहिए।

प्राच्य मतानुसार पुत्र तथा पुत्रियों की सख्या ज्ञात करने के लिए भी इन्ही दोनो प्रकार की रेखाओ का वर्णन किया गया है। अत हस्त-परीक्षक को चाहिए कि वह पुन इन्ही रेखाओ द्वारा ही भाई-बहन की सख्या भी ज्ञात करने की बा त पढकर भ्रम मे न पडे अपितु यह समझना चाहिए कि उक्त दोनो स्थानो पर पाई जाने वाली रेखाओ में जो भीतर की ओर हों, उनसे पुत्र-पुत्री सम्बन्धी विचार करना चाहिए और जो रेखाए बाहर की ओर हो उनके द्वारा भाई-बहनो की सख्या के सम्बन्ध मे विचार किया जाना चाहिए।

इसी सम्बन्ध मे 'स्कन्द पुराण' तथा सामुद्रिक तिलक' का मत और भी भिन्न पाया जाता है।

'सामुद्रिका तिलक' मे लिखा है—

> यावन्त्योर्मणिबन्धायुर्लेखान्त प्रतिष्ठिता स्थूला।
> तावत्संख्यकान् भ्रातृन वदन्ति सूक्ष्मा पुनर्भगिनी॥
> रेखानिश्छिन्नाभि संभावित मृत्यवो ज्ञेया।
> यावत्यस्ता. पूर्णानियतं जीवन्ति तत्संख्या॥

इसी प्रकार 'स्कन्द पुराण' कहता है—

> यावन्त्योमणिबन्धार्लेखयोरन्तरे स्थिता।
> सहोदरगण स्तावान् विज्ञेय पाणिपल्लवे॥

चित्र २९५—अर्थात् मणिबन्ध और आयु (पाश्चात्य मतानुसार हृदय-रेखा) के बीच वाले भाग मे हथेली के बाहर की ओर जितनी

रेखाएं निकली हुई हो, जातक के उतने ही भाई-बहन होते हैं। स्थूल रेखाओ से भाई तथा सूक्ष्म रेखाओं से बहनो की गणना करनी चाहिए।
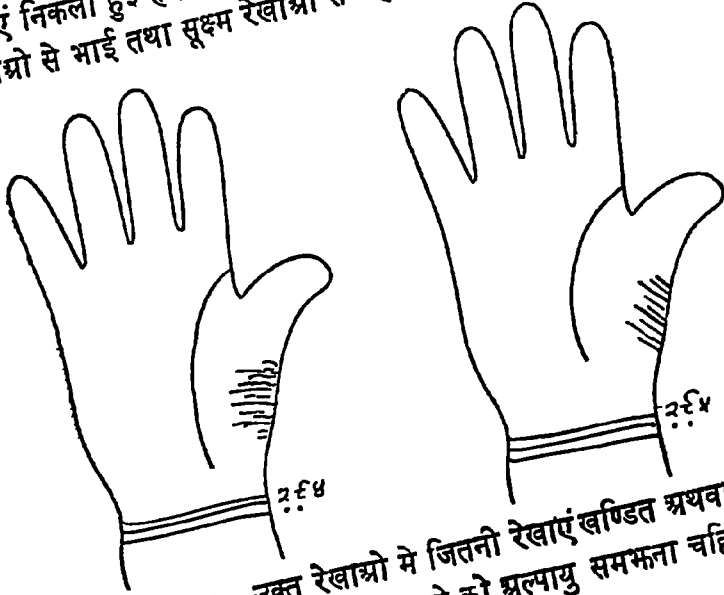
चित्र २९६—उक्त रेखाओ मे जितनी रेखाएं खण्डित अथवा छिन्न-भिन्न दिखाई दें उतने ही भाई-बहनो को अल्पायु समझना चाहिए तथा

जितनी रेखाए पूर्ण, स्पष्ट एव निर्दोष हो, उतने ही भाई-बहन दीर्घायु होगे—ऐसा मानना चाहिए।

चित्र २६७—पाश्चात्य पद्धति के अनुसार अगूठे के मूल मे रहने वाली रेखाओ द्वारा जातक के भाई-बहनो की सख्या निश्चित की जाती है, अर्थात् अगूठे के मूल भाग मे जितनी रेखाए मोटी तथा पतली हो, जातक के उतने ही भाई बहन होगे। इसमे जो रेखाए काली तथ महीन हो, वे भाई-बहनो की मृत्यु की सूचक होती है।

विशिष्ट-रेखाएं

विशिष्ट-रेखाओं के अन्तर्गत उन छोटी रेखाओं की गणना की जाती है, जो हजारो-लाखो हाथों मे से किसी एक पर पाई जाती है। इन रेखाओं का अपना अलग महत्त्व होता है। हस्त-परीक्षक को चाहिए कि यदि उसे जातक के हाथ पर कोई ऐसी रेखा दिखाई दे तो उसके सम्बन्ध मे विशिष्ट फलादेश भी करे। चित्र सख्या २९९ मे हथेली पर इन विशिष्ट रेखाओ की स्थिति को प्रदर्शित किया गया है। विशिष्ट रेखाओ के प्रभाव के सम्बन्ध मे आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए। विशिष्ट-रेखाओ का फलादेश प्राच्य तथा तथा पाश्चात्य—दोनों मतों पर आधारित है।

अतीन्द्रिय ज्ञान–रेखा

चित्र २९८—इसे अग्रेजी में "Line of Intuition" कहा जाता है। यह रेखा चन्द्र-क्षेत्र के निचले भाग से आरम्भ होकर प्राय: धनुषा-

२९८

कार गोलाई लिये हुए बुध-क्षेत्र पर पहुचती है, परन्तु कुछ हाथो मे सीधी भी पाई जाती है। यह रेखा सब लोगो के हाथो मे नही पाई जाती। केवल उन्ही लोगो के हाथ में दिखाई देती है जिनमे अतीन्द्रिय-ज्ञान अत्यधिक मात्रा मे होता है। स्मरण रहे कि अतीन्द्रिय-ज्ञान वाला व्यक्ति भविष्यदर्शी तथा अन्तंदर्शी होता है और वह अनुमान से ही भविष्य मे होने वाली घटनाओ तथा किसी भी मनुष्य के मन की बातो का आभास पा लेता है।
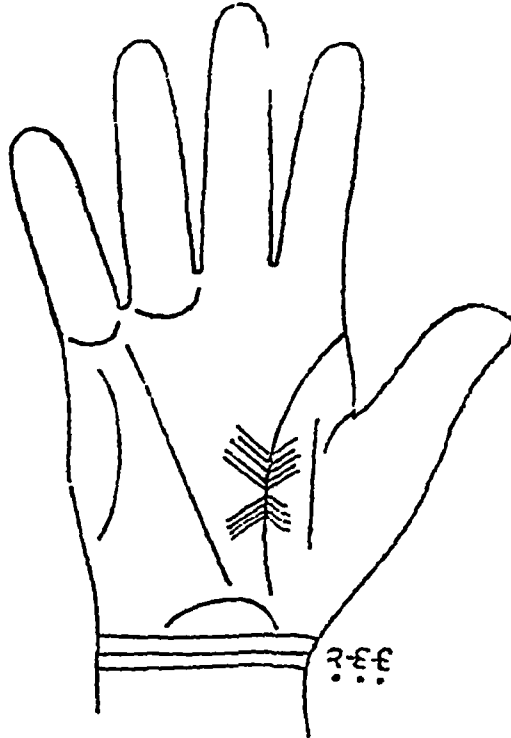
[हथेली पर विशिष्ट रेखाओ की स्थिति]

इस रेखा वाला व्यक्ति गुप्त विद्याओं का ज्ञाता, समाधि लगाने वाला, देवाराधक तथा वाक्-सिद्ध होता है। वह अपने मुह से जो भी बात कहता है, वह सत्य हो जाती है। ऐसी रेखा वाला व्यक्ति भले ही

कम पढ़ा-लिखा हो फिर भी उसकी बुद्धि तथा अन्तर-ज्ञान-शक्ति अत्यधिक तीव्र होती है। इस रेखा को 'प्रत्यक्ष-दर्शन' भी कहा जाता है।

यह रेखा यदि किसी ज्योतिषी अथवा सामुद्रिकशास्त्री के हाथ मे हो तो उसके द्वारा किये गए फलादेश तथा भविष्य वाणियां शत-तिप्रशत सत्य सिद्ध होती हैं।

इस रेखा की विभिन्न स्थितियां तथा अन्य रेखाओं के साथ संयोग द्वारा होने वाले फलाफल के सम्बन्ध मे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चित्र ३००—यह रेखा चन्द्र-पर्वत से आरम्भ होकर सीधी अथवा धनुपाकार होती हुई बुध के पर्वत को घेरती हुई बुध-क्षेत्र तक गई हो तो ऐसी रेखा वाला व्यक्ति बहुत बड़ा योगी अन्तरज्ञानी तथा सभी रहस्यों को जानने वाला होता है। यदि यही रेखा दोनों हाथो मे एक जैसी दिखाई दे तो जातक परिपूर्ण गुणी होता है, परन्तु अदृश्य रहता है।
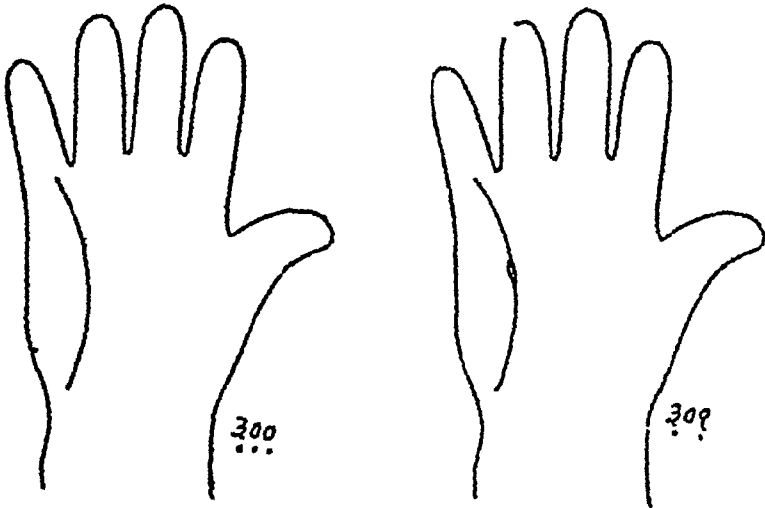
चित्र ३०१—यदि इस रेखा पर 'यव' (द्वीप-चिह्न) हो तो ऐसे लक्षण वाले जातक मे अलौकिक पदार्थों को देखने की शक्ति भी पाई जाती है, परन्तु कुछ विद्वानो के मतानुसार ऐसे जातक का मस्तिष्क कमजोर होता है और वह निद्रावस्था मे ही ससार भर का भ्रमण करता रहता है।

चित्र ३०२—यदि यह रेखा छोटी हो तो ऐसा व्यक्ति चचल तथा अशान्त स्वभाव वाला होता है और उसे प्रसन्न कर पाना कठिन होता है।
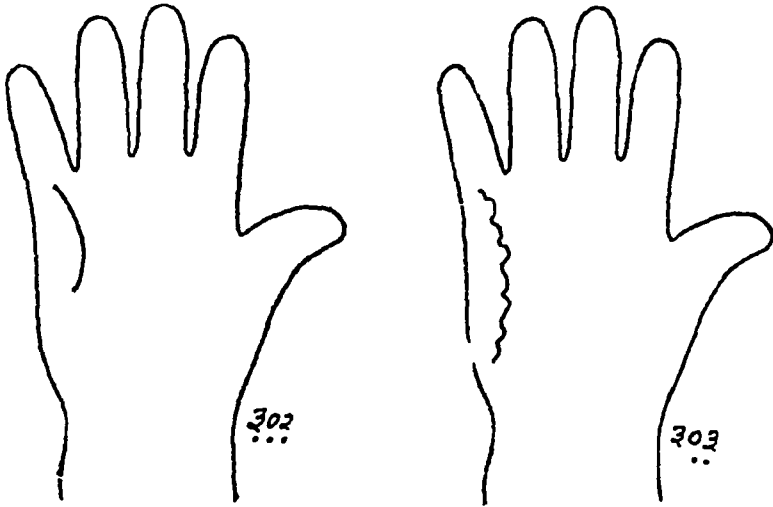
चित्र ३०३—यदि यह रेखा लहरदार हो तो जातक में पूर्वोक्त अशान्ति, अस्थिरता एवं चंचलता आदि गुण पाए जाते हैं।

चित्र ३०४—यदि यह रेखा शाखायुक्त हो तो भी जातक का स्वभाव पूर्वोक्त प्रकार का तो होता है अर्थात् वह चंचल, अशान्त तथा अस्थिर होता है।
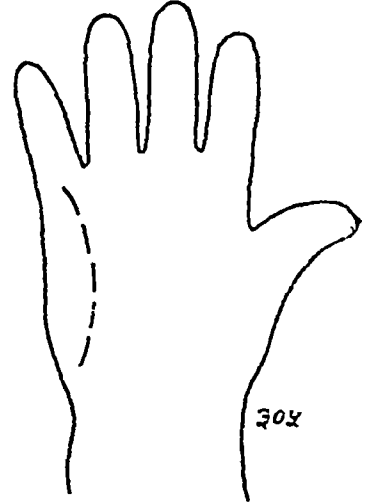
चित्र ३०५—यदि यह रेखा कई स्थानो पर खण्डित (टूटी हुई) दिखाई दे तो ऐसी रेखा वाले जातक में अन्तरज्ञान शक्ति कभी तो अधिक मात्रा मे प्रकट होती है और कभी एकदम लुप्त हो जाती है।

चित्र ३०६—यदि यह रेखा गहरी, सुन्दर, स्पष्ट और अखण्ड हो,

तर्जनी उगली नोकदार हो तथा चन्द्र-क्षेत्र का ऊपरी भाग विशेष ऊचा हो तो ऐसे लक्षण वाले जातक मे जादू अथवा मेस्मिरेजम आदि विद्याओ द्वारा दूसरे लोगो को प्रभावित करने की क्षमता होती है।

चित्र ३०७—यह रेखा चन्द्र-क्षेत्र के जितने अधिक ऊपरी भाग से प्रारम्भ हुई होगी उतना ही जातक मे अतीन्द्रिय ज्ञान अधिक मात्रा मे होगा।

चित्र ३०८—यदि यह रेखा मगल के प्रथम क्षेत्र पर ही समाप्त हो गई हो तो जातक मे जादू अथवा मैस्मरेजम आदि के द्वारा लोगो को प्रभावित करने की क्षमता अत्यधिक मात्रा मे पाई जाती है।
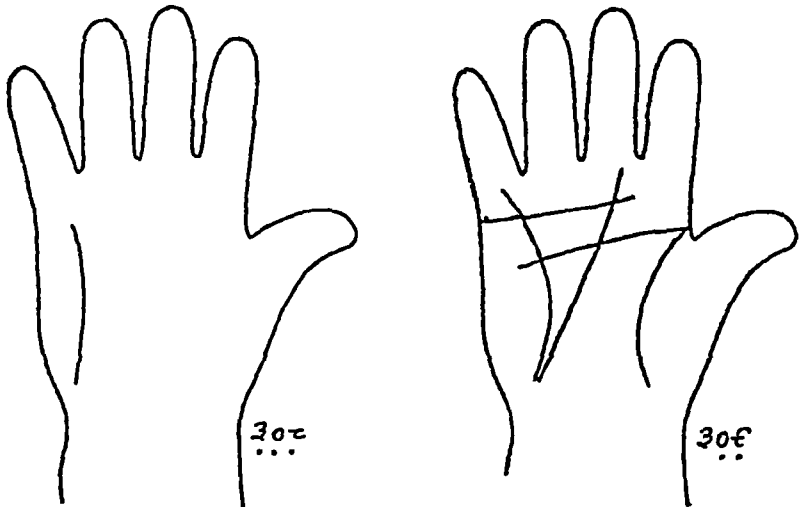
चित्र ३०९—यदि इस रेखा द्वारा भाग्य-रेखा तथा मस्तक-रेखा के सयोग से हथेली पर त्रिकोण बनता हो तो ऐसे चिह्न वाला जातक गुप्त-विद्याओ का अत्यधिक ज्ञाता होता है।

चित्र ३१०—यदि यह रेखा दोनो हाथो मे हो तथा जीवन-रेखा और भाग्य-रेखा के साथ ही यह रेखा भी अनेक छोटी-छोटी खड़ी रेखाओं द्वारा कट रही हो तो ऐसी रेखाओ वाले जातक के सम्बन्धी लोग ही

उसकी गुप्त-विद्याओ को प्रवृत्ति के क्षेत्र मे बाधा पहुचाने वाले सिद्ध होते हैं।
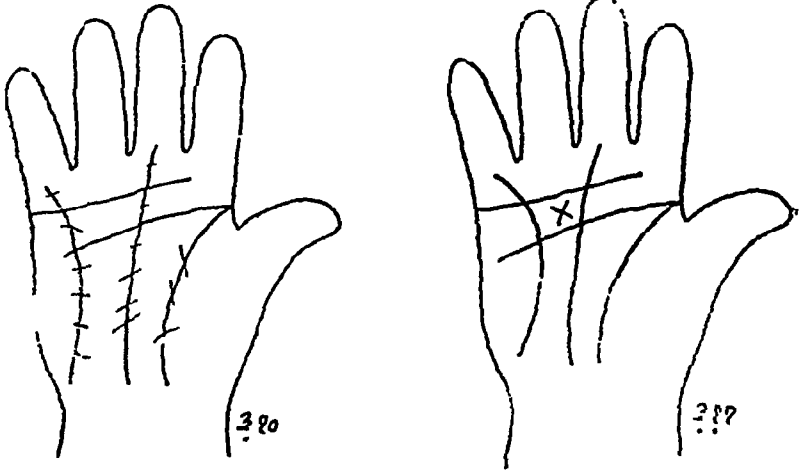
चित्र ३११—यदि यह रेखा स्पष्ट तथा निर्दोष हो और बृहद् चतुष्कोण में क्रास-चिह्न भो हो तो ऐसे लक्षण वाला जातक ज्योतिष तथा फलितशास्त्र का महापण्डित होता है।

चित्र ३१२—यदि जातक के हाथ मे यह रेखा स्पष्ट तथा निर्दोष हो, साथ ही शुक्र-मुद्रिका भो और शनि-मुद्रिका भी उपस्थित हो और गुरु के उन्नत पर्वत पर 'क्रास' अथवा चतुष्कोण चिह्न भी हो तो ऐसे लक्षणों वाला जातक ईश्वर का साक्षात्कार करने वाला, ज्ञानी, योगी, त्रिकालज्ञ, महात्मा, अन्तरज्ञानी, दिव्य दृष्टि सम्पन्न, भविष्यवक्ता तथा महात्मा होता है। ऐसे शुभ चिह्नों से युक्त करोड़ों व्यक्तियो मे कही एकाध पाए जाते है और वह भो प्रायः गुप्त ही बने रहते है।

चित्र ३१३—यदि यह रेखा लहरदार होकर मंगल-क्षेत्र तक फैली हुई हो तो ऐसा जातक स्नायविक दुर्बलता के कारण सदैव ही अस्थिर
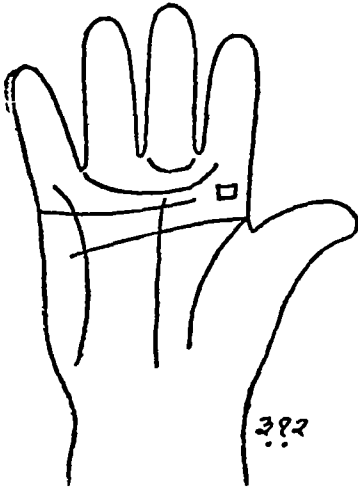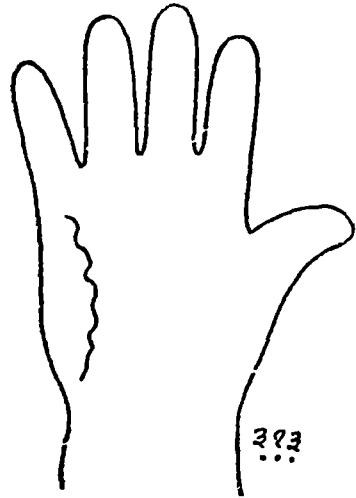
चित्त बना रहता है। गुप्त विद्याओ का जानकार होते हुए भी वह उनका समुचित प्रयोग नहीं कर पाता।

चित्र ३१४—यदि किसी जातक के दोनो हाथो मे उक्त रेखा हो और जीवन-रेखा से एक रेखा निकलकर उसे काट रही हो तो ऐसी
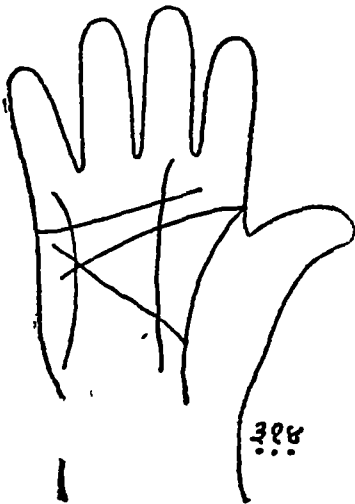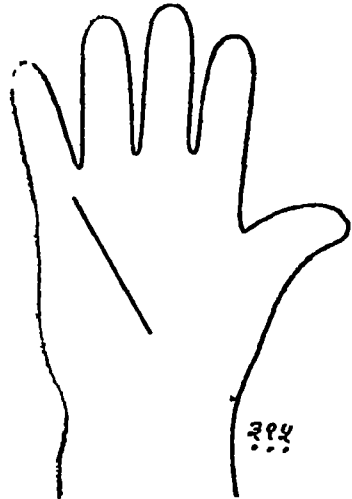
रेखा वाले जातक के सम्बन्धी लोग ही उसे गुप्त विद्या की शिक्षा प्राप्त करने मे बाधा पहुचाते है ।

कामुकता की रेखा

चित्र ३१५—यह रेखा केतु-क्षेत्र से चलकर बुध-क्षेत्र की ओर जाती है अत कुछ लोग इसे स्वास्थ्य-रेखा की सहायक-रेखा भी मानते है । अत. हस्त-परोक्षक को इस रेखा पर विचार करते समय यह ध्यान रखना आवश्यक है कि वह कही स्वास्थ्य-रखा को ही 'कामुकता की रेखा न समझ बैठे अथवा यह कि इस 'कामुकता' की रेखा को 'स्वास्थ्य-रेखा' न समझ ले । 'स्वास्थ्य-रेखा' तथा 'कामुकता' की रेखा मे मुख्य अन्तर यही होता है कि स्वास्थ्य-रेखा तो हथेली मे पूर्व स्थिति किसी भी स्थान से आरम्भ होकर किसी भी स्थान पर समाप्त हो जाती है, परन्तु यह रेखा प्राय केतु-क्षेत्र से ही आरम्भ होकर, बुध-क्षेत्र पर समाप्त हाती है । कुछ विद्वान् इस रेखा को 'सुनन-रेखा' के नाम से भी, पुकारते है । पाश्चात्य विद्वान् इसे अंग्रेजी भाषा मे 'Via Lasciva' कहकर पुकारते हैं ।

इस रेखा की विभिन्न स्थितियों का फलाफल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चित्र ३१६–यदि यह रेखा स्वास्थ्य-रेखा के समानान्तर स्पष्ट तथा निर्दोष स्थिति मे बुध-क्षेत्र पर गई हो तो ऐसी रेखा वाला व्यक्ति अत्यधिक विलासी, आरामपसन्द, ऐश्वर्यशाली, नीतिज्ञ, श्रेष्ठ वक्ता, विद्वान् चतुर, समझदार तथा गुणवान् होता है । ऐसी रेखा वाले व्यक्ति राजनतिक क्षेत्र मे कूटनीति का आश्रय लेकर अत्यधिक सफलता प्राप्त करते है ।

चित्र ३१७—यदि यह रेखा स्पष्ट तथा निर्दोष हो, परन्तु स्वास्थ्य-रेखा खण्डित हो तो यह स्वास्थ्य-रेखा के दोष को कम या समाप्त कर देती है ।
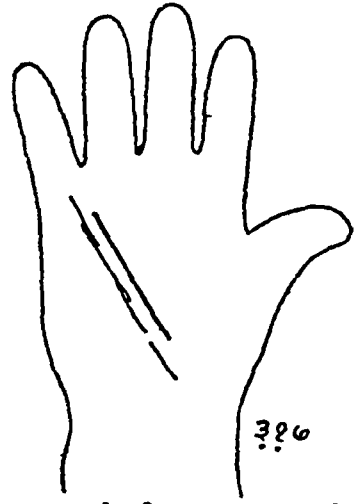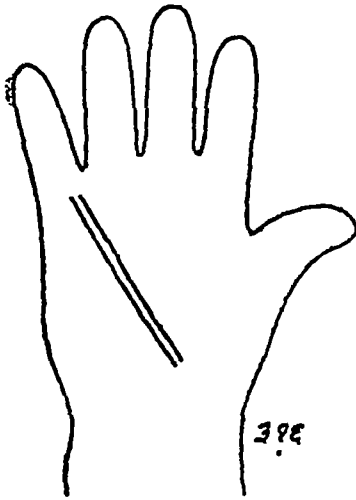
चित्र ३१८—यदि यह रेखा लहरदार हो तो जातक अत्यधिक व्यभिचारी होता है, जिसके कारण उसकी भाग्योन्नति मे बाधा पड़ती है।
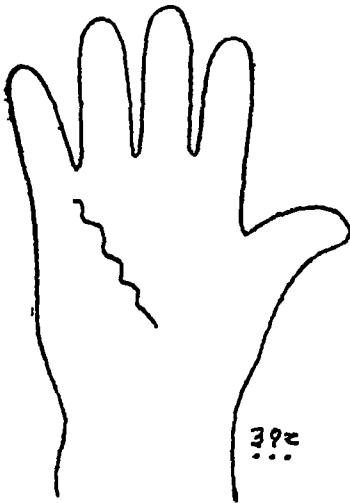
चित्र ३१९—यदि यह रेखा केतु-क्षेत्र से भी और ऊपर शुक्र-क्षेत्र

से आरम्भ हुई हो और लहरदार हो तो अत्यधिक व्यभिचारी होने के कारण जातक की आयु कम रह जाती है, फलत. उसे अल्पायु मे ही मृत्यु का शिकार बनना पड़ता है।

चित्र ३२०—यदि यह रेखा अपने अन्तिम भाग में द्विजिह्व हो जाय तो जातक अत्यधिक भोग-विलास के कारण दुर्बल, रोगी, आलसी तथा नपुसक हो जाता है। ऐसा मनुष्य शकालु प्रवृत्ति का तथा डरपोक भी होता है।
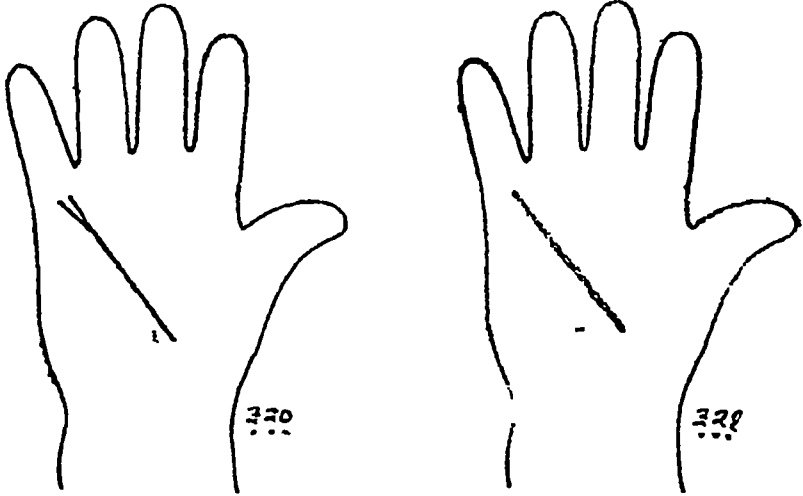
चित्र ३२१—यदि यह रेखा जजोरदार हो तो उसका फल भी लहरदार रेखा की भाति ही होता है अर्थात् जातक अत्यधिक व्यभिचारी होता है, जिसके कारण उसकी भाग्योन्नति रुक जाती है।

चित्र ३२२—यदि यह रेखा स्वास्थ्य-रेखा को काट रही हो तो जातक का स्वास्थ्य खराब रहता है। उसे मन्दाग्नि, यकृत् तथा पेट सम्बन्धी अनेक रोग हो जाते है। स्वास्थ्य गिर जाने के फलस्वरूप धन तथा सफलता को भी हानि होती है। ऐसे लक्षण वाला जातक भी अधिक विलासी होता है।

चित्र ३२३—यदि इस रेखा पर द्वीप-चिन्ह हो तो भी जातक का स्वास्थ्य खराब रहता है। उसका स्वभाव चिडचिडा हो जाता है और वह हर समय लडाई-झगडा करने पर आमादा रहता है, जिसके कारण

उसके शत्रुओं की संख्या वढ जाती है और भाग्योन्नति में बाधा पड़ती है।

चित्र ३२४—यदि इस रेखा पर नक्षत्र-चिह्न हो तो उसे शुभ लक्षण समझना चाहिये। ऐसी रेखा वाला जातक विषयी होते हुए भी धनी तथा धन की रक्षा करने वाला होता है। परन्तु कुछ विद्वान् इस रेखा पर नक्षत्र-चिह्न की उपस्थिति को हानिकारक भी वताते है।

चित्र ३२५—यदि इस रेखा मे से कोई शाखा-रेखा निकलकर सूर्य-रेखा मे जा मिले तो जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है और वह धनी वन जाता है।

चित्र ३२६—यदि इस रेखा मे से निकलने वाली शाखा-रेखा सूर्य-रेखा को काटती हुई आगे बढ जाय तो अत्यधिक व्यभिचार अथवा भोग-विलास के कारण जातक के धन और यश की हानि होती है।
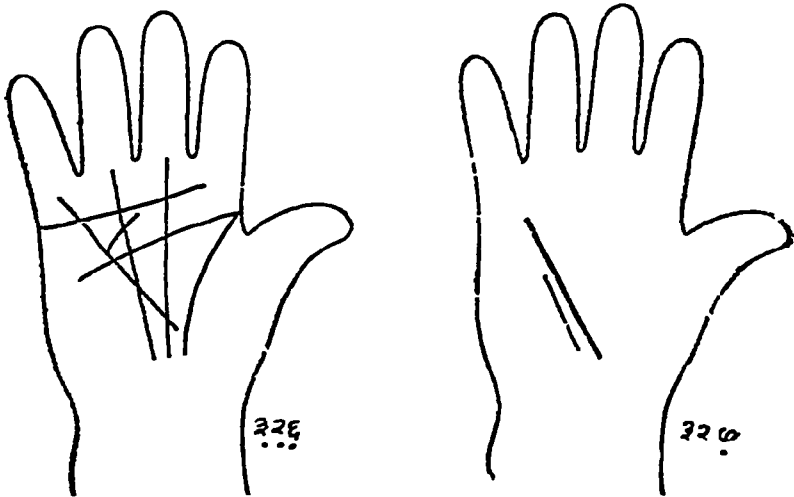
चित्र ३२७—यदि यह रेखा स्वास्थ्य-रेखा से अधिक वड़ी, गहरी, चौड़ी तथा लाल रंग की हो तो ऐसा जातक प्रेम के मामलो मे अधीर,

अम्यागम्य का विचार किये बिना व्यभिचार कर्म मे अधिक प्रवृत्त होने वाला, नीच कुल की स्त्रियों से सम्पर्क रखने वाला तथा अस्थिर प्रकृति का होता है।

चित्र ३२८—यदि यह रेखा कई टुकडों से मिलकर बनी हो तो जातक को विषयी बनाती है और उसके स्वास्थ्य, धन तथा प्रतिष्ठा के लिए हानिकारक सिद्ध होती है।
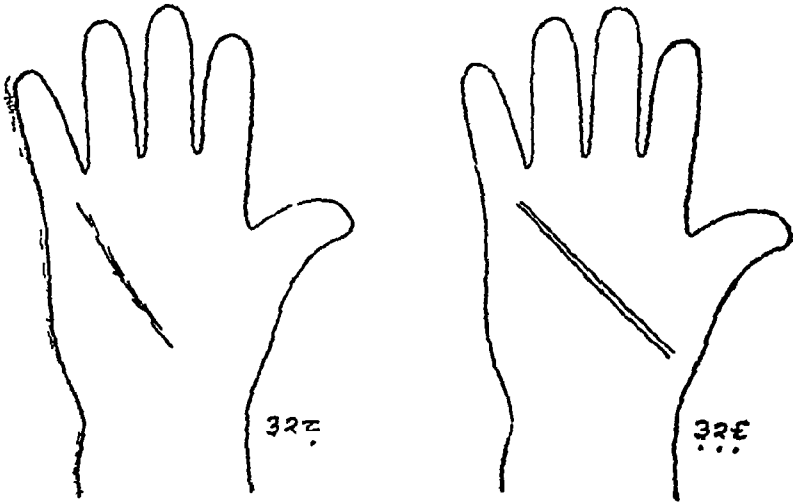
चित्र ३२९—यदि यह रेखा दुहरी होकर शुक्र-क्षेत्र से बुध-क्षेत्र तक जाती हो तो जातक के स्वभाव को चिड़चिड़ा, तथा क्रोधी बना देती है। वह अत्यधिक कामी तथा इन्द्रिय लोलुप होता है, जिसके कारण उसका स्वास्थ्य गिर जाता है और उसे विभिन्न प्रकार के उदर विकार, गुर्दे का दर्द तथा जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोग हो जाते हैं।

प्रवृत्ति-रेखा

चित्र ३३०—किसी-किसी हाथ में मणिबन्ध के ऊपर शुक्र-क्षेत्र तथा चन्द्र-क्षेत्र को जोड़ने वाली अर्द्धचन्द्राकार रेखा पाई जाती है, इसे

'प्रवृत्ति-रेखा' कहते हैं। जिस जातक के हाथ मे यह रेखा हो, वह विद्वान् तथा वाग्मी होता है।
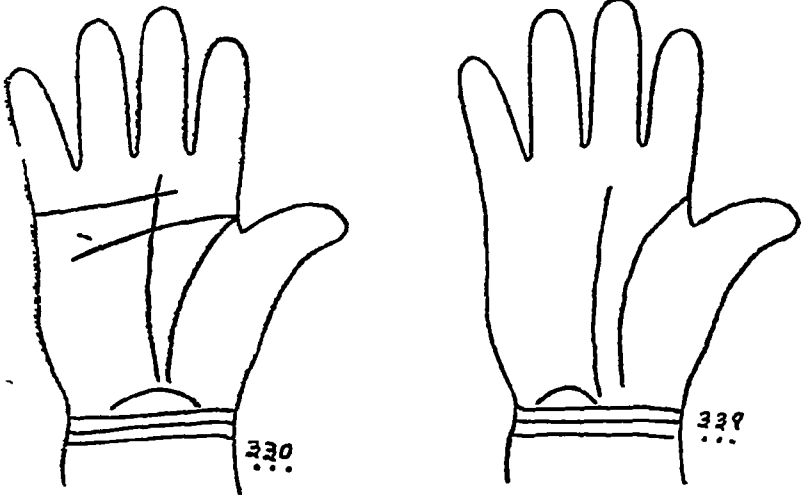
चित्र ३३१—इस रेखा का दूसरा स्वरूप यह भी होता है कि वह शुक्र तथा चन्द्र—इन दोनों क्षेत्रों को नही जोड़ती, बल्कि मणिबन्ध के मध्य भाग से आरम्भ होकर चन्द्र-क्षेत्र के ऊपरी भाग मे ही अर्द्धचन्द्राकार रूप मे अवस्थित रहती है। इसका फल भी पूर्वोक्त रेखा जैसा ही समझना चाहिए।

इस रेखा की विभिन्न स्थितियों का शुभशुभाफल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

चित्र ३३२—यदि हाथ मे प्रवृत्ति रेखा निर्दोष स्पष्ट स्थिति मे हो और सूर्य के उच्च स्थान से आकर कोई रेखा अथवा स्वय सूर्य-रेखा ही इस रेखा से सयोग करे तो ऐसी रेखा वाले जातक के सुख तथा ऐश्वर्य मे अत्यधिक वृद्धि होती है। वह विद्वान् तथा गुणवान् भी होता है।

चित्र ३३३—यदि प्रवृत्ति-रेखा स्पष्ट तथा निर्दोष हो और मस्तक-रेखा चन्द्र-क्षेत्र पर आई हो तथा उसके अन्त मे द्वीप-चिह्न भी हो तो
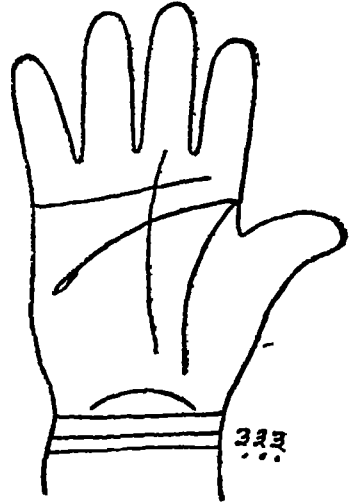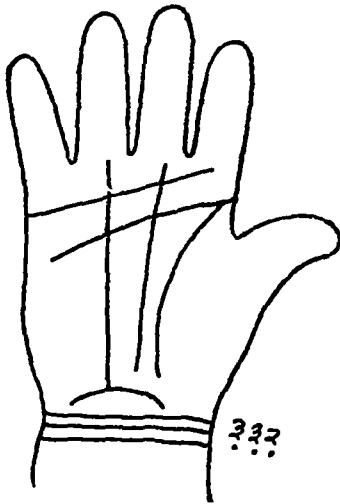
ऐसी रेखाओं वाले जातक का व्यवहार तथा आचार-विचार पागलों जैसा हो जाता है।

चित्र ३३४—यदि प्रवृत्ति-रेखा अन्य छोटी रेखाओं द्वारा कटी हुई हो तथा हथेली कठोर हो तो ऐसा जातक विद्वान् होते हुए भी लम्पट
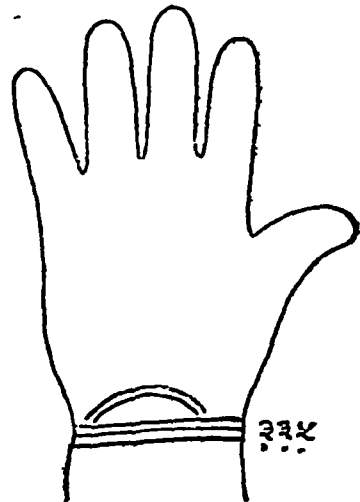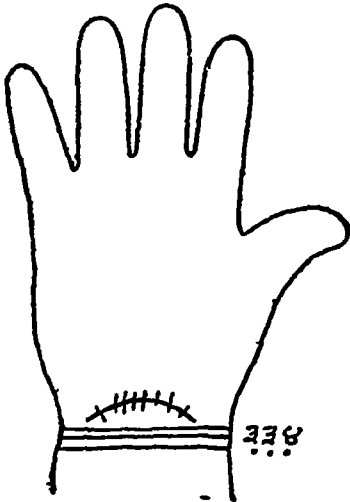
और शराबी होता है। यदि हथेली अत्यधिक मुलायम तथा चिकनी हो तो उसे अफीम खाने की आदत पड़ जाती है।

चित्र ३३५—यदि प्रवृत्ति-रेखा दुहरी, निर्दोष तथा स्पष्ट हो तो ऐसा जातक राजनीति का विद्वान् और उस क्षेत्र मे सफलता प्राप्त करने वाला होता है। वह धनवान्, गुणी श्रेष्ठ वक्ता तथा सुख-सम्पत्ति-शाली भी होता है प्रवृत्ति-रेखा पर दृष्टिगोचर होने वाले शुभ अथवा अशुभ चिह्नो का प्रभाव उन्ही के अनुरूप होता है।

छाया-पथ रेखाएं

चित्र ३३६—मणिवन्ध के ऊपर जीवन-रेखा से निकल कर जो छोटी-वड़ी-रेखाऐ चन्द्र-पर्वत अथवा शुक्र-पर्वत पर जाती है, उन्हे छाया-पथ रेखा कहा जाता है।

इन रेखाओ द्वारा जातक के मान, सम्मान, तथा यात्रा सम्वन्धी विचार किये जाते हैं। यात्रा सम्वन्धी अन्य रेखाओं का विचार करते सयम भी इन रेखाओ का सक्षिप्त वर्णन पहले किया जा चुका है।
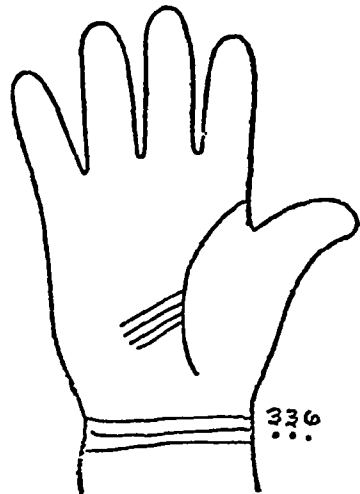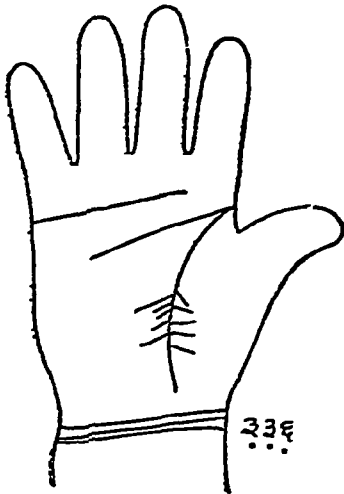
चित्र ३३७—यदि जीवन-रेखा से निकल कर छाया-पथ रेखाएं चन्द्र-पर्वत पर गई हो और वे अखण्ड तथा निर्दोष हो तो ऐसा व्यक्ति लम्बी विदेश यात्रा करता है और उस यात्रा के कारण लाभ उठाता है। वह विचारवान् तथा तीव्र स्मरण-शक्ति-सम्पन्न भी होता है।

चित्र ३३८—यदि जीवन-रेखा से निकल कर छाया-पथ रेखाएं स्पष्ट तथा निर्दोष रूप मे शुक्र-पर्वत पर गई हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक यदि पुरुष है तो इसे स्त्रियो द्वारा और यदि स्त्री है तो उसे पुरुषो द्वारा अत्यधिक सम्मान तथा स्नेह की प्राप्ति होती है। वह व्यक्ति अनेक भाषाओ का जानकार तथा अनेक विद्याओ मे प्रवीण होता है।
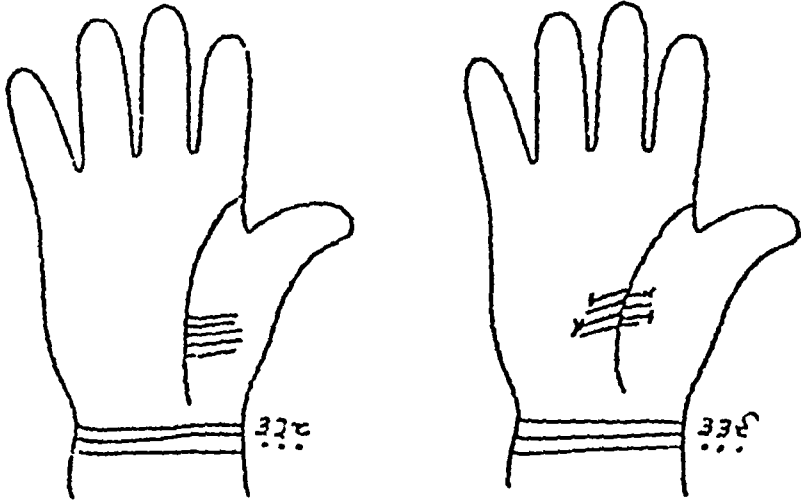
चित्र ३३९—यदि छाया-पथ रेखाओं के मार्ग को अवरोध रेखाएं रोक रही हो अथवा उनके अन्तिम भाग पर 'क्रास' चिह्न हो तो जातक मानसिक दुर्बलता से ग्रस्त, एकान्तप्रिय, आलसी, निराश तथा उन्मत्त जैसा होता है। सन्यासियो के हाथ मे ऐसी रेखाए अक्सर पाई जाती है।

चित्र ३४०—यदि छाया-पथ रेखाए बुध-क्षेत्र की ओर मुह किए हुए हो और उनके ऊपर नक्षत्र-चिह्न भी हो तो ऐसे जातक की समस्त

अभिलाषाएं पूर्ण होतो हैं। वह सुखी तथा सन्तुष्ट रहता है और उसे अचानक ही सुख, सौभाग्य तथा सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।
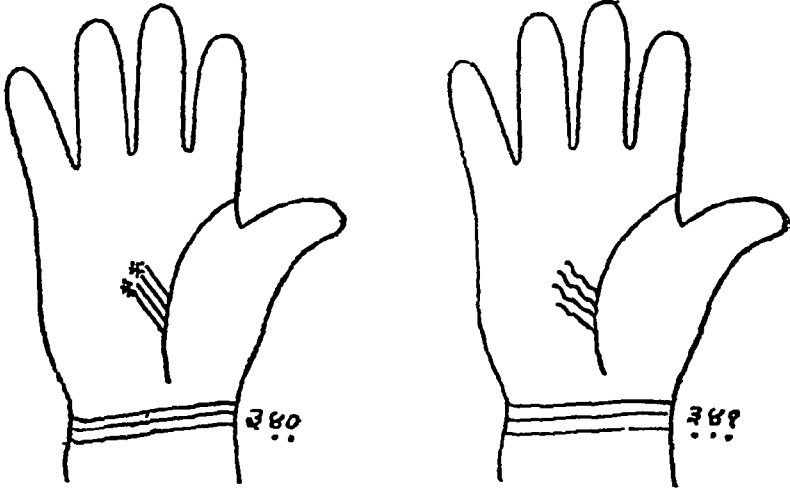
चित्र ३४१—यदि छाया-पथ रेखाएं लहरदार हों तो जातक चोर तथा धोखेबाज होता है। वह स्वयं तो मन्दबुद्धि होता ही है, अन्य लोगों को भी गुमराह करने का प्रयत्न करता रहता है। ऐसी रेखाएं चोरो के हाथ में स्पष्ट रूप से पाई जाती हैं।

छाया-पथ रेखाओ पर अन्य चिह्नों तथा दोषो का प्रभाव उन्ही के अनुरूप फल देने वाला समझना चाहिए।

भ्रमण-रेखाएं

यात्रा-रेखाओ के वर्णन मे यात्रा सम्बन्धी अनेक रेखाओ तथा चिह्नो का वर्णन किया जा चुका है। यहा पर उन अन्य रेखाओ का वर्णन किया जा रहा है जो जातक को भ्रमणशील वनातो हैं।

चित्र ३४२—जीवन-रेखा से जो छोटी-छोटी रेखाये निकल कर मणिबध की ओर ऊची उठती हुई चन्द्र-क्षेत्र तथा शुक्र-क्षेत्र पर जाती

हैं उन्हे भ्रमण-रेखा कहा जाता है। जिस जातक के हाथ मे ऐसी रेखाएं जीवन-रेखा के दोनो ओर हो उसका सम्पूर्ण जीवन देश-विदेश मे भ्रमण करते हुए ही व्यतीत होता है। उसके जीवन मे अनेक प्रकार के परिवर्तन भी आते है।
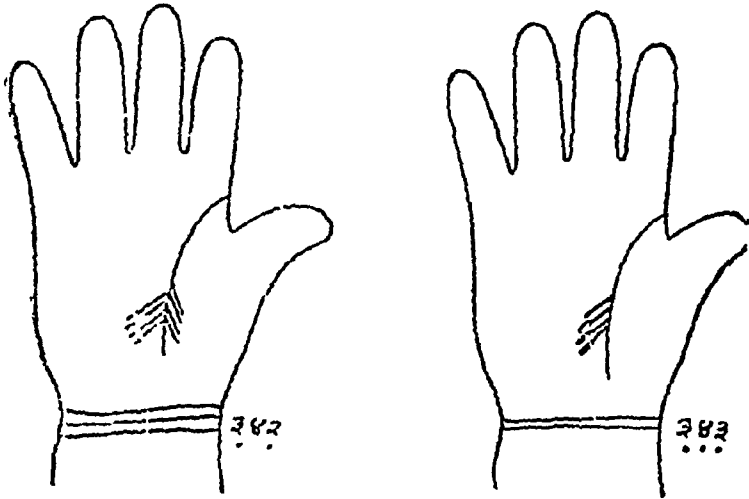
चित्र ३४३—यदि जीवन-रेखा से निकली हुई भ्रमण-रेखा पर द्वीप चिह्न दिखाई दे तो ऐसे जातक की यात्रा निष्फल होती है।

चित्र ३४४—यदि जीवन-रेखा से निकली हुई भ्रमण-रेखा से निकली हुई भ्रमण-रेखा पर चतुष्कोण (वर्ग) चिह्न दिखाई दे तो जातक की यात्रा काल मे प्राणां तक दुर्घटना से रक्षा हो जाती है।

चित्र ३४५—यदि जीवन-रेखा से निकली हुई भ्रमण-रेखा चन्द्र-क्षेत्र को पार करती हुई हथेली के पार निकल गई हो तो जातक की यात्रा मे ही कष्ट पाकर मृत्यु हो जाती है।
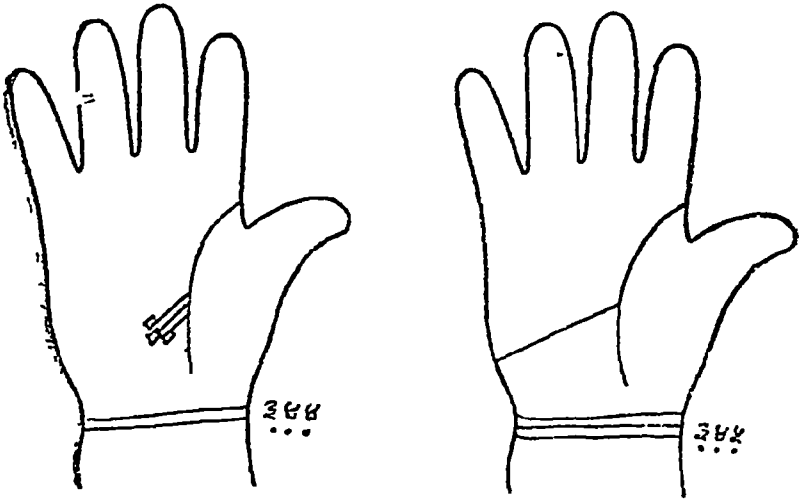
चित्र ३४६—यदि जीवन-रेखा से निकली हुई भ्रमण-रेखा चन्द्र-क्षेत्र के एक किनारे पर जाकर एक गोलाकार शाखा-रेखा से युक्त होतो ऐसी स्थिति मे भी जातक की यात्रा काल मे कष्ट पाकर मृत्यु हो जाती है।
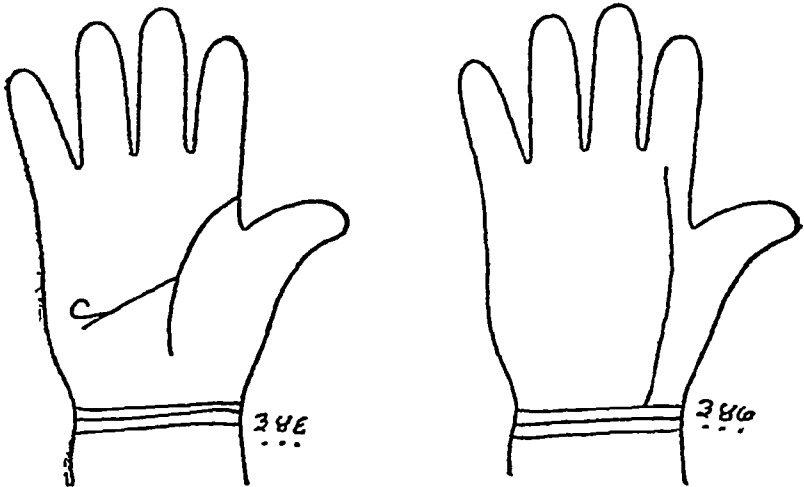
चि ३४७—यदि मणिवन्ध से निकलकर कोई रेखा शुक्र-क्षेत्र को पार करती हुई वृहस्पति के पर्वत पर चली गई हो और वृहस्पति का क्षेत्र उन्नत हो तो ऐसी रेखा वाले जातक को बहुत समय तक जल-यात्रा करनी पड़ती है।

चित्र ३४८—यदि पूर्वोक्त प्रकार से मणिबन्ध से निकलकर कोई रेखा शुक्र क्षेत्र को पार करती हुई वृहस्पति के उच्च क्षेत्र पर गई हो और उसके साथ ही राहु-क्षेत्र से एक रेखा निकलकर शनि-पर्वत पर चली गई हो तो ऐसी रेखाओ वाले जातक की जल यात्रा मे ही मृत्यु हो जाती है।
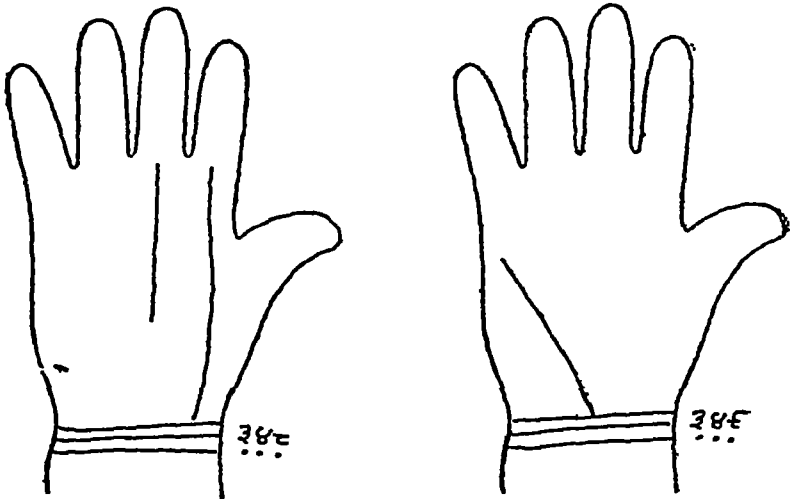
चित्र ३४९—यदि मणिबन्ध से कोई रेखा निकलकर चन्द्र-पर्वत पर गई हो तो ऐसी रेखा वाला व्यक्ति समुद्र-यात्रा करता है।

चित्र ३५०—यदि मणिबन्ध से एक सरल रेखा निकलकर चन्द्र-क्षेत्र पर होती हुई बुध-क्षेत्र पर गई हो तो ऐसी रेखा वाले जातक को यात्रा काल मे विपत्तियो का सामना करना पड़ता है।
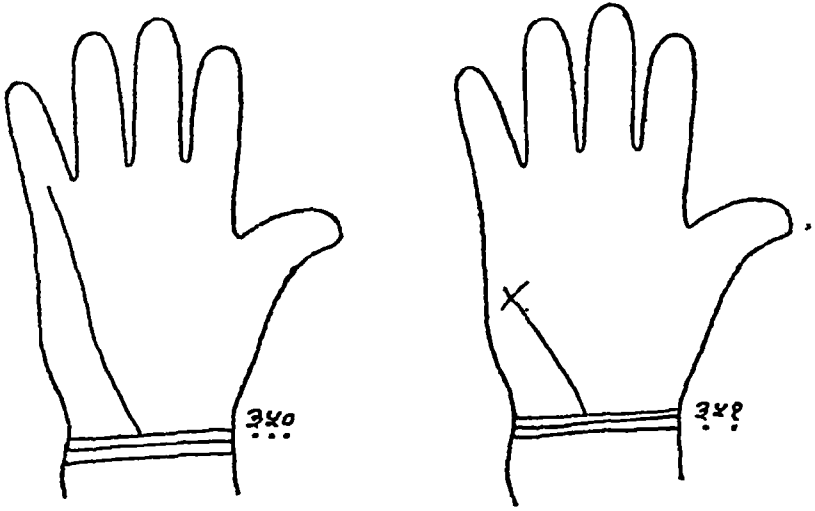
चित्र ३५१—यदि मणिबन्ध से निकली हुई कोई रेखा चन्द्र-क्षेत्र पर गई हो और उसे वहां कोई अन्य रेखा काट भी रही हो तो ऐसी रेखाओं वाले व्यक्ति की जल यात्रा मे ही मृत्यु हो जाती है।

चित्र ३५२—यदि मणिबन्ध से एक रेखा निकलकर बुध-क्षेत्र पर सीधी गई हो और शनि-क्षेत्र से निकली हुई एक रेखा जीवन-रेखा का स्पर्श कर रही हो अथवा उसे काट रही हो तो ऐसी रेखा वाले जातक को यात्रा काल के समय सिर में चोट लगती है।

ज्ञान-रेखा

चित्र ३५३—अगुष्ठ मूल मे जो पहली रेखा होती है, उसे ज्ञान-रेखा कहा जाता है। यह रेखा जिस व्यक्ति के हाथ मे होती है। वह विद्वान्, उदार, धार्मिक, सत्यवादी तथा सच्चरित्र होता है। यदि इस रेखा पर कोई चिह्न हो तो उसका प्रभाव उस चिन्ह के फलाफल के अनुसार ही समझना चाहिए।
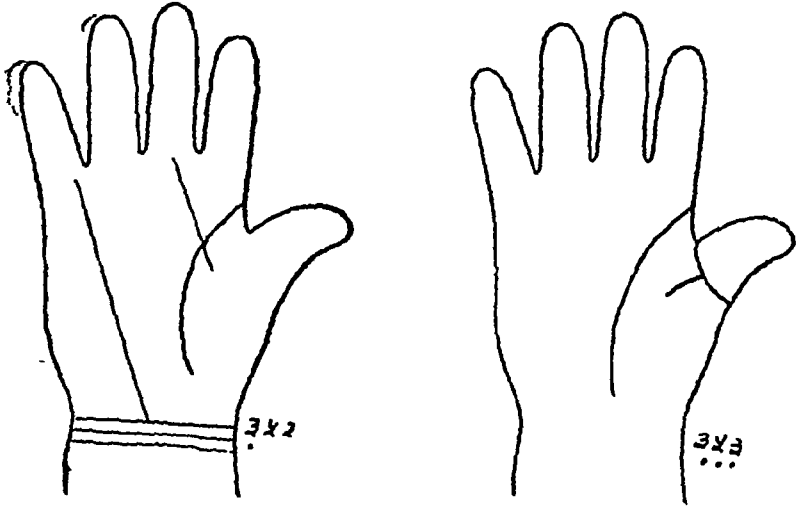
पर-धन प्राप्त रेखा

चित्र ३५४—जीवन-रेखा के समानान्तर शक्र-क्षेत्र पर जो एक रेखा होती है उसे पर-धन प्राप्ति रेखा कहा जाता है। जीवन-रेखा के सामानान्तर शुक्र-क्षेत्र पर चलने वाली रेखा को मंगल-रेखा कहा जाता है, वह जीवन-रेखा की सहायक रेखा होती है। इस रेखा और उस रेखा मे मुख्य अन्तर यही है कि मगल-रेखा जीवन-रेखा के समानान्तर चलती है और उसके समीप होती है, जबकि यह रेखा-जीवन-रेखा से कुछ दूर हटकर समान्नान्तर चलती है। यह रेखा जिस व्यक्ति के हाथ मे होती है। वह धनी, स्वस्थ तथा दीर्घजीवी होता है और उसे उत्तराधिकार आदि के रूप मे अथवा लाटरी आदि के रूप मे पुष्ट अथवा निर्बल, निर्दोष अथवा सदोष हो, उसी के परायेधन की प्राप्ति होती है। यह रेखा जितनी अधिक पुष्ट अथवा निर्बल, निर्दोष अथवा सदोष हो, उसी के अनुसार इसका प्रभाव भी समझना चाहिए।
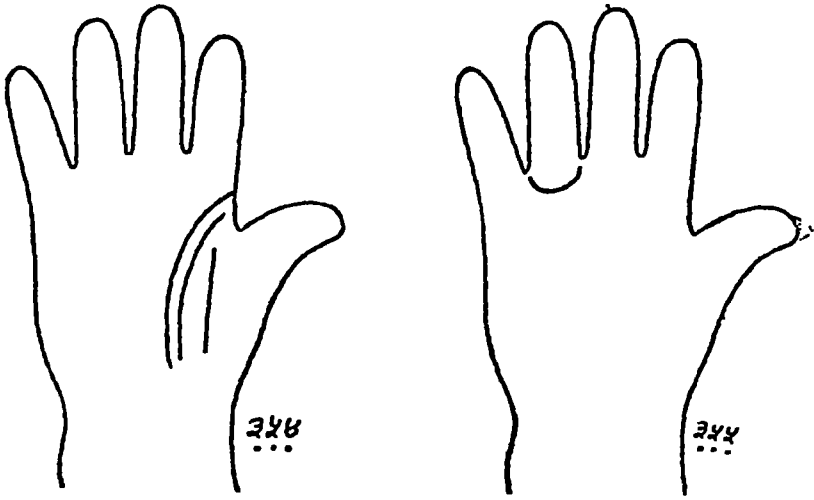
रवि-मुद्रा

चित्र ३५५—मध्यमा तथा अनामिका उंगली के बीच समोप वाले भाग से निकलकर अर्द्धचन्द्राकार रूप में सूर्य-क्षेत्र को घेरकर, अनामिका तथा कनिष्ठा उगली के मध्य भाग अथवा उसके समीप वाले भाग तक पहुचने वाली रेखा को कुछ विद्वान् 'रवि-मुद्रा' अथवा 'सूर्य-मुद्रा' के नाम से पुकारते हैं। यह रेखा भी हजारो मे से एक दो हाथ मे पाई जाती है। यह रेखा सूर्य के शुभ गुणो का ह्रास करने वाली है। जिस जातक के हाथ मे यह 'रवि-मुद्रा' होती है, उसकी ख्याति नष्ट हो जाती है तथा सूर्य-रेखा अथवा सूर्य-क्षेत्र सम्बन्धी गुणो में कमी आ जाती है।

चित्र ३५६—यदि जातक के हाथ में अच्छी सूर्य-रेखा हो, परन्तु उसके साथ ही पूर्वोक्त 'रवि-मुद्रा' भी हो और यह रवि-मुद्रा सूर्य-रेखा को काट रही हो तो श्रेष्ठ सूर्य-रेखा के शुभ गुण भी अशुभ गुणों में बदल जाते हैं। ऐसी रेखाओं वाला व्यक्ति सच्चरित्र तथा ईमानदार

होने पर भी समाज मे कलकित हो जाता है तथा उसे सर्वत्र अनादर निराशा, उपेक्षा एवं दुःख की प्राप्ति होती है।
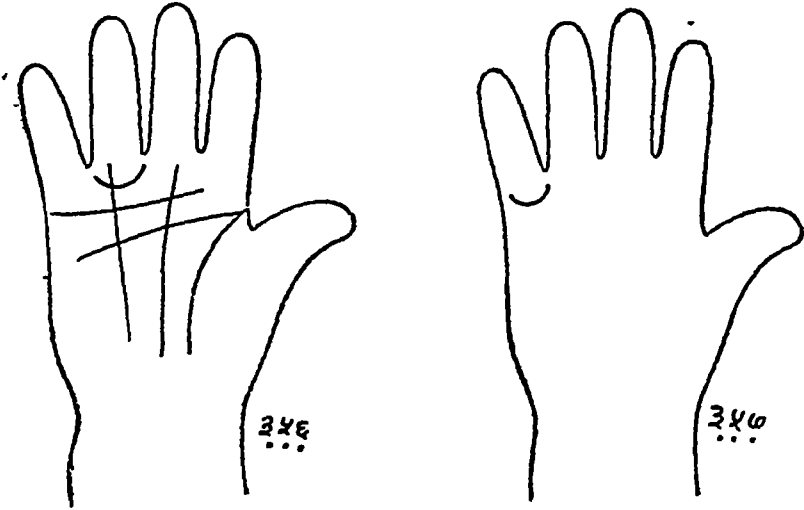
बुध-मुद्रा

चित्र ३५७—कनिष्ठा उंगली के नीचे बुध-क्षेत्र पर यह रेखा पाई जाती है और अपने अर्द्धचन्द्राकार रूप मे बुध-क्षेत्र को घेरे रहती है यह रेखा बुध-क्षेत्र अथवा बुध-रेखा के शुभ प्रभाव मे न्यूनता ला देती है। जिस जातक के हाथ मे बुध-मुद्रा हो, वह व्यक्ति जुआरी, चोर, मद्यपी तथा मूर्ख होता है। यदि वह कोई व्यवसाय करता है तो अत्यधिक परिश्रम करने पर भी उसे उसमे हानि उठानी पड़ती है। ऐसी रेखा वाले जातक की आयु ज्यो-ज्यों बढती है त्यो-त्यो उसमें दुर्गुणो की वृद्धि हो जाती है। वह भाई-बन्धुओं से विरोध रखने वाला विश्वासघाती, कुटिल, अपयशी तथा दरिद्र होता है। उसका वैवाहिक जीवन भी अत्यन्त क्लेशमय बीतता है।

पूर्वोक्त रवि-मुद्रा तथा बुध-मुद्रा पर जैसे भी शुभाशुभ चिन्ह दिखाई दें, उन्ही के अनुरूप फलाफल भी समझना चाहिए। नक्षत्र, द्वीप, क्रास, वाल आदि के चिह्न इन मुद्राओं को और अधिक दूषित बना देते हैं। प्रत्येक स्थिति मे रवि-मुद्रा अथवा बुध-मुद्रा का हाथ पर होना जातक के लिए हानिकारक ही सिद्ध होता है।

मणिबन्ध, शुक्र, बुध, राहु, चन्द्र, बृहस्पति, मगल, केतु, सूर्य आदि ग्रहो के क्षेत्रो पर कुछ विशेप प्रकार की रेखाए पाई जाती हैं। इसके अतिरिक्त कुछ प्रभाव रेखाए ऐसी भी होती हैं, जो कई-कई ग्रहो के क्षेत्रों पर फैली होती है तथा अन्य रेखाओ एव जातक के जीवन पर अपना विशेप प्रभाव डालती हैं। उंगलियो तथा अंगूठे के पर्वों, करपृष्ठ आदि स्थानो पर भी अनेक प्रकार की छोटी-बडी रेखाए दिखाई देती हैं। रेखाओ के अतिरिक्त द्वीप, चतुष्कोण, क्रास, धन, नक्षत्र, जाल आदि के चिह्न भी विभिन्न ग्रह-क्षेत्रो अथवा रेखाओ पर उपस्थित रहकर अपना प्रभाव डालते हैं। हस्त-परीक्षक को उन सभी की स्थिति पर भली-भांति विचार करने के उपरांत ही फलादेश करना चाहिए।

'बृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के प्रस्तुत खण्ड मे विशेप रूप से स्वास्थ्य-रेखा तथा अन्य मुख्य-मुख्य छोटी रेखाओ के प्रभाव का वर्णन किया किया गया है। ग्रह-क्षेत्रो से सम्बन्धित अन्य छोटी रेखाओ तथा प्रभाव रेखाओ के फलाफल के सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त करने के लिए 'बृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के 'प्रभाव रेखाए' तथा 'हस्त-चिन्हो का प्रभाव' शीर्षक खण्डो का विधिवत् अध्ययन करना चाहिए।

॥ समाप्त ॥

१२१०७० टैक्नीकल प्रिंटिंग प्रेस सोनिपत (निकट दिल्ली) मे मुद्रित।

प्रभाव रेखाएं

वृहद् सामुद्रिक विज्ञान खण्ड—६

प्रभाव-रेखाएं

[मणिवन्ध, ग्रह-क्षेत्र, अंगुष्ठ, अंगुलि, वृहद् चतुष्कोण, वृहद् त्रिकोण एवं कर-पृष्ठ पर पाई जाने वाली छोटी-बड़ी, स्थायी तथा अस्थायी अवरोध रेखाओं एवं प्रभाव-रेखाओं (Lines of Influence) के फलाफल का प्राच्य तथा पाश्चात्य मतानुसार सैंकड़ों चित्रों सहित विस्तृत विवेचन]

लेखक
राजेश दीक्षित

देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

प्रकाशक
देहाती पुस्तक भण्डार,
चावड़ी बाजार, दिल्ली–६

●
लेखक

राजेश दीक्षित

●

●
मूल्य
स्वदेश मे : साढ़े दस रुपया
विदेश मे पच्चीस शिलिंग

●
मुद्रक
टैक्नीकल प्रिंटिंग प्रेस
सोनीपत (निकट दिल्ली)

दो शब्द

'वृद्ह सामुद्रिक विज्ञान' के प्रस्तुत खण्ड मे मणिवन्घ, ग्रह-क्षेत्र, अगुष्ठ, अगुलि, वृहद चतुष्कोण, वृहद त्रिकोण तथा कर-पृष्ठ पर पाई जाने वाली छोटी बड़ी, स्थायी तथा अस्थायी अवरोध-रेखाओ एव प्रभाव-रेखाओ की स्थिति तथा फलाफल का प्राच्य तथा पाश्चात्य मतानुसार विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है।

हथेली पर पाई जाने वाली सात मुख्य रेखाओ—(१) जीवन-रेखा, (२) मस्तक-रेखा, (३) भाग्य-रेखा, (४) हृदय-रेखा, (५) सूर्य-रेखा, (६) विवाह-रेखा तथा (७) स्वास्थ्य-रेखा—के अतिरिक्त सन्तान-रेखा, शुक्र-मुद्रिका, चन्द्र-रेखा आदि क्षुद्र-रेखाओ तथा अन्य विशिष्ट रेखाओ का विस्तृत वर्णन 'वृहद सामुद्रिक विज्ञान' के अन्य खण्डो मे किया जा चुका है। इस खण्ड मे मणिवन्घ-रेखा आदि के अतिरिक्त मुख्य रूप से उन रेखाओ का वर्णन किया गया है जो अनिवार्य रूप से किसी जातक के हाथ मे नही पाई जाती, परन्तु विभिन्न स्त्री-पुरुषो के हाथ मे उनमे से कुछ रेखाए प्रायः अवश्य ही देखने को मिल जाती हैं।

मणिवन्व, अगुष्ठ तथा अगुलियां पर पाई जाने वाली कुछ रेखाओ के अतिरिक्त इस खण्ड मे वर्णित अधिकाश रेखाओ का उदय-अस्त जातक के हाथ मे यथावसर हुआ करता है अर्थात् जातक के पूर्व जन्म अथवा इस जन्म के कर्मानुसार वे रेखाए उस वयोमान मे अचानक ही प्रकट हो जाती हैं, जिसमे कि जातक के जीवन पर उन्हे कोई विशेष प्रभाव डालना होता है। ऐसी बहुत-सी रेखाए अपना प्रभाव प्रदर्शित करने के उपरान्त या तो विलुप्त हो जाती हैं अथवा 'जातक के जीवन मे अमुक समय पर अमुक घटना घटी थी'—इस बात की साक्षी के रूप मे अपना अस्तित्व बनाए रखती हैं।

हस्त-परीक्षक को चाहिए कि वह इन सभी प्रभाव-रेखाओ की स्थिति एव फलाफल के विषय मे पूरा-पूरा ध्यान दें, क्योकि वे रेखाए अपनी उपस्थिति द्वारा जातक के हाथ की स्थायी तथा मुख्य रेखाओ के प्रभाव मे भी भारी

परिवर्तन ला देने की सामर्थ्य रखती है। इन्हे दृष्टि से ओझल कर देना किसी तरह भी उचित नही रहेगा।

प्रस्तुत खण्ड मे वर्णित रेखाओ के विषय मे प्राच्य (भारतीय) ग्रन्थो मे विशेष विवरण उपलब्ध नही होता, परन्तु पाश्चात्य विद्वानो ने इन रेखाओ की स्थिति एव प्रभाव के सम्बन्ध मे विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला है। हमने प्राच्य तथा पाश्चात्य—दोनो ही मतो की उपलब्ध सामग्री को अधिकाधिक सकलित करने का प्रयत्न किया है। दोनो मतो की भिन्नता को भी यथास्थान स्पष्ट कर दिया गया है।

जिन विद्वानो की बहुमूल्य कृतियो द्वारा हमे प्रस्तुत खण्ड के लिए सामग्री-चयन मे सहायता प्राप्त हुई है, उन सभी के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ है। आशा है, सुधी पाठक भी हमारे इस श्रम को अपना स्नेह प्रदान करेगे।

—राजेश दीक्षित

महोली की पौर,

मथुरा

समर्पण

सुप्रसिद्ध व्यवसायी एव साहित्यानुरागो
आगरा-निवासी
श्री निरंजनलाल जी पोद्दार
को
सादर समर्पित

विषय-सूची

मणिबन्ध रेखाएं

मणिवन्ध की वनावट तथा उसके सशब्द अथवा नि शब्द होने के लक्षण तथा प्रभाव आदि के सम्वन्ध मे 'वृहद्सामुद्रिक विज्ञान' के प्रथम खण्ड मे विस्तृत उल्लेख किया जा चुका है। यहा पर प्राच्य तथा पाश्चात्य मतानुसार मणिवन्ध स्थान पर पाई जाने वाली रेखाओं, जिन्हे 'वलय-रेखा भी कहा जा सकता है, के फलाफल का वर्णन किया जा रहा है। मणिवन्ध रेखाओ के स्वरूप को चित्र सख्या २ मे प्रदर्शित किया गया है।

प्राच्य मत

मणिवन्ध-स्थित रेखाओ की आकृति तथा प्रभाव के सम्वन्ध में भारतीय सस्कृत ग्रथो में निम्नलिखित विवरण पाया जाता है।

> मणिवन्ध स्त्रिरेखस्तु मणिभूषण भाग्भवेत्।
> साधारणो द्विरेख. स्यादेकरेखस्तु भिक्षुक: ॥
> मणिबन्धे कंकणाख्या श्चतस्त्रो भोगलक्षणा।
> राज्ञांतिस्त्रस्तु नारीषु कामिन्यां द्वितीयंस्मृतं ॥

भावार्थ—मणिवन्ध पर तीन रेखाए होना सर्वोत्तम है, ऐसा व्यक्ति मणि-आभूषण आदि धारण करने वाला होता है। दो रेखाए होने से व्यक्ति मध्यम स्थिति का तथा एक रेखा होने से भिक्षुक (निर्धन) होता है। किसी-किसी मणिवन्ध पर चार रेखाएं भी पाई जाती है। ऐसी चार या तीन रेखाए ककण के समान मणिबन्ध को चारों ओर वेष्टित

किये हुए हो तो वे सुखसम्पत्ति के भोग को देने वाली होती है। राजा के हाथ मे तीन तथा स्त्रियो के हाथ मे दो रेखाओ का होना अच्छा माना गया है।

'सामुद्र तिलक' मे लिखा है —

रेखाभि पूर्णाभिस्तिसृभि: कर मूलमंकितं यस्य।
धन कांचन रत्नयुतं श्रीपतिमिव भजतिलुब्ध च ॥
त्रिपरिक्षेपा व्यक्ता यवमाला भवति यस्य मणिबन्धे।
नियतं महार्थ सहित स सार्वभौमो नराधिपति. ॥
करमूले यवमाला द्विपरिक्षेपा मनोहरा यस्य।
मनुज स राजमंत्री विपुल मतिर्जायते समतिमान् ॥
सुभगैक परिक्षेपा यवमाला यस्य पाणितले स्यात्।
भवति धनधान्य युत श्रेष्ठो जनपूजितो मनुज ॥

भावार्थ—जिस व्यक्ति के मणिबन्ध मे तीन पूर्ण रेखाएं हो, वह धन, स्वर्ण, रत्न एव ऐश्वर्य का स्वामी होता है। जिस व्यक्ति के मणिबन्ध की तीनो रेखाओ मे स्पष्ट यव माला हो, वह सार्वभौम राजा होता है। यवमाला के समान दो रेखाए मणिवन्ध मे हो तो वह व्यक्ति बुद्धिमान् तथा राजा का मन्त्री होता है। जिस मनुष्य के मणिबन्ध में यवमाला के समान एक रेखा दिखाई दे, वह व्यक्ति धन-धान्य युक्त तथा अन्य लोगो द्वारा पूजित (सम्मानित) होता है।

इसी प्रकार एक अन्य ग्रंथ मे लिखा है —

द्वाभ्यां च यवमालाभ्यां राजा मन्त्री धनी बुध।
एकयायवपंक्त्याच श्रेष्ठा बहुधनोज्झित. ॥
मणिबन्धे यव श्रेण्य स्तिस्रश्चेत्सनृपो भवेत्।
यदिता पाणिपृष्ठेपि ततोधिकतर फलं ॥

भावार्थ—जिस व्यक्ति के मणिबन्ध पर यवमाला के समान दो

११

[मणिबन्ध स्थित रेखाओ का स्वरूप]

रेखाए हो, वह राजा का मन्त्री, धनी तथा बुद्धिमान् होता है। यव-माला के समान एक रेखा हो, वह व्यक्ति श्रेष्ठ तथा अत्यन्त धनी होता है। यवमाला के समान तीन रेखाएं हो तो ऐसा व्यक्ति राजा होता है। यदि ये रेखाए कर-पृष्ठ पर भी हो अर्थात् मणिबन्ध के चारो ओर घूमी हुई हो तो और भी अधिक फल देती है।

'विवेक विलास' का कथन भी इसी प्रकार है—

मणिबन्धे यवश्रेण्य तिस्रश्चेत् स नृपो भवेत्।
यदि ता पाणिपृष्ठेऽपि ततो अधिकरं फलम्॥

भावार्थ—मणिबन्ध पर यवमाला के समान तीन रेखाए हो तो ऐसा व्यक्ति राजा होता है। यदि ये रेखाए कर-पृष्ठ पर भी हों अर्थात् हथेली के चारों ओर घूमी हुई हो, तो अधिक फल देने वाली होती है।

स्त्रियो के मणिबन्ध की रेखाओ के विषय मे 'भविष्य पुराण' का कथन इस प्रकार है—

मणिबन्धोऽव्यवच्छिन्नो रेखात्रय विभूषित ।
ददाति न चिरादेव मणिकांचन मण्डनम् ॥

भावार्थ—यदि किसी स्त्री के मणिबन्ध पर तीन सम्पूर्ण तथा सुन्दर रेखाए हो तो वह भाग्यवान् तथा मणि-काचन युक्त आभूषणों को धारण करने वाली होती है।

इस प्रकार पौर्वात्य मत से मणिबन्ध की रेखाओ का स्पष्ट तथा अखण्ड होना उचित माना गया है। यदि उक्त रेखाओ मे यव जैसी आकृतिया सम्पूर्ण रेखा पर हो अर्थात् मणिबन्ध-रेखा यवमाला जैसी दिखाई दे तो वह विशेष प्रभाव एव सौभाग्यदायक होती है।

उक्त प्राच्य मत के निष्कर्ष रूप में मणिवन्ध-रेखाओं की स्थिति का प्रभाव नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए —

चित्र ३—यदि मणिवन्ध पर एक रेखा स्पष्ट तथा अखण्ड हो तो ऐसा व्यक्ति दरिद्र होता है।
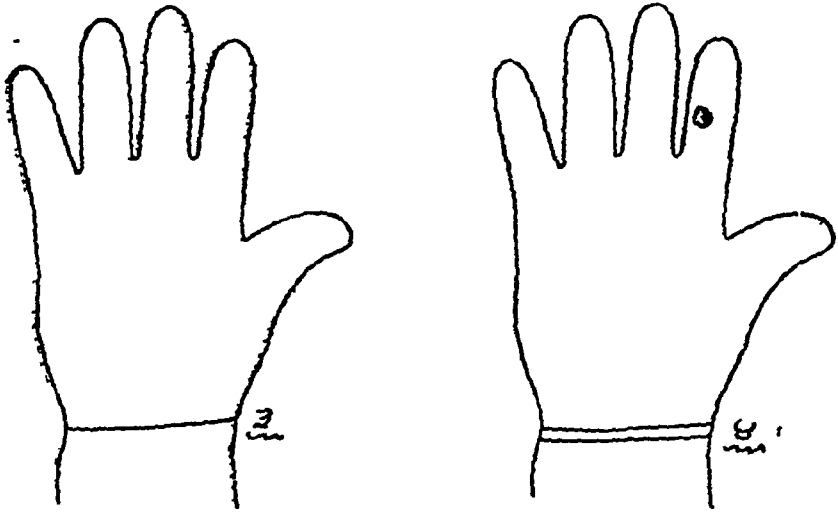
चित्र ४—यदि मणिवन्ध पर दो रेखाएं स्पष्ट तथा अखण्ड हों तो ऐसा व्यक्ति मध्यम स्थिति का होता है। यदि ये रेखाएं कलाई के चारों ओर घूमी हुई हों तो अपना प्रभाव अधिक तथा श्रेष्ठ प्रदर्शित करती हैं।

चित्र ५—यदि मणिवन्ध पर तीन रेखाएं स्पष्ट तथा अखण्ड हों तो ऐसा जातक मणि-आभूषण आदि को धारण करने वाला होता है। यदि किसी स्त्री के हाथ पर ऐसी तीन रेखाएं हों तो वह भाग्यवान् एवं मणि-कांचनयुक्त आभूषणों को धारण करने वाली होती है।
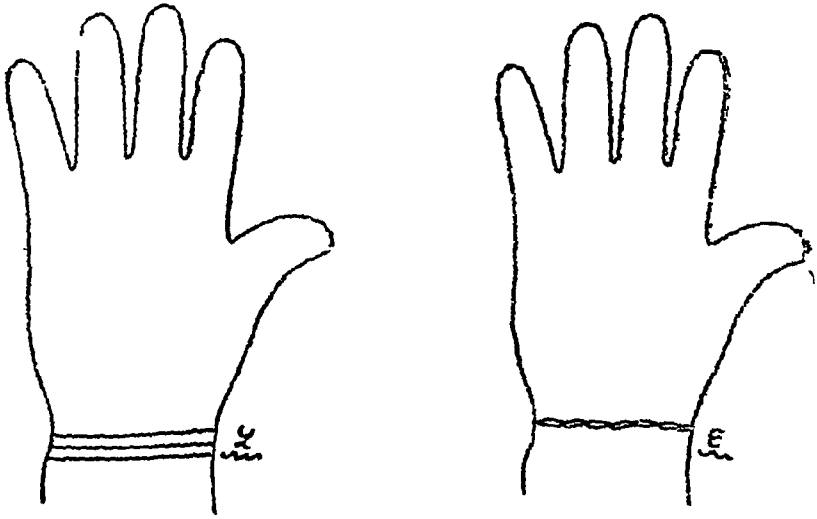
चित्र ६—यदि मणिबन्ध पर यवमाला की आकृति के समान एक स्पष्ट तथा अखण्ड रेखा हो तो ऐसा व्यक्ति धन-धान्य-सम्पन्न तथा अन्य लोगो द्वारा पूजित (सम्मानित) होता है। यदि यह रेखा कलाई के चारों ओर हो तो अधिक प्रभाव दिखाती है।

चित्र ७—यदि मणिबन्ध पर यवमाला की आकृति के समान दो स्पष्ट एव अखण्ड रेखाए हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त बुद्धिमान् तथा राजा का मन्त्री होता है। यदि ये रेखाए कलाई के चारो ओर हो तो अधिक प्रभाव प्रदर्शित करती है।

चित्र ८—यदि मणिबन्ध पर यवमाला की आकृति के समान तीन स्पष्ट एव अखण्ड रेखाए हो तो ऐसा व्यक्ति सार्वभौम राजा तथा धन-धान्य, स्वर्ण, रत्न एव ऐश्वर्य का स्वामी होता है। यदि ये रेखाएं कलाई के चारो ओर घूमी हुई हों तो इनका प्रभाव अधिक होता है।
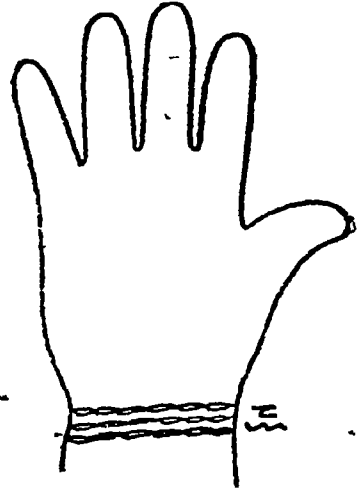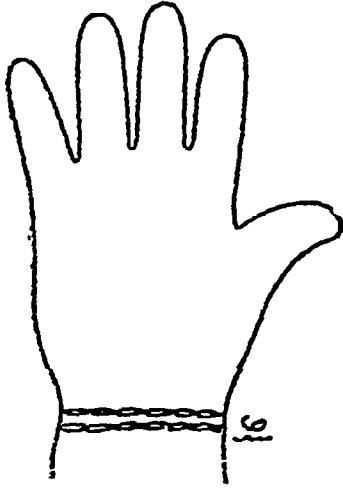
चित्र ६ —यदि मणिवन्ध पर चार रेखाएं सरल, स्पष्ट तथा सीधी हों तो ऐसा व्यक्ति धन-धान्य से परिपूर्ण तथा सुखी होता है। यदि ये रेखाएं कलाई के चारो ओर घूमी हुई हो तो अपना प्रभाव-अधिक प्रदर्शित करती है।
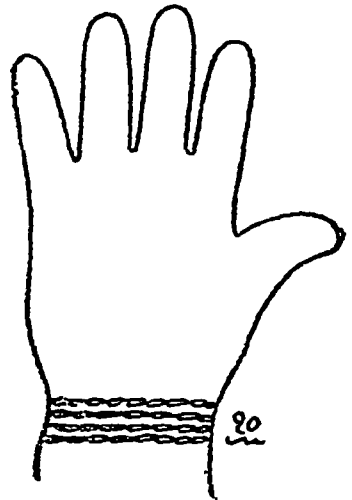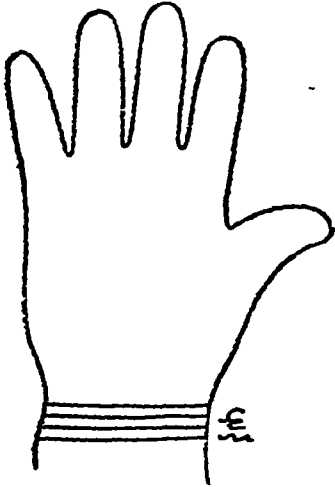
चित्र १०—यदि मणिबन्ध पर चार रेखाए यवमाला की आकृति के समान स्पष्ट, निर्दोष तथा अखण्ड हो तो ऐसा व्यक्ति बहुत बड़े साम्राज्य का स्वामी, धन-धान्य, ऐश्वर्य तथा यश से परिपूर्ण होता है। यदि ये रेखाए कलाई के चारो ओर घूमी हुई हों तो अधिक प्रभावशाली सिद्ध होती है।

पाश्चात्य मत

भारतीय मत से मणिबन्ध-रेखाओं द्वारा जातक की आर्थिक स्थिति, धन-ऐश्वर्य आदि के सम्बन्ध मे विचार किया जाता है, परन्तु पाश्चात्य विद्वान् इन रेखाओं द्वारा जातक की आर्थिक स्थिति के अतिरिक्त उसकी आयु के सम्बन्ध मे भी विचार करते है। वे मणिबन्ध की तीन वलय-रेखाओ को क्रमश. Health (आरोग्य), Wealth (सम्पत्ति) Prosperity (सौख्य) की रेखा मानते है और इसी के अनुसार प्रत्येक रेखा की स्थिति के अनुरूप जातक के आरोग्य, सम्पत्ति तथा सुख के सम्बन्ध में फलादेश करने की बात कहते है।

मणिबन्ध रेखाओ की विभिन्न स्थिति, उन पर दिखाई देने वाले विविध चिन्ह तथा मणिवन्ध से जाने वाली अन्य रेखाओ के प्रभाव तथा फलाफल के सम्वन्ध में पाश्चात्य विद्वानो के मत का सचित्र सार-सक्षेप नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चित्र ११—यदि मणिबन्ध पर केवल एक ही स्पष्ट तथा निर्दोष रेखा हो तो जातक की आयु २३ से २८ वर्ष तक की होती है। स्मरण रहे, यह रेखा कही भी टूटी-फूटी नही होनी चाहिए, अन्यथा उसका जातक की आयु पर और भी बुरा प्रभाव पड सकता है।
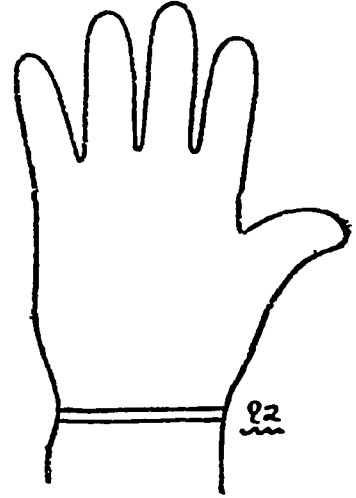
चित्र १२—यदि मणिबन्ध पर दो स्पष्ट,निर्दोष एवं अखण्ड वलय-रेखाएं हो तो जातक की आयु ४८ से ५६ वर्ष के बीच होती है ।
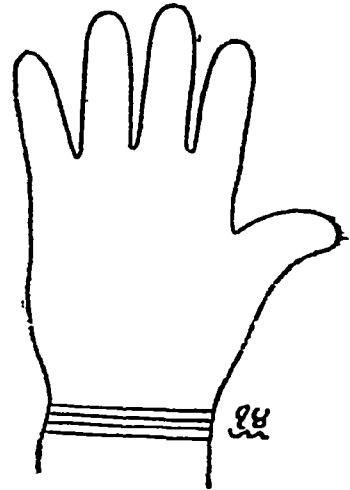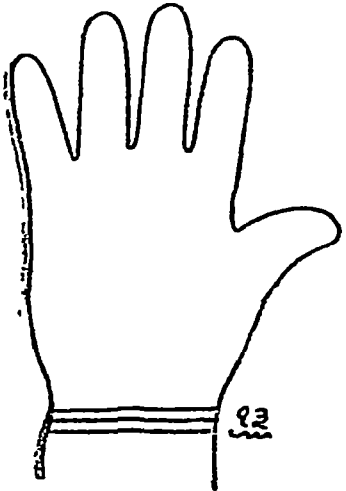
चित्र १३—यदि मणिवन्ध पर तीन स्पष्ट, निर्दोष एव अखण्ड वलय रेखाए हो तो जातक की आयु ६८ से ८४ वर्ष के वीच होती है। वह स्वस्थ तथा भाग्यशाली होता है।

चित्र १४—यदि मणिवन्ध पर चार स्पप्ट, निर्दोष एव अखण्ड वलय-रेखाए हो तो जातक की आयु ८४ से १०० वर्ष के वीच होती है।
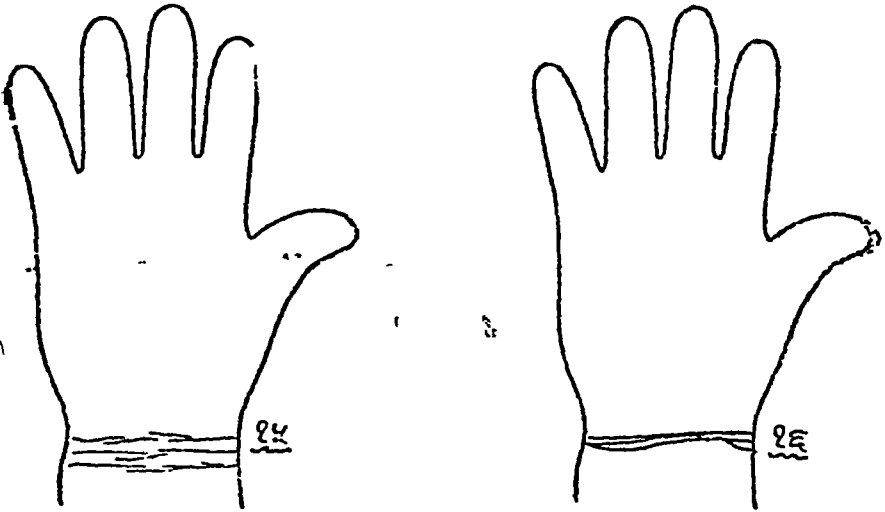
चित्र १५—यदि मणिवन्ध पर तीन वलय-रेखाए तो हो परन्तु वे सुस्पष्ट न हो तो जातक अपव्ययी होता है, जिसके कारण वह धन का सचय नही कर पाता। यदि हाथ की अन्य रेखाओ तथा लक्षणों के कारण जातक कामुक-प्रवृत्ति का भी हो तो वह धन के अपव्यय के अतिरिक्त अपने स्वास्थ्य की भी हानि कर लेता है।

चित्र १६—यदि मणिवन्ध की तीनो रेखाए एक के ऊपर एक दिखाई देती हो तथा एक ही स्थान पर खण्डित भी हो तो जातक मिथ्या-

वादी होता है और मिथ्याभिमानी होने के कारण अनेक प्रकार के कष्ट उठाता है।

चित्र ७—यदि मणिबन्ध की तीन अथवा चार वलय-रेखाएं परस्पर खिड़की के आकार की हों तो जातक अतिरिक्त परिश्रम द्वारा धनोपार्जन करता है। यदि ये रेखाएं टूटी हुई अथवा कटी हुई हों तो जातक कृपण तथा अल्पव्ययी होता है।
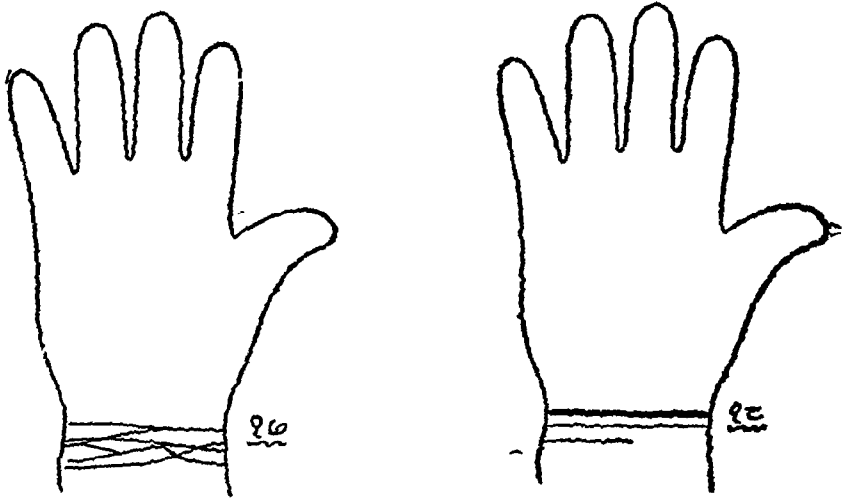
चित्र १८—यदि मणिबन्ध की पहली रेखा स्थूल, दूसरी पतली तथा तीसरी छोटी हो तो ऐसा जातक बाल्यावास्था मे ऐश्वर्यवान्, मध्यावस्था मे अवनति प्राप्त करने वाला तथा तृतीयावस्था मे पुनः ऐश्वर्य मे वृद्धि प्राप्त करने वाला होता है।

चित्र १९—यदि मणिवन्ध मे तीन रेखाएं तो हों, परन्तु वे गहरी न होकर फैली हुई हो तो जातक की आयु ६० वर्ष की होती है,

परन्तु वह युवावस्था मे दरिद्रता का कष्ट भोगता है और वृद्धावस्था मे खूब धन कमाता है।
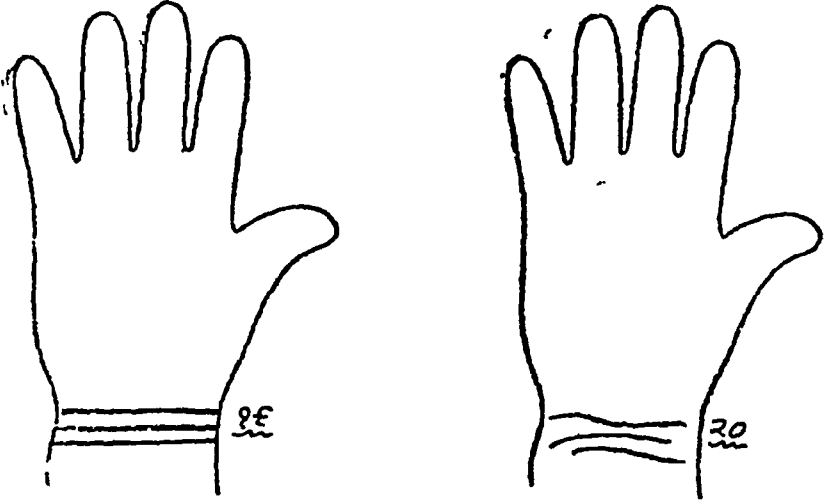
चित्र २०—यदि मणिबन्ध रेखाएं इधर-उधर बाहर की ओर इस प्रकार फैली हुई हों कि कोई किसी का स्पर्श न करतो हो तथा टेढी-मेढी होकर अनेक दिशाओ मे जा रही हो तो ऐसा जातक साहसी, उन्नतिशील, प्रतिभावान् तथा उच्चतम विषय के प्रति लक्ष्य रखने वाला कौतूहली स्वभाव का होता है।

चित्र २१—यदि मणिबन्ध की दो रेखाए एक साथ चन्द्रमा के उच्च स्थान की ओर चली जाए तथा तीसरी रेखा और आगे बढकर स्वास्थ्य-रेखा को काट दे तो ऐसा जातक दु खी तथा दुर्भाग्यशाली होता है। उसे शत्रु के आक्रमण, गुप्त-हत्या तथा अन्य प्रकार के कष्टों का भी सामना करना पड़ता है।
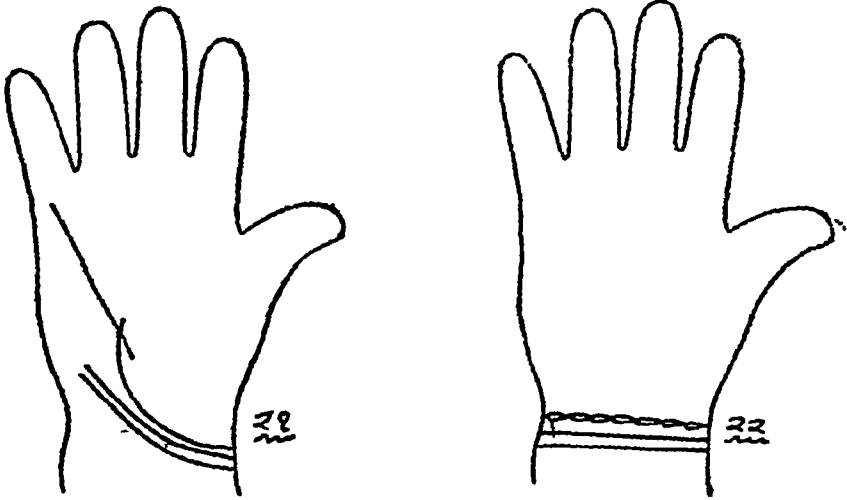
चित्र २२—मणिवन्ध की प्रथम रेखा पर यव अथवा शृंखला जैसे चिन्ह होने पर जातक अपने मनोरथ को प्राप्त करता है। वह समुद्र तथा स्थल यात्रा द्वारा प्रचुर धन लाभ करता है। यदि ऐसी रेखा गुलाबी रग की हो तो समुद्री-व्यवसाय से उसे पर्याप्त आर्थिक लाभ होता है।

चित्र २३—यदि मणिबन्ध मे चार स्पष्ट रेखाए हों और उन रेखाओ के ऊपर दो छोटी शाखा-रेखाए स्पष्ट कोण बनाती हो तो ऐसी रेखा वाला जातक अपने किसी सम्बन्धी की मृत्यु के बाद उसका उत्तराधिकारी होता है तथा वृद्धावस्था मे अत्यधिक सुख तथा सम्मान प्राप्त करता है। ऐसी रेखा वाले व्यक्ति स्वस्थ तथा सत्यवादी भी होते है।

चित्र २४—यदि मणिवन्ध की रेखाए सुन्दर हों तथा पहली रेखा पर 'क्रास' चिन्ह हो तो जातक का जीवन के पहले भाग मे कठिनाइयों
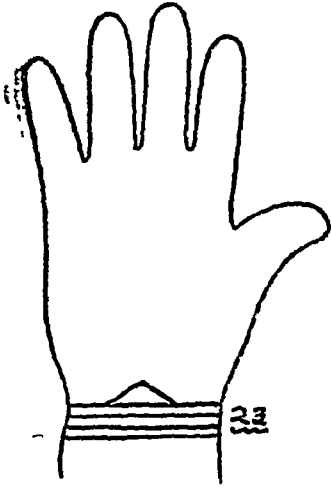
का सामना करना पडता है, परन्तु उसके बाद का जीवन सुख ग्र
शान्तिपूर्वक व्यतीत होता है ।
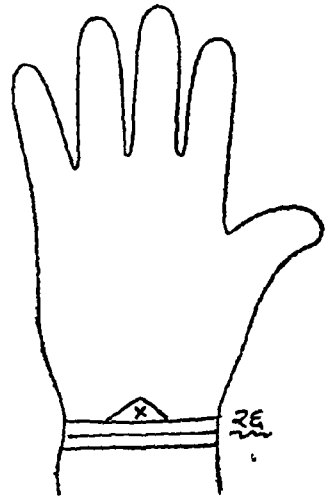
चित्र २५—यदि मणिवन्ध की पहली रेखा के बीच मे 'कोण' चिन्ह हो तो जातक को वृद्धावस्था मे किसी का उत्तराधिकारी बनने के कारण धन की प्राप्ति होती है ।

चित्र २६—यदि मणिवन्ध की प्रथम रेखा पर त्रिकोण चिन्ह हो तथा उस त्रिकोण के भीतर 'क्रास' चिन्ह भी हो तो जातक को उत्तराधिकार द्वारा धन की प्राप्ति होती है ।
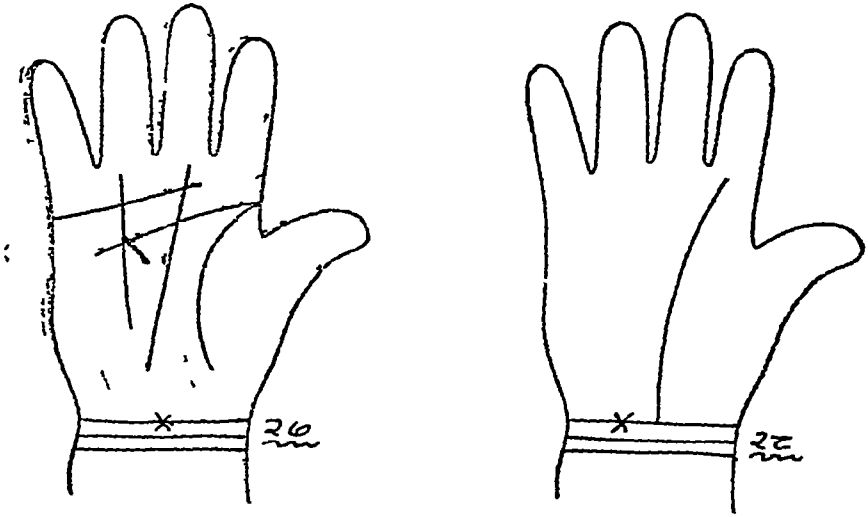
चित्र २७—यदि मणिबन्ध की पहली रेखा के बीच मे 'नक्षत्र-चिन्ह' हो तथा हाथ के अन्य लक्षण भी उत्तम हो तो जातक को विरासत द्वारा धन को प्राप्ति होती है, परन्तु यदि हाथ के लक्षण जातक का दुराचारी तथा विलासी होना सिद्ध करते हो तो ऐसे चिन्ह वाला जातक व्यभिचारी होता है ।

चित्र २८—यदि मणिबन्ध की पहली रेखा पर 'क्रास' अथवा 'कोण' चिन्ह हो तथा मणिवन्ध से आरम्भ होकर कोई रेखा वृहस्पति

के क्षेत्र पर जा रही हो तो ऐसी रेखा तथा चिन्ह वाले जातक को किसी यात्रा द्वारा अत्यधिक धन की प्राप्ति होती है ।

चित्र २९—यदि मणिबन्ध की पहली रेखा शृंखलाकार हो तो जातक का जीवन चिन्तायुक्त रहता है तथा उसे अत्यधिक परिश्रम करना पडता है। हा, परिश्रम के फलस्वरूप उसे अन्त मे सफलता भी अवश्य प्राप्त होता है।
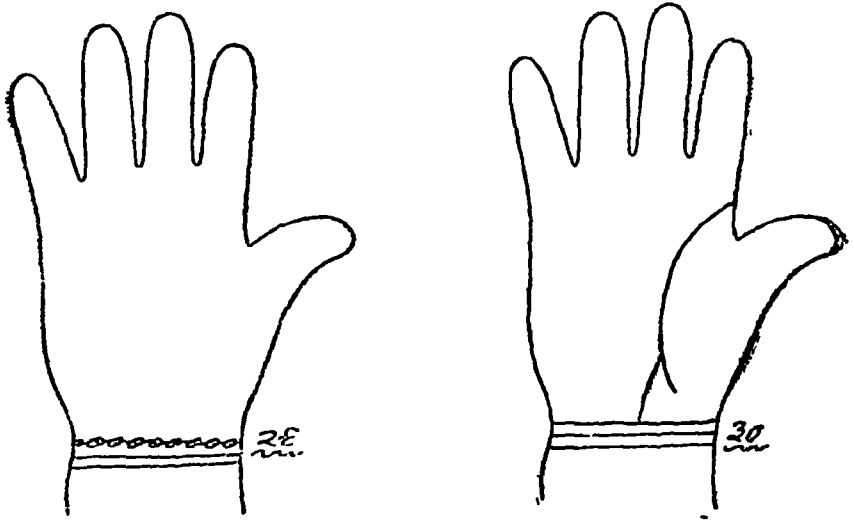
चित्र ३०—यदि मणिबन्ध से कोई रेखा निकलकर जीवन-रेखा पर आकर समाप्त हो जाय तो जातक की किसी यात्रा में ही मृत्यु हो जाती है।

चित्र ३१—यदि मणिबन्ध से निकलकर कोई रेखा चन्द्र-क्षेत्र पर जाय तो जातक समुद्र पार विदेश की यात्रा करता है। ऐसी रेखाए
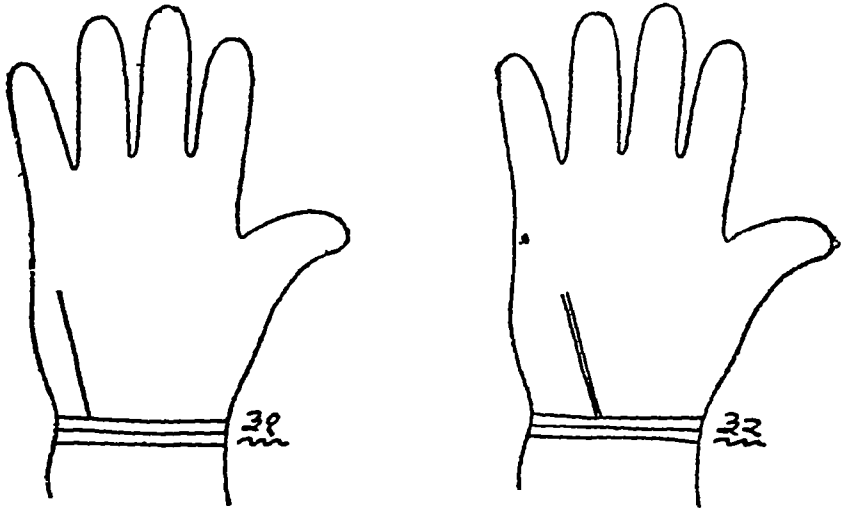
संख्या में जितनी अधिक हों, उतनी ही अधिक यात्राएं भी समझनी चाहिए। लम्बी रेखाओं से लम्बी यात्रा तथा छोटी रेखाओं से छोटी यात्राएं समझनी चाहिए।

चित्र ३२—यदि मणिवन्ध से दो रेखाए निकलकर समानान्तर ढग से चन्द्र-क्षेत्र पर पहुचें तो जातक को यात्रा मे लाभ तो होता है, परन्तु उसके साथ ही भय के कारण भी उपस्थित होते हैं।

चित्र ३३—यदि मणिवन्ध से कोई लहरदार अस्पष्ट रेखा निकलकर स्वास्थ्य-रेखा को काट दे तो जातक का सम्पूर्ण जीवन दुर्भाग्यमय हो जाता है। वह निरन्तर अस्वस्थ भी बना रहता है।

चित्र ३४—यदि मणिवन्ध से निकलकर कोई रेखा शुक्र-क्षेत्र पर होती हुई वृहस्पति के क्षेत्र पर चली जाय तो जातक को किसी लम्बी यात्रा द्वारा सफलता प्राप्त होती है।
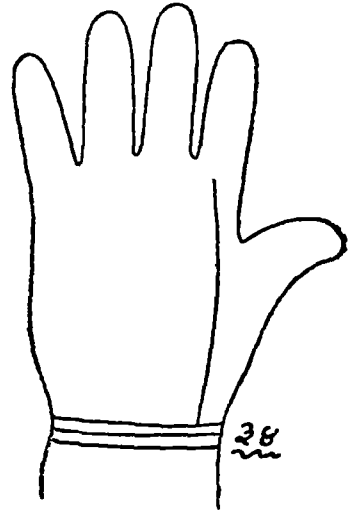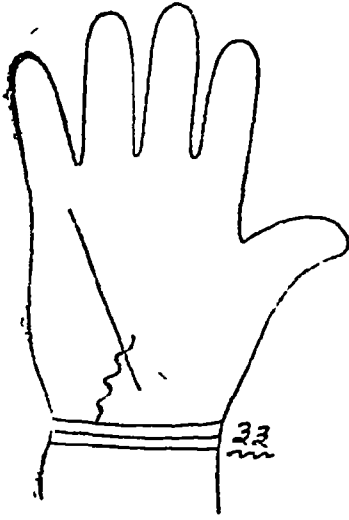
चित्र ३५—यदि मणिबन्ध से दो रेखाए निकलकर शनि-क्षेत्र पर पहुंचे और वहा वे दोनो एक-दूसरी को काट दे तो वे जातक के
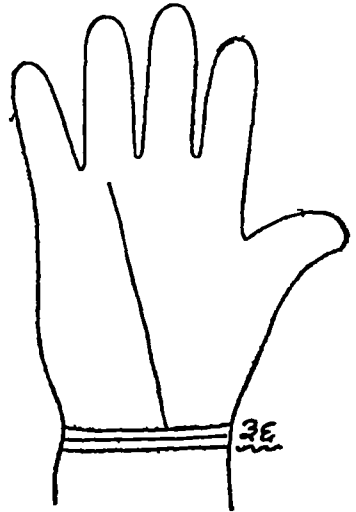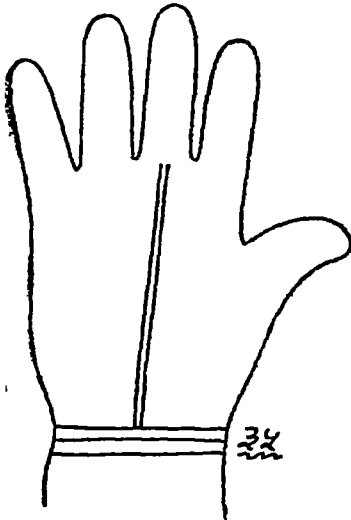
दुर्भाग्य को सूचक होती हैं। ऐसा जातक यदि दूर देश की यात्रा करने के लिए जाता है, तो उसके वापस लौटकर आने की सम्भावना प्रायः नही रहती।

चित्र ३६—यदि मणिवन्ध से कोई रेखा निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर पहुचे तो जातक को अचानक ही धन की प्राप्ति होती है। ऐसी रेखा का स्पष्ट तथा निर्दोष होना आवश्यक है। यह भी ध्यान रखना चाहिए कि वह रेखा स्वास्थ्य-रेखा न हो। ऐसी रेखा स्वास्थ्य-रेखा के समीप पाई जाती है।
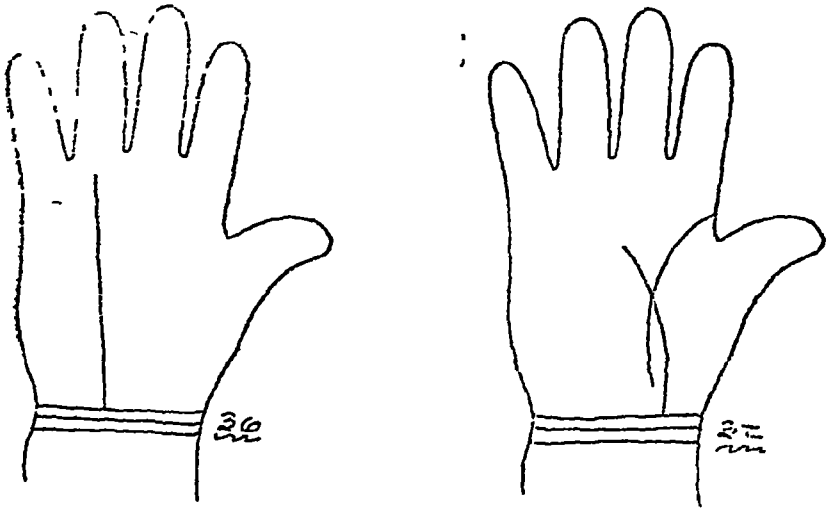
चित्र ३७—यदि मणिवन्व से कोई रेखा निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर पहुचे (वह भाग्य रेखा न हो) और वह स्पष्ट तथा निर्दोष हो तो जातक किसी यात्रा के कारण विशिष्ट व्यक्तियों के सम्पर्क मे आता है, जिसके कारण उसके यश तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होती है।

चित्र ३८—यदि मणिबन्ध से कोई रेखा निकलकर जीवन-रेखा को काटती हुई हथेली के गहरे स्थान राहु-क्षेत्र मे पहुच जाय और वह लाल रग की हो तो जातक दुर्बल तथा बुद्धिहीन होता है और उसके शारीरिक अस्वस्थता के कारण उसकी स्त्री व्यभिचारिणी हो जाती है।

चित्र ३९—यदि पहली मणिबन्ध रेखा पर दो यव-चिन्ह एक साथ दिखाई दे तो ऐसा जातक दयालु, परोपकारी, दानी, समाजसेवी, सच्चरित्र तथा यशस्वी होता है। उसे सर्वत्र सम्मान की प्राप्ति होती है।
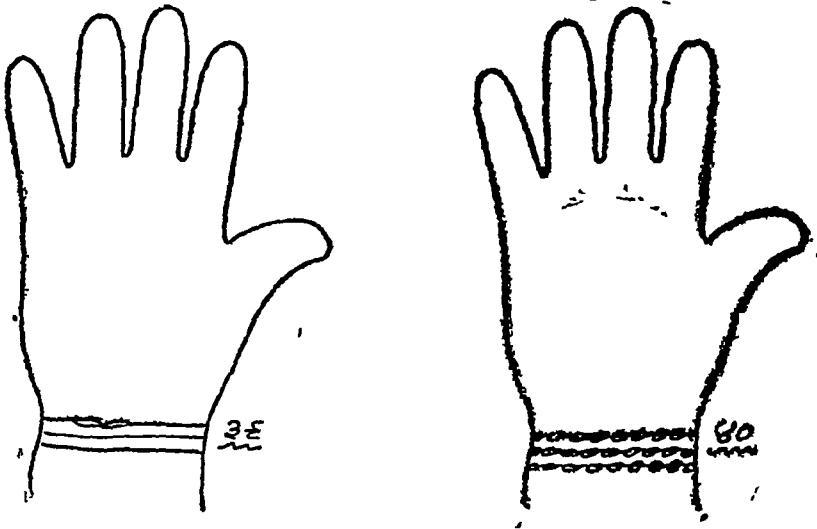
चित्र ४०—यदि मणिबन्ध-रेखाए शृखलाकार हो तो ऐसा जातक उदर विकारो से ग्रस्त रहता है। वह क्रोधी तथा चिडचिडे स्वभाव का होता है। भय, चिन्ता, दरिद्रता तथा रोग उसे हर समय घेरे रहते हैं। ऐसो रेखा वाले व्यक्ति एकान्त सेवी स्वभाव के पाए जाते हैं।

चित्र ४१—यदि मणिबन्ध की पहली रेखा वृत्ताकार ऊपर की ओर उठकर भाग्य-रेखा को काट दे तो उसे दुर्भाग्य का लक्षण समझना चाहिए। ऐसा जातक दरिद्र तथा निराश रहता है। ऐसे पुरुष प्रायः अविवाहित जीवन व्यतीत करते हैं और ऐसी रेखा वाली स्त्री वन्ध्या रहती है।
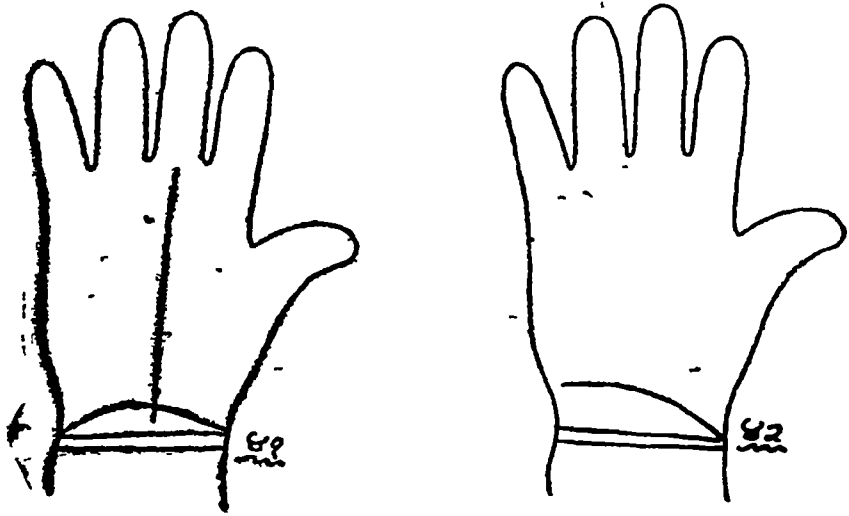
चित्र ४२—यदि मणिबन्ध की पहली रेखा वृत्ताकार होकर चन्द्र-क्षेत्र पर चली गई हो तो ऐसा जातक स्वभाव का कोमल, प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रेमी तथा मधुर भाषी होता है। उसका शरीर भी दुबला-पतला रहता है।

चित्र ४३—यदि मणिबन्ध रेखाए वृत्ताकार होकर शुक्र-क्षेत्र पर दिखाई देती हो तो ऐसी रेखा वाला जातक इन्द्रिय-लोलुप, कामी तथा व्यभिचारी प्रकृति का होता है। वह सौन्दर्य-प्रिय तथा साज-सज्जा की ओर विशेष ध्यान देने वाला होता है।
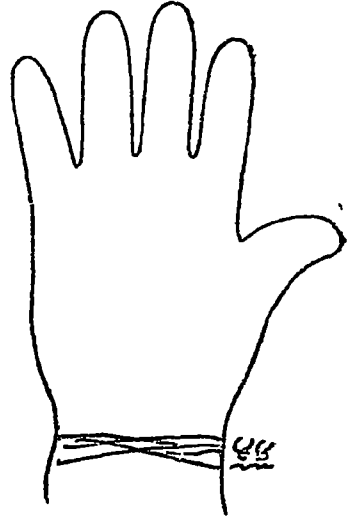
चित्र ४४—यदि मणिबन्ध रेखाए एक-दूसरे के ऊपर चढ़ी हुई हों अथवा एक-दूसरी को काटती हो अथवा एक-दूसरी से मिली हुई हों
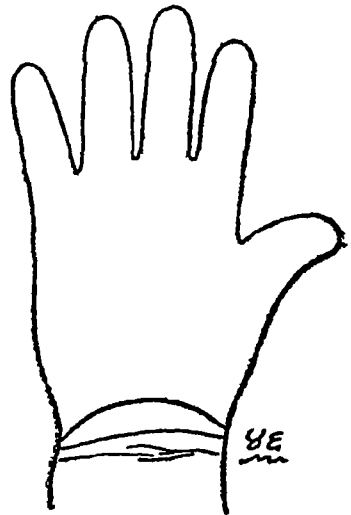
तो ऐसे जातक को किसी पशु अथवा वाहन से चोट लगने अथवा अन्य प्रकार की दुर्घटना का शिकार होने की सम्भावना रहती है।

चित्र ४५—यदि मणिवन्ध की पहली रेखा हथेली के ऊपर चढ़ी हुई हो तथा अन्य दोनो रेखाए दोप-रहित हो तो जातक को स्त्री का सुख तो मिलता है, परन्तु सन्तान का सुख प्राप्त नही होता। जिन स्त्रियो के हाथ मे पहली रेखा पूर्वोक्त प्रकार से धनुषाकार हो, वह सन्तान को जन्म नही दे पाती अर्थात् वन्ध्या रहती है।

चित्र ४६—यदि मणिबन्ध की पहली रेखा हथेली के ऊपर चढी हुई हो और तीसरी रेखा भी दोषपूर्ण हो तो ऐसी रेखा वाले जातक को सन्तान के साथ-साथ स्त्री का सुख भी प्राप्त नही होता।
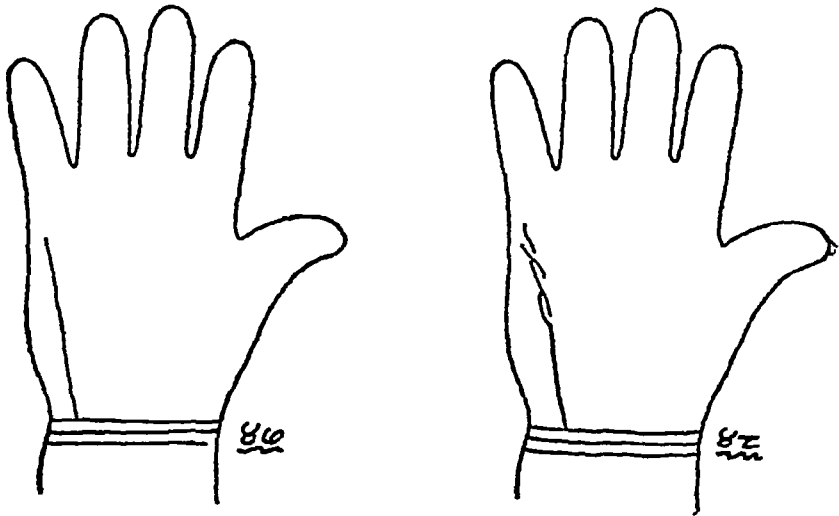
चित्र ४७—यदि मणिवन्ध से निकलकर एक रेखा-मगल पर्वत तक स्पष्ट तथा निर्दोप चली गई हो तो जातक को समुद्र यात्रा द्वारा लाभ प्राप्त होता है।

चित्र ४८—यदि मणिबन्ध से निकली हुई एक रेखा मंगल-पर्वत पर गई हो, परन्तु वह खण्डित अथवा द्वीप चिन्ह युक्त हो तो जातक की यात्रा भयदायक एवं हानिकारक होती है।

चित्र ४९—यदि पूर्वोक्त प्रकार की खण्डित रेखा अथवा द्वीप चिन्ह युक्त रेखा के समीप ही वर्ग (चतुष्कोण) चिन्ह भी हो तो यात्राकाल मे जातक को भय से सुरक्षा प्राप्त होती है।
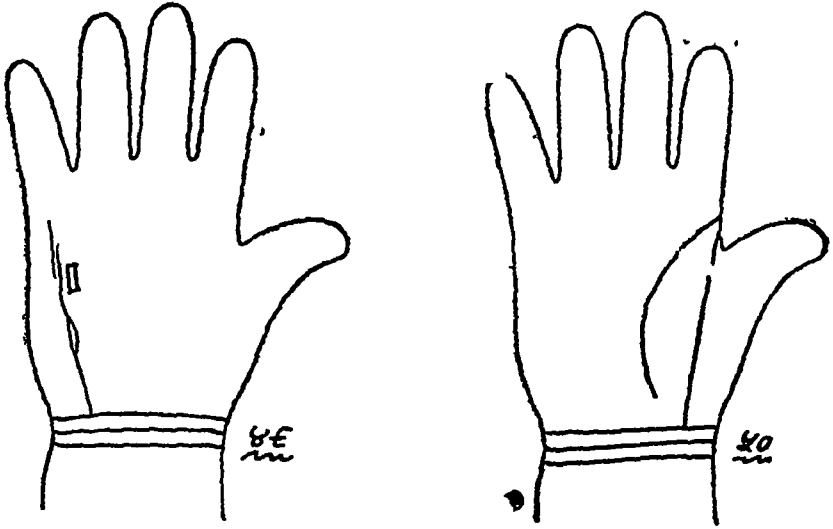
चित्र ५०—यदि मणिबन्ध से निकली हुई एक रेखा के प्रारम्भिक भाग अर्थात् अंगुष्ठमूल मे जा मिले तो जातक को समुद्र-यात्रा करने की सम्भावना होती है।

चित्र ५१—यदि जीवन-रेखा से एक शाखा-रेखा निकलकर चन्द्र-क्षेत्र पर जा रही हो तथा उसमे से निकली हुई एक शाखा-रेखा मणिबन्ध रेखा से योग कर रही हो तो जातक को यात्रा में कष्ट, हानि अथवा मृत्यु का योग उपस्थित होता है।
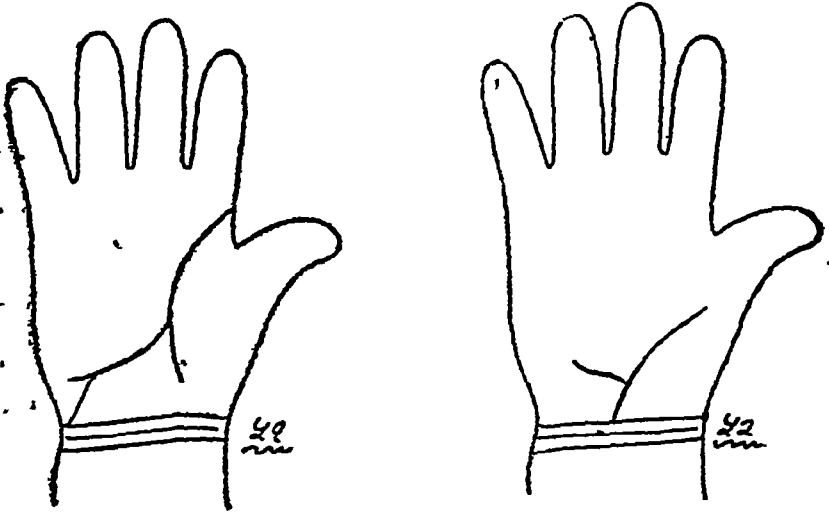
चित्र ५२—यदि मणिवन्ध से एक रेखा निकलकर शुक्र-पर्वत की ओर जाय तथा उसकी एक शाखा चन्द्र-पर्वत पर चली जाय तो ऐसी
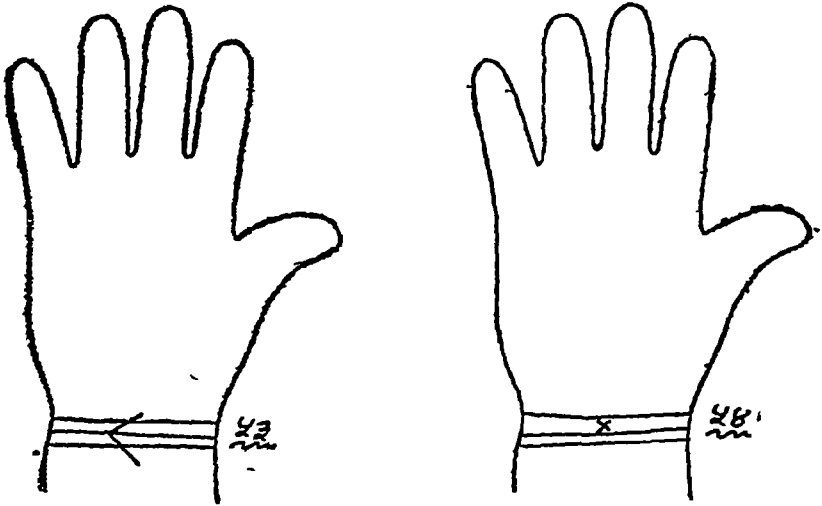
रेखा वाले जातक की यात्रा शुभ होती है और उसे सर्वत्र सम्मान तथा लाभ प्राप्त होता है। शुक्रक्षेत्र के उच्च होने पर अधिक आदर मिलता है और नीचा होने पर उक्त फल मे न्यूनता आ जाती है।

चित्र ५३—यदि मणिबन्ध की तीनो रेखाओ पर कोण का चिन्ह हो तो जातक को वृद्धावस्था मे पराये धन की प्राप्ति होती है, जिसके कारण उसे सुख, सन्तोष तथा सम्मान भी मिलता है।

चित्र ५४—यदि मणिबन्ध की तीनो रेखाओं मे से प्रथम रेखा के भीतर 'क्रास' चिन्ह हो तो जातक का जीवन सुख-शान्ति से व्यतीत होता है परन्तु यदि क्रास-चिन्ह मणिबन्ध रेखाओं के ऊपर हो तो जातक को कठिनाइयो का सामना करना पड़ता है।
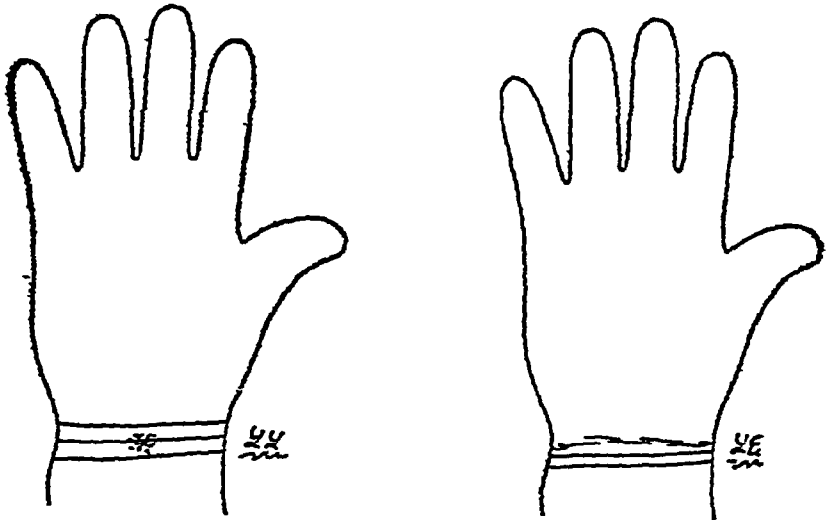
चित्र ५५—मणिबन्ध की किसी भी रेखा पर नक्षत्र-चिन्ह की उपस्थिति जातक के स्वास्थ्य को उत्तम बनाती है तथा उसे पराया धन प्राप्त होता है। यदि यह चिन्ह तीसरी वलय-रेखा पर हो तो

जातक को जीवन के अन्तिम भाग मे उत्तराधिकार अथवा किसी व्यव--साय द्वारा धन की प्राप्ति होती है ।

चित्र ५६—मणिवन्ध की तीन रेखाओं मे से यदि पहली रेखा छिन्न-भिन्न अथवा कटी हो, शेप दोनो रेखाए स्पष्ट हो तो ऐसा जातक विश्वासी, दीर्घायु, यशस्वी तथा लोगो द्वारा प्रशसित होता है ।
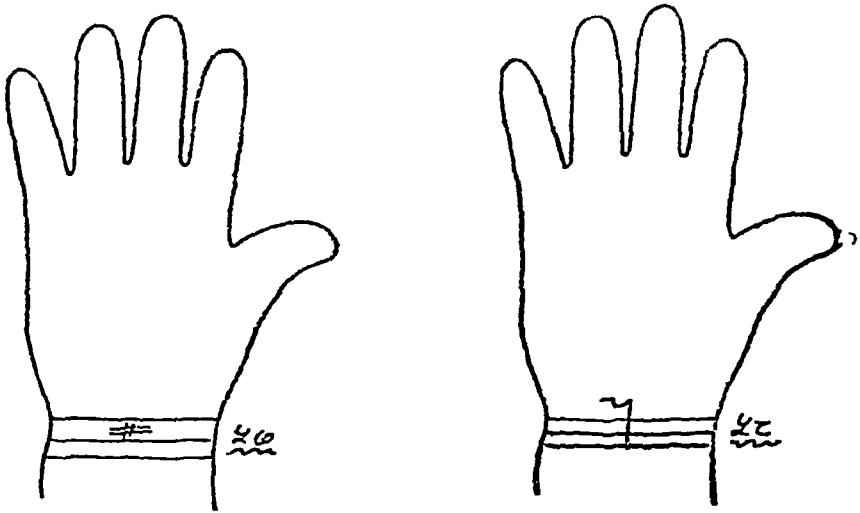
चित्र ५७—यदि मणिवन्ध अर्थात् वलय-रेखा के बीच दो आड़ी रेखाओ पर दो सीधी रेखाए हो तो ऐसे चिन्ह वाला जातक कामी, कुकर्मी, नीच स्वभाव तथा साघातिक मृत्यु पाने वाला होता है ।

चित्र ५८—यदि मणिवन्ध रेखा के ऊपर 'अकुश' का चिन्ह दिखाई दे तो ऐसे चिन्ह वाला अत्यन्त ऐश्वर्यशाली तथा मनुष्यो पर शासन करने वाला होता है ।

चित्र ५९—मणिबन्ध के ठीक बीच मे एक छोटी और खडी रेखा को 'केतु रेखा' कहा जाता है। यह केतु-रेखा जिस जातक के हाथ मे होती है वह धनवान्, प्रतिष्ठित, प्रसन्न तथा वाहन (मोटर आदि, का सुख प्राप्त करने वाला होता है ।
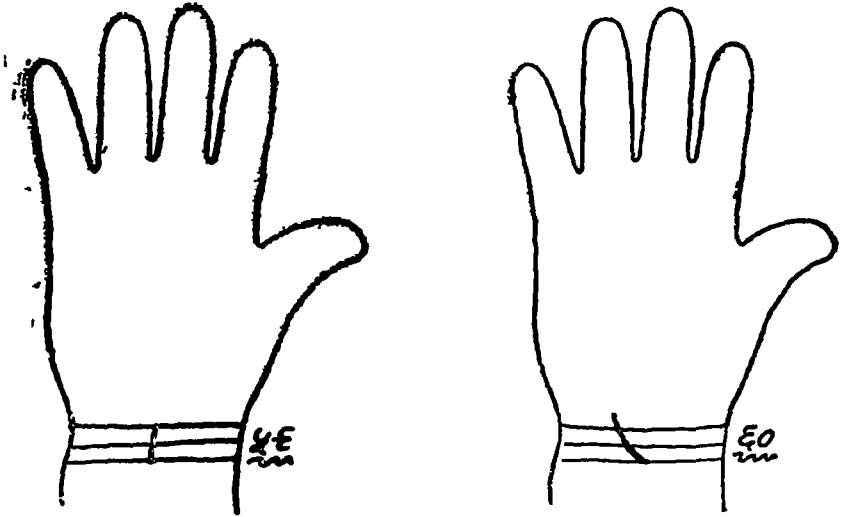
चित्र ६०—पूर्वोक्त केतु-रेखा यदि टेढी, मोटी तथा कुश के समान नोंकदार हो तो उसे 'करवाल-रेखा' कहा जाता है। यह करवाल-रेखा जिस जातक के हाथ मे होती है वह अपने वश की परम्परा के अनुसार प्रतापी तथा भाग्यशाली होता है।

चित्र ६१—यदि मणिबन्ध से निकलकर कोई धनुषाकार रेखा जीवन-रेखा से जा मिली हो तो जिस वयोमान में रेखा मिली हो, उसमे जातक की मृत्यु हो जाने का अदेशा रहता है। ठीक फलादेश के लिए हाथ के अन्य लक्षणों को भी मिला लेना चाहिए।

चित्र ६२—यदि मणिवन्ध से कोई रेखा निकलकर चन्द्र-स्थान पर होती हुई गुरु-क्षेत्र पर चली गई हो तो जातक को दीर्घकालीन लाभ-दायक जलयात्रा करनी पड़ती है, परन्तु उक्त रेखा मे से यदि एक शाखा-रेखा शनि-पर्वत पर चली गई हो तो जातक की यात्रा मे रुकावटें तथा विघ्न उपस्थित होते हैं।
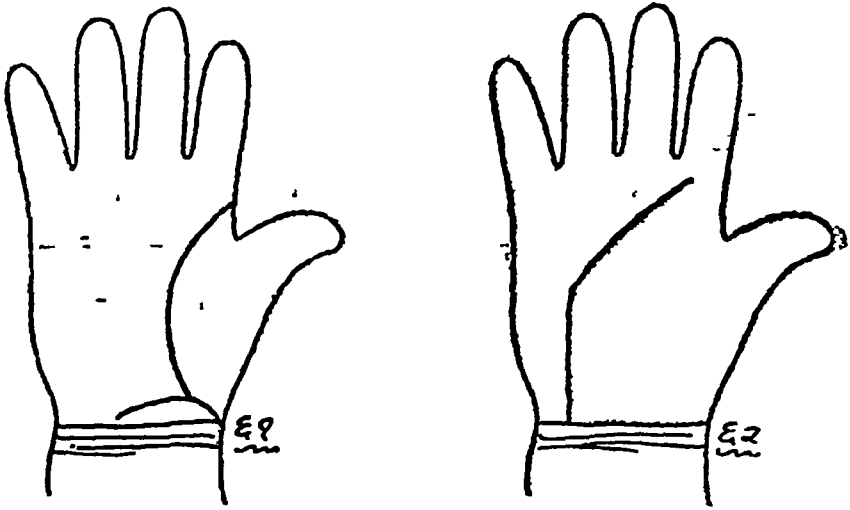
चित्र ६३—यदि मणिवन्ध से निकली हुई कोई रेखा चन्द्र-क्षेत्र पर होती हुई मस्तक-रेखा पर पहुंच कर समाप्त हो जाय तो जातक को जलयात्रा द्वारा वहुत धन प्राप्त होता है।

चित्र ६४—यदि मणिवन्ध की तीनो रेखाओ मे द्वीप-चिन्ह हो तो ऐसा जातक प्रधान नेता, राजा, न्यायाधीश, मत्री अथवा अत्यधिक धनी होता है।
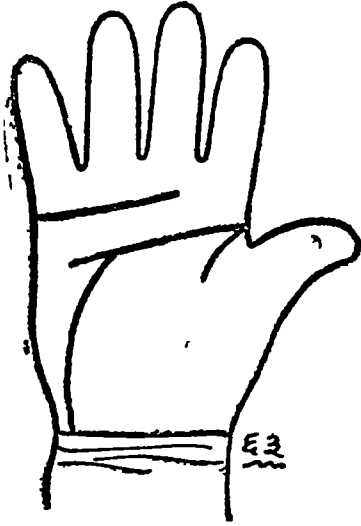
चित्र ६५—यदि मणिबन्ध मे से एक रेखा उठकर अगूठे के दूसरे पर्व तक चली जाय तो ऐसा व्यक्ति राज्याश्रय अथवा राज्य-सुख को प्राप्त करता है।
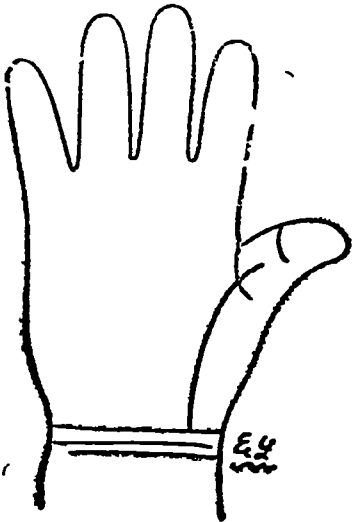
चत्र ६६—यदि मणिवन्ध से एक टेढी रेखा निकलकर भाग्य-रेखा तथा जोवन-रेखा को काटती हुई शुक्र-क्षेत्र मे पहुचे तो जातक किसी प्रेम-त्रन्धन मे पडकर धन का अपव्यय करता है। ऐसी रेखाएं धनी, सेठ तथा सरकारी अधिकारियो के हाथो मे प्राय देखने को मिलती है।
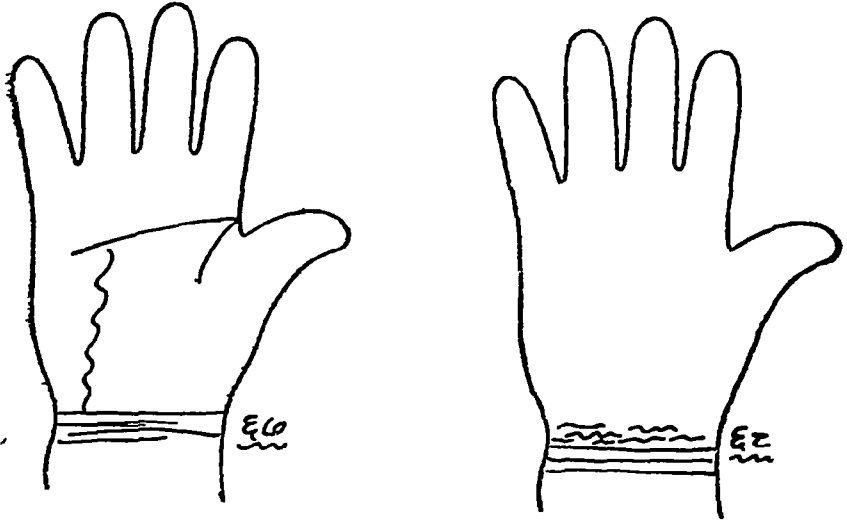
चित्र ६७—यदि मणिवन्ध से एक सर्पाकार रेखा निकलकर मस्तक-रेखा के समीप पहुचे तो ऐसा जातक विश्वासघाती, व्यभिचारी, छली तथा कपटी होता है। ऐसी रेखा वाला व्यक्ति विना परिश्रम किए ही धन प्राप्त करता रहता है।

चित्र ६८—यदि मणिवन्ध के ऊपरी भाग मे एक अथवा अनेक सर्पाकार रेखाए हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक अस्थिर-चित्त और विदेशो मे भ्रमण करने वाला होता है। उसे अनेक विपत्तियों का सामना भी करना पड़ता है।

चित्र६९—यदि मणिबन्ध-रेखाओं के बीच छोटा-सा सर्पाकार चिन्ह हो तो ऐसे चिन्ह वाला जातक परोपकारी; परिणामदर्शी, दृढप्रतिज्ञ, साहसी तथा समाज में प्रतिष्ठित होता है।

चित्र ७०—यदि मणिबन्ध से उठी हुई सर्पाकार रेखा मध्यमा अंगुली के प्रथम पर्व तक पहुच रही हो तो ऐसी रेखा वाला जातक पृथ्वी-पति, धनाढ्य, परन्तु धूर्त होता हैं।
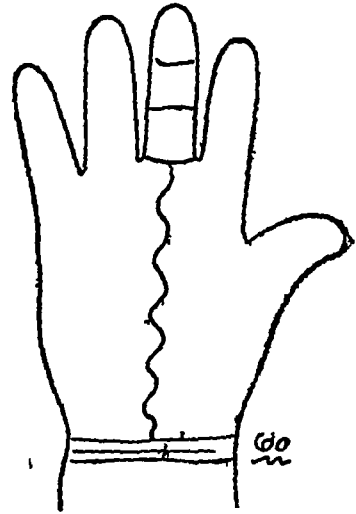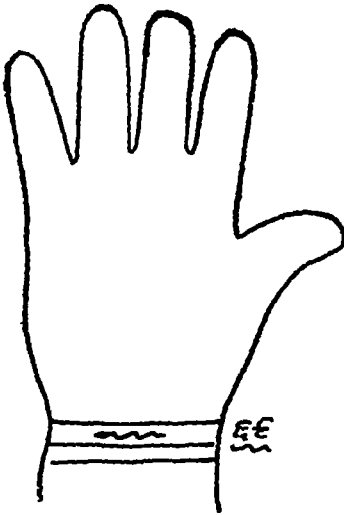
चित्र ७१—यदि मणिबन्ध से उठी हुई कोई सर्पाकार रेखा भाग्य-रेखा तथा जीवन-रेखा के बीच मे चली गई हो अथवा भाग्य-रेखा के समीप पहुच रही हो तो ऐसी रेखा वाला जातक शोकातुर, दु ख-पीड़ित तथा दुर्बल शरीर वाला होता है।

चित्र ७२—यदि मणिबन्ध से उठी हुई छोटी-सी रेखा भाग्य-रेखा तथा जीवन-रेखा के मध्य भाग मे पहुच रही हो तो ऐसी रेखा वाला जातक किसी अपराध मे जेल-यात्रा करता है।

७१
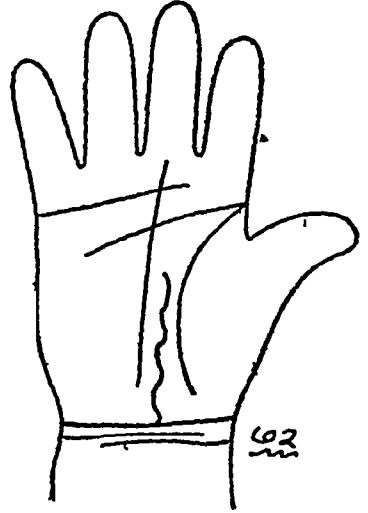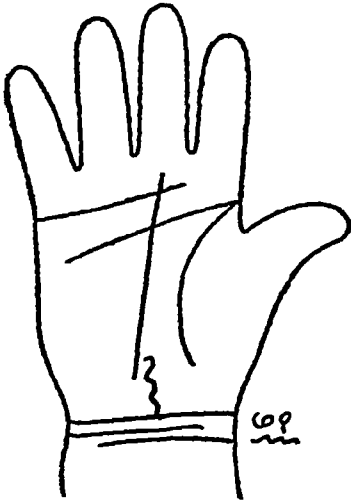
चित्र ७३—यदि मणिवन्ध से उठी हुई सर्पाकार-रेखा भाग्य-रेखा पर पहुंचकर दो भागो मे बट जाए अथवा दो रेखाए हो तो ऐसी रेखा वाला व्यक्ति दरिद्र, दीन, पापात्मा तथा अनेक कार्यो मे असफलता प्राप्त करने वाला होता है ।
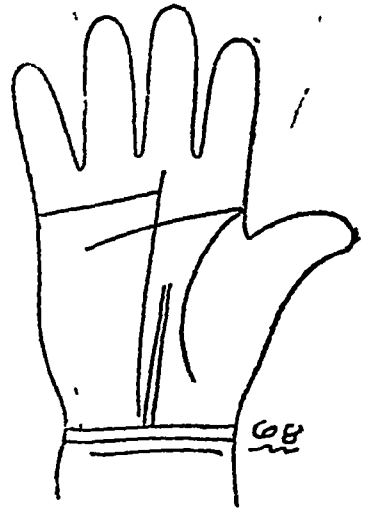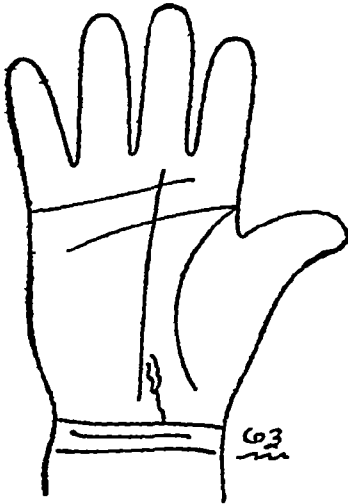
चित्र ७४—यदि मणिबन्ध से उठकर एक या दो सरल तथा निर्दोष रेखाएं जीवन-रेखा तथा भाग्य-रेखा के मध्य भाग पर पहुंचे तो ऐसी रेखा वाला जातक जल-यात्रा द्वारा असीम धन का लाभ करता है।

चित्र ७५—यदि मणिबन्ध से उठकर कोई टेढी तथा गहरी रेखा जीवन-रेखा को स्पर्श करे तो ऐसा जातक सौभाग्यशाली, सुखी, सत्कर्म करने वाला एव तीव्र बुद्धि होता है।
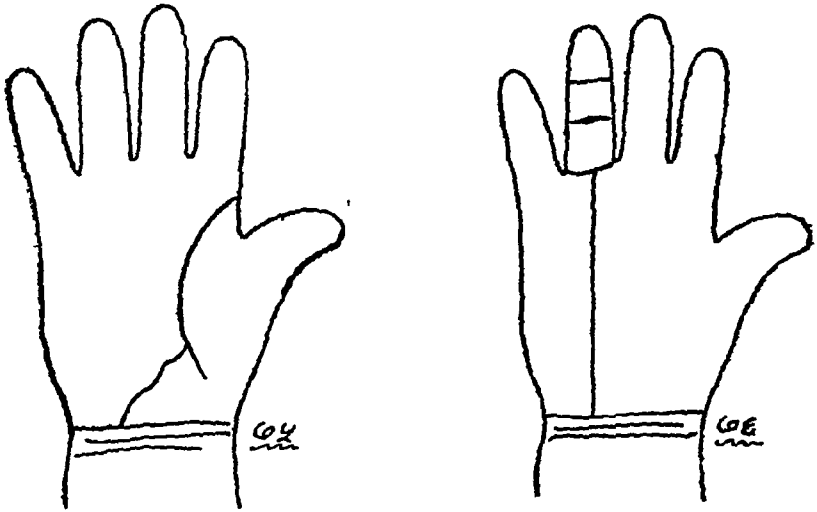
चित्र ७६—यदि मणिबन्ध से कोई रेखा निकलकर सूर्य-क्षेत्र को पार करती हुई अनामिका अंगुली के प्रथम पर्व को स्पर्श करे तो ऐसी रेखा वाला जातक धनी, वाहनादि के सुख को प्राप्त करने वाला तथा सुख-शान्ति पूर्ण जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चित्र ७७—यदि मणिबन्ध से उठी हुई कोई रेखा जीवन-रेखा को स्पर्श कर रही हो तथा उस रेखा को बीच-बीच मे छोटी-छोटी अन्य रेखाए काट रही हो तो ऐसा जातक सदैव रोगी बना रहता है।
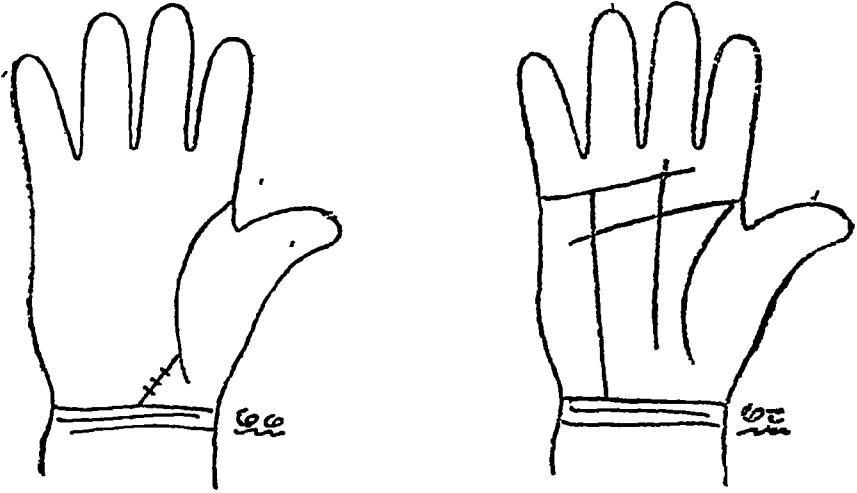
चित्र ७८—यदि मणिबन्ध से निकली हुई कोई रेखा सूर्य तथा बुध-क्षेत्र के बीच हृदय-रेखा से जा मिले तो ऐसी रेखा वाला जातक दूसरो की सहायता द्वारा धन प्राप्त करके सुखी जीवन व्यतीत करता है।

चित्र ७९—यदि मणिबन्ध से निकलकर कोई स्पष्ट, सरल तथा निर्दोष रेखा कनिष्ठा अगुली के मूल तक चली जाए तो ऐसा जातक कई उद्योगो का स्वामी, कुशल व्यवसायी, धनाढ्य तथा यशस्वी होता है।
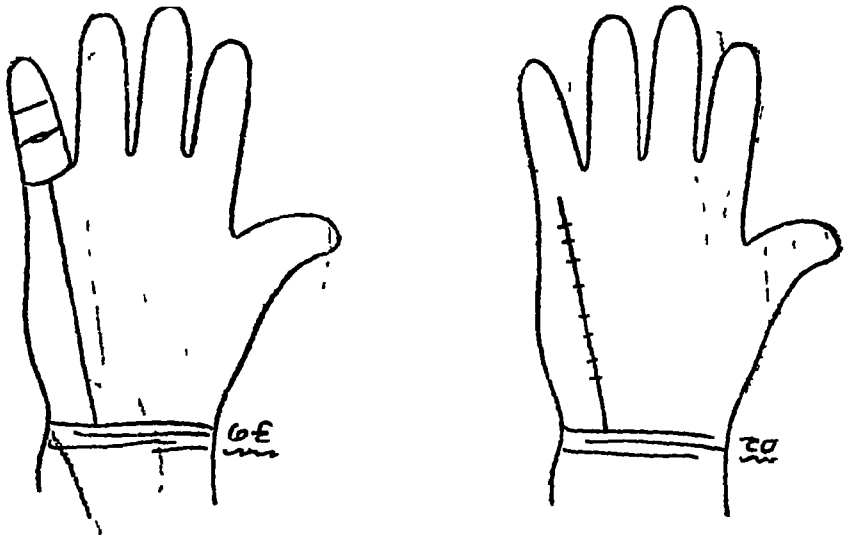
चित्र ८०—यदि मणिबन्ध से कोई रेखा निकलकर बुध-क्षेत्र पर जाए और उसे बीच मे छोटी-छोटी रेखाए काट रही हो तो ऐसा जातक विषयी, दुर्बुद्धि तथ भाग्यहीन होता है ।

चित्र ८१—यदि मणिबन्ध से उठी हुई कोई स्पष्ट तथा निर्दोष रेखा हृदय-रेखा पर दो भागों मे बटकर बुध-क्षेत्र पर चली जाए तो ऐसी रेखा वाला जातक किसी का दास होता है अर्थात् नौकरी करता है ।

चित्र ८२—यदि मणिबन्ध से उठकर बुध-क्षेत्र पर जाने वाली रेखा अपने उद्गम स्थान पर दो भागो मे बटी हुई (द्विजिह्व) हो तो ऐसी रेखा वाला जातक अपने मालिक को धोखा देता है और स्वय कारावास भोगता है ।
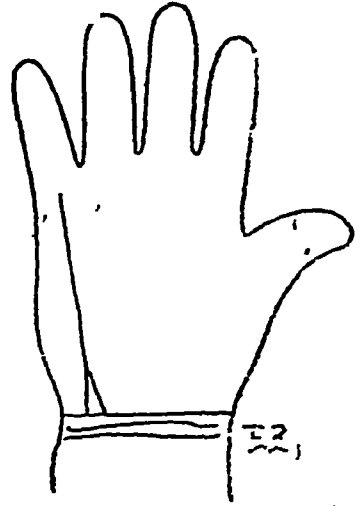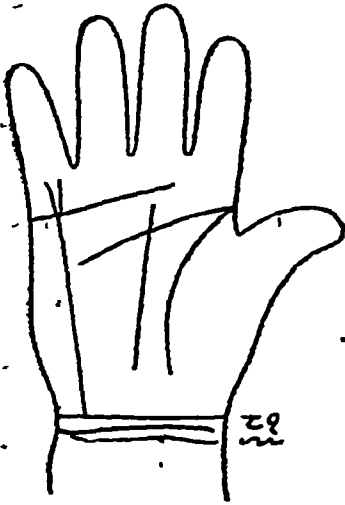
चित्र ८३—यदि मणिबन्ध से कोई रेखा उठकर विवाह-रेखा मे जा मिले, तत्पश्चात् घूमकर हृदय-रेखा तथा मस्तक-रेखा के बीच आकर
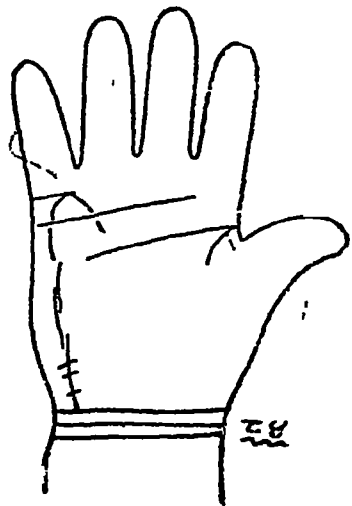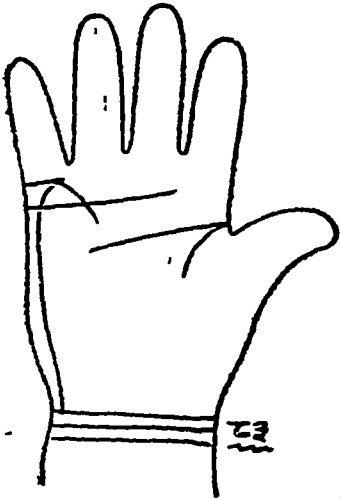
समाप्त हो जाए तो ऐसी रेखा वाला जातक झगडालू, शकालु, एकाकी, विवादी तथा बन्धु-बान्धवो से शत्रुता रखने वाला होता है। वह स्त्रीकृत विपत्तियो का शिकार बनता है और जेल-यात्रा भी करता है। किसी व्यवसायी के हाथ मे ऐसी रेखा हो तो उसके व्यवसाय एव सम्पत्ति का नाश हो जाता है।

चित्र ८४—उपर्युक्त प्रकार की रेखा यदि किसी व्यवसायी के हाथ मे हो और वह स्थान-स्थान पर टूटी अथवा कटी हुई भी हो तो जिस-जिस वयोमान मे रेखा टूटी अथवा कटी होगी, आयु के उन वर्षों मे उस व्यक्ति को व्यवसाय तथा प्रतिष्ठा में हानि उठानी पडेगी और चल-अचल सम्पत्ति भी नष्ट हो जाएगी।

चित्र ८५—यदि मणिबन्ध से निकली हुई कोई स्पष्ट, निर्दोष तथा गहरी रेखा भाग्य-रेखा के बाई ओर से भाग्य-रेखा के समीप पहुच रही
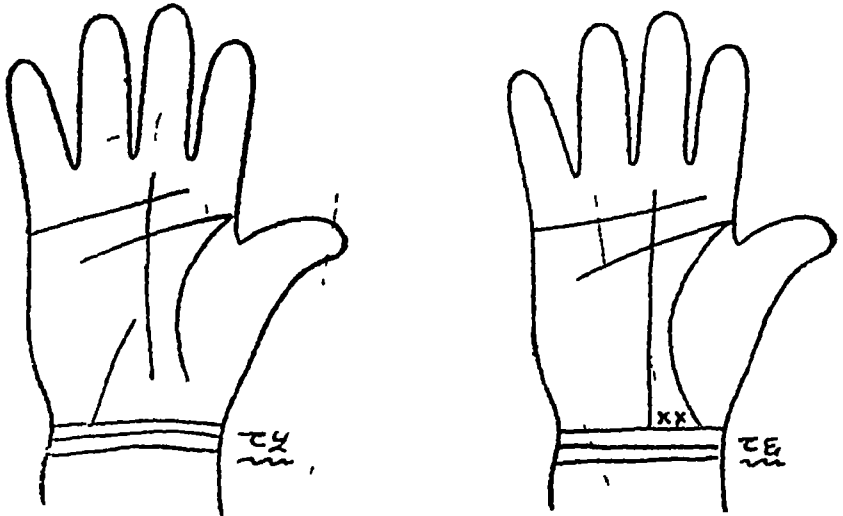
हो तो ऐसा व्यक्ति शत्रु जयी, सर्व-प्रिय तथा अपनी वाक्पटुता द्वारा शत्रु को भी मित्र बना लेने वाला होता है।

चित्र ८६—यदि मणिबन्ध के ऊपर भाग्य-रेखा तथा जीवन-रेखा के बीच दो क्रास=चिन्ह हों तो ऐसे चिन्ह वाला जातक मलीन, अस्वच्छ, असत्यभाषी, लुच्चे-लफगों की संगति करने वाला, परन्तु धनवान् होता है।

चित्र ८७—यदि मणिबन्ध से निकली हुई कोई सीधी रेखा सूय-क्षेत्र को गई हो और उसे बीच-बीच मे महीन परन्तु सीधी रेखाएं काट रही हों तो ऐसी रेखा वाला जातक भाग्यवान्, सुखी, व्यवसायी तथा भूमिपति होता है।
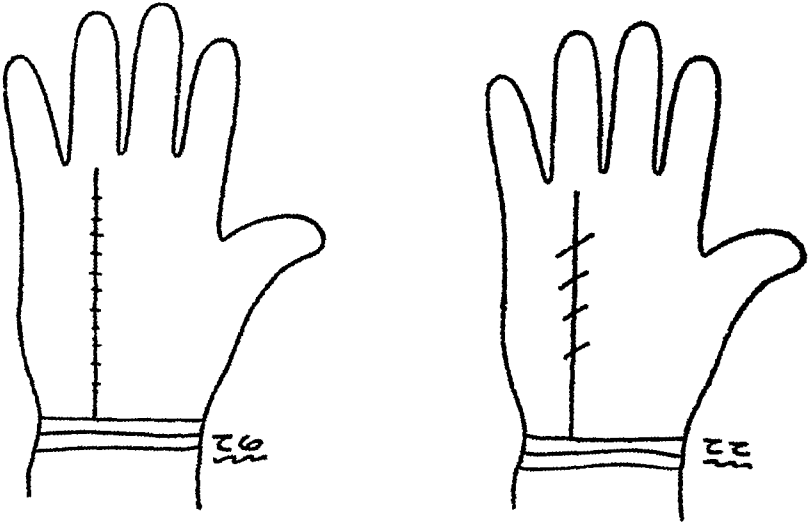
चित्र ८८—यदि पूर्वोक्त प्रकार की रेखा को तिरछी अवरोध रेखाएं काट रही हों तो उस जातक का जीवन अपयश पूर्ण होता है।

चित्र ८९—यदि मणिवन्ध से कोई सीधी रेखा निकलकर मध्यमा अगुली के प्रथम पर्व तक चली गई हो तो ऐसा जातक भाग्यवान्,

प्रसिद्ध, सेनापति अथवा धर्माचार्य होता है। ऐसी रेखा के साथ हाथ के अन्य लक्षणो का शुभ होना भी आवश्यक है।
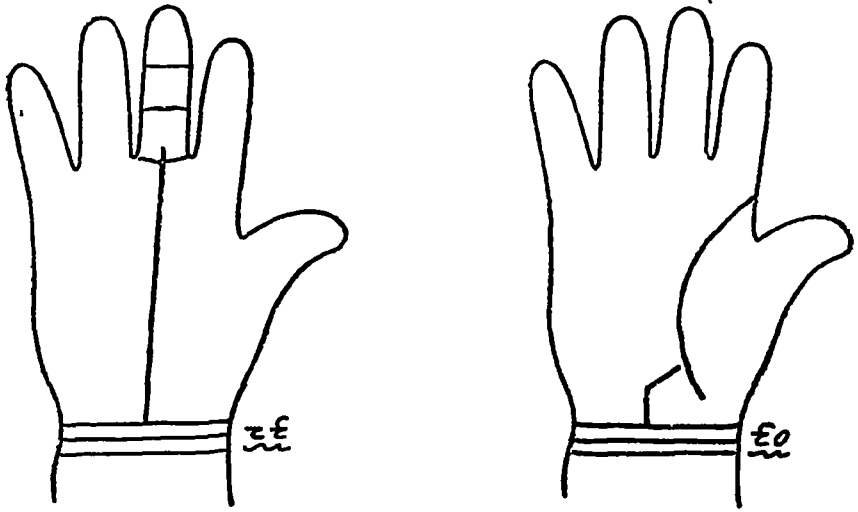
चित्र ९०—यदि मणिबन्ध से निकली हुई कोई रेखा टेढ़ी होकर जीवन-रेखा के समीप पहुंचे तो ऐसी रेखा वाला जातक दरिद्र, क्षीण-काय तथा दीन-स्वभाव का होता है।

चित्र ९१—यदि मणिबन्ध से निकलकर कोई रेखा जीवन-रेखा तथा मस्तक-रेखा के बीच टूटती हुई शनि-क्षेत्र पर पहुच रही हो तो ऐसा जातक वातव्याधि तथा ज्वर से पीड़ित होता है और उसकी जाघो में चोट भी लगती है।

चित्र ९२—यदि मणिबन्ध से कोई रेखा निकलकर शनि-क्षेत्र पर पहुचे और वह मस्तक-रेखा के समीप थोड़ी टेढ़ी भी हो तो ऐसी रेखा वाला जातक प्रभावहीन, दुष्ट स्वभाव वाला तथा चोरी करने में कुशल होता है।
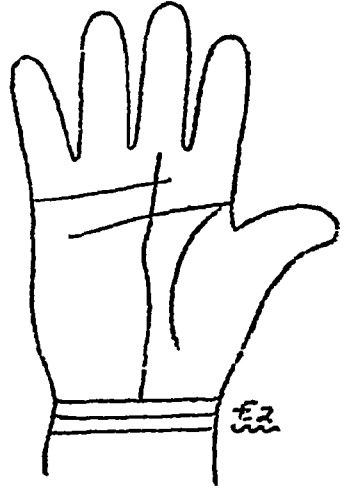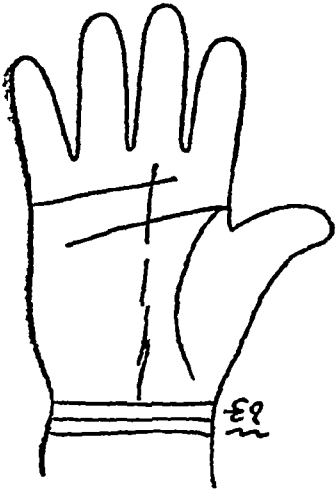
चित्र ९३—यदि मणिवन्ध से निकलकर कोई गहरो रेखा वृहस्पति के क्षेत्र पर पहुचे तो ऐसा जातक यदि पुरुष है तो वह अपने से
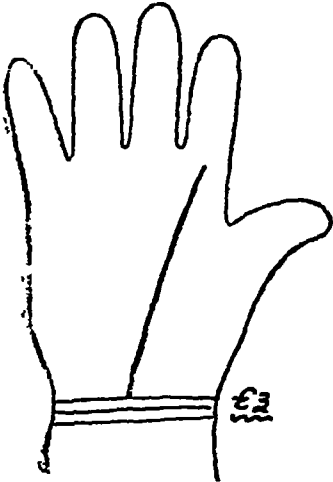
अधिक आयु वाली स्त्री के साथ और यदि स्त्री है तो अपने से किसी अधिक आयु वाले पुरुप के साथ विवाह करती है।

चित्र ६४—यदि मणिवन्ध से निकलकर कोई रेखा गुरु-क्षेत्र पर पहुच रही हो और उसमे से एक शाखा रेखा निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर चली गई हो तो ऐसी रेखा वाला व्यक्ति किसी धनी एव महापुरुष का विशेप कृपापात्र बनकर सुख-सम्पत्ति का लाभ करता है।

चित्र ६५—उक्त प्रकार की गुरु-क्षेत्र पर पहुंचने वाली रेखा मे से एक शाखा रेखा निकलकर यदि बुध के पर्वत पर जा पहुचे तो ऐसी रेखा वाले जातक को आकस्मिक रूप से धन की प्राप्ति होती है।
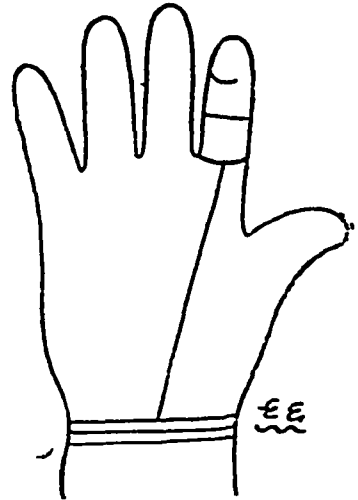
चित्र ६६—यदि मणिवन्ध से निकली हुई सीधी रेखा गुरु-क्षेत्र को पार करती हुई तर्जनी अगुली के प्रथम पर्व के समीप जा पहुचे तो ऐसा व्यक्ति कोई उच्चपदाधिकारी, मन्त्री, न्यायाधीश अथवा राजा होता है। जनता मे उसकी अत्यन्त प्रतिष्ठा होती है। वह हृदय का दयालु भी होता है।

चित्र ९७—यदि मणिबन्ध की पहली रेखा पर त्रिभुज तथा क्रास-चिन्ह हो तथा उस क्रास का एक कोण एवं एक अन्य लम्बी तथा सीधी निर्दोष रेखा मस्तक-रेखा को स्पर्श कर रही हो तो ऐसा जातक किसी वसीयतनामे द्वारा प्रचुर धन प्राप्त करता है।
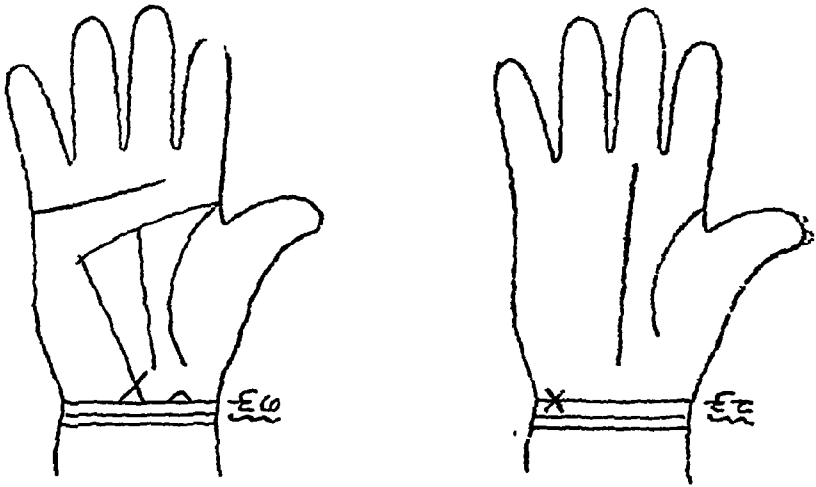
चित्र ९८—यदि मणिबन्ध तथा भाग्य-रेखा के बाईं ओर मणिबन्ध के ऊपर एक क्रास-चिन्ह हो तथा भाग्य-रेखा पुष्ट और निर्दोष हो तो ऐसा व्यक्ति सौभाग्यशाली तथा अत्यन्त प्रतिष्ठित होता है।

चित्र ९९—यदि मणिबन्ध से एक शुद्ध, सीधी, स्पष्ट, निर्दोष तथा गहरी रेखा निकलकर मध्यमा अंगुली के मूल तक चली जाए तो ऐसी रेखा वाला जातक अत्यन्त भाग्यशाली तथा सम्पूर्ण ऐश्वर्यों का स्वामी होता है।
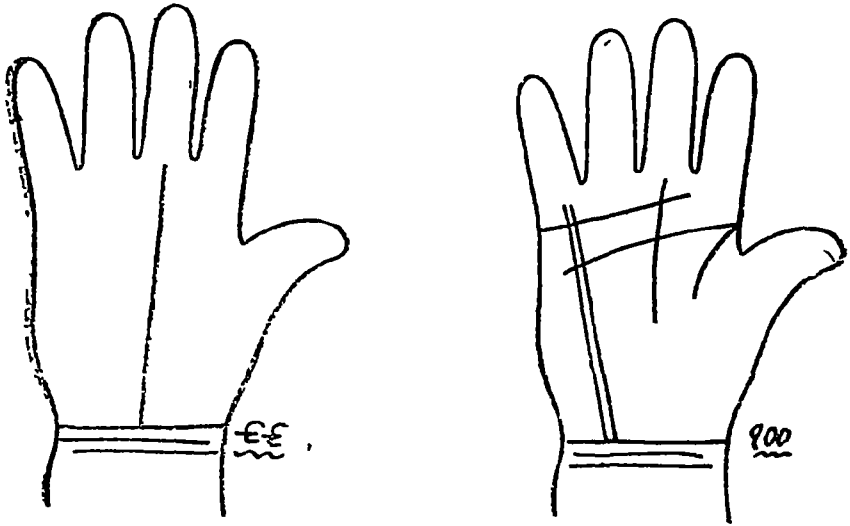
चित्र १००—यदि मणिबन्ध से दो निर्दोष रेखाए निकलकर एक दूसरी के समानान्तर बुध-क्षेत्र पर पहुच रही हों तो ऐसी रेखा वाला व्यक्ति अत्यन्त विद्वान्, ज्योतिषी, गम्भीर विचारक, यशस्वी, व्यवहार-कुशल,व्यवसाय मे सोच-विचार कर धन लगाने वाला तथा सुखमय जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चित्र १०१—यदि मणिबन्ध से उठी हुई उक्त दोनो समानान्तर रेखाए बुध-क्षेत्र पर पहुच रही हों, परन्तु उनका कही मस्तक-रेखा से स्पर्श न होता हो, तो ऐसी रेखाओ वाला व्यक्ति व्यवसाय मे दूसरो की सलाह द्वारा लाभ उठाता है। यदि यह अपने दिमाग से कोई व्यवसाय करता है अथवा किसी व्यवसाय मे धन लगाता है, तो उसे हानि उठानी पडती है।
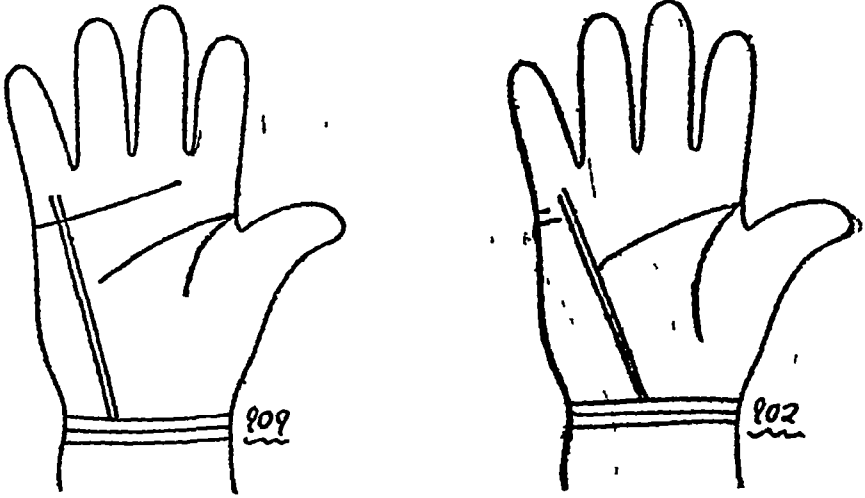
चित्र १०२—यदि पूर्वोक्त प्रकार की मणिबन्ध से निकलकर बुध-क्षेत्र पर पहुचने वाली दोनो समानान्तर रेखाए हृदय-रेखा को स्पर्श न करे अर्थात् हृदय-रेखा छोटो हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक बेईमानी तथा शोषण द्वारा धनोपार्जन करता है, जिसके कारण उसका जीवन अन्तत: दु:खमय होता है।

चित्र १०३—यदि मणिबन्ध से निकलकर कोई रेखा सीधी शुक्र-स्थान को चली जाए और बीच मे वह कटी हुई भी हो तो ऐसी रेखा वाला व्यक्ति महात्मा अथवा सन्यासी होता हुआ भी व्यभिचारी होता है। उस पर भोली-भाली स्त्रिया अधिक आसक्त होती है। ऐसी रेखा वाला व्यक्ति शरीर से स्वस्थ तथा सुन्दर भी होता है।

चित्र १०४—यदि मणिवन्ध से निकलकर बीच से कटी हुई कोई रेखा अगुष्ठ मूल में जीवन-रेखा के उद्गम स्थान मगल के द्वितोय क्षेत्र पर चलो जाए और कटे हुए स्थान पर चतुष्कोण (वर्ग) चिन्ह भी हो
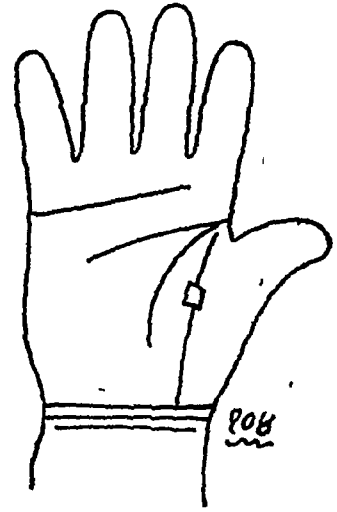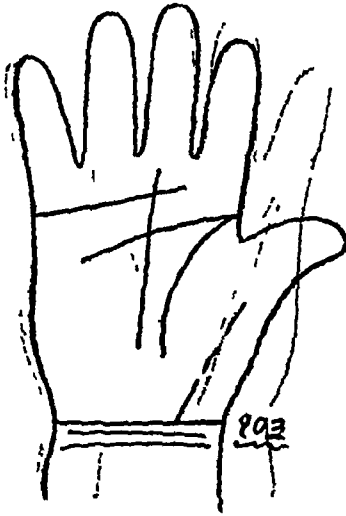
तो ऐसा जातक स्वस्थ, सुन्दर, दानी, वीर, विदेशो मे प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला, परन्तु बुद्धिहीन होता है । उसे सदैव दूसरो की बुद्धि से काम करना पड़ता है ।

चित्र १०५—यदि मणिबन्ध से निकलकर गुरु-पर्वत पर जाने वाली रेखा बीच मे टूटी हुई हो तो जातक को दूर देश को यात्रा मे हानि उठानी पडती है ।

चित्र १०६—यदि मणिबन्ध से निकलकर गुरु-पर्वत अथवा तर्जनी अगुली के प्रथम पर्व तक जाने वाली रेखा बीच मे कटी हुई हो तो ऐसा जातक दूर देश की यात्रा तो करता है, परन्तु धन कमाने मे उसे भय लगता है । वह निरन्तर घबराया हुआ-सा भ्रमण करता रहता है और अन्तत निराश होकर वैराग्य ले लेता है ।
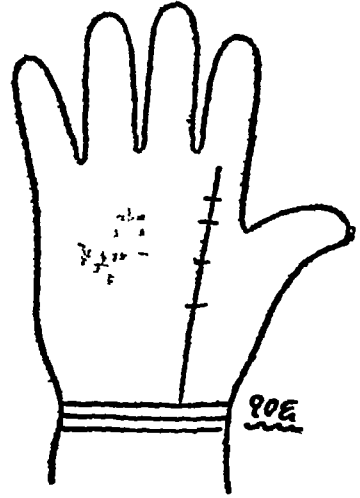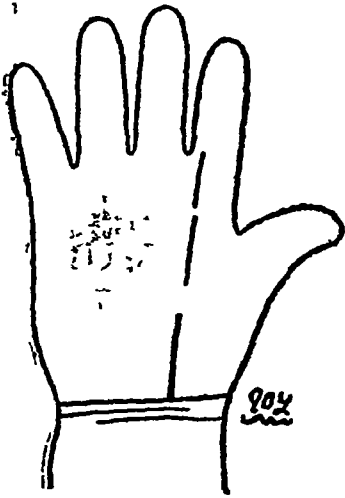
चित्र १०७—यदि जीवन-रेखा मणिबन्ध से जा मिली हो और वह बीच मे छोटी-छोटी रेखाओ से कटी हुई हो तथा काटने वाली
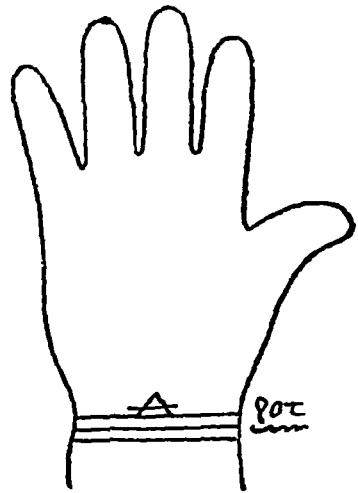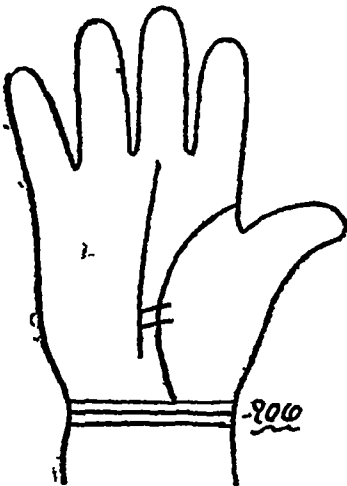
रेखाए भाग्य-रेखा को स्पर्श भी कर रही हो जिसके कारण एक चतुष्कोण बन जाता हो तो ऐसी रेखाओ एव चिन्हो वाला जातक रोग पीडित तो होता है, परन्तु उससे जल्दी ही छुटकारा भी पा लेता है। ऐसा मनुष्य अत्यन्त साहसी होता है तथा अपनी सूझबूझ से प्रत्येक काम मे सफलता प्राप्त करता रहता है।

चित्र १०८—यदि मणिबन्ध के ऊपर एक त्रिकोण-चिन्ह हो और वह कटा भी हो तो ऐसे चिन्ह वाला जातक अपने जन्म-स्थान से दूर जाकर रहता है तथा धन प्राप्त करने की इच्छा रखते हुए भी निर्धन बना रहता है। ऐसा व्यक्ति अन्त मे किसी धन सम्बन्धी मामले में फसकर ही मृत्यु का शिकार भी बनता है।

चित्र १०९—यदि मणिबन्ध से उठी हुई भाग्य-रेखा कोण बनाती हुई मस्तक-रेखा के समीप पहुच रही हो तो ऐसी रेखा वाला जातक
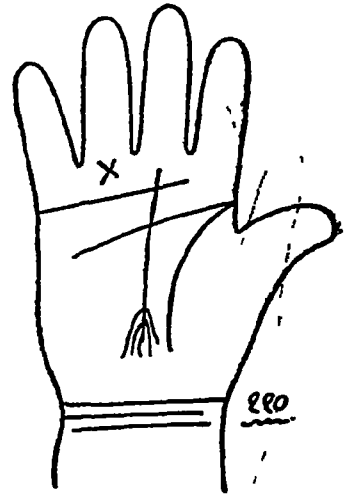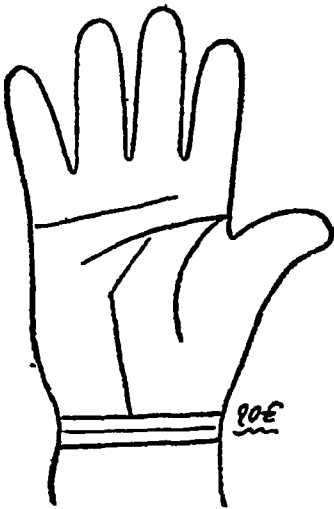
गुप्त विद्या, वैद्यक तथा शल्य-क्रिया तथा रसायन विद्या का जानकार होता है, परन्तु हर समय पर-स्त्री-गमन मे रत बना रहता है।

चित्र ११०—यदि भाग्य-रेखा की कई शाखाए मणिवन्ध की ओर जा रही हो और सूर्य-क्षेत्र पर क्रास-चिन्ह भी हो तो ऐसा जातक अपने धर्म को छोडकर दूसरा धर्म ग्रहण कर लेता है।

चित्र १११—यदि उक्त प्रकार की भाग्य-रेखा की शाखाओं को कोई रेखा काट रही हो तथा सूर्य-क्षेत्र पर क्रास-चिन्ह भी हो तो ऐसा जातक अपना धर्म छोडकर दूसरा धर्म तो ग्रहण करता है, परन्तु फिर वह अपने ही धर्म मे लौट भी आता है।
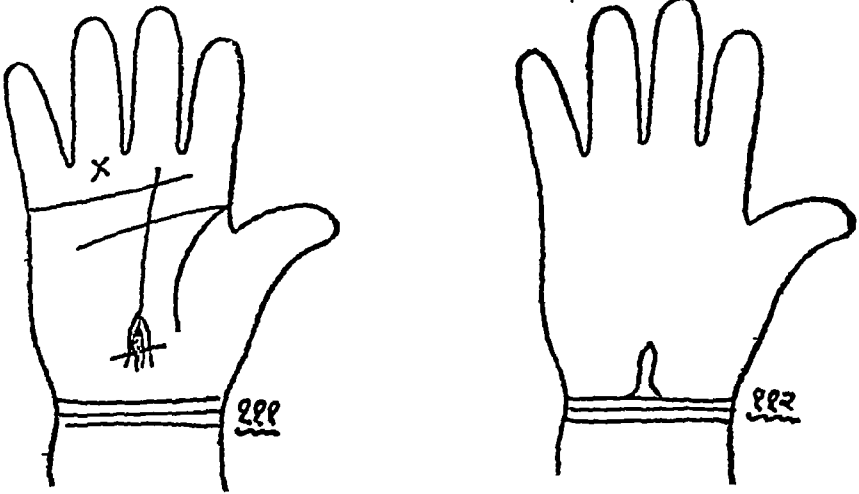
चित्र ११२—मणिवन्ध के ऊपर मछली जैसी आकृति वाली रेखा को मीन-रेखा अथवा 'मीनपुच्छ' कहा जाता है। यह मीन-रेखा जिस व्यक्ति के हाथ मे मणिवन्ध के ऊपर अथवा हथेली के किसी एक किनारे पर अथवा बीच मे हो तो ऐसी रेखा वाला जातक धनवान्, विद्वान्, सत्यवादी, काव्य-सगीत मे निपुण, धन-जन से पूर्ण, सुखी तथा पैतृक धन को प्राप्त करने वाला मधुर भाषी होता है।

चित्र ११३—यदि भाग्य-रेखा मणिबन्ध से निकलकर सीधी, गहरी, स्पष्ट तथा निर्दोष स्थिति मे मध्यमा अगुली के मूल भाग मे पहुच रही हो तो ऐसी रेखा वाला व्यक्ति अत्यन्त भाग्यशाली तथा समस्त ऐश्वर्यो का स्वामी होता है।
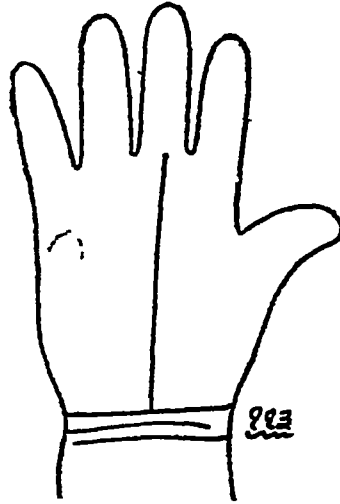
आवश्यक निर्देश

(१) मणिबन्ध से आरम्भ होने वाली भाग्य-रेखा की विभिन्न स्थितियो के सम्बन्ध में 'भाग्य-रेखा' खण्ड मे विस्तारपूर्वक विचार किया गया है, अत. पाठको को उक्त खण्ड का अवलोकन करना चाहिए।

(२) मणिबन्ध से उठने वाली जिन रेखाओ का वर्णन किया गया है, उन्हे भाग्य-रेखा समझ लेने की भूल नही करनी चाहिए। ये रेखाए भाग्य-रेखाओ से भिन्न होती हैं।

(३) कुछ विद्वानो के मतानुसार मणिवन्ध की प्रत्येक रेखा जातक की ३० वर्ष की आयु की द्योतक होती है अर्थात् यदि मणिवन्ध पर एक रेखा हो तो ३० वर्ष, दो रेखाएं हो तो ६० वर्ष, तीन रेखाएं हो तो ९० वर्ष और चार रेखाए हो तो १२० वर्ष की परमायु होती है। इन रेखाओ का स्पष्ट, निर्दोष तथा अखण्ड होना आवश्यक है, जितनी रेखाए टूटो-कटी, छिन्न-भिन्न अथवा अपूर्ण हो आयु के वर्षों मे उसी के अनुपात से न्यूनाधिकता का विचार कर लेना चाहिए।

(४) कुछ विद्वानो के मतानुसार मणिवन्ध की प्रथम रेखा द्वारा जातक के स्वास्थ्य और धन का, दूसरी रेखा द्वारा शास्त्र तथा विद्या का तथा तीसरी रेखा द्वारा भक्ति एव सुख-भाव का विचार करना चाहिए।

(५) स्त्रियो के हाथ में केवल दोहरी मणिवन्ध रेखाओ का होना अधिक शुभ माना गया है। यदि उनके हाथ मे तीन रेखाए हों अथवा एक रेखा छिन्न-भिन्न हो तो फल मे कमी आ जाती है।

(६) स्त्री के हाथ मे यदि मणिवन्ध-रेखा शृखलाकार हो तो उसके निर्धन, कुलटा तथा पर-पुरुष-गामनी होने का लक्षण समझना चाहिए।

(७) प्राच्य मतानुसार मणिबन्ध की चार रेखाओं को क्रमशः धर्म, अर्थ, काम तथा मोक्ष का सूचक माना जाता है, जवकि कुछ विद्वान् चौथी रेखा को दरिद्रता का सूचक भी मानते हैं।

(८) यदि मणिवन्ध-रेखाएं तो अच्छी हो, परन्तु जोवन-रेखा अच्छी न हो तो उस स्थिति मे जातक के भाग्य को अच्छा, परन्तु स्वास्थ्य का खराब समझना चाहिए।

(९) मणिबन्ध रेखाओ को गिनतो हथेली की ओर से आरम्भ करके क्रमश नोचे की ओर करनी चाहिए। मणिवन्ध मे कौन-सी रेखा

पहली, कौन-सी दूसरी, कौन-सी तीसरी तथा कौन-सी चौथी होती है—इसे चित्र सख्या ११४ मे प्रदर्शित किया गया है।

(१०) रेखाओ के अतिरिक्त मणिबन्ध की बनावट तथा अन्य लक्षणो के विषय मे 'आपका हाथ' शीर्षक 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के प्रथम खण्ड का अध्ययन करना चाहिए।

(११) कुछ विद्वानो के मतानुसार मणिबन्ध की पहली रेखा द्वारा जातक के स्वास्थ्य, दूसरी रेखा द्वारा धन, तीसरी रेखा द्वारा पुत्र एव चौथी रेखा द्वारा स्वभाव का विचार करना चाहिए।

(१२) यदि मणिबन्ध-रेखाएं लाल वर्ण की हो और आपस मे मिली हुई न हो तो ऐसे जातक का सौभाग्य युद्ध द्वारा उदय होता है। ऐसा व्यक्ति यशस्वी योद्धा होता है और उसे युद्ध-क्षेत्र मे सम्मान की प्राप्ति होती है।

(१३) जैसाकि जीवन-रेखा-खण्ड मे बताया जा चुका है कि कुछ विद्वान् जीवन-रेखा का उदय अगुष्ठ तथा तर्जनी अगुली के मध्यवर्ती क्षेत्र से न मानकर मणिबन्ध से मानते है तथा उसकी समाप्ति उक्त क्षेत्र पर मानते हैं। अर्थात् उनके मत मे यह रेखा मणिबन्ध से आरम्भ होकर मगल के द्वितीय क्षेत्र अथवा गुरु-क्षेत्र पर समाप्त होती है। ऐसे विद्वानो के मतानुसार यदि जीवन-रेखा मणिबन्ध से उठकर तर्जनी अगुली के मूल मे सलग्न हो गई हो (चित्र ११५) तो जातक की आयु सौ वर्ष की होती है। यदि रेखा इससे छोटी हो तो जातक की आयु उसी अनुपात से कम हो जाती है।
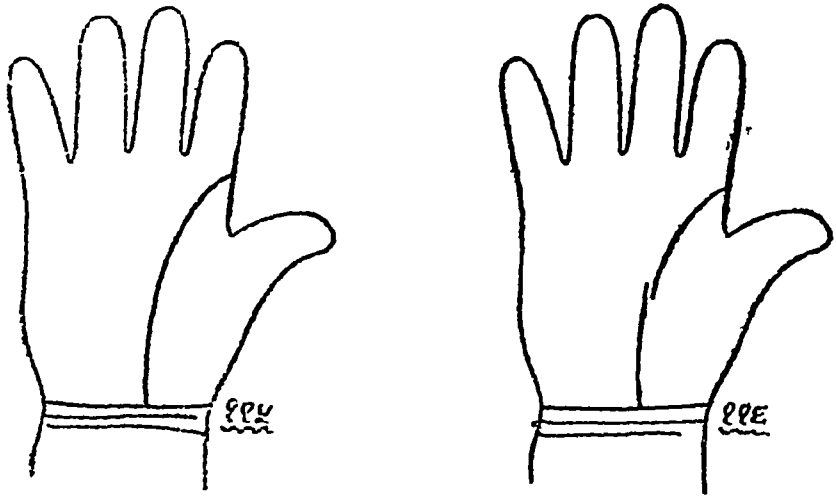
(१४) पूर्वोक्त मतानुसार मणिबन्ध से आरम्भ होकर गुरु-क्षेत्र पर पहुचने वाली आयु-रेखा यदि बीच मे छिन्न-भिन्न हो (चित्र ११६) तो जातक किसी वृक्ष से नीचे गिरकर मृत्यु को प्राप्त होता है। जिस वयोमान मे उक्त रेखा टूटी हुई होगी, आयु के उसी वर्ष में जातक की किसी वृक्ष अथवा ऊचे स्थान से गिरकर मृत्यु हो जाएगी।

शुक्र-क्षेत्रीय रेखाएं

हथेली पर शुक्र-क्षेत्र का विस्तार सबसे अधिक होता है। यह क्षेत्र तर्जनी अगुली के गुरु-क्षेत्र के नीचे मगल के द्वितीय-क्षेत्र के समीप से आरम्भ होकर मणिवन्ध तक फैला रहता है। जीवन-रेखा के फैलाव के अनुरूप यह क्षेत्र छोटा अथवा बडा हुआ करता है। यह स्मरणीय है कि जीवन-रेखा कम फैली हुई हो अथवा अधिक—प्रत्येक स्थिति मे उस रेखा के भीतर जितना स्थान घिरा हुआ होता है, शुक्र क्षेत्र केवल उतने ही बड़े स्थान को माना जाता है। जीवन-रेखा का घिराव यदि कम हो तो उस स्थिति मे शुक्र-क्षेत्र भी छोटा ही रह जाएगा। जीवन-रेखा से बाहर के स्थान को शुक्र-क्षेत्र नही माना जाता।

शुक्र-क्षेत्र पर अनेक प्रकार की रेखाए पाई जाती है, उनमे जीवन-रेखा की सहायक रेखा', मगल-रेखा, यात्रा-रेखाए तथा भाई-बहनो की रेखाए मुख्य है। इन सव रेखाओ का वर्णन 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के पिछले खण्डो मे किया जा चुका है। शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होने वाली प्रेम अथवा विवाह रेखाओ का विस्तृत वर्णन भी 'विवाह-रेखा' खण्ड मे हो चुका है। उक्त रेखाओ के अतिरिक्त शुक्र-क्षेत्र पर और भी अनेक प्रकार की छोटी-छोटी रेखाए होती है तथा इसी क्षेत्र से कुछ प्रभाव-रेखाए, निकलकर अन्य क्षेत्रो अथवा अन्य रेखाओ से सयोग करती हैं (चित्र ११७) उन प्रभाव रेखाओ का वर्णन यहा पर किया जा रहा है। प्रसगानुसार पूर्व खण्डो मे वर्णित कुछ रेखाओ के फलाफल की पुनरावृत्ति भी इस प्रकरण मे कर दी गई है।
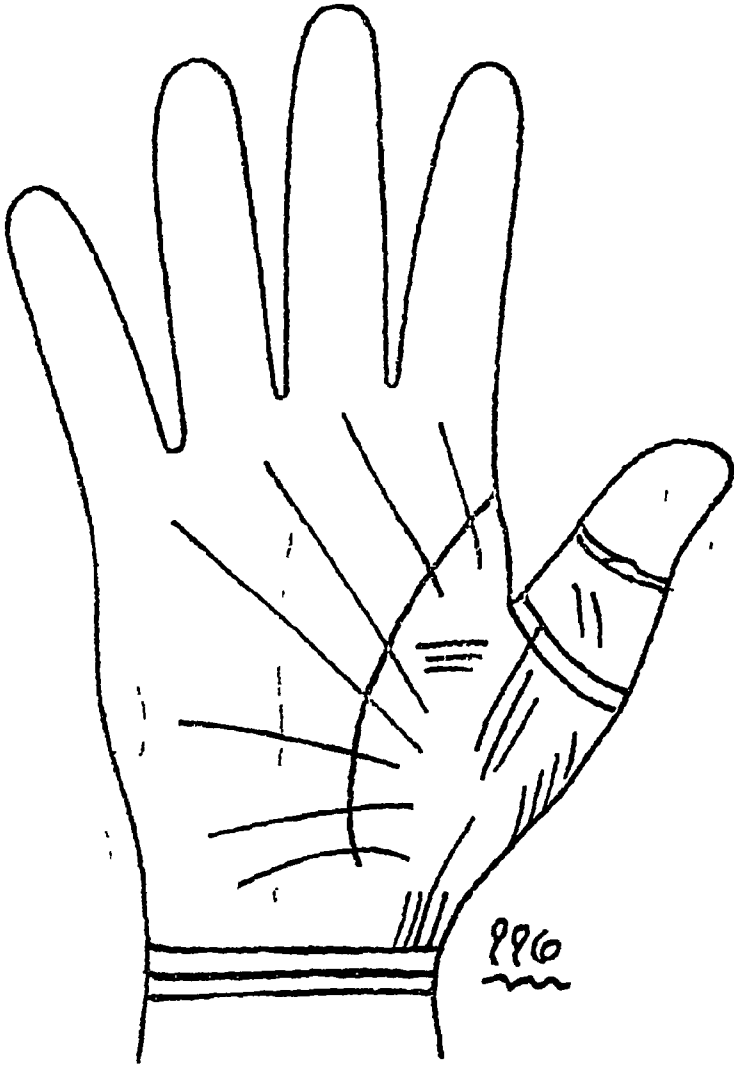
[शुक्र क्षेत्रीय प्रभाव-रेखाओं की विभिन्न स्थितिया]

शुक्र-क्षेत्र की प्राभाविक-रेखाओ के विषय में प्राच्य ग्रंथो मे कोई विशेष विवरण नही मिलता, जबकि पाश्चात्य विद्वानो ने शुक्र-क्षेत्रस्थ प्रभाव-रेखाओ का विशद् वर्णन किया है। यहा पर दोनो ही मतों का एकीकरण करते हुए उनके साराश को प्रस्तुत किया जा रहा है। पाठकों को सुविधा के लिए शुक्र-क्षेत्रीय प्रभाव-रेखाओ का प्रत्येक स्थिति का चित्र भी विवरण के साथ ही दे दिया गया है।

चित्र ११८—यदि अगूठे के प्रथम पर्व से आरम्भ होकर कोई गहरी रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई कुछ आगे जाकर समाप्त हो जाए तो ऐसी रेखा वाले जातक की किसी शस्त्र के आघात से मृत्यु होती है।
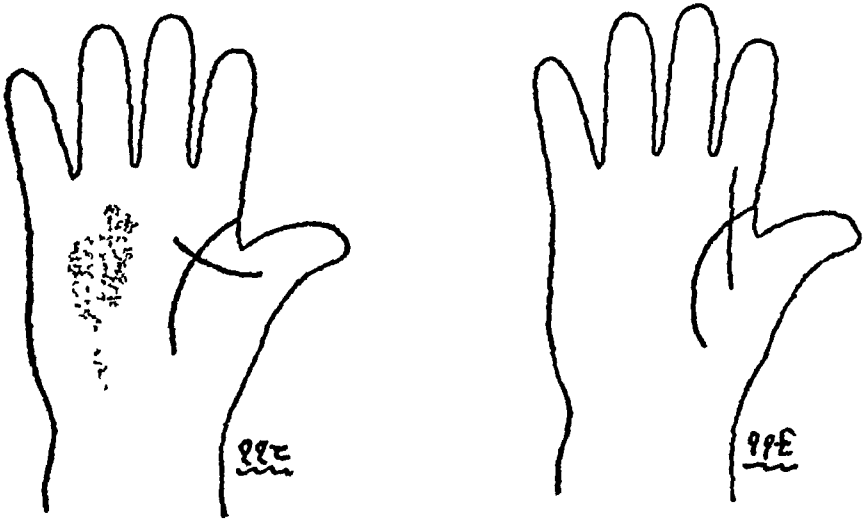
चित्र ११९—यदि शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होकर कोई रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई बृहस्पति के क्षेत्र पर जा पहुचे तो जातक अत्यधिक महत्वाकांक्षी तथा अभिमानी होता है। यदि हाथ के अन्य लक्षण भी अच्छे हों तो वह अत्यधिक उन्नति भी करता है।

चित्र १२०—यदि पूर्वोक्त शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होकर बृहस्पति-क्षेत्र पर पहुचने वाली रेखा के अन्तिम भाग पर अर्थात् बृहस्पति-क्षेत्र पर कोई नक्षत्र-चिन्ह भी हो तो जातक को अपनी महत्वाकाक्षाओ को पूर्ण करने मे अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है।
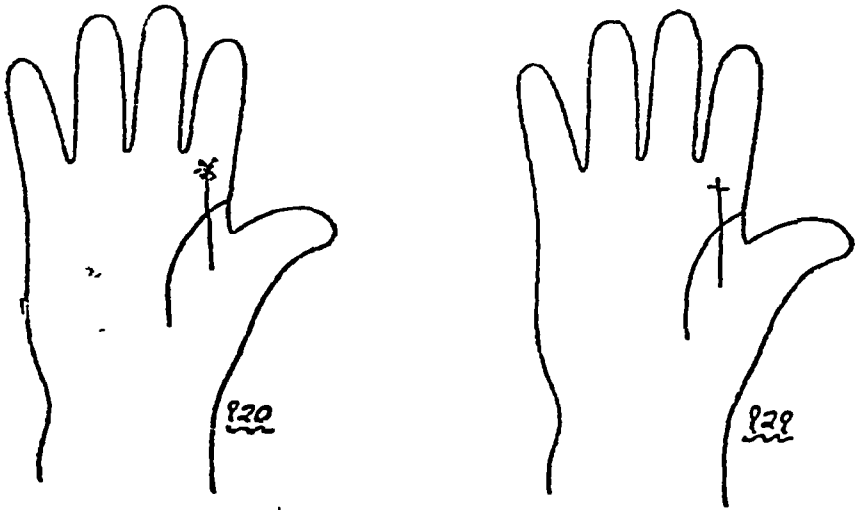
चित्र १२१—यदि पूर्वोक्त शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होकर बृहस्पति-क्षेत्र पर पहुचने वाली रेखा के अन्तिम भाग पर कोई छोटी तथा आड़ी रेखा उसे काट दे तो जातक को जीवन मे असफलता प्राप्त होती है।

चित्र १२२—यदि पूर्वोक्त शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होकर बृहस्पति-क्षेत्र पर पहुचने वाली रेखा के अन्तिम भाग पर कोई क्रास-चिन्ह हो तो जातक को जीवन में दुर्भाग्य एव असफलताओ का सामना करना पड़ता है।

चित्र १२३—यदि शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होने वाली कोई छोटी-सी अर्द्ध वृत्ताकार रेखा जीवन-रेखा को काट दे तो जातक को अकस्मात् ही किसी भयानक रोग, दुर्घटना अथवा मृत्यु का शिकार होना पडता है।

चित्र १२४—शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होकर कोई रेखा जीवन-रेखा को काटने के उपरान्त भाग्य-रेखा के समानान्तर चले तो उसे भाग्य-रेखा की सहायिका रेखा समझना चाहिए। ऐसी रेखा जातक की भाग्य-वृद्धि और उसे मित्रों तथा सम्बन्धियों द्वारा सहयोग प्राप्त होने की सूचक होती है।

चित्र १२५—यदि शुक्र-क्षेत्र पर जीवन-रेखा से आरम्भ होकर कोई रेखा वृहस्पति के क्षेत्र पर पहुचे और वहा से एकदम मुडकर शनि-क्षेत्र पर चली जाए तो ऐसी रेखा वाले जातक की प्रवृत्ति धार्मिकता की ओर होती है, परन्तु उस धार्मिकता मे भी दुनियादारी निहित रहती है।

चित्र १२६—यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर कोई रेखा जीवन-रेखा, भाग्य-रेखा, मस्तक-रेखा तथा सूर्य-रेखाओ को काटती हुई मगल के प्रथम क्षेत्र पर जा पहुचे तो जातक के सिर मे किसी मित्र
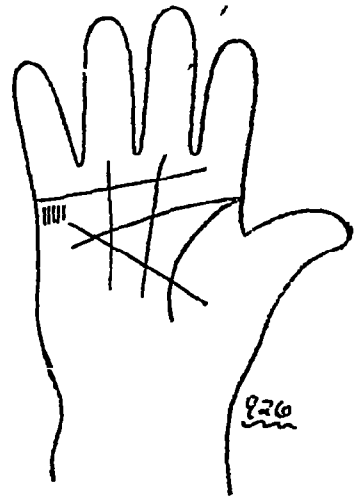
अथवा सम्बन्धी द्वारा चोट पहुचती है। उक्त-रेखा जिस वयोमान मे जीवन-रेखा को काटती हो वही घटना काल समझना चाहिए।

चित्र १२७—यदि पूर्वोक्त प्रकार की शुक्र-क्षेत्र से उत्पन्न प्रभाव-रेखा जीवन, भाग्य, मस्तक तथा सूर्य-रेखाओ को काटती हुई मगल के प्रथम क्षेत्र पर पहुचे और मगल-क्षेत्र पर बहुत-सी रेखाए हो अथवा वह क्षेत्र अत्यन्त ऊचा हो तो उस स्थिति मे जातक क्रोधावेश मे स्वय ही किसी दूसरे के ऊपर घातक प्रहार करता है।

चित्र १२८—यदि शुक्र-क्षेत्र से उत्पन्न कोई सीधी रेखा सूर्य-क्षेत्र पर पहुचे तो जातक को अपने कुटुम्बियो अथवा मित्रो की सहायता द्वारा यश तथा सम्मान की प्राप्ति होती है।
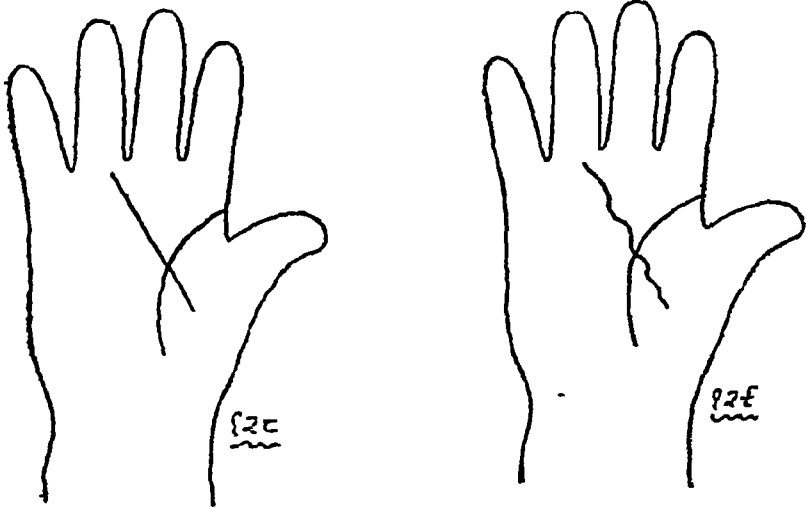
चित्र १२९—यदि शुक्र-क्षेत्र से निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर पहुचने वाली रेखा लहरदार हो तो जातक को अपने मित्रो तथा भाई-बन्धुओ की सहायता मिलने पर भी यश अथवा सफलता की प्राप्ति नही होती।

चित्र १३०—यदि शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होकर कोई सीधी तथा स्पष्ट रेखा बुध-क्षेत्र पर पहुचे तो जातक को अपने सम्बन्धियों तथा इष्ट-मित्रो की सहायता द्वारा व्यवसाय अथवा विज्ञान के क्षेत्र मे अत्यधिक उन्नति, लाभ एवं सफलता प्राप्त होती है।
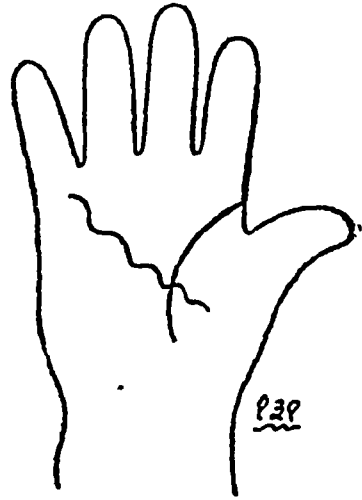
चित्र १३१—यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर बुध-क्षेत्र पर पहुंचने वाली पूर्वोक्त रेखा लहरदार, अस्पष्ट अथवा टूटी हुई हो तो जातक को विज्ञान अथवा व्यवसाय के क्षेत्र मे इष्ट-मित्रो की सहायता होते हुए भी असफलता प्राप्त होती है।

चित्र १३२—यदि शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होकर कोई रेखा जीवन-रेखा तथा भाग्य-रेखा को काटने के वाद कुछ आगे जाकर ठहर जाए, तो मित्र अथवा सम्बन्धियो के अनुचित हस्तक्षेप के कारण जातक के व्यवसाय, नौकरी अथवा आर्थिक लाभ के अन्य क्षेत्रो मे बाधा उपस्थित होती है।

चित्र १३३—यदि शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होकर कोई रेखा जीवन-रेखा तथा मस्तक-रेखा को काटने के उपरान्त ठहर जाय, तो जातक को सम्बन्धियो के हस्तक्षेप अथवा मस्तिष्क-विकार के कारण परेशानियो तथा कष्टो का सामना करना पड़ता है।

चित्र १३४—यदि शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होने वाली रेखा जीवन-रेखा, मस्तक-रेखा तथा हृदय-रेखा को काटकर ठहर जाए तो जातक को अपने मित्रो अथवा सम्बन्धियो के विश्वासघात अथवा अनुचित व्यवहार के कारण हृदय-रोग हो जाता है।

चित्र १३५—जीवन-रेखा के उद्गम स्थान के समीप, परन्तु जीवन-रेखा के भीतर मगल के द्वितीय-क्षेत्र तथा शुक्र-क्षेत्र के समीप से आरम्भ होकर कोई प्रभाव-रेखा आगे बढकर भाग्य-रेखा को काट दे, तो जातक को बाल्यावस्था मे माता-पिता की धन-हानि अथवा अप्रतिष्ठा के कारण दु:खी जीवन व्यतीत करना पड़ता है।
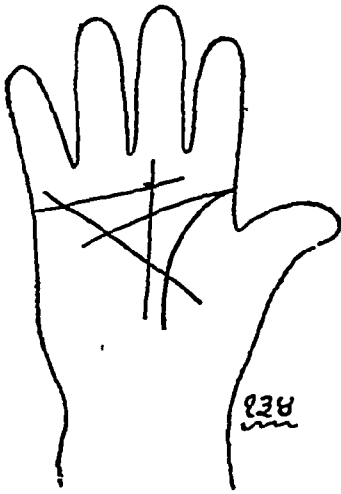
चित्र १३६—यदि शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होकर कोई प्रभाव-रेखा सूर्य-रेखा को काट दे तो जातक को अपने सम्बन्धियो के हस्तक्षेप के
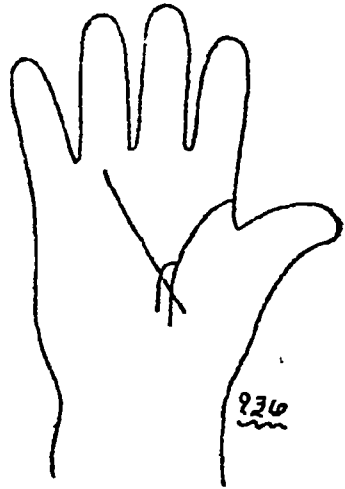
कारण जीवन में असफलता प्राप्त होती है। यदि हाथ मे अन्य लक्षण शुभ हो तो जिस वयोमान मे उक्त प्रभाव-रेखा द्वारा सूर्य-रेखा काटी गई हो, उस आयु-वर्ष मे जातक को मानहानि एवं अपयश का शिकार बनना पड़ता है।

चित्र १३७—यदि शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होने वाली पूर्वोक्त प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा से निकली हुई किसी ऊर्ध्वगामी शाखा-रेखा को काटती हुई सूर्य-रेखा पर जाकर समाप्त हो जाय तो जातक अपने किसी सम्बन्धी से मुकद्दमा जीतकर सफलता प्राप्त करता है।

चित्र १३८—यदि सूर्य-क्षेत्र से आरम्भ होने वाली पूर्वोक्त प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा से निकली हुई किसी ऊर्ध्वगामी शाखा-रेखा को
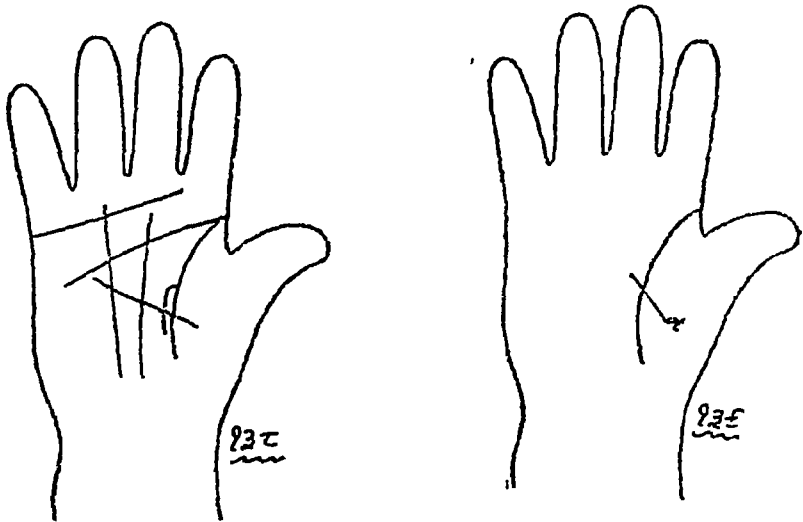
काटती हुई सूर्य-रेखा को भी काटकर आगे निकल जाए तो जातक अपने किसी सम्बन्धी से मुकदमा हार जाता है।

चित्र १३९—यदि शुक्र-क्षेत्र पर कोई नक्षत्र-चिन्ह हो और वहां से आरम्भ होने वाली कोई प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई कुछ आगे जाकर समाप्त हो जाए, तो जिस वयोमान मे उक्त रेखा जीवन-रेखा को काटेगी, उस आयु-वर्ष मे जातक के किसी सम्वन्धी की मृत्यु हो जाएगी।

चित्र १४०—यदि शुक्र-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिन्ह और उससे आरम्भ होने वाली कोई प्रभाव-रेखा सूर्य-क्षेत्र पर पहुचे तो जातक के किसी सम्वन्धी अथवा मित्र की मृत्यु के पश्चात् मुकद्दमेबाजी अथवा झगड़ा होता है, जिसके फलस्वरूप उसे बहुत हानि उठानी पडती है।
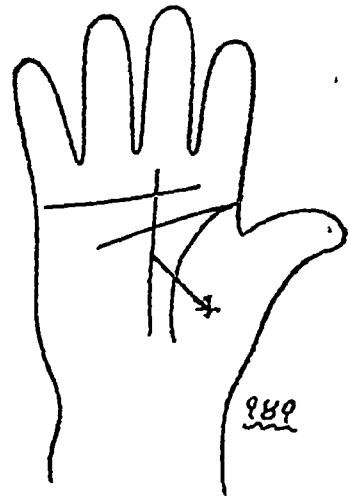
चित्र १४१—यदि शुक्र-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिन्ह हो और उससे आरम्भ होने वाली कोई प्रभाव-रेखा भाग्य-रेखा से जा मिले तो जातक के किसी सम्वन्धी अथवा मृत्यु के पश्चात् झगड़ा अथवा मुकद्दमेबाजी तो होती है, परन्तु उसके फलस्वरूप बरबादी न होकर जातक की भाग्य-वृद्धि होती है।

चित्र १४२—यदि पूर्वोक्त प्रकार की शुक्र-क्षेत्रस्थ नक्षत्र-चिन्ह से आरम्भ हुई प्रभाव-रेखा भाग्य-रेखा को काट दे तो किसी सम्बन्धी अथवा मित्र को मृत्यु के कारण जातक के भाग्य को बहुत हानि पहुंचती है।

चित्र १४३—यदि शुक्र-क्षेत्रस्थ नक्षत्र-चिन्ह से आरम्भ हुई कोई प्रभाव-रेखा सूर्य-रेखा मे जाकर मिल जाए तो किसी मित्र अथवा सम्बन्धी की मृत्यु के कारण जातक के भाग्य की वृद्धि होती है।

चित्र १४४—यदि शुक्र-क्षेत्रस्थ नक्षत्र-चिन्ह से आरम्भ होने वाली कोई प्रभाव-रेखा सूर्य-रेखा को काट दे तो किसी मित्र अथवा सम्बन्धी की मृत्यु के कारण जातक के भाग्य की हानि होती है।

चित्र १४५—यदि शुक्र-क्षेत्रस्थ नक्षत्र-चिन्ह से आरम्भ होने वाली कोई प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को तथा जीवन-रेखा से आरम्भ होने वाली किसी छोटी-सी ऊर्ध्वगामी शाखा रेखा को भी काट दे तो

जातक को अपने किसी मित्र अथवा सम्बन्धी की मृत्यु के पश्चात् उसके उत्तराधिकार के सम्बन्ध में मुकदमेबाजी करनी पड़ती है।

चित्र १४६—यदि पूर्वोक्त शुक्र-क्षेत्रस्थ नक्षत्र-चिन्ह से आरम्भ
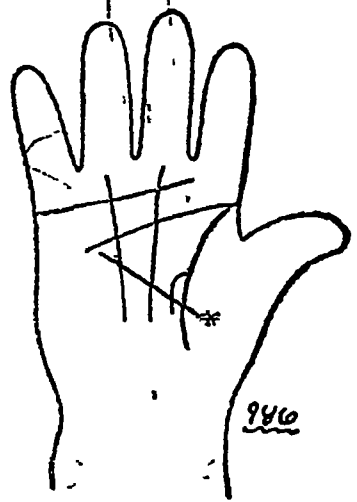
होकर जीवन-रेखा तथा जीवन-रेखा से आरम्भ होने वाली किसी छोटी-सी ऊर्ध्वगामी शाखा-रेखा को भी काटकर आगे बढने वाली प्रभाव-रेखा सूर्य-रेखा मे जाकर विलीन हो जाए तो जातक को अपने किसी मित्र अथवा सम्बन्धी की मृत्यु के बाद मुकद्दमेबाजी करके विरासत मे धन अथवा जायदाद की प्राप्ति होती है।

चित्र १४७—यदि पूर्वोक्त शुक्र-क्षेत्रस्थ नक्षत्र-चिन्ह से आरम्भ होकर जीवन-रेखा तथा जीवन-रेखा से आरम्भ होने वाली किसी छोटी-सी ऊर्ध्वगामी शाखा रेखा को काटकर आगे बढने वाली प्रभाव-रेखा सूर्य-रेखा को भी काट दे तो जातक को अपने किसी सम्बन्धी अथवा मित्र की मृत्यु के उपरान्त मुकद्दमेबाजी में हार खानी पडती है।

चित्र १४८—यदि शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होने वाली कोई प्रभाव-रेखा बृहस्पति के क्षेत्र पर गई हो और रेखा के अन्त मे कोई नक्षत्र-चिन्ह भी हो तो जातक की महत्वाकांक्षाए सफल होती है।
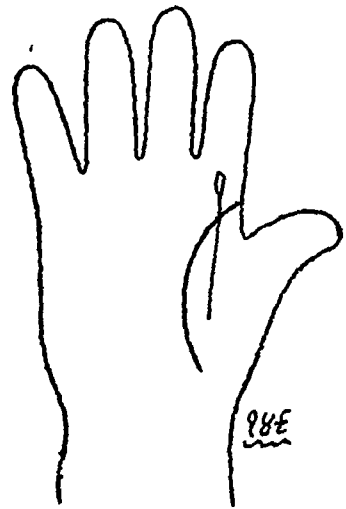
चित्र १४९—यदि शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होने वाली को प्रभाव-रेखा

वृहस्पति के क्षेत्र पर गई हो और रेखा के अन्त मे कोई द्वीप-चिन्ह हो तो जातक को फेफडो से सम्वन्धित कोई रोग होता है ।

चित्र १५०—यदि शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होने वाली कोई प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा तथा भाग्य-रेखा को काटती हुई आगे बढ जाए, परन्तु स्वास्थ्य-रेखा तक न पहुचे और उस रेखा के अन्त मे नक्षत्र-चिन्ह भी हो तो जातक को धन-सम्वन्धी किसी बडी हानि का शिकार होना पड़ता है।

चित्र १५१—यदि शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ हुई कोई प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई मस्तक-रेखा पर पहुचकर समाप्त हो जाय तथा उस स्थान पर कोई नक्षत्र-चिन्ह भी हो तो जातक को अपने मित्रो अथवा सम्वन्धियों के कारण चिन्ता तथा मस्तिष्क सम्वन्धी परेशानिया एव मस्तिष्क-विकृति आदि का शिकार होना पड़ता है ।

चित्र १५२—यदि शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होने वाली प्रभाव-रेखा हृदय-रेखा पर पहुंचकर समाप्त हो और वहीं पर कोई नक्षत्र-चिन्ह भी हो तो जातक को अपने सम्बन्धियों अथवा मित्रो द्वारा इतना परेशान किया जाता है कि उसे हृदय-रोग हो जाता है।

१५२

१५३
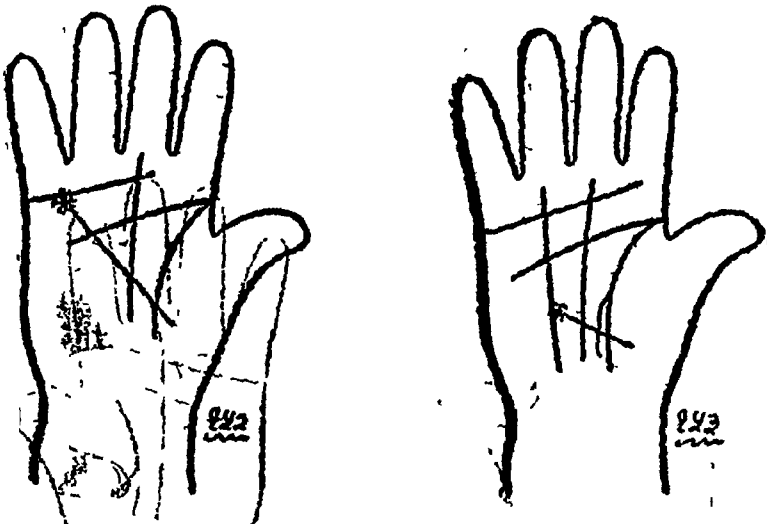
चित्र १५३—यदि शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होने वाली प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा तथा उससे निकली हुई किसी छोटी-सी ऊर्ध्वगामी शाखा रेखा को काटती हुई सूर्य-रेखा पर पहुंचकर समाप्त हो जाए तथा उस स्थान पर नक्षत्र-चिन्ह भी हो तो जातक को किसी मुकद्दमे मे हार जाने पर अत्यधिक अपयश एवं असम्मान का शिकार होना पड़ता है।

चित्र १५४—यदि शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होने वाली कोई प्रभाव-रेखा उस स्थान पर पहुचकर समाप्त हो, जहां कि मस्तक-रेखा तथा सूर्य-रेखा का योग होता हो और उसी स्थान पर कोई 'दाग-चिन्ह' भी हो

तो जातक को अपने मित्रों अथवा सम्बन्धियों द्वारा इतना अधिक परेशान किया जाता है कि उसे हृदय-रोग हो जाता है।
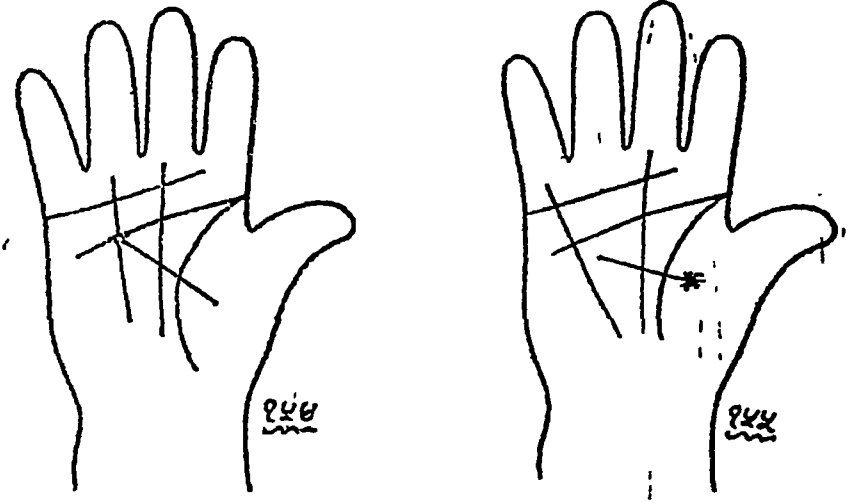
चित्र १५५—यदि शुक्र-क्षेत्रस्थ नक्षत्र-चिन्ह से आरम्भ होने वाली कोई प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काटकर आगे बढ़े, परन्तु स्वास्थ्य-रेखा तक पहुंचने के पूर्व ही समाप्त हो जाए और उस समाप्ति स्थान पर भी एक नक्षत्र-चिन्ह हो ता जातक के किसी मित्र अथवा सम्बन्धी की मृत्यु के कारण धन का नाश होता है।

चित्र १५६—यदि शुक्र-क्षेत्रस्थ नक्षत्र-चिन्ह से आरम्भ होने वाली कोई प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई भाग्य-रेखा पर पहुचकर समाप्त हो जाए और उस समाप्ति-स्थल पर कोई बिन्दु-चिन्ह भी हो तो किसी सम्बन्धी की मृत्यु के कारण कुछ समय के लिए जातक के भाग्य को गहरा धक्का लगता है।

चित्र १५७—यदि शुक्र-क्षेत्रस्थ नक्षत्र-चिन्ह से आरम्भ होने वाली कोई प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई मस्तक-रेखा पर समाप्त हो
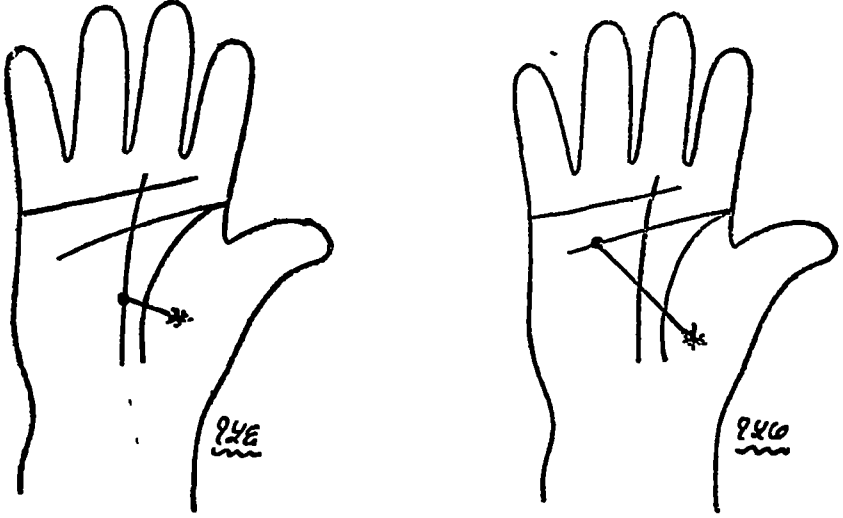
जाए और उस समाप्ति-स्थल पर कोई बिन्दु-चिन्ह भी हो तो जातक को अपने किसी सम्बन्धी की मृत्यु के कारण घोर दु.ख एव कष्ट उठाना पडता है।

चित्र १५८—यदि पूर्वोक्त शुक्र-क्षेत्रस्थ नक्षत्र-चिन्ह से आरम्भ होने वाली कोई प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई मस्तक-रेखा पर समाप्त हो और उस स्थान पर भी कोई नक्षत्र-चिन्ह हो तो जातक को अपने किसी सम्बन्धी की मृत्यु के कारण रक्तचाप, मस्तिष्क-विकार अथवा पागलपन का दौरा हो जाता है और उसी के कारण उसकी मृत्यु भी होती है।
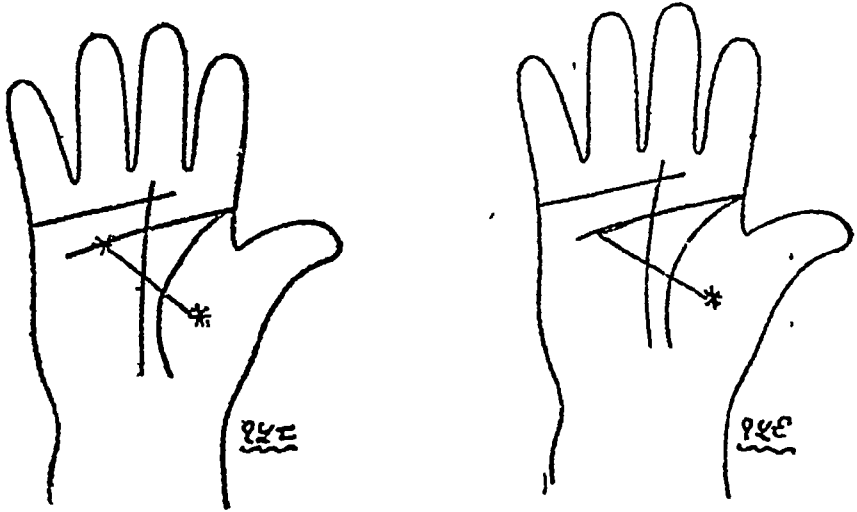
चित्र १५९—यदि शुक्र-क्षेत्रस्थ नक्षत्र-चिन्ह से आरम्भ होने वाली प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई मस्तक-रेखा पर समाप्त हो और उसके समाप्ति-स्थान पर मस्तक-रेखा द्वीप-चिन्ह युक्त हो तो जातक के किसी सम्बन्धी की राजयक्ष्मा अथवा मस्तिष्क-विकार के कारण मृत्यु होती है।

चित्र १६०—शुक्र-क्षेत्रस्थ नक्षत्र-चिन्ह से आरम्भ होने वाली प्रभाव-रेखा भाग्य-रेखा पर पहुंचकर समाप्त हो तथा उस स्थान पर भी कोई नक्षत्र-चिन्ह हो तो अपने किसी मित्र अथवा सम्बन्धी की मृत्यु के कारण जातक के भाग्य को गहरा धक्का लगता है। जिस वयोमान मे प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को काट रही हो, उस आयु-वर्ष मे ऐसी घटना घटेगी—यह समझना चाहिए।

चित्र १६१—यदि शुक्र-क्षेत्रस्थ नक्षत्र-चिन्ह से आरम्भ होने वाली
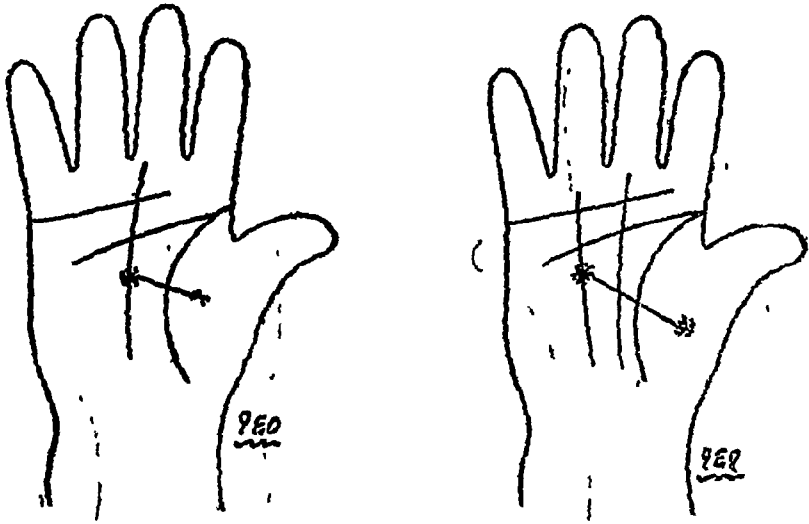
प्रभाव-रेखा सूर्य-रेखा पर पहुंचकर समाप्त हो तथा उस स्थान पर भी कोई नक्षत्र-चिन्ह हो तो जातक को अपने किसी सम्बन्धी की मृत्यु के कारण गहरी आर्थिक हानि उठानी पड़ती है।

चित्र १६२—यदि शुक्र-क्षेत्रस्थ नक्षत्र-चिन्ह से आरम्भ होने वाली प्रभाव-रेखा सूर्य-रेखा पर समाप्त होती हो तथा उसी स्थान पर सूर्य-रेखा द्वीप-युक्त भी हो तो जातक को किसी सम्बन्धी की मृत्यु के कारण गहरी आर्थिक हानि पहुंचने का पूर्वोक्त ही फल प्राप्त होता है।

चित्र १६३—यदि प्रभाव-रेखा शुक्र-क्षेत्रस्थ जीवन-रेखा से आरम्भ हो, उसके उद्गम-स्थान पर जीवन-रेखा पर बिन्दु-चिन्ह हो और प्रभाव-रेखा तिरछी निकलकर मस्तक-रेखा को काटती हुई मंगल के प्रथम-क्षेत्र पर समाप्त हो तथा समाप्ति-स्थल पर एक नक्षत्र-चिन्ह भी हो तो जातक को खूनी बवासीर रोग का शिकार होना पड़ता है।
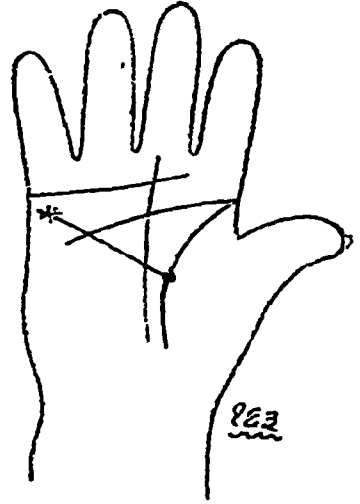
चित्र १६४—यदि शुक्र-क्षेत्रस्थ नक्षत्र-चिन्ह से आरम्भ होने वाली कोई प्रभाव-रेखा चन्द्र-क्षेत्र पर पहुंचे और उसके अन्तिम भाग पर भी
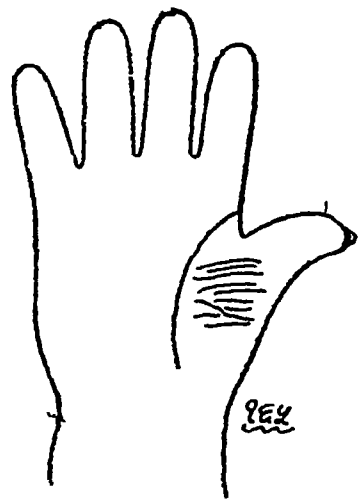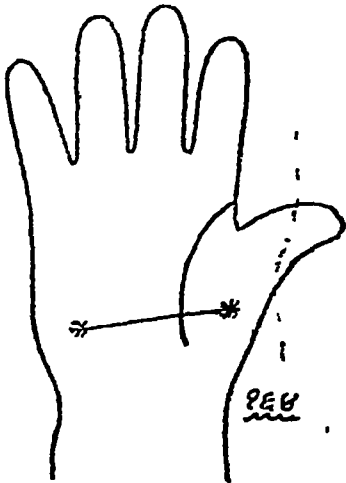
नक्षत्र-चिन्ह हो तो किसी सम्बन्धी की मृत्यु के कारण जातक के दिमाग को इतना आघात पहुंचता है कि वह पागल हो जाता है।

चित्र १६५—यदि शुक्र-क्षेत्र पर आडी-टेढी बहुत-सी रेखाए हों तो ऐसी रेखाओ वाला जातक विषयी, विलासी, सुखाभिलाषी, चचल तथा अनेक प्रकार के विकारो से युक्त होता है।

चित्र १६६—शुक्र-पर्वत के ऊपर सर्वत्र अनेक आडी-टेढी तथा गहरी रेखाए हो और उनके कारण लम्बा-चौडा जाल चिन्ह-सा दिखाई देता हो तथा सूर्य-क्षेत्र भी उन्नत और सुन्दर हो तो ऐसा जातक श्रेष्ठ सगीतज्ञ अथवा अभिनेता होता है और सर्वत्र सम्मान तथा यश प्राप्त करता है।
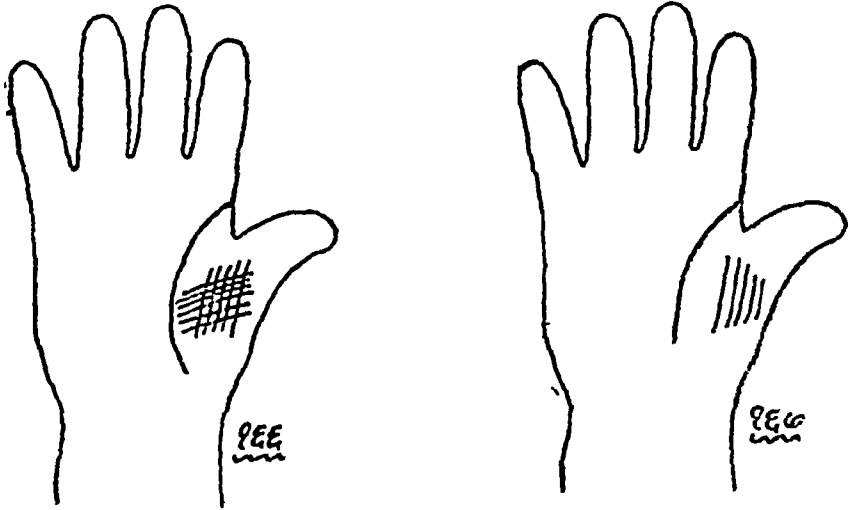
चित्र १६७—शुक्र-पर्वत पर गहरी रेखाएं होने से जातक की स्मरण शक्ति उत्तम होती है। हाथ अन्य लक्षणो तथा मस्तक-रेखा की स्थिति से भी इनका मिलान कर लेना चाहिए।

चित्र १६८—शुक्र-पर्वत पर दो अथवा तीन मोटी रेखाए दिखाई दें तो ऐसी रेखा वाला जातक कृतघ्न स्वभाव का होता है। रेखाओ की स्थिति को देखकर उनके अन्य प्रभाव का विश्लेषण करना चहिए।
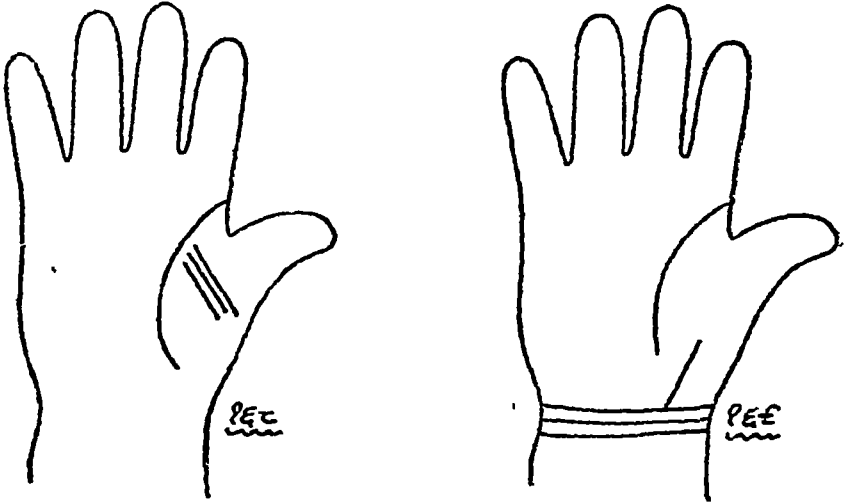
चित्र १६९—यदि शुक्र-क्षेत्र से एक रेखा निकलकर मणिबन्ध से जा मिले तो जातक को सन्तान एव सम्पत्ति का उत्तम सुख प्राप्त होता है। मणिबन्ध रेखाओ प्रकरण मे इस प्रकार को रेखाओ का वर्णन विस्तार पूर्वक किया जा चुका है।

चित्र १७०—यदि शुक्र-पर्वत से उत्पन्न एक रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई बृहस्पति के क्षेत्र पर जा पहुचे तो ऐसी रेखा वाला व्यक्ति उदार, कर्मशील तथा देवताओ पर श्रद्धा रखने वाला होता है।

चित्र १७१—यदि शुक्र-पर्वत से एक टेढ़ी रेखा निकलकर हथेली

के मध्य भाग मे जाकर समाप्त हुई हो तो ऐसी रेखा वाला जातक श्वास रोग से पीड़ित होता है।

चित्र १७२—यदि शुक्र-पर्वत पर अनेक छोटी-छोटी रेखाए हों तो ऐसी रेखाओ वाला जातक वहुत समय तक स्वतन्त्र जीवन व्यतीत

नही कर पाता अर्थात् पराधीन बना रहता है। रेखाओं के अन्य प्रभाव का विश्लेषण उनकी स्थिति देखकर करना चाहिए।

चित्र १७३—यदि शुक्र-क्षेत्रस्थ नक्षत्र-चिन्ह से कोई प्रभाव-रेखा आयु-रेखा को काटती हुई आगे जाकर समाप्त हो गई हो तो जातक को अपने किसी समीप के रिश्ते के किसी माता, पिता, भाई, चाचा आदि प्रियजन की मृत्यु का दुःख सहन करना पडता है।

चित्र १७४—यदि शुक्र-क्षेत्र से निकलने वाली किसी प्रभाव-रेखा के ऊपर नक्षत्र-चिन्ह हो तो किसी सम्बन्धी अथवा सन्तान की मृत्यु होती है। यदि नक्षत्र-चिन्ह रेखा के बीच मे हो तो जातक रोग एवं चिन्ताओं से घिरा रहता है और उसकी मृत्यु तक हो जाने की सम्भावना रहती है।

१७४

१७५
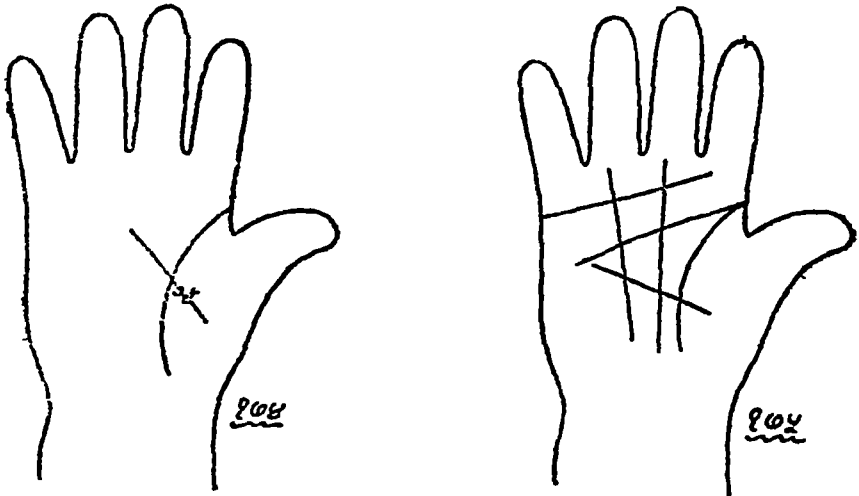
चित्र १७५—यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रभाव-रेखा निकलकर जीवन-रेखा, भाग्य-रेखा तथा सूर्य-रेखा को भी काट दे तो जातक की ख्याति इतनी

अधिक वढ जाती हे कि शत्रु लोग उसे सहन नही कर पाते और जातक की हत्या तक कर डालते हैं—ऐसा कुछ विद्वानो का मत है।

चित्र १७६—यदि पूर्वोक्त प्रकार की शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होकर जीवन-रेखा, भाग्य-रेखा तथा सूर्य-रेखा को काटने वाली प्रभाव-रेखा के उद्गम-स्थान पर स्वस्तिक चिन्ह भी हो, तो ऐसा जातक अत्यन्त यशस्वी, उच्चकोटि का व्यवसायी तथा कवित्व शक्ति सम्पन्न होता है और उसकी प्राणरक्षा भी हो जाती है।
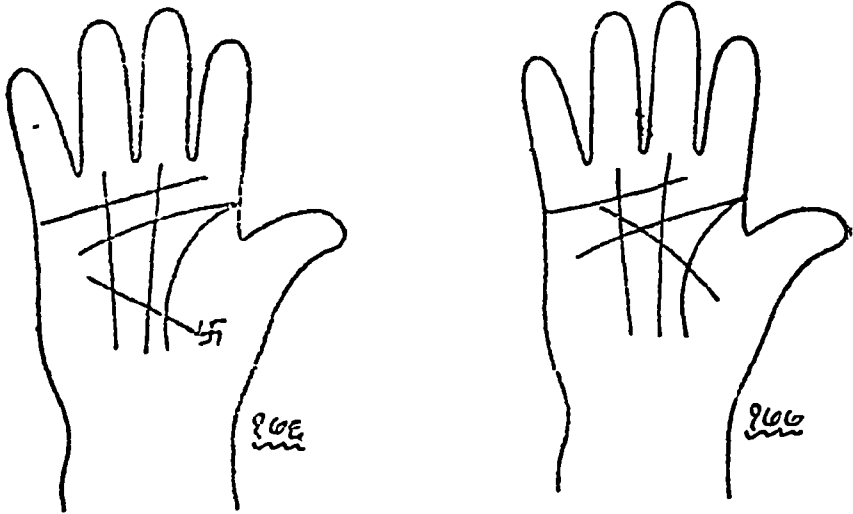
चित्र १७७—यदि शुक्र-क्षेत्र के ऊपरी भाग से निकली हुई एक रेखा भाग्य-रेखा तथा मस्तक-रेखा पर त्रिकोण वनाती हुई सूर्य-रेखा को काटे तथा उसके काटने से सूर्य-रेखा तथा मस्तक-रेखा द्वारा एक छोटा-सा त्रिकोण और वन जाए तो ऐसे जातक को भाग्य-रेखा के कटने के वयोमान पर उन्नति, प्रसिद्धि एव सुख प्राप्त होता है, परन्तु जिस स्थान पर सूर्य-रेखा तथा मस्तक-रेखा पर त्रिकोण वना हो, उस वयोमान मे भाई-वन्धुओ अथवा विद्या-वुद्धि द्वारा हानि भी अवश्य उठानी पडती

है तथा जीवन-रेखा के कटने के वर्षमान मे उसके किसी सम्बन्धी की मृत्यु हो जाने के कारण घोर चिन्ता तथा कष्टो का सामना भी करना पड़ता है।

चित्र १७८—यदि शुक्र-क्षेत्र से उत्पन्न एक शुद्ध-रेखा जीवन-रेखा तथा मस्तक-रेखा को भेदन करती हुई शनि-क्षेत्र पर पहुचे तथा शनि-क्षेत्र पर पहुचते हुए हृदय-रेखा पर एक कोण बनाए, तो ऐसी रेखा वाला जातक विद्वान्, पराक्रमी, उन्नतिशील तथा विचारवान होता है। जीवन-रेखा के कटने के वयोमान मे उसकी भाग्योन्नति होती है तथा वह अपने लिए घर भी बनाता है।
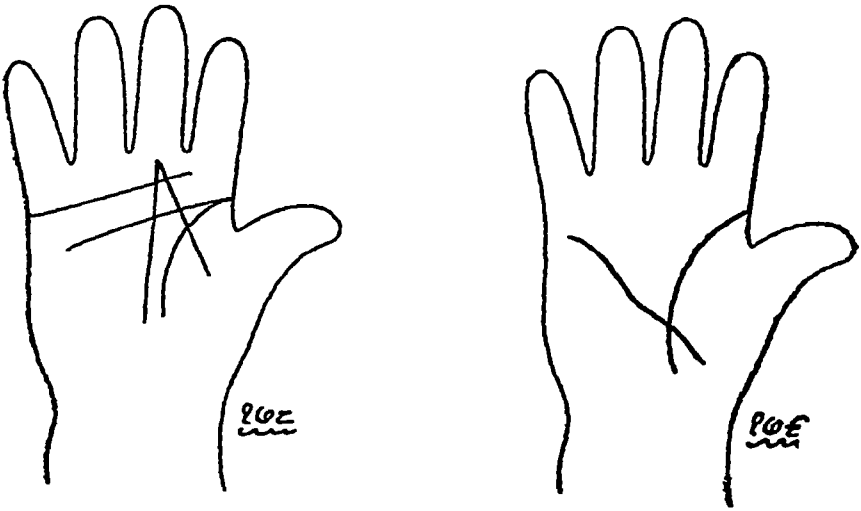
चित्र १७९—यदि शुक्र-क्षेत्र से निकलकर एक टेढी और आडी रेखा चन्द्र-क्षेत्र के निचले भाग पर जाए तो ऐसी रेखा वाला जातक दुराचारी तथा व्यसनी होता है। उसे स्त्री द्वारा कष्ट प्राप्त होता है। जातक यदि स्त्री हो तो पुरुष द्वारा कष्ट प्राप्त होता है। ऐसी रेखा वाले

व्यक्ति को समुद्र-यात्रा मे अत्यधिक व्यय तथा कष्टो का भी सामना करना पड़ता है।

चित्र १८०—उक्त प्रकार की शुक्र-क्षेत्र से निकलकर चन्द्र-क्षेत्र के निचले भाग पर जाने वाली रेखा यदि छिन्न-भिन्न हो तो जातक में पूर्वोक्त लक्षण तो होते ही है, वह समुद्र यात्रा के समय दुखी होकर आत्महत्या भी कर लेता है।
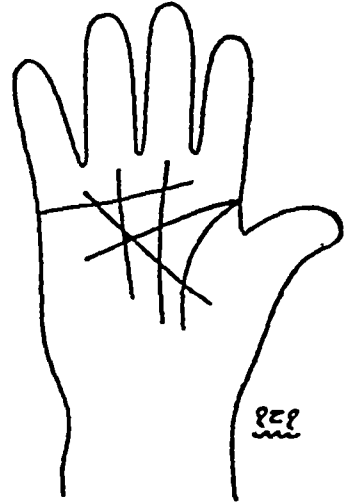
चित्र १८१—यदि शुक्र-क्षेत्र से निकलने वाली कोई रेखा जीवन-रेखा, भाग्य-रेखा, मस्तक-रेखा तथा सूर्य-रेखा को काटती हुई हृदय-रेखा को काट दे तथा अन्य रेखाओ के द्वारा कटने से हथेली पर दो वड़े त्रिकोण-चिन्ह भी बने तो ऐसे चिन्ह वाला जातक शास्त्रज्ञ, राज्य-सम्मानित, धन-धान्य-सम्पन्न, सुखी तथास्त्री-पुत्रादि से युक्त होता है।

चित्र १८२—यदि पूर्वोक्त प्रकार की शुक्र-क्षेत्र से उत्पन्न रेखा हृदय-रेखा को पार करके बुध-क्षेत्र पर पहुच रही हो तो जिस वयो-

मान मे हृदय-रेखा कटी हो उस आयु वर्ष में जातक को किसी दुर्भाग्य-सूचक प्रेम के चक्कर मे पडना पड़ता है।
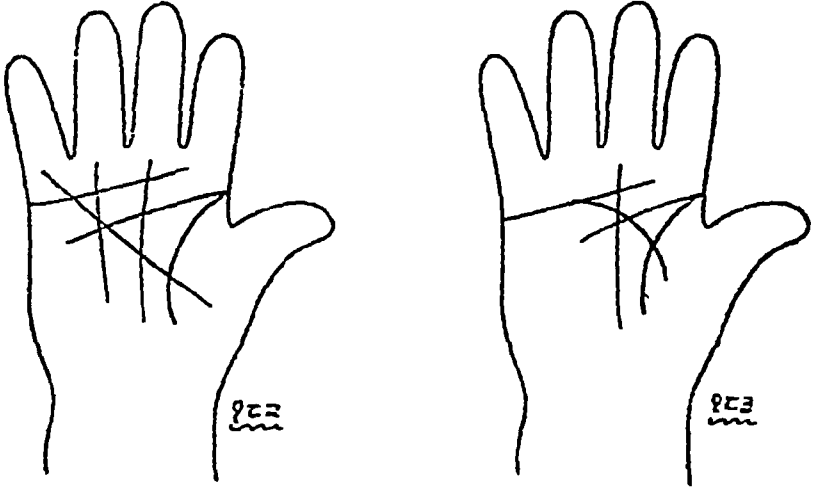
चित्र १८३—यदि शुक्र-क्षेत्र से उत्पन्न एक वड़ी अर्द्ध चद्राकार-रेखा जीवन-रेखा के भीतर भी हो और वाहर से भाग्य-रेखा को काटकर हृदय-रेखा से भी मिल रही हो तो ऐसी रेखा वाला जातक दृढ प्रतिज्ञ, कठोर स्वभाव वाला, पर-स्त्री-प्रेमी तथा गुप्त रोगो से ग्रस्त रहता है।

चित्र १८४—यदि शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होने वाली सीधी तथा स्पष्ट रेखा भाग्य-रेखा मे जा मिले और उसी स्थान पर नक्षत्र-चिन्ह भी हो तो जातक समस्त सुख एव ऐश्वर्यो से युक्त होता है, परन्तु वह वाल्यावस्था मे दुष्टो की सगति से कुकर्मो मे फस जाता है तथा युवावस्था मे किसी पर-स्त्री के प्रेम मे पड़कर अपनी पत्नी से मनमुटाव कर लेता है।

१८४

चित्र १८५—यदि भाग्य-रेखा दो हो और शुक्र-क्षेत्र से निकलने वाली एक रेखा को भाग्य-रेखा काटकर दूसरी भाग्य-रेखा मे जा मिले तो उस जातक की पत्नी (अथवा पति) इतनी गुणवान एव समर्थ होती है कि वह अपने पति (अथवा पत्नी) को व्यभिच र के मार्ग से सदैव के लिए हटाकर अपने दाम्पत्य-जीवन को सुखमय बना लेती है।
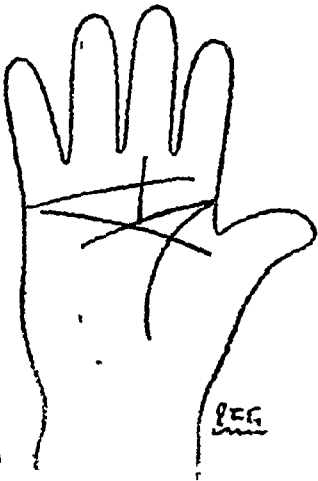
चित्र १८६—यदि शुक्र-क्षेत्र से एक प्रभाव-रेखा निकलकर जीवन-रेखा तथा मस्तक-रेखा को पार करती हुई मगल के प्रथम क्षेत्र पर पहुंचे तो ऐसी रेखा वाला जातक सिविल मरिज (प्रेम-विवाह) करता है।

चित्र १८७—यदि पूर्वोक्त शुक्र-क्षेत्र से निकलकर जीवन-रेखा तथा मस्तक-रेखा को पार करती हुई मगल के प्रथम क्षेत्र पर पहुचने वाली प्रभाव-रेखा अपने अन्तिम भाग मे टेढी हो गई हो तो जातक को सिविल मैरिज के उपरान्त तलाक भी मिल जाता है।

चित्र १८८—यदि शुक्र-क्षेत्र से निकलकर एक शुद्ध एव सरल प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा तथा मस्तक-रेखा को पार करती हुई मगल के प्रथम क्षेत्र पर पहुचे और भाग्य-रेखा मस्तक-रेखा के ऊपर मे जा रही हो तो ऐसा जातक अपने जीवन के छत्तीसवे वर्ष से सुखी जीवन व्यतीत करता है, परन्तु जीवन-रेखा के कटने के वयोमान मे उसे किसी दुर्घटना का सामना भी करना पडता है।

१८८

१८९
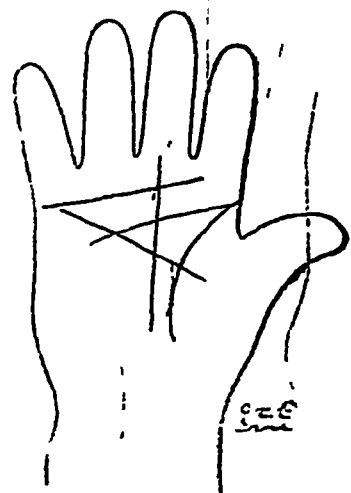
चित्र १८९—यदि शुक्र-क्षेत्र से निकली हुई प्रभाव-रेखा, जीवन-रेखा, भाग्य-रेखा तथा मस्तक-रेखा को काटती हुई मगल के प्रथम क्षेत्र पर पहुचे तो ऐसी रेखा वाला जातक अपने दुष्ट मित्रो की सलाह पर अपनी सम्पत्ति को नीच कर्मो मे नष्ट कर देता है। ऐसी रेखा वाले व्यक्ति हृदय के सरल होते है और वे दूसरो के बहकावे मे शीघ्र आ जाते हैं।

चित्र १९०—यदि शुक्र-क्षेत्र से निकली हुई प्रभाव-रेखा शनि-क्षेत्र पर पहुच कर द्विजिह्व हो जाय तो ऐसा जातक चिन्ताओ एव दरिद्रता से घिरा रहता है। उसका विवाह भी दुर्भाग्यपूर्ण होता है, परन्तु उक्त-रेखा जिस वयोमान मे जीवन-रेखा को काटती है, उस आयु वर्ष से जातक की आर्थिक स्थिति मे सुधार आरम्भ हो जाता है और उसे प्रसन्नता भी प्राप्ति होती है।
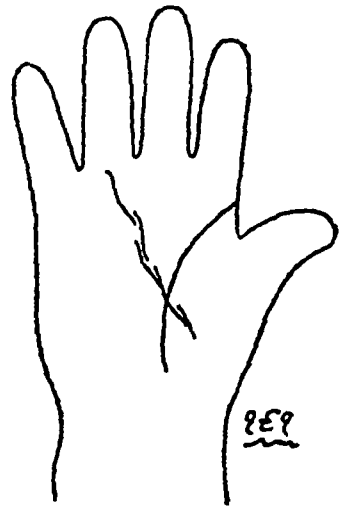
चित्र १९१—यदि शुक्र-क्षेत्र से आरम्भ होकर कोई लहरदार, टेढी

ग्रौर छिन्न-भिन्न रेखा सूर्य-रेखा पर पहुचे तो जातक को क्लेश, चिन्ता, मान-हानि एव विपत्तियो का सामना करना पड़ता है।

चित्र १९२—यदि पूर्वोक्त शुक्र-क्षेत्र से ग्रारम्भ होने वाली प्राभाविक-रेखा द्वीप-चिन्ह युक्त हो तो ऐसा जातक दुराचारी तथा रोग-ग्रस्त होता है, जिसके कारण उसके विवाह-सम्बन्ध में भी बाधा पडती है।

चित्र १९३-यदि शुक्र-क्षेत्र से एक सीधी, स्पष्ट तथा निर्दोष प्रभाव-रेखा निकलकर प्रभाव-क्षेत्र पर पहुचे तो ऐसी रेखा वाला जातक देश विदेश मे भ्रमण करके धन तथा यश ग्रर्जित करता है।

चित्र १९४—यदि शुक्र-क्षेत्र से निकली हुई प्राभाविक-रेखा भाग्य-रेखा मे जा मिले तथा उसी स्थान पर एक द्वीप-चिन्ह भी हो तो ऐसा जातक ग्रपनी प्रेमिका के लिए ग्रनेक कठिनाइयो तथा मिथ्या लोकाप-वाद एव कलक का दु ख उठाता है। इसी कारण उसका विवाह भी नही हो पाता।
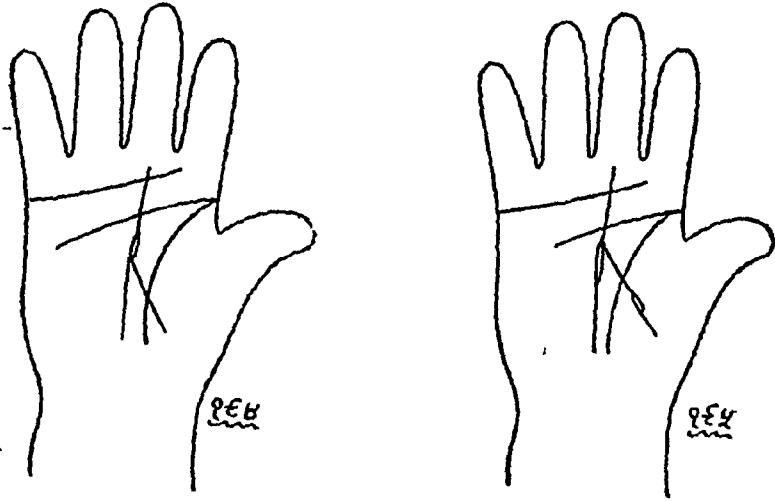
चित्र १६५—यदि शुक्र-क्षेत्र से निकलकर द्वीप चिन्ह युक्त भाग्य-रेखा मे मिलने वाली प्रभाव-रेखा स्वय भी द्वीप-चिन्हयुक्त हो तो ऐसा जातक क्रोधावेश मे या तो किसी का कत्ल कर देता है अथवा स्वय ही आत्महत्या कर डालता है।

चित्र १६६—शुक्र-क्षेत्र से जो टेढी और लहरदार रेखा निकलकर बुध-क्षेत्र पर पहुचती है उसे 'चाप-रेखा' कहा जाता है। अंग्रेजी में इस रेखा को 'Velas Kive Line' कहते है। यह रेखा जिस व्यक्ति के हाथ मे हो, वह राजद्रोही, पर-स्त्री-हरण करने वाला, डाकू, हत्यारा तथा अन्य भयकर कुकृत्यो को करने वाला होता है।

चित्र १६७—यदि शुक्र-क्षेत्र पर भाई-बहन रेखाओ के समीप वाले स्थान पर एक छोटी-सी 'कानन-रेखा' हो तो वह पुरुष धनी, बुद्धिमान्, परोपकारी, सत्यवादी, साहित्यकार, यशस्वी तथा सर्वप्रिय होता है,
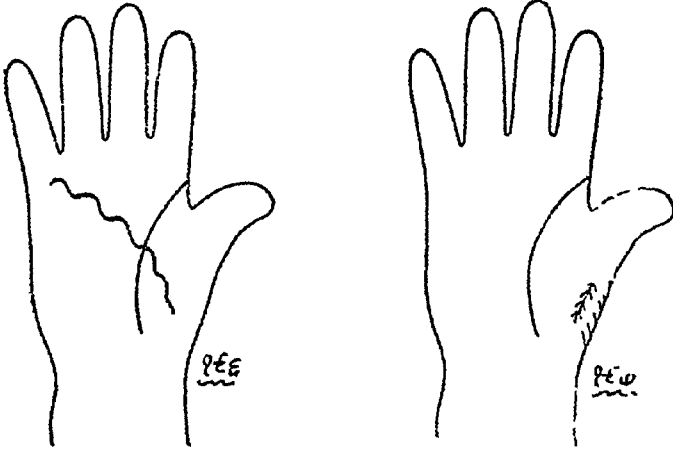
परन्तु यदि किसी स्त्री के हाथ मे ऐसी रेखा हो तो वह लोभिन तथा कठोर स्वभाव की होती है।

चित्र १९८-यदि शुक्र-क्षेत्र,पर पूर्वोक्त कानन-रेखा के समीप हो एक
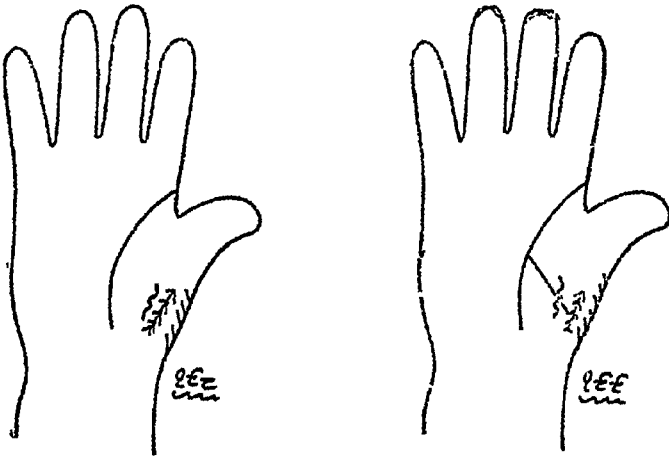
छोटी-सो सर्पाकार रेखा भी हो तो ऐसी रेखाओं वाले स्त्री-पुरुष अप-मृत्यु के शिकार होते है।

चित्र १९९—यदि पूर्वोक्त कानन-रेखा के समीप वाली छोटी-सी सर्पाकार रेखा को जीवन-रेखा से आरम्भ होकर शुक्र-क्षेत्र पर आने वाली एक अन्य प्रभाव-रेखा द्वारा काट दिया जाय तो ऐसे चिन्ह वाले जातक का विवाहित-जीवन सुखमय व्यतीत नही होता। यदि पुरुष हुआ तो वह किसी दूसरी स्त्री से सम्बन्ध कर लेता है और स्त्री हुई तो वह अपने पति को छोड़कर किसी अन्य पुरुष के साथ विवाह कर लेती है।

चित्र २००—यदि अंगूठे के पहले पर्व से निकलकर एक रेखा जीवन-रेखा को काट दे तो ऐसी रेखा वाले जातक के किसी मित्र अथवा आत्मीय की मृत्यु हो जाती है, जिसके कारण उसे अत्यन्त चिन्तित तथा दु खी होना पड़ता है।

चित्र २०१–यदि शुक्र-क्षेत्र के ऊपरी भाग से निकली हुई प्रभाव-रेखा अपने प्रारम्भ तथा अन्त में टेढी होकर मोटी जीवन-रेखा को काट रही हो तो ऐसी रेखा वाला जातक शकालु, क्रोधी, विवादी तथा लोभी होता है। वह अपने बन्धु-बान्धवो के साथ मुकद्दमा लडता है तथा उसके मित्र लोग ही उसकी चल तथा अचल सम्पत्ति को अत्यधिक हानि पहुचाने वाले सिद्ध होते हैं। ऐसे जातक को स्त्री तथा माता-पिता का सुख भी कम ही मिल पाता है।

चित्र २०२—यदि शुक्र-क्षेत्र से निकलने वाली रेखाओ द्वारा मस्तक-रेखा तथा भाग्य-रेखा पर 'डमरू' जैसा चिन्ह बने तो ऐसे चिन्ह वाला जातक विद्वान्, विचारक, वैज्ञानिक, यशस्वी, दृढप्रतिज्ञ, योग्य, स्त्री-प्रिय, यात्रा-प्रेमी, कुशल व्यवसायी, धन-सचयी गणितज्ञ तथा सर्वप्रिय होता है।

चित्र २०३—यदि अंगुष्ठमूल की आडी रेखा तीन रेखाओ से कट रही हो तो ऐसा व्यक्ति उच्च कुलीन, सौन्दर्य प्रिय, अनेक मित्रो तथा प्रेमिकाओ वाला, बहु-कुटुम्बी, सगीतज्ञ, कामकेलि मे चतुर तथा शासक स्वभाव का होता है। किसी समय उसे अपमानित होकर घर छोडकर विदेश मे भी रहना पडता है, परन्तु वह आर्थिक दृष्टि से इतना अधिक सम्पन्न होता है कि उसे कभी किसी कठिनाई का सामना नही करना पडता। वह विदेश मे रहकर किसी उद्योग तथा व्यवसाय के लिए भी प्रयत्नशील रहता है।

चित्र २०४—यदि अंगुष्ठमूल मे स्पष्ट तथा सरल चार रेखाए हो तो ऐसा जातक अधिक व्यायाम करने के कारण रोगी हो जाता है। यदि वह किसी के साथ साझेदारी में व्यवसाय करता है, तो हानि उठानी पडती है, परन्तु यदि स्वतन्त्र व्यवसाय करता है, तो बहुत धन कमाता है। ऐसी रेखाओ वाले जातक को उसके बन्धु-बान्धव भी पीडित करते रहते है।
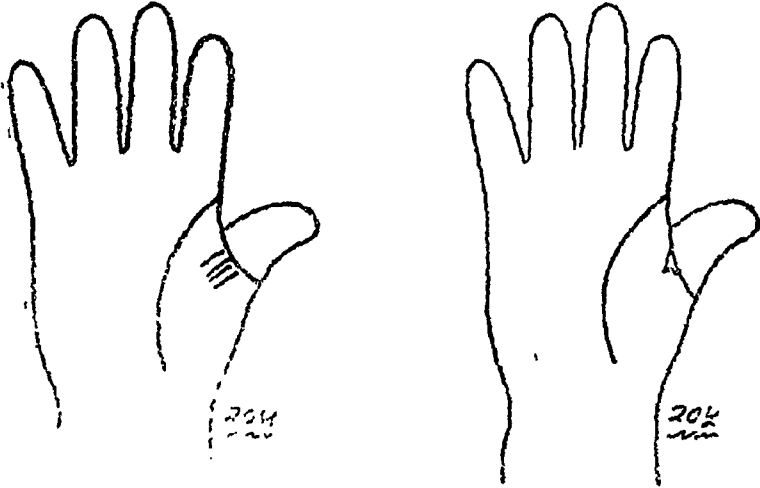
चित्र २०५—यदि अगुष्ठमूल की रेखा मे कोण-चिन्ह हो तो ऐसे चिन्ह वाले जातक को जल, अग्नि, धन एव बन्धु वर्ग तथा पुत्रवर्ग द्वारा की जाने वाली दुर्घटनाओं का सामना करने के कारण आर्थिक तथा सम्मान की हानि उठानी पडती है। ऐसे व्यक्ति स्वभाव के कठोर तथा दुष्ट भी होते है। वे एकाकी जीवन विताना ही पसन्द करते है।

चित्र २०६—तर्जनी उगली के मूल से अगुष्ठ तक के स्थान को 'त्रिवेणी' कहा जाता है। इस त्रिवेणी-क्षेत्र पर यदि दो लम्बी रेखाए हों तो पहली रेखा को पितृ-वियोग एव दूसरी रेखा को मातृ-वियोग की सूचक समझना चाहिए।
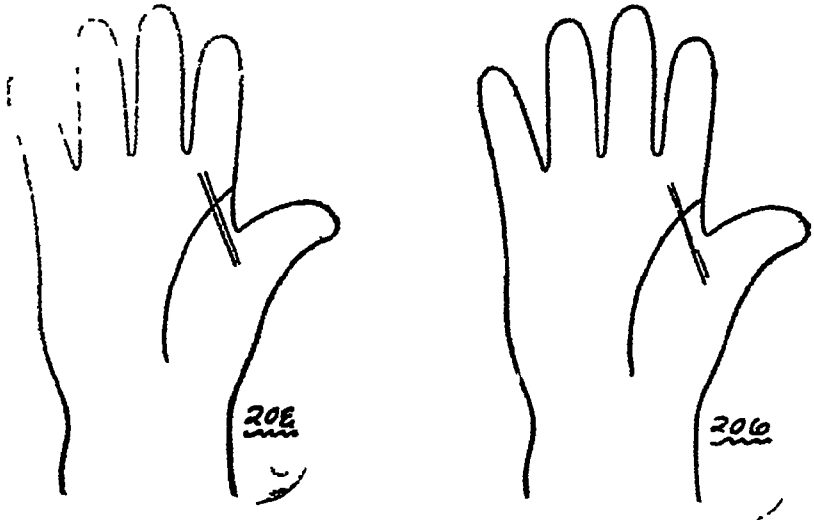
चित्र २०७—यदि पूर्वोक्त त्रिवेणी-क्षेत्र की दोनों रेखाएं परस्पर मिली हुई हो तो जातक को अनेक प्रकार के धन-धान्य तथा सुखो की प्राप्ति होती है। ऐसी रेखा वाला जातक कुशल गृहस्थ होता है। यदि बाये हाथ मे ये रेखाए मिली हुई हो तो जातक अपनी पत्नी (अथवा पति) के पक्ष वालो से अधिक स्नेह करता है और अपनी ससुराल से

बहुत सम्पत्ति प्राप्त करके उसे कूप, वापी, मन्दिर, घाट आदि के निर्माण जैसे सर्वजनोपयोगी कार्यों मे व्यय करता है।

टिप्पणी—शुक्र-क्षेत्र पर पाई जाने वाली प्रभाव-रेखाओ के सम्बन्ध में इस प्रकरण मे प्रकाश डाला गया है। विवाह तथा प्रेम-विषयक शुक्र-क्षेत्रीय प्रभाव-रेखाओ तथा चिन्हो का वर्णन विवाह-रेखा खण्ड मे विस्तार पूर्वक किया जा चुका है। शुक्र-क्षेत्र पर पाये जाने वाले बिन्दु, त्रिकोण, नक्षत्र, चतुष्कोण आदि चिन्हो के प्रभाव का वर्णन 'हस्त-चिन्ह विज्ञान' नामक अगले खण्ड मे किया जाएगा। अत जो पाठक शुक्र-क्षेत्रीय अन्य रेखाओ तथा चिन्हो के फलाफल के विषय में जानकारी प्राप्त करना चाहे, उन्हे 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के पूर्वोक्त खण्डो का अध्ययन करना चाहिए। अगूठे के ऊपर पाई जाने वाली रेखाओ का विवरण इसी खण्ड के एक अगले प्रकरण मे किया गया है।

गुरु-क्षत्रीय प्रभाव रेखाएं

तर्जनी उगली के नीचे गुरु अर्थात् बृहस्पति-क्षेत्र की अवस्थिति है। मुख्य रेखाओं तथा अन्य क्षेत्रों से इस क्षेत्र पर आने वालो रेखाओ के शुभाशुभ फल का वर्णन 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के विभिन्न खण्डों में यथास्थान किया जा चुका है। यहां पर हम बृहस्पति-क्षेत्र पर पाई वालो अन्य प्रभाव-रेखाओं की स्थिति और उनके फलाफल का वर्णन कर रहे हैं। प्रसंगानुसार कुछ मुख्य रेखाओं तथा अन्य क्षत्रो से बृहस्पति-क्षेत्र पर आने वालो कुछ शाखा रेखाओ के फलाफल की पुनरावृत्ति भी इस प्रकरण में कर दी गई है।

गुरु-क्षेत्र पर पाई जाने वाली प्रभाव-रेखाओ के सम्बन्ध में प्राच्य ग्रन्थो में बहुत कम विवरण उपलब्ध होता है। इसके विपरीत पाश्चात्य विद्वानो ने इन प्रभाव रेखाओ के फलाफल का विशद् वर्णन किया है। यहां पर दोनो ही मतों का एकीकरण करते हुए उनके सारांश को प्रस्तुत किया जा रहा है। पाठकों की सुविधा के लिए गुरु-क्षेत्रीय प्रभाव रेखाओं की प्रत्येक स्थिति के चित्र भी विवरण के साथ ही दे दिये गए हैं।

चित्र संख्या २०८ में गुरु-क्षेत्रीय प्रभाव-रेखाओं के विभिन्न रूपों को प्रदर्शित किया गया है।

20z
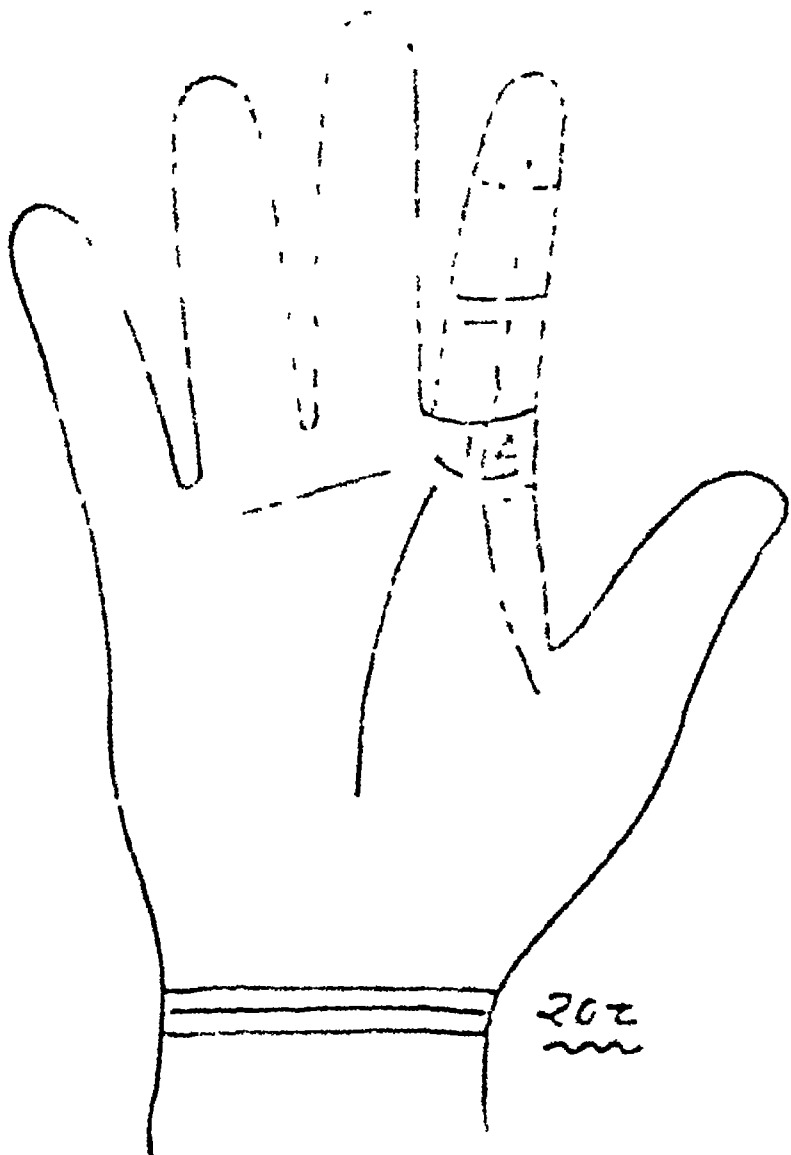
चित्र २०९—यदि गुरु-क्षेत्र पर बहुत-सी आडी तथा खड़ी रेखाएं हों तो ऐसी रेखाओं वाला जातक अत्यन्त कुकर्मी, दुराचारी तथा स्वच्छ-दन्ता-प्रिय होता है।
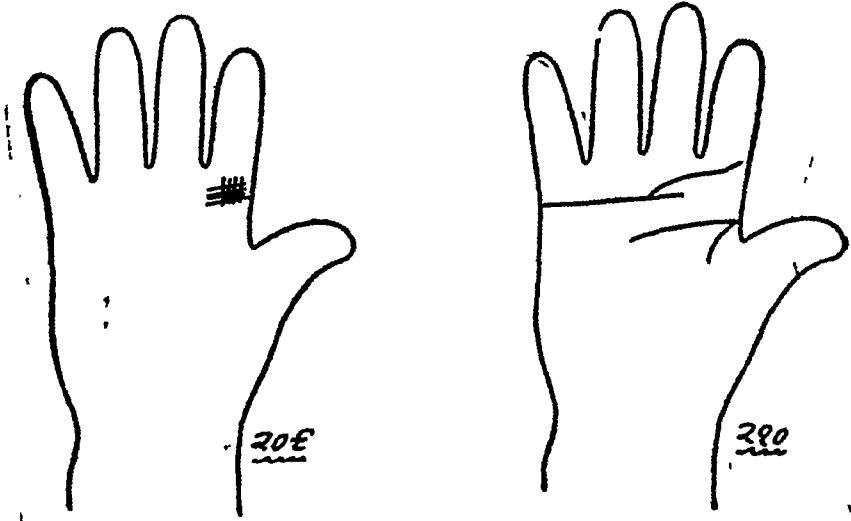
चित्र २१०—यदि हृदय-रेखा-में से निकलकर कोई शाखा रेखा गुरु के पर्वत को लांघकर आगे चली गई हो तो ऐसी रेखा वाले व्यक्ति को अपने प्रियजनो के कारण दुःख एव कष्टो का शिकार होना पडता है।

चित्र २११—यदि जीवन-रेखा में से निकलकर कोई ऊर्ध्व-शाखा रेखा गुरु के पर्वत पर चढी हुई दिखाई देती हो तो ऐसी रेखा वाले जातक का श्रेष्ठ भाग्योदय शीघ्र होने वाला है—ऐसा समझना चाहिए।

चित्र २१२—यदि भाग्य-रेखा में से कोई शाखा रेखा निकलकर
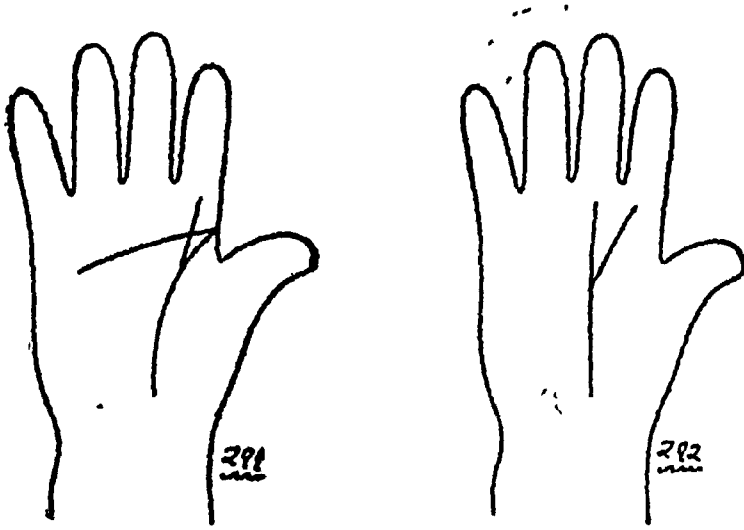
गुरु के क्षेत्र पर जा पहुची हो तो ऐसी रेखा वाला जातक धनी, यशस्वी तथा सम्मानित होता है।

चित्र २१३—यदि गुरु के पर्वत पर एक सरल खड़ी रेखा हो तथा अंगूठे और तर्जनी के अग्रभाग पर चक्र-चिन्ह दिखाई दे तो ऐसा मनुष्य गुणवान, मित्रवान्, विनीत, दानी तथा पूर्ण यशस्वी होता है। अगूठा तथा उगलियों पर पाए जाने वाले शंख, चक्र आदि चिन्हों का विस्तृत विवरण 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के 'हस्त-चिन्ह विचार' नामक अगले खंण्ड मे दिया गया है।

चित्र २१४—तर्जनी और अनामिका उगली जिस स्थान पर मिलती हैं, वहा गुरु-क्षेत्र पर यदि एक खड़ी रेखा हो तो ऐसी रेखा वाले जातक को आतों की कमजोरी तथा पेट सम्बन्धी रोग होते हैं।
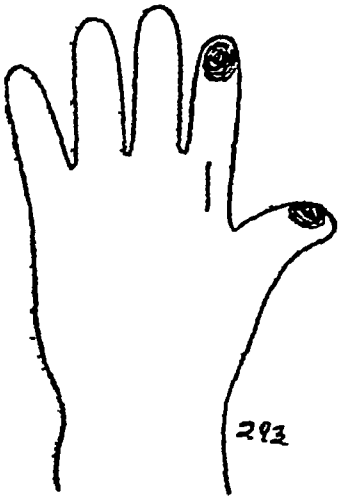
चित्र २१५—यदि गुरु-क्षेत्र के बीच मे कोई एक खडी रेखा हो तो वह जातक की महत्वाकाक्षाओं में वृद्धि करके उन्हे सफलता प्रदान
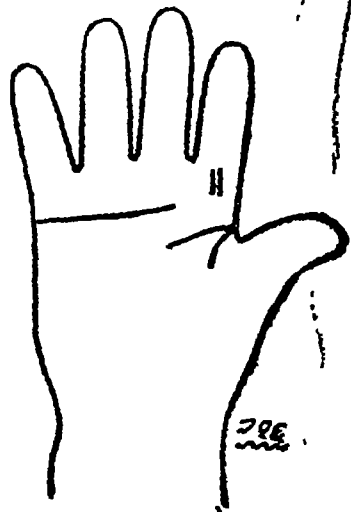
करती है। ऐसी रेखा गुरु-क्षेत्र के शुभ फल मे वृद्धि करने वाली होती है। ऐसी रेखा तभी शुभ फलदायक होती है, जब वह किसी मुख्य-रेखा को काट न रही हो।

चित्र २१६—यदि गुरु-क्षेत्र के बीच मे दो समानान्तर रेखाएं खड़ी हों तो जातक को महत्वाकांक्षाए उसे दो दिशाओ की ओर खीचती हैं, जिसके कारण उसे सफलता प्राप्त नही हो पाती। परन्तु कुछ विद्वान् दो रेखाओ का होना अधिक शुभ फलदायक बताते है तथा दो से अधिक रेखाओ का होना अशुभ मानते हैं।

चित्र २१७—यदि गुरु-क्षेत्र पर छोटी-छोटी चार अथवा अधिक संख्या मे खड़ी रेखाएं हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक सफलता प्राप्त करने के लिए बारम्बार प्रयत्न तो करेगा, परन्तु उसे असफलता ही मिलेगी।
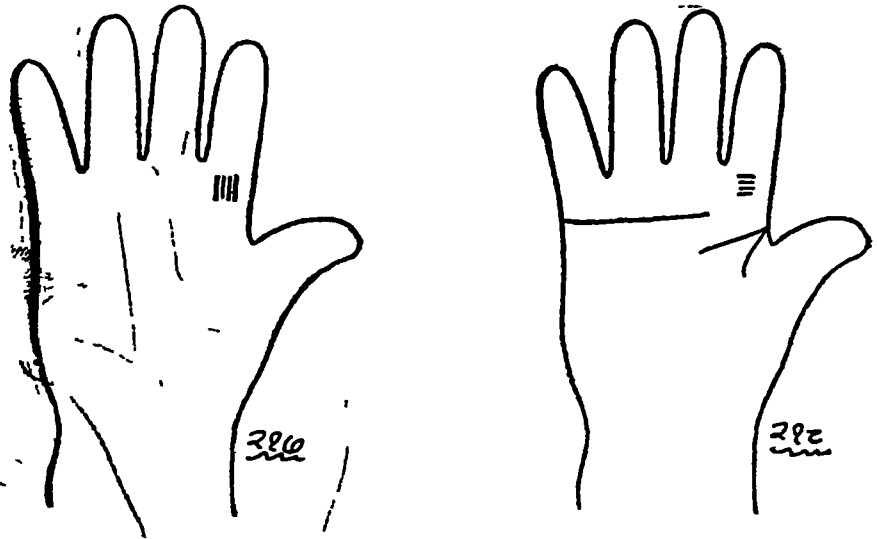
चित्र २१८—यदि गुरु-क्षेत्र पर छोटी-छोटो आडी रेखाए हो तो उन्हे असफलता की सूचक मानना चाहिए। ऐसी रेखाओ वाले जातक

को प्रत्येक क्षेत्र में विफलता मिलती है और आर्थिक-क्षेत्र में बार-बार घाटा उठाना पड़ता है।

चित्र २१६—यदि गुरु-क्षेत्र से चली हुई एक टेढी रेखा हृदय-रेखा के असमानान्तर उच्च सूय-क्षेत्र पर पहुचे तो प्राच्य-विद्वान् उस रेखा को 'कन्दुक-रेखा' के नाम से अभिहित करते हैं। यह रेखा जातक को रोग-ग्रस्त बनाये रखती है।
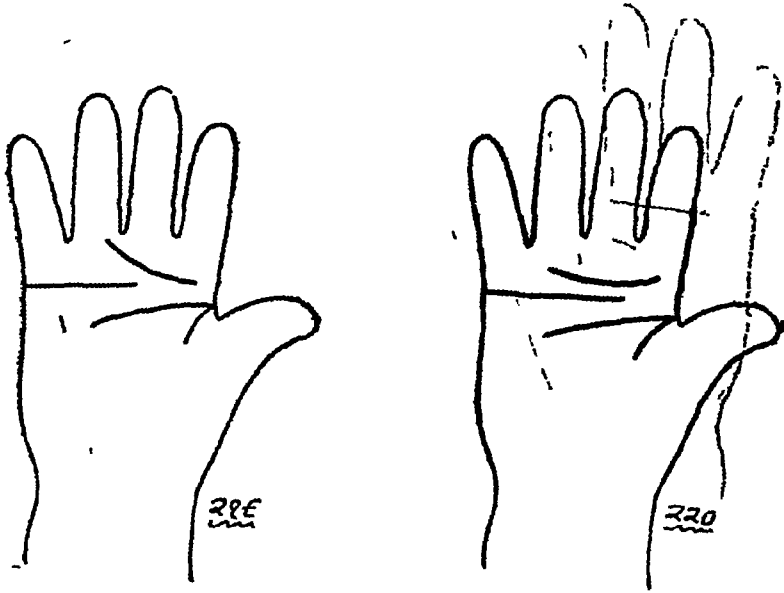
चित्र २२०—उपर्युक्त कन्दुक-रेखा यदि हृदय-रेखा के समानान्तर जा रही हो और वह सरल तथा स्पष्ट हो तो ऐसा जातक विद्वान्, चतुर, सुवक्ता, विनीत, गुरुजन सेवी तथा आध्यात्मिक उन्नति के कार्य करने वाला होता है। उसकी पत्नी भी बुद्धिमान् गृह-कार्य-कुशल, सन्ततिवान् तथा सुख देने वाली होती है।

चित्र २२१—यदि गुरु-क्षेत्र तथा शनि-क्षेत्र के बीच वाले स्थान में छोटा-छोटी पाच सरल रेखाएं खड़ी हो तो ऐसा जातक बुद्धिमान् परन्तु हठी, शकालु, चंचल हृदय तथा बहुत-से मित्र एव बहुत-से शत्रुओ से युक्त होता है। ऐसी रेखा वाले लोगो का जीवन प्रायः दुःख पूर्ण ही व्यतीत होता है।
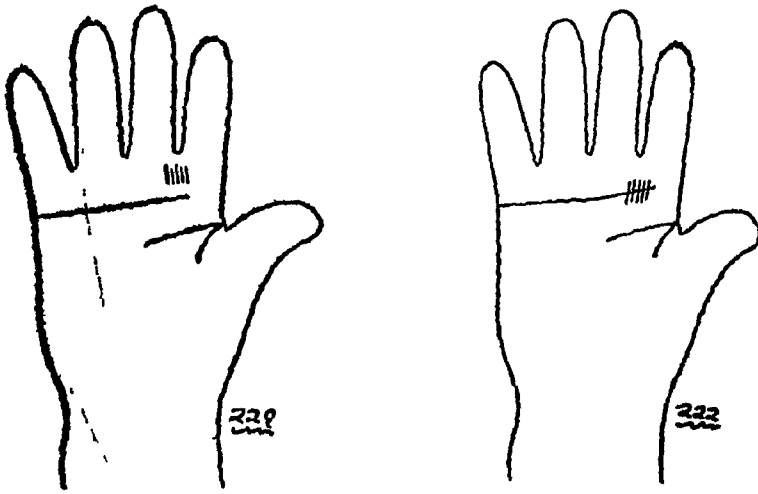
चित्र २२२—यदि पूर्वोक्त प्रकार की गुरु-क्षेत्र तथा शनि-क्षेत्र के बीच मे स्थित छोटी-छोटी पाच सरल रेखाए हृदय-रेखा को काट दें, तो ऐसे जातक को पचास वर्ष की आयु से दुःख या चिन्ताओ में घिरा रहना पडता है तथा पचहत्तर वर्ष की आयु मे उसकी किसी दुर्घटना अथवा शस्त्राघात के कारण मृत्यु भी हो जाती है, परन्तु यदि गुरु तथा शनि-क्षेत्र उच्च हों और अन्य उंगलियों का अन्तर मध्यमा तथा तर्जनी उंगली के अन्तर से अधिक हो तो उक्त फलादेश मे कुछ शुभता आ जाती है।

चित्र २२३—यदि गुरु-क्षेत्रस्थ दो सीधी खडी रेखाओ को एक आड़ी रेखा काट रही हो तो ऐसा जातक धार्मिक-क्षेत्र मे अत्यधिक ख्याति प्राप्त करता है। वह मधुर भाषी, विनम्र, धनी, नीतिज्ञ, शास्त्रज्ञ, सम्पादक अथवा कुशल कलाकार होता है। ऐसे लोग धार्मिक पुस्तको के प्रकाशन द्वारा भी ख्याति लाभ करते हैं।
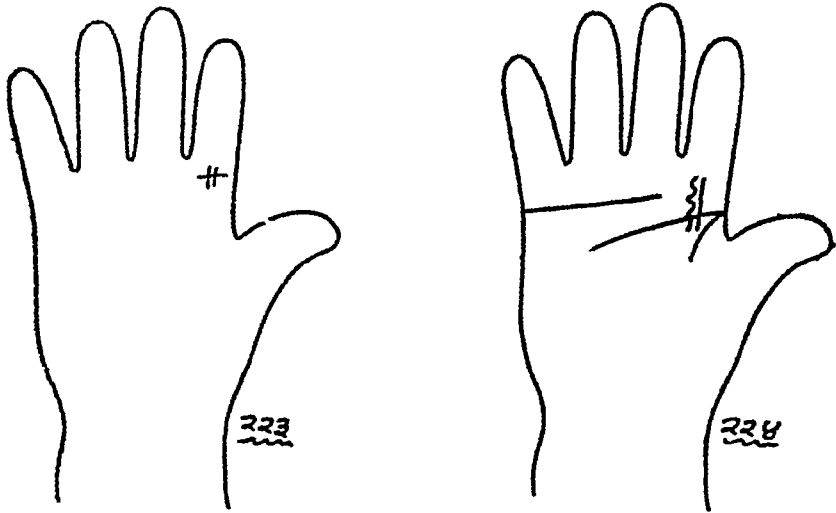
चित्र २२४—यदि गुरु-क्षेत्र से एक सरल या सीधी रेखा तथा उसके साथ ही एक लहरदार रेखा—दोनो रेखाए निकलकर मस्तक-रेखा को काट दे तो ऐसी रेखाओ वाला जातक कामी, उग्र स्वभाव वाला, क्रोधी तथा वासनाओ मे लिप्त रहने वाला होता है।

चित्र २२५—उक्त प्रकार की सीधी तथा सरल रेखाए गुरु-क्षेत्र पर अधिक सख्या में हो और वे मस्तक-रेखा का केवल स्पर्श मात्र कर रही हो तो जितनी रेखाएं मस्तक-रेखा का स्पर्श कर रही होगी जातक के उतने ही विवाह होंगे—ऐसा समझना चाहिए। ऐसी रेखाओं

वाला व्यक्ति धनी, दानी, मानी तथा सम्पन्न होता है, परन्तु साथ ही गुरु-क्षत्र का उन्नत होना भी आवश्यक है।
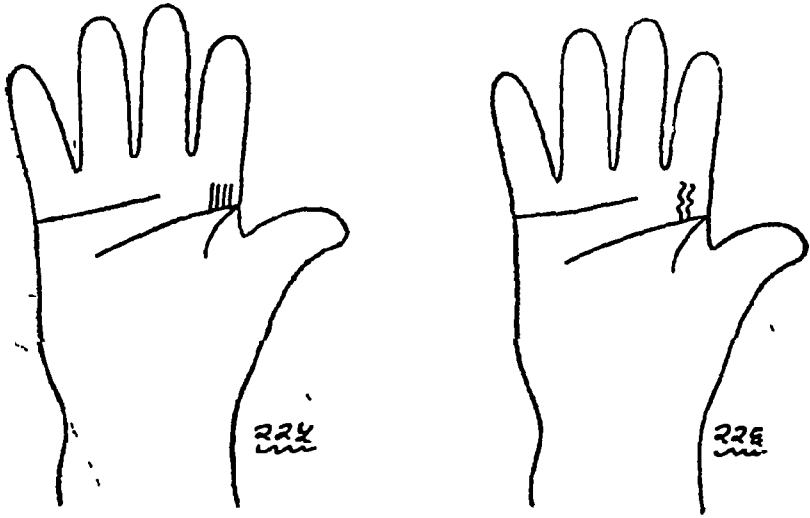
चित्र २२६—यदि गुरु-क्षेत्र पर दो लहरदार खड़ी रेखाएं हो और वे मस्तक-रेखा से मिल रही हों तो ऐसा जातक मिथ्यावादी, कपटी, अपना कार्य दूसरो से कराने वाला, कुटिल बुद्धि तथा परिश्रमी होता है। वह अपने मित्रो की सहायता से पर-स्त्री-हरण भी कर लेता है।

चित्र २२७—यदि गुरु-क्षेत्र पर तर्जनी उंगली के मूलस्थान के नीचे तीन सरल, स्पष्ट तथा छोटी रेखाएं हो तो ऐसा जातक शास्त्रज्ञ, महात्मा, योगी, राजा, उच्च नेता, नीतिज्ञ, सौभाग्यशाली तथा गुणवान् होता है। स्मरण रहे, इन रेखाओ का अन्य रेखाओ से असयुक्त होना आवश्यक है।

चित्र २२८—यदि गुरु तथा शनि-क्षेत्र के वीच से एक गहरी रेखा चलकर हृदय-रेखा को काट दें तो ऐसी रेखा वाला जातक मस्तक पीड़ा से पीडित होता है ।
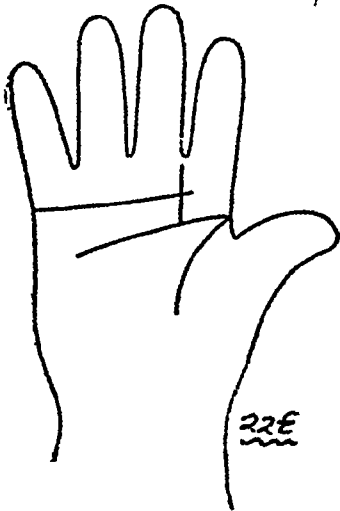
चित्र २२६—यदि पूर्वोक्त गुरु तथा शनि-क्षेत्र के बीच से निकली हुई गहरी रेखा मस्तक-रेखा का केवल स्पर्श मात्र करे अथवा उसे काट दे तो जातक की मृत्यु सिर मे चोट लगने से होती है।

चित्र २३०—यदि तर्जनी उगली के मूलस्थान से दो टेढी रेखाएं चलकर शनि-क्षेत्र पर पहुंच रही हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक धन-धान्य, वाहन, मित्र आदि के सुख से सम्पन्न, परन्तु भ्रमित चित्त और शिरोघात से पीडित होता है।

चित्र २३१—यदि गुरु-क्षत्र के निचले भाग मे छोटी, गहरी तथा मोटी—तीन रेखाए हो तो ऐसा जातक वात-रोग से ग्रस्त, बलवान, विषयी, दुष्टो की सगति करने वाला, असभ्य तथा शिष्ट-समाज द्वारा परित्यक्त होता है।
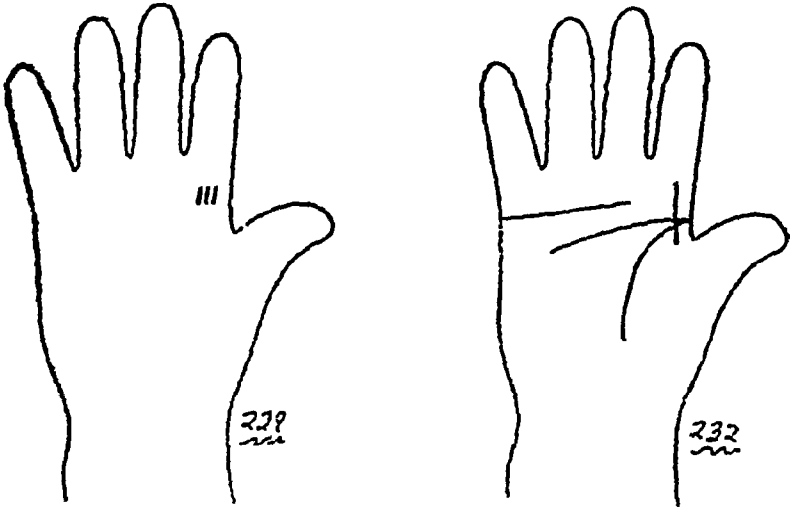
चित्र २३२—यदि गुरु-क्षेत्र से एक सरल तथा शुद्ध रेखा चलकर मस्तक-रेखा तथा जीवन-रेखा को काटती हुई मगल के द्वितीय-क्षेत्र

पर जा पहुंचे तो ऐसा जातक गुणी, नीतिज्ञ, बुद्धिमान्, दानी, परोपकारी यशस्वी तथा कला-कौशल मे प्रवीण होता है, परन्तु वह रक्त-विकार एव ज्वर से पीड़ित रहता है।

चित्र २३३—गुरु-क्षेत्र से निकलकर एक धनुषाकार रेखा वुध-क्षेत्र पर चली जाय तो ऐसा जातक व्यभिचारी, कपटी, अहकारी तथा अपयशी होता है।
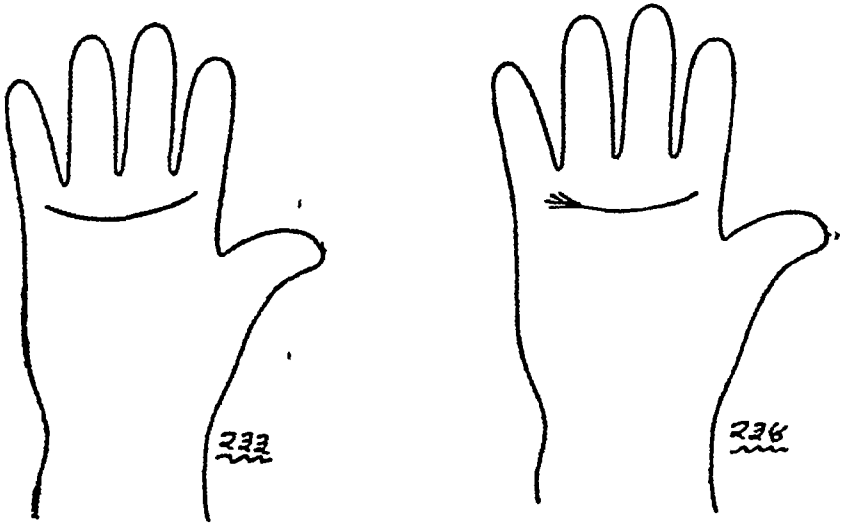
चित्र २३४—यदि पूर्वोक्त गुरु-क्षेत्र से निकल कर धनुषाकार चलने वाली रेखा वुध-क्षेत्र पर जाकर कई भुजाओ में वट जाय तो वह शुभ सूचक होती है। ऐसा जातक परोपकारी, दानी, उदार, विद्वान्, व्यवसायी, सुवक्ता, कलाकार तथा यशस्वी होता है।

चित्र २३५—यदि गुरु-क्षेत्र पर स्थित लहरदार आड़ी रेखाओं को

दो तिरछी रेखाएं काट रही हो तो ऐसा जातक आलसी तथा दूसरो पर आश्रित रहने वाला होता है। उसे जारज पुत्र का पिता भी कहलाना पड़ता है।
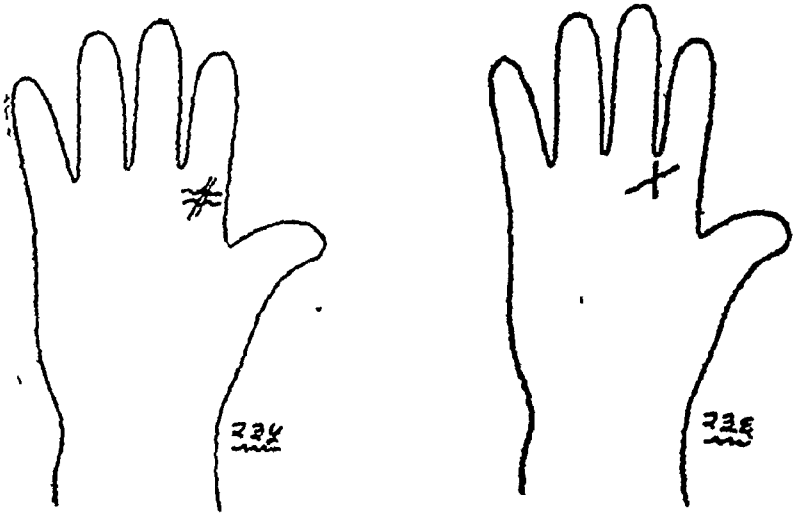
चित्र २३६—यदि गुरु और शनि-क्षेत्र के मध्य से निकली हुई किसी रेखा को तर्जनी उगली के मूल से निकली हुई एक रेखा काटती हुई शनि-क्षेत्र पर जा पहुचे, तो ऐसी रेखा वाला जातक विलासी, पराक्रमी, स्वाभिमानी तथा कार्य-कुशल होता है।

चित्र २३७—यदि पूर्वोक्त गुरु तथा शनि-क्षेत्र के बीच से निकली हुई रेखा को काटने वाली तर्जनी उंगली के मूल से निकली हुई रेखा को एक अन्य छोटी रेखा काट रही हो ऐसा जातक दुर्बल शरीर वाला, सुस्त तथा शिरोपीड़ा से युक्त होता है।
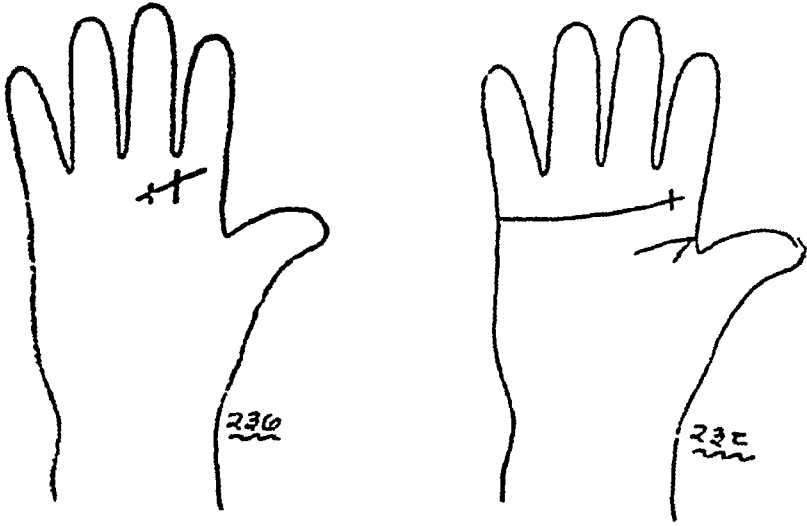
चित्र २३८—यदि हृदय-रेखा गुरु-क्षेत्र पर गई हो और उसे वहीं पर अन्त मे एक छोटी-सी सीधी खड़ी रेखा काट दे तो ऐसा जातक व्यभिचारी तथा अधर्मी होता है और वृद्धावस्था मे चिन्तित रहता है। ऐसी रेखा वाले व्यक्ति अग्नि, चोर तथा शत्रुओ के भाग्य से पीड़ित रहते है। उन्हे राज दण्ड पाने का योग भी उपस्थित होता है।

चित्र २३९—यदि जीवन-रेखा गुरु-क्षेत्र से निकली हो और वह तथा मस्तक-रेखा—दोनो मोटी हो तथा उसी स्थान पर उक्त दोनो रेखाओ को गुरु क्षेत्रस्थ दो छोटी-छोटी रेखाए काट रही हो, तो ऐसा जातक सदैव रोगी रहकर औषध-सेवन ही करता रहता है। ऐसी रेखाओ वाले व्यक्ति चिन्तातुर, कलहशील, क्रोधी, भाग्यहीन तथा शत्रु-पीड़ित होते है। उन्हे बाल्यावस्था मे अधिक कष्ट उठाना पड़ता है।
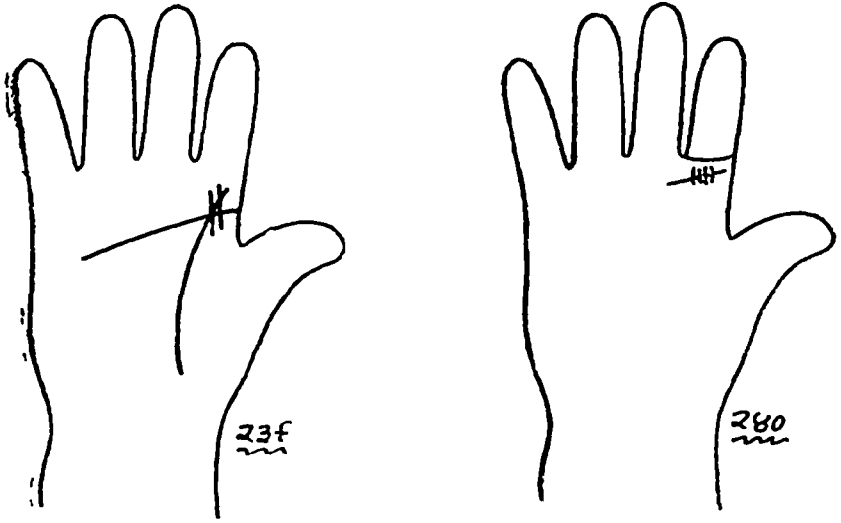
चित्र २४०—यदि तर्जनी उगली के मूल मे सन्धि स्थान पर कुछ आड़ी रेखाए हो और उन्हे एक तिरछी रेखा काट रही हो तो ऐसे जातक की उन्नति मे बाधा पडती है, जिसके कारण वह निराश, चचल तथा मस्तक-पीड़ा से ग्रस्त बना रहता है।

चित्र २४१—'बृहस्पति मुद्रिका' का वर्णन पिछले खण्ड मे किया जा चुका है। यह रेखा अर्द्ध चन्द्राकार रूप मे तजनो उगली के नीचे रहती है। यदि इस रेखा को गुरु तथा शनि-क्षेत्र के बीच मे खड़ी हुई एक सरल रेखा काटती हुई गुरु-क्षेत्र को विभक्त कर रही हो तो ऐसा जातक हृदय रोग से पीडित रहता है।

चित्र २४२—यदि बृहस्पति-मुद्रिका से सम्बद्ध दो सोधी रेखाए गुरु-क्षेत्र पर हो तो ऐसो रेखा वाला जातक अपने जीवन मे अत्यधिक सफलता तथा प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

चित्र २४३—यदि बृहस्पति मुद्रिका से सम्बद्ध दोनों खड़ी रेखाएं लहरदार हो तो ऐसी रेखा वाला जातक अपने कामों में असफल तथा क्षीण-शक्ति वाला होता है।

चित्र २४४—यदि बृहस्पति-मुद्रिका को गुरु-क्षेत्र पर बीच में से एक सीधी खडी रेखा काट रही हो और वह रेखा हृदय-रेखा को भी काट रही हो तो ऐसे जातक का प्रेम-सम्बन्ध दुर्भाग्य पूर्ण होता है।

चित्र २४५—यदि बृहस्पति-मुद्रिका के साथ ही गुरु-क्षेत्र पर कई छोटी-छोटी रेखाएं हो तो वे जातक के अपयश, हानि एव दुर्भाग्य की सूचक होती है।
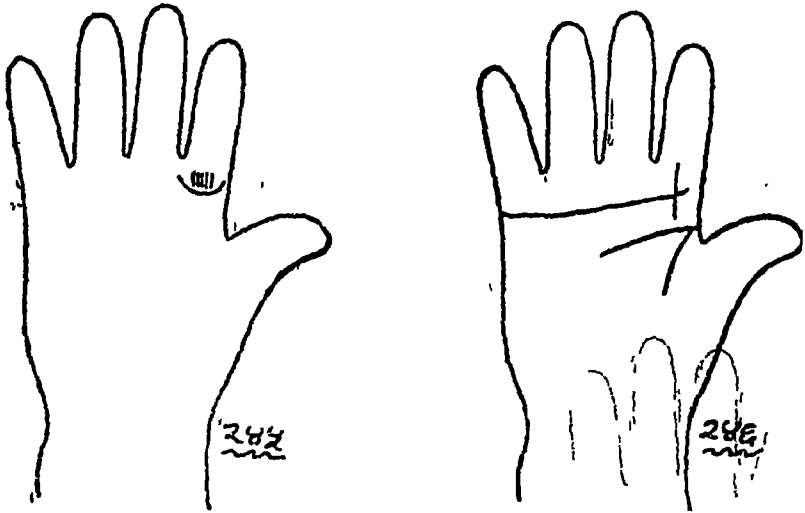
चित्र २४६—यदि गुरु-क्षेत्र पर एक सीधी रेखा खडी हो और वह हृदय-रेखा को काट रही हो तथा गुरु-क्षेत्र निम्न हो तो जातक को अपयश, हानि, निर्धनता एव अकर्मण्यता का शिकार होना पड़ता है।

चित्र २४७—हथेली के बाहरी भाग से गुरु-क्षेत्र पर आई हुई रेखाओ को 'दीक्षा-रेखा' कहा जाता है। ऐसी रेखाए जितनी सख्या मे शुद्ध, सरल तथा निर्दोष हो, जातक के उतने ही सच्चे मित्र

होते हैं। ऐसी रेखाओ वाला जातक ज्ञानी, वेदान्ती, शास्त्रज्ञ तथा किसी गुरु द्वारा दीक्षित होता है।
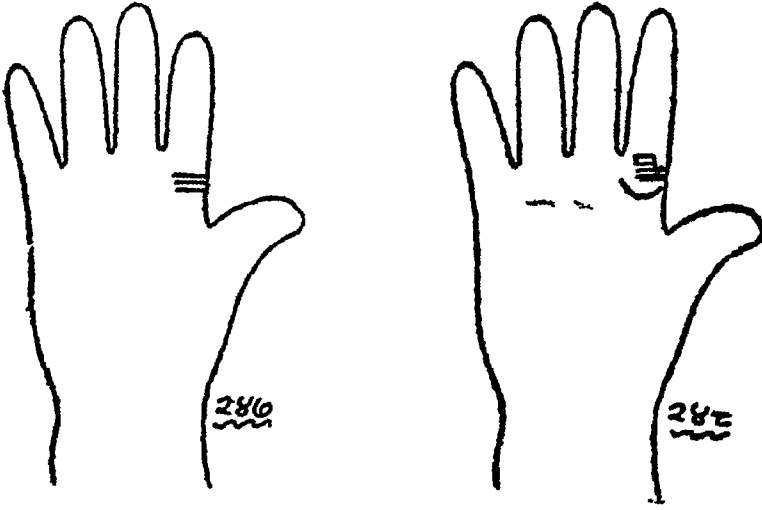
चित्र २४८—यदि दीक्षा-रेखा स्पष्ट हो, गुरु-क्षेत्र उच्च हो, गुरु-क्षेत्र पर चतुष्कोण हो, तर्जनी उंगली लम्बी हो तथा चन्द्रकार-रेखा (बृहस्पति-मुद्रिका) तर्जनी उंगली के नीचे सम्पूर्ण गुरु-क्षेत्र को घेरे हुए हो तो ऐसी रेखाओ तथा चिन्हों वाला जातक आत्मोन्नति के लिए वैराग्य ग्रहण कर घर को त्याग देता है। ऐसा व्यक्ति वेदान्ती, तत्व-दर्शी, ज्ञानी तथा आत्मचिन्तक होता है।

चित्र २४६—यदि तर्जनी उगली नोंकदार तथा अधिक लम्बी हो और उसके मूल में से निकलकर गुरु-क्षेत्र पर एक छोटी खडी रेखा भी हो तो ऐसी रेखा वाला जातक अत्यन्त बुद्धिमान्, विज्ञानी, सुवक्ता, उच्च पदाधिकारी, अन्तर्ज्ञानी अथवा दूरदर्शी होता है। उसमे समस्त सद्गुण पाये जाते हैं।
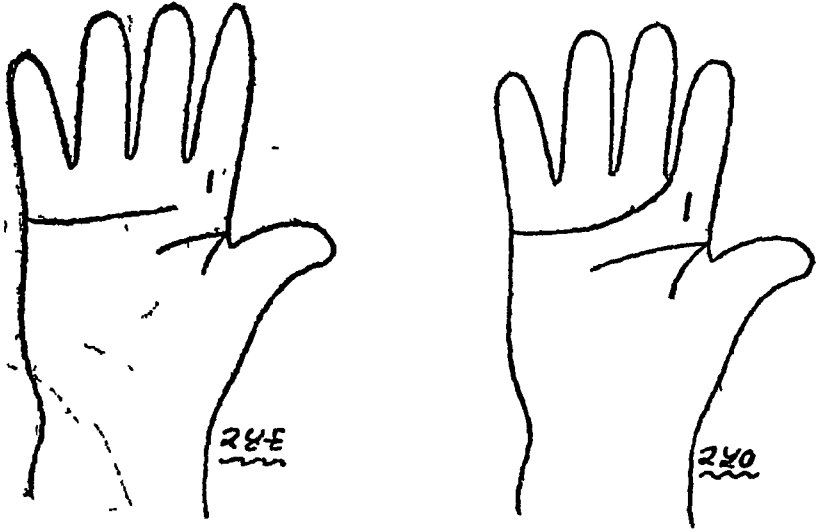
चित्र २५०—यदि गुरु-क्षेत्र उच्च हो और उस पर एक सरल तथा शुद्ध खडी रेखा हो, साथ ही हृदय-रेखा गुरु तथा शनि-क्षेत्र के बीच में होकर मध्यमा तथा तर्जनी उंगली के बीच मे चली गई हो तो ऐसी रेखा वाला जातक महान् तत्वज्ञानी एव धर्माचार्य होकर लोक मे पूजित तथा यशस्वी होता है।

चित्र २५१—यदि तर्जनी तथा मध्यमा उगली के बीच से एक गहरी, मोटी तथा काले रग की रेखा निकलकर गुरु तथा शनि-क्षेत्र के बीच मे होती हुई हथेली के ठीक बीच मे जाकर रुक जाय तो ऐसी रेखा वाला जातक जीवन भर दुःखी तथा अपयशी रहता है। वह धनी होते हुए भी धन का सदुपयोग नही कर पाता। उसके बन्धु-बान्धव उससे घृणा करते है तथा अपनी स्त्री के द्वारा भी उसे छल-कपट, कष्ट तथा अपमान सहन करना पडता है।
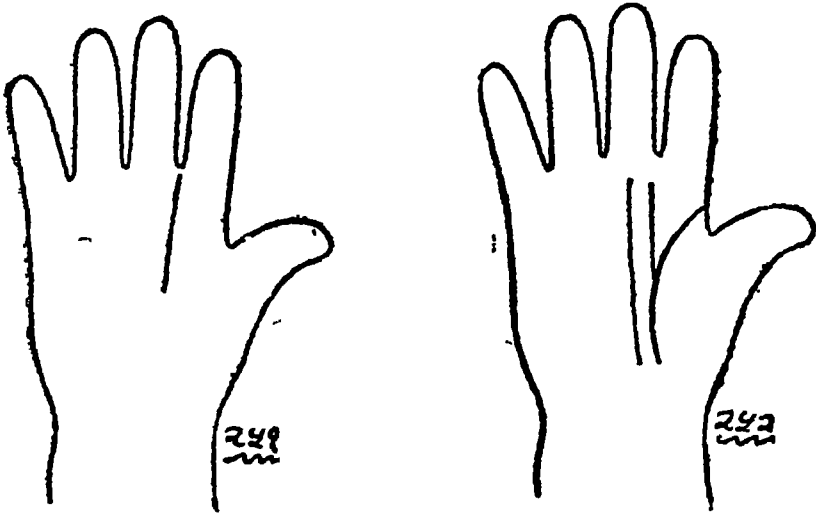
चित्र २५२—यदि पूर्वोक्त रेखा भाग्य-रेखा अथवा जीवन-रेखा के साथ मिल जाय तो ऐसे व्यक्ति का भाग्य-रेखा अथवा जीवन-रेखा के मिलन-स्थल वाले वयोमान मे भाग्योदय होता है, फिर भी उसे पूर्व वर्णित अशुभ फलो का साधारण भोग तो भोगना ही पड़ता है।

चित्र २५३—यदि गुरु-क्षेत्र के ठीक नीचे एक छोटी-सी सरल तथा स्पष्ट खडी रेखा हो और वह किसी अन्य रेखा से योग न कर रही हो तो ऐसा व्यक्ति हृदय का स्पष्ट एव शरीर से स्वस्थ होता है। वह स्पष्टवादो, सच्चरित्र एव निष्कपट भी होता है।

वृहस्पति-क्षेत्र पर पाये जाने वाले क्रास, जाल, द्वीप, नक्षत्र आदि चिन्ह तथा तर्जनी उगली पर दिखाई देने वाले उक्त चिन्हो के शुभाशुभ प्रभाव का विस्तृत वर्णन 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के 'हस्त-चिन्ह-

विचार' नामक खण्ड मे किया गया है। अतः इस सम्बन्ध में पाठकों को अगले खण्ड का अध्ययन करना चाहिए।
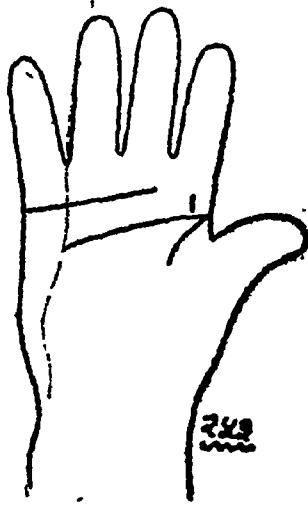
तर्जनी उंगली के ऊपर पाई जाने वाली रेखाओं का वर्णन इसी खण्ड के एक अगले प्रकरण मे किया गया है।

शनि-क्षेत्रीय रेखाएं

मध्यमा उगली के नीचे शनि-क्षेत्र की अवस्थिति है । मुख्य रेखाओं तथा अन्य क्षेत्रों से इस क्षेत्र पर आने वाली रेखाओ के शुभाशुभ फल का वर्णन 'वृहद सामुद्रिक विज्ञान' के विभिन्न खण्डों में यथास्थान किया जा चुका है। यहां पर शनि-क्षेत्र पर पाई जाने वाली अन्य प्रभाव-रेखाओ की स्थिति और उनके फलाफल का वर्णन कर रहे हैं। प्रसगानुसार कुछ मुख्य रेखाओं तथा अन्य क्षेत्रो से शनि-क्षेत्र पर आने वाली कुछ शाखा-रेखाओं के फलाफल की पुनरावृत्ति भी इस प्रकरण में कर दी गई है।

शनि-क्षेत्र पर पाई जाने वाली रेखाओं के सम्बन्ध में भी प्राच्य ग्रंथो में बहुत कम विवरण उपलब्ध होता है। इसके विपरीत पाश्चात्य विद्वानो ने इन रेखाओ के फलाफल का विशद् वर्णन किया है। यहां पर दोनो ही मतों का एकीकरण करते हुए उनके सारांश को प्रस्तुत किया जा रहा है। पाठको की सुविधा के लिए शनि-क्षेत्रीय प्रभाव-रेखाओं की प्रत्येक स्थिति के चित्र भी विवरण के साथ ही दे दिये गए हैं।

चित्र २५४ मे शनि-क्षेत्रीय प्रभाव-रेखाओ के विभिन्न रूपो को प्रदर्शित किया गया है।
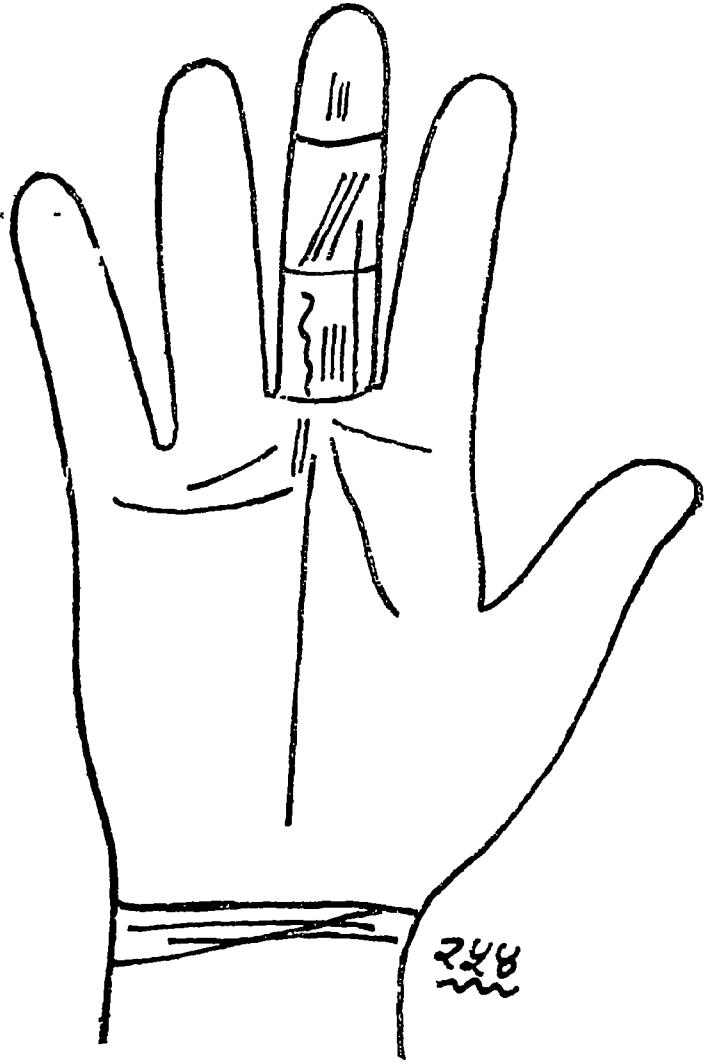
[शनि-क्षेत्रीय प्रभाव-रेखाओ की विभिन्न स्थितिया]

चित्र २५५—यदि शनि-क्षेत्र पर एक छोटी, सरल तथा निर्दोष रेखा खड़ी हो तो यह लक्षण बहुत शुभ समझना चाहिए। ऐसी रेखा वाला व्यक्ति भाग्यशाली होता है।
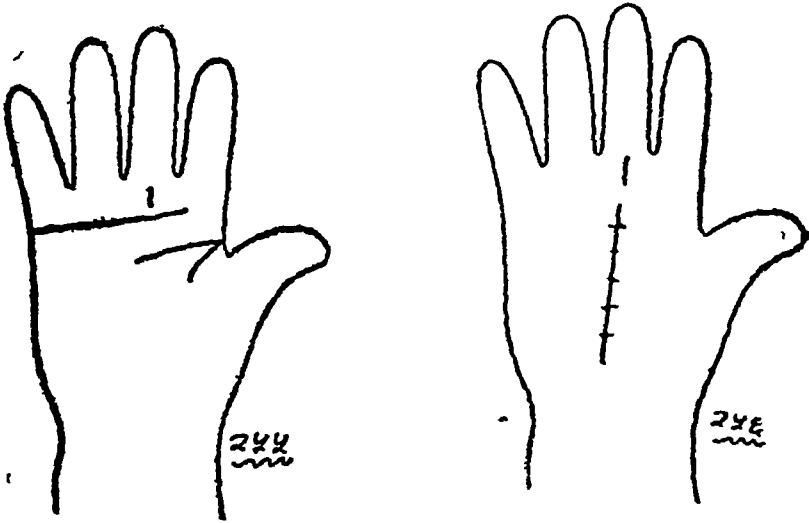
चित्र २५६—यदि शनि-क्षेत्र पर आने वाली भाग्य-रेखा टूट गई हो और शनि-क्षेत्र पर एक छोटी रेखा खडी हुई दिखाई दे, जोकि यथार्थ मे उक्त टूटी हुई भाग्य-रेखा का ही एक अन्तिम भाग हो तथा भाग्य-रेखा कई स्थानो पर कटी हुई हो तो ऐसी रेखा वाले जातक की वृद्धावस्था सुखपूर्वक व्यतीत होती है।

चित्र २५७—यदि शनि-क्षेत्र पर भाग्य-रेखा के दोनो ओर एक-एक करके दो समानान्तर छोटी रेखाएं खड़ी हो तो ऐसी रेखाओ वाले जातक को अपने जीवन के अन्तिम भाग में अत्यधिक परिश्रम करने पर सफलता प्राप्त होती है।
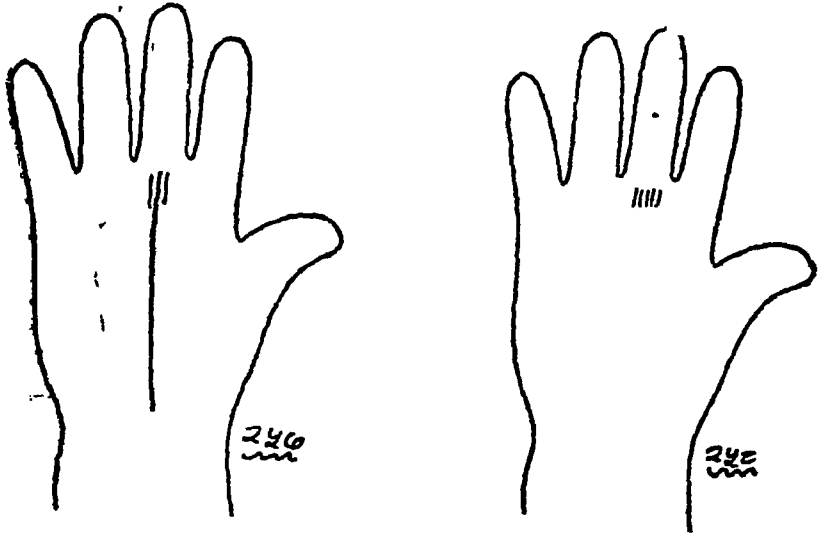
चित्र २५८—यदि शनि-क्षेत्र पर छोटी-छोटी अनेक रेखाएं खड़ी हों तो वे जातक के लिए दुर्भाग्य का लक्षण होती हैं। ऐसी रेखाओं की सख्या जितनी अधिक हो, दुर्भाग्य की सीमा भी उतनी ही अधिक समझनी चाहिए।

चित्र २५९—यदि कुछ रेखाएं ४५ डिग्री का कोण बनाती हुई हृदय-रेखा को काटती हुई शनि-क्षेत्र पर पहुंच रही हो तो उनके दुष्प्रभाव से जातक को वात-विकार एव वायु-विकार सम्बन्धी रोग होते हैं।

चित्र २६०—यदि शनि-क्षेत्र पर पहुंचने वाली भाग्य-रेखा को कोई छोटी-सी आड़ी रेखा काट दे तो वह जातक के भाग्य मे हानि की सूचक अशुभ लक्षण है। यदि सूर्य-रेखा की स्थिति अच्छी न हो और भाग्य-रेखा को उक्त प्रकार से कोई आड़ी रेखा शनि-क्षेत्र पर काट
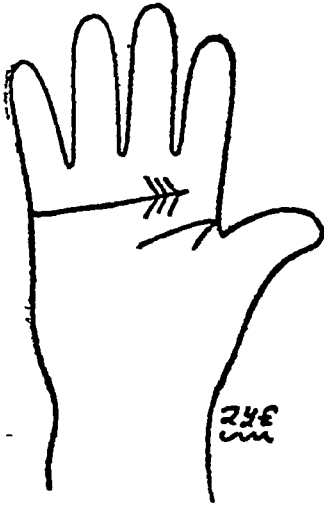
रही हो तो उसे जातक के लिए और भी अधिक दुर्भाग्य का लक्षण समझना चाहिए।

चित्र २६१—यदि शनि-क्षेत्र के ऊपर अनेक छोटी-छोटी आड़ी
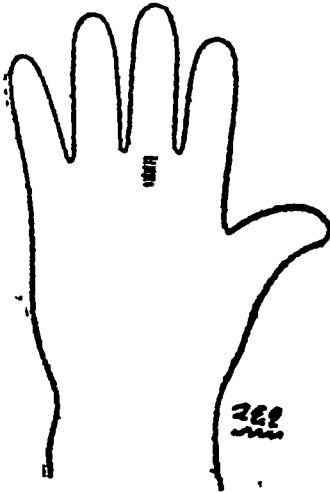
रेखाएं सीढी-सी बना रही हों तो जातक के भाग्य की क्रमशः उन्नति होती है।

चित्र २६२—यदि शनि-क्षेत्र पर द्वीप-चिन्ह हो और उसमे से एक शाखा रेखा निकलकर वक्रगति से स्वास्थ्य-रेखा की ओर झुक गई हो अथवा उससे मिल गई हो तो ऐसी रेखा वाले जातक की स्मरण शक्ति अत्यन्त कमजोर होती है। उसका सिर सदैव चक्कर खाता रहता है और उसे बहरेपन की बीमारी भी हो सकती है।

चित्र २६३—यदि पूर्वोक्त शनि-क्षेत्र से आरम्भ हुई शाखा रेखा मस्तक-रेखा तथा स्वास्थ्य-रेखा के मिलन-स्थल पर जाकर उनसे मिल जाए तो ऐसी रेखा वाले जातक के मस्तिष्क का आपरेशन होता है और उसके दस-बारह वर्ष बाद सुखी जीवन व्यतीत होता है।
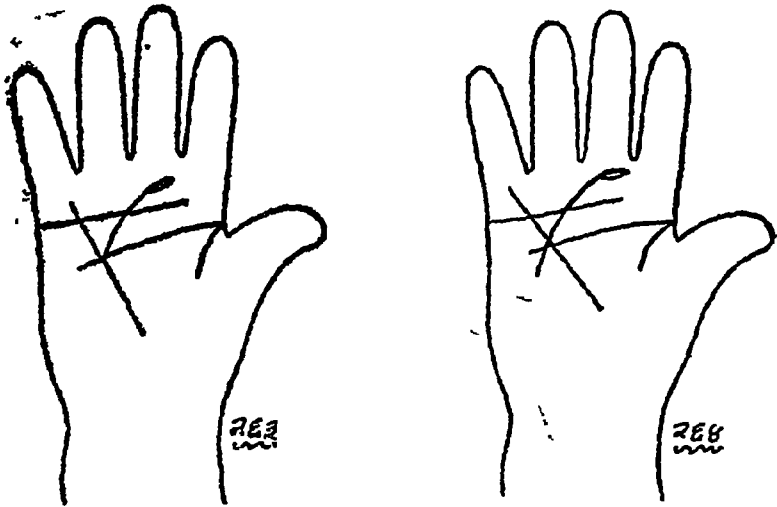
चित्र २६४—यदि पूर्वोक्त शनि-क्षेत्र से आरम्भ होने वाली शाखा रेखा, मस्तक-रेखा तथा स्वास्थ्य-रेखा के मिलन-विन्दु पर पहुंचकर, उन्हें

पार करती हुई आगे निकल जाय तो ऐसी रेखा वाले जातक के मस्तक का आपरेशन होता है, जिसमे उसकी मृत्यु भी हो जाती है।

चित्र २६५—यदि शनि-क्षेत्र से आरम्भ होकर कुछ छोटी-छोटी रेखाएं सीढी के समान गुरु-क्षेत्र पर पहुचे तो ऐसी रेखाओं वाला जातक धीरे-धीरे जनता मे प्रतिष्ठित होकर उच्च पद प्राप्त करता है तथा यशस्वा होता है। उसका आचार-व्यवहार सात्विक, सहिष्णु तथा धार्मिक होता है।
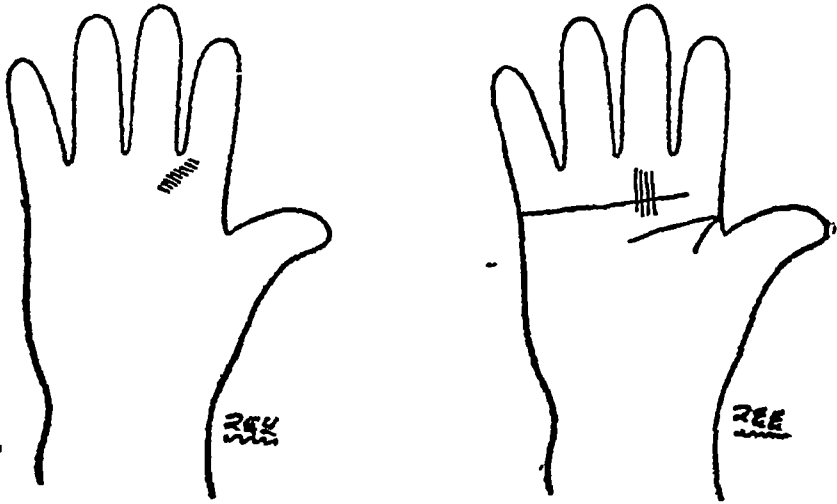
चित्र २६६—यदि शनि-क्षेत्र से कई रेखाएं निकलकर हृदय-रेखा को काट रही हो तो ऐसी रेखाओं वाले जातक को गठिया एव वायु रोगो का शिकार होना पड़ता है।

चित्र २६७—यदि शनि-क्षेत्र से निकलकर कई लहरदार रेखाएं हृदय-रेखा को काटती हुई मस्तक-रेखा तक जा पहुचें तो वे जातक के लिए हानिकारक सिद्ध होती हैं।
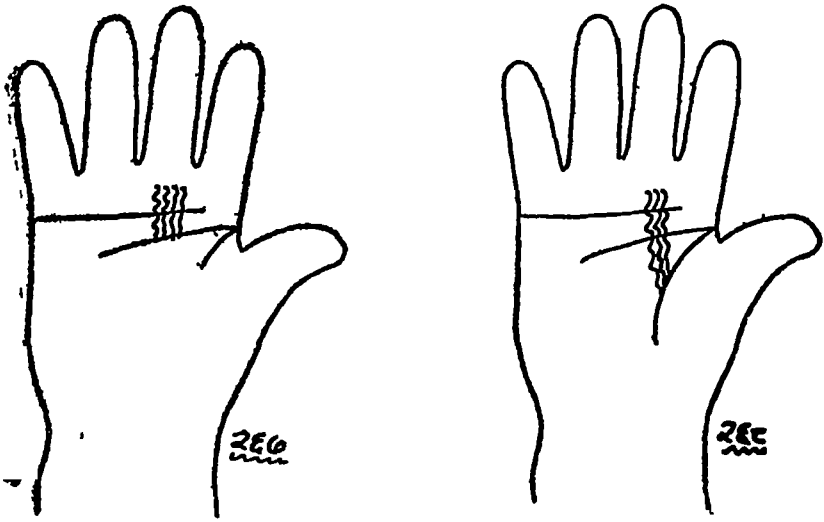
चित्र २६८—यदि शनि-क्षेत्र से निकलकर कुछ लहरदार रेखाएं जीवन-रेखा से जा मिले तो जिस वयोमान मे वे जीवन-रेखा से मिल रही होगी, उसी आयु वर्ष से जातक अपने कार्यों मे सफलता प्राप्त करता हुआ उन्नति करने लगता है। रेखाओं के लहरदार होने के कारण उसे प्रारम्भ मे विघ्नों का सामना करना पड़ता है, परन्तु बाद मे सफलता मिल जाती है।

चित्र २६९—यदि शनि-क्षेत्र से निकली हुई एक सरल तथा निर्दोष खड़ी रेखा हृदय-रेखा का स्पर्श करे तो जातक के यश, धर्म, धन तथा भाग्य मे उन्नति होती है तथा उसे बन्धु-बान्धवो का सुख प्राप्त होता है।

चित्र २७०—यदि हृदय-रेखा बुध-क्षेत्र से चलकर ठीक शनि-क्षेत्र के नीचे आकर रुक गई हो तथा शनि-क्षेत्रस्थ पूर्वोक्त खड़ी रेखा से
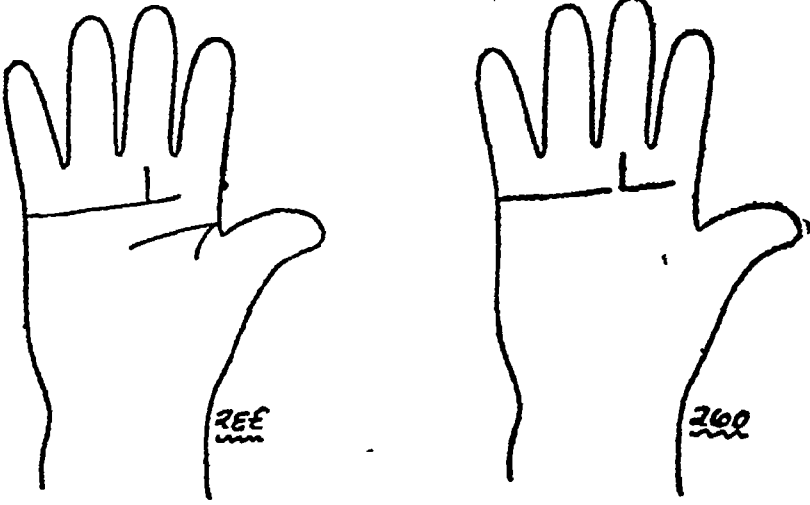
फिर प्रारम्भ हो गई हो तो इससे शनि-क्षेत्र पर एक बड़ा-सा कोण वन जायगा जो अर्द्धशनि-क्षेत्र तथा सम्पूर्ण गुरु-क्षेत्र को घेरे रहेगा। ऐसा कोण जिस जातक के हाथ में हो, वह बाल्यावस्था से ही घर छोडकर वीतरागी महात्मा हो जाता है तथा अनेक विद्याओ में निपुण भी होता है।

चित्र २७१—यदि उक्त कोण वाली शनि-क्षेत्रस्थ खडी रेखा मध्यमा उगली के मूल का स्पर्श कर रही हो तथा हृदय-रेखा गुरु-क्षेत्र को पार करके हथेली के वाहर चली गई हो तो ऐसी रेखा वाले व्यक्ति को अकस्मात् ही आत्मबोध प्राप्त होता है, जिसके कारण वह अपने गुरु को भी त्याग कर तपस्या में निरत हो जाता है और अदृश्य रूप से जन-कल्याण करता रहता है। इसके लिए मस्तिष्क-रेखा का परिपुष्ट होना भी अवश्यक है।
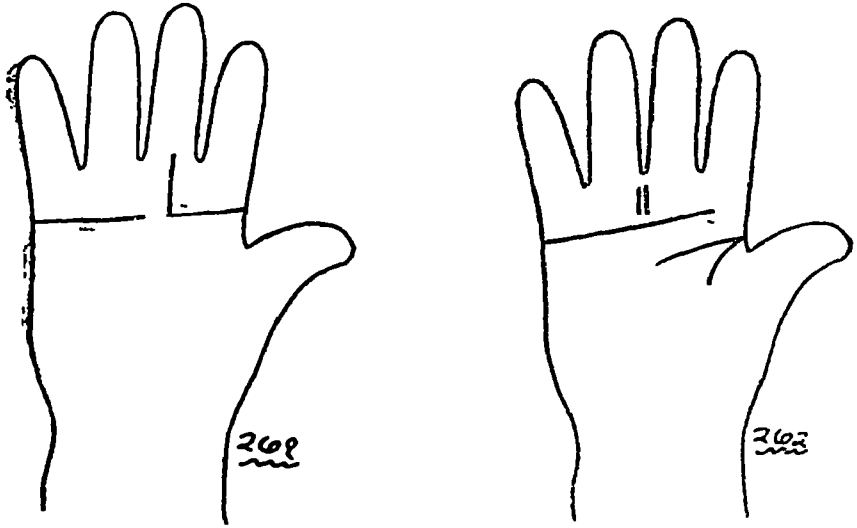
चित्र २७२—यदि सूर्य-क्षेत्र तथा शनि-क्षेत्र के बीच दो ऐसी शुद्ध तथा सरल-खडी रेखाए हों जो हृदय-रेखा का स्पर्श न करती हों तो ऐसी रेखा वाले जातक को वृद्धावस्था मे सुख प्राप्त होता है। उसकी पत्नी की मृत्यु ४० वर्ष की आयु मे हो जाती है और वह परिश्रमी, स्वस्थ तथा खेतो से अधिक धन प्राप्त करने वाला होता है।

चित्र २७३—यदि पूर्वोक्त शनि-क्षेत्र तथा सूर्य-क्षेत्र के बीच खडी हुई दो सरल रेखाए हृदय-रेखा का स्पर्श कर रही हो तो जातक को पूर्वोक्त शुभ प्रभाव तो प्राप्त होता ही है, साथ ही वह पहली पत्नी की मृत्यु के पश्चात् अपनी चालीस वर्ष की आयु मे भी दूसरा विवाह कर लेता है, जिसके कारण उसके वैवाहिक-जीवन के सुख मे कोई बाधा नही होती।

चित्र २७४—यदि शनि-क्षेत्र पर अनेक छोटी-छोटी रेखाए हो जोकि आदि-अन्त मे कुछ बड़ी तथा बीच मे छोटी हों तो ऐसी रेखाओं

२७३ २७४

वाला जातक दरिद्र, व्यभिचारी, कामुक तथा दुर्गुणी होता है। ये रेखाए जितनी अधिक सख्या मे होगी जातक का दुर्भाग्य भी उतना ही अधिक होगा।

चित्र २७५—यदि छोटी-छोटी रेखाओं के मेल से शनि-क्षेत्र पर
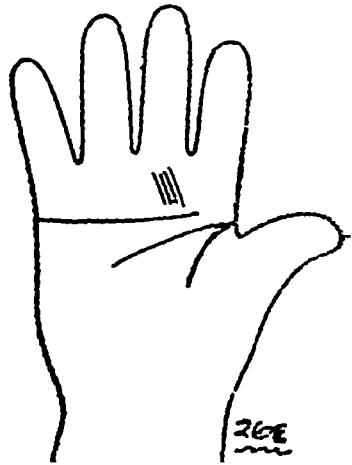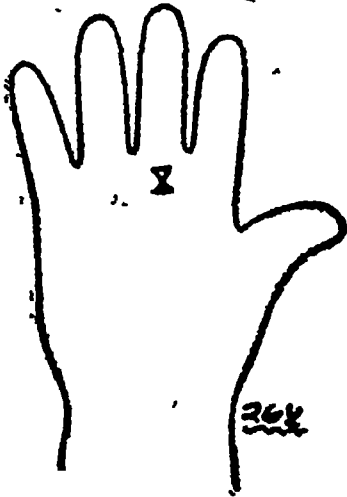
'डमरू' जैसी आकृति वन जाय तो यह चिन्ह जातक के लिए सौभाग्य-कारक तथा शुभ-सूचक होता है।

चित्र २७६—यदि शनि-क्षेत्र पर कुछ स्पष्ट तथा टेढ़ी रेखाएं दिखाई दे तो जातक आलसी, निरुद्यमी, हृदय तथा श्वास रोगी एवं अपने कार्यों मे असफलता प्राप्त करने वाला होता है।

चित्र २७७—यदि उक्त प्रकार की शनि-क्षेत्र से उत्पन्न टेढी रेखाएं हृदय-रेखा से मिल रही हों तो ऐसी रेखाए जातक के जीवन पर अपना और भी अधिक बुरा प्रभाव डालती है।
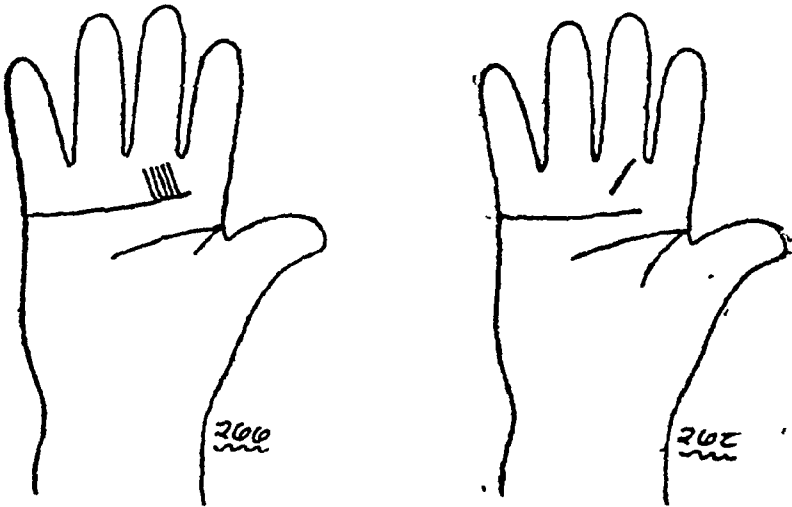
चित्र २७८—यदि जातक की मध्यमा उगली के मूल मे एक टेढी रेखा हो तो वह आचार-विचारशून्य तथा चिन्ता, क्लेश एवं उद्वेग से युक्त रहता है। लोक मे ऐसी रेखा वाले जातक को निन्दा भी सहन करनी पडती है। यदि यह रेखा छिन्न-भिन्न हो तो जातक को रोग, मान-हानि अथवा रेल यात्रा का कष्ट भी भोगना पड़ता है।

चित्र २७९—यदि शनि-क्षेत्र से चलकर एक गहरी तथा छोटी रेखा सूर्य-क्षेत्र पर पहुंच रही हो तो ऐसी रेखा वाला जातक धनवान्, भोगी, अच्छे मित्रो से युक्त, परन्तु बुद्धिहीन तथा पाप-बुद्धि होता है । ऐसा व्यक्ति शत्रुओ से पीडित रहता है तथा अपने भले-बुरे का विचार भी नही कर पाता ।
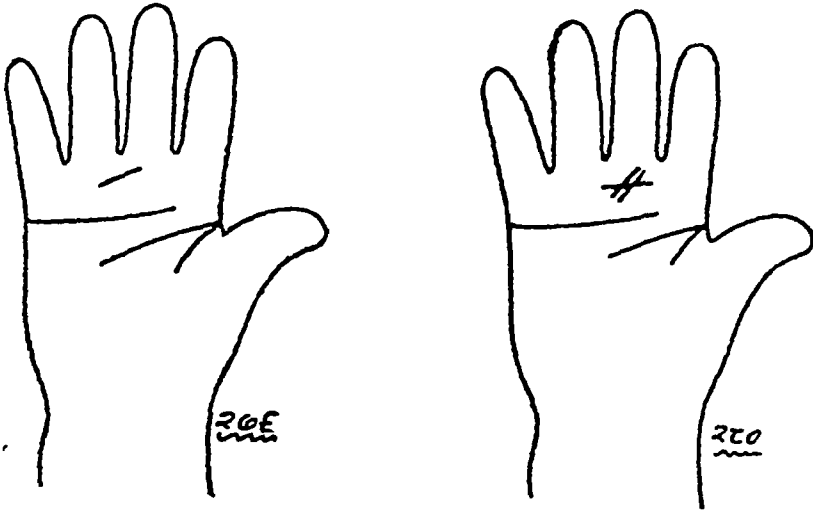
चित्र २८०—यदि शनि-क्षेत्र पर खड़ी हुई दो टेढी रेखाओ को एक सरल रेखा काट रही हो तो ऐसा जातक बन्धु-बांधवो से युक्त, धनी, विलासी, बुद्धिमान् तथा सौभाग्यशाली होते हुए भी संग्रहणी रोग का शिकार बना रहता है । उसकी स्त्री सुन्दर, विलासिनी, श्रेष्ठ, प्रिय-भाषीणी तथा धन का सग्रह करने वाली होती है ।

चित्र २८१—यदि हृदय-रेखा शनि-क्षेत्र के समीप छिन्न-भिन्न हो गई हो तो ऐसी रेखा वाला जातक मूर्ख, चचल तथा राज्य एव शत्रुओ के भय से भोत रहता है । उसके व्यवसाय मे भी लोग विश्वासघात द्वारा हानि पहुचाते हैं ।
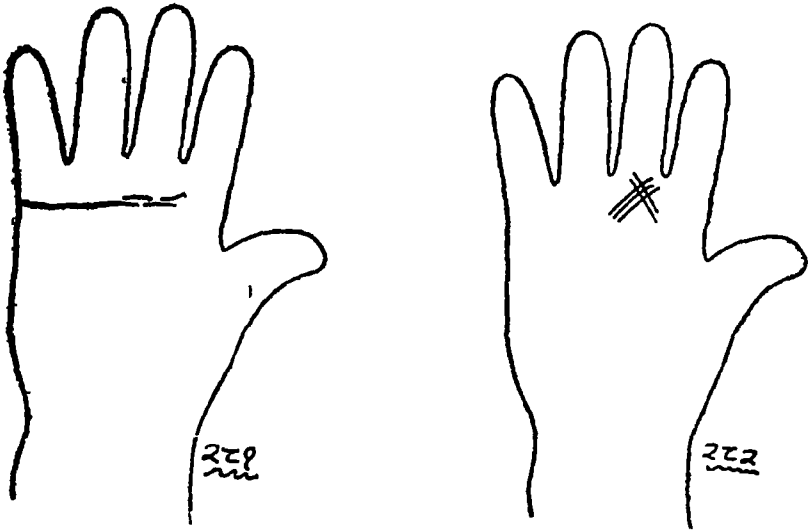
चित्र २८२—यदि शनि-क्षेत्रस्थ तीन तिरछी रेखाओ को मध्यमा अगुली के मूल के समीप दो रेखाए काट रही हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक प्लीहा, कब्ज तथा बवासीर आदि रोगो से ग्रस्त रहता है और उसे कभी जेल-यात्रा भी करनी पडती है। परन्तु ऐसी रेखाओ वाली स्त्री केवल व्यभिचारिणी होती है।

चित्र २८३—यदि शनि-क्षेत्र से निकली हुई एक स्पष्ट तथा सरल-रेखा जीवन-रेखा के समीप जा पहुचे तो ऐसी रेखा वाला जातक उच्चपदाधिकारी, राज्य द्वारा सम्मानित, यशस्वी तथा उन्नतिशील होता है। उसे अपने मामा से अथवा ससुराल पक्ष से बहुत अधिक धन भी प्राप्त होता है। वह कुटुम्बवान् तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चित्र २८४—'शनि-मुद्रिका' का विस्तृत वर्णन पिछले खण्ड मे किया जा चुका है। यदि किसी जातक के हाथ मे शनि-मुद्रिका हो और उसे
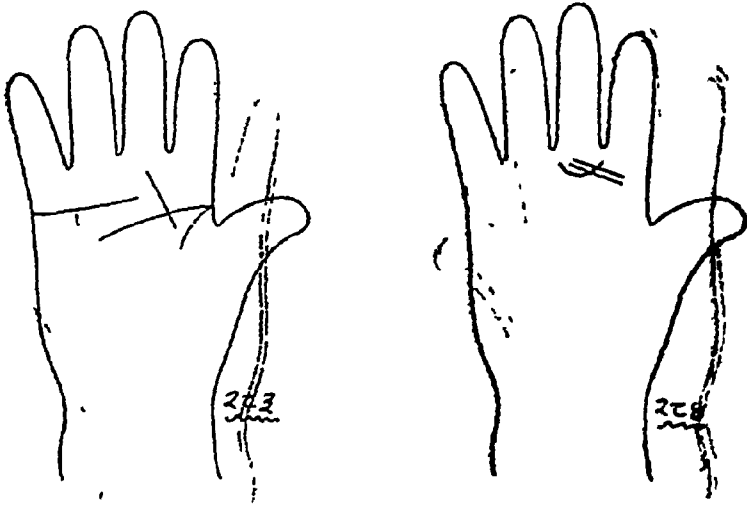
काटती हुई दो आड़ी रेखाए बृहस्पति-क्षेत्र पर पहुच रही हो तो ऐसी रेखा वाला जातक व्यसनी, धूर्त, दरिद्र एव चिन्तातुर होता है। ऐसे लोगो की मृत्यु उनको अपनी ही हठ के कारण होती है। उन्हे स्त्री-पुत्र, बन्धु-बान्धवादिक का सुख भी प्राप्त नही होता।

चित्र २८५—शनि-क्षेत्र पर मध्यमा अगुली के मूल से निकली हुई एक खडी रेखा को यदि कई छोटी-छोटी आडी रेखाए काट रही हों तो ऐसी रेखाओ वाले जातक को वृद्धावस्था मे दुःख प्राप्त होता है। अपने सम्पूर्ण जीवन काल मे भी यह चिन्तित, दुःखी एव दरिद्र बना रहता है।

चित्र २८६—यदि मध्यमा अगुली के मूल मे दो छोटी तथा सरल रेखाएं शनि-क्षेत्र पर हो तो ऐसा जातक अत्यन्त परिश्रमी, उद्यमी तथा दृढ सकल्प वाला होता है। वह अनेक प्रकार से धनोपार्जन तथा सुखी-जीवन व्यतीत करता है।
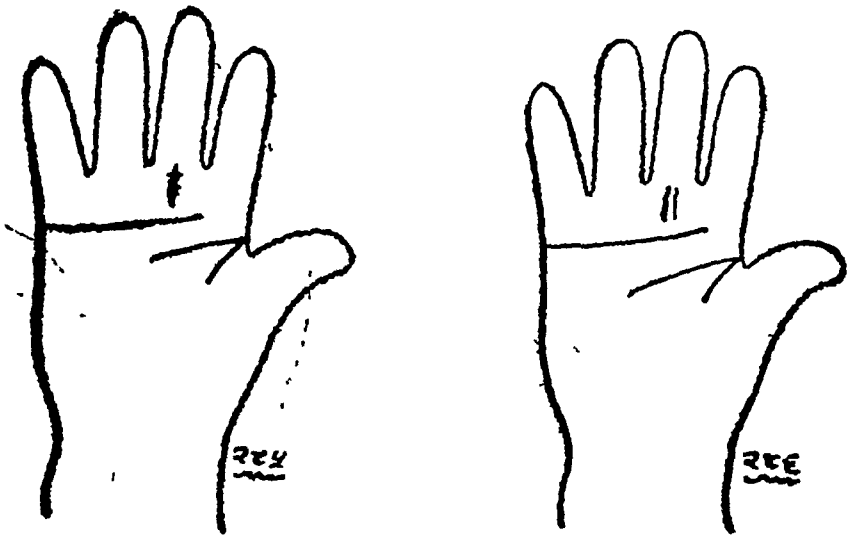
चित्र २८७—यदि मध्यमा अंगुली के मूल से निकली हुई शनि-क्षेत्र पर पूर्वोक्त दो रेखाएं हों और उनमें एक सरल और निर्दोष तथा दूसरी छिन्न-भिन्न हो तो ऐसी रेखाओं वाला जातक दु खी एवं चिन्तित बना रहता है तथा अपने प्रत्येक कार्य मे कुछ-न-कुछ कमी छोड़ देता है।

चित्र २८८—यदि पूर्वोक्त मध्यमा अंगुलो से निकलकर शनि-क्षेत्र पर आई हुई दो रेखाओं को दो अन्य रेखाएं काट दें, जिसके कारण छोटा-सा जाल चिन्ह जैसा बन जाय तो ऐसी रेखाओ वाला जातक शूल रोगी, कठोर तथा व्याकुल-चित्त वाला होता है।

चित्र २८९—यदि मध्यमा अगुली के मूल से तीन रेखाए निकलकर शनि-क्षेत्र पर आई हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक वात-रोग ग्रस्त, विषयानुरागी, मिथ्या भाषी, निर्धन, कुटुम्बीजनो का अप्रिय, दु खी
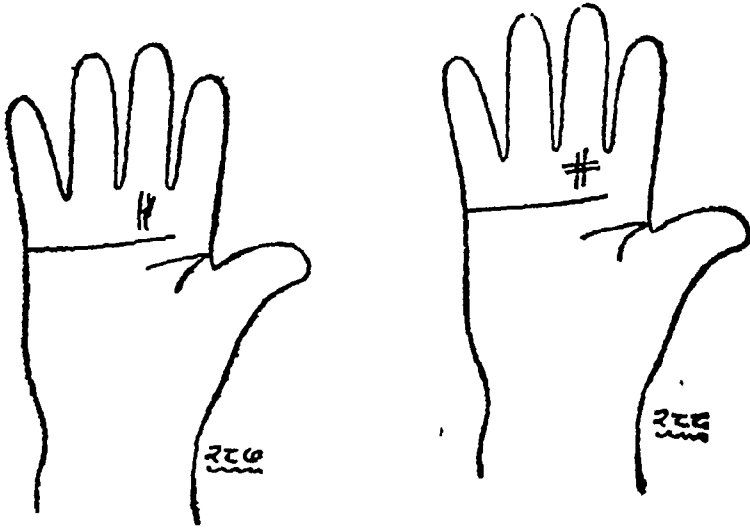
तथा शत्रुओ से पीड़ित होता है। उसका व्यवसाय भी सामान्य कोटि का होता है।
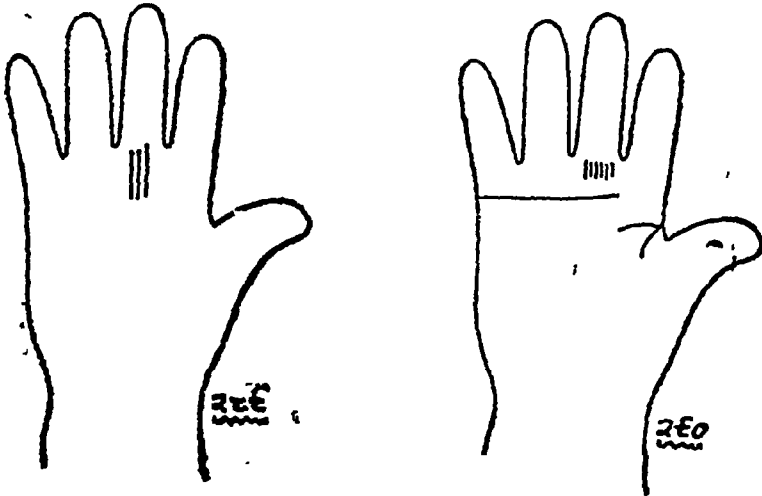
चित्र २९०—यदि शनि-क्षेत्र पर छोटी-छोटी छ निर्दोष रेखाए हो तो ऐसा जातक सुख-हीन, शकालु, चिन्तित, निरुत्साही तथा दु खी होता है। उसके मस्तक मे किसी चोट लगने तथा पूर्व-स्मृतियो को भूल जाने की आशका भी बनी रहती है।

चित्र २९१—यदि शनि और गुरु-क्षेत्र के बीच तीन छोटी, स्पष्ट तथा निर्दोष रेखाए हो और वे हृदय-रेखा को स्पर्श न करती हो तो ऐसा जातक धनवान्, बुद्धिमान्, शास्त्रज्ञ, हसमुख, व्यवसायी, यशस्वी, धैर्यवान् तथा समस्त सुख-सम्पत्तियो से युक्त होता है।
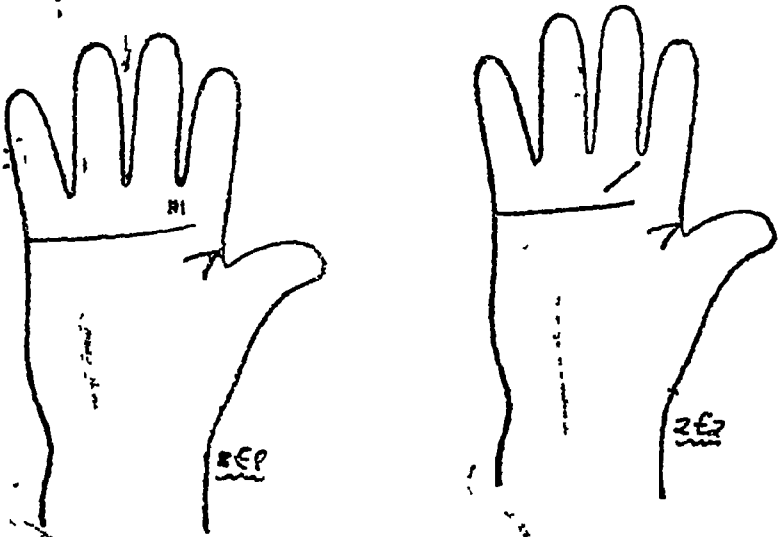
चित्र २९२—यदि शनि तथा गुरु-क्षेत्र के बीच से एक छोटी, सरल, स्पष्ट तथा निर्दोष रेखा निकलकर शनि-क्षेत्र पर पहुंचे तो ऐसी रेखा वाला जातक कोई उच्चाधिकारी, मन्त्री, जननेता, धनी, सुलेखक, अत्यन्त यशस्वी तथा सर्व सुख-सम्पत्ति सम्पन्न होता है।

टिप्पणी—(१) 'शनि-मुद्रिका' का विस्तृत वर्णन 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के 'स्वास्थ्य-रेखा' नामक खण्ड मे किया जा चुका है।

(२) मध्यमा अगुली पर स्थित रेखाओ का वर्णन इसी पुस्तक के एक अगले प्रकरण मे किया गया है।

(३) शनि क्षेत्रस्थ क्रास, नक्षत्र, यत्र आदि चिन्हो के प्रभाव का विस्तृत वर्णन 'वृहद् सामुदिक विज्ञान' के 'हस्त-चिह्न-विचार' नामक अगले खण्ड मे किया गया है।

सूर्य-क्षेत्रीय रेखाएं

अनामिका अगुली के नीचे रवि अर्थात् सूर्य-क्षेत्र की अवस्थिति है। मुख्य सूर्य-रेखा तथा अन्य क्षेत्रो से इस क्षेत्र पर आने वाली रेखाओ के शुभाशुभ फल का वर्णन 'बृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के विभिन्न खण्डो मे यथास्थान किया जा चुका है। यहा पर हम सूर्य-क्षेत्र पर पाई जाने वाली अन्य प्रभाव-रेखाओ की स्थिति और फलाफल का वर्णन कर रहे हैं। प्रसगानुसार कुछ मुख्य रेखाओ तथा अन्य क्षेत्रो से सूर्य-क्षेत्र पर आने वाली कुछ शाखा रेखाओं के फलाफल की पुनरावृत्ति भी इस प्रकरण में कर दी गई है।

सूर्य-क्षेत्र पर पाई जाने वाली प्रभाव-रेखाओ के सम्बन्ध मे प्राच्य ग्र थों मे बहुत कम विवरण उपलब्ध होता है, परन्तु पाश्चात्य विद्वानो ने प्रभाव-रेखाओ के फलाफल का कुछ अधिक वर्णन किया है। यहा पर दोनो ही मतों का एकीकरण करते हुए उनके सारांश को प्रस्तुत किया जा रहा है। पाठको की सुविधा के लिए सूर्य-क्षेत्रीय प्रभाव-रेखाओ की प्रत्येक स्थिति के चित्र भी विवरण के साथ ही दे दिये गए है।

चित्र सख्या २६३ में सूर्य-क्षेत्रीय प्रभाव-रेखाओ के विभिन्न रूपों को प्रदर्शित किया गया है।
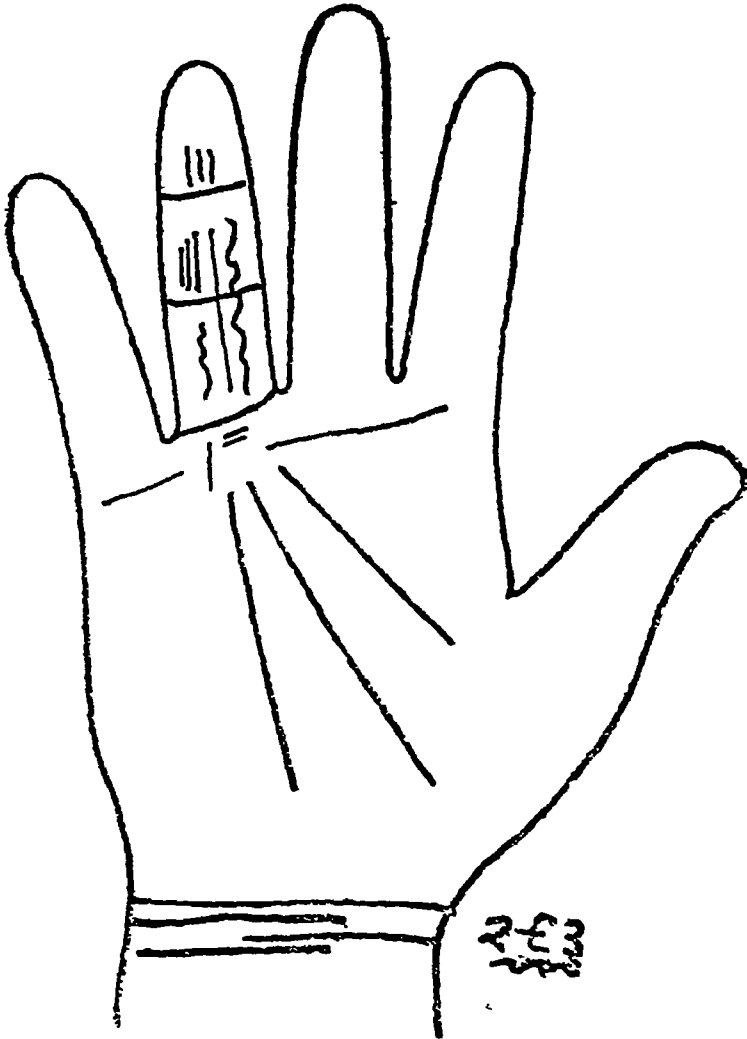
[सूर्य-क्षेत्रीय प्रभाव-रेखाओं की विभिन्न स्थितियां]

चित्र २६४—यदि सूर्य-क्षेत्र पर एक छोटी, सरल, स्पष्ट तथा निर्दोष खड़ी रेखा हो तो जातक बहुत धनी तथा यशस्वी होता है।
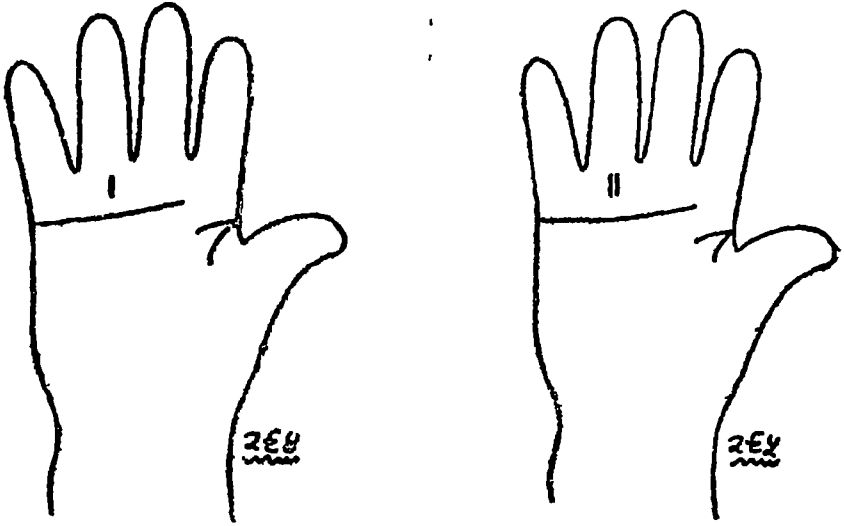
चित्र २६५—यदि सूर्य-क्षेत्र पर दो छोटी, सरल, स्पष्ट तथा निर्दोष खड़ी रेखाए हो तो जातक अपनी बुद्धि को दो ओर लगाने के कारण विशेष सफलता प्राप्त नही कर पाता, परन्तु कुछ विद्वानो के मतानुसार दो खड़ी रेखाओ वाला व्यक्ति अत्यधिक धनवान होता है। कुछ विद्वानो के मतानुसार उक्त दो रेखाओ मे से एक मुख्य तथा दूसरी सहायिका रेखा हो तो उनका फल शुभ तथा सौभाग्यकारक होता है।

चित्र २६६—यदि सूर्य-क्षेत्र पर कई छोटी, शुद्ध, सरल तथा निर्दोष खड़ी रेखाएं हो तो जातक का मन किसी एक काम मे स्थिर नही हो पाता, फलतः वह अपने विचार तथा कार्य-क्षेत्र को वार-बार बदलता रहता है, जिसके कारण उसे सफलता प्राप्त नही हो पाती।
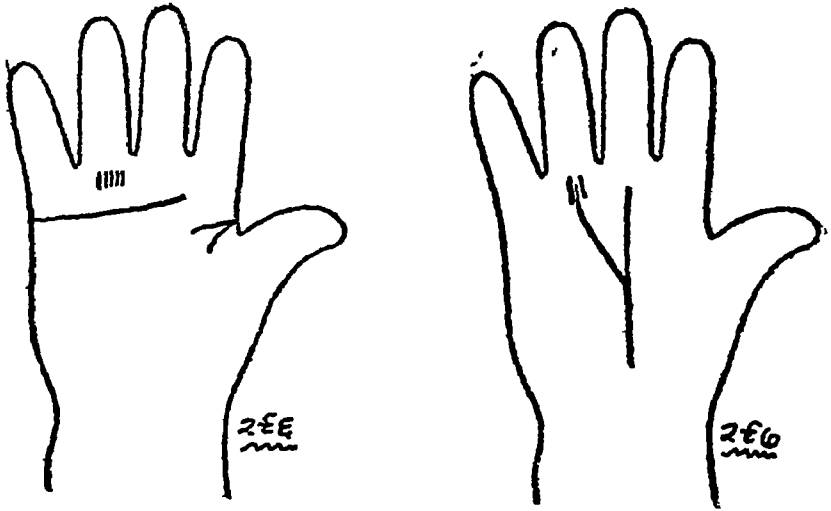
ऐसी रेखाओं वाला व्यक्ति कलाकार, व्यवसायी अथवा वैज्ञानिक—कुछ भी नही वन पाता ।

चित्र २९७—यदि सूर्य-क्षेत्र पर दो छोटी खडी रेखाए हो तथा भाग्य-रेखा के मध्य भाग मे से निकलकर एक शाखा रेखा इन दोनो छोटी रेखाओ के वीच मे आकर स्थित हो गई हो तो जातक अत्यन्त धनी, प्रतिष्ठित तथा जीवन के अनेक क्षेत्रो मे सफलता प्राप्त करने वाला होता है ।

चित्र २९८—यदि आयु-रेखा में से कोई शाखा-रेखा निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर पहुच रही हो तो जातक धनवान तथा भाग्यशाली होता है ।

चित्र २९९—यदि मस्तक-रेखा में से निकलकर कोई रेखा सूर्य-क्षेत्र पर पहुंच रही हो तो जातक की दिमागी शक्ति तेज होती है और वह भाग्यवान तथा यशस्वी होता है ।
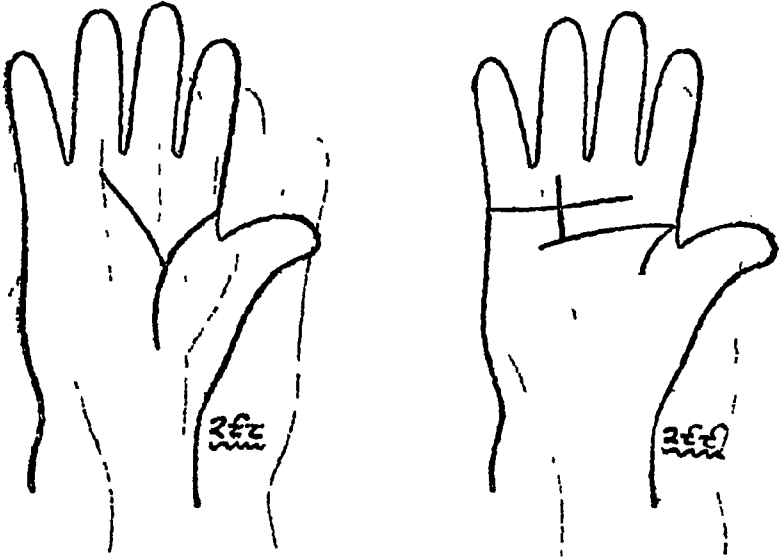
चित्र ३००—यदि हृदय-रेखा मे से एक या अधिक शाखाए निकल-कर सूर्य-क्षेत्र पर पहुच रही हो तो जातक अत्यधिक भाग्यवान् होता है ।
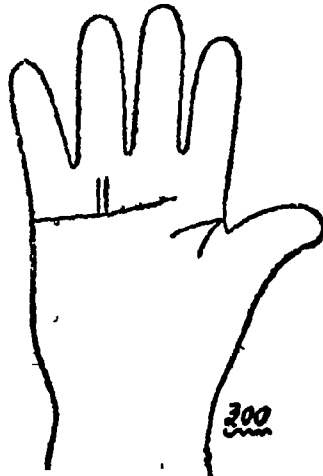
टिप्पणी—(१) सूर्य-क्षेत्र पर पहुंचने वाली 'सूर्य-रेखा' की विभिन्न स्थितियो और उसके प्रभाव का विस्तृत वर्णन 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के 'सूर्य-रेखा' नामक खण्ड में किया जा चुका है। उसी खण्ड मे सूर्य पर पाये जाने वाले विविध चिन्हो के प्रभाव का भी वर्णन किया गया है। जो पाठक सूर्य-रेखा के प्रभाव के सम्बन्ध में अधिक जानकारी प्राप्त करना चाहे, वे उक्त खण्ड का अध्ययन करें।

(२) अनामिका अंगुली पर पाई जाने वाली रेखाओ का वर्णन इसी पुस्तक के एक अगले प्रकरण मे किया गया है।

(३) सूर्य-क्षेत्र पर पाये जाने वाले द्वीप, क्रास, जाल, नक्षत्र आदि चिन्हो के प्रभाव के विषय मे सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करने के लिए 'वृहद् सामुदिक विज्ञान' का 'हस्त-चिन्ह-विचार' नामक अगला खण्ड पढ़े।

●

बुध-क्षेत्रीय रेखाएं

कनिष्ठा अगुली के नीचे बुध-क्षेत्र की अवस्थिति है। इस क्षेत्र पर पाई जाने वाली मुख्य रेखाए 'विवाह-रेखा' तथा सन्तान-रेखाए हैं, जिनका विस्तृत वर्णन 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के विवाह-रेखा खण्ड मे किया जा चुका है। 'स्वास्थ्य-रेखा' की समाप्ति बुध-क्षेत्र पर मानी गई है—उसका विशुद्ध वर्णन भी स्वास्थ्य-रेखा खण्ड मे हो चुका है। बुध-क्षेत्र पर समाप्त होने वाली अन्य रेखाओ के शुभाशुभ फल का वर्णन अन्य खण्डों मे यथास्थान किया गया है। यहा पर हम बुध-क्षेत्र पर पाई जाने वाली अन्य प्रभाव-रेखाओ की स्थिति और उनके फलाफल का वर्णन कर रहे है। प्रसगानुसार बुध-क्षेत्र पर पाई जाने वाली तथा इस क्षेत्र पर आकर समाप्त होने वाली कुछ अन्य रेखाओ के फलाफल की पुनरावृत्ति भी इस प्रकरण मे कर दी गई है।

बुध-क्षेत्र पर पाई जाने वाली प्रभाव-रेखाओ के सम्बन्ध मे प्राच्य ग्रथो मे बहुत कम विवरण उपलब्ध होता है, जबकि पाश्चात्य विद्वानो ने इन प्रभाव-रेखाओ के फलाफल का बहुत अधिक वर्णन किया है। यहा पर दोनो ही मतो का एकीकरण करते हुए उनके साराश को प्रस्तुत किया जा रहा है। पाठकों को सुविधा के लिए बुध-क्षेत्रीय प्रभाव रेखाओ की प्रत्येक स्थिति के चित्र भी विवरण के साथ ही दे दिये गए है।

चित्र सख्या ३०१ मे बुध-क्षेत्रीय प्रभाव-रेखाओ के विभिन्न रूपो को प्रदर्शित किया गया है।
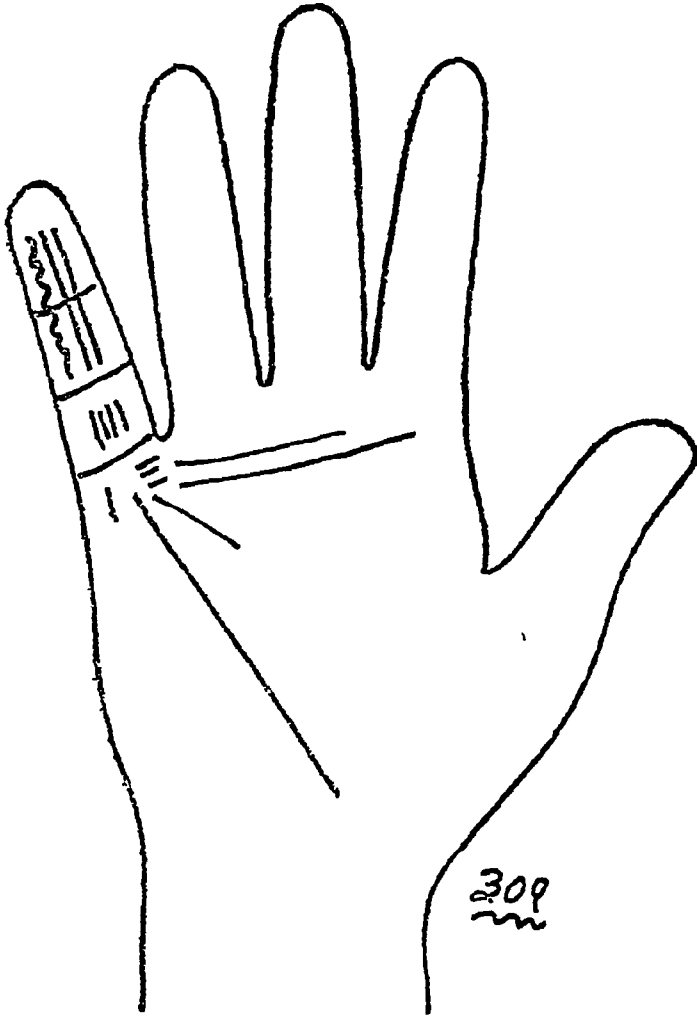
[बुध-क्षेत्रीय प्रभाव-रेखाओ की विभिन्न स्थितिया]

चित्र ३०२—यदि बुध-क्षेत्र पर एक सरल, स्पष्ट, निर्दोष तथा छोटी खड़ी रेखा हो तो जातक बहुत धनवान्, बुद्धिमान् तथा यशस्वी होता है। यदि बुध का पर्वत उन्नत हो तो ऐसी रेखा का शुभ प्रभाव और अधिक बढ जाता है। उस स्थिति में जातक कुशाग्र बुद्धि, मधुर भाषी, विनम्र, उदार, परोपकारी, जन-सेवी, शान्त तथा प्रेमी प्रकृति का होता है।
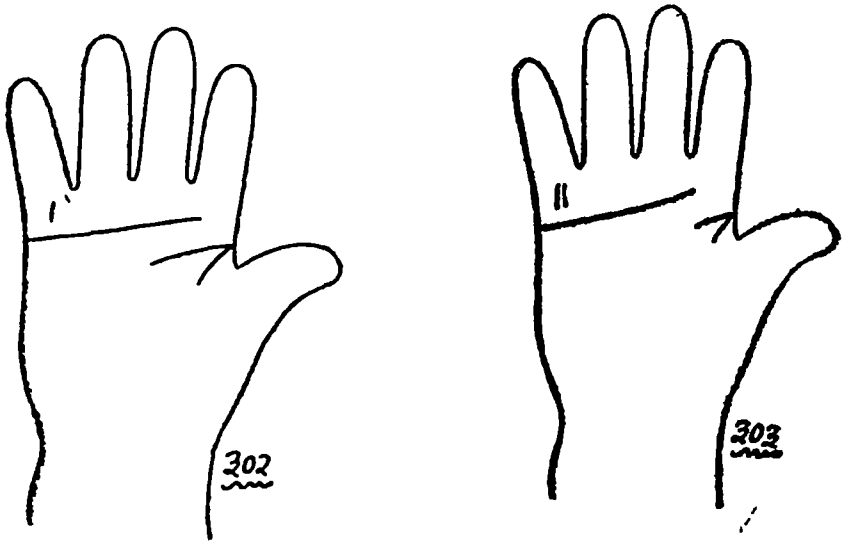
चित्र ३०३—यदि बुध-क्षेत्र पर दो सरल, छोटी तथा निर्दोष खड़ी रेखाए हो तो जातक अपनी बुद्धि, ध्यान तथा शक्तियो को दो दिशाओं मे लगाता है, जिसके कारण उसे सफलता या तो कम मिलती है अथवा बिल्कुल ही नही मिलती, परन्तु कुछ विद्वानो के मत से ऐसी दो रेखाओ वाला जातक विद्वान्, विवेकी, ज्ञानी तथा यशस्वी होता है और अपने कुटुम्ब के अधिकाश 'लोगो की स्वय द्वारा उपार्जित धन से सहायता करता है।

चित्र ३०४—यदि सूर्य-रेखा बुध-क्षेत्र पर आई हो और उसके समीप ही एक छोटी, सरल तथा निर्दोष खडी रेखा भी हो तो ऐसी रेखा सूर्य-रेखा की सहायिका बनकर अत्युत्तम फल प्रदान करती है। ऐसी रेखा वाला जातक व्यवसाय, धन, यश तथा अन्य सभी क्षेत्रो मे सफलता प्राप्त करता है।
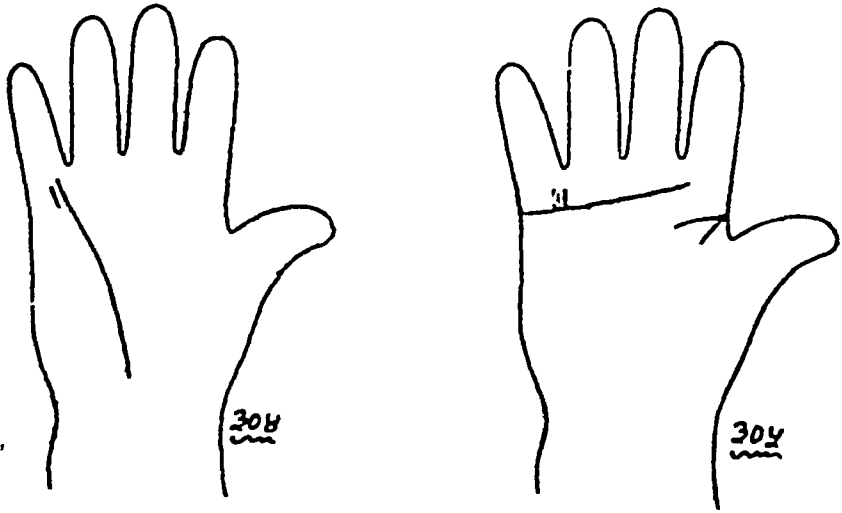
चित्र ३०५—यदि बुध-क्षेत्र पर दो से अधिक छोटी-छोटी खड़ी रेखाएं सूर्य-क्षेत्र के समीप हों और वे सब हृदय-रेखा का स्पर्श भी कर रही हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक वेदान्ती तथा आध्यात्मवादी दार्शनिक होता है।

चित्र ३०६—यदि बुध का पर्वत उन्नत हो और उस पर दो से अधिक छोटी-छोटी स्पष्ट रेखाए हो तो ऐसा पुरुष औषध सग्रह करने वाला या सुयोग्य चिकित्सक होता है। यदि किसी स्त्री के हाथ मे बुध-क्षेत्र पर ऐसी रेखाए हो तो वह नर्स अथवा धाय का काम करने वाली अथवा

चिकित्सिका (डाक्टर) भी हो सकती है अथवा उसका किसी चिकित्सक के साथ विवाह होता है ।
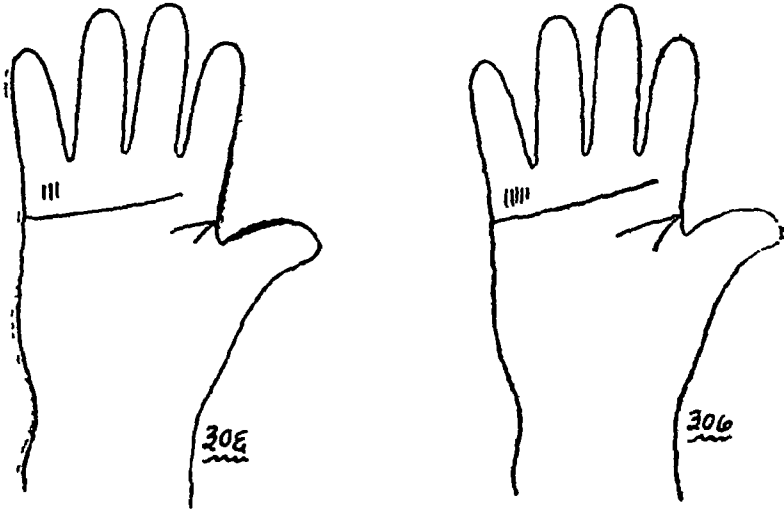
चित्र ३०७—यदि बुध के क्षेत्र पर अनेक छोटी-छोटी खड़ी रेखाएं गहरी दिखाई दे तो ऐसी रेखाओं वाला जातक बुद्धिमान्, विद्वान्, सुविचारी तथा पत्र-पत्रिकाओ एवं पुस्तको का अध्ययन करने में विशेष रुचि रखने वाला होता है।

चित्र ३०८—यदि बुध-क्षेत्र पर कोई आडी रेखा आई हो और उसके अग्रभाग पर द्वीप-चिन्ह हो तो ऐसी रेखा वाला जातक गुप्त चिन्ताओ से ग्रस्त बना रहता है ।

चित्र ३०९—यदि बुध-क्षेत्र पर छः से अधिक की सख्या मे अत्यन्त महीन छोटी-छोटी खड़ी रेखाएं हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक अत्यन्त चालाक प्रवृत्ति का होता है । यदि वह वैज्ञानिक हुआ तो अपने विज्ञान सम्बन्धी ज्ञान का दुरुपयोग करता है । यदि किसी स्त्री के हाथ में ऐसी रेखाएं हो तो वह बहुत बातूनी होती है ।
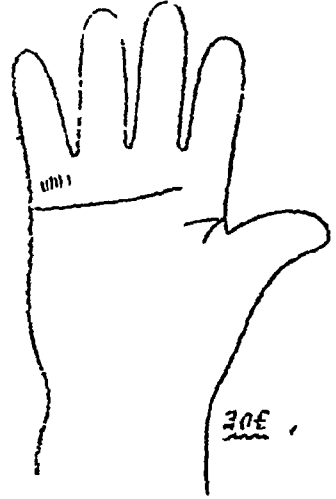
चित्र ३१०—यदि बुध-क्षेत्र पर एक गहरी आडी रेखा हो तो वह जातक के लिए द्रव्य-हानि की सूचक होती है। ऐसी रेखा वाले व्यक्ति के घर मे चोरी हो जाती है।
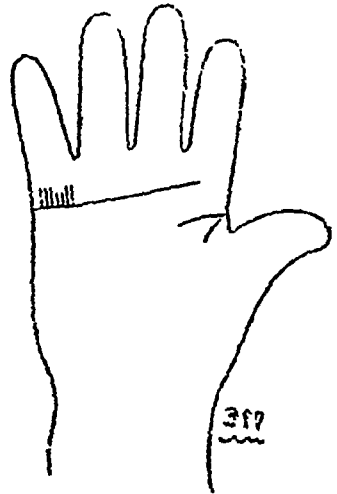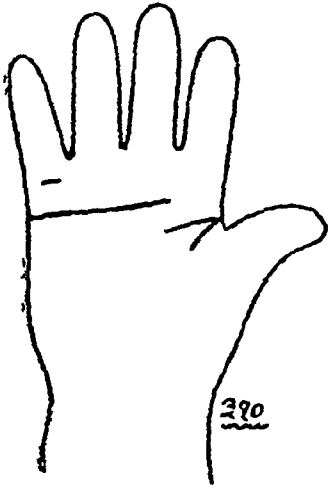
चित्र ३११—बुध-क्षेत्र पर छः से अधिक की संख्या मे अत्यन्त महीन खड़ी रेखाएं हो और वे हृदय-रेखा को स्पर्श भी कर रही हो तो जातक उदारता के आवेश मे अपने धन को बरबाद करता रहता है।

चित्र ३१२—यदि बुध-क्षेत्र पर तीन से अधिक स्पष्ट छोटी रेखाए हो और वे आपस के मिली हुई भी हों तो ऐसी रेखाओ वाला जातक बुद्धिमान्, गृह-प्रबन्ध मे निपुण, घनोपार्जन मे निरन्तर लगा रहने वाला, व्यवसाय-कुशल तथा चचल प्रकृति का होता है।
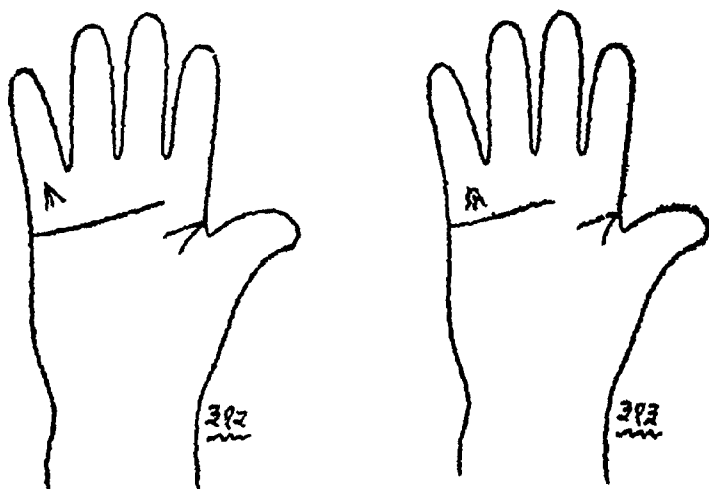
चित्र ३१३—यदि पूर्वोक्त प्रकार की बुध-क्षेत्रीय छोटी रेखाएं लहरदार तथा टेढी-मेढी हो तो ऐसे जातक को जीवन मे कई बार कष्टों का सामना भो करना पड़ता है। उसे रक्त विकार तथा जीर्ण-ज्वर आदि बीमारियां भी होतो है।

चित्र ३१४—यदि पूर्वोक्त बुध-क्षेत्रस्थ छोटी तथा लहरदार रेखाओं

के मिलने से कोई द्वीप-चिन्ह भी बनता हो तो ऐसे जातक को अकाल-मृत्यु का भय रहता है और उसके पानी मे डूब मरने की सम्भावना रहती है।
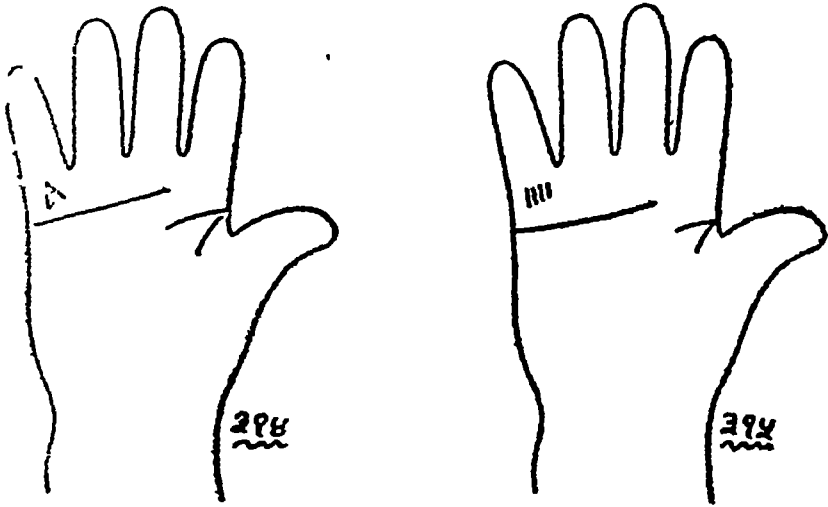
चित्र ३१५—यदि किसी स्त्री के हाथ पर तीन से अधिक सीधी, शुद्ध, स्पष्ट तथा छोटी खड़ी रेखाएं हो तो वह नर्स अथवा धाय का काम करती है और उसका अपने पति से विरोध रहता है। ऐसी रेखाओ वाली स्त्री व्यभिचारिणी तथा विवाह से पूर्व ही माता बन जाने वाली भी होती है, परन्तु धनोपार्जन मे वह अत्यन्त कुशल होती है।

चित्र ३१६—यदि बुध-क्षेत्र पर सर्पाकृति की ऊची-नीची छोटी-टेढ़ी रेखा हो तो ऐसा जातक कृतघ्न, धूर्त, दुष्ट, अहंकारी, बन्धु-बान्धव तथा माता-पिता का द्वेषी, झगड़ालू, चोर, क्रोधी, व्यभिचारी तथा अन्य दुर्गुणो की खान होता है। वह राजदण्ड के भय से वर्षो तक अज्ञात वास भी करता है। ऐसी रेखा वाला व्यक्ति कोई स्थायी

व्यवसाय नही कर पाता और उसे सन्तान का सुख भी अल्प मात्रा मे प्राप्त होता है।
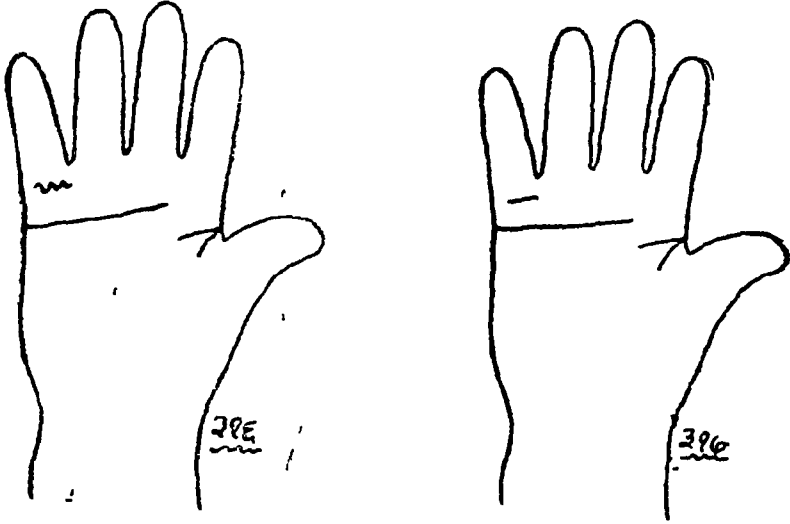
चित्र ३१७—यदि पूर्वोक्त आड़ी रेखा सर्पाकार न होकर सीधी हो तो ऐसा जातक छली, कपटी, क्रोधी तथा व्यभिचारी होते हुए भी माता-पिता के प्रति श्रद्धावान् होता है। उसकी पत्नी रुग्णा बनी रहती है और वह नपु सक पुत्र को जन्म देकर मर जाती है।

चित्र ३१८—यदि बुध-क्षेत्र पर एक असलग्न रेखा हो अर्थात् वह कही मोटी, कही पतली, कही शुद्ध और विलुप्त-सी दिखाई दे तो ऐसी रेखा वाला जातक रोगी, अपव्ययी, चिन्तातुर, व्यसनी, अपयशी तथा यात्रा-काल मे कष्ट प्राप्त करने वाला होता है।

चित्र ३१९—यदि बुध-क्षेत्र से आरम्भ होकर एक रेखा मस्तक-रेखा के समीप आकर रुक जाय और वह सरल, निर्दोष, पतली तथा स्पष्ट हो तो ऐसा जातक वस्त्राभूषण, भोजन आदि का सुख प्राप्त करने वाला तथा बुद्धिमान् होता है।
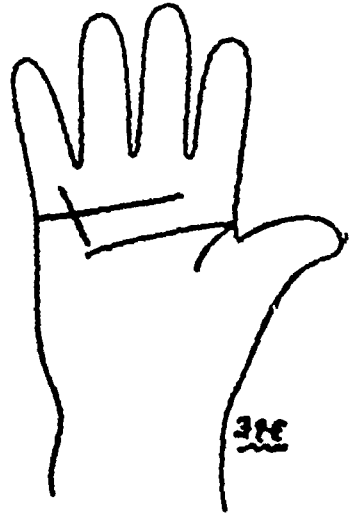
चित्र ३२० — यदि पूर्वोक्त बुध-क्षेत्र से आरम्भ हाने वाली महीन रेखा मस्तक-रेखा को पार करके आगे निकल गई हो तो ऐसी रेखा

के मिलने से कोई द्वीप-चिन्ह भी बनता हो तो ऐसे जातक को अकाल-मृत्यु का भय रहता है और उसके पानी में डूब मरने की सम्भावना रहती है।
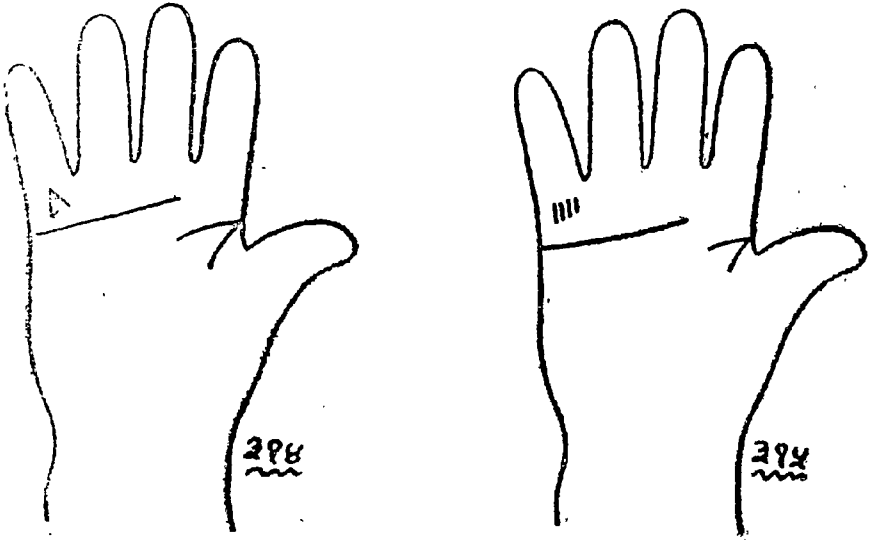
चित्र ३१५—यदि किसी स्त्री के हाथ पर तीन से अधिक सीधी, शुद्ध, स्पष्ट तथा छोटी खड़ी रेखाएं हों तो वह नर्स अथवा धाय का काम करती है और उसका अपने पति से विरोध रहता है। ऐसी रेखाओं वाली स्त्री व्यभिचारिणी तथा विवाह से पूर्व ही माता बन जाने वाली भी होती है, परन्तु धनोपार्जन में वह अत्यन्त कुशल होती है।

चित्र ३१६—यदि बुध-क्षेत्र पर सर्पाकृति की ऊंची-नीची छोटी-टेढ़ी रेखा हो तो ऐसा जातक कृतघ्न, धूर्त, दुष्ट, अहंकारी, बन्धु-बान्धव तथा माता-पिता का द्वेषी, झगड़ालू, चोर, क्रोधी, व्यभिचारी तथा अन्य दुर्गुणों की खान होता है। वह राजदण्ड के भय से वर्षों तक अज्ञात वास भी करता है। ऐसी रेखा वाला व्यक्ति कोई स्थायी

वह एक काम को पूरा किए विना ही दूसरे काम को हाथ मे ले लेता है, जिसके कारण उसे प्रत्येक काम में असफलता प्राप्त होती है।

चित्र ३२४—यदि वुध-क्षेत्र से उठकर कोई सरल, स्पष्ट तथा निर्दोप रेखा भाग्य-रेखा का स्पर्श करे और उसका रग गुलावी हो तो ऐसी रेखा वाला जातक शत्रु जयी, आमोद प्रिय, पराक्रमो तथा सौभाग्य-शाली होता है। उसे लाटरी अथवा पृथ्वी द्वारा अथवा पिता की मृत्यु के उपरान्त अकस्मात् ही अत्यधिक धन की प्राप्ति होती है।
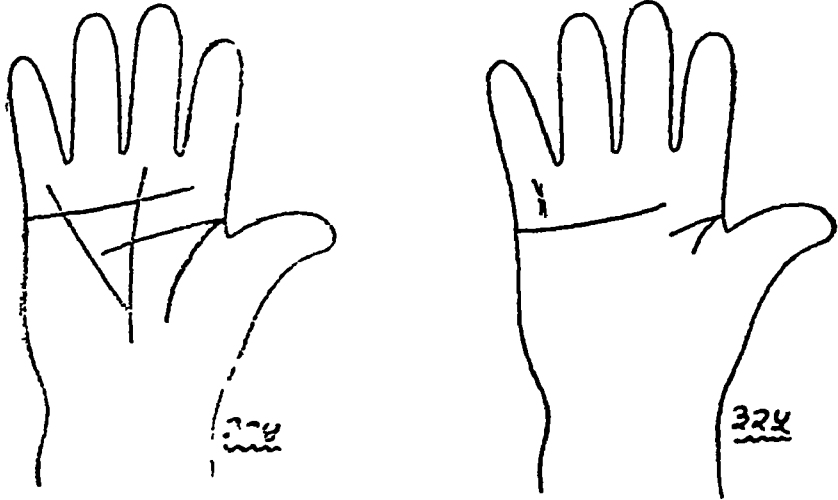
चित्र ३२५—यदि वुध-क्षेत्रीय रेखा छोटी-छोटी असंलग्न रेखाओं द्वारा वनी हो तो ऐसी रेखा वाला जातक दांत सम्वन्धी वीमारी का शिकार वनता है। इसके लिए शनि-क्षेत्र का उन्नत होना आवश्यक है। यदि रेखा इस प्रकार की ही हो और गुरु-क्षेत्र उन्नत हो तो सिर का ऑपरेशन होता है। यदि मंगल-क्षेत्र उन्नत हो तो जननेन्द्रिय का ऑपरेशन होता है। वुध-क्षेत्र उन्नत हो तो व्यवसाय मे असफलता
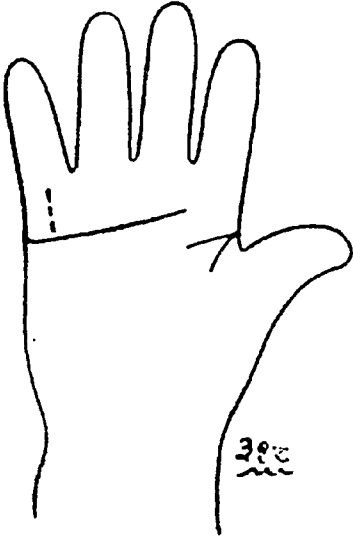
चित्र ३२० – यदि पूर्वोक्त बुध-क्षेत्र से आरम्भ होने वाली महीन रेखा मस्तक-रेखा को पार करके आगे निकल गई हो तो ऐसी रेखा
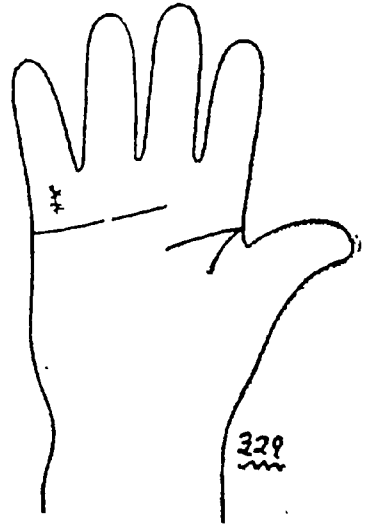
अल्प सन्तति-सुख वाला होता है। वह विदेश यात्रा मे कष्ट पाता है तथा उसकी पदावनति भी होती है। यदि किसी स्त्री के हाथ मे ऐसा चिह्न हो तो वह व्यभिचारिणी होती है।
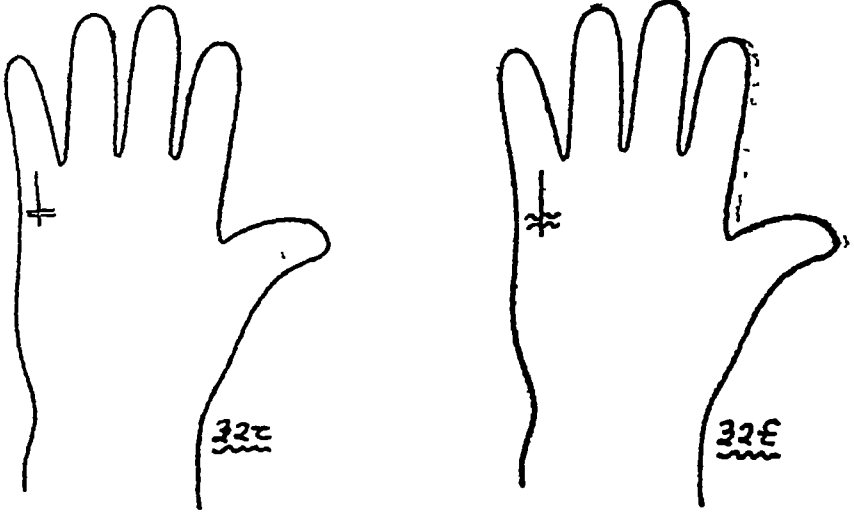
चित्र ३२९—यदि कनिष्ठा अगुली के मूल से निकलकर बुध-क्षेत्र पर आई हुई पूर्वोक्त रेखा को काटने वाली समानान्तर रेखाए सीधी न होकर लहरदार हो तो ऐसी रेखा वाला जातक विवेकहीन, दुर्बुद्धि, दम्भी, असन्तोषी, दुष्टो की सगति मे रहने वाला, कायर तथा औरों के साथ बुराई करने वाला होता है। वह अपना भला करने के लिए दूसरो का घर विगाड़ने मे नही चूकता।

चित्र ३३०—यदि कनिष्ठा अगुली के मूल से निकलो हुई दो सीधी समानान्तर रेखाओ को एक आड़ी तथा सरल रेखा काट रही हो तो जातक को प्रमेह तथा मूत्रकृच्छ्र आदि रोगो का शिकार होना पड़ता है। यदि स्त्री के हाथ मे ऐसी रेखा हो तो वह भी रुग्ण रहती है।
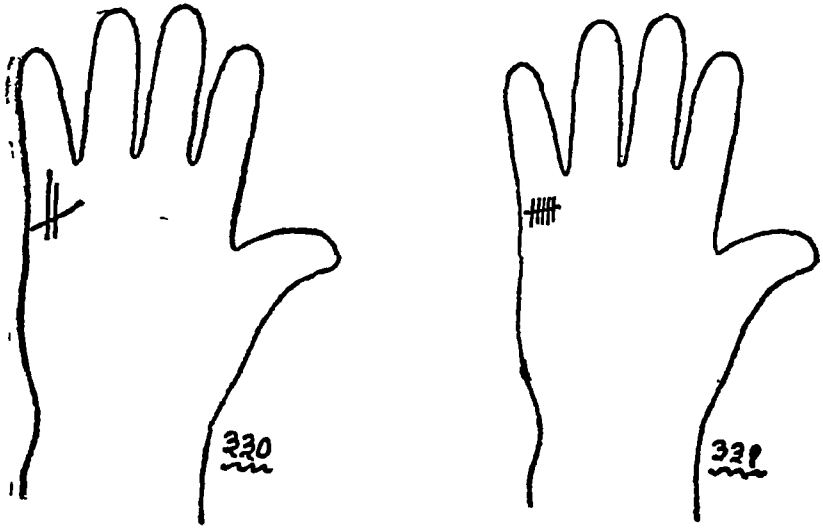
चित्र ३३१—यदि कनिष्ठा अगुली के मूल मे अनेक सीधी तथा छोटी-छोटी रेखाए हों और वे एक खड़ी रेखा द्वारा कट रही हो तो पुरुष जातक को बवासीर, भगन्दर तथा जननेन्द्रिय सम्बन्धी रोगो का शिकार होना पड़ता है। यदि स्त्री के हाथ मे ऐसी रेखाए हो तो वह व्यभिचारिणी, दरिद्र, क्रोधिन तथा अन्य दुर्गुणो से युक्त होती है।

चित्र ३३२—यदि कनिष्ठा अगुली के मूल मे अनेक टेढी-मेढी रेखाएं हो और उन्हे एक टेढी रेखा ही काट रही हो तो ऐसा पुरुष विधुर अथवा अविवाहित जीवन बिताने वाला होता है, परन्तु वह वेश्यागामी, पर-स्त्री-गामी तथा अगम्या स्त्रियो से भी व्यभिचार करने वाला होता है। उसे लोह-धातु सम्बन्धी व्यवसाय मे अत्यधिक धन भी प्राप्त होता है।

चित्र ३३३—यदि कनिष्ठा उगली के मूल मे तीन सीधी रेखाए हों तो ऐसा जातक उच्च-पद प्राप्त करने वाला, विजयी, बुद्धिमान्,
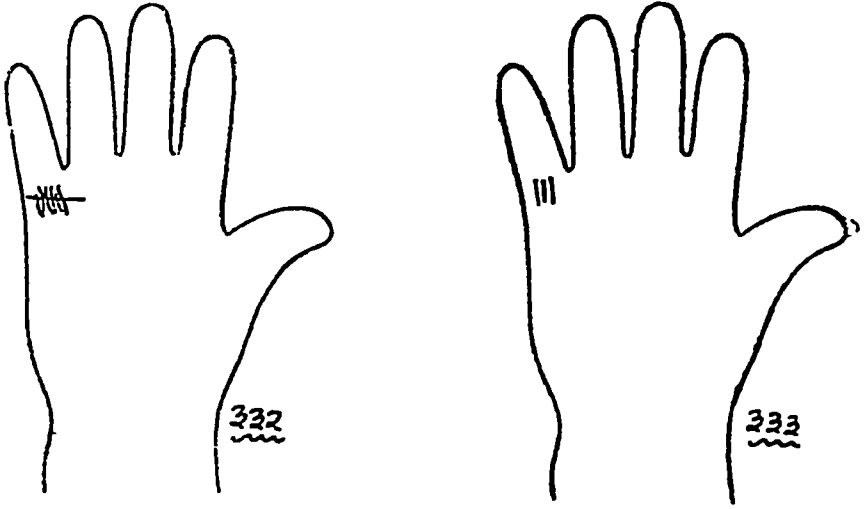
सम्पन्न, धनी तथा वाहनादि के सुख को प्राप्त करने वाला यशस्वी होता है। ये रेखाएं सरल तथा स्पष्ट हों तो जातक को पुत्र-लाभ भी कराती हैं।

चित्र ३३४—यदि बुध-क्षेत्र पर चूल्हे जैसे आकार की कोई रेखा हो तो ऐसी रेखा वाला जातक अहंकारी, हठी, दुर्बुद्धि, निर्धन, निर्दयी, कठोर, चचल, क्षुद्र तथा पापी होता है। यदि स्त्री के हाथ मे ऐसी रेखा हो तो वह कर्कशा, कुल्टा तथा व्यभिचारिणी होती है।

चित्र ३३५—यदि सूर्य-क्षेत्र के समीपवर्ती बुध-क्षेत्र पर एक लम्बी तथा कुछ तिरछी निर्दोष रेखा कनिष्ठा अगुली के मूल से निकलकर सूर्य-क्षेत्र की ओर गई हो और सूर्य-क्षेत्रस्थ निर्दोष सूर्य-रेखा से मिलकर कोण बनाती हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक विद्वान्, परदु खकातर, साहित्य-प्रेमी; धार्मिक, उदार, धनी तथा यशस्वी होता है। वह दूसरो का दुःख दूर करने के लिए स्वय भी दुःख उठा लेता है।
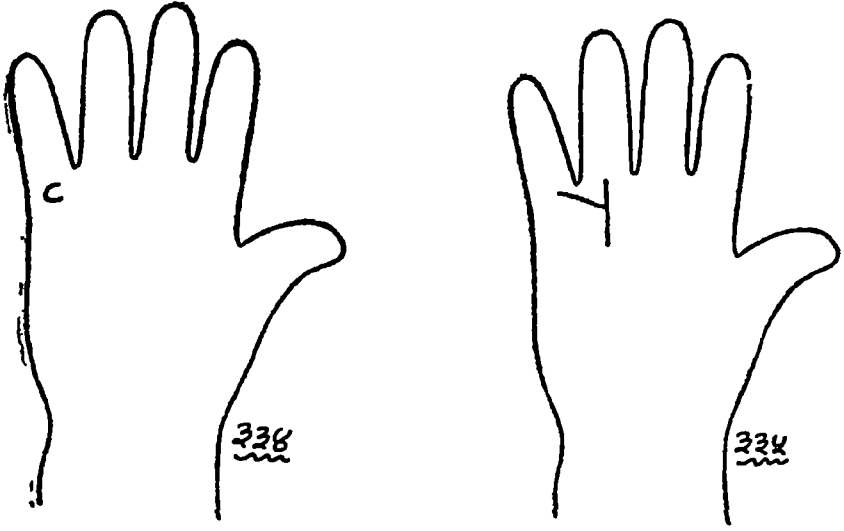
चित्र ३३६—यदि पूर्वोक्त दोनो रेखाए आगे बढकर एक-दूसरी से मिलकर 'क्रास-चिह्न' बनाए तो जातक बुद्धि-हीन, चिन्तित और कठोर स्वभाव का होता है। उसे भूमि सम्बन्धी झगडे लगते है तथा भाई-बन्धु, स्त्री-पुत्रादि के कारण दुःख उठाना पडता है। बहुत समय बाद किसी श्रेष्ठ पुरुष की सगति एव सलाह से उसका जीवन सुखी बनता है।

चित्र ३३७—यदि बुध-क्षेत्र से उत्पन्न एक लहरदार रेखा गुरु-क्षत्र पर चली गई हो तो जातक कर्जदार होकर अपनी चल-अचल सम्पत्ति को बेच डालता है तथा अनेक प्रकार से कष्टो का सामना करने के बाद विरक्त होकर गृह-त्याग कर बैठता है। ऐसे व्यक्ति भाग्यवादी तथा सन्तोषी स्वभाव के भी होते हैं।
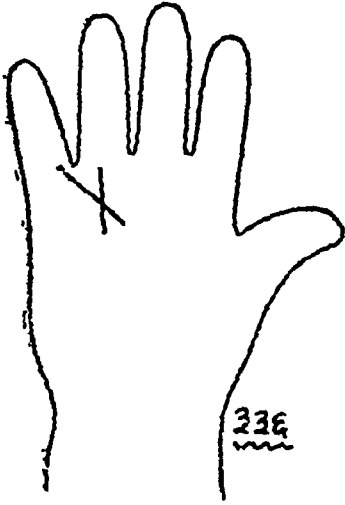
चित्र ३३८—यदि बुध-क्षेत्र से आरम्भ होकर गुरु-क्षेत्र पर पहुचने वाली कोई सीधी रेखा अपने अन्तिम भाग मे द्विभुज हो गई हो तो
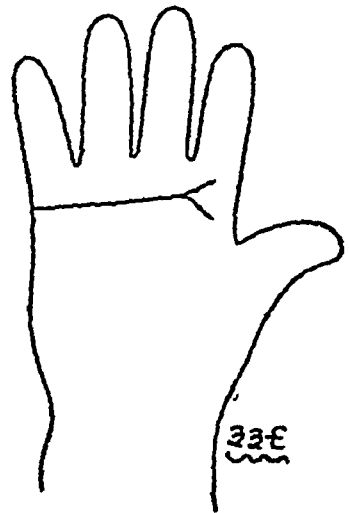
ऐसा जातक प्रत्येक कार्य को सोच-समझ कर करता है, जिसके कारण उसे प्रत्येक क्षेत्र मे सफलता प्राप्त होती है।

चित्र ३३६—यदि पूर्वोक्त प्रकार की बुध-क्षेत्र से आरम्भ होकर गुरु-क्षेत्र पर पहुचने वाली सीधी रेखा गुरु-क्षेत्र पर द्विजिह्व होकर सीधा कोण बनाए तो ऐसा व्यक्ति धन-धान्य, वाहन, पुत्र-पौत्रादि के सुख से युक्त, यशस्वी तथा उच्चाभिलाषी होता है और उसकी मृत्यु किसी तीर्थ-स्थान मे होती है।

चित्र ३४०—यदि पूर्वोक्त प्रकार की बुध-क्षेत्र से आरम्भ होकर गुरु-क्षेत्र पर पहुचने वाली रेखा लहरदार हो और वह गुरु-क्षेत्र पर पहुचकर, द्विजिह्व होती हुई सीधा कोण बनाये तो ऐसा व्यक्ति स्वार्थी, अभिमानी, निर्लज्ज तथा हठी होता है। उसकी मृत्यु भी अपनी हठ के कारण ही होती है।
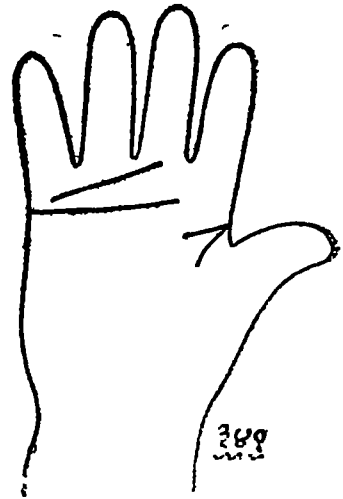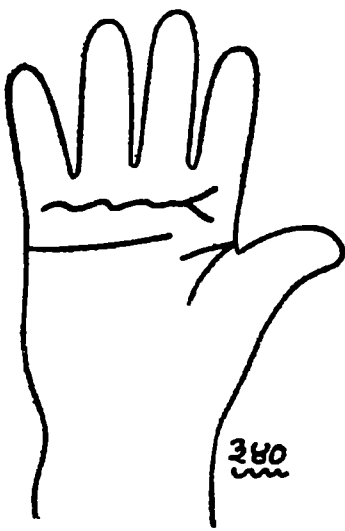
चित्र ३४१—यदि बुध-क्षेत्र से एक टेढी रेखा निकलकर शनि-क्षेत्र पर पहुचे तो ऐसी रेखा वाला जातक क्रोधी, निर्बुद्धि, कठोर,

अपव्ययी, व्यभिचारी तथा कटुभाषी होता है। उसे लोहे की वस्तुओं के व्यवसाय मे धन-लाभ भी होता है, परन्तु वह गृह-कलह के कारण हमेशा दु खी बना रहता है। ऐसा व्यक्ति जुआरी तथा पर-निन्दक भी होता है। उसको मृत्यु किसी वायु-सम्बन्धी रोग के कारण होती है।

चित्र ३४२—यदि बुध-क्षेत्र से निकलकर एक सीधी रेखा शनि-क्षेत्र पर पहुंचे तो ऐसा जातक लोहे की वस्तुओ के व्यवसाय में अत्यधिक धन तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। उसकी उन्नति अपनी मातृभूमि को त्याग कर अन्य स्थान पर जाकर रहने से होती है। मातृभूमि मे तो उसे विघ्न-बाधाओं का सामना ही करना पड़ता है।
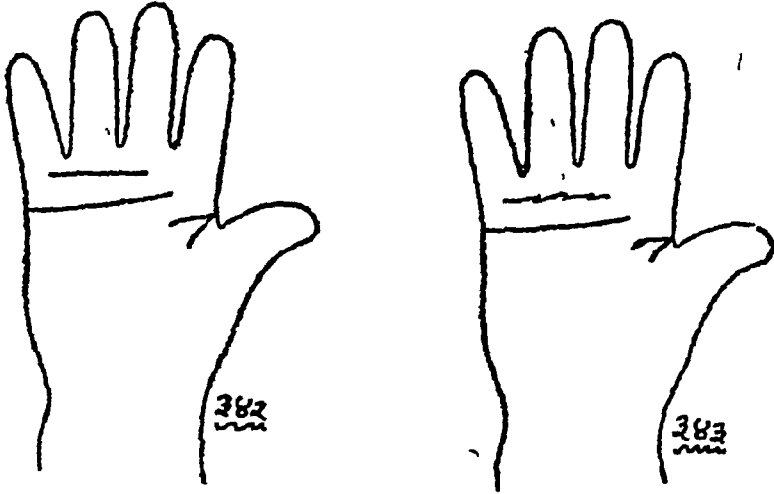
चित्र ३४३—यदि बुध-क्षेत्र से निकलकर शनि-क्षेत्र पर पहुचने वाली रेखा छिन्न-भिन्न हो, तो ऐसे जातक के जीवन मे अनेक उतार-चढाव आते है। वह कई प्रकार के व्यवसाय करता है। ऐसे व्यक्ति का परिवार भी छोटा होता है।

चित्र ३४४—यदि कनिष्ठा अगुली के मूल से एक गहरी तथा सीधी रेखा निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर पहुचे तो ऐसा व्यक्ति पर-निन्दक, चोर या चोर बाजारू तथा अप्रतिष्ठित होता है। वह किसी सन्देह के कारण स्त्री को भी घर से बाहर निकाल देता है।
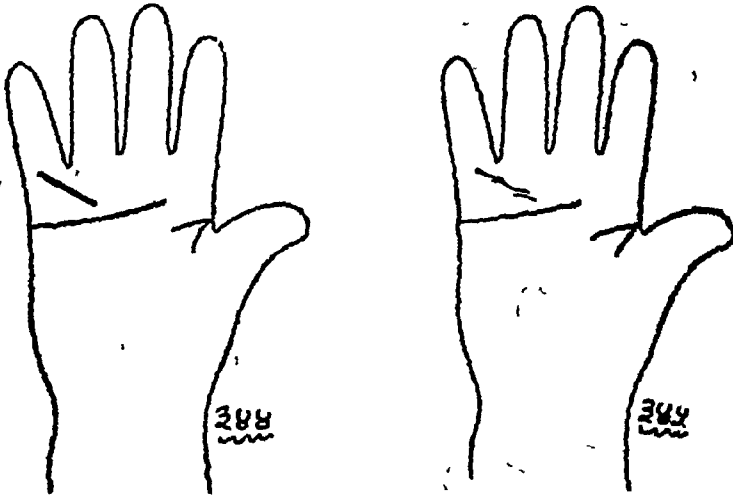
चित्र ३४५—यदि कनिष्ठा अगुली के मूल से निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर जाने वाली उपर्युक्त रेखा बीच मे छिन्न-भिन्न भी हो तो जातक मे पूर्वोक्त दुर्गुणो की और अधिक वृद्धि होती है।

चित्र ३४६—यदि कनिष्ठा अगुली के मूल से निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर पहुचने वाली पूर्वोक्त रेखा टेढ़ी-मेढी अथवा लहरदार हो तो जातक मे पूर्वोक्त दुर्गुण तो अवश्य होते हैं, परन्तु वह प्रत्येक बुरे कार्य को भी इस सफाई से करते हैं कि बाहरी लोगों को उसका पता तक नही चल पाता।
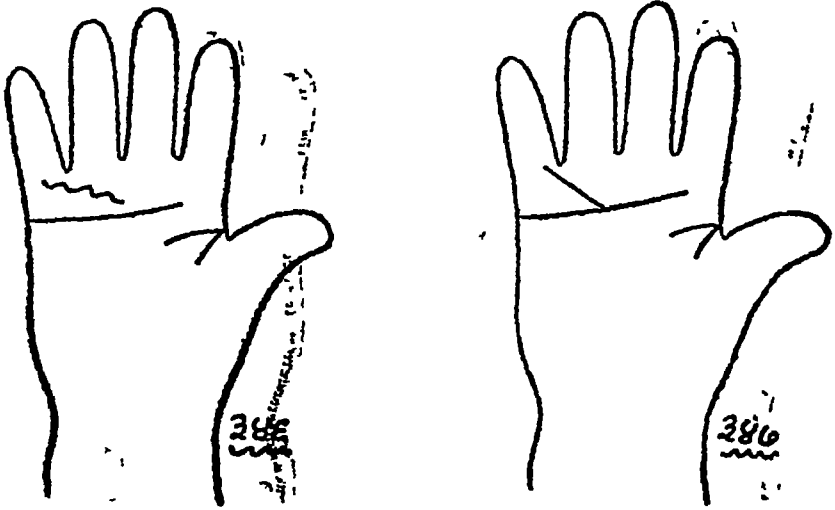
चित्र ३४७—यदि कनिष्ठा अगुली के मूल से सूर्य-क्षेत्र पर पहुंचने वाली उक्त रेखा हृदय-रेखा से जाकर मिल जाय तो ऐसी रेखा वाला जातक धनी, उदार, कुशल व्यवसायी, कलाकार, चित्रकार अथवा लेखक तथा सर्वगुण सम्पन्न होता है।

चित्र ३४८—यदि कनिष्ठा अगुली के मूल में छोटी एवं टेढ़ी तीन रेखाए हो तो ऐसा जातक कुसमय मे जन्म लेने वाला, सुखहीन, दीर्घ-सूत्री, स्त्री के लिए उत्कठित तथा सन्तानहीन होता है। यदि तीनों में से कोई रेखा सीधी हुई तो उसके सन्तान हो सकती है, परन्तु वह उसकी विरोधी होगी। यदि स्त्री के हाथ मे ऐसी टेढ़ी रेखाए हों तो वह व्यभिचारिणी होती है।

चित्र ३४९—यदि कनिष्ठा अगुली के मूल से निकलने वाली पूर्वोक्त छोटी रेखाए टेढ़ी न होकर सीधी हो तो ऐसी रेखाओ वाला पुरुष जातक अनेक नवयौवनाओ के साथ रमण करता है। वह मन्द बुद्धि
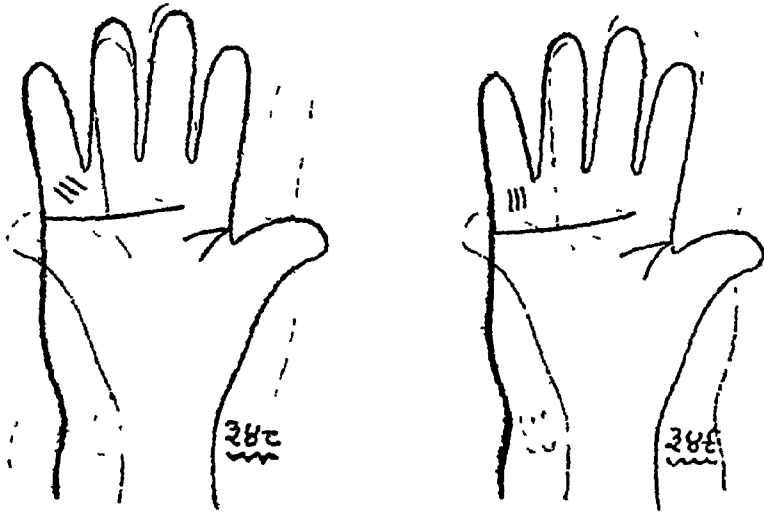
तथा क्रोधी भी होता है, परन्तु ऐसी रेखाओ वाली स्त्री व्यभिचारिणी नहीं होती।

चित्र ३५०—यदि कनिष्ठो अंगुली के मूल मे केवल एक ही छोटी-सी सीधी और निर्दोष रेखा हो तो ऐसी रेखा वाले जातक यशस्वी, प्रतापी, साहसी, चतुर, कार्य-कुशल, विद्वान् तथा धनी होते है। वे सदैव कुछ-न-कुछ करते ही रहते हैं। ऐसी रेखा वाली स्त्रियां भी बुद्धिमान्, सुशील तथा पति-परायण होती हैं।

चित्र ३५१—यदि कनिष्ठा अगुली के मूल से निकलकर बुध-क्षेत्र पर आई हुई एक सीधी रेखा विवाह-रेखा से मिलकर स्पष्ट कोण बनाये तो ऐसा जातक अपने विवाह से पूर्व ही किसी मांगलिक कृत्य का सम्पादन करता है और प्रौढ़ावस्था मे गृह-त्याग, वीतरागी बनकर वन-पर्वतों पर भ्रमण करता हुआ जन-कल्याण मे निरत रहता है।
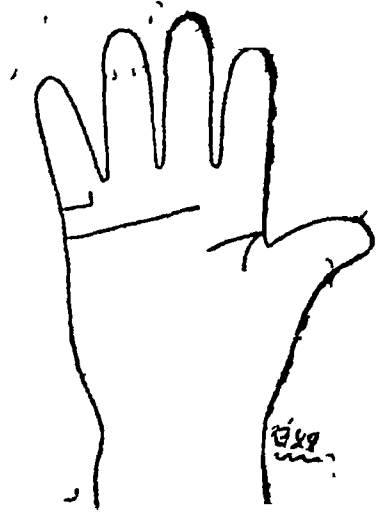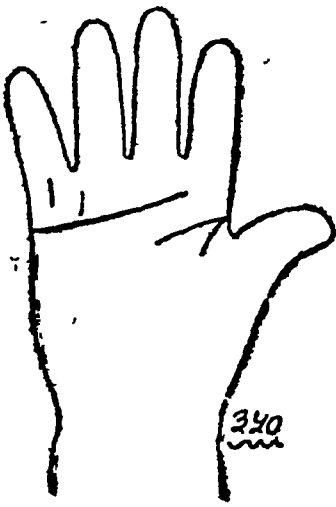
चित्र ३५२—यदि कनिष्ठा अंगुली के मूल से निकलकर विवाह-रेखा से मिलकर कोण बनाने वाली रेखा लहरदार हो और उसके

समीप ही एक छोटी-सी अन्य लहरदार रेखा भी हो तो ऐसा व्यक्ति प्रौढ़ावस्था में गृह-त्याग तो कर देगा, परन्तु उसकी समस्त क्रियाएं निष्फल रहेगी, जिसके कारण वह पुन गृहस्थाश्रम मे प्रवेश करेगा। यद्यपि पुनः गृहस्थ बनकर भी वह वीतरागी-सा ही आचरण करता रहेगा।

चित्र ३५३—यदि भाग्य-रेखा मे से निकलकर एक शुद्ध शाखा रेखा बुध-क्षेत्र पर आई हो तो ऐसा व्यक्ति अपनी जन्म-भूमि मे तो चिन्तित तथा दु.खी रहता है, परन्तु विदेश मे जाकर पर्याप्त यश तथा धन प्राप्त करता है। उसे वाहनादि का सुख भी प्राप्त होता है।

चित्र ३५४—यदि भाग्य-रेखा स्वय ही निर्दोष स्थिति मे बुध-क्षेत्र के मध्य भाग पर पहुचे तो ऐसे जातक को व्यवसाय द्वारा अत्यधिक धन प्राप्त होता है। वह कई कारखानो का मालिक, यशस्वी तथा सुख-सम्पन्न होता है।
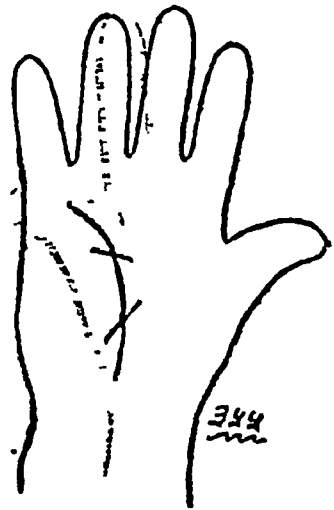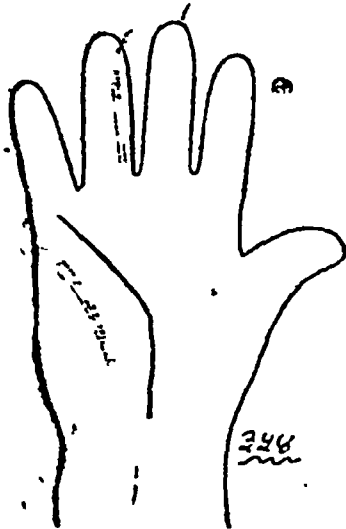
चित्र ३५५—यदि पूर्वोक्त बुध-क्षेत्र पर आने वाली भाग्य-रेखा बीच मे कही कट-गई हो तो जातक को राज्य द्वारा भय प्राप्त होता है और उसकी सम्पत्ति चोर-डाकुओ द्वारा नष्ट कर दी जाती है।

चित्र ३५६—यदि बुध-क्षेत्र पर आने वाली भाग्य-रेखा मे द्वीप-चिन्ह हो तो जातक को अपने सगे-सम्बन्धियो द्वारा कष्ट प्राप्त होता है और उनके साथ मुकद्दमेबाजी मे उसका धन नष्ट हो जाता है।
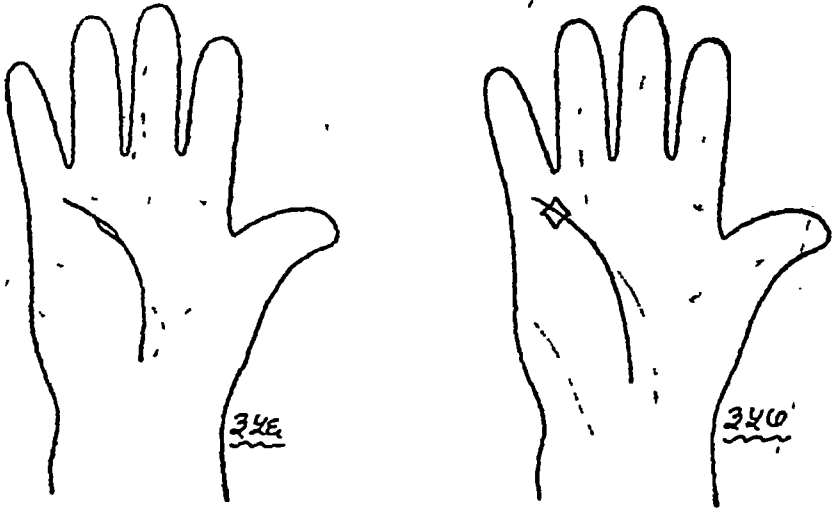
चित्र ३५७—यदि बुध-क्षेत्र पर आने वाली भाग्य-रेखा मे बुध-क्षेत्र पर चतुष्कोण चिन्ह हो तो ऐसा जातक अपने सभी कार्यो का भली-भाति सम्पादन करता है। वह परोपकारी; जनसेवी, सुखी तथा धन्वान् होता है। उसे अपनी आयु के मध्य भाग मे अतुल सम्पत्ति प्राप्त होती है।

चित्र ३५८—यदि बुध-क्षेत्र से निकलकर कोई रेखा जीवन-रेखा से जा मिले अथवा बुध-रेखा भी कई शाखाओ मे बैठकर जीवन-रेखा

से मिले तो जातक को अत्यधिक परिश्रम करने के कारण ज्वर, मन्दाग्नि, शूल आदि रोग होते हैं और उसे हर समय ऋण-ग्रस्त बने रहना पड़ता है।

चित्र ३५६—यदि बुध-क्षेत्र से उठी हुई पूर्वोक्त रेखा जीवन-रेखा को काटती हुई आगे बढ जाय तो ऐसे जातक का हृदय कमजोर होता है और उसकी मृत्यु भी हार्ट फेल हो जाने के कारण होती है। ऐसी रेखा के अन्य गुण पूर्ववत् प्राप्त होते हैं।
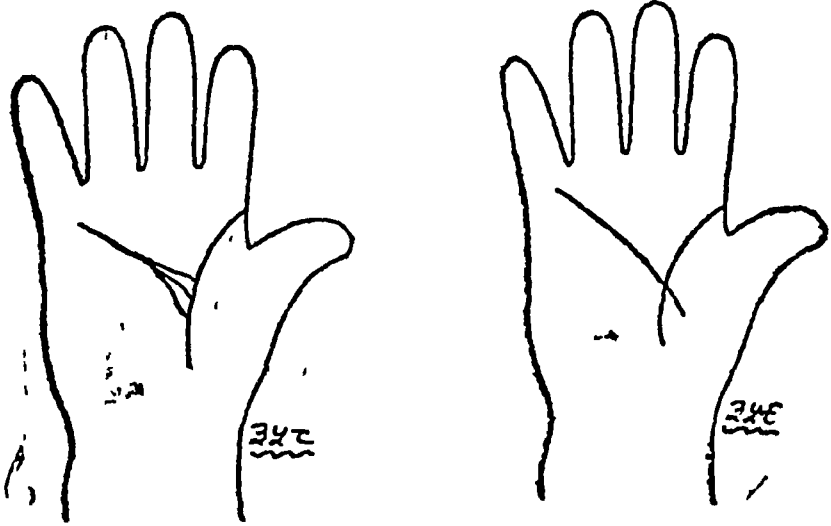
चित्र ३६०—यदि बुध-क्षेत्र से निकलकर जीवन-रेखा से मिलने वाली पूर्वोक्त रेखा बीच-बीच मे कई स्थानो पर टूटी हुई हो तो जातक को अपने जीवन मे अनेक प्रकार के कष्ट एव दुर्घटनाओ का सामना करना पड़ता है तथा कारावास की यातना भी भोगनी पड़ती है।

चित्र ३६१—यदि बुध-क्षेत्र से निकलकर मस्तक-रेखा तथा भाग्य-रेखा को काटती हुई जीवन-रेखा मे जा मिलने वाली पूर्वोक्त रेखा को
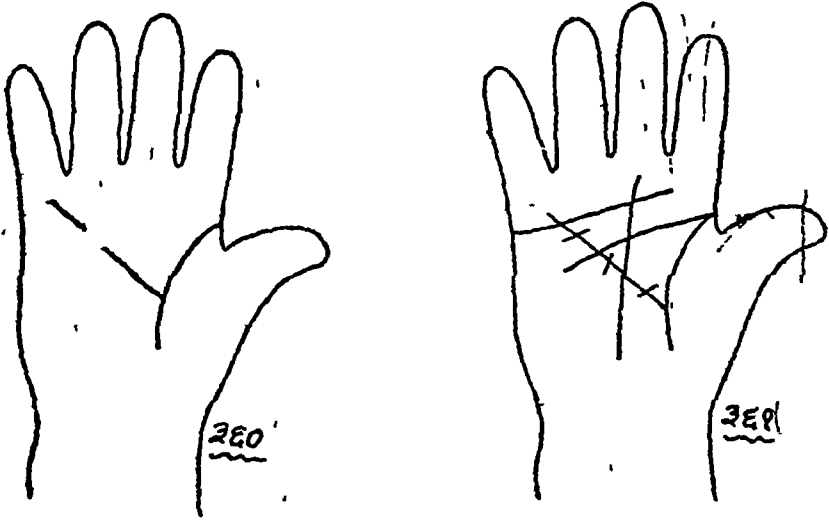
अन्य छोटी-छोटी रेखाए काट रही हो तो ऐसा जातक देश-सेवा के कार्यों में अनेक बार कारागार की यात्रा करता है। कुछ पाश्चात्य विद्वानो के मतानुसार उसकी मृत्यु भी कारागार मे ही होती है।

चित्र ३६२—यदि बुध-क्षेत्र से निकली हुई रेखा जीवन-रेखा से जा मिली हो तथा उन दोनों के सगम-स्थल से भाग्य-रेखा का उदय हुआ हो तो ऐसी रेखा जातक की मृत्यु नही होने देती तथा भाग्य-रेखा के उदय वाले आयुमान मे जातक के भाग्य की वृद्धि भी होती है।

चित्र ३६३—यदि भाग्य-रेखा पूर्वोक्त रेखाओं के सगम-स्थल के नीचे से उठे तथा जिसके कारण बुध-रेखा, जीवन-रेखा तथा नीचे से उठी हुई भाग्य-रेखा के कारण त्रिकोण जैसा चिन्ह बन जाए तो जातक को किसी गम्भीर दुर्घटना का शिकार होना पड़ता है।
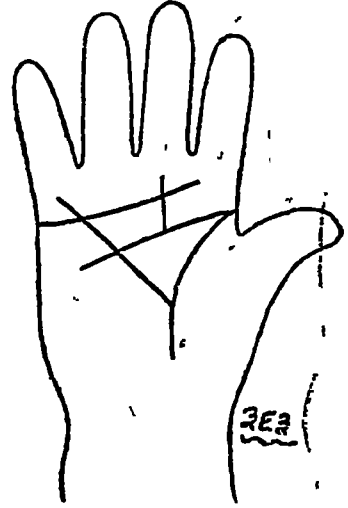
चित्र ३६४—यदि पूर्वोक्त प्रकार की रेखा बुध-क्षेत्र से उठकर जीवन-रेखा से जा मिली हो तथा भाग्य-रेखा उक्त बुध-रेखा से निकली
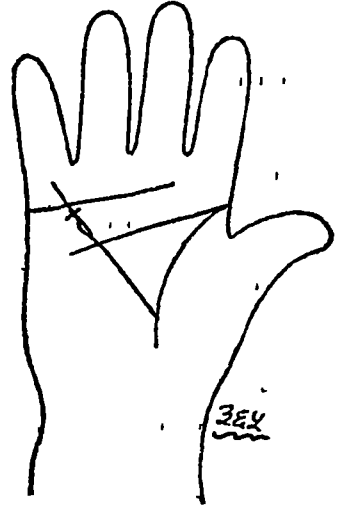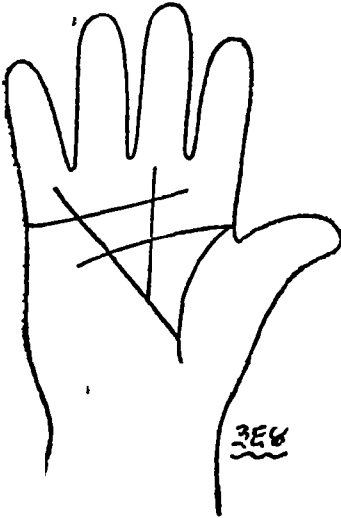
हो तो ऐसी रेखा वाला जातक कुशल व्यवसायी, शुद्ध हृदय वाला, दृढ-प्रतिज्ञ तथा सुखी होता है।

चित्र ३६५—यदि बुध-रेखा पर यव-चिन्ह हो और उसके समीप ही 'धन-चिन्ह' भी दिखाई देता हो तो ऐसे चिन्हो वाला जातक सोते समय विचित्र स्वप्न देखता है तथा स्वप्नावस्था मे दुर्घटना पूर्ण काम भी कर बैठता है।

चित्र ३६६—यदि बुध-क्षेत्र के ऊपर हृदय-रेखा पर यव-चिन्ह हो और उसी में से एक छोटी रेखा आरम्भ होकर बुध-क्षेत्र पर पहुच रही हो तो ऐसे जातक को मान-हानि अथवा दिवालिया होने की आशका रहती है।
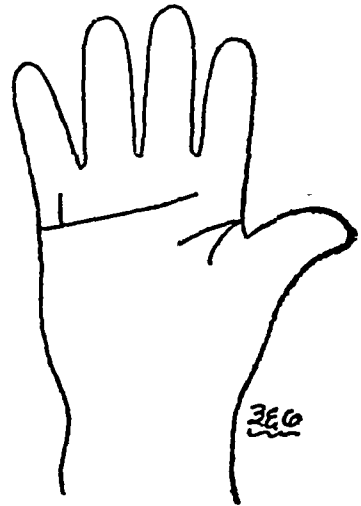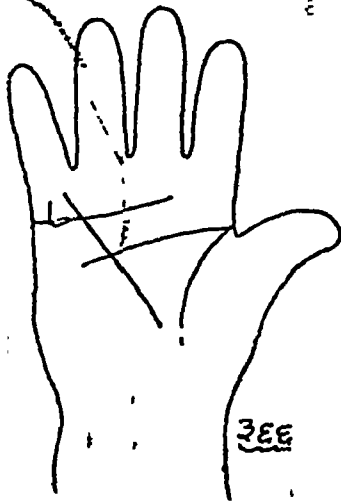
चित्र ३६७—यदि बुध-क्षेत्र पर ही हृदय-रेखा मे से एक शाखा-रेखा निकलकर 'बुध-पर्वत पर गई हो तो ऐसा जातक हृदय-रोग से ग्रस्त तथा भीरु स्वभाव का होता है। वह जीवन के यथार्थ सुख का उपयोग नही कर पाता।

चित्र ३६८—यदि बुध-क्षेत्र से निकली हुई रेखा मस्तक-रेखा से जा मिले और कुछ दूर तक उसी में ही मिली हुई दृष्टिगोचर हो तो ऐसी रेखा वाला जातक मस्तिष्क सम्बन्धी रोगो से ग्रस्त अर्द्धविक्षिप्त-सा होता है। उसके मस्तक में किसी शस्त्र द्वारा आघात पहुंचने की भी सम्भावना रहती है।
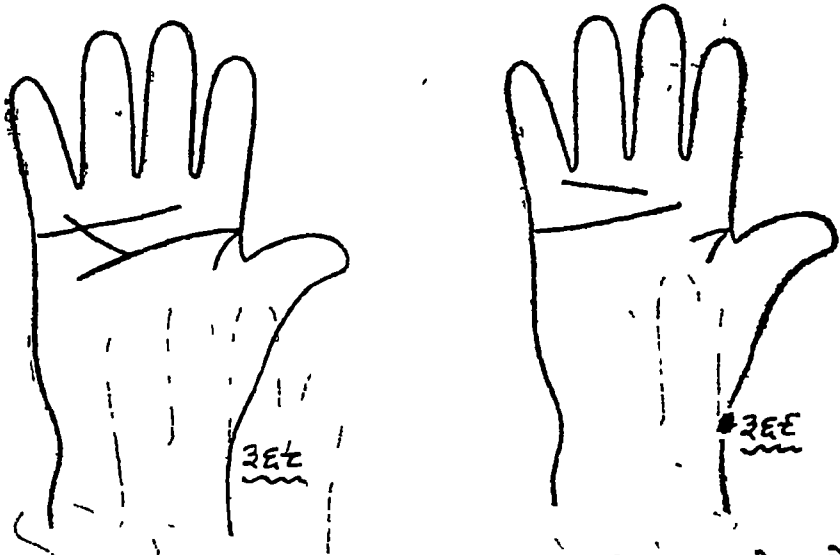
चित्र ३६९—यदि बुध-क्षेत्र से उत्पन्न रेखा हृदय-रेखा के असमानान्तर कुछ दूर (शनि-क्षेत्र) तक चली गई हो तो ऐसी रेखा वाला व्यक्ति अपनी ससुराल पक्ष से अथवा व्यवसाय द्वारा अत्यधिक धन प्राप्त करके सुखी जीवन व्यतीत करता है। इस रेखा का हृदय-रेखा से अलग, स्पष्ट, निर्दोष तथा सरल होना आवश्यक है।

चित्र ३७०—यदि पूर्वोक्त प्रकार की रेखा टेढी होकर हृदय-रेखा से मिल जाए तो वह अशुभ फल देने वाली होती है। उस स्थिति मे जातक को चिन्ता, परेशानी, रोग, तथा आर्थिक कष्टो का सामना करना पडता है।
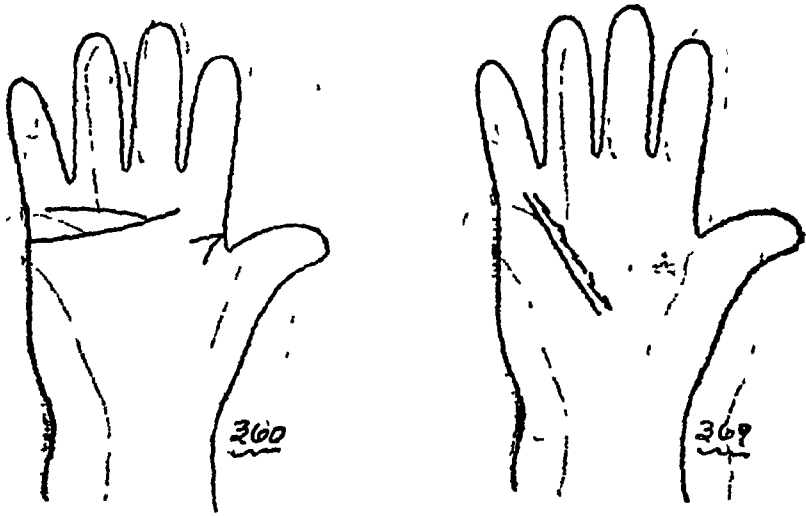
चित्र ३७१—यदि बुध-रेखा के समानान्तर ही बुध-क्षेत्र से ही छोटी-छोटी रेखाओ द्वारा निर्मित एक और समानान्तर रेखा चल रही हो तो जातक अच्छा वक्ता, सुखी, यशस्वी, धनी, नीतिमान्, व्यवसाय कुशल, स्वस्थ तथा अनेक विद्याओं मे निपुण होता है।

चित्र ३७२—यदि पूर्वोक्त बुध-रेखा के समानान्तर चलने वाली रेखा सामान्य लहरदार हो तो जातक का स्वास्थ्य अच्छा नही रहता। शेष सभी गुण तो उसमे पाये जाते हैं, परन्तु वह अहकारी एवं नास्तिक भी अवश्य होता है।

चित्र ३७३—यदि बुध-रेखा के अग्रभाग मे दोनों ओर एक-एक छोटी रेखा के मिलने से त्रिशूल जैसा चिन्ह वन जाए तो ऐसे जातक अद्भुत विद्वान्, आध्यात्मवादी, देशपूजित, धर्मज्ञ, यशस्वी, धनवान् तथा बुद्धिमान होते हैं। ऐसे व्यक्ति अनेक लोगो को आश्रय भी देते हैं। चिन्ह वाले स्थान पर हृदय-रेखा का पतली होना अथवा बिल्कुल लोप होना आवश्यक है, तभी उक्त फल घटित होता है।
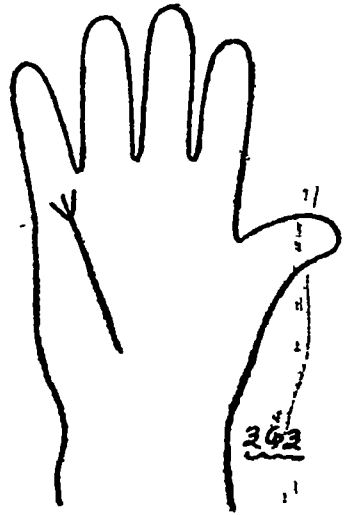
चित्र ३७४—यदि जातक के हाथ मे पूर्वोक्त त्रिशूल चिन्ह हो, परन्तु वह हृदय-रेखा के ऊपर ही हो और वही हृदय-रेखा के ऊपर
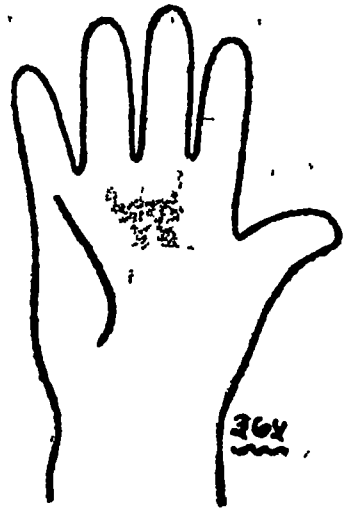
एक यव-चिन्हित भी हो तथा यव-चिन्हित के बीच मे एक बिन्दु-चिन्ह भी हो तो जातक को उन्नति के साथ-साथ अवनति का समय भी देखना पड़ता है।

चित्र ३७५—यदि बुध-क्षेत्र से आरम्भ होने वाली रेखा टेढी होकर चन्द्र-क्षेत्र पर पहुंच रही हो तो ऐसी रेखा वाला जातक अव्यवस्थित चित्त का होता है। उसकी स्थिति मे अनेक प्रकार के परिवर्तन होते रहते हैं।

चित्र ३७६—यदि बुध-क्षेत्र से आरम्भ होने वाली रेखा विवाह-रेखा को स्पर्श करती हुई तथा हृदय-रेखा को काटती हुई मगल के प्रथम क्षेत्र पर जाकर समाप्त हो तो ऐसी रेखा वाला जातक सरल हृदय का तथा गुणवान् होता है, परन्तु वह हृदय-रोग का शिकार भी बनता है।
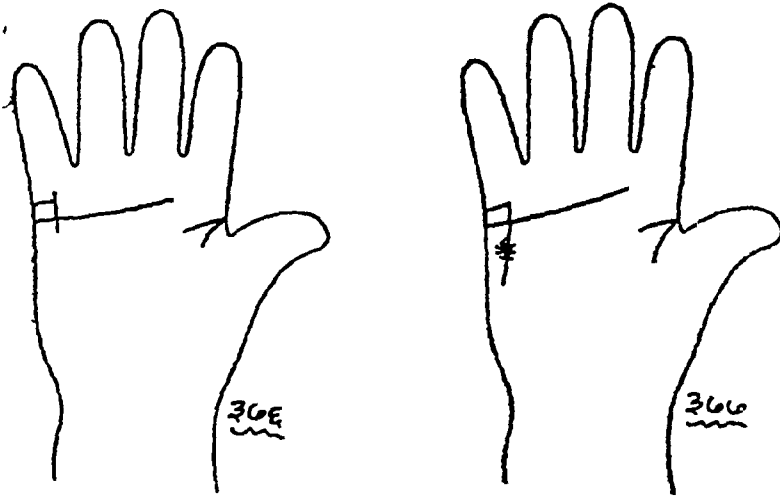
चित्र ३७७—यदि पूर्वोक्त प्रकार की रेखा टेढी होकर चन्द्र-क्षेत्र पर चली जाए और उसमें कोई द्वीप अथवा नक्षत्र चिन्ह भी हो तो

जातक अनेक प्रकार के कष्टों से पीडित, अहंकारी, दुष्ट प्रकृति वाला तथा जुआरी होता है और किसी उद्वेग के कारण उसके पागल हो जाने की सम्भावना भी रहती है।

चित्र ३७८—यदि पूर्वोक्त वुध-क्षेत्र से आरम्भ होकर विवाह-रेखा को स्पर्श करके हृदय-रेखा को काटती हुई चन्द्र-क्षेत्र पर पहुचने वाली रेखा छिन्न-भिन्न तथा दाग-चिन्ह से युक्त हो तो ऐसा जातक उदर-विकार तथा मस्तक सम्बन्धी विकारो से पीड़ित रहता है और अपनी सम्पत्ति को जुए आदि मे नष्ट कर, चिन्तित होकर पागल-सा वन जाता है।
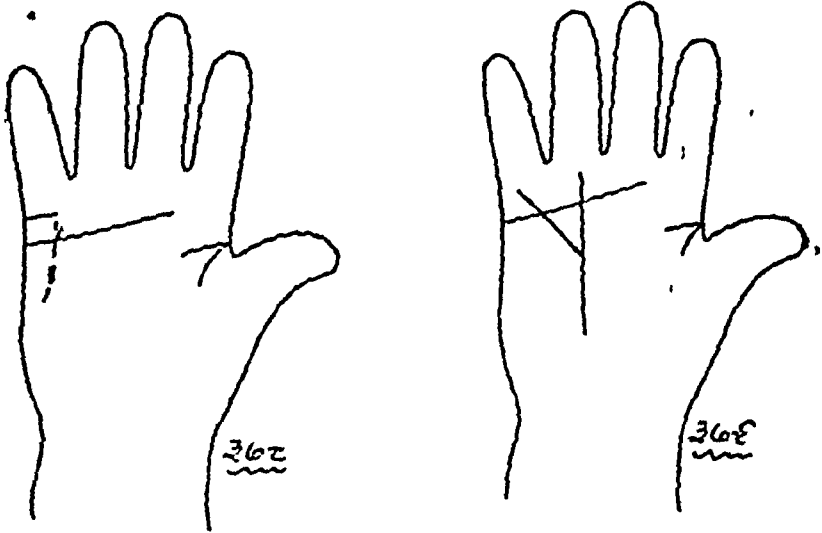
चित्र ३७९—यदि वुध-क्षेत्र से चलकर एक सीधी तथा निर्दोष रेखा सूर्य-रेखा से मिलकर त्रिकोण वनाये तो ऐसा जातक धन-धान्यपूर्ण, सुखी, गुणवान्, विद्वान्, साहित्य-संगीत आदि कलाओं का प्रेमी, उच्च-पद प्राप्त करने वाला तथा यशस्वी होता है।

चित्र ३८०—यदि वुध-क्षेत्र से उत्पन्न रेखा सूर्य-रेखा को काटती हुई कुछ आगे निकल जाए तो ऐसा जातक अत्यधिक पराक्रमी, धनी,

यशस्वी, रति-क्रिया प्रवीण तथा ऐश्वर्यशाली होते हुए भी अपनी विलासी-प्रवृत्ति के कारण भ्रष्ट होकर लोक मे निन्दित हो जाता है।

चित्र ३८१—यदि बुध-क्षेत्रीय रेखा सूर्य-रेखा को काटती हुई सीधी शनि-क्षेत्र पर पहुचे तो ऐसा जातक अत्यधिक विद्वान्, विदेशी भाषाओं का जानकार, शासन मे उच्च पद प्राप्त करने वाला, शत्रुंजयी तथा सर्व-सुख-सम्पन्न होता है।
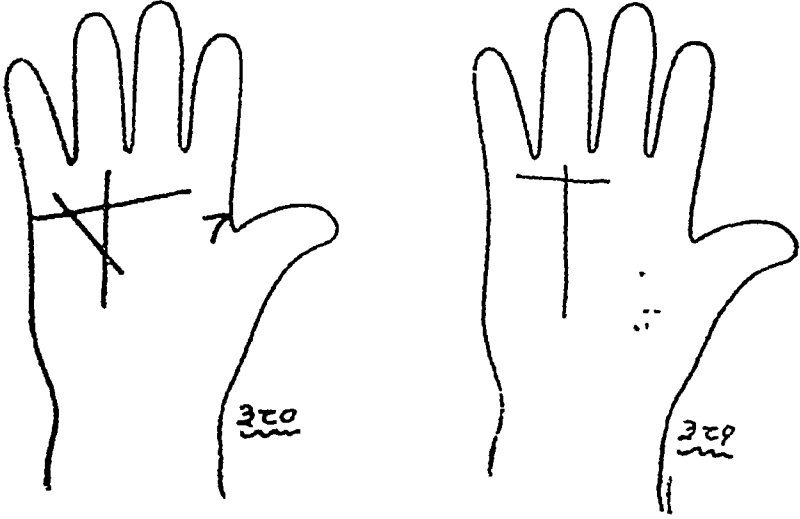
चित्र ३८२—यदि बुध-क्षेत्र से उत्पन्न दो समानान्तर रेखाएं सूर्य-रेखा को काट रही हो तो ऐसा जातक परोपकारी, भ्रमणशील, उदार, बलवान्, परिश्रमी, धन-ऐश्वर्य, मित्र, वाहन आदि से युक्त, यशस्वी, भूमि का स्वामी, सद्गुण-सम्पन्न तथा सब प्रकार के सुखो से युक्त होता है।

चित्र ३८३—यदि पूर्वोक्त बुध-क्षेत्र से निकलकर सूर्य-रेखा को काटने वाली समानान्तर रेखाए लहरदार, छिन्न-भिन्न अथवा टेढ़ी-

मेढी हो तो ऐसा जातक पराक्रमहीन, दुर्बल, छली, कुटिल बुद्धि, चचल, धर्महीन, अवगुणी तथा शत्रु-पीड़ित होता है। उसे राजदण्ड प्राप्त करने का भी भय वना रहता है।
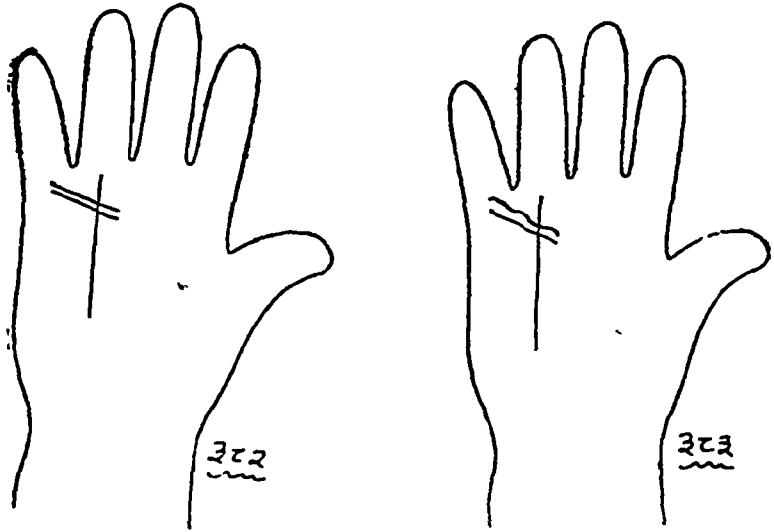
चित्र ३८४—यदि बुध-क्षेत्रीय पूर्वोक्त लहरदार समानान्तर रेखाए विवाह-रेखा का भी स्पर्श कर रही हो तो ऐसे जातक को स्त्री-पुत्रादि का सुख प्राप्त नही होता। वह लोक-निन्दित तथा अवगुणो की खान होता है।

चित्र ३८५—यदि बुध-क्षेत्रीय पूर्वोक्त समानान्तर रेखाओ को दो छोटी-छोटी रेखाए काट रही हो और एक रेखा हृदय-रेखा पर तथा दूसरी शनि-क्षेत्र पर चली गई हो तो ऐसा जातक कुकर्मी, दु खो, धन-जन-हीन तथा अग्नि, शत्रु, सर्प आदि के भय से पीड़ित रहता है। वह व्यभिचारी होता है और उसी कुकर्म के कारण अपना अग-भग भी करा लेता है। उसका वैवाहिक जीवन भी दु खपूर्ण रहता है।
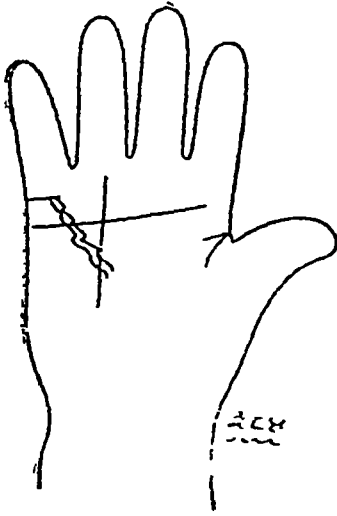
चित्र ३८६—यदि बुध-क्षेत्रीय दो समानान्तर रेखाओं को काटने वाली दो रेखाए हृदय-रेखा पर रुक जाए तथा सूर्य-रेखा भी हृदय-

रेखा पर आकर रुक जाए तो उस स्थिति मे एक चतुष्कोण बन जाता है। ऐसे चिन्ह वाला जातक सकटो से उबरकर व्यवसाय मे लाभ प्राप्त करता है। वह सद्‌गुणी तथा सुख-सम्पन्न भी होता है।

चित्र ३८७—यदि बुधक्षेत्रीय रेखा हृदय-रेखा तथा जीवन-रेखा के बीच गहरी तथा नक्षत्र-चिन्ह से युक्त होकर मस्तक-रेखा को काट रही तो जातक स्वार्थी, रोगी, क्रोधी, दुर्बल तथा व्यभिचारी होता है। वह जीवन मे उन्नति अथवा यश प्राप्त नही कर पाता। उसकी सम्पत्ति भी नष्ट-भ्रष्ट हो सकती है।

चित्र ३८८—यदि पूर्वोक्त बुध-क्षेत्रीय रेखा पर नक्षत्र-चिन्ह न हो और वह मस्तक-रेखा को भी न काट रही हो तो ऐमी रेखा वाला जातक शकालु-स्वभाव का होता है और हर समय भयभीत-सा बना रहता है, जिसके कारण उसका जीवन निराश तथा दु खी व्यतीत होता है।
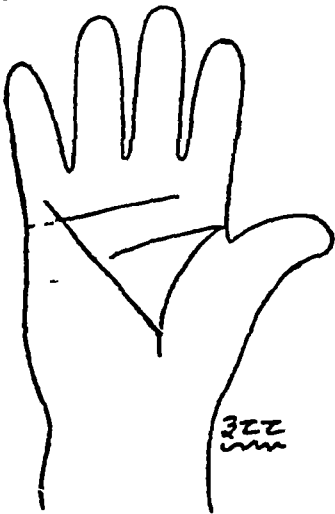
चित्र ३८६—यदि बुध-क्षेत्रीय रेखा को चन्द्र-क्षेत्र से आई हुई एक सरल तथा एक सीधी रेखा काट रही हो तथा एक अन्य रेखा भाग्य-रेखा में से निकलकर चन्द्र-क्षेत्रीय रेखा के उद्गम स्थान मे जा मिले, जिसके कारण एक वडा त्रिकोण-चिन्ह बन जाता हो, तो यह चिन्ह जातक के लिए सुख-सौभाग्य में वृद्धि करने वाला होता है।

चित्र ३९०—यदि विवाह-रेखा के ऊपर तीन छोटी-छोटी सरल एव शुद्ध रेखाएं हों और वे कनिष्ठा अगुली के मूल कोण को स्पर्श कर रही हो तो ऐसा जातक सदाचारी, काम-कला-कुशल तथा प्रतापी एवं गुणवान् पुत्रो का पिता होता है।
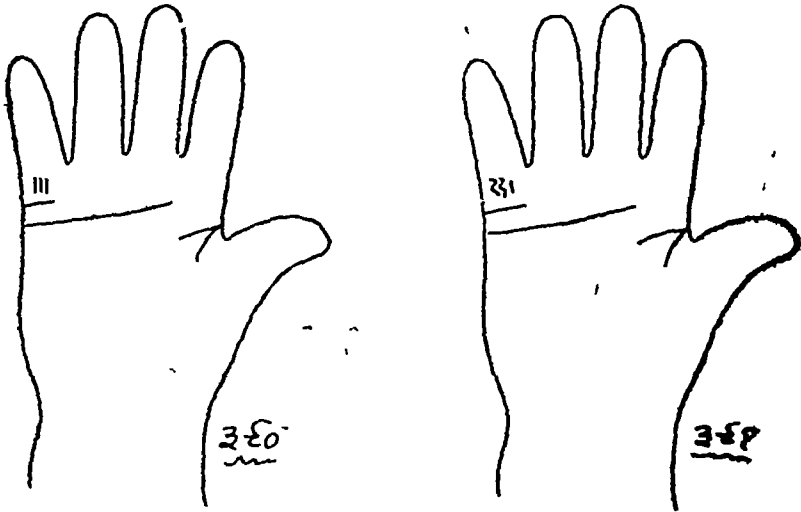
चित्र ३ १—यदि पूर्वोक्त विवाह-रेखा के ऊपर वाली तथा कनिष्ठा अगुली के मूल को स्पर्श करने वाली रेखाए लहरदार अथवा छिन्न-भिन्न हो तो ऐसा जानक मिथ्यावादी, चोर, कामी तथा अहकारी होता है।

चित्र ३९२—यदि पूर्वोक्त छिन्न-भिन्न रेखाए विवाह-रेखा को स्पर्श कर रही हो तो उसके घर मे जन्मान्ध पुत्र का जन्म होता है अथवा जन्म के वाद चेचक के कारण उसका लड़का अन्धा हो जाता है।
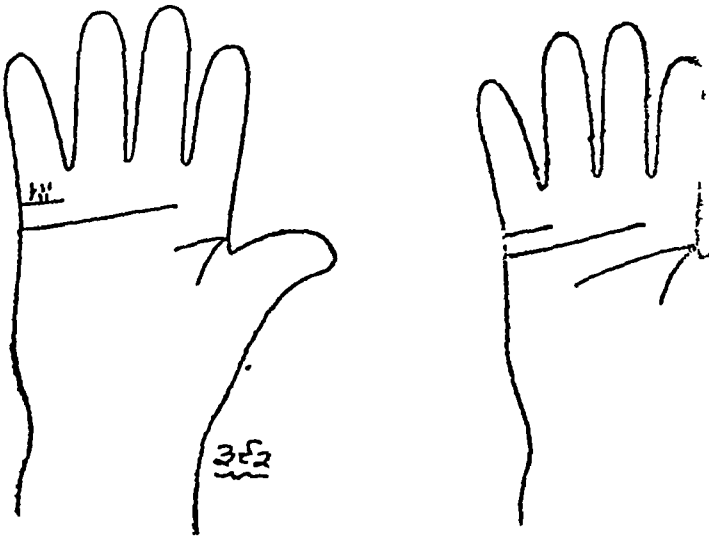
चित्र ३९३—यदि पूर्वोक्त प्रकार की विवाह-रेखा को स्पर्श करने वाली रेखाओ पर दाग-चिन्ह हो तो ऐसे जातक की स्त्री बलहीन पुत्र को जन्म देकर मर जाती है तथा उसका पुत्र भी कुछ वर्षो बाद दु:खी तथा अपयशी वनकर मृत्यु को प्राप्त होकर पशुयोनि मे जाता है।

चित्र ३९४—यदि कनिष्ठा अगुली के मूल से निकलकर दो आड़ी रेखाए समानान्तर चलती हुई सूर्य-क्षेत्र पर तर्जनी अगुली के मूल तक चली जाए तो ऐसा जातक महाज्ञानी, तत्त्वदर्शी, सिद्ध-महात्मा तथा गुप्तवास करने वाला होता है।
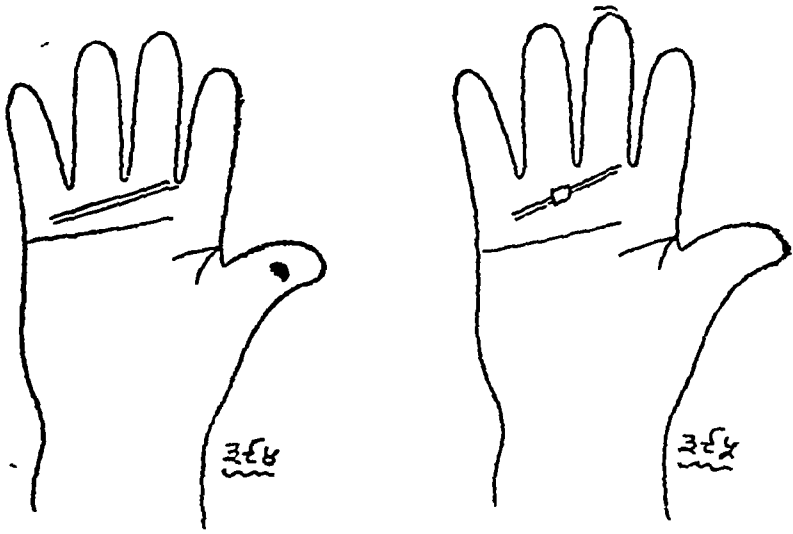
चित्र ३६५—यदि कनिष्ठा अगुली के मूल से निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर तर्जनी अगुली के मूल मे पहुचने वाली पूर्वोक्त दो समानान्तर रेखाओ पर त्रिकोण अथवा चतुष्कोण-चिन्ह भी हो तो ऐसा जातक निरन्तर उद्योग-शील, कलाकार तथा माता-पिता का प्रिय होता है। उसका अपने परिवारीजनो पर वहुत प्रभाव रहता है।

चित्र ३६६—यदि कनिष्ठा अगुली के मूल मे स्थित तीन छोटी रेखाओ को तीन सीधी रेखाएं काट रही हों तो ऐसा जातक सर्वगुण सम्पन्न होने पर भी मास-भक्षी, व्यसनी तथा दुष्ट लोगों के साथ रहने वाला होता है।

चित्र ३६७—यदि कनिष्ठा अगुली के मूल मे चार छोटी और स्पष्ट रेखाए हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त प्रतिष्ठित, गुणी तथा सुख-सम्पन्न होवा है।
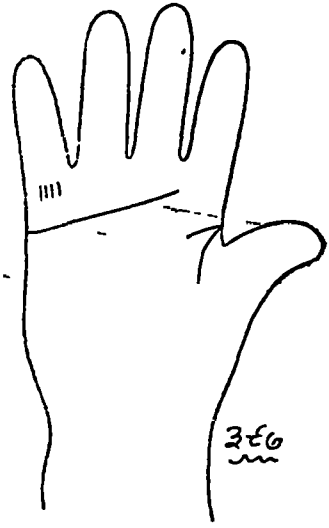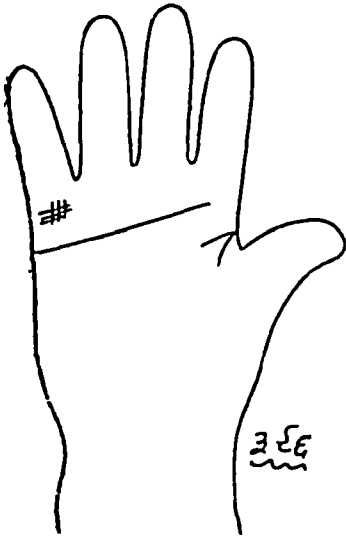
चित्र ३६८—यदि कनिष्ठा अगुली के मूल मे दो छोटी रेखाए हो
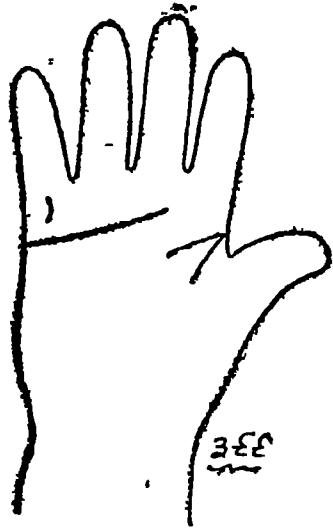
तो ऐसा जातक महान् धूर्त और लम्पट होता है। वह समाज मे अप्रतिष्ठित, चचल बुद्धि, अपव्ययी, पर-स्त्री-गामी भी हो सकता है।

चित्र ३६६—यदि कनिष्ठा अंगुली के मूल मे एक गहरी तथा छोटी रेखा हो फिर भले ही वह मोटी या कुछ टेढी ही क्यो न हो, तो ऐसी रेखा वाला जातक ज्योतिषी, दयालु, परोपकारी, मृदुभाषी, प्रसन्न रहने वाला, शीलवान तथा गुणवान होता है। उसे अपने व्यावसायिक कार्यों में भी सफलता प्राप्त होती है।

चित्र ४००—यदि कनिष्ठा अगुली के मूल मे छोटी-छोटी चार टेढी रेखाए अलग-अलग हों अथवा वे सब एक साथ मिलकर मोटी हो गई हो तो ऐसी रेखाओ वाले जातक के जीवन मे २५ वर्ष की आयु के भीतर ही कोई बड़ी दुर्घटना घटित होती है।
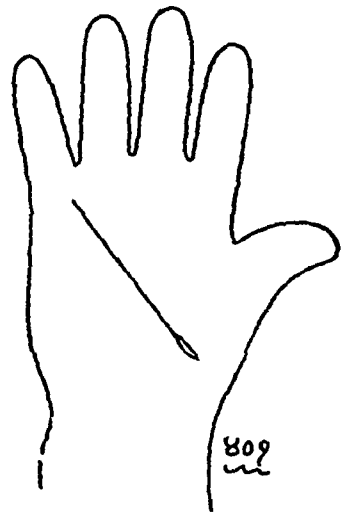
चित्र ४०१—यदि बुध-क्षेत्र से एक रेखा निकलकर शुक्र-क्षेत्र पर पहुंची हो और उसके अन्त में यव-चिन्ह हो तो ऐसी रेखा वाले जातक को

पक्षाघात कारबक श्वासनली में व्रण अथवा हृदय और फुफ्फुस सम्बन्धी अन्य रोगो का शिकार होना पड़ता है।

चित्र ४०२—यदि पूर्वोक्त बुध-क्षेत्र से निकलकर शुक्र-क्षेत्र पर पहुचने वाली रेखा के उद्‌गम स्थल पर यव-चिन्ह हो तथा बुध, सूर्य एवं गुरु-क्षेत्र निम्न हो तो ऐसे जातक को मूत्राशय की पीडा तथा वंश परम्परागत रोगो का शिकार होता पड़ता है। यदि शनि-क्षेत्र भी निम्न हो तो जातक दिवालिया हो जाता है, परन्तु यदि गुरु, चन्द्र तथा शुक्र-क्षेत्र उच्च हो तो जातक गुप्त विद्याओ का ज्ञाता तथा भविष्यदर्शी होता है।
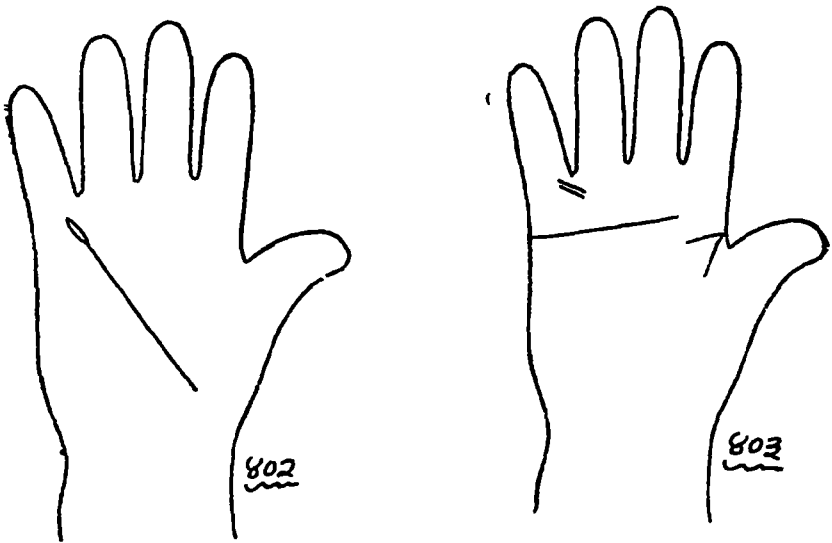
चित्र ४०३—यदि कनिष्ठा अगुली के मूल में से दो तिरछी रेखाएं निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर पहुचे तो ऐसी रेखाओ वाला जातक पत्नी-वियोग से दुःखी, नीति-सम्पन्न तथा विद्वान् होकर भी चौर्य-कर्म मे प्रवृत्त होता है। ऐसे व्यक्ति उच्च पदाधिकारी भी हो सकते हैं।

चित्र ४०४—यदि कनिष्ठा अंगुली के मूल से दो लहरदार अथवा छिन्न-भिन्न रेखाए निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर पहुंचे तो ऐसी रेखाए जातक के लिए घोर चिन्ता एवं विरक्ति का कारण बनती है। ऐसी रेखाएं जातक के पिता के लिए भी नेष्ट होती है।
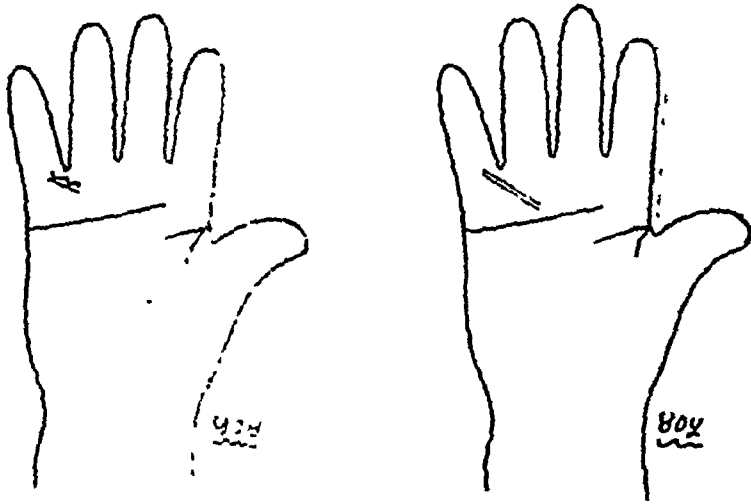
चित्र ४०५—यदि कनिष्ठा अगुली के मूल से दो शुद्ध, सीधी तथा निर्दोष रेखाए निकलकर सूर्य-क्षेत्र के अन्त तक पहुचे तो ऐसी रेखाओं वाला जातक अत्यन्त पराक्रमी, साहसी, बुद्धिमान्, परिश्रमी, कार्य-शील, सगीतज्ञ, दानी, परोपकारी तथा सुख सम्पन्न होता है।

चित्र ४०६—यदि कनिष्ठा अंगुली के मूल से दो लहरदार समानान्तर रेखाए निकलकर ठीक सूर्य-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा को स्पर्श करें तो ऐसी रेखाएं जातक के लिए अशुभ फल देने वाली होती हैं और उसके सब कामो मे हानि पहुचाती हैं।

चित्र ४०७—यदि कनिष्ठा अगुली के नीचे से दो समानान्तर सीधी
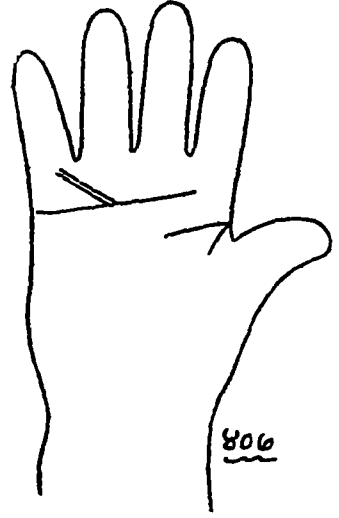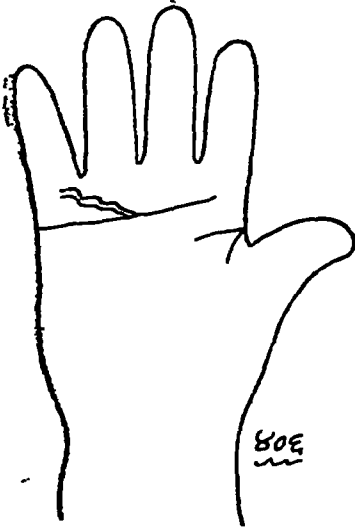
तथा स्पष्ट रेखाए निकलकर सूर्य-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा को स्पर्श करें तो उन्हे शुभ-फलकारक समझना चाहिए।

चित्र ४०८—यदि बुध-क्षेत्र के ऊपरी भाग मे कनिष्ठा अगुली के

४०९
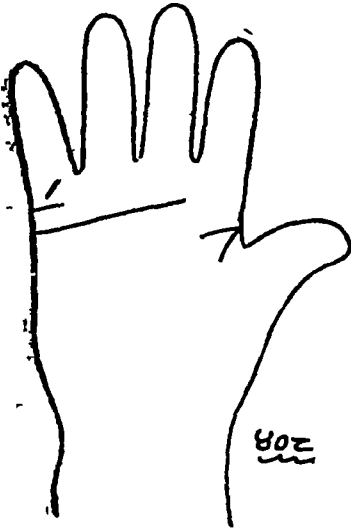
मूल भाग पर एक सरल, स्पष्ट तथा छोटी-सी आडी रेखा दिखाई दे तो ऐसी रेखा वाला जातक देवपूजक, पितृ-मातृ-भक्त, विचारवान्, बुद्धिमान्, मित्र-युक्त, खगोल विद्या का जानकार तथा कृषि-कर्म-कुशल होता है, परन्तु व्यवसाय के मामले मे अज्ञ रहता है।

चित्र ४०९—यदि पूर्वोक्त बुध-क्षेत्र के ऊपरी भाग मे तथा कनिष्ठा अगुली के मूल भाग पर दिखाई देने वाली छोटी-सी आड़ी-रेखा विवाह-रेखा से सम्वद्ध हो तो वह जातक के लिए हानिकारक एव अशुभ फलदायक होती है।
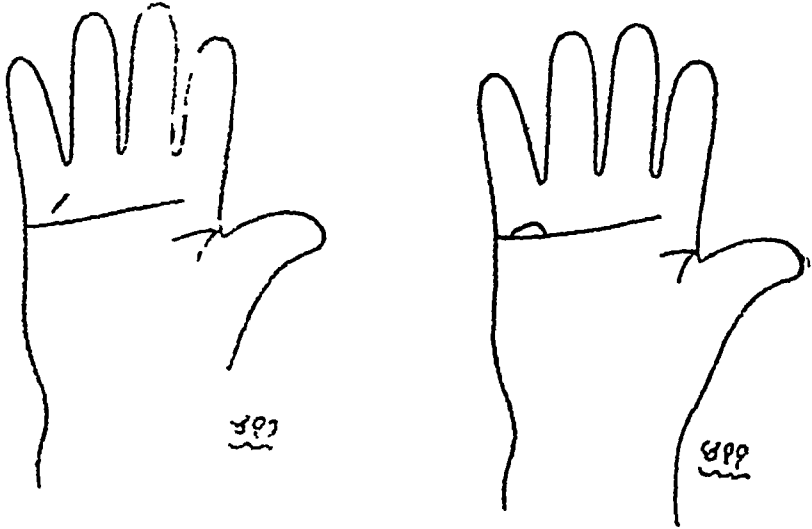
चित्र ४१०—यदि पूर्वोक्त अनामिका अगुली के मूल वाली छोटी आडी रेखा अगुली के मूल स्थान से हटकर हृदय-रेखा के समीप और समानान्तर हो तो जातक धन-धान्य तथा वस्त्राभूषणो से सम्पन्न, योग्य, विद्वान् तथा महत्वाकाक्षी होता है। उसकी भाग्योन्नति २५वे वर्ष से होती है।

चित्र ४११—यदि पूर्वोक्त रेखा हृदय-रेखा को स्पर्श करे तो उसका फल अशुभ होता है। यदि उक्त रेखा चन्द्राकार हो और उसके दोनों छोर हृदय-रेखा का स्पर्श कर रहे हों तो हृदय-रेखा पर एक यव-चिन्ह सा वन जाता है, जिसका फल अशुभकारक होता है।

चित्र ४१२—यदि बुध-क्षेत्र से एक शृंखलायुक्त रेखा टेढी होकर सूर्य-क्षेत्र की ओर जाए तो ऐसा जातक स्त्री-सन्तान के कष्ट से पीडित, चपल स्वभाव, चोर, रोगी तथा नीचकर्म रत रहता है। उसे अपनी चिकित्सा मे ही अधिकांश आय खर्च कर देनी पडती है।
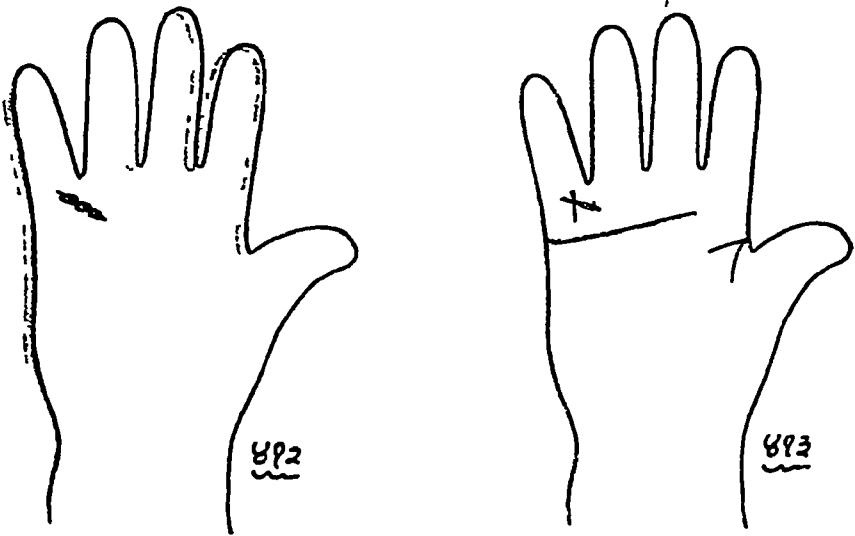
चित्र ४१३—यदि बुध-क्षेत्र पर एक तिरछी रेखा हो और उसे एक सरल तथा सीधी रेखा काट रही हो तो ऐसा जातक जुए मे अपना सब धन नष्ट कर देता है। वह सदैव दु खी तथा राज्य एव शत्रु के भय से भीत बना रहता है। उसके कर्म भी नीचता पूर्ण होते है।

चित्र ४१४—यदि बुध-क्षेत्र पर एक तिरछी रेखा पूर्वोक्तानुसार

हो और उसे काटने वाली सीधी रेखा हृदय-रेखा से जाकर मिल गई हो तथा तिरछी रेखा बढकर सूर्य-क्षेत्र पर पहुंच गई हो तो पूर्वोक्त अशुभ फलादेश मे कुछ कमी आ जाती है और जातक को अपने बन्धु-बान्धवों तथा धन-धान्य आदि का सुख भी प्राप्त होता है।
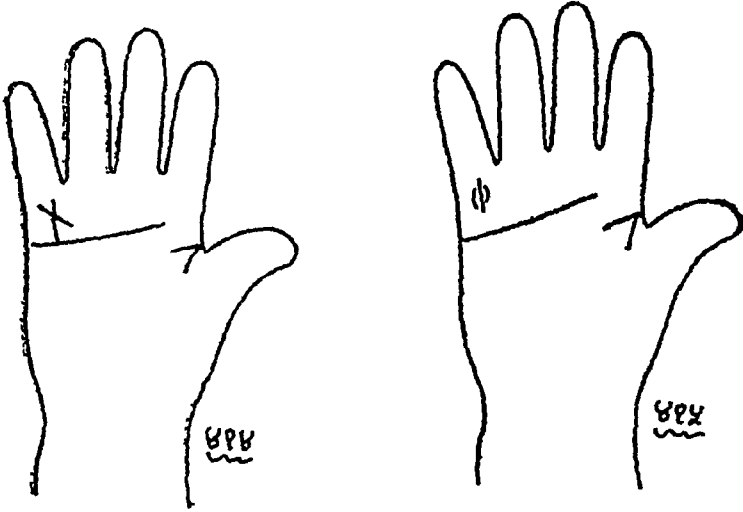
चित्र ४१५—यदि बुध-क्षेत्र पर एक सरल तथा सीधी रेखा पर दो बराबर के भागो मे विभक्त वृत्त-चिन्ह भी हो तो ऐसी रेखा-चिन्ह वाला जातक विषयानुरागी, चिन्तित, शुक्र रोगी, बुद्धि हीन तथा छल-कपट व्यवहार रखने वाला होता है।

चित्र ४१६—यदि पूर्वोक्त सम भागो मे विभक्त वृत्त-चिन्ह युक्त बुध-क्षेत्रीय रेखा लहरदार हो तो जातक को मृत्यु दण्ड पाने की सम्भावना रहती है। यदि बुध-क्षेत्र उच्च हुआ तो केवल आजन्म कारावास की सजा मिलती है। यदि बुध-क्षेत्र अत्यधिक उन्नत हो तो कारावास मे ही मृत्यु होती है। इतना सब होने पर भी ऐसी रेखा वाला जातक गुणी तथा सरल स्वभाव का होता है।
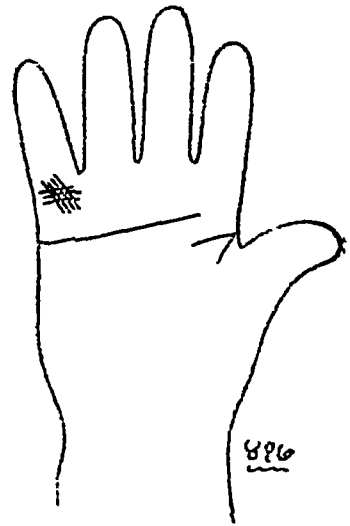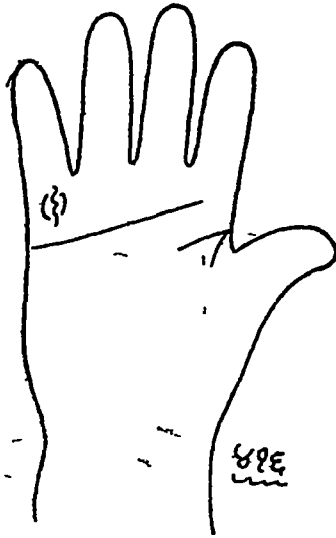
चित्र ४१७—यदि बुध-क्षेत्र पर तीन आडी रेखाओ को चार तिरछी रेखाए काटे तो ऐसे चिन्ह वाला जातक व्यभिचारिणी स्त्रियों द्वारा छला जाता है। वह भोग-विलास में अपना सब धन बरबाद कर देता है तथा दुर्बुद्धि, अपव्ययी, कलकित, नीच कर्म करने वाला, राज-द्रोही, बन्धु द्रोही तथा पाखडी होता है। ऐसे चिन्ह वाले व्यक्ति की आयु ३० वर्ष की होती है। यदि बुध-क्षेत्र उच्च हो तो ४० वर्ष की आयु होती है। उसकी मृत्यु भी प्राय. शस्त्राघात द्वारा होती है।

चित्र ४१८—यदि बुध-क्षेत्र पर त्रिभुज हो और उसका एक कोण समकोण हो तो ऐसा व्यक्ति ज्योतिष शास्त्र का प्रेमी, गणितज्ञ, तार्किक तथा धर्म के सिद्धातो का व्याख्याता होता है। इसके लिए कनिष्ठा अगुली का लम्बा होना आवश्यक है।

चित्र ४१९—यदि बुध-क्षेत्र निम्न हो, कनिष्ठा अंगुली अनामिका के बराबर लम्बी हो तथा बुध-क्षेत्र पर पूर्वोक्त त्रिकोण चिन्ह खण्डित
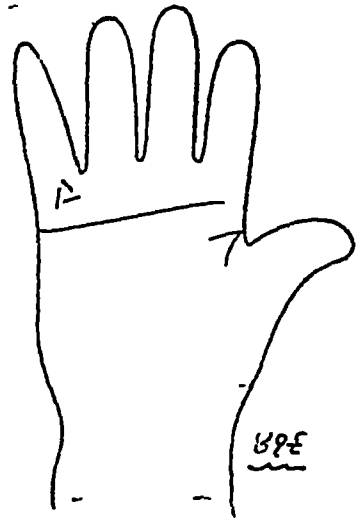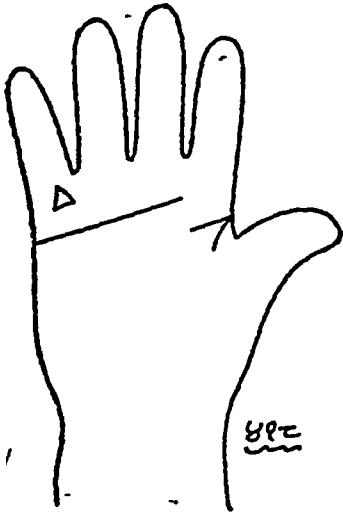
हो तो ऐसे चिन्ह वाला व्यक्ति दृढ संकल्पी एवं प्रत्येक कार्य को सोच-विचार कर करने वाला होता है।

चित्र ४२०—यदि हृदय-रेखा बुध-क्षेत्र पर होकर गई हो और
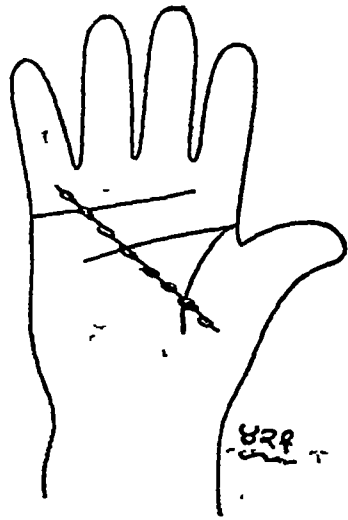
उसी क्षेत्र पर रेखा के ऊपर काला दाग भी हो तो ऐसे चिन्ह वाला जातक निष्ठुर, हत्यारा, व्यभिचारी, क्रोधी तथा कुकृत्य करने वाला होता है। यदि दाग हृदय-रेखा के ऊपर न होकर उससे सटा हुआ हो तो जातक हृदय-रोगी होता है अथवा उसे किसी शस्त्र से चोट लगती है। उसका धन अचानक ही नष्ट हो जाता है।

चित्र ४२१—यदि बुध-क्षेत्र से आरम्भ होकर एक शृंखलायुक्त रेखा मस्तक-रेखा तथा जीवन-रेखा को काटती हुई शुक्र-क्षेत्र पर पहुचे तो ऐसा जातक कठोर, निर्दय, चण्ल, माता-पिता का विरोधी, क्रोधी, विलासी तथा दुष्ट प्रकृति का होता है। वह सब लोगो को कष्ट देता रहता है।

चित्र ४२२—यदि बुध-क्षेत्र निम्न हो और उससे उत्पन्न शृंखलाकार रेखा केवल हृदय-रेखा को ही काट रही हो तो ऐसी रेखा वाला

जातक हिंसक, व्यभिचारी, रोगी तथा पितृघाती होता है। यदि बुध-क्षेत्र और शुक्र-क्षेत्र उच्च हों, तो वह शराब अथवा सुगन्धित वस्तुओं

का व्यवसाय करने वाला, धनी तथा स्त्री-पुत्रादि के सुख से युक्त होता है।

चित्र ४२३—यदि मस्तक-रेखा जीवन-रेखा से पृथक् हो और मस्तक-रेखा बुध-क्षेत्र पर पहुंचती हो, बुध का क्षेत्र उन्नत हो तथा कनिष्ठा अगुली का नख छोटा हो तो जातक सगीतज्ञ, कलाप्रमी, साहित्यिक, सहिष्णु, कलाकार परन्तु मानसिक चिन्ताओ से ग्रस्त रहने वाला होता है।

चित्र ४२४—यदि मस्तक-रेखा मे से दो शाखाए निकलकर बुध-क्षेत्र पर पहुच रही हो तो ऐसी रेखाओं वाला जातक वेश्यागामी, सन्तान-हीन, दीर्घ-सूत्री, सुख-विहीन तथा शत्रुओं के भय से भीत रहता है। वह वात रोगी भी होता है। यदि बुध-क्षेत्र अत्यधिक ऊचा हो तो नाटक मे दुखान्त भूमिका करता है और उसकी मृत्यु किसी समय रगमच पर ही हो जाती है।
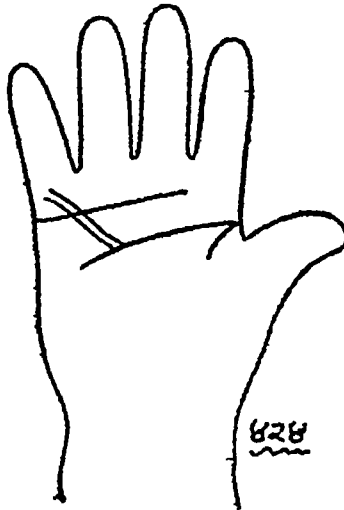
बुध-क्षेत्र पर पाए जाने वाले क्रास, द्वीप, नक्षत्र, चतुष्कोण, जाल, बिन्दु आदि चिन्हो के प्रभाव का विस्तृत वर्णन 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के 'हस्त-चिन्ह-विचार' नामक अगले खण्ड मे किया गया है। अत हस्त-चिन्हो के सम्बध मे उक्त खण्ड का अध्ययन करना चाहिए।

प्रस्तुत प्रकरण में बुध-क्षेत्र पर पाई जाने वाली जिन प्रभाव-रेखाओ का उल्लेख किया गया है, उन्हे स्वास्थ्य-रेखा से भिन्न समझना चाहिए।

किसी भी प्रभाव-रेखा के सम्बन्ध मे विचार करते समय हाथ की बनावट, अगुलियो की बनावट, हथेली तथा रेखा का रग एव ग्रह-क्षेत्रो की उच्चता-अनुउच्चता का ध्यान रखना अत्यन्त आवश्यक है। यह नियम सर्वत्र लागू होता है।

मङ्गल-क्षेत्रीय-रेखाएं

हथेली पर मगल-ग्रह के दो क्षेत्र माने गए हैं—

(१) बुध-क्षेत्र के नीचे। हृदय-रेखा के समाप्ति स्थल के चन्द्र-क्षेत्र तक।

(२) गुरु-क्षेत्र के नीचे। जीवन-रेखा के उद्गम-स्थल से शुक्र-क्षेत्र के बीच का भाग।

बुध-क्षेत्र के नीचे वाले मगल-क्षेत्र को 'प्रथम मगल-क्षेत्र' तथा गुरु-क्षेत्र के नीचे वाले मगल-क्षेत्र को 'द्वितीय मगल-क्षेत्र' कहा जाता है।

प्रथम मगल-क्षेत्र पर जो चिन्ह अथवा प्रभाव-रेखाए होती हों, यदि उसी प्रकार के चिन्ह और रेखाए द्वितीय मगल-क्षेत्र पर भी हों, तो उसके प्रभाव तथा फल की पुष्टि हो जाती है, परन्तु यदि एक मगल-क्षेत्र पर कोई चिन्ह अथवा रेखा हो और दूसरे मगल-क्षेत्र पर न हो अथवा दूसरे मगल-क्षेत्र पर कोई चिन्ह अथवा रेखा हो और प्रथम मगल-क्षेत्र पर न हो तो उनका प्रभाव तथा फल अलग-अलग होता है।

मगल-क्षेत्रो पर पहुचने वाली अन्य रेखाओं के शुभाशुभ फल का वर्णन 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के विभिन्न खण्डों मे किया जा चुका है। यहां पर हम दोनो मंगल-क्षेत्रो पर पाई जाने वाली अन्य रेखाओं

की स्थिति तथा उनके फलाफल का वर्णन कर रहे है। प्रसगानुसार मगल-क्षेत्रो पर पाई जाने वाली अथवा इस क्षेत्र पर आकर समाप्त हो जाने वाली कुछ रेखाओ के फलाफल की पुनरावृत्ति भी इस प्रकरण मे कर दी गई है।

मंगल-क्षेत्रो पर पाई जाने वाली प्रभाव-रेखाओ के सम्बन्ध मे भी प्राच्य ग्रन्थो मे बहुत कम विवरण उपलब्ध होता है, जबकि पाश्चात्य विद्वानो ने इन प्रभाव-रेखाओं के फलाफल का विस्तृत वर्णन किया है। यहा पर दोनो मतों का एकीकरण करते हुए उनके साराश को प्रस्तुत किया जा रहा है। दोनो मगल-क्षेत्रो पर जो अलग-अलग रेखाए पाई जाती है, उनके सम्बन्ध मे मगल-क्षेत्र के आरम्भ मे 'प्रथम और द्वितीय' शब्द को जोडकर स्पष्टीकरण कर दिया गया है। हस्त-परीक्षक को चाहिए कि वह मगल-क्षेत्रस्थ रेखाओ तथा चिन्हो का विचार करते समय 'प्रथम मगल-क्षेत्र' तथा 'द्वितीय मगल-क्षेत्र' की स्थिति को ध्यान मे अवश्य रक्खे।

प्रभाव-वर्णन में जिस स्थान पर 'प्रथम' अथवा 'द्वितीय' शब्द न लिखकर केवल 'मगल-क्षेत्र' का ही उल्लेख किया गया हो, वहा पर मुख्य रूप से प्रथम मगल-क्षेत्र ही समझना चाहिए अथवा यह समझना चाहिए कि वैसी रेखा अथवा चिन्ह किसी भी मगल-क्षेत्र पर क्यो न हो, उसका प्रभाव एक जैसा ही होता है।

पाठकों की सुविधा के लिए मगल-क्षेत्रीय प्रभाव-रेखाओ की प्रत्येक स्थिति के चित्र भी विवरण के साथ ही दे दिये गए हैं।

चित्र सख्या ४२५ मे दोनो मगल-क्षेत्रीय प्रभाव-रेखाओ के विभिन्न रूपो को प्रदर्शित किया गया है।
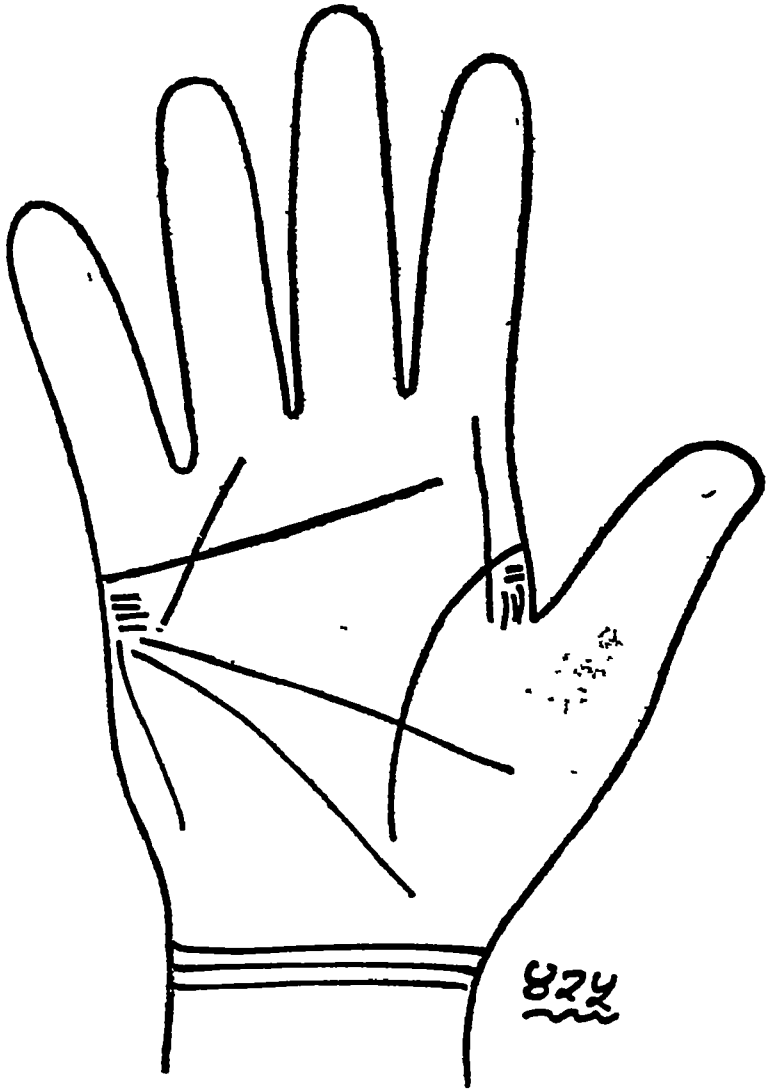
[मगल-क्षेत्रीय प्रभाव-रेखाओ की विभिन्न स्थितियां]

चित्र ४२६—यदि मंगल-क्षेत्र (किसी पर भी) एक खडी रेखा दिखाई दे तो जातक साहसी होता है और सकट के समय भी उसके दिल-दिमाग मे अशान्ति अथवा घवराहट नही होती। वह धैर्य पूर्वक विपत्ति से छुटकारा पाने का प्रयत्न करता है।
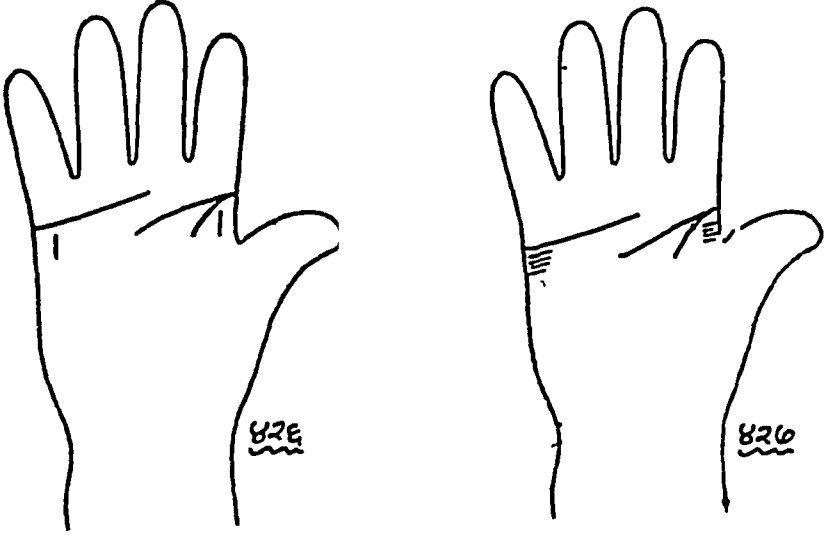
चित्र ४२७—यदि मगल-क्षेत्र पर (किसी पर भी) कई आडी रेखाए दिखाई दें तो वे शत्रुओ की सूचक होती है। ये रेखाए जितनी अधिक गहरी तथा लम्बी होगी, जातक के शत्रु भी उतने ही अधिक शक्तिशाली होंगे। यदि ये रेखाए छोटी तथा पतली होगी, तो शत्रु भी उतने ही दुर्बल होंगे।

चित्र ४२८—यदि मगल-क्षेत्र पर (किसी पर भी) बहुत-सी खडी रेखाए एक-दूसरी से मिली हुई-सी हो, तो जातक कठोर-हृदय, क्रोधी, चरित्रहीन तथा रोगी होता है।
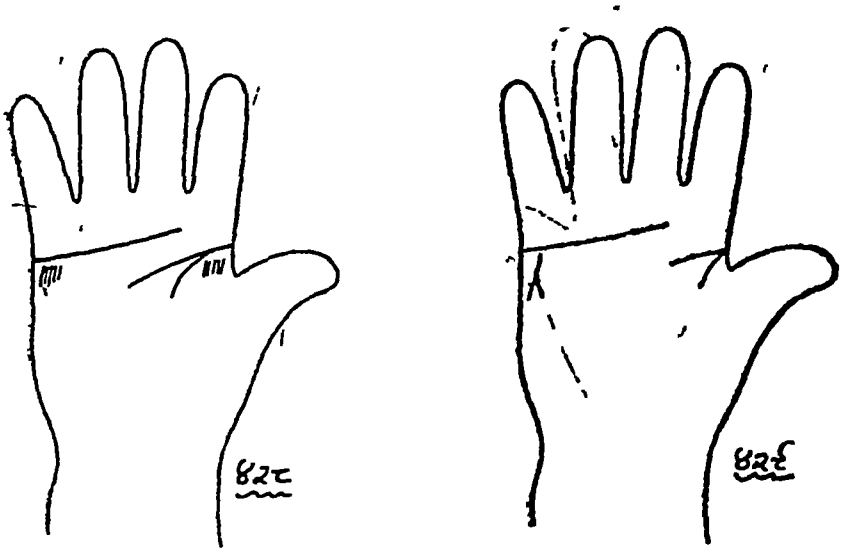
चित्र ४२६—यदि प्रथम मंगल-क्षेत्र पर एक खडो रेखा द्विजिह्व हो तो जातक को कण्ठ अथवा फेफडो से सम्बन्धित कोई रोग होता है। कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसी रेखा वाला जातक वीर तथा साहसी होता है।

चित्र ४३०—यदि मगल-क्षेत्र पर स्थित कई आडी रेखाए लम्वी हो और वे स्वास्थ्य-रेखा को काट रही हो तो शत्रुओ के प्रहार अथवा उनके विपय मे चिन्तित रहने के कारण जातक के स्वास्थ्य मे खरावी आती है।

चित्र ४३१—यदि प्रथम मगल-क्षेत्र पर स्थित कई आडी रेखाएं लम्वी होकर सूर्य-रेखा को काट रही हो तो जातक के यश, प्रतिष्ठा, सौभाग्य तथा धन की हानि होती है।

चित्र ४३२—यदि प्रथम मगल-क्षेत्र पर स्थित कई आड़ी रेखाएं

लम्बी होकर भाग्य-रेखा को काट दें तो जातक के व्यवसाय को गहरा धक्का पहुचता है। यदि जातक कहो नौकर हो तो उसकी नौकरी छूट जाती है।
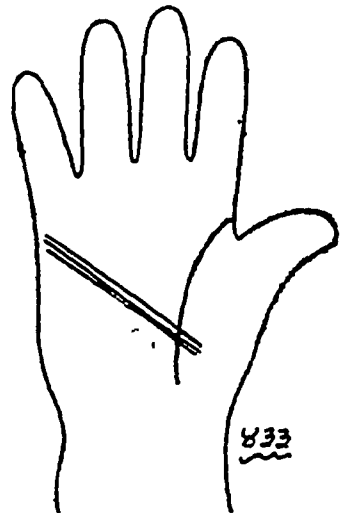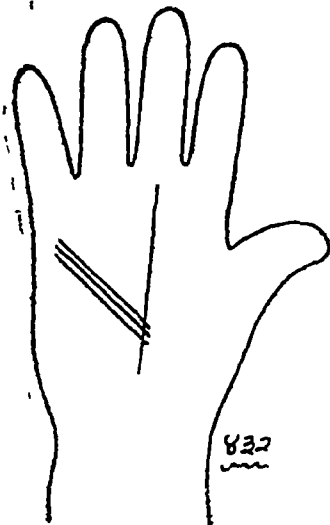
चित्र ४३३—यदि प्रथम मगल-क्षेत्र पर स्थित कई आड़ी रेखाएं और अधिक लम्बी होकर जीवन-रेखा को काट दे तो जातक के अपने ही मित्र अथवा रिश्तेदार उससे गुप्त रूप से दुश्मनी रखते और हानि पहुंचाने का प्रयत्न करते है ।

चित्र ४३४—यदि प्रथम मगल-क्षेत्र पर एक लम्बी तथा गहरी आड़ी रेखा हो तो जातक के ऊपर किसी शत्रु का विशेष हानिकारक प्रभाव पडता है ।
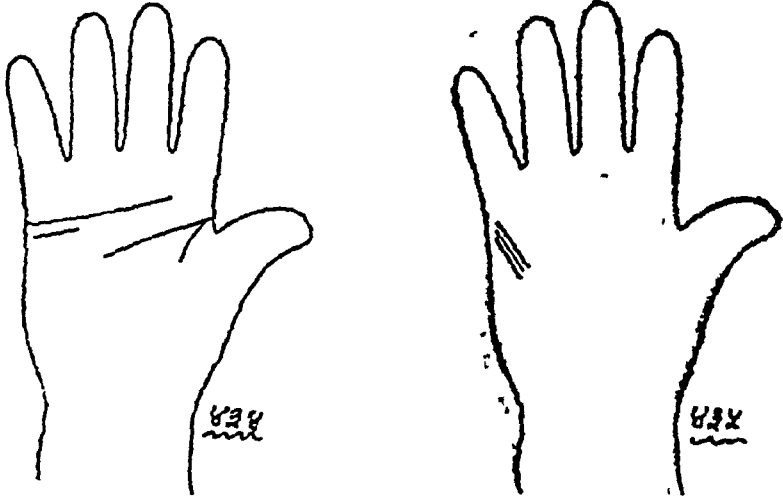
चित्र ४३५—यदि प्रथम मगल-क्षेत्र पर दो-तीन आडो, गहरी तथा लम्बी रेखाए हो तो जातक के शत्रुओ की सख्या अधिक होती है ।

चित्र ४३६—यदि प्रथम मगल-क्षेत्र पर स्थित पतली-पतली कई आडी रेखाएं स्वास्थ्य-रेखा, सूर्य-रेखा, भाग्य-रेखा तथा आयु-रेखा को काटती हुई शुक्र-क्षेत्र पर लम्बी चली गई हो तो ऐसी रेखाओ वाले जातक के गुप्त शत्रु उसके स्वास्थ्य, धन तथा सम्मान को हानि पहुंचाते है ।
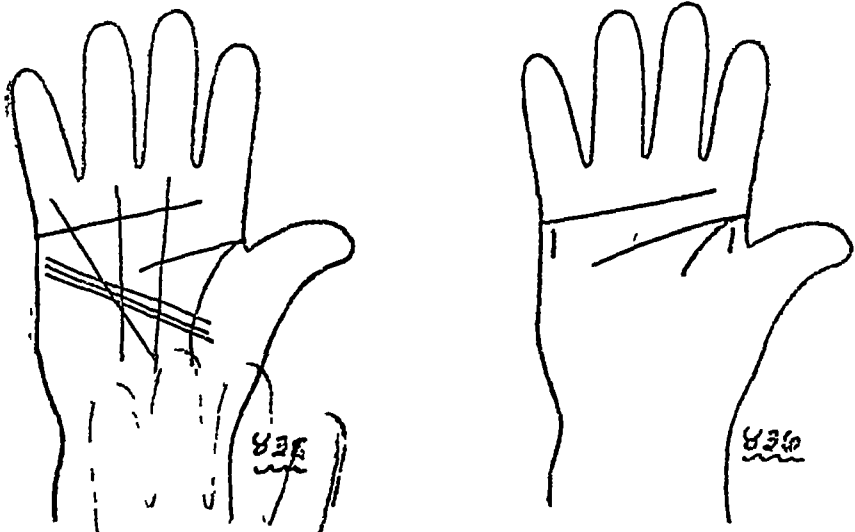
चित्र ४३७—यदि मगल के दोनों क्षेत्रों पर एक-एक खडी रेखा हो तो वह जातक उग्र स्वाभाव का, प्रेम-सम्बन्ध मे निर्दय-व्यवहार करने वाला तथा हृदय-रोगी होता है। ऐसे जातक किसी मामले मे आत्म-हत्या करने पर भी उतारू हो जाते है और उसमे असफल होकर जेल-यात्रा करते है। प्रथम मगल-क्षेत्र की रेखाओं से अन्य लोग शत्रुता रखते है तथा द्वितीय मगल क्षेत्र की रेखाओ से अपने ही सम्वन्धियो की शत्रुता सूचित होती है—ऐसा सर्वत्र समझना चाहिए।

चित्र ४३८—यदि प्रथम मगल-क्षेत्र से एक रेखा निकलकर मस्तक-रेखा तथा स्वाथ्य-रेखा को काटे तो ऐसी रेखा वाला जातक चिन्ताग्रस्त तथा नित्य नये रोगो से त्रस्त बना रहता है।

चित्र ४३९—यदि प्रथम मगल-क्षेत्र पर एक रेखा खडी हो और उसे अन्य छोटी-छोटी आडी रेखाए काट रही हो तो ऐसी रेखा वाले जातक के जीवन मे नित्य नये झगड़ उठ खड़े होते रहते है, परन्तु शत्रु-पक्ष निर्बल ही बना रहता है।
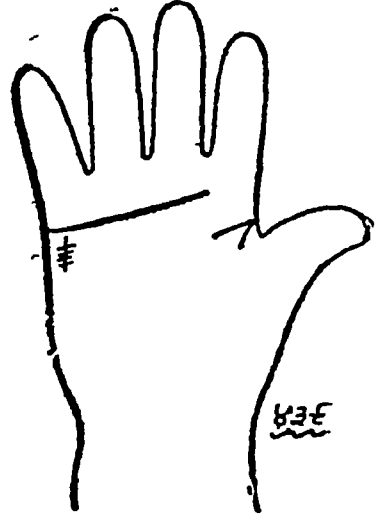
चित्र ४४०—यद्दि द्वितीय मगल-क्षेत्र पर सीधी तथा स्पष्ट दो आड़ी रेखाए हो और उन्हे वीच मे से एक खडी रेखा काट रही हो तो
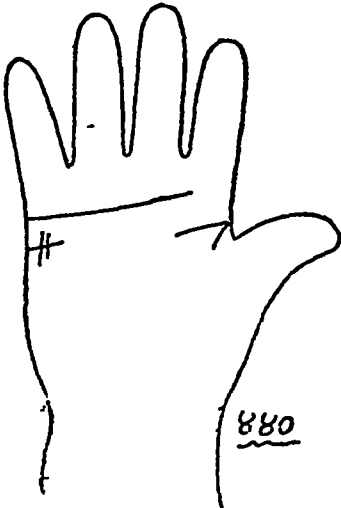
ऐसी रेखाओ वाला जातक किसी ऊंची जगह से गिरकर चोट खाता है। बहुत समय में ठोक हो पाता है।

चित्र ४४१—यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र पर सरल तथा स्पष्ट केवल दो रेखाए हों, उन्हे बीच मे से कोई रेखा काट न रही हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक किसी ऊचे स्थान से गिरकर चोट खाता है और उसके कारण कुछ दिनो बाद मर भी जाता है।

चित्र ४४२—यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र के मूल से तीन गहरी और तिरछी रेखाए निकलकर शुक्र-क्षेत्र पर पहुंचे तो ऐसा जातक जुआ, सट्टा, व्यभिचार आदि मे अपनी पैतृक-सम्पत्ति को नष्ट करके दु.खी होता है।
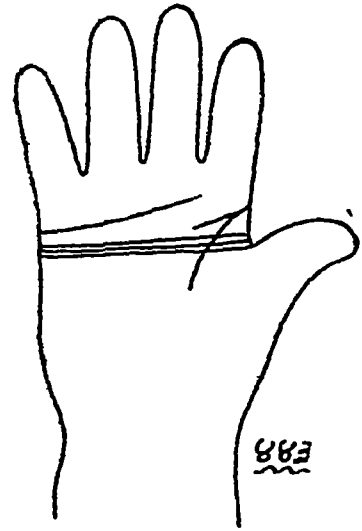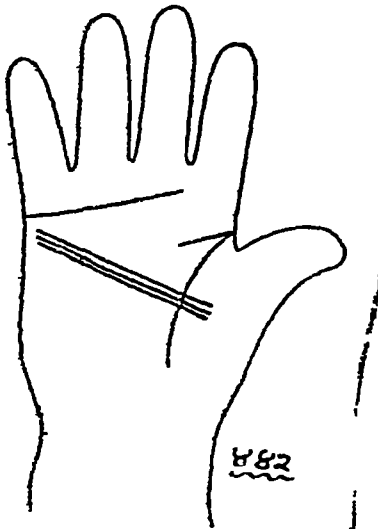
चित्र ४४३—यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र पर पूर्वोक्त तीन गहरी रेखाओं द्वारा त्रिभुज-चिन्ह बनता हो तो ऐसे चिन्ह वाला जातक कुकर्मों मे अपना धन नष्ट कर देने के उपरान्त शुद्ध बुद्धि होकर उन्नति

के पथ पर अग्रसर होता है। ऐसे चिन्ह वाले व्यक्ति प्राय. दिवालिया भी हो जाते है।

चित्र ४४४—यदि प्रथम मगल-क्षेत्र से कोई रेखा निकलकर हृदय-रेखा मे जा मिले और वह वीच मे किसी छोटी रेखा द्वारा कटी हुई भी हो तो ऐसी रेखा वाला जातक अनेक स्त्रियो के सतीत्व को नष्ट करता है और अत्यन्त निर्लज्ज होता है।
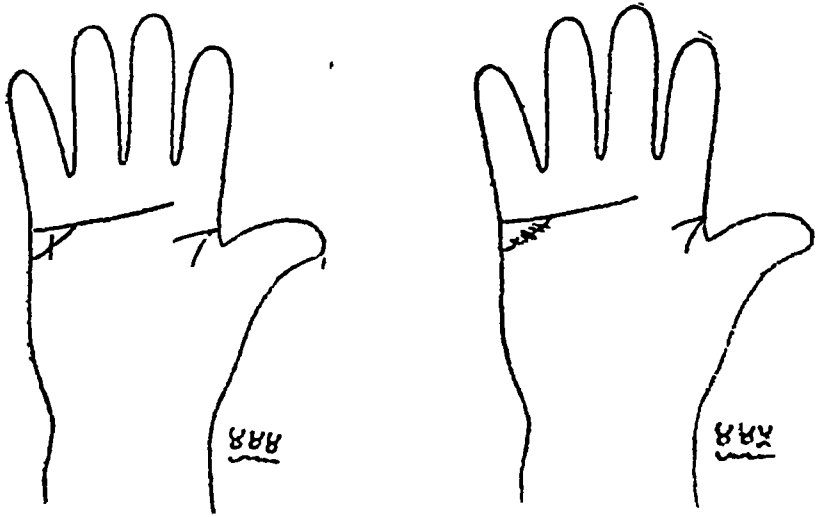
चित्र ४४५—यदि पूर्वोक्त प्रथम मगल-क्षेत्र से निकलकर हृदय-रेखा मे मिलने वाली रेखा वहुत-सी आडी रेखाओ द्वारा कटी हुई तो ऐसा जातक वडा व्यभिचारी होता है और उसे स्त्री-सम्वन्धी किसी मामले में जेल-यात्रा भी करनी पडती है।

चित्र ४४६—यदि प्रथम मगल-क्षेत्र से निकली हुई रेखा हृदय-रेखा को काटती हुई सूर्य-क्षेत्र पर पहुंचे और वहां उसे एक आडी रेखा काट दे तो ऐसा जातक अद्भुत विद्वान् होते हुए भी समाज का कुछ कल्याण नही करता और अपनी पत्नी का दास वनकर रहता है।

चित्र ४४७—यदि द्वितीय मगल-क्षेत्रस्थ रेखा पर कोई नक्षत्र-चिन्ह हो तो जातक अत्यन्त क्रोधी, दम्भी और हत्यारा होता है। उसकी स्वय की मृत्यु भी किसी जगली पशु, शत्रु अथवा क्रोधावेश मे हत्या के द्वारा होती है।
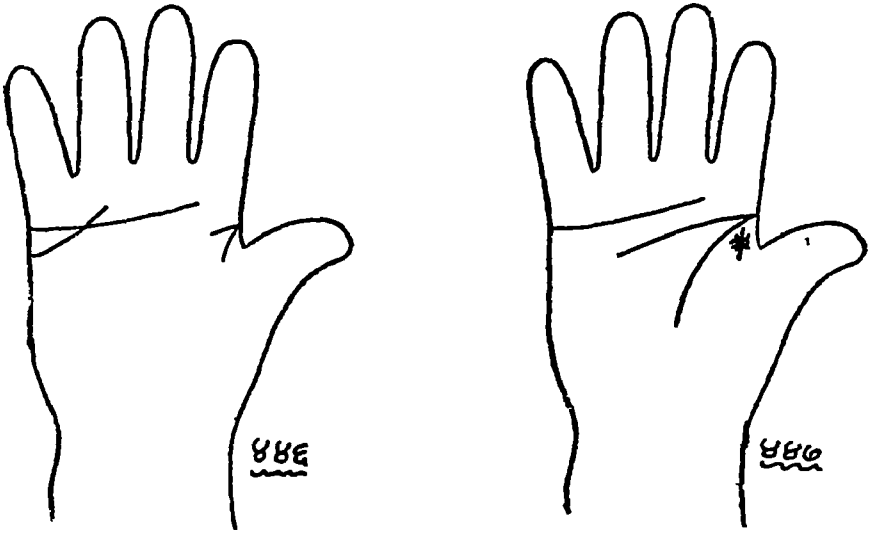
चित्र ४४८—यदि द्वितीय मंगल-क्षेत्र पर जीवन-रेखा के समीप त्रिकोण चिन्ह हो तो ऐसा जातक शास्त्रास्त्र विद्या मे निपुण, वीर, साहसी, योद्धा परन्तु पर-स्त्री-गामी होता है और उसकी मृत्यु किसी गुप्तेन्द्रिय के रोग के कारण होती है।

चित्र ४४९—यदि द्वितीय मंगल-क्षेत्र की मगल-रेखा पर ही कोई त्रिभुज-चिन्ह हो तो ऐसा जातक अनेक स्त्रियो के साथ सहवास करता हैं। उसमें कष्ट सहन करने की अपूर्व क्षमता होती है, अतः वह यातनाओ को भी सहन कर लेता है। इस चिन्ह वाली स्त्रियां सच्चरित्र होती हैं, परन्तु उन्हे मिथ्या-अपवाद का शिकार होना पड़ता है।

चित्र ४५०—यदि द्वितीय मंगल-क्षेत्रस्थ मगल-रेखा पर शुक्र की ओर वृत्त-चिन्ह हो तो ऐसा जातक आत्मोन्नति के लिए प्रयत्नशील वना रहता है।

४५१
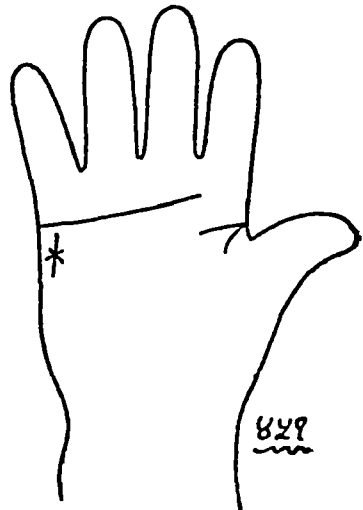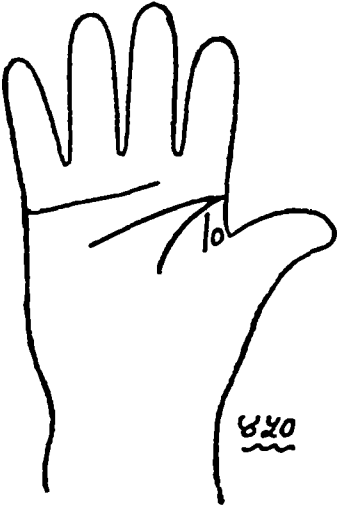
चित्र ४५१—यदि प्रथम मगल-क्षेत्र की खडी रेखा क्रास-चिन्ह हो तो जातक पराक्रम तथा स्वास्थ्य से हीन होता है । वह मुकद्दमेबाजो द्वारा पैतृक सम्पत्ति का बंटवारा करवाकर उसे कुसगति मे नष्ट कर देता है और अन्त मे अपने जीवन को दु.खपूर्ण बना लेता है।

चित्र ४५२—यदि प्रथम मगल-क्षेत्र पर एक सीधी रेखा पर ऐसा चतुष्कोण चिन्ह हो, जिसके रेखा द्वारा दो भाग हो जाते हो तो ऐसा जातक भूगर्भ विद्या का ज्ञाता, धनी, सुखी, भू-सम्पत्ति को प्राप्त करने वाला, परन्तु विषयी होता है।
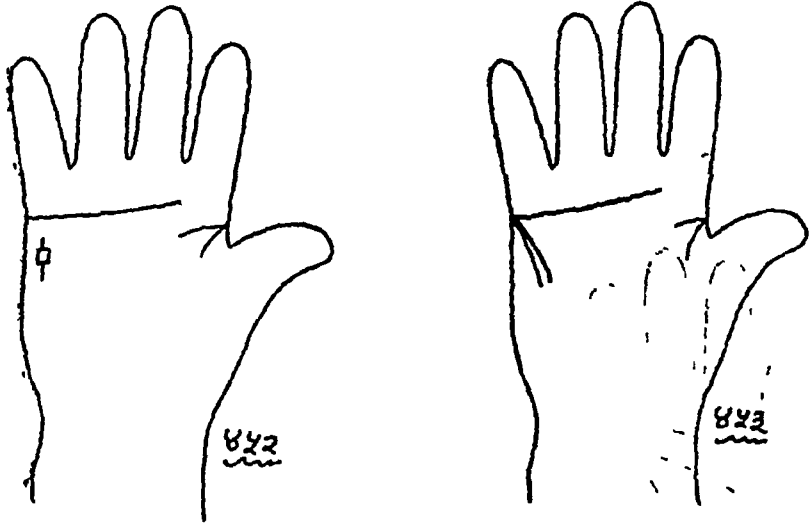
चित्र ४५३—यदि प्रथम मगल-क्षेत्र के ऊपरी भाग से अथवा हृदय-रेखा के मूल मे से दो गहरी तथा टेढी रेखाए निकलकर चन्द्र-क्षेत्र पर पहुंचें तो ऐसा जातक दम्भी लम्पट, स्वार्थी तथा भाई-बन्धुओ से विरोध रखने वाला होता है और मुकद्दमेबाजी मे अपनी सारी सम्पत्ति नष्ट कर बैठता है।

चित्र ४५४—यदि प्रथम मगल-क्षेत्र के ऊपरी भाग से अथवा हृदय-रेखा के मूल मे से केवल एक ही गहरी तथा टेढी रेखा निकलकर चन्द्र-क्षेत्र पर पहुची हो तो ऐसे जातक पर पूर्वोक्त दो रेखाओ जैसा फला-देश तो घटित होता है, परन्तु वह कार्य-कुशल होता है और अन्त मे सफलता भी प्राप्त करता है ।
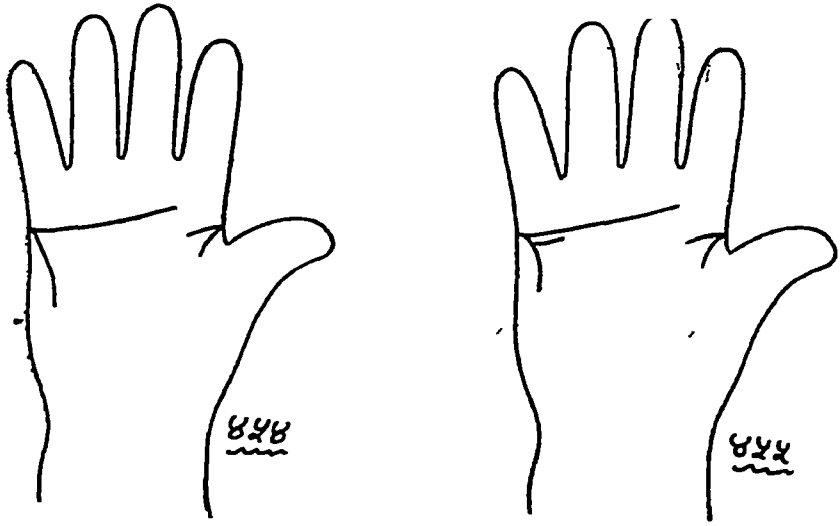
चित्र ४५५—यदि पूर्वोक्त प्रथम मगल क्षेत्रीय-रेखा चन्द्र-पर्वत पर हृदय-रेखा से कुछ नीचे सामानातर से उठने वाली शत्रु रेखा का स्पर्श कर रही हो तो जातक को अपने शत्रुओ से धन प्राप्त होता है और शत्रुओ के कारण ही उसकी प्रतिष्ठा आदि मे वृद्धि होती है ।

चित्र ४५६—यदि प्रथम मगल-क्षेत्र पर हृदय-रेखा के मूल से निकली हुई मगल-रेखा घूमकर भाग्य-रेखा पर पहुच जाए तो वह जातक के भाग्योदय की सूचक होती है ।
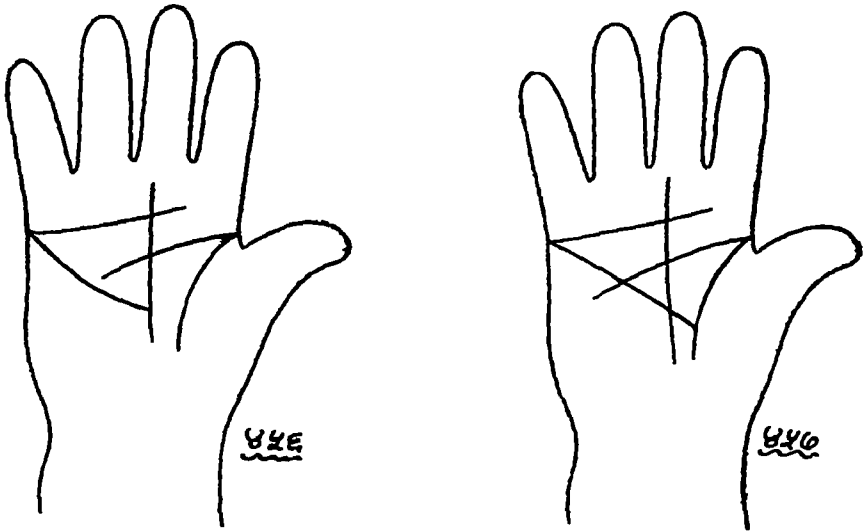
चित्र ४५७—यदि पूर्वोक्त प्रथम मगल-क्षेत्रीय रेखा और आगे बढ-कर भाग्य-रेखा तथा मस्तक-रेखा को काटती हुई जीवन-रेखा को स्पर्श करे, तो उस वयोमान मे जातक को पृथ्वी अथवा खेती द्वारा अत्य-धिक धन प्राप्त होता है और उसकी प्रतिष्ठा मे वृद्धि भी होती है।

चित्र ४५८—यदि पूर्वोक्त प्रथम मगल-क्षेत्रीय-रेखा बीच मे द्विभुज हो जाय और उसकी दोनो भुजाए भाग्य-रेखा पर मिले जिससे कि एक त्रिकोण जैसा चिन्ह् बन जाए तो ऐसे चिन्ह् वाले जातक के जीवन मे कई ऐसी घटनाए घटती हैं, जिनके कारण उसे अत्यधिक चिन्तित रहना पडता है।

चित्र ४५९—यदि पूर्वोक्त प्रथम मगल-क्षेत्रीय द्विभुज-रेखा की केवल एक ही भुजा भाग्य-रेखा को स्पर्श करे, दूसरी भुजा अलग रहे तो जातक सुखी, समृद्ध ,,वस्त्राभूषणो से युक्त तथा विलासपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चित्र ४६०—यदि पूर्वोक्त रेखा द्वितीय मंगल-क्षेत्र से निकलकर जीवन-रेखा तथा हृदय-रेखा को काटती हुई घूमकर भाग्य-रेखा के
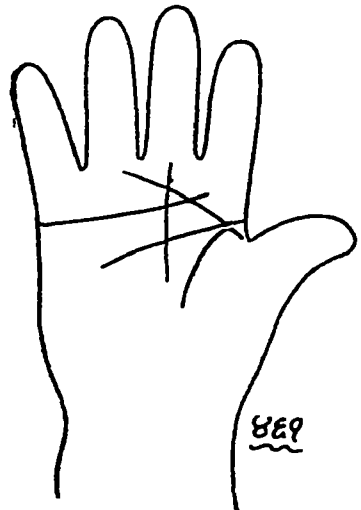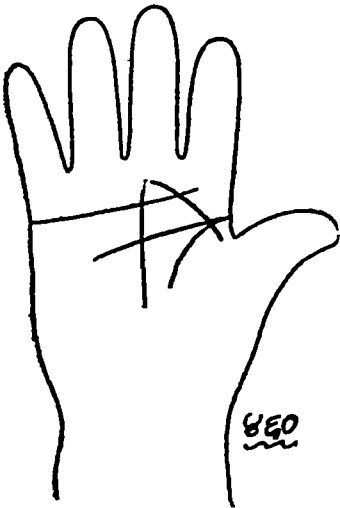
पास जा पहुचे तो जातक उन्नतिशील तथा सहिष्णु होता है और यदि भाग्य-रेखा को स्पर्श करे तो उस वयोमान मे विशेष परिश्रम द्वारा उसके भाग्य की उन्नति होती है। उसी आयु मे उस पर अपने किसी प्रेमी पर आघात करने का आरोप भी लगता है।

चित्र ४६१—यदि पूर्वोक्त द्वितीय मगल-क्षेत्रीय-रेखा भाग्य-रेखा को काटती हुई सूर्य-क्षेत्र पर पहुचे तो जो जातक की प्रतिष्ठा को हानि पहुचती है परन्तु ऐसा व्यक्ति विद्वान्, परोपकारी, दयालु तथा गम्भीर होते हुए भी पर-स्त्री-गामी होता है और अपनी पत्नी से भी अधिक प्रेम रखता है।

चित्र ४६२—यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र से उत्पन्न पूर्वोक्त रेखा बुध-क्षेत्र पर पहुचे तो ऐसे जातक को सट्टे आदि के काम मे हानि उठानी पडती है और उसके व्यवसाय तथा व्यवहार मे शत्रुगण विघ्न उपस्थित करते है।

४६२

४६३
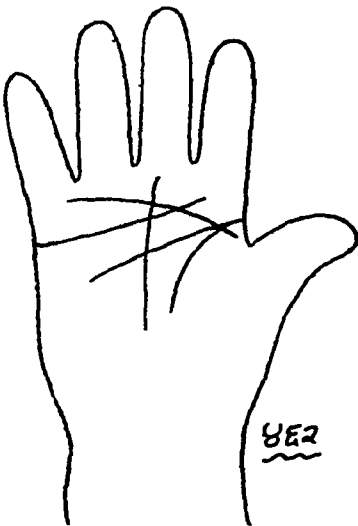
चित्र ४६३—यदि पूर्वोक्त द्वितीय मंगल-क्षेत्रीय-रेखा बुध-क्षेत्र पर पहुचकर नीचे झुकती हुई विवाह-रेखा अथवा कनिष्ठा अगुली के प्रथम पर्व के मूल में जाकर समाप्त हो तो पूर्वोक्त अशुभ प्रभाव नष्ट होकर शुभ फल प्राप्त होता है। ऐसे जातक का जीवन सुखी तथा उन्नतिशील होता है और पत्नी भी धनी घर की तथा सुशीला होती है।

चित्र ४६४—यदि पूर्वोक्त द्वितीय मंगल-क्षेत्रीय-रेखा शनि-क्षेत्र पर पहुचे तो ऐसा जातक अपने से अधिक आयु वाली स्त्री के साथ समागम करने वाला, दरिद्र, आलसी तथा दुःखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चित्र ४६५—यदि पूर्वोक्त रेखा द्वितीय मंगल-क्षेत्र से चन्द्राकार होकर गुरु-क्षेत्र पर तर्जनी अगुली के मूल में जाकर समाप्त हो तो ऐसा जातक सब कामो मे कुशल, संगीतज्ञ, विद्वान्, धनी, यशस्वी तथा सौभाग्यशाली होता है।

चित्र ४६६—यदि पूर्वोक्त रेखा द्वितीय-मगल-क्षेत्र से स्पष्ट, सीधी तथा गहरी निकलकर जीवन-रेखा को काटती हुई हृदय-रेखा के समीप तक चली जाय तो ऐसा जातक पर-स्त्री-गामी होता है और वह किसी वेश्या अथवा व्यभिचारिणी स्त्री से प्रेम-विवाह करता है।
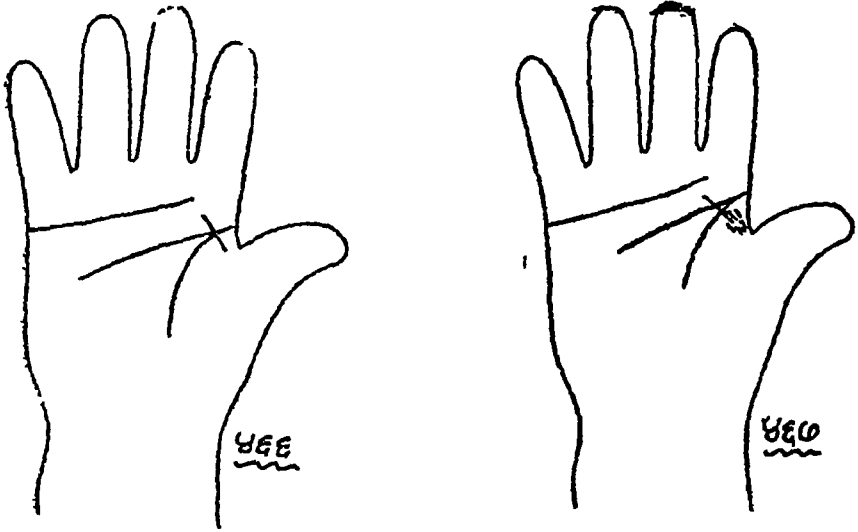
चित्र ४६७—यदि द्वितीय-मंगल-क्षेत्र पर पूर्वोक्त रेखा की भांति और भी कुछ छिन्न-भिन्न रेखाए हो तो जातक मूर्ख, निर्लज्ज तथा कामातुर होता है और वह अनेक स्त्रियों के साथ रमण करता है।

चित्र ४६८—यदि पूर्वोक्त द्वितीय मगल-रेखा हृदय-रेखा को स्पर्श करती हो और जीवन-रेखा, हृदय-रेखा तथा उक्त रेखा के योग से त्रिकोण बनता हो ऐसे जातक का मनोबल बहुत बढा-चढा होता है। वह नवीन भवन का निर्माण कराता है तथा आध्यात्मिकता की ओर अग्रसर होता है।
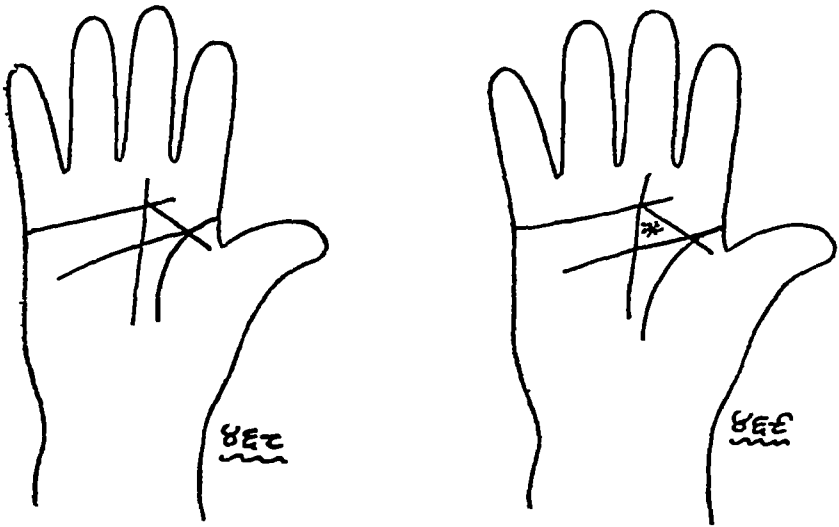
चित्र ४६९—यदि पूर्वोक्त त्रिकोण-चिन्ह के बीच मे कोई नक्षत्र-चिन्ह भी हो तो जातक के भवन-निर्माण कार्य मे बाधा पड़ती है और गृह-निर्माण अधूरा ही रह जाता है।

चित्र ४.०—जीवन-रेखा से उत्पन्न भाग्य-रेखा को द्वितीय मगल-क्षेत्र से उत्पन्न रेखा यदि काट रही हो और उसके कारण एक त्रिकोण बन जाता हो तो ऐसी रेखाओ वाले जातक को आर्थिक स्थिति बिगड़ जाती है और उसे अपने बन्धु-बान्धओ द्वारा अपमानित होना पड़ता है।

चित्र ४७१—यदि प्रथम मगल-क्षेत्र पर तलवार जैसा चिन्ह हो तो ऐसे चिन्ह वाला जातक दुष्ट प्रकृति, व्यभिचारी तथा हत्यारा होता है। उसे कई बार जेल-यात्रा भी करनी पड़ती है।

चित्र ४७२—यदि पूर्वोक्त तलवार-चिन्ह हृदय-रेखा तथा मस्तक-रेखा को स्पर्श करता हुआ हथेली के बीच तक चला गया हो तो ऐसा

जातक साहसी, युद्ध-प्रिय तथा अस्त्र-शस्त्र का निर्माण करने वाला होता है।

चित्र ४७३—यदि पूर्वोक्त तलवार चिन्ह द्वितीय-मगल-क्षेत्र पर हो तो उस जातक की स्त्री व्यभिचारिणी होती है और जातक उसे पर-पुरुष के साथ रमण करते हुए देखकर मार डालता है। ऐसे व्यक्ति को रक्तपित्त आदि रोग तथा चिन्ताओ का शिकार रहना पडता है।

चित्र ४७४—द्वितीय मगल-पर्वत पर पाई जाने वाली रेखाओ को भाई-बहन की रेखाए कहा जाता हैं। इनमे जितनी रेखाए शुद्ध तथा गहरी हो, वे भाइयो तथा जितनी रेखाए पतली हो वे बहनो की सख्या सूचित करती हैं—यह प्राच्यमत है।
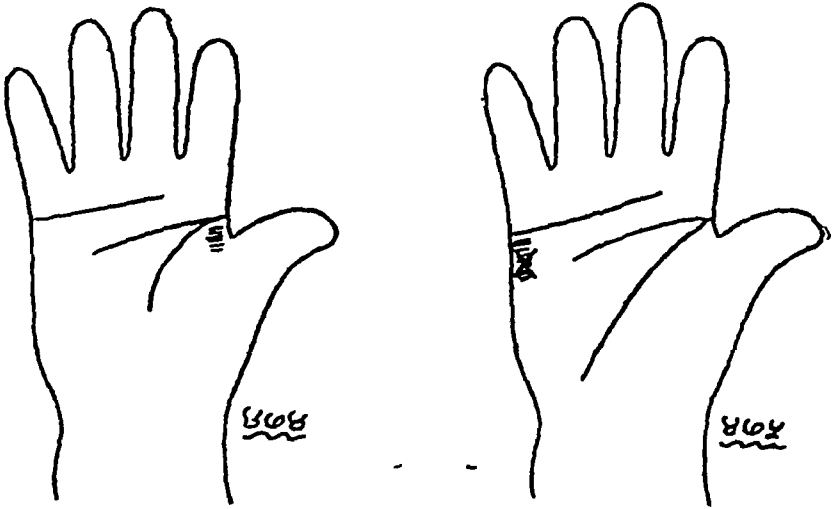
चित्र ४७५—यदि मगल का पर्वत चन्द्र क्षेत्र की ओर झुका हुआ हो तथा चन्द्र-पर्वत का निचला भाग उन्नत हो, उक्त दोनों ग्रह-स्थानों के बीच कई आडी महीन रेखाएं हों और उन पर क्रास-चिन्ह हो तथा जीवन-रेखा चन्द्र-पर्वत के नीचे तक गई हो तो ऐसे जातक को स्त्री-जन्य कष्ट होता है।

चित्र ४७६—यदि चन्द्र तथा बुध-क्षेत्र उन्नत हो, मंगल-क्षेत्र निम्न हो और मगल-क्षेत्र पर कई आडी महीन रेखाए हो तो जातक को चर्मरोग तथा अग्नि, शस्त्र आदि का भय होता है।
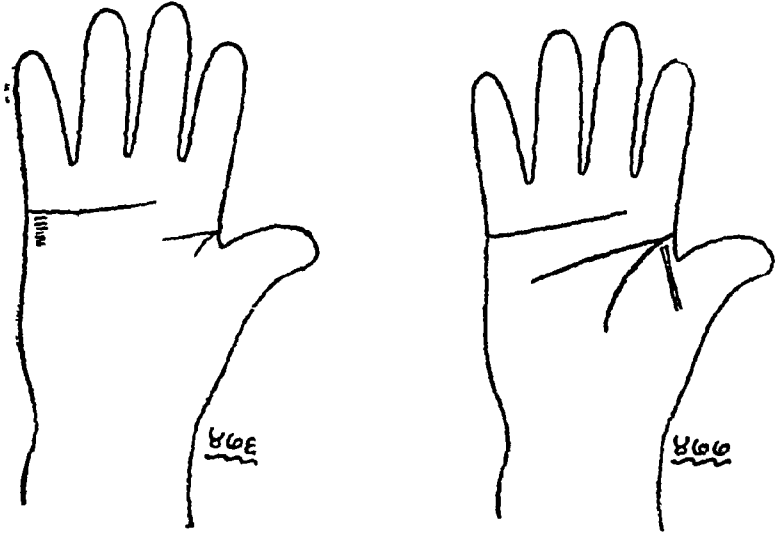
चित्र ४७७—यदि द्वितीय-मगल-क्षेत्र के समीप से दो रेखाएं चलकर अंगुष्ठ मूल तक पहुचे तो ऐसा जातक कार्यपटु, योग्य, स्वेच्छाचारी, वस्त्राभूषणो का प्रेमी तथा तार्किक होता है।

चित्र ४७८—यदि द्वितीय-मगल-क्षेत्र से एक रेखा चलकर अगूठे के चारों ओर घूम गई हो तो ऐसा जातक राजा के समान ऐश्वर्यशाली, सुखी, यशस्वी, स्वस्थ, सुन्दर, धन-धान्य सम्पन्न तथा अनेक विद्याओ का ज्ञाता होता है।

चित्र ४७९—यदि द्वितीय-क्षेत्र-मगल के समीप से चलकर अगुष्ठ मूल तक पहुचने वाली दो समानान्तर रेखाए छिन्न-भिन्न हो तो ऐसी रेखाओ वाले जातक को पूर्वोक्त सभी प्रवृत्तिया छिन्न-भिन्न होती हैं।
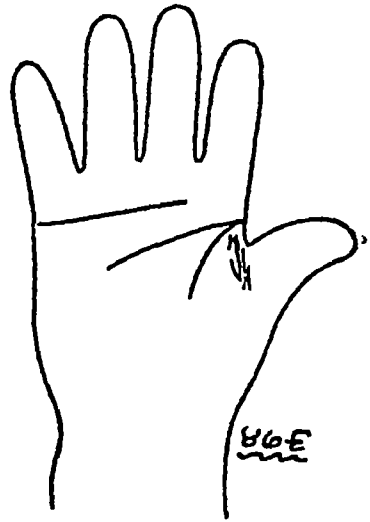
टिप्पणी—(१) शुक्र-क्षेत्र पर जीवन-रेखा के भीतर जो मगल-रेखा होती है, उसे जीवन-रेखा की सहायिका रेखा अथवा मगल-रेखा कहा जाता है । उस रेखा के प्रभाव का विस्तृत वर्णन 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के अन्य खण्डो मे यथास्थान किया गया है।

(२) प्रथम अथवा द्वितोय-मगल-क्षेत्र पर आकर समाप्त होने वाली अथवा इन स्थानों से आरम्भ होने वाली अन्य रेखाओ का वर्णन भी विभिन्न खण्डो मे यथास्थान किया जा चुका है।

(३) मगल-क्षेत्रीय रेखाओ पर विचार करते समय भी हाथ की आकृति, मुख्य रेखाओ की स्थिति, ग्रह-क्षेत्रो को उच्चता अथवा अनुच्चता, रग आदि सभी बातो को ध्यान मे रखना आवश्यक है।

(४) मगल-क्षेत्र पर पाए जाने वाले क्रास, द्वीप, नक्षत्र, जाल आदि चिन्हो के प्रभाव के विषय मे 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के 'हस्त-चिन्ह-विचार' नामक अगले खण्ड मे विस्तारपूर्वक सचित्र वर्णन किया गया है।

चन्द्र-क्षेत्रीय रेखाएं

कनिष्ठा उगली के नीचे, हृदय-रेखा के नीचे, प्रथम मगल-क्षेत्र से ऊपर मणिबन्ध तक हथेलो के आधे भाग को चन्द्रमा का पर्वत अथवा 'चन्द्र-क्षेत्र' माना गया है।

इस क्षेत्र पर पाई जाने वाली रेखाओ मे से अधिकाश रेखाओ के शुभाशुभ फल का विस्तृत वर्णन 'यात्रा-रेखा', 'भ्रमण-रेखा' आदि विषयो के अन्तर्गत 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के 'स्वास्थ्य-रेखा' नामक खण्ड मे किया जा चुका है। इस क्षेत्र पर समाप्त होने वाली अन्य रेखाओं का उल्लेख अन्य खण्डो मे हुआ है।

यहा पर हम चन्द्र-क्षेत्र पर पाई जाने वालो उन अन्य प्रभाव-रेखाओ को स्थिति एव फलाफल का वर्णन कर रहे है, जो यात्रा आदि के अतिरिक्त जातक के जीवन के विभिन्न क्षेत्रो पर अपना प्रभाव डालती हैं। चन्द्र-क्षेत्रीय प्रभाव-रेखाओ के सम्बन्ध मे प्राच्य तथा पाश्चात्य मतो का एकीकरण करते हुए उनके साराश को इस प्रकरण मे प्रस्तुत किया गया है। पाठको की सुविधा के लिए चन्द्र-क्षेत्रीय प्रभाव-रेखाओ की प्रत्येक स्थिति के चित्र भी विवरण के साथ ही दे दिये गए है। प्रसगानुसार चन्द्र-क्षेत्र पर पाई जाने वालो अथवा इस क्षेत्र पर आकर समाप्त होने वाली कुछ अन्य रेखाओ के शुभाशुभ फल की पुनरावृत्ति भी इस प्रकरण मे कर दी गई है।

चित्र सख्या ४८० मे चन्द्र-क्षेत्रीय प्रभाव-रेखाओ के विभिन्न रूपो को प्रदर्शित किया गया है।
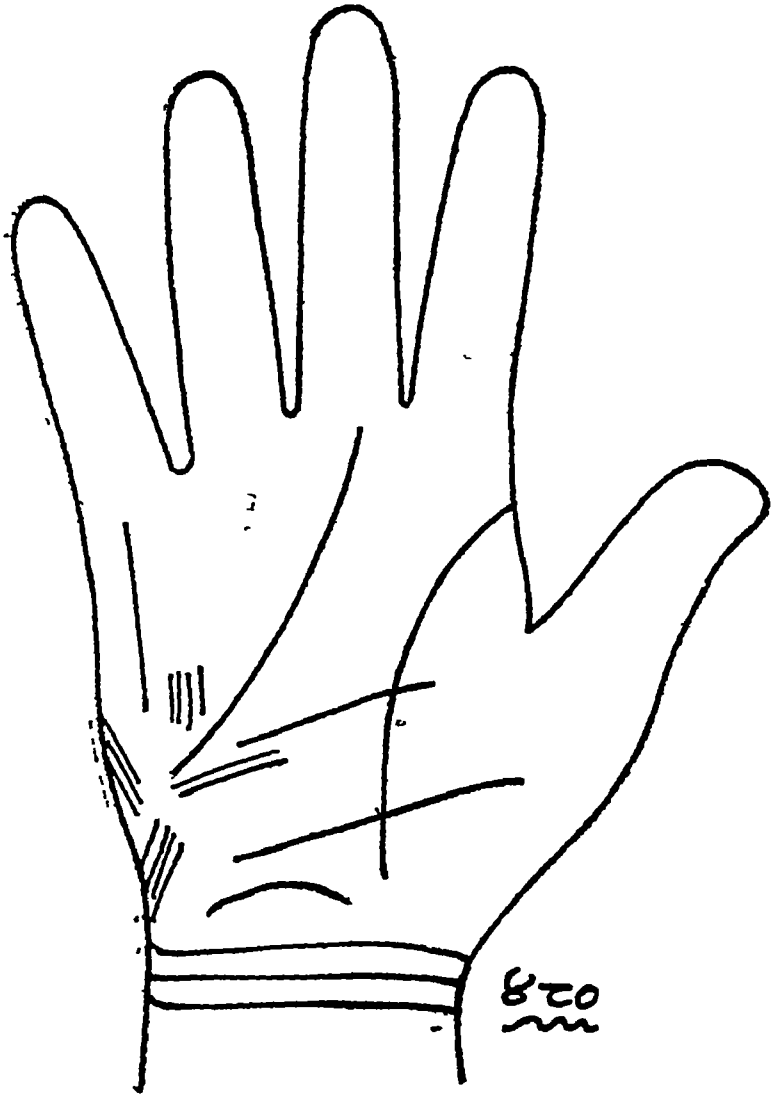
[चन्द्र-क्षेत्रीय प्रभाव-रेखाओं की विभिन्न स्थितियां]

चित्र ४८१—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर एक छोटी खड़ी रेखा हो तो उसे अशुभ लक्षण समझना चाहिए।
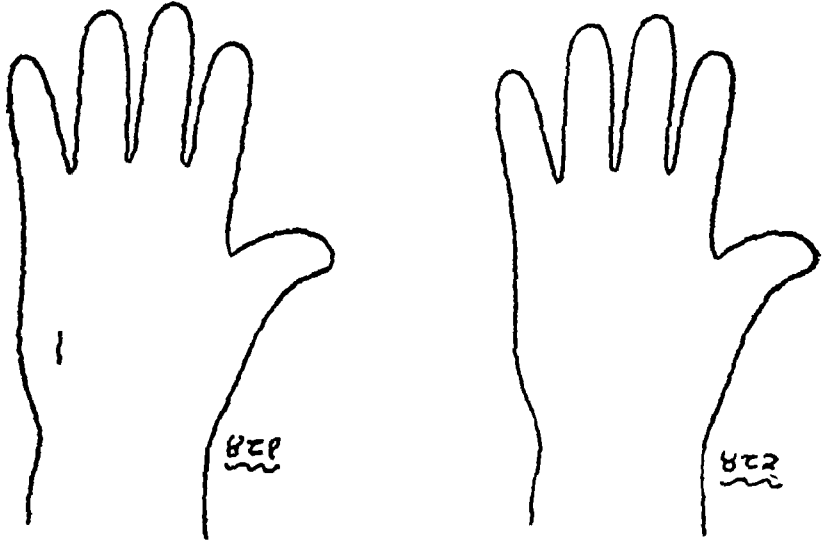
चित्र ४८२—यदि चन्द्र-क्षेत्रीय उक्त खडी रेखा को कोई आड़ी रेखा काट रही हो और ऐसा चन्द्र-क्षेत्र के मध्य भाग मे हो तो जातक को वायु-विकार, गठिया आदि की बीमारी होती है।

चित्र ४८३—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर टूटी-फूटी अनेक खडी रेखाए हों तो जातक को दिमागी कमजोरी होती है, जिसके कारण उसे नीद नहीं आती।

चित्र ४८४—यदि हथेली के बाहरी भाग से आरम्भ होकर एक अथवा अनेक आड़ी रेखाए चन्द्र-क्षेत्र पर आ रही हो तो वे जातक की लम्बी अथवा समुद्री-यात्राओ की सूचक होती है। ऐसी रेखाओ का विस्तृत वर्णन यात्रा-रेखाओ के अन्तर्गत किया जा चुका है। जितनी रेखाए अधिक संख्या में होंगी, यात्राएं भी उतनी ही अधिक होती हैं।
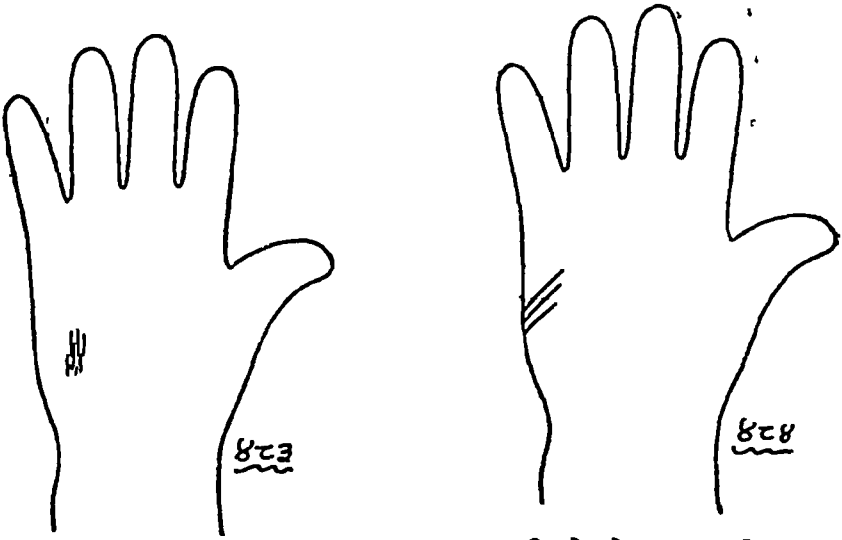
चित्र ४८५—यदि पूर्वोक्त यात्रा-रेखा टूटी हो तो जातक को यात्रा मे भय तथा असफलता प्राप्त होती है।
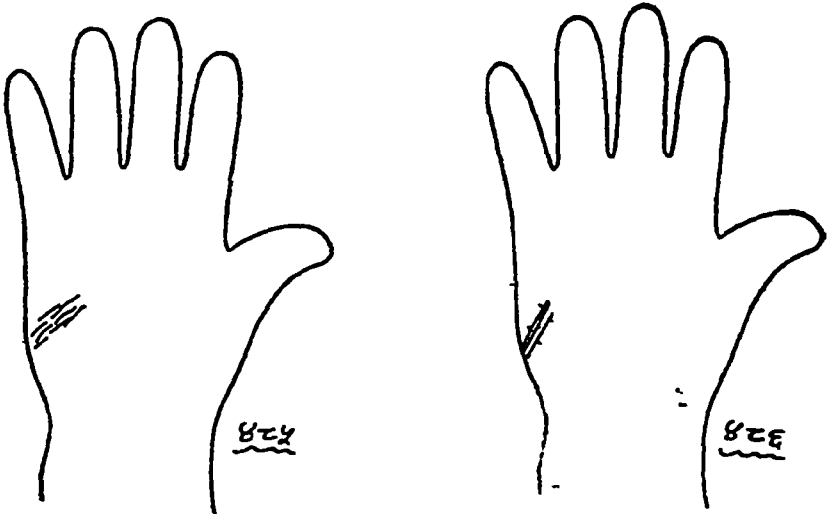
चित्र ४८६—यदि पूर्वोक्त यात्रा-रेखा किसी छोटी रेखा द्वारा कटा हो तो भी पूर्वोक्त फल प्राप्त होता है।

चित्र ४८७—यदि पूर्वोक्त यात्रा-रेखा पर द्वीप-चिन्ह हो तो भी उक्त अशुभ फल होता है अर्थात् जातक की यात्रा भयदायक, कष्टप्रद, निष्फल तथा हानिकारक सिद्ध होती है।
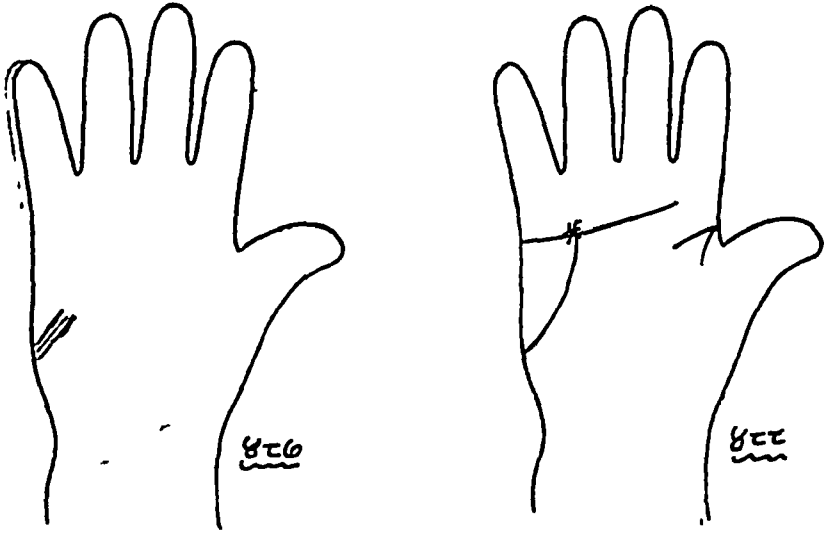
चित्र ४८८—यदि चन्द्र-क्षेत्रस्थ पूर्वोक्त यात्रा-रेखा बढकर हृदय-रेखा तक पहुच जाए और उसके ऊपर समाप्त हो तथा हृदय-रेखा पर वही एक 'नक्षत्र-चिन्ह' भी हो तो जातक अपनी प्रेमिका (अथवा प्रेमी) के लिए सब कुछ त्याग कर केवल उसे ही साथ लेकर दूर देश को चला जाता है।

चित्र ४८९—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर अनेक छोटी-छोटी रेखाए परस्पर मिली हुई-सी हो तथा मस्तक-रेखा द्वीप युक्त अथवा शृखलाकार हो और वह घूमकर चन्द्र-क्षेत्र पर आई हो तथा उसके समाप्ति-स्थल पर नक्षत्र-चिन्ह भी हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक पागल हो जाता है।
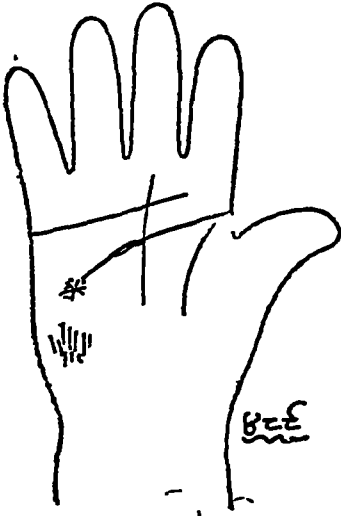
चित्र ४९०—यदि चन्द्र-पर्वत पर अनेक पतली-पतली रेखाएं हों तो ऐसे जातक क मज्जातन्तु बिगड़ा रहता है।

चित्र ४९१—यदि चन्द्र-पर्वत पर एक आड़ी रेखा दिखाई देती हो
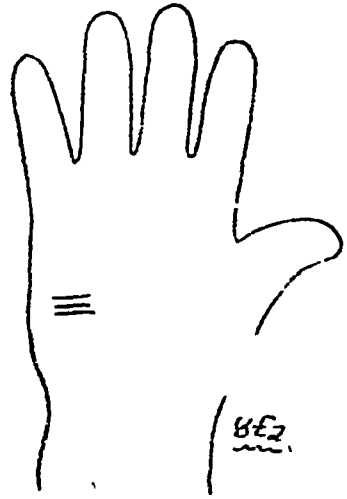
तो जातक को भविष्य में आने वाले संकटो की सूचना तथा उनके निवारण का उपाय—इन दोनों बातों की जानकारी अपने आप होती रहती है।

चित्र ४९२—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर तीन से अधिक आडी रेखाए हों तो जातक को उसके व्यवसाय से सम्बन्धित सच्ची सूचना देने वाले स्वप्न दिखाई देते रहते है।

चित्र ४९३—यदि मणिबन्ध से कोई रेखा निकलकर चन्द्र-पर्वत पर होती हुई प्रथम मगल-क्षेत्र पर जाती हो तो ऐसी रेखा किसी बड़ी जल-यात्रा की सूचक होती है।
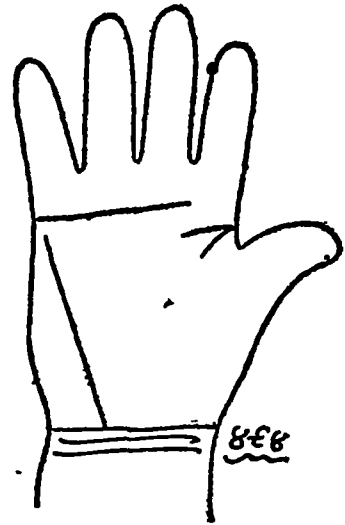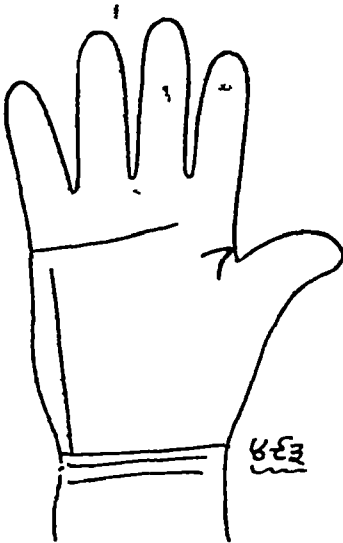
चित्र ४९४—यदि मणिबन्ध से उठकर चन्द्र-क्षेत्र पर होती हुई प्रथम मगल-क्षेत्र पर जाने वाली रेखा आड़ी, उठावदार और गहरी दिखाई दे तो जातक को अनेक बार यात्रा करनी पड़ती है और यात्रा सुखदायक एव लाभप्रद होती है।

चित्र ४९५—यदि मणिबन्ध से उठकर चन्द्र-क्षेत्र पर होती हुई प्रथम मंगल-क्षेत्र पर जाने वाली पूर्वोक्त रेखाओ पर यव-चिन्ह हों तो जिन रेखाओ पर यव-चिन्ह होगे, उन रेखाओं से सम्बन्धित यात्रा में जातक को भय, कष्ट एव सकटों का सामना करना पडेगा।
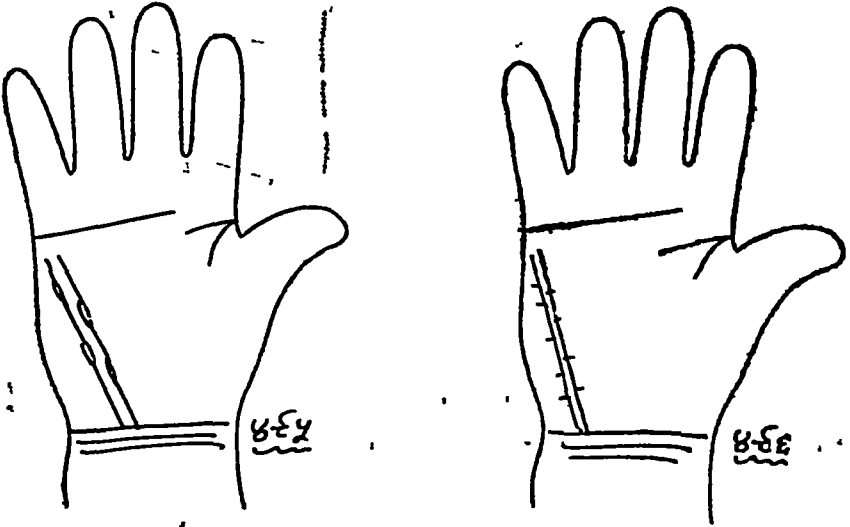
चित्र ४९६—यदि मणिबन्ध से उत्पन्न होने वाली पूर्वोक्त रेखाए अथवा रेखा अन्य छोटी रेखाओं अथवा रेखा द्वारा काट दी गई हों तो भी जातक को उन रेखाओ अथवा रेखा से सम्बन्धित यात्रा-काल मे भय, कष्ट एव सकटो का सामना करना पड़ता है।

चित्र ४९७—यदि पूर्वोक्त रेखा अथवा रेखाओ पर चतुष्कोण चिन्ह हो तो जातक को यात्रा-काल मे सकटो का सामना तो करना पड़ेगा, परन्तु वह उनसे सुरक्षित बना रहेगा।

चित्र ४९८—जिस जातक के हाथ मे चन्द्र-पर्वत से उत्पन्न होकर कोई आड़ी रेखा शुक्र-क्षेत्र पर जाती हो तो वह अत्यधिक परिश्रमी एवं अनेक प्रकार के काम करने वाला होता है।
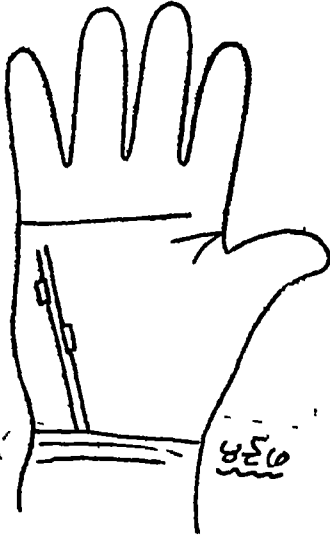
चित्र ४९९— यदि मस्तक-रेखा तथा उनमें से निकली हुई शाखाएं दोनों ही चन्द्र-क्षेत्र पर पहुंचे और सूर्य-क्षेत्र पर जाल-चिन्ह हो तो ऐसी

रेखा-चिन्ह वाला जातक चुगलखोर, कृतघ्न, लफंगा तथा व्यभिचारी होता है।

चित्र ५००—यदि जीवन-रेखा में से कोई शाखा-रेखा निकलकर चन्द्र-क्षेत्र पर पहुंची हो तो ऐसी रेखा वाला जातक किसी की गोद (दत्तक) जाता है और उसे सम्पत्ति का लाभ भी होता है।

चित्र ५०१—यदि मणिबन्ध से कोई रेखा निकलकर चन्द्र-क्षेत्र पर आई हो तो ऐसी रेखा वाले जातक को समुद्र-यात्रा का योग उपस्थित होता है।
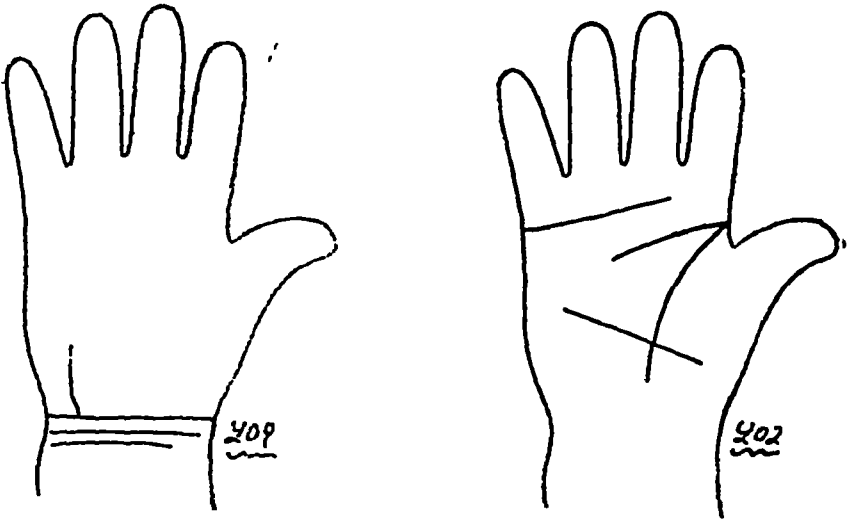
चित्र ५०२—यदि चन्द्र-पर्वत से कोई रेखा निकलकर शुक्र-पर्वत तक टेढी तथा अच्छी उठी हुई गई हो तो ऐसी रेखा वाले जातक को भी समुद्र-यात्रा करने का योग उपस्थित होता है।

चित्र ५०३—चन्द्र-क्षेत्र से निकलकर सूर्य-क्षेत्र तक जाने वाली

रेखा को प्राच्य-मातानुसार 'सरस्वी-रेखा' कहा जाता है। यह रेखा जिस व्यक्ति के हाथ मे होती है, वह विद्वान् तथा कवि होता है।
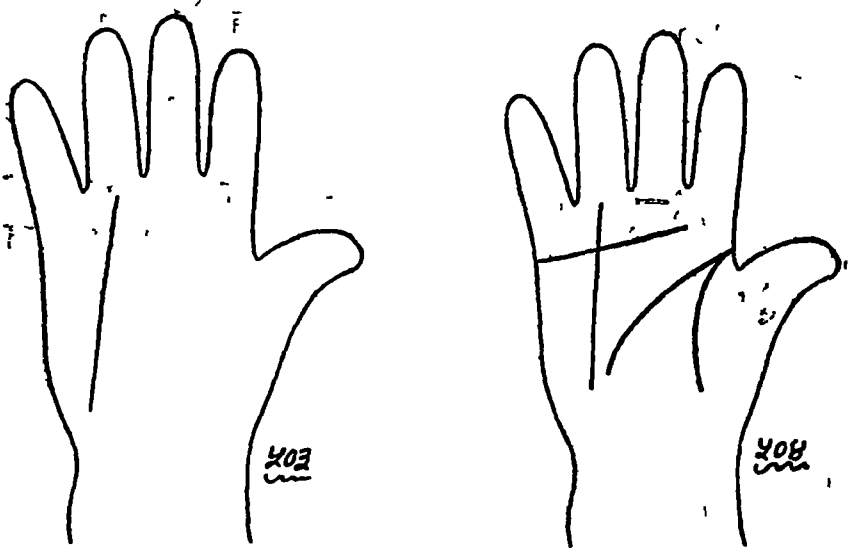
चित्र ५०४—यदि चन्द्र-क्षेत्र से निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर जाने वाली सरस्वती-रेखा के साथ मस्तक-रेखा भी चन्द्र-क्षेत्र पर पहुच रही हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक आकृति-विज्ञान का ज्ञाता तथा महान चित्रकार होता है।

चित्र ५०५—चन्द्र-क्षेत्र से निकलकर मणिबन्ध मे आ मिलने वाली रेखा को प्राच्य-मतानुसार 'केतु-रेखा' कहा जाता है। यह रेखा जिस व्यक्ति के हाथ में हो वह धन-सम्पन्न, वाहनादि के सुख से युक्त तथा आनन्दपूर्ण सात्विक जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चित्र ५०६—यदि किसी जातक के हाथ पर चित्र ५०६ मे प्रदर्शित 'दण्ड-रेखा' हो तो वह विद्वान्, शत्रु-हीन तथा राजसी सुखो का उपयोग करने वाला होता है।
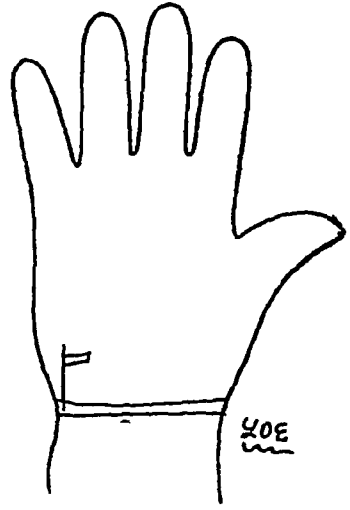
चित्र ५०७—यदि चन्द्र-पर्वत से निर्दोष तथा गहरी आड़ी रेखा निकलकर शुक्र-क्षेत्र पर पहुंचे तो ऐसी रेखा वाला जातक कठिन
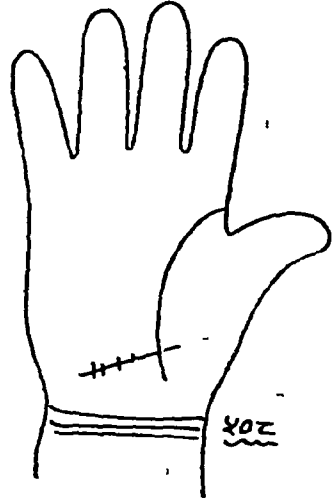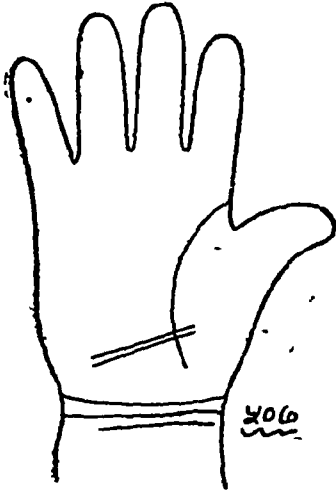
कार्यों में भी सफलता प्राप्त कर लेता है। ऐसी रेखा समुद्र-यात्रा का योग भी उपस्थित करती है।

चित्र ५०८—यदि पूर्वोक्त रेखा पर कई छोटी-छोटी खडी रेखाएं कई जगह से कट रही हो तो कार्य-सिद्धि मे बाधा पडती है तथा यात्रा मे सकटो का सामना करना होता है।

चित्र ५०९—यदि पूर्वोक्त रेखा मे से कई शाखाए निकली हों तो जितनी शाखाए होगी, उतनी ही बार यात्रा का योग उपस्थित होगा।
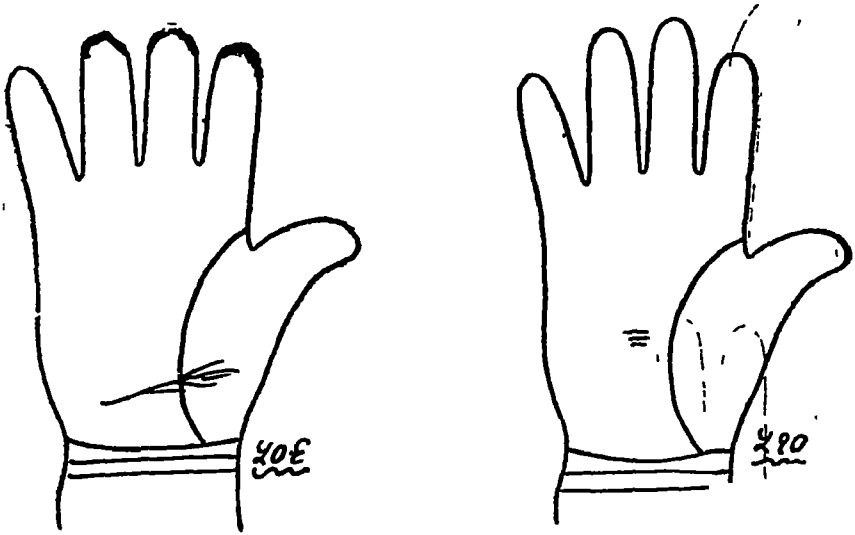
चित्र ५१० के अनुरूप चन्द्र-क्षेत्र पर पाई जाने वाली रेखाएं जातक को भविष्य मे होने वाली अशुभ घटनाओं की सूचना देती हैं तथा उनसे बचने का उपाय भी प्रस्तुत कर देती है, जिसके कारण जातक दुर्घटना का शिकार नही हो पाता।

चित्र ५११ के अनुसार जिस जातक के चन्द्र-क्षेत्र पर ऊर्ध्वगामी तिरछी रेखाए हो, वह सदैव विदेश-यात्रा अथवा समुद्र-यात्रा करता

रहता है। उसे अपने कुटुम्बियो से मोह नही होता। किसी समय उसे न्यायालय की शरण मे भी जाना पड़ता है और कभी-कभी असफलता भी मिलती है।
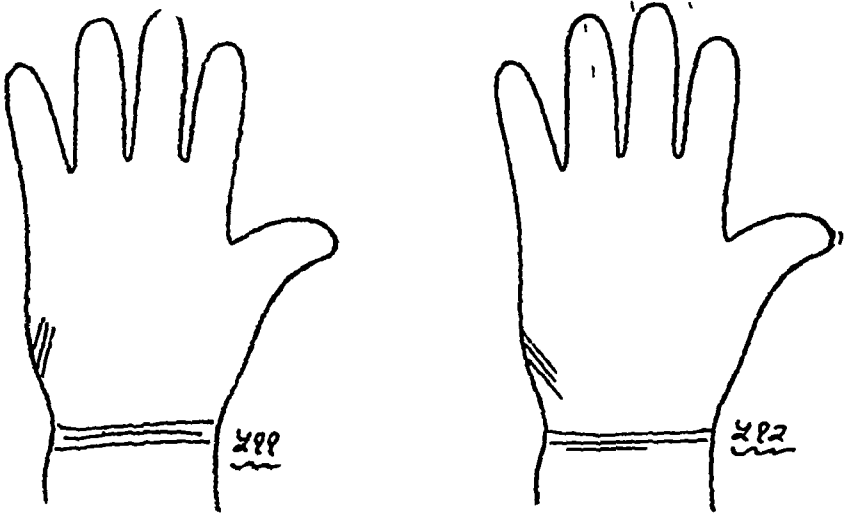
चित्र ५१२ के अनुसार जिस जातक के हाथ पर अधोगामी तिरछी रेखाए हो, वह व्यक्ति ऐश्वर्यशाली, भोग सम्पन्न, स्त्री-धन प्राप्त करने वाला तथा हर प्रकार से सुखी रहने वाला होता है।

चित्र ५१३—यदि पूर्वोक्त प्रकार की रेखाएं अधिक लम्बी होकर मणिवन्ध तक पहुचें तो जातक कुशल इंजीनियर अथवा वास्तुकला-विद् होता है तथा धन, सम्मान एव यश प्राप्त करता है।

चित्र ५१४—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर दाई ओर वहुत-सी छोटी-छोटी खड़ी रेखाए हों तो ऐसी रेखाओ वाला जातक वहुत मैला-कुचैला रहता है तथा अपने स्वास्थ्य को ओर ध्यान नही देता, जिसके कारण उसे भयंकर वीमारियो का शिकार होना पड़ता है।

चित्र ५१५—यदि चन्द्र-क्षेत्र से एक रेखा निकलकर मस्तक-रेखा के ऊपर पहुंच रही है तो ऐसी रेखा वाले व्यक्ति दूसरो की
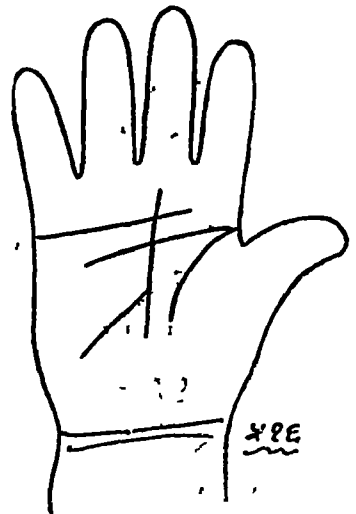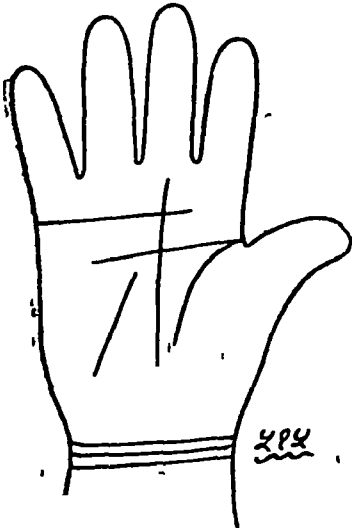
सहायता से ही उन्नति करते हैं परन्तु वे जहां भी रहते है वही पर सब लोग उनकी प्रशसा करते हुए अवश्य पाये जाते हैं।

चित्र ५१६ के अनुसार यदि चन्द्र-क्षेत्र से एक रेखा निकलकर भाग्य-रेखा मे जा मिले तो जिस वयोमान मे उक्त प्राभाविक-रेखा भाग्य-रेखा से मिलती है, उसी आयु वर्ष मे जातक को विपुल सम्पत्ति प्राप्त होती है। यह रेखा जातक की भाग्योन्नति तथा व्यवसाय में सहायक होती है।

चित्र ५१७ के अनुसार चन्द्र-क्षेत्र से एक चौड़ी रेखा निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर पहुंचे तो ऐसा जातक यशस्वी, धनी, सुखी तथा अकस्मात ही धन प्राप्त करने वाला होता है।
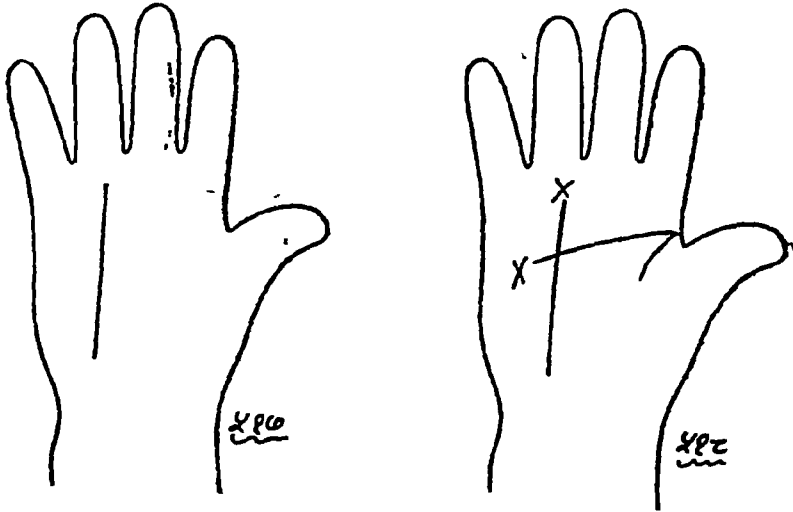
चित्र ५१८—यदि हाथ में पूर्वोक्त चन्द्र-क्षेत्र से निकलकर सूर्य-क्षेत्र पर पहुंचने वाली चौडी रेखा और मस्तक-रेखा के अन्तिम भाग मे क्रास-चिन्ह अथवा नक्षत्र-चिन्ह भी हो तो ऐसा जातक पूर्वोक्त

शुभ फल को प्राप्त करता हुआ भी डरपोक स्वभाव का होता है तथा उसके सचित धन की सट्टेबाजी अथवा कुसगति के कार्यों में व्यय हो जाने की सम्भावना रहती है।

चित्र ५१९—यदि चन्द्र-क्षेत्र से निकलकर लाल रग की एक सर्पाकार-रेखा बुध-क्षेत्र तक पहुचे तो जातक को लाटरी, सट्टा आदि से अचानक ही धन का लाभ होता है।
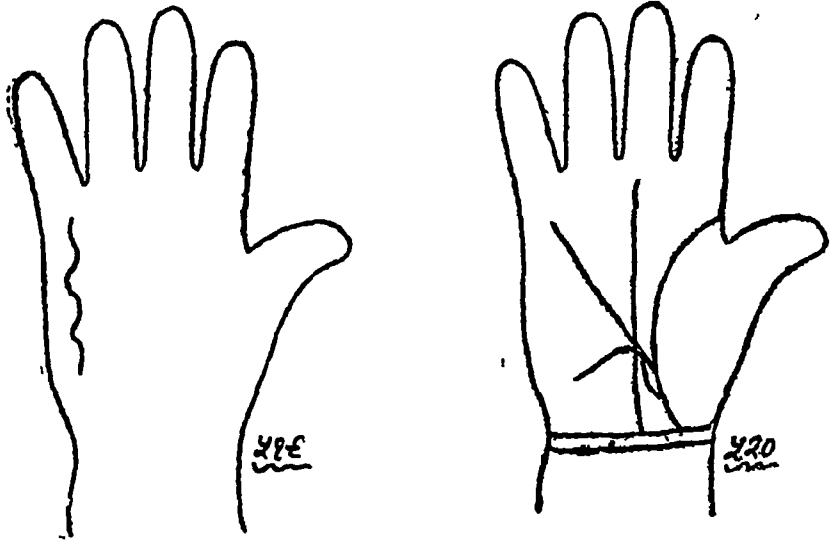
चित्र ५२० के अनुसार चन्द्र-क्षेत्र से निकली हुई रेखा स्वास्थ्य-रेखा का स्पर्श करती हुई जीवन-रेखा से जा मिले, तो ऐसा जातक बुद्धि-हीन, शठ, धूर्त, जुआरी तथा दुर्गुणी होता है। वह अपने धन को थोडे ही दिनो में नष्ट करने के बाद पागलो जैसा जीवन व्यतीत करता है।

चित्र ५२१—यदि पूर्वोक्त प्रकार की रेखा के ऊपर वर्ग-चिन्ह भी हो तो जातक के लिए उक्त अशुभ फल मे कुछ कमी आ जाती है और उसका जीवन नष्ट होने से बच जाता है।
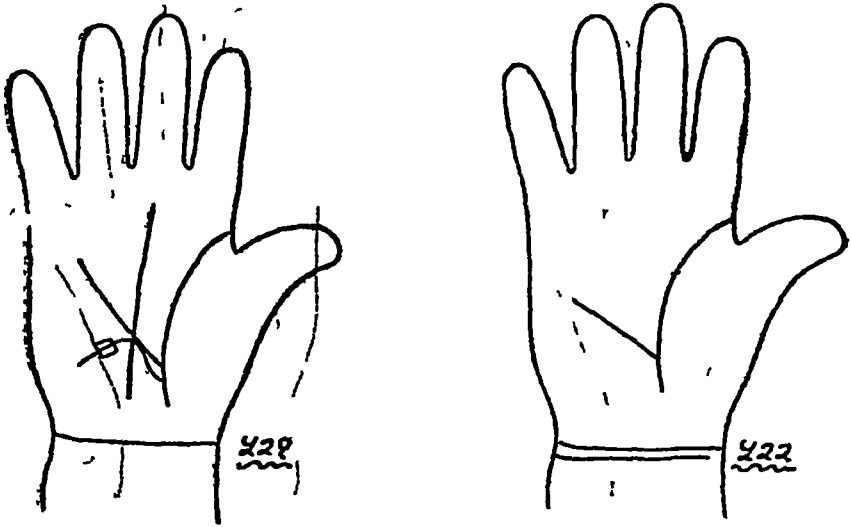
चित्र ५२२—यदि स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा से निकलकर चन्द्र-क्षेत्र पर गई हो तो जातक प्रमेह रोगी होता है ।

चित्र ५२३—यदि पूर्वोक्त रेखा झुककर मणिवन्ध से मिल गई हो तो जातक के लिए द्वीपान्तर यात्रा योग उपस्थित होता है ।

चित्र ५२४ के अनुसार चन्द्र-क्षेत्र पर एक खड़ी रेखा हो तो जातक ईर्ष्यालु, द्वेषी तथा बन्धु-बान्धवों का विरोधी होता है। यदि उक्त रेखा चन्द्र-क्षेत्र के मध्य भाग तक ही रहे तो जातक को गठिया रोग होता है। यदि चन्द्र तथा बुध-क्षेत्र उन्नत हो और उक्त रेखा पुष्ट हो तो जातक जन-सेवी होता है। यदि यह रेखा मस्तक-रेखा की ओर जा रही हो तो जातक भविष्यवक्ता होता है।

चित्र ५२५—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर तीन आड़ी तथा दो खड़ी रेखाएं हो तो जातक के पति, (पत्नी), भाई, माता, पिता, श्वसुर आदि दुःखी
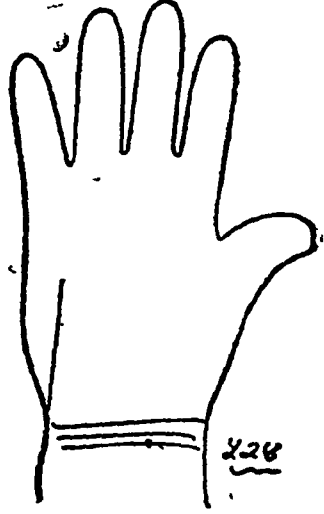
रहते हैं अथवा जातक स्वयं ही उनके विषय मे चिन्तातुर बना रहता है।

चित्र ५२६—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर पूर्वोक्त रेखाए टेढी-मेढो हो तथा मस्तक-रेखा पर 'द्वीप-चिन्ह' भी हो तो जातक उदास एव व्यभिचारी होता है। वह स्वप्न-दोष रोग से पीड़ित होकर दुर्बल भी हो जाता है।

चित्र ५२७—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर क्रास-चिन्ह हो तथा भाग्य-रेखा के अन्त मे भी क्रास-चिह्न हो तो जातक की या तो अकाल-मृत्यु होती है या वह आत्म-हत्या कर लेता है। ऐसी रेखा-चिह्न वाले व्यक्ति उदर-रोगो के शिकार रहते हैं तथा किसी समय उनका ऑपरेशन भी होता है, जिसके कुछ दिनो वाद उनकी मृत्यु हो जाती है।
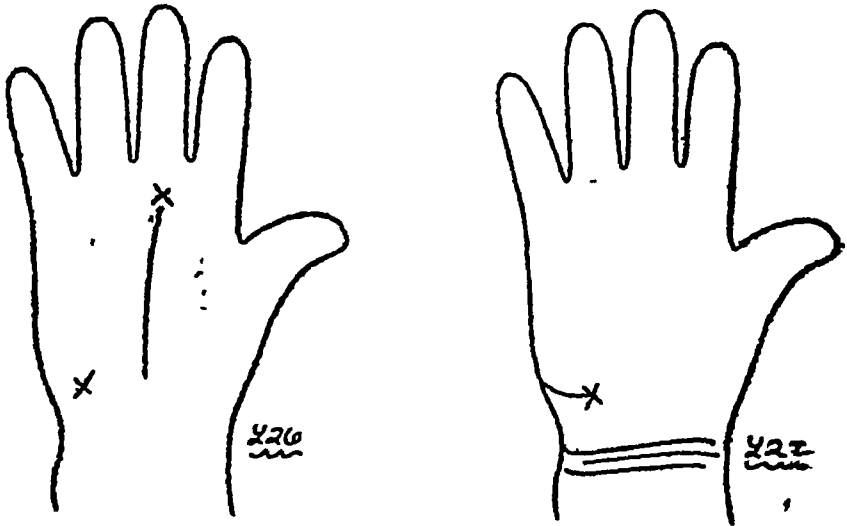
चित्र ५२८ के अनुसार यदि चन्द्र-रेखा पर क्रास-चिह्न हो तो जातक के पानी मे डूवने का भय वना रहता है।

चित्र ५२९—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर क्रास-चिह्न हो और मस्तक-रेखा शनि-क्षेत्र की ओर झुककर अपनी पूर्व स्थिति पर आ गई हो अथवा शनि-क्षेत्र नीचा हो और मध्यमा उगली सामान्य टेढी हो तो ऐसा व्यक्ति मूर्ख, चिडचडे स्वभाव का, उदास तथा पागल होता है।
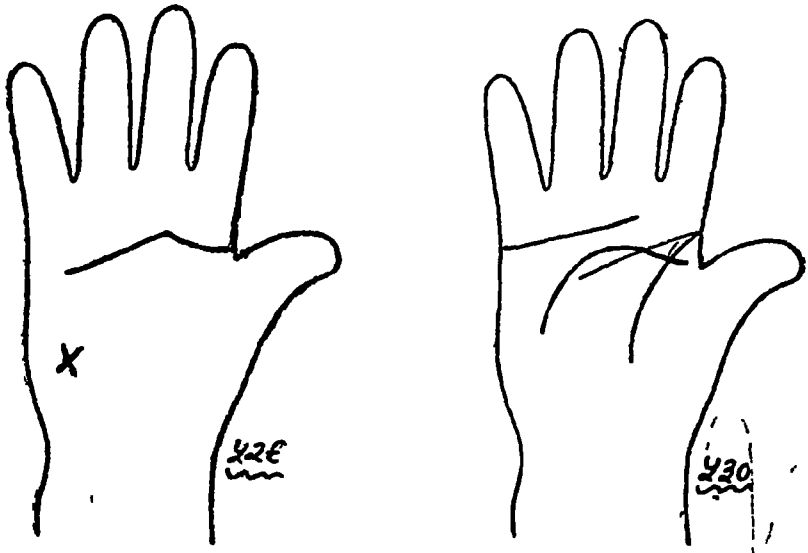
चित्र ५३० के अनुसार चन्द्र-क्षेत्र से एक रेखा निकलकर मस्तक-रेखा तथा जीवन-रेखा को पार करती हुई द्वितीय चन्द्र-क्षेत्र पर पहुचे तो ऐसी रेखा वाला जातक शान्त-स्वभाव का, सहिष्णु तथा धन धान्य पूर्ण सुखी-जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चित्र ५३१—यदि पूर्वोक्त रेखा-मगल के द्वितीय क्षेत्र पर पहुचकर टेढी अथवा अर्द्धचन्द्राकार हो गई हो तो ऐसा जातक क्रोधी तथा शकालु होता है और उसे जीवन मे कई बार मान-हानि का शिकार होना पडता है।

चित्र ५३२—यदि मगल-क्षेत्र के समीप अर्थात् जीवन-रेखा तथा उक्त चन्द्र-क्षेत्र से निकलकर मगल-क्षेत्र पर पहुची हुई, दोनो रेखाओं के बीच मे चतुष्कोण चिह्न हो तो पूर्वोक्त अशुभ फल दूर हो जाता है और जातक अपने जीवन को उन्नत बनाने के लिए शुभ कार्य करता है, जिसके कारण उसका भविष्य सफल बनता है।
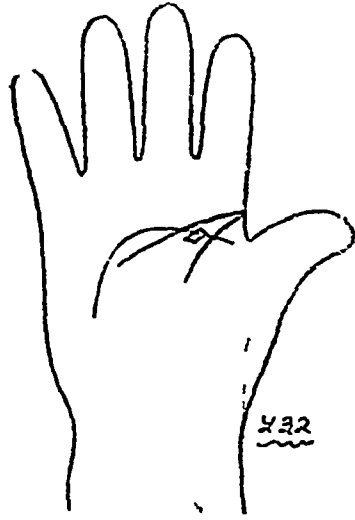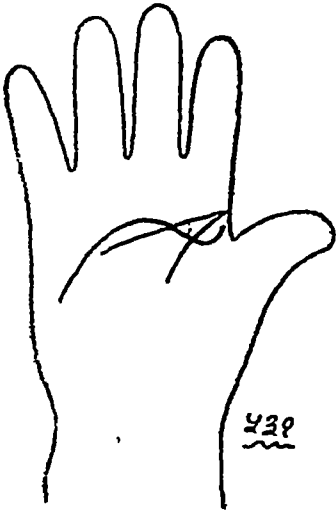
चित्र ५३३—यदि पूर्वोक्त चन्द्र क्षेत्रीय-रेखा टेढी होती हुई मस्तक रेखा के समीप होकर, उसको स्पर्श किए बिना ही जीवन-रेखा मे जा मिले तो ऐसा जातक सदाचारी एव सम्मानित होता है।

५३३

५३४

चित्र सख्या ५३४ के अनुसार चन्द्र-क्षेत्र से एक रेखा निकलकर मस्तक-रेखा को काटती हुई गुरु-क्षेत्र पर पहुचे तो जातक उदार तथा उन्नतिशील होता है। वह हमेशा अपनी इच्छानुसार ही काम करता है।

चित्र ५३५—यदि पूर्वोक्त प्रकार की रेखाए दोहरी हो तो जातक अत्यन्त साहसी, पराक्रमी, भाग्यशाली तथा उन्नतिशील होता है। ऐसी रेखाए बहुत बड़े आदमियो के हाथ मे ही पाई जातो है।
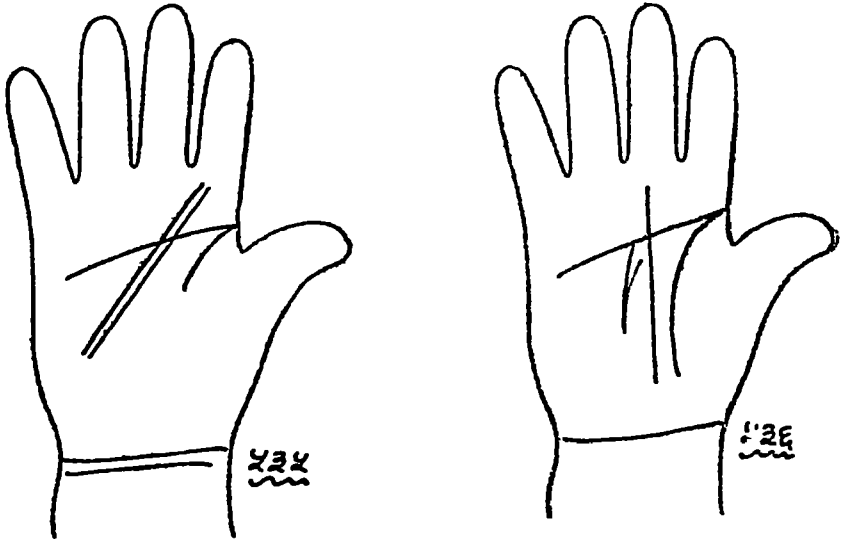
चित्र सख्या ५३६ के अनुरूप चन्द्र-क्षेत्र से एक रेखा निकलकर मस्तक-रेखा का स्पर्श करे तथा उसमे से एक छोटी-सी शाखा रेखा भी निकल रही हो तो ऐसा जातक शत्रुओ द्वारा निरन्तर पीड़ित किया जाता है तथा अन्त मे शत्रुओ के द्वारा ही मृत्यु को प्राप्त होता है।

चित्र सख्या ५३७ के अनुरूप चन्द्र-क्षेत्र से एक गहरी रेखा निकलकर मस्तक-रेखा के समीप पहु च रही हो तो ऐसा जातक सहिष्णु तथा अनेक प्रकार की विद्याओ का जानकार होना है।
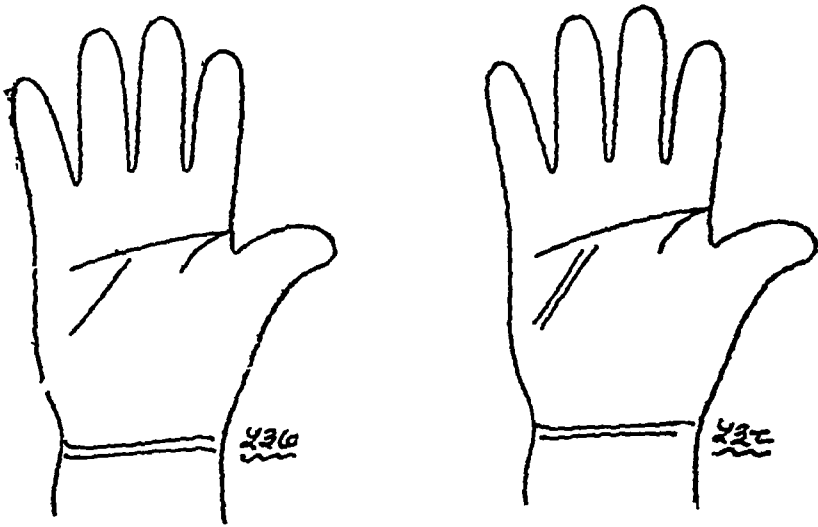
चित्र ५३८—यदि पूर्वोक्त प्रकार की रेखाएं दोहरी हों तो जातक धार्मिक कृत्यो द्वारा धनोपार्जन करता है तथा तन्त्र शास्त्र का ज्ञाता होता है।

चित्र ५३९—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर चूल्हे के आकार की रेखा हो तो जातक यशस्वी, धनी तथा ठेकेदारी द्वारा सम्पत्ति प्राप्त करने वाला होता है।

चित्र ५४०—यदि पूर्वोक्त चन्द्र-क्षेत्र पर चूल्हे के आकार वाली रेखा का मुह दाईं ओर को हो तो जातक का अपने पुत्र से विरोध रहता है और उसी चिन्ता के कारण वह एकान्तप्रिय तथा गृह-त्यागी भी हो जाता है।

चित्र ५४१—यदि पूर्वोक्त चन्द्र-क्षेत्र पर चूल्हे के आकार वाली रेखा का मुह नीचे की ओर हो तो जातक अपने जीवन के मध्यभाग में गृह-कलह के कारण पागल हो जाता है।

चित्र ५४२—यदि पूर्वोक्त चन्द्र-क्षेत्र पर चूल्हे के आकार वाली रेखा का मुह ऊपर की ओर हो तो जातक का गृहस्थ-जीवन सुखमय
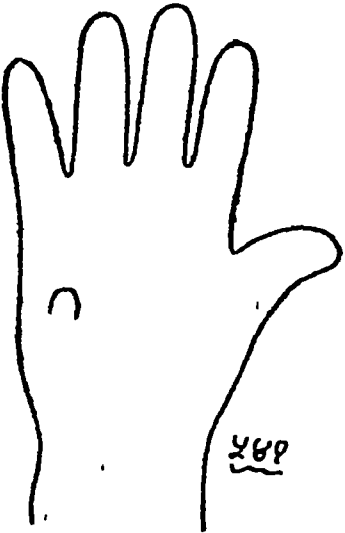
होता है और वह भाई-बन्धुओ सहित आनन्द का उपभोग करता है। ऐसी रेखा वाला जातक कृषि-कर्म कुशल भी होता है।

चित्र रेखा ५४३—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर तीन छोटी-छोटी आड़ी रेखाओं को चार छोटी-छोटी खडी रेखाए काट रही हों तो ऐसी रेखाओ वाला जातक दुष्ट-प्रकृति, विषयी तथा विद्या विहीन होता है। वह किसी समय नदी-नाले में गिरकर आत्महत्या कर लेता है।
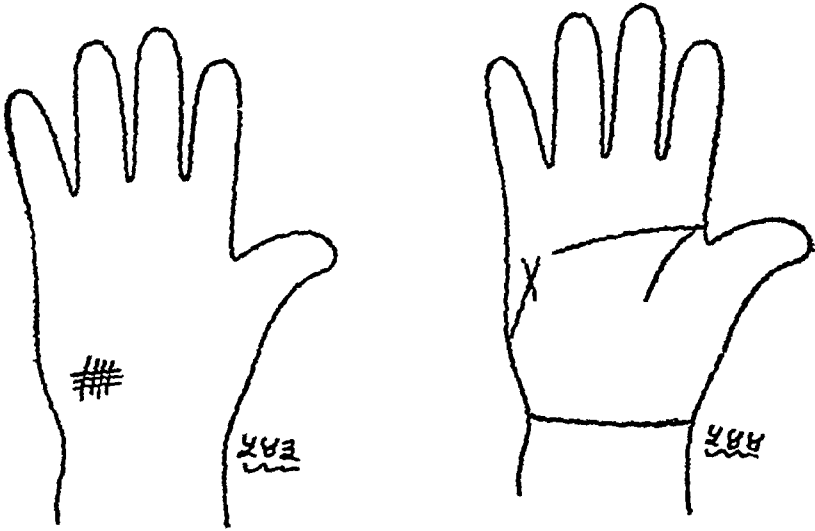
चित्र सख्या ५४४ के अनुसार चन्द्र-क्षेत्र के ऊपरी भाग से एक सीधी रेखा निकलकर मस्तक-रेखा के समीप जा पहुची हो और उसे एक तिरछी रेखा काट भी रही हो तो ऐसी रेखा वाला जातक सरल-स्वभाव होते हुए भी शत्रुओ द्वारा पीडित तथा सन्तानो द्वारा दुखी रहता है। यदि जीवन-रेखा निर्दोष हो तो वृद्धावस्था में उसका भाग्योदय होता है, परन्तु जीवन-रेखा के त्रुटि पूर्ण होने पर मध्य आयु मे ही उसकी मृत्यु हो जाती है।

चित्र ५४५—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर चूल्हे के आकार की रेखा हो और उसे बीच मे एक खडी रेखा काट रही हो तो ऐसा जातक अत्यधिक यश प्राप्त करता है, परन्तु बाद मै उसकी मान-हानि भी होती है। ऐसी रेखा वाला जातक किसी ऊचाई से गिरकर चोट भी खाता है, परन्तु वह साहसी होता है।
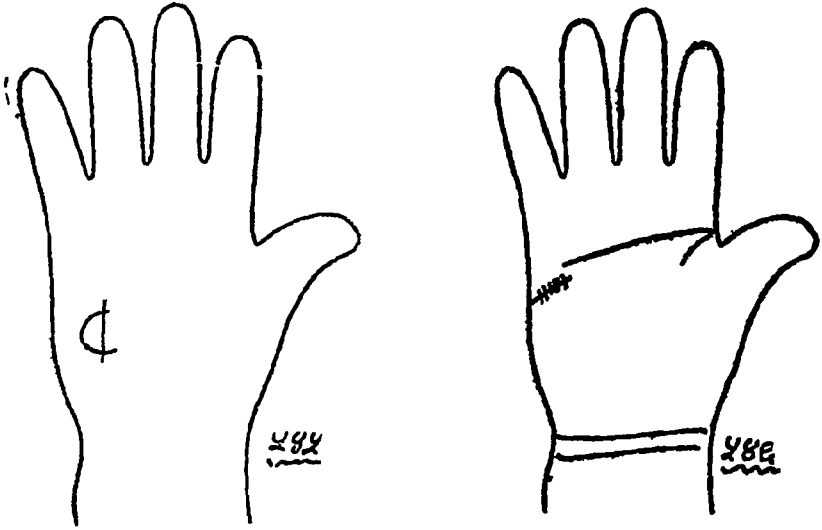
चित्र ५४६—यदि चन्द्र-क्षेत्र के ऊपरी भाग से एक टेढी रेखा निकलकर मस्तक-रेखा की ओर जा रही हो और वह कई छोटी-छोटी रेखाओ के द्वारा कटी हुई भी हो तो ऐसी रेखा वाला जातक लजीले स्वभाव का, परोपकारी तथा दिवास्वप्न देखने वाला होता है। वह सुख पाने की प्रबल इच्छा रखता है, परन्तु उसे सुख मिलता नही है।

चित्र ५४७—यदि चन्द्र-क्षेत्र के निम्न भाग से एक सामान्य टेढी रेखा भाग्य-रेखा तथा जीवन-रेखा को काटती हुई शुक्र-क्षेत्र पर पहुंचे तो ऐसा जातक हृष्ट-पुष्ट, सुखी, विचारवान्, धनवान्, परोपकारी
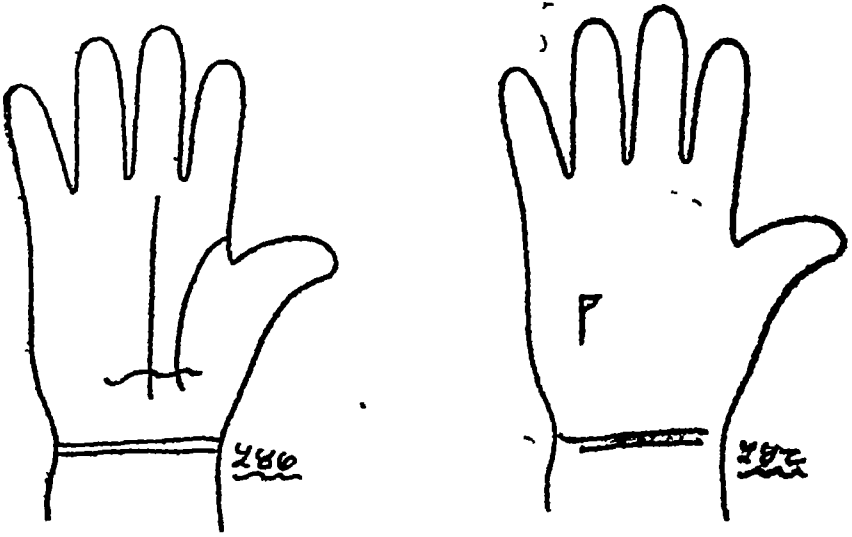
तथा ऐश्वर्यशाली होता है । उसे समुद्र एव वायु-यात्राओ द्वारा व्यवसाय में विपुल सम्पत्ति प्राप्त होती है ।

चित्र ५४८—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर ध्वज-चिह्न हो और चन्द्र-क्षेत्र अनुच्च हो तो ऐसा जातक दुष्ट-स्वभाव वाला, म्लेच्छो की सगति करने वाला, दु.खी तथा अपने माता-पिता तक को मार डालने की इच्छा रखनेवाला होता है ।

टिप्पणी—चन्द्र-क्षेत्रस्थ द्वीप, नक्षत्र, क्रास, विन्दु, जाल आदि चिन्हो के प्रभाव का विस्तृत वर्णन 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के अगले 'हस्त-चिन्ह-विचार' नामक खण्ड मे किया गया है । हस्त-परीक्षक को चाहिए कि वह चन्द्र-क्षेत्रीय रेखाओ का विचार करते समय भी हाथ की आकृति, गृह-क्षेत्र तथा अन्य रेखाओं को स्थिति आदि सभी वातो पर पूरा-पूरा ध्यान देने के वाद ही फलादेश करे ।

राहु-क्षेत्रीय रेखाएं

हथेली के मध्य भाग को 'राहु-क्षेत्र' कहते है। यह स्थान केतु, चन्द्र, प्रथम मगल, द्वितीय मगल, बुध, सूर्य, शनि, गुरु तथा शुक्र-क्षेत्रो से घिरा हुआ है। इसका विस्तार भी अधिक होता है।

अन्य ग्रह-क्षेत्रो की भाति राहु-क्षेत्र की आकृति उच्चता-अनुच्चता आदि का विस्तृत वर्णन 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के 'आपका हाथ' शीर्षक प्रथम खण्ड मे किया जा चुका है। राहु-क्षेत्र अर्थात् हथेली के मध्यभाग मे आकर समाप्त होने वाली अथवा इस क्षेत्र से प्रारम्भ होने वाली अन्य रेखाओ का वर्णन विभिन्न खण्डो मे यथास्थान किया गया है।

हथेली के बीच मे आडी रहकर जीवन-रेखा, भाग्य-रेखा, मस्तक-रेखा तथा हृदय-रेखा को काटकर बुध-क्षेत्र पर पहुचने वाली रेखा को 'राहु-रेखा' कहा जाता है। चित्र ५४६ मे इसकी स्थिति को प्रदर्शित किया गया है।

राहु-रेखा की उपस्थिति को सभी विद्वानो ने अशुभ फलकारक बताया है। हथेली मे इस रेखा का न होना ही अच्छा रहता है। जिस व्यक्ति के हाथ मे यह रेखा पाई जाती है वह यदि विद्वान्, बुद्धिमान् तथा विवेकशील हो तभी दूसरे के बहकावे मे आकर अपना काम बिगाड लेता है। राहु-रेखा जातक को जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में असफलता देने वाली तथा उन्नति को रोकने वाली होती है।

इस प्रकरण मे राहु-रेखा की विभिन्न स्थितियो सम्बन्धी प्राच्य तथा पाश्चात्य मतो के साराश को चित्रो सहित प्रस्तुत किया जा रहा है।
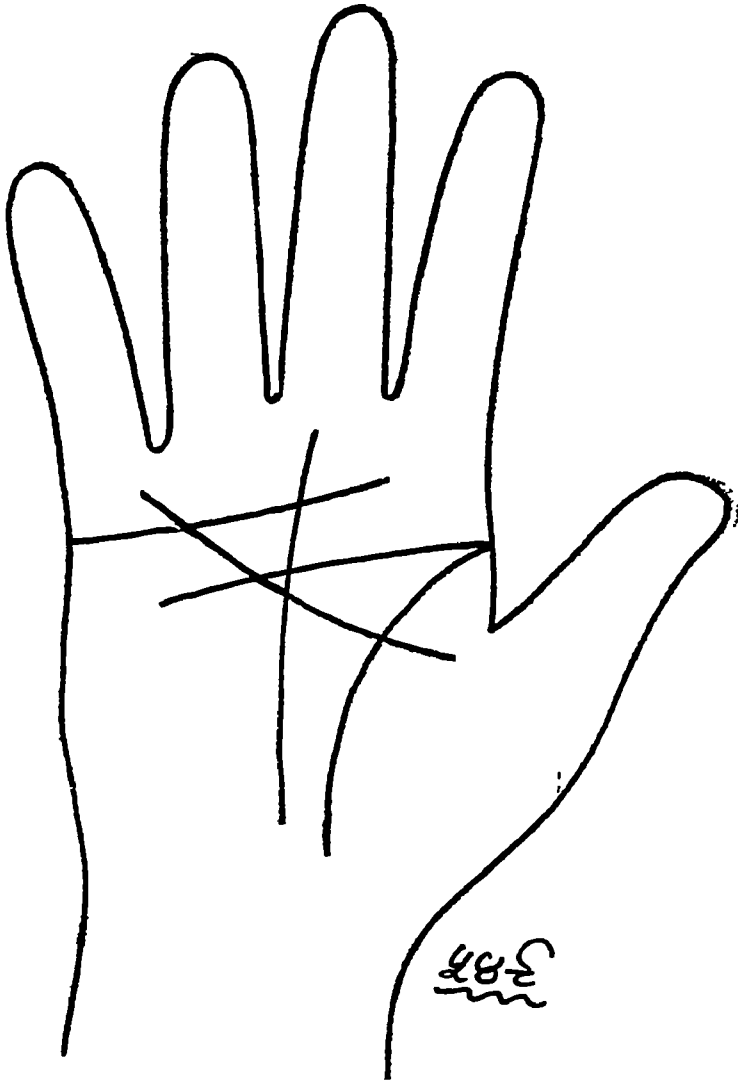
[करतल मे राहु रेखा की स्थिति]

चित्र ५५० —जिस जातक के हाथ मे राहु-रेखा होती है वह बुद्धिमान होने पर भी दूसरो के बहकावे में आकर अपने काम को बिगाड़ लेता है। राहु-रेखा जातक की आर्थिक, मानसिक, शारीरिक तथा भौतिक उन्नति में बाधा पहुचाने वाली तथा अन्य रेखाओ के प्रभाव को दूषित करने वाली होती है ।
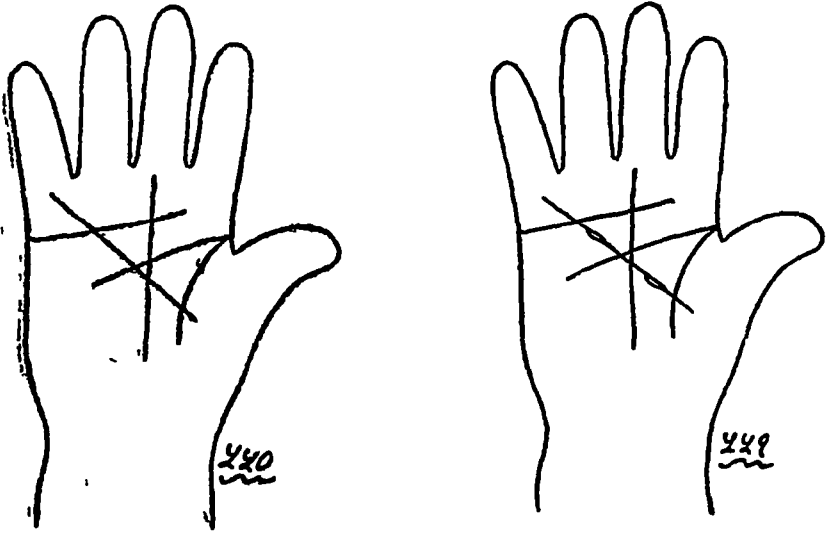
चित्र ५५१—यदि राहु-रेखा द्वीप-चिन्ह युक्त हो तथा भाग्य-रेखा निर्दोष हो तो जातक के लिए राहु-रेखा का अशुभ प्रभाव कुछ कम हो जाता है। फिर भी उसे चोर, डाकू, झगडा, अग्नि, दुर्घटना, मुकद्दमा आदि से सम्बन्धित कुछ-न-कुछ कष्ट अवश्य उठाना पडता है ।

चित्र ५५२—यदि जीवन-रेखा से उठने वाली भाग्य-रेखा को राहु-रेखा काट दे तो उसे अशुभ सूचक समझना चाहिए, परन्तु यदि भाग्य-रेखा द्वारा राहु-रेखा कटी हुई-सी जान पडे तो राहु-रेखा का अशुभ फल नष्ट हो जाता है ।
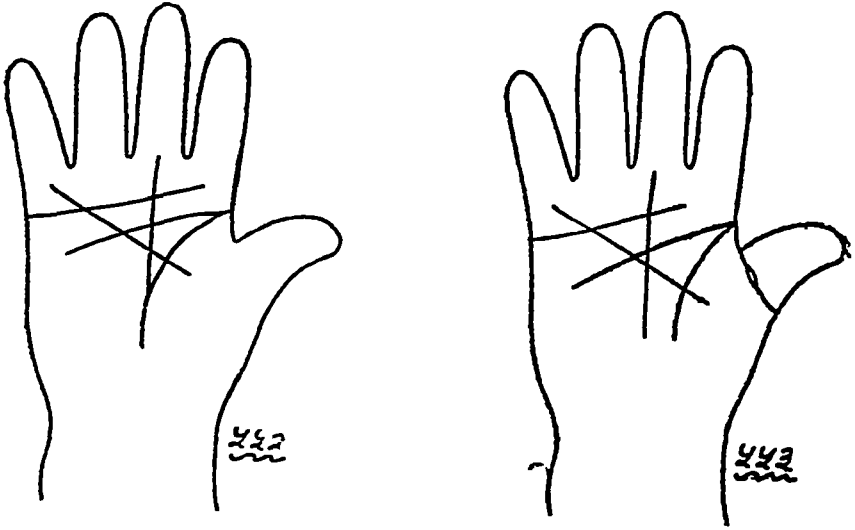
चित्र ५५३—यदि अगूठे मे यव-चिन्ह हो और भाग्य-रेखा निर्दोष हो तो राहु-रेखा का दुष्प्रभाव नष्ट हो जाता है तथा जातक की भाग्योन्नति होती है।

चित्र ५५४—यदि राहु-रेखा दोहरी हो तो उसका प्रभाव अधिक अशुभ होता है। ऐसी रेखा वाले जातक के वने वनाये काम विगड़ जाया करते है तथा उन्नति रुक जाती है।

चित्र ५५५—यदि राहु-रेखा को किसी अन्य रेखा द्वारा काट दिया गया हो तो भी उसके दुष्प्रभाव मे कमी हो जाती है और जातक उन्नति के पथ पर आगे वढता है।

टिप्पणी—(१) राहु-क्षेत्र का विस्तृत वर्णन 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के 'आपका हाथ' शीर्षक के प्रथम खण्ड मे किया जा चुका है।

(२) राहु-क्षेत्र पर पाये जाने वाले त्रिकोण, क्रास, द्वीप, नक्षत्र,
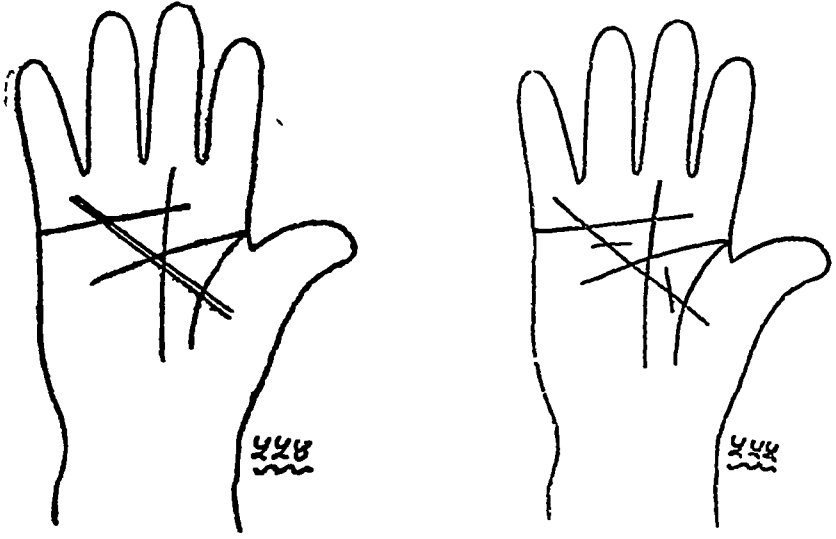
जाल आदि चिन्हो का विस्तृत वर्णन 'हस्त-चिन्ह-विचार' शीर्षक अगले खण्ड मे किया गया है ।

(३) राहु-रेखा के सम्बन्ध मे विचार करते समय भी हस्त-परीक्षक को अन्य रेखाओ को स्थिति, हाथ की बनावट तथा ग्रह-क्षेत्रो के उच्चता आदि के विषय मे पूरा-पूरा ध्यान देना चाहिए, तभी फलादेश ठीक बैठेगा ।

अंगुष्ठ स्थित रेखाएं

हथेली को सब अंगुलियो में अगूठे का महत्व सर्वाधिक है, इसके सम्बन्ध मे कहा गया है—

"अंगा पानौ प्रधान्येन तिष्ठति स अंगुष्ठ ।"

हाथ की अन्य चार अगुलियो मे तीन-तीन पर्व होते है, परन्तु अगूठे में केवल दो ही पर्व पाए जाते है । अगूठे के तीसरे पर्व के रूप मे शुक्र-क्षेत्र के ऊपरी भाग की हड्डी वाले स्थान को माना जाता है, अगूठे के द्वारा जातक की इच्छा-शक्ति तथा तर्क शक्ति का परिज्ञान होता है । 'बृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के प्रथम खण्ड 'आपका हाथ' मे अगूठे की बनावट के अनुरूप शुभाशुभ प्रभाव का विस्तृत वर्णन किया जा चुका है । इस प्रकरण मे हम अगूठे के पर्वों पर पाई जाने वाली छोटी-छोटी आडी, खड़ी तथा अन्य प्रकार की रेखाओ के प्रभाव का प्राच्य तथा पाश्चात्य मतानुसार सचित्र वर्णन कर रहे हैं ।

अगुष्ठ मूल से आरम्भ होने वाली रेखाओ का वर्णन शुक्र-क्षेत्रीय रेखाओ के अन्तर्गत विभिन्न खण्डो मे किया जा चुका है । अगूठे के ऊपर पाए जाने वाले नक्षत्र, त्रिकोण, क्रास आदि विविध चिन्हों तथा अगूठे के अग्रभाग पर शख चक्र अथवा शुक्ति जैसी आकृतियो के प्रभाव का वर्णन 'हस्त-चिन्ह-विचार' नामक अगले खण्ड मे किया जाएगा ।

चित्र सख्या ५५६ मे अगूठा तथा अगुलियो के पर्वो पर पाई जाने वाली रेखाओ की विभिन्न स्थितियो को प्रदर्शित किया गया है ।
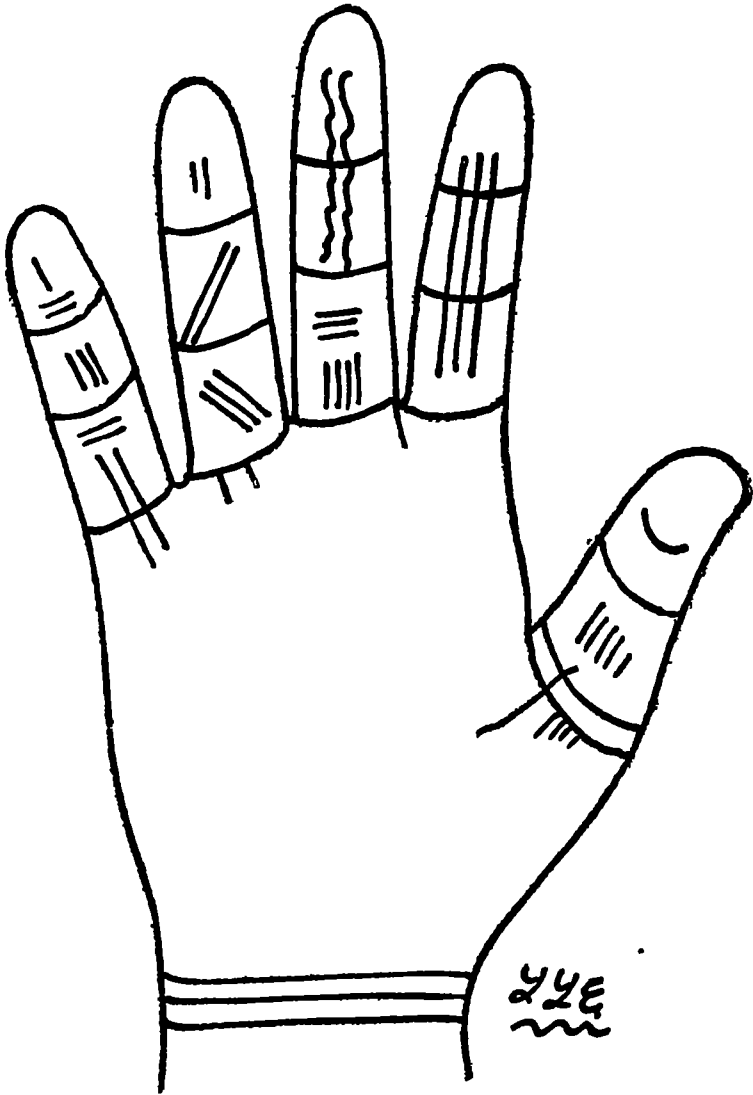
[अंगुष्ठ और अंगुलियो के विभिन्न पर्वों पर पाई जाने वाली रेखाओ की विभिन्न स्थितिया]

प्राच्यमत

चित्र ५५७—यदि अगूठे के प्रथम पर्व से उत्पन्न होकर तीसरे पर्व तक दो-तीन सरल तथा स्पष्ट-रेखाए गई हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक अत्यन्त प्रेमी होता है ।
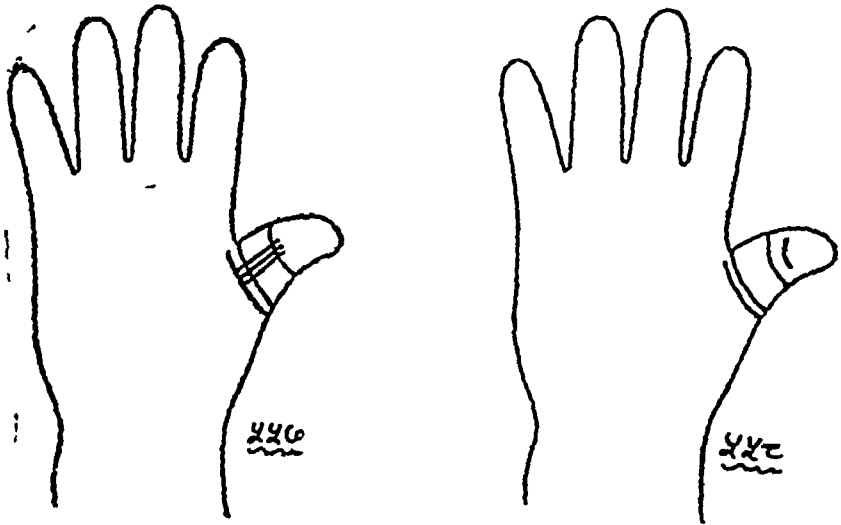
चित्र ५५८—यदि अगूठे के पहले पर्व पर एक उठावदार टेढी रेखा दिखाई दे तो ऐसी रेखा वाला जातक बहुत धनी होता है ।

चित्र ५५६—यदि अगूठे के मूल मे से दो रेखाए उत्पन्न होकर अगूठे की दूसरी सधि मे जा मिलती हों तो ऐसी रेखाओ वाला जातक सबका मित्र होता है । उसका कोई शत्रु नही होता ।

चित्र ५६०—यदि अगूठे के ऊपर से उत्पन्न दो समानान्तर रेखाएं शुक्र के पर्वत पर आई हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक बहुत धनी होता है ।
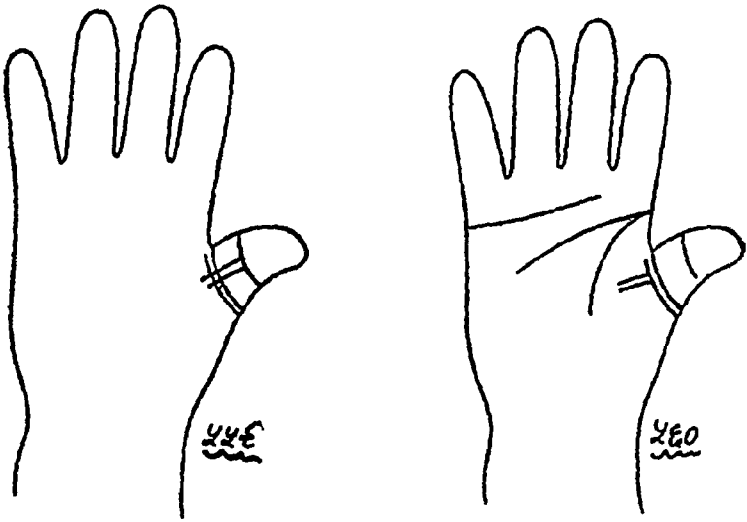
चित्र ५६१—यदि कोई रेखा अंगूठे के प्रथम पर्व को माला की भाति चारो तरफ लपेट ले तो ऐसे जातक को फासी की सजा मिलती है।
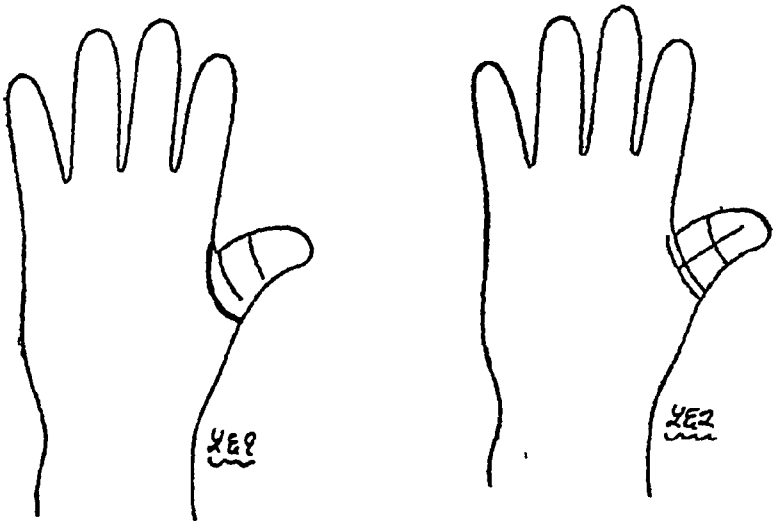
चित्र ५६२—यदि अगूठे के तीनो पर्वों पर एक सरल खडी रेखा हो तो ऐसा जातक बडा तेजस्वी, सेननायक तथा राजा के समान होता है। उसकी मृत्यु ६० वर्ष की आयु मे होती है।

चित्र ५६३—यदि पूर्वोक्त सरल तथा खडी रेखा अगूठे के मध्य भाग तक ही हो तो ऐसी रेखा वाला जातक धन तथा सन्तान से युक्त होता है।
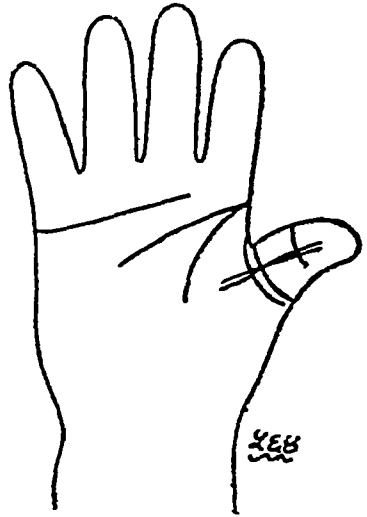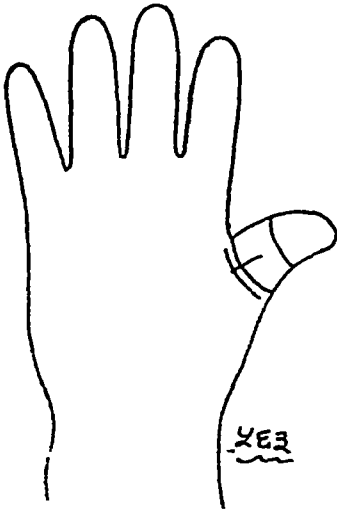
चित्र ५६४—यदि अगूठे के प्रथम पर्व से शुक्र-क्षेत्र पर आने वाली दो रेखाए परस्पर मिली हुई हों तो ऐसी रेखाओ वाला मनुष्य जुए में अपनी सम्पूर्ण सम्पत्ति नष्ट कर देता है।

पाश्चात्य-मत

चित्र ५६५—यदि अगूठे के पहले पर्व पर एक या दो खडी रेखाए हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक दृढप्रतिज्ञ तथा स्थिर चित्त वाला एव अपने विचारों का पक्का होता है।
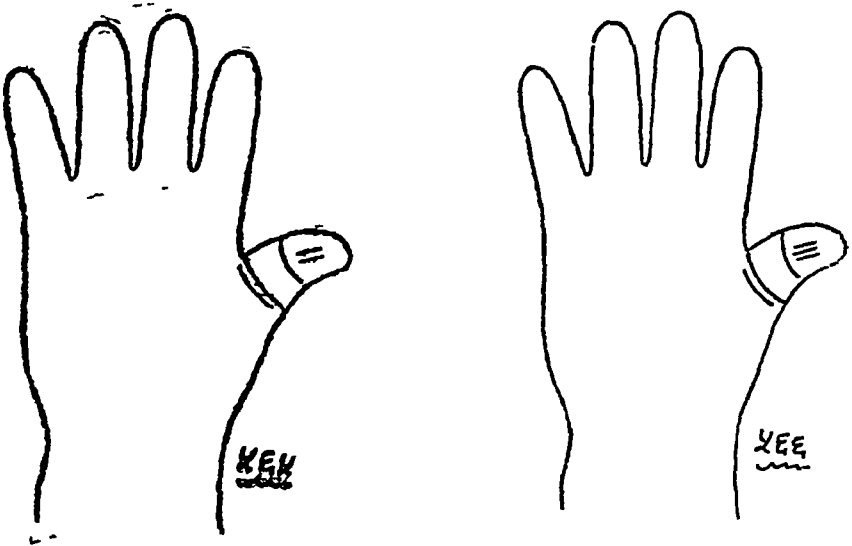
चित्र ५६६—यदि अगूठे के पहले पर्व पर तीन खडी रेखाए हो तो जातक की इच्छा शक्ति अनेक भागो मे बट जाती है, जिसके कारण वह अपने इरादे का पक्का नही रह पाता।

चित्र ५६७—यदि अगूठे के पहले पर्व पर पाई जाने वाली पूर्वोक्त तीन रेखाए एकदम नाखून के समीप हो तो ऐसी रेखाओ वाले जातक को विरासत मे सम्पत्ति प्राप्त होती है।

चित्र ५.८—यदि अगूठे के पहले पर्व पर तीन आड़ी रेखाए हो तो जातक को अपनो सफलता मे बाधाओ का सामना करना पडता है।

चित्र ५६९—यदि अगूठे के पहले पर्व पर स्थित खडी रेखाओ को कोई आड़ी रेखा काट रही हो तो भी जातक की सफलता के क्षेत्र मे विघ्न उपस्थित होते है।
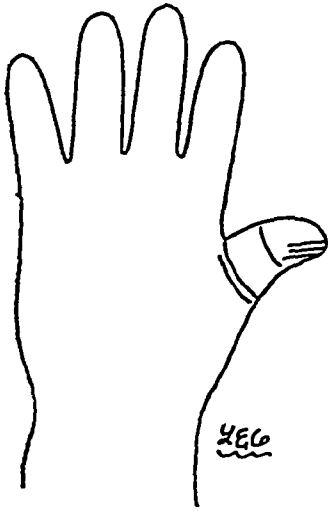
चित्र ५७०—यदि अगूठे के दूसरे पर्व पर खडी रेखाएं हो तो जातक की तर्कशक्ति उत्तम होती है और वह किसी भी बात के गुण-दोष पर भली-भांति विचार कर सकता है।
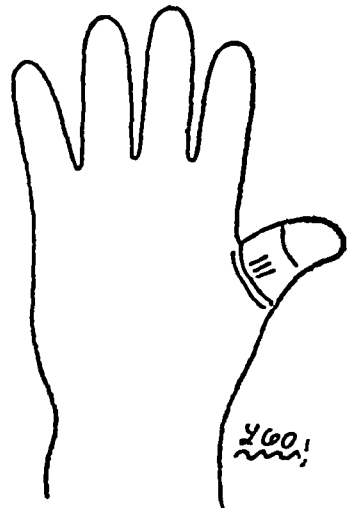
चित्र ५७१—यदि अगूठे के दूसरे पर्व पर आडी रेखाए हो तो ऐसी रेखाओ वाले जातक मे तर्क शक्ति की कमी होती है और उसकी बुद्धि भी मन्द होती है।
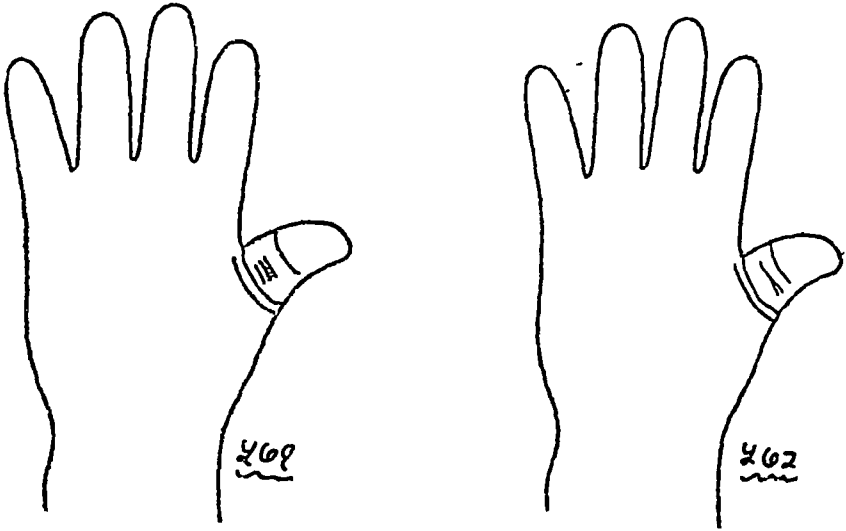
चित्र ५७२—यदि अगूठे के दूसरे पर्व पर कोई आडी रेखा द्विजिह्व हो तो ऐसा जातक किसी भी काम को करते समय झिझकता है।

चित्र ५७३—यदि अगूठे के दूसरे पर्व से आरम्भ होकर कोई बडी रेखा जीवन-रेखा से मिल गई हो तो ऐसी रेखा वाले जातक का वैवाहिक-जीवन दुःखमय होता है।

चित्र ५७४—यदि अगूठे के मूल मे मत्स्यरेखा जैसा चिह्न हो तो ऐसा जातक शास्त्रज्ञ, विचारक, तार्किक तथा ज्योतिष शास्त्र का विद्वान होता है।

चित्र ५७५—यदि अगूठे के मूल से निकलकर एक गहरी तथा लम्बी रेखा मगल-क्षेत्र को पार करती हुई बुध-क्षेत्र पर जा पहुचे तो
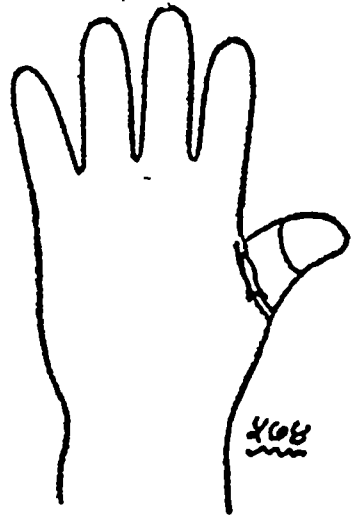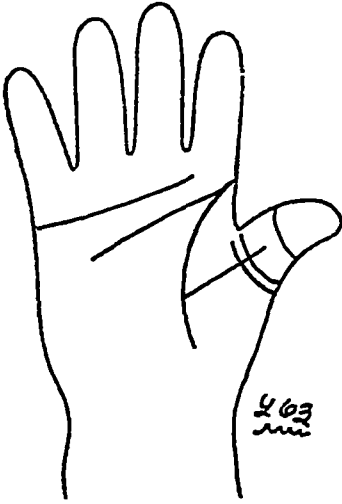
ऐसी रेखा वाले पुरुष का दाम्पत्य-जीवन दु.खमयं तथा कलहपूर्ण होता है। यदि किसी स्त्री के हाथ मे ऐसी रेखा हो तो वह कुल्टा एवं पति हत्या करने वाली होती है।
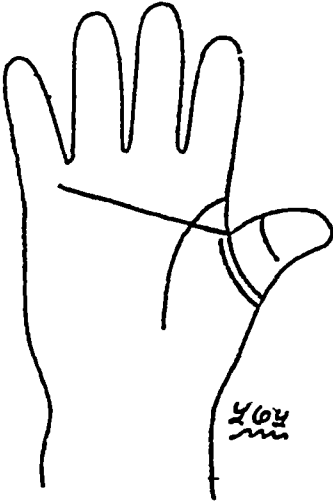
चित्र ५७६—अंगूठे के मूल भाग से निकलकर जितनी आड़ी रेखाए शुक्र-क्षेत्र पर आएं जातक उतनी ही स्त्रियों के साथ रमण करता है। यदि स्त्री के हाथ में ऐसी रेखाएं हो तो वह उतने ही पुरुषों के साथ सहवास करती है।

चित्र ५७७—यदि पूर्वोक्त प्रकार की रेखाए छिन्न-भिन्न हों, तो जितनी रेखाए छिन्न-भिन्न होगी, जातक को उतनी ही स्त्रियों (अथवा पुरुषों) द्वारा कष्ट प्राप्त होगा :
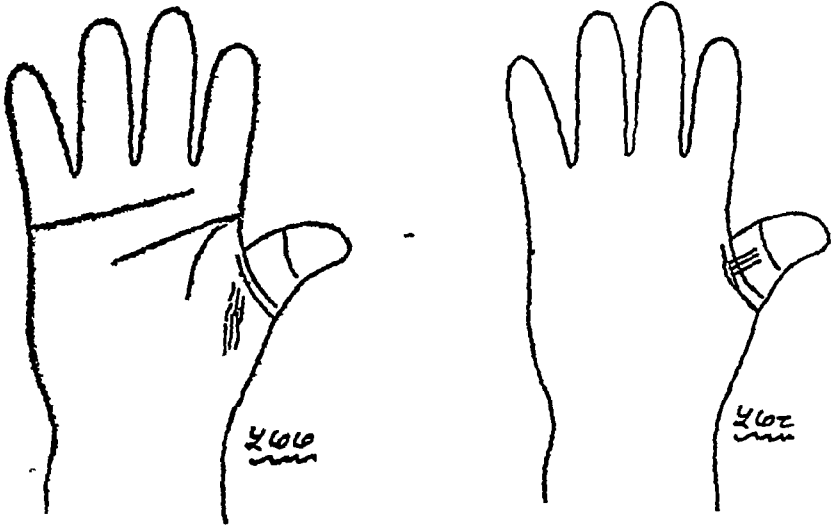
चित्र ५७८—यदि अगूठे के बीच मे तीन गहरी रेखाएं हो और वे अंगुष्ठ मूल तक गई हों तथा अगुष्ठ मूल में यव-चिन्ह भी हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक चिन्ताशील, दुःखी अथवा कारावास का दण्ड भोगने वाला होता है।

चित्र ५७९—यदि अगूठे के बीच में पांच रेखाएं हों और वे अगुष्ठ मूल तक गई हो तथा अगुष्ठ मूल मे यव-चिन्ह भी हो तो ऐसी रेखाओं वाला जातक धनी, सुखी तथा सन्ततियुक्त होता है।
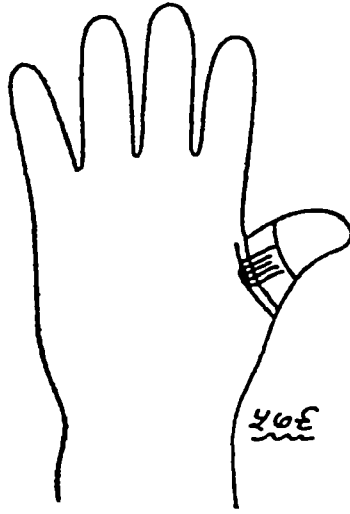
टिप्पणी—हस्त परीक्षक को चाहिए कि वह अंगुष्ठ-स्थित रेखाओ पर विचार करते समय अगूठे की वनावट तथा अन्य रेखाओ एव हस्त-चिन्हो की स्थिति तथा उनके प्रभाव पर भी दृष्टि–पात करने के उपरान्त ही फलादेश करे ।

अंगुलि स्थित रेखाएं

(१) तर्जनी, (२) मध्यमा, (३) अनामिका और (४) कनिष्ठा—ये चारो उगलियां प्रत्येक मनुष्य के हाथ मे होती है। कुछ लोगो के हाथ मे एक अतिरिक्त उगली अथवा अगूठा भी पाया जाता है, परन्तु ऐसे व्यक्ति हजारो मे एक-दो ही होते है। हाथ में एक से अधिक उगली अथवा अगूठा होने के प्रभाव का वर्णन 'शरीर लक्षण विज्ञान' नामक ग्यारहवें खण्ड मे किया गया है।

प्रत्येक उगली मे तीन पर्व होते है। पर्वो की गणना पाश्चात्य मतानुसार नीचे से ऊपर की ओर (चित्र सख्या ५८१) तथा प्राच्य मतानुसार ऊपर से नीचे की ओर (चित्र सख्या ५८०) की जाती है। पाठक किसी प्रकार से भ्रम मे न पड़े, अतः हमने इस प्रकरण मे उगलियो के पर्वो की गणना करने के सम्बन्ध मे प्रारम्भ से अन्त तक पाश्चात्य-मत को अपनाया है। अर्थात् चित्र सख्या ५८१ के अनुसार उगलियो के पर्वों की गणना की गई है। बृहद् सामुद्रिक विज्ञान के अन्य खण्डो मे प्राच्य तथा पाश्चात्य मत की भिन्नता के अनुरूप पर्वो की गणना मे यथास्थान प्राच्य तथा पाश्चात्य मत के विभिन्न क्रमो को रक्खा गया है।

विभिन्न उगलियों की आकृति तथा उनके प्रभाव के सम्बन्ध मे 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के 'आपका हाथ' शीर्षक प्रथम खण्ड मे विस्तृत विवरण प्रस्तुत किया गया है। उगलियो के सिरे पर जो शख, चक्र, सीप आदि के चिन्ह पाये जाते है, उनका तथा उगलियो के पर्वो पर

पाये जाने वाले नक्षत्र, वर्ग, क्रास, द्वीप, जाल आदि चिन्हो के प्रभाव का विस्तृत वर्णन 'हस्त चिन्ह-विचार' शीर्षक अगले खण्ड मे किया गया है।
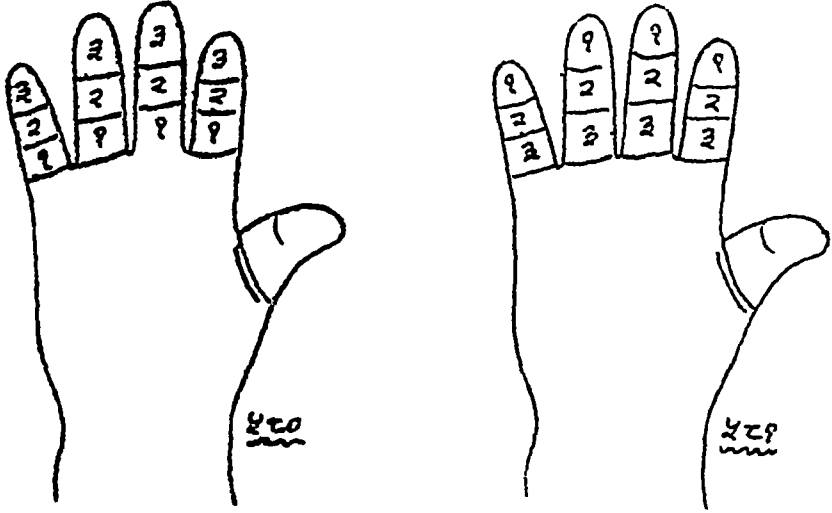
प्रस्तुत प्रकरण मे केवल उगलियो के विभिन्न पर्वो पर पाई जाने वाली छोटी-छोटी, आडी, खडी तथा अन्य प्रकार की रेखाओ की स्थिति और उनके प्रभाव का सचित्र वर्णन ही किया गया है।

उगलियो के मूल से आरम्भ होने वाली अथवा वहा आकर समाप्त होने वाली छोटी-बड़ी विभिन्न रेखाओ तथा चिह्नो के प्रभाव का वर्णन 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के विभिन्न खण्डो मे यथा स्थान किया जा चुका है।

उगलियो के पर्वो पर पाई जाने वाली रेखाओ के प्रभाव के सम्बन्ध मे प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानो के मत अलग-अलग पाये जाते है। प्रस्तुत प्राकरण मे इन रेखाओ के प्रभाव का वर्णन करते समय प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानो के मतो की भिन्नता को यथास्थान स्पष्ट

कर दिया गया है। यदि किसी स्थान पर प्राच्य-मत का उल्लेख न हो, तो वहा यह समझना चाहिए कि यह वर्णन पाश्चात्य-मत के आधार पर किया गया है।

तर्जनी उंगली पर रेखाएं

चित्र ५८२—यदि तर्जनी उगली के पहले पर्व पर चार सीधी खडी रेखाएं हों, तो उन्हे जातक की धार्मिकता तथा उन्नति का लक्षण समझना चाहिए।
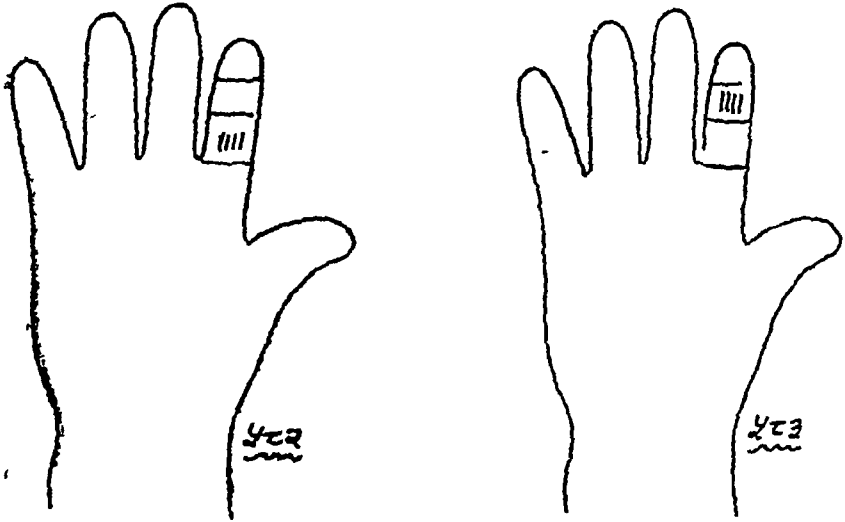
चित्र ५८३—यदि तर्जनी उगली के द्वितीय पर्व पर चार सीधी खडी रेखाए हो, तो यह समझना चाहिए कि जातक को अपनी महत्वाकाक्षाओ को पूरा करने के लिए सहायता प्राप्त होती रहेगी।

चित्र ५८४—यदि तर्जनी उगली के तृतीय पर्व पर छोटी-छोटी सीधी खड़ी रेखाए हों, तो ऐसी रेखाओ वाला जातक दूसरों पर भली-भाति हुकूमत करता है।

चित्र ५८५—यदि तर्जनी उगली के प्रथम पर्व पर आडी रेखाएं हो तो जातक धर्मान्ध होता है (प्राच्य मत)।

चित्र ५८६—यदि तर्जनी उगली के द्वितीय तथा तृतीय—दोनो पर्वो
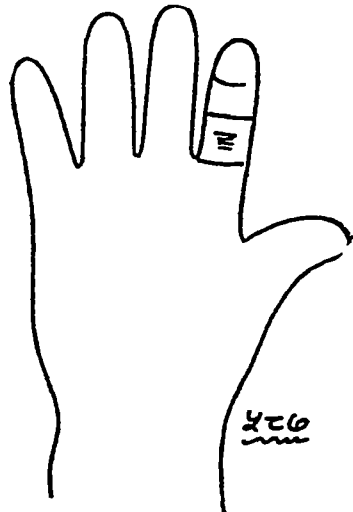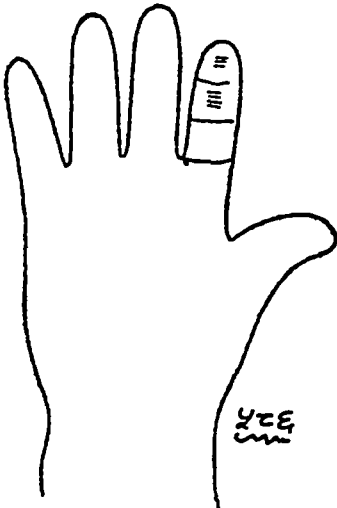
पर आडी रेखाए हो तो जातक ईर्ष्यालु होता है और उसमे दूसरों को धोखा देने की आदत होती है ।

चित्र ५८७—यदि तर्जनी उगली के केवल तृतीय पर्व (प्राच्य मत) पर आड़ी रेखाए हो तो जातक को उतराधिकार मे सम्पत्ति मिलती है परन्तु उसके हुकूमत सम्बन्धी कार्यो मे विघ्न उपस्थित होते है । यदि अन्य लक्षण भी पुष्टि करते हो तो ऐसी रेखाओ वाले जातक की पाचन-शक्ति भी खराब रहती है ।

चित्र ५८८—यदि तर्जनी उगली के प्रथम पर्व स्थित खडी रेखाए लहरदार अथवा एक दूसरे से मिली हुई हो तो जातक की महत्वकाक्षा का विषय शुभ नही होता ।
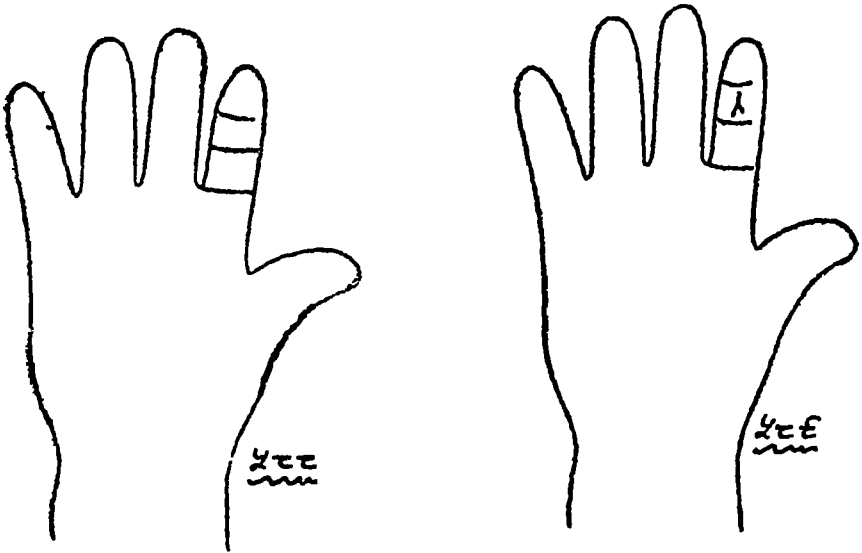
चित्र ५८९—यदि तर्जनी उगली के द्वितीय पर्व पर कोई खडी रेखा शाखा युक्त हो तो उसे जातक की सफलता का लक्षण समझना चाहिए ।

चित्र ५९०—यदि शुक्र क्षेत्र से निकलकर कोई खडी रेखा तर्जनी उगली के द्वितीय पर्व तक आ पहुचे तो ऐसा जातक अत्यन्त प्रतिष्ठित, यशस्वी तथा उज्वल चरित्र का होता है।
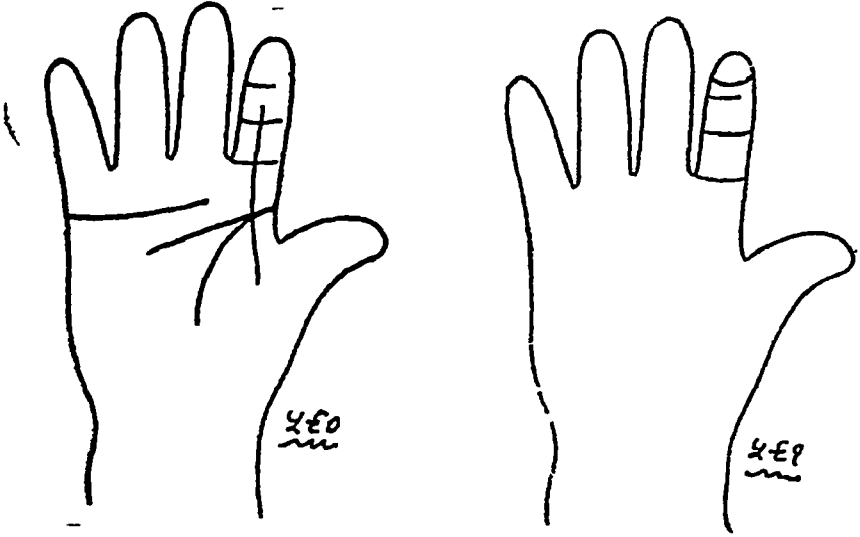
चित्र ५९१—यदि कोई आडी रेखा तर्जनी उगली के प्रथम पर्व को चारो ओर लपेटे हुए हो तो जातक का स्वास्थ्य दुर्बल होता है और किसी समय उसके मस्तक पर चोट लगती है।

चित्र ५९२—यदि तर्जनी उगली के दूसरे पर्व पर कोई टेढी रेखा हो तो जातक दूसरो को पीडित करने वाला तथा लफगा होता है।

चित्र ५९३—यदि तर्जनी उगली के तीसरे पर्व पर कोई रेखा हो तो जातक को किसी दूसरे का धन प्राप्त होता है (प्राच्य मत)।

चित्र ५९४—तर्जनी उगली के प्रथम पर्व से तीसरे पर्व तक एक सीधी खड़ी स्पष्ट रेखा हो तो ऐसी रेखा वाला जातक अत्यन्त बुद्धिमान, श्रेष्ठ
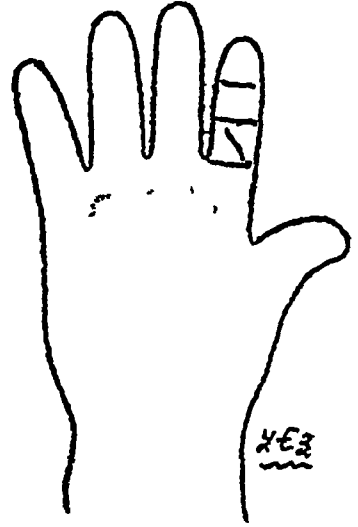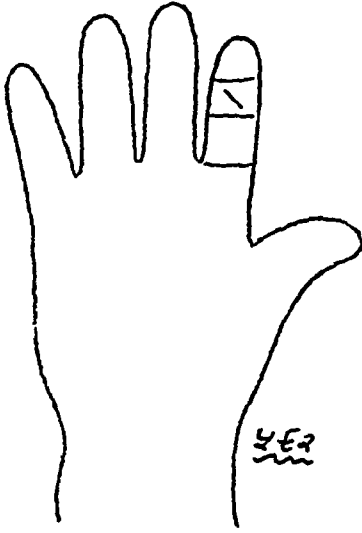
वक्ता तथा विचारक, नीतिज्ञ, शास्त्रज्ञ, धन-धान्य से पूर्ण, परोपकारी, दूरदर्शी शान्त, सरल तथा सर्वगुण सम्पन्न होता है। ऐसे व्यक्तियो से यदि निरर्थक छेडछाड को जाए तो वे अत्यधिक क्रुद्ध हो जाते है।
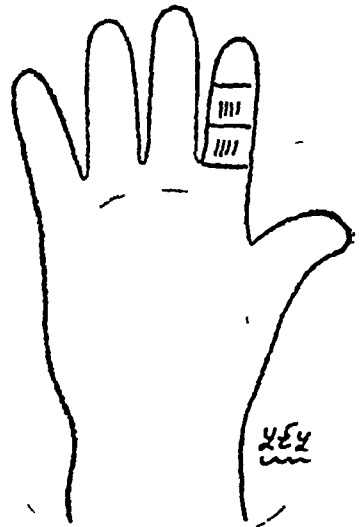
चित्र ५९५–यदि तर्जनी उंगली के द्वितीय तथा तृतीय पर्व पर चार-चार सरल रेखाए खड़ी हो तो जातक सुखी, सद्‌गुणी तथा ऐश्वर्यशाली होता है। यदि रेखाए चार-चार से कम होगी तो फल भी उतना ही न्यून होगा।
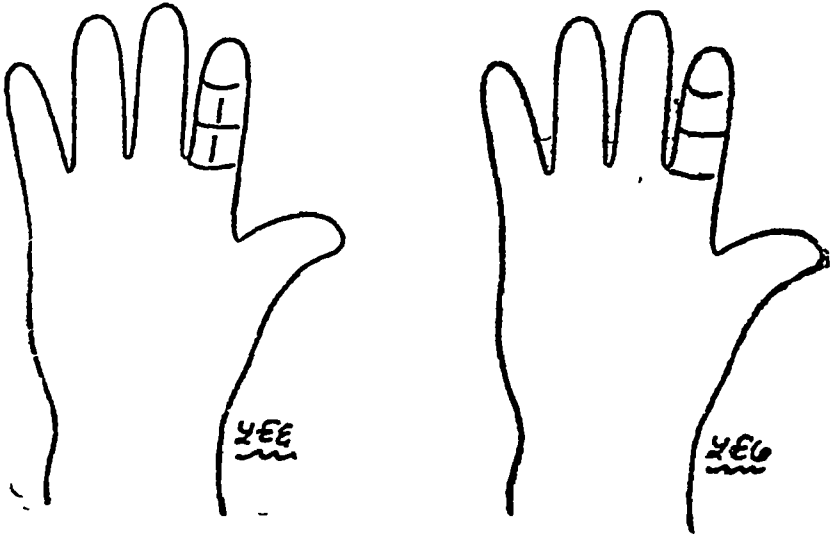
चित्र ५९६—यदि तर्जनी उंगली के द्वितीय तथा तृतीय पर्व पर एक-एक सरल खड़ी रेखा हो तो जातक वैराग्यवान होता है।

चित्र ५९७—यदि तर्जनी उगली के द्वितीय तथा तृतीय पर्व पर एक भी खड़ी रेखा न हो तो जातक का जीवन अत्यन्त दु खमय व्यतीत होता है।

चित्र ५९८—यदि तर्जनी उगली के प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पर्व पर स्थित खडी रेखाओ को आड़ी रेखाए काट रही हो तो शुभ फल में न्यूनता आ जाती है अथवा अशुभ फल प्राप्त होता है।
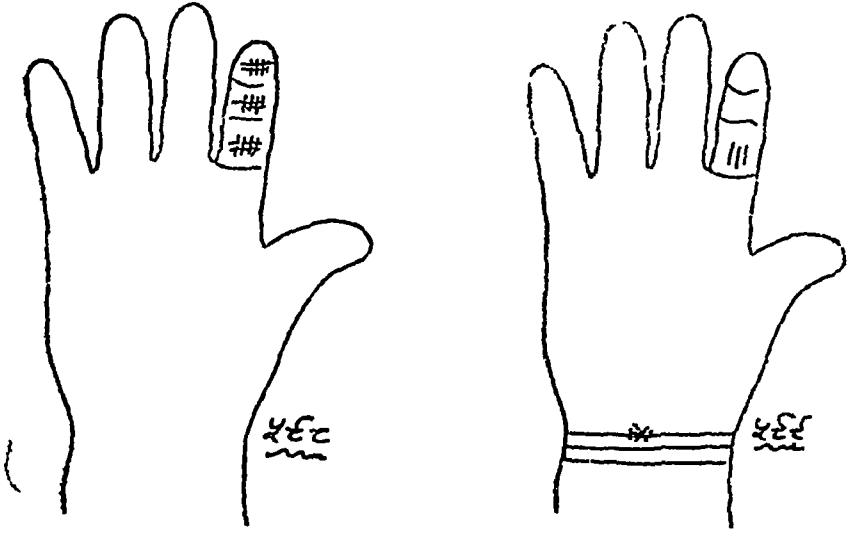
चित्र ५९९—यदि तर्जनी उगली के तृतीय पर्व पर तीन सरल खडी रेखाए हो और मणिबध की रेखा के निकट नक्षत्र-चिन्ह भी हो तो जातक को दूसरे के द्वारा कमाया हुआ धन बिना परिश्रम किए अनायास ही स्वय प्राप्त हो जाता है।

चित्र ६००—यदि तर्जनी उगली के तृतीय पर्व से कोई रेखा निकलकर अगूठे के प्रथम पर्व की सन्धि के साथ जा मिले तो ऐसी रेखा वाले जातक को न्यायालय द्वारा मृत्यु दण्ड प्राप्त होता है।

चित्र ६०१—यदि तर्जनी उगली के मूल मे रहने वाली पर्व ग्रन्थि-रेखा टूटी हुई हो तो जातक को सर्पदश अथवा किसी अन्य जानवर द्वारा काटे जाने का भय उपस्थित होता है।

चित्र ६०२—यदि तर्जनी उगली के द्वितीय पर्व के सन्धि मूल मे एक सरल तथा आडी रेखा हो तो जातक उदास प्रकृति का होता है और किसी अन्य व्यक्ति के द्वारा उन्नति करता है।
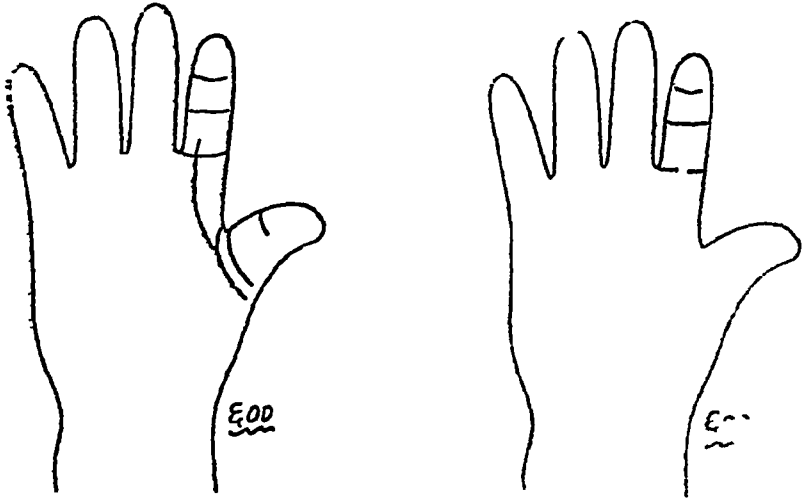
चित्र ६०३—यदि तर्जनी उगली के द्वितीय पर्व के सन्धि मूल मे दो आड़ी रेखाए हो तो जातक हृदय तथा कण्ठ-रोगो से पीडित रहता है।
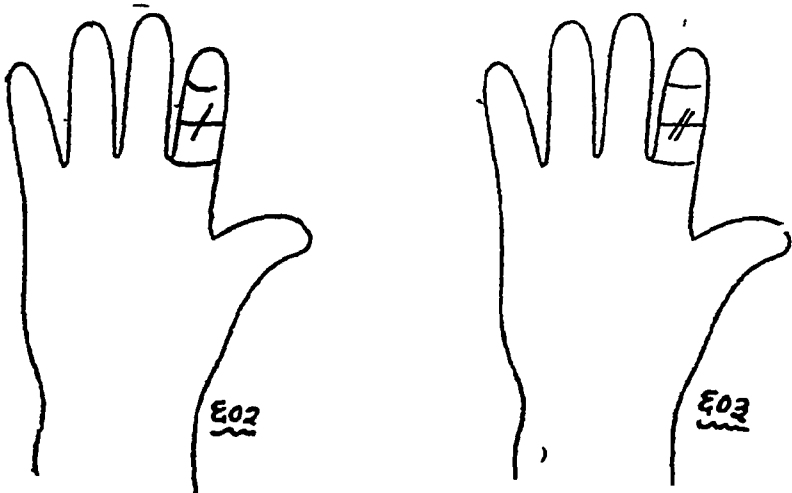
चित्र ६०४—यदि तर्जनी उंगली के द्वितीय पर्व के सन्धि मूल मे दो स्पष्ट आड़ो रेखाओ के बीच में दो आड़ी रेखाए और भी हो, परन्तु वे स्पष्ट दिखाई न देती हो तो ऐसा जातक नीतिज्ञ, दीर्घजीवी, सर्वप्रिय, सुखो, धनी तथा उन्नतिशील होता है।
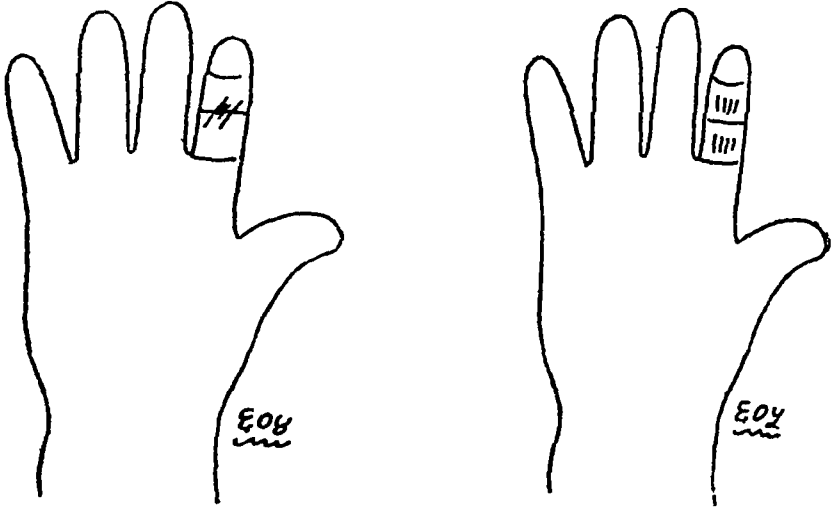
चित्र ६०५—यदि तर्जनी उगली के द्वितीय तथा तृतीय पर्व पर सरल और स्पष्ट चार-चार खड़ी रेखाए हो तो वह व्यक्ति सुप्रसिद्ध, विनम्र, उपकारी, धर्मात्मा, सेना आदि का काम करने वाला, मन्त्री, भूमिपति, बुद्धिमान्, ऐश्वर्यशाली, माता-पिता तथा गुरुजनो का भक्त सुखी एव सद्गुणी होता है।

मध्यमा उंगली पर रेखाएं

चित्र ६०६—यदि मध्यमा उगली के केवल पहले पर्व पर दो-तीन छोटी-छोटी रेखाए खडी हों तथा अन्य लक्षण भी पुष्टि करते हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक आत्महत्या करता है।
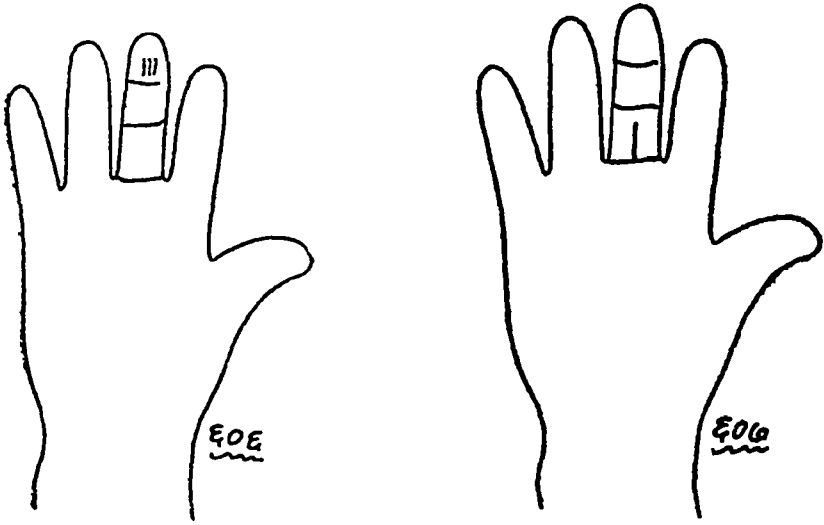
चित्र ६०७—यदि मध्यमा उंगली के तीसरे पर्व पर केवल एक सीधी खडी रेखा हो और वह शनि-क्षेत्र तक न आई हो, तो ऐसी रेखा वाला जातक फौज मे कोई उच्चपद तथा सफलता को प्राप्त करता है।

चित्र ६०८—यदि पूर्वोक्त मध्यमा उगली के तीसरे पर्व पर स्थित एक रेखा कुछ तिरछी हो तो ऐसी रेखा वाले जातक की युद्ध अथवा लड़ाई-झगड़े मे मृत्यु होती है।

चित्र ६०९—यदि मध्यमा उगली के तीसरे पर्व पर कई खडी रेखाए स्पष्ट तथा गहरी हो तो जातक खनिज पदार्थों के व्यवसाय से अत्यधिक धन उपार्जित करता है, परन्तु यदि ये रेखाए अस्पष्ट तथा असुन्दर हो तो जातक दुःखी रहता है।

चित्र ६१०—यदि मध्यमा उंगली के पहले पर्व से तीसरे पर्व तक एक सीधी स्पष्ट खडी रेखा दिखाई दे तो ऐसी रेखा वाला जातक मूर्ख होता है, परन्तु कुछ विद्वानो के मतानुसार ऐसी रेखा वाला
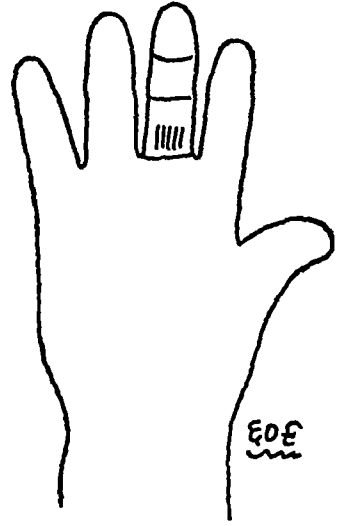
जातक धनी तथा विजयी होता है और उसकी गणना बड़े लोगों में होती है।
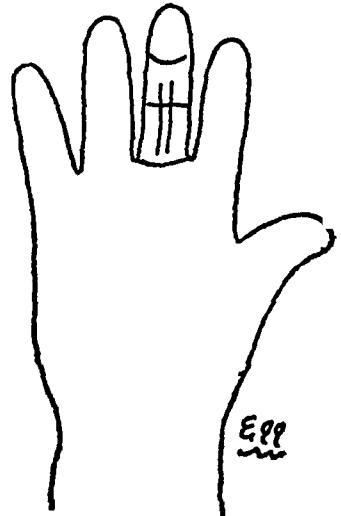
चित्र ६११—यदि मध्यमा उगली के दूसरे पर्व से आरम्भ होकर एक अथवा दो खडी रेखाए तीसरे पर्व पर पहुच रही हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक बुद्धिमान होता है।

चित्र ६१२—यदि मध्यमा उगली के तीनों पर्वो पर लम्बी लहरदार खडी रेखाए हो तथा शनि-क्षेत्र पर छोटी-छोटी आडी रेखाए हों तो वे जातक के दुर्भाग्य की सूचक होती है। ऐसी रेखाओ वाले जातक के जीवन मे शारीरिक कष्ट सम्बन्धी अनेक दुर्घटनाए घटित होती हैं।
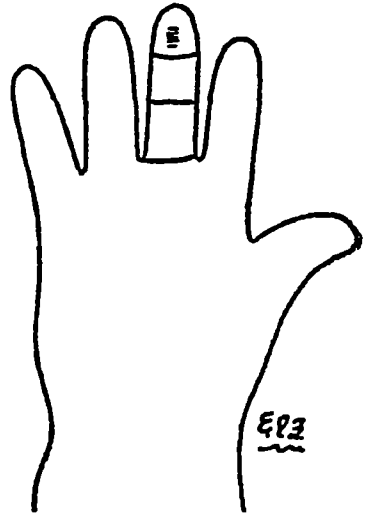
चित्र ६१३—यदि मध्यमा उगली के पहले पर्व पर छोटी-छोटी कई आडी रेखाए तथा अन्य हाथ के लक्षणो से भी पुष्टि होती हो ,तो ऐसी रेखाओ वाले जातक की आत्महत्या की ओर प्रवृत्ति होती है।

चित्र ६१४—यदि मध्यमा उंगली के दूसरे पर्व पर उक्त प्रकार की छोटी-छोटी आड़ी रेखाए हो तो ऐसा जातक स्वभाव का जिद्दी, मूर्ख तथा अज्ञानी होता है।
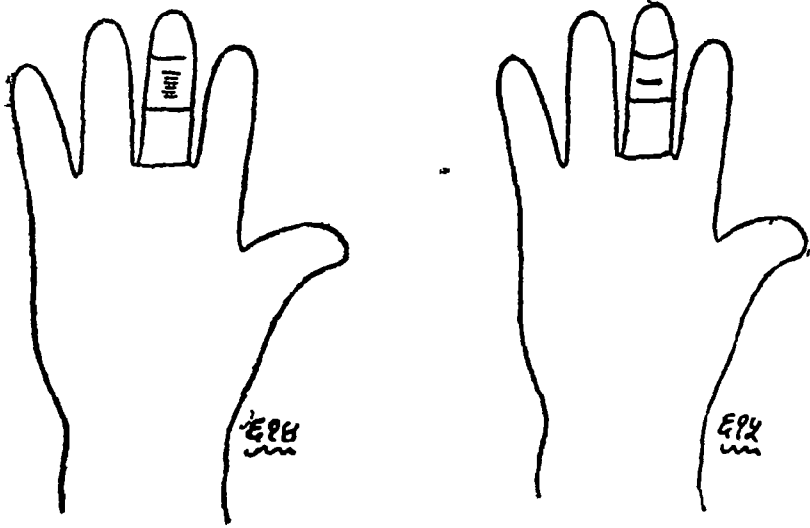
चित्र ६१५—मध्यमा उंगली के दूसरे पर्व पर केवल एक ही गहरी तथा आडी रेखा हो तो ऐसी रेखा वाले जातक की मृत्यु विष द्वारा होती है।

चित्र ६१६—यदि मध्यमा उगली के तीसरे पर्व पर कई आड़ी रेखाएं हों तो ऐसे व्यक्ति का जीवन दु.खी होता है और उसके मित्र भी दूर हट जाते हैं, परन्तु यदि हाथ के अन्य लक्षण शुभ हो तो ऐसी रेखा वाले जातक को उत्तराधिकार के रूप मे धन प्राप्त होता है।

चित्र ६१७—यदि मध्यमा उगली के पहले पर्व पर ही कुछ खड़ी रेखाएं हों तो ऐसा जातक अन्य लोगो से द्वेष रखने वाला होता है।

चित्र ६१८—यदि मध्यमा उगली के तीनो पर्वो पर एक रेखा टेढ़ी होकर गई हो तो ऐसी रेखा वाले जातक की मृत्यु प्रायः युद्ध अथवा लडाई-झगड़े मे होती है।
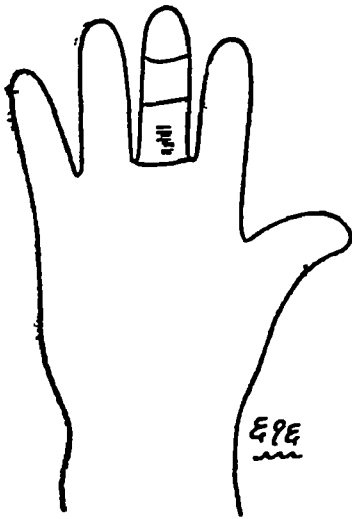
चित्र ६१९—यदि मध्यमा उगली के पहले पर्व से तीसरे पर्व तक कई रेखाए नख के समीप तक गई हों तो ऐसी रेखाओ वाला जातक
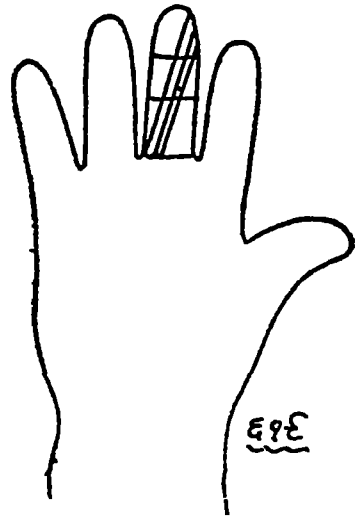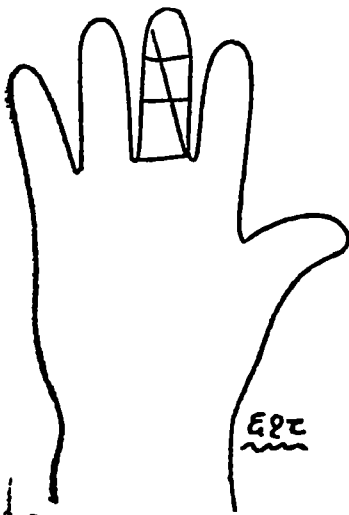
दुष्ट स्वभाव का तथा मानसिक-दुःख एवं चिन्ताओं में अपना जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चित्र ६२०—यदि मध्यमा उंगली के पहले पर्व से तीसरे पर्व तक कई सरल रेखाएं स्पष्ट तथा सीधी मध्य भाग में होती हुई गई हों तो ऐसी रेखाओं वाला जातक खनिज पदार्थों द्वारा धनोपार्जन कर सम्पत्तिशाली बनता है।
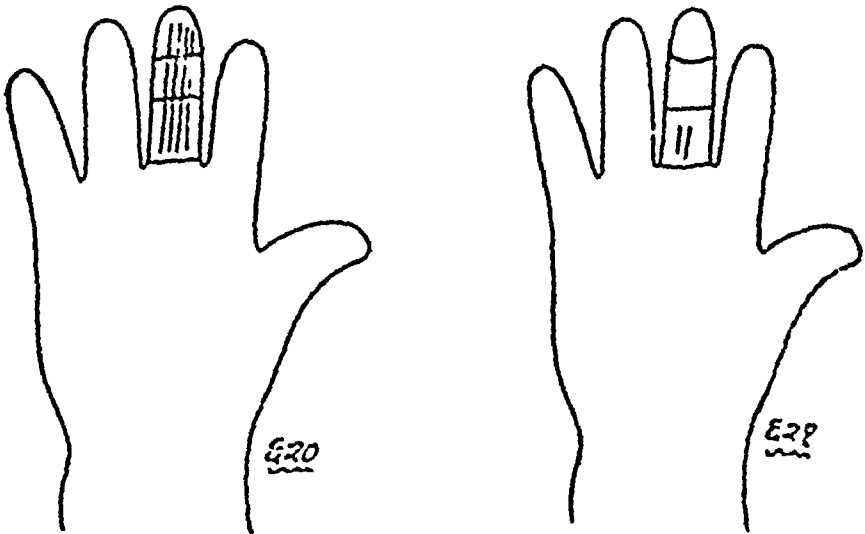
चित्र ६२१—यदि मध्यमा उंगली के तीसरे पर्व पर दो खड़ी रेखाएं हों तो ऐसा जातक कठिन कार्यों में भी सफलता प्राप्त करता है तथा जलीय और भूगर्भीय वस्तुओं के व्यवसाय से अतुल सम्पत्ति अर्जित करता है।

चित्र ६२२—यदि मध्यमा उंगली के तीसरे पर्व पर दो टेढ़ी रेखाएं हों तो उन्हें भाग्यहीनता का लक्षण समझना चाहिए।
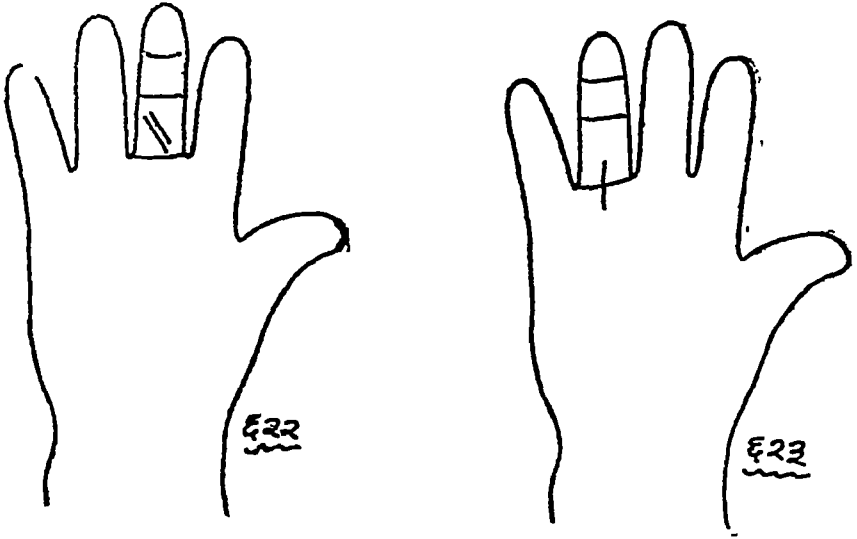
अनामिका उंगली पर रेखाएं

चित्र ६२३—यदि अनामिका उगली के मूल से एक सरल खडी रेखा निकलकर उगली के पहले पर्व तक चली गई हो तो ऐसी रेखा वाला जातक अत्यन्त धनो तथा भाग्यशाली होता है । वह बडे-बड़े कारखानो, मिल आदि का स्वामी भी होता है ।

चित्र ६२४—यदि अनामिका उगली के तीनो पर्वो पर बहुत-सी रेखाए दिखाई दे तो ऐसी रेखाओ वाला व्यक्ति अनेक स्त्रियो के प्रेम-पाश मे पडकर अपनी सम्पत्ति को नष्ट कर देता है ।

चित्र ६२५—यदि अनामिका उगली के पहले पर्व पर कुछ सरल तथा खड़ी रेखाए हो तो ऐसा जातक विद्वान् एव सुखी-जीवन व्यतीत करने वाला होता है ।

चित्र ६२६—यदि अनामिका उगली के पहले पर्व मे स्थित कुछ रेखाए उगली के मूल मे जाकर मिल रही हों तो ऐसा जातक अपनी वाणी
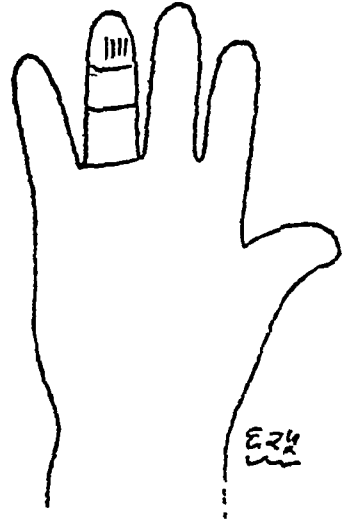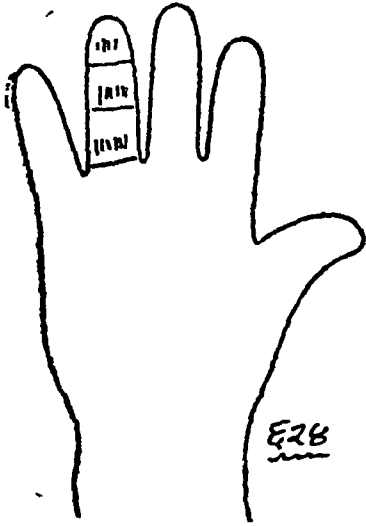
द्वारा प्रभावित करने वाला चतुर व्यक्ति तो होता है, परन्तु वह मिथ्या-भिमानी तथा दूसरों को भ्रमित करने वाला होता है।
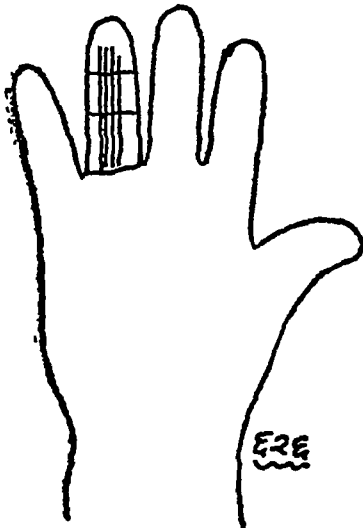
चित्र ६२७—यदि अनामिका उगली के पहले पर्व में स्थित मे से रेखाओ एकाध रेखा पर्व के सीधे मे एक ओर को झुकी हुई दिखाई देती हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक ससार मे अत्यधिक यश प्राप्त करने वाला होता है ।

चित्र ६२८—यदि अनामिका उगली के पहले पर्व मे से एक रेखा उठकर दूसरे पर्व में चली गई हो तो ऐसी रेखा वाला जातक अपने श्रेष्ठ आचरण तथा पराक्रम से धनोपार्जन करता है ।
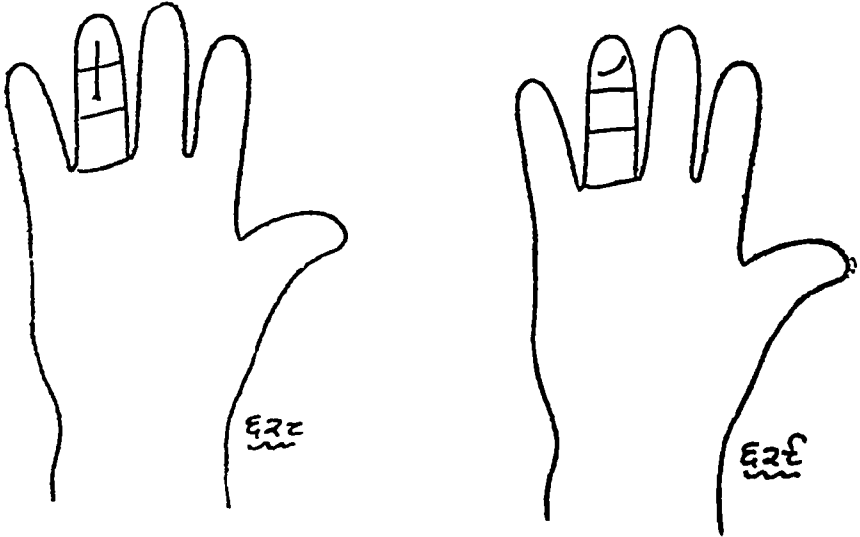
चित्र ६२९—यदि अनामिका उगली के पहले पर्व पर से एक टेढी बाकदार रेखा हो तो ऐसी रेखा वाला जातक हर प्रकार के सकट एवं विपत्तियो से युक्त बना रहता है ।

चित्र ६३०—यदि अनामिका उगलो के पहले पर्व पर दो या तीन खड़ी स्पष्ट रेखाए हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक कलाकार तथा अपनी धुन मे पागल रहने वाला होता है ।
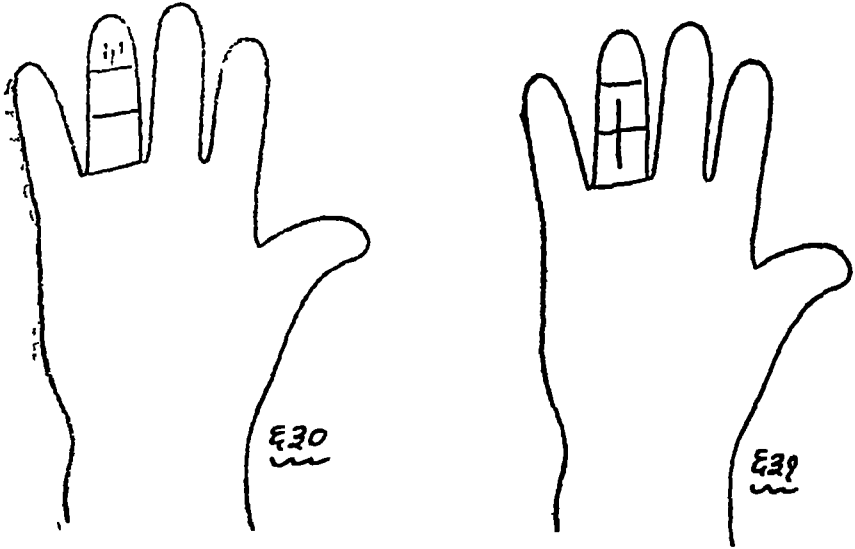
चित्र ६३१—यदि अनामिका उगली के दूसरे पर्व के ऊपरी भाग से आरम्भ होकर एक खडी तथा गहरी रेखा तीसरे पर्व के बीच मध्य भाग तक चली गई हो तो ऐसी रेखा वाला जातक अत्यधिक यश तथा ख्याति अर्जित करता है।

चित्र ६३२—यदि अनामिका उगली के दूसरे पर्व के ऊपरी भाग से आरम्भ होकर दो खडी तथा गहरी रेखाए तीसरे पर्व के मध्यभाग तक चली गई हो तथा वृहद् त्रिकोण तीनो रेखाओ द्वारा स्पष्ट तथा सुन्दर बना हुआ हो तथा वृहद् चतुष्कोण चौडा हो, तो ऐसा जातक अस्थिर स्वभाव एव अस्थिर विचारो वाला होता है।

चित्र ६३३—यदि अनामिका उगली के पहले पर्व पर कई छोटी-छोटी आडी रेखाए हो तो ऐसी रेखाओ वाले कलाकार व्यक्ति के जीवन मे अनेक विघ्न-बाधाए उपस्थित होती है, जिसके कारण उसका मस्तिष्क उलझन मे बना रहता है।
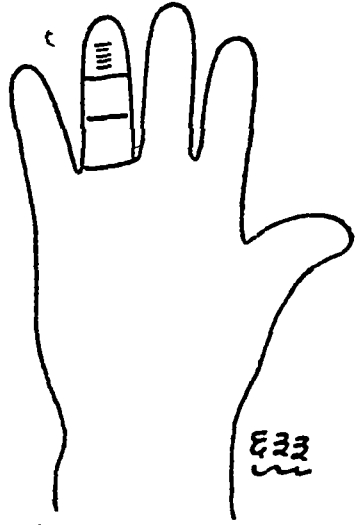
चित्र ६३४—यदि अनामिका उगली के दूसरे पर्व पर कई छोटी-छोटी आडी रेखाए हो तो जातक का स्वभाव ईर्ष्यालु होता है और उसमे कोई विशेष योग्यता नही होती है।
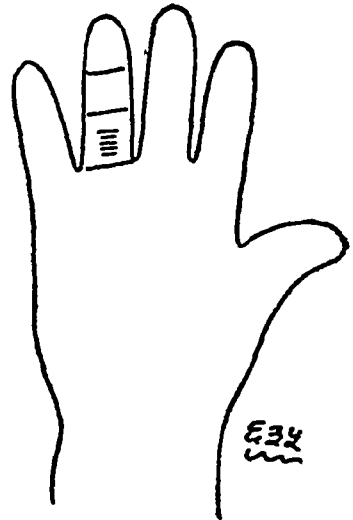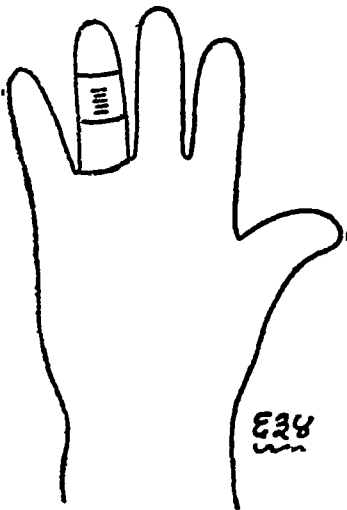
चित्र ६३५—यदि अनामिका उगली के तीसरे पर्व पर कई छोटी-छोटी आड़ी रेखाए दिखाई दे तो जातक भाग्यहीन एव दरिद्र होता है।

चित्र ६३६—यदि अनामिका उंगली के पहले पर्व से तीसरे पर्व तक सीधी तीन गहरी तथा स्पष्ट खडी रेखाए हों तो ऐसी रेखाओ वाला व्यक्ति अत्यन्त सौभाग्यशाली होता है।
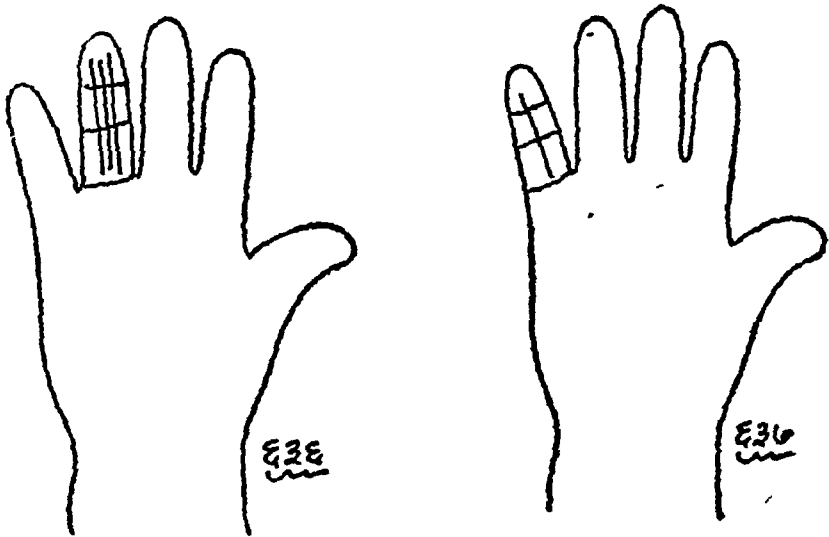
कनिष्ठा उंगली पर रेखाएं

चित्र ६३७—यदि कनिष्ठा उगली के तीनो पर्वो पर एक लम्बी, सरल, स्पष्ट तथा खडी रेखा दिखाई दे तो ऐसी रेखा वाला जातक सात्यवादी, स्पष्ट-वक्ता तथा शुद्ध हृदय का होता है।

चित्र ६३८—यदि कनिष्ठा उंगली के तीनो पर्वो पर दो लम्बी तथा सरल खड़ी रेखाए हो तो ऐसी रेखाओं वाला जातक सच्चा तथा श्रेष्ठ चरित्र वाला, यशस्वी एव सम्मानित होता है।

चित्र ६३९—यदि कनिष्ठा उंगली के पहले पर्व पर कई छोटी-छोटी खडी रेखाए हो तो ऐसा जातक दूसरे के कार्यो मे हस्तक्षेप करने वाला, असम्भव कार्यो की योजनाएं वनाने वाला तथा हाथ मे अन्य लक्षण भी अच्छे हो तो गुप्त-विद्याओ के अध्ययन मे पटु होता है ।
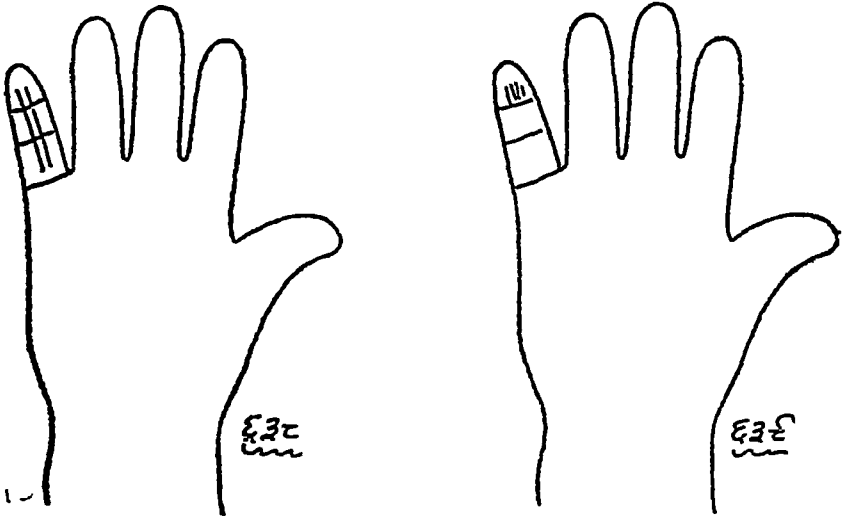
चित्र ६४०—यदि कनिप्ठा उगली के दूसरे पर्व पर छोटी-छोटी घिचपिच (एक दूसरे से मिली हुई-सी) कई खड़ी रेखाए हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक दूसरो को घोखा देने की प्रवृत्ति वाला होता है।

चित्र ६४१—यदि कनिष्ठा उगली के दूसरे पर्व से आरम्भ होकर तीसरे पर्व के नीचे तक एक स्पष्ट तथा लम्बी खडी रेखा हो तो ऐसी रेखा वाला जातक वैज्ञानिक, अनुसधान कार्यो मे सफलता प्राप्त करता है।

चित्र ६४२—यदि पूर्वोक्त प्रकार से कनिष्ठा उगली के दूसरे पर्व से आरम्भ होकर तीसरे पर्व के नीचे तक जाने वाली एक स्पष्ट तथा
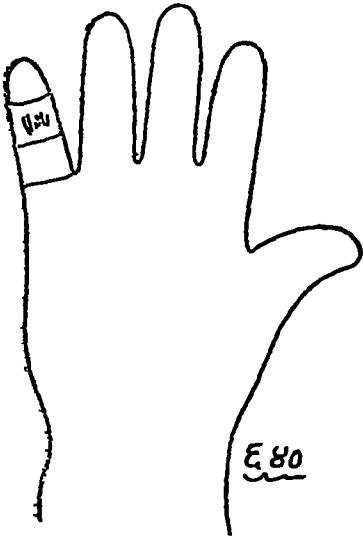
लम्बी रेखा लहरदार हो तो ऐसी रेखा वाला जातक अत्यधिक चालाक होता है।

चित्र ६४३—यदि कनिष्ठा उगली के तीसरे पर्व पर अनेक छोटो-

छोटी एक-दूसरे से मिली हुई अथवा लहरदार खडी रेखाए हो तो ऐमी रेखाओ वाले जातक मे चोरो करने प्रवृत्ति होती है।
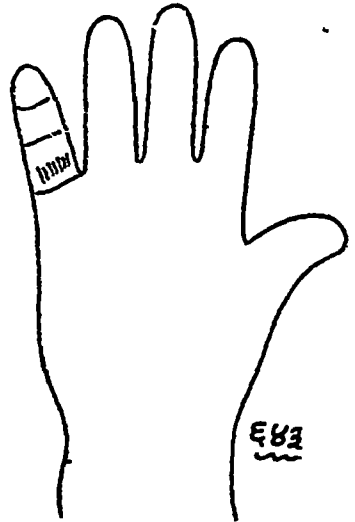
चित्र ६४४—यदि कनिष्ठा उगली के तीसरे पर्व पर केवल एक गहरी तथा छोटी रेखा हो तो ऐसी रेखा वाले जातक मे भी चोरी करने की आदत होती है।
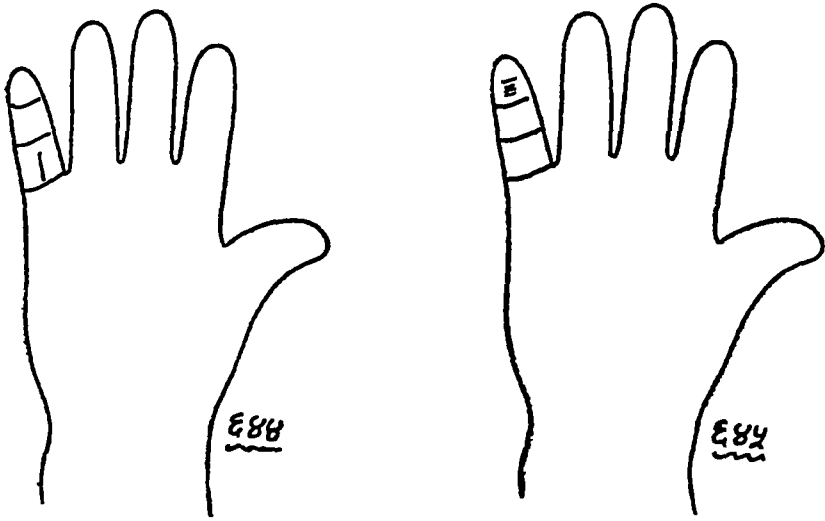
चित्र ६४५—यदि कनिष्ठा उगली के पहले पर्व पर छोटी-छोटी कई आडी रेखाए हो तो ऐमा जातक व्यर्थ की वकवाम करने वाला, मिथ्या-वादी तथा चोर होता है।

चित्र ६४६—यदि कनिष्ठा उगलो के दूसरे पर्व पर छोटी-छोटी आडी रेखाए हो तो ऐसो रेखाओ वाला जातक अस्थिर स्वभाव का होता है और अपने व्यवसाय को वदलता रहता है।

चित्र ६४७—यदि कनिष्ठा उगली के तासरे पर्व पर छोटी-छोटी
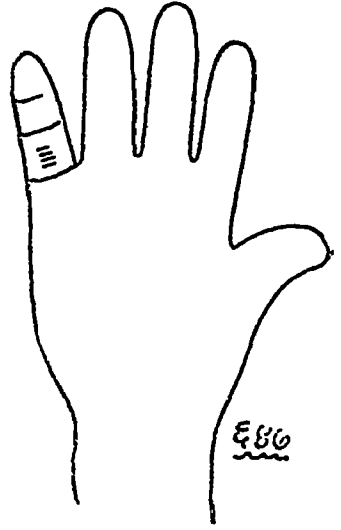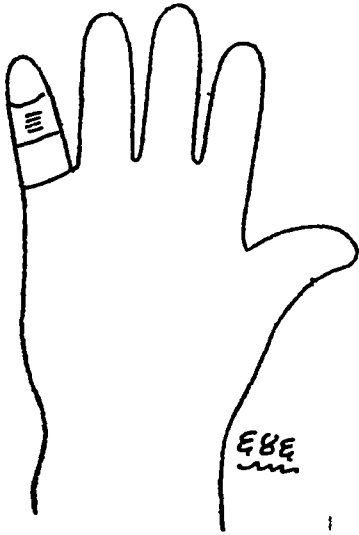
आडी रेखाए हो तो ऐसी रेखाओ वाले जातक की प्रवृत्ति भी चोरी करने की होती है।

चित्र ६४८—यदि कनिष्ठा उगली के पहले पर्व से आरम्भ होकर
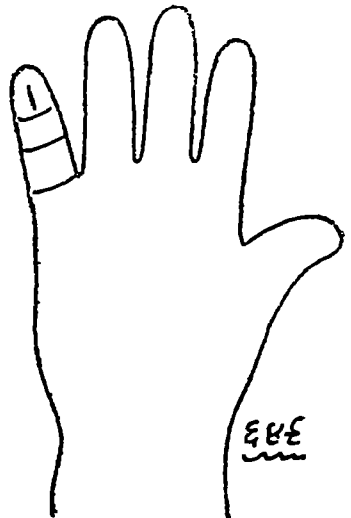
तीसरे पर्व तक तीन स्पष्ट तथा सीधी रेखाए गई हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक काल्पनिक एवं शेखचिल्ली जैसी योजनाए बनाने वाला होता है।

चित्र ६४९—यदि कनिष्ठा उंगली के पहले पर्व पर केवल एक अच्छी गहरी तथा सरल रेखा हो तो ऐसी रेखा वाला जातक निरन्तर रोगी बना रहता है। उसकी प्रवृत्ति सुदृढ नही रह पाती।

चित्र ६५०—यदि कनिष्ठा उंगली के दूसरे पर्व पर दो या तीन सरल और स्पष्ट रेखाए हो तो ऐसी रेखाओ वाला व्यक्ति गुप्त विद्याओ के तत्त्व का खोजी तथा जानकार होता है।
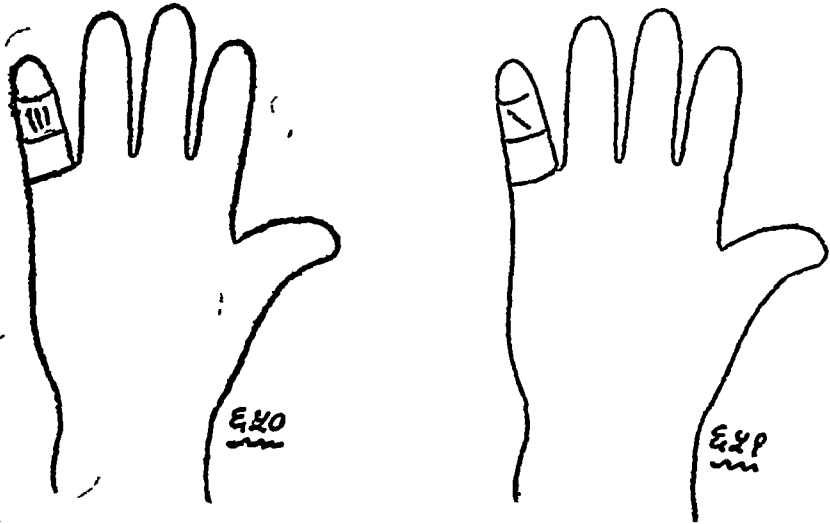
चित्र ६५१—यदि कनिष्ठा उंगली के दूसरे पर्व पर एक गहरी तथा टेढी बांकी रेखा हो तो ऐसा जातक व्यभिचारी तथा विषयी-प्रकृति का होता है।

चित्र ६५२—यदि कनिष्ठा उगली के तीसरे पर्व से निकलकर दूसरे पर्व तक एक गहरी तथा सरल रेखा गई हो तो ऐसो रेखा वाला व्यक्ति श्रेष्ठ वक्ता होने के कारण समाज तथा लोक मे प्रसिद्धि प्राप्त करता है ।
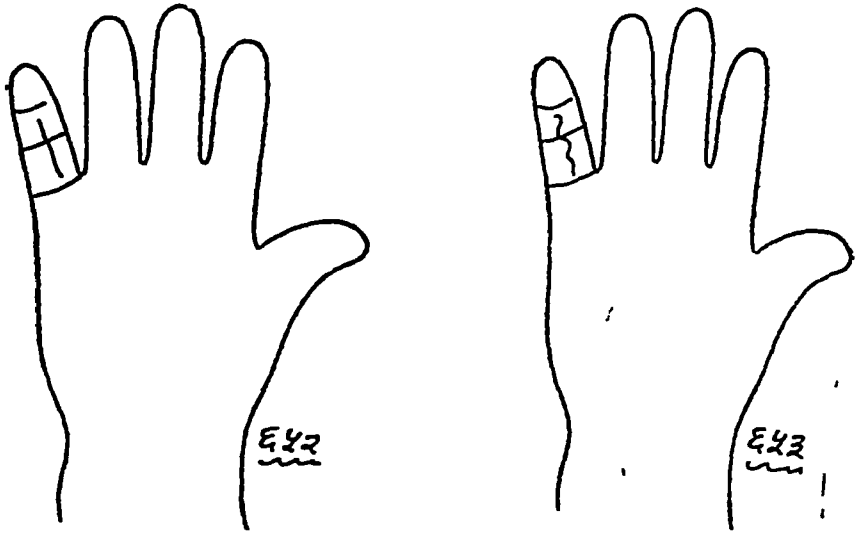
चित्र ६५३—यदि पूर्वोक्त कनिष्ठा उगली के तीसरे पर्व से दूसरे पर्व तक जानेवाली गहरी रेखा टेढी अथवा अव्यवस्थित हो तो जातक दुराग्रही और केवल अपनो कही हुई वात पर ही अडा रहने वाला होता है ।

चित्र ६५४—यदि वुध-क्षेत्र से कोई रेखा निकलकर कनिष्ठा उगलो के दूसरे पर्व पर चली गई हो तो ऐसी रेखा वाला जातक अत्यधिक धनवान्, यशस्वी तथा सव कार्यो मे सफलता प्राप्त करने वाला होता है ।
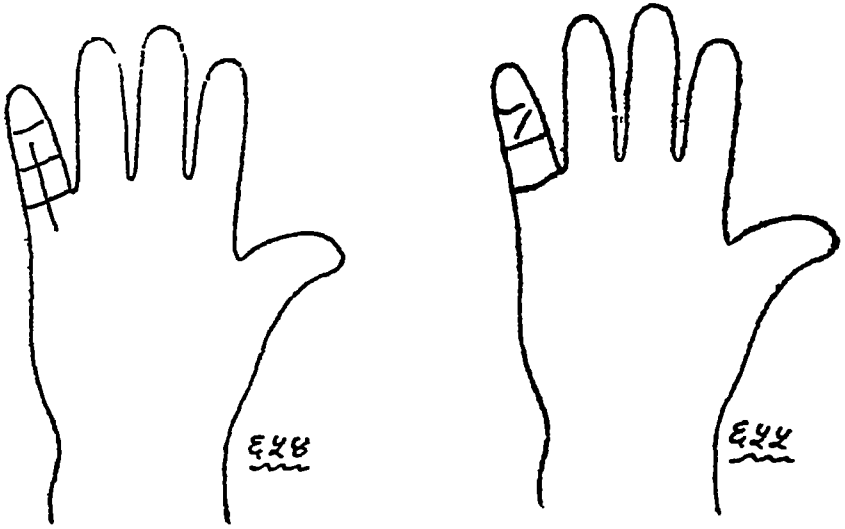
चित्र ६५५—यदि कनिष्ठा उगली के दूसरे पर्व पर एक टेढी तथा पुष्ट-रेखा हो तो ऐसी रेखा वाला जातक व्यभिचारी होता है।

चित्र ६५६—यदि कनिष्ठा उगली की तीसरी सधि के नीचे बुध-क्षेत्र पर एक सरल, पुष्ट तथा स्पष्ट रेखा दिखाई दे तो ऐसी रेखा वाला जातक अत्यन्त बुद्धिमान् तथा समझदार होता है।

चित्र ६५७—यदि कनिष्ठा उगली के नीचे स्पष्ट, खड़ी तथा गहरी कई रेखाए हो तो वे जातक के लिए सुख, सौभाग्य एवं सम्पत्ति का सूचक होती है।

चित्र ६५८—यदि कनिष्ठा उगली के तीनो पर्व पर स्थित खडी रेखाओ की सख्या कुल मिलाकर बारह हो तो जातक बहुत धनी तथा सुखी होता है, यदि सख्या तेरह हो तो दरिद्र होता है, यदि सख्या पन्द्रह हो तो चोर होता है, यदि सख्या सोलह हो तो जुआरी और दुष्ट होता है, यदि सख्या सत्रह हो तो पापी होता है, यदि सख्या
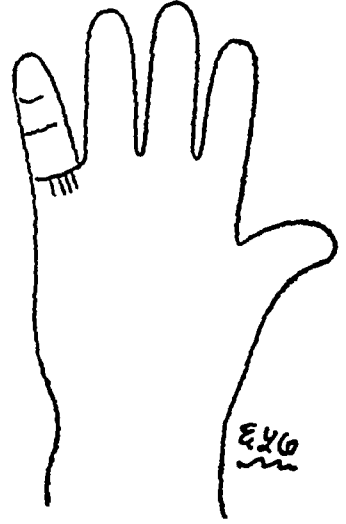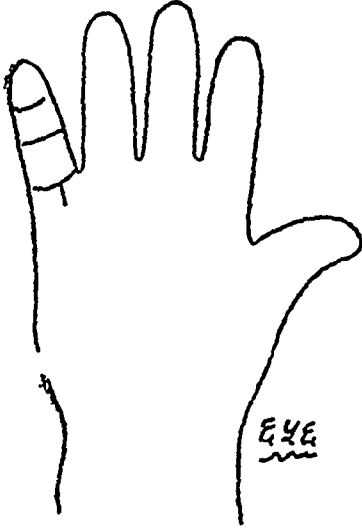
अठारह हो तो सद्गुणी होता है, यदि सख्या उन्नीस हो तो सर्वजन मान्य होता है, यदि सख्या वीस हो तो ऋषि तुल्य होता है और यदि सख्या इक्कीस हो तो जातक उदार स्वभाव का होता है।
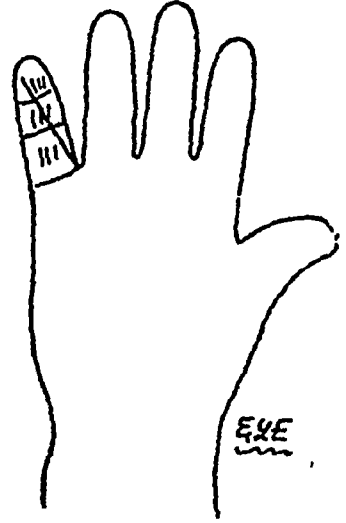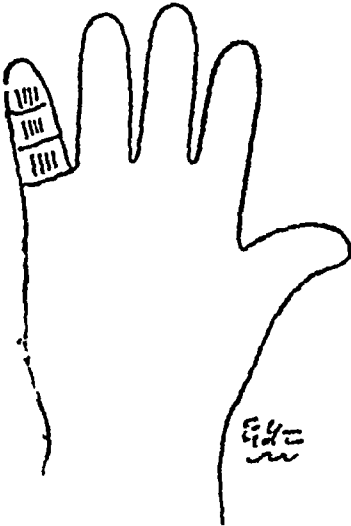
चित्र ६५९—यदि कनिष्ठा उगली के तीनों पर्वों पर अनेक रेखाओं के बीच मे एक स्पष्ट तथा गहरी लम्बी रेखा हो और वह तीसरे पर्व के पार्श्वभाग मे जाकर समाप्त हुई हो तो ऐसी रेखा वाला जातक सच्चरित्र, उद्योगी, कर्म-कुशल तथा सौभाग्यशाली होता है।

चित्र ६६०—यदि बुध-क्षेत्र से दो सरल तथा सीधी रेखाएं उठकर कनिष्ठा उगली के तीसरे पर्व के मध्यभाग तक पहुचे तो ऐसी रेखा वाला जातक वस्त्राभूषणो का प्रेमी, धनी, सुखी तथा उच्चपदाधिकारी होता है।
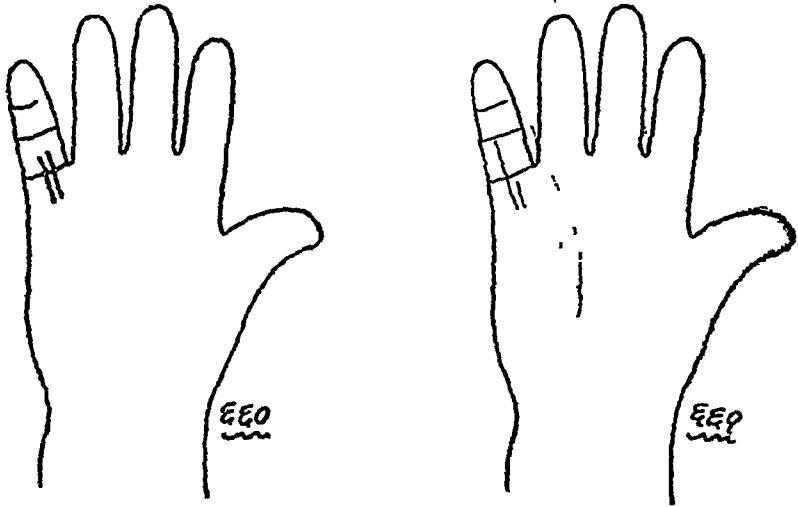
चित्र ६६१—यदि बुध-क्षेत्र पर दो रेखाए हो और उनमे से केवल एक रेखा बढकर कनिष्ठा उगली के द्वितीय पर्व के मूल को स्पर्श करे तो ऐसी रेखा वाला जातक सच्चरित्र, पराक्रमी, यशस्वी तथा भूमिपति होता है। यदि उक्त रेखा कुछ टेढी हुई तो उसके शुभ फल में भी उतनी ही कमी आ जाएगी।

चित्र ६६२—यदि कनिष्ठा उगली के तीसरे पर्व पर तीन सीधी रेखाए हो तो ऐसी रेखाओ वाले व्यक्ति को तीन पुत्र प्राप्त होते हैं। एक पाश्चात्य विद्वान् के मतानुसार ऐसी रेखाओ वाले को पहला पुत्र दत्तक,(गोद) लेना पडता है। बाद मे दो पुत्र उसके अपने होते हैं।
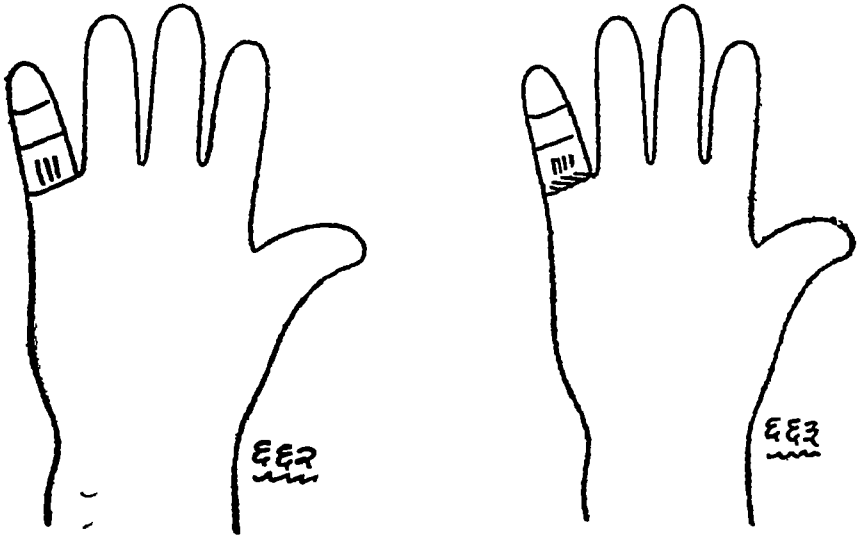
चित्र ६६३—कनिष्ठा उगली के तीसरे पर्व पर जितनी खडी रेखाए हो जातक के उतने ही पुत्र होते है और जितनी आडी रेखाए हो उतनी ही पुत्रिया होती है—ऐसा कुछ विद्वानो का मत है। इनमें लहरदार रेखाओ से नपुसक तथा छिन्न-भिन्न रेखाओ से अल्पायु सन्तान समझनी चाहिए।

चित्र ६६४—यदि पूर्वोक्त कनिष्ठा उगली के तृतीय पर्व-स्थित खडी रेखाओ मे कोई पुत्र सम्बन्धी गहरी रेखा किसी अन्य रेखा द्वारा काट दी गई हो तो उस रेखा से सम्बन्धित पुत्र कपूत तथा माता-पिता का हत्यारा होता है।
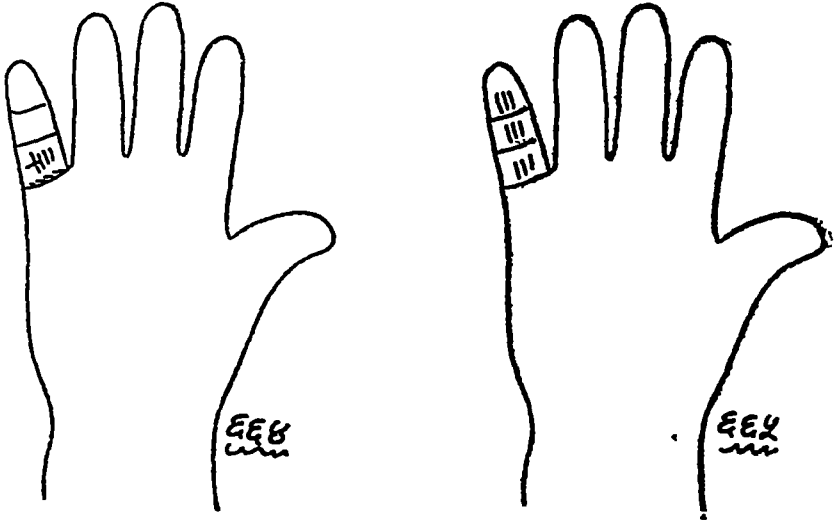
चित्र ६६५—यदि कनिष्ठा उगली के तीनो पर्वो पर बीच मे तीन-तीन रेखाए हो तो ऐसा जातक धार्मिक, विद्वान्, कलाकार, यशस्वी, धन-धान्य सम्पन्न, सुखी, विचारक तथा तन्त्र शास्त्र के तत्वो का ज्ञाता होता है।

चित्र ६६६—यदि कनिष्ठा उगली के तीनो पर्वो पर स्थित पूर्वोक्त तीन-तीन रेखाए लहरदार अथवा छिन्न-भिन्न हो तो जातक के जीवन मे कई अवसर ऐसे आयेंगे, जबकि उसे विद्या-सम्बन्धी विवादो मे पराजित होना पडेगा। ऐसे व्यक्ति कठिन परिश्रम द्वारा जीविकापार्जन करते है तथा साधारण स्थिति के होते हैं। यदि बुध का पर्वत ऊचा हो तो इनका जीवन सुख पूर्ण रहता है।

चित्र ६६७—यदि कनिष्ठा उगली के तीसरे पर्व पर अर्द्धवृत्त जैसी रेखा हो तो ऐसे जातक दुष्ट, अपराधी, बुद्धिहीन तथा प्राय सन्तान-हीन होते हैं। उन्हे जेलयात्रा भी करनी पडती है।

चित्र ६६८—यदि कनिष्ठा उगली के मूल से दो सीधी तथा स्पष्ट रेखाए निकलकर पहले पर्व तक पहुच रही हो तो ऐसा जातक चतुर
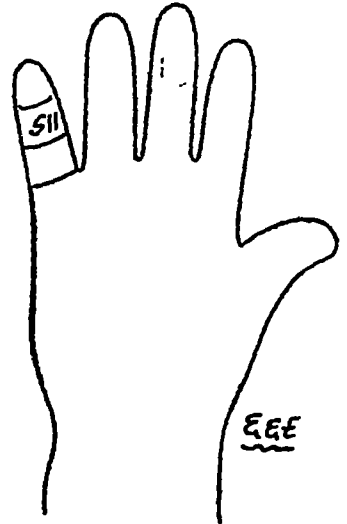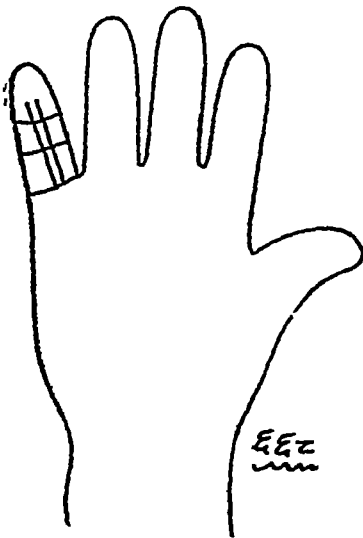
कलाकार, धर्मात्मा, धनी, यशस्वी तथा सर्वगुण सम्पन्न होता है। यदि उक्त रेखाए खडित या लहरदार हो तो उक्त शुभ-फल मे भी उतनी ही कमी आ जाती है।

चित्र ६६९—यदि कनिष्ठा उगली के द्वितीय पर्व मे गुरु-चिन्ह युक्त दो छोटी-छोटी सीधी रेखाए हो तो ऐसा जातक निन्दित कर्म करने वाला, दरिद्र,कृपण, शठ, मलिन, सबका विरोधी तथा वेश्याओ का व्यवसाय करने वाला होता है। उसे विप, शस्त्र, अग्नि, स्त्री तथा राज्य द्वारा भय प्राप्त होता है।

चित्र ६७०—यदि कनिष्ठा उगली के तीसरे पर्व पर दो सीधी खडी रेखाए हो तो ऐसा जातक सुन्दर वस्त्राभूषणो को प्राप्त करने वाला, स्वस्थ, धनी, सगीत प्रेमी, मामा की सम्पत्ति पाने वाला तथा स्त्री के वश मे रहने वाला होता है, परन्तु उसे किसी समय शस्त्राघात अथवा दुर्घटनाओ का सामना भी करना पड़ता है अथवा उसे फोड़ा-फुंसी आदि की बीमारी होती है।
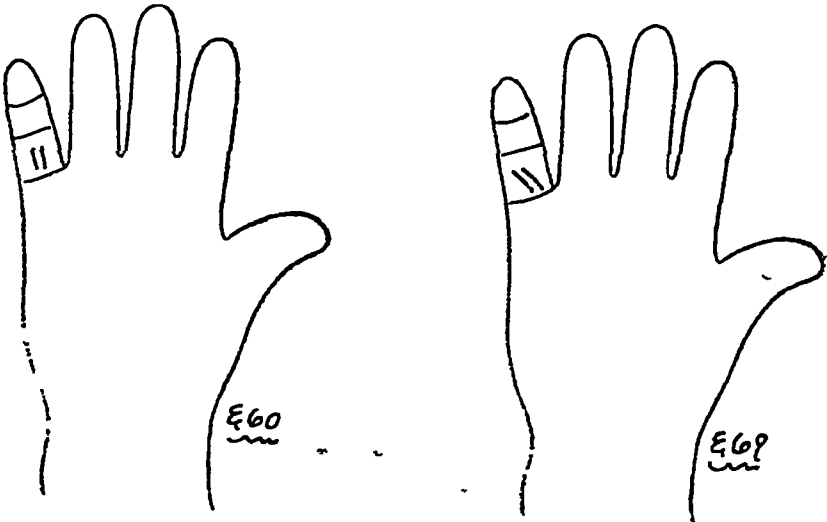
चित्र ६७१—यदि कनिष्ठा उगली के तीसरे पर्व पर दो आडी रेखाए हो तो जातक सुलेखक, विद्वान्, चित्रकार, कवि, बुद्धिमान्, राजनीतिज्ञ, कला-कौशल का प्रेमी तथा धन पुत्रादि का सुख प्राप्त करने वाला होता है।

चित्र ६७२—यदि कनिष्ठा उगली के तीनो पर्वो पर सर्प के समान लहरदार रेखाए हो तो जातक बेईमान, धोखेबाज, दुष्ट, धूर्त तथा असतोषी होता है। उसकी पत्नी व्यभिचारिणी होती है। व्यभिचार के धन से ही अपना घर-खर्च चलाती है। ऐसे व्यक्ति अन्त मे गृह-त्याग कर वैरागी भी बन जाते है, परन्तु उस स्थिति मे भी उन्हे पर स्त्री द्वारा सन्तान प्राप्ति का योग उपस्थित होता है।
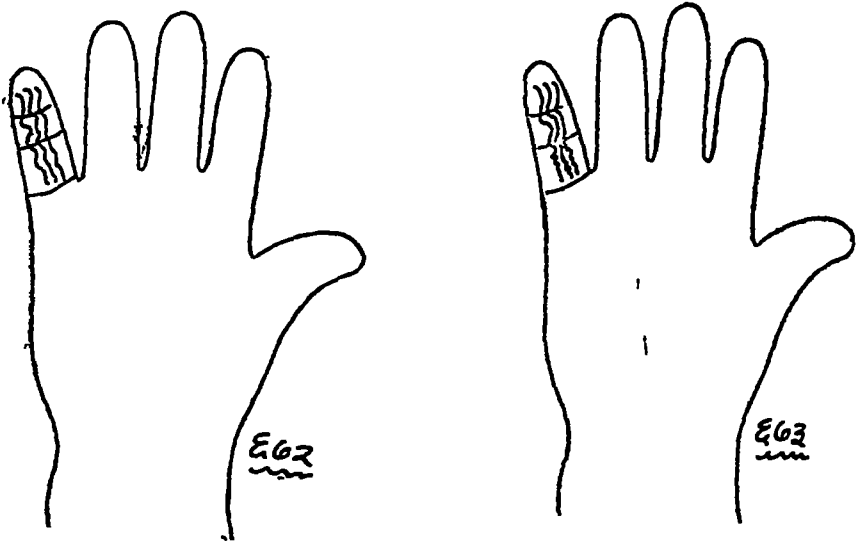
चित्र ६७३—यदि पूर्वोक्त रेखाए कनिष्ठा उगली के तीसरे पव पर अधिक लहरदार हो तो जातक पर-स्त्री-जन्य सन्तान द्वारा मुकद्दमेबाजी करके सम्पत्ति का बटवारा करा लिया जाता है।

चित्र ६७४—यदि पूर्वोक्त रेखाएं कनिष्ठा उंगली के द्वितीय पर्व अधिक लहरदार हो तो जातक की स्मरण-शक्ति नष्ट हो जाती है और वह पागल बन जाता है तथा भिक्षावृत्ति द्वारा अपना जीवन-यापन करता है।
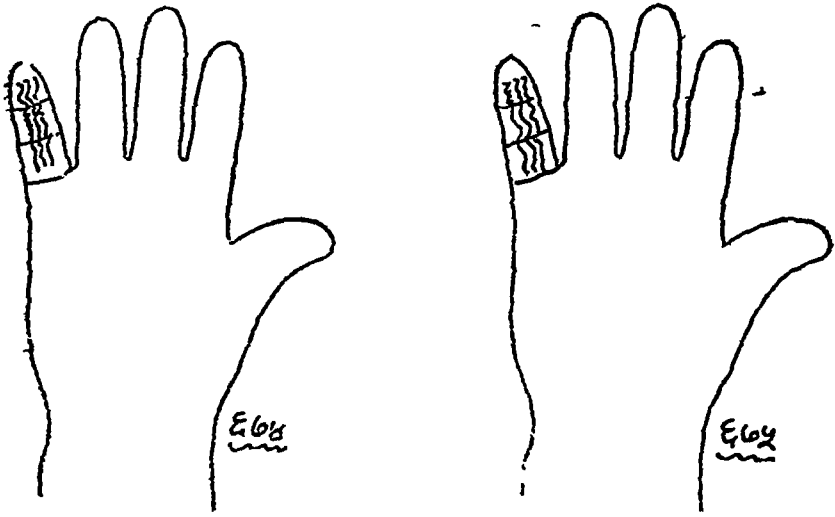
चित्र ६७५—यदि पूर्वोक्त रेखाएं पहले पर्व पर अधिक लहरदार हों तो उनका फल शुभ होता है और वह जातक को व्यवसाय मे सफलता देने वाली होती है। ऐसी रेखाओ वाला जातक धन-धान्य युक्त तथा सुखी-जीवन व्यतीत करने वाला होता है। इस प्रकार की रेखाए किसी अन्य रेखा द्वारा कटी हुई नही होनी चाहिए।

चित्र ६७६—यदि पूर्वोक्त प्रकार की रेखाए शृंखलाकार हो अथवा छिन्न-भिन्न हो-तो भी पूर्वोक्त शुभफल प्राप्त होता है, परन्तु यदि किसी आड़ी रेखा द्वारा उन्हे काट दिया गया हो तो फल अशुभ हो जाता है।
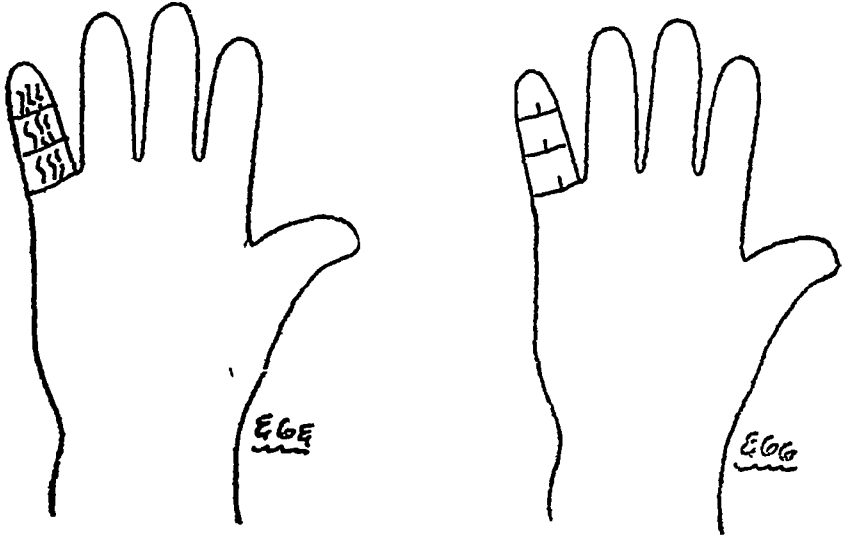
चित्र ६७७—यदि कनिष्ठा उगली के पर्वो के सन्धि स्थलो पर एक-एक स्वच्छ रेखा हो तो जातक अत्यधिक परिश्रम करने पर भी व्यवसाय मे कम सफलता प्राप्त करता है। वह धर्मानुरागी, निष्कपट तथा मैला-कुचैला रहने वाला भी होता है।

चित्र ६७८—यदि कनिष्ठा उगली के सन्धि पर्वो पर दो-दो रेखाए हो तो जातक शुद्ध स्वभाव का होते हुए भी अपने बन्धु-बान्धवो से विरोध रखता है। वह व्यसनी, सकुचित विचारो का तथा दूसरो के धन का अपव्यय कराने मे कुशल होता है।

चित्र ६७९—यदि कनिष्ठा उगली के सन्धि पर्वो पर तीन-तीन रेखाए हो तो जातक विद्वान्, गुणी, व्यवहार-कुशल, काव्य तथा साहित्य प्रेमी, प्रसन्नचित्त, सत्यवादी, कलाकार का पालन करने वाला तथा यस्शवी होता है।
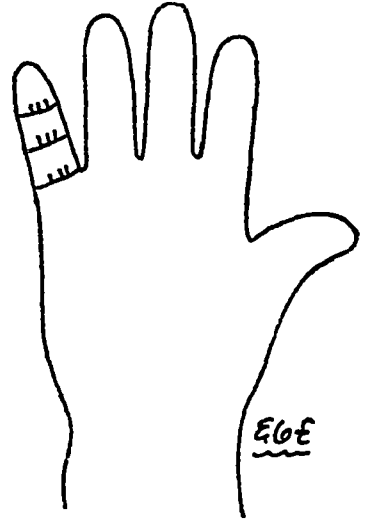
चित्र ६८०—यदि कनिष्ठा उगली के मूल पर्व पर छोटी-छोटी रेखाओ द्वारा यव-चिह्न बने तथा उस यव-चिन्ह के ऊपर-नीचे भी रेखाएं
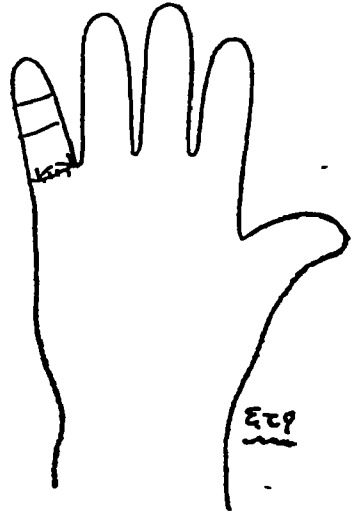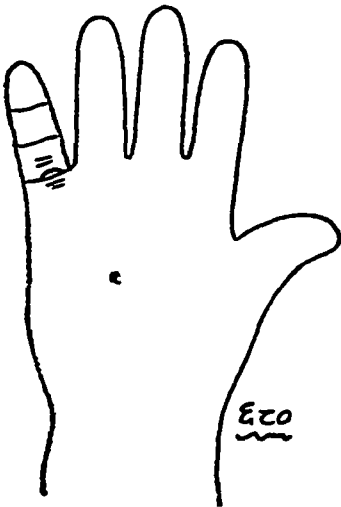
हों तो ऐसे व्यक्ति सहिष्णु, परोपकारी, दानी, धर्मात्मा, धनी तथा कार्यकुशल होते है।

चित्र ६८१—यदि पूर्वोक्त यव-चिन्ह छिन्न-भिन्न हो अथवा मूल-संधि पर अनेक छोटी-छोटी खडित रेखाए हों तो जातक क्रोधी, द्वेषी, मद्यपी तथा कुलाचारहीन होने पर भी परिश्रमी तथा स्वावलम्बी होता है।

अन्य बातें

चित्र ६८२—यदि सभी उंगलियां घनो हों और उनमे तीन-तीन रेखाए हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक धन-जन-हीन होता है।
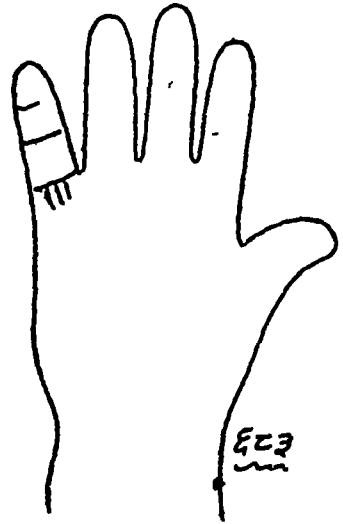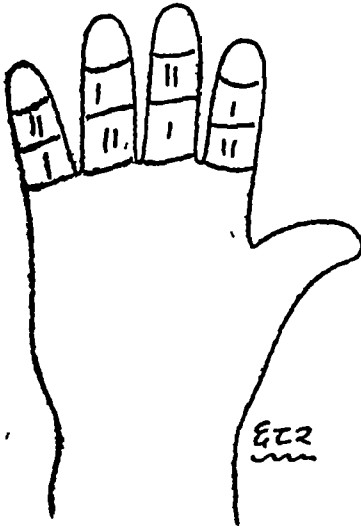
चित्र ६८३—यदि कनिष्ठा उगली के मूल मे तीन खडी रेखाए हो तो जातक सुखी तथा भोगी होता है। यदि मूल स्थान पर मिली-जुली अथवा अलग-अलग दो, तीन, चार अथवा पाच खड़ी रेखाए हों, तो वे जातक को विपुल भोगदायक होती हैं।

चित्र ६८४—यदि चारो उंगलियो के सभी पर्वो पर तीन-तीन खडी रेखाए अलग-अलग हो तो एसी रेखाओ वाला जातक धन-धान्य पूर्ण, सुखी तथा सद्गुणी होता है ।
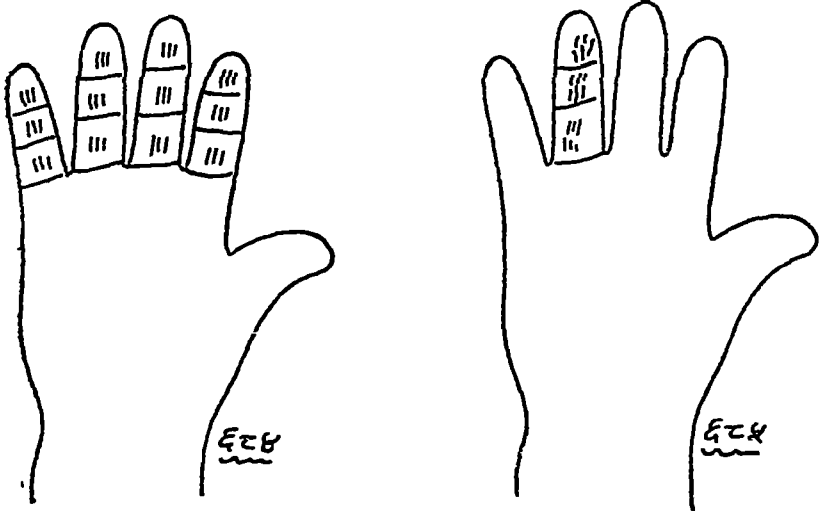
चित्र ६८५ —यदि किसी स्त्री के हाथ मे अनामिका उगली की सभी रेखाए छिन्न-भिन्न हो तो वह कलह-कारिणी तथा दुष्ट स्वभाव की होती है ।

चित्र ६८६—यदि किसी स्त्री के हाथ मे मध्यमा उंगली की सभी रेखाए छिन्न-भिन्न हो तो वह विधवा होतो है ।

चित्र ६८७—यदि किसी स्त्री के हाथ मे कनिष्ठा उगली की सभी रेखाए छिन्न-भिन्न हो तो वह जीवन भर दु खी बनी रहती है ।

चित्र ६८८—यदि मध्यमा उगली के द्वितीय पर्व पर पर्व-ग्र थि रेखा के ऊपर छोटी-छोटी आड़ी रेखाए हो तो जातक की लज्जाजनक परिस्थितियो में मृत्यु होती है ।
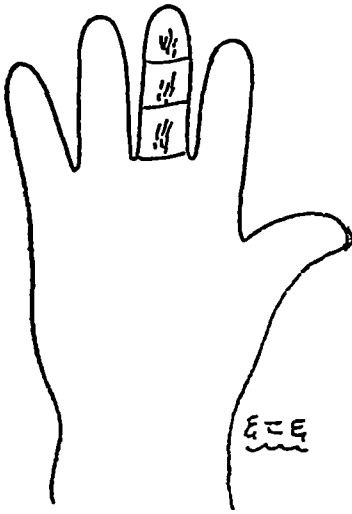
चित्र ६८६—यदि मध्यमा उगली के द्वितीय पर्व पर चित्रानुसार रेखाए हो तो जातक की मृत्यु भीषण परिस्थितियो मे होती है।
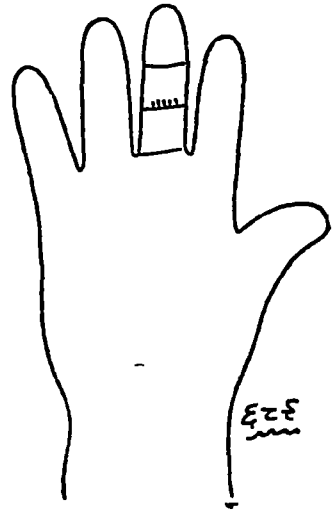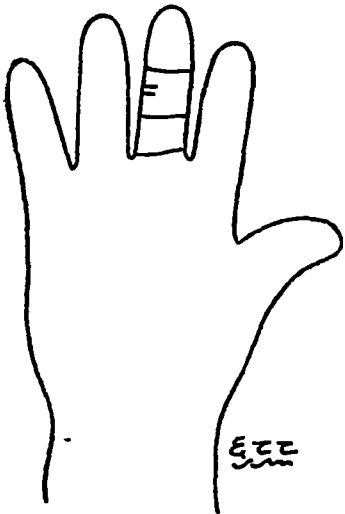
चित्र ६९०—यदि मध्यमा उंगली के तीसरे पर्व पर चित्रानुसार रेखा हो तो जातक की मृत्यु कारागार (जेल) मे होती है।

चित्र ६९१—यदि अनामिका उगली के तृतीय पर्व पर चित्र के अनुरूप रेखा हो, तो जातक को ऐश्वय का लाभ होता है।
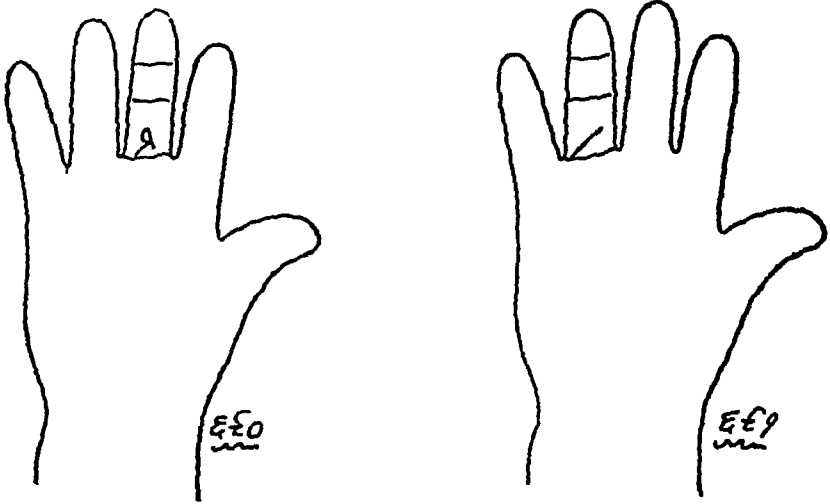
चित्र ६९२—यदि शुक्र-क्षेत्र पर चित्र के अनुरूप अंगूठे की ओर एक अर्द्धवृत्ताकार रेखा बढी हुई हो, तो जातक की दोनों आखो मे लोहे से चोट पहुंचती है अथवा उसे अग्नि मे जलना पड़ता है।

चित्र ६९३—यदि अनामिका के तृतीय-पर्व से आरम्भ होकर दो रेखाए वृहद् चतुष्कोण अथवा वृहद त्रिकोण मे जाकर समाप्त होती हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक अत्यन्त सौभाग्यशाली, सच्चरित्र, सुखी तथा गुणवान् होता है।

विशेष टिप्पणी (१)—यदि चारो उगलियो के सभी पर्वो पर खड़ी रेखाओ की कुल सख्या १३ हो तो जातक को अत्यन्त दु.ख तथा क्लेश
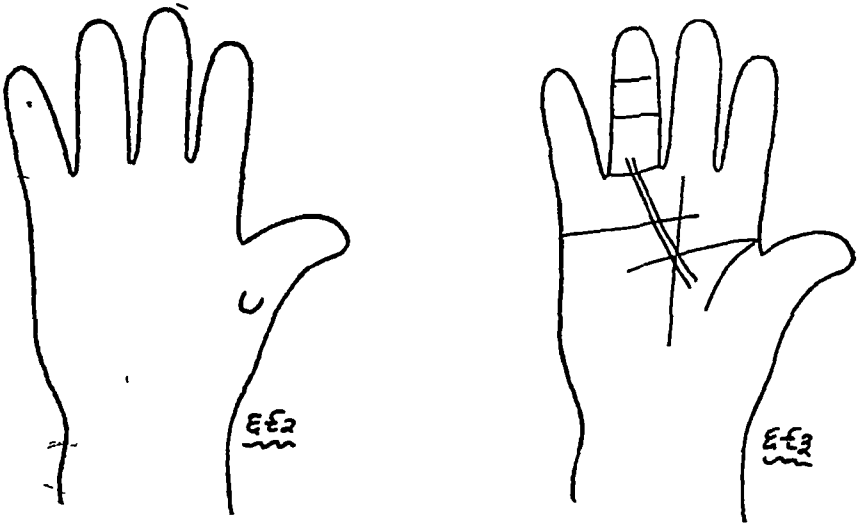
प्राप्त होता है। यदि चारो उगलियो के सभी पर्वो पर स्थित खडी रेखाओ की सख्या १५ हो तो जातक चोर होता है, १६ हो तो जुआरी, १७ हो तो पापी, १८ हो तो धर्मात्मा, १९ हो तो यस्शवी, २० हो तो तपस्वी और २१ हो तो महात्मा होता है। इससे अधिक सख्याओ का होना निष्फल हो 'जाता है अर्थात् अच्छा-बुरा कोई भी फल सख्या-नुसार प्राप्त नही होता।

(२) उगलियो की रेखाओ का फलादेश करते समय हस्त-परीक्षक को उगलियो की बनावट, हाथ की आकृति एव अन्य रेखाओ तथा लक्षणो पर विचार कर लेना भी आवश्यक है।

वृहद् चतुष्कोण स्थित रेखाएं

मस्तक-रेखा तथा हृदय-रेखा के बीच वाले भाग को 'वृहद् चतुष्कोण' के नाम से सम्बोधित किया जाता है। उक्त दोनो रेखाओं की दूरी तथा समीपता के अनुरूप इस चतुष्कोण का आकार अधिक चौडा अथवा कम चौडा होता है। इस सम्बन्ध मे विस्तृत वर्णन 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के 'आपका हाथ' शीर्षक प्रथम खण्ड मे किया जा चुका है।

चित्र ६९४—मे हथेली पर वृहद् चतुष्कोण की विभिन्न आकृत्तियो को काले रग से प्रदर्शित किया गया है।

वृहद् चतुष्कोण से आरम्भ होने वाली अथवा इस पर समाप्त होने वाली विभिन्न रेखाओ का वर्णन 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' में यथास्थान किया जा चुका है।

वृहद् चतुष्कोण की सीमा मे पाये जाने वाले द्वीप, नक्षत्र, क्रास, जाल आदि चिन्हो के प्रभाव का वर्णन 'हस्त-चिन्ह-विचार' शीर्षक अगले खड मे किया जायगा।

प्रस्तुत प्रकरण मे वृहद् चतुष्कोण के भीतर पाई जाने वाली छोटी-छोटी प्रभाव-रेखाओ की स्थिति एव उनके फलाफल का प्राच्य तथा पाश्चात्य मतानुसार सचित्र विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

चित्र ६९५—यदि वृहद् चतुष्कोण से निकलकर कोई रेखा सूर्य-क्षेत्र पर पहुचे तो जातक किसी बडे आदमी की सहायता द्वारा अपने काम मे सफलता प्राप्त करता है।

३२०

६६४

[वृहद् चतुष्कोण मे प्रभाव-रेखाओं की विभिन्न स्थितिया]
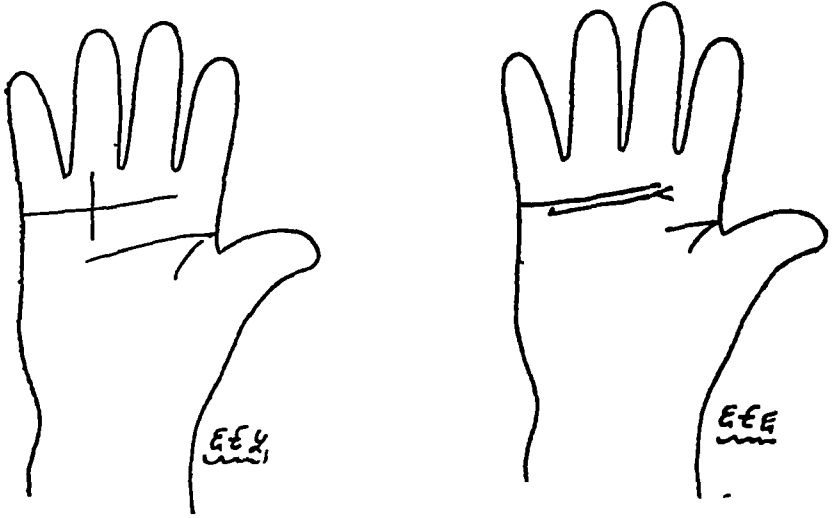
चित्र ९९६—वृहद् चतुष्कोण में हृदय-रेखा अथवा मस्तक-रेखा के समानान्तर कोई द्विशाखा युक्त रेखा हो तो जातक अवसर के अनुकूल कार्य न करके, अपनी नासमझी के कारण हानि उठाता है।

चित्र ९९७—यदि हाथ का आकार वड़ा हो, हथेली लम्बी तथा उंगलियां

छोटी हो और उगलियों मे गांठे निकली हुई न हो तथा वृहद् चतुष्कोण में अनेक छोटी-छोटी वहुत महीन रेखाए हो तो जातक चिड़चिडे स्व-भाव का, अल्पज्ञ, मन्द बुद्धि तथा मानसिक चिन्ताओ एवं उद्वेगो से ग्रस्त रहने वाला होता है।

वृहद् चतुष्कोण स्थित नक्षत्र, द्वीप, जाल, त्रिकोण, बिन्दु आदि चिन्हो के प्रभाव का विस्तृत वर्णन 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के 'हस्त-चिन्ह-विचार' नामक अगले खण्ड में किया गया है।

वृहद् त्रिकोण स्थित रेखाएं

मस्तक-रेखा, जीवन-रेखा तथा भाग्य-रेखा के योग से हथेली के मध्य भाग में वृहद् त्रिकोण का निर्माण होता है। यदि भाग्य-रेखा विल्कुल ही न हो अथवा चन्द्र-पर्वत से आरम्भ हुई हो तो जीवन-रेखा मस्तक-रेखा तथा स्वास्थ्य-रेखा के योग से वृहद् त्रिकोण का निर्माण माना जाता है। यदि हाथ मे भाग्य-रेखा और स्वास्थ्य-रेखा दोनो ही न हो तो स्पष्ट जीवन-रेखा और मस्तक-रेखा तथा कल्पित स्वास्थ्य-रेखा के आधार पर हथेली मे वृहद् त्रिकोण की स्थिति स्वीकार की जाती है। चित्र ६९८ मे वृहद् त्रिकोण की विभिन्न स्थितियो को काले रग से प्रदर्शित किया गया है।

वृहद् त्रिकोण के निर्माण, स्थिति और प्रभाव के सम्बन्ध मे 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के 'आपका हाथ' शीर्षक प्रथम खण्ड मे विस्तृत वर्णन किया जा चुका है।

वृहद् त्रिकोण से आरम्भ होने वाली अथवा इस पर समाप्त होने वाली विभिन्न रेखाओ का वर्णन भी 'वृहद्-सामुद्रिक-विज्ञान' के विभिन्न खण्डो मे यथास्थान किया जा चुका है।

वृहद् त्रिकोण की सीमा मे पाये जाने वाले द्वीप, नक्षत्र, क्रास, जाल आदि चिन्हो के प्रभाव का वर्णन 'हस्त-चिन्ह-विचार' शीर्षक अगले खंड मे किया जाएगा।

प्रस्तुत प्रकरण मे 'वृहद् त्रिकोण' के भीतर पाई जाने वाली छोटी-छोटी प्रभाव रेखाओ की स्थिति एव उनके फलाफल का प्राच्य तथा पाश्चात्य मतानुसार सचित्र विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।
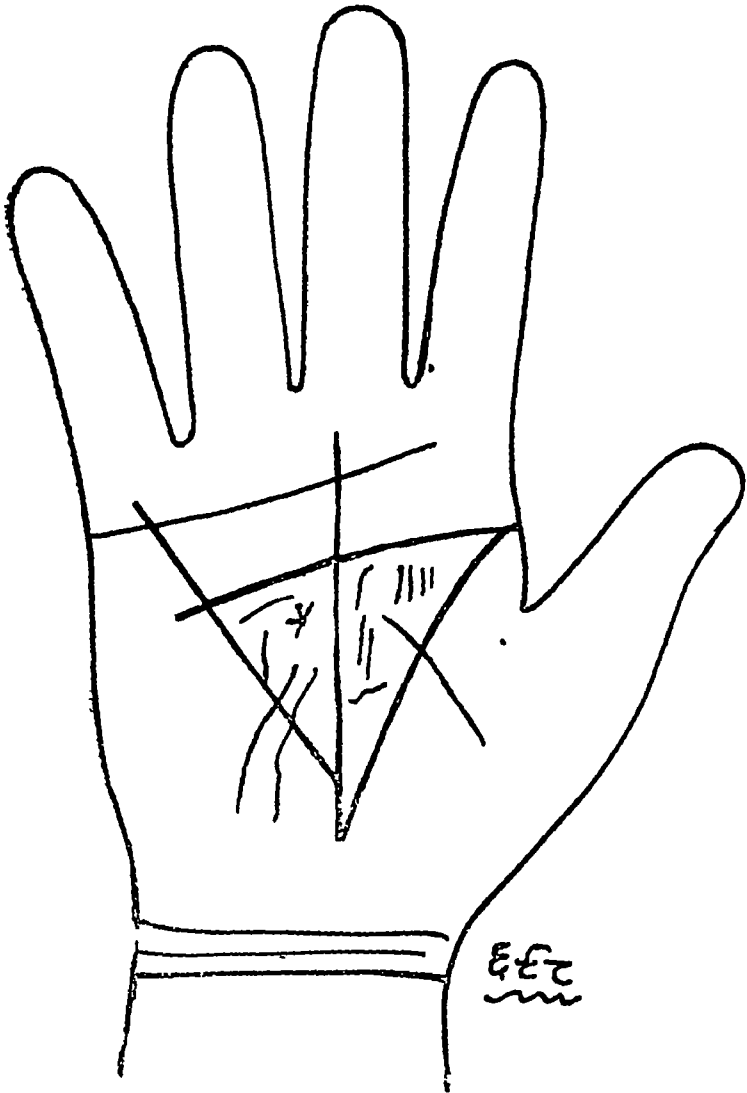
[वृहद् त्रिकोण मे प्रभाव-रेखाओ की विभिन्न स्थितिया]

चित्र ६९९—जिस स्थान पर जीवन-रेखा तथा मस्तक-रेखा मिलती है, वहा पर वृहद् त्रिकोण के भीतर यदि क्रास-चिन्ह सा हो और वह किसी रेखा को स्पर्श न करता हो तो जातक मुकद्दमे मे विजयी होता है, परन्तु यदि वह क्रास किसी मुख्य रेखा को स्पर्श कर रहा हो तो जातक की मुकद्दमे मे हार होती है।
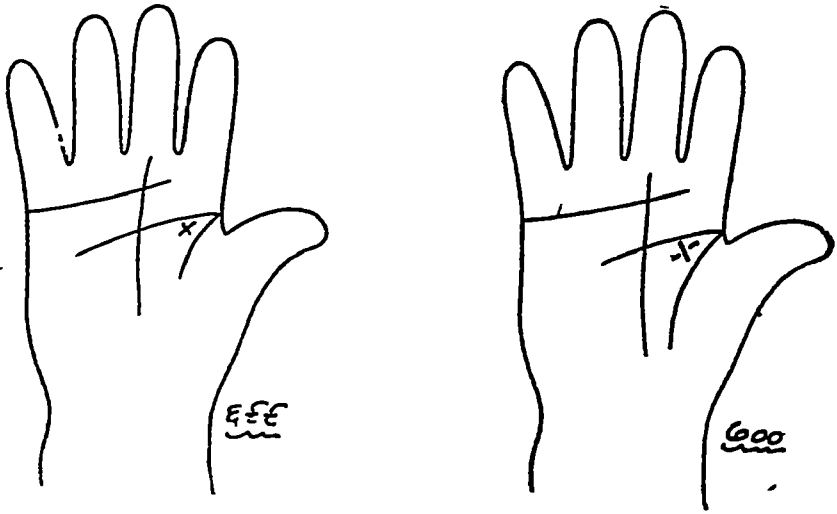
चित्र ७००—यदि शनि-क्षेत्र पर आडी रेखाए हो और वृहद् त्रिकोण के भीतर पूर्वोक्त क्रास जैसा चिह्न हो, परन्तु वे क्रास की दोनो रेखाए एक दूसरे को न काटती हो तो जातक जीवन भर दुर्भाग्य-शाली बना रहता है।

चित्र ७०१—यदि वृहद् त्रिकोण के भीतर स्वास्थ्य-रेखा के समीप नक्षत्र-चिन्ह हो तो ऐसे रेखा चिन्ह वाला व्यक्ति अन्धा हो जाता है।

चित्र ७०२—यदि पूर्वोक्त नक्षत्र-चिह्न स्पष्ट न हो और उसे बनाने वाली रेखाए एक-दूसरी से खिच पिच रूप मे मिल रही हो तो
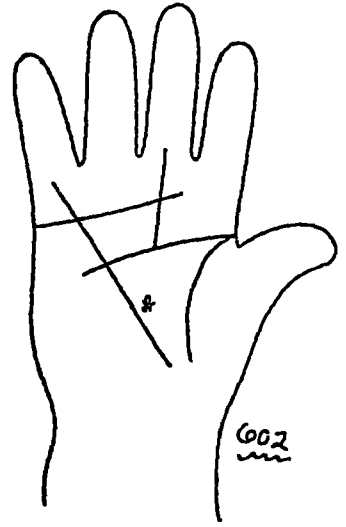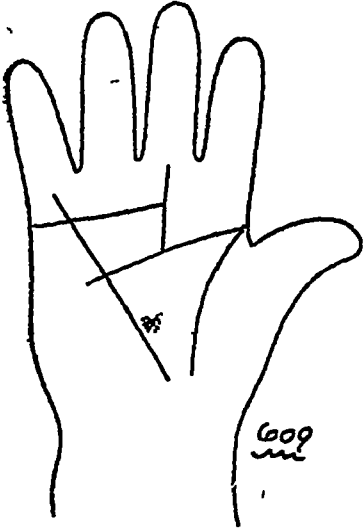
जातक को किसी प्रेम सम्बन्ध के कारण कठिनाइयों का शिकार होना पड़ता है ।

चित्र ७०३—यदि शुक्र-क्षेत्रीय कोई प्रभाव-रेखा जीवन-रेखा को
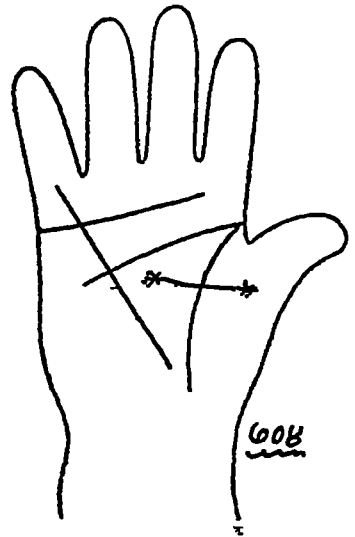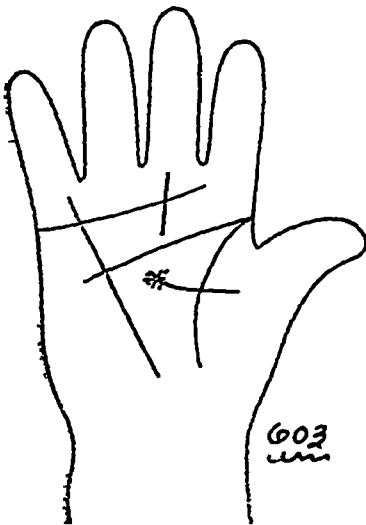
काटती हुई वृहद् त्रिकोण के बीच मे आकर समाप्त हो जाए तथा उस रेखा के अन्त पर नक्षत्र-चिन्ह हो तो जातक को कोई बडा मानसिक आघात लगता है।

चित्र ७०४—यदि पूर्वोक्त शुक्र-क्षेत्रीय प्रभाव-रेखा के उद्गम तथा समाप्ति—दोनो स्थलो पर नक्षत्र-चिन्ह हो तो जातक को अपने किसी अनन्य मित्र अथवा सम्बन्धी की मृत्यु का गहरा मानसिक आघात लगता है।

चित्र ७०५—यदि वृहद्-त्रिकोण के भीतर जीवन-रेखा अथवा भाग्य-रेखा से असपृक्त कोई द्विजिह्व छोटी-सी रेखा हो तो वह जातक के स्वास्थ्य मे कमी की सूचक होती है।
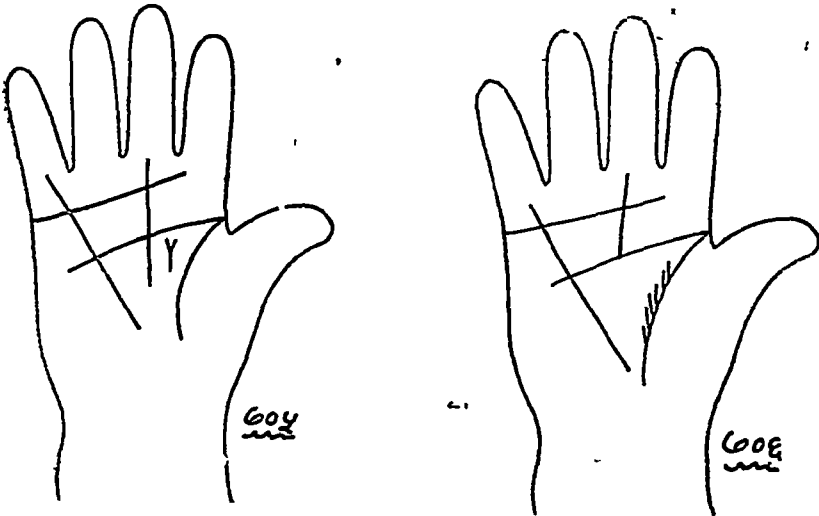
चित्र ७०६—यदि वृहद्-त्रिकोण के भीतर जीवन-रेखा से निकलकर कुछ छोटी-छोटी रेखाए ऊपर (उगलियो की ओर) जाए तो वे जातक के यश, प्रतिष्ठा, धनागम एव भाग्योदय मे वृद्धि करने वाली

होती है। जिन वयोमान मे ये रेखाए निकली हो, वे आयु-वर्ष जातक के लिए अत्यधिक सौभाग्यजनक सिद्ध होते हैं।

चित्र ७०७—स्वास्थ्य-रेखा तथा जीवन-रेखा के मिलन-स्थल पर वृहद्-त्रिकोण के वीच मे दो आडी-तिरछी रेखाओ द्वारा वना हुआ क्रास-चिन्ह सा हो तो जातक पर कोई मुकद्दमा चलता है, जिसके कारण उसकी प्रतिष्ठा को हानि पहुंचती है तथा भाग्योन्नति भी रुक जाती है।
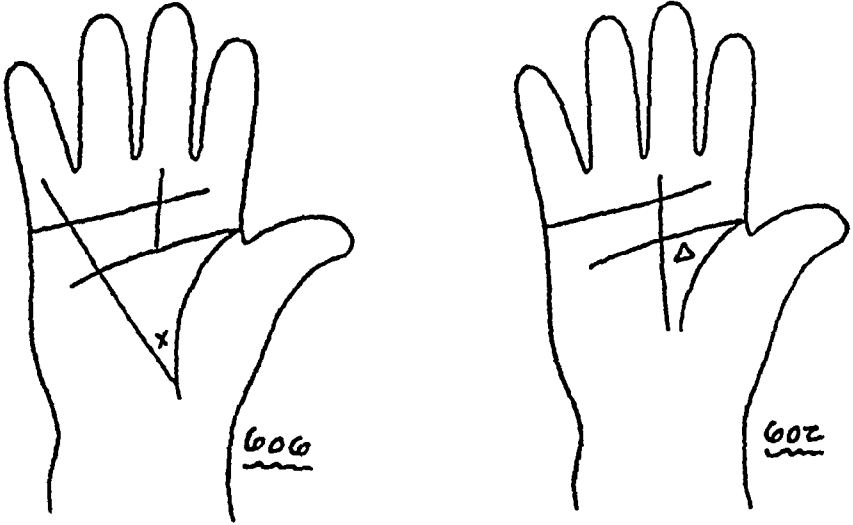
चित्र ७०८—यदि जोवन-रेखा और भाग्य-रेखा के वीच वृहद् त्रिकोण-चिन्ह हो तो जातक को सैनिक-जीवन मे विशेष यश तथा प्रतिष्ठा को प्राप्ति होती है।

अन्य विशिष्ट रेखाएं

वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के प्रस्तुत तथा पिछले खण्डो में हाथ पर पाई जाने वाली प्राय. सभी छोटी-बड़ी, मुख्य तथा प्राभाविक रेखाओ का वर्णन किया जा चुका है। इस प्रकरण मे उन विशिष्ट रेखाओ का वर्णन किया जा रहा है, जो किसी-किसी मनुष्य के हाथ पर ही दृष्टि-गोचर होती हैं।

प्राच्य तथा पाश्चात्य—दोनो ही मतो मे इस प्रकार की विशिष्ट-रेखाओ का उल्लेख मिलता है। ये रेखाए जिस जातक के हाथ मे होती है, उसके जीवन को विशेप रूप से प्रभावित करती है—इसमे सदेह नही है।

यद्यपि प्रसगानुसार इसमे से अधिकाश रेखाओ का वर्णन विभिन्न खण्डो में हो चुका है, परन्तु हस्त-परीक्षक को इन विशिष्ट रेखाओ की जानकारो आसानो से हो सके, अत इस प्रकरण मे उनका सचित्र विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। इसमे प्राच्य तथा पाश्चात्य दोनो ही मतो को एकत्र कर दिया गया है और जहां कही दोनो मतो में भिन्नता पाई जाती है, उसका यथास्थान उल्लेख कर दिया गया है।

चित्र संख्या ७०८ में ऐसी विभिन्न रेखाओ को करतल मे स्थिति को प्रदर्शित किया गया है।

हस्त-परोक्षक को चाहिए कि वह इन रेखाओ का निरीक्षण करते समय विशेष सावधानी से काम ले, ताकि किसी अन्य रेखा के भ्रम से फलादेश मे अन्तर न पडे।
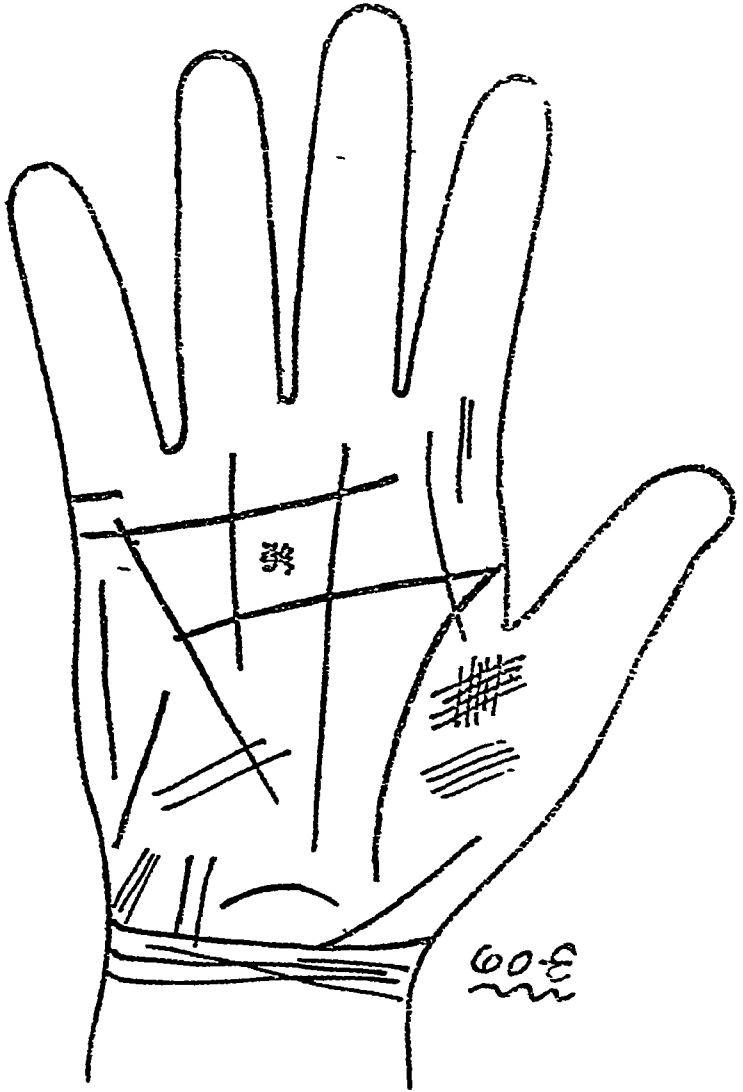
[करतल स्थित विभिन्न प्रभाव-रेखाओ की स्थितिया]

विद्या-रेखा

चित्र ७१०—प्राच्य मतानुसार मणिवन्ध से जीवन-रेखा तक के स्थान को 'करभ' कहा जाता है। इस करभ मे से यदि एक रेखा निकलकर चन्द्र पर्वत पर होती हुई भाग्य-रेखा मे जा मिले तो उसे 'विद्या-रेखा' कहा जाता है। जिस जातक के हाथ मे यह रेखा निर्दोष गहरी तथा स्पष्ट हो, वह अच्छा विद्वान् होता है। यदि यह रेखा वीच मे कही टूटी-फूटी अथवा अन्य प्रकार के दोषो से युक्त हो तो जातक को विद्या-प्राप्ति मे उतनी कठिनाइया आती हैं अथवा जातक उतनी ही कम विद्या प्राप्त कर सकता है।
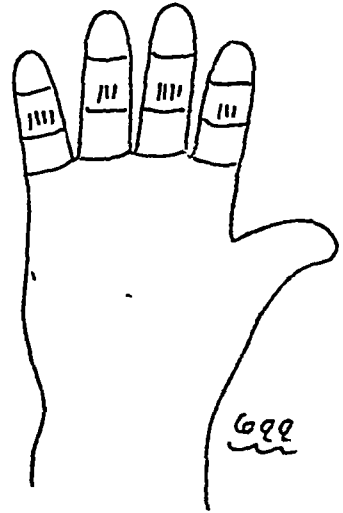
शत्रु-रेखा

चित्र ७११–प्राच्य मतानुसार दाए हाथ की उगलियो के दूसरे पर्व के मध्य भाग में जितनी खडी रेखाए हो उन्हें शत्रु-रेखा समझना चाहिए।

ऐसी रेखाए संख्या मे जितनी अधिक होगी जातक को उतने ही अधिक शत्रुओ का भय प्राप्त होगा। परन्तु बाए हाथ की उगलियो के दूसरे पर्व के मध्य भाग में जितनी खड़ी रेखाए हो, उन्हे शत्रु के द्वारा सुख देने वाली रेखाए समझना चाहिए।

चित्र ७१२—पाश्चात्य मतानुसार बुध-क्षेत्र के नीचे मगल के प्रथम पर जितनी आडी रेखाए हो उन्हे शत्रुता की रेखा समझना चाहिए।

यदि ये शत्रुता की रेखाए या रेखा भाग्य-रेखा का स्पर्श करें अथवा उसे काटे तो शत्रु जातक को हानि पहुंचाता है, परन्तु भाग्य-रेखा से स्पर्श न करे तो शत्रु जातक को विशेष हानि नही पहुचा पाता। यदि हाथ के अन्य लक्षण शुभ हो तो जातक स्वय ही शत्रुओ को हानि पहुचाता अथवा उन्हे नष्ट कर देता है। यदि इन रेखाओ पर द्वीप
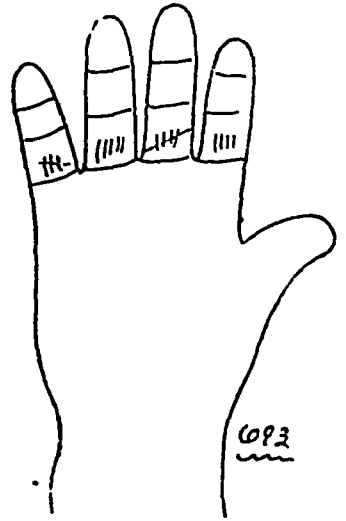
चिन्ह भी दिखाई दे तो यह समझना चाहिए कि जातक स्वय भी बदमाश तथा मिथ्यावादी है।

मित्र-रेखा

चित्र ७१३—प्राच्य मतानुसार दाए हाथ की उगलियो के तीसरे पर्व मे जो खडी रेखाए होती हैं, उन्हें मित्रता की रेखा समझनी चाहिए। यदि ये रेखाए स्पष्ट तथा निर्दोष हो तो मित्रो का सुख अच्छा मिलता है। परन्तु यदि ये रेखाए अन्य आड़ी रेखाओं से कटी हुई हो तो मित्र-सुख नही होता।

महत्वाकांक्षा की रेखाए

चित्र ७१४—पाश्चात्य मतानुसार जीवन-रेखा मे से निकलकर तर्जनी उगली की ओर जो रेखा जाती है, वह महत्वाकांक्षा को रेखा
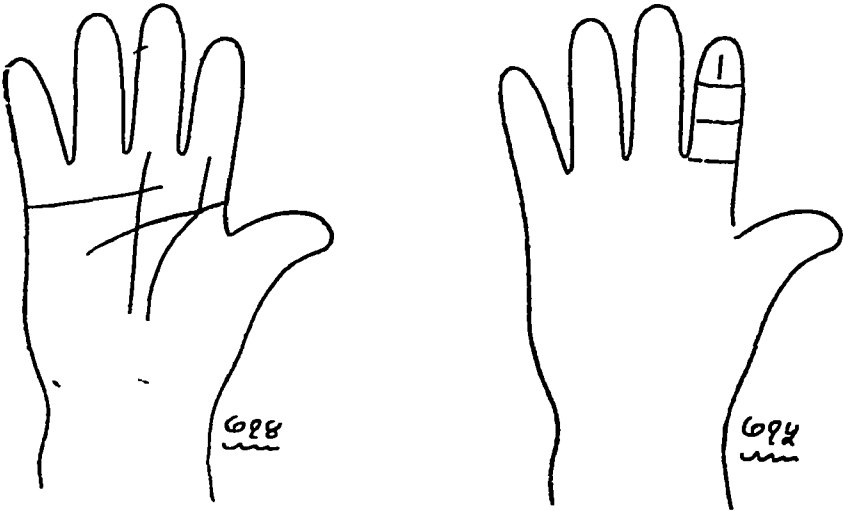
होती है। यदि यह रेखा स्पष्ट और निर्दोष हो तो जातक की महत्वा-कांक्षा पूर्ण होती है। यदि यह रेखा खण्डित हो तो महत्वाकांक्षा की पूर्ति मे असफलता की द्योतक होती है।

चित्र ७१५—यदि तर्जनी उगली के प्रथम पर्व पर एक गहरी स्पष्ट तथा निर्दोष खड़ी रेखा हो तो जातक के हृदय मे अपनी किसी सन्तान के प्रति अत्याधिक प्रीति एवं महत्वाकाक्षा होती है, यदि रेखा निर्दोष तथा गहरी हो तो जातक की महत्वाकांक्षा सफल होती है, परन्तु यदि रेखा देशयुक्त हो तो उस महत्वाकाक्षा के सफल होने मे विघ्न उपस्थित होता है ।

अधर्म-रेखा

चित्र ७१६—प्राच्य मतानुसार मध्यमा उगली के मूल मे यदि कोई खड़ी रेखा हो तो उसे 'अधर्म-रेखा' समझना चाहिए । ऐसी रेखा यदि गहरी और स्पष्ट हो तो जातक अधर्मी होता है । परन्तु यदि यह रेखा सदोप, खडित अथवा अन्य किसी रेखा द्वारा कटी हुई हो तो जातक अधार्मिक होते हुए भी पापपूर्ण कार्यो मे विशेष लिप्त नही होता ।
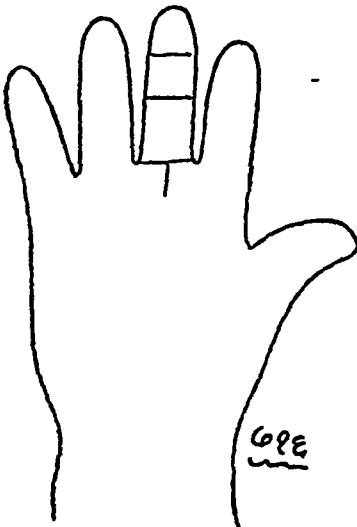
व्यवसाय-रेखा

चित्र- ७१७—पाश्चात्य मतानुसार सूर्य-क्षेत्र के मध्य भाग से आरम्भ होकर बुध-क्षेत्र के मध्य भाग पर पहुचने वाली रेखा व्यवसाय रेखा होती है। यदि यह रेखा स्पष्ट तथा निर्दोष हो तो और बुध-क्षेत्र उन्नत हो तो जातक सफल व्यवसायी होता है, परन्तु यदि बुध-क्षेत्र मे मनुभव हो और यह रेखा भी पूर्ण हो तो जातक को व्यवसाय मे अधिक सफलता नही मिलती।

विरोधी-रेखा

चित्र ७१८—पाश्चात्य मतानुसार ये छोटी-छोटी रेखाए मंगल के दोनो क्षेत्रो पर पाई जाती हैं यदि द्वितीय मंगल-क्षेत्र पर ऐसी रेखाए जीवन-रेखा को काटे तो जातक को अपने घर वालों अथवा सम्बन्धियों के विरोध का सामना करना पडता है। यदि ये रेखाए प्रथम मगल-

७१८

७१९
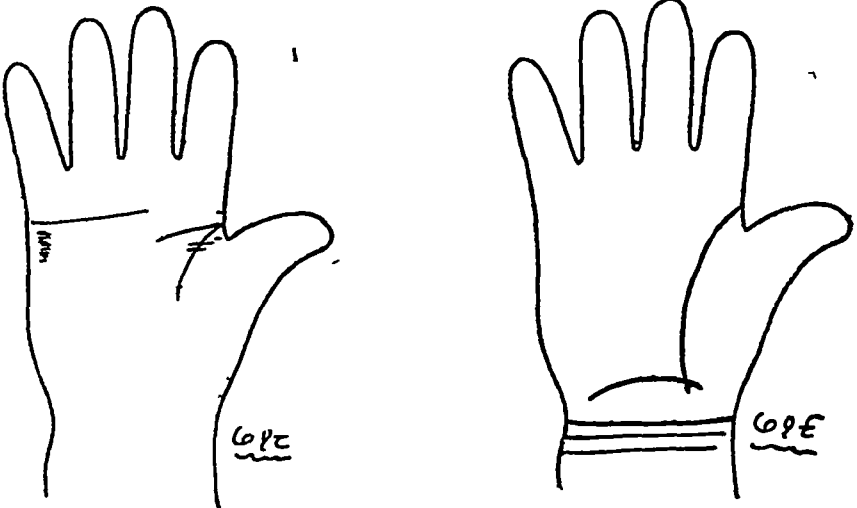
क्षेत्र पर हों तो जातक को बाहरी लोगों के विरोध का सामना करना पड़ता है।

धनु-रेखा

चित्र ७१९—किसी-किसी व्यक्ति के हाथ मे धनु-क्षेत्र पर यह धनुषाकार रेखा देखने को मिलती है। यदि इस रेखा के सिरे हथेली के भीतर की ओर हों और उसका एक सिरा आगे बढकर जीवन-रेखा को काट जाए तो ऐसी रेखा वाला व्यक्ति मदिरा-पान करने वाला लम्पट तथा धूर्त होता है। ऐसे लोगों की मृत्यु भी प्रायः अत्याधिक मदिरा-पान करने के कारण होती है। यह पाश्चात्य विद्वानों का मत है।

चित्र ७२०—यदि पूर्वोक्त 'धनु-रेखा' के दोनों सिरे बाहर की ओर हो तो ऐसी रेखा वाला परमयोगी होता है और उसे योग-साधन मे पूर्ण सफलता प्राप्त होती है।

निर्धन-रेखा

पाश्चात्य मतानुसार चन्द्र-क्षेत्र से शुक्र-क्षेत्र के ऊपर अर्द्ध चन्द्राकार रूप मे, कलाई के काफी ऊपर होकर जाने वाली रेखा को 'निर्धन-रेखा' कहते हैं। यह रेखा जिस व्यक्ति के हाथ में होती है, वह व्यक्ति निर्धन होता है।

चित्र ७२१—यदि यह रेखा जीवन-रेखा को काट दे तो जिस वयोमान मे जीवन-रेखा कट रही होगी, उसी वर्ष में जातक की मृत्यु हो जाएगी। परन्तु यदि यह रेखा जीवन-रेखा को न काटे तो जातक निर्धन होता है।

चित्र ७२२—ऐसी रेखा वाला व्यक्ति दीन, दुःखी, दरिद्र, दुर्बल, मद्यपी तथा चरित्र-हीन होता है। यदि इस रेखा के साथ ही मस्तक-रेखा भी सदोष, पतली अथवा द्वीप-चिन्ह युक्त हो तो जातक का दुर्भाग्य और भी अधिक बढ जाता है।
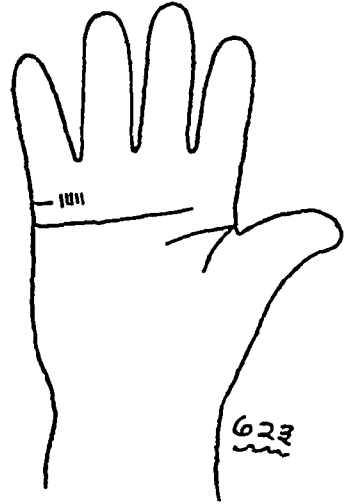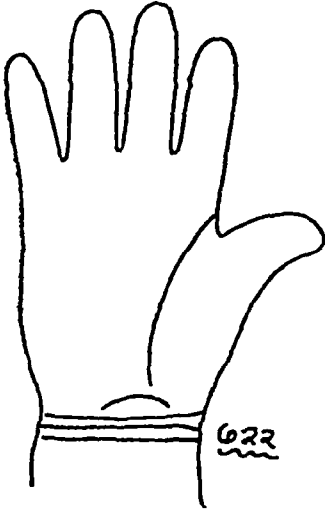
ऐसी रेखा वाले जातक का हाथ यदि गुदगुदा (भरा हुआ) और मुलायम हो तो वह कम मात्रा मे मद्य का सेवन करता है, परन्तु यदि हथेली कठोर हो तो अत्यधिक मात्रा मे मद्य-सेवन करता है, जिसके कारण उसकी अधिक दुर्दशा होती है।

इस रेखा का हाथ मे होना बहुत ही अशुभ सूचक कहा गया है। यद्यपि यह रेखा बहुत कम हाथो मे ही पाई जाती है।

ज्ञान-विज्ञान रेखाएं

चित्र ७२३—पाश्चात्य मतानुसार बुध-क्षेत्र पर अनामिका उगली के नीचे, विवाह-रेखा से हटकर एक से पाच तक की सख्या मे खडी हुई छोटी-छोटी रेखाए 'ज्ञान-विज्ञान रेखाए' कही जाती है।

ये रेखाए जितनी अधिक सख्या मे निर्दोष, स्पष्ट तथा गहरी होती है, जातक ज्ञान अथवा विज्ञान के क्षेत्र मे उतनी ही अधिक उन्नति करता है।

यदि किसी वैज्ञानिक के हाथ मे ऐसी रेखाएं हो तो उसके द्वारा किये गए आविष्कार अत्यधिक महत्वपूर्ण तथा जनोपयोगी होते हैं। यदि किसी साहित्य के हाथ मे ऐसी रेखाए हो, तो उसके द्वारा लिखी गई पुस्तकें मनुष्यमात्र के लिए शिक्षाप्रद तथा लाभदायक होती है।

ये रेखाएं यदि कटी-छटी अथवा अन्य प्रकार से दूषित हो अथवा इन पर द्वीप आदि के चिन्ह हो, तो उस स्थिति मे वैज्ञानिक का आविष्कार तथा लेखक की कृतिया निष्फल हो जाती हैं। यदि ये रेखाएं मिल गई हो और इनका अग्रभाग तीर जैसा हो गया हो तो जातक किसी भी तत्व अथवा हानि की गहराई में जा पहुंचता है। यदि उक्त प्रकार की रेखाए बढ़कर सूर्य रेखाए मिल जाय तो जातक को विशेष

यश प्राप्त होता है। यदि हृदय-रेखा से मिल जायं अथवा मस्तक-रेखा स्पर्श करे तो जातक श्रेष्ठ साहित्य का निर्माण करता है और उसे प्रौढावस्था मे धन तथा यश की प्राप्ति होती है। यदि भाग्य-रेखा से मिल जाय तो जातक धनी होता है और यदि ये उक्त मुख्य रेखाओ को काट दे तो सफलता मे कमी आ जाती है।

विचारहीनता की रेखा

पाश्चात्य मतानुसार जातक की विचारहीनता (मद्य-सेवन, अभक्ष्य वस्तुओं का भोजन आदि) को सूचित करने वाली रेखा निम्न-लिखित होती है—

चित्र ७२४—यदि चन्द्र-क्षेत्र से निकलकर कोई रेखा शुक्र-पर्वत पर चली जाए और वह दोनो ओर से हथेली के आर-पार दिखाई देती हो तो जातक खान-पान के सम्वन्ध से अविचारी तथा मद्यपी होता है। यदि यह रेखा दोनो हाथो मे गहरी हो तो जातक बडा नशेबाज होता है।
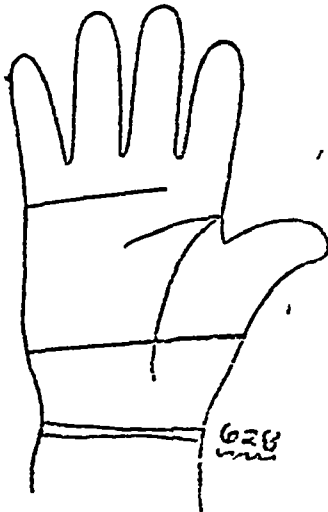
चित्र ७२५—यदि इस रेखा पर कही द्वीप-चिन्ह दिखाई दे तो जातक की मद्यपान आदि के द्वारा मृत्यु हो जाने की सम्भावना भी रहती है।

यदि उक्त-रेखा केवल बाए हाथ मे हो तो पैतृक खान-पान मे अविचार होगा—ऐसा समझना चाहिए।

अन्य रेखा योग

चित्र ७२६—पाश्चात्य मतानुसार रेखाओ के विशेष योग निम्नानुसार होते है—

अनामिका उगली के पहले पर्व पर खडी रेखा प्रभुत्व प्राप्ति की सूचक होती है—ऐसा प्राच्य सामुद्रिकशास्त्रियो का मत है।
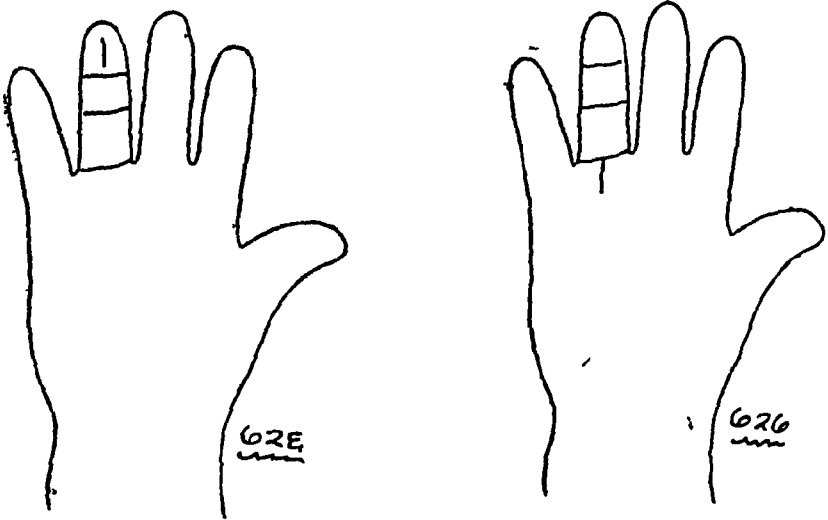
चित्र ७२७—अनामिका उगली के मूल मे नीचे खडी हुई रेखा को प्राच्य मतानुसार 'धर्म-रेखा' कहा जाता है। यह रेखा जातक की प्रवृत्तियो को धर्म की ओर लगाए रखती है।

चित्र ७२८—अनामिका उगली के दूसरे पर्व से आरम्भ होकर उसके मूलपर्यन्त दो खडी रेखाए हो तथा वृहद चतुष्कोण और वृहद त्रिकोण अच्छी स्थिति मे हो ता ऐसो रेखा-चिन्ह वाला जातक ईमानदार तथा सत्यवादी होता है। यह प्राच्य मत है।
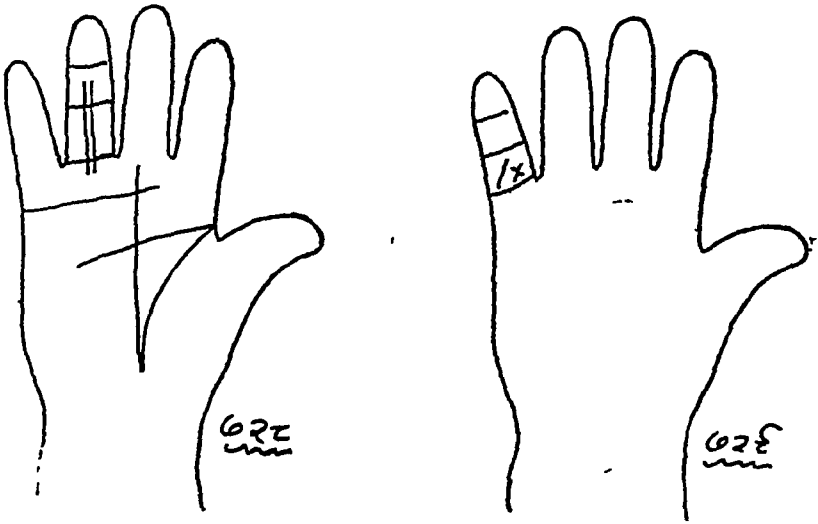
चित्र ७२९—कनिष्ठा उगली के तीसरे पर्व पर टेढो रेखा तथा क्रास का चिन्ह हो तो प्राच्य मतानुसार ऐसा व्यक्ति चोर होता है।

चित्र ७३०—यदि तर्जनो उगली के मूल से एक रेखा निकलकर अगूठे के प्रथम पर्व से जा मिले तो ऐसी रेखा वाला व्यक्ति न्यायलय द्वारा मृत्यु-दण्ड प्राप्त करता है।

चित्र ७३१—मस्तक-रेखा तथा स्वास्थ्य-रेखा परस्पर मिली हुई हो जीवन-रेखा अनेक छोटी-छोटी रेखाओ से कट रही हो तथा शनि का पर्वत उठा हुआ हो तो ऐसी रेखाओ वाला व्यक्ति आत्महत्या करता है।
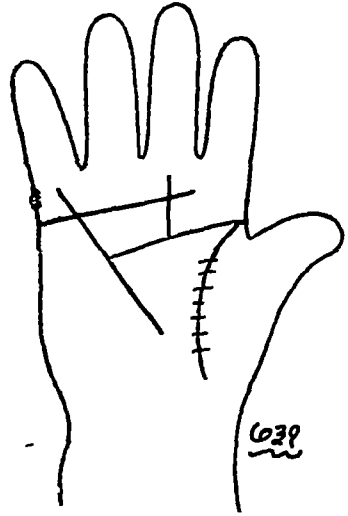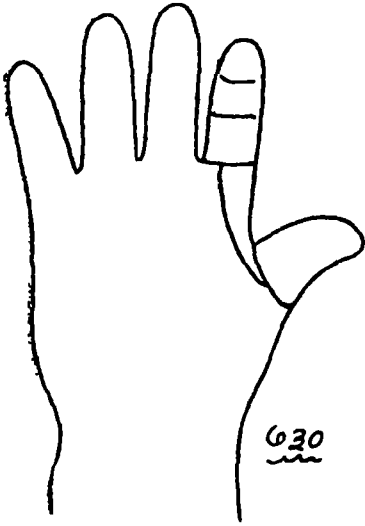
चित्र ७३२—भाग्य-रेखा मणिबध से निकलकर मध्यमा उगली के तासरे पर्व तक चली गई हो तो ऐसी रेखा वाला जातक निर्धन
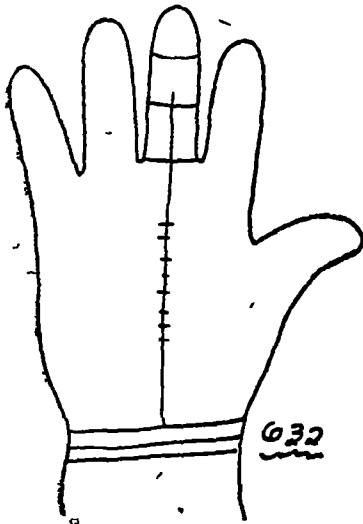
(दरिद्र) होता है। यदि भाग्य-रेखा छोटी-छोटी रेखाओ द्वारा कटी हुई हो तो वह घोर दरिद्रता की सूचक होती है।

चित्र ७३३—यदि भाग्य-रेखा शृ खलाकार हो और उसे तथा जीवन-रेखा को छोटी-छोटी रेखाए स्थान-स्थान पर काट रही हो तो ऐसी रेखा वाला व्यक्ति भी दरिद्र होता है।

चित्र ७३४—यदि भाग्य-रेखा स्थान-स्थान पर टूटी हुई हो और हृदय-रेखा तथा भाग्य-रेखा से छोटी-छोटी रेखाए स्थान-स्थान पर काट रही हो तो ऐसी रेखा वाला जातक भी दरिद्र होता है।
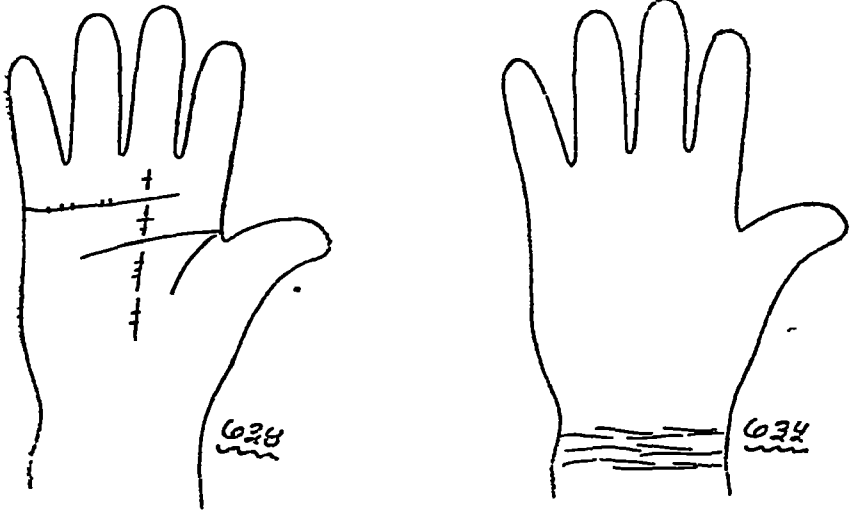
चित्र ७३५—यदि मणिबध-रेखाएं स्थान-स्थान पर टूटी हुई हो तो ऐसी रेखा वाला जातक भी दरिद्री होता है।

चित्र ७३६—यदि शुक्र-पर्वत से निकलकर कोई रेखा मगल के प्रथम पर्व पर जा पहुची हो तो ऐसी रेखा वाला जातक भी दरिद्र होता है।
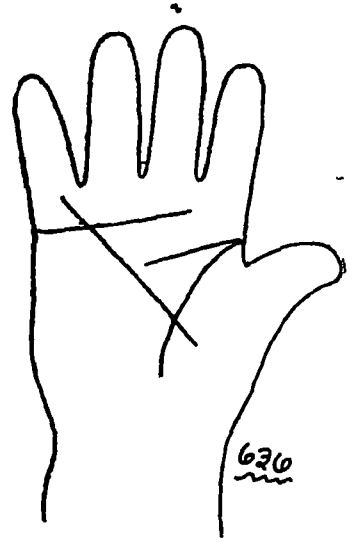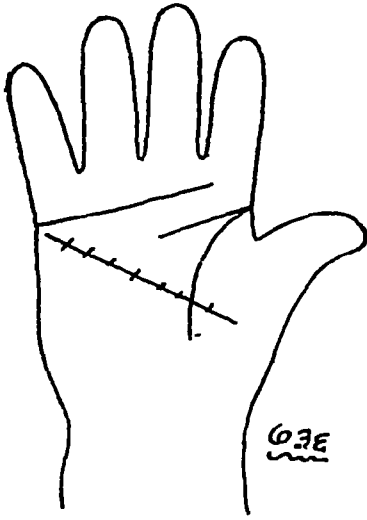
चित्र ७३७—यदि शुक्र-क्षेत्र से उत्पन्न एक सीधी रेखा बुध के पर्वत पर जा पहुची हो तो वह भी दरिद्र-सूचक होती है ।
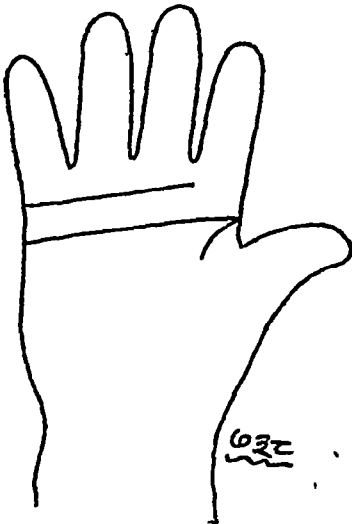
चित्र ७३८—यदि मस्तक-रेखा अपने उद्गम-स्थान से निकलकर लम्बी होती हुई हथेली को पार कर गई हो तो ऐसी रेखा वाला व्यक्ति कृपण और धन का लोभी होता है।

चित्र ७३९—यदि हथेली पर हृदय-रेखा बिल्कुल ही न हो तो ऐसा जातक धन का लोभी तथा कृपण होता है।

चित्र ७४०—यदि हृदय-रेखा मे से एक रेखा निकलकर बुध-क्षेत्र पर गई हो तथा बुध का पर्वत उठा हुआ हो तो ऐसा जातक भी लोभी होता है।

चित्र ७४१—यदि जीवन-रेखा मे से कुछ छोटी-छोटी रेखाएं निकलकर मस्तक-रेखा को लाघती हुई आगे निकल जाय तो ऐसी रेखाओ वाले जातक को वृद्धावस्था मे धन प्राप्त होता है, परन्तु वह ठहरता नही है।

चित्र ७४२—यदि हृदय-रेखा मे से एक रेखा निकलकर मगल के प्रथम-क्षेत्र पर होती हुई सूर्य-क्षेत्र पर चली जाय तो ऐसी रेखा वाले जातक को वृद्धावस्था मे सम्पत्ति प्राप्त होती है।
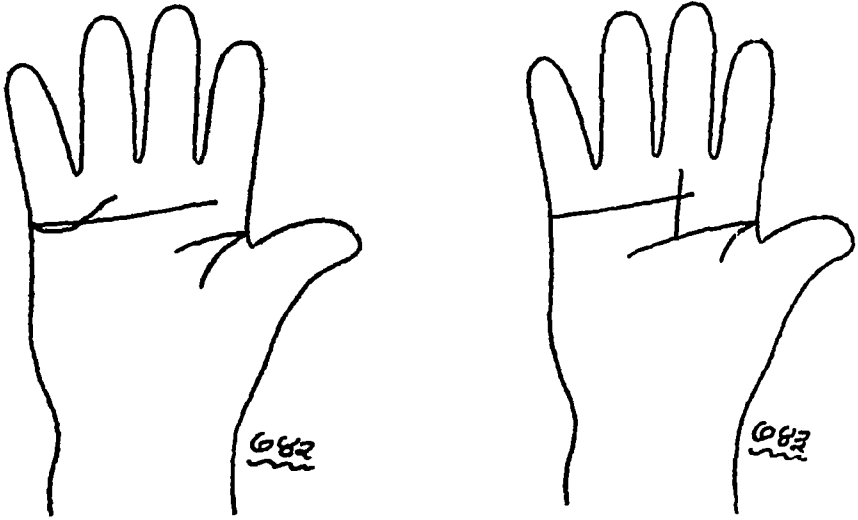
चित्र ७४३—यदि दोनो हाथो पर भाग्य-रेखा मस्तक-रेखा में से निकली हो और स्पष्ट हो, तो जातक को वृद्धावस्था मे धन की प्राप्ति होती है।

चित्र ७४४—यदि मणिबध मे से उत्पन्न दो-तीन रेखाएं चन्द्र पर्वत पर होती हुई स्वास्थ्य-रेखा में जा मिलें तो ऐसी रेखाओ वाला जातक धन का सग्रह नही कर पाता।

चित्र ७४५—यदि मस्तक-रेखा में से उत्पन्न कोई रेखा गुरु-क्षेत्र पर स्थित क्रास चिन्ह का स्पर्श करे तो ऐसी रेखा-चिन्ह वाला जातक निर्धन ही रहता है। वह धन का सचय नही कर पाता।
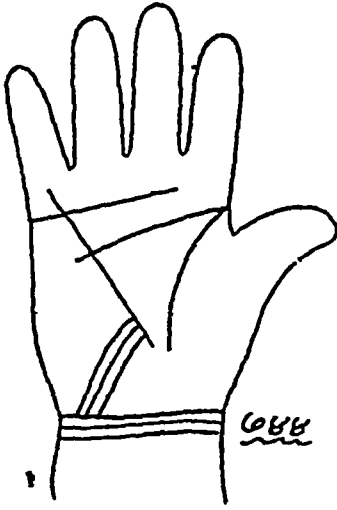
चित्र ७४६—यदि जीवन-रेखा मे से बाल के समान महीन रेखाए नीचे मणिबन्ध की ओर गई हो तो ऐसी रेखा वाला जातक भी द्रव्य-सुख को प्राप्त नही कर पाता अर्थात् वह भी निर्धन ही बना रहता है।
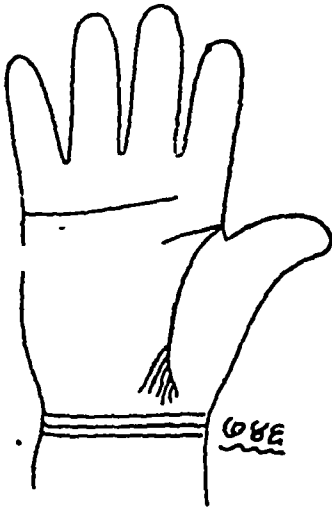
चित्र ७४७—यदि मस्तक-रेखा, हृदय-रेखा तथा जीवन-रेखा—तीनो रेखाएं एक ही स्थान पर मिल रही हो तो भी जातक को धन-सचय का सुख प्राप्त नही होता ।

चित्र ७४८—यदि हाथ की रेखाओ मे से बहुत-सी शाखाए निकली हुई हो तो मध्यमा- उगली का तीसरा पर्व अधिक लम्बा हो तथा चन्द्र पर्वत अन्य ग्रह-क्षेत्रो को अपेक्षा अधिक उठा हुआ हो तो, ऐसा जातक दुर्गणी होता है ।
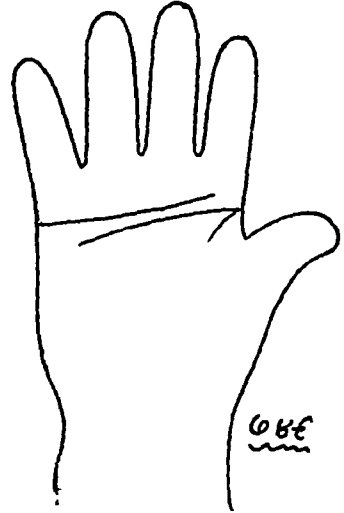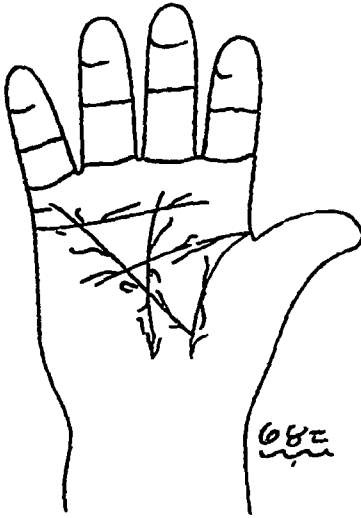
चित्र ७४९—यदि हृदय-रेखा तथा मस्तक-रेखा बहुत पास-पास हो तथा बुध का पर्वत सबसे ऊचा उठा हुआ दिखाई देता हो तो ऐसा जातक दुष्ट स्वभाव वाला होता है । ऐसे व्यक्ति का कभी भी विश्वास नही करना चाहिए ।

चित्र ७५०—जिस मनुष्य के हाथ में छोटी-छोटी अनेक रेखाए मुख्य रेखाओ को काटती हों वह दुर्भाग्यशाली होता है ।
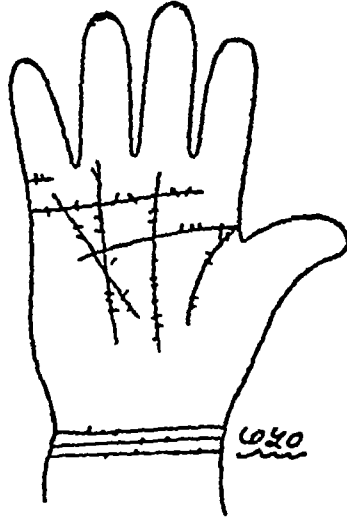
टिप्पणी—अन्य प्रभाव रेखाओ के फलाफल का वर्णन 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के विभिन्न खण्डो मे यथास्थान पर किया गया है।

[हथेली पर ग्रह-क्षेत्रो की स्थिति]

कर-पृष्ठ स्थित रेखाएं

कर-पृष्ठ अर्थात् हथेली के पिछले भाग मे अगूठे तथा उगलियों के ऊपर कुछ छोटी-छोटी रेखाए पाई जाती हैं। वे भी मनुष्य के जीवन पर अपना प्रभाव डालती है। प्रस्तुत प्रकरण मे उन्ही रेखाओ की स्थिति एव फलाफल का सचित्र वर्णन किया जा रहा है।

कर-पृष्ठ की आकृति तथा उस पर पाये जाने वाले बाल एवं प्रभाव आदि के सम्बन्ध मे 'वृहद् सामुद्रिक-विज्ञान' के आपका हाथ' शीर्षक प्रथम खण्ड मे विस्तृत वर्णन किया जा चुका है।

चित्र ७५२—अगूठे के पिछले भाग पर नाखून के नीचे कुछ आड़ी रेखाए होती हैं सामुद्रिक-विज्ञानियो के अनुसार इन रेखाओ मे सम्पूर्ण हाथ का सार रहता है। नाखून से नीचे की पहली रेखा जातक

७५२

के जीवन के पहले तीसरे भाग को प्रदर्शित करती है। दूसरी रेखा तीसरे भाग को प्रदर्शित करती है। यदि इस स्थान पर केवल दो ही
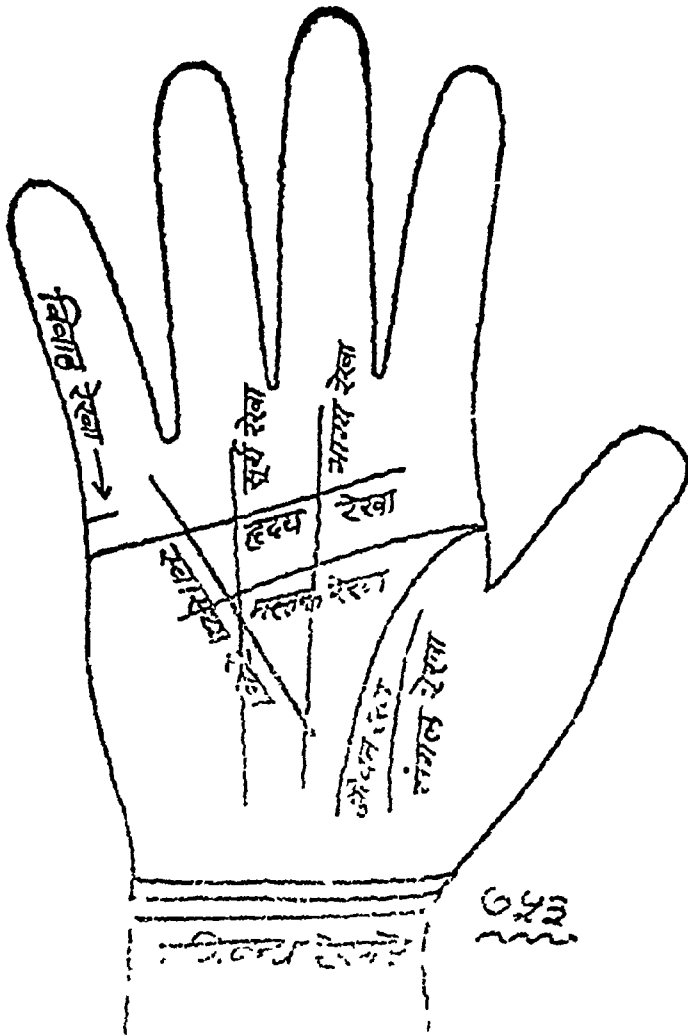
[हथेली पर मुख्य रेखाओं की अवस्थिति]

रेखाए हो तो यह निश्चय करना चाहिए कि वे जीवन के कौन-से दो भागो को प्रकट करती हैं। उसी के अनुसार फलादेश भी करना चाहिए। यदि इस स्थान पर चार रेखाए हो तो बीच की दो रेखाओ को जीवन का दूसरा भाग मान कर, शेष का पहला तथा तीसरा भाग मान लेना चाहिए अर्थात् रेखाओ के आधार पर सम्पूर्ण जीवन को तीन भागो मे बाट कर ही फलादेश करना चाहिए।

चित्र ७५४—यदि अंगूठे के पृष्ठ भाग की सभी रेखाएं पूर्ण सुन्दर तथा दोष रहित हों अर्थात् वे टूटी-फूटी न हो तो जातक का जीवन सफल तथा आनन्दमय व्यतीत होता है।
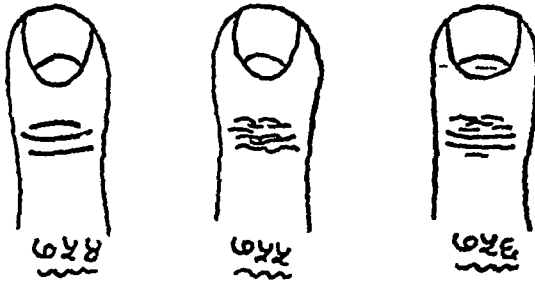
चित्र ७५५—यदि अंगूठे के पृष्ठ भाग की सभी रेखाए टूटी हुई अथवा जंजीर जैसी आकृति की हो तो जातक का जीवन असफल तथा दुःखमय व्यतीत होता है।

चित्र ७५६—यदि अगूठे के पृष्ठ भाग की कुछ रेखाए टूटी हुई तथा कुछ सुन्दर हों तो जीवन के जिस भाग की रेखाएं टूटी हुई तथा दोष युक्त हो, जातक के जीवन का वह भाग असफल तथा दुःखमय व्यतीत होगा और जिस भाग की रेखाएं स्पष्ट पूर्ण तथा सुन्दर हो, वह सुखपूर्ण व्यतीत होगा—ऐसा समझना चाहिए।

अगूठे की भाति उगलियो के पृष्ठ भाग पर भी आडी रेखाए रहती है, उनका जातक के जीवन पर कोई विशेष प्रभाव नही पडता। फिर भी उन रेखाओ का स्पष्ट तथा निर्दोष होना शुभफल कारक तथा छिन्न-भिन्न अथवा दोषयुक्त होना अशुभ होता है।

चित्र ७५७—यदि अनामिका उगली के पृष्ठ भाग पर नख-मूल के ऊपरी भाग मे यदि कोई आडा रेखा अलग से दिखाई दे तो ऐसी रेखा वाला वाला जातक धर्माचरण करने वाला तथा परोपकारी होता है। वह रात्रि के समय भोजन प्रायः नही करता और उसे सोते समय शुभ स्वप्न दिखाई देते है।

७५८
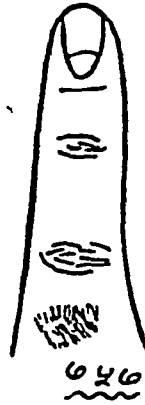
ग्रह-क्षेत्र, अगुष्ठ तथा उगलियो पर पाये जाने वाले द्वीप, नक्षत्र, त्रिकोण, चतुष्कोण, विन्दु, क्रास, वृत्त, जाल, चक्र, शख, सीप, ग्रह-वोधक-चिन्ह तथा अन्य प्रकार के चिन्हो का विस्तृत वर्णन हस्त-चिन्ह-विचार' नामक अगले खण्ड मे किया गया है।

विशेष टिप्पणी–(१) छोटी-छोटी रेखाए प्रायः स्थाई नही होती। वे उत्पन्न होती है, फिर वदल जाती है अथवा लुप्त हो जाती है। एक

वार लुप्त हो जाने के बाद दुबारा फिर किसी समय भी दिखाई देने लगती है। स्त्री अथवा पुरुष के मनोविकारो मे जैसे-जैसे परिवर्तन होता है, वैसे-वैसे इन रेखाओ मे भी वृद्धि अथवा कमी होती रहती है।

(२) हस्त-परीक्षक को चाहिए कि वह छोटी-छोटी प्रभाव-रेखाओ तथा हस्त-चिन्हो का सूक्ष्म रीति से अध्ययन करे। उसके साथ ही हाथ की बनावट, ग्रह-क्षेत्र तथा अन्य रेखाओ की स्थिति पर भी पूरा-पूरा ध्यान दे। तभी फलादेश करना उचित रहेगा। हथेली पर ग्रह-क्षेत्रों की स्थिति को चित्र सख्या ७५६ तथा मुख्य रेखाओ की अवस्थिति चित्र सख्या ७५७ मे प्रदर्शित किया गया है।

311070/टैक्नीकल प्रिंटिंग प्रेस, सोनीपत (निकट दिल्ली) मे मुद्रित

हस्त-चिन्ह विज्ञान

'बृहद् सामुद्रिक विज्ञान' खण्ड—१०

हस्त-चिह्न विज्ञान

[ग्रह क्षेत्र, मुख्य रेखाओं, अंगुष्ठ तथा उंगलियों पर पाये जाने वाले नक्षत्र, द्वीप, बिन्दु, क्रास, जाल, त्रिकोण, चतुष्कोण, वृत्त, अर्द्धवृत तथा अन्य चिह्न एवं ग्रह चिह्नों (The Signs on the Mounts) के स्वरूप तथा प्रभाव का प्राच्य एवं पाश्चात्य मतानुसार सैकड़ों चित्रों सहित विस्तृत विवेचन]

लेखक
राजेश दीक्षित

देहाती पुस्तक भण्डार, दिल्ली-६

"वज्राकाराधनिनां विद्याभाजांतुमीन पुच्छनिभा.।
शखातपत्र शिविकागजा इवपद्योपमां नृपतेः॥
कलशम्रणालपताकांकुशोपमाभिर्भवंतिनिधिपलाः।
दामनिभामिश्चाद्या. स्वस्तिकरूपभिरैश्वर्यं॥"

•

प्रकाशक
देहाती पुस्तक भण्डार
चावडी बाजार, दिल्ली-६

•

•

मूल्य
स्वदेश मे : साढ़े दस रुपये
विदेश मे : पच्चीस शिलिंग

•

मुद्रक
टैक्निकल प्रिंटिंग प्रेस
सोनीपत (निकट दिल्ली)

दो शब्द

अत्यन्त छोटी-छोटी रेखाओ के सम्मिलन से हाथ मे जो त्रिकोण, द्वीप, नक्षत्र, क्रास, वर्ग आदि विभिन्न प्रकार की आकृतिया वन जाती हैं, उन्हे पाश्चात्य मतानुसार'हस्त-चिह्न' (The Signs) कहा जाता है। इसके अतिरिक्त सूर्य, चन्द्र, मगल, बुध आदि ग्रहो के कुछ निश्चित-चिह्न भी होते हैं, उन्हे 'ग्रह-चिह्न' के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

सम्पूर्ण हथेली पर फैली हुई अत्यन्त सूक्ष्म धारियो के समान रेखाओ से अंगूठा तथा उगलियो के अग्रभाग पर भी कुछ विशेप प्रकार के चिह्न वनते हैं। सामुद्रिक-विज्ञानियो ने उन्हे (१) शख, (२) चक्र, (३) सीप, इन तीन भागो मे विभाजित किया है।

भारतीय सामुद्रिक-शास्त्रियो के मतानुसार छोटी-छोटी रेखाओ के सयोग से हथेली पर कमल, हाथी, देवता, मछली आदि की आकृति जैसे चिह्न भी वन जाते हैं। ऐसे चिह्न हजारो मे से किसी एक हाथ पर दिखाई देते है।

उक्त सभी प्रकार के हस्त-चिह्न, ग्रह-चिह्न आदि यद्यपि प्रत्येक व्यक्ति के हाथ पर दिखाई नही देते, परन्तु जिन लोगो के हाथ मे ये चिह्न पाये जाते हैं, उनके जीवन पर अपना विशेप प्रभाव डालने वाले सिद्ध होते है। इन चिह्नों की उपस्थिति से मुख्य-रेखाओ के शुभाशुभ फल मे भी न्यूनाधिक्य एवं परिवर्तन हो जाता हैं। अत प्रत्येक हस्त-परीक्षक को उचित है कि वह हस्त-रेखाओ पर विचार करते समय इन चिह्नो की उपस्थिति एवं प्रभाव पर भी पूरा-पूरा ध्यान दे अन्यथा फलादेश करते समय अर्थ का अनर्थ हो जाने की सभावना वनी रहेगी।

'वृहद् सामुद्रिक-विज्ञान' के इस दसवें खण्ड मे हथेली, मणिवन्ध, अगूठा उंगली, वृहद् त्रिकोण, वृहद् चतुष्कोण, ग्रह-क्षेत्र तथा रेखाओ पर पाये जाने

वाले हस्त-चिह्न, ग्रह-चिह्न तथा अन्य प्रकार के चिह्नों के जातक के जीवन पर प्रभाव का पाश्चात्य एवं प्राच्य मतानुसार विस्तृत एवं सचित्र विवरण प्रस्तुत किया गया है।

हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत आदि भाषाओं के जिन ग्रन्थों तथा विद्वानों द्वारा इस खण्ड के लिए सामग्री-चयन में हमें सहायता प्राप्त हुई है। उन सभी के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

महोली की पौर
मथुरा

—राजेश दीक्षित

जवाहर पुस्तकालय, मथुरा के संस्थापक
अपने परम आत्मीय
श्री केदारनाथ पचौरी
को
सस्नेह समर्पित

विषय-सूची

ग्रह-क्षेत्र और हस्त-चिह्न

हस्त-सामुद्रिक-विज्ञान के प्रथम खण्ड 'आपका हाथ' मे हथेली पर ग्रह-क्षेत्रो की अवस्थिति का विस्तृत वर्णन किया जा चुका है। प्रस्तुत खण्ड के आरम्भ मे हम पाठकों की सुविधा के लिए ग्रह-क्षेत्रो का सक्षिप्त वर्णन पुन कर रहे है, ताकि केवल इसी खण्ड के पाठको को ग्रह-क्षेत्रो की स्थिति के विषय मे जानकारी प्राप्त हो सके।

पाश्चात्य विद्वानो के मतानुसार केवल सात ग्रह ही मुख्य माने जाते है, जो इस प्रकार हैं—

(१) वृहस्पति (Jupiter)
(२) शनि (Saturn)
(३) सूर्य (Sun)
(४) वुध (Mercury)
(५) चन्द्र (Moon)
(६) मगल (Mars)
(७) शुक्र (Venus)

इन ग्रह-क्षेत्रों की हथेली पर अवस्थिति को चित्र सख्या २ में प्रदर्शित किया गया है। इन पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार हथेली के मध्यवर्ती क्षेत्र 'वृहद् चतुष्कोण' (Quadrangle) तथा वृहद् त्रिकोण (Trangle) को 'मगल के मैदान' (Plain of Mars) के रूप मे स्वीकार किया गया है।

भारतीय विद्वानों के मतानुसार ग्रहों को सख्या नौ मानी गई है, जो इस प्रकार हैं—
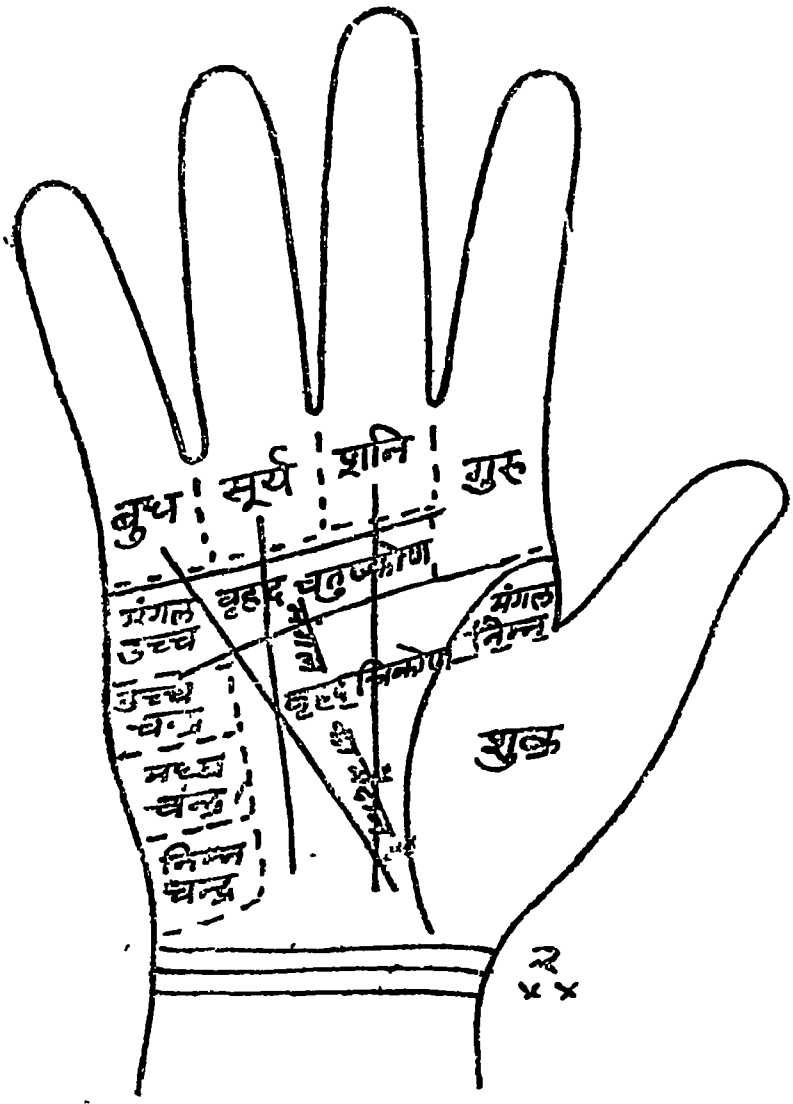
[हथेली पर सात ग्रह-क्षेत्रों की अवस्थिति]

(१) बृहस्पति (Jupiter)
(२) शनि (Saturn)
(३) सूर्य (Sun)
(४) बुध (Mercury)
(५) चन्द्र (Moon)
(६) मगल (Mars)
(७) शुक्र (Venus)
(८) राहु (Rahu)
(९) केतु(Ketu)

भारतीय मतानुसार हथेली पर ग्रह-क्षेत्रो की अवस्थिति को चित्र संख्या ३ में प्रदर्शित किया गया है। पाश्चात्य मत से इसके मत में केवल इतनी ही भिन्नता है कि जिस क्षेत्र को पाश्चात्य विद्वान 'मगल का मैदान' (Plain of Mars) कहते हैं, उसे भारतीय विद्वान 'राहु-क्षेत्र' तथा 'केतु-क्षेत्र' के रूप मे विभाजित करते हैं तथा मगल-क्षेत्र की अवस्थिति को दो स्थानो पर मानते हैं, जिन्हे 'प्रथम मगल' तथा 'द्वितीय मगल' के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

भारतीय मतानुसार मणिबन्ध को 'केतु-क्षेत्र' के अन्तर्गत ही माना जाता है। चित्र सख्या ३ में भारतीय मतानुसार ग्रह-क्षेत्रों के विभाजन को भली-भाति प्रदर्शित किया गया है। पाठकों को चाहिए कि वे उक्त पाश्चात्य तथा प्राच्य मत को भली-भाति हृदयङ्गम कर ले।

आधुनिक विद्वानो ने उक्त नौ ग्रहो के अतिरिक्त तीन अन्य नये ग्रहो की भी खोज की है। वे ग्रह हैं—

(१) हर्षल (Herschel)
(२) नेपच्यून (Neptune)
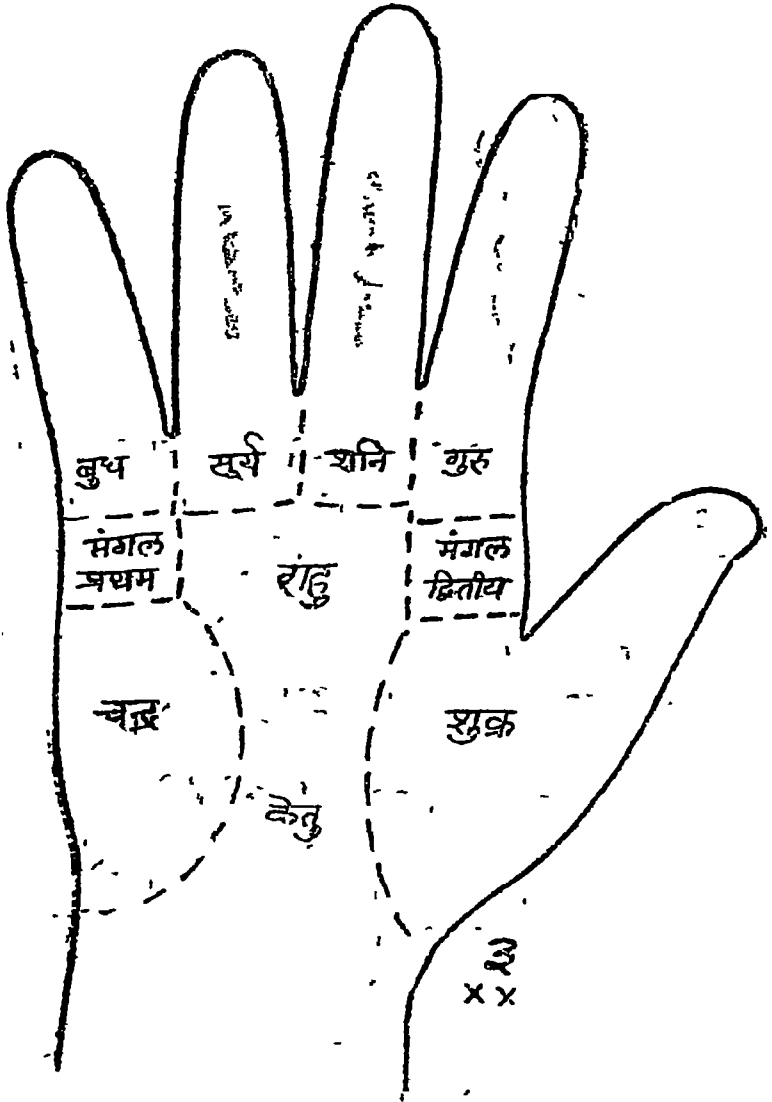
[हथेली पर नौ ग्रह क्षेत्रों की अवस्थिति]

(३) प्लेटो (Plato)

आधुनिक भारतीय विद्वानो ने भी इन नवीन ग्रहो के अस्तित्व को स्वीकार कर लिया है और उन्होने इनके नाम क्रमश (१) प्रजापति, (२) वरुण तथा (३) इन्द्र निश्चित किए हैं।

इस प्रकार नवीन मतानुसार ग्रहो की कुल सख्या बारह हो जाती है, जो इस प्रकार है—

(१) वृहस्पति (Jupiter)
(२) शनि (Saturn)
(३) सूर्य (Sun)
(४) वुध (Mercury)
(५) चन्द्र (Moon)
(६) शुक्र (Venus)
(७) मगल (Mars)
(८) राहु (Rahu)
(९) केतु (Ketu)
(१०) प्रजापति (Herschel)
(११) वरुण (Neptune)
(१२) इन्द्र (Plato)

उक्त तीन नवीन ग्रहों की खोज के बाद हथेली पर इन ग्रहों के लिए भी क्षेत्र निर्धारित किये गए है। नवीन विधि के अनुसार उक्त बारह ग्रहो की हथेली पर अवस्थिति को चित्र संख्या ४ में प्रदर्शित किया गया है।

[हथेली पर बारह ग्रह-क्षेत्रों की अवस्थिति]

इस नवीन मत के अनुसार पूर्वोक्त 'उच्च मगल' अथवा 'प्रथम मगल-क्षेत्र' को 'हर्षल' (Herschel) अथवा 'प्रजापति' का 'क्षेत्र, उच्च' चन्द्र-क्षेत्र' को 'नेपच्यून' (Neptune) अथवा 'वरुण का क्षेत्र' तथा 'उच्च राहु क्षेत्रो' अथवा 'मगल के मैदान के ऊपरी भाग' को 'प्लेटो' (Plato) अथवा 'इन्द्र-क्षेत्र' माना जाता है।

प्रस्तुत खण्ड मे ग्रह-क्षेत्रो पर विविध चिह्नो के प्रभाव का जो वर्णन किया गया है, उसमे पूर्वोक्त तीनो ही मतो का एकीकरण है। अत. हस्त-परीक्षक को चाहिए कि वह ग्रह-क्षेत्रो पर विचार करते समय निम्नलिखित बातो को हर समय ध्यान मे रक्खे—

(१) जहां कहीं 'राहु-क्षेत्र' का वर्णन हो, वहां पर राहु के उच्च क्षेत्र को 'मगल का मैदान' अथवा 'इन्द्र' (प्लेटो) का क्षेत्र भी समझना चाहिए।

(२) जहां कही 'केतु क्षेत्र' का वर्णन हो, वहा 'मगल का निचला मैदान' भी समझना चाहिए।

(३) जहां कही 'वरुण' (नेपच्यून) क्षेत्र का वर्णन हो वहा 'उच्च चन्द्र-क्षेत्र' भी समझना चाहिए।

(४) जहां कही 'प्रजापति' (हर्षल) क्षेत्र का वर्णन हो, वहा 'मगल उच्च' अथवा 'मंगल प्रथम' क्षेत्र भी समझना चाहिए।

(५) जहा कही 'इन्द्र' (प्लेटो) क्षेत्र का वर्णन हो, वहां 'राहु का उच्च क्षेत्र' अथवा 'मगल का मैदान' भी समझना चाहिए।

(६) जहा कही 'मगल के मैदान' का वर्णन हो, वहां 'मगल के ऊपरी मैदान' से 'राहु-क्षेत्र' तथा 'मगल के मैदान के निचले भाग' से 'केतु-क्षेत्र' भी समझना चाहिए।

गुरु, शनि, सूर्य, बुध तथा शुक्र क्षेत्रो के विषय मे सभी मत एक जैसे हैं। केवल चन्द्र-क्षेत्र के उच्चभाग पर ही नवीन मतानुसार वरुण (नेपच्यून) क्षेत्र की अवस्थिति मानी गई है।

. यहा यह भी स्मरणीय है कि 'प्रजापति' अथवा 'हर्षल' का प्रभाव मगल से मिलता-जुलता ही होता है। इसका सम्बन्ध शारीरिक तथा मानसिक शक्ति से है।

'वरुण' अथवा 'नेपच्यून' का प्रभाव चन्द्रमा से मिलता-जुलता है। इसका सम्बन्ध विद्वत्ता तथा प्रभाव से है।

'इन्द्र' अथवा 'प्लेटो' का प्रभाव राहु तथा मगल के प्रभाव का मिश्रित रूप होता है। इसका सम्बन्ध मानसिक शक्ति तथा धनराशि से है।

चूकि प्रजापति (हृषल) और मगल तथा वरुण (नेपच्यून) और चन्द्रमा का प्रभाव एक-दूसरे से मिलता-जुलता है, इसीलिए इन ग्रह-क्षेत्रों की उपस्थिति क्रमश मगल तथा चन्द्र-क्षेत्र के समीप अथवा प्राचीन मतानुसार उनके ऊपर ही मानी गई है। 'इन्द्र' (प्लेटो) का प्रभाव राहु तथा मगल के प्रभाव का मिश्रित रूप होता है, अत. इस ग्रह-क्षेत्र की उपस्थिति 'राहु-क्षेत्र' अथवा 'मगल के मैदान' के अन्तर्गत माना गई है।

यहा एक बात और भी स्मरण रखने के योग्य है कि अगूठे की शुक्र-क्षेत्र के अन्तर्गत, तर्जनी उगली की गुरु-क्षेत्र के अन्तर्गत, मध्यमा उगली की शनि-क्षेत्र के अन्तर्गत, अनामिका उगली की सूर्य-क्षेत्र के अन्तर्गत, कनिष्ठा उंगली की केतु-क्षेत्र के अन्तर्गत तथा मणिबन्ध की केतु-क्षेत्र के अन्तर्गत गणना की जाती है।

जिस प्रकार ग्रह-क्षेत्रों की अत्यधिक उन्नत तथा निम्न अवस्थाओ का मुख्य रेखाओं के फलादेश पर प्रभाव पड़ता है, उसी प्रकार ग्रह-क्षेत्रों की उन्नति तथा अवनति के कारण हस्त-चिह्नो के फलादेश मे भी अन्तर आ जाता है। अत. ग्रहक्षेत्रस्थ किसी भी हस्त-चिह्न पर विचार करते समय उन ग्रह-क्षेत्र की उन्नत अथवा अवनत दशा पर भी पूरा-

पूरा ध्यान देना चाहिए। ग्रह-क्षेत्रो की अत्युच्चता, उच्चता तथा निम्नता एव एक ग्रह-क्षेत्र के दूसरे ग्रह-क्षेत्र की ओर झुकाव और उसके प्रभाव आदि का वर्णन 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के प्रथम खण्ड 'आपका हाथ' मे विस्तार पूर्वक किया जा चुका है।

हस्त-चिन्ह

प्राच्य भारतीय मतानुसार स्त्री-पुरषो के हाथ पर विभिन्न प्रकार के चिह्न पाये जाते है, उनका वर्णन इसी पुस्तक के अंतिम प्रकरण मे किया गया है।

पाश्चात्य मतानुसार स्त्री-पुरुषो के हाथ पर पाये जाने वाले मुख्य चिह्न निम्नलिखित हैं—

(१) 'धन' या 'गुणक' चिह्न (Crosses),
(२) 'कन्दुक', 'गोला' या 'वृत्त' चिन्ह (Circles),
(३) 'द्वीप' या 'यव' चिन्ह (Islands),
(४) 'चतुर्भुज', 'चतुष्कोण' या 'वर्ग' चिन्ह (Squares),
(५) 'त्रिकोण' या 'त्रिभुज' चिन्ह (Tringles),
(६) 'कोण' चिन्ह (Angles),
(७) 'नक्षत्र' या 'तारा' चिन्ह (Stars),
(८) 'जाल' या 'रेखा जाल' चिन्ह (Grilles),
(९) 'विन्दु' चिन्ह (*Dots or spots*)।

इनके अतिरिक्त अर्द्धवृत्त या अर्द्धचन्द्र और त्रिशूल आदि अन्य अनेक प्रकार के चिन्ह भी किसी-किसी स्त्री-पुरुष के हाथ मे दिखाई देते हैं।

उक्त हस्त-चिन्हों के स्वरूप को चित्र सख्या ५ मे प्रदर्शित किया गया है।
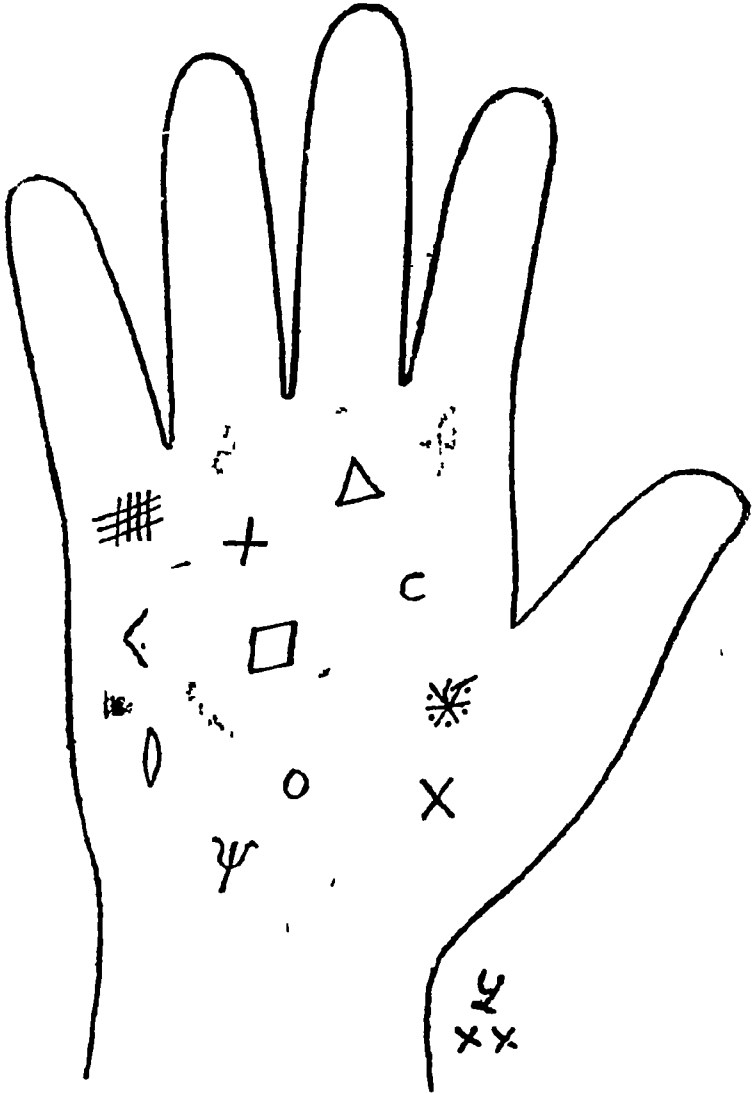
[विविध प्रकार के हस्त-चिन्ह]

हस्त-चिन्हो के अतिरिक्त कुछ विशेष प्रकार के अन्य चिन्ह भी होते है, जिन्हे ग्रह-चिन्ह कहा जाता है। ये 'ग्रह-चिन्ह' सूर्य, शनि, बुध, मगल, शुक्र, चन्द्र आदि ग्रहो के प्रतीक माने जाते हैं। ग्रह-चिंन्हो के सम्बन्ध मे विस्तृत वर्णन इसी पुस्तक के एक अगले प्रकरण मे किया गया है।

ये सभी हस्त-चिह्न तथा ग्रह-चिह्न विभिन्न छोटी-छोटी रेखाओ के संयोग से ही बनते हैं, परन्तु जिस प्रकार रेखाओ का प्रभाव अलग-अलग होता है, उसी प्रकार ये हस्त-चिह्न तथा ग्रह-चिह्न भी जातक के जीवन पर अपना अलग-अलग प्रभाव डालते है।

उपर्युक्त हस्त-चिह्न तथा ग्रह-चिह्नो के प्रभाव के सम्बन्ध में पाश्चात्य सामुद्रिक शास्त्रियो ने विशेष अनुसधान किया है, अत उन्ही के मत को विश्वव्यापी मान्यता प्राप्त है। इस पुस्तक मे, करतल के विविध चिह्न (प्राच्य मत)' शीर्षक अन्तिम प्रकरण के अतिरिक्त अन्य सभी प्रकरणो में हस्त-चिह्न तथा ग्रह-चिह्नो के प्रभाव का वर्णन पाश्चात्य विद्वानो के मत के आधार पर ही किया गया है।

स्मरणीय है कि कुछ लोगो के हाथ मे इस हस्त-चिह्न तथा ग्रह-चिह्नो का स्वरूप अत्यन्त अस्पष्ट-सा होता है। अतः हस्त-परीक्षक को इनकी स्थिति एव उपस्थिति को अत्यन्त सावधानी से देखना चाहिए। आतशी शीशे की सहायता से इन चिह्नो को आसानी से देखा जा सकता है।

हस्त-चिह्न तथा ग्रह-चिह्नों के अतिरिक्त सम्पूर्ण हथेली पर फैली हुई अत्यन्त महीन धारियो जैसी रेखाओ के द्वारा अगूठा तथा उगलियो के पोरुओ पर शख, चक्र तथा शुक्ति जैसे चिह्नो का निर्माण होता है। उनके सम्बन्ध में विस्तृत वर्णन इसी पुस्तक के एक अगले प्रकरण में किया गया है।

कुछ हस्त-चिह्न ऐसे होते है, जो जातक के हाथ पर जीवन भर

स्थायी रूप मे विद्यमान रहते हैं। उनका प्रभाव भी अत्यधिक होता है। कुछ हस्त-चिह्न समयानुसार प्रकट तथा विलीन होते रहते हैं। अत स्थायी तथा अस्थायी चिन्हो के विषय मे भी जातक को स्व-विवेक व बुद्धि से काम लेना चाहिए।

कुछ विद्वानो ने ग्रह-क्षेत्र पर अन्य चिह्नो के साथ ही ग्रह क्षेत्रो पर पाई जाने वाली आडी, तिरछी अथवा टेढी, छोटी-छोटी रेखाओ का वर्णन किया है। परन्तु हम उन छोटी-छोटी रेखाओ के प्रभाव आदि का वर्णन 'प्रभाव-रेखाए' नामक पिछले खण्ड मे कर आये है। अत: हमने इस खण्ड मे उल्लेख नही किया है।

मुख्य रेखाओं के वर्णन के साथ ही, उन पर पाये जाने वाले हस्त-चिह्नो के प्रभाव का वर्णन 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के विभिन्न खण्डो मे यथा स्थान किया गया है। प्रस्तुत खण्ड के 'रेखाओ पर विविध चिह्नो का प्रभाव' शीर्षक प्रकरण मे सम्भव है, हस्त-चिह्न युक्त ऐसी कुछ रेखाओ की पुनरावृत्ति हो गयी हो, जिनके विषय में पहले किन्ही खण्डो में प्रकाश डाला जा चुका है। परन्तु विषय, वस्तु के एकत्रीकरण के अनुरूप यदि उनमें से कुछ रेखाओं की इस खण्ड मे पुनरावृत्ति भी हुई हो तो वह पाठकों के लिए अधिक सुविधाजनक ही सिद्ध होगी—ऐसा हमारा विश्वास है।

यद्यपि अगूठे और उगलियो को उनके अपने ग्रह-क्षेत्र के अन्तर्गत ही गिना जाता है, परन्तु पाठको की सुविधा के लिए हमने उन पर पाये जाने वाले ग्रह-चिह्नो के प्रभाव का वर्णन इसी पुस्तक के दो अलग-अलग प्रकरणों में किया है। वृहद् चतुष्कोण, वृहद् त्रिकोण तथा मणिबन्ध पर पाये जाने वाले विविध चिह्नो के विषय मे भी यही पद्धति अपनाई गई है। अगूठा, उगलियां, वृहद् चतुष्कोण, वृहद् त्रिकोण तथा मणिबन्ध पर पाई जाने वाली छोटी-छोटी रेखाओ का वर्णन 'प्रभाव-रेखाए' शीर्षक पिछले खण्ड में विस्तार-पूर्वक किया जा चुका है।
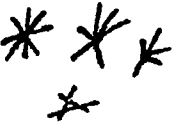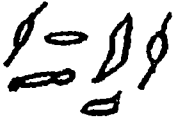
ग्रह-क्षेत्रों पर विविध चिह्नों का प्रभाव

ग्रह-क्षेत्रो के सम्वन्ध मे पिछले प्रकरण मे प्रकाश डाला जा चुका है। अव हम इस प्रकरण मे पाश्चात्य मतानुसार विभिन्न ग्रह-क्षेत्रों पर पाये जाने वाले वृत्त, वर्ग, त्रिकोण, नक्षत्र, जाल, विन्दु, क्रास, द्वीप, कोण आदि चिह्नो के प्रभाव का वर्णन कर रहे है।

यह वात पहले भी वताई जा चुकी है कि हस्त-चिह्नो पर विचार करते समय हस्त-परीक्षक को ग्रह-क्षेत्रों की उच्चता एव अनुच्चता, हाथ की वनावट तथा अन्य रेखाओं की स्थिति तथा प्रभाव के सम्वन्ध मे भी भली-भाति विचार कर लेना चाहिए। तभी फलादेश ठीक-ठीक वैठ सकेगा।

चित्र संख्या ६ मे विभिन्न हस्त-चिह्नो के स्वरूप को एकत्र प्रदर्शित किया गया है। ग्रह-क्षेत्रो पर पाई जाने वाली छोटी-छोटी खडी, आड़ी तथा तिरछी रेखाओ के प्रभाव का वर्णन 'प्रभाव-रेखाए' शीर्षक पिछले खण्ड मे विस्तार-पूर्वक किया जा चुका है।

हस्त-चिह्नो के चित्रो के साथ जो मुख्य रेखाए प्रदर्शित की गई हैं, उन्हे केवल प्रतीक के रूप में ही समझना चाहिए और उन रेखाओं के स्वरूप पर ध्यान न देकर केवल ग्रह क्षेत्रस्थ हस्त-चिह्नो के प्रभाव पर ही ध्यान देना चाहिए।

गुरु-क्षेत्र पर हस्त-चिह्नों का प्रभाव

गुरु-क्षेत्र की अवस्थिति तर्जनी उगली के मूल मे है। इसी को 'बृहस्पति-क्षेत्र' तथा अंग्रेजी में 'Mount of the Jupiter' भी कहा जाता है। तर्जनी उंगलो को बृहस्पति की उगली माना जाता है।

पाश्चात्य विद्वानों के मत से इस क्षेत्र पर पाये जाने वाले हस्त-चिह्नो का जातक के ऊपर जो प्रभाव पड़ता है, उसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाठको की सुविधा के लिए गुरु-क्षेत्रस्थ सभी हस्त-चिह्नो के चित्र भी विवरण के साथ ही दिये गए हैं। इन चित्रो मे अकित मुख्य रेखाएं केवल प्रतोक के रूप में ही प्रदर्शित को गई हैं, अत. पाठको को उनके स्वरूप पर कोई ध्यान न देकर, केवल गुरु क्षेत्रस्थ हस्त-चिह्नो के स्वरूप पर ही ध्यान देना चाहिए। परन्तु जहा मुख्य रेखाओ की स्थिति का भी हस्त-चिन्हों के साथ वर्णन हुआ है, वहा उनको यथार्थ स्थिति का ही चित्रण किया गया है।

चित्र ७—यदि गुरु-क्षेत्र पर हल्का (अस्पष्ट) सा 'क्रास' (गुणक अथवा घन) चिन्ह हो तो जातक के मस्तक पर कही घाव होता है। यदि क्रास-चिन्ह गहरा तथा स्पष्ट हो तो जातक का विवाह किसी अच्छे कुल में सुशीला स्त्री के साथ होता है और उसकी सभी अभि-लाषाएं पूर्ण होती हैं। वह परोपकारी, विनम्र, दानी, प्रभावशाली, मिलनसार तथा धार्मिक विचारों का होता है। उसे अपनी ससुराल से धन प्राप्त होता है। यदि क्रास-चिह्न छोटा-सा हो तो विवाह की सूचना प्राप्त होती है।
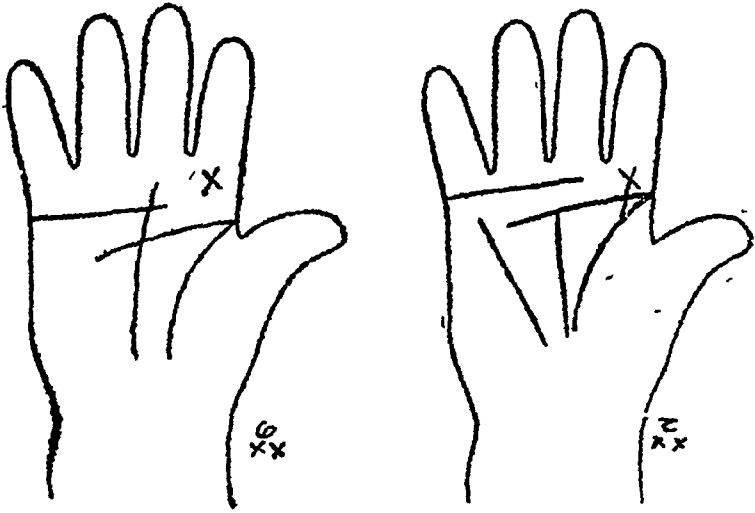
चित्र ८—यदि जीवन-रेखा से कोई छोटी-सी रेखा निकलकर गुरु-क्षेत्र पर आई हो और उसे वहां पर कोई छोटी-सी आड़ी रेखा काटकर क्रास-चिन्ह बना रही हो तो उसे अशुभ लक्षण समझना चाहिए। ऐसा चिह्न जातक की उन्नति एव भाग्य मे रुकावट, निराशा तथा असफलता का लक्षण है।

चित्र ९—यदि हृदय-रेखा से कोई शाखा-रेखा निकलकर गुरु-क्षेत्र पर आई हो और उसे वहां पर कोई छोटी-सी आड़ी-रेखा काट रही हो, जिसके कारण क्रास-चिन्ह बन जाता हो तो उसे भी जातक की भाग्य-हानि अथवा प्रेम-सम्बन्ध मे निराशा का लक्षण समझना चाहिए।

चित्र १०—गुरु-क्षेत्र पर क्रास-चिन्ह गुरु-पर्वत के मध्य भाग में हो तो युवावस्था के मध्य मे, जीवन-रेखा के समीप वाले भाग मे हो तो युवावस्था के प्रारम्भ मे और यदि तर्जनी उंगली के मूल मे गुरु-क्षेत्र पर क्रास-चिन्ह हो तो युवावस्था बीत जाने पर जातक की उन्नति होती है। चित्र सख्या १० में क्रास-चिन्ह की इन तीनों स्थितियों को
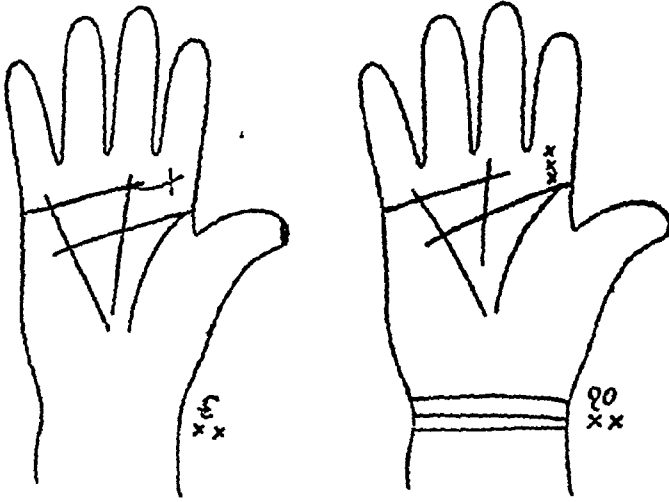
प्रदर्शित किया गया है। स्मरणीय है कि ऐसे क्रास-चिन्ह दो स्वतन्त्र छोटी रेखाओं द्वारा ही बने होने चाहिएं।

चित्र ११—यदि गुरु-क्षेत्र पर 'वृत्त' (कन्दुक या गोला) चिन्ह हो तो वह कुछ विद्वानों के मतानुसार जातक के लिए शुभ सूचक तथा उन्नतिकारक माना जाता है। परन्तु अन्य विद्वानों के मत से यह लक्षण शुभ नहीं होता। गुरु-क्षेत्र पर वत्त-चिन्ह शायद ही कहीं पाया जाता है। जो विद्वान इस चिन्ह को शुभ मानते है, उनके मतानुसार ऐसे चिन्ह वाला जातक दयालु, परोपकारी, सरल, साहित्यिक तथा अनेक मित्रो वाला होता है।

चित्र १२—यदि गुरु-क्षेत्र पर 'द्वीप' (यव) चिन्ह हो तो जातक झगडालू स्वभाव का होता है और वह वश को कलकित करने वाला काम करता है। ऐसे चिन्ह वाले लोगों मे अहकार तथा आत्म-विश्वास की भावना अत्यधिक होती है, जिसके कारण वे अपने किसी काम में सफलता प्राप्त नहीं कर पाते।
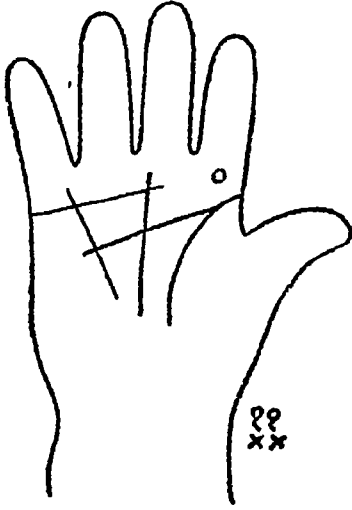
चित्र १३—यदि गुरु-क्षेत्र पर 'चतुष्कोण' (वर्ग) चिन्ह हो तो जातक मे उत्साह, अभिमान एव महत्वाकांक्षाओ की मात्रा अधिक
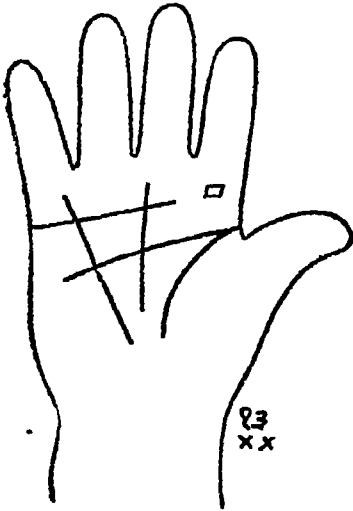
होती है, जिसके कारण उसे अनेक प्रकार की कठिनाइयो का सामना करना पडता है, परन्तु यह चिन्ह उसे कठिनाइयों, सकटों एवं रोगों से बचाता है। यदि गुरु-क्षेत्र अत्यधिक उन्नत हो तो जातक में अहकार की मात्रा अधिक होती है।

चित्र १४—यदि गुरु-क्षेत्र पर 'त्रिकोण-चिन्ह' हो तो ऐसा जातक कुशल-प्रन्बधक, नीति-कुशल, उच्चपदाधिकारी, लोक-हितेषी तथा सात्विक स्वभाव का होता है। वह दूसरो के शादी-सम्बन्ध कराने के मामलो मे भी दिलचस्पी लेता है। ऐसे लोग जन नेता, मंत्री आदि भी होते हैं।

चित्र १५—यदि गुरु-क्षेत्र पर त्रिकोण-चिन्ह के साथ ही नक्षत्र-चिन्ह भी हो तो जातक समस्त गुणो की खान, प्रत्येक क्षेत्र मे सफल तथा अत्यधिक यश, सम्मान तथा उच्च पद को प्राप्त करने वाला होता है। उसकी सभी अभिलापाए पूर्ण होती रहती हैं।
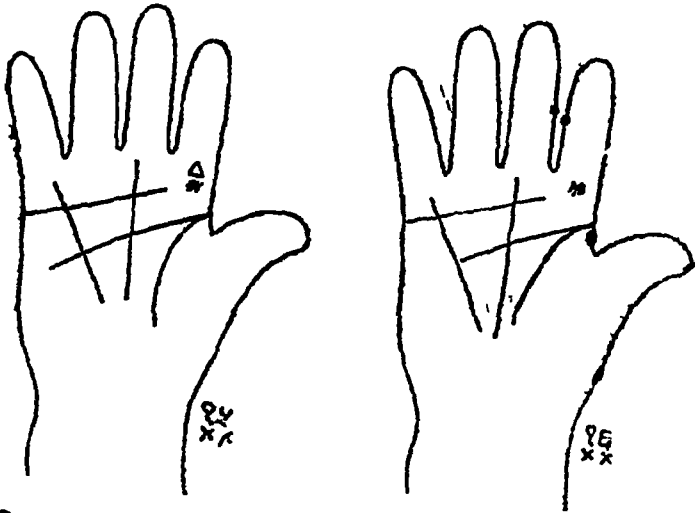
चित्र १६—यदि गुरु-क्षेत्र पर 'नक्षत्र-चिन्ह' हो और गुरु का पर्वत उन्नत हो तो जातक अत्यधिक सम्मान तथा यश को प्राप्त

करता है। उसकी महत्वकांक्षाएं पूर्ण होती हैं, परन्तु उसे कुटुम्ब सम्बन्धी कुछ सन्ताप अवश्य होता है।

चित्र १७—यदि गुरु-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिन्ह हो और भाग्य-रेखा तथा सूर्य-रेखा भी बलवान तथा निर्दोष हो तो जातक बड़े-से-बड़े किसी भी काम में अवश्य सफलता प्राप्त करता है। ऐसे लोग अत्यन्त महत्वाकांक्षी तथा उच्च पद प्राप्त करने वाले होते हैं।
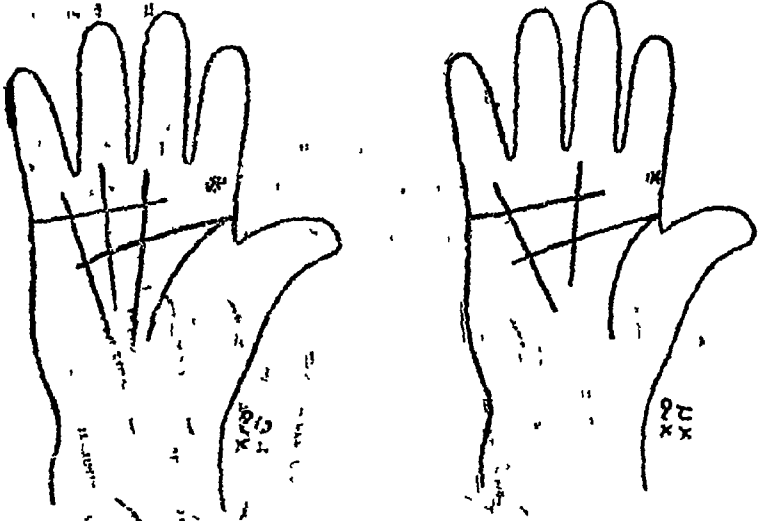
चित्र १८—यदि गुरु-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिन्ह तर्जनी उंगली के नीचे अथवा हथेली के बाहरी भाग मे हो तो जातक बडे-बडे लोगो के सम्पर्क में आने पर भी स्वय किसी बहुत ऊचे पद पर नही पहुच पाता। चित्र सख्या १८ मे गुरु-क्षेत्रस्थ नक्षत्र-चिन्ह की उक्त दोनो स्थितियों को प्रदर्शित किया गया है।

चित्र १९—यदि गुरु-क्षेत्र पर 'जाल' (रेखा-जाल) चिन्ह हो तो जातक दुष्ट, घमडी एव नीच स्वभाव का होता है। उसमे मिथ्या-भिमान, दूसरों को दबाये रखने की प्रवृत्ति, चरित्रहीनता तथा

धर्मान्धता आदि दुर्गुण पाये जाते हैं। ऐसे चिन्ह वाले व्यक्ति को विवाह तथा सामाजिक कार्यो मे भी सफलता प्राप्त नही होती। विवाह के समय किसी विशिष्ट सम्बन्धी आदि के मर जाने की सम्भावना भी रहती है।
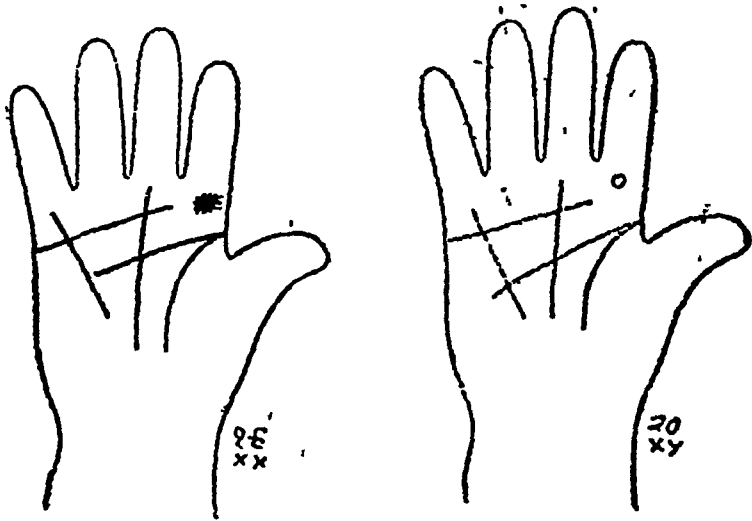
चित्र २०—यदि गुरु-क्षेत्र पर विन्दु-चिह्न हो तो जातक को अपयश, मानहानि, दरिद्रता एव वरवादी का सामना करना पडता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति को व्यवसाय मे अत्यधिक घाटा होने से मानसिक शोक तथा वदनामी का शिकार भी वनना पड़ता है।

चित्र २१—यदि गुरु-क्षेत्र पर अधिक 'कोण-चिह्न' हो तो ऐसा जातक पढने-लिखने में तेज, दृढ विचारों वाला, भले-बुरे का ज्ञान रखने वाला, दायित्वपूर्ण तथा कुछ-कुछ अहंभावी होता है। यदि समकोण हो तो जातक मे पारखी-शक्ति अधिक होती है। वह प्रत्येक काम को सोच-समझ कर ही करता है।
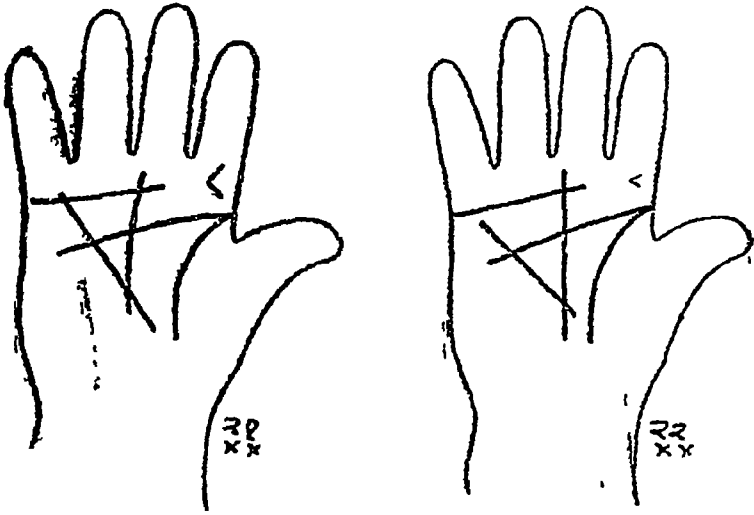
चित्र २२—यदि गुरु-क्षेत्रस्थ कोण-चिह्न न्यून कोण हों तो जातक अपने विचारों मे सकीर्ण होता है, जिसके कारण उसकी उन्नति का मार्ग रुक जाता है, ऐसे व्यक्ति केवल अपनी ही चलाने वाले अक्खड़-स्वभाव के होते है।

चित्र २३—यदि गुरु-क्षेत्र पर मकड़ी के जाले जैसा चिह्न हो तो जातक शरीर से हृदय-पुष्ट तथा बलवान होता है परन्तु उसकी मृत्यु पानी मे डूबने से होती है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति अपने सासारिक कार्यो को नष्ट कर देते है। यदि किसी योगी-पुरुष के हाथ मे ऐसा चिह्न हो तो वह योग-भ्रष्ट हो जाता है।

चित्र २४—यदि गुरु-क्षेत्र पर 'त्रिशूल' जैसा चिह्न हो तो जातक दुर्बल शरीर वाला, दुर्बल विचार-शक्ति वाला, मृगी रोग का रोगी, परन्तु धनवान तथा भू-स्वामी होता है। उसके शत्रुओ की सख्या भी बहुत होती है।
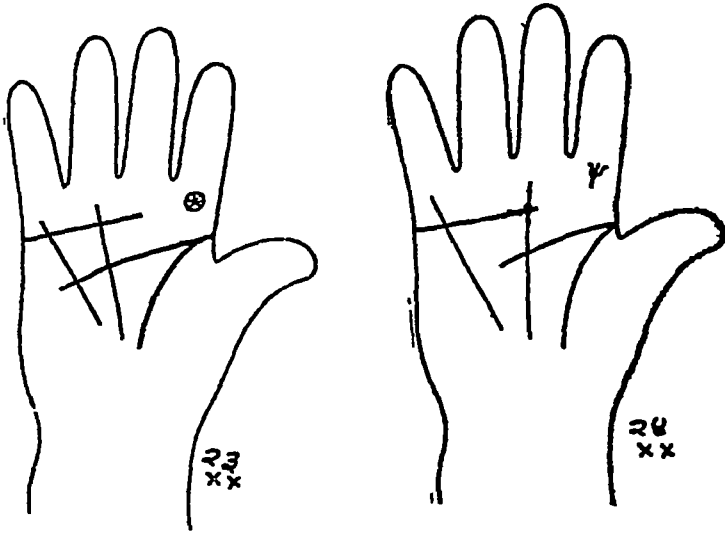
चित्र २५—यदि गुरु-क्षेत्र उच्च हो और उस पर नक्षत्र-चिह्न हो तथा सूर्य-क्षेत्र पर आड़ी रेखाए हो और उनके अन्त मे सूर्य-क्षेत्र पर भी नक्षत्र-चिह्न हो, शनि तथा चन्द्र-क्षेत्र उच्च हो, भाग्य-रेखा सूर्य, शनि तथा गुरु तीनो क्षेत्रो पर हो, मस्तक-रेखा तथा हृदय-रेखा स्पष्ट, गहरी, लम्बी तथा निदर्षो हो तो ऐसे चिह्न एव रेखाओ वाला जातक महा पराक्रमी, यशस्वी, ज्ञानी, महाधनी, उच्चकोटि का विद्वान्, राजा-महाराजा अथवा उच्च नेता होता है। उसे सभी सासारिक-सुख तथा सफलताओ की प्राप्ति होती है।

शनि-क्षेत्र पर हस्त-चिह्नों का प्रभाव

शनि-क्षेत्र की अवस्थिति मध्यमा उगली के मूल मे है। इसी को अग्रेजो मे Mount of the Saturn कहा जाता है। मध्यमा उगली को शनि की उगली माना जाता है।

पाश्चात्य-विद्वानो के मत से इस क्षेत्र पर पाये जाने वाले हस्त-चिह्नो का जातक के ऊपर पर जो प्रभाव पडता है, उसे नीचे लिखे अनुसार ही समझना चाहिए—

पाठकों की सुविधा के लिए शनि-क्षेत्रस्थ सभी हस्त-चिह्नो के चित्र भी विवरण के साथ ही दिए गये है। इन चित्रो मे अंकित मुख्य रेखाएं केवल प्रतीक के रूप में ही प्रदर्शित की गई हैं, अत: पाठको को उनके स्वरूप पर कोई ध्यान न देकर केवल शनि-क्षेत्रस्थ हस्त-चिह्नो के स्वरूप पर ही ध्यान देना चाहिए। परन्तु जहा हस्त-चिह्नो के साथ मुख्य रेखाओ की स्थिति का वर्णन हुआ है वहा उनकी यथार्थ स्थिति का ही चित्रण किया गया है।
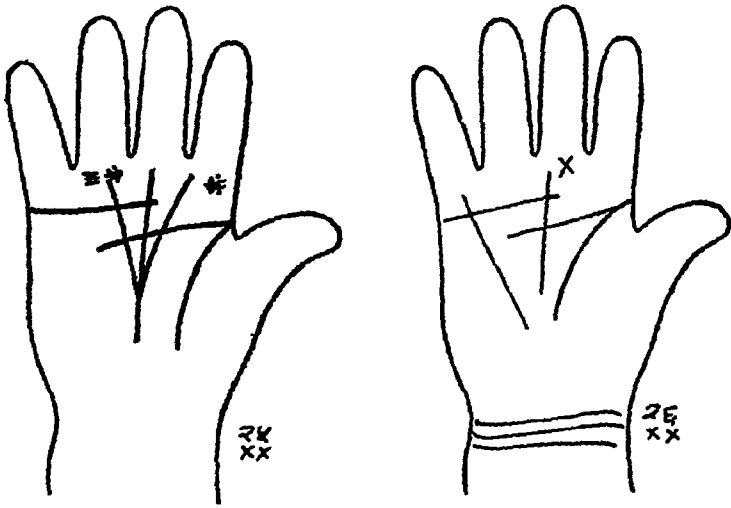
चित्र २६—यदि शनि-क्षेत्र पर क्रास-चिह्न हो तो उसे अशुभ लक्षण समझना चाहिए। ऐसे चिह्न वाला जातक बीमारी, दुर्घटना तथा दुर्भाग्य का शिकार बनता है तथा उसमें शनि सम्बन्धी सभी बुराइया पाई जाती हैं। यदि यह चिह्न शनि-क्षेत्र के मध्य भाग में हो

तो जातक धर्मान्ध होता है। वह चिड़-चिडे स्वभाव का, निराश तथा निम्न कोटि के तान्त्रिक प्रयोगों को करने वाला सर्वसाधारण का शत्रु होता है।

चित्र २७—यदि शनि-क्षेत्रस्थ क्रास-चिह्न भाग्य-रेखा से सयोग कर रहा हो तो जातक की अकस्मात् ही अथवा किसी दुर्घटना के कारण मृत्यु हो जाती है।
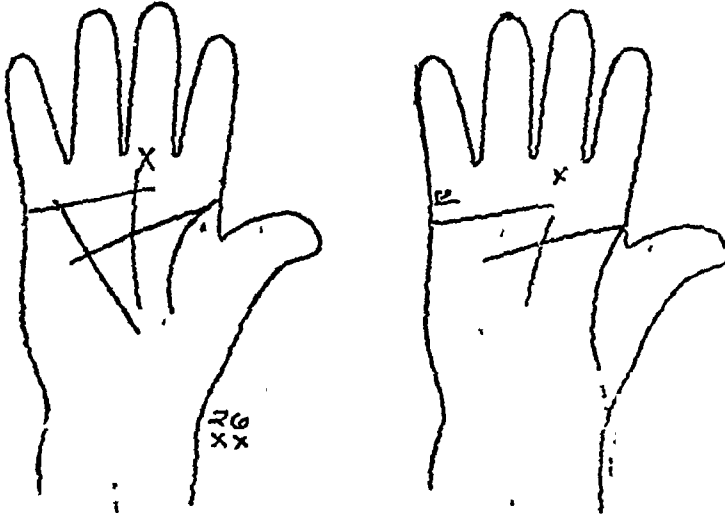
चित्र २८—यदि शनि-क्षेत्र पर क्रास-चिह्न हो, शुक्र का क्षेत्र दबा हुआ तथा बहुत छोटा हो तथा सन्तान-रेखाएं अस्पष्ट हों तो जातक के सन्तान नहीं होती।

चित्र २९—यदि शनि-क्षेत्र पर 'चतुष्कोण' (वर्ग) चिह्न हो तो जातक की किसी दुर्घटना से जीवन-रक्षा होती है। यह चिह्न शुभ-सूचक माना जाता है।
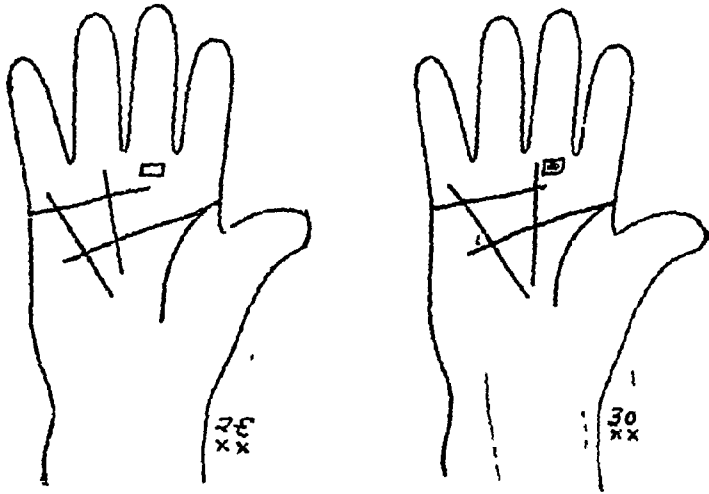
चित्र ३०—यदि शनि-क्षेत्रस्थ चतुष्कोण (वर्ग) चिह्न के भीतर नक्षत्र-चिह्न भी हो तो कोई अन्य व्यक्ति जातक की हत्या करने का प्रयत्न करेगा, परन्तु जातक की प्राण रक्षा हो जायगी।
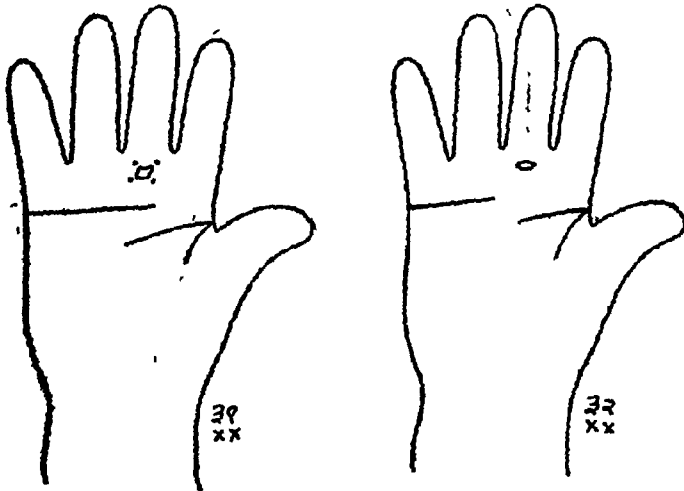
चित्र ३१—यदि शनि-क्षेत्रस्थ चतुष्कोण (वर्ग) चिह्न के चारों कोनो पर लाल 'बिन्दु-चिह्न' भी हो तो जातक को अग्नि दुर्घटना में जलने का भय उपस्थित होगा, परन्तु उसकी प्राण-रक्षा हो जाएगी।

चित्र ३२—यदि शनि-क्षेत्र पर द्वीप-चिह्न हो तो उसे दुर्भाग्य का लक्षण समझना चाहिए। ऐसा व्यक्ति निर्धन तथा जगह-जगह ठोकरें खाने वाला होता है।

चित्र ३३—यदि शनि-क्षेत्र पर त्रिकोण-चिह्न हो तो जातक गुप्त-विद्याओं (तंत्र, मंत्र, ज्योतिष, योग) आदि का अभ्यासी तथा जानकार होता है। ऐसे जातक स्वाभिमानी तथा तार्किक भी होते हैं। यदि त्रिकोण-चिह्न के भीतर नक्षत्र जैसा चिह्न भी हो तो जातक की हत्या किए जाने का षड्यन्त्र रचा जाता है, परन्तु जातक की उसमे प्राण-रक्षा हो जाती है।
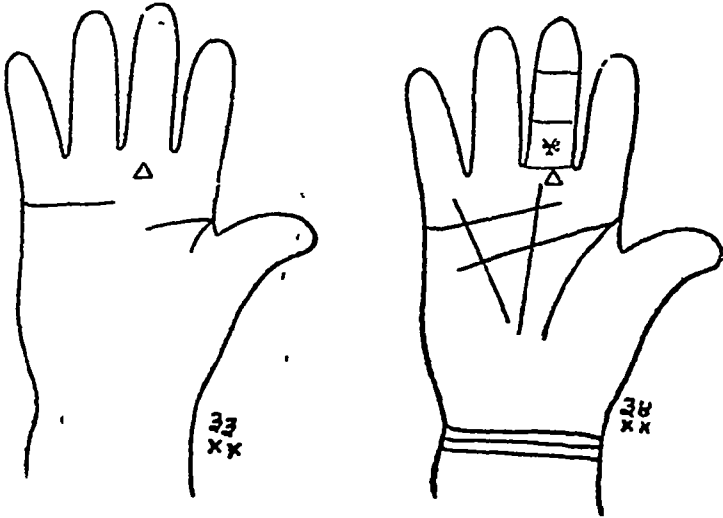
चित्र ३४—यदि शनि-क्षेत्र पर 'त्रिकोण-चिह्न' हो और मध्यमा उंगली के तृतीय पर्व पर नक्षत्र-चिह्न भी हो तो जातक अपनी गुप्त-

विद्या की योग्यता द्वारा दूसरे लोगों को हानि पहुचाने का प्रयत्न करता है।

चित्र ३५—यदि शनि-क्षेत्र के सबसे ऊंचे शिखर पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक इतना अधिक बदनाम होता है कि उसका अपयश सर्वत्र फैल जाता है। ऐसे चिह्न वाला जातक किसी भयानक दुर्घटना का शिकार होता है और उसे पक्षाघात (लकवे की बीमारी) होने की सम्भावना भी रहती है। कुछ विद्वानो के मतानुसार यदि हाथ में अन्य अशुभ लक्षण भी हो तथा शनि-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिह्न दोनो हाथो मे हो तो उसे मृत्यु-दण्ड प्राप्त होता है।
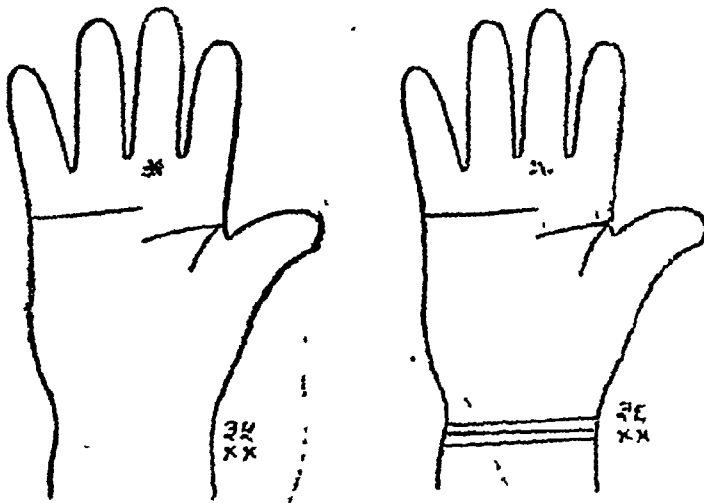
चित्र ३६—यदि शनि-क्षेत्रस्थ नक्षत्र-चिह्न खण्डित अथवा अस्पष्ट स्थिति मे हो तो उसे जातक के अस्वास्थ्य का लक्षण समझना चाहिए। उसकी वृद्धावस्था कष्ट तथा रोग मे बीतती है।

चित्र ३७—यदि शनि-क्षेत्रस्थ नक्षत्र-चिह्न शुक्र-मेखला के ऊपर हो तो जातक उपदंश, मूत्रकृच्छ्र (सूजाक) आदि भयकर बीमारियो का शिकार बनता है।
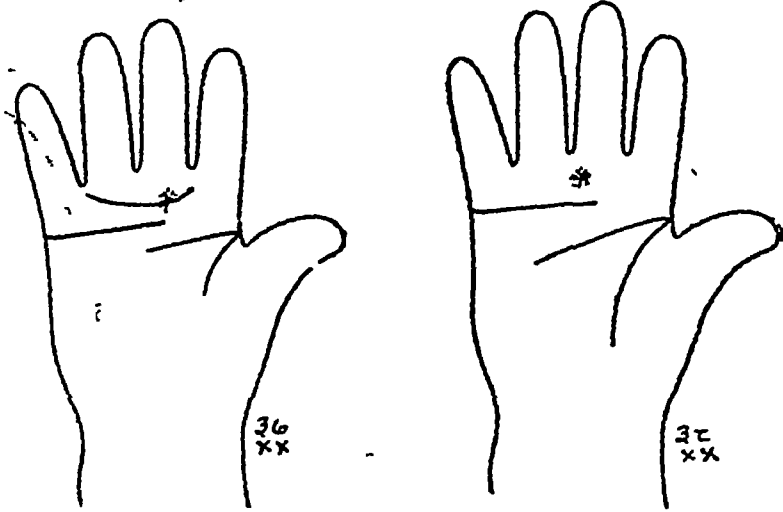
चित्र ३८—यदि नक्षत्र-चिह्न शनि-क्षेत्र के एक किनारे पर हो अर्थात् जिस जगह शनि-क्षेत्र समाप्त होता है, वहा हो तो जातक किसी ऐसे व्यक्ति के सम्पर्क मे आता है जो हत्या अथवा अन्य दुष्कर्म करने के कारण बदनाम हो।

चित्र ३९—यदि भाग्य रेखा मध्यमा उगली के भीतर तक चली गई हो तथा शनि-क्षेत्र पर उसी भाग्य-रेखा के ऊपर नक्षत्र-चिन्ह हो तो जातक किसी का कत्ल करता है। यदि हाथ मे अन्य लक्षण भी अशुभ हो तो जातक हिंसक-प्रकृति का होता है।

चित्र ४०—यदि शनि-क्षेत्र पर जाल-चिन्ह हो तो जातक अत्यन्त निराश, भाग्य-हीन तथा दरिद्र होता है। उसे वृद्धावस्था में अधिक आर्थिक कठिनाइया उठानी पड़ती है। ऐसे चिन्ह वाला जातक जेल यात्रा भी करता है। वह व्यभिचारी भी होता है।
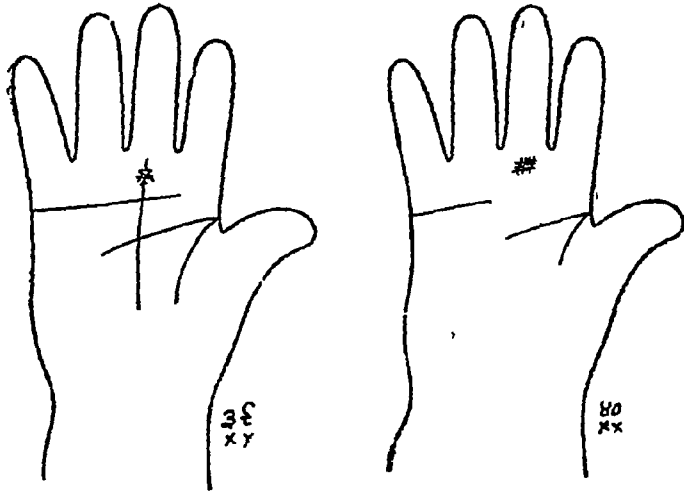
चित्र ४१—यदि शनि-क्षेत्र पर 'वृत्त-चिन्ह' हो तो कुछ विद्वान उसे जातक की सफलता का लक्षण बताते हैं, परन्तु अन्य विद्वानो के मत से यह चिन्ह शुभ फलकारक सिद्ध नही होता।
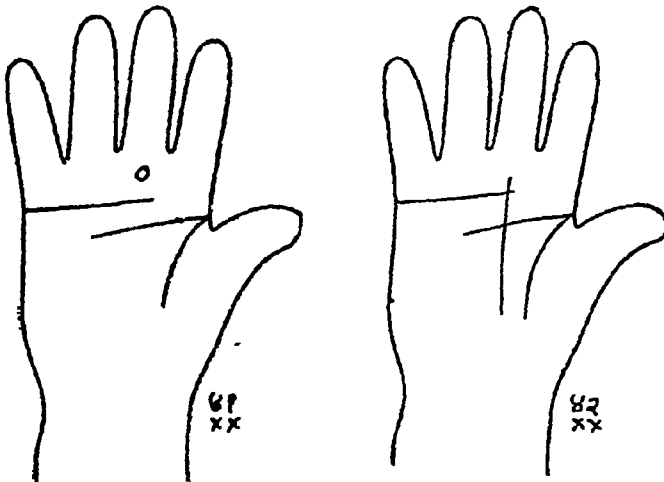
चित्र ४२-यदि शनि क्षेत्र पर 'विन्दु-चिन्ह' हो तो जातक दुष्प्रवृत्तियो का शिकार होता है। वे दुष्प्रवृत्तिया उसे किस दिशा मे ले जावेंगी, इसके वारे मे मस्तक-रेखा तथा हृदय-रेखा की स्थिति को देखकर विचार करना चाहिए।

चित्र ४३—यदि शनि-क्षेत्र पर अधिक कोण-चिन्ह हो तो जातक आत्मिक उन्नति के लिए एकान्त मे रहने वाल', योगी, साधक तथा जितेन्द्रिय होता है। वह ससारिकता से कोई मोह नही रखता।
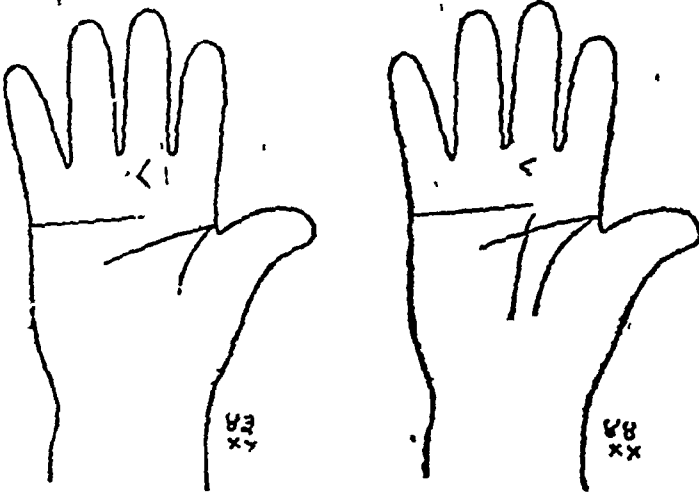
चित्र ४४—यदि शनि-क्षेत्रस्थ कोण-चिन्ह समकोण आकृति का हो तो जातक सांसारिक कार्यों मे लिप्त तो रहता है, परन्तु वह दार्शनिको जैसी बातें करता है। यदि न्यूनकोण हो तो जातक में तमोगुण की मात्रा अधिक होती है और उसके मन की स्थिति डांवाडोल वनी रहती है। उसका भाग्योदय भी नीच-कर्म अथवा नीचों की संगति से ही होता है।

चित्र ४५—यदि मध्यमा और तर्जनी उगली के मूल में दोनो के बीच वाले स्थान पर निर्दोष 'द्वीप-चिन्ह' खड़ा हुआ हो तो जातक दृढ प्रतिज्ञ, बुद्धिमान्, सुन्दर, धनवान, यशस्वी, स्त्री-पुत्रादि के सुख को प्राप्त करने वाला तथा सब लोगो का प्रिय होता है।
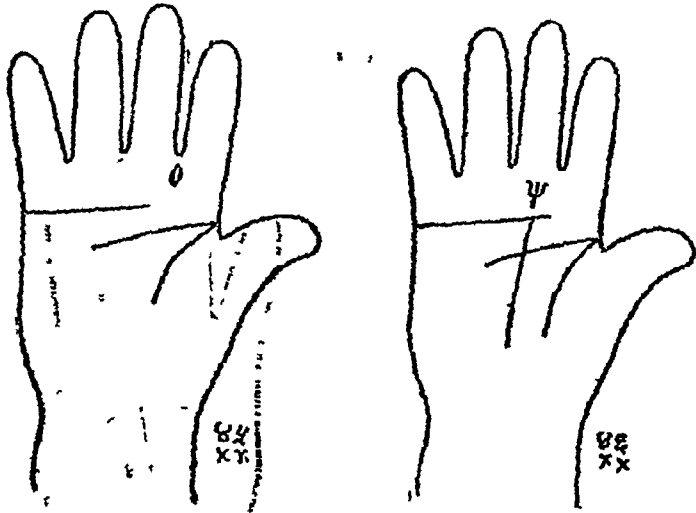
चित्र ४६—यदि शनि-क्षेत्र पर 'त्रिशूल-चिन्ह' हो तो जातक अत्यन्त धनी, सुखी, गुणवान, नीतिज्ञ, उदार, सरल तथा परोपकारी होता है। यदि भाग्य-रेखा स्पष्ट हो और त्रिशूल-चिन्ह भी निर्दोष हो तो उसका प्रभाव और अधिक बढ जाता है। यदि त्रिशूल-चिन्ह की रेखाए खडित अथवा अस्पष्ट हों तो उसके प्रभाव में भी उतनी ही कमी आ जाती है

सूर्य-क्षेत्र पर हस्त-चिन्हों का प्रभाव

सूर्य-क्षेत्र की अवस्थिति अनामिका उंगली के नीचे मानी गई हैं। इसी को रवि-क्षेत्र तथा अग्रेजी में Mount of the Sun भी कहा जाता है। अनामिका उगली को सूर्य उंगली माना जाता है।

पाश्चात्य-विद्वानों के मत से इस क्षेत्र पर पाये जाने वाले हस्त-चिन्हो का जातक के ऊपर जो प्रभाव पड़ता है, उसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाठको की सुविधा के लिए सूर्य-क्षेत्रस्थ सभी हस्त-चिन्हो के चित्र भी विवरण के साथ ही दिये गए हैं। इन चित्रो मे अकित मुख्य रेखाए केवल प्रतीक के रूप मे ही प्रदर्शित की गई हैं, अत पाठको को उनके स्वरूप पर कोई ध्यान न देकर केवल सूर्य-क्षेत्रस्थ हस्त-चिन्हो के स्वरूप पर ही ध्यान देना चाहिए, परन्तु जहां हस्त-चिन्हो के साथ मुख्य रेखाओ की स्थिति का भी वर्णन हुआ है, वहा उनकी यथार्थ स्थिति का ही चित्रण किया गया है।

चित्र ४७—यदि सूर्य-क्षेत्र पर क्रास-चिन्ह हो तो वह जातक के लिए धन-हानि, असफलता एव निराशा का सूचक होता है। ऐसे चिन्ह वाले व्यक्ति प्राय. गलतिया किया करते हैं, जिसके कारण उन्हें हानि उठानी पड़ती है। सट्टे आदि का काम करने पर उन्हे भारी
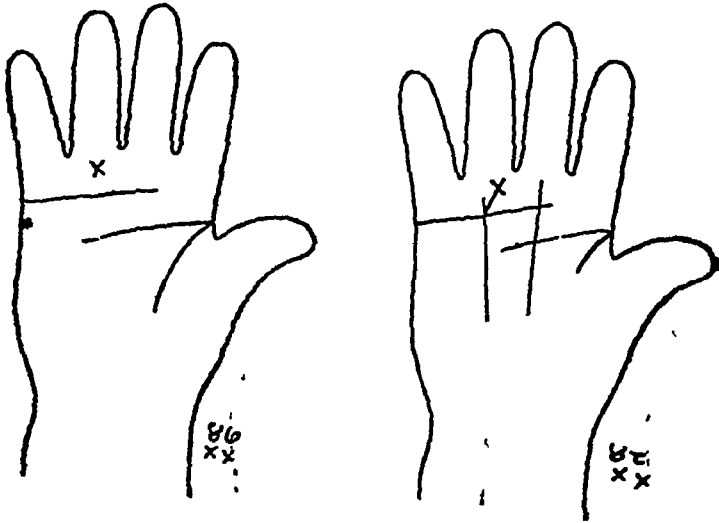
घाटा उठाना पड़ता है। यदि किसी स्त्री के हाथ मे सूर्य-क्षेत्र पर क्रास-चिन्ह हो तो वह धन के लिए बहुतो के प्राण भी ले सकती है। ऐसे चिन्ह वाली स्त्री यदि अत्यन्त सुन्दर हो, तो भी उसके प्रेम जाल में नही फसना चाहिए।

चित्र ४८—यदि सूर्य-रेखा उत्तम तथा निर्दोष हो और सूर्य-क्षेत्र-स्थ क्रास-चिन्ह सूर्य-रेखा से योग कर रहा हो तो जातक धार्मिक प्रवृत्ति का होता है और उसे सफलता भी प्राप्त होती है। अच्छी सूर्य-रेखा के होने पर तथा क्रास-चिन्ह का उससे संयोग होने पर क्रास-चिन्ह के फल मे कमी आ जाती है।

चित्र ४९—यदि सूर्य-रेखा खराब हो तथा सूर्य-क्षेत्रस्थ क्रास-चिन्ह उससे योग कर रहा हो तो जातक धर्मान्ध-प्रकृति का होता है। सूर्य-रेखा से सयोग होने के कारण क्रास-चिन्ह के अशुभ फल मे कुछ कमी तो आती है, परन्तु सूर्य-रेखा का सदोष होना जातक से ऐसी भूलें
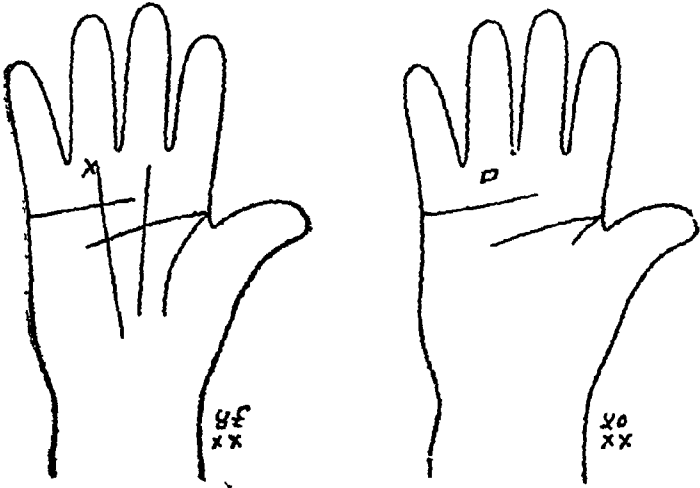
कराता रहता है, जिससे उसे जीवन के विभिन्न क्षेत्रो मे असफलताओं का सामना अधिक करना पडता है।

चित्र ५०—यदि सूर्य-क्षेत्र पर 'चतुष्कोण' (वर्ग) चिन्ह हो तो जातक मे यश-लिप्सा अधिक नही होती और अत्यधिक धनी हो जाने पर भी उसमे अहकार नही आता।

चित्र ५१—यदि सूर्य-क्षेत्र पर द्वीप-चिह्न हो तो ऐसा जातक ईर्ष्यालु, उत्साह-हीन, उदास, निराश तथा रोग-प्रकृति का होता है। उसे पित्त की बीमारिया होती हैं और सभी कार्यो मे असफलता मिलती रहती है।
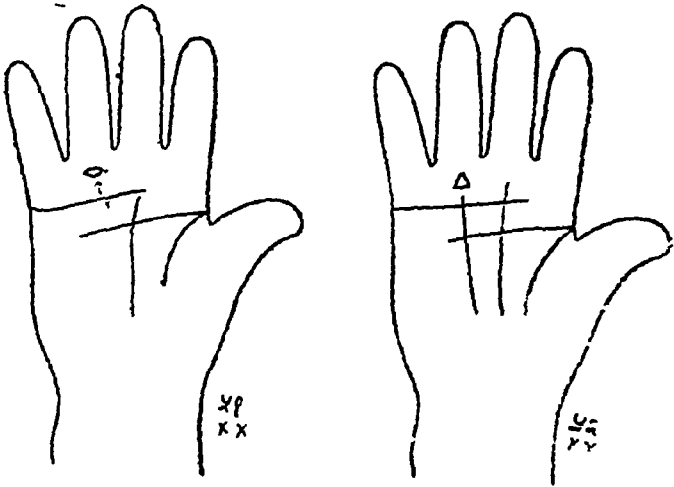
चित्र ५२—यदि सूर्य-क्षेत्र पर त्रिकोण-चिह्न हो तो जातक को ख्याति प्राप्त होने पर भी घमण्ड नही होता है। वह अपनी बुद्धि अथवा कला का व्यावहारिक उपयोग करता है, जिसके कारण उसे यश तथा सफलता प्राप्त होती है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति कलाकार होते हैं तथा औषधियो के व्यवसाय मे भी सफल होते हैं।

चित्र ५३—यदि सूर्य-पर्वत के सर्वोच्च स्थान पर 'नक्षत्र-चिह्न' हो तो जातक अत्यधिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करता है, फिर भी उसका व्यक्तिगत जीवन सुखपूर्ण नही होता। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति वृद्धावस्था मे धन तथा उच्चपद को प्राप्त करते हैं। इस स्थिति को पाने के लिए उन्हे जीवन भर परिश्रम करना पडता है, जिसके कारण उनका स्वास्थ्य गिर जाता है और मन मे हर समय अशान्ति बनी रहती है।
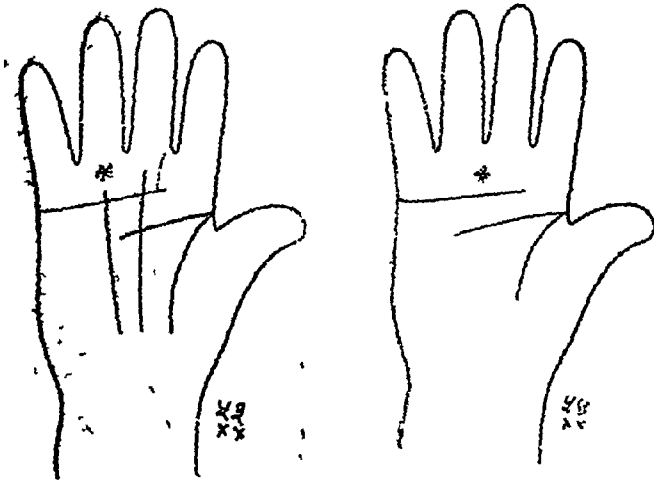
चित्र ५४—यदि सूर्य-क्षेत्र की सीमा के आसपास कही नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक प्रभावशाली व्यक्तियो के सम्पर्क मे तो आता है, परन्तु स्वय किसी उच्चपद को प्राप्त नही कर पाता।

चित्र ५५—यदि सूर्य-क्षेत्र पर सूर्य-रेखा के ऊपर नक्षत्र-चिह्न हो तो वह अत्यन्त श्रेष्ठ फलदायक होता है। ऐसे चिह्न-वाला जातक यशस्वी, बुद्धिमान, सम्माननीय, धनी, गुणी तथा लोक-प्रसिद्ध होता है। इसका विस्तृत वर्णन सूर्य-रेखा खण्ड मे किया जा चुका है।
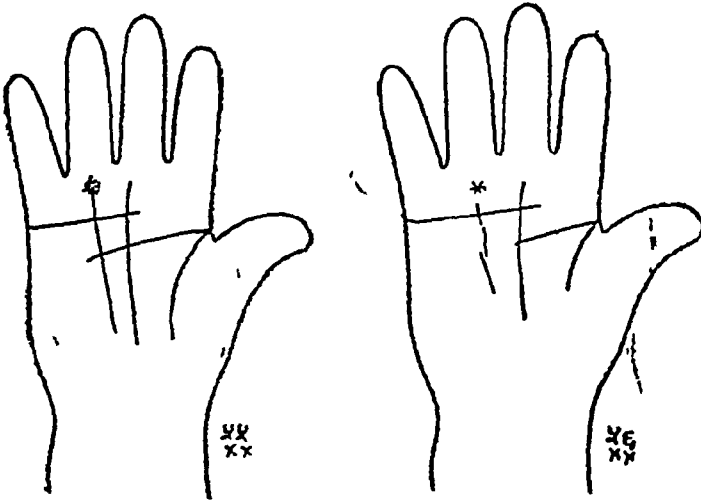
चित्र ५६—यदि सूर्य-रेखा अच्छी न हो तथा सूर्य-क्षेत्र के मध्य भाग मे नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक बहुत साहस पूर्ण कार्य करके धन पैदा करता है। यदि सूर्य-रेखा अच्छी हो तो उसे सामान्य युक्तियो द्वारा शुभ मार्ग से ही धन की प्राप्ति होती रहती है।

चित्र ५७—अनामिका उगली के बिल्कुल मूल मे नक्षत्र-चिह्न हो तो वह जातक को शुभफल तो देता है, परन्तु अधिक प्रभावशाली नही होता।

चित्र ५८—यदि सूय-क्षेत्र पर 'जाल-चिह्न' हो तो जातक अत्यन्त घमण्डी होता है तथा प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए ऊट-पटाग काम करता रहता है। ऐसे चिह्न वाला जातक कम योग्य अथवा अयोग्य होते हुए भी अपने को बहुत योग्य समझता है। वह स्वभाव का कुटिल भी होता है।
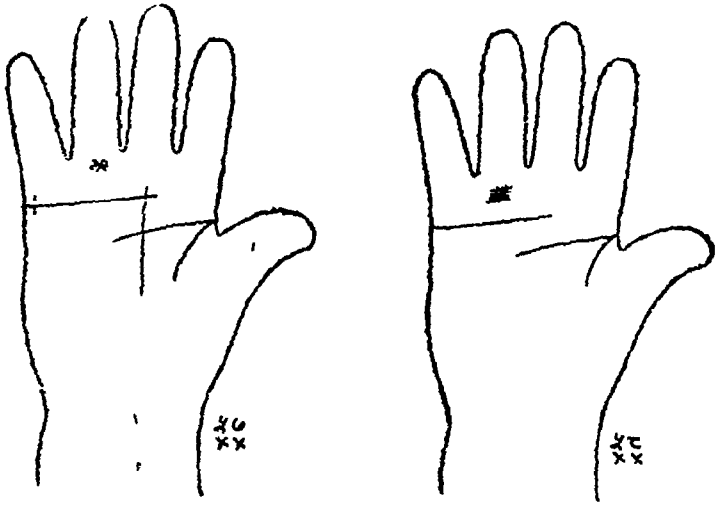
चित्र ५९—यदि सूर्य-क्षेत्र पर 'वृत्त-चिह्न' पूर्ण तथा स्पष्ट हो तो जातक की ख्याति अत्यधिक बढती है। वह सब प्रकार के सुख एवं सफलताओं को प्राप्त करता है।
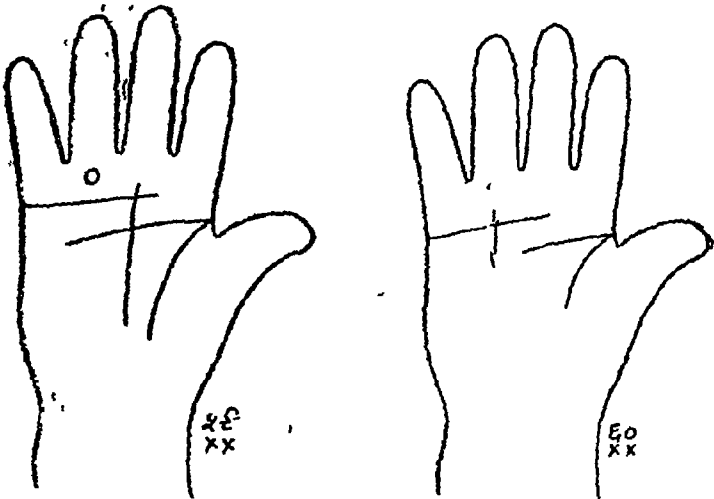
चित्र ६०—यदि सूर्य-क्षेत्रस्थ वृत्त-चिह्न अस्पष्ट हो तथा सूर्य-रेखा भी निर्बल हो तो उसे अशुभ लक्षण समझना चाहिए। ऐसे चिह्न वाले जातक के नेत्रो की ज्योति वृद्धावस्था मे क्षीण हो जाती है।

चित्र ६१—यदि सूर्य-क्षेत्र पर 'विन्दु-चिह्न' हो तो जातक की मान-प्रतिष्ठा नष्ट हो जाती है। सूर्य-क्षेत्र पर बिन्दु-चिह्न का होना अत्यन्त अशुभ लक्षण माना जाता है।
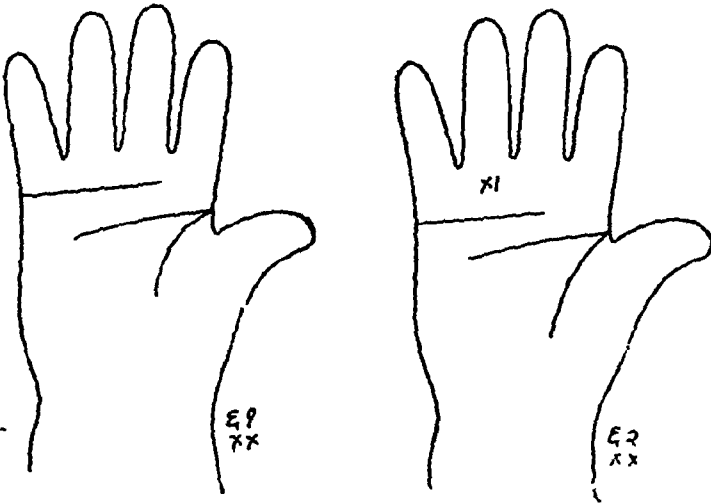
चित्र ६२—यदि सूर्य-क्षेत्र पर क्रास-चिह्न के समीप ही एक छोटी-सी सरल रेखा भी खडी हो तो वह मनुष्य धनवान तथा लोभी होता है। वह हर समय अपनी सम्पत्ति को वढाने की चिन्ता में ही डूबा रहता है।

चित्र ६३—यदि सूर्य-क्षेत्र तथा शनि-क्षेत्र के मध्यवर्ती स्थान मे एक अथवा दो वृत्त-चिह्न हो तो उनके प्रभाव से जातक अपने सम्मान की रक्षा करने के लिए निरन्तर चिन्तित तथा दुःखी बना रहता है।
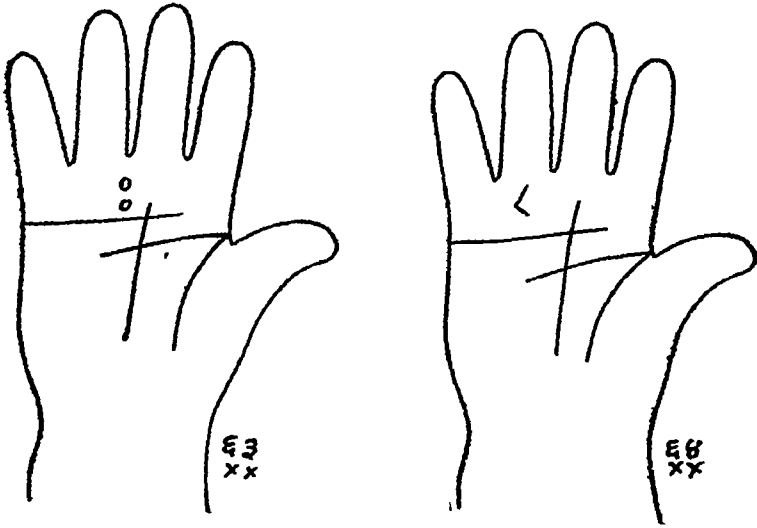
चित्र ६४—यदि सूर्य-क्षेत्र पर अधिक 'कोण-चिह्न' हो तो जातक श्रेष्ठ कवि, लेखक, शिल्पकार तथा यश-प्रतिष्ठा एव धन को प्राप्त करने वाला होता है।

चित्र ६५—यदि सूर्य-क्षेत्रस्थ कोण-चिह्न समकोण हो तो जातक अपनी कुल-मर्यादा को यथावत् बनाये रखता है। यदि न्यून कोण हो तो जातक अपनी कुल-मर्यादा को हानि पहुचाकर निन्द्य-कर्म करता और अपयश का भागी होता है।

बुध-क्षेत्र पर हस्त-चिह्नों का प्रभाव

बुध-क्षेत्र की अवस्थिति कनिष्ठा उगली के नीचे मानी गई है। इसी को अग्रेजी मे Mount of the Mercury भी कहा जाता है। कनिष्ठा उगली को बुध की उगली माना जाता है।

पाश्चात्य-विद्वानो के मत से इस क्षेत्र पर पाये जाने वाले हस्त-चिह्नो का जातक के ऊपर जो प्रभाव पडता है, उसे सामने लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाठको की सुविधा के लिए बुध-क्षेत्रस्थ सभी हस्त-चिह्नों के चित्र भी विवरण के साथ ही दिये गए हैं। इन चिह्नो मे अकित मुख्य रेखाए केवल प्रतीक के रूप मे ही प्रदर्शित की गई है, अत पाठको को उनके स्वरूप पर कोई ध्यान न देकर केवल सूर्य-क्षेत्रस्थ हस्त चिह्नो के स्वरूप पर ही ध्यान देना चाहिए। परन्तु जहा हस्त-चिह्नो के साथ मुख्य रेखाओ की स्थिति का भी वर्णन हुआ है, वहां उनकी यथार्थ-स्थिति का ही चित्रण किया गया है।
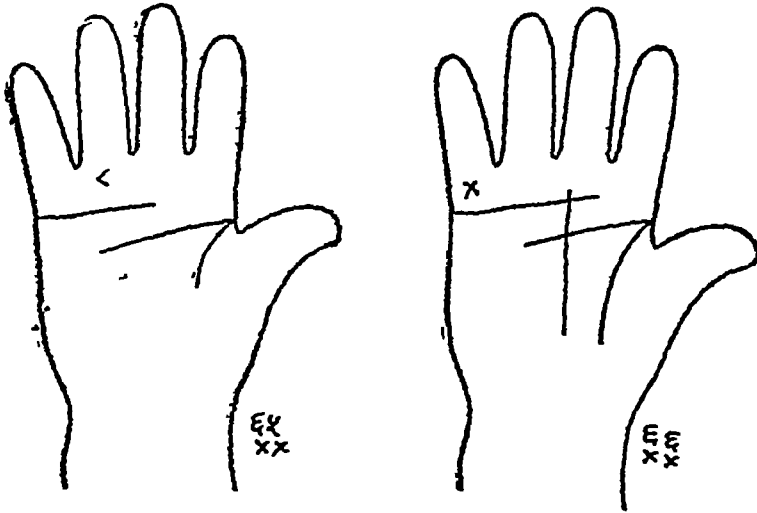
चित्र ६६—यदि बुध-क्षेत्र पर क्रास-चिह्न हो तो जातक अत्यधिक चालाक, चोर, बेईमान, ठग तथा धोखेवाज होता है, परन्तु वह ऊपर से देखने मे वहुत विनम्र तथा भला जान पडता है। वह दुरगा व्यव-हार करता है। उसके मन मे कुछ तथा वचन मे कुछ और होता है। यदि कनिष्ठा उगली टेढी हो तो ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति चोर तथा दूसरो को धोखा देकर स्वय लाभ उठाने की प्रवृत्ति वाला होता है। चोर मनुष्य की हृदय-रेखा शनि के पर्वत तक हो पहुचकर ठहर जाती है।

चित्र ६७—यदि बुध-क्षेत्र पर छोटे-छोटे कई क्रास-चिह्न हों तो ऐसे जातक मे पूर्वोक्त अवगुण तो होते ही है, साथ हो उसमे कुछ गुप्त दुर्गुण भी होते हैं।

यदि बुध का पर्वत नीचा हो तो एक अथवा अधिक नक्षत्र-चिह्नों वाला जातक मन्दबुद्धि तथा हमेशा सुस्त रहने वाला भी होता है।
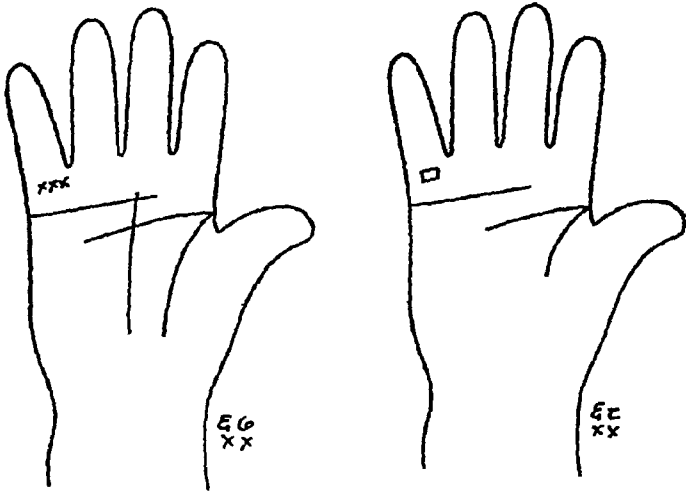
चित्र ६८—यदि बुध-क्षेत्र पर चतुष्कोण (वर्ग) चिह्न हो तो जातक स्थिर स्वभाव का होता है। यदि जातक व्यवसायी है, तो यह चिह्न उसकी भारी आर्थिक-घाटे से रक्षा करता है।

चित्र ६९—यदि बुध-क्षेत्र पर द्वीप-चिह्न हो तो जातक को व्यवसाय, विज्ञान अथवा विद्या के क्षेत्र मे बहुत कम सफलता प्राप्त होती है। वह बार-बार प्रयास करता और बार-बार विफल होता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति चालाक, धूर्त तथा ठग भी होते है। ऐसे चिह्न वाला पुरुष अपने किसी सम्बन्धी की स्त्री से अनुचित प्रेम-सम्बन्ध भी रखता है। इसे राज्य-दण्ड प्राप्त होने की भी सम्भावना रहती है।
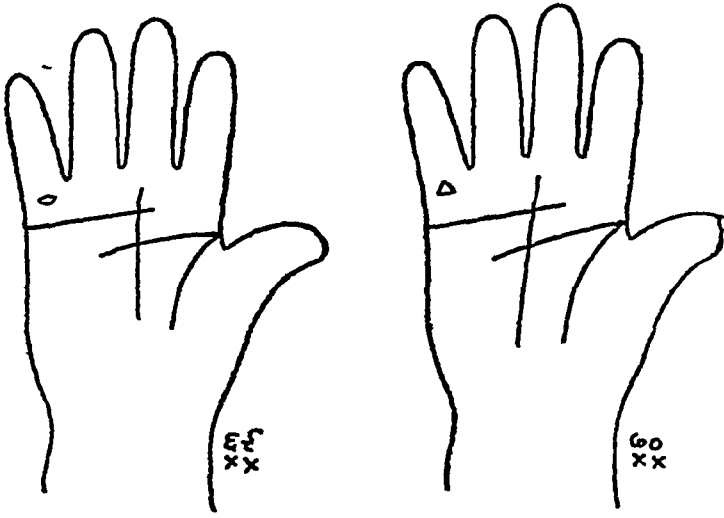
चित्र ७०—यदि बुध-क्षेत्र पर त्रिकोण-चिह्न हो तो जातक राजनीति कुशल तथा व्यवसाय-कुशल होता है और उसे व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन मे सफलता प्राप्त होती है। ऐसे लोग यशस्वी, विद्वान्, साहसी, सन्तोषी, परोपकारी, दृढ निश्चयी तथा श्रेष्ठ बुद्धि के होते हैं। वे राजदूत आदि का कार्य करने मे भी कुशल सिद्ध होते हैं। इनमे भाषण देने की अपूर्व शक्ति होती है, परन्तु इतने पर भी ये शत्रुओ द्वारा पीडित किए जाते हैं। ऐसे लोगो को हाथ मे अन्य अशुभ लक्षण होने पर व्यभिचार आदि के दोष मे राजदण्ड भी भुगतना पडता है।

चित्र ७१—यदि बुध-क्षेत्र के उन्नत भाग पर 'नक्षत्र-चिह्न' हो तो जातक अत्यन्त बुद्धिमान, व्यवसाय-कुशल तथा अपने क्षेत्र मे सफलता प्राप्त करने वाला होता है। यदि हाथ मे अन्य लक्षण जातक को बेईमान बनाने वाले हो तो इस नक्षत्र-चिन्ह के प्रभाव मे जातक की बेईमानी और चोरी की प्रवृत्ति और अधिक बढ जाती है। यदि अन्य लक्षण शुभ हो तो जातक सद्गुण सम्पन्न तथा बुद्धिमान होता है।

इस चिन्ह वाले जातक नीति-कुशल होते हुए भी व्यभिचारी पाये जाते हैं।
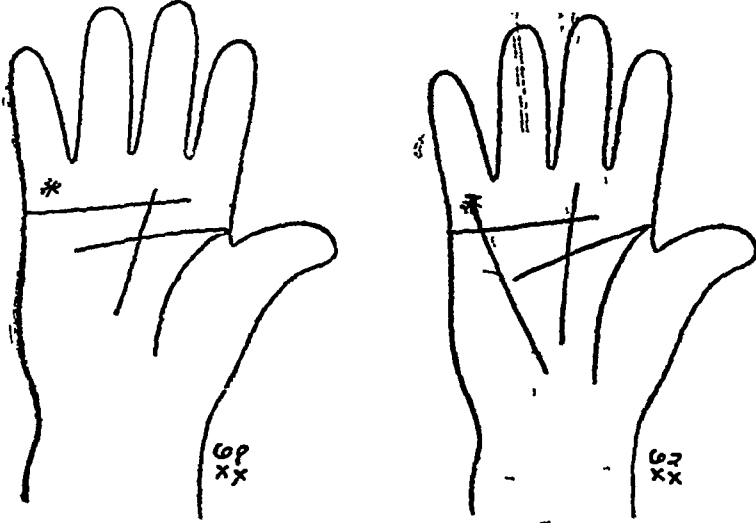
चित्र ७२—यदि स्वास्थ्य-रेखा जीवन-रेखा से अलग हटकर आरम्भ हुई हो और वह निर्दोष स्थिति मे बुध-क्षेत्र पर आई हो तथा उसके अन्त में बुध-क्षेत्र के ऊपरी भाग पर नक्षत्र-चिन्ह हो तथा बुध-क्षेत्र भी शुभ हो तो जातक को अपने जीवन मे निरन्तर सफलता प्राप्त होती रहती है। यह चिह्न व्यवसाइयो के लिए अत्यन्त शुभ फल-दायक होता है।

चित्र ७३—यदि बुध-क्षेत्र पर जाल-चिह्न हो तो मनुष्य विवेक-हीन, अस्थिर-बुद्धि तथा वेईमान स्वभाव का होता है। यदि हाथ के अन्य लक्षण अशुभ हो तो वेईमानो के मामले मे जातक को जेल यात्रा भी करनी पडती है अथवा किसी समय उसे आत्म-हत्या कर लेने को विवश होना पडता है। ऐसे चिह्न वाले लोग भी अपने किसी सम्बन्धी की स्त्री से अनुचित प्रेम-सम्बन्ध रखते है।
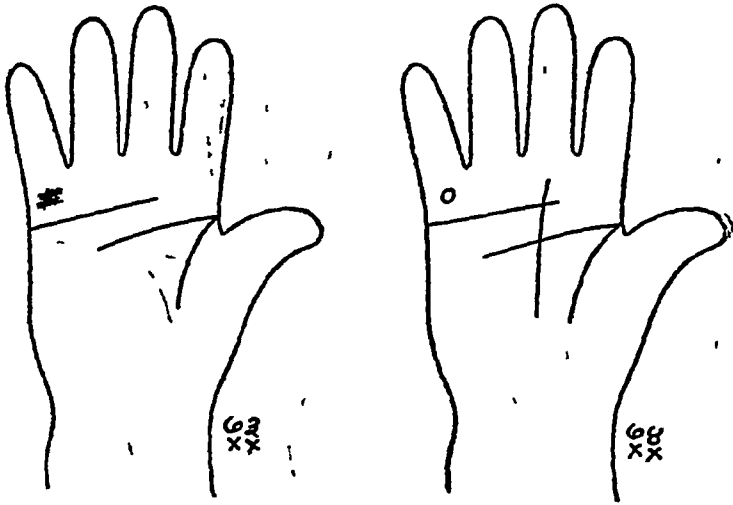
चित्र ७४—यदि वुध-क्षेत्र पर 'वृत्त-चिह्न' हो तो उसे अत्यन्त अशुभ लक्षण समझना चाहिए। यदि चिह्न स्पष्ट हो तो किसी जहरोले पदार्थ के खाने से जातक को मृत्यु हो जाती है। ऐसे चिह्न वाला जातक कुटिल, धूर्त, वेईमान तथा विश्वास न करने योग्य होता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति को अकस्मात् ही हृदय-गति रुक जाने से मृत्यु होना सम्भव हो सकता है।

चित्र ७५—यदि, बुध-क्षेत्र पर विन्दु-चिह्न हो तो जातक के व्यवसाय मे गहरा घाटा पहुचता है। यदि यह चिह्न वडा हो तो जातक के शरीर मे किसी दुर्घटना के कारण चोट भी लग सकती है। ऐसे चिह्न वाला जातक वेईमान, धूर्त, चोर, विश्वासघाती तथा लफगा भी होता है।

चित्र ७६—यदि वुध-क्षेत्र पर अधिक कोण चिन्ह हो तो जातक व्यवसाय अथवा कला के क्षेत्र मे अत्यधिक सफलता प्राप्त करता है। ऐसा व्यक्ति यश, धन, मान-प्रतिष्ठा आदि जीवन के सभी क्षेत्रो मे उन्नति करता चला जाता है।
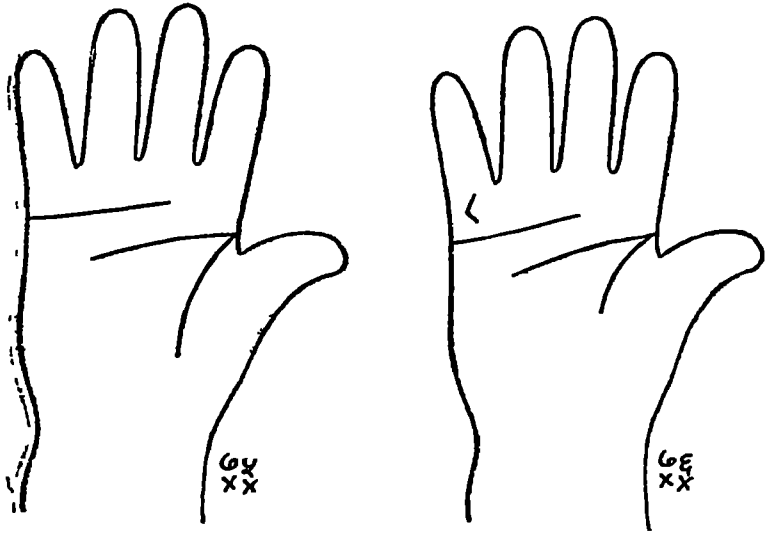
चित्र ७७—यदि बुध क्षेत्रस्थ 'कोण-चिन्ह' समकोण हो तो जातक मितव्ययी तथा अपनी पैतृक सम्पत्ति को सुरक्षित बनाये रखने वाला होता है।
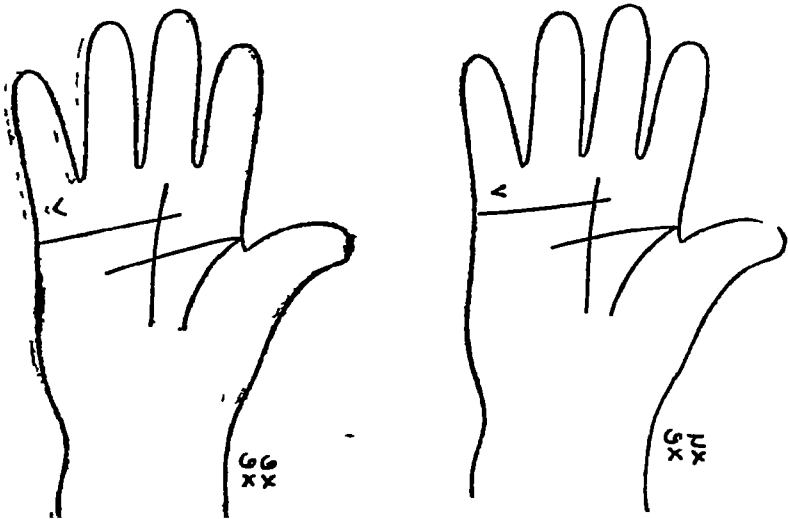
चित्र ७८—यदि बुध-क्षेत्रस्थ कोण-चिन्ह न्यून कोण वाला हो तो जातक अत्यधिक खर्चीले स्वभाव का होता है और वह अपने पैतृक घर-द्वार, जमीन-जायदाद को भी बेच डालता है।

चित्र ७९—यदि बुध-क्षेत्र उच्च हो और बुध तथा सूर्य-क्षेत्र के बीच मे त्रिकोण-चिन्ह हो तो जातक श्रेष्ठ व्यवसायी तथा कुशल वैज्ञानिक होता है, उसे रत्नादि के व्यवसाय मे विपुल सम्पत्ति प्राप्त होती है।
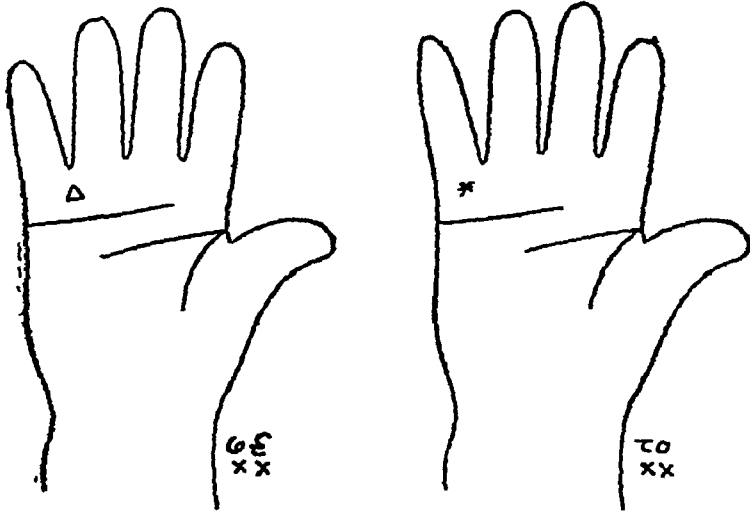
वह अत्यन्त विद्वान्, परोपकारी, दानशील तथा जन-सेवी होता है। राजनीतिक क्षेत्र मे वह श्रेष्ठ वक्ता तथा उन्नति करने वाला होता है। यदि उक्त त्रिकोण-चिह्न का झुकाव सूर्य-क्षेत्र की ओर हो तो जातक के कर्म-क्षेत्र मे निरन्तर बाधाए आती रहती हैं। यदि सूर्य तथा बुध-क्षेत्र दोनो ही उच्च हो तो त्रिकोण का शुभ फल प्राप्त होता है। यदि दोनो क्षेत्र अत्यधिक उच्च हो तो फल अशुभ हो जाता है। यदि दोनो क्षेत्र निम्न हो तो श्रेष्ठ फल प्राप्त करते हुए भी जातक को शत्रु-ओ से पीडित रहना पडता है और जेल-यात्रा का योग भी उपस्थित

होता है। यदि सूर्य-क्षेत्र उच्च और बुध-क्षेत्र निम्न हो तो व्यापार में धन हानि होने का दुख होता है, परन्तु साहस की अधिकता से जातक पुन. व्यवसाय मे प्रवृत्त होकर अपनी उन्नति कर लेता है।

चित्र ८०—यदि कनिष्ठा उगली तर्जनी उगली के बराबर लम्बी तथा नुकीली हो तथा बुध-क्षेत्र के बीज मे नक्षत्र-चिन्ह भी हो तो जातक अत्यन्त विद्वान्, नीतिज्ञ, दयालु, मधुरभाषी, परोपकारी, स्वस्थ तथा दीर्घजीवी होता है। वह मत्री अथवा राजदूत का पद प्राप्त करता है। उसे अपनी ससुराल से भी बहुत धन मिलता है।

मंगल-क्षेत्र पर हस्त-चिन्हों का प्रभाव

प्रथम मगल-क्षेत्र की अवस्थिति बुध-क्षेत्र तथा चन्द्र-क्षेत्र के मध्य मे तथा द्वितीय मगल-क्षेत्र की अवस्थिति गुरु क्षेत्र एव शुक्र-क्षेत्र के मध्य भाग मे मानी गई है। अग्रेजी भाषा मे इन क्षेत्रो को क्रमशः Lower Mars तथा Upper Mars कहा जाता है। इन दोनो के बीच के क्षेत्र को 'मगल का मैदान' अथवा अग्रेजी मे 'Plain of Mars' कहा जाता है। चित्र सख्या २ मे इन क्षेत्रो की स्थिति को स्पष्ट किया जा चुका है।

पाश्चात्य-विद्वानो के मत से मगल-क्षेत्रो पर पाये जाने वाले हस्त-चिन्हो का जातक के ऊपर जो प्रभाव पडता है, उसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाठको की सुविधा के लिए मगल-क्षेत्रस्थ सभी हस्त-चिन्हो के चित्र भी विवरण के साथ ही दिये गए है। इन चित्रो मे अंकित मुख्य रेखाएं केवल प्रतीक के रूप मे ही प्रदर्शित की गई है, अत पाठको को उनके स्वरूप पर कोई ध्यान न देकर केवल मगल-क्षेत्रस्थ हस्त-चिन्हों के स्वरूप पर ही ध्यान देना चाहिए, परन्तु जहा हस्त-चिन्हो के साथ

मुख्य रेखाओ की स्थिति का भी वर्णन हुआ है, वहा उनकी यथार्थ स्थिति का ही चित्रण किया गया है।

चित्र ८१—यदि मगल के प्रथम क्षेत्र पर क्रास-चिन्ह हो तो जातक के अनेक शत्रु होते है। यदि प्रथम मगल का क्षेत्र उन्नत हो तो जातक स्वय भी बहुत झगडालू होता है। ऐसे चिन्ह वाले जातक को चोट लगने तथा भय की आशका रहती है। उसे किसी अन्य पुरुष के द्वारा हानि भी पहुचाई जाती है।
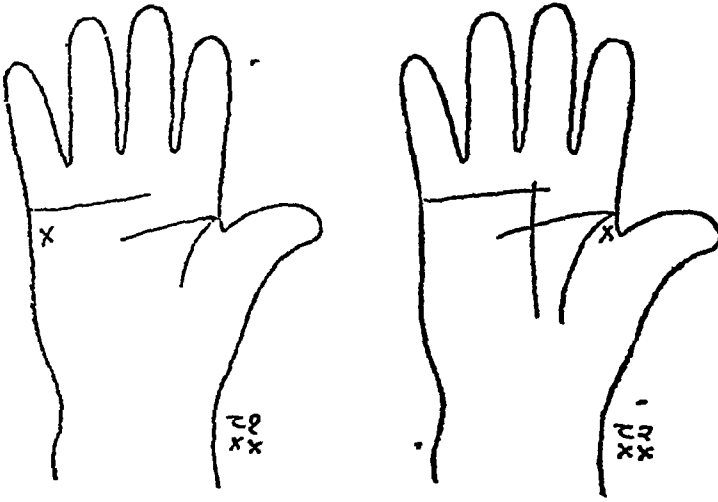
चित्र ८२—यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र पर 'क्रास-चिह्न हो तो जातक मे उपर्युक्त दुर्गुण अधिक मात्रा मे होते है और उसका फल भी विशेष भयानक होता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति को जेल-यात्रा की सम्भावना भी रहती है।

चित्र ८३—यदि द्वितीय मगल-क्षेत्रस्थ क्रास-चिह्न बेढगी बनावट का हो तो जातक का स्वभाव अत्यन्त तेज होता है और उसी तीव्रता के कारण वह आत्महत्या करने की ओर भी प्रवृत्त होता है।
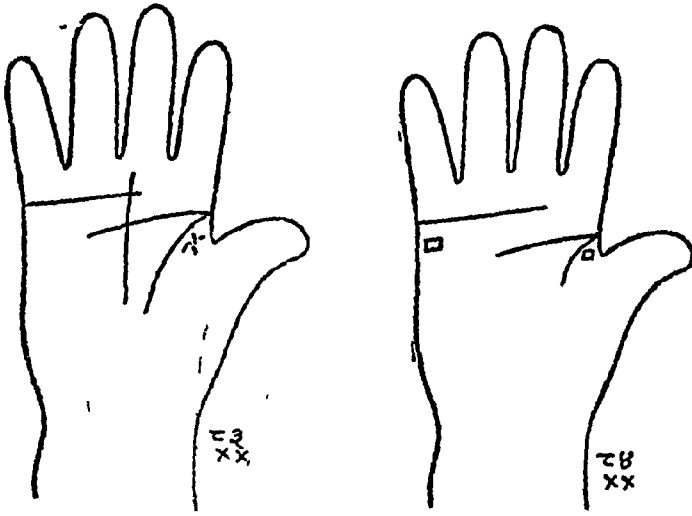
चित्र ८४—यदि मगल का प्रथम क्षेत्र अधिक उन्नत हो और उस पर 'चतुष्कोण' (वर्ग) चिह्न हो तो जातक अपने उग्र क्रोधी स्वभाव पर सयम कर पाने मे समर्थ होता है, परन्तु यदि उक्त क्षेत्र निम्न हो तो जातक अत्यन्त क्रोधी स्वभाव का होता है, जिसके कारण उसके शत्रु उसके ऊपर प्राण घातक हमला करते है, परन्तु इस चिह्न की उपस्थिति के कारण जातक की प्राणरक्षा हो जाती है। यो, किसी भी मगल-क्षेत्र पर चतुष्कोण-चिह्न का होना शुभ सूचक माना गया है। चित्र ८४ मे दोनो मगल-क्षेत्रो पर चतुष्कोण-चिह्न के स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है।

चित्र ८५—किसी भी मगल-क्षेत्र पर 'द्वीप-चिह्न' हो तो जातक को शारीरिक एव मानसिक दुर्बलता का शिकार होना पड़ता है। ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति डींगें तो बहुत लम्बी-चौडी हाकता है, परन्तु यथार्थ में वह डरपोक तथा समय पर पीठ दिखाने वाला होता है।

चित्र मे दोनो ही मगल-क्षेत्रों पर द्वीप-चिह्न की उपस्थिति को प्रदर्शित किया गया है।
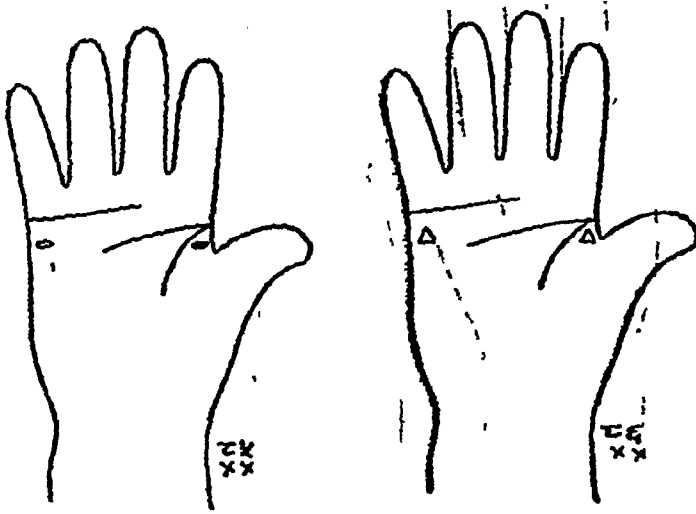
चित्र ८६—किसी भी मगल-क्षेत्र पर 'त्रिकोण-चिह्न' हो तो जातक सकटो का धैर्यपूर्वक मुकावला करता है और उन पर विजय पाने की युक्ति निकालता है। यह वहादुरी का उत्तम चिह्न है। यदि किसी सैनिक के हाथ पर यह चिह्न हो तो उसे अत्यन्त वीर, धीर, साहसी तथा युद्ध कला का श्रेष्ठ जानकार समझना चाहिए।

चित्र ८७—यदि मगल के प्रथम क्षेत्र पर 'नक्षत्र-चिह्न' हो तो जातक धैर्यपूर्वक निरन्तर परिश्रम करता रहता है, जिसके कारण उसे सफलता प्राप्त होती है, परन्तु यदि मगल का क्षेत्र अधिक उन्नत हो और हाथ मे अन्य अशुभ लक्षण भी हो तो ऐसे चिह्न वाला जातक किसी की हत्या करता है। यदि मगल का प्रथम क्षेत्र सामान्य उन्नत हो और अन्य अशुभ लक्षण भी हो तो जातक की स्वय किसी के द्वारा हत्या की जाती है।
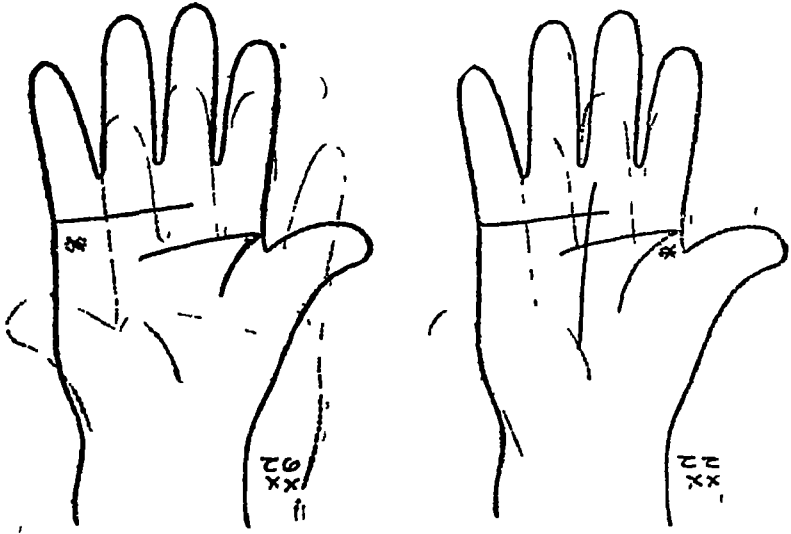
चित्र ८८—यदि मंगल के द्वितीय-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक द्वारा किसी युद्ध क्षेत्र में वीरता प्रदर्शित किये जाने के कारण यश तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। ऐसे व्यक्ति को किसी मोटर, रेल, साइकिल आदि गाडी से गहरी चोट भी लगती है।

चित्र ८९—यदि मस्तक-रेखा के समानान्तर जाने वाली किसी सीधी रेखा के ऊपर द्वितीय मगल-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिह्न हो तो वह जातक के किसी अत्यन्त प्रिय स्वजन (माता, पिता आदि) की मृत्यु का सूचक होता है।

चित्र ९०—मगल के किसी भी क्षेत्र पर 'जाल-चिह्न' हो तो जातक को चोट लगने के कारण रक्त-स्राव का भय रहता है। यदि मगल-क्षेत्र अधिक उन्नत हो तो जातक किसी की हत्या करने का इरादा करता है। चित्र मे दोनो मगल-क्षेत्रो पर जाल-चिह्न को प्रदर्शित किया गया है। यदि दोनो मंगल-क्षेत्रो पर जाल-चिह्न हो तो जातक क्रोधावेश मे
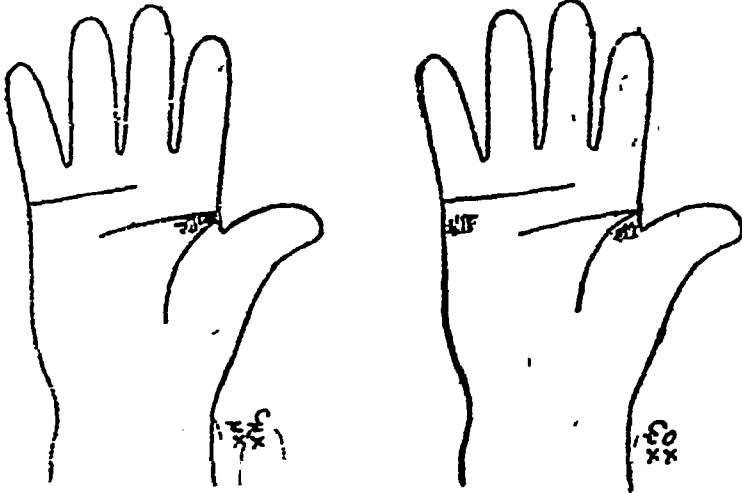
अनेक प्रकार की दुर्घटनाएं कर बैठता है। ऐसे चिह्नो वाला जातक पेट तथा आंतों के रोग का रोगी, स्वार्थी, निर्लज्ज, धूर्त, मूर्ख तथा बेईमान होता है।
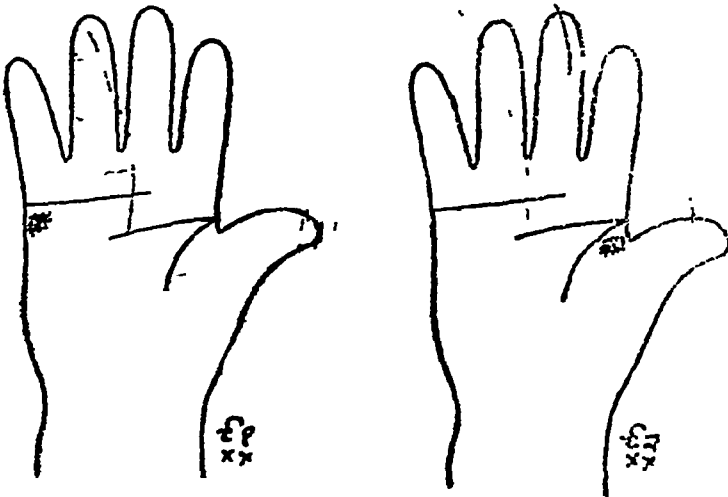
चित्र ६१—यदि प्रथम मगल-क्षेत्र पर 'जाल-चिह्न' हो तो जातक की अचानक मृत्यु होती है अथवा वह आत्म-हत्या कर लेता है।

चित्र ६२—यदि द्वितीय मंगल-क्षेत्र पर जाल-चिह्न हो तो जातक को मुकद्दमे-बाजी मे फसना पड़ता है और वह किसी समय आत्म हत्या कर लेने की इच्छा भी करता है।

चित्र ६३—यदि मंगल के मैदान में नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक को रेल-दुर्घटना अथवा भूकम्प आदि के कारण हानि उठानी पड़ती है अथवा चोट लगती है।
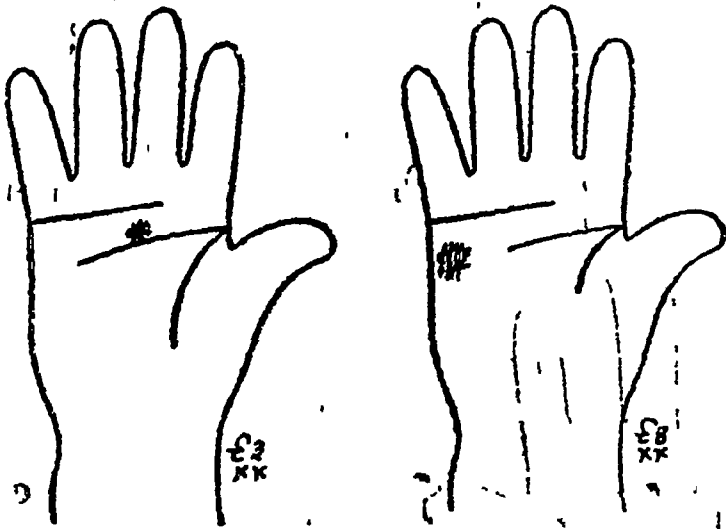
चित्र ६४—प्रथम मगल-क्षेत्र पर यदि जाल-चिह्न इतना बड़ा हो कि उसके कारण आधा मंगल-क्षेत्र तथा चन्द्र-क्षेत्र का ऊपरी तृतीयांश उससे भरा हो तो जातक को उदर-विकार तथा आंतो की बीमारी होती है।

चित्र ६५—मंगल के किसी भी क्षेत्र पर 'वृत्त-चिह्न' हो, तो उसे अशुभ लक्षण समझना चाहिए। ऐसे चिह्न वाले जातक की आंख मे

चोट लगती है। चित्र ६५ मे दोनों मगल-क्षेत्रो पर वृत्त-चिह्न की उपस्थिति को प्रदर्शित किया गया है।
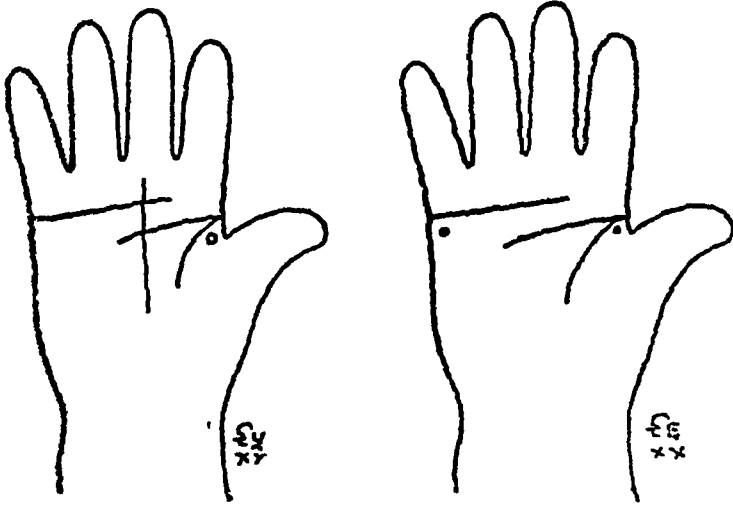
चित्र ९६—दोनों मे से किसी भी मगल-क्षेत्र पर बिन्दु चिह्न हो, तो जातक का किसी के साथ झगड़ा होता है, जिससे उसके शरीर पर चोट लगती है, परन्तु यदि मगल-क्षेत्र उन्नत हुआ तो जातक स्वयं विपक्षी को घायल कर देता है। चित्र ९६ मे दोनो मगल-क्षेत्रों पर बिन्दु-चिह्न की उपस्थिति को प्रदर्शित किया गया है। किसी भी मंगल-क्षेत्र पर बिन्दु-चिह्न रहने से जातक की अचल-सम्पत्ति किसी विवाद में नष्ट हो जाती है।

चित्र ९७—किसी भी मंगल-क्षेत्र पर यदि निर्दोष 'अधिक कोण-चिन्ह' हो तो जातक मनुष्य वीर, साहसी, बलवान तथा हृष्ट-पुष्ट होता है। उसे वीरता सम्बन्धी कार्यों मे सर्वत्र सफलता एव विजय प्राप्त होती है।
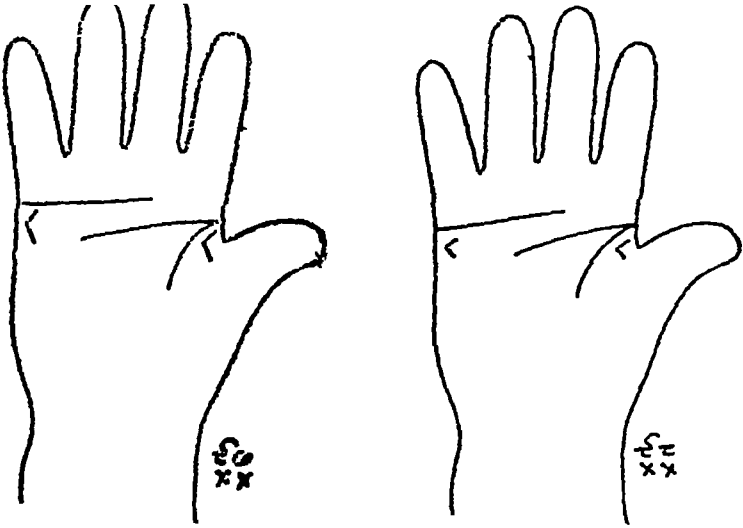
चित्र ९८—यदि मगल-क्षेत्रस्थ 'कोण-चिह्न' समकोण हो तो जातक परिश्रमी, स्वतन्त्र प्रकृति वाला तथा अपनी बात का धनी होता है।
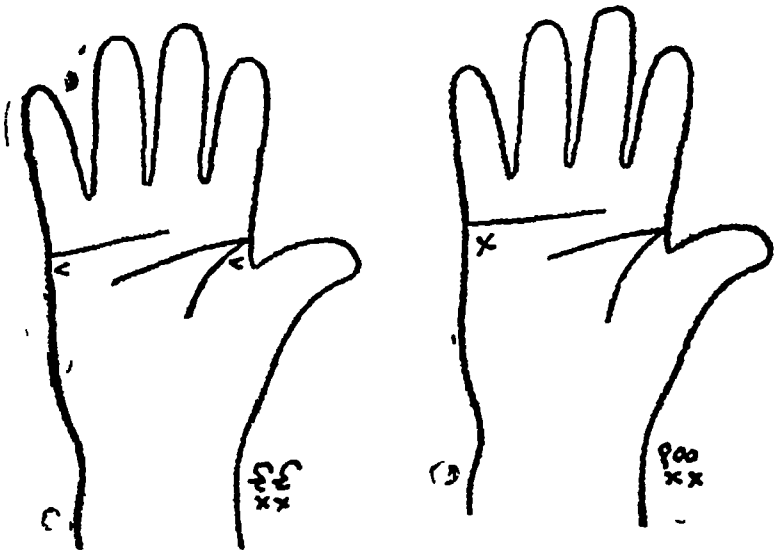
चित्र ९९—यदि मगल-क्षेत्रस्थ कोण-चिन्ह न्यूनकोण का हो तो जातक झगडालू, निर्दय, लुटेरा व दुष्कर्मी तथा स्वच्छन्द प्रकृति का होता है, जिसके कारण सभा-समाज मे उसकी निन्दा की जाती है। उसका सम्पूर्ण जीवन व्यर्थ के लड़ाई-झगडे करते हुए ही बीत जाता है।

चित्र १००—यदि मध्यमा उगली का पहला पर्व लम्बा तथा चौकोर हो और प्रथम-मङ्गल क्षेत्र पर क्रास-चिह्न हो तो जातक शकालु, निराश, दुखी, कपटी तथा अनेक चिन्ताओ से ग्रस्त बना रहता है। वह भयकर रोगों का शिकार बनता है तथा उसे सन्तान का सुख भी प्राप्त नही होता। उसकी स्त्रो पर-पुरुष-गामिनी तथा कुलटा होती है, परन्तु वह व्यक्ति अपनो कुल-मर्यादा की रक्षा के लिए इन सब बातों को सहन करता रहता है तथा किसी समय दुखी होकर आत्म-हत्या भी कर बैठता है। यदि प्रथम मगल-क्षेत्र की बजाय बुध-क्षेत्र पर क्रास-चिन्ह हो तथा मध्यमा उगलो पूर्वोक्त प्रकार की हो, तो भी यही फल घटित होता है।

चित्र १०१—यदि प्रथम मगल-क्षेत्र पर 'दाग-चिन्ह' हो तो ऐसे जातक की सम्पूर्ण सम्पत्ति मुकद्दमे-बाजी मे नष्ट हो जाती है। उसके शत्रुओ की सख्या बहुत अधिक हो जाती है, जो उसे बार-बार कष्ट देते रहते हैं। ऐसा जातक स्वयं स्वभाव का सरल तथा दीन होता है। उसे शस्त्र से चोट लगने तथा ससुराल पक्ष से सहायता प्राप्त होने की सम्भावना भी रहती है।

चित्र १०२—यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र पर ऊपर की ओर दाग-चिन्ह हो तो जातक चचल-मति, भीरु प्रकृति तथा दरिद्र होता है। उसे रक्त-विकार सम्बन्धी रोग होते हैं और प्रत्येक क्षेत्र मे असफलता ही मिलती है।

यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र के बीच मे दाग-चिन्ह हो तो जातक को नेत्र रोग अथवा व्रण-रोग होता है। यदि स्त्री के हाथ मे ऐसा चिन्ह हो तो उसे प्रदर रोग होता है।
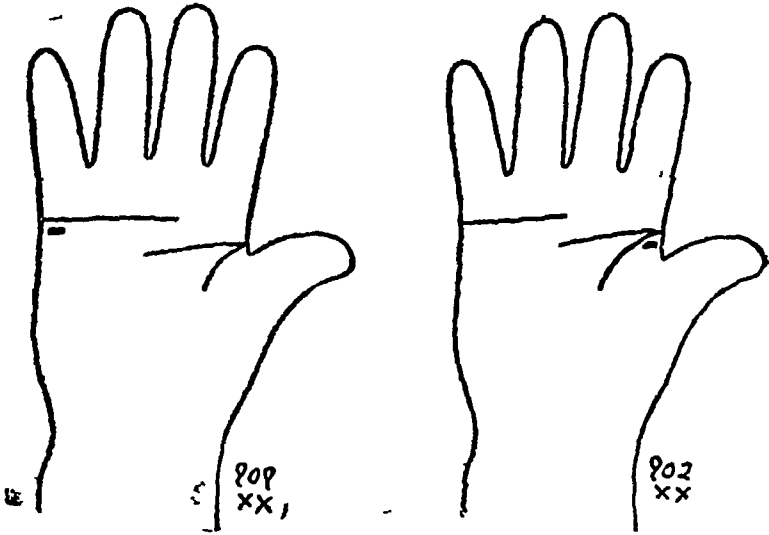
यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र के नीचे की ओर दाग-चिन्ह हो तो ऐसे चिन्ह वाला धनवान जात कभी अपनी सम्पत्ति को घर वालो को चिकित्सा मे ही व्यय कर देता है तथा उसका जीवन अशान्ति पूर्ण रहता है।

१०२—यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र पर गुरु-क्षेत्र के ठीक नीचे 'चतुष्कोण-चिन्ह' हो तो जातक राजनीति के क्षेत्र मे अत्यधिक मान-प्रतिष्ठा तथा उन्नति प्राप्त करता है, परन्तु किसी समय राजनीतिक कारणो से उसे जेल यात्रा भी करनी पडती है।

चन्द्र-क्षेत्र पर हस्त-चिन्हों का प्रभाव

चन्द्र-क्षेत्र की अवस्थिति हथेली के बाई ओर, मणिबन्ध के ऊपर, प्रथम मगल-क्षेत्र के नीचे तथा जीवन-रेखा के बाई ओर मानी गई है, इसी को अग्रेजी मे 'Mount of the Moon' कहा जाता है।

पाश्चात्य-विद्वानो के मत से इस क्षेत्र पर पाये जाने वाले हस्त-चिह्नों का जातक के ऊपर जो प्रभाव पड़ता है, उसे सामने लिखे अनुसार समझना चाहिए।

पाठको की-सुविधा के लिए चन्द्र-क्षेत्रस्थ सभी हस्त-चिह्नों के विवरण भी साथ ही दिये गए हैं। इन चित्रों मे अङ्कित मुख्य रेखाए केवल प्रतीक के रूप मे ही प्रदर्शित की गई हैं, अत पाठको को उनके स्वरूप पर कोई ध्यान न देकर केवल चन्द्र-क्षेत्रस्थ हस्त-चिह्नों के स्वरूप पर ही ध्यान देना चाहिए, परन्तु जहां हस्त-चिह्नो के साथ मुख्य रेखाओं की स्थिति का भी वर्णन हुआ है, वहा उनकी यथार्थ स्थिति का ही चित्रण किया गया है।
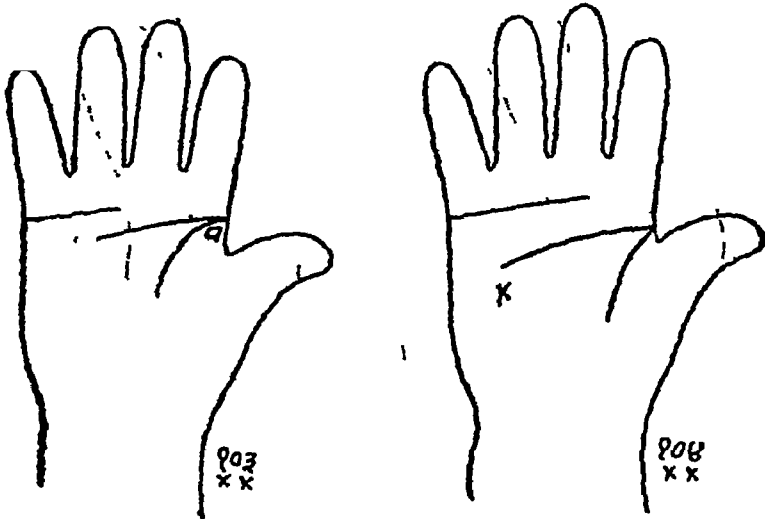
चित्र १०५—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर 'क्रास-चिह्न' मस्तक-रेखा के नीचे हों तो जातक अव्यावहारिक, अस्थिर विचार वाला तथा अयुक्ति पूर्ण होता है। वह स्वय धोखे मे रहता है तथा किसी भी-कार्य का सफल सम्पादन नही कर पाता। उसे आंत सम्बन्धी-रोग होने की सम्भावना भी रहती है।

चित्र १०५—यदि मस्तक-रेखा के नीचे क्रास का चिन्ह बहुत बड़ा होतो जातक शेखी बघारने वाला तथा धोखेबाज होता है। उसका

स्वास्थ्य भी ठीक नहीं रहता और उसे मस्तक-सम्बन्धी रोग बना रहता है।
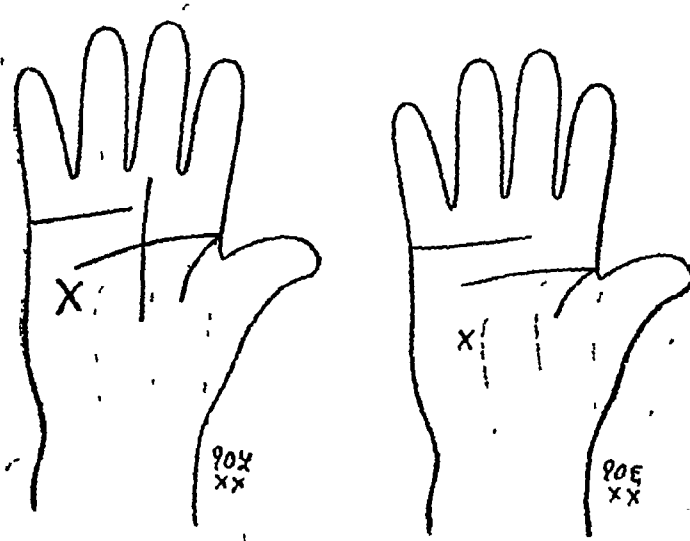
चित्र १०६—यदि क्रास-चिह्न चन्द्र-क्षेत्र के मध्य भाग में हो तो जातक को वात-विकार, गठिया आदि रोगो का शिकार होना पड़ता है। किसी स्त्री के हाथ मे हो तो उसे गर्भाशय सम्बन्धी बीमारियां होती हैं। ऐसे चिह्न वाले जातक असत्यवादी तथा ठग भी होते हैं। उन्हे समुद्र अथवा पानी मे डूबकर मरने का भय भी उपस्थित होता है।

चित्र १०७—यदि क्रास-चिह्न चन्द्र-क्षेत्र के ऊपरी तृतीयाश पर हो तो जातक को उदर-विकार तथा आतो से सम्बन्धित बीमारी होती है।

चन्द्र-क्षेत्र पर किसी भी स्थान पर क्रास-चिह्न होना अशुभ फल-दायक ही रहता है।

चित्र १०८—यदि क्रास-चिह्न चन्द्र-क्षेत्र के निचले तृतीयाश मे हो तो जातक को गुर्दे एव मूत्राशय सम्बन्धी बीमारियां होती हैं।
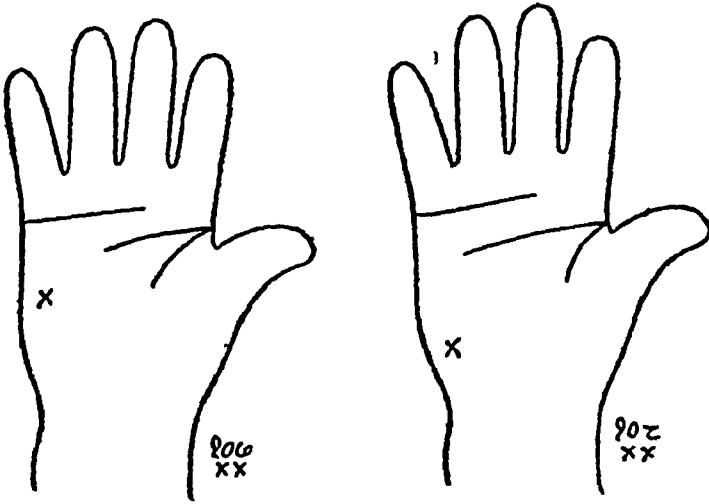
चित्र १०६—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर 'चतुष्कोण' (वर्ग) चिह्न हो तो जातक अत्यधिक काल्पनिक नही होता और यदि चन्द्र-क्षेत्र पर पानी
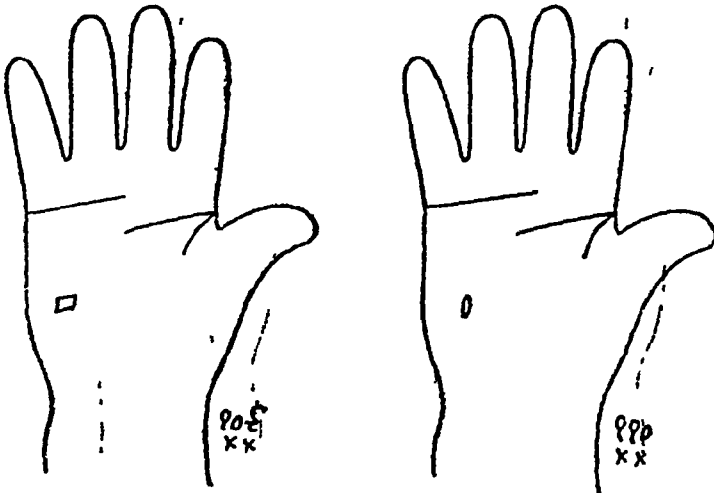
आदि से डूबने के अशुभ लक्षण भी हों तो यह चिह्न जातक की उन दुर्घटनाओ से रक्षा करता है। ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति हर प्रकार के सकट से छुटकारा पाता रहता है।

चित्र ११०—यदि चन्द्र-क्षेत्र 'द्वीप-चिह्न' हो तो उस जातक की कल्पना-शक्ति क्षीण होती है। वह अश्लील बातों को कहता तथा लिखता है। उसे प्राकृतिक सौंदर्य से कोई लगाव नही होता। यह चिह्न अशुभ फलदायक होता है।

चित्र १११—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर 'त्रिकोण-चिह्न' हो तो जातक अपनी कल्पना-शक्ति का उचित उपयोग करता है। वह कल्पना एव बुद्धि के सयोग से सफलता प्राप्त करता है यदि चन्द्र के पर्वत का झुकाव मणिबन्ध की ओर हो तो जातक गुप्त-विद्याओ का ज्ञाता होता है। वह ऊचे विचारों वाला तथा अन्तर्ज्ञानी होता है। यदि चन्द्र-क्षेत्र अत्यन्त ऊचा हो तो वह जादूगर होता है। यदि नीचा हो तो किसी स्त्री की सम्पत्ति को प्राप्त करता है।
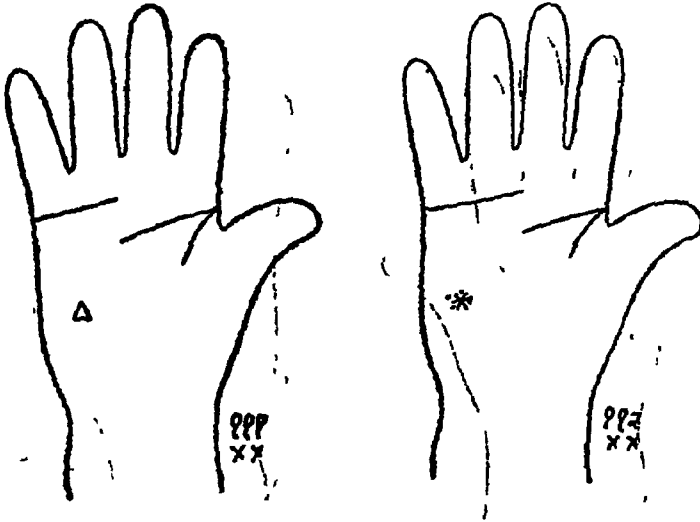
चित्र ११२—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर 'नक्षत्र-चिह्न' हो तो उसे जातक के पानी मे डूबने का लक्षण समझना चाहिए—ऐसा अनेक विद्वानो का मत है। यदि चन्द्र-क्षेत्र के एक दम निचले भाग मे यह चिह्न हो तो जातक को जलोदर की बीमारी होती है, यदि मध्य भाग मे हो तो पानी मे डूबने का भय होता है।

चित्र ११३—यदि मस्तक-रेखा घूमकर चन्द्र-क्षेत्र के निचले भाग पर पहुची हो और उस रेखा के अन्त पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक अत्यधिक काल्पनिक हो जाता है, जिसके कारण उसे मस्तिष्क-विकार का शिकार होना पडता है। 'मस्तक-रेखा' खण्ड मे इस सम्बन्ध मे विस्तार पूर्वक लिखा जा चुका है।
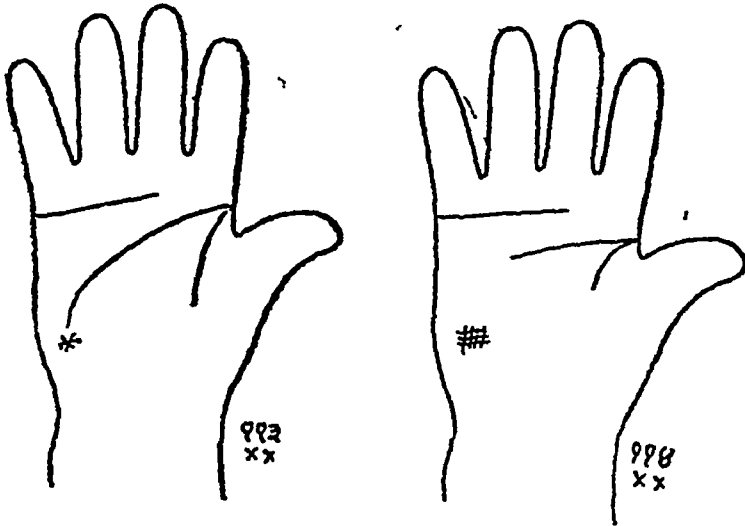
चित्र ११४—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर 'जाल-चिह्न' हो तो जातक सदैव अस्थिर, अशात, असन्तुष्ट तथा चंचल बना रहता है। वह भाग्य-हीन भी होता है। यदि स्त्री के हाथ पर ऐसा चिह्न हो तो वह व्यभिचा-

रिणी तथा हिस्टीरिया रोग की शिकार होती है। चन्द्र-क्षेत्र पर 'जाल चिह्न' वाले जातक को रात्रि मे स्वप्न अधिक दिखाई देते है। ऐसा-व्यक्ति चिन्तित होकर अपनी मृत्यु की कामना भी करता रहता है।

चित्र ११५—यदि मस्तक-रेखा शृंखलाकार हो अथवा अन्य प्रकार के अशुभ लक्षणों से युक्त हो तथा चन्द्र-क्षेत्र पर जाल-चिह्न हो तो जातक मस्तिष्क-विकार का शिकार होता है।
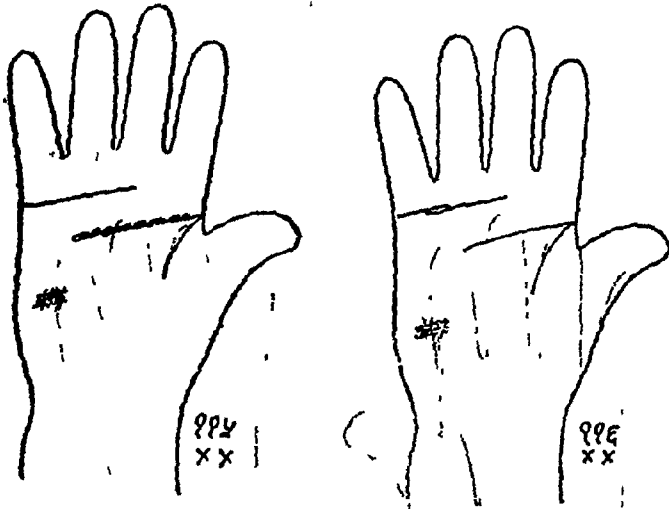
चित्र ११६—यदि हृदय-रेखा शृंखलाकार अथवा द्वीप-युक्त हो तथा चन्द्र-क्षेत्र पर जाल-चिह्न हो तो जातक व्यभिचारी प्रवृत्ति का तथा अस्थिर प्रेम-सम्बन्ध करने वाला होता है।

चित्र ११७—यदि शनि-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिह्न हो तथा चन्द्र-क्षेत्र पर जाल-चिह्न हो तो जातक को पक्षाघात (लकवा) की बीमारी होने की आशंका रहती है। ऐसे चिन्हों वाला व्यक्ति स्वभाव से चंचल तथा उच्च-पद प्राप्त करने की अभिलाषा रखने वाला भी होता है।
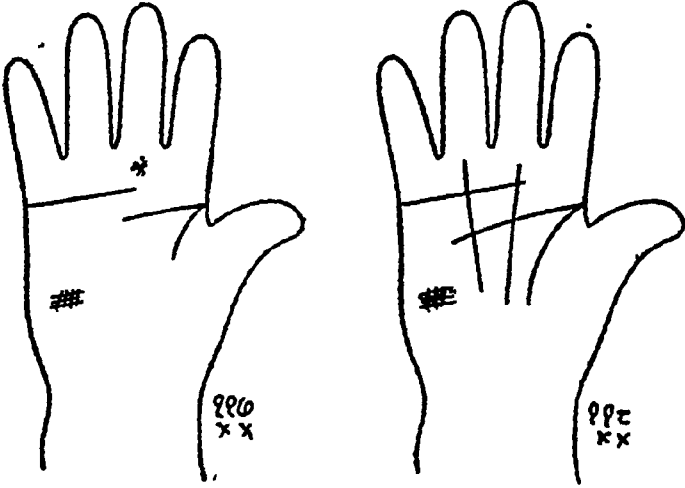
चित्र ११८—यदि सूर्य-रेखा अधिक सुन्दर हो तथा चन्द्र-क्षेत्र पर जाल-चिह्न हो तो जातक बहुत अच्छी काव्य-रचना करता है और समाज मे यश तथा प्रतिष्ठा प्राप्त करता है।
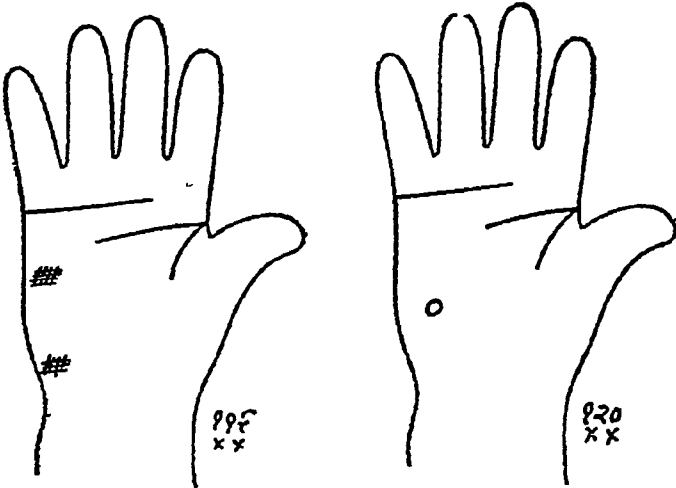
चित्र ११६—यदि चन्द्र-क्षेत्र के ऊपरी तृतीयाश मे जाल-चिह्न हो तो जातक को पेट तथा आतो सम्बन्धी विकार होते हैं। यदि निचले तृतीयांश मे जाल-चिह्न हो तो जातक को गुर्दे अथवा मूत्राशय सम्बन्धी रोग होते है। यदि स्त्रियो के हाथ मे चन्द्र क्षेत्र के निचले तृतीयाश मे जाल-चिह्न हो तो उन्हे गर्भाशय सम्बन्धी बीमारियां होती है। चन्द्र-क्षेत्र के उक्त दोनो भागों पर जाल-चिह्न की अवस्थिति को प्रदर्शित किया गया है।

चित्र १२०—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर स्पष्ट 'वृत्त-चिह्न' हो तो ऐसे चिह्न वाले जातक की पानी मे डूबकर मृत्यु होती है। ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति आपसी लडाई मे क्रुद्ध होकर किसी की हत्या भी कर सकता है, अत इस चिह्न वाले व्यक्ति को अपने स्वभाव पर सयम रखना चाहिए तथा अपने पास कोई हथियार नही रखना चाहिए। यदि वृत्त-चिह्न खडित हो तो जातक की बुद्धि अस्थिर होती है।

चित्र १२१—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर 'बिन्दु-चिह्न' हो तो जातक को स्नायु-विकार एव मस्तिष्क सम्बन्धी रोग होते हैं। यदि हाथ मे अन्य अशुभ लक्षण भी हो तो जातक पागल भी हो जाता है। चन्द्र-क्षेत्र पर बिन्दु-चिह्न वाला जातक अपव्ययी तथा चिन्तातुर रहता है। वह किसी समय आत्महत्या करने पर भी उतारू हो जाता है और दिवालिया भी हो सकता है।

चित्र १२२—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर 'अधिक कोण-चिह्न' हो तो जातक लम्बी समुद्र-यात्रा मे आने वाले खतरों से सुरक्षित बना रहता है। यदि समकोण हो तो उसे छोटी-छोटी यात्राए करनी पडती है जिनमे वह सामान्य हानि उठाकर सुरक्षित बना रहता है। परन्तु यदि न्यून कोण हो तो उसे यात्राओ मे अधिक कष्ट उठाना पड़ता है, यद्यपि उसकी प्राण रक्षा हो जाती है। कुछ विद्वानो के मतानुसार ऐसे चिह्न वाले जातक की मान-हानि होती है। किसी समय उसे जेल यात्रा भी करनी पडती है और ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति असावधानी से कार्य करता है।
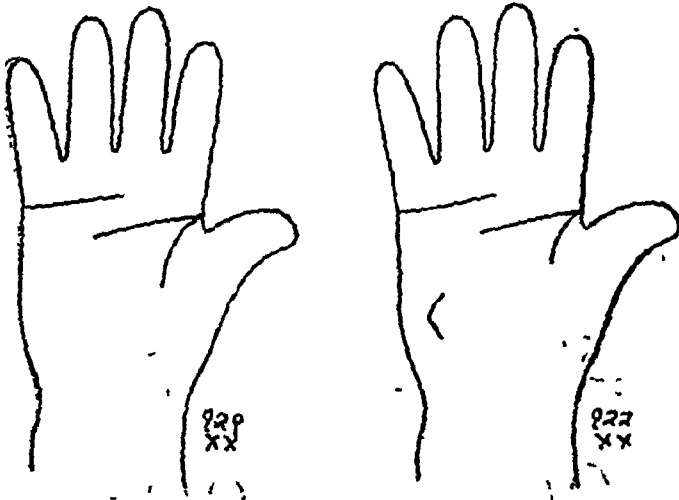
चित्र १२३—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर 'क्रास-चिह्न' हो और भाग्य-रेखा के अन्त मे भी 'क्रास-चिह्न' हों तो ऐसे चिह्नो वाला जातक पेट-सम्बन्धी रोगो का शिकार होता है। सम्भव है कि उसे ऑपरेशन भी कराना पड़े।
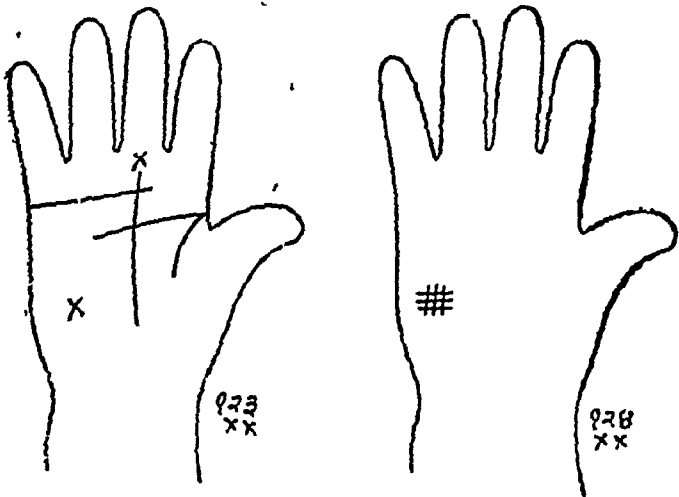
इसी रोग अथवा ऑपरेशन के कारण कुछ वर्षों बाद ही उसकी मृत्यु भी हो जाती है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति की अकाल मृत्यु अथवा आत्म-हत्या कर लेने की सम्भावना भी रहती है।

चित्र १२४—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर तीन आडी तथा तीन खडी रेखाओ के योग से 'जाल-चिह्न'-सा बनता हो तो ऐसे चिह्न वाला जातक या तो अपने माता, पिता, भाई आदि के विषय में स्वय चिन्तित बना रहता है अथवा उसके सम्बन्धियो को अनेक प्रकार के कष्ट प्राप्त होते रहते है।

चित्र १२५—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर दो स्पष्ट 'वृत्त-चिह्न' हो तो ऐसे चिह्नो वाला जातक अवश्य ही अन्धा हो जाता है।
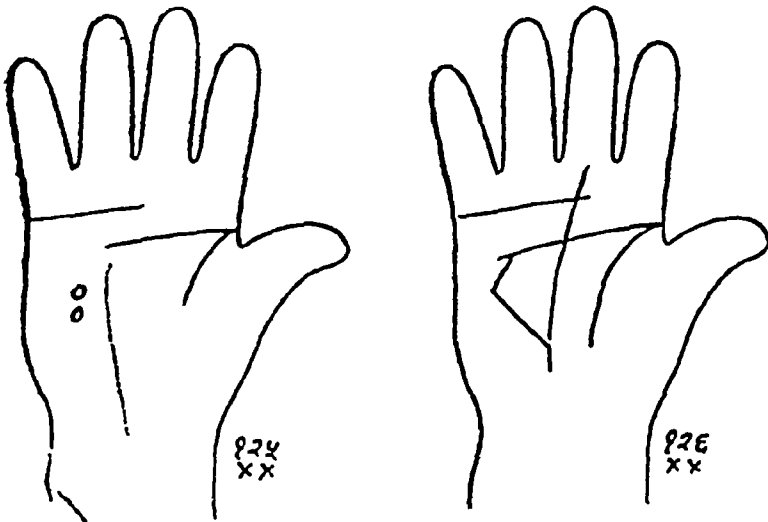
चित्र १२६—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर कोण-चिह्न हो और उसकी एक रेखा बढकर मस्तक-रेखा का स्पर्श करे तथा दूसरी रेखा बढकर भाग्य-रेखा से जा मिले तो ऐसे चिह्न वाला जातक धन-धान्य तथा सन्तान से पूर्ण एवं सुखी-जीवन व्यतीत करने वाला होता है। कोण-चिह्न की

रेखाएं जिस वयोमान मे मस्तक-रेखा तथा भाग्य-रेखा का स्पर्श कर रही होगी, उसी आयुवर्ष मे जातक का भाग्योदय होता है।

चित्र १२७—यदि चन्द्र-क्षेत्र के मूलस्थान मणिवन्ध के ऊपर चन्द्र-क्षेत्र पर 'चतुष्कोण-चिह्न' हो तो जातक कार्य-कुशल, यशस्वी, धनवान, कुशल-व्यवसायी, मित्रो से युक्त तथा यात्रा-काल मे सुख प्राप्त करने वाला होता है।
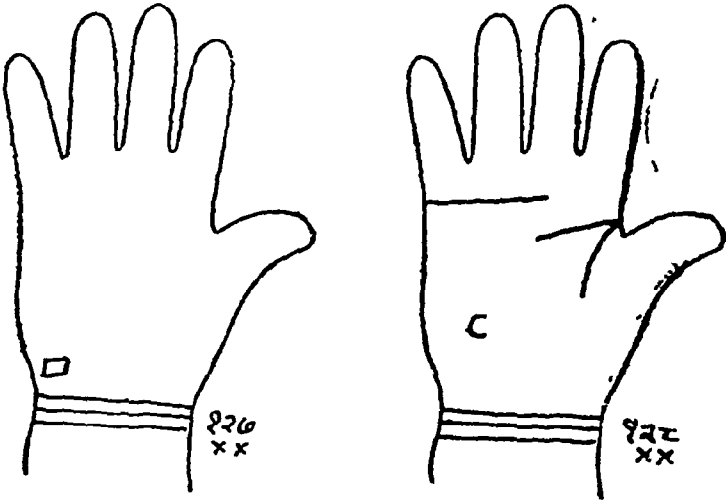
चित्र १२८—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर स्पष्ट 'अर्द्धवृत्त-चिन्ह' हो तो जातक चिन्तातुर, भयातुर तथा निन्द्य कर्म करने वाला होता है। वह अपने कुकर्मो के कारण समाज मे निन्दा तथा अपमान का पात्र बनता है।

चित्र १२९—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर निर्दोष अर्द्धवृत्त-चिन्ह बहुत बड़ा हो और वह हथेली के मध्य भाग का स्पर्श कर रहा हो अथवा भाग्य-रेखा के समीप हो तो ऐसे चिह्न वाला जातक अपने जीवन में अकेला ही रहता है। उसके माता, पिता, भाई, स्त्री, पुत्र, सम्बन्धी आदि सभी छूट जाते हैं।
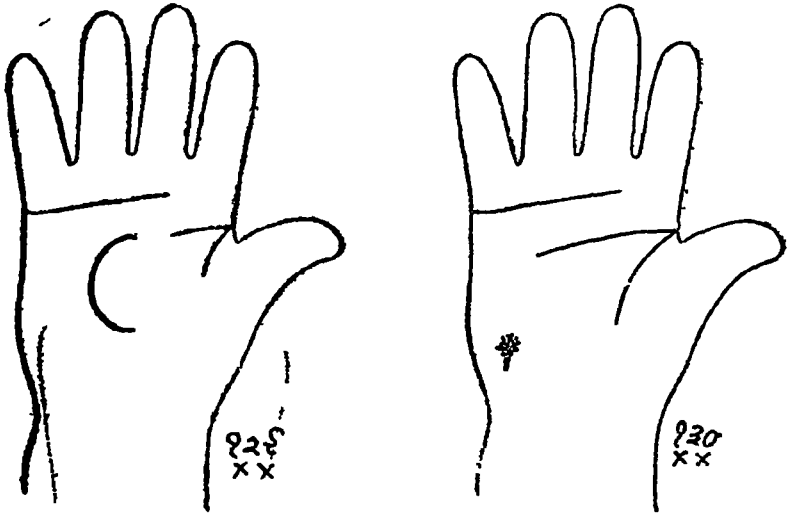
चित्र १३०—यदि हाथ में चन्द्र-क्षेत्र के ऊपर ऐसा नक्षत्र-चिह्न हो जो फुलझडी जैसा दिखाई देता हो तो ऐसे चिह्न वाला जातक विश्वास पात्र और सब पर दयाभाव रखने वाला होता है। उसे अनायास ही विपुल धन की प्राप्ति होती है और उस धन को वह लोकोपकारी कार्यो मे व्यय करता है। यदि किसी दरिद्र व्यक्ति के हाथ में ऐसा चिह्न हो तो वह भी कही अनायास ही बहुत-सा धन पाकर गरीबी से छूट जाता है, परन्तु ऐसे चिह्न वाले व्यक्तियो की सन्तानें उनकी विरोधी ही रहती हैं।

शुक्र-क्षेत्र पर हस्त-चिह्नों का प्रभाव

शुक्र-क्षेत्र का अवस्थिति द्वितीय मगल-क्षेत्र के नीचे तथा मणिबन्धी के ऊपर जीवन-रेखा के दाईं ओर मानी गई है। इसी को अंग्रेजी में 'Mount of the Venus' कहते हैं। अंगूठे को शुक्र-क्षेत्र के अन्तर्गत ही माना जाता है।

पाश्चात्य-विद्वानो के मत से इस क्षेत्र पर पाये जाने वाले हस्त-चिह्नो का जातक के ऊपर जो प्रभाव पड़ता है, उसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाठको की सुविधा के लिए शुक्र-क्षेत्रस्थ सभी हस्त-चिह्नों के चित्र भी विवरण के स.थ ही दिये गए हे । इन चित्रो मे अकित मुख्य रेखाए केवल प्रतीक के रूप मे ही प्रदर्शित की गई हैं। अत पाठकों को उनके स्वरूप पर कोई ध्यान न देकर केवल शुक्र-क्षेत्रस्थ हस्त-चिह्नो के स्वरूप पर ही ध्यान देना चाहिए, परन्तु जहां हस्त-चिह्नों के साथ मुख्य रेखाओ की स्थिति का भी वर्णन हुआ है, वहां उनकी यथार्थ स्थिति का ही चित्रण किया गया है।

चित्र १३१—यदि शुक्र-क्षेत्र पर सामान्य तथा गहरा 'क्रास-चिह्न' हो तो जातक को अपने किसी सम्बन्धी (माता, पिता, चाचा आदि) के प्रेम के कारण अनेक प्रकार की कठिनाइयो का सामना करना पडता है।
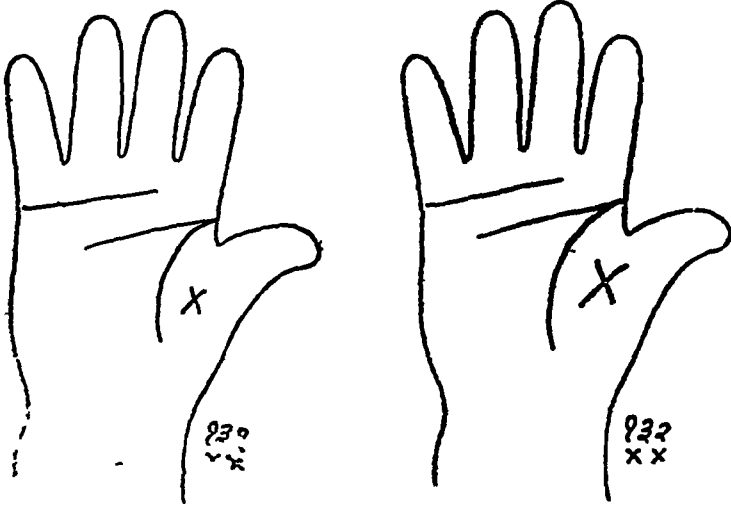
ऐसे चिन्ह वाले मनुष्य प्रेम-सम्बन्ध में अधीर भी होते हैं। कुछ विद्वानो के मतानुसार ऐसे चिन्ह वाले व्यक्ति कपटी, दुराचारी तथा निर्दयी परन्तु मुंह के मीठे होते है। ऐसे चिन्ह वाले व्यक्ति भोली-भाली स्त्रियो का सतीत्व नष्ट करते हैं तथा उनका विवाहित जीवन दुःख पूर्ण होता है।

चित्र १३२—कुछ विद्वानो के मतानुसार यदि शुक्र-क्षेत्र पर बड़ा क्रास-चिन्ह हो तो जातक को प्रेम-सम्बन्ध मे सफलता प्राप्त होती है। ऐसे चिन्ह वाला व्यक्ति अधिक व्यभिचारी नही होता, परन्तु कुछ अन्य विद्वानों के मतानुसार ऐसे चिन्ह वाले व्यक्ति के प्रेम-सम्बन्ध का अन्तिम परिणाम दुःखदाई ही सिद्ध होता है।

चित्र १३३—यदि शुक्र-क्षेत्र पर क्रास-चिन्ह बहुत छोटा तथा जीवन-रेखा के बिल्कुल समीप हो तो उसे जातक को अपने निकट सम्बन्धियों से वैमनस्य एव कलह का द्योतक समझना चाहिए। ऐसे
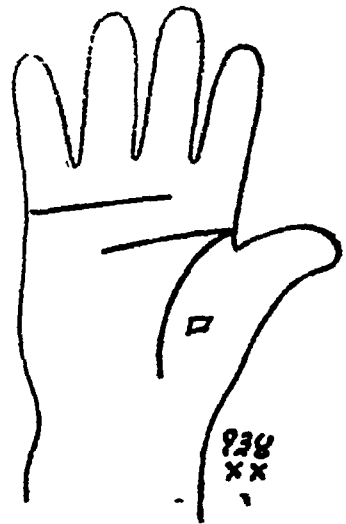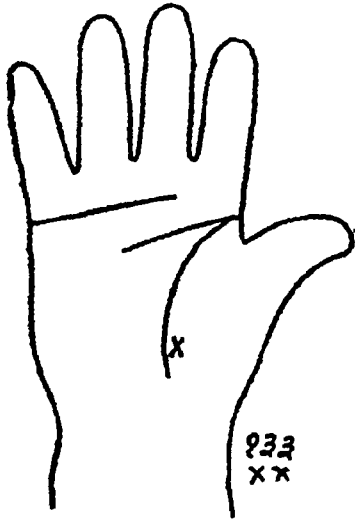
चिन्ह वाले व्यक्ति के स्वजन-सम्बन्धी ही उसके प्रेम-सम्बन्ध मे वाधक बनकर उसे बदनाम कर देते हैं।

चित्र १३४—यदि शुक्र-क्षेत्र पर 'चतुष्कोण' (वर्ग) चिन्ह हो तो जातक काम, वासना की अधिकता होने पर भी किसी कठिनाई का शिकार नही बनता। वह किसी स्त्री से प्रेम-सम्बन्ध के कारण मुसीबत मे तो पडता है, परन्तु उससे बच जाता है और अपनी प्रतिष्ठा को नही गिरने देता। परन्तु यही चतुष्काण-चिन्ह यदि खण्डित हो अर्थात् टूटी हुई रेखाओ से बना हो तो जातक को जेल-यात्रा की सम्भावना रहती है।

चित्र १३५—यदि मणिबन्ध के ऊपरी भाग मे शुद्ध चतुष्कोण (वर्ग) चिन्ह हो ता जातक को प्रेमिका द्वारा किये गए अपमान से रक्षा होती है। ऐसे व्यक्ति सुखी जीवन व्यतीत करते हैं।
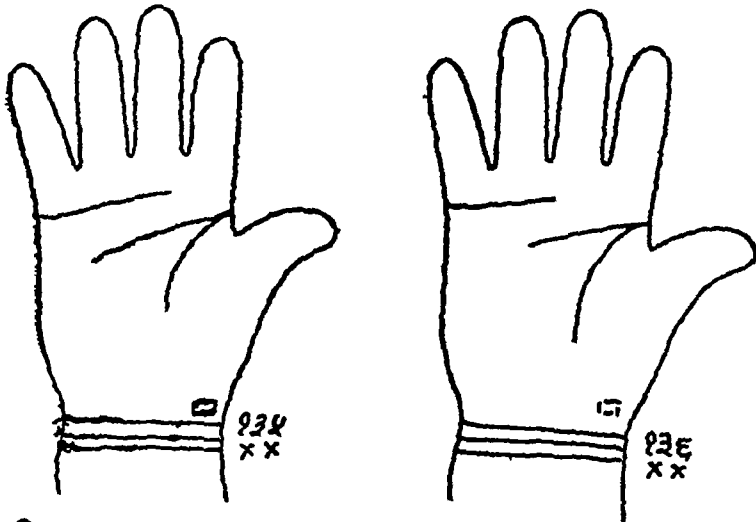
चित्र १३६—यदि शुक्र-क्षेत्र पर पूर्वोक्त चतुष्कोण छिन्न-भिन्न स्थिति मे हों तो जातक को जेल-यात्रा करनी पड़ती है और उसे पुत्र शाक भी होता है।

चित्र १३७—यदि शुक्र-क्षेत्र पर नीचे की ओर 'द्वीप-चिन्ह' हो तो जातक को अपनी सन्तानों द्वारा दुःख एव अपमान प्राप्त होता है। उसकी सन्ताने क्रोधी, मूर्ख तथा निर्लज्ज होती है। उनके दु ख से दुखी होकर जातक किसी समय आत्महत्या के लिए विष आदि का प्रयोग भी कर बैठता है, परन्तु चतुष्कोण-चिन्ह के कारण उसका जीवन सुरक्षित बना रहता है।
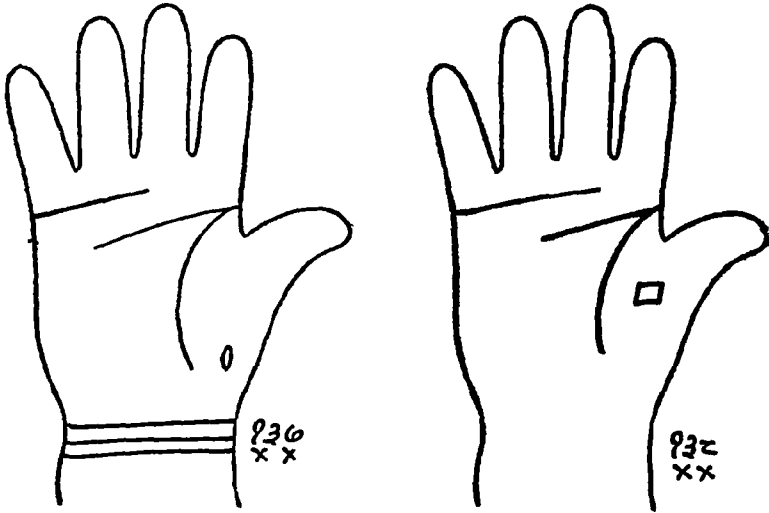
चित्र १३८—यदि चतुष्कोण (वर्ग) चिन्ह शुक्र-क्षेत्र के बिल्कुल मध्य मे हो तो जातक किसी से प्रेम-सम्बन्ध के कारण अनेक प्रकार की कठिनाइयो तथा झझटो मे पडता है, परन्तु उनसे बिना किसी हानि के साफ छुटकारा पा लेता है।

चित्र १३९—यदि चतुष्कोण (वर्ग) चिन्ह शुक्र-क्षेत्र पर एक दम नीचे अथवा जीवन-रेखा के एकदम समीप हो तो जातक या तो जेल-यात्रा करता है या फिर कुछ समय तक एकान्तवास करता है।

चित्र १४०—यदि पूर्वोक्त चतुष्कोण (वर्ग) चिन्ह जीवन-रेखा के बाहरी भाग पर जीवन-रेखा से एकदम सटा हुआ-सा हो तो भी पूर्वोक्त
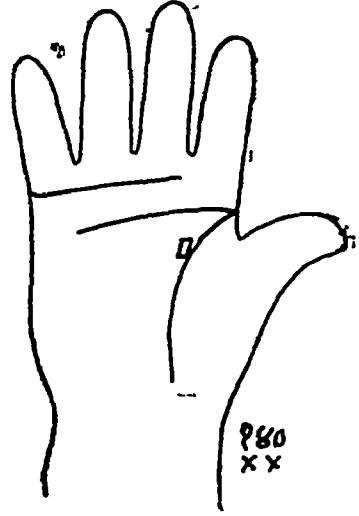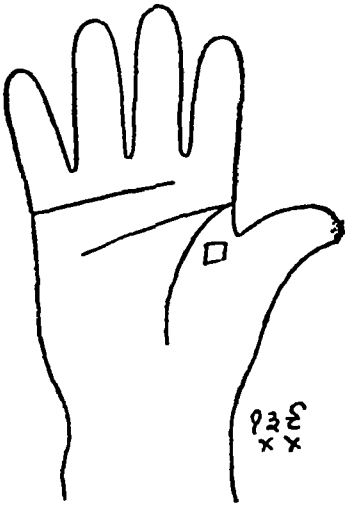
फल प्राप्त होता है अर्थात् या तो जातक जेल-यात्रा करता है या फिर कुछ समय के लिए एकान्तवास करता है।
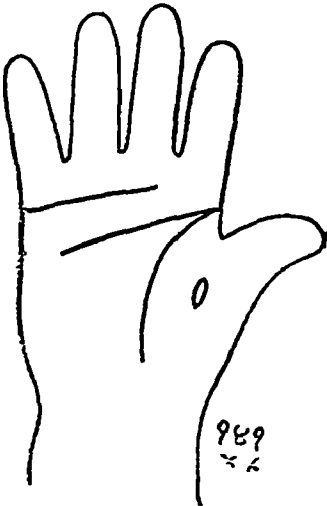
चित्र १४१—यदि शुक्र-क्षेत्र पर बीच मे द्वीप-चिन्ह हो तो जातक को अपने प्रेम-पात्र के वियोग का दुख सहन करना पडता है और उसके विवाह अथवा प्रेम के प्रस्ताव टूट जाया करते है। ऐसे चिन्ह वाला व्यक्ति अपने किसी परम हितैषी को भी अप्रसन्न कर देता है।

चित्र १४२—यदि शुक्र-क्षेत्रस्थ द्वीप-चिन्ह जीवन-रेखा के बिल्कुल समीप हो तो ऐसे चिन्ह वाले जातक के प्रेम अथवा विवाह-सम्बन्ध मे उसके अपने मित्र अथवा रिश्तेदार विघ्न डालते है। ऐसे चिन्ह वाला जातक कामी, लम्पट तथा इन्द्रिय-लोलुप भी होता है।

चित्र १४३—यदि शुक्र-क्षेत्र पर त्रिकोण-चिन्ह हो तो जातक प्रेम-सम्बन्ध मे विचार-शक्ति तथा संयम से काम लेता है। वह प्रेम के तूफान मे बेकाबू होकर बह नही जाता। कुछ विद्वानो के मतानुसार ऐसा व्यक्ति किसी से सच्चा प्रेम नही करता, अपितु उसका प्रेम केवल धन अथवा अन्य स्वार्थो के लिए ही होता है। वह गणित शास्त्र में निपुण होता है तथा लौकिक व्यवहार का भली-भाति पालन करता है।
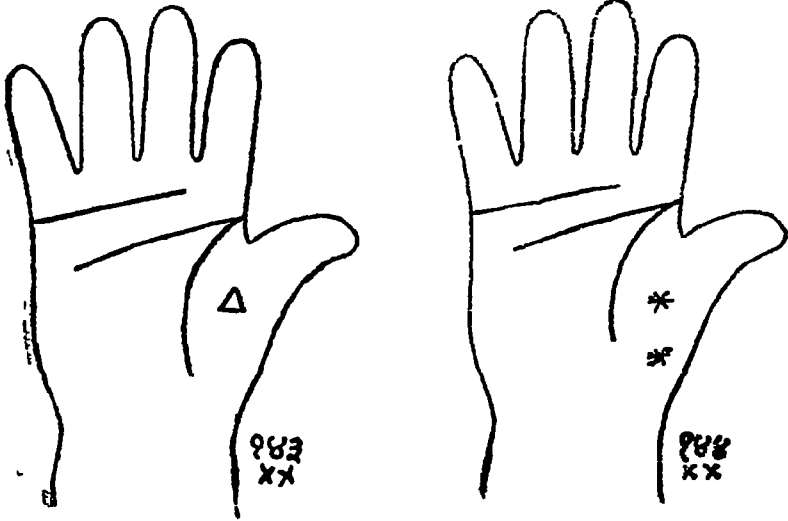
चित्र १४४—यदि शुक्र-क्षेत्र के सबसे ऊंचे अथवा मध्यभाग पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक को अपने प्रेम-सम्बन्ध मे अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है। चित्र सख्या १४४ मे उक्त दोनो स्थानो पर नक्षत्र-चिह्न की उपस्थिति को प्रदर्शित किया गया है। कुछ विद्वानो के मतानुसार शुक्र-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिह्न' होने से जातक को प्रेम-सम्बन्ध, पत्नी (या पति) अथवा विवाह के कारण निराशा प्राप्त होती है।

चित्र १४५—पूर्वोक्त स्थान के अतिरिक्त शुक्र-क्षेत्र पर कही नक्षत्र-चिह्न हो तो वह जातक के किसी प्रिय-सम्बन्धो की मृत्यु का सूचक होता है। यदि दायें हाथ में हो तो पिता की बाल्यावस्था में ही मृत्यु हो जाती है। यदि बाये हाथ मे हो तो बाल्यावस्था मे ही माता की मृत्यु हो जाती है।
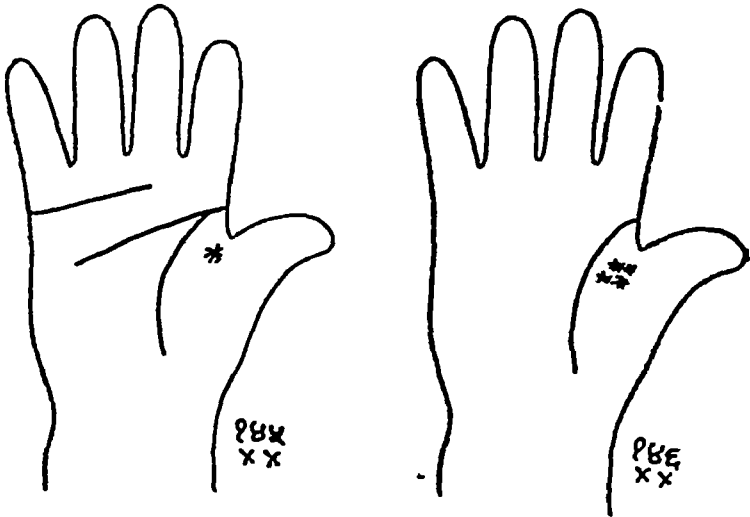
चित्र १४६—पूर्वोक्त स्थान के अतिरिक्त शुक्र-क्षेत्र पर कई अनेक छोटे-छोटे नक्षत्र-चिह्न एक-दूसरे के पास-पास हों तो जितने नक्षत्र-चिह्न हो, उन्हे उतने ही प्रियजनो की मत्यु का सूचक समझना चाहिए।

चित्र १४७—कुछ विद्वानो के मतानुसार यदि शुक्र-क्षेत्र पर अगूठे के बिल्कुल नीचे नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक को अपने प्रेम-सम्बन्ध मे अत्यधिक सफलता प्राप्त होती है और उसमे किसी प्रकार का विघ्न नही पडता, परन्तु कुछ विद्वानो के मतानुसार ऐसे चिह्न वाला जातक कपटी तथा स्वार्थी होता है और उसकी सन्तान भी उसे धोखा देती है अथवा अपमानित करती है। ऐसे चिह्न वाले लोग खयाली पुलाव पकाया करते है।
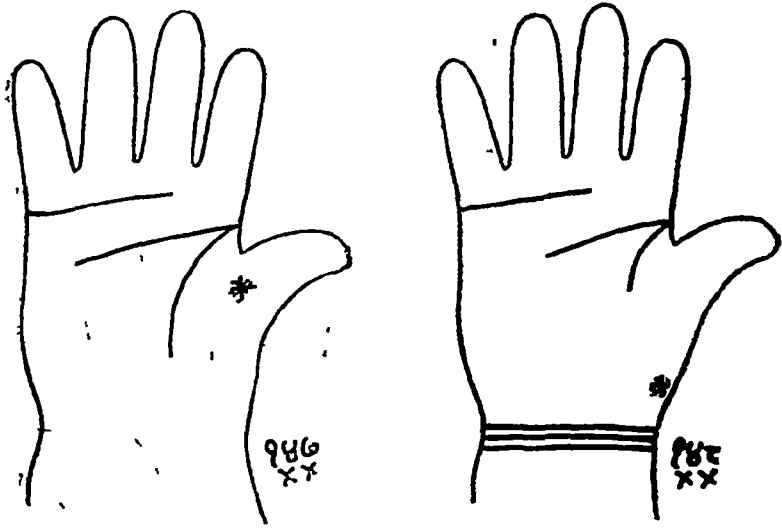
चित्र १४८—शुक्र-क्षेत्र पर मणिबन्ध-रेखा से एक अगुल की दूरी पर, जहा कि सन्तान-रेखाओ की अवस्थिति बताई गई है (देखे 'विवाह-रेखा' खण्ड), वहा पर यदि नक्षत्र-चिह्न हो तो उसे जातक की, यदि वह पुरुष है तो किसी स्त्री के कारण और यदि स्त्री हो तो किसी पुरुष के कारण भाग्य-हानि का लक्षण समझना चाहिए।

चित्र १४९—यदि मस्तक-रेखा घूमकर चन्द्र-क्षेत्र पर चली गई हो तथा पूर्वोक्त (मणिबन्ध-रेखा से एक अगुल हटकर सन्तान-रेखाओ

वाले) स्थान पर नक्षत्र-चिह्न हो तो उसे जातक के लिए मस्तिष्क-विकार का लक्षण समझना चाहिए।

यदि शुक्र-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिह्न किसी रेखा के ऊपर हो तो भाग्य-हानि अथवा किसी मित्र या सम्बन्धी के स्वय की आपत्ति मे फस जाने की सम्भावना रहती है।
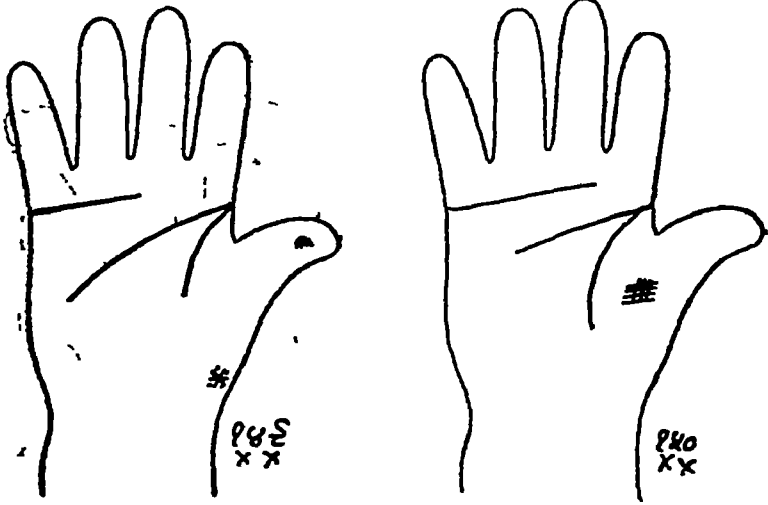
चित्र १५०—यदि शुक्र-क्षेत्र पर जाल-चिह्न हो तो जातक कामुक, कपटीतथा सुख-हीन होता है और वह अपनी वासना-पूर्ति के लिए उचित-अनुचित का विचार भी नही करता। यदि शुक्र-क्षेत्र चपटा और कठोर हो तो जातक मे विशुद्ध प्रेम अथवा सौन्दर्य-प्रियता की भावना नही होती, वह केवल व्यभिचारी होता है और अपनी वासना-तुष्टि के लिए यत्र-तत्र भटकता है। ऐसा व्यक्ति जेल अथवा पागल-खाने की यात्रा भी करता है।

चित्र १५१—यदि शुक्र-क्षेत्र पर वृत्त-चिह्न हो तो जातक को लम्बे समय तक चलने वाली किसी बीमारी का शिकार होना पडता

है तथा वह राग वाद मे भी जातक को थोड़ा-बहुत परेशान करता हो रहता है।
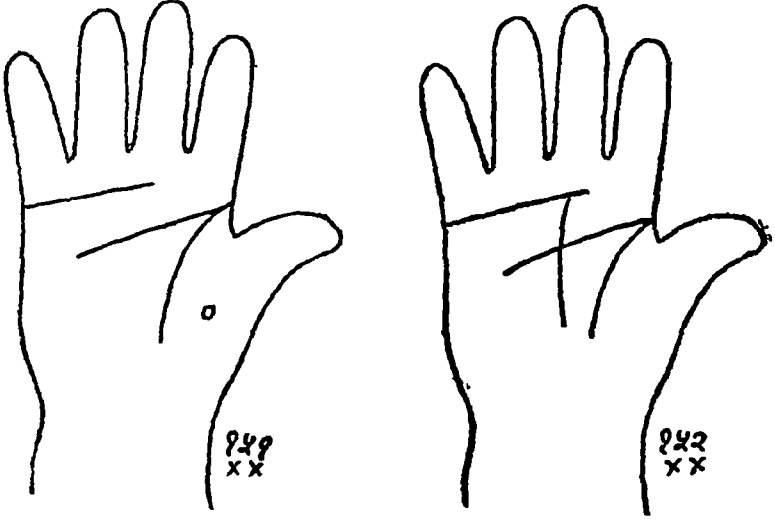
चित्र १५२—यदि शुक्र-क्षेत्र पर बिन्दु-चिह्न हो तो जातक उपदंश, मूत्रकृच्छ्र (सूजाक) तथा ऐसे ही अन्य गुप्त-रोगों का शिकार होता है। यदि बिन्दु-चिह्न काले रंग का हो तो रोग को भयकरता बहुत अधिक बढ़ जाती है।

चित्र १५३—यदि शुक्र-क्षेत्र पर अधिक कोण-चिह्न हो तो जातक विशुद्ध प्रेमी, श्रेष्ठ वस्त्राभूषणों को धारण करने वाला, सगीत-प्रेमी तथा अन्य ललित कलाओं का उपासक होता है।

चित्र १५४—यदि शुक्र-क्षेत्रस्थ कोण-चिह्न समकोण हो तो जातक बनावटी प्रेम करने वाला, परन्तु अपनी मान-मर्यादा की सीमाओ में रहने वाला होता है।
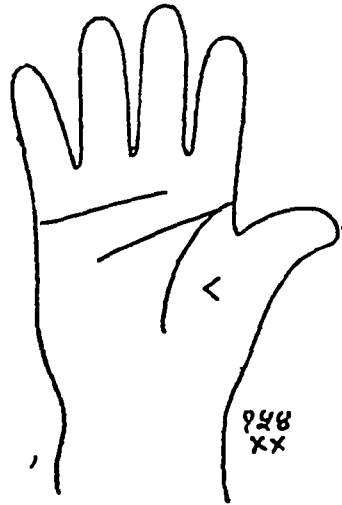
चित्र १५५—यदि शुक्र-क्षेत्रस्थ कोण-चिन्ह न्यूनकोण वाला हो तो ऐसा जातक स्वार्थी, लोभी, निन्द्य-कर्म-रत, नीचो की संगति करने वाला, पराये धन का लोभो, सभ्य-समाज से अनाहृत, प्रेम का
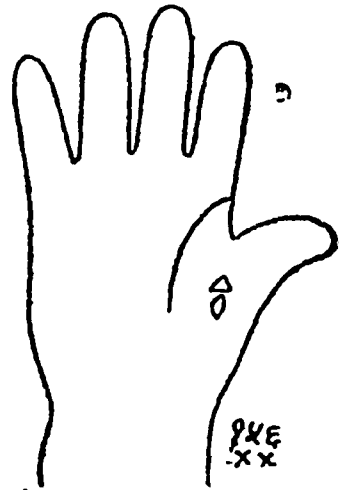
बदला चाहने वाला तथा बनावट पसन्द होता है। उसे कही भी सम्मान प्राप्त नहीं होता।

चित्र १५६—यदि शुक्र-क्षेत्र उन्नत हो और उस पर त्रिकोण तथा द्वीप-चिह्न—दोनो ही एक साथ दिखाई दे तो ऐसा जातक कुशल चित्रकार, तथा गणित का विद्वान् होता है और वह अपनी विद्या का व्यवसाय करता है। किसी समय अपनी विद्या अथवा कला का पूरा पारिश्रमिक न मिलने पर क्षुब्ध तथा निराश होकर अपनी कला को त्याग भी देता है। ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति पर-स्त्री के प्रेम-पाश में भी अवश्य पड़ता है।
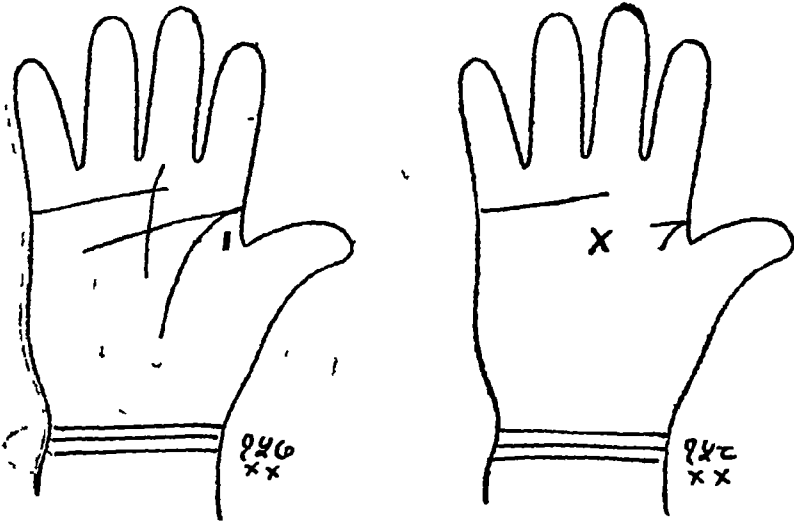
चित्र १५७—यदि शुक्र-क्षेत्र तथा द्वितीय मंगल-क्षेत्र के मध्य भाग पर 'दाग-चिह्न' हो तो ऐसा जातक धातु-सम्बन्धी रोगो का शिकार बनता है। वह अत्यन्त विषयी प्रवृत्ति का होता है तथा किसी रुग्णा स्त्री, और यदि जातक स्त्री हो तो किसी रोगी-पुरुष, के साथ सहवास

करके उसके रोग से स्वय भी ग्रस्त हो जाता है और अन्त में क्षय (यक्ष्मा) रोग के कारण उसकी मृत्यु हो जाती है ।

राहु-क्षेत्र पर हस्त-चिह्नों का प्रभाव

राहु-क्षेत्र की अवस्थिति हथेली के मध्य भाग मे मानी गई है। यह क्षेत्र गुरु, शनि, सूर्य, बुध, मगल, चन्द्र, शुक्र तथा केतु क्षेत्रो से घिरा हुआ है ।

विभिन्न प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानो के मत से इस क्षेत्र पर पाये जाने वाले हस्त-चिह्नो का जातक के ऊपर जो प्रभाव पड़ता है, उसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाठको की सुविधा के लिए राहु-क्षेत्रस्थ सभी हस्त-चिह्नो के चित्र भी विवरण के साथ ही दिये गए हैं। इन चित्रो मे अकित मुख्य रेखाए केवल प्रतीक के रूप मे ही प्रदर्शित की गई है, अत पाठको को उनके स्वरूप पर ही ध्यान देना चाहिए । परन्तु जहा कहीं हस्त-चिह्नो के साथ ही मुख्य रेखाओ की स्थिति का भी वर्णन हुआ है, वहा उनकी यथार्थ स्थिति का ही चित्रण किया गया है ।

चित्र १५८—यदि राहु-क्षेत्र पर 'क्रास-चिह्न' हो तो ऐसा जातक युवावस्था मे अपने किसी निकट सम्बन्धी अथवा मित्र की मृत्यु आकस्मिक धन-हानि के कारण अत्यन्त दु खी होता है और उसे उसी समय से अनेक प्रकार के रोग लग जाते हैं, जो जीवन भर पीछा नही छोडते ।

चित्र १५९—यदि राहु-क्षेत्र पर तीन क्रास-चिह्न हो और वही पर 'राहु-रेखा' (राहु-रेखा' का विस्तृत वणन 'प्रभाव-रेखाए' शीर्षक खण्ड मे किया जा चुका है) भी उपस्थित हो तो जातक धन,पुत्र तथा स्त्री की ओर से दु खी तथा हिंसक प्रवृत्ति का होता है । जिस आयु-मान में राहु-रेखा जीवन-रेखा को काट रही होगी, उसी आयु मे उसकी मृत्यु भी हो जायगी ।
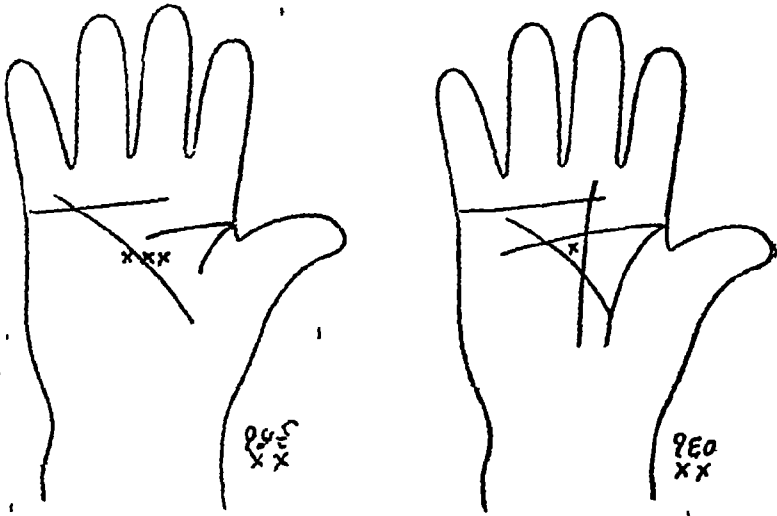
चित्र १६०—यदि राहु-क्षेत्र पर भाग्य-रेखा और मस्तक-रेखा के बीच, राहु-रेखा के नीचे क्रास-चिन्ह हो तो जातक की आकस्मिक-मृत्यु होती है। यह चिह्न 'डमरू' जैसी आकृति का होता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति अपने जीवन मे किसी सस्था आदि से सहायता भी प्राप्त करते है।

चित्र १६१—यदि जीवन-रेखा तथा भाग्य-रेखा के बीच मे राहु-क्षेत्र पर बड़ा-सा क्रास-चिह्न हो तो जातक क्रोधी, झगड़ालू तथा विवादी होता है, जिसके कारण वह सदैव सकटों एव दु खों से घिरा रहता है। यदि दोनो हाथ मे ऐसा चिह्न स्पष्ट दिखाई दे तो जातक की मत्यु किसी भयकर दुर्घटना में होने की सम्भावना रहती है।

चित्र १६२—यदि राहु-क्षेत्र पर 'त्रिकोण-चिह्न' हो तो वह जातक की भाग्योन्नति का सूचक होता है। ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति बाल्या-वस्था से ही भाग्यशाली होता है और उसकी सभी इच्छाए पूर्ण
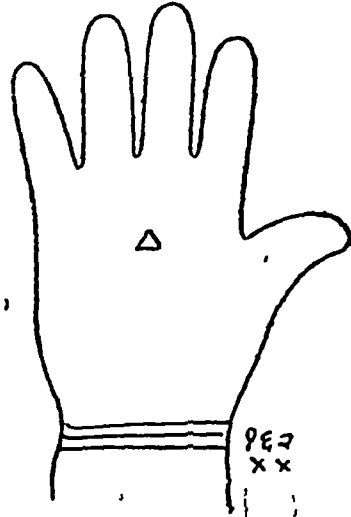
होती रहती हैं। ऐसा व्यक्ति यात्रा-प्रेमी, मिलनसार, विद्वान, स्वस्थ तथ परोपकारी होता है।
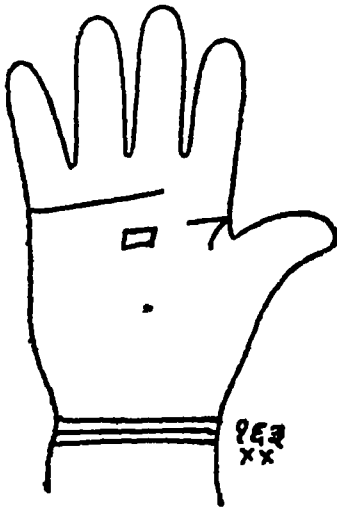
चित्र १६३—यदि राहु-क्षेत्र पर चतुष्कोण (वर्ग) चिह्न हो तो ऐसा जातक परोपकारी, दयालु, यशस्वी, गुणी, विद्वान्, यात्रा-प्रेमी, धर्मात्मा, सफल वक्ता, स्वस्थ, सुन्दर तथा धन, पुत्र, स्त्री-मित्र आदि के सुखो से युक्त होता है। यह चिह्न अत्यन्त शुभ सूचक माना गया है।

चित्र १६४—यदि राहु-क्षेत्रस्थ चतुष्कोण-चिह्न भाग्य-रेखा का स्पर्श कर रहा हो तो उसी वयोमान मे जातक की भाग्योन्नति होती है और वह विपुल धन प्राप्त करता है।
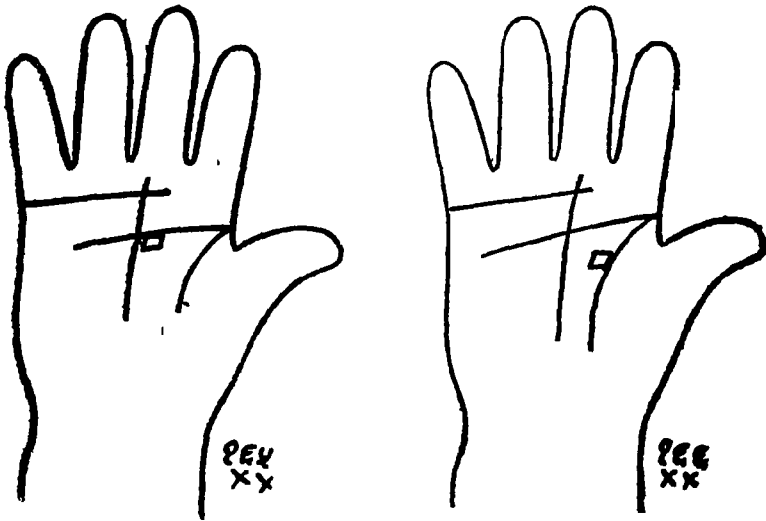
चित्र १६५—यदि राहु-क्षेत्र चतुष्कोण-चिह्न मस्तक-रेखा का स्पर्श रहा हो तो जातक को उसी वयोमान मे किसी उच्च पद अथवा आकस्मिक धन का लाभ होता है। यदि यही चिह्न किसी स्त्री के हाथ में भाग्य-रेखा तथा मस्तक-रेखा के बीच मे हो तो वह प्रसव के समय स्त्री की प्राण-रक्षा करता है।

चित्र १६६—यदि राहु-क्षेत्रस्थ चतुष्कोण चिह्न जीवन-रेखा का स्पर्श कर रहा हो तो जातक लौकिक तथा पारलौकिक क्रिया-कलापो मे कुशल तथा यशस्वी होता है। ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति प्राय. संसार को त्याग कर वैरागी बन, किसी निर्जन-स्थान मे जाकर एकान्तवास करता है।

चित्र १६७—यदि राहु-क्षेत्र पर अधिक कोण-चिह्न हो तो जातक अपनी युवावस्था मे धन, विद्या तथा मित्रो सम्बन्धी उन्नति लाभ करता है। वह परोपकारी, दानी तथा धर्मात्मा भी होता है।
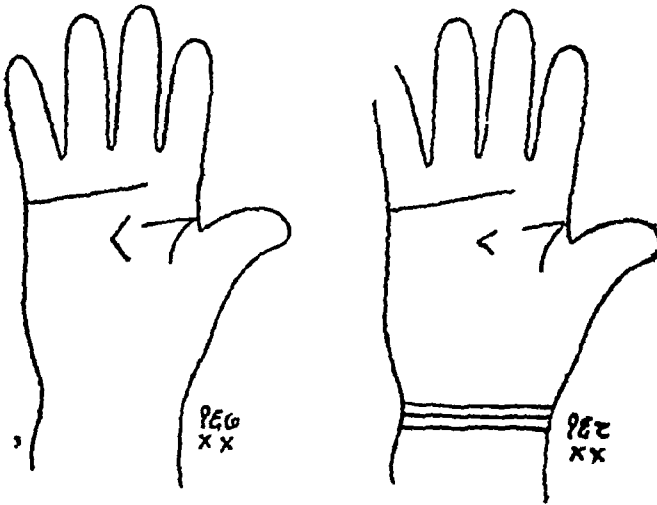
चित्र १६८—यदि राहु-क्षेत्र पर समकोण-चिह्न हो तो जातक की बुद्धि स्थिर रहती है। वह सद्गुण सम्पन्न तथा शांतिपूर्वक जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चित्र १६९—यदि राहु-क्षेत्र पर न्यून कोण-चिह्न हो तो जातक बुद्धि-हीन होता है और ज्यो-ज्यो उसकी आयु बढती जाती है, त्यो-त्यो वह अपनी पढी हुई विद्या को भी भूलता चला जाता है। उसका जीवन सामान्य स्थिति मे व्यतीत होता है।
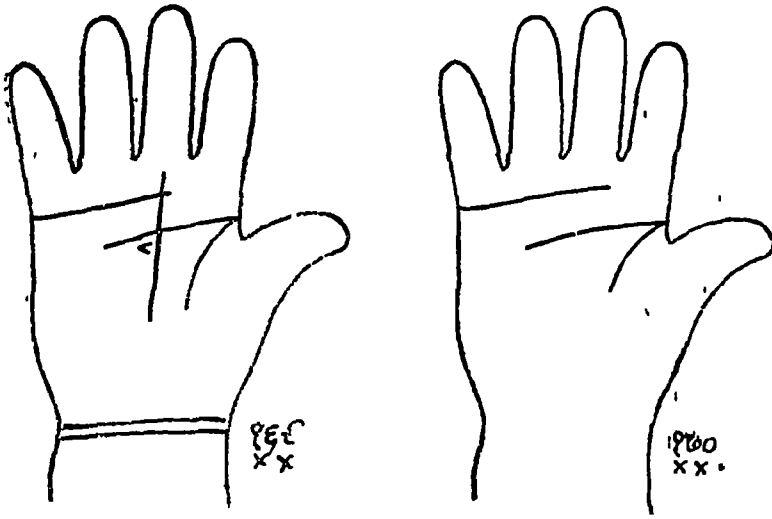
चित्र १७०—यदि राहु-क्षेत्र पर काला बिन्दु-चिह्न हो तो जातक को युवावस्था में धन-जन सम्बन्धी कष्ट उठाने पडते हैं। ३६ वर्ष की आयु के बाद उसके जीवन मे कुछ सुधार आता है। फिर भी, ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति जीवन भर दु:खी तथा निराश ही बने रहते हैं।

चित्र १७१—यदि राहु-क्षेत्र पर वृत्त-चिह्न हो तो ऐसा जातक अनेक संकटों, दु:खों तथा शत्रुओ से घिरा रहता है। यह चिह्न-दुर्भाग्य कारक तथा अशुभ होता है। ऐसे चिन्ह वाले व्यक्ति की मृत्यु अपने ही किसी इष्ट-मित्र, सम्बन्धी अथवा पड़ोसी के द्वारा होती है। जीवन भर उसे दरिद्रता का सामना करना पड़ता है।

चित्र १७२—यदि राहु-क्षेत्रस्थ वृत्त-चिह्न मस्तक-रेखा तथा जीवन-रेखा के बीच मे हो तो वह और भी अशुभ फलकारक सिद्ध होता है।
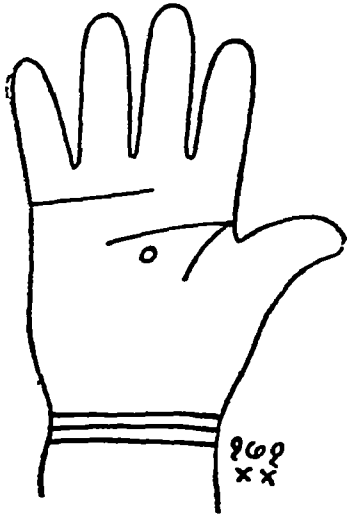
चित्र १७३—यदि राहु-क्षेत्र पर द्वीप-चिन्ह हो तो उसे दुर्भाग्य का लक्षण समझना चाहिए। ऐसा व्यक्ति युवावस्था मे ही धन-जन-हीन
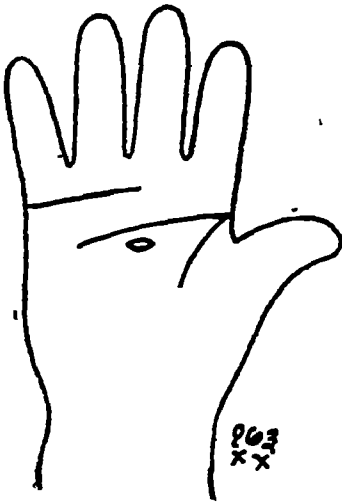
हो जाता है तथा उसका शेष जीवन घोर दुःख, कलह एवं निराशा में व्यतीत होता है।

चित्र १७४—यदि राहु-क्षेत्रस्थ द्वीप-चिह्न मस्तक-रेखा तथा जीवन-रेखा के बीच में हो तो जातक को माता-पिता का सुख नही मिलता, वे बाल्यावस्था मे ही मर जाते है।

चित्र १७५—यदि राहु-क्षेत्रस्थ द्वीप-चिह्न भाग्य-रेखा का स्पर्श कर रहा हो तो जातक अपनी सम्पत्ति के बहुत बडे भाग को जुए अथवा सट्टे मे खो देता है अथवा उसे किसी भयकर दुर्घटना का सामना करना पड़ता है।
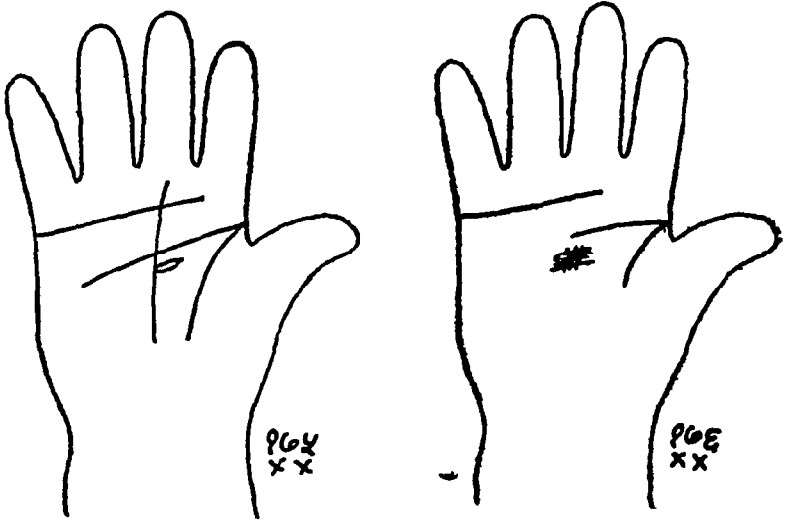
चित्र १७६—यदि राहु-क्षेत्र पर जाल-चिह्न हो तो वह दुर्भाग्य का सूचक होता है। ऐसे चिह्न वाला जातक उन्मादी, क्रिया-हीन, ईर्ष्यालु, द्वेषी तथा मस्तक-सम्बन्धी रोगों से ग्रस्त होता है। उसका सम्पूर्ण जीवन दुःखी रहते हुए ही व्यतीत होता है।

चित्र १७७—यदि उन्नत राहु-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक को धन-जन तथा सौभाग्य की कमी नही रहती। ऐसे चिह्न वाला जातक धर्मात्मा, दयालु, परोपकारी, दानी, समाज-सेवी, विद्वान् तथा यशस्वी होता है, परन्तु राहु-क्षेत्र निम्न हो तो जातक आलसी, दीर्घ-सूत्री, दुःखी तथा मातृ-पक्ष से कष्ट पाने वाला होता है। उसे युवा-वस्था मे दरिद्रता तथा अन्य अनेक सकटो का सामना करना पडता है।
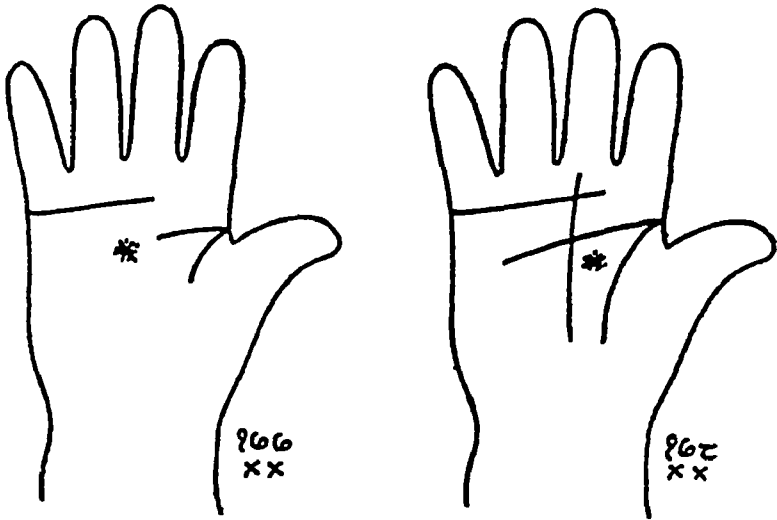
चित्र १७८—यदि राहु-क्षेत्र पर भाग्य-रेखा तथा जीवन-रेखा के बीच मे नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक को दुःख, सन्ताप, चिन्ता एवं दुर्भाग्य का सामना करना पडता है—ऐसा कुछ विद्वानो का मत है।

चित्र १७९—यदि राहु-क्षेत्र पर दाग-चिह्न हो तो जातक को अनेक सकटो का सामना करना पडता है। यदि लाल रंग का दाग-चिह्न हो तो जातक को रक्त-विकार होता है, परन्तु यदि वह काले

रंग का तिल की आकृति का चिह्न हो तो जातक के लिए सुख एवं सौभाग्य का सूचक होता है।
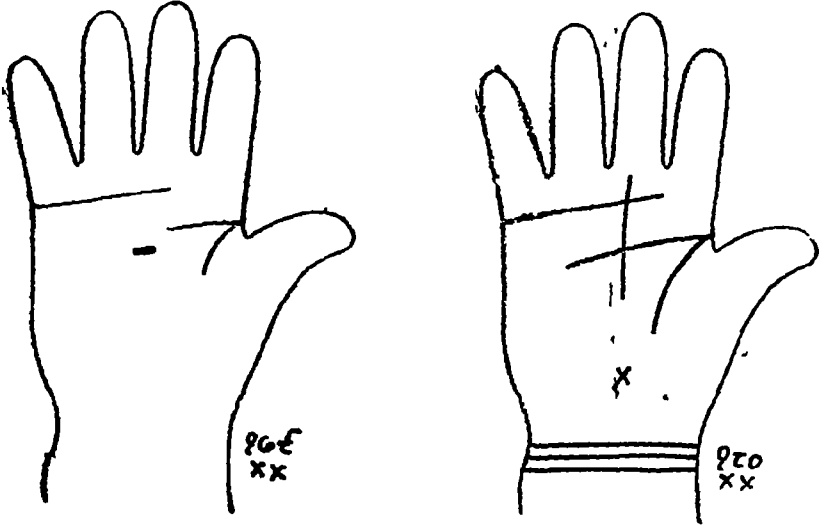
केतु-क्षेत्र पर हस्त-चिह्नों का प्रभाव

केतु-क्षेत्र की अवस्थिति राहु-क्षेत्र से नीचे मानी गई है। यह क्षेत्र राहु, चन्द्र तथा शुक्र क्षेत्रो से घिरा हुआ है।

यद्यपि मणिबन्ध की गणना भी केतु-क्षेत्र मे ही की जाती है, परन्तु उस पर पाये जाने वाले विविध-चिह्नो के प्रभाव का वणन हमने अगले प्रकरण मे स्वतन्त्र रूप से किया है। मणिबन्ध के अतिरिक्त केतु के शेष क्षेत्र पर पाये जाने वाले हस्त-चिह्नो के प्रभाव के सम्बन्ध मे प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानों के मत को नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाठको की सुविधा के लिए केतु-क्षेत्रस्थ सभी हस्त-चिह्नों के चित्र भी विवरण के साथ ही दिये गए है। इन चित्रो मे अकित मुख्य रेखाएं

केवल प्रतीक के रूप मे ही प्रदर्शित की गई है, अत· पाठको को उनके स्वरूप पर कोई ध्यान न देकर केवल हस्त-चिह्नो के स्वरूप पर ही ध्यान देना चाहिए, परन्तु जहां हस्त-चिह्नो के साथ ही मुख्य रेखाओं की स्थिति का भी वर्णन हुआ है , वहा उनकी यथार्थ-स्थिति का ही चित्रण किया गया है ।

चित्र १८०—यदि केतु-क्षेत्र पर क्रास-चिह्न हो तो ऐसा जातक वाल्यकाल से ही धन-जन से हीन, दु खी तथा रोगी होता है । प्रखर वुद्धि होने पर भी साधनो के अभाव मे वह पढ-लिख नही पाता ।

चित्र १८१—यदि केतु-क्षेत्र पर 'त्रिकोण-चिह्न' हो तो जातक वाल्यावस्था से ही भाग्यशाली होता है । उसकी समस्त अभिलाषाए पूर्ण होती हैं । यदि त्रिकोण दूषित हो तो उसका जीवन सामान्य रहता है और वाल्यावस्था मे उसे वीमारी भी वहुत उठानी पडती है ।
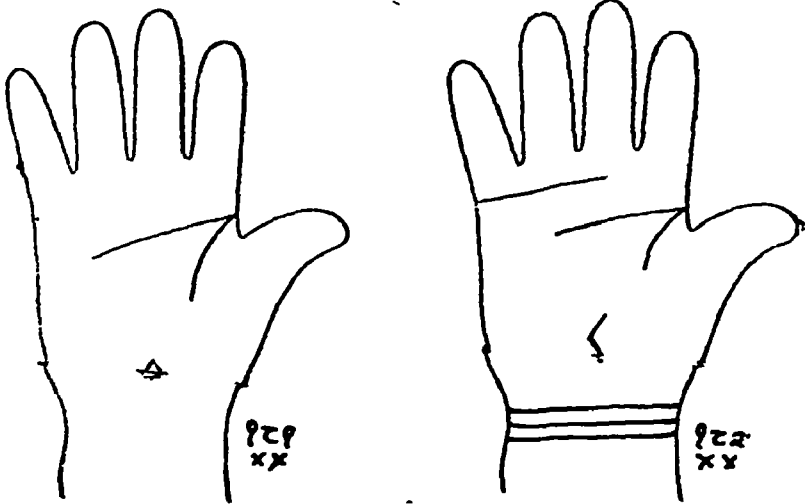
चित्र १८२—यदि केतु-क्षेत्र पर अधिक 'कोण का चिह्न' हो तो जातक बाल्यावस्था मे सुख भोगने वाला तथा अच्छे स्वास्थ्य वाला होता है।

चित्र १८३—यदि केतु-क्षेत्र पर 'समकोण' का चिह्न हो तो जातक ज्वर आदि से पीड़ित रहने वाला तथा सामान्य जीवन व्यतीत करने वाला होता है।
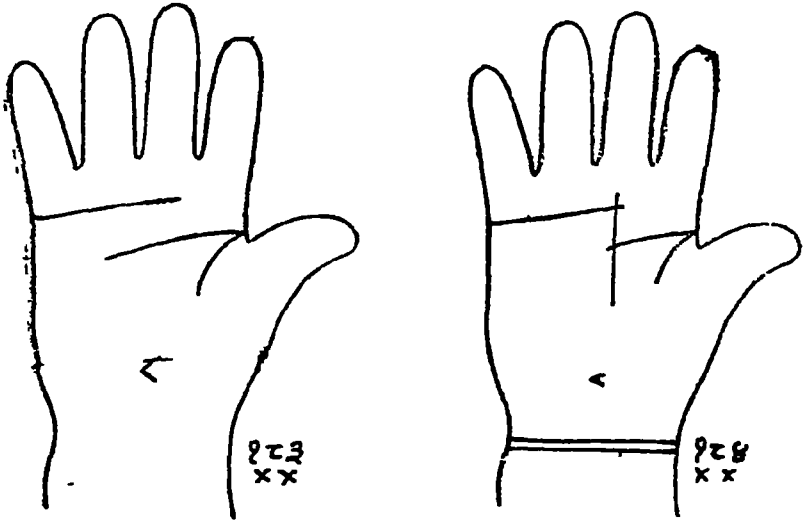
चित्र १८४—यदि केतु-क्षेत्र पर 'न्यून कोण' का चिह्न हो तो जातक जन्म से लेकर ६ वर्ष की आयु तक किसी-न-किसी रोग से ग्रस्त बना रहता है तथा बड़ा होने पर सामान्य-जीवन व्यतीत करता है।

चित्र १८५—यदि केतु-क्षेत्र पर 'काला बिन्दु-चिह्न' हो तो जातक का विवाह देर से होता है तथा उसके प्रेम-सम्बन्ध का परिणाम निराशाजनक एवं अपयशकारक होता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति को पानी से खतरा रहता है। ऐसे चिह्न वालो स्त्रिया पानी मे डूबकर

आत्म-हत्या कर लिया करती हैं। इस चिह्न वाला जातक किसी-न-किसी रोग का शिकार भी बना रहता है।
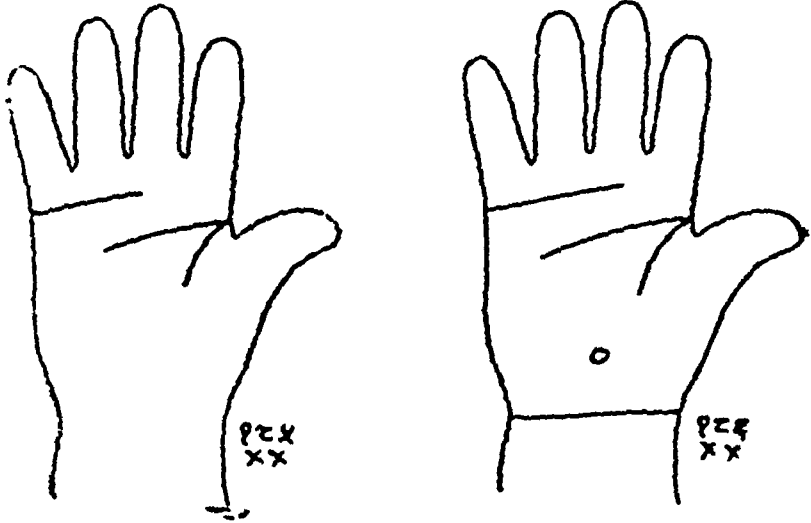
चित्र १८६—यदि केतु-क्षेत्र पर 'वृत्त-चिह्न' हो तो जातक की बुद्धि भ्रमित रहती है। वह एक के बाद दूसरी मुसीबत का सामना करता है। ऐसा व्यक्ति विद्याध्ययन से वंचित, दरिद्री, दु खी, धन-लोलुप तथा बाल्यावस्था में अधिक दु.ख भोगने वाला होता है।

चित्र १८७—यदि केतु-क्षेत्र पर द्वीप-चिह्न हो तो उसे अत्यन्त दुर्भाग्य का लक्षण समझना चाहिए। ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति मूर्ख, दरिद्री, रोगी, दुर्बल तथा निराश होता है। उसका सम्पूर्ण जीवन दु ख और चिन्ता में ही व्यतीत होता है।

चित्र १८८—यदि केतु-क्षेत्र पर 'चतुष्कोण' (वर्ग) चिह्न हो तो जातक की बाल्यावस्था मे दुर्घटनाओं से रक्षा होती है। बड़ा होने पर ऐसे चिह्न वाला जातक जीवन मे आने वाली कठिनाइयों को भी शान्ति पूर्वक पार कर लेता है।
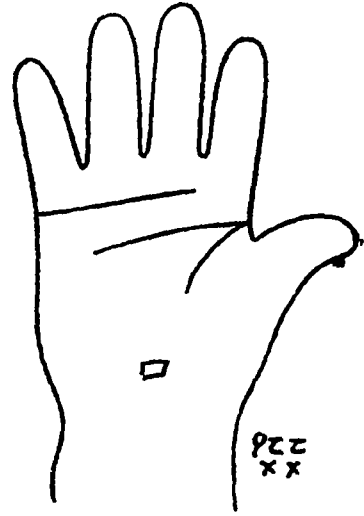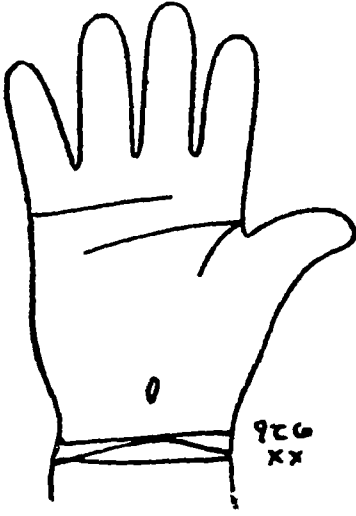
चित्र १८९—यदि केतु-क्षेत्र पर 'रेखाजाल-चिह्न' हो तो उसे अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण समझना चाहिए। ऐसा जातक रोग तथा दुर्घटनाओं
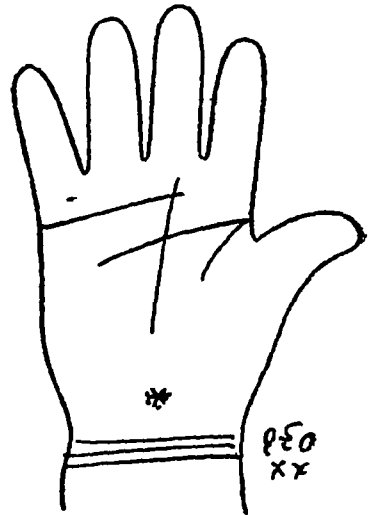
का शिकार होता रहता है। वह ठग, चोर, धोखेबाज होता है तथा जेल-यात्रा भी करता है। वह अपने विश्वस्त मित्रो को भी धोखा देता है तथा जुए-सट्टे आदि मे अपना धन नष्ट कर देता है।

चित्र १९०—यदि केतु-क्षेत्र पर 'नक्षत्र-चिह्न' हो तो जातक की बाल्यावस्था सुख मे बीतती है। बडे होने पर वह धर्मात्मा, धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है, परन्तु यदि केतु-क्षेत्र निम्न हो तो जातक निर्धन, कर्म-हीन, चिन्तित तथा उदास होता है और किसी समय अचानक ही किसी दुर्घटना मे अपने प्राण गवा बैठता है।

प्रजापति-क्षेत्र पर हस्त-चिह्नों का प्रभाव

प्रजापति-क्षेत्र की अवस्थिति बुध-क्षेत्र के नीचे प्रथम मगल वाले क्षेत्र पर मानी गई है। अग्रेजी मे इसे Mount of the Herchel कहा जाता है। कुछ विद्वान् मणिबन्ध स्थान को ही हर्षल (प्रजापति) का क्षेत्र मानते है, परन्तु यह मत अधिक मान्य नही है। आधुनिक विद्वानों के मत से इस क्षेत्र पर पाये जाने वाले हस्त-चिह्नो का जातक के ऊपर जो प्रभाव पडता है, उसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाठको की सुविधा के लिए प्रजापति-क्षेत्रस्थ सभी हस्त-चिन्हो के चित्र भी विवरण के साथ ही दिये गए हैं। इन चित्रो मे अकित मुख्य रेखाए केवल प्रतीक के रूप मे ही प्रदर्शित की गई हैं, अत: पाठको को उनके स्वरूप पर कोई ध्यान न देकर केवल हस्त-चिन्हो के स्वरूप पर ही ध्यान देना चाहिए, परन्तु जहां कही हस्त-चिन्हो के साथ ही मुख्य रेखाओ की स्थिति का भी वर्णन हुआ है, वहां उनकी यथार्थ-स्थिति का ही चित्रण किया गया है।

चित्र १९१—यदि प्रजापति-क्षेत्र पर 'क्रास-चिन्ह' हो तो जातक आलसी, निरुद्यमी, रोगी, शत्रु-पीड़ित, क्रोधी तथा चिडचिड़े स्वभाव

का होता है। उसकी मृत्यु भी किसी दुर्घटना के वशीभूत होकर होती है।
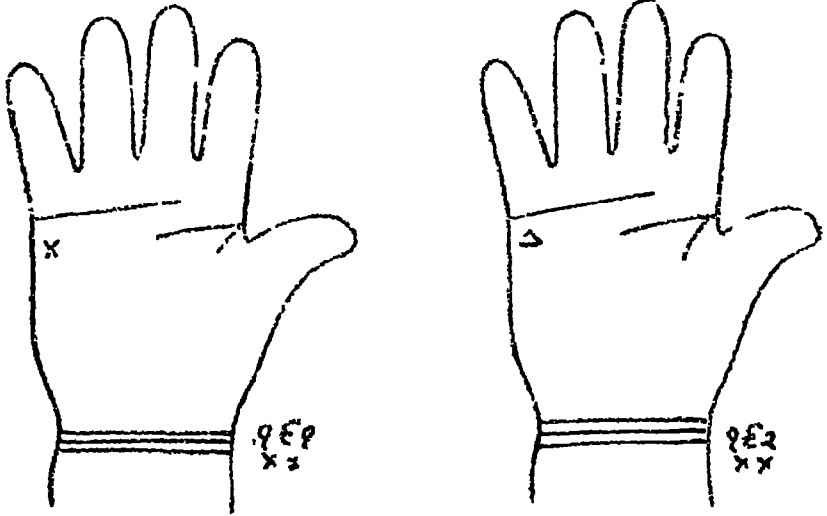
चित्र १९२—यदि प्रजापति-क्षेत्र पर 'त्रिकोण-चिन्ह' हो तो जातक परिश्रमी, क्रियाशील, धैर्यवान्, साहसी, तीव्रबुद्धि, अन्वेषक, बलवान् तथा युद्ध-क्षेत्र एवं वैज्ञानिक-क्षेत्र मे सफलता प्राप्त करने वाला होता है। यदि त्रिकोण दूषित हो तो जातक का हृदय काम के आरम्भ में घबरा जाता है, जिसके कारण उसे कम सफलता मिल पाती है।

चित्र १९३—यदि प्रजापति-क्षेत्र पर 'अधिक-कोण' का चिन्ह हो तो जातक अत्यन्त परिश्रमी, क्रियाशील, उत्साही तथा नये-नये वैज्ञानिक आविष्कार करता है, जिसके कारण उसे यश, धन तथा सफलता सभी वस्तुओं की प्राप्ति होती है।

चित्र १९४—यदि प्रजापति-क्षेत्र पर समकोण का चिह्न हो तो जातक परिश्रमी तो होता है, परन्तु कोई नया काम नही कर पाता।

वह कहानियां सुनने का शौकीन होता है और उसका जीवन सामान्य ढंग से व्यतीत होता है।
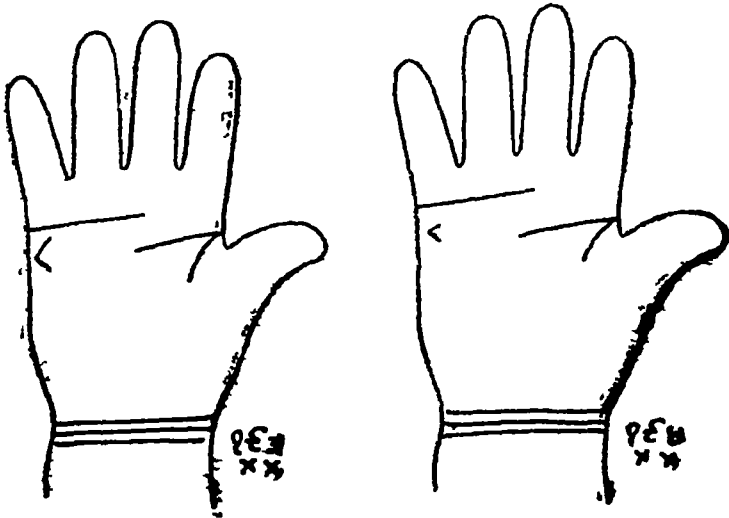
चित्र १९५—यदि प्रजापति-क्षेत्र पर न्यूनकोण का चिन्ह हो तो
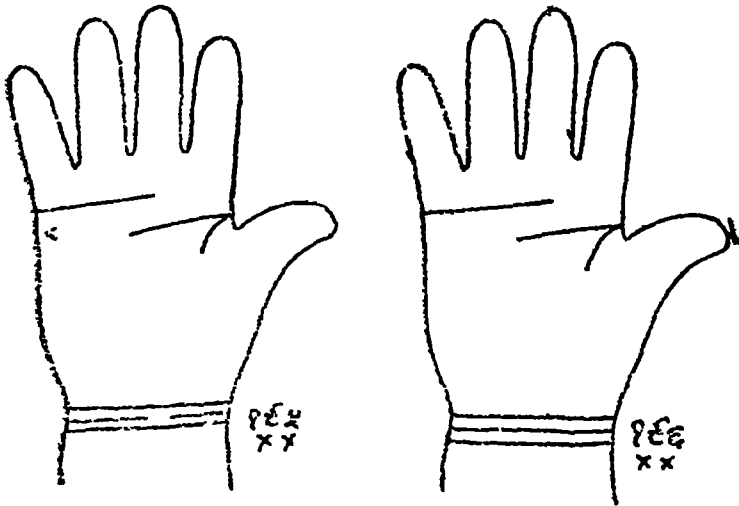
जातक आलसी, काम चोर, सुस्त तथा दूसरों के परिश्रम से स्वयं लाभ उठाने वाला होता है।

चित्र १९६—यदि प्रजापति क्षेत्र पर 'काला विन्दु' हो तो जातक किसी ऊंचे वृक्ष, मकान आदि से गिरकर घायल होता है अथवा मर जाता है। ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति अपनी ही भूलों के कारण दुःख उठाता है।

चित्र १९७—यदि प्रजापति-क्षेत्र पर 'वृत्त-चिह्न' हो तो जातक क्रियाहीन, उत्साह-हीन, आलसी तथा दरिद्री होता है। उसके किसी ऊंचे स्थान से गिरने, आग से जलने अथवा अन्य दुर्घटना मे ग्रस्त होने का भय बना रहता है। यदि ऐसी किसी दुर्घटना मे उसका प्राणान्त न हो, तो नेत्र-विहीन अवश्य हो जाता है।
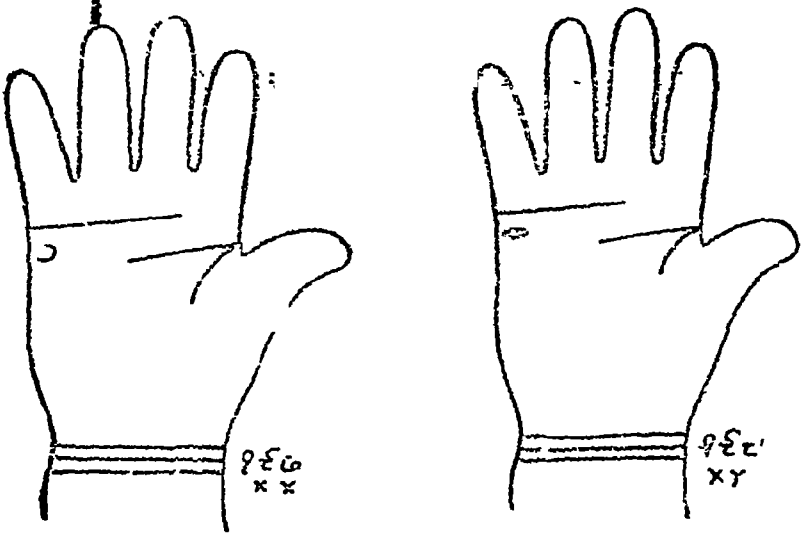
चित्र १९८—यदि प्रजापति-क्षेत्र पर द्वीप चिन्ह हो तो जातक क्रिया-हीन, आलसी, दुर्बल हृदय, निराश तथा चिन्तित स्वभाव वाला होता

है। जिसके कारण उसे जीवन के हर क्षेत्र में असफलताओं का सामना करना पड़ता है।

चित्र १९९—यदि प्रजापति-क्षेत्र पर चतुष्कोण (वर्ग) चिह्न हो तो मनुष्य परिश्रमी तथा चचल स्वभाव का होता है। वह जातक को लेखक तथा आविष्कारक बनाता है तथा दुर्घटना, धन-हानि एव जेल-यात्रा से रक्षा करता है।
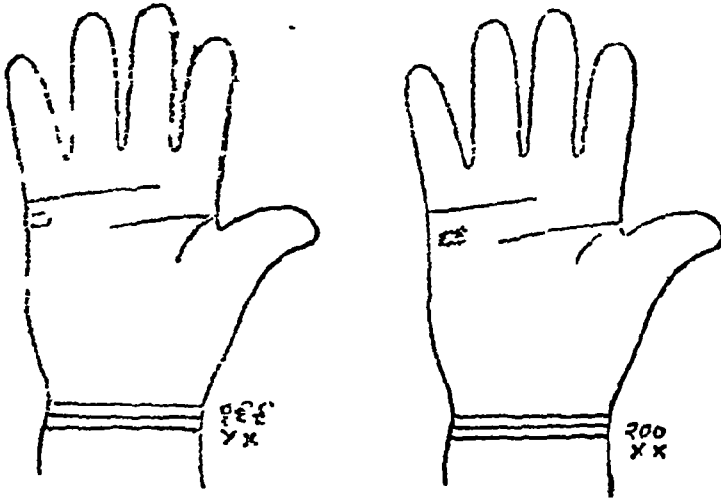
चित्र २००—यदि प्रजापति-क्षेत्र पर 'रेखा-जाल चिह्न' हो तो जातक नृशंस हत्यारा, अत्याचारी, निर्दयी तथा कठोर स्वभाव वाला होता है। वह हर समय झगडे पर उतारू रहता है। ऐसे चिन्ह वाले व्यक्ति जेल-यात्रा करते हैं तथा किसी की हत्या के अपराध मे फासी का दण्ड भी पाते हैं। इस चिह्न को बहुत ही अशुभ लक्षण समझना चाहिए।

चित्र २०१—यदि प्रजापति-क्षेत्र पर 'नक्षत्र-चिह्न' हो तो जातक शान्त, दयालु, परोपकारी, साहसी, धैर्यवान्, यशस्वी; दृढ़व्रती, बात

का पक्का तथा युद्ध-क्षेत्र में विजय प्राप्त करने वाला होता है, परन्तु यदि प्रजापति-क्षेत्र निम्न हो तो जातक घरेलू झगडों मे फस जाता है और क्रोधावेश मे या तो आत्महत्या कर लेता है या फिर युद्ध-क्षेत्र मे मृत्यु को प्राप्त हो जाता है ।
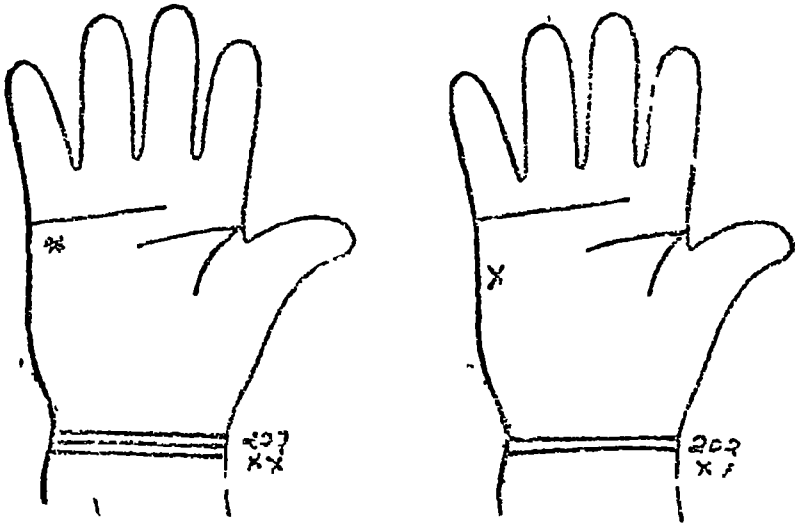
वरुण-क्षेत्र पर हस्त-चिन्हों का प्रभाव

वरुण-क्षेत्र की अवस्थिति प्रजापति-क्षेत्र के नीचे तथा चन्द्र-क्षेत्र के ऊपर मानी गई है । अंग्रेजी मे इसे "Mount of the Neptune" कहा जाता है ।

आधुनिक विद्वानो के मत से इस क्षेत्र पर पाये जाने वाले हस्त-चिह्नों का जातक के ऊपर जो प्रभाव पड़ता है, उसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाठकों की सुविधा के लिए वरुण-क्षेत्रस्थ सभी हस्त-चिन्हों के चित्र भी विवरण के साथ ही दिए गये है । इन चित्रों में अंकित मुख्य

रेखाएं केवल प्रतीक के रूप में ही प्रदर्शित की गई हैं, अतः पाठकों को उनके स्वरूप पर कोई ध्यान न देकर केवल हस्त-चिन्हो के स्वरूप पर ही ध्यान देना चाहिए। परन्तु जहां कही हस्त-चिन्हों के साथ ही मुख्य रेखाओ की स्थिति का भी वर्णन हुआ है, वहा उनकी यथार्थ स्थिति का ही चित्रण किया गया है।

चित्र २०२—यदि वरुण-क्षेत्र पर 'क्रास चिन्ह' हो तो जातक भाग्य-हीन, कर्म-हीन तथा बुद्धि-हीन होता है। उसकी प्रकृति अत्यन्त कठोर होता है। सभ्य-समाज मे ऐसा व्यक्ति सदैव निन्दित किया जाता है।

चित्र २०३—यदि वरुण-क्षेत्र पर 'त्रिकोण-चिह्न' हो तो जातक विद्वान्, योजना बनाने मे कुशल, उच्च कोटि का कवि, लेखक, इतिहासज्ञ, परिश्रमी, धीर तथा गभीर होता है। उसमे कार्य क्षमता प्रचुर मात्रा में पाई जाती है। यदि त्रिकोण दूषित हो तो कार्यारम्भ मे घबरा जाने के कारण उसे कम सफलता प्राप्त होती है।
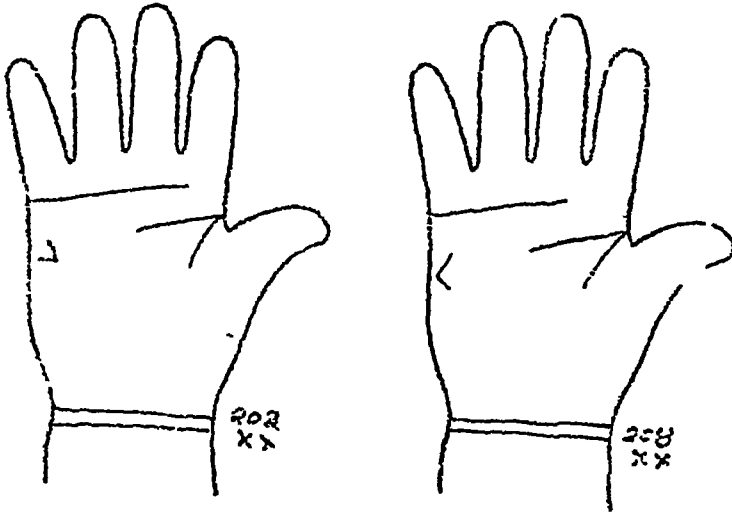
चित्र २०४—यदि वरुण-क्षेत्र पर 'अधिक कोण' का चिह्न हो तो जातक विद्या-व्यसनी, कुशाग्र बुद्धि, यशस्वी, कवि, धनी, समाज मे प्रतिष्ठित तथा सुखी होता है।

चित्र २०५—यदि वरुण-क्षेत्र पर 'समकोण' का चिह्न हो तो जातक का जीवन सामान्य होता है और उसकी प्रतिष्ठा मुहल्ले तक ही सीमित रहती है। वह कोई विशेष उन्नति नहीं कर पाता।
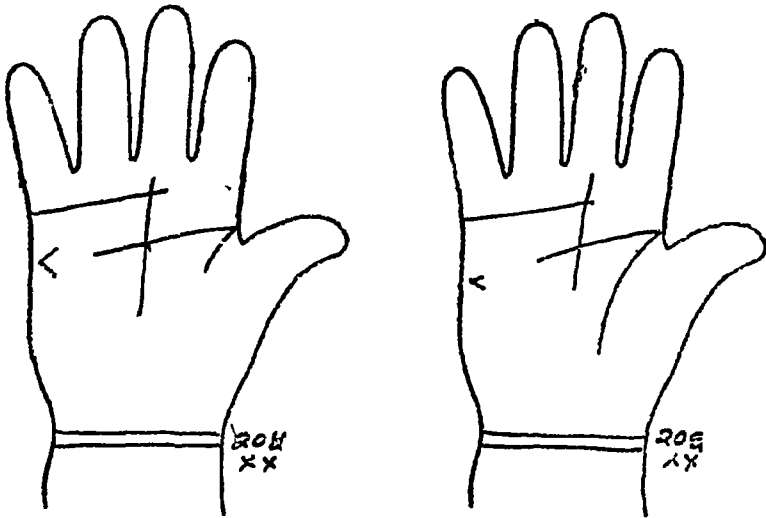
चित्र२०६—यदि वरुण-क्षेत्र पर 'न्यूनकोण' का चिह्न हो तो जातक दूसरो का आश्रित अथवा नौकर, गुण-हीन तथा अपयश प्राप्त करने वाला होता है।

चित्र २०७—यदि वरुण-क्षेत्र पर 'काला बिन्दु-चिह्न' हो तो जातक बुद्धि-हीन तथा स्वार्थी होता है। ऐसा व्यक्ति प्रायः उदास एवं खिन्न रहता है तथा किसी समय संसार से ऊबकर एकान्तवास के लिए जगल आदि मे चला जाता है।
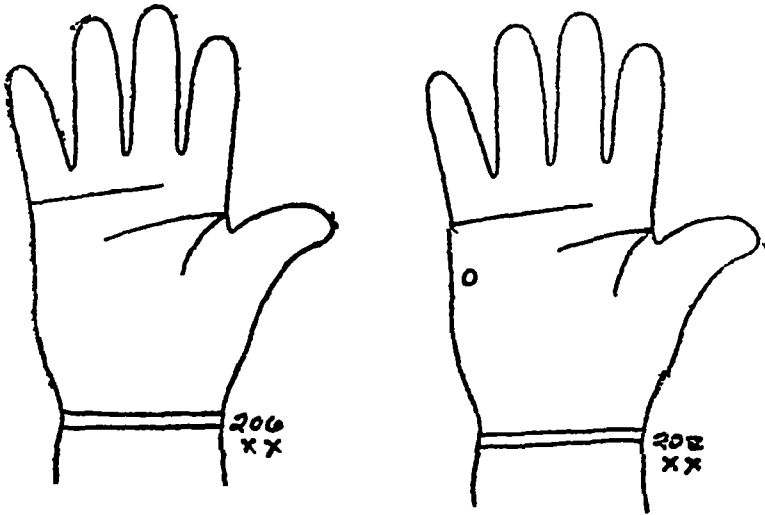
चित्र २०८—यदि वरुण-क्षेत्र पर वृत्त-चिह्न हो तो जातक भ्रमित-बुद्धि; सदेहशील, अपयशी तथा विद्याध्ययन मे पिछड़ा रहता है। उसे जीवन के किसी भी क्षेत्र में सफलता अथवा उन्नति प्राप्त नहीं होती।

चित्र २०९—यदि वरुण-क्षेत्र पर 'द्वीप-चिन्ह' हो तो जातक विद्याध्ययन नही कर पाता। वह उत्तरदायित्व को वहन करने मे असमर्थ, लजीले स्वभाव का तथा तेज-हीन होता है।

चित्र २१०—यदि वरुण-क्षेत्र पर चतुष्कोण (वर्ग) चिह्न हो तो जातक अपने शत्रुओ से सुरक्षित रहता है तथा उन्हे दबाये रखता है। यह चिह्न उसकी दुर्घटनाओ से प्राण-रक्षा भी करता है।
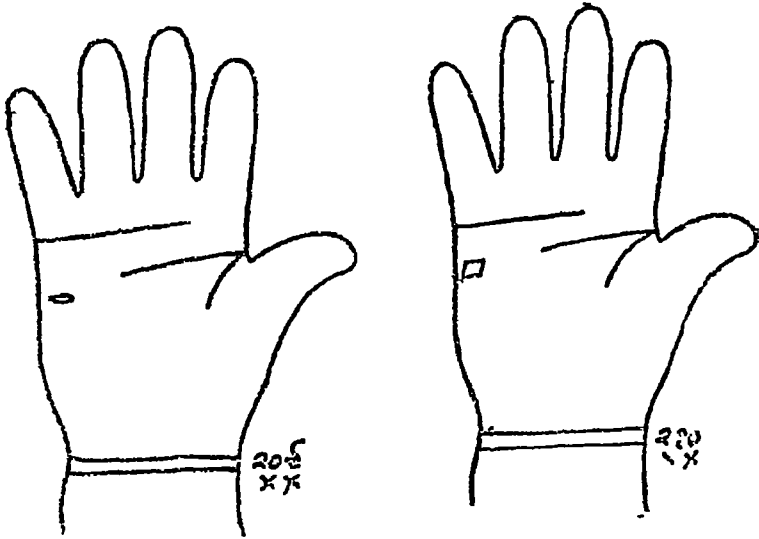
चित्र २११—यदि वरुण-क्षेत्र पर 'रेखा-जाल-चिह्न' हो तो जातक विद्या-हीन तथा रोगी होता है। ऐसे व्यक्ति चरित्रहीन भी होते है।
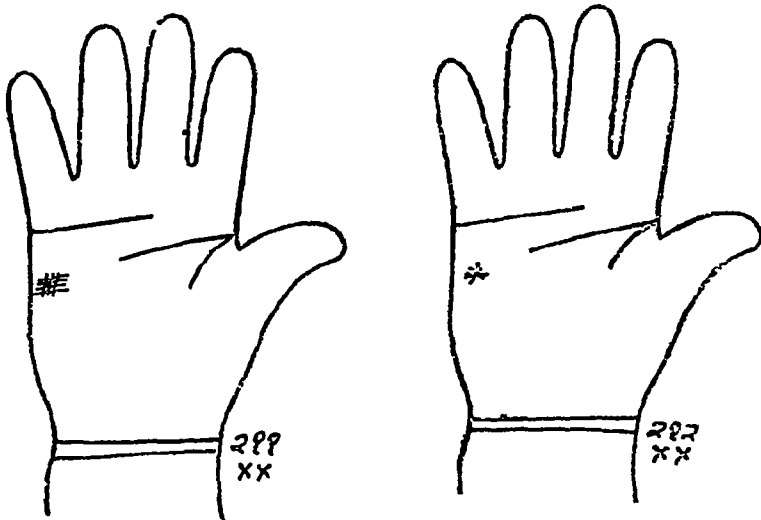
यदि हृदय-रेखा दोषपूर्ण हो तो ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति किसी प्रेम-सम्बन्ध मे पड़कर अपयश प्राप्त करता तथा दु ख उठाता है।

चित्र २१२—यदि वरुण-क्षेत्र पर 'नक्षत्र चिन्ह' हो तो जातक विद्वान्, परोपकारी, धर्मात्मा, यशस्वी तथा सर्वप्रिय होता है। वह धनी, सुखी, समाज मे आदरणीय बनकर अन्य लोगों का मार्ग दर्शन करता है—परन्तु यदि वरुण-क्षेत्र निम्न हो तो जातक कुतर्की होता है, जिसके कारण उसे अपयश की प्राप्ति होती है।

इन्द्र क्षेत्र पर हस्त-चिन्हों का प्रभाव

इन्द्र-क्षेत्र की अवस्थिति सूर्य तथा शनि-क्षेत्र के नोचे तथा राहु-क्षेत्र के ऊपर दोनों मगल क्षेत्रों के बीच मे मानी गई है। अग्रेजी मे इसे 'Mount of the Plato' कहा जाता है।

आधुनिक विद्वानो के मत से हम क्षेत्र पर पाये जाने वाले हस्त-चिह्नो का जातक के ऊरर जो प्रभाव पड़ता है, उसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

पाठकों की सुविधा के लिए इस-क्षेत्रस्थ सभी हस्त-चिह्नों के चित्र भी विवरण के साथ ही दिये गए है। इन चित्रों में अकित मुख्य रेखाएं केवल प्रतोक के रूप में ही प्रदर्शित की गई है, अत. पाठको को उनके स्वरूप पर कोई ध्यान न देकर केवल हस्त-चिह्नो के स्वरूप पर ही ध्यान देना चाहिए। परन्तु जहां कहीं हस्त-चिह्नो के साथ ही मुख्य रेखाओं को स्थिति का भी वर्णन हुआ है, वहा उनकी यथार्थ स्थिति का ही चित्रण किया गया है।

चित्र २१३—यदि इन्द्र-क्षेत्र पर 'क्रास-चिह्न' हो तो जातक निराश, उदास, स्वाभिमान से रहित तथा धर्म-कर्म से दूर रहने वाला, पर-निन्दक होता है। प्रौढ़ावस्था में उसकी स्थिति अत्यन्त दयनीय हो

जाती है और उसके जीवन का अन्तिम भाग घोर दुख में व्यतीत होता है।
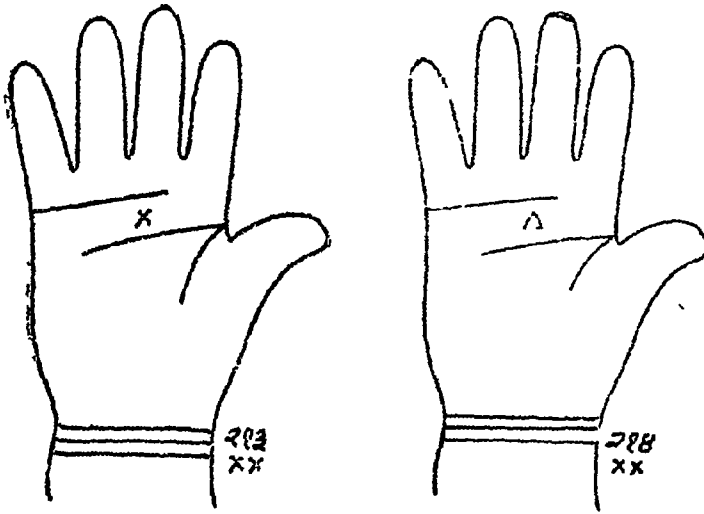
चित्र २१४—यदि इन्द्र-क्षेत्र पर 'त्रिकोण-चिह्न' हो तो जातक प्रौढावस्था मे धन-जन का सुख अधिक प्राप्त करता है। सामान्यतः वह सुखी, विद्वान्, विचारक, दार्शनिक तथा यशस्वी होता है। यदि त्रिकोण दूषित हो तो वृद्धावस्था मे दुखी रहता है तथा वह निन्दा करता रहता है।

चित्र २१५—यदि इन्द्र-क्षेत्र पर 'अधिक कोण' का चिह्न हो तो जातक कुशाग्र बुद्धि, पढने-लिखने में तेज, मिलनसार, हाजिर जवाब, यशस्वी, गुणी तथा सर्वप्रिय होता है।

चित्र २१६—यदि इन्द्र-क्षेत्र पर 'समकोण' का चिह्न हो तो जातक लोभी, मितव्ययी, विनयी तथा सतर्क रहने वाला होता है। वह अपने जीवन को शान्तिपूर्वक सावधानी से व्यतीत करता है।
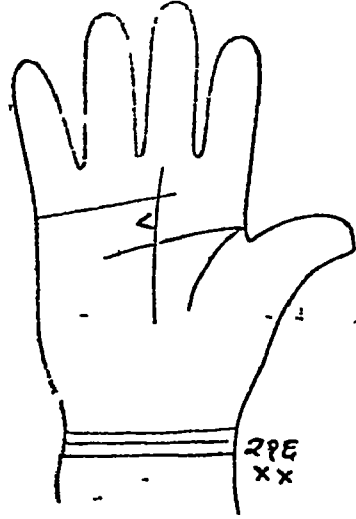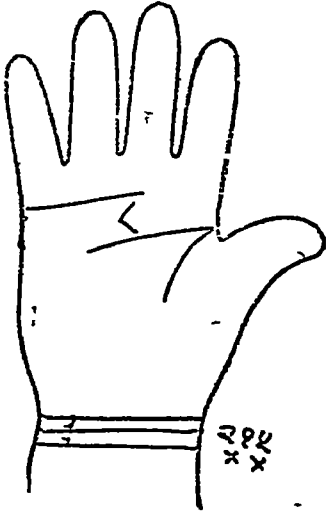
चित्र २१७—यदि इन्द्र-क्षेत्र पर 'न्यूनकोण' का चिह्न हो तो जातक एकान्त सेवी, असतोषो, उदास, मुहफट तथा चिड़चिडे स्वभाव का होता है और अपने जीवन मे कोई उन्नति नही कर पाता।
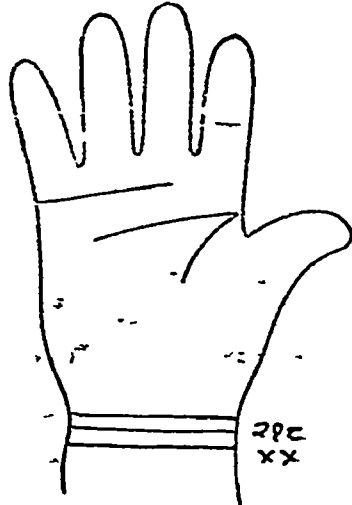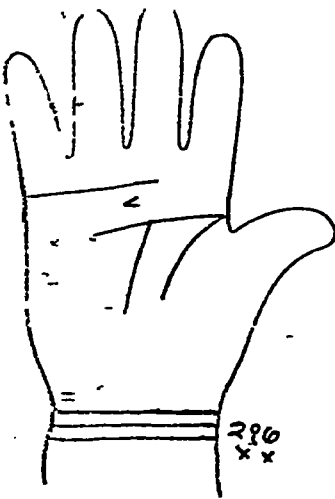
चित्र २१८—यदि इन्द्र-क्षेत्र पर 'काला-विन्दु-चिह्न' हो तो जातक को ३६ वर्ष की आयु तक कोई हृदय-विदारक चोट लगती है। वह धन-हीन, दुखी, परेशान तथा निराश पूर्ण जीवन व्यतीत करता है। ३६ वर्ष की आयु के बाद ही उसकी भाग्योन्नति होती है।

चित्र २१६—यदि इन्द्र-क्षेत्र पर 'वृत्त-चिह्न' हो तो जातक अकस्मात् ही किसी दुर्घटना का शिकार होता है, जिसमें उसका प्राणांत भी हो सकता है। यदि किसी अन्य शुभ लक्षण के कारण जीवित भी बच जाय तो उसका शेष जीवन घोर दुःख में व्यतीत होता है।
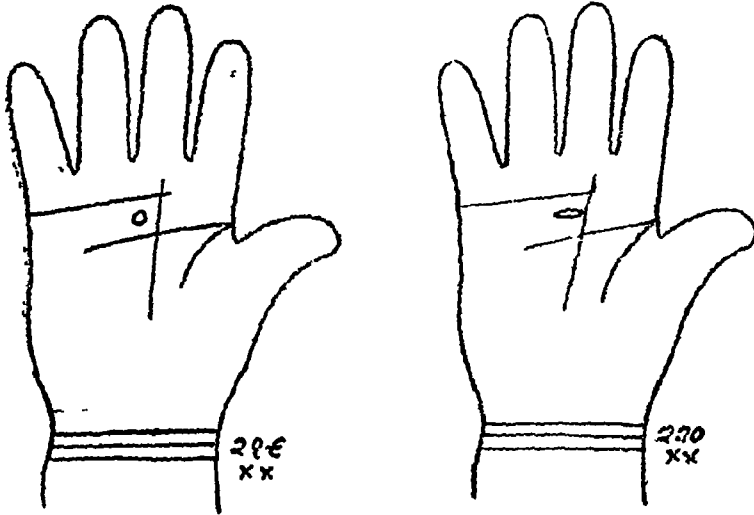
चित्र २२०—यदि इन्द्र-क्षेत्र पर 'द्वीप-चिह्न' हो को जातक प्रौढावस्था में धर्म-कर्म को त्यागकर पाप-कर्म की ओर प्रवृत्त होता है, जिसके कारण वह अपयश का भागी बनता है।

चित्र २२१—यदि इन्द्र-क्षेत्र पर 'चतुष्कोण (वर्ग) चिह्न' हो तो जातक की प्रौढ़ावस्था में धन-सम्बन्धी कठिनाइयां दूर हो जाती हैं।

ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति सम्मानित और यशस्वी परमार्थ-चिन्तक होता है। वह अपनी मोक्ष के लिए प्रयत्नशील रहता है।
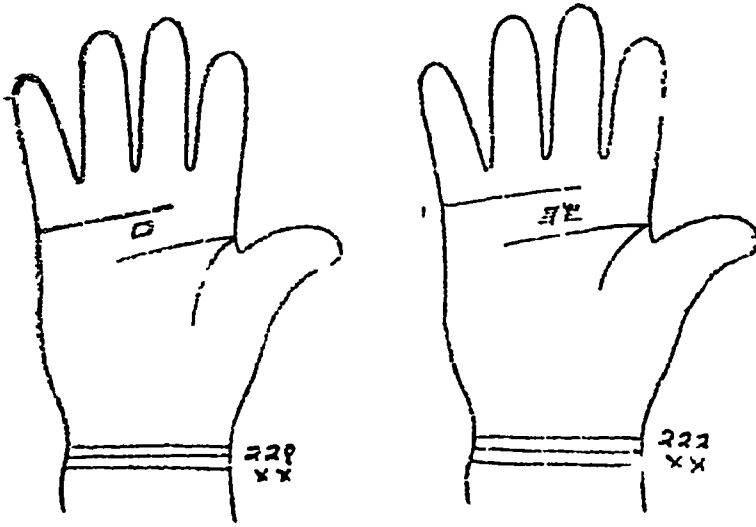
चित्र २२२—यदि इन्द्र-क्षेत्र पर 'रेखाजाल-चिह्न' हो तो उसे दुर्भाग्य का लक्षण समझना चाहिए। यदि यह चिह्न मस्तक-रेखा तथा हृदय-रेखा का भी स्पर्श कर रहा हो जातक के पतन की कोई सीमा ही नही रहती। वह सर्वत्र निन्दित, दुखी तथा अपमानित होता है।

चित्र २२३—यदि इन्द्र-क्षेत्र पर 'नक्षत्र-चिह्न' हो तो जातक बड़ा विद्वान्, परोपकारी तथा यशस्वी होता है। यदि इन्द्र-क्षेत्र निम्न हो तो वह मानसिक-चिन्ताओ से ग्रस्त तथा निर्धन होता है। यदि इस नक्षत्र-चिह्न की कोई शाखा मस्तक-रेखा का स्पर्श कर रही हो तो जातक की माता की मृत्यु बाल्यावस्था मे ही हो जाती है।

आवश्यक टिप्पणी—(१) यह स्मरणीय है कि विभिन्न हस्त-चिह्नों का स्वरूप छोटी-बडी रेखाओ के सम्मिलन से ही बनता है, अतः यह आवश्यक नही है कि उनका स्वरूप ठीक वैसा ही हो जैसा कि विवरण के साथ के चित्रो मे प्रदर्शित किया गया है; अपितु उनके स्वरूप में थोड़ा-बहुत अन्तर भी हो सकता है। रेखाओ की लम्बाई और न्यूनता के आधार पर हस्त-चिह्नो का आकार-प्रकार भी छोटा-बड़ा हो सकता है। इसीलिए चित्र सख्या ६ मे एक-एक हस्त-चिह्न के कई-कई रूपों को प्रदर्शित किया गया है। उनमे जो भी स्वरूप हो, उसे उसी श्रेणी का 'हस्त-चिह्न' मानना चाहिए। यह भी सभव है कि उनके स्वरूप मे प्रदर्शित स्वरूपो से और भी अधिक भिन्नता हो, परन्तु कुल मिलाकर उनके स्वरूप से यह प्रकट होना आवश्यक है कि वह अमुक हस्त-चिह्न है। अत हस्त परीक्षक को चाहिए कि वह हस्त-चिह्नो के विविध स्वरूपो पर ध्यान देकर उनका निर्णय करते समय सावधानी से काम लें।

(२) 'वृहद्-सामुद्रिक-विज्ञान के प्रत्येक खण्ड मे 'नक्षत्र-चिन्ह' की शाखाओ के चारो ओर बिन्दिया प्रदर्शित की गई है, जबकि यथार्थ मे वैसी बिन्दिया देखने को नहीं मिलतीं केवल रेखाए ही पाई जाती हैं। स्वरूप को अधिक स्पष्ट करने के लिए ही हमने चित्रो मे 'नक्षत्र-चिन्हो' के साथ बिन्दियां प्रदर्शित की है, उनके कारण हस्त-परीक्षक को किसी भ्रम में नहीं पड़ना चाहिए।

विशेष

चित्र २२४—किसी भी ग्रह-क्षेत्र पर 'त्रिशूल-चिन्ह' होना अत्यन्त शुभ माना गया है। यदि ग्रह-क्षेत्र उच्च हो तो त्रिशूल-चिन्ह का फल श्रेष्ठ होता है। परन्तु यदि ग्रह-क्षेत्र अत्यधिक उच्च अथवा निम्न हो तो त्रिशूल-चिन्ह के शुभ फल में कमी आ जाती है।

हस्त-परीक्षक को चाहिए कि वह त्रिशूल-चिन्ह का फलादेश करते समय ग्रह-क्षेत्र की न्यूनाधिक उच्चता एव अन्य रेखाओ की स्थिति पर भी पूर्ण विचार करले।
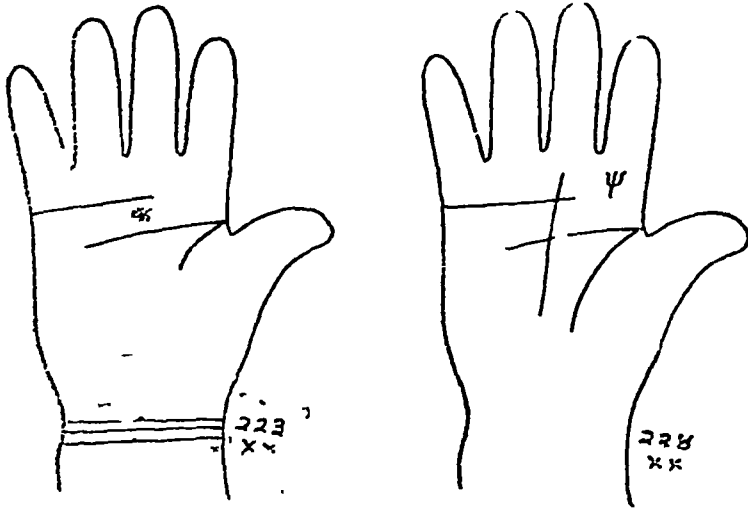
चित्र-२२५—यदि त्रिशूल-चिन्ह हाथ मे भाग्य-रेखा तथा चन्द्र-क्षेत्र के बीच वाले भाग मे हो तो ऐसा जातक धर्मात्मा, दानी, अतिथि-सेवी एव राज्य द्वारा सम्मानित होता है। वह बुद्धिमान्, भू-स्वामी तथा सब लोगो का प्रिय होता है।

चित्र २२६—यदि त्रिशूल-चिन्ह मस्तक-रेखा एव जीवन-रेखा के बीच मे हो तो ऐसा जातक बुद्धिमान, सुखी, यशस्वी, आध्यात्मिक, शक्ति सम्पन्न तथा सुखी-जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

आवश्यक टिप्पणी—किसी भी ग्रह-क्षेत्रस्थ किसी भी हस्त-चिन्ह के शुभाशुभ फल के विषय मे परीक्षा करते समय उस ग्रह-क्षेत्र की अत्युच्चता, उच्चता, निम्नता, अन्य ग्रह-क्षेत्रो की ओर उसका झुकाव,
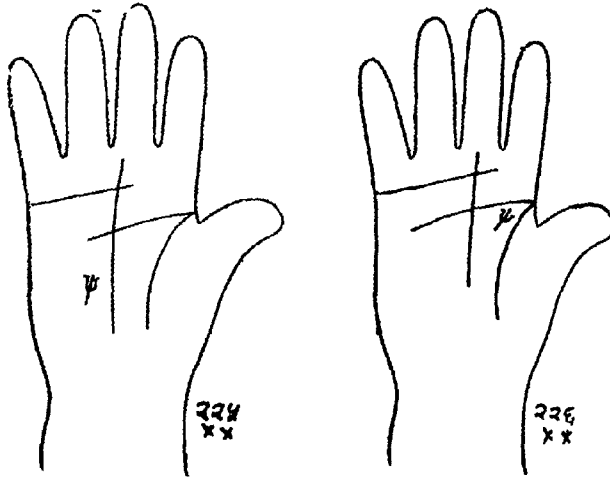
मुख्य रेखाओं की स्थिति, हाथ की बनावट तथा रेखाओं का रंग आदि सभी बातों पर भली-भांति विचार कर लेना चाहिए। केवल किसी चिन्ह को देखकर ही उसके सम्बन्ध में हाथ के अन्य लक्षणों को देखे बिना फलादेश कर बैठना ठीक नहीं रहता।

प्राच्य भारतीय मतानुसार हथेली पर जो विविध प्रकार के चिन्ह पाए जाते हैं, उनका वर्णन इसी खण्ड के अन्तिम प्रकरण में किया गया है।

विवाह रेखा

सूर्य रेखा

भाग्य रेखा

हृदय रेखा

मस्तक रेखा

स्वास्थ्य रेखा

जीवन रेखा

मंगल रेखा

मणिबन्ध रेखाएँ
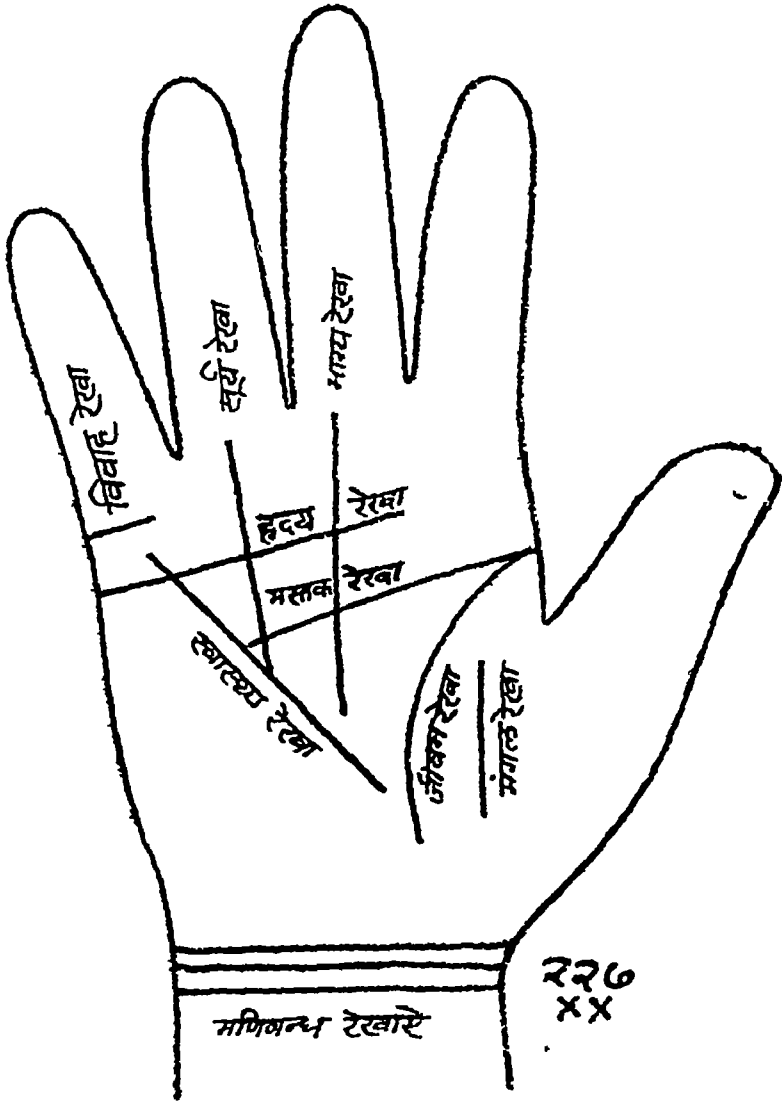
[हथेली पर मुख्य रेखाओं की अवस्थिति]

मुख्य रेखाओं पर

विविध हस्त-चिह्नों का प्रभाव

चित्र संख्या २२८ में प्रदर्शित विभिन्ना मुख्य रेखाओ पर हस्त-चिन्हों के प्रभाव का वर्णन सम्बन्धित रेखा के फलादेश के साथ ही 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के विभिन्न खण्डो मे किया जा चुका है। इस प्रकरण मे मुख्य रेखाओ पर पाए जाने वाले हस्त-चिन्हो के प्रभाव का संक्षिप्त तथा एकत्र वर्णन पाठको की सुविधा के लिए किया जा रहा है। चित्र सख्या २२८ मे विविध मुख्य रेखाओ पर विविध हस्त-चिह्नों की स्थिति के स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है। इस प्रकरण में विभिन्न मुख्य-रेखाओं पर विविध हस्त-चिह्नो के प्रभाव का वर्णन करते समय उनके स्वरूप को प्रदर्शित करने वाले चित्र भी साथ ही दे दिये गए है, ताकि पाठकों को समझने मे किसी प्रकार की असुविधा न रहे। इस प्रकरण मे वर्णित सभी फलादेश पाश्चात्य मतानुसार ही है— यह स्मरण रखना चाहिए।

जैसा कि स्थान-स्थान पर निर्देश किया जाता रहा है, हस्त-परीक्षक को चाहिए कि वह किसी भी हस्त-चिह्न के प्रभाव पर विचार करते समय जातक के हाथ की बनावट, अन्य रेखाओं के स्वरूप, ग्रह-क्षेत्रों की उच्चता अथवा अनुच्चता, रेखा के रग तथा अगूठे एव उगलियों की बनावट आदि सभी बातो पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने के बाद ही फलादेश करे, अन्यथा भूल हो जाने की सम्भावना बनी रहेगी।
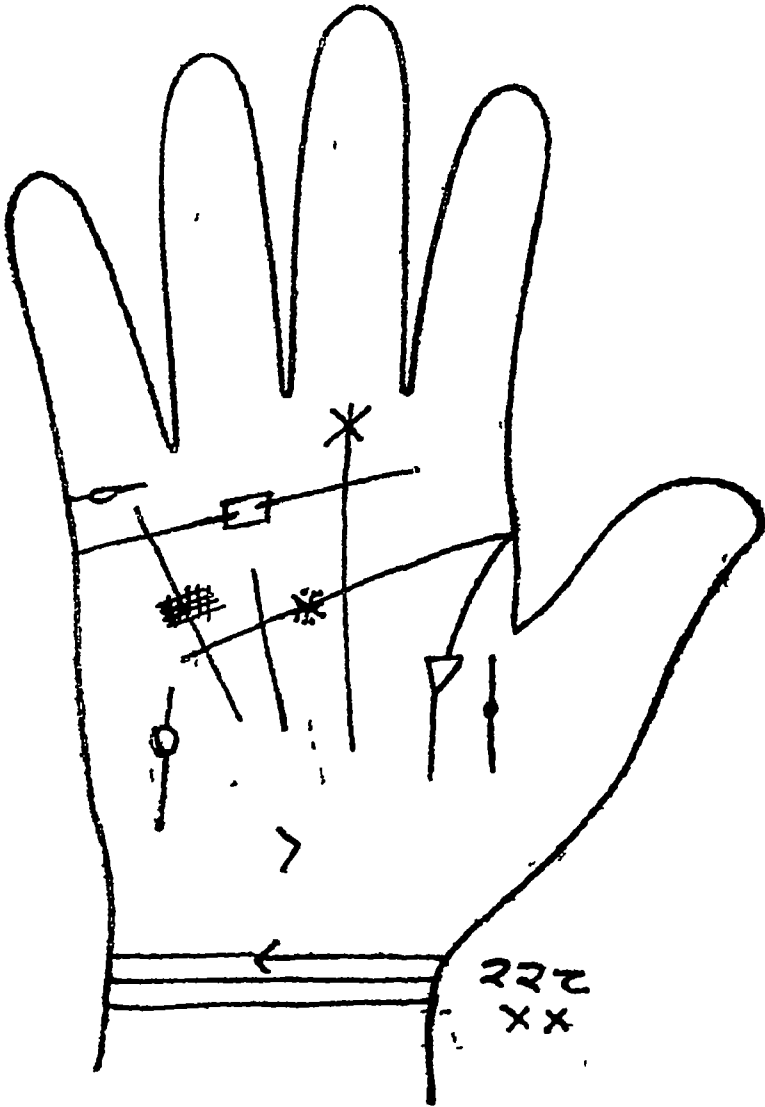
[विभिन्न रेखाओं पर विभिन्न हस्त-चिह्नों की अवस्थिति का स्वरूप]

मुख्य रेखाओं पर विविध हस्त-चिह्नों की अवस्थिति और प्रभाव के सम्बन्ध में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

त्रिकोण या त्रिभुज-चिह्न

चित्र २२९—यदि जीवन-रेखा के प्रारम्भिक भाग मे 'त्रिकोण अर्थात् 'त्रिभुज-चिह्न' हो तो जातक को बाल्यावस्था मे बीमारियो से मुक्त करके प्राण-रक्षा करता है।
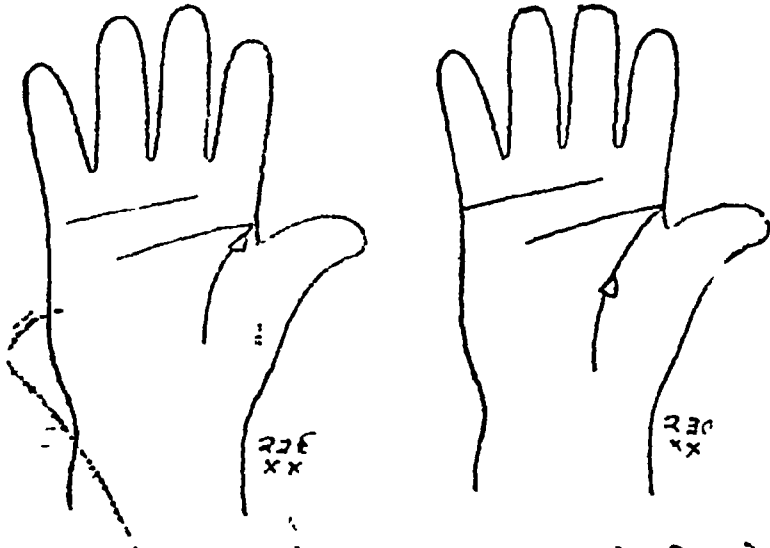
चित्र २३०—यदि जीवन-रेखा मध्य भाग मे त्रिकोण-चिह्न हो तो जातक के जीवन के मध्य भाग मे रोग, दुर्घटना आदि से प्राण-रक्षा करता है।

चित्र २३१—यदि स्वास्थ्य-रेखा के सहयोग से जीवन-रेखा के अन्तिम भाग पर त्रिकोण-चिह्न, बना हो तो जातक की मृत्यु किसी लम्बी बीमारी के बाद होती है।
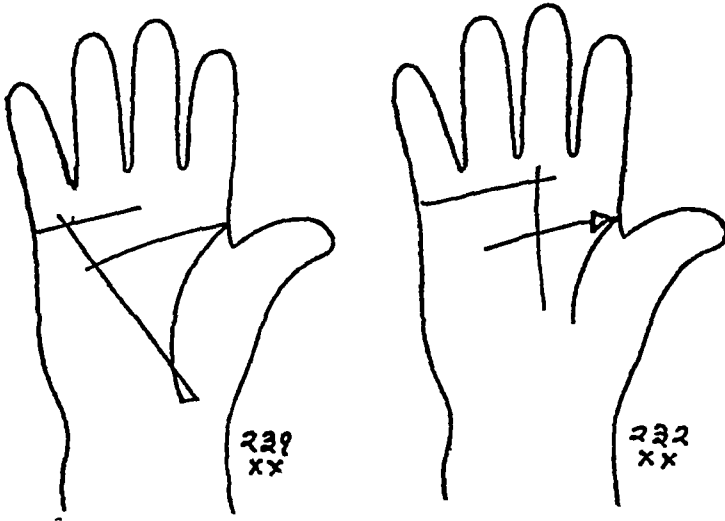
चित्र २३२—यदि मस्तक-रेखा के आरम्भ मे त्रिकोण-चिह्न स्पष्ट तथा निर्दोष स्थिति मे हो तो ऐसे चिह्न वाला जातक कुशाग्र बुद्धि, विद्वान् तथा दूरदर्शी होता है।

चित्र २३३—यदि मस्तक-रेखा तथा भाग्य-रेखा के सयाग से हथेली पर त्रिकोण-चिह्न वने तो जातक स्वाध्याय प्रिय, आध्यात्मिक तथा धार्मिक विचारो से युक्त, ईश्वर-भक्त एव मन्दिर 'आदि मे पूजा करने वाला होता है।

चित्र २३४—यदि मस्तक-रेखा तथा स्वास्थ्य-रेखा के सयोग से हथेली पर त्रिकोण-चिह्न वने तो जातक को एक के वाद दूसरे सकट एव चिन्ताओ का सामना करना पडता है। वह दिन-रात परिश्रम करता है, फिर भी उसे सुख, शाति एव सतोष की प्राप्ति नही होती। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति स्वभाव के रूखे तथा चिड़चिड़े होते हैं।
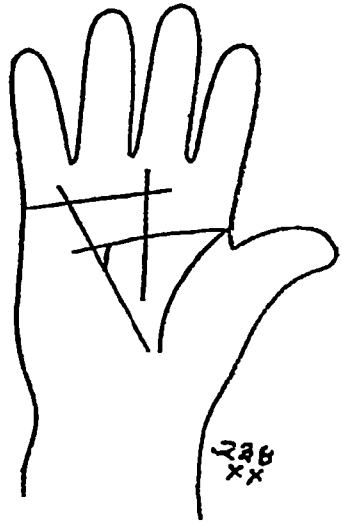
चित्र २३५—यदि हृदय-रेखा पर जीवन-रेखा अथवा जीवन-रेखा की किसी सहायक-रेखा द्वारा 'त्रिकोण-चिह्न बनता हो तो जातक का
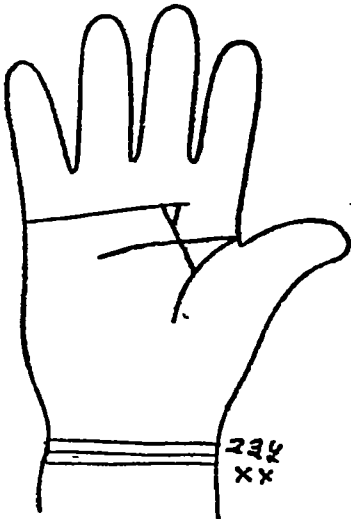
भाग्य उसके जीवन के अन्तिम भाग में चमकता है और वह अचानक ही धनी व्यक्ति बन जाता है।

चित्र २३६—यदि हृदय-रेखा पर सूर्य-रेखा अथवा उसकी किसी सहायक रेखा द्वारा त्रिकोण-चिह्न बनता हो तो जातक अत्यन्त विद्वान्, प्रतिभाशाली कवि तथा लेखक बनता है और मध्यमावस्था के उपरान उसे विशेष प्रसिद्धि प्राप्त होती है। तभी उसका जीवन सुख-शांति एव ऐश्वर्यपूर्ण बनता है, परन्तु ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति रक्त-चाप (ब्लड प्रेशर) अथवा रक्त विकारों के शिकार भी होते हैं।

चित्र २३७—यदि अनामिका उगली के मूल स्थान के समीप सूर्य-रेखा पर त्रिकोण-चिह्न हो तो जातक को लेखन कार्य मे अत्यधिक सफलता एव विश्वव्यापी प्रसिद्धि प्राप्त होती है। उसकी मृत्यु अपने निवास-स्थान से बहुत दूर किसी जगह होती है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति काल्पनिक तथा एकान्तप्रिय होते है। उनके इष्ट मित्रो की सख्या भी कम ही होती है।

चित्र २३८—यदि सूर्य-रेखा अथवा उसकी किसी शाखा-रेखा द्वारा हृदय-रेखा पर त्रिकोण-चिह्न बनता हो तो जातक स्पष्ट वक्ता, दृढ़ निश्चयी, सत्यवादी तथ मुहफट होता है, जिसके कारण उसके अपने लोग भी पराये हो जाते है। जीवन-यापन के लिए उसे पर्याप्त धन प्रप्ता होता रहता है, परन्तु ऐसे चिह्न वाले जातक के प्रेम-सम्बन्ध सुखकर नही होते।

चित्र २३९—यदि सूर्य-रेखा अथवा उसकी किसी शाखा रेखा द्वारा मस्तक-रेखा पर त्रिकोण-चिह्न बनता हो तो ऐसे जातक की मस्तिष्क शक्ति दूनी होती है। वह एक साथ दो कार्यों का सफलतापूर्वक सचालन-सम्पादन कर सकता है।
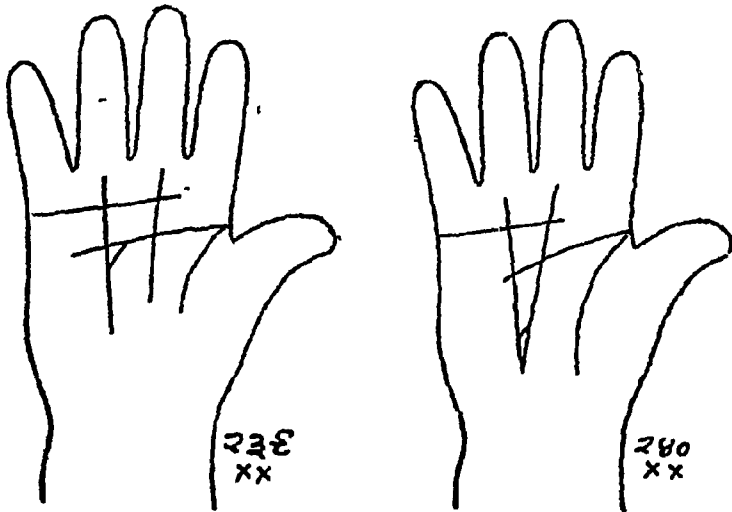
चित्र २४०—यदि सूर्य-रेखा अथवा उसकी किसी शाखा रेखा द्वारा भाग्य-रेखा पर त्रिकोण-चिह्न बनता हो तो ऐसे चिह्न वाला जातक कुशल व्यवसायी, उच्चपदाधिकारी, वकील अथवा सम्पादक

होता है। वह धन का संचय करने वाला तथा सुखी; यशस्वी एव ऐश्वर्य पूर्ण जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चित्र २४१—यदि सूर्य-रेखा जीवन-रेखा से मिलकर कोई त्रिकोण-चिह्न वनाये तो जातक अपने जीवन के अन्तिम काल मे विशेप सुख प्राप्त करता है। ऐसे त्रिह्न वाले व्यक्ति की धन-हानि से रक्षा होती है।
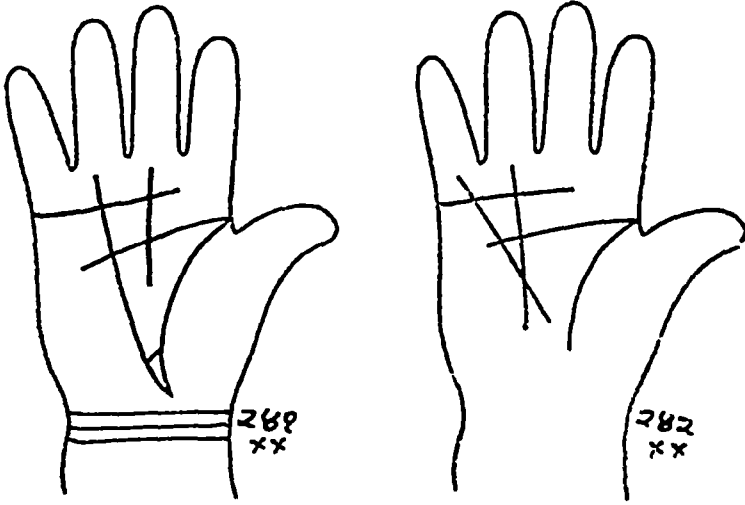
चित्र २४२—यदि सूर्य-रेखा स्वास्थ्य-रेखा से मिलकर त्रिकोण-चिह्न का निर्माण करे तो जातक वश परम्परागत वीमारियो से पीड़ित रहा करता है। वैसे उसका जीवन सुख, शाति तथा सम्पन्नता से पूर्ण रहता है।

चित्र २४३—यदि सूर्य-रेखा चन्द्र-रेखा से मिलकर त्रिकोण-चिह्न का निर्माण करे तो जातक श्रेष्ठ कवि, प्राकृतिक सौन्दर्य का प्रेमी, तार्किक तथा विद्वान् होता है। उसे यश, मान-प्रतिष्ठा तथा धन आदि सभी वस्तुओ की प्राप्ति होती है।
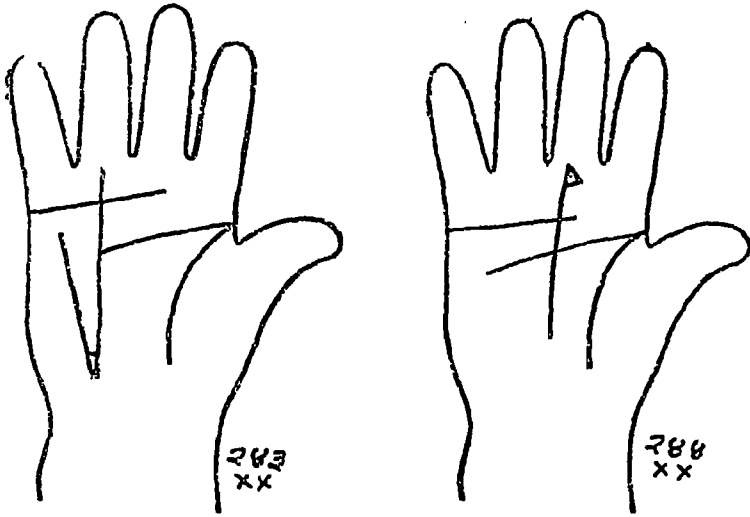
चित्र २४४—यदि भाग्य-रेखा पर मध्यमा उंगली के मूल-स्थान मे त्रिकोण-चिह्न हो तो वह जातक के लिए दुर्भाग्य का सूचक होता है। ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति अपने धन को स्वयं नष्ट करता है, जिसके कारण उसे बुरे दिन देखने पड़ते हैं।

चित्र २४५—यदि भाग्य-रेखा द्वारा हृदय-रेखा पर त्रिकोण-चिह्न बनता हो तो उसका फल भी पूर्वोक्त प्रकार का ही समझना चाहिए।

चित्र २४६—यदि भाग्य-रेखा मस्तक-रेखा पर त्रिकोण-चिह्न बनाती हो तो उसका फल भी पूर्वोक्त प्रकार का ही होता है।

चित्र २४७—यदि भाग्य-रेखा मस्तक-रेखा पर त्रिकोण बनाकर वहीं ठहर जाए, आगे न बढे तो जातक के भाग्य की सीमित उन्नति होती है। वह युवावस्था तक ही भाग्यशाली रह पाता है।
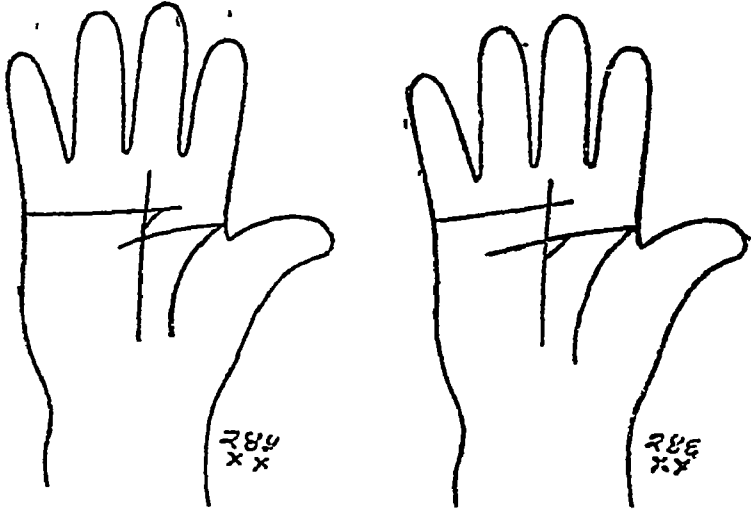
चित्र २४८—यदि भाग्य-रेखा हृदय-रेखा पर त्रिकोण बनाकर ठहर जाए, आगे न बढे तो भी जातक की सीमित उन्नति होती है और प्रौढावस्था तक ही भाग्यशाली रह पाता है।
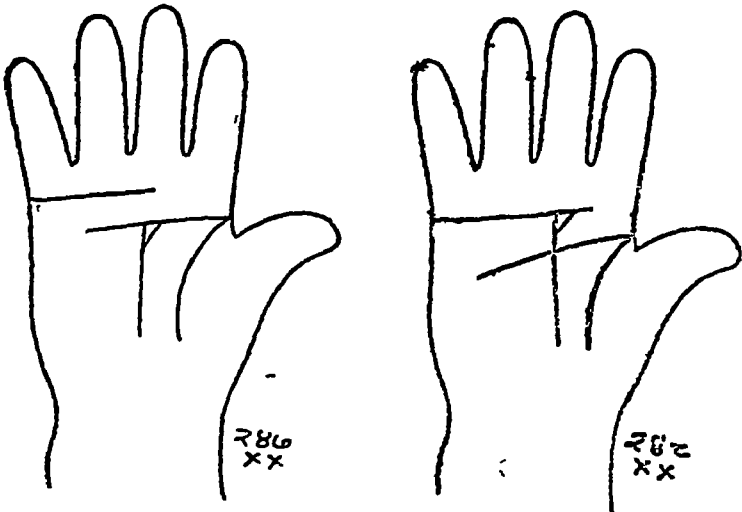
चित्र २४९—यदि भाग्य-रेखा मस्तक-रेखा तथा हृदय-रेखा तीनों पर हो त्रिकोण-चिह्न बनाकर ठहर गई हो तो जातक की विशेष उन्नति अपने किसी प्रेम-सम्बन्ध अथवा मस्तक मे चोट लगने के कारण नही हो पाती।
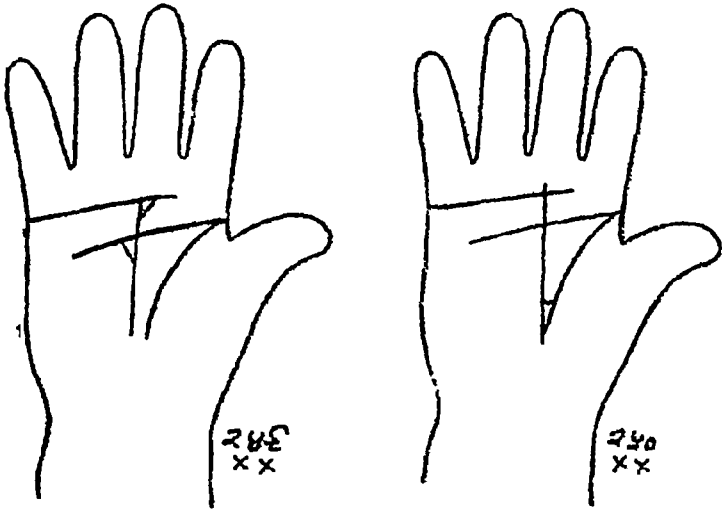
चित्र २५०—यदि भाग्य-रेखा शुक्र-रेखा पर जीवन-रेखा के साथ निर्दोष त्रिकोण-चिह्न बनाती हो तो जातक को किसी स्त्री की सेवा और उसके द्वारा धन की प्राप्ति होती है और वह धन उस स्त्री के आत्मीयजनों पर ही व्यय होता है। पैतृक-ऋण को उतारने अथवा स्त्री की बीमारी पर भी वह धन खर्च हो सकता है।

चित्र २५१—यदि स्वास्थ्य-रेखा हृदय-रेखा पर त्रिकोण-चिह्न बनाती हो अथवा किसी अन्य रेखा से मिलकर त्रिकोण-चिह्न बनाती हो तो जातक को दुर्भाग्य, चिन्ता, हृदय रोग, अन्य प्रकार की बीमारिया तथा आर्थिक सकटों का सामना करना पड़ता है।
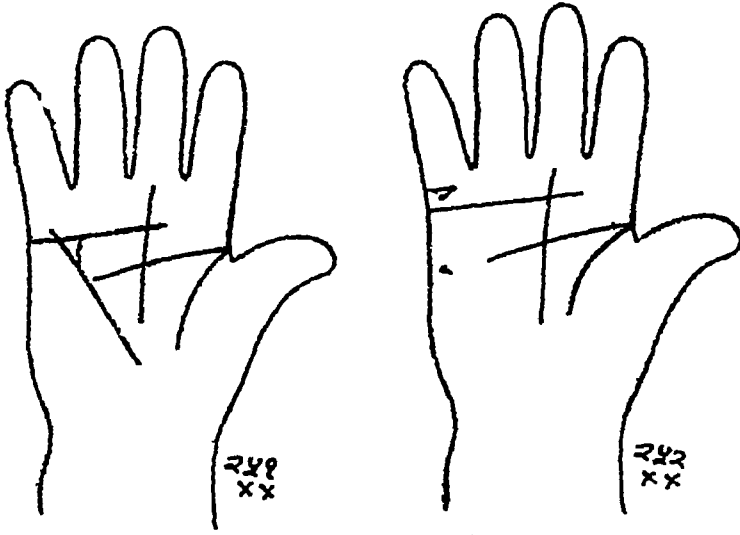
चित्र २५२—यदि विवाह-रेखा पर त्रिकोण-चिह्न हो तो जातक का विवाह बहुत परेशानी के बाद होता है और विवाह के बाद शीघ्र ही उसे वियोग का दुःख भी सहन करना पड़ता है।

चित्र २५३—यदि मंगल-रेखा पर त्रिकोण-चिह्न हो तो जातक अत्यन्त परिश्रमी, धैर्यवान्, उद्यमी तथा क्रियाशील होता है। ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति प्रतापी, यशस्वी तथा प्रत्येक काम में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

चित्र २५४—यदि चन्द्र-रेखा पर त्रिकोण-चिह्न हो तो जातक को समुद्री यात्राओं से विशेष लाभ होता है। यदि चन्द्र-रेखा स्थित त्रिकोण-चिह्न बुध-क्षेत्र पर हो तो जातक बहुत ही मिलनसार, सभ्य, सुशील तथा प्रसन्न रहने वाला होता है।

२५५—यदि किसी रेखा परतीन या चार छोटे-छोटे त्रिकोण-चिह्न एक साथ दिखाई दे तो जातक वाचाल, स्वार्थी, रोगी, अहकारी
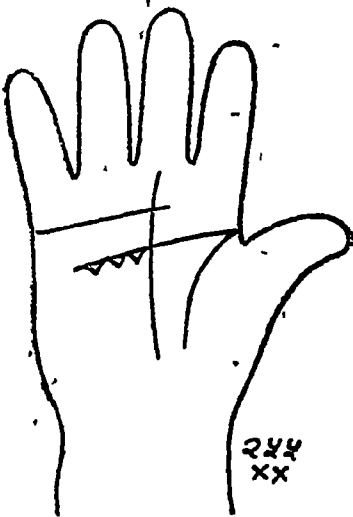
तथा आत्म प्रशसक होता है। किसी भी रेखा पर दो से अधिक संख्या मे त्रिकोण चिह्नो का होना शुभफलकारक नही रहता।

क्रास या धन (गुणक) चिन्ह

चित्र २५६—यदि 'क्रास-चिह्न' जीवन-रेखा के आरम्भ में, हो तो जातक की बाल्यावस्था मे उदर-विकार, अन्य प्रकार की बीमारियों तथा अकाल-मृत्यु से रक्षा करता है।

चित्र २५७—यदि क्रास-चिह्न जीवन-रेखा के मध्यभाग मे हो तो उसे जातक के स्थायी रूप से बीमार बने रहने का लक्षण समझना चाहिए। जीवन-रेखा पर क्रास-चिह्न होने से जातक का अपने निकट सम्बन्धियों से मनमुटाव तथा झगड़ा होता रहता है, क्योकि वे जातक की उन्नति मे रोड़े अटकाते रहते हैं।
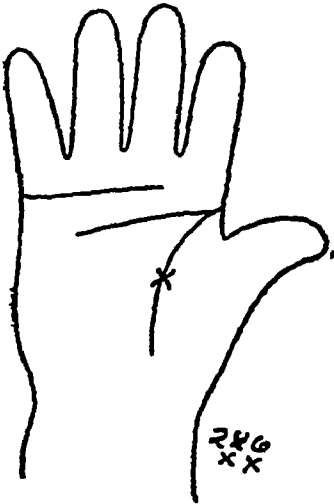
चित्र २५८—यदि क्रास-चिह्न जीवन रेखा के अन्तिम भाग पर हो तो जिस वयोमान में क्रास-चिह्न हो उस आयु-वर्ष मे जातक की मृत्यु होगी—ऐसा समझना चाहिए।

चित्र २५९—यदि मस्तक-रेखा पर क्रास-चिह्न हो तो जातक को सिर दर्द, आखो की ज्योति का क्षीण होना, चक्कर आना तथा रात्रि के समय कम दिखाई देना आदि शिकायतें होती है। केवल भाग्य-रेखा की सहायता द्वारा मस्तक-रेखा पर बना हुआ क्रास-चिह्न शुभफल-दायक होता है। मस्तक-रेखा के ऊपर अन्य किसी भी स्थान पर क्रास-चिह्न का होना अशुभ फलकारक होता है।
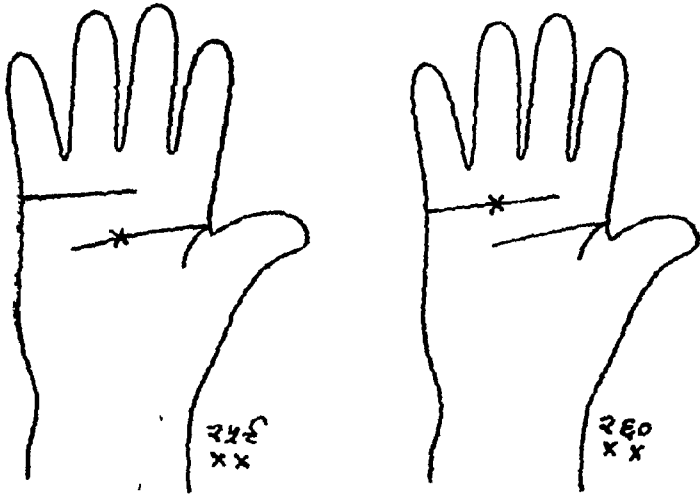
चित्र २६०—यदि हृदय-रेखा पर क्रास-चिह्न हो तो जातक प्रेम के मामले मे अधीर, हृदय-रोग से पीड़ित तथा अनुत्साही होता है वह थोडे-से परिश्रम से ही घबरा जाता है। मादक वस्तुओं का सेवन करने के कारण उसकी हृदय से सम्बन्धित बीमारिया अधिक बढ जाया करती हैं।

चित्र २६१—यदि सूर्य-रेखा पर क्रास-चिह्न हो तो जातक के यश, मान और प्रतिष्ठा को ठेस पहुचती है। वह हर समय निराश तथा चिन्तित-सा वना रहता है। किसी समय उसे किसी मामले में अत्यधिक वदनामी का शिकार भी होना पड़ता है।
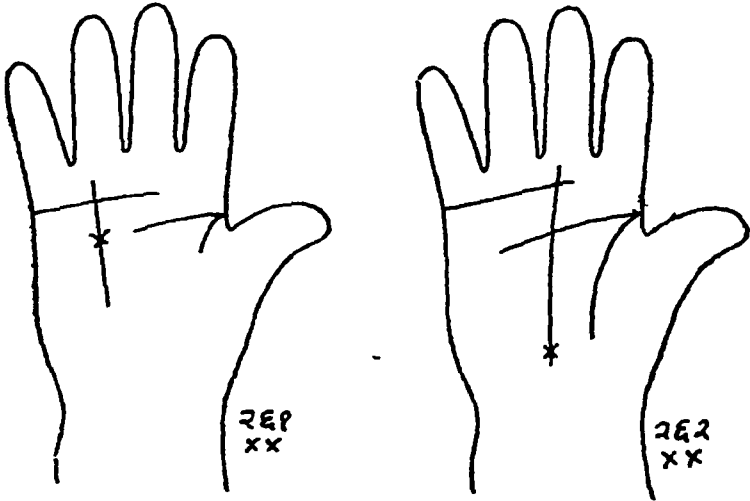
चित्र २६२—यदि भाग्य-रेखा के प्रारम्भ मे केतु-क्षेत्र पर क्रास-चिन्ह हो तो जातक की वाल्यावस्था निर्धनता मे व्यतीत होती है और वह अधिक पढ-लिख भी नही पाता।

चित्र २६३—यदि भाग्य-रेखा पर क्रास-चिह्न चन्द्र-क्षेत्र की ओर हो ता जातक की यात्राए निष्फल सिद्ध होती है। उसे निराशा, हानि तथा कठिनाइयो का सामना करना पडता है।

चित्र २६४—यदि भाग्य-रेखा पर क्रास-चिह्न राहु-क्षेत्र पर हो तो जातक को अपनी आयु के मध्य भाग मे धन-जन की हानि उठानी पडती है तथा व्यापार के क्षेत्र मे भारी घाटा लगता है।

चित्र २६५—यदि भाग्य-रेखा पर क्रास-चिह्न इन्द्र-क्षेत्र पर मस्तक तथा हृदय-रेखा के मध्यभाग मे हो तो जातक के मस्तक में
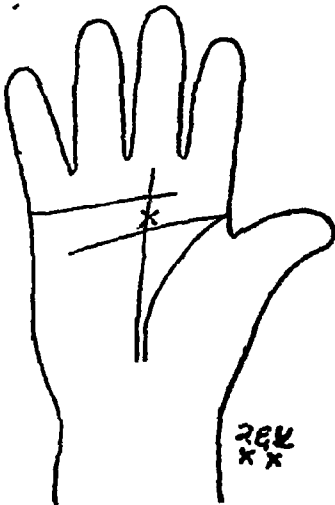
गहरी चोट लगती है तथा धन-हानि होती है। यदि भाग्य-रेखा उसके उपरात सीधी तथा निर्दोष अवस्था में शनि-क्षेत्र अथवा बृहस्पति-क्षेत्र की ओर चली गई हो तो बाद मे जातक अपनी हानि से कही बहुत अधिक धन कमा लेता है।

चित्र २६६—यदि भाग्य-रेखा तथा जीवन-रेखा के बीच में क्रास-चिह्न हो तो जातक की अपने सम्बन्धियो से खटपट रहती है और उनके कारण उसे पर्याप्त हानि उठानी पड़ती है।

चित्र २६७—यदि भाग्य-रेखा पर क्रास-चिह्न चन्द्र तथा वरुण-क्षेत्र के मध्यभाग मे हो तो जातक को जल-यात्रा मे हानि उठानी पड़ती है और उसके जीवन के लिए खतरा उपस्थित होता है। यदि हाथ में अन्य लक्षण शुभ हों तो जातक की प्राण-रक्षा हो जाती है, परन्तु अन्य लक्षण अशुभ हों तो जातक का प्राणात हो जाता है।

२६७
××

२६८
××

चित्र २६८—यदि भाग्य-रेखा तथा सूर्य-रेखा के मध्य-भाग में क्रास-चिह्न हो तो वह जातक के व्यवसाय एव कला के क्षेत्र मे हानिकारक सिद्ध होता है। वह स्वय ही ऊट-पटांग काम करके अपनी हानि कर बैठता है और उसे निराशा, दु.ख एव चिन्ताओ का सामना करना पड़ता है।

चित्र २६९—यदि भाग्य-रेखा तथा हृदय-रेखा के बीच मे भाग्य-रेखा पर क्रास-चिह्न हो तो जातक को अपने किसी प्रेम-सम्बन्ध में असफलता अथवा किसी प्रिय-जन के वियोग का दुख सहन करना पडता है।
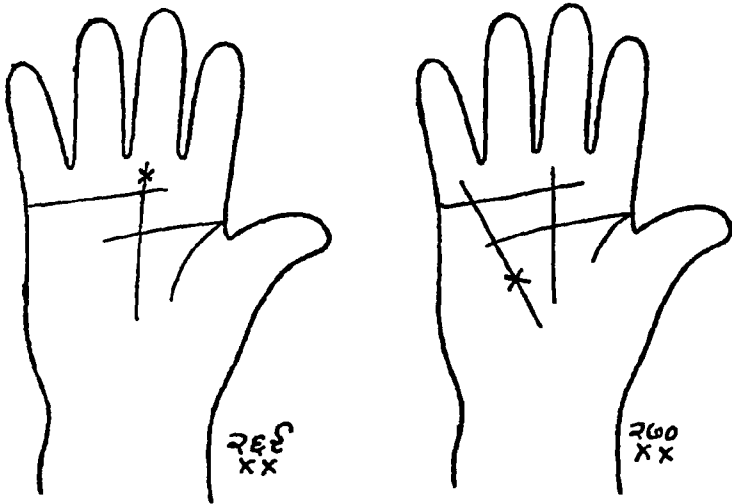
टिप्पणी—भाग्य-रेखा पर किसी भी स्थान पर क्रास-चिह्न का होना अशुभ लक्षण ही समझना चाहिए।

चित्र २७०—यदि स्वास्थ्य-रेखा पर क्रास-चिह्न हो तो जातक को कष्टदायक लम्बी बीमारी का सामना करना पडता है। ऐसे चिह्न वाले जातक का जीवन दुख तथा निराशापूर्ण बना रहता है।

चित्र २७१—यदि विवाह-रेखा पर क्रास-चिह्न हो तो प्रथम तो जातक का विवाह ही वहुत कठिनाई से होता है और यदि हो भी जाय तो पति-पत्नी के वीच मधुर-सम्वन्ध नही रह पाते। उन दोनों मे कलह तथा वैमनस्य वना रहता है।
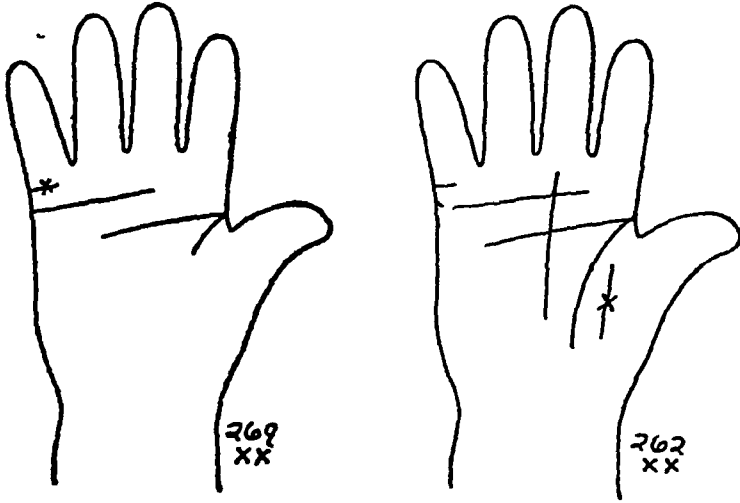
चित्र २७२ यदि मगल-रेखा पर क्रास-चिह्न हो तो जातक की शारीरिक शक्ति मे क्षीणता आती है। ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति डरपोक स्वभाव का होता है। किसी भी कार्य को आरम्भ करते समय उसका दिल घवराता है, जिसके कारण उसे जीवन मे सफलता बहुत कम मिल पाती है।

चित्र २७३—यदि चन्द्र-रेखा अथवा यात्रा-रेखा पर क्रास-चिह्न हो तो जातक की भाग्योन्नति बहुत विलम्ब से होती है और उसे जल-यात्रा के समय प्राणो का भय उपस्थित होता है। व्यवसाय के क्षेत्र मे भी उसे हानि तथा कठिनाइयो का सामना करना पडता है।
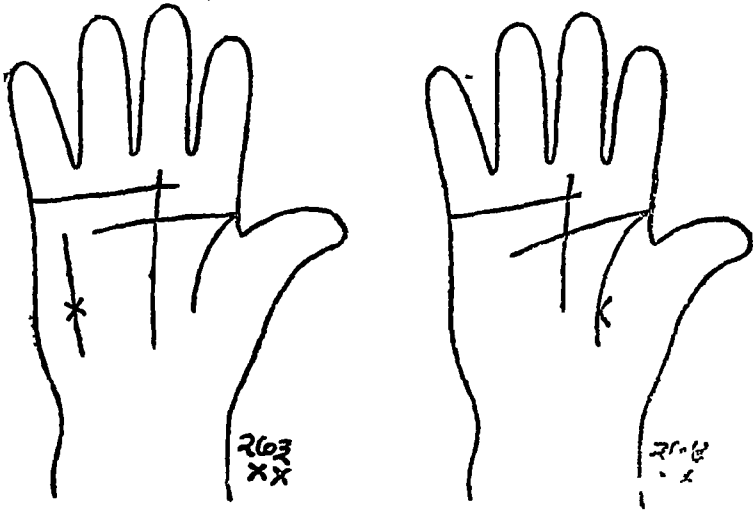
चित्र २७४—यदि जीवन-रेखा पर कोण-चिह्न हो तो जातक परिश्रमी, जिद्दी, हठी, क्रोधी तथा अपनी बात पर अडने वाला होता है परन्तु उद्यमी होता है। कोण-चिह्न जितना अधिक छोटा-बडा होता है, जातक मे उक्त लक्षण उतनी ही न्यूनाधिक मात्रा में पाये जाते है।

चित्र २७५—यदि मस्तक-रेखा पर कोण-चिह्न हो तो वह जातक के लिए अशुभ फल देने वाला होता है। ऐसे चिह्न वाले जातक लापरवाह तथा नीच प्रकृति के होते हैं। कोण की न्यूनाधिकता के फलस्वरूप उसके प्रभाव मे भी कमी या अधिकता रहती है। ऐसे चिह्न वाले मनुष्य शरीर से स्वस्थ दिखाई देने पर भी हृदय से कमजोर होते हैं।

चित्र २७६—यदि हृदय-रेखा पर गुरु-क्षेत्र के ऊपर कोण-चिह्न हो अथवा गुरु-क्षेत्र पर हृदय-रेखा द्विजिह्व हो गई हो, जिसके कारण कोण-चिह्न बनता हो तो जातक स्पष्ट वक्ता, मन का साफ, निडर, साहसी
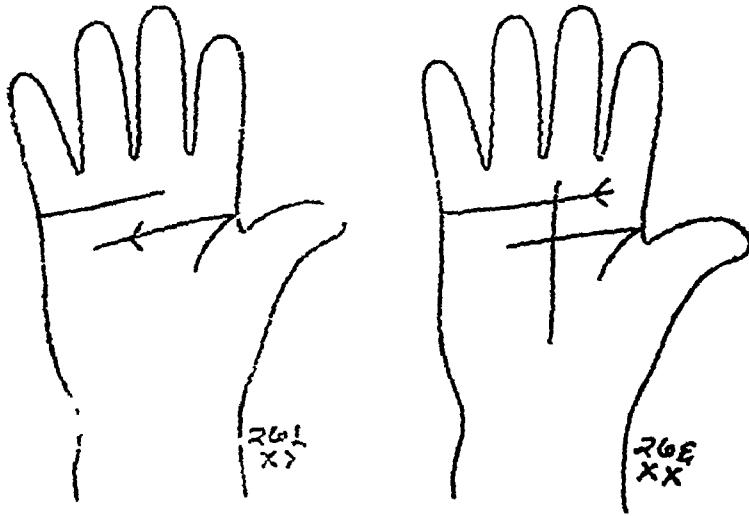
बड़ों का सम्मान करने वाला तथा अपने शत्रु तक को उचित सलाह देने वाला, अत्यन्त बुद्धिमान तथा प्रतिभाशाली होता है।

चित्र २७७—यदि हृदय-रेखा पर शनि-क्षेत्र के नीचे कोण-चिह्न हो तो जातक स्वार्थी, मतलबी, तोताचश्म तथा मुंह मीठी बातें करने वाला होता है।

टिप्पणी—हृदय-रेखा के ऊपर की ओर बनने वाले सभी कोण-चिह्न जातक को विवाह तथा प्रेम-सम्बन्ध मे सफलता देने वाले तथा हृदय-रेखा के नीचे की ओर बनने वाले कोण-चिह्न प्रेम तथा विवाह के मामले में असफलता देने वाले होते है।

चित्र २७८—यदि सूर्य-रेखा पर कोण-चिह्न हो तो जातक को प्रत्येक कार्य मे सफलता प्राप्त होती है, परन्तु यदि यह कोण-चिह्न सूर्य-रेखा को काट रहा हो तो जातक को यश तथा धन के क्षेत्र में
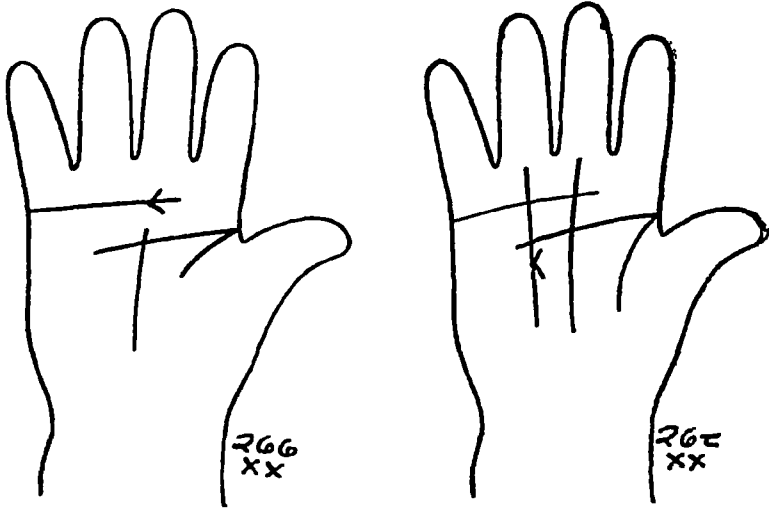
असफलता एव कठिनाइयों का सामना करना पडता है। चित्र में सूर्य-रेखा पर कोण की दोनों ही स्थितियों को प्रदर्शित किया गया है।

चित्र २७९—यदि भाग्य-रेखा पर सूर्य-रेखा की सहायता से कोण-चिह्न बनता हो तो जातक को सफलता एव उच्चाधिकार की प्राप्ति होती है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति न्यायी, परोपकारी, दयालु, सत्यवक्ता, ईमानदार तथा मिलनसार प्रकृति के होते हैं। उक्त कोण-चिह्न के कारण उनके भाग्य की भी विशेष उन्नति होती है।

चित्र २८०—यदि भाग्य-रेखा पर स्वास्थ्य-रेखा के सयोग से कोण चिन्ह बनता हो तो जातक अनेक प्रकार की बीमारियो तथा कठिनाइयों का शिकार बना रहता है। ऐसे चिह्न वाले जातक का स्वास्थ्य निरन्तर खराब बना रहता है।
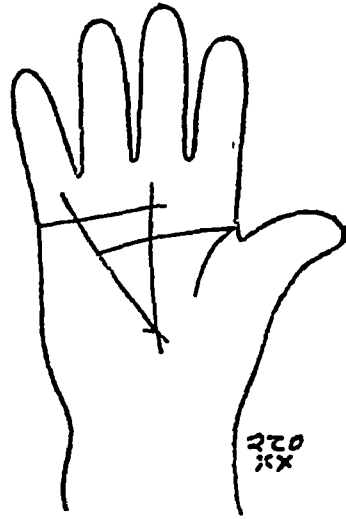
चित्र २८१—यदि मस्तक-रेखा अथवा हृदय-रेखा की सहायता से भाग्य-रेखा पर कोण-चिह्न बना हो, तो वह जातक के लिए भाग्यो-

न्नति कारक एवं शुभ फलदायक सिद्ध होता है। चित्र मे इस प्रकार के कोण-चिह्नो के स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है।
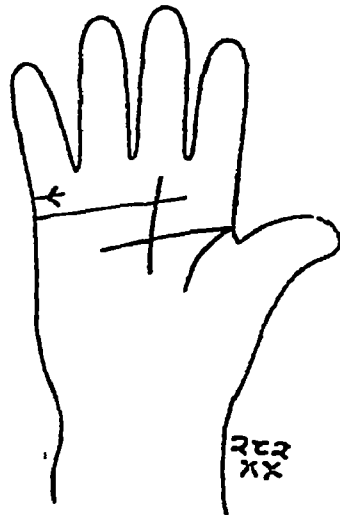
चित्र २८२—यदि विवाह-रेखा पर कोण-चिह्न हो तो जातक के विवाह अथवा प्रेम-सम्बन्ध में रुकावटे पड़ती हैं। विवाह हो जाने पर भी जातक का दाम्पत्य-जीवन सुखमय नहीं होता। पति-पत्नी मे सदैव ही किसी-न-किसी बात को लेकर लडाई-झगड़ा होता रहता है।

चित्र २८३—यदि चन्द्र-रेखा पर कोण-चिह्न हो तो जातक विद्वान्, यशस्वी, गुणवान् तथा धनी होता है, परन्तु उसे जलयात्रा के समय संकटो का सामना करना पडता है और प्राणो के लिए भी खतरा उपस्थित होता है।
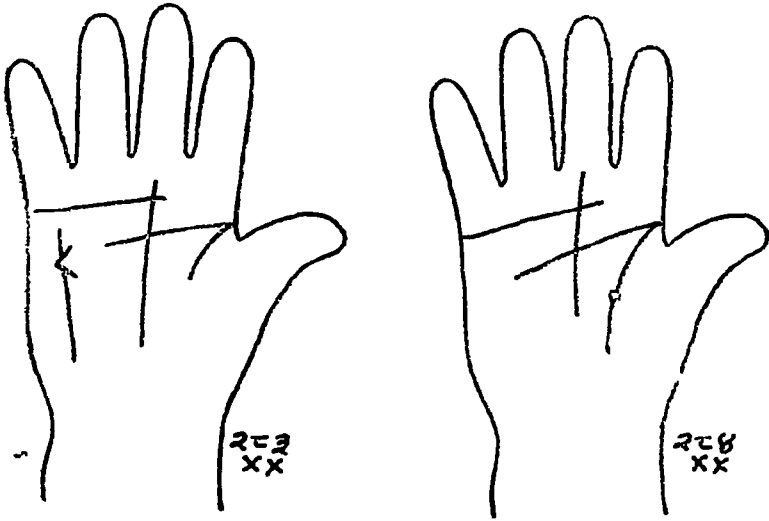
चित्र २८४—यदि जीवन-रेखा पर 'काला-बिन्दु-चिह्न' हो तो जातक को लम्बे समय तक चलने वाली किसी बीमारी का शिकार होना पड़ता है। निरन्तर बीमार रहने के कारण ऐसे व्यक्ति का स्वभाव चिडचिडा हो जाता है।

चित्र २८५—यदि मस्तक-रेखा पर काला विन्दु-चिह्न हो तो जातक को किसी समय सिर में भारी चोट लगने की आशका रहती है। साथ ही उसे सिर दर्द, चक्कर आना, उन्माद तथा अन्य प्रकार के मस्तिष्क-सम्बन्धी विकारो का शिकार भी होना पडता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति का पढ़ने-लिखने में मन नही लगता है।
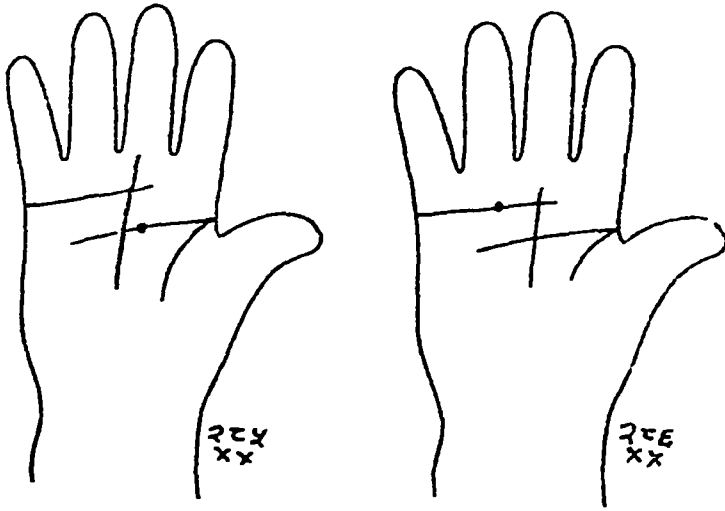
चित्र २८६—यदि हृदय-रेखा पर काला-विन्दु-चिह्न हो तो जातक हृदय-रोगी, प्रेम सम्बन्ध में निराश तथा अपयश प्राप्त करने वाला होता है। ऐसे चिह्न वाले लोगों की मृत्यु प्राय. हृदय गति वन्द (हार्ट-फेल) हो जाने के कारण होती है।

चित्र २८७—यदि सूर्य-रेखा पर काला ... -चिह्न हो तो जातक अपनी ही भूल के कारण अपनी पद-प्रतिष्ठा तथा मान-सम्मान को खोकर कलकित हो जाता है। ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति जीवन के विभिन्न क्षेत्रो मे असफलताए प्राप्त करते है।
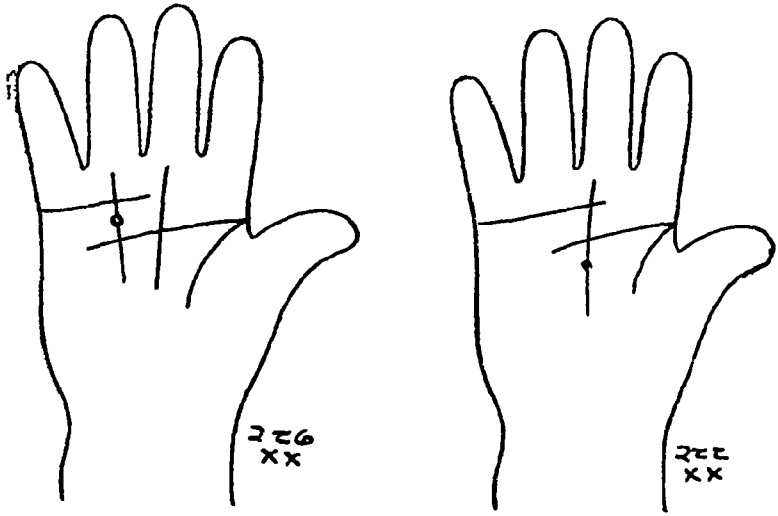
चित्र २८८—यदि भाग्य-रेखा पर काला बिन्दु-चिह्न हो तो उसे दुर्भाग्य का लक्षण समझना चाहिए। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति को धन-हानि, प्रियजनो का वियोग तथा अन्य प्रकार के कष्ट उठाने पडते हैं। निराशा, चिन्ताए एव दु ख उसे सदैव घेरे रहते है।

चित्र २८९—यदि स्वास्थ्य-रेखा पर काला बिन्दु-चिह्न हो तो जातक का स्वास्थ्य खराब रहता है, जिसके कारण उसका स्वभाव चिड़चिडा, ईर्ष्यालु तथा कुढने वाला हो जाता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति किसी-न-किसी रोग के शिकार बने ही रहते हैं।

चित्र २९०—यदि विवाह-रेखा पर काला विन्दु-चिह्न हो तो पुरुष जातक के लिए विवाह मे कठिनाइया उपस्थित करता है। यदि विवाह हो भी जाय तो स्त्री साथ छोडकर चलो जाती है। यदि किसी स्त्री के हाथ में ऐसा चिह्न हो तो उसे पति-वियोग होता है।
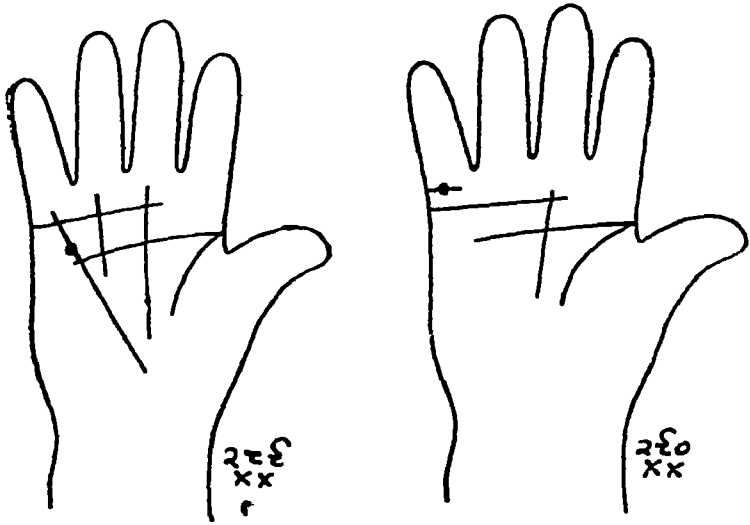
चित्र २९१—यदि मंगल-रेखा पर काला बिन्दु-चिह्न हो तो जातक डरपोक, क्रियाहीन, निरुद्यमी तथा निरुत्साही होता है। ऐसे
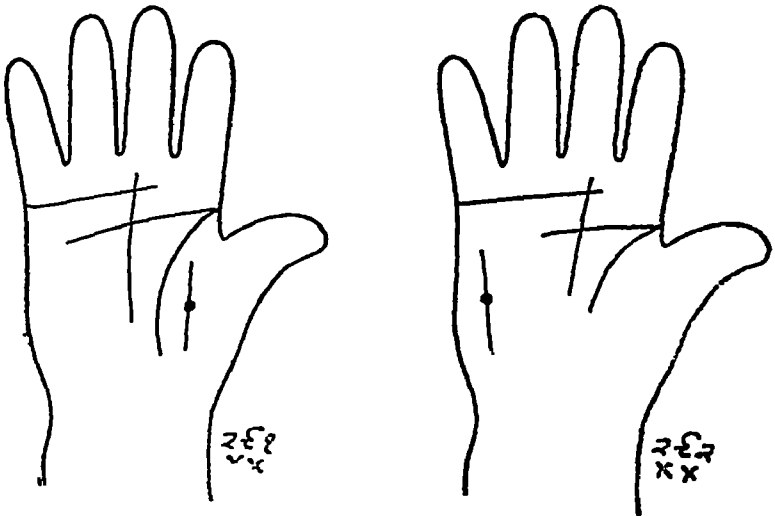
व्यक्ति आलसी होने के कारण मेहनत के काम नही करते, जिसके कारण उनकी भाग्योन्नत्ति मे भी बाधा पहुंचती है।

चित्र २६२—यदि चन्द्र-रेखा पर काला विन्दु-चिह्न हो तो जातक की भाग्योन्नति मे वाधा पहुंचती है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति को मृत्यु प्राय पानी मे डूवकर हो होती है।

वृत्त या कन्दुक (गोला) चिह्न

चित्र २६३—यदि जीवन-रेखा पर 'वृत्त-चिह्न' हो तो जातक दुर्घटना मे का शिकार होता है। यदि जीवन-रेखा पर दो स्पष्ट वृत्त-चिह्न एक साथ दिखाई दें तो जातक अवश्य नेत्रहीन (अन्धा) हो जाता है। वृत-चिह्न युक्त जीवन-रेखा वाले जातक का जन्म यदि ग्रहण के समय ' आ हो, तो वह जन्मांध होता है।
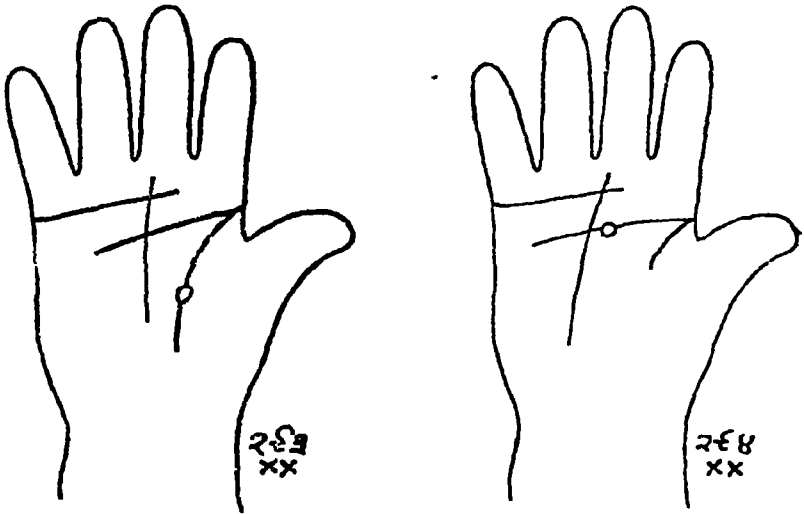
चित्र २६४—यदि मस्तक-रेखा पर वृत्त-चिह्न हो तो जातक मस्तिष्क सम्बन्धो रोगों—सिर दर्द, उन्माद, चक्कर आना, पागलपन आदि से पीडित होता है। किसी समय मस्तक मे चोट लगने से रक्त-स्राव होने को भी सम्भावना रहती है।

चित्र २९५—यदि हृदय-रेखा पर वृत्त-चिह्न हो जातक स्नेह-हीन, नेत्र ज्योति-हीन, हृदय-हीन तथा कठोर स्वभाव वाला होता है। हृदय-रेखा पर वृत्त-चिह्न होना अत्यन्त ही अशुभ तथा दुर्भाग्य का लक्षण है।
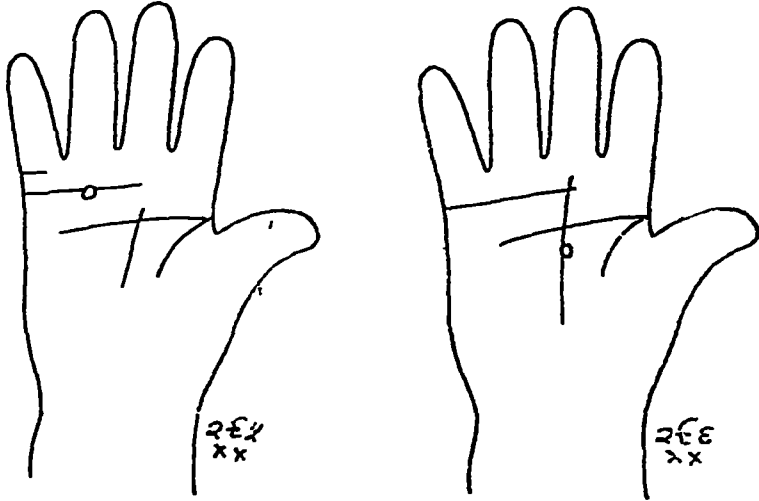
चित्र २९६—यदि भाग्य-रेखा पर वृत्त-चिह्न हो तो उसे जातक के लिए अत्यन्त दुर्भाग्य सूचक समझना चाहिए। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति दरिद्री, दीन तथा दुखी होते है और किसी समय आर्थिक कठिनाइयों से पीडित होकर आत्म-हत्या भी कर लेते हैं।

चित्र २९७—यदि सूर्य-रेखा पर वृत्त-चिह्न हो तो उसे शुभ लक्षण समझना चाहिए, ऐसे चिह्न वाला जातक यश, मान-प्रतिष्ठा आदि को अत्यन्त सरलता से प्राप्त कर लेता है।

चित्र २९८—यदि स्वास्थ्य-रेखा पर वृत्त-चिन्ह हो तो जातक को यक्ष्मा, श्वास, अर्श, प्रमेह, धातुक्षीणता, उन्माद आदि रोगो का शिकार होना पडता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति निरन्तर रोगी बने रहते हैं तथा अन्य प्रकार की विपत्तियो एव कठिनाइयो को झेलते हैं।

चित्र २६९—यदि विवाह-रेखा पर वृत्त-चिह्न हो तो जातक कामी व्यभिचारी, अपयशी तथा निंद्य कर्म करने वाला होता है। उसे

मन्दाग्नि आदि उदर-विकारों की शिकायत बनी रहती है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्तियों का विवाह प्रायः होता ही नहीं है।

चित्र ३००—यदि मंगल-रेखा पर वृत्त-चिह्न हो तो जातक शारीरिक एवं मानसिक दृष्टि से दुर्बल तथा रक्त-विकार, अर्श (बवासीर) आदि रोगो का शिकार होता है। ऐसे चिह्न वाले जातक की मृत्यु शल्य-क्रिया (ऑपरेशन) आदि के समय होती है।

चित्र ३०१—यदि चन्द्र-रेखा पर वृत्त-चिह्न हो तो जातक को जुकाम, खांसी आदि सरदी के रोग होते हैं। उसे पानी से भय लगता है। तथा उसकी मृत्यु भी पानी मे डूबकर ही होती है।

द्वीप अथवा यव चिह्न

चित्र ३०२—यदि जीवन-रेखा के उद्गम-स्थान पर ही दो या इससे अधिक द्वीप-चिह्न एक-दूसरे से जुडे हुए हो तो जातक का जन्म जार-योग से होता है, परन्तु ऐसे चिह्नों का स्पष्ट तथा एक-दूसरे से संयुक्त होना आवश्यक है।

चित्र ३०३—यदि जीवन-रेखा के ऊपरी भाग मे द्वीप-चिह्न हो तो जातक को फेफड़े एव दातो से सम्बन्धित बीमारी होती है। उसे मंदाग्नि, मूत्राशय, पीड़ा तथा गुदा सम्बन्धी रोग भी हो सकते है। जीवन-रेखा पर द्वीप-चिह्न का होना कोई वंश परम्परागत रोग होने का लक्षण भी है। यदि जीवन-रेखा के अन्तिम भाग पर द्वीप-चिह्न हो तो उसी वयोमान मे जातक की मृत्यु हो जाती है। चित्र सख्या ३०३ मे जीवन-रेखा के दोनो स्थानो पर द्वीप-चिह्न के स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है।
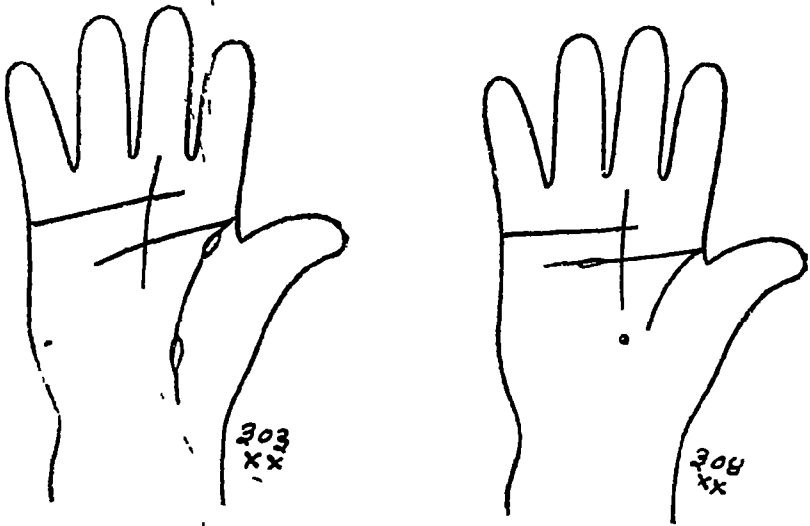
चित्र ३०४—यदि मस्तक-रेखा पर द्वीप-चिह्न सूर्य-क्षेत्र के नीचे हो और मस्तक-रेखा उस स्थान पर टूट भी रही हो तो जातक को किसी दुर्घटना के कारण सिर-मे गहरी चोट लगती है। यदि जीवन-रेखा भी दोषयुक्त हो तो उस दुर्घटना मे जातक की मृत्यु भी हो जाती है।

चित्र ३०५—यदि मस्तक-रेखा के आरम्भ मे ही द्वीप-चिह्न हो तो जातक को बाल्यावस्था में, मध्य मे द्वीप-चिह्न हो तो युवास्था में और अन्त मे द्वीप-चिह्न हो तो वृद्धावस्था मे मस्तष्कि सम्बन्धी रोग, उन्माद अथवा पागलपन का शिकार होना पड़ता है।
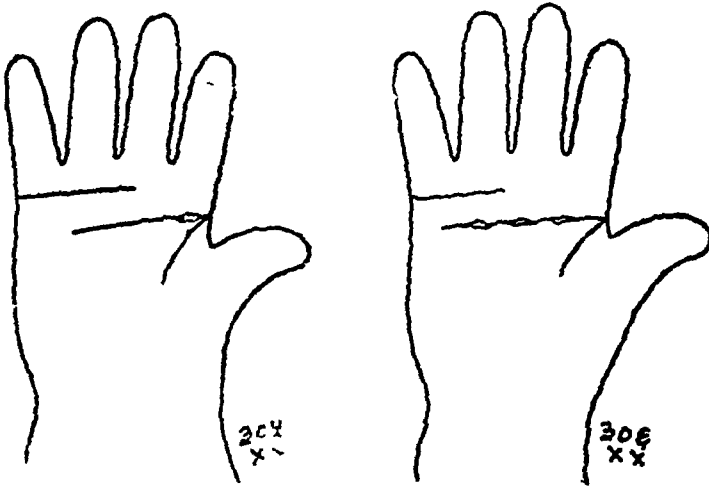
चित्र ३०६—यदि मस्तक-रेखा पर कई द्वीप-चिह्न हो तो जातक का सिर हमेशा चक्कर खाता रहता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति गूगे-बहरे भी हो सकते हैं। ऐसे अनेक द्वीप-चिह्न वाले व्यक्ति की उंगलियों के नाखून भी चौड़े हों तो रोग की गम्भीरता बढ़ जाती है और तपेदिक जैसे संक्रामक रोग हो जाने की सम्भावना भी रहती है।

चित्र ३०७—यदि मस्तक-रेखा पर मध्य मे द्वीप-चिह्न हो तो जातक वंश-परम्परागत मस्तिष्क सम्बन्धी रोगो से पीड़ित होता है। ऐसे चिह्न वाले जातक की स्मरण-शक्ति निर्बल होती है। वह विद्याध्ययन में भी रुचि नहीं ले पाता। यदि हाथ मे अन्य अशुभ लक्षण भी

हो तो ऐसे चिह्न वाले जातक के पागल हो जाने की सम्भावना भी रहती है।
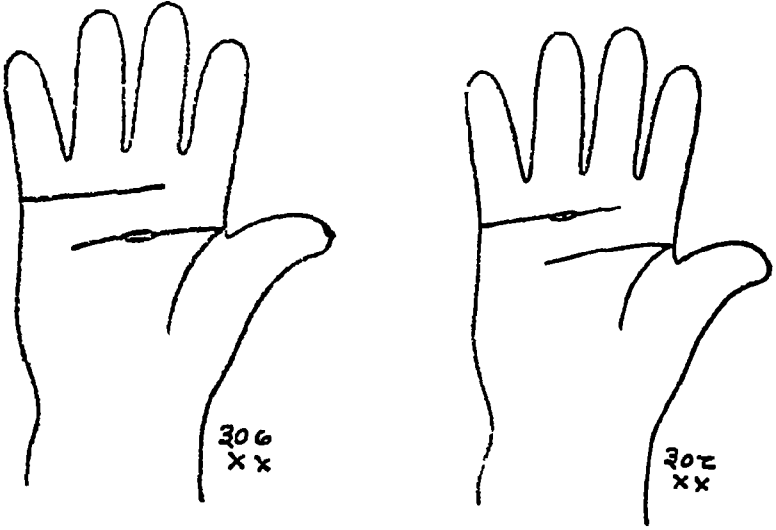
चित्र ३०८—यदि हृदय-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो जातक का हृदय कमजोर होता है। यदि यह चिह्न शनि-क्षेत्र के नीचे हो तो जातक की उन्नति मे उसका कोई अनुचित प्रेम-सम्बन्ध बाधक बनता है। यदि यह चिह्न सूर्य-क्षेत्र के नीचे हो तो हृदय-दौर्बल्य, नेत्र पीड़ा आदि रोग होते है। यदि बुध-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो जातक का विवाह बड़ी कठिनाई से होता है।

चित्र ३०९—यदि हृदय-रेखा पर दो-तीन द्वीप-चिह्न एक साथ हो तो जातक प्रेम के मामले मे अधीर तथा निराश होता है। उसे अनेक प्रकार के वीर्य-सम्बन्धी रोग भी हो जाते है।
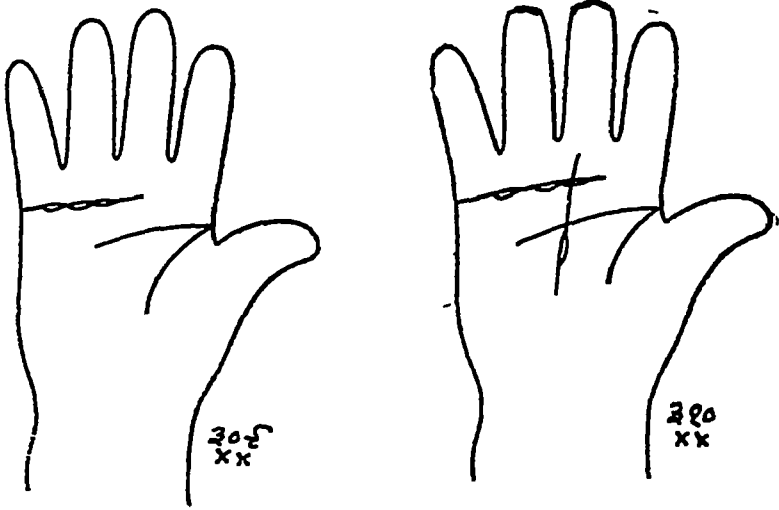
चित्र ३१०—यदि हृदय-रेखा पर दो-तीन द्वीप-चिह्न हों तथा भाग्य-रेखा पर भी द्वीप-चिह्न हो तो जातक अत्यधिक विषयी होता है तथा अपने प्रेम-पात्र को भी धोखा देने का प्रयत्न करता है, जिसके कारण उसके प्रेम-सम्बन्ध तथा भाग्य को हानि पहुचती है।

चित्र ३११—यदि सूर्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो जातक अपयश प्राप्त करता है। वह व्यवसाय मे हानि उठाता है तथा चरित्रहीन होने के कारण समाज मे भी निन्दनीय होता है। यदि सूर्य-रेखा के प्रारम्भ मे ही स्पष्ट द्वीप-चिह्न हो तो जातक अनुचित प्रेम-सम्बन्ध द्वारा आर्थिक लाभ उठाता है। उसकी भाग्योन्नति जारज-सन्तान के जन्म लेने के बाद होती है।

चित्र ३१२—यदि किसी द्वीप-चिह्न से आरम्भ होकर भाग्य-रेखा तथा सूर्य-रेखा—दोनो ही ऊपर की ओर बढ रही हो तो उस मनुष्य की मृत्यु इच्छित स्थान पर बिना कष्ट पाये होती है।
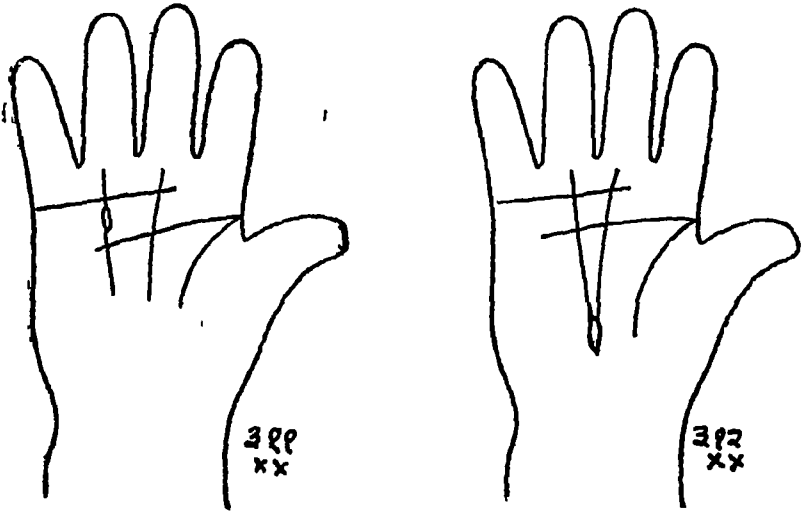
चित्र ३१३—यदि सूर्य-रेखा के साथ ही जीवन-रेखा पर भी द्वीप-चिह्न हो और वे वयोमान के अनुसार एक ही आयु गणना में पडते हों तो जातक की मृत्यु किसी बड़ी तथा लम्बी बीमारी अथवा नेत्र-रोग के कारण होती है। सूर्य-रेखा के किसी भी स्थान पर द्वीप-चिह्न का होना जातक के लिए दुर्भाग्य, दुःख, अपयश, निर्धनता एवं असफलता देने वाला सिद्ध होता है।

चित्र ३१४—यदि भाग्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो जिस वयोमान में चिह्न होगा, उसी आयु वर्ष मे जातक को धन की हानि उठानी पड़ती है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति स्वयं अपने ही सम्बन्धियो द्वारा धोखा खाते हैं और हानि उठाते है। भाग्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न का होना जातक के दुर्भाग्य का सूचक तथा अत्यन्त अशुभ लक्षण समझना चाहिए।
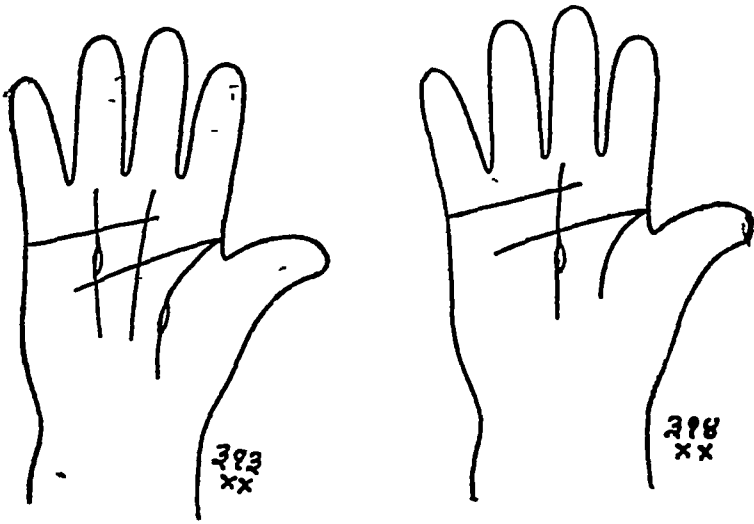
चित्र ३१५—यदि जीवन-रेखा तथा भाग्य-रेखा के मिलन-स्थल
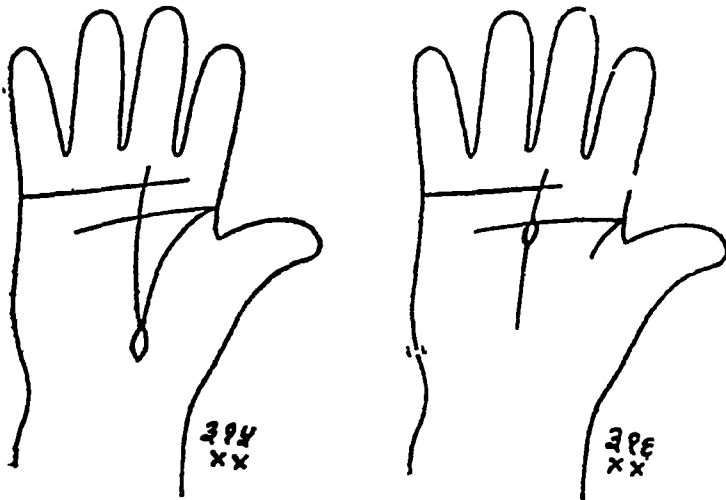
पर द्वीप-चिह्न हो तो जातक के धन-जन की हानि तथा दुर्गति होती है।

चित्र ३१६—यदि मस्तक-रेखा तथा भाग्य-रेखा के मिलन-स्थल पर द्वीप-चिह्न हो तो जातक को मस्तिष्क एवं धन सम्बन्धी दुर्घटनाओं का शिकार होना पड़ता है।

चित्र ३१७—यदि हृदय-रेखा तथा भाग्य-रेखा के मिलन-स्थल पर द्वीप-चिह्न हो तो जातक को हृदय-रोग होता है। साथ ही किसी प्रेम-सम्बन्ध के कारण धन-जन की हानि भी उठानी पड़ती है।
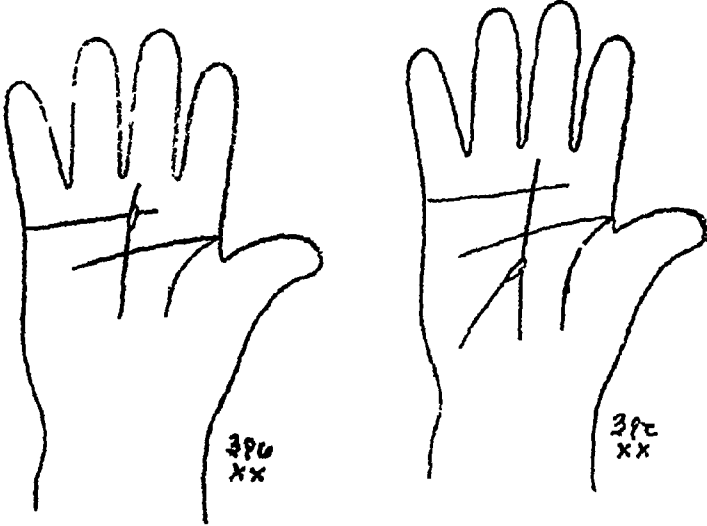
चित्र ३१८—यदि चन्द्र-क्षेत्र की किसी प्राभाविक-रेखा तथा भाग्य-रेखा के मिलन-स्थल पर द्वीप-चिह्न हो तो जातक को अपनी अथवा पराई स्त्री के कारण धन सम्बन्धी किसी दुर्घटना का शिकार होना पड़ता है और उसे अपने ही सम्बन्धी जनों के कारण कष्ट तथा अपयश भी उठाना होता है।

चित्र ३१६—यदि स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो जातक को कण्ठ, फेफड़ा, पसली तथा वायु-सम्बन्धी रोगो का शिकार होना पड़ता है। उसे जुकाम, नजला, निमोनियां आदि रोग भी हो सकते हैं।
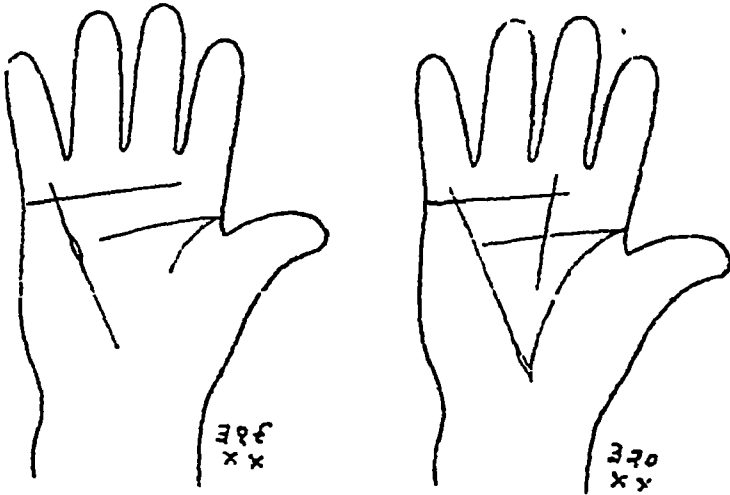
चित्र ३२०—यदि स्वास्थ्य-रेखा के ऊपरी भाग में द्वीप-चिह्न हो और वह जीवन-रेखा का भी स्पर्श कर रहा हो तो जातक को कोई लम्बी अवधि का रोग होता है अथवा उसकी मृत्यु हो जाती है।

चित्र ३२१—यदि स्वास्थ्य-रेखा और मस्तक-रेखा के मिलन स्थल पर द्वीप-चिह्न हो तो जातक को सिर दर्द, उन्माद आदि रोगो का शिकार होना पडता है।

चित्र ३२२—यदि स्वास्थ्य-रेखा और हृदय-रेखा के मिलन-स्थल पर द्वीप-चिह्न हो तो जातक को हृदय-रोग, रक्तचाप, रक्त-विकार आदि से पीड़ित होना पडता है।
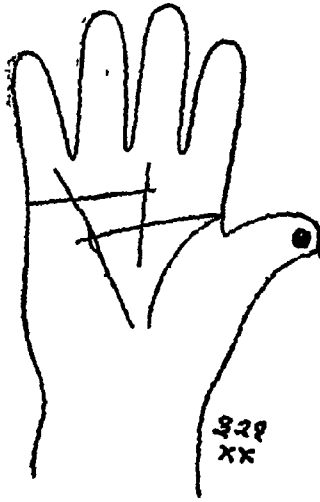
चित्र ३२३—यदि स्वास्थ्य-रेखा एव सूर्य-रेखा के सयोग से द्वीप-चिह्न का निर्माण हो तो जातक को अपयश एवं असफलता प्राप्त होती है।
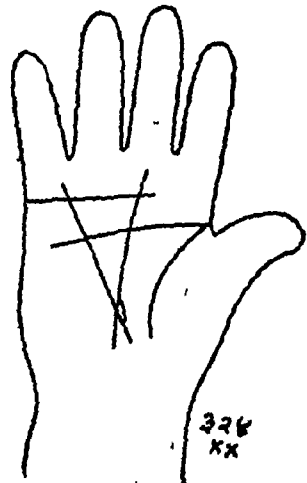
चित्र ३२४—यदि स्वास्थ्य-रेखा अथवा उसकी किसी शाखा रेखा द्वारा भाग्य-रेखा के साथ योग होने पर द्वीप-चिह्न का निर्माण हो तो जातक को दरिद्रता, अपयश एव असफलता की प्राप्ति होती है।

चित्र ३२५—यदि किसी स्वास्थ्य-रेखा के प्रभाविक-रेखा के साथ सयोग होने पर द्वीप-चिह्न का निर्माण हो तो जातक ईर्ष्यालु, पर-निन्दक, दुर्भाग्यशाली तथा समाज से तिरस्कृत होता है।
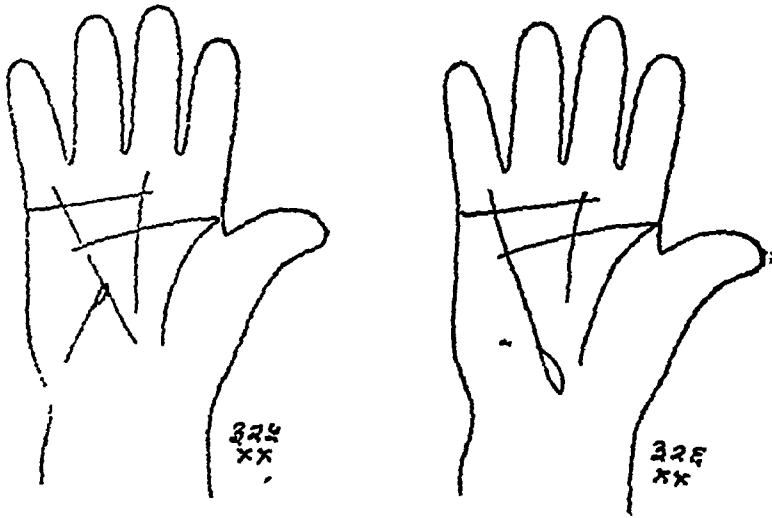
चित्र ३२६—यदि स्वास्थ्य-रेखा द्वारा केतु-क्षेत्र पर बड़ा-सा द्वीप-चिह्न बनता हो तो जातक को मृगी, मूर्छा, बेहोशी, हिस्टीरिया, चलते-चलते सोना आदि रोगो का शिकार बनना पडता है।

चित्र ३२७—यदि विवाह-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो जातक को विवाह अथवा प्रेम-सम्बन्ध मे अपने किसी मित्र के साथ द्वन्द्वयुद्ध अथवा प्रतिद्वन्द्विता करनी पडती है। पुरुष के हाथ मे विवाह-रेखा

पर द्वीप-चिह्न हो तो वह पत्नी की शीघ्र मृत्यु का सूचक होता है और स्त्री के हाथ मे हो तो पति की शीघ्र मृत्यु हो जाती है।
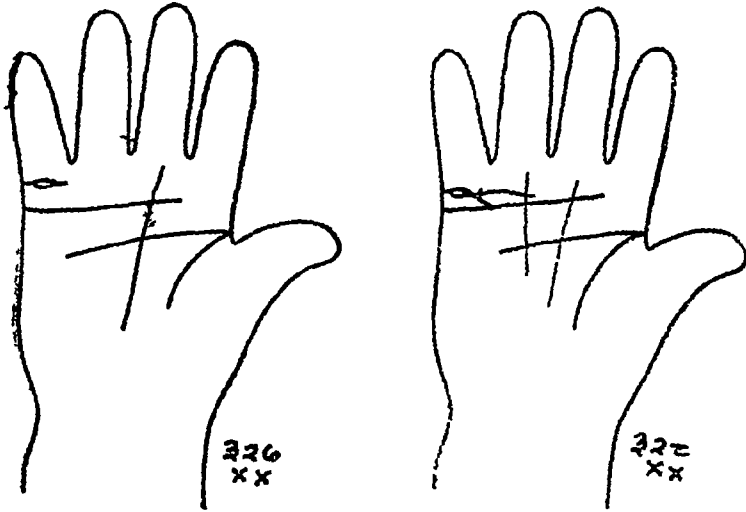
चित्र ३२८—यदि द्वीप-चिन्ह युक्त विवाह-रेखा आगे बढकर हृदय-रेखा का स्पर्श कर रही हो अथवा विवाह-रेखा से निकली हुई कोई शाखा रेखा मस्तक-रेखा अथवा सूर्य-रेखा को काट रही हो तो जातक का विवाह सम्बन्ध अपयश अथवा लोकाचार के कारण नही हो पाता। चित्र में उक्त तीनों स्थितियो को प्रदर्शित किया गया है।

चित्र ३२९—यदि मगल-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो जातक अवगुणी, शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से क्षीण, दुर्बल-हृदय, निरुद्यमो, मलिन-बुद्धि, परिश्रम से डरने वाला होता है। वह क्रोधावेश मे किसी से झगड़ा करके उसी मे मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

चित्र ३३०—यदि चन्द्र-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तो जातक को जलोदर, नजला, जुकाम आदि रोग होते हैं। वह पानी से डरता है
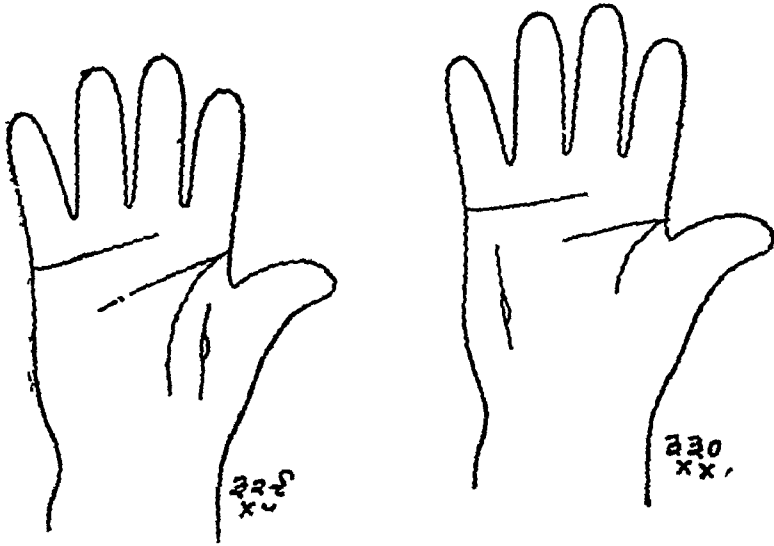
और अन्त मे उसकी मृत्यु भी पानी अथवा पानी मे रहने वाले किसी जानवर के द्वारा ही होती है।

टिप्पणी—द्वीप-चिह्न की किसी भी मुख्य रेखा, प्रभाव-रेखा अथवा शाखा रेखा पर उपस्थिति प्राय दुर्भाग्य-सूचक एव हानिकारक ही होती है।

वर्ग या चतुष्कोण (चतुर्भुज) चिह्न

चित्र ३३१—यदि जीवन-रेखा पर 'वर्ग-चिह्न' हो तो वह सकट अथवा रोग के समय जातक की प्राण-रक्षा करता है। यदि जीवन-रेखा टूटी हुई हो और उसकी दोनो शाखाएं वर्ग-चिह्न के भीतर आ जाती हो तो जातक दुर्घटना, कठिन रोग आदि से त्राण पाकर लम्बी आयु भोगता है। यदि जीवन-रेखा टूटी न हो और उसके ऊपर स्पष्ट वर्ग-चिह्न भी हो तो भी यह फल मिलता है।
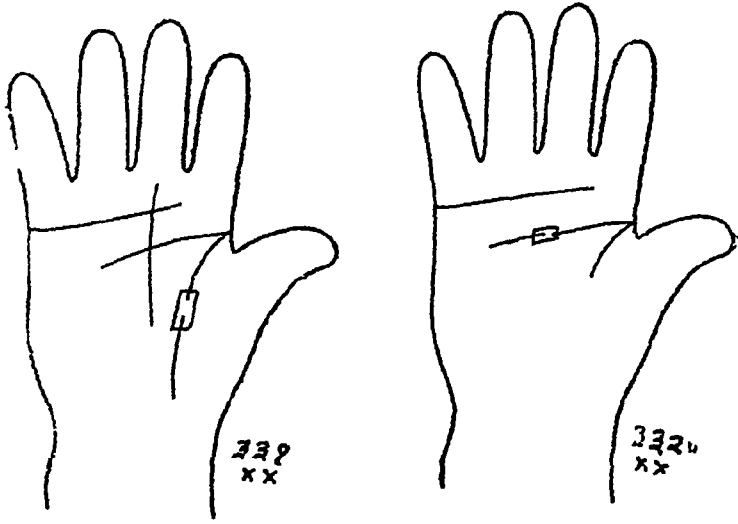
चित्र ३३२—यदि मस्तक-रेखा पर वर्ग-चिह्न हो तो वह जातक की मस्तिष्क सम्बन्धी रोग एव दुर्घटनाओ से रक्षा करता है। यदि मस्तक-रेखा टूटी हो और उसकी दोनो शाखाए वर्ग-चिह्न के भीतर हो तो वर्ग-चिन्ह टूटी हुई मस्तक-रेखा के दोष को दूर कर देता है।

चित्र ३३३—यदि हृदय-रेखा पर वर्ग-चिह्न हो तो वह जातक की हृदय-सम्बन्धी रोग एव दुर्घटनाओ से रक्षा करता है। यदि हृदय-रेखा टूटी हो और उसकी दोनों शाखाए वर्ग-चिह्न के भीतर हो तो वर्ग-चिह्न टूटी हुई हृदय-रेखा के दोष को दूर कर देता है।

चित्र ३३४—यदि सूर्य-रेखा पर वर्ग-चिह्न हो तो वह जातक की मान-प्रतिष्ठा तथा यश सम्बन्धी दुर्घटनाओं से रक्षा करता है। यदि सूर्य-रेखा टूटी हुई हो और उसकी दोनो शाखाए वर्ग-चिह्न के भीतर हो तो वर्ग-चिह्न टूटी हुई सूर्य-रेखा के दोष को दूर कर देता है।
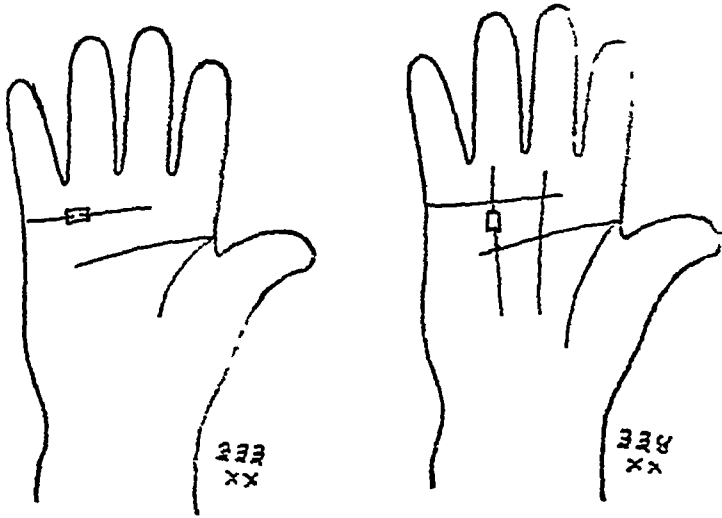
चित्र ३३५—यदि भाग्य-रेखा पर वर्ग-चिह्न हो तो वह जातक की भाग्य, व्यवसाय, नौकरी सम्बन्धी दुर्घटनाओ से रक्षा करता है। यदि भाग्य-रेखा टूटी हुई हो और उसकी दोनो शाखाएं वर्ग-चिह्न के भीतर हो तो वर्ग-चिह्न टूटी हुई भाग्य-रेखा के दोष को दूर कर देता है।

चित्र ३३६—यदि स्वास्थ्य-रेखा पर वर्ग-चिह्न हो तो वह जातक की स्वास्थ्य एव रोग सम्बन्धी दुर्घटनाओ से रक्षा करता है। यदि स्वास्थ्य-रेखा टूटी हुई हो और उसकी दोनो शाखाए वर्ग-चिह्न के भीतर हो तो वर्ग-चिह्न टूटी हुई स्वास्थ्य-रेखा के दोष को दूर कर देता है।
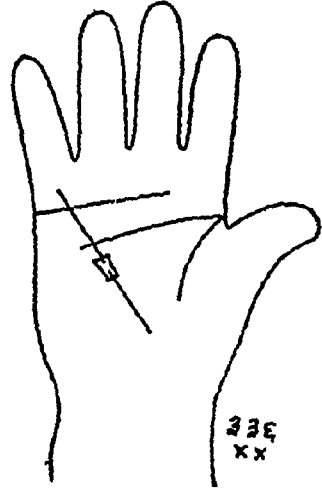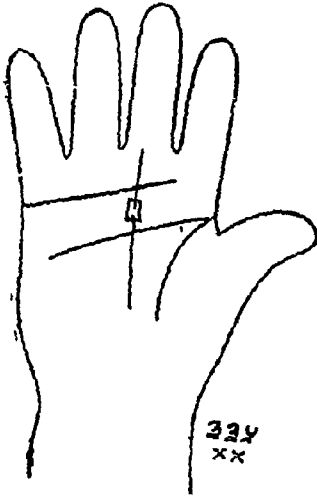
चित्र ३३७—यदि मगल-रेखा पर वर्ग-चिह्न हो तो वह जातक की शारीरिक एव मानसिक शक्तियो की दुर्घटनाओ से रक्षा करता

हैं। यदि मंगल रेखा की दोनो शाखाएं वर्ग-चिह्न के भीतर हो तो वर्ग चिह्न टूटी हुई मगल-रेखा के दोष को दूर कर देता है।

चित्र ३३८—यदि विवाह-रेखा पर वर्ग-चिह्न हो तो जातक के विवाह में अडचने एव रुकावटे पड़ती हैं। परन्तु यदि विवाह-रेखा टूटी हुई हो और उसकी दोनों शाखाए वर्ग-चिह्न के भीतर हो तो जातक के विवाह में विलम्ब तो होता है, परन्तु सम्बन्ध टूटता नही है और विवाह हो जाने पर वह सुखदायक सिद्ध होता है।

चित्र ३३९—यदि चन्द्र-रेखा पर वर्ग-चिह्न हो तो वह अशुभ फलकारक होता है। ऐसे चिह्न वाले जातक की उन्नति में बाधा पड़ती है तथा उसके पानी मे डूब जाने का भय रहता है, परन्तु यदि टूटी हुई चन्द्र-रेखा की दोनो शाखाए वर्ग-चिह्न के भीतर हो तो वह टूटी हुई चन्द्र-रेखा के दोष को दूर कर शुभ फलदायक हो जाता है तथा जातक की भाग्योन्नति के साथ-साथ जल सम्बन्धी विपत्तियों से रक्षा करता है।
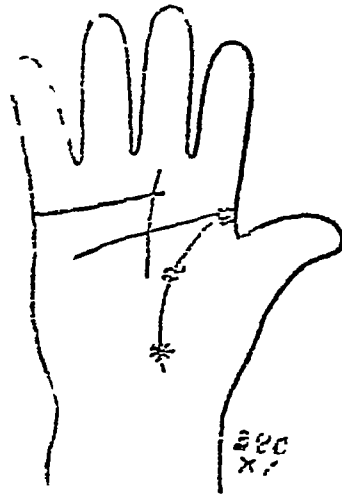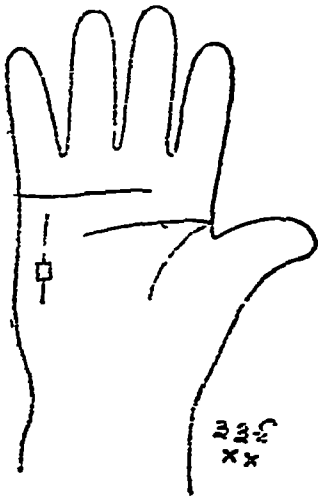
नक्षत्र अथवा तारा चिह्न

चित्र ३४०—यदि जीवन-रेखा के प्रारंभिक स्थान पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक का प्रारंभिक जीवन दुर्घटनाओ से पूर्ण रहता है। यदि जीवन-रेखा के मध्य मे नक्षत्र-चिह्न हो तो मध्यावस्था मे किसी लम्बी बीमारी का सूचक होता है। यदि जीवन-रेखा के अन्त मे नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक की मृत्यु हृदय-गति रुक जाने के कारण अथवा किसी दुर्घटना का शिकार बनकर होती है। जीवन-रेखा के तीनो स्थानो पर नक्षत्र-चिह्न की अवस्थिति को प्रदर्शित किया गया है।

चित्र ३४१—यदि जीवन-रेखा पर नक्षत्र-चिह्न हो, परन्तु हाथ मे स्पष्ट तथा निर्दोष मगल-रेखा भी हो तो जातक किसी दुर्घटना का शिकार तो अवश्य होता है, परन्तु उसकी मृत्यु नही होती। वैसे जीवन-रेखा पर कही भी नक्षत्र-चिह्न की उपस्थिति दुर्भाग्य-सूचक ही होती है।

३४१
xx

३४२
xx
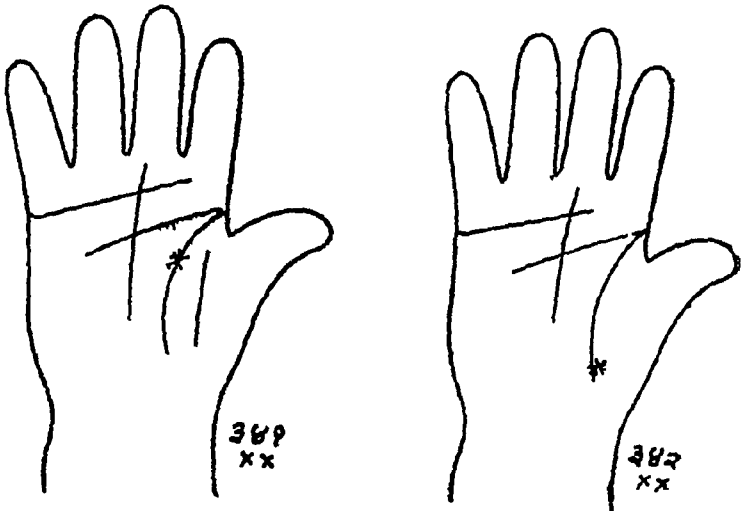
चित्र ३४२—यदि जीवन-रेखा पर स्थिति नक्षत्र-चिह्न का झुकाव शुक्र-क्षेत्र की ओर हो तो जातक को अपमानित तथा राजदण्ड का शिकार होना पडता है अर्थात् उसे किसी अपराध मे जेल यात्रा करनी पड़ती है।

चित्र ३४३—यदि मस्तक-रेखा के उद्गम-स्थान पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक बाल्यावस्था में मस्तक-सम्बन्धी रोग से पीड़ित रहता है। यदि मस्तक-रेखा के मध्यभाग मे नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक को युवावस्था मे किसी लडाई-झगडे मे पडकर सिर मे चोट खानी पडती है, जिसके कारण जातक पागल भी हो जाता है। यदि मस्तक-रेखा
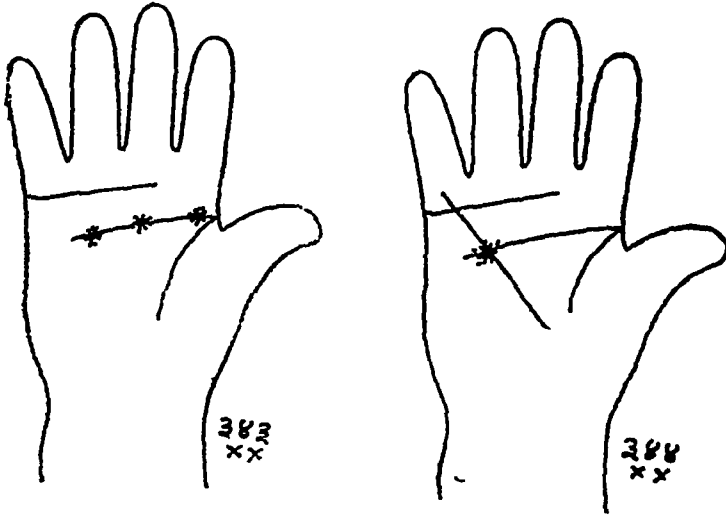
के अन्त मे नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक को वृद्धावस्था मे मतस्क सम्बन्धी रोग होते हैं अथवा वह पागल हो जाता है। मस्तक-रेखा के तीनो स्थानो पर नक्षत्र-चिह्न की अवस्थिति को प्रदर्शित किया गया है।

चित्र ३४४—यदि मस्तक-रेखा के अन्त में स्वास्थ्य-रेखा के मिलन-स्थल पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक शारीरिक दुर्बलता के कारण विवाह करने से घबराता है और उसकी काम-शक्ति नष्ट या क्षीण हो जाती है। यदि किसी स्त्री के हाथ में ऐसा चिह्न हो तो वह बांझ होती है। यदि बच्चा हो भी जाय तो वह जीवित नहीं रहता।

चित्र ३४५—यदि हृदय-रेखा के उद्गम-स्थान पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक को हृदय-सम्बन्धी कोई रोग होता है और वह किशोरावस्था से ही चरित्रहीन हो जाता है। फलस्वरूप उसे अपयश एवं कष्ट उठाने पड़ते हैं।
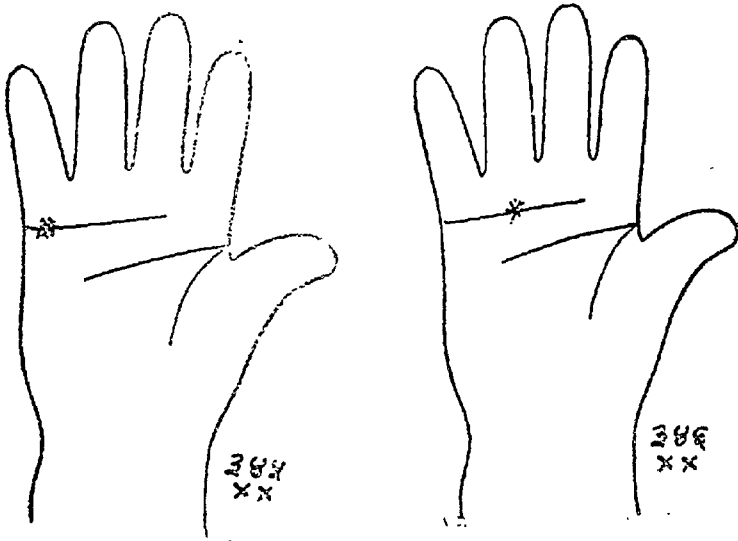
चित्र ३४६—यदि हृदय-रेखा पर सूर्य-क्षेत्र के नीचे नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक विशुद्ध प्रेमी होता है और वह अपने प्रेम-सम्बन्ध का यथोचित निर्वाह करता है। ऐसे मनुष्य की सब लोग आदर्श व्यक्ति कह कर प्रशंसा करते हैं।

चित्र ३४७—यदि हृदय-रेखा पर शनि-क्षेत्र के नीचे नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक निकृष्ट प्रकार का प्रेमी होता है। वह अपने प्रेमपात्र को धोखा देकर स्वार्थ-साधन करता है तथा उसके धन का भी अपहरण कर लेता है।
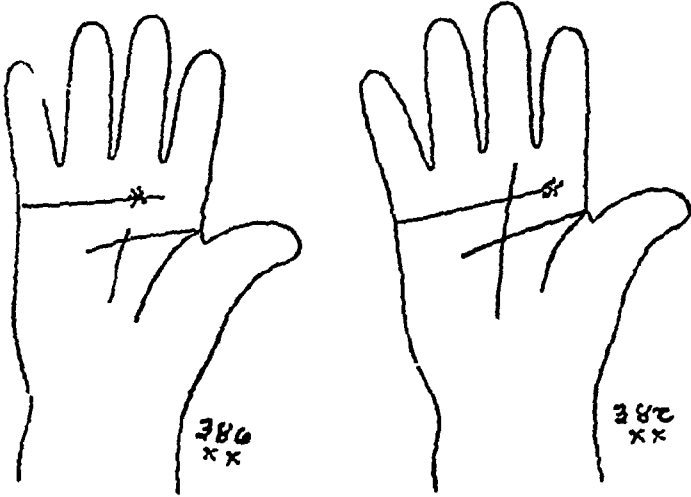
चित्र ३४८—यदि हृदय-रेखा पर नक्षत्र-चिह्न गुरु-क्षेत्र के नीचे हो तो जातक प्रेम-सम्बन्ध में अधीर होता है और उसके कारण बद-नाम हो जाता है।

टिप्पणी—हृदय-रेखा पर कही भी नक्षत्र-चिह्न होने से जातक को हृदय-रोग, रक्तचाप, रक्त-विकार अथवा धातु सम्बन्धी रोगों का शिकार होना पडता है।

चित्र ३४९—यदि भाग्य-रेखा पर नक्षत्र-चिह्न हो तो वह जातक के लिए दुर्भाग्य का सूचक होता है। ऐसे चिह्न वाले जातक को निर्ध-नता, दुर्भाग्य एव विपत्तियों का सामना करना पडता है तथा किसी समय

संकटों से घबराकर आत्म-हत्या करने पर भी उतारू हो जाता है भाग्य-रेखा पर नक्षत्र-चिह्न वाला व्यक्ति दूसरों की हत्या करने का प्रयत्न भी कर सकता है और ऐसा करते समय स्वयं भी प्राण गंवा सकता है।
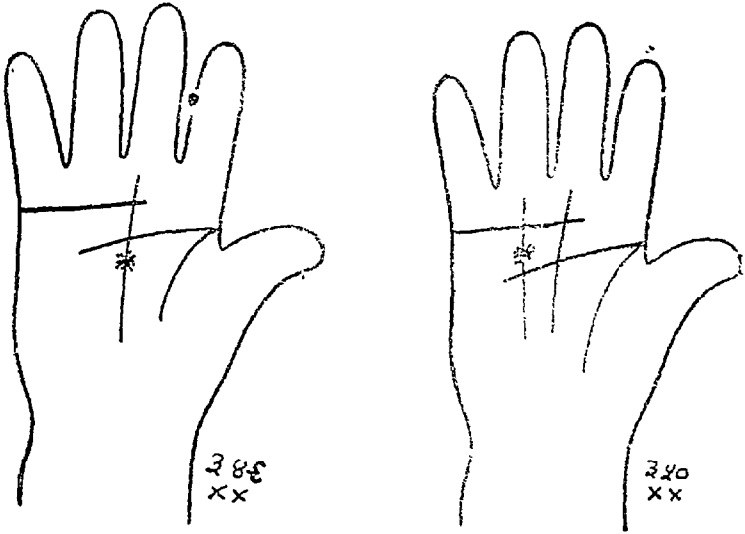
चित्र ३५०—यदि सूर्य-रेखा पर नक्षत्र-चिन्ह हो तो जातक को प्रत्येक कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त होती है। ऐसे चिन्ह वाले व्यक्ति अपनी कला, काव्य-साहित्य दस्तकारी आदि के लिए सर्वत्र सम्मानित एवं प्रसिद्ध होते हैं। ये लोग स्वभाव के कोमल, दयालु, धर्मात्मा एवं परोपकारी होते हैं तथा उन्हें किसी समय आकस्मिक रूप प्राप्ति भी होती है।

चित्र ३५१—यदि स्वास्थ्य-रेखा पर नक्षत्र-चिन्ह हो तो जातक के स्वास्थ्य में खराबी उत्पन्न करता है। ऐसे चिन्ह वाला जातक किसी-

न-किसी रोग से पीड़ित बना रहता है। स्वास्थ्य-रेखा पर नक्षत्र-चिन्ह की उपस्थिति शारीरिक दृष्टि से जातक के लिए दुर्भाग्य की सूचक होती है।
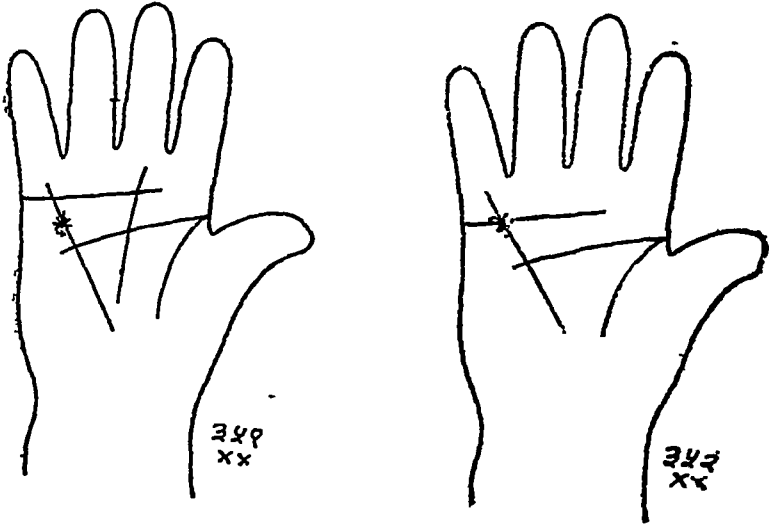
चित्र ३५२—यदि स्वास्थ्य-रेखा तथा हृदय-रेखा के मिलन-स्थल पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक हृदय-रोग से पीडित रहता है। वह डरपोक स्वभाव का तथा थोड़ी-सी ही परेशानी से अधिक घबरा जाने वाला होता है। उसकी मृत्यु भी प्राय हृदय-गति बन्द हो जाने (हार्ट फेल) के कारण होती है।

चित्र ३५३—यदि स्वास्थ्य-रेखा तथा मस्तक-रेखा के मिलन-स्थल पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक को मस्तक-सम्बन्धी बीमारियां होती हैं, जिनके आधिक्य से किसी भी समय जातक पागल जैसा हो जाता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति की बुद्धि अस्थिर रहती है।
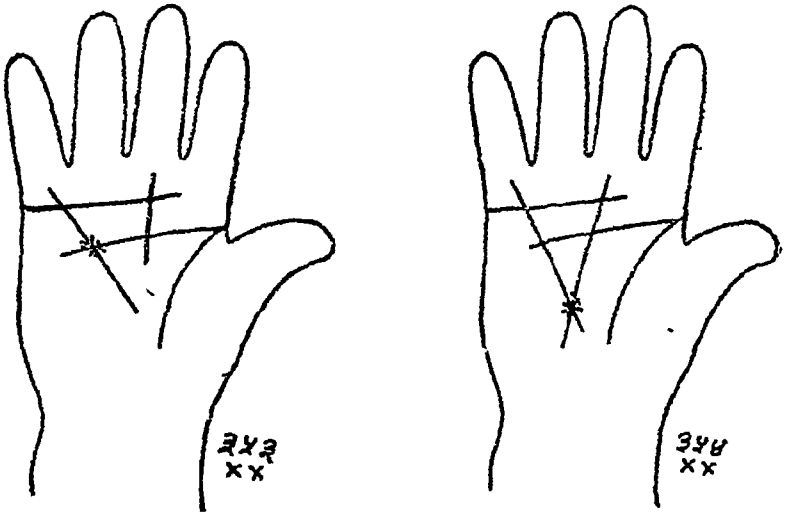
चित्र ३५४—यदि स्वास्थ्य-रेखा तथा भाग्य-रेखा के मिलन-स्थल पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक को स्वास्थ्य सम्बन्धी कठिनाइयों के अतिरिक्त भाग्य-सम्बन्धी परेशानियो का भी शिकार होना पड़ता है। ऐसे व्यक्ति अपने स्वास्थ्य की खराबी से धन-हानि होते हुए देखकर आत्म-हत्या कर लेने पर भी उतारू हो जाते है।

चित्र ३५५—यदि स्वास्थ्य-रेखा तथा सूर्य-रेखा के मिलन-स्थल पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक स्वास्थ्य सम्बन्धी खराबी के कारण अपनी प्रतिष्ठा की हानि भी कर बैठता है। ऐसे व्यक्ति का जीवन भार रूप हो जाता है।

चित्र ३५६—यदि स्वास्थ्य-रेखा तथा जीवन-रेखा के मिलन-स्थल पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक किसी लम्बी पैतृक बीमारी का शिकार बनकर शीघ्र मृत्यु को प्राप्त होता है।

टिप्पणी—स्वास्थ्य-रेखा पर किसी भी स्थान पर नक्षत्र-चिह्न का होना जातक के लिए अशुभ फलदायक ही होता है।
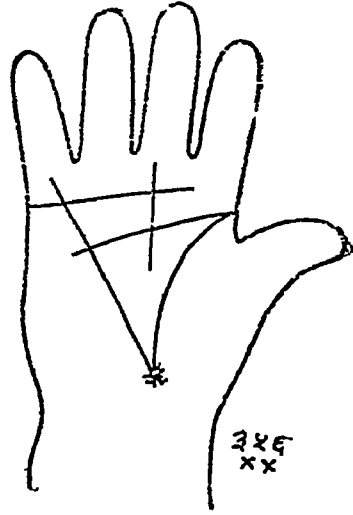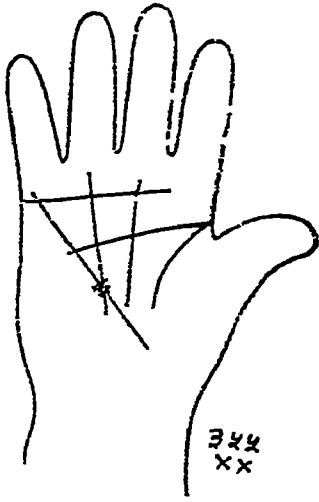
चित्र ३५७—यदि विवाह-रेखा पर नक्षत्र-चिन्ह हो तो जातक के विवाह सम्बन्ध मे कठिनाइयां आती हैं और बहुत वड़ी आयु हो।
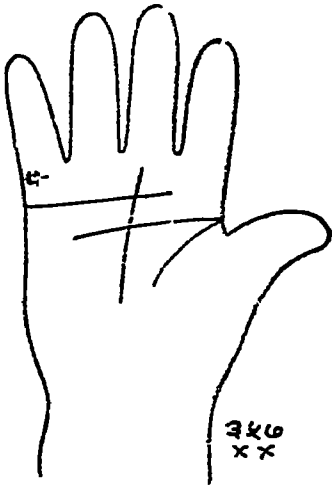
जाने पर ही विवाह हो पाता है। यदि विवाह-रेखा पर कई नक्षत्र-चिह्न हो तो विवाहोपरान्त जातक का दाम्पत्य-जीवन सुखमय नही रहता।

चित्र ३५८—यदि मगल-रेखा पर नक्षत्र-चिन्ह हो तो जातक शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से दुर्बल होता है। ऐसे लोग नीच कर्म करने वाले, ईर्ष्यालु, द्वेषी, पर-निन्दक झगड़ालू, क्रोधी स्वभाव के तथा अपयश प्राप्त करने वाले होते हैं।

चित्र ३५९—यदि चन्द्र-रेखा पर नक्षत्र-चिन्ह हो तो जातक सरदी के विकारो से पीडित रहता है। उसे जल-यात्रा के समय प्राणो का भय होता है। ऐसे चिन्हो वाले जातक की मृत्यु भी प्रायः पानी मे डूब कर ही होती है।
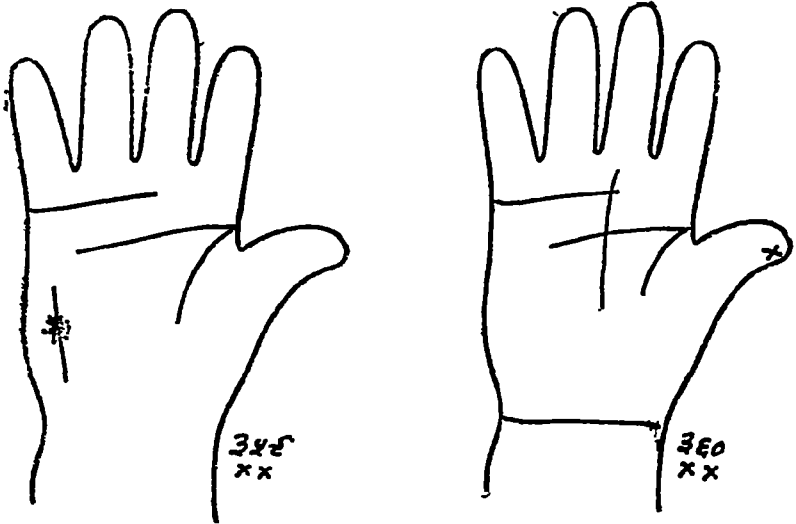
टिप्पणी—(१) 'क्रास-चिन्ह' केवल गुरु-क्षेत्र पर शुभ होता है, अन्य स्थानों पर हानिकारक सिद्ध होता है।

(२) 'द्वीप-चिन्ह' प्राय. सभी स्थानो पर दुर्भाग्य का सूचक होता है।

(३) 'नक्षत्र-चिन्ह' केवल सूर्य-क्षेत्र पर शुभ होता है। अन्य स्थानों पर अनिष्टकारक सिद्ध करता है।

(४) 'चतुष्कोण या वर्ग' चिन्ह किसी भी स्थान पर हो जातक की विपत्तियो से रक्षा होती है।

(५) त्रिकोण-चिन्ह का प्रभाव भी 'चतुष्कोण' चिन्ह जैसा ही होता है।

(६) काला विन्दु-चिन्ह अथवा तिल-चिन्ह हाथ पर कही भी क्यो न हो, उसी क्षेत्र अथवा रेखा के फल को हानिकारक वना देता है।

(७) 'वृत्त-चिन्ह' कही भी क्यो न हो, वह जातक के लिए अनिष्ट-कर ही होता है।

(८) 'रेखा-जाल' चिन्ह केवल ग्रह-क्षेत्रो पर ही पाया जाता है, किसी रेखा के ऊपर प्राय नही होता। हा यह सभव है कि ग्रह-क्षेत्रस्थ फल-चिन्ह किसी रेखा का स्पर्श कर रहा हो। अस्तु, जाल-चिन्ह के विषय मे केवल यही समझ लेना चाहिए कि यह प्रत्येक स्थिति मे कही भी क्यो न हो, जातक के लिए दु ख, दुर्भाग्य, सकट एव वरवादी का सूचक होता है।

अंगूठा तथा उंगलियों पर विविध हस्त-चिह्नों का प्रभाव

पाश्चात्य मतानुसार अगूठे तथा उगलियो पर पाये जाने वाले विविध हस्त-चिह्नो के प्रभाव का वर्णन इस प्रकरण मे किया जा रहा है। हस्त-परीक्षक को चाहिए कि वह अगूठा तथा उगलियो पर हस्त-चिन्हो के प्रभाव का विचार करने से पूर्व हाथ तथा उगलियो की बनावट एव अन्य रेखाओ की स्थिति पर भी ध्यान दे। इसके अतिरिक्त हथेली तथा रेखाओ के रग आदि पर भी ध्यान देना आवश्यक है।

अगूठे तथा उगलियो पर पाये जाने वाले हस्त-चिह्नो का आकार कभी-कभी बहुत सूक्ष्म होता है, अत उनकी सही स्थिति सूक्ष्म-दर्शक-यन्त्र अथवा आतशी शीशे की सहायता से देखना चाहिए ताकि फलादेश मे किसी प्रकार का अन्तर न पड़े।

अंगूठे पर हस्त-चिह्नों का प्रभाव

अगूठे पर पाये जाने वाले विविध हस्त-चिह्नो के प्रभाव को नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चित्र ३६०—यदि अगूठो के पहले पर्व पर नाखून के बिल्कुल समीप क्रास-चिह्न हो तथा गुरु-क्षेत्र अत्यधिक उन्नत अथवा जाल-चिह्न युक्त हो तो ऐसे चिह्न वाला जातक यदि पुरुष है तो उसका किसी पर-स्त्री से और यदि स्त्री है तो किसी पर-पुरुष से अनुचित प्रेम- सम्बन्ध होता है।

चित्र ३६१—यदि अगूठे के पहले पर्व पर नाखून के पास दो क्रास-चिह्न हो तो ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति अत्यधिक आरामतलब होता है।
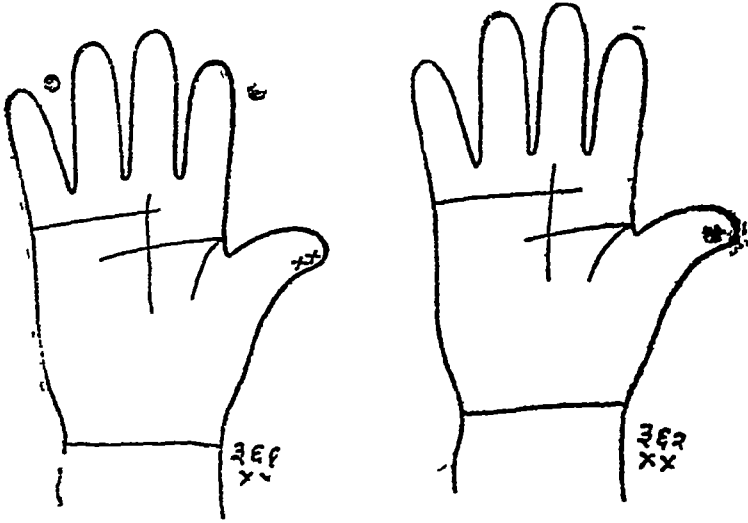
चित्र ३६२—यदि अगूठे के पहले पर्व पर नक्षत्र-चिह्न हो और गुरु-क्षेत्र अत्यधिक उन्नत अथवा जाल-चिह्न युक्त हो तो ऐसे चिह्न वाला जातक चरित्रहीन होता है।

चित्र ३६३—यदि अगूठे के पहले पर्व पर नाखून के पास दो नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक दूसरे के काम मे गलतिया निकालने के स्वभाव वाला होता है।

चित्र ३६४—यदि अगूठे के पहले पर्व पर त्रिकोण-चिन्ह हो तो जातक वैज्ञानिक-अनुसन्धान के कार्यो मे विशेष रुचि लेता है। ऐसे चिन्ह वाले व्यक्ति यदि वैज्ञानिक-अनुसन्धान के क्षेत्र मे काम करे तो उन्हे विशेष सफलता प्राप्त होती है।
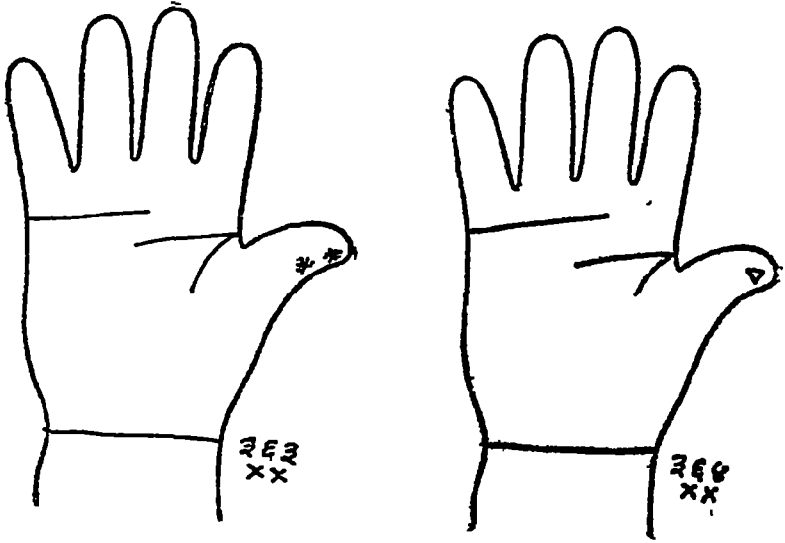
चित्र ३६५—यदि अगूठे के पहले पर्व पर 'वर्ग' (चतुष्कोण) चिन्ह हो तो जातक दृढ इच्छा-शक्ति वाला होता है। वह एक बार जो
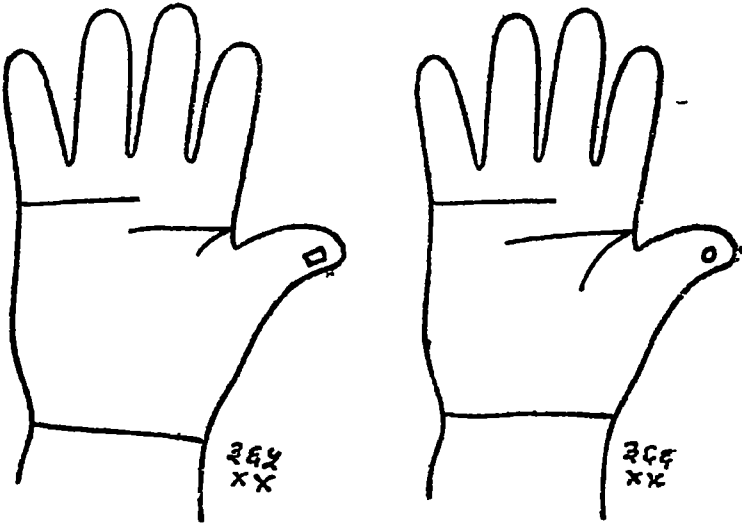
निश्चय कर लेता है, उस पर अन्त तक जमा रहता है। ऐसे चिन्ह वाले व्यक्ति कठोर प्रकृति के तथा दूसरो पर निर्दयता पूर्वक शासन करने वाले होते हैं।

चित्र ३६६—यदि अंगूठे के पहने पर्व पर वृत्त-चिन्ह हो तो जातक अपने इरादे का वहुत पक्का होता है और कठिनाइयो तथा विपत्तियो का सामना करते हुए भी अपने निश्चय से नहीं डिगता, फलस्वरूप उसे अन्त में सफलता मिलकर ही रहती है।

चित्र ३६७—यदि अंगूठे के पहले पर्व पर नाखून के पास जाल-चिन्ह हो तो उसे अशुभ फलदायक समझना चाहिए। यदि हाथ में अन्य लक्षण भी अशुभ हो तो ऐसे चिन्ह वाले पति-पत्नी अपने जीवन-

साथी की हत्या भी कर सकते है। केवल यही चिन्ह होने से पति-पत्नी में कलह होना अवश्यम्भावी है।
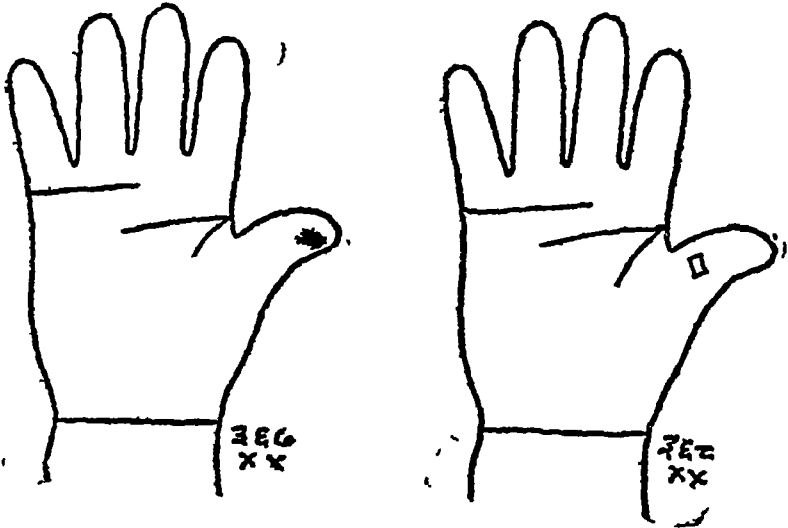
चित्र ३६८—यदि अंगूठे के दूसरे पर्व पर 'चतुष्कोण' (वर्ग) चिह्न हो तो जातक तार्किक तथा बुद्धिमान होता है। उसे अपने निश्चय से डिगाया नहीं जा सकता, परन्तु यदि हाथ मे बुद्धिमत्ता सूचक अन्य लक्षण न हो तो ऐसे चिह्न वाला जातक हठी तथा दुराग्रही होता है।

चित्र ३६९—यदि अगूठे के दूसरे पर्व पर 'क्रास-चिह्न' हो तो जातक दूसरे लोगो से शीघ्र प्रभावित हो जाता है। यदि अगूठे का पहला पर्व छोटा तथा निर्बल हो तो इस लक्षण की पुष्टि होती है, परन्तु यदि मगल एव बुध-क्षेत्र उन्नत हो तो जातक की विचार-शक्ति प्रबल होती हैं और वह जल्दी ही किसी से प्रभावित नही हो पाता।
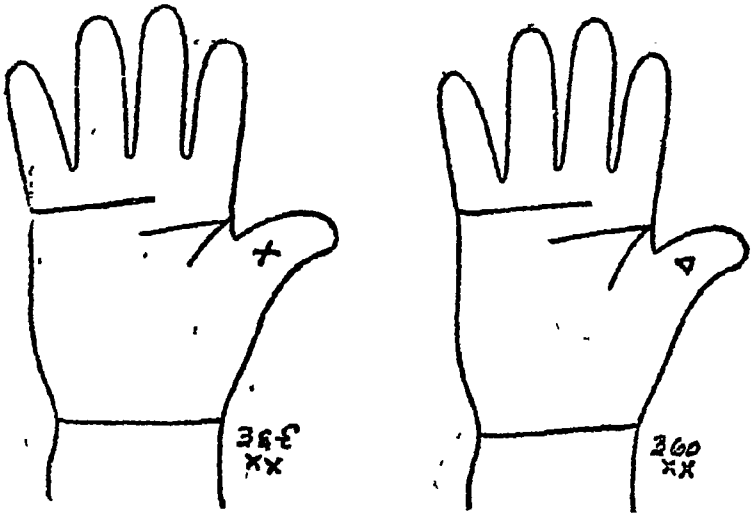
चित्र ३७०—यदि अंगूठे के दूसरे पर्व पर 'त्रिकोण-चिह्न' हो तो जातक दर्शन-शास्त्र अथवा वैज्ञानिक-क्षेत्र में विशिष्ट योग्यता प्राप्त करता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्तियो के हाथ को अन्य रेखाओ को देखकर यह निर्णय करना चाहिए कि वह आध्यात्मिक क्षेत्र मे अग्रसर होगा अथवा वैज्ञानिक क्षेत्र मे।

चित्र ३७१—यदि अगूठे के दूसरे पर्व पर 'नक्षत्र-चिह्न' हो तो जातक सदैव प्रसन्न रहने वाला हंसमुख होता है, परन्तु उसकी स्वाभाविक प्रवृत्ति बुरे कामों की ओर अधिक रहती है। यदि दो नक्षत्र-चिह्न हो तो भी यही प्रभाव समझना चाहिए। यदि स्त्री के हाथ में ऐसा चिह्न हो तो वह अत्यन्त धनवान होती है।
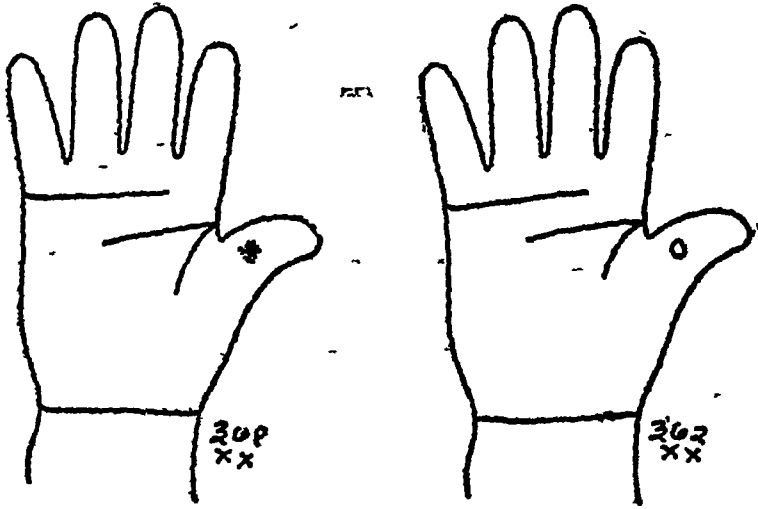
चित्र ३७२—यदि अगूठे के दूसरे पर्व पर वृत्त-चिह्न हो तो जातक की तर्क-शक्ति अधिक होती है और वह विचारपूर्ण अथवा तर्क-पूर्ण कार्यों के क्षेत्र मे विशेष सफलता प्राप्त करता है। ऐसे व्यक्तियो को व्यावसायिक-क्षेत्र मे सफलता प्राप्त नही होती ।

चित्र ३७३—यदि अगूठे के दूसरे पर्व पर 'जाल-चिह्न' हो तो जातक कुतर्की होता है। वह नैतिक आदर्शो से परे तथा तर्क के समय बेईमानी एव मिथ्यावादिता से काम लेता है।
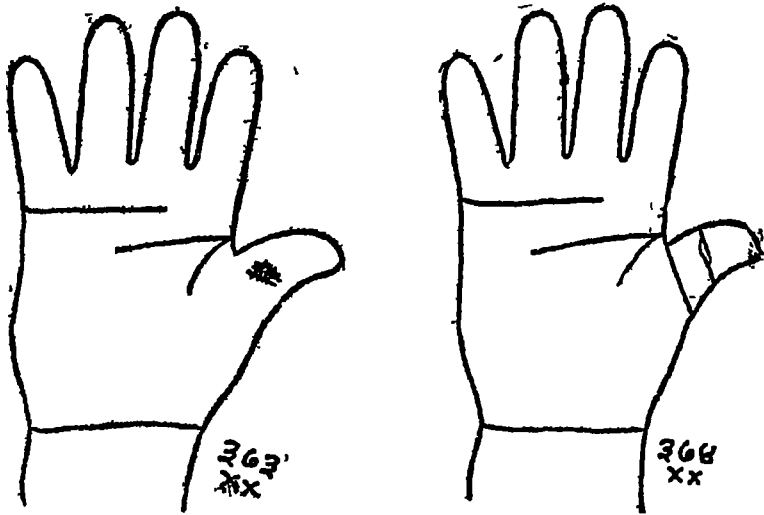
चित्र ३७४—यदि दायें हाथ के अंगूठे के मध्यभाग मे 'यव-चिह्न' हो तो जातक का जन्म शुक्ल-पक्ष मे तथा दिन के समय होता है। यदि बायें हाथ के अंगूठे के मध्यभाग मे यव-चिह्न हो तो जातक का जन्म कृष्ण-पक्ष में दिन के समय होता है और दोनों अगूठे के मध्यभाग मे यव-चिह्न हो जातक का जन्म कृष्ण-पक्ष के दिन मे समझना चाहिए। यदि दोनो हाथ के किसी भी अगूठे मे यव-चिह्न न हो तो जातक का जन्म कृष्ण-पक्ष की रात्रि में समझना चाहिए—यह प्राच्य-विद्वानो का मत है।

चित्र ३७५—यदि अगूठा लम्बा हो और उसके बीच मे नक्षत्र-चिह्न हो तो पुरुष-जातक अपव्ययी एव चिन्ता-ग्रस्त होता है, परन्तु यदि किसी स्त्री के हाथ मे ऐसा चिह्न हो तो वह धनी, सुखी तथा लोक-सेवा के कार्यों द्वारा यश अर्जित करने वाली होती है।

चित्र ३७६—यदि अगूठे के किसी भी पर्व मे यव-चिह्न हो तो जातक को किसी की चल अथवा अचल सम्पत्ति प्राप्त होती है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति को व्यवसाय, सट्टा अथवा लाटरी आदि के द्वारा
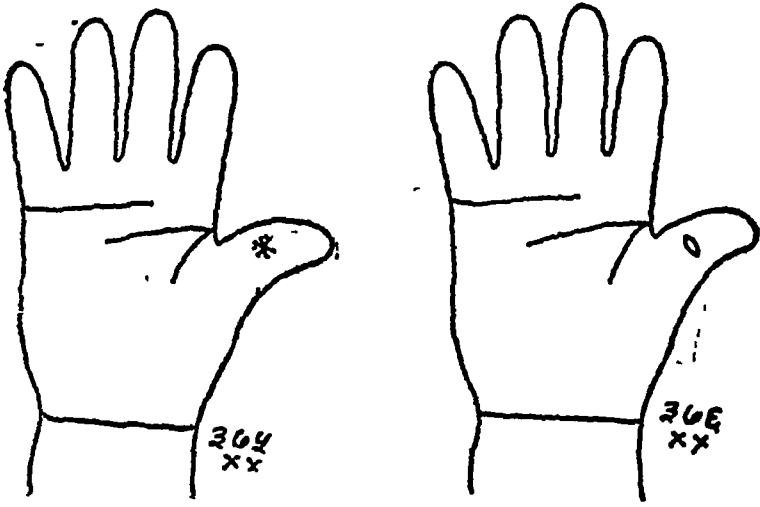
ी अत्यधिक धन प्राप्त होता है, जिसे वह अपनी प्रसिद्धि के लिए व्यय करता है। ऐसे चिह्न वाले जातक दृढ़-निश्चयी, मनोवैज्ञानिक तथा प्रसिद्धि प्राप्त करने के इच्छुक होते हैं।

चित्र ३७७—यदि अगूठे के मध्यभाग मे 'धनुप' जैसा चिह्न हो तो जातक गुणी, धनी तथा परोपकारी होता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति अत्यधिक सम्पत्ति के स्वामी तथा सुप्रसिद्ध कीर्ति वाले, यशस्वी एवं समाज में प्रतिष्ठित होते हैं।

चित्र ३७८—यदि अगूठे के किसी पर्व पर काला विन्दु-चिह्न (तिल) हो तो जातक हठी, वाचाल तथा यात्रा-प्रेमी होता है। यदि शुक्र-क्षेत्र भी उन्नत हो तो उसे किसी समय उपदश (गर्मी) रोग होता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्तियो को वायु-यात्रा के समय जीवन का खतरा रहता है।

चित्र ३७९—यदि अगूठे के किसी पर्व पर 'धन-चिह्न' हो तो जातक को अपने किसी ऐसे प्रिय व्यक्ति के वियोग का दुःख सहन
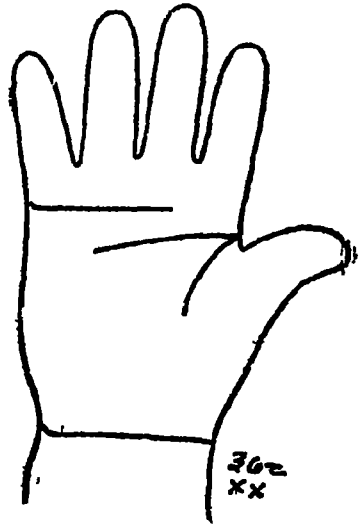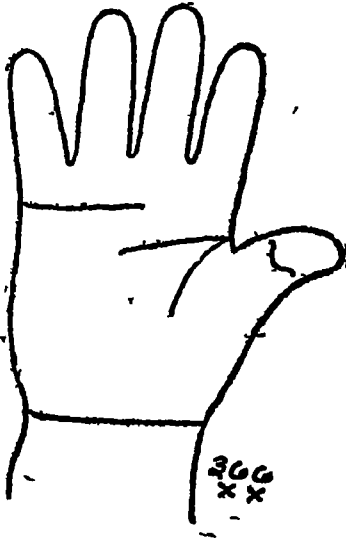
करना पड़ता है, जिसके साथ उसने बहुत-सा समय आनन्द पूर्वक व्यतीत किया हो।
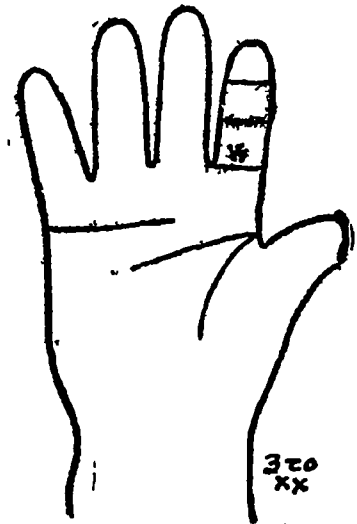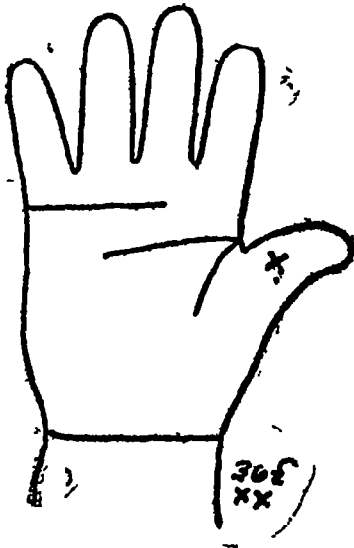
तर्जनी उंगली पर हस्त-चिह्नों का प्रभाव

तर्जनी उगली पर पाये जाने वाले विविध हस्त-चिह्नो के प्रभाव को नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चित्र ३८०—तर्जनी उगली के प्रथम पर्व पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक के जीवन मे कोई अत्यन्त सौभाग्यशाली घटना घटित होती है और उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे सफलता प्राप्त होती है।

चित्र ३८१—यदि तर्जनी उगली के द्वितीय पर्व पर नक्षत्र-चिह्न हो और उसके दोनो ओर एक-एक खडी रेखा भी हो तो पुरुष-जातक पत्नीव्रती एव स्त्री जातक पतिव्रता होती है।
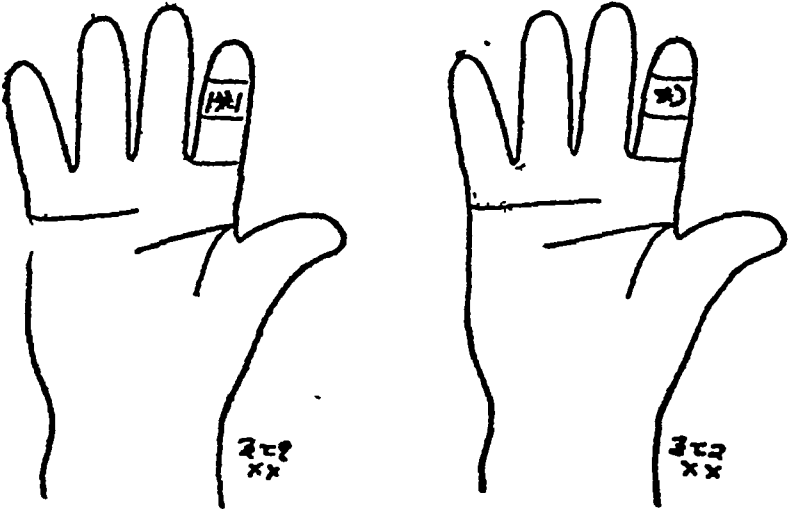
चित्र ३८२—यदि तर्जनी उगली के द्वितीय पर्व पर नक्षत्र-चिह्न हो और उसके वगल में 'अर्द्धवृत्त-चिह्न' तो जातक निर्लज्ज होता है। इस प्रकार का चिह्न यदि तर्जनी उगली के तीसरे पर्व पर हो तो भी यही प्रभाव समझना चाहिए।

चित्र ३८३—यदि तर्जनी उगली के दूसरे पर्व पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक काल्पनिक, क्रियाहीन, क्रोधी तथा सतप्त स्वभाव का होता है, परन्तु कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसे चिह्न वाले जातक भाग्य-वान तथा निर्लज्ज भी होते है ।
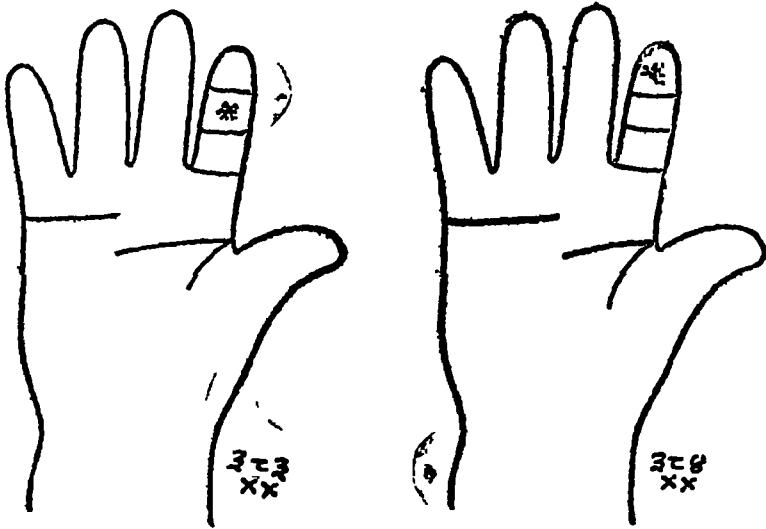
चित्र ३८४—यदि तर्जनी उंगली के तृतीय पर्व पर नक्षत्र-चिह्न हो तो ऐसा जातक व्यभिचारी, कुटिल, सग-हीन, मित्र-हीन, स्वेच्छा-चारी तथा स्नेह शून्य होता है, परन्तु उसकी पत्नी सुन्दर, सुशील तथा अपव्ययी भी होती है ।

चित्र ३८५—यदि तर्जनी उगली के तीसरे पर्व की सन्धि-रेखा पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक मे पूर्वोक्त प्रकार के अन्य सभी अवगुण तो होते है, परन्तु वह कुटिल तथा व्यभिचारी नही होता। लेकिन उसकी स्त्री मे उपर्युक्त सभी लक्षण पाये जाते हैं। ऐसे चिह्न वाले जातक अपनी पहली स्त्री को त्याग कर दूसरा विवाह भी कर लेते हैं।
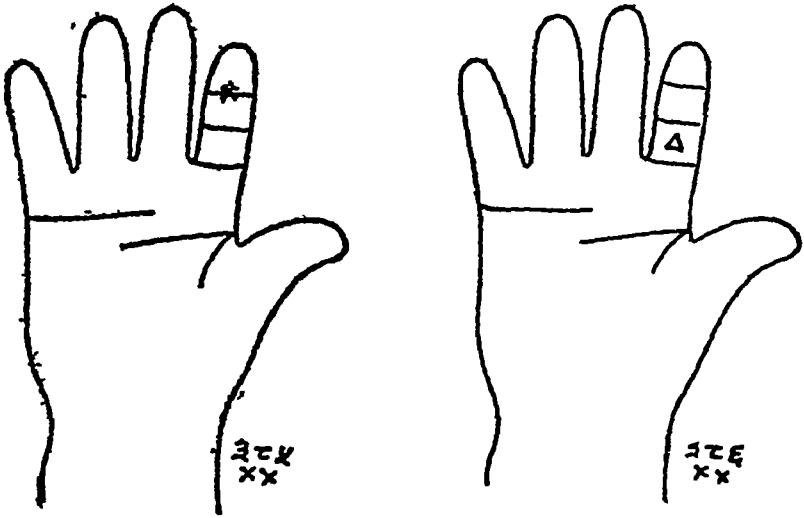
चित्र ३८६—यदि तर्जनी उगली के पहले पर्व पर त्रिकोण-चिह्न (त्रिभुज) हो तो जातक आध्यात्मिक, गुप्त विद्याओ का ज्ञाता तथा धार्मिक ग्रन्थो का विशेष अध्ययन करने वाला होता है। वह वेदान्ती तथा एकान्त मे योगाभ्यास करने वाला भी होता है।

चित्र ३८७—यदि तर्जनी उगली के दूसरे पर्व पर त्रिकोण (त्रिभुज) चिह्न हो तो जातक राजनीति का कुशल ज्ञाता होता है। यदि तीसरे पर्व पर त्रिकोण-चिह्न हो, तो भी शभ फल प्राप्त होता है। चित्र सख्या ३८७ में दोनो पर्वों पर त्रिकोण-चिन्ह को प्रदर्शित किया गया है।

चित्र ३८८—यदि तर्जनी उगली के पहले पर्व पर 'क्रास-चिह्न' अथवा 'धन' का चिह्न हो तो जातक को आकस्मिक मृत्यु होती है अथवा उसे उन्माद का पागलपन या रोग होता है। तर्जनी उगली के प्रथम पर्व पर क्रास-चिह्न होना अशुभ फलदायक ही होता है। आक-स्मिक मृत्यु के सम्बन्ध मे हाथ के अन्य लक्षणो पर भी विचार कर लेना आवश्यक है।
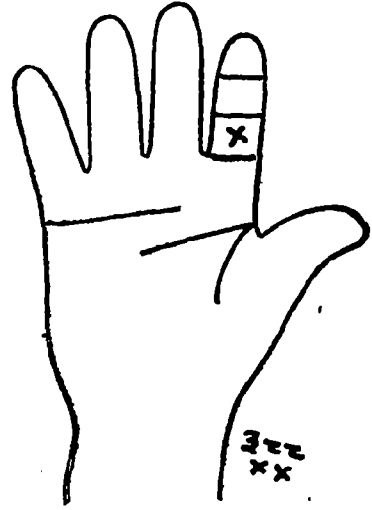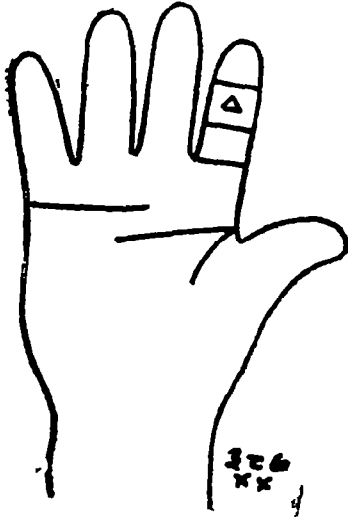
चित्र ३८९—यदि तर्जनी उंगली के दूसरे पर्व पर एक अथवा दो क्रास-चिह्न हों तो जातक को बड़े आदमियों का संरक्षण प्राप्त होता
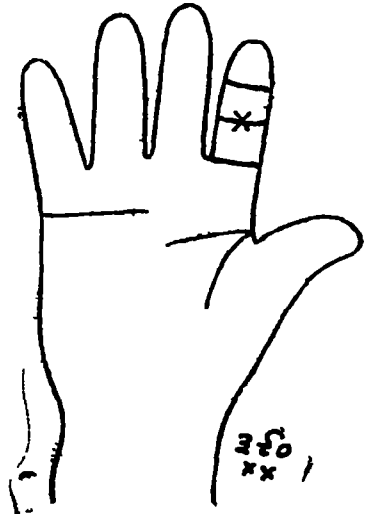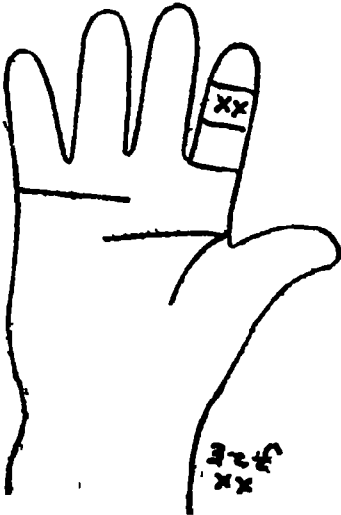
है, जिसके कारण उसे आर्थिक क्षेत्र में सफलता मिलती है, परन्तु ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति स्वय अधिक बुद्धिमान, विचारवान अथवा अनुभवी नही होते।

चित्र ३९०—यदि तर्जनी उगली के दूसरे और पहले पर्व के बीच की आड़ी रेखा पर क्रास-चिह्न हो तो जातक को साहित्य के क्षेत्र मे सफलता प्राप्त होती है। ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति उच्च पद, यश, कीर्ति तथा प्रसन्नता प्राप्त करने वाला होता है । उसे जीवन भर सफलताए मिलती रहती है।

चित्र ३९१—यदि तर्जनी उगली के तीसरे पर्व पर क्रास-चिह्न हो तो जातक कामी, चरित्र-हीन तथा अन्य खराब आदतो वाला होता है। तर्जनी के तीसरे पर्व पर क्रास-चिह्न का होना जातक के लिए सभी क्षेत्रों में अशुभ फलकारक चिन्ह होता है।
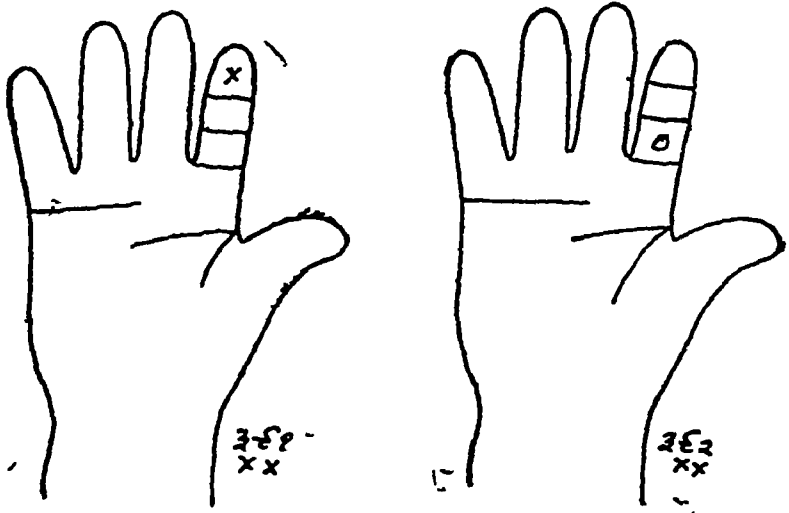
चित्र ३९२ —यदि तर्जनी उगली के पहले पर्व पर वृत्त-चिह्न हो तो जातक आदर्श-प्रेमी होता है। वह अपने सद्‌गुणों द्वारा सर्व साधा-

रण के मन पर अधिकार कर लेता है तथा उसका भक्ति मार्ग की ओर विशेष रुझान होता है।

चित्र ३६३—यदि तर्जनी उगली के दूसरे पर्व पर वृत्त-चिह्न हो तो जातक की महत्वकाक्षाए सफल होती है। यदि तीसरे पर्व पर वृत्त-चिह्न हो तो भी यही फल प्राप्त होता है। तर्जनी उगली के दूसरे तथा तीसरे पर्व पर वृत्त-चिह्न की स्थिति को प्रदर्शित किया गया है।
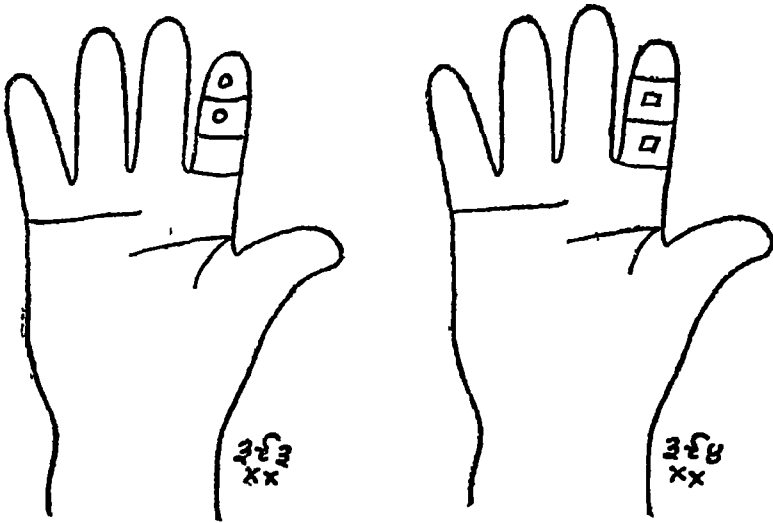
चित्र ३६४—यदि तर्जनी उगली के पहले पर्व पर 'चतुष्कोण' (वर्ग) चिह्न हो तो जातक अध्यवसायी एव धैर्यवान होता है। तर्जनी के दूसरे पर्व पर भो वर्ग-चिह्न हो तो भी यही फल होता है। तर्जनी उगली के पहले तथा दूसरे पर्व पर वर्ग-चिह्न की स्थिति को प्रदर्शित किया गया है।

चित्र ३६५—यदि तर्जनी उगली के तीसरे पर्व पर 'चतुष्कोण' (वर्ग) चिह्न हो तो जातक की प्रकृति मे तानाशाहीपन होता है, तर्जनी उंगली के तीसरे पर्व पर वर्ग-चिह्न का होना कामुकता का लक्षण भी है।
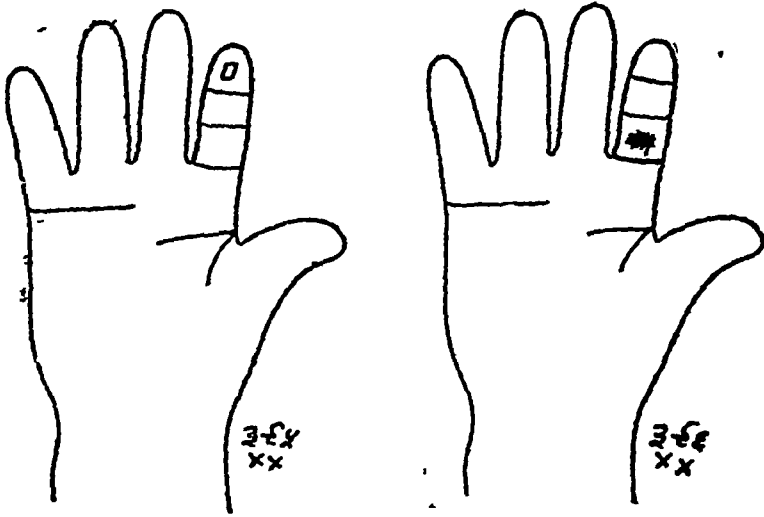
चित्र ३९६—यदि तर्जनी उंगली के पहले पर्व पर जाल-चिह्न हो तो जातक एकान्तवासी, निर्जन स्थान मे रहने वाला अथवा जेल में जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चित्र ३९७—यदि तर्जनी उगली के दूसरे पर्व पर जाल-चिह्न हो तो जातक दुष्ट-प्रकृति का होता है और उसे जीवन मे अनेक प्रकार की असफलताओं का सामना करना पड़ता है।

चित्र ३९८—यदि तर्जनी उंगलो के तीसरे पर्व पर जाल-चिह्न तो जातक दुश्चरित्र होता है और उसे जेल-यात्रा भी करनी पड़ता है।

टिप्पणी—कुछ विद्वानों के मतानुसार तर्जनी उंगलो पर जाल-चिह्न होने से जातक ठोकरें खा-खाकर आगे बढ़ता है और वह आने वाली विपत्तियों से अचानक ही बच जाता है।
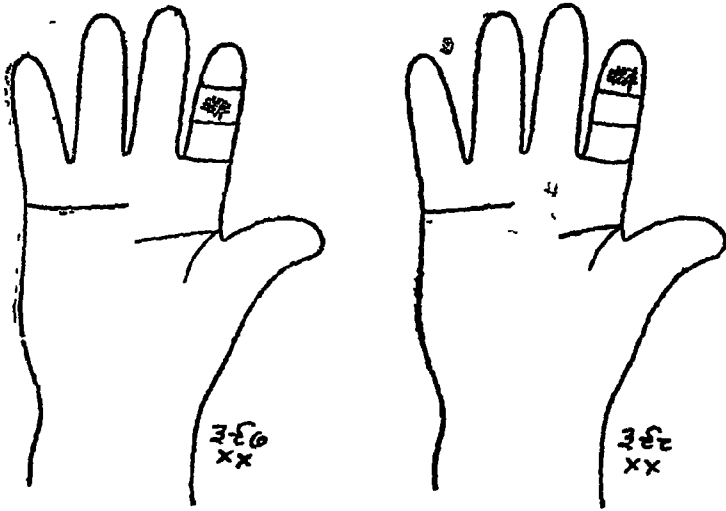
चित्र ३९९—यदि तर्जनी उंगली की पहली सन्धि-रेखा के ऊपर नक्षत्र-चिन्ह हो तो जातक अत्यन्त भाग्यशाली एवं धनवान होता है।
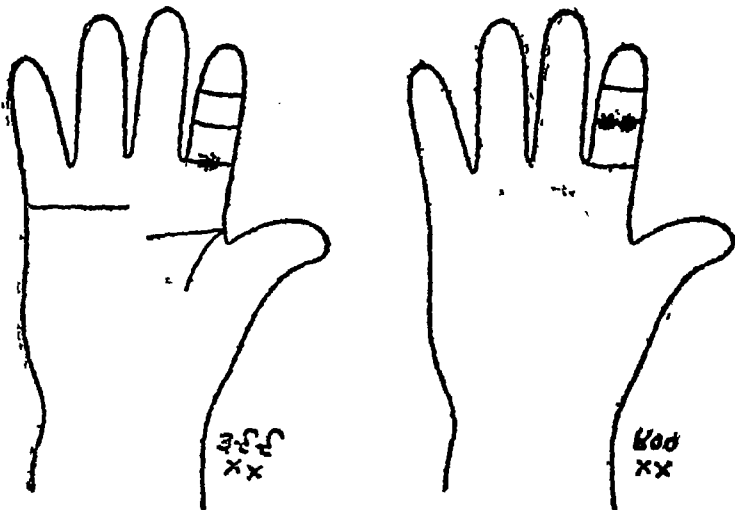
चित्र ४००—यदि तर्जनी उंगली की दूसरी सन्धि-रेखा के ऊपर दो नक्षत्र-चिन्ह हो तो जातक की मित्रता किसी बहुत धनी-व्यक्ति के साथ होती है, जिसके कारण उसे पर्याप्त लाभ होता है।

चित्र ४०१—यदि तर्जनी उगली के दूसरे पर्व पर अर्द्धचन्द्राकार-चिन्ह हो तो जातक मूर्ख होता है, जिसके कारण उसे प्रतिदिन कठिनाइयो का सामना करना पड़ता है।
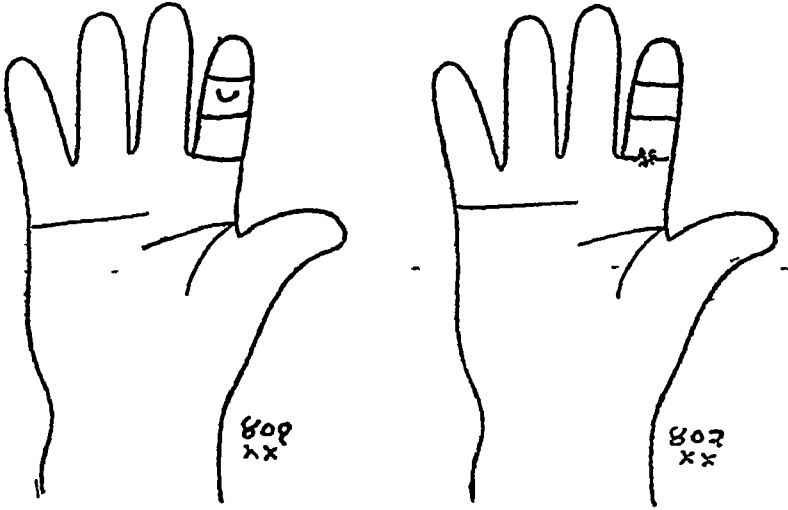
चित्र ४०२—यदि तर्जनी उगली की तीसरी सन्धि-रेखा के ऊपर नक्षत्र-चिन्ह हो तो जातक व्यभिचारी होता है।

चित्र ४०३—यदि तर्जनी उगली के तीसरे पर्व पर बिन्दु-चिन्ह हो तो ऐसा जातक कलाकार, घर मे शासन करने वाला परन्तु चोर होता है।

चित्र ४०४—यदि तर्जनी उगली के दूसरे पर्व पर बिन्दु-चिह्न हो तो जातक कपटी, धूर्त तथा दुष्ट-प्रकृति का होता है। स्मरणीय है कि
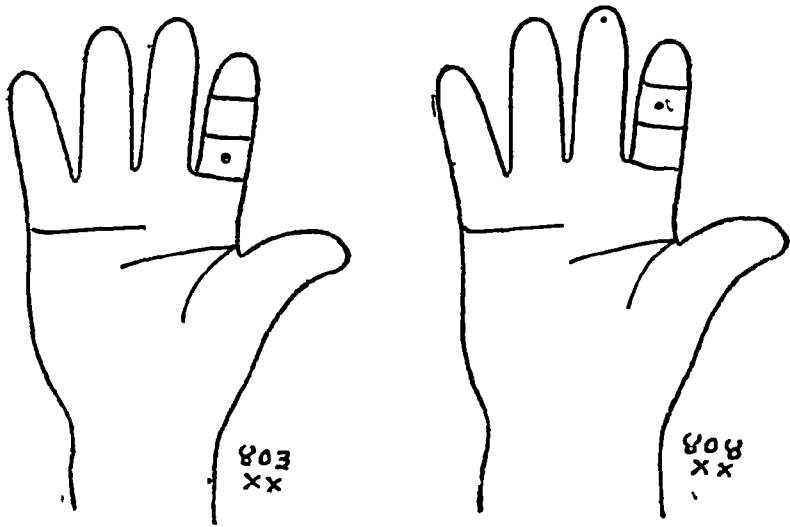
लाल बिन्दु चिह्न रोगोत्पत्ति का लक्षण है तथा काला-बिन्दु-चिन्ह ही उपर्युक्त प्रभाव को प्रकट करता है।

चित्र ४०५—यदि तर्जनी उंगली के किसी पर्व-सन्धि-रेखा पर काला बिन्दु-चिह्न हो तो जातक नीतिज्ञ, गुणवान् तथा विचारशील होता है, परन्तु उसे रोगों का कष्ट अवश्य उठाना पड़ता है।

चित्र ४०६—यदि तर्जनी उगली के दूसरे पर्व पर अर्द्धचन्द्राकार-चिह्न हो तो जातक कपटी, लम्पट तथा मूर्ख होता है और उसे अपनी ही मूर्खता से कष्ट उठाना पड़ता है, परन्तु यदि अर्द्धचन्द्र का चिह्न दूसरे पर्व की सन्धि-रेखा पर हो तो जातक मान, प्रतिष्ठा, धन, यश, सुख आदि प्राप्त करने वाला सद्‌गुणी होता है। चित्र संख्या ४०६ में अर्द्धचन्द्र की दोनो ही स्थितियों को प्रदर्शित किया गया है।
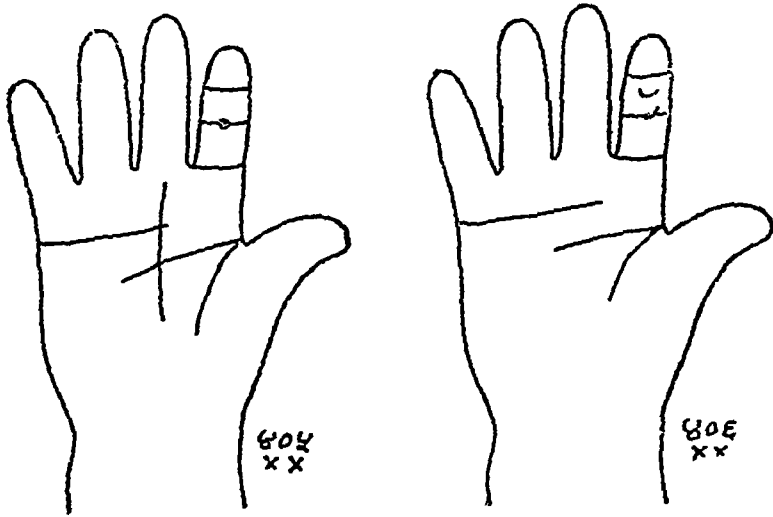
मध्यमा उंगली पर हस्त-चिह्नों का प्रभाव

मध्यमा उगली पर पाये जाने वाले विविध हस्त-चिह्नों के प्रभाव को नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चित्र ४०७—यदि मध्यमा उंगली के पहले पर्व पर 'नक्षत्र-चिह्न' हो तो ऐसा जातक या तो अत्यन्त भाग्यशाली तथा उन्नतिशील होता है या फिर बहुत दुर्भाग्यशाली होता है। यदि दोनों हाथो की मध्यमा उगली के पहले पर्वो पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक की किसी शस्त्र से मृत्यु होती है।

चित्र ४०८—यदि मध्यमा उगली के द्वितीय पर्व पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक अपराध करके दण्ड का भागी होता है।
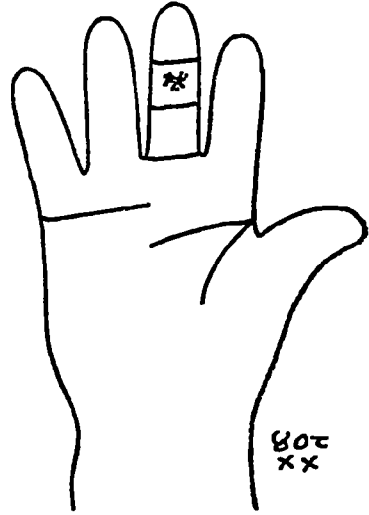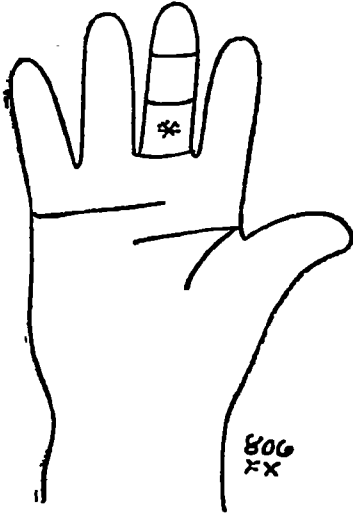
चित्र ४०९—यदि मध्यमा उंगली के पहले पर्व पर नक्षत्र-चिन्ह हो तथा शनि-क्षेत्र पर त्रिकोण-चिह्न हो तो ऐसे चिह्नो वाला जातक चरित्रहीन होता है।
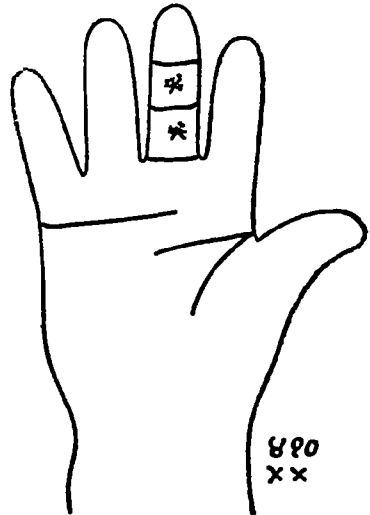
चित्र ४१०—यदि मध्यमा उगली के पहले पर्व पर भी एक नक्षत्र चिह्न हो तो जातक को न्यायालय द्वारा मृत्यु-दण्ड प्राप्त होता है।

चित्र ४११—यदि मध्यमा उगली के तृतीय पर्व पर नक्षत्र-चिह्न हो तो ऐसे चिह्न वाला जातक किसी की हत्या करता है। यदि हाथ के अन्य चिन्ह जातक को हत्यारा प्रमाणित न करते हों तो ऐसे चिन्ह वाले जातक की किसी अन्य व्यक्ति द्वारा हत्या कर दी जाती है। ऐसे चिन्ह वाली स्त्री प्राय वन्ध्या होती है।
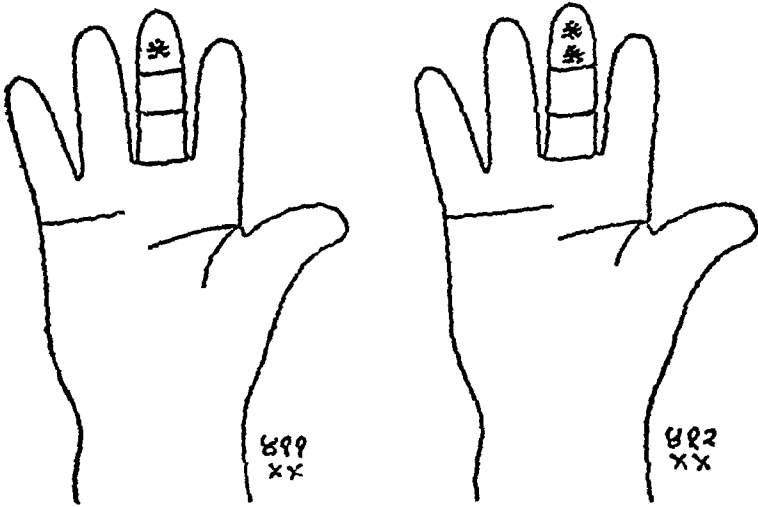
चित्र ४१२—यदि मध्यमा उगली के तीसरे पर्व मे दो नक्षत्र-चिन्ह हो साथ ही मस्तक-रेखा ठीक शनि-क्षेत्र के नीचे ही टूट गई हो तो जातक को अपनी मध्यमावस्था मे मृत्यु दण्ड को प्राप्त होता है। तथा उसकी पत्नी पानी मे डूब कर आत्महत्या कर लेती है। ऐसे चिन्ह वाला जातक जुआरी, व्यसनी तथा राजद्रोही होता है और उसकी स्त्री का भी पर-पुरुषों द्वारा अपहरण किया जाता है।

चित्र ४१३—यदि मध्यमा उगली के दूसरे पर्व पर त्रिकोण-चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति गुप्त-विद्याओ मे रुचि रखने वाला होता है। ऐसे चिन्ह वाले व्यक्तियो का गृहस्थ-जीवन सुखपूर्ण तथा ऐश्वर्य पूर्ण होता है। उनकी सन्ताने आज्ञाकारी होती है और वे प्रसिद्धि भी प्राप्त करती है।
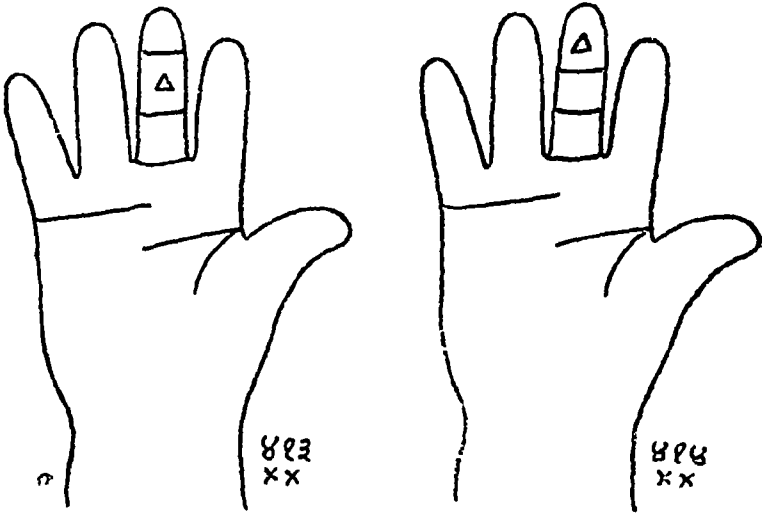
चित्र ४१४—यदि मध्यमा उंगली के तीसरे पर्व पर त्रिकोण-चिन्ह हो तो ऐसा जातक भाग्यहीन, दुराचारी तथा दुष्ट प्रकृति का होता है।

चित्र ४१५—यदि मध्यमा उगली के किसी पर्व पर बिन्दु-चिन्ह हो तो उसका कोई सम्बन्धी अथवा वारिस ही उसकी चोरी करता है।

चित्र ४१६—यदि मध्यमा उगली के पहले पर्व पर 'वर्ग-चिह्न' हो तो उसे अपने किसी सम्बन्धी अथवा मित्र की मृत्यु होने पर उत्तरा-

घिकार के रूप मे अथवा सट्टा, लाटरी, रेस आदि के द्वारा अकस्मात्
हो अधिक धन की प्राप्ति होती है।
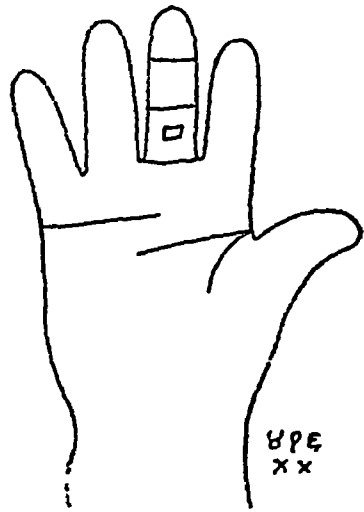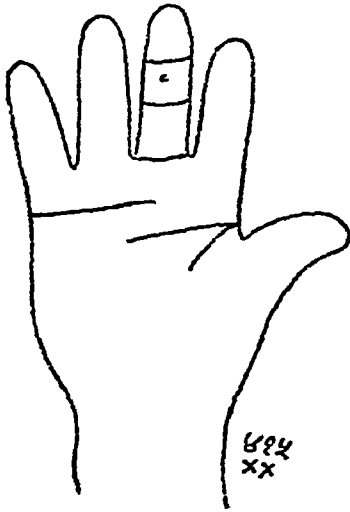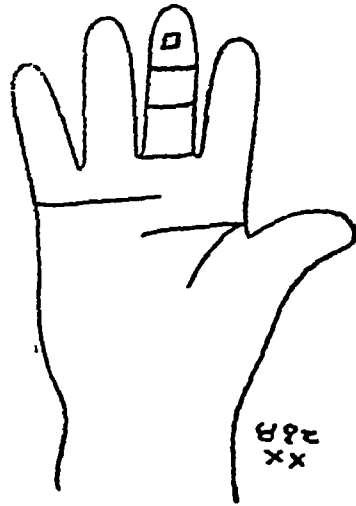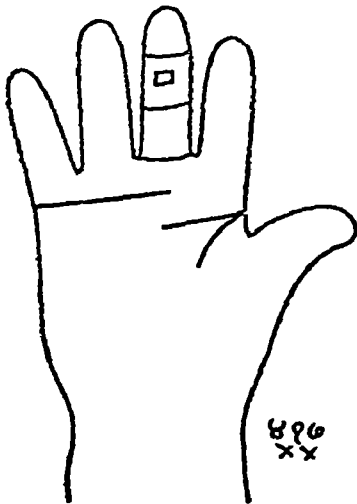
चित्र ४१७—यदि मध्यमा उगली के दूसरे पर्व पर वर्ग-चिह्न हो तो उसे जातक की अपमृत्यु का लक्षण समझना चाहिए।

चित्र ४१८—यदि मध्यमा उगली के तीसरे पर्व पर वर्ग-चिह्न हो तो जातक निष्ठुर प्रकृति का तथा लोभी होता है, जिसके कारण सब लोग उसका तिरस्कार करते है।

चित्र ४१९—यदि मध्यमा उगली के दूसरे पर्व पर वृत्त-चिह्न हो तो जातक गुप्त-विद्याओ (ज्योतिष, तन्त्र, मन्त्र, जादू, योग आदि) का बडा विद्वान् होता है।
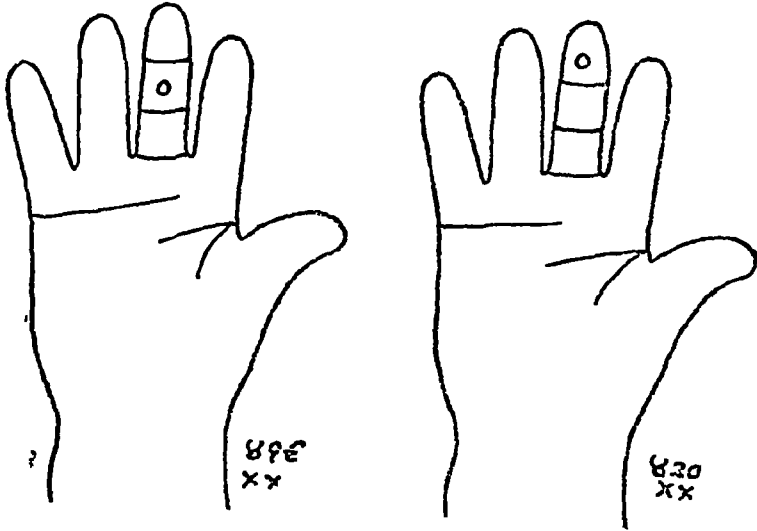
चित्र ४२०—यदि मध्यमा उंगली के तीसरे पर्व पर वृत्त-चिह्न हो तो जातक दर्शन-शास्त्र का प्रकाण्ड पण्डित होता है।

चित्र ४२१—यदि मध्यमा उगली पर काला विन्दु-चिह्न हो तो जातक किसी विपत्ति से छुटकारा पाकर, किसी उत्तरदायित्व पूर्ण कार्य को करने मे सफलता प्राप्त करता है।

चित्र ४२२—यदि मध्यमा उगली के दूसरे पर्व पर जाल-चिह्न
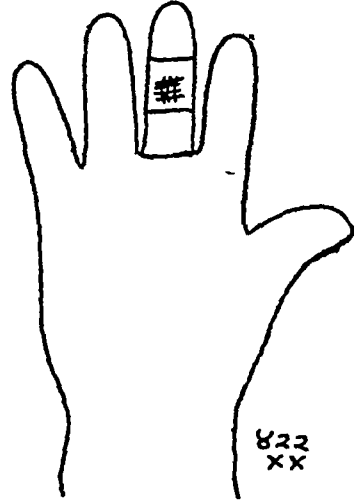
हो तो जातक रोगी तथा मन्दभागी होता है। उसे स्नायु-विकार, वायु-विकार तथा कान और पावो मे होने वाली बीमारियों का शिकार बनना पड़ता है।
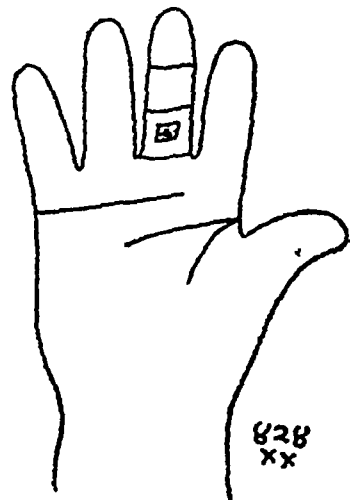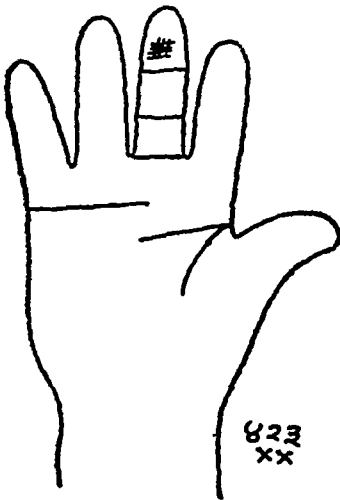
चित्र ४२३—यदि मध्यमा उगली के तोसरे पर्व पर जाल-चिह्न हो तो जातक अनुदार तथा कृपण होता है, जिसके कारण समाज में उसे अनादर की दृष्टि से देखा जाता है।

चित्र ४२४—यदि मध्यमा उगली पर चतुष्कोण वर्ग-चिह्न के भीतर नक्षत्र-चिह्न भी हो तो वह जातक की हत्या होने से रक्षा करता है। इस प्रकार का चिह्न बहुत ही कम दिखाई देता है।

अनामिका उंगली पर हस्त-चिह्नों का प्रभाव

अनामिका उगली पर पाये जाने वाले विविध हस्त-चिह्नों के प्रभाव को नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चित्र ४२५—यदि अनामिका उगली के पहले पर्व पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक अत्यन्त उच्चकोटि का कलाकार होता है, परन्तु यदि हाथ के अन्य लक्षण खराब हो तो उस स्थिति मे इस चिह्न के प्रभाव से जातक पागल हो जाता है।
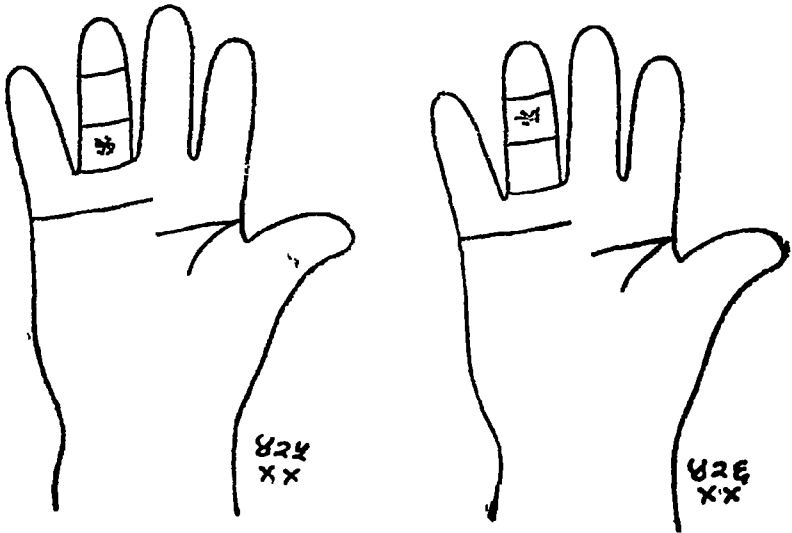
चित्र ४२६—यदि अनमिका उगली के दूसरे पर्व पर नक्षत्र-चिह्न हो तो वह जातक को अत्यन्त योग्य बनता है। ऐसे चिह्न वाला जातक प्रत्येक क्षेत्र मे सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

चित्र ४२७—यदि अनामिका उगली के तीसरे पर्व पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक खुशामद पसन्द, आत्म-प्रशसक तथा बहुत खर्चीला होता है। ऐसे चिन्ह वाले व्यक्ति धन सचय नही कर पाते।
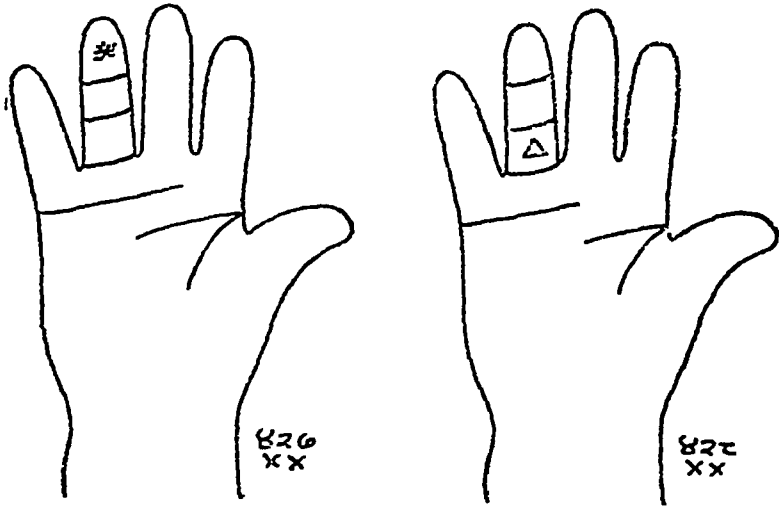
चित्र ४२८—यदि अनामिका उगली के पहले पर्व पर त्रिकोण-चिह्न हो तो जातक सौन्दर्य-प्रिय तथा इन्द्रिय-लोलुप होता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति पर-स्त्री-गामी भी होते है।

चित्र ४२९—यदि अनामिका उगली के दूसरे पर्व पर त्रिकोण-चिह्न हो तो जातक कला की गहराई तक पहुचने की क्षमता रखने वाला, उच्चकोटि का कलाकार अथवा कला पारखी होता है।
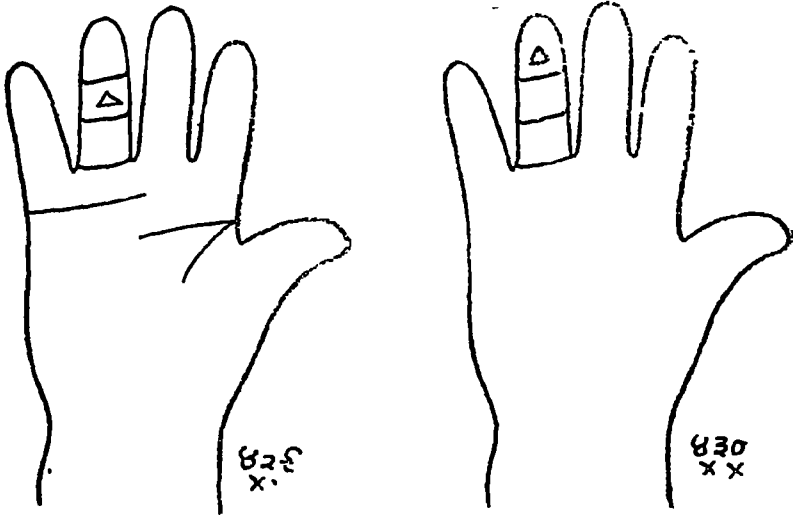
चित्र ४३०—यदि अनामिका उगली के तीसरे पर्व पर त्रिकोण-चिह्न हो तो जातक सम्मान एव प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बना रहता है।

चित्र ४३१—यदि अनामिका उगली के दूसरे पर्व पर वृत्त (चतुष्कोण) चिह्न हो तो जातक की सफलता सीमित रहती है। वह अपनी बुद्धि का समुचित उपयोग नही कर पाता। अन्य किसी पर्व पर वर्ग-चिह्न हो तो जातक राजनीति के क्षेत्र मे अत्यधिक सफलता प्राप्त करता है।

चित्र ४३२—अनामिका उगली के किसी भी पर्व पर वृत्त-चिह्न हो तो उस जातक की सफलता एव सौभाग्य का लक्षण समझना चाहिए। प्रथम पर्व पर वृत्त-चिह्न का होना अत्यधिक सफलतादायक होता है।
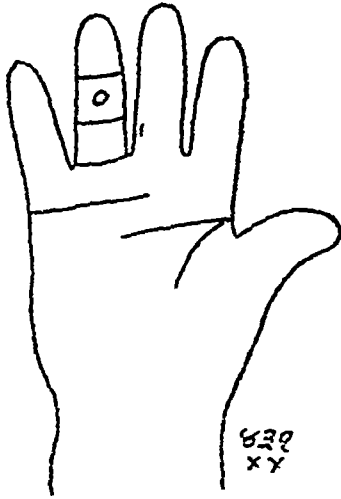
चित्र ४३३—यदि अनामिका उगली के पहले पर्व पर क्रास-चिन्ह हो तो पुरुष जातक पत्नीव्रती होता है।अथवा,स्त्री पतिव्रता होती है। ऐसे
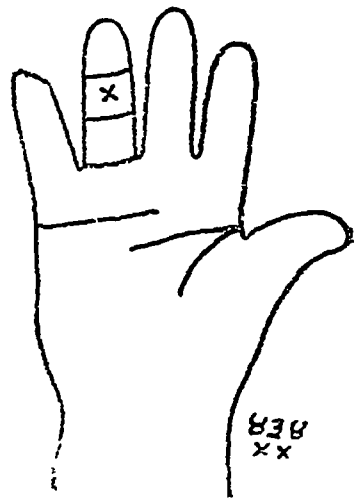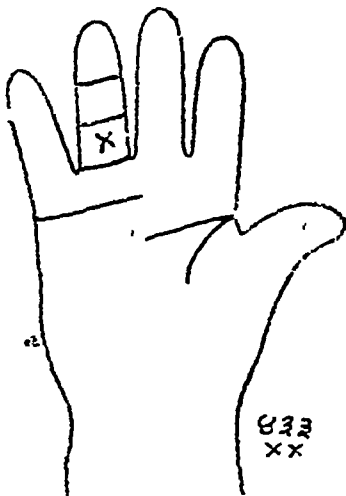
चिह्न वाले व्यक्ति कलाकार होते है और वे अपनी कला के चिन्तन, मनन तथा अभ्यास मे ही हर समय खोये से रहते है।

चित्र ४३४—यदि अनामिका उगली के दूसरे पर्व पर क्रास-चिन्ह हो तो जातक अपने प्रतियोगी अथवा प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय प्राप्त नही कर पाता, जिसके कारण वह ईर्ष्या की अग्नि में निरन्तर जलता रहता है।

चित्र ४३५—यदि अनामिका उगली के तीसरे पर्व पर क्रास-चिह्न हो तो जातक की महत्वाकांक्षाए पूरी नही हो पाती। वह जीवन मे असफलता ही प्राप्त करता रहता है।
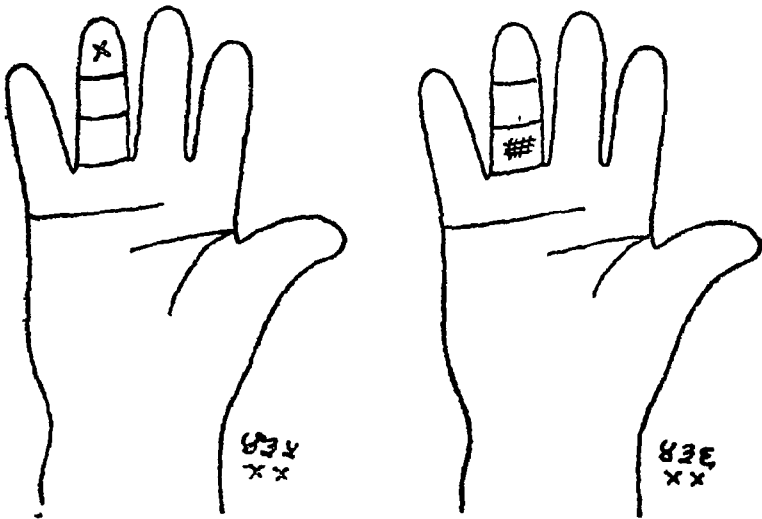
चित्र ४३६—यदि अनामिका उगली के पहले पर्व पर जाल-चिन्ह हो तो जातक पागल हो जाता है। इसकी पुष्टि के लिए हाथ के अन्य लक्षणों का भी मिलान कर लेना चाहिए।
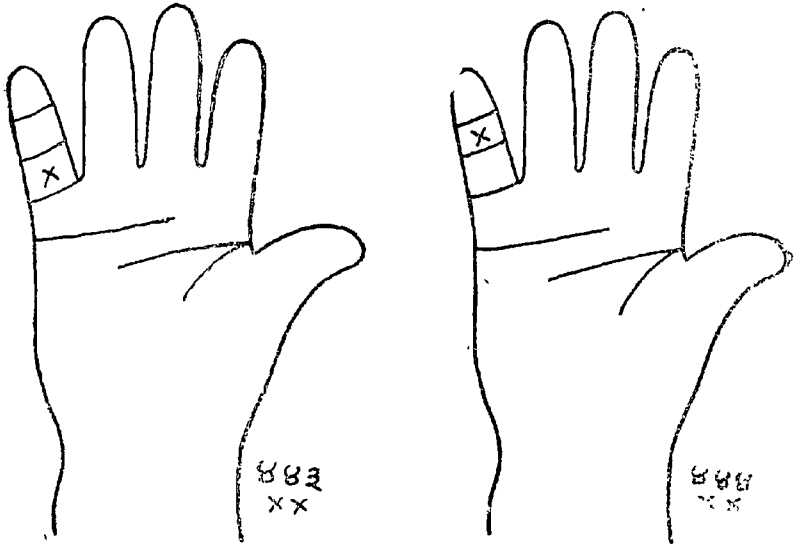
चित्र ४४५—यदि कनिष्ठा उंगली के तीसरे पर्व पर क्रास-चिह्न हो तो ऐसा जातक चोर होता है।
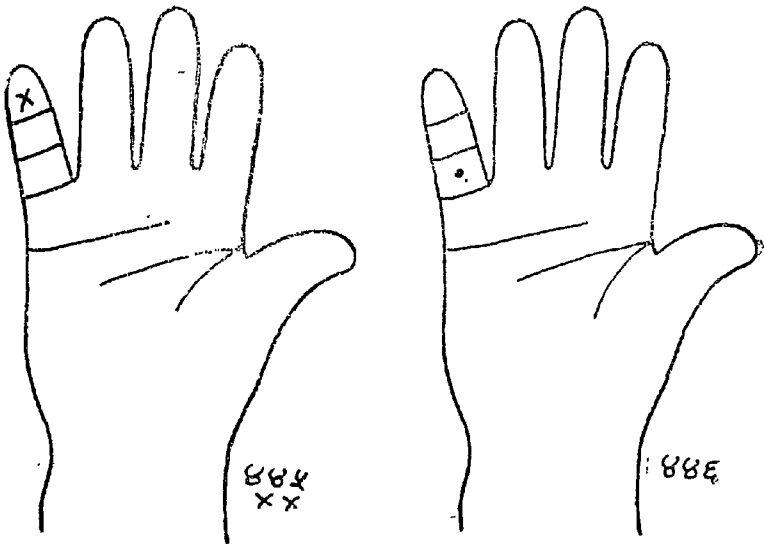
वाज, आलसी, निष्ठुर; झगडालू, कटुभाषी तथा रोगी होता है। उसका अपने सम्बन्धियो से भी नही पटती है और वह शासन द्वारा दण्डित भा किया जाता है।
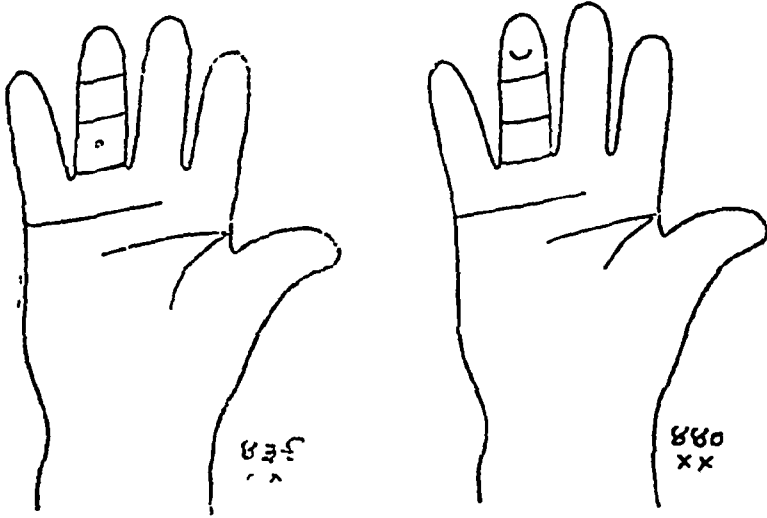
चित्र ४४१—यदि अनामिका उगली के दूसरे पव पर कोण-चिह्न हो तो जातक कामो, जुआरी, पर-स्त्री-गामी, वेश्याओ का मित्र परन्तु शरीर से सुन्दर होता है। ऐसे चिह्न वाले लोग विद्वानो के सेवक भी होते हैं। इनकी स्त्रो कुलीन तथा सुशीला होती है जो सव सकटो को हसती हुई झेलती रहती है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति धन-पुत्रादि मे युक्त भी होते हैं।

चित्र ४४२—यदि अनामिका उंगली के दूसरे अथवा तोसरे पर्व मे कोण-चिह्न हो तो जातक अत्यन्त विद्वान तथा मत्र शास्त्र का ज्ञाता होता है, परन्तु पर-स्त्री-गामी नही होता। सुरापान आदि करने के कारण वह सभ्य-समाज द्वारा तिरस्कृत तो किया जाता है, परन्तु वह

उपदेशक तथा सच्चरित्र भी होता है। चित्र सख्या ४४२ मे उक्त दोनों पर्वों पर कोण की अवस्थिति को प्रदर्शित किया गया है।
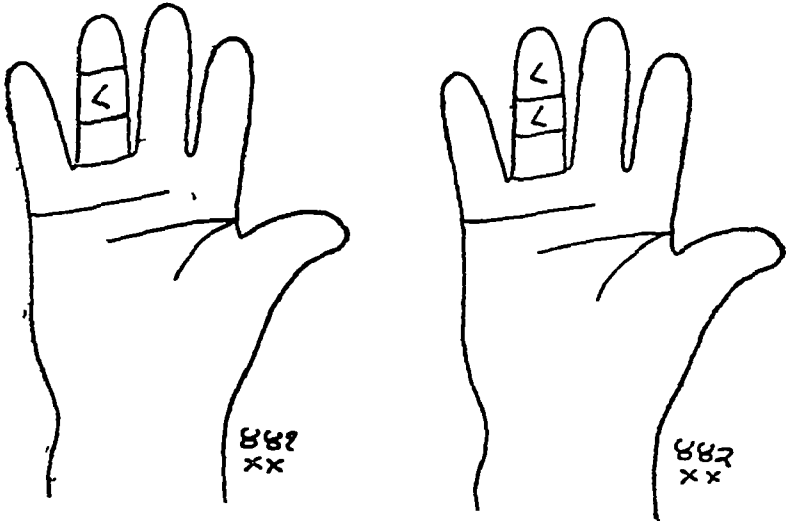
कनिष्ठा उंगली पर हस्त-चिन्हों का प्रभाव

कनिष्ठा उगली पर पाये जाने वाले विविध हस्त-चिह्नो के प्रभाव को नीचे लिखे अनुसार ही समझना चाहिए—

चित्र ४४३—यदि अनामिका उगली के पहले पर्व पर क्रास-चिह्न हो तो जातक भविष्यफल का श्रेष्ठ वक्ता होता है, परन्तु यदि हाथ के अन्य लक्षण अच्छे न हो तो ऐसे चिह्न वाला जातक चोर या डाकू होता है। कुछ विद्वानो के मतानुसार ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति वीर-योद्धा होता है।

चित्र ४४४—यदि कनिष्ठा उगली के दूसरे पर्व पर क्रास-चिह्न हो तो जातक को कठिनाइयो एव सकटो का सामना करना पड़ता है। ऐसे चिह्न वाले जातक को जेल-यात्रा भी करनी पड़ सकती है।
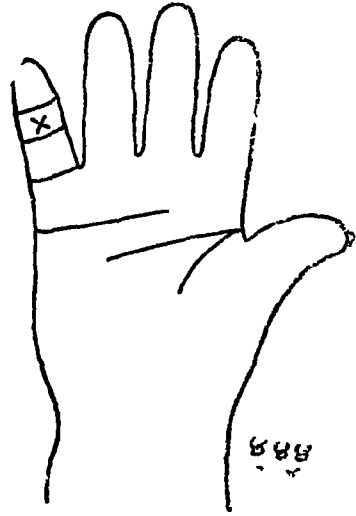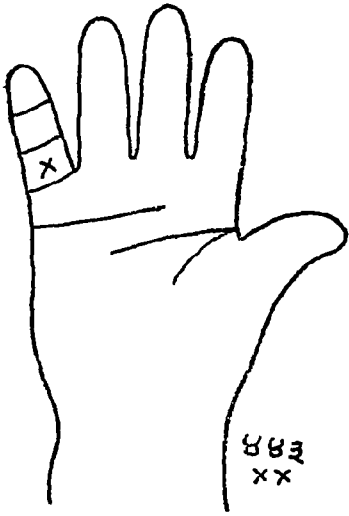
चित्र ४४५—यदि कनिष्ठा उगली के तीसरे पर्व पर क्रास-चिह्न हो तो ऐसा जातक चोर होता है।
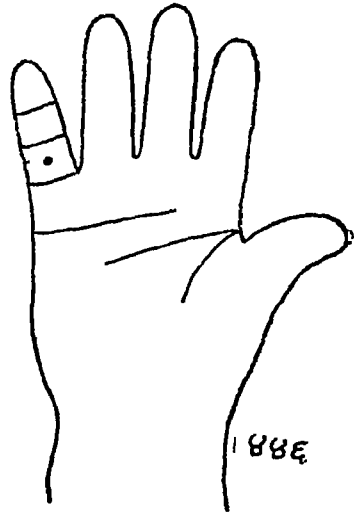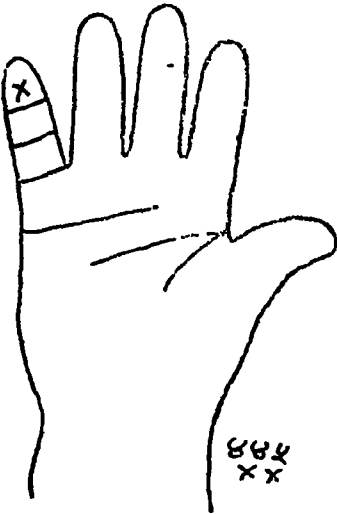
चित्र ४४६—यदि कनिष्ठा उगली पर बिन्दु-चिह्न हो तो जातक की सम्पत्ति एव जायदाद पराये हाथ मे अथवा चोरी चली जाती है, परन्तु कुछ विद्वानो के मतानुसार यदि कनिष्ठा उंगली के पहले पर्व-पर बिन्दु-चिह तो जातक अव्यवस्थिति चित्त वाला, पराये धन से धनी होने वाला, भूमि, वस्त्र वाहन आदि के सुख से युक्त, विद्वान तथा यज्ञादि करने वाला होता है।

चित्र ४४७—यदि कनिष्ठा उगली के पहले पर्व पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक भाषण देने में तो कुशल होता है, परतु उसे आर्थिक क्षेत्र मे सफलता नही मिल पाती। कुछ विद्वानो के मतानुसार ऐसे चिह्न
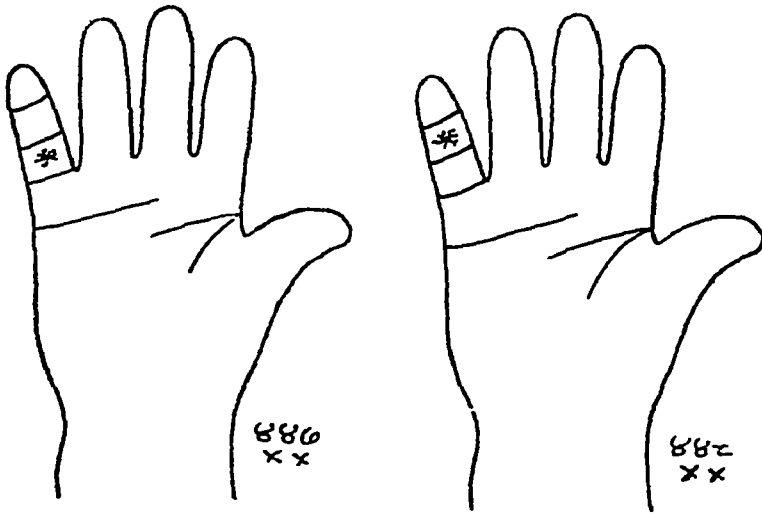
वाला जातक दरिद्री होता है और उसका विवाह भी नही हो पाता। कुछ विद्वानो के मतानुसार ऐसे चिन्ह वाले जातक को अपनी स्त्री के कारण सकटों का सामना करना पड़ता है।

चित्र ४४८—यदि कनिष्ठा उंगली के दूसरे पर्व पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक चोरी, जालसाजी, ठगी आदि के काम करता है, जिसके कारण उसे सर्वत्र अप्रतिष्ठा तथा अपयश की प्राप्ति होती है।

चित्र ४४९—यदि कनिष्ठा उंगली के तीसरे पर्व पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक मे हाजिर जवाबी आदि के तो गुण होते है, परन्तु आर्थिक दृष्टि से उसका जीवन सफल नही होता। कुछ विद्वानो के मतानुसार ऐसे चिह्न वाले जातक को अपने पहले विवाह से प्रसन्नता प्राप्त नहीं होती, परतु दूसरे विवाह से धन एवं आनन्द दोनों की प्राप्ति होती है।
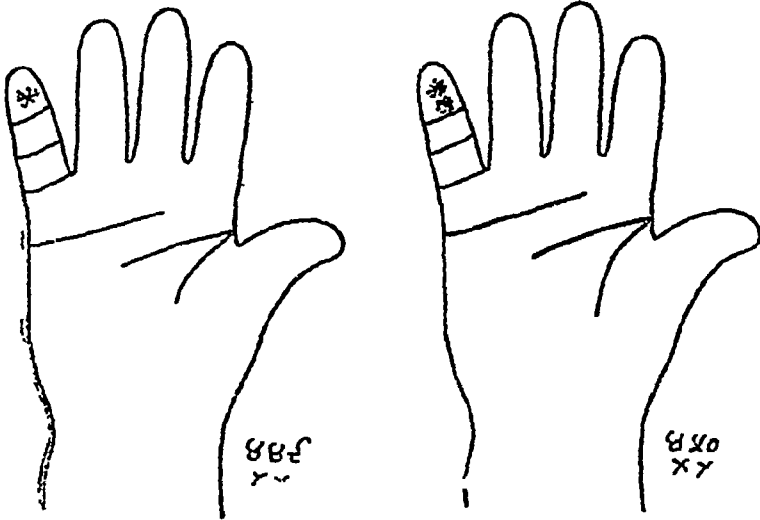
चित्र ४५०—यदि कनिष्ठा उगली के तीसरे पर्व पर दो नक्षत्र-चिह्न हों तो ऐसे जातक की चोरी करने के कारण अपमानजनक मृत्यु होती है।

चित्र ४५१—यदि कनिष्ठा उंगली के पहले पर्व पर त्रिकोण-चिह्न हो तो जातक को गुप्त-विद्याओ से प्रेम होता है।
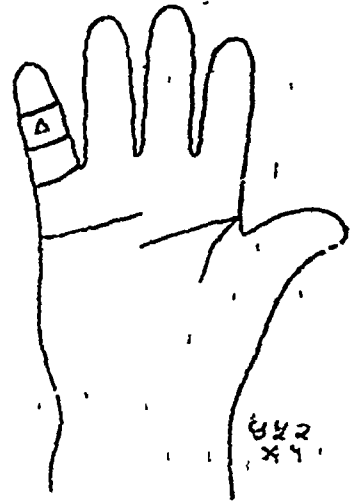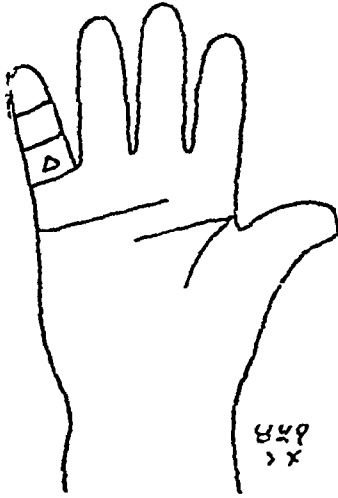
चित्र ४५२—यदि कनिष्ठा उगली के दूसरे पर्व पर त्रिकोण-चिह्न हो तो जातक को गुप्त-विद्याओं के अध्ययन में सफलता प्राप्त होती है।
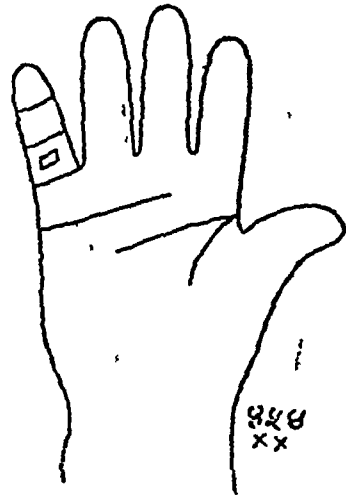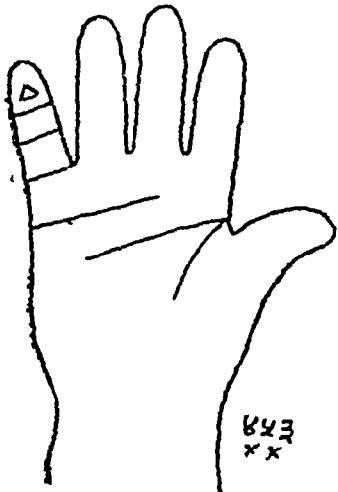
चित्र ४५३—यदि कनिष्ठा उगली के तीसरे पर्व पर त्रिकोण-चिह्न हो तो जातक राजनीति के क्षेत्र मे कुशल होता है । कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति किसी अजनबी आदमी से धोखा खाते है, जिसमे जान-माल को हानि पहुंचने की सम्भावना भी रहती है ।

चित्र ४५४—यदि कनिष्ठा उंगली के पहले पर्व पर चतुष्कोण हो तो जातक को व्यवसाय मे धन का लाभ होता है । यह चिह्न व्यापारिक सफलता का लक्षण है ।

चित्र ४५५—यदि कनिष्ठा उगली के दूसरे पर्व पर चतुष्कोण (वर्ग) चिह्न हो तो जातक अनेक कामो की जानकारी प्राप्त करने मे असफल रहता है । यदि हाथ मे अन्य अशुभ लक्षण भी हो तो उसे जेल यात्रा करनी पड़ती है ।
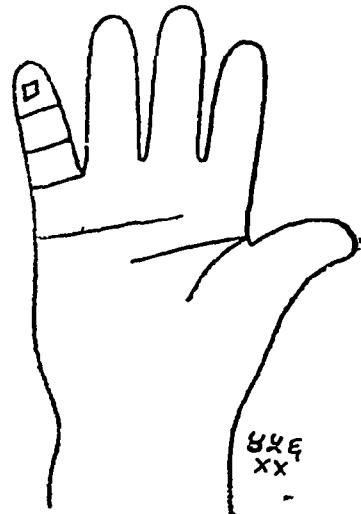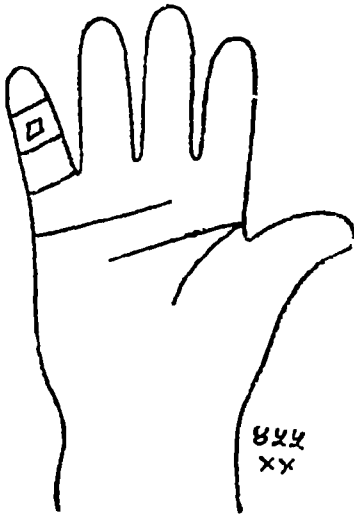
चित्र ४५६—यदि कनिष्ठा उगली के तीसरे पर्व पर चतुष्कोण (वर्ग) चिह्न हो तो जातक अपने मन की वात को छिपाकर रखने वाला होता है और उसके रहस्य को कोई नही जान पाता।

चित्र ४५७—यदि कनिष्ठा उंगली के पहले अथवा दूसरे पर्व पर वृत्त-चिह्न हो तो मनुष्य को किसी ऐसे काम मे अचानक ही सफलता प्राप्त होती है, जिसके विषय मे उसे कोई ध्यान ही नही रहा था। उस स्थिति मे उसकी अन्य अनेक कामनाए भी पूर्ण हो जाती है।
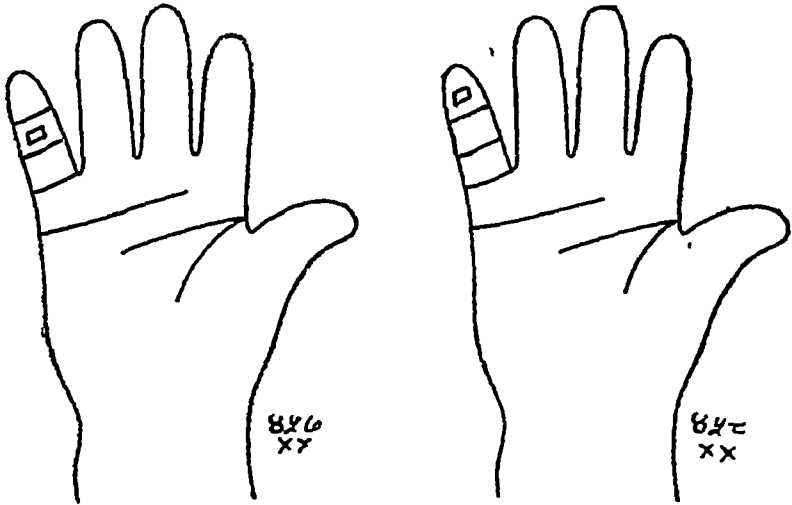
चित्र ४५८—यदि कनिष्ठा उगली के तीसरे पर्व पर वृत्त-चिह्न हो तो जातक चोरी करने की इच्छा तो रखता है, परतु करता नहीं है।

चित्र ४५९—यदि कनिष्ठा उगली के पहले पर्व पर जाल-चिह्न हो तो जातक मन्त्र-विद्या मे प्रवीण होता है परन्तु यदि हाथ मे अन्य अशुभ लक्षण हो तो उस स्थिति मे ऐसे चिह्न वाला जातक मिथ्यावादी, तथा दुर्गुणी होता है, परन्तु अन्य लक्षणो के शुभ होने पर भी जातक लम्पट, कटुभाषी, रोग तथा दुष्टों के साथ रहने वाला होता है।
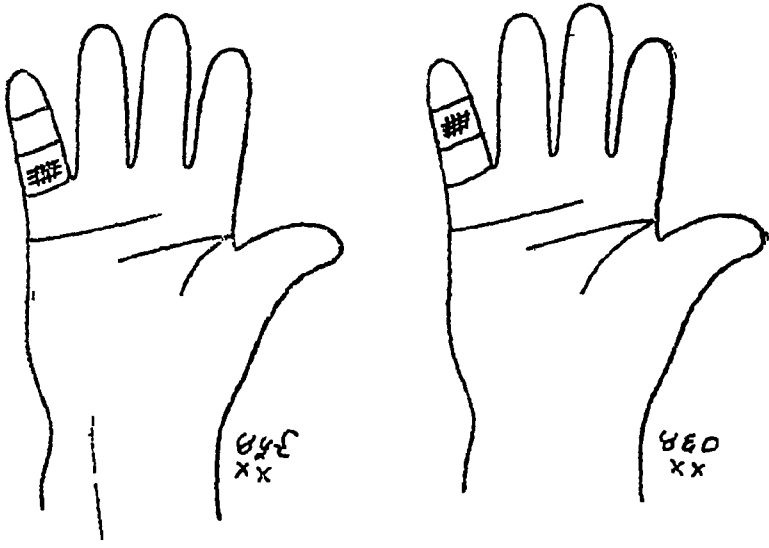
चित्र ४६०—यदि कनिष्ठा उगली के दूसरे पर्व पर जाल-चिह्न हो तो जातक अपने व्यवसाय को ढग से नही करता, जिसके कारण उसे जेल-यात्रा भी करनी पड़ सकती है। कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसे चिह्न वाले जातक को किसी दुर्घटना का शिकार होकर मृत्यु का ग्रास भी बनना पड़ता है।

चित्र ४६१—यदि कनिष्ठा उगली के तीसरे पर्व पर जाल-चिह्न हो तो उस जातक के अत्यन्त मूर्ख होने का लक्षण समझना चाहिए।

कुछ विद्वानों के मतानुसार कनिष्ठा उगली के किसी भी पर्व पर जाल-चिह्न के होने से जातक को किसी भारी दुर्घटना का शिकार होना पड़ता है, जिसमें उसकी मृत्यु तक हो जाने की सम्भावना रहती है। यदि किसी स्त्री की कनिष्ठा उंगली पर जाल-चिह्न हो तो व्यभिचारिणी होती है और गर्भपात कराती है।
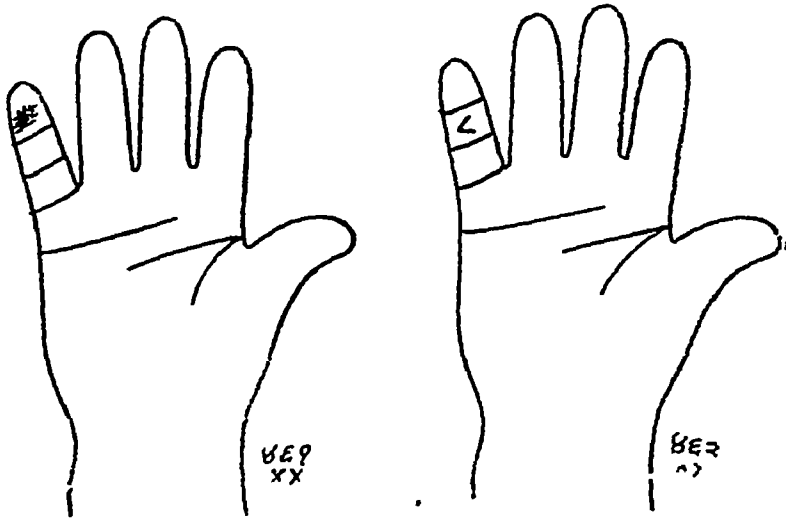
चित्र ४६२—यदि कनिष्ठा उगली के दूसरे पर्व पर कोण-चिह्न हो तो जातक उदार, अपव्ययी, जुआरी, शकालु तथा व्यभिचारी होता है। ऐसा व्यक्ति वेश्यागामी भी होता है और उसे बदनामी का शिकार भी होना पड़ता है। यदि उक्त कोण-चिह्न कनिष्ठा उगली के दूसरे पर्व के मध्यभाग मे न होकर थोडा हटकर हो, तो जातक व्यभिचारी नही होता अपितु किसी के साथ अन्तर्जातीय विवाह कर लेता है।

चित्र ४६३—यदि कनिष्ठा उगली के पहले तथा दूसरे—दोनों पर्वों पर कोण-चिह्न हो तो जातक सत्यवादी, सुन्दर, गुणवान, जितेन्द्रिय, यशस्वी, प्रसन्नचित्त तथा दो स्त्रियो का पति होता है।

चित्र ४६४—यदि कनिष्ठा उगली के पहले पर्व पर दो समकोण चिह्न हो तो जातक बन्धु-बान्धवो से पीडित, चोर, अपराधी तथा न्यायालय से दण्डित होने वाला होता है, परन्तु दण्ड भोगने के उप-

रान्त उसकी वृत्तिया सात्विक हो जाती है, तब वह व्यवसाय द्वारा प्रचुर सम्पति उपार्जित करता है और सुन्दर मकान आदि का निर्माण कराता है। ऐसे व्यक्ति की सम्पत्ति का उपभोग उसकी सन्तानो के अतिरिक्त कोई अन्य व्यक्ति ही करता है। प्रौढावस्था मे ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति ईश्वर भक्त हो जाता है।
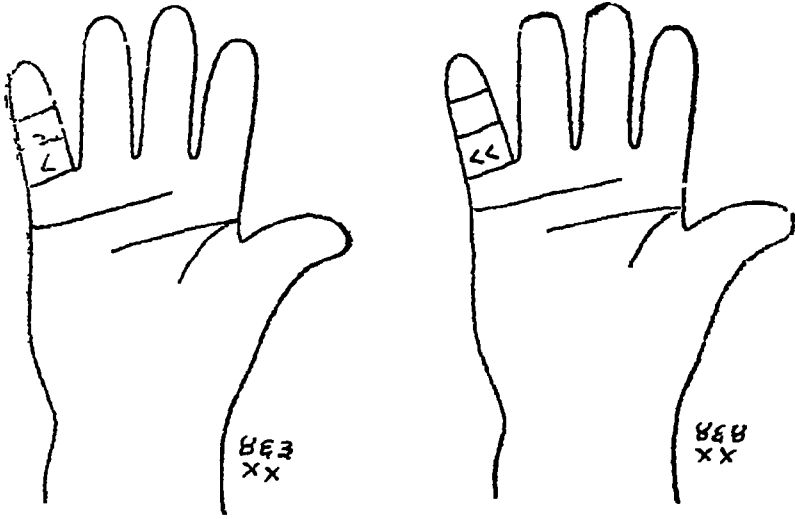
यदि किसी स्त्री के हाथ मे ऐसा चिह्न हो तो वह विदुषी, सच्चरित्रा, गुणवती तथा गृहलक्ष्मी होती है।

चित्र ४६५—यदि पूर्वोक्त कोणो का मुख विपरीत दिशा की ओर हो तो उनका फल भी विपरीत होगा—ऐसा समझना चाहिए।

वृहद् चतुष्कोण में विविध-चिन्हों का प्रभाव

मस्तक-रेखा तथा हृदय-रेखा के मध्यवर्ती क्षेत्र को वृहद् चतुष्कोण कहा जाता है। उक्त दोनो रेखाओं की पारस्परिक दूरी अथवा समीपता के कारण यह क्षेत्र आकार मे छोटा-बडा होता है। वृहद्-चतुष्कोण के छोटे-बडे आकार का जातक के जीवन पर क्या प्रभाव पडता है, इस सम्बन्ध में 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के प्रथम खण्ड 'आपका हाथ' में विस्तृत प्रकाश डाला जा चुका है। वृहद् चतुष्कोण पर पाई जाने वाली छोटी-बड़ी रेखाओं के फलादेश का वर्णन 'प्रभाव-रेखाएं' नामक खण्ड में हुआ है। प्रस्तुत प्रकरण मे वृहद् चतुष्कोण मे पाये जाने वाले विविध हस्त-चिन्हों के प्रभाव का पाश्चात्य मतानुसार वर्णन किया जा रहा है। पाठको की सुविधा के लिए वृहद्-चतुष्कोणस्थ हस्त-चिह्नों के स्वरूप के परिचायक रेखा-चित्र भी प्रत्येक विवरण के साथ ही दे दिये गए हैं।

चित्र ४६६—यदि वृहद् चतुष्कोण के भीतर सुन्दर तथा निर्दोष वर्ग-चिह्न हो तो जातक दयालु स्वभाव का परन्तु साथ ही अत्यन्त क्रोधी भी होता है। यदि उक्त चिह्न भाग्य-रेखा अथवा सूर्य-रेखा का स्पर्श कर रहा हो तो वह उस रेखा के दोष को भी दूर कर देता है। ऐसा चिह्न किसी स्त्री के हाथ मे हो तो वह प्रसव के समय के सकट को दूर देता है।
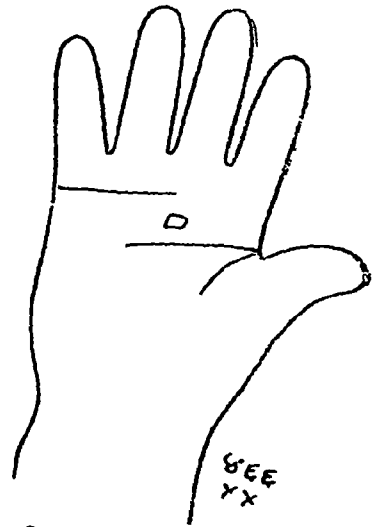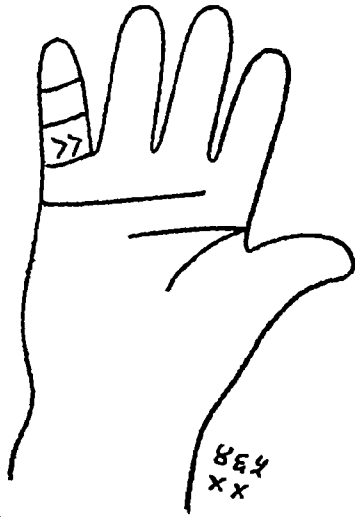
चित्र ४६७—यदि वृहद् चतुष्कोण के भीतर स्पष्ट त्रिकोण-चिह्न हो तो ऐसे जातक की वैज्ञानिक विषयों के अध्ययन की ओर प्रवृत्ति होती है।
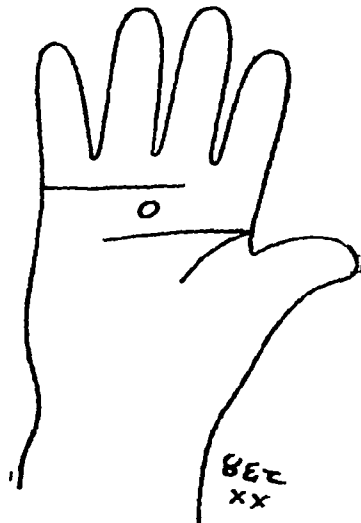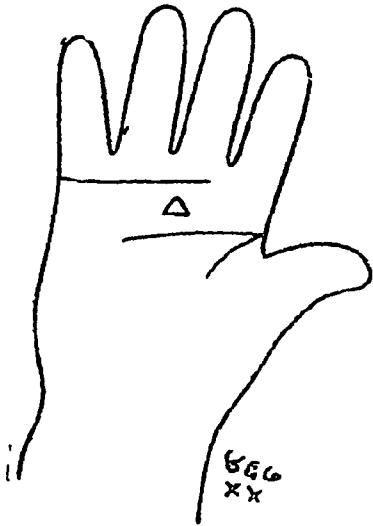
चित्र ४६८—यदि वृहद् चतुष्कोण के भीतर वृत्त-चिन्ह हो तो उसे जातक के लिए नेत्र-रोग का लक्षण समझना चाहिए।

चित्र ४६९—यदि वृहद् चतुष्कोण के भीतर तीन वृत्त-चिन्ह एक दूसरे का स्पर्श करते हुए हों तो ऐसे चिन्ह वाले जातक मृगी-रोग का शिकार होता है।
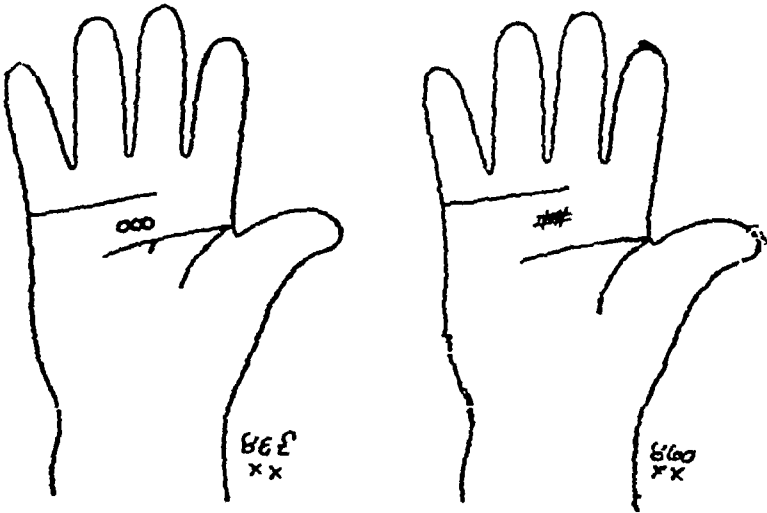
चित्र ४७०—यदि वृहद् चतुष्कोण अत्यधिक चौडा हो, मगल का क्षेत्र उन्नत हो तथा वृहद् चतुष्कोण मे जाल-चिन्ह हो तो जातक पागलों का भांति बकता तथा अधिक बोलता है। सामान्य रूप से यदि वृहद् चतुष्कोण मे जाल-चिन्ह हो तो जातक सनकी तथा दरिद्री होता है। वह अर्द्ध-विक्षिप्त सा दिखाई देता है।

चित्र ४७१—यदि चतुष्कोण के भीतर लाल विन्दु-चिन्ह हो तथा हाथ मे अन्य अशुभ लक्षण भी हो तो जातक किसी की हत्या करता है अथवा उसे गहरी चोट पहुचाता है। यदि जीवन-रेखा अशुभ हो

तो उस स्थिति मे जातक को किसी के द्वारा स्वयं गहरी चोट पहुंचती है अथवा जातक की हत्या की जाती है। यदि श्वेत-विन्दु चिन्ह हो तो उसे रोग का लक्षण समझना चाहिए।
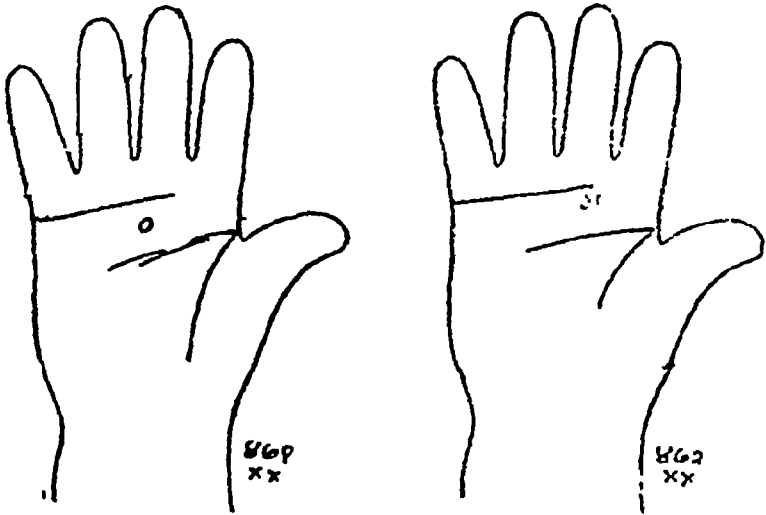
चित्र ४७२—यदि वृहद् चतुष्कोण मे शनि-क्षेत्र के नीचे नक्षत्र-चिन्ह हो तो जातक के भाग्य की विशेष उन्नति होती है और उसे अपने व्यवसाय अथवा नौकरी आदि मे सफलता प्राप्त होती है।

चित्र ४७३—यदि वृहद् चतुष्कोण के भीतर सूर्य-क्षेत्र के नीचे नक्षत्र-चिन्ह हो तो जातक को साहित्य अथवा कला के क्षेत्र में अत्यधिक यश प्राप्त होता है तथा आर्थिक क्षेत्र में भी विशेष सफलता प्राप्त होती है।

चित्र ४७४—यदि वृहद् चतुष्कोण के भीतर बुध-क्षेत्र के नीचे नक्षत्र-चिन्ह हो तो जातक को व्यवसाय, विज्ञान अथवा इजीनियरी आदि के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त होती है।
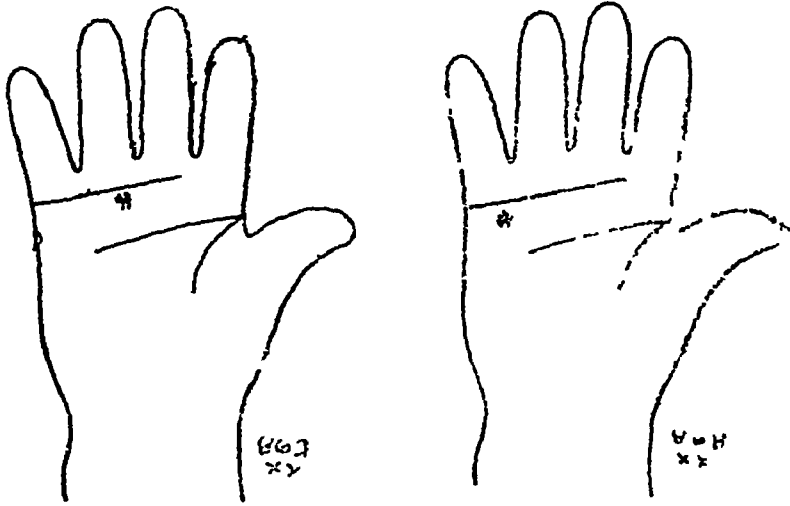
चित्र ४७५—यदि वृहद् चतुष्कोण के भीतर दाए हाथ मे भाग्य-रेखा के दाईं ओर अथवा बाए हाथ मे भाग्य-रेखा के बाईं ओर नक्षत्र-

चिन्ह हो तथा हृदय-रेखा टूटी हुई हो तो जातक का किसी स्त्री (यदि जातक स्त्री हो तो पुरुष) के साथ अत्यधिक गहरा प्रेम-सम्बन्ध होता है।
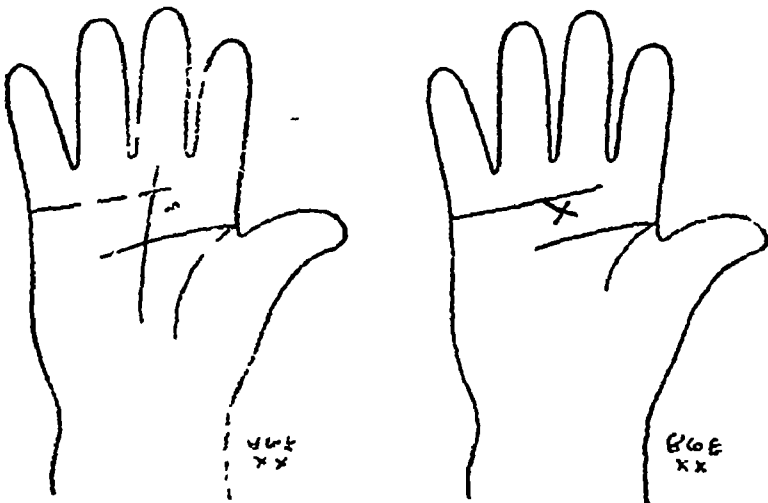
चित्र ४७६—यदि वृहद् चतुष्कोण के भीतर इस प्रकार का क्रास-चिह्न हो कि वह हृदय-रेखा का स्पर्श कर रहा हो तो ऐसे चिन्ह वाला जातक यदि पुरुष है तो उस पर किसी स्त्री का और यदि स्त्री है तो उस पर किसी पुरुष का विशेष प्रभाव रहता है, परन्तु उक्त क्रास-चिन्ह की कोई रेखा सूर्य-रेखा का स्पर्श न करे अन्यथा फल अशुभ हो जाएगा।

चित्र ४७७—यदि वृहद् चतुष्कोण के भीतर क्रास-चिह्न की कोई रेखा मस्तक-रेखा का स्पर्श कर रही हो तो ऐसा जातक अन्य स्त्री (अथवा पुरुष) के ऊपर अपना विशेष प्रभाव डालता है। यहा भी क्रास-चिह्न की कोई शाखा सूर्य-रेखा का स्पर्श करती हुई न हो अन्यथा फल अशुभ हो जायेगा।
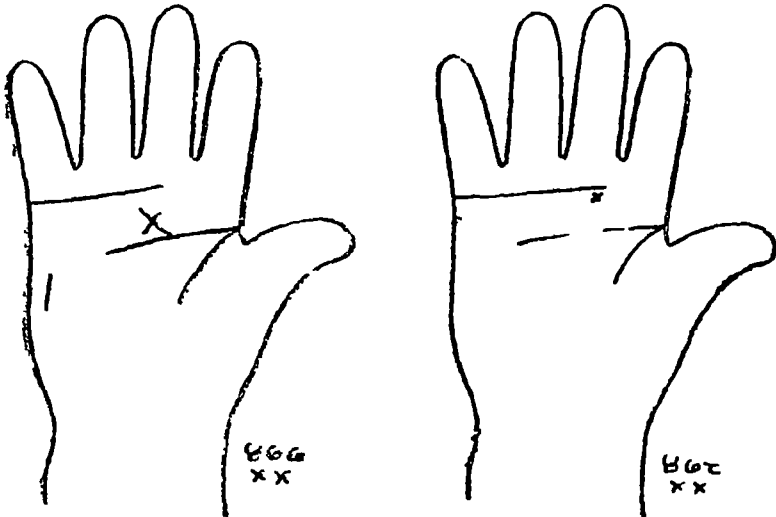
चित्र ४७८—यदि वृहद् चतुष्कोण के भीतर शनि-क्षेत्र के नीचे छोटा-सा स्पष्ट क्रास-चिह्न हो तो जातक गुप्त विद्याओ (ज्योतिष, तन्त्र, मन्त्र, योग आदि) का ज्ञाता होता है। यदि अतीन्द्रिय ज्ञान-रेखा भी जातक के हाथ में स्पष्ट हो तो उसे इस क्षेत्र मे अधिक सफलता प्राप्त होती है।

चित्र ४७९—यदि वृहद् चतुष्कोणस्थ क्रास-चिन्ह भाग्य-रेखा का स्पर्श कर रहा हो तो जातक धार्मिक स्वभाव का होता है और धार्मिक कार्यो द्वारा उसकी भाग्य-वृद्धि होती है।

वृहद् त्रिकोण में विविध-चिह्नों का प्रभाव

वृहद् त्रिकोण की रचना कई प्रकार से होती है, इसके सम्बन्ध में 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के 'आपका हाथ' शीर्षक प्रथम खण्ड में विस्तार पूर्वक बताया जा चुका है।

प्रस्तुत प्रकरण मे पाश्चात्य मतानुसार वृहद् त्रिकोणस्थ विविध हस्त-चिह्नों के प्रभाव का सचित्र वर्णन किया जा रहा है। वृहद् त्रिकोण मे पाई जाने वालो छोटी-बड़ी रेखा का वर्णन प्रभाव-रेखाएं नामक मे विस्तारपूर्वक किया जा चुका है।
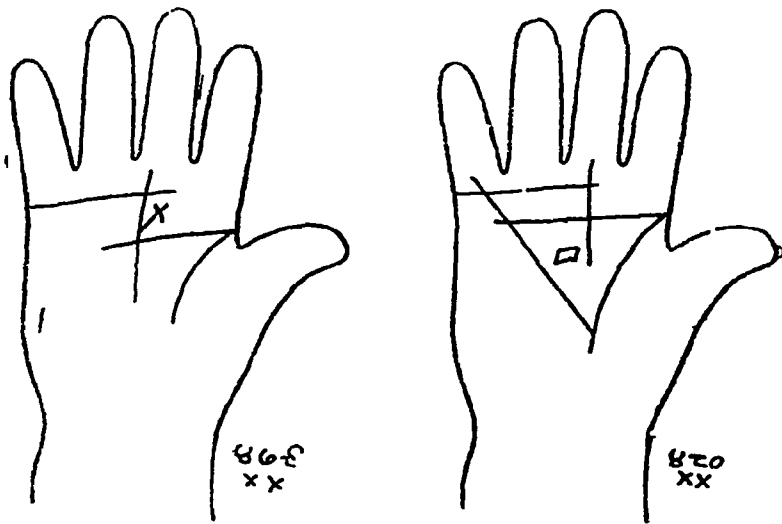
चित्र ४८०—यदि वृहद् त्रिकोण के भीतर चतुष्कोण (वर्ग) चिह्न हो और वह किसी रेखा का स्पर्श न करता हो तो वह जातक के लिए खतरे एवं कठिनाइयो का सूचक होता है।

चित्र ४८१—यदि वृहद् त्रिकोण के भीतर वृत्त-चिह्न हो तो पुरुष जातक को किसी स्त्री के कारण और स्त्री जातक को किसी पुरुष के कारण कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं। यदि चन्द्र-क्षेत्र उन्नत भी हो तो जातक चिडचिड़े स्वभाव का तथा झगड़ालू प्रकृति का होता है।
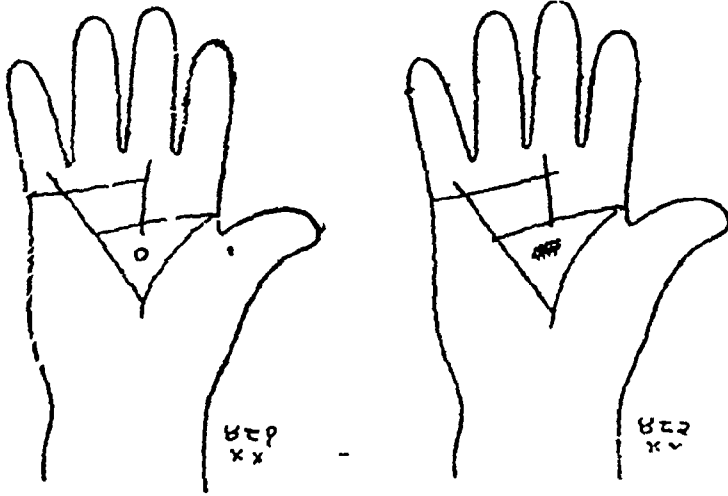
चित्र ४८२—यदि वृहद् त्रिकोण के भीतर जाल-चिह्न हो तथा हाथ मे अन्य लक्षण भी अशुभ हो तो जातक की वहुत ही अपमानजनक मृत्यु होती है। परन्तु यदि हाथ मे अन्य लक्षण शुभ हो तो जातक के वहुत से गुप्त-शत्रु होते है।

चित्र ४८३—यदि किसी स्त्री के हाथ मे वृहद्-त्रिकोण के भीतर लाल विन्दु चिन्ह हो तो वह उसके गर्भवती होने का सूचक होता है। यदि श्वेत विन्दु-चिन्ह हो तो जातक को रक्ताल्पता, मूर्च्छा आदि रोग होते है।
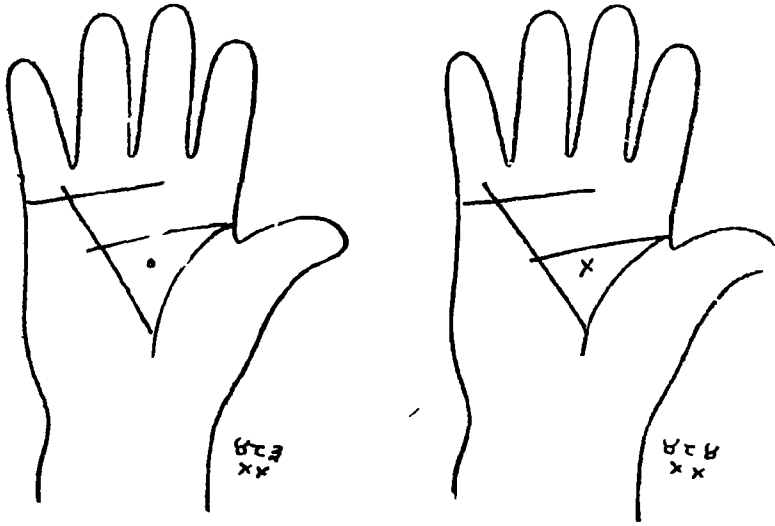
चित्र ४८४—यदि वृहद् त्रिकोण के मध्य भाग मे क्रास-चिह्न हो तो जातक झगडालू प्रकृति का होता है तथा अन्य लोगो से दुश्मनी करके अपने ही लिए कठिनाइया उत्पन्न कर लेता है। यदि हाथ में अन्य लक्षण अशुभ हो तो ऐसे चिह्न वाला जातक किसी की हत्या भी कर सकता है।

चित्र ४८५—यदि वृहद् त्रिकोण के भीतर कई क्रास-चिह्न हो तो जातक के भाग्य मे रुकावट आती है। ऐसे चिह्न वाला जातक दुर्भाग्य, रोग, कठिनाइयों तथा चिन्ताओ का शिकार बना रहता है।

चित्र ४८६—यदि स्वास्थ्य-रेखा तथा जीवन-रेखा के मिलन-स्थल के समीप वृहद् त्रिकोण के भीतर क्रास-चिह्न हो तो जातक को किसी मुकद्दमे मे फसकर अपनी मान-प्रतिष्ठा को गवाना पडता है।
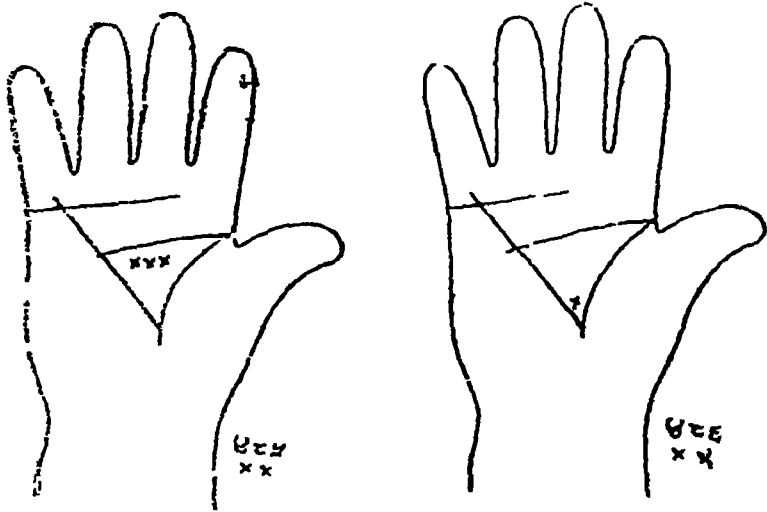
चित्र ४८७—यदि वृहद् त्रिकोण के भीतर एक हाथ मे नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक को अत्यधिक परिश्रम करने पर ही धन की प्राप्ति होती है। यदि दोनो हाथो के वृहद् त्रिकोण मे नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक की किसी शस्त्र अथवा दुर्घटना द्वारा मृत्यु होती है। दोनो हाथो के वृहद्-त्रिकोण मे नक्षत्र-चिह्न का होना अत्यन्त अशुभ लक्षण समझना चाहिए।

●

मणिबन्ध पर विविध-चिह्नों का प्रभाव

मणिबन्ध की रेखाओ के विषय मे 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के 'प्रभाव-रेखाए' शीर्षक खण्ड में विस्तारपूर्वक लिखा जा चुका है। इस प्रकरण मे पाश्चात्यमतानुसार मणिबन्धस्थ हस्त-चिह्नों के प्रभाव का सचित्र वर्णन किया जा रहा है। हस्त-परीक्षक को चाहिए कि वह मणिबन्धस्थ हस्त-चिह्नों पर विचार करने से पूर्व हाथ की बनावट तथा मुख्य रेखाओ की स्थिति आदि सभी बातो को ध्यान मे अवश्य रक्खे।
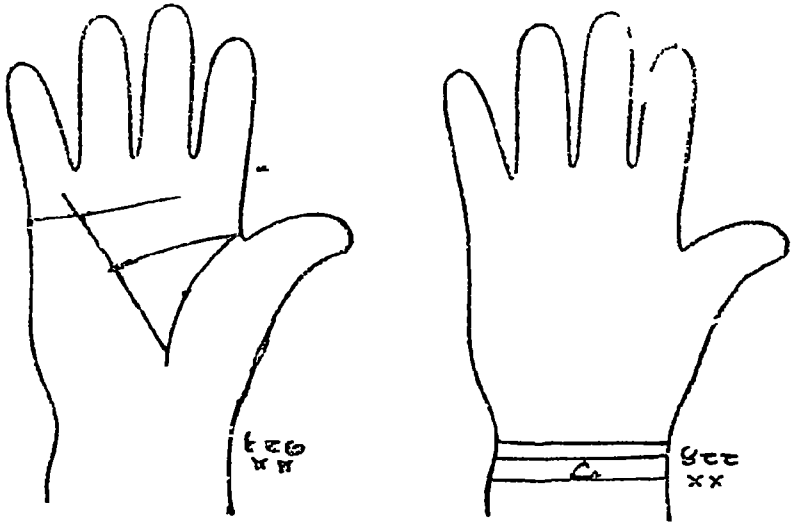
चित्र ४८८—यदि मणिबन्ध की रेखाओ के भीतर त्रिकोण-चिह्न हो तो जातक को वृद्धावस्था मे यश, मान तथा धन की प्राप्ति

होती है । यह चिह्न मणिवन्ध पर कही भी क्यो न हो जातक के सम्मान एवं प्रतिष्ठा को वढाने वाला सिद्ध होता है ।

चित्र ४८९—यदि मणिवन्ध की तीनों रेखाओ पर कोण-चिह्न हो तो जातक को वृद्धावस्था मे पराये धन से सुख एव सम्मान की प्राप्ति होती है ।
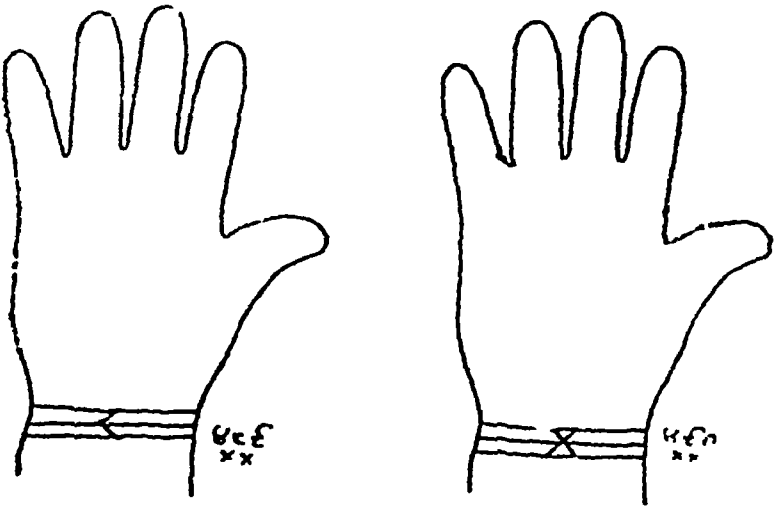
चित्र ४९०—यदि मणिवन्ध-रेखाओ पर क्रास-चिह्न हो तो जातक को अनेक कठिनाइयो का सामना करना पडता है ।

चित्र ४९१—यदि मणिवन्ध की पहली रेखा पर क्रास-चिह्न हो तो जातक का जीवन सुख-शान्ति पूर्वक व्यतीत होता है । परन्तु यदि क्रास-चिह्न रेखा के मध्यभाग मे हो तो जातक को प्रारभिक जीवन में कठिनाइयों का सामना करना पडता है और वाद का जीवन सुख-शान्ति पूर्वक व्यतीत होता है ।
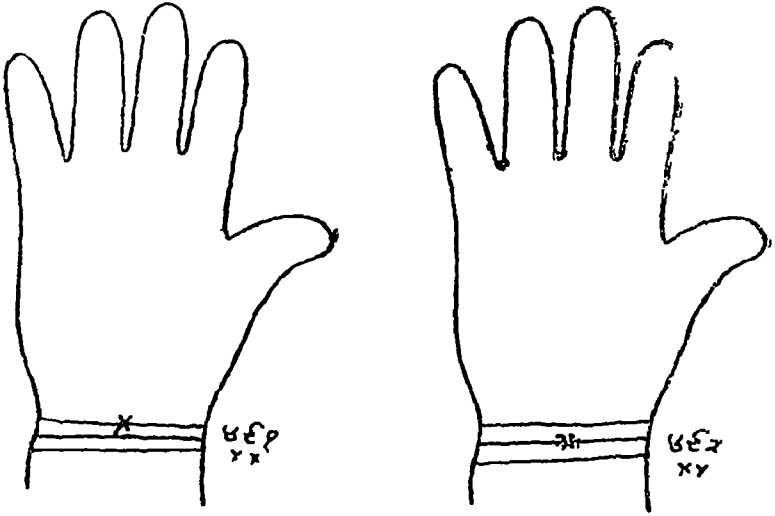
चित्र ४६२—यदि मणिबन्ध-रेखाओ मे से किसी एक पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक का स्वास्थ्य अच्छा रहता है। वह परिश्रमी होता है तथा पराये धन को भी प्राप्त करता है। यदि क्रास-चिह्न मणिबन्ध की नीचे वाली रेखा पर हो तो उसे जीवन के अन्तिम भाग मे धन की प्राप्ति तथा किसी व्यवसाय मे लाभ होता है।

चित्र ४६३—यदि मणिबन्ध की तीनो रेखाओ पर अनेक द्वीप-चिह्न हो और वे एक-दूसरे से इस प्रकार जुड़े हो कि मणिबन्ध-रेखा यव-माला सी जान पडे तो जातक राजा, मन्त्री, न्यायाधीश, उच्च-पदाधिकारी अथवा महाधनी होता है।

चित्र ४६४—यदि मणिबन्ध की कोई एक ही रेखा उपर्युक्त प्रकार से द्वीप-चिह्न युक्त हो तो जातक अत्यन्त धनी तथा प्रसिद्ध व्यक्ति होता है।
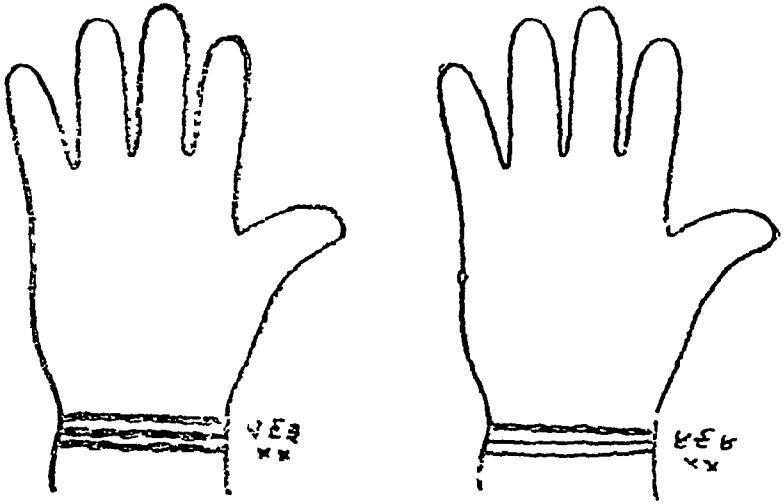
चित्र ४९५—यदि मणिवन्ध के ऊपरी भाग मे भाग्य-रेखा तथा जोवन-रेखा के मध्य स्थान में दो क्रास-चिह्न हो तो जातक मलिन,
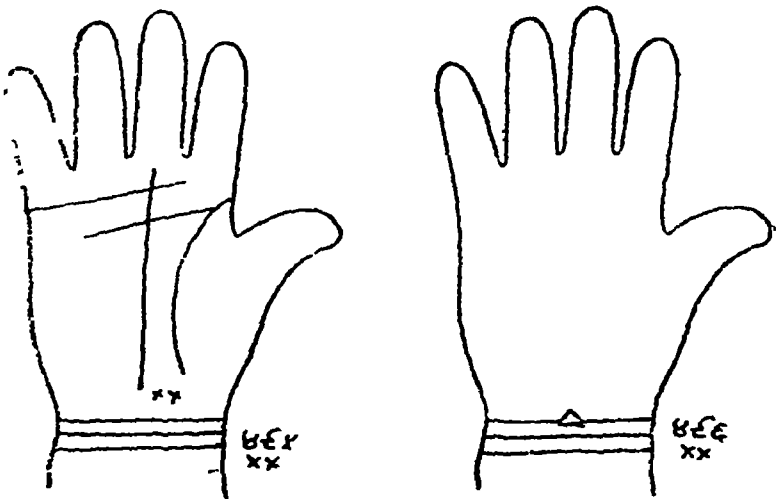
असत्यवादी तथा दुष्ट लोगों की संगति मे बैठने वाला होता है, फिर भी वह धनवान् अवश्य होता है।

चित्र ४९६—यदि मणिबन्ध की पहली रेखा पर त्रिकोण-चिह्न हो और उसकी एक रेखा लम्बी होकर मस्तक-रेखा का स्पर्श कर रही हो तो जातक उत्तराधिकार अथवा वसीयत नामे द्वारा अत्यधिक धन प्राप्त करता है।

चित्र ४९७—यदि मणिबन्ध तथा भाग्य-रेखा के बाईं ओर ठीक मणिबन्ध के ऊपर अथवा मणिबन्ध-रेखा के ऊपर एक क्रास-चिह्न हो तथा भाग्य रेखा बलवान् हो तो जातक अत्यधिक भाग्यशाली एवं प्रतिष्ठित होता है।
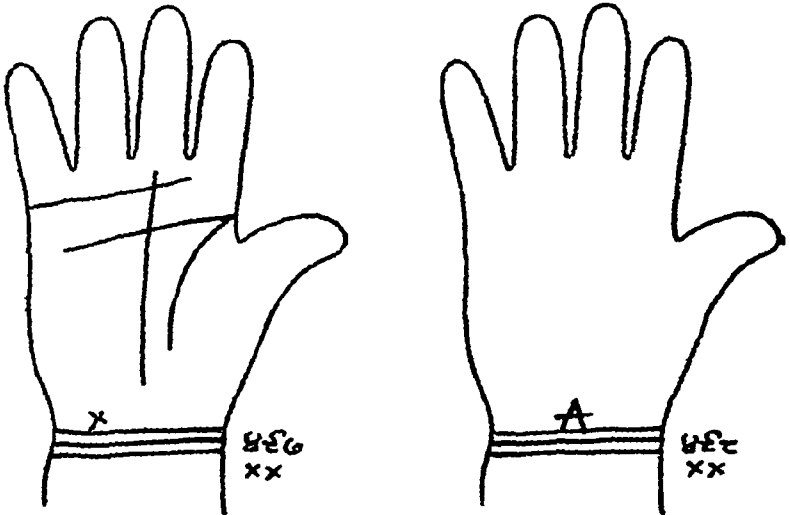
चित्र ४९८—यदि मणिबन्ध पर ऊपर की ओर उठा हुआ तथा किसी अन्य रेखा से कटा हुआ चित्र संख्या ४९८ जैसा त्रिकोण-चिह्न

हो तो जातक अपनी जन्म-भूमि को छोड़कर विदेश मे रहता है। परन्तु वहां भी धन नही कमा पाता। अन्ततः वह किसी धन सम्बन्धी मामले मे फसकर ही मृत्यु को भी प्राप्त करता है।

चित्र ४९९—यदि मणिबन्ध की पहली रेखा पर कोण-चिह्न हो तो जातक वृद्धावस्था मे किसी की विरासत द्वारा धन पाकर भाग्य-शाली बनता है तथा सुख प्राप्त करता है।
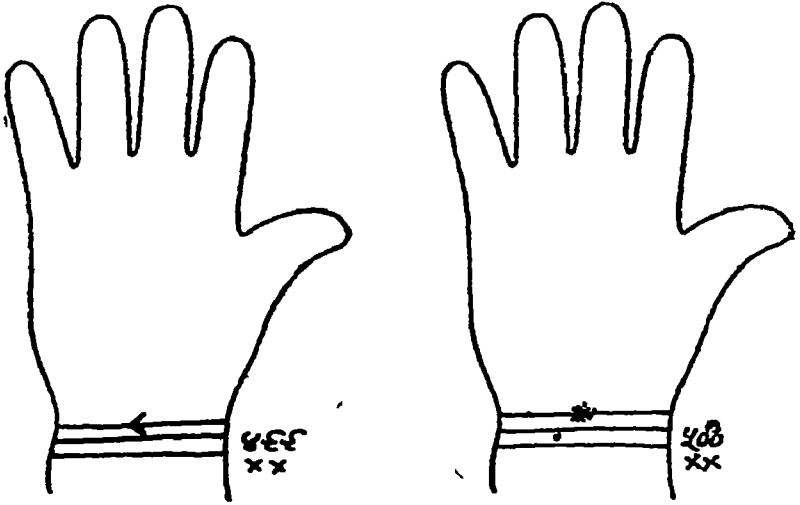
चित्र ५००—यदि मणिबन्ध की पहली रेखा के बीच मे नक्षत्र-चिह्न हो तो भी जातक को विरासत मे धन की प्राप्ति होती है। यदि हाथ के अन्य लक्षण जातक का असंयमी होना प्रकट करते हों तो ऐसे चिह्न वाला जातक वड़ा व्यभिचारी होता है।

चित्र ५०१—यदि मणिबन्ध की पहली रेखा के बीच में त्रिकोण-चिह्न हो तथा उस त्रिकोण के भीतर क्रास-चिह्न भी हो तो जातक को उत्तराधिकार द्वारा धन की प्राप्ति होती है।

×

विभिन्न क्षेत्रों पर ग्रह-चिह्नों का प्रभाव

पाश्चात्य मतानुसार मुख्य ग्रहो की सख्या ७ है और भारतीय मतानुसार ९ है। आधुनिक विद्वानो के अनुसार (१) प्रजापति, (२) वरुण और (३) इन्द्र—सौर मण्डल मे ये तीन नये ग्रह और मिल गए हैं। इस प्रकार ग्रहो की कुल सख्या १२ हो गई है। इस पुस्तक के पहले प्रकरण मे इस सम्बन्ध मे प्रकाश डाला जा चुका है।

उक्त सभी ग्रहो का अपना-अपना एक निश्चित चिह्न है और वह किसी-किसी जातक के हाथ पर प्रत्यक्ष दृष्टिगोचर भी होता है। यद्यपि अधिकाश लोगो के हाथ पर ग्रह चिह्न दिखाई नही देते, परन्तु जिन व्यक्तियो के हाथो पर ग्रह-चिह्न स्पष्ट दिखाई देते है, उनके जीवन पर वे अपना व्यापक प्रभाव प्रदर्शित करते हैं।

विभिन्न ग्रहो के अपने कौन-कौन से चिह्न होते है—इसे चित्र सख्या ५०२ मे प्रदर्शित किया गया है।

राहु और केतु—ये दोनो ही ग्रह एक ही शरीर के दो भाग माने गये हैं। मानव-जीवन पर इनका प्रभाव भी प्राय एक जैसा ही पड़ता है। इन दोनो ग्रहो का चिह्न भी सम्मिलित रूप से एक ही माना गया है। इस प्रकार कुल ग्रह-चिह्नो की सख्या १२ है।

जिस प्रकार समस्त ग्रहो की सख्या १२ है, उसी प्रकार हथेली को भी १२ ग्रहो मे विभाजित किया गया है। पूर्वोक्त ग्रह-चिह्न अपने-अपने क्षेत्र के स्वामी होते है। यदि ये अपने ही क्षेत्र मे स्पष्ट दिखाई दे, तो इनका प्रभाव अधिक होता है। परन्तु ये सभी ग्रह-चिह्न अपने

वृहस्पति	शनि	सूर्य	बुध
प्रजापति	वरुण	चन्द्र	शुक्र
मंगल	राहु-केतु		इन्द्र

५०२
××

[ग्रह-चिह्नो के विविध रूप]

क्षेत्र को छोड़कर किसी-किसी हाथ मे अन्य ग्रह-क्षेत्रो पर भी स्पष्ट होते हैं। उदाहरण के लिए सूर्य-ग्रह का चिह्न केवल सूर्य-क्षेत्र पर ही दिखाई दे, यह आवश्यक नही है। वह सूर्य-क्षेत्र के अतिरिक्त मंगल बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु, केतु, इन्द्र, वरुण अथवा प्रजापति—इनमें से किसी भी ग्रह-क्षेत्र पर दिखाई दे सकता है।

इस प्रकरण मे पाश्चात्यमतानुसार विभिन्न ग्रह-चिह्नो की विभिन्न क्षेत्रो मे स्थिति और उनके प्रभाव का सचित्र वर्णन किया गया है। हस्त-परीक्षक को चाहिए कि वह इन ग्रह-चिह्नो की सावधानी से परीक्षा करें। इनमें से कुछ के स्वरूप एक-दूसरे से बहुत कुछ मिलते-जुलते है उदाहरणार्थ बुध, शुक्र और मगल के ग्रह-चिह्नो की आकृति मे थोड़ा-सा ही अन्तर होता है। बृहस्पति तथा शनि-ग्रह के चिह्नों के अन्तर को भी यदि भली-भाति ध्यान में न रखा जाए तो भूल होने की सम्भावना रह सकती है। किसी-किसी हस्त-चिह्न तथा ग्रह-चिह्न की आकृति मे भी बहुत कुछ साम्य पाया जाता है। उदाहरणार्थ हस्त-चिह्न, त्रिशूल और ग्रह-चिह्न हर्षल, हस्त,चिह्न अर्द्धचन्द्र और ग्रह-चिह्न चन्द्र तथा हस्त-चिह्न 'ध्वजा' और ग्रह-चिह्न इन्द्र के स्वरूप मे बहुत कम अन्तर होता है। अस्तु हस्त-परीक्षक को हस्त-चिह्न और ग्रह-चिह्नो के साम्य तथा अन्तर पर पूरा-पूरा ध्यान देना आवश्यक है। इन चिह्नो का निरीक्षण सूक्ष्मदर्शक यन्त्र अथवा आतशी शीशे की सहायता से करना आवश्यक है, ताकि अन्तर का स्पष्ट पता चल सके।

ग्रह-चिह्नो की विभिन्न क्षेत्रो मे अवस्थिति के प्रभाव को निम्नानुसार समझना चाहिए—

'गुरु-चिह्न' का प्रभाव

चित्र ५०३—यदि गुरु क्षेत्र पर 'गुरु-चिह्न' हो तो यह जातक के लिए अत्यन्त शुभ-फलदायक होता है। ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति परो-

पकारी, दानी, दयालु, विनम्र, धनी, यशस्वी, नीतिज्ञ, धर्मात्मा, न्यायी, उच्चपदाधिकारी, गुणवान् तथा विद्वान् होता है। परन्तु ऐसे चिह्न वाले लोग आत्म प्रशंसक भी होते है। वे काम कम करते है और बातें ज्यादा बनाते है।
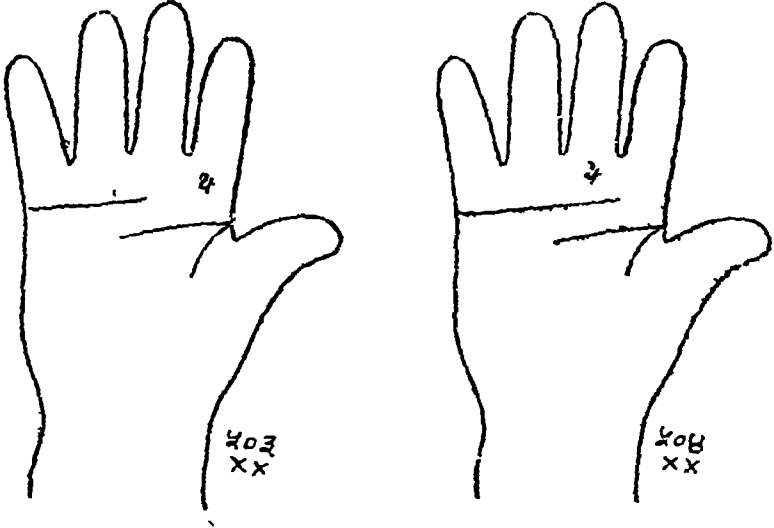
चित्र ५०४—यदि शनि-क्षेत्र पर गुरु-चिह्न हो तो जातक विद्वान्, पराक्रमी, भाग्यवान्, साहित्यकार, यशस्वी, स्वस्थ तथा जमीन-जायदाद का मालिक होता है। वह दार्शनिक तथा योगाभ्यासी भी हो सकता है। यदि शनि-क्षेत्र निम्न हो, तो ऐसे चिन्ह वाला जातक गृह-त्यागी, एकान्त सेवी, निराश तथा सन्यासी प्रवृत्ति का होता है।

चित्र ५०५—यदि सूर्य-क्षेत्र पर गुरु-चिन्ह हो तो जातक पराक्रमी, वाक् शक्ति सम्पन्न, गणितज्ञ, विद्याध्ययन मे निरत, परोपकारी, यशस्वी, कलाकार, प्रतिभाशाली कवि अथवा लेखक, उच्चपदाधिकारी, लोक-प्रिय, सर्वगुण सम्पन्न, स्वस्थ तथा असाधारण रूप से समर्थ मन्त्री, राजदूत आदि होता है।
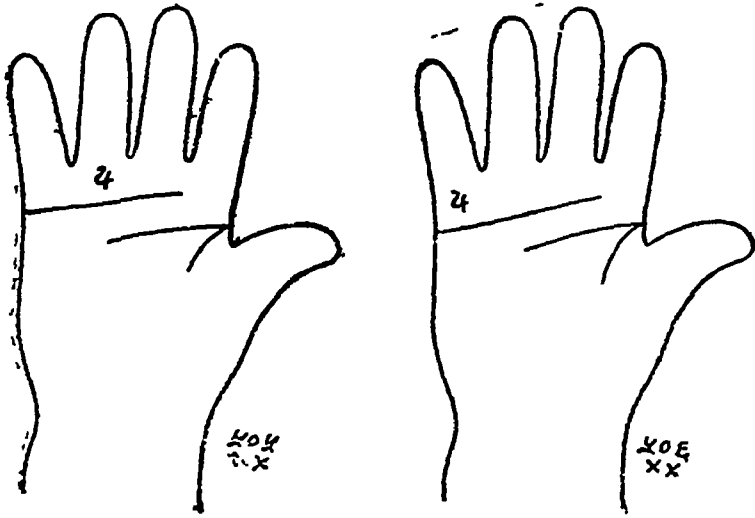
यदि सूर्य-क्षेत्र निम्न हो तो जातक घमण्डी, क्रोधी, व्यर्थ की बातें करने वाला तथा उपर्युक्त सद्‌गुणो को न्यून मात्रा मे प्राप्त करने वाला होता है।

चित्र ५०६—यदि बुध-क्षेत्र पर गुरु-चिन्ह हो तो जातक कुशल व्यवसायी, प्रतिष्ठित, कलाकार, वैज्ञानिक, मधुरभाषी, सगीतज्ञ, राजनीतिज्ञ तथा आध्यात्मिक-शक्ति-सम्पन्न होता है। इसकी पत्नी भी गुणवती, साहित्य रचना मे निपुण एव लोक-सेविका होती है। यदि बुधक्षेत्र निम्न हो तो जातक अस्थिर-प्रकृति, चचल, चोर, धूर्त, व्यसनी तथा पैत्रिक सम्पत्ति को नष्ट करने वाला होता है।

चित्र ५०७—यदि प्रथम मगल-क्षेत्र पर गुरु-चिन्ह हो तो जातक शत्रुजयी, न्यायाधीश, सैनापति, डाक्टर अथवा राजदूत होता है। वह अपने भाई-बन्धुओ को वश मे रखता है। परन्तु यदि प्रथम मगल-क्षेत्र निम्न हो तो जातक शारीरिक शक्ति से हीन, कुतर्की, झगडालू तथा धर्म-विमुख होता है।
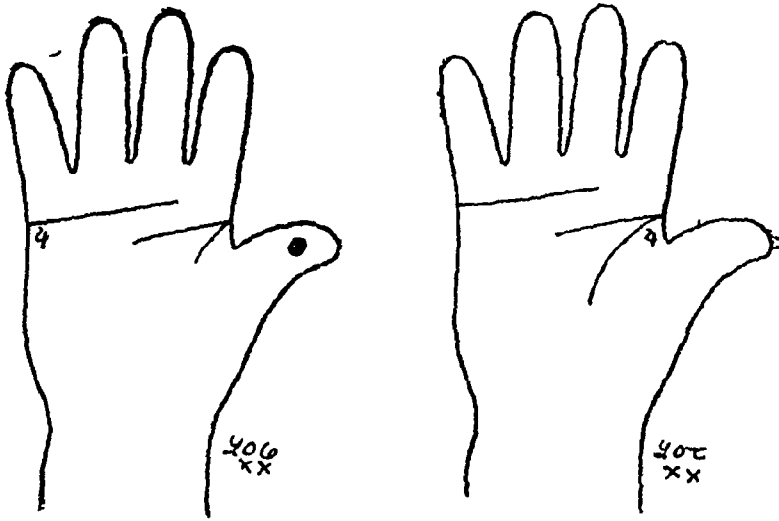
चित्र ५०८—यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र पर गुरु-चिन्ह हो तोउसे अशुभ सूचक समझना चाहिए। ऐसा जातक सदैव रोगी बना रहता है। वह मानसिक चिन्ताओ से ग्रस्त, उद्यमहीन तथा निरुत्साही होता है। यदि द्वितीय-मगल क्षेत्र निम्न हो तो यह चिह्न और भी अधिक अशुभ फल देता है।

चित्र ५०९—यदि शुक्र-क्षेत्र पर गुरु-चिह्न हो तो जातक उच्चपद पाने के लिए कठिन परिश्रम करता है। ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति विद्वान्, शास्त्रार्थ अथवा बहस करने वाला, सगीतज्ञ, स्त्रियों को आकर्षित करने वाला, खुशामद-पसद तथा आत्म-प्रशसक होता है। यदि शुक्र-क्षेत्र निम्न हो तो जातक विषयी तथा व्यभिचारी होता है, जिसके कारण वह अपयश प्राप्त करता है।

चित्र ५१०—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर गुरु-चिह्न हो तो जातक स्त्री-पुत्र, धन, वाहन, ऐश्वर्य आदि के सुख से सम्पन्न, शास्त्रज्ञ कलाकार, मधुर-

भाषी, धर्मात्मा, परोपकारी तथा विद्वान् होता है। यदि चन्द्र-क्षेत्र निम्न हो तो ऐसे चिह्न वाला जातक कामी, अहंकारी, चरित्रहीन तथा निर्लज्ज होता है।
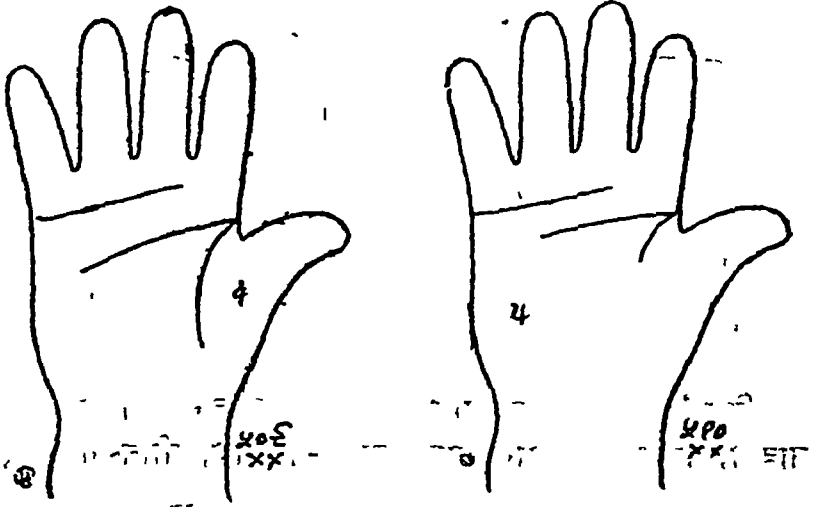
चित्र ५११—यदि राहु-क्षेत्र पर गुरु-चिन्ह हो तो ज़ातक भाग्यवान, मन्त्र शास्त्र का ज्ञाता, धनवान, ज्ञानी, सर्व-प्रिय तथा शुभ गुणो से युक्त होता है। यदि राहु-क्षेत्र निम्न हो तो जातक मन्द-बुद्धि, नास्तिक, कपटी, एकान्त सेवी, शान्त तथा धर्म परिवर्तन मे रुचि रखने वाला होता है।

चित्र ५१२—यदि केतु-क्षेत्र पर गुरु-चिन्ह हो तो जातक का भाग्योंदय वीस वर्ष की आयु के वाद होता है और वह किसी उच्चपद को प्राप्त करता है। ऐसे चिन्ह वाला व्यक्ति परोपकारी, धर्मात्मा, उदार, दानी, धनी, परन्तु वायु रोग से पीडित रहता है। यदि केतु-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक नीच कर्म करने वाला, निर्धन, दुखी, अपयशी तथा पराये आश्रय में जीवन व्यतीत करने वाला होता है।
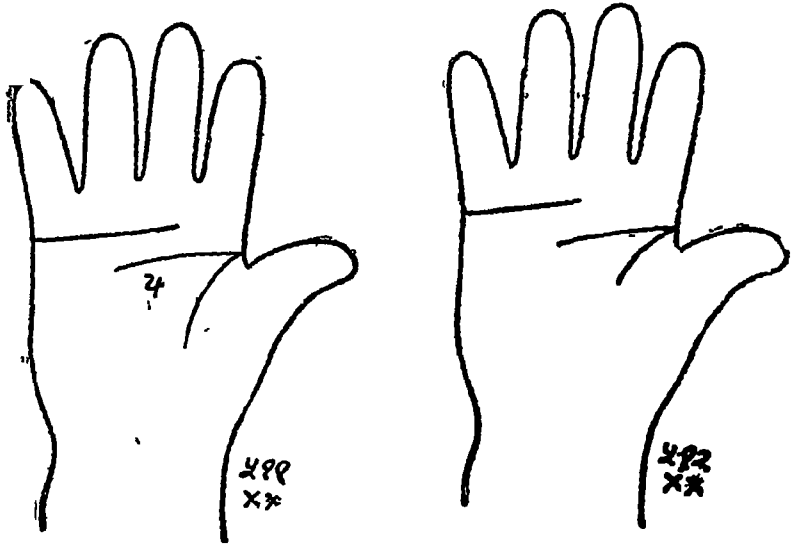
चित्र ५१३—यदि प्रजापति-क्षेत्र पर गुरु-चिन्ह हो तो जातक साहसी, शत्रुंजयी, धैर्यवान्, निडर, कुशल-प्रशासक, नीति-निपुण, शूर-

वीर तथा उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है। यदि प्रजापति-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक डरपोक, शेखी वघारने वाला, धोखेवाज, अविश्वासो तथा अनियमित जीवन व्यतीत करने वाला होता है।
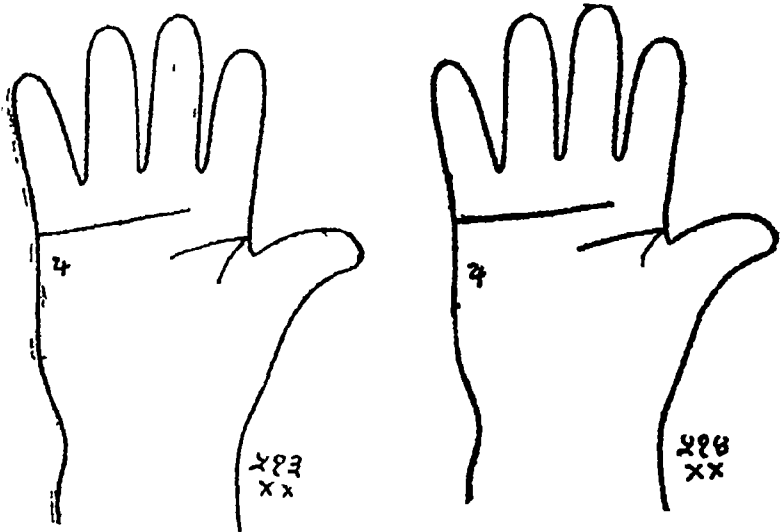
चित्र ५१४—यदि वरुण-क्षेत्र पर गुरु-चिन्ह हो तो जातक अत्यन्त विद्वान्, सुन्दर, ईमानदार, परोपकारी, सत्यवादी, सुलेखक, श्रेष्ठकवि दार्शनिक तथा गुणवान होता है। यदि वरुण-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक ईर्ष्यालू, झगडालू, द्वेषी, निराश, उदास, एकान्त-सेवी तथा अपयशी होता है।

चित्र ५१५-यदि इन्द्र-क्षेत्र पर गुरु-चिन्ह हो तो जातक शुभ कर्म करने वाला, धर्मात्मा, सत्यवादी, ईश्वर-भक्त, परोपकारी, विनम्र, विद्वान, यशस्वी, सर्व-प्रिय तथा कुशाग्र बुद्धि वाला होता है। यदि इन्द्र-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक धर्म-कर्म से हीन, अहकारी तथा सर्वत्र असम्मानित होता है।
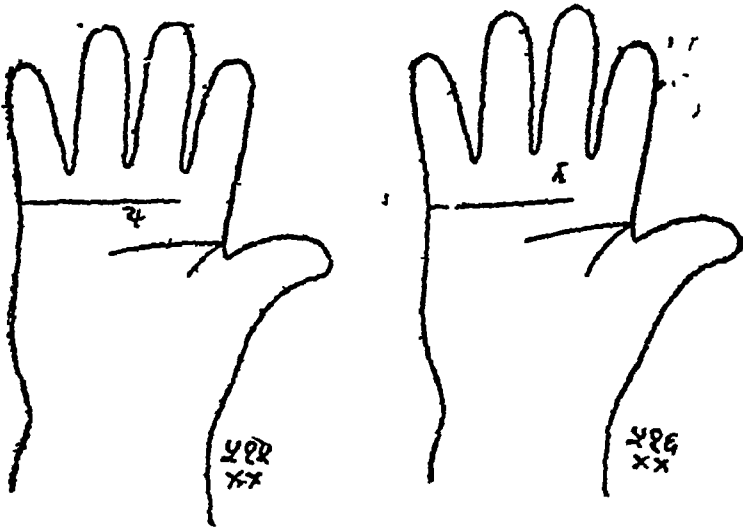
'शनि-चिन्ह' का प्रभाव

चित्र ५१६—यदि 'शनि-क्षेत्र' पर शनि-चिन्ह हो तो जातक गुणवान्, विचारवान्, तीक्ष्ण बुद्धि, बलवान्, नीतिज्ञ, दार्शनिक, गुप्त-विद्याओ का ज्ञाता, धार्मिक तथा जादू-मैस्मेरिज्म आदि का जानकार होता है। उसमे लोगो को अपनी ओर आकर्षित करने की अपूर्व-शक्ति होती है। यदि शनि-क्षेत्र निम्न हो तो जातक ढोगी, ठग, चालाक वहुरूपिया तथा दुर्गुणी होता है।

चित्र ५१७—यदि गुरु-क्षेत्र पर शनि-चिन्ह हो तो जातक विद्वान, गुणवान्, सुशील व मन्त्र-द्रष्टा, प्रबल विचार-शक्ति सम्पन्न, दृढ़प्रतिज्ञ, कर्तव्य-पालक, देश-सेवक, सेवाभावी, तेजस्वी, यशस्वी, शूरवीर, नीतिज्ञ धनवान, गुप्त-विद्याओ का ज्ञाता, परन्तु वायु-रोग से पीडित रहने
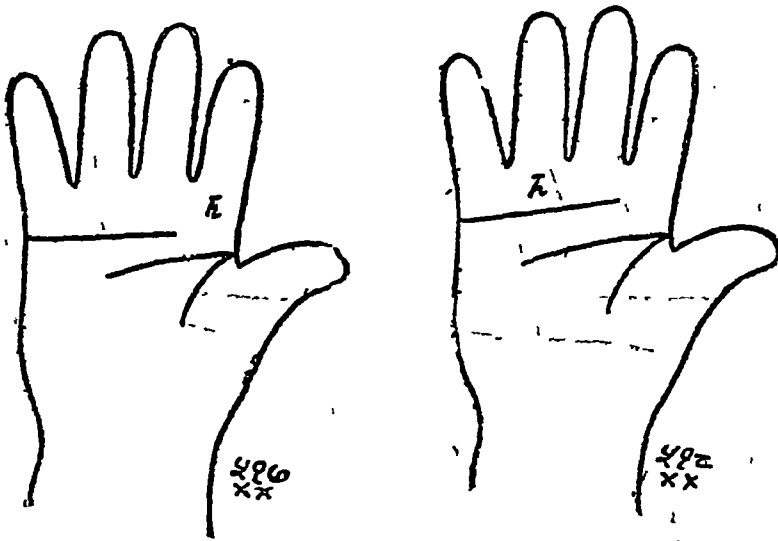
वाला होता है। यदि गुरु-क्षेत्र निम्न हो तो जातक पर-स्त्री गामी, लम्पट, निम्न कर्म करने वाला, चिन्तातुर तथा निर्धन होता है।

किसी स्त्री के हाथ में ऐसा चिन्ह हो तो वह हिस्टीरिया, मृगी, मूर्छा, बेहोशी आदि रोगों से ग्रस्त रहती है।

चित्र ५१८—यदि सूर्य-क्षेत्र पर शनि-चिन्ह हो तो जातक प्रतिभाशाली कवि या लेखक, यशस्वी, कलाकार, धर्मात्मा तथा धनी होता है, परन्तु कुछ विद्वानों के मत से ऐसे चिन्ह वाले व्यक्ति मानसिक-दुर्बलता से ग्रस्त दुःखी तथा निर्धन होते है। यदि सूर्य-क्षेत्र निम्न हो तो जातक अपने भाई-बन्धुओं से कष्ट पाने वाला, दुःखी तथा लुहारगिरी, सुनारी आदि का काम करने वाला होता है।

चित्र ५१९—यदि बुध-क्षेत्र पर शनि-चिन्ह हो तो जातक बुद्धिमान, तार्किक; संगीतज्ञ, कुशल शासक, दयालु, विज्ञानी, ज्ञानी, अनुसंधानकर्ता तथा यशस्वी होता है। यदि बुध-क्षेत्र निम्न हो तो जातक अपना व्यवसाय बदलता-रहता है। वह लोभी, स्वार्थी, भ्रमित-बुद्धि, अहंकारी, धन के मद मे चूर, व्यभिचारी, कामी, कलह-प्रिय तथा चंचल चित्त वाला होता है।
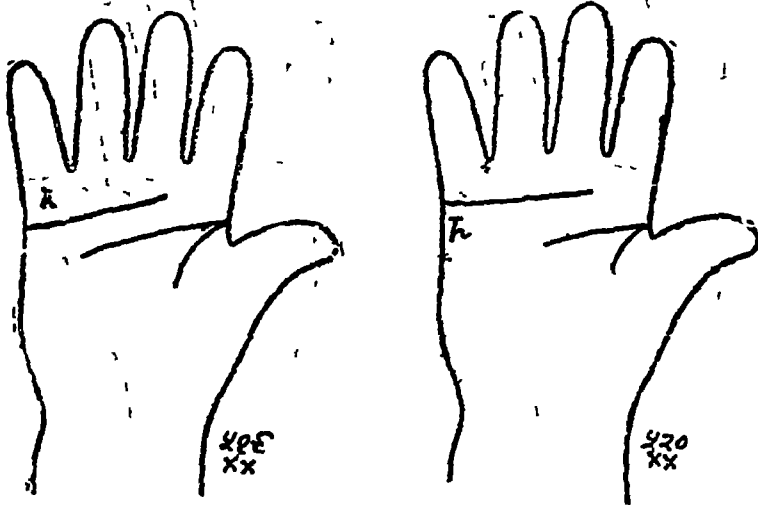
चित्र ५२०—यदि प्रथम 'मगल-क्षेत्र' पर शनि-चिह्न हो तो जातक उदास चित्तवाला, बन्धु-बाधवो द्वारा अपमानित, साहसी, धैर्यवान, अस्त्र-शस्त्रो का ज्ञाता, न्यायी तथा युद्ध-क्षेत्र मे विजय प्राप्त करने वाला होता है। यदि प्रथम मगल-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक क्रूर, कलह-प्रिय, अन्यायी, पर-निन्दक, पर-पीड़क, कामी, अहकारी, चालाक तथा दुष्ट-प्रकृति का होता है।

चित्र ५२१—यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र पर शनि-चिह्न हो तो जातक राज्य द्वारा सम्मानित, सेना अथवा ग्राम का प्रधान तथा पुत्र-पौत्र, धन-सम्पत्ति, वाहन, ऐश्वर्य आदि से युक्त होता है, परन्तु उसे कान सम्बन्धी रोग तथा चेचक आदि बीमारियो का शिकार होना पड़ता है, यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र निम्न हो तो ऐसे चिह्न वाला जातक दुर्गुणी, दुःखी तथा अपयशी होता है।

५२१

५२२
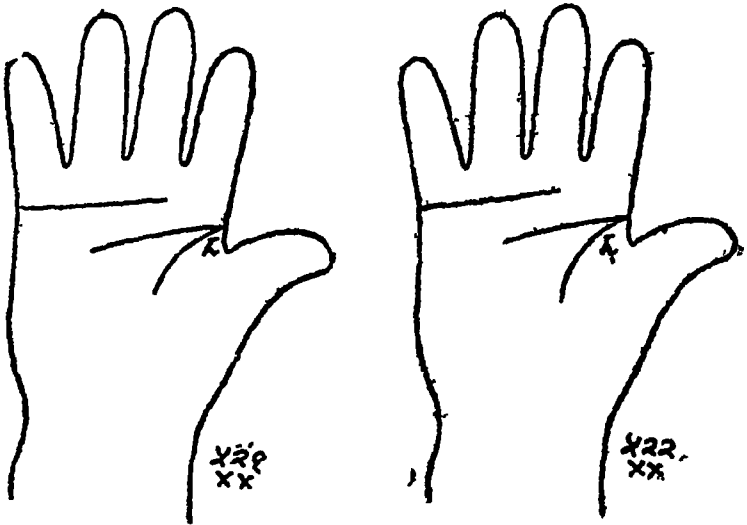
चित्र ५२२—यदि 'द्वितीय मंगल-क्षेत्र' के ठीक मध्य भाग मे शनि-चिन्ह हो तो जातक शत्रु एवं रोगों से पीड़ित, अपव्ययी, सन्तान-सुख से वचित, नेत्र-रोग का रोगी, चचल-चित्ततथा कठोर स्वभाव का होता है। उसे अग्नि, शस्त्र, विष आदि से भय होता है। यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र निम्न हो तो ऐसे चिह्न वाले जातक का दुर्भाग्य और अधिक बढ़ जाता है।

चित्र ५२३—यदि 'चन्द्र-क्षेत्र' पर शनि-चिह्न हो तो जातक कठोर, निर्धन, चिन्ताशील, कटुभाषी, भाई-बन्धुओ से पीड़ित, उन्माद आदि रोगों का रोगी, एकान्त सेवी, परन्तु धन-सम्पत्ति से युक्त, धार्मिक-उन्मादी होता है। यदि चन्द्र-क्षेत्र निम्न हो तो जातक आचार-विचार-

हीन, व्यभिचारी, अपयशी तथा दुर्गुणी होता है। यदि हाथ की बनावट भी अशुभ हो तो ऐसे चिह्न वाला जातक या तो आत्महत्या कर लेता है या उसे न्यायालय से मृत्यु दण्ड प्राप्त होता है।
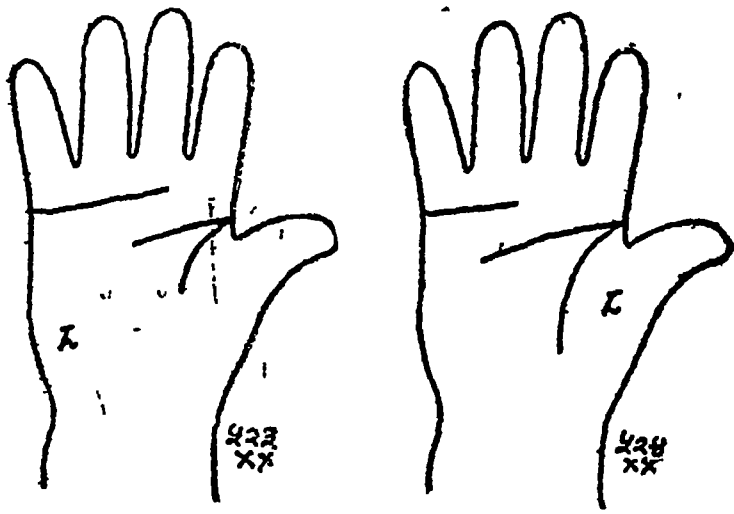
चित्र ५२४—यदि 'शुक्र-क्षेत्र' पर शनि-चिह्न हो तो जातक स्वस्थ, वलवान, धर्मात्मा, सगीतज्ञ, गुप्त विद्याओ का ज्ञाता, विनम्र, परोपकारी तथा मधुर भाषी होता है। यदि शुक्र-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक विपयी, व्यभिचारी, दुष्टों की संगति करने वाला, अप्राकृतिक मैथुन करने वाला तथा निर्लज्ज होता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति प्रेम-विवाह करते है और फिर तलाक भी दे देते है। वे समाज मे अत्यन्त अप्रतिष्ठित होते है। यदि किसी स्त्री के हाथ मे ऐसा चिह्न हो तो वह विदुषी, धन-धान्य से पूर्ण, कवियित्री, चंचल प्रकृति वाली तथा पर-पुरुष-गामिनी होती है।

चित्र ५२५—यदि 'राहु-क्षेत्र' पर शनि-चिह्न हो तो जातक धर्मात्मा, तीर्थ-सेवी, ज्ञानी, विज्ञानी, तीव्र दृष्टि, धनी, यशस्वी तथा आविष्कारक होता है। यदि राहु-क्षेत्र निम्न हो तो जातक धन-जन से हीन, दु खी-जीवन व्यतीत करने वाला, सुस्त, निरुद्यमी तथा अपयशी होता है।
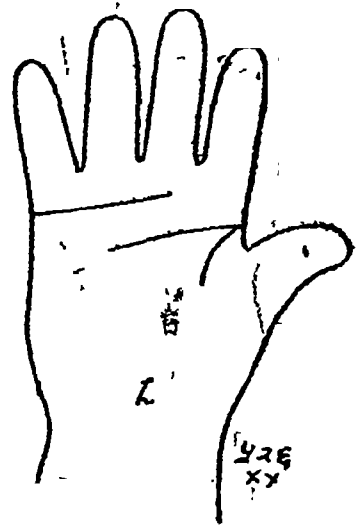
चित्र ५२६—यदि 'केतु-क्षेत्र' पर शनि-चिह्न हो तो जातक अपना प्रारम्भिक अवस्था मे धनी, सुखी, स्वस्थ तथा सद्गुण सम्पन्न होता है। बाद मे उसका जीवन सामान्य व्यतीत होता है, परन्तु यदि केतु-क्षेत्र अशुभ हो तो ऐसे चिन्ह वाला जातक धनहीन, कर्म-हीन, दुखी, दूसरो के आश्रय मे रहने वाला तथा अपने जीवन को कठिनाइयों मे बिताने वाला होता है।

चित्र ५२७—यदि 'प्रजापति-क्षेत्र' पर शनि-चिह्न हो तो जातक साहसी, योद्धा, वीर, यात्रा-प्रेमी, धातुओ का व्यवसाय करने वाला, दृढ निश्चयी तथा अपने वचन का पालन करने वाला होता है परन्तु यदि प्रजापति क्षेत्र अशुभ हो तो जातक अपने शत्रु से हर प्रकार से बदला चुकाने वाला तथा उसकी धोखे से हत्या तक कर देने वाला होता है।
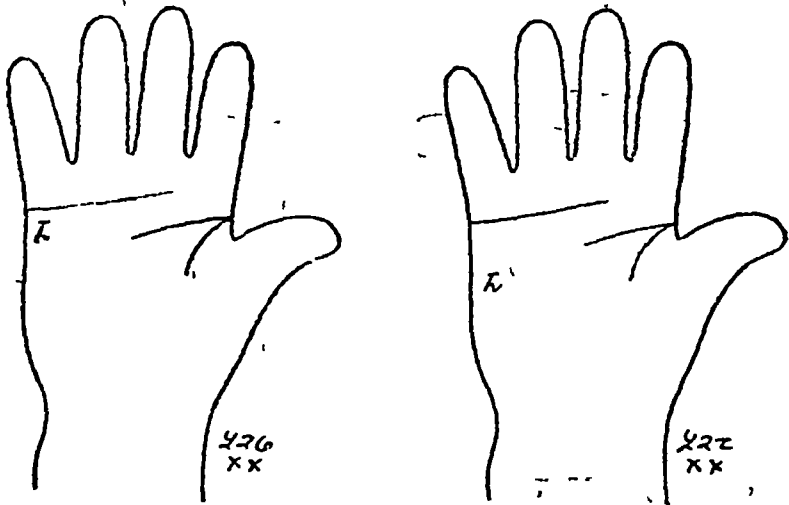
चित्र ५२८—यदि 'वरुण-क्षेत्र' पर शनि-चिह्न हो तो जातक अत्यन्त बुद्धिमान, गुणवान, प्रभावशाली, धर्मात्मा, यशस्वी, विचार-

वान, कवि, लेखक तथा अक्षयकीर्ति प्राप्त करने वाला होता है। यदि वरुण-क्षेत्र अशुभ हो तो वह पाखडी, कुतर्की तथा ढोंगी होता है और अपनी असलियत के प्रकट हो जाने पर समाज मे अपयश को प्राप्त करता है।

चित्र ५२९—यदि 'इन्द्र-क्षेत्र' पर शनि-चिह्न हो तो जातक विद्वान्, धर्मात्मा, परोपकारी, समाज सेवी, क्रियाशील, बुद्धिमान तथा गुणी होता है। यदि इन्द्र-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक भाग्य-हीन होता है और विशेषकर अपनी वृद्धावस्था मे धन-जन-हीन होकर अत्यधिक दुःख प्राप्त करता है।
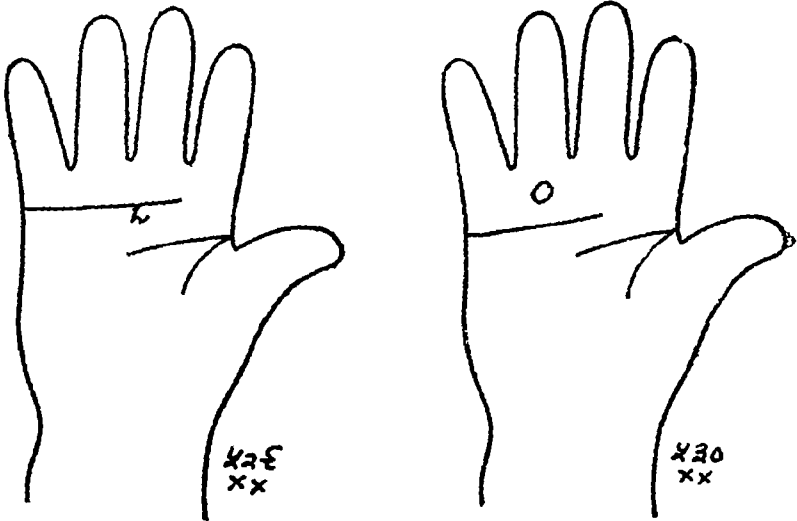
'सूर्य-चिह्न' का प्रभाव

चित्र ५३०—यदि 'सूर्य-क्षेत्र' पर सूर्य-चिह्न हो तो जातक पराक्रमी, यशस्वी, धन-धान्य-स्त्री-पुत्रादि के सुख से पूर्ण, विद्वान्, ज्ञानी, चतुर

बुद्धिमान, कुशाग्र-बुद्धि तथा अनेक क्षेत्रो मे सफलता प्राप्त करता है।
यदि सूर्य-क्षेत्र अशुभ हो तो शुभ गुणो मे अशुभ गुणो का समावेश होता है। यदि-सूर्य रेखा भी दूषित हो तो जातक को दुर्भाग्य एव अपयश की प्राप्ति होती है तथा उसकी नेत्र-ज्योति भी क्षीण हो जाती है।

चित्र ५३१—यदि 'बुध-क्षेत्र' पर सूर्य-चिह्न हो तो जातक विद्वान्, कवि, लेखक, सगीतज्ञ, स्नेही, यशस्वी तथा प्रतिभाशाली होता है। वह दर्शन, ज्योतिष तथा सामुद्रिक शास्त्र का विद्वान् भी होता है। यदि बुध-क्षेत्र निम्न हो तो जातक चचल, विषयी, अपयशी तथा वेश्यागामी होता है। कुछ विद्वानो के मत से बुध-क्षेत्र पर सूर्य-चिह्न वाले जातक को पुत्र-शोक होता है। उसे दत्तक-पुत्र लेना पड़ता है। ऐसे लोग पापी तथा व्यभिचारी होते हैं और उनकी मृत्यु विषपान से होती है।
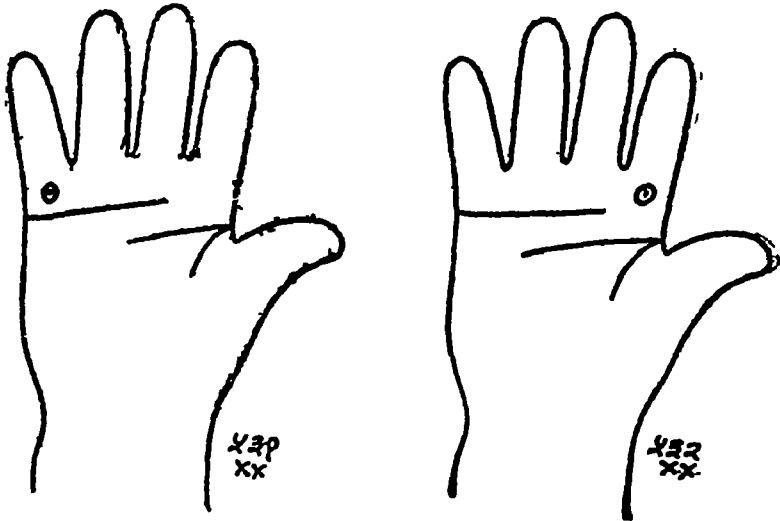
चित्र ५३२—यदि 'गुरु-क्षेत्र' पर सूर्य-चिह्न हो तो जातक विद्वान्, धार्मिक, परोपकारी, सत्यवादी, दानी, कर्मकाण्डी, सगीतज्ञ, यशस्वो, एव सर्वत्र सम्मान प्राप्त करने वाला होता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति को राजनीति के क्षेत्र मे अत्यन्त सफलता प्राप्त होती है। वे उच्चकोटि के व्यवसायी भी होते हैं। यदि गुरु-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक अहकारी, प्रेम-सम्बन्ध मे अधीर, विषयी, वायु-पित्त-धातु क्षीणता आदि रोगों से ग्रस्त तथा निकृष्ट-कर्म करने वाला होता है।

चित्र ५३३—यदि 'शनि-क्षेत्र' पर सूर्य-चिह्न हो तो जातक धन-वान, सुखी, कलाकार, भूतत्व वेत्ता, कोयला, लोहा आदि धातुओ का व्यापार करने वाला, वाक्पटु, चतुर, क्रोधी तथा अहकारी होता है। यदि शनि-क्षेत्र निम्न हो तो मन्द बुद्धि, उदास, दीर्घ सूत्री, दूसरो के आश्रय मे रहने वाला तथा अपने पिता से शत्रुता रखने वाला होता है।
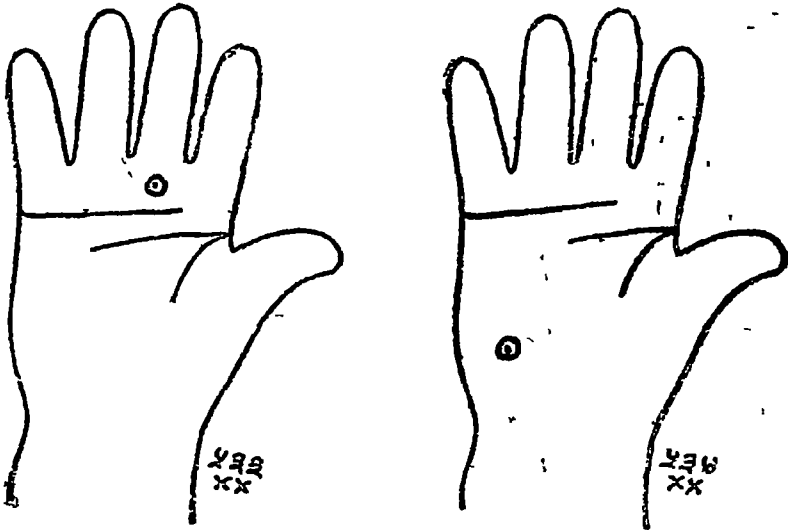
चित्र ५३४—यदि 'चन्द्र-क्षेत्र' पर सूर्य-चिह्न हो तो जातक विद्वान्, कवि, कलाकार, कोमल, स्नेही, तेजस्वी, यात्रा-प्रिय, सच्चरित्र, सुन्दर

गुणवान्, सुखी, बहुकुटुम्बी तथा स्त्रियों को प्रिय होता है। ऐसे व्यक्ति सोना, चादी, रत्न आदि का व्यवसाय करते है। यदि चन्द्र-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक विषयी, दुश्चरित्र, निर्लज्ज, मद्यपी, अपयशी, परन्तु आर्थिक दृष्टि से सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चित्र ५३५—यदि 'शुक्र-क्षेत्र' पर सूर्य-चिन्ह हो तो जातक विनम्र, प्रेमी, विद्वान्, सुखी, बलवान्, राज्य द्वारा सम्मानित, धनोपार्जन मे दक्ष, दृढ़ निश्चयी, अत्यन्त परिश्रमी, स्वावलम्बी, सगीतज्ञ तथा मित्रों एव स्त्रियों से विशेष प्रेम करने वाला होता है। यदि शुक्र-क्षेत्र अशुभ हो तो विषयी, इन्द्रियलोलुप, चरित्रहीन, प्रमेह आदि रोगो से युक्त, पानी से डरने वाला तथा क्षीण दृष्टि वाला होता है।
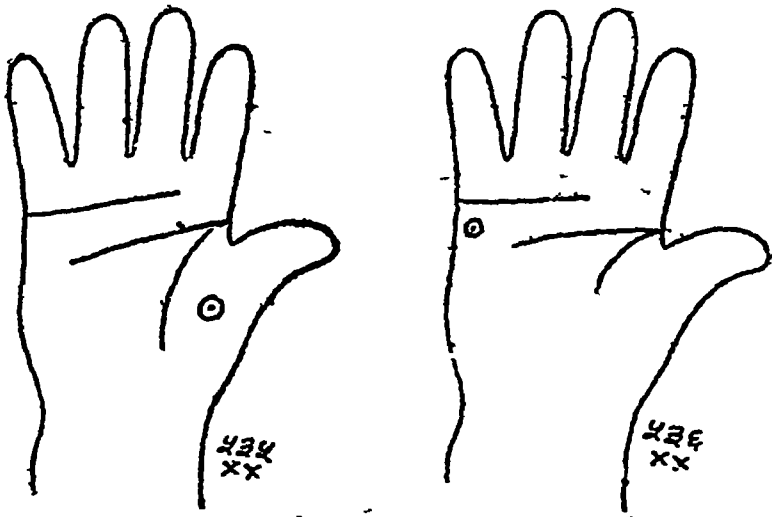
चित्र ५३६—यदि प्रथम मगल-क्षेत्र पर सूर्य-चिह्न हो तो जातक मूर्ख, नीच, आचरणहीन, आदमियो से विरोध रखने वाला, साहसी तथा अहकारी होता है। यदि प्रथम मगल-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक रक्त चाप, रक्त विकार आदि रोगो से ग्रस्त, चरित्र-हीन, दुष्कर्म करने

वाला, लडाकू, विपत्ति के समय धैर्य धारण करने वाला तथा पराक्रमी होता है।

चित्र ५३७—यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र पर सूर्य-चिह्न हो तो जातक बुद्धिमान, विद्वान, धनी, शीलवान, सुखी उत्साही, साहसी, क्रियाशील अत्यन्त परिश्रमी तथा युद्ध-क्षेत्र मे पराक्रम प्रदर्शित करने वाला होता है। उसकी पत्नी सुशील तथा पतिव्रता होती है। यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक रक्त विकारों का रोगी, प्रेम सम्बन्ध मे अधीर, चरित्रहीन तथा अपयश प्राप्त करने वाला होता है।
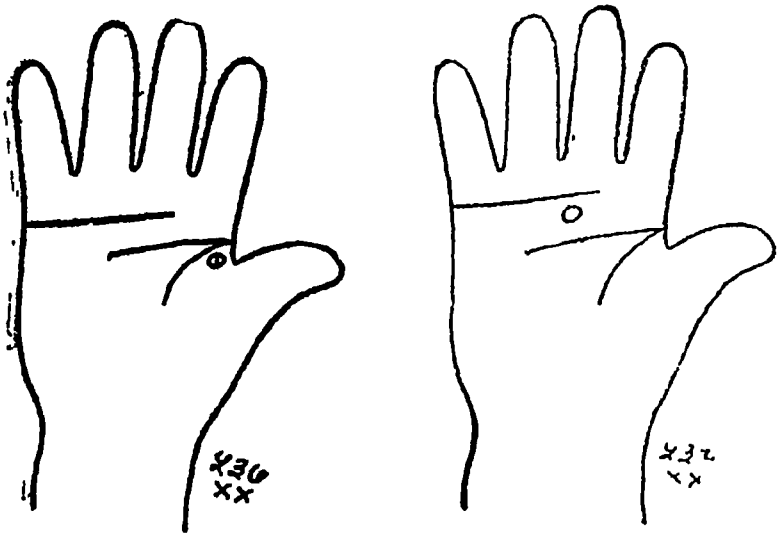
चित्र ५३८—यदि 'राहु-क्षेत्र' पर सूर्य-चिह्न हो तो जातक धनवान, भाग्यवान, लम्बी यात्राए करने वाला, कुशल व्यवसायी, विनम्र, धर्मात्मा, परोपकारी तथा ठेकेदारी का काम करने वाला होता है। वह अपनी सम्पत्ति के एक बडे भाग को दान करता है और यश प्राप्त करता है। यदि राहु-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक धन का इच्छुक, अत्य-

धिक परिश्रम करने पर भी आवश्यकताओं की पूर्ति न कर पाने वाला, चिन्तित, उदास तथा दु खी होता है।

चित्र ५३९—यदि केतु-क्षेत्र पर सूर्य-चिह्न हो तो जातक अत्यधिक परिश्रम करने पर भी धन के अभाव मे रहने वाला, उदास, निराश, चिन्तित, दु खी तथा उत्साहहीन, होता है। यदि केतु-क्षेत्र अशुभ हो तो उक्त अशुभ लक्षण और बढ जाते है। ऐसे जातक भिखारी हो जाते हैं।
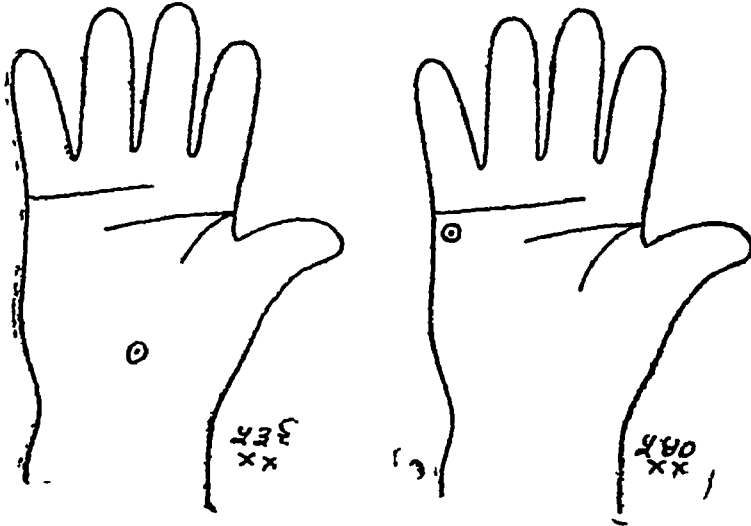
चित्र ५४०—यदि प्रजापति-क्षेत्र पर सूर्य-चिह्न हो तो जातक धर्मात्मा, प्रतापी, धनी, परोपकारी, साहसी, कर्तव्यनिष्ठ, भला, धैर्यवान, सफल व्यवसायी, नीति-निपुण तथा क्रियाशील होता है। यदि प्रजापति-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक क्रोधी, ईर्ष्यालु, झगडालू, निराश तथा शत्रुओ के कारण कष्ट प्राप्त करने वाला होता है।

चित्र ५४१—यदि 'वरुण-क्षेत्र' पर सूर्य-चिह्न हो तो जातक प्रतिभाशाली कवि, विद्वान्, दानी, यशस्वी, परोपकारी तथा दूसरो की सहा-

यता करने के लिए स्वय कष्ट उठाने वाला होता है। यदि वरुण-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक नजला आदि रोगों से पीड़ित, चरित्र-हीन तथा सामान्य-जीवन व्यतीत करने वाला होता है।
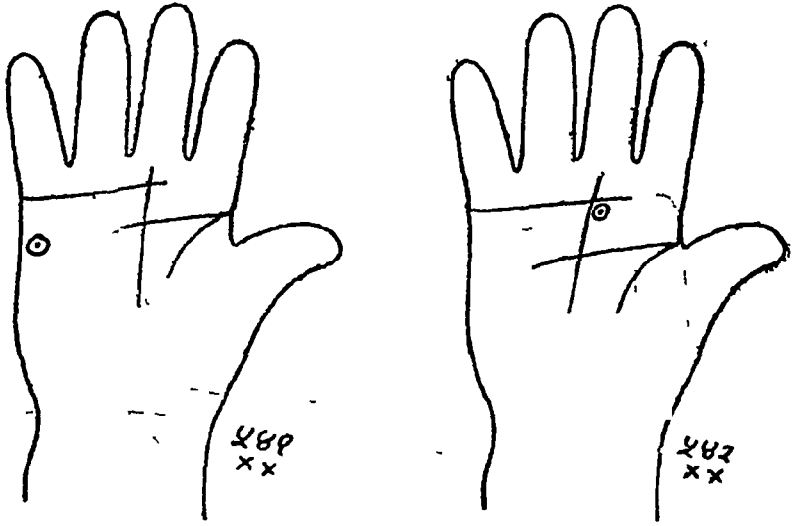
चित्र ५४२—यदि 'इन्द्र-क्षेत्र' पर सूर्य-चिह्न हो तो जातक महा-विद्वान्, कवि, कथाकार, लेखक, यशस्वी, धनी, सुखी तथा समाज-सेवी होता है। आयु-वृद्धि के साथ-साथ उसकी प्रतिभा एव यश का विकास भी होता है। यदि इन्द्र-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक वृद्धावस्था मे तेज-हीन, निर्धन तथा दुष्ट मित्रों के सहित दुःखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चित्र ५४३—यदि 'बुध-क्षेत्र' पर बुध-चिह्न हो तो जातक साहसी, काल्पनिक, तीक्षण बुद्धि, विचारवान्, चिकित्सक-ज्योतिर्विद, पराक्रमी यात्रा-प्रेमी, चचल, चित्त वाला, कुशल व्यवसायी, नाट्य-कला नीतिज्ञ मानव-चरित्र के रहस्यो का नीतिज्ञ, ज्ञाता तथा दूरदर्शी होता है। उसकी स्त्री सुन्दर, पतिव्रता तथा भाग्यवान होती है। यदि बुध-क्षेत्र अशुभ

हो तो जातक झगड़ालू, ईर्ष्यालु तथा चचल बुद्धि का होता है। उसका चरित्र भी अच्छा नही होता, परन्तु निम्न बुध-क्षेत्र पर बुध-चिह्न प्रायः देखने को नहीं मिलता है।
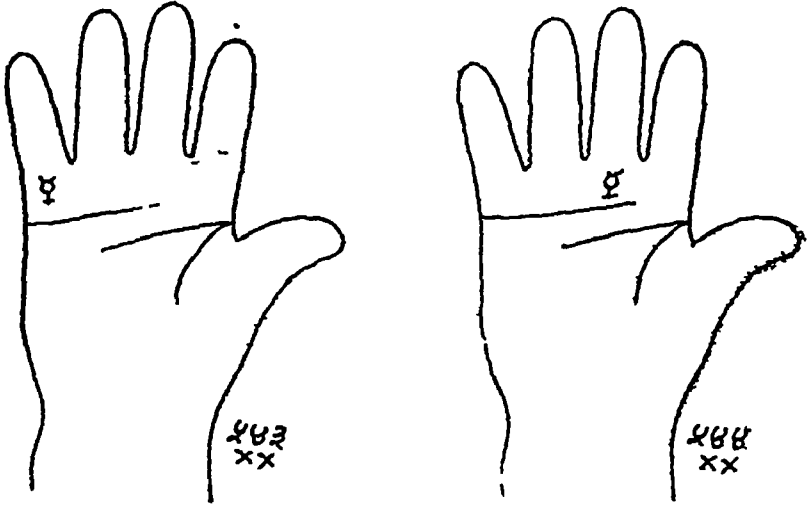
चित्र ५४४—यदि शनि-क्षेत्र पर बुध-चिह्न हो तो जातक गुणवान, सुन्दर, समाज प्रिय, यशस्वी, अनेक भाषाओं का जानकार, धनी, विद्वान्, सुखी, लेखक, कलाकार, जनता को आकर्षित करने वाला, गणितज्ञ, परोपकारी तथा अनेक मित्रों वाला होता है। उसकी पत्नी सुन्दर होती है। एक पुत्र को जन्म देने के उपरान्त उसकी स्त्री का अपहरण किसी दुष्ट व्यक्ति द्वारा कर लिये जाने की सम्भावना रहती है। यदि शनि-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक पापी, नीच कर्म-रत, मलिन-बुद्धि, उदास तथा झगडालू प्रकृति का होता है।

चित्र ५४५—यदि सूर्य-क्षेत्र पर बुध-चिह्न हो तो जातक धनी, धीर, कुशल व्यवसायी, पराक्रमी, उच्चपदाधिकारी, सुखी परोपकारी,

कलाकार, महा विद्वान तथा पराक्रमी होता है। यदि सूर्य-क्षेत्र निम्न हो तो जातक सट्टे आदि मे धन गंवाने वाला, धूर्त, मतलबी तथा दुर्गुणी होता है।

चित्र ५४६—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर बुध-चिह्न हो तो जातक सुन्दर, चंचल तथा कोमल स्वभाव वाला, यात्रा प्रिय, बुद्धिमान, चतुर तथा परोपकारी होता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति युवावस्था मे किसी स्त्री के प्रेम मे पड़कर मानसिक कष्ट उठाते हैं। ये लोग स्त्रियो को अपनी ओर आकर्षित करने मे कुशल होते हैं। यदि चन्द्र-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक कामासक्त, लम्पट, जुआरी, अपयशी अपने पैतृक धन को नष्ट कर देने वाला तथा व्यभिचारी होता है।
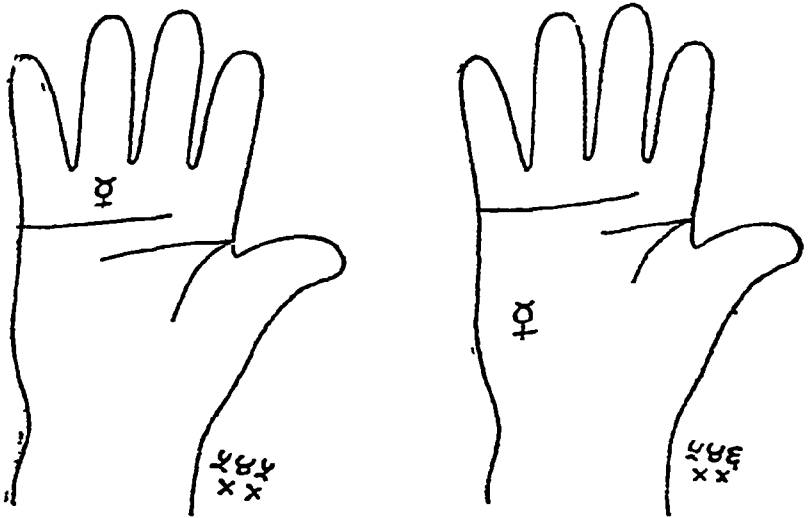
चित्र ५४७—यदि शुक्र-क्षेत्र पर बुध-चिह्न हो तो जातक बलवान, शुभ कार्य करने वाला, दयालु, मधुरभाषी, परोपकारी, मित्रवान, ज्ञानी, विचारशील, धर्मात्मा, परोपकारी, वैज्ञानिक, संगीतज्ञ, कला-

कार, चिकित्सक अथवा राजनीतिज्ञ होता है। यदि बुध-क्षेत्र से शुक्र-क्षेत्र भिन्न हो तो जातक लम्पट, कामी, चरित्रहीन, अन्यायी तथा अपयशी होता है।
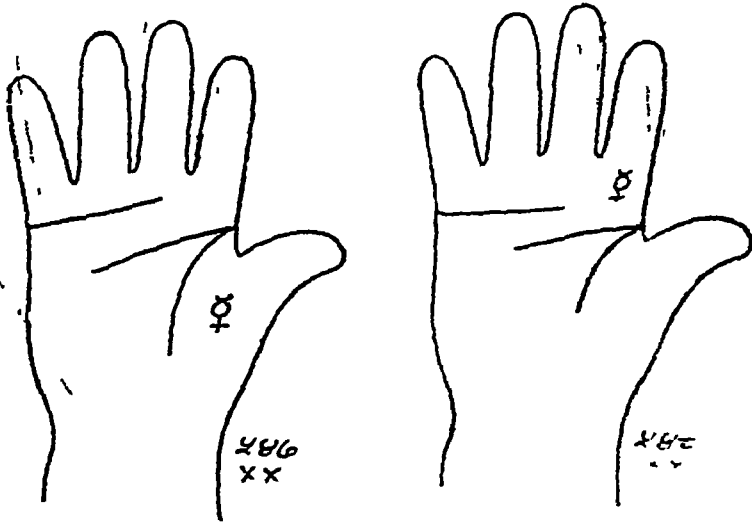
चित्र ५४८—यदि गुरु-क्षेत्र पर बुध-चिह्न हो तो जातक तत्त्व-दर्शी, गुरुजनो का मान करने वाला, विद्वान्, दयालु, परोपकारी, धार्मिक, दार्शनिक तथा अनेक विद्याओ का जानकार होता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति प्राय गृह-त्यागी, साधुसेवी, परोपकारी तथा तीर्थाटन के प्रेमी होते हैं। उनकी मृत्यु भी किसी तीर्थ-स्थान मे ही होती है। यदि गुरु-क्षेत्र निम्न हो तो उपर्युक्त सद्गुणो मे कमी आ जाती है और जातक अपयश प्राप्त करता है।

चित्र ५४९—यदि प्रथम मगल-क्षेत्र पर बुध-चिह्न हो तो जातक क्रोधी, विश्वासघाती, असन्तोषी, क्रूर, शत्रुजयी, रक्त-रोगो से पीडित, सट्टेबाजी मे धन गवाने वाला, मद्यपी तथा दूसरे के कार्य मे विघ्न

डालने वाला होता है। यदि प्रथम मगल-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक मे ये सभी दुर्गुण और अधिक वढ जाते है।
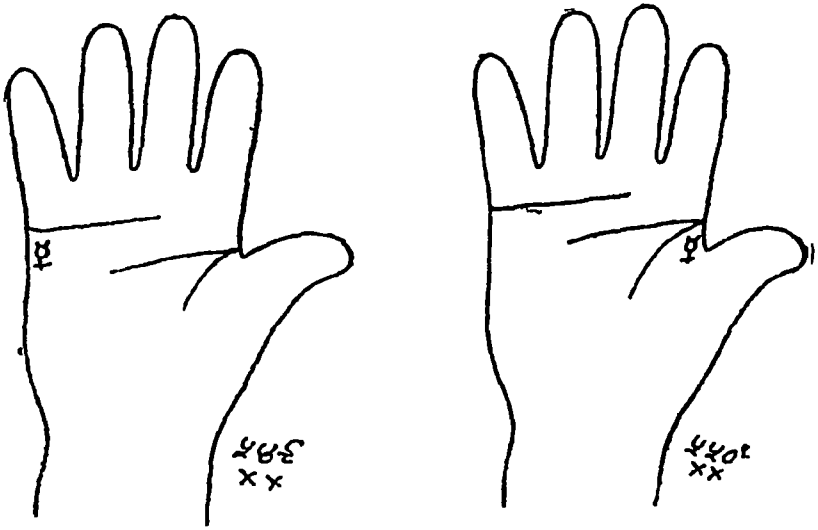
चित्र ५५०—यदि 'द्वितीय मगल-क्षेत्र' पर बुध-चिह्न हो तो जातक प्रत्येक कार्य मे सफलता प्राप्त करने वाला, उन्नतिशील, कुशल व्यवसायी, धनी, कोमल स्वभाव का, साहसी, शूर-वीर, गर्वीला, परन्तु विषयी होता है। यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र अशुभ हो, तो जातक पुरुषार्थहीन, कामी, निन्द्य-कर्म करने वाला तथा भीरु-स्वभाव का होता है।

चित्र ५५१—यदि राहु-क्षेत्र पर बुध-चिह्न हो तो जातक स्वतन्त्र प्रकृति का, जगलात की ठेकेदारी करने वाला, कम-पढा-लिखा परन्तु योग्य, धनी, यशस्वी तथा प्राकृतिक दृश्यो का प्रेमी होता है। यदि राहु-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक भाग्य-हीन, लोभी, दरिद्री तथा प्रत्येक काम मे हानि उठाने वाला होता है।
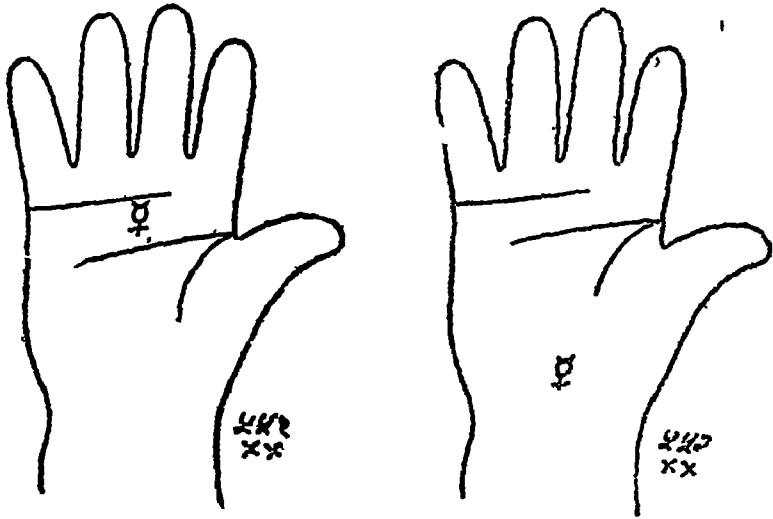
चित्र ५५२—यदि केतु-क्षेत्र पर बुध-चिह्न हो तो जातक गुणी, भाग्यवान, धनी, चतुर, तीव्र-बुद्धि तथा विद्वान् होता है। यदि केतु-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक चचल वुद्धि वाला, भाग्य-हीन, निन्द्यकर्म करने वाला, दुष्ट प्रकृति, कठोर, निर्दय तथा अस्थिर विचार का होता है। वाल्यावस्था मे उसे चेचक की वीमारी भी होती है।

चित्र ५५३—यदि प्रजापति-क्षेत्र पर बुध-चिह्न हो तो जातक साहसी, गुणवान, वलवान, वुद्धिमान, स्वर्ण अथवा लोह आदि धातुओ का क्रय-विक्रय करने वाला, कुशल व्यवसायी तथा सुखी-जीवन व्यतीत करने वाला परिश्रमी होता है। यदि प्रजापति-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक सट्टेबाज, जुआरी, लम्पट, कामी तथा पानी के भीतर से वस्तुएं निकालने वाला होता है।

चित्र ५५४—यदि वरुण-क्षेत्र पर बुध-चिह्न हो तो जातक न्यायी, दयालु, गुणवान, ईमानदार, तीर्थयात्रा का प्रेमी, दार्शनिक, सुलेखक,

कवि, धर्मात्मा, यशस्वी तथा सुखी-जीवन व्यतीत करने वाला होता है। यदि वरुण-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक चचल स्वभाव का, जुआ, सट्टा, रेस आदि का शौकीन तथा अस्थिर विचारो वाला होता है, जिसके कारण वह अधिक उन्नति नही कर पाता।
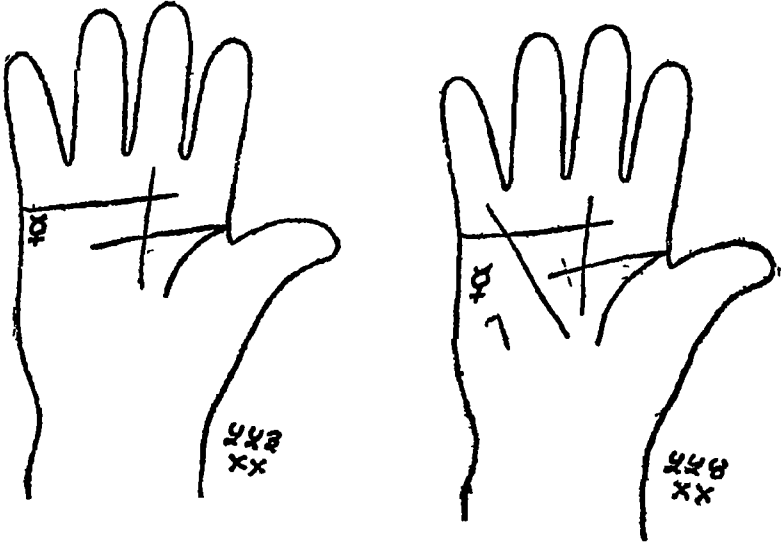
चित्र ५५५—यदि इन्द्र-क्षेत्र पर बुध-चिह्न हो तो जातक भाग्यवान, यशस्वी, गुणवान, शास्त्रज्ञ, धर्मात्मा तथा वृद्धावस्था मे विशेष सम्मान अर्जित करने वाला होता है। इन्द्र-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक के विचार अस्थिर होते हैं, जिसके कारण उसकी भाग्योन्नति नही होने पाती। ऐसे लोग मस्तिष्क सम्बन्धी रोगो से भी पीड़ित रहते है।

'चन्द्र-चिह्न' का प्रभाव

चित्र ५५६—यदि 'चन्द्र-क्षेत्र' पर चन्द्र-चिह्न हो तो जातक सर्वत्र सम्मान प्राप्त करने वाला, सरल, गभीर, दयालु, धनी, सुखी तथा शान्त
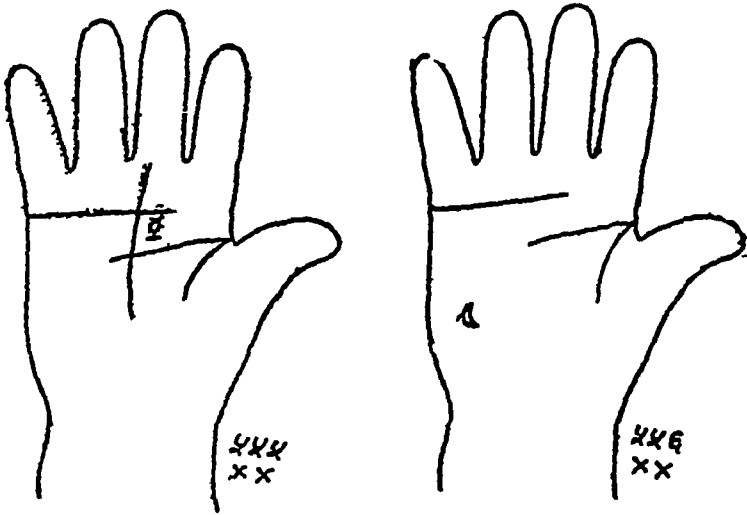
स्वभाव का होता है। वह सौन्दर्य-प्रेमी, प्रेम के मामले में अधीर तथा एकान्त प्रेमी होता है। यदि चन्द्र-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक काल्पनिक, उन्मादी जैसा, दुश्चरित्र, विषयी तथा अपयशी होता है। यदि किसी स्त्री के हाथ मे ऐसा चिह्न हो तो वह पर पुरुष-गामिनी तथा निर्लज्ज होती है।

चित्र ५५७—यदि गुरु-क्षेत्र पर चन्द्र-चिह्न हो तो जातक प्रवल इच्छा शक्ति-सम्पन्न, प्रतिभाशाली, बुद्धिमान, गुणवान, विद्वान्, प्रतिष्ठित, दार्शनिक तथा प्रवल आध्यात्मवादी होता है। यदि चन्द्र-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक अधीर, अशान्त, कल्पनालोक मे विचरण करने वाला, एक काम को छोडकर दूसरे काम को आरम्भ करने वाला एवं असफल जीवन-व्यतीत करने वाला होता है।
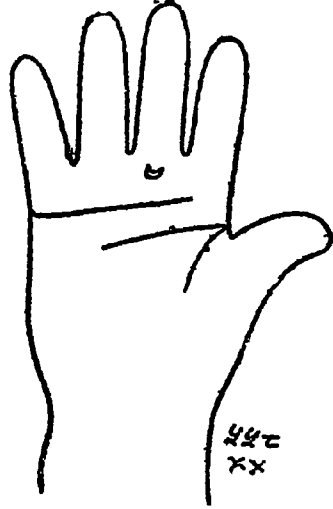
चित्र ५५८—यदि शनि-क्षेत्र पर चन्द्र-चिह्न हो तो जातक मानसिक चिन्ताओं से ग्रस्त, स्त्री-कष्ट से दुखी तथा अपव्ययी

होता है। कुछ विद्वानो के मतानुसार ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति भाग्यशाली तथा सुखी-जीवन व्यतीत करने वाले भी होते हैं। यदि शनि-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक चचलवृत्ति, इन्द्रिय-लोलुप, आचार-विचार हीन, कामी, व्यभिचारी तथा पागलो जैसी बाते करने वाला होता है।

चित्र ५५९—यदि सूर्य-क्षेत्र पर चन्द्र-चिन्ह हो तो जातक अत्यन्त परिश्रमी, कलाकार , यशस्वी, साहित्यकार, गुणवान तथा सुखी-जीवन व्यतीत करने वाला होता है। यदि चन्द्र-चिन्ह खडित हो तो दूसरो को गलत सलाह देने वाला होता है। यदि शुद्ध चिन्ह हो तो जातक उच्च-पदाधिकारी होता है। यदि सूर्य-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक अत्यन्त घमडो, विषयासक्त, निर्लज्ज, नीच-कर्म करने वाला तथा अपयशी होता है।

चित्र ५६०—यदि बुध-क्षेत्र पर चन्द्र-चिन्ह हो तो जातक सुन्दर, कोमल, सत्यवादी, श्रेष्ठ स्वभाव वाला, मृदुभाषी, चचल, यशस्वी, अपव्ययी, कलाकार, स्त्रियो से अधिक प्रेम रखने वाला, परन्तु सच्च-रित्र होता है। यदि बुध-क्षेत्र अशुभ हो तो पिता का विरोधी, चचल चित्त वाला तथा व्यभिचारी होता है। ऐसे चिन्ह वाली स्त्रिया पर-पुरुष गामिनी तथा कलह-कारिणी होती है।

चित्र ५६१—यदि शुक्र-क्षेत्र पर चन्द्र-चिन्ह हो तो जातक कार्य-कुशल, प्रेमी, स्त्रियो का प्रिय, सुखी, यात्रा-प्रिय धनी, कलाकार, चित्रकार, स्वस्थ, वीर, साहसी तथा अत्यन्त विद्वान् होता है। वह प्राकृतिक-सौन्दर्य का प्रेमी, सगीतज्ञ तथा इष्ट-मित्रो से युक्त होता है। यदि शुक्र-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक निर्लज्ज, दुष्ट-प्रकृति, इन्द्रिय-लोलुप, विषयी तथा निन्द्य-कर्म करने वाला होता है। यदि किसी स्त्री के हाथ पर ऐसा चिन्ह हो तो वह व्यभिचारिणी होती है।
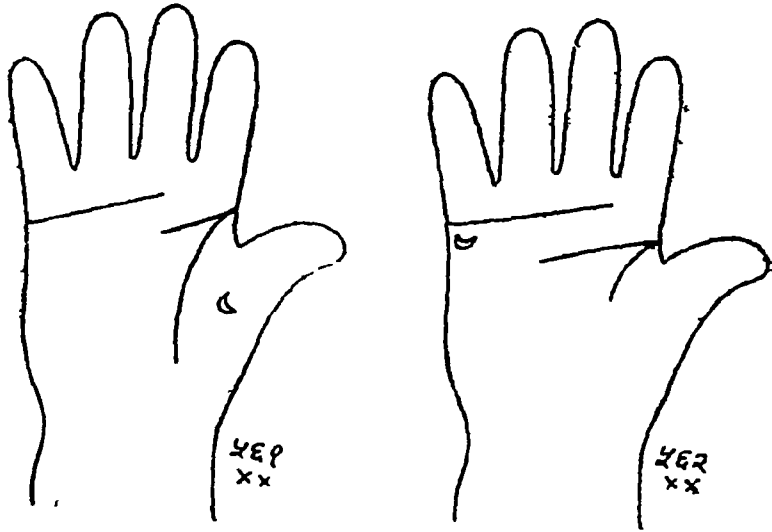
चित्र ५६२—यदि प्रथम मगल-क्षेत्र पर चन्द्र-चिन्ह हो तो जातक बुद्धिमान्, साहित्य प्रेमी; जन-सेवी, परोपकारी, दानी, उदार, धर्मात्मा तथा कुटुम्बियो पर शासन करने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति साहसी, प्रतापी, मधुरभाषी तथा कुशल व्यवसायी भी होते हैं। यदि प्रथम मंगल-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक कुटिल, निर्लज्ज, झगडालू प्रकृति का तथा प्रेम-सम्बन्ध में अधीर रहने वाला होता है।

चित्र ५६३—यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र पर चन्द्र-चिन्ह हो तो जातक एकान्तवासी, वन-पर्वतो पर विहार करने वाला, वाद-विवाद मे विजय पाने वाला तथा रक्त-विकार का रोगी होता है। यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक के शुभ गुणो मे कमी आ जाती है और वह दुःखी तथा निराश जीवन व्यतीत करता है।

चित्र ५६४—यदि राहु-क्षेत्र पर चन्द्र-चिन्ह हो तो जातक भाग्यवान्, बुद्धिमान्, यात्रा-प्रेमी, स्वाध्याय-प्रिय, गुणवान तथा विद्वान् होता
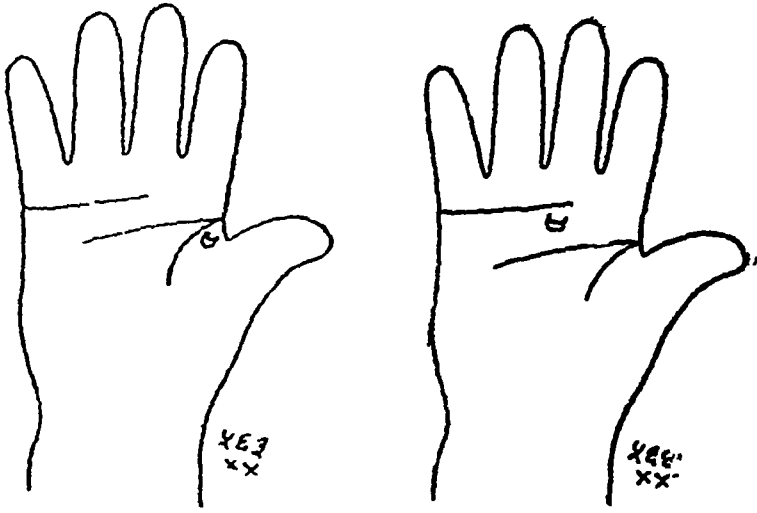
है। यदि राहु-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक को मस्तिष्क-सम्बन्धी रोग होते हैं तथा सुख, सौभाग्य एव सद्गुणो मे कमी आ जाती है।

चित्र ५६५—यदि केतु-क्षेत्र पर चन्द्र-चिन्ह हो तो जातक धनी, भाग्यवान, गुणवान तथा कोमल प्रकृति का होता है। उसके मित्र बहुत होते हैं। उसका सम्पूर्ण जीवन ऐश्वर्यमय तथा उन्नति पूर्ण होता है। यदि केतु-क्षेत्र अशुभ हो तो ऐसे चिन्ह वाला जातक कर्म-हीन, धन-हीन, अधर्मी, पराधीन जीवन व्यतीत करने वाला, दीन, दरिद्र तथा दु:खी होता है।

चित्र ५६६—यदि प्रजापति-क्षेत्र पर चन्द्र-चिह्न हो तो जातक अत्यन्त परिश्रमी, उत्साही, उद्यमी, स्वतन्त्र विचारो वाला, प्राकृतिक-सौन्दर्य का प्रेमी, दयालु, परोपकारी तथा उच्चपद प्राप्त करने वाला होता है। यदि प्रजापति-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक झगडालू, आलसी,

प्रेम-सम्बन्ध के कारण उन्मादी हो जाने वाला, अपयशी तथा अहंकारी होता है।
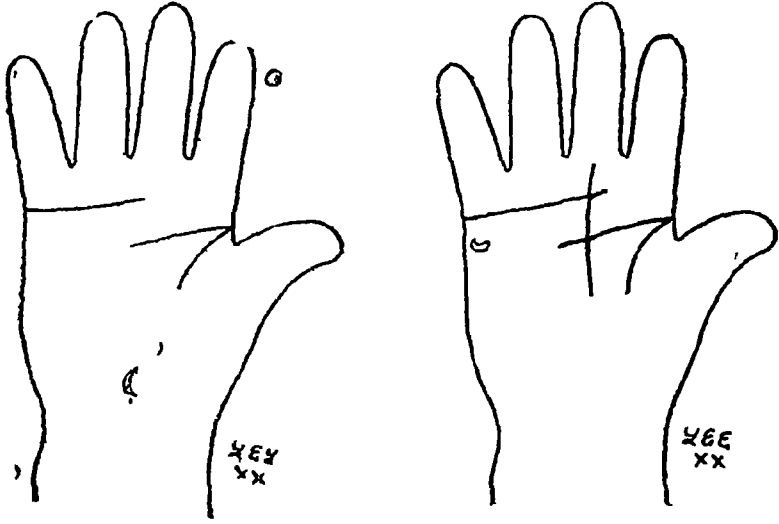
चित्र ५६७—यदि वरुण-क्षेत्र पर चन्द्र-चिह्न हो तो जातक बुद्धिमान, धनवान, विद्वान्, दयावान, परोपकारो, कवि, प्राकृतिक-सौन्दर्य का प्रेमी, सुखी तथा यशस्वो होता है। यदि वरुण-क्षेत्र अशुभ हो तो ऐसा व्यक्ति मन्दबुद्धि, डीगें हाकने वाला, अहकारी, विद्याभिमानी तथा अपने ही स्वभाव के कारण समाज में अपयश प्राप्त करने वाला होता है।

चित्र ५६८—यदि इन्द्र-क्षेत्र पर चन्द्र-चिह्न हो तो जातक परोपकारी, धार्मिक, विद्वान्, उच्चाभिलाषी, यशस्वी, दानी तथा धनी होता है। यदि इन्द्र-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक पानी से डरने वाला अथवा पानी में डूबने वाला, प्रेम-सम्बन्ध के कारण बेचैन रहने वाला, अपयशी तथा दुष्ट-कर्म करने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति वृद्धावस्था मे अनेक प्रकार के दु.ख भोगते है।
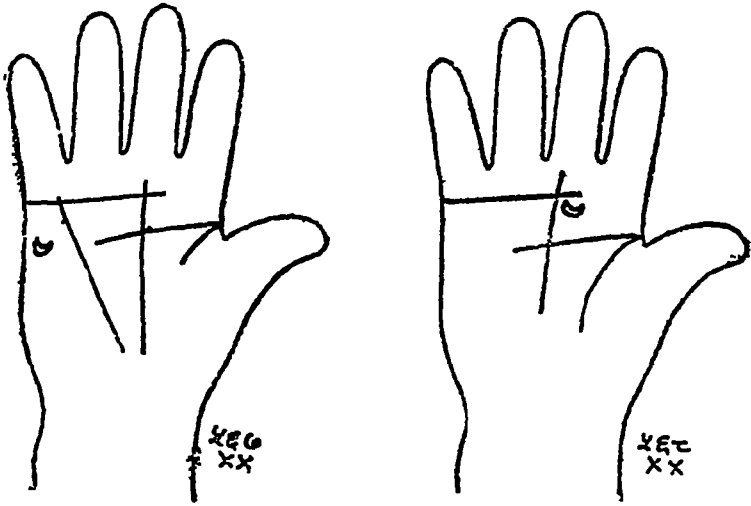
'शुक्र-चिह्न' का प्रभाव

चित्र ५६९—यदि 'शुक्र-क्षेत्र' पर शुक्र-चिह्न हो तो जातक कलाकार, निडर, सर्वप्रिय, राज्य द्वारा सम्मानित, स्त्री-पुत्रदि के सुख से युक्त, विद्वान्, कवि, लेखक, प्रेमी, मधुरभाषी, सगीतज्ञ तथा धनी होता है। यदि शुक्र-क्षेत्र निम्न हो तो जातक विषयी, व्यभिचारो, चिन्तातुर तथा अपयशी होता है। जिस स्त्री के हाथ मे ऐसा चिह्न हो, वह पर-पुरुष-गामिनी होतो है।

चित्र ५७०—यदि गुरु-क्षेत्र पर शुक्र-चिह्न हो तो जातक गुणी, विद्वान्, कवि, लेखक, सुन्दर वस्त्र तथा सुगन्धित द्रव्यो का प्रेमी, उच्च पदाधिकारी, स्त्री-पुत्र, वाहन, धन आदि के सुख से युक्त, सर्वप्रिय, परोपकारी, यात्रा-प्रिय, राजनीतिज्ञ, जनसेवी तथा धर्मात्मा होता है। यदि गुरु-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक नास्तिक, कुतर्की, निम्नकोटि का प्रेमा तथा पापाचारी होता है।
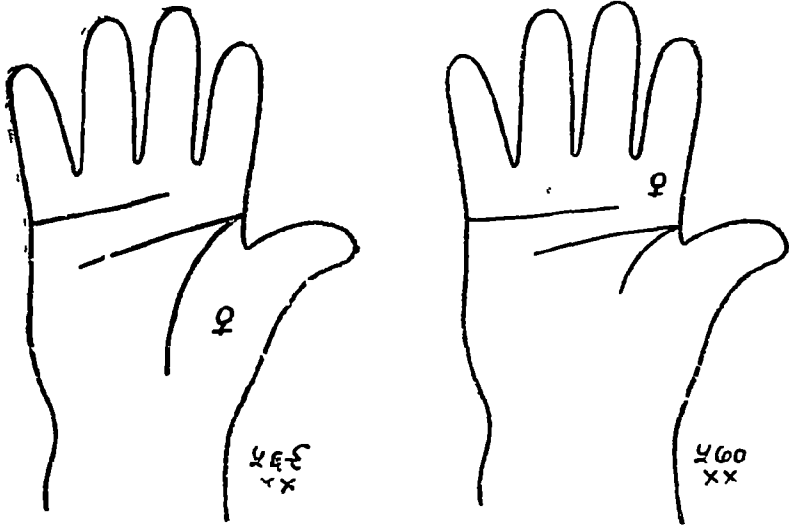
चित्र ५७१—यदि शनि-क्षेत्र पर शुक्र-चिह्न हो तो जातक बुद्धिमान, भाग्यवान, गणितज्ञ, शिल्पकार, नीतिज्ञ, धातुओं का व्यवसाय करने वाला, स्त्री के अधीन रहने वाला तथा सर्व साधारण का प्रिय होता है। यदि शनि-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक व्यभिचारी, पापी, ईर्ष्यालु, क्रोधी, चचल प्रकृति वाला, निराश, दुःखी तथा अधम कोटि का प्रेमी होता है। यदि स्त्री के हाथ पर ऐसा चिह्न हो तो वह व्यभिचारिणी तथा कलह-प्रिया होती है।

चित्र ५७२—यदि सूर्य-क्षेत्र पर शुक्र-चिन्ह हो तो जातक श्रेष्ठ कवि, साहित्यकार, शास्त्रज्ञ; तेजस्वी, परोपकारी, धनी, यात्रा प्रेमी, अपव्ययी तथा पर-स्त्री-गामी होता है। उसकी स्त्री चचला, कलहकारिणी, अपव्ययी तथा व्यभिचारिणी होती है। यदि सूर्य-क्षेत्र निम्न हो तो कामी, प्रमेहादि रोगों से पीड़ित रहने वाला तथा मन्द नेत्र-ज्योति वाला होता है। ऐसे चिह्न वाली स्त्रियां पर-पुरुष-गामिनी होती हैं।
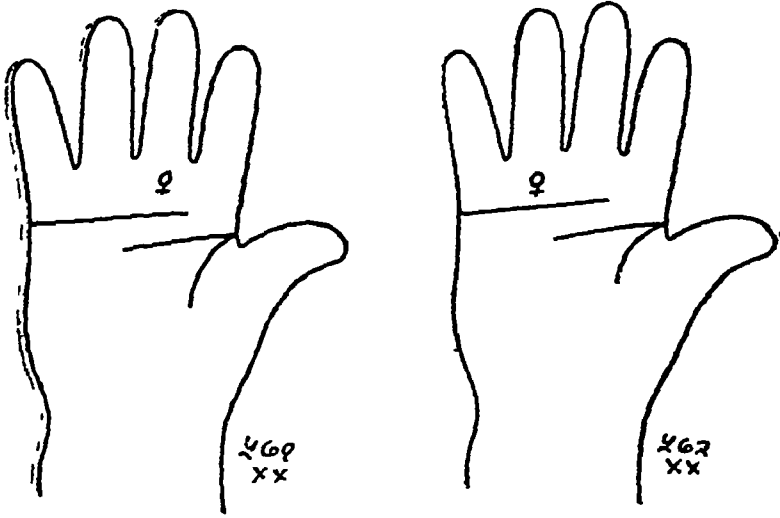
चित्र ५७३—यदि बुध-क्षेत्र पर शुक्र-चिह्न हो तो जातक विद्वान्, निपुण, उच्चाभिलाषी, धनी, नीतिज्ञ, मधुरभाषी, दयालु, प्रेमी, सगीतज्ञ, सुन्दर तथा कुशाग्र बुद्धि का होता है। उसकी पत्नी भी गुणवती तथा विदुषी होती है। यदि बुध वाला क्षेत्र अशुभ हो तो जातक अस्थिर स्वभाव वाला, विषयी, धोखेबाज अधीर, ढोंगी तथा चचल प्रकृति का होता है।

चित्र ५७४—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर शुक्र-चिन्ह हो तो जातक स्वय उच्चाभिलाषी परन्तु दूसरों में दोष देखने वाला, कठोर तथा चचल स्वभाव वाला, पर-स्त्री-गामी, असत्यवादी परन्तु उच्च पदो का प्राप्त करने वाला धनवान् होता है। उसके घर मे कलह मची रहती है। यदि चन्द्र-क्षेत्र निम्न हो तो जातक अत्यधिक कामासक्त, व्यभिचारी तथा जल-यात्रा के समय सकटग्रस्त होने वाला होता है। ऐसे चिन्ह वाली स्त्रिया व्यभिचारिणी होती है।
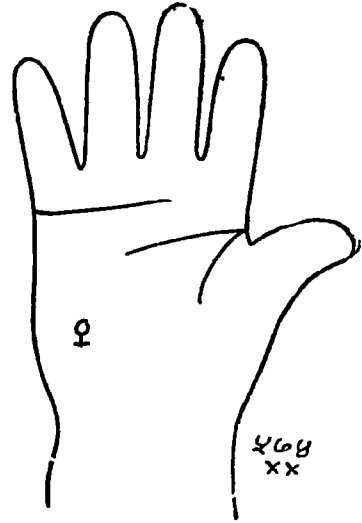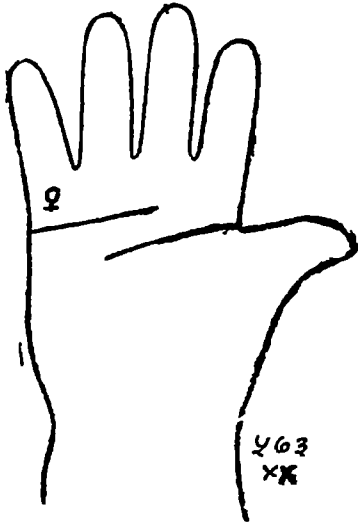
चित्र ५७५—यदि प्रथम मंगल-क्षेत्र पर शुक्र-चिन्ह हो तो जातक गौरवर्ण, सुन्दर, स्वस्थ, गणितज्ञ, साहित्यकार, कार्य-कुशल, धनी,
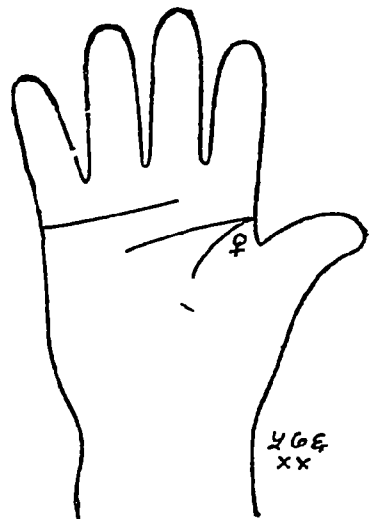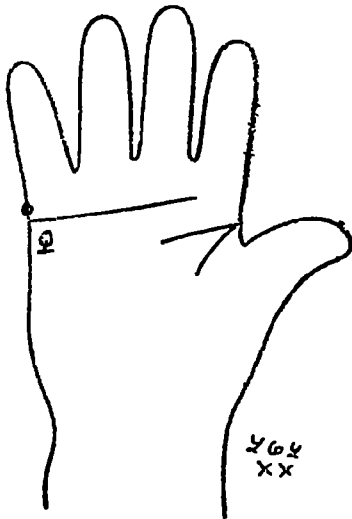
सम्पन्न, बन्धु-बान्धवो का प्रेमी तथा दो स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला होता है। यदि प्रथम मगल-क्षेत्र अशुभ हो तो गुणो मे कमी एवं दुर्गुणो में वृद्धि हो जाती है।

चित्र ५७६—यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र पर शुक्र-चिन्ह हो तो जातक अहकारी, आडंबरी, धूर्त, नीच, पर-स्त्री-गामी, व्यसनो, झगड़ालू, हिंसक तथा रक्त-विकार आदि से ग्रस्त होता है। उसकी पत्नी भी रुग्णा तथा कुटिल स्वभाव की होती है, परन्तु दुराचारिणी नही होती और पति को कुमार्ग पर चलने से रोकती है। यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र अशुभ हो तो उपर्युक्त दुर्गुण और अधिक बढ़ जाते हैं।
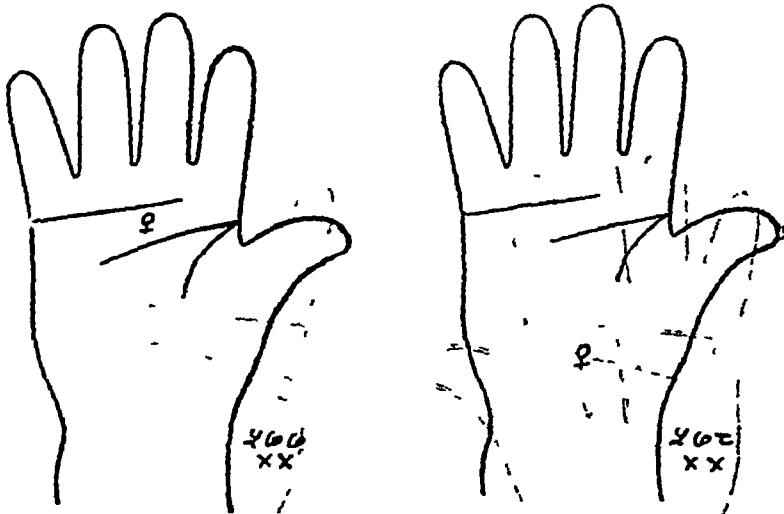
चित्र ५७७—यदि राहु-क्षेत्र पर शुक्र-चिह्न हो तो जातक विद्वान्, देशाटन का प्रेमी, तीर्थयात्री, परिश्रमी, कुशल व्यवसायी, धनी, धार्मिक, दानी, परोपकारी तथा समाज मे मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला होता है। यदि राहु-क्षेत्र अशुभ हो तो ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति

व्यभिचारी, अपयशी, नीच कर्म करने वाला तथा अनेक रोगों से पीड़ित रहता है। ऐसे चिह्न वाली स्त्री भी दुश्चरित्रा होती है।

चित्र ५७८—यदि केतु-क्षेत्र पर शुक्र-चिह्न हो तो जातक अत्यन्त भाग्यवान्, बुद्धिमान, धनी, सुखी एव ऐश्वर्यपूर्ण, सन्तोषी, धर्मात्मा तथा परोपकारी होता है। यदि केतु-क्षेत्र निम्न हो तो निर्धन, दु खो एव दुष्ट-मित्रो से रहित होता है।

चित्र ५७९—यदि प्रजापति-क्षेत्र पर शुक्र-चिह्न हो तो जातक परोपकारी, विद्वान, स्वस्थ, ओजस्वी वक्ता, राजनीतिज्ञ, यशस्वी तथा साहसी होता है। यदि प्रजापति-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक लम्पट, व्यसनी, व्यभिचारो, स्त्रियो को धोखा देने वाला तथा अपयशी होता है। ऐसे चिह्न वाली स्त्रियां भी व्यभिचारिणी होती हैं।
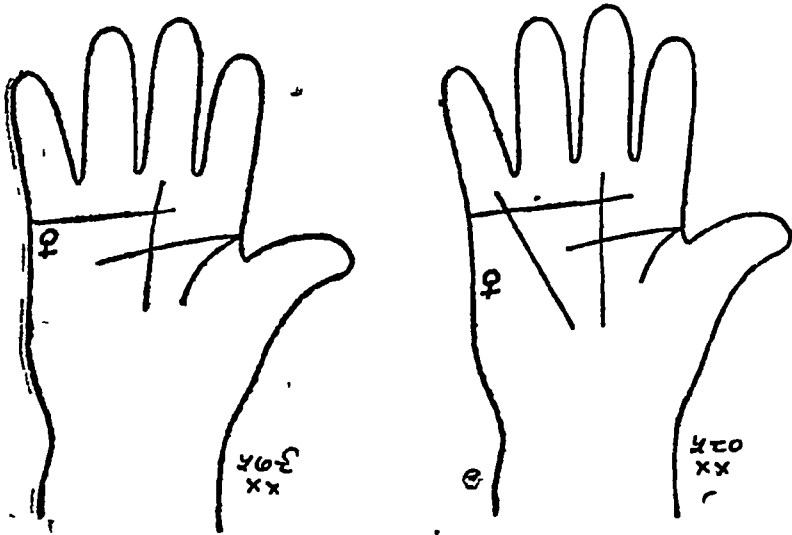
चित्र ५८०—यदि वरुण-क्षेत्र पर शुक्र-चिह्न हो तो जातक महाविद्वान्, बुद्धिमान, प्रतिभाशाली कवि, सुखी, सगीतज्ञ, यात्रा-प्रेमी

तथा सौन्दर्य-प्रेमी होता है। यदि वरुण-क्षेत्र अशुभ हो तो ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति कामी, व्यभिचारी, पानी से डरने वाला, अश्लील शब्दो का प्रयोग करने वाला तथा लोक-निन्दित होता है।

चित्र ५८१—यदि इन्द्र-क्षेत्र पर शुक्र-चिह्न हो तो जातक, धर्मात्मा, न्यायी, परोपकारी, ज्ञानी, बुद्धिमान तथा उच्च पदाधिकारी अथवा कुशल व्यवसायी अथवा बडा महात्मा, योगी, धर्म गुरु आदि होता है। यदि इन्द्र-क्षेत्र अशुभ हो तो अवगुणी, नीच कर्म करने वाला तथा दुखी होता है।
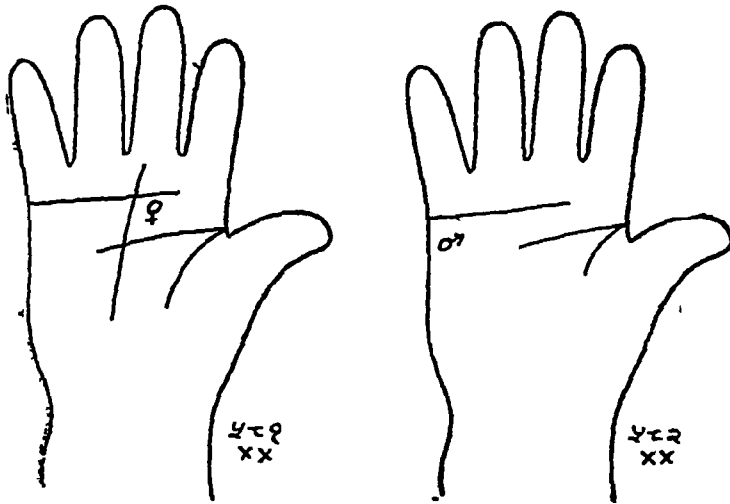
'मंगल-चिह्न' का प्रभाव

चित्र ५८२—यदि प्रथम मंगल-क्षेत्र पर मंगल-चिह्न हो तो जातक सद्गुणी, व्यवहार कुशल, शत्रुजयी, साहसी, धनी, धीर-गम्भीर, पुत्रवान, उच्च-पदाधिकारी तथा जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करने

वाला होता है, परन्तु यदि प्रथम मगल-क्षेत्र निम्न हो तो जातक दुर्गुणों की खान होता है और उसके मित्र ही उसे ठगते हैं।

चित्र ५८३—यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र पर मगल-चिह्न हो तो जातक शूरवीर, बहादुर, उच्चपद प्राप्त करने वाला, कई भाषाओ का ज्ञाता, युद्ध-क्षेत्र में अचल गम्भीर तथा प्रबल मानसिक एव शारीरिक शक्ति सम्पन्न होता है। यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक क्रोधी, घमण्डी, झगडालू तथा दुर्गुणी होता है।
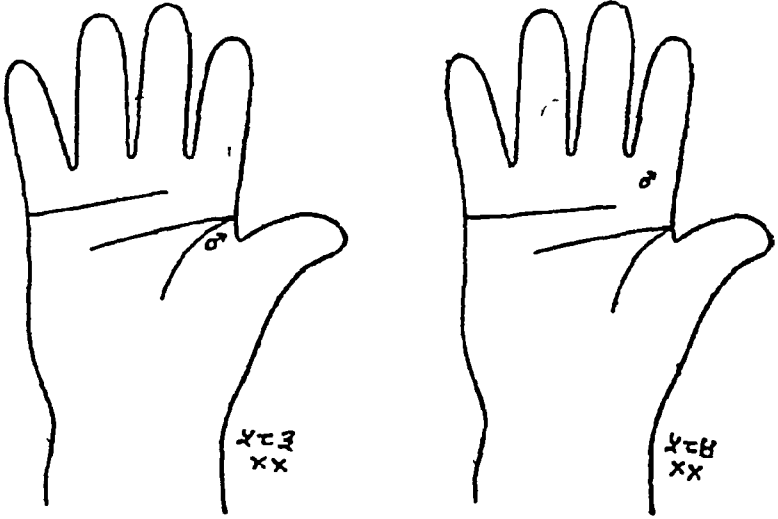
चित्र ५८४—यदि गुरु-क्षेत्र पर मगल-चिह्न हो तो जातक गुप्त विद्याओं का जानकार, विद्वान् परन्तु कठोर स्वभाव वाला और पापात्मा होता है, ऐसे लोग धन-सचय में निपुण तथा युद्ध-क्षेत्र मे प्रबल पराक्रम प्रदर्शित करने वाले होते है। यदि गुरु-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक स्वेच्छाचारी, अहकारी, दुर्गुणी तथा झगड़ालू प्रकृति का होता है और अपनी तन्त्र-मन्त्र आदि विद्याओ का प्रयोग दूसरो को हानि पहुंचाने मे करता है।

चित्र ५८५—यदि शनि-क्षेत्र पर मंगल-चिह्न हो तो जातक धर्मान्ध, विद्वान्, युद्ध प्रिय, शस्त्रास्त्रो का ज्ञाता, साहसी, स्वस्थ तथा निर्भय होता है। उसे यश तथा प्रतिष्ठा की प्राप्ति भी होती है, परन्तु उसके सन्तान नही होती। यदि शनि-क्षेत्र निम्न हो तो ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति कुतर्की, पाखण्डी, धूर्त अपना धर्म त्याग देने को तत्पर, दस्यु-वृत्ति के तथा अपयशी होते हैं।
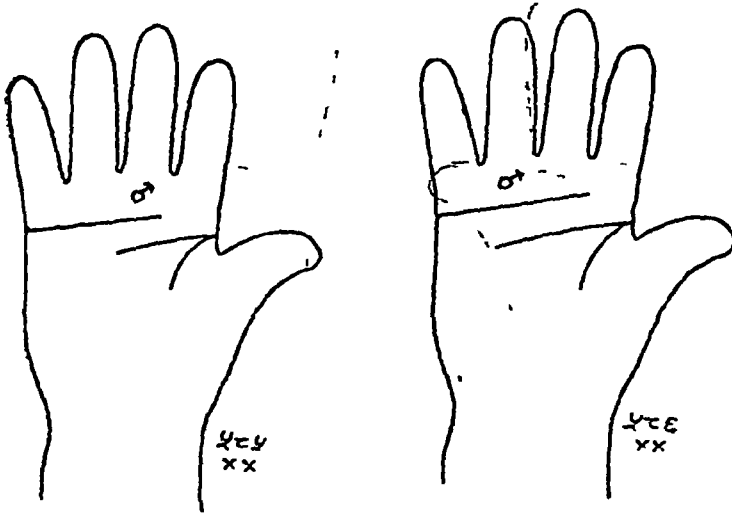
चित्र ५८६—यदि सूर्य-क्षेत्र पर मगल-चिह्न हो तो जातक में शासन करने की शक्ति होती है। वह कुशल चित्रकार, कवि अथवा लेखक होता है। उसे सर्वत्र प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति धनी, परोपकारी, यात्रा-प्रेमी, दानी तथा उदार होते हैं। यदि सूर्य-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक महाक्रोधी, झगडालू, धन-धर्म हीन तथा दुर्गुणी होता है।

चित्र ५८७—यदि बुध-क्षेत्र पर मगल-चिह्न हो तो जातक साहसी, डकैत, कठोर तथा निर्दय स्वभाव वाला होते हुए भी दीनो तथा

असहायों को सहायता करता है, परन्तु कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसे व्यक्ति गुणवान्, धर्मात्मा, बलवान, उच्च पदाधिकारी अथवा कुशल व्यवसायी होते हैं। यदि बुध-क्षेत्र निम्न हो तो जातक दुर्गुणों की खान होता है।
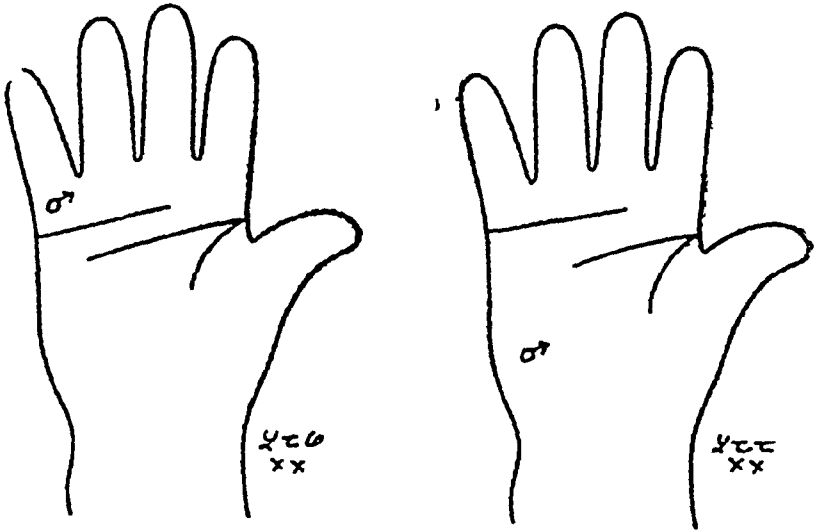
चित्र ५८८—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर मंगल-चिह्न हो तो जातक धन, यश, मान-प्रतिष्ठा, प्राप्त करने वाला कुशल व्यवसायी तथा शरीर से स्वस्थ रहता है। ऐसे लोग शान्त, विनम्र, मधुरभाषी, कवि, लेखक नीति निपुण तथा होशियार होते हैं। यदि चन्द्र-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक कामी, कुटिल, धूर्त, झगड़ालू, घमण्डी, अविश्वासी, व्यभिचारी तथा दुःखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चित्र ५८९—यदि शुक्र-क्षेत्र पर मंगल-चिह्न हो तो जातक बल-वान, स्वस्थ, मानसिक शक्ति सम्पन्न, प्रेमी, समझदार, मिलनसार, दयालु, अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला, उत्साही, धनी, यशस्वी

गुणी तथा दयालु होता है। यदि शुक्र-क्षेत्र अशुभ हो तो व्यभिचारी, अघोर, पापी तथा नीच कर्म करने वाला अपयशी होता है।
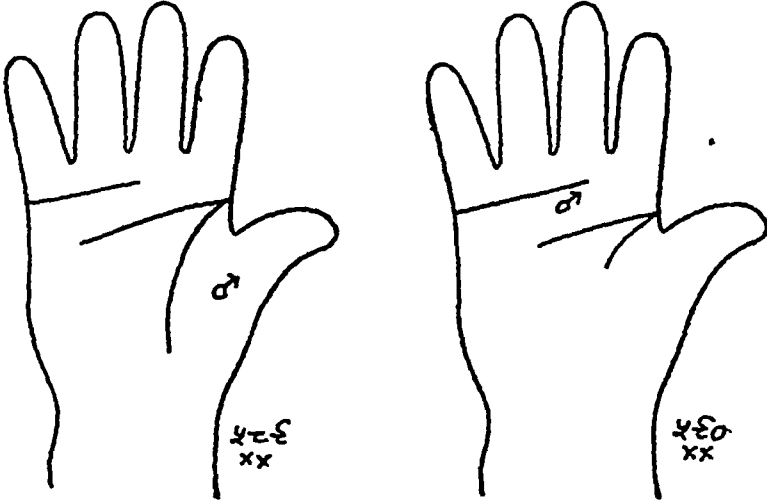
चित्र ५९०—यदि राहु-क्षेत्र पर मंगल-चिह्न हो तो जातक हृष्ट-पुष्ट, शल्य-क्रिया में निपुण, चतुर तथा अपने पिता को सुख देने वाला होता है। यदि राहु-क्षेत्र अशुभ हो तो नीच-कर्मरत, अनेक प्रकार के रोगो से ग्रस्त, दुर्भाग्यशाली तथा निन्दनीय होता है।

चित्र ५९१—यदि केतु-क्षेत्र पर मंगल-चिह्न हो तो जातक यात्रा-प्रिय, विद्वान, अत्यन्त धनी, सुखी, परोपकारी, स्वावलम्बी, सत्यवादी, दृढ़ प्रतिज्ञ, परिश्रमी, प्रतिभाशाली, धार्मिक-विषयो का ज्ञाता तथा मेधावी होता है। उसे धन, वाहन, स्त्री-पुत्रादि का पूर्ण सुख प्राप्त होता है।

चित्र ५९२—यदि प्रजापति-क्षेत्र पर मंगल-चिह्न हो तो जातक निर्भय, साहसी, कुशल व्यवसायी अथवा वैज्ञानिक, परिश्रमी, क्रियाशील प्रतिष्ठित तथा स्वतन्त्र प्रकृति का होता है। यदि प्रजापति-क्षेत्र
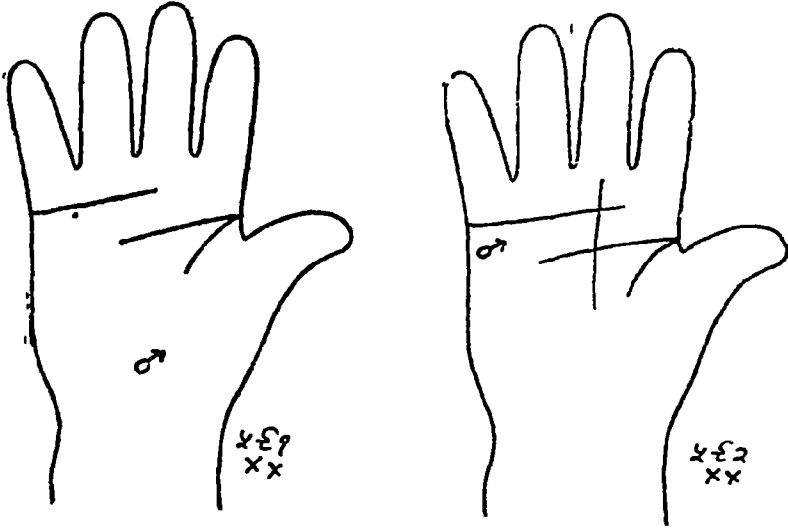
अशुभ हो तो अन्यायी, डरपोक, झगड़ालू, क्रोधी तथा यात्रा के समय सकटो का सामना करने वाला होता है।

चित्र ५९३—यदि वरुण-क्षेत्र पर मगल-चिह्न हो तो जातक विद्वान, धर्मात्मा, चरित्रवान, न्यायी, परोपकारी तथा दयालु होता हैं, वह कवि अथवा साहित्यकार भी हो सकता है। ऐसे चिह्न वाले लोग सर्वत्र यश, प्रतिष्ठा तथा धन प्राप्त करते है। यदि वरुण-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक क्रोधी, झगड़ालू तथा मस्तिष्क सम्बन्धी रोगो से पीड़ित रहता है।

चित्र ५९४—यदि इन्द्र-क्षेत्र पर मगल-चिन्ह हो तो जातक उच्च पद प्राप्त करने वाला, विद्वान, प्रतिष्ठित, यशस्वी, गुणी, प्रभावशाली तथा स्पष्टवादी होता है। यदि इन्द्र-क्षेत्र अशुभ हो तो रक्त विकार से ग्रस्त, हृदय तथा मस्तिष्क से दुर्बल एवं किसी स्त्री के प्रेम मे पड़-कर अपयश प्राप्त करने वाला होता है।
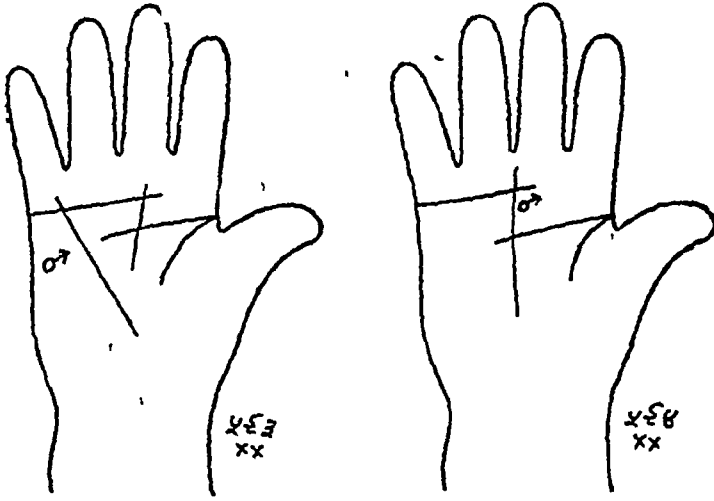
'राहु-केतु-चिह्न' का प्रभाव

राहु और केतु इन दोनों ग्रहो का चिह्न एक ही होता है, जिसे राहु-केतु-चिह्न कहा जाता है। चूकि राहु और केतु—ये दोनो ही ग्रह एक ही शरोर के दो हिस्से माने गये हैं, अत. इन दोनो का मानव-जीवन पर प्रभाव भी एक जैसा ही पडता है। यहा पर विभिन्न ग्रह-क्षेत्रो पर स्थित राहु-केतु-चिह्न के जातक के जीवन पर प्रभाव का सम्मिलित वर्णन किया जा रहा है। स्मरणीय है कि अधिकाश पाश्चात्य विद्वानो ने राहु-केतु-ग्रहो के अस्तित्व को स्वीकार नही किया है, वे केवल (१) सूर्य, (२) चन्द्र, (३) मंगल, (४) बुध, (५) गुरु, (६) शुक्र और (७) शनि—इन सात ग्रहो को ही मानते हैं।

प्रस्तुत प्रकरण मे वर्णित फलादेश को प्राच्य तथा आधुनिक भारतीय विद्वानो के मतानुसार प्रस्तुत किया गया है।

चित्र ५६५—यदि राहु-क्षेत्र पर 'राहु-केतु-चिह्न' हो तो जातक शारीरिक तथा मानसिक दृष्टि से दुर्बल, दीन, दरिद्र, अधर्मी, मूर्ख, अनेक प्रकार के रोगो से युक्त तथा भाग्य-हीन होता है। यदि राहु-क्षेत्र अशुभ हो तो इस चिह्न का अशुभ प्रभाव और अधिक बढ जाता है।
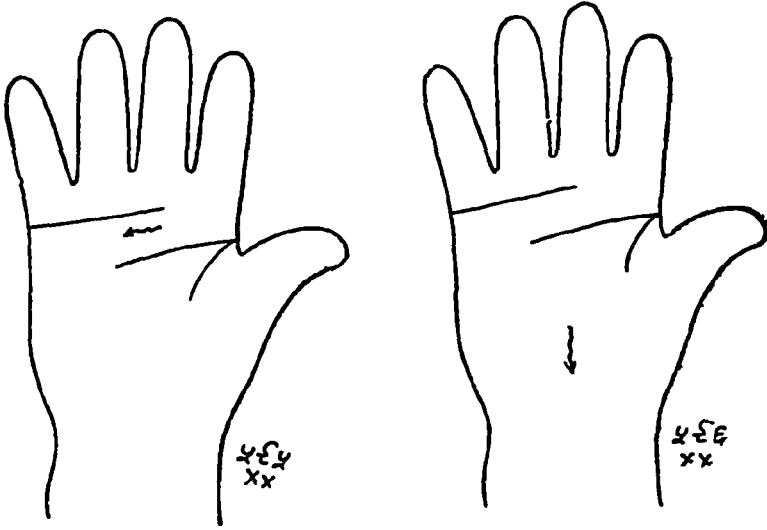
चित्र ५६६—यदि केतु-क्षेत्र पर राहु-केतु-चिह्न हो तो जातक को पूर्वोक्त राहु-क्षेत्रीय अशुभ फल प्राप्त होते है। केतु-क्षेत्र पर राहु-केतु-चिह्न वाला जातक अधिक निराश, दुःखी तथा चिन्तित जीवन व्यतीत करता है।

चित्र ५६७—यदि गुरु-क्षेत्र पर राहु केतु-चिह्न हो तो जातक अवगुणी, नीच कर्म करने वाला, निराश, दुःखी तथा दरिद्री होता है। यदि गुरु-क्षेत्र अशुभ हो तो इस चिह्न का दुष्प्रभाव और अधिक बढ जाता है।

चित्र ५६८—यदि शनि-क्षेत्र पर राहु-केतु-चिह्न हो तो जातक आध्यात्मिक प्रवृत्ति का, दुनियां से विरक्त; एकान्त, शान्त, भ्रष्ट,
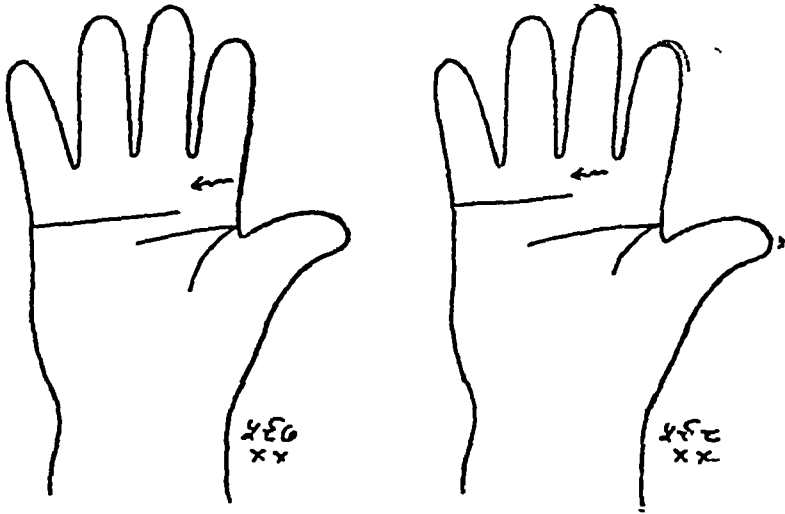
दुराचारी, तन्त्र सिद्धि आदि कापालिक क्रियाओं को करने वाला तथा अविचारी होता है। यदि शनि-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक मे उक्त दुर्गुण और अधिक मात्रा मे पाये जाते है।

चित्र ५६६—यदि सूर्य-क्षेत्र पर राहु-केतु-चिह्न हो तो जातक व्यवसाय आदि में असफलता प्राप्त करने वाला, निराश, दुःखी, दरिद्र तथा चिन्तित होता है। प्रसिद्धि प्राप्त करने के लिए प्रयत्न करने पर भी उसे अपयश ही मिलता है। यदि सूर्य-क्षेत्र अशुभ हो तो उक्त दुष्प्रभाव और अधिक वढ जाता है।

चित्र ६००—यदि वुध-क्षेत्र पर राहु-केतु-चिह्न हो तो जातक प्रतिभाशाली लेखक अथवा कवि होने पर भी यश प्राप्त नही कर पाता। वह सदैव उदास तथा दुःखी जीवन व्यतीत करता है। कोई-न-कोई रोग एवं चिन्ता उसे हर समय लगी रहती है। यदि वुध-क्षेत्र अशुभ हो तो उक्त दुष्प्रभाव और अधिक वढ जाता है।
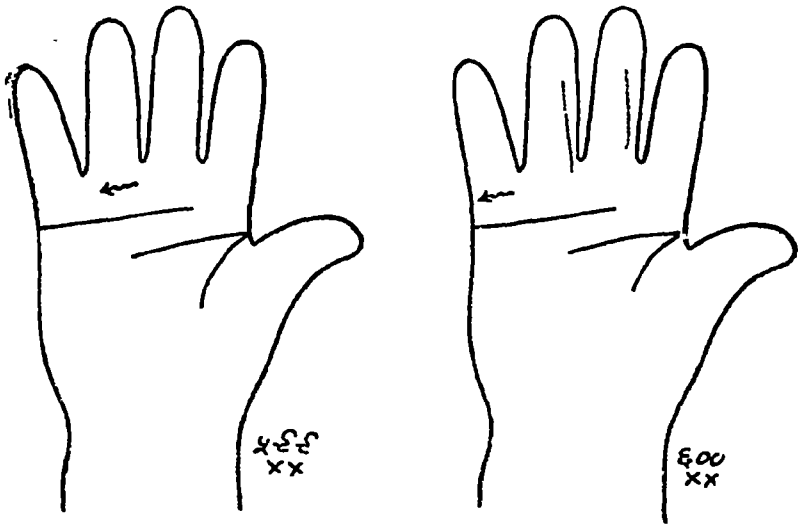
चित्र ६०१—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर राहु-केतु-चिह्न हो तो जातक दीन-हीन, दुर्बल, मलिन, कुरूप तथा दरिद्री होता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति यदि धनी घर मे जन्म ले तो भी उनकी सम्पत्ति नष्ट हो जाती है। इस चिह्न के दुष्प्रभाव से जातक श्वास-जलोदर, यक्ष्मा आदि रोगों का शिकार बनता है। यदि चन्द्र-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक बाल्यावस्था मे ही अनाथ हो जाता है और उसका अनाथालय आदि में पालन-पोषण होता है। सम्भव है कि उसका धर्म-परिवर्तन भी कर दिया जाय।

चित्र ६०२—यदि शुक्र-क्षेत्र पर राहु-केतु-चिह्न हो तो जातक अधर्मी, दरिद्री, निन्कद्यर्म करने वाला, कुरूप, स्त्रियो का द्वेषी, भाई-बन्धुओं से झगडा करने वाला, चिन्तातुर तथा निराश होता है। यदि शुक्र-क्षेत्र अशुभ हो तो ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति प्राय. भिक्षावृत्ति करते हुए जीवन व्यतीत करते हैं।
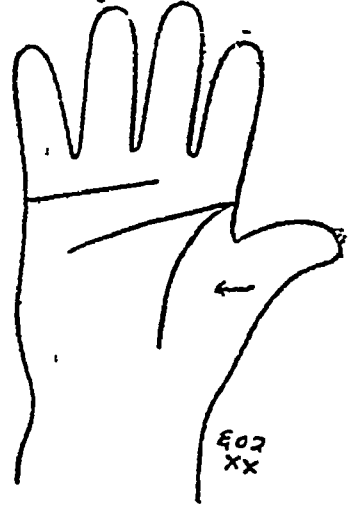
चित्र ६०३—यदि प्रथम मंगल-क्षेत्र पर राहु केतु चिह्न हो तो जातक शारीरिक एवं मानसिक शक्तियो से हीन, अवगुणी, डरपोक,

दुर्बल, निराश, चिन्तित तथा दु:खी होता है। वह मेहनत-मजदूरी करते हुए अपना उदरपोषण करता है। यदि उक्त-चिह्न की कोई शाखा जीवन-रेखा का स्पर्श करती हो अथवा उसे काट देती हो तो जातक को सर्पदंश, विष-पान आदि से मृत्यु होती है। यदि प्रथम मंगल-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक का दुर्भाग्य और अधिक बढ जाता है।

चित्र ६०४—यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र पर राहु-केतु-चिह्न हो तो जातक समाज मे तिरस्कृत, दीन-हीन तथा अपयशपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वह हर समय निराश, चिन्तित तथा रोगी बना रहता है। ऐसे व्यक्तियो का जीवन दुर्भाग्यपूर्ण रहता है और वे कभी उन्नति नही कर पाते। यदि द्वितीय मगल-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक के जीवन पर उसका अधिक दुष्प्रभाव पड़ता है।
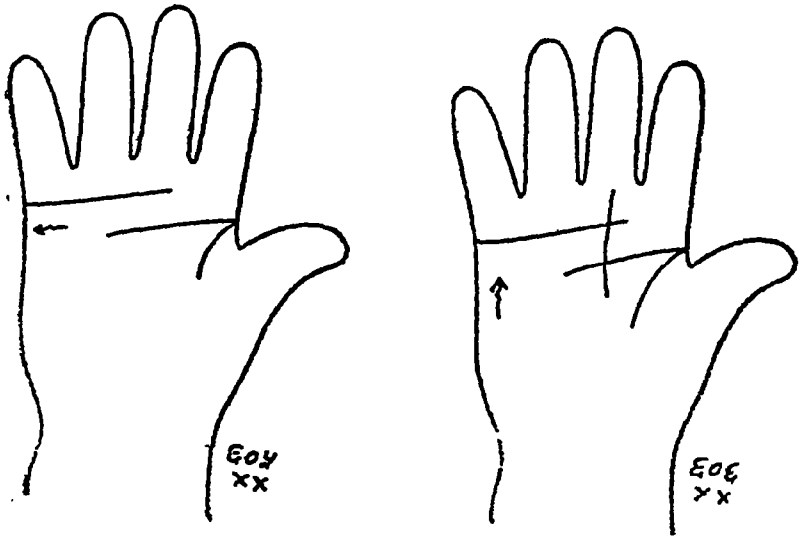
चित्र ६०५—यदि प्रजापति-क्षेत्र पर राहु-केतु-चिह्न हो तो जातक कोई छोटा-मोटा काम करके उदरपूर्ति करने वाला, निराश, दु खी तथा भाग्यहीन होता है। यदि प्रजापति-क्षेत्र अशुभ हो तो उसका दुर्भाग्य और अधिक बढ जाता है।

चित्र ६०६—यदि वरुण-क्षेत्र पर राहु-केतु-चिह्न हो तो जातक धर्म-कर्म से हीन, मूर्ख, अव्यवहारी मलिन, रोगी तथा पराधीन जीवन व्यतीत करने वाला होता है। यदि वरुण-क्षेत्र अशुभ हो तो उसकी निराशा एव दुर्भाग्य मे और अधिक वृद्धि हो जाती है।
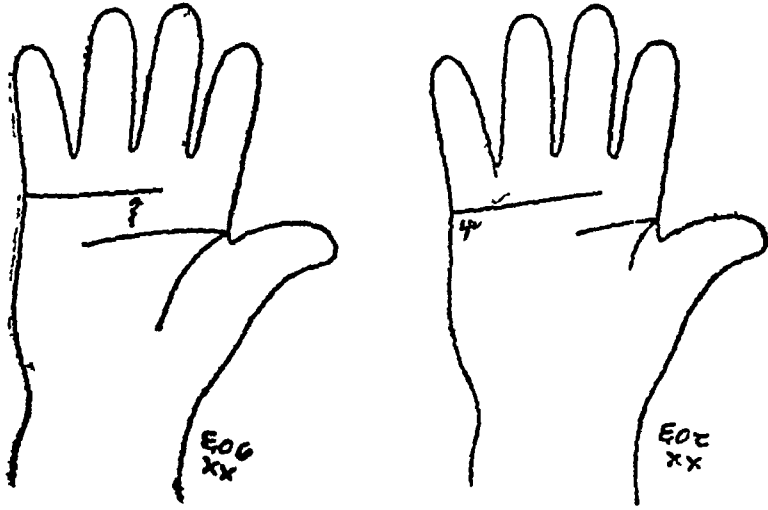
चित्र ६०७—यदि इन्द्र-क्षेत्र पर राहु-केतु-चिह्न हो तो जातक फेरी आदि लगाकर जीविकोपार्जन करने वाला, भ्रमण-शील, दु खी, रोगी, दरिद्र तथा चिन्तातुर होता है। यदि इन्द्र-क्षेत्र अशुभ हो तो उसे हृदय-रोग, मस्तक-पीड़ा आदि होने की सभावना भी रहती है तथा उसका दुर्भाग्य अधिक बढ जाता है।

'प्रजापति-चिह्न' का प्रभाव

'प्रजापति' अथवा 'हर्षल-ग्रह' भी आधुनिक युग के खगोल शास्त्रियो की नवीन खोज है। इस ग्रह के चिह्न के प्रभाव का वर्णन भी आधुनिक विद्वानो के नवीन मतानुसार किया गया है।

चित्र ६०८—यदि प्रजापति-क्षेत्र पर प्रजापति-चिह्न हो तो जातक शूर-वीर, परिश्रमी, युद्ध क्षेत्र में विजय प्राप्त करने वाला उच्च पदाधिकारी अथवा सफल व्यवसायो, दृढ निश्चयी, धनी, यशस्वी तथा आत्मविश्वासी होता है। यदि प्रजापति-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक छल-छिद्र युक्त, आलसी, निराश, कठिनाई से जीविकोपार्जन करने वाला, दुःखी तथा दुर्भाग्यशालो होता है।

चित्र ६०९—यदि गुरु-क्षेत्र पर प्रजापति-चिन्ह हो तो जातक विद्वान् परिश्रमी, शस्त्र तथा शास्त्र-विद्या में प्रवोण, बुद्धिमान्, युद्ध-क्षेत्र मे
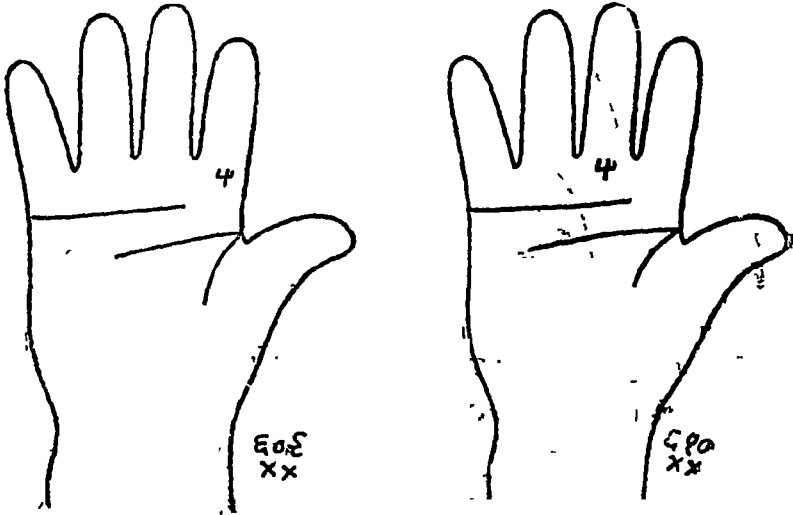
विजय तथा यश प्राप्त करने वाला, सुखी एव सौभाग्यशाली होता है। यदि गुरु-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक स्वस्थ एवं बलवान तो होता है, परन्तु वह व्यर्थ के लडाई-झगडे मे लगा रहता है और क्रोधी, अहंकारी तथा दुष्ट-बुद्धि वाला होता है।

चित्र ६११०—यदि शनि-क्षेत्र पर प्रजापति-चिह्न हो तो जातक युद्ध-क्षेत्र मे विजय प्राप्त करने वाला, पुरुषार्थी, क्रियाशील, शस्त्र तथा शास्त्र विद्या में प्रवीण, सैनिक, स्वस्थ, बलवान् तथा धैर्यवान होता है। यदि शनि-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक दुष्ट-स्वभाव का, निन्य कर्म करने वाला, झगड़ालू, मलिन, उदास तथा दुःखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चित्र ६१११—यदि सूर्य-क्षेत्र पर प्रजापति-चिह्न हो तो जातक परिश्रमी, क्रियाशोल, कलाकौशल का जानकार, यशस्वी, सर्वत्र सम्मान प्राप्त करने वाला, प्रतापी तथा सुखी होता है। यदि सूर्य-क्षेत्र अशुभ हो तो
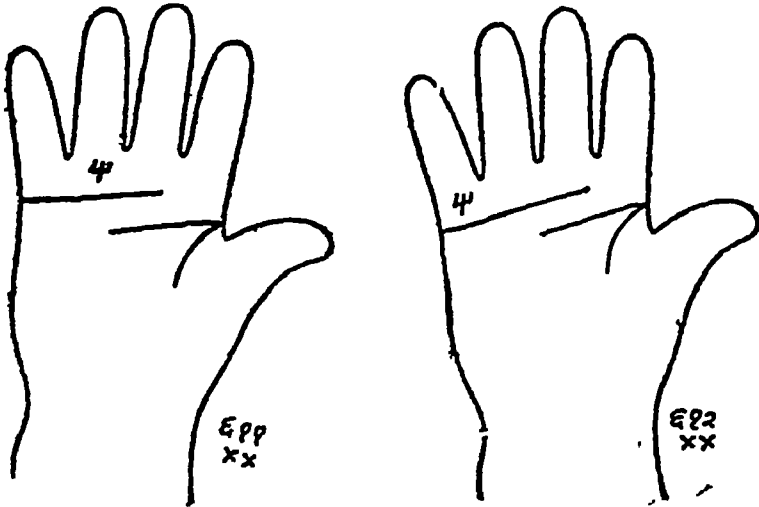
जातक धर्म-कर्म से हीन, दुष्ट स्वभाव का, क्रोधी, झगडालू तथा निर्धन होता है।

चित्र ६१२—यदि बुध-क्षेत्र पर प्रजापति-चिह्न हो तो जातक ज्ञान-विज्ञान का ज्ञाता, दार्शनिक, नवीन आविष्कार करने वाला, कलाकार, सफल व्यवसायी अथवा योग्य अध्यापक होता है। यदि बुध-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक जुआरी, चोर, चचल हृदय तथा अस्थिर विचारो वाला, अपयशी, निर्धन तथा नीच-कर्म करने वाला होता है।
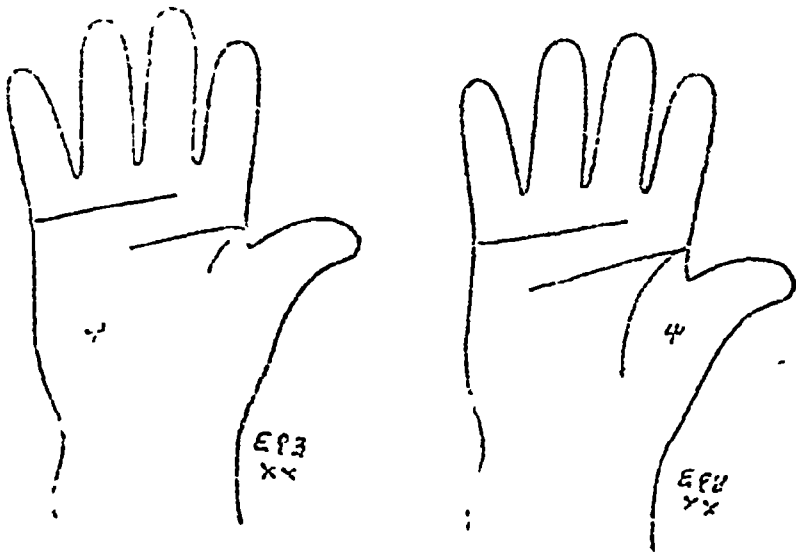
चित्र ६१३—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर प्रजापति-चिह्न हो तो जातक परिश्रमी, मिलनसार, प्रतिभाशाली कवि अथवा लेखक, संगीतज्ञ अथवा कुशल व्यवसायी, धर्मात्मा, दानी, परोपकारी तथा समाज मे मान-प्रतिष्ठा एव यश प्राप्त करने वाला होता है। ऐसे चिह्न वाले पुरुषों की ओर स्त्रियां अधिक आकर्षित होती है। यदि चन्द्र-क्षेत्र अशुभ हो

तो जातक कामासक्त, विषयी, रोगी तथा विचार-हीन होता है। स्त्रियो के हाथ मे ऐसा चिह्न हो तो वे व्यभिचारिणी होती है।

चित्र ६१४—यदि शुक्र-क्षेत्र पर प्रजापति-चिह्न हो तो जातक नीतिवान, प्रेमी, जलयात्रा का शौकीन, श्वेत रग के वस्त्राभूषण धारण करने वाला, अनेक स्त्रियों से सम्बन्ध रखने वाला, परोपकारी, यशस्वी, सम्मानित, धनी तथा सुखी होता है। यदि शुक्र-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक प्रेम के मामले मे अघोर, मन्द-बुद्धि, प्रपची, धोखेबाज, कामी, व्यभिचारी, दरिद्र तथा समाज मे अपयश प्राप्त करने वाला होता है।
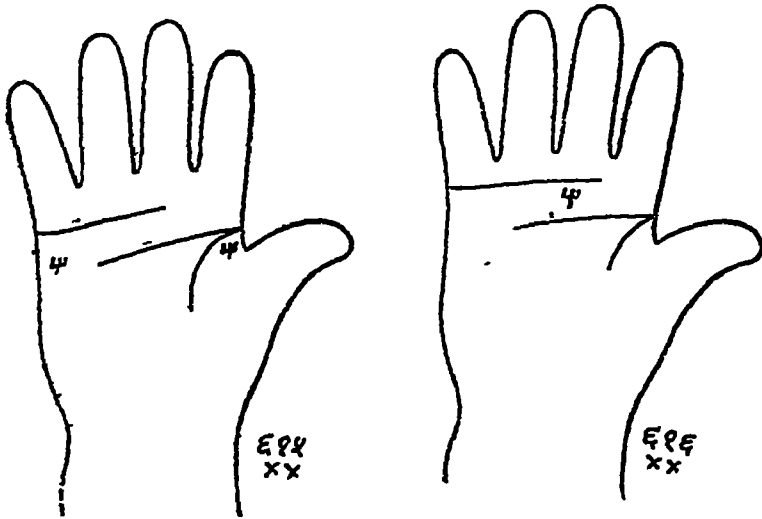
चित्र ६१५—यदि मगल क्षेत्र पर प्रजापति-चिह्न हो तो जातक प्रतापी, बलवान, शूर-वीर, अस्त्र-शस्त्र विद्या मे निपुण, परोपकारी, पराक्रमी, न्यायी, धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है। यदि मगल-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक मे उक्त सभी गुण कम मात्रा मे पाये जाते हैं। दोनो ही मगल-क्षेत्र पर इस चिह्न का एक-सा प्रभाव होता है।

चित्र ६१६—यदि राहु-क्षेत्र पर प्रजापति-चिह्न हो तो जातक भाग्यवान, धनवान परिश्रमी तथा अनेक कार्यों मे सफलता प्राप्त करने वाला होता है। यदि राहु-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक को उन्माद आदि मस्तिष्क-सम्बन्धी रोग होते हैं और उसका जीवन दुःखपूर्ण व्यतीत होता है।
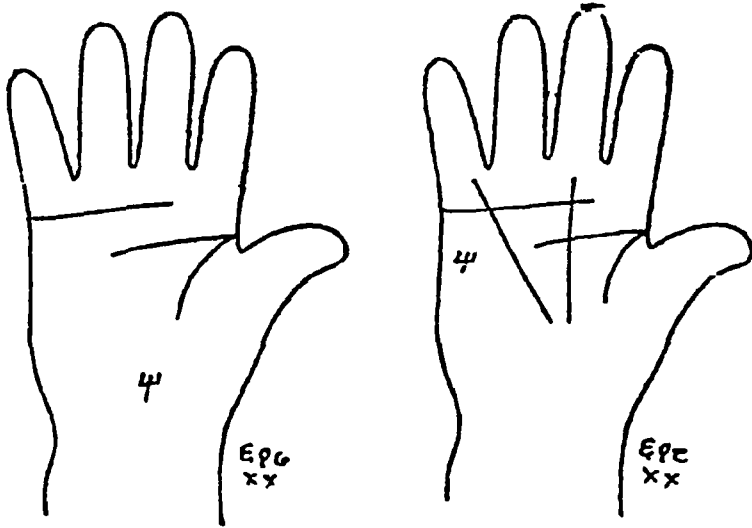
चित्र ६१७—यदि केतु-क्षेत्र पर प्रजापति-चिह्न हो तो जातक भाग्यवान, सट्टा, लाटरी, रेस आदि से धन कमाने वाला, सुखी तथा परिश्रमी होता है। यदि केतु-क्षेत्र अशुभ हो तो सट्टे-लाटरी आदि मे धन गवाने वाला तथा धर्म के विरुद्ध आचरण करने वाला होता है।

चित्र ६१८—यदि वरुण-क्षेत्र पर प्रजापति-चिह्न हो तो जातक विद्वान्, परोपकारी, नीतिज्ञ, धर्मात्मा, अचल वक्ता, राजनीति के क्षेत्रो मे सफलता प्राप्त करने वाला, दार्शनिक, धनी, सुखी तथा यशस्वी होता है। यदि वरुण-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक कुटिल, अहकारी, स्वार्थी तथा झगड़ालू प्रकृति का होता है।

चित्र ६१९—यदि इन्द्र-क्षेत्र पर प्रजापति-चिह्न हो तो जातक विद्वान्, दार्शनिक, परिश्रमी, दयालु, परोपकारी तथा अपनी अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाला होता है। वृद्धावस्था मे उसे अधिक सुख एव शान्ति प्राप्त होती है। यदि इन्द्र-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक ईर्ष्यालु, द्वेषी, हृदय रोगी तथा चिन्तातुर होता है।
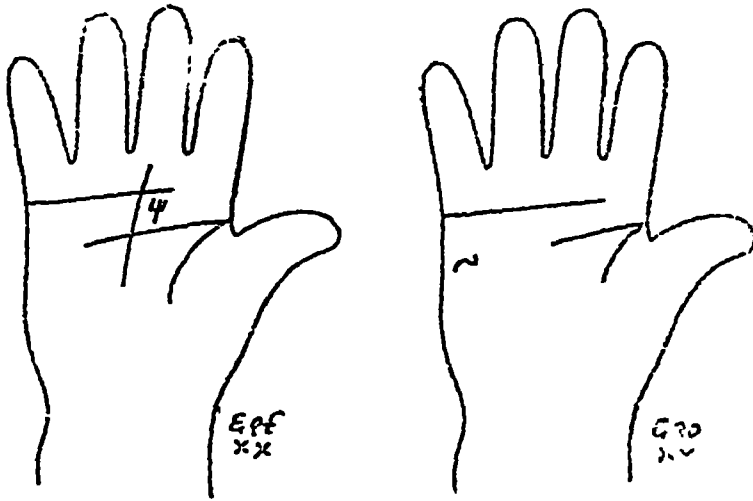
'वरुण-चिन्ह' का प्रभाव

'वरुण' अथवा 'नेपच्यून-ग्रह' भी आधुनिक युग के खगोल शास्त्रियो की नवीन खोज है। इस ग्रह के चिह्न के प्रभाव का वर्णन भी आधुनिक-विद्वानो के नवीन मतानुसार किया गया है।

चित्र ६२०—यदि वरुण-क्षेत्र पर वरुण-चिह्न हो तो जातक बहुत ऊंचा पद प्राप्त करने वाला महान् व्यक्ति होता है। उसे सब प्रकार से सुख, यश, धन तथा सफलताओ की प्राप्ति होती है। यदि वह सन्यासी

प्रकृति का हुआ तो उच्च-कोटि का महात्मा होता है। यदि वरुण-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक के उक्त गुणो मे कुछ कमी आ जाती है।

चित्र ६२१—यदि गुरु-क्षेत्र पर वरुण-चिह्न हो तो जातक दयालु, विद्वान्, धर्मात्मा तथा अत्यन्त भाग्यशाली और यशस्वी होता है। उसे स्त्री, पुत्र, धन, वाहन, मित्र, सम्पत्ति आदि सभी प्रकार के ऐश्वर्य प्राप्त होते हैं। यदि गुरु-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक अहकारी तथा व्यर्थ का रौब जमाने वाला होताहै।
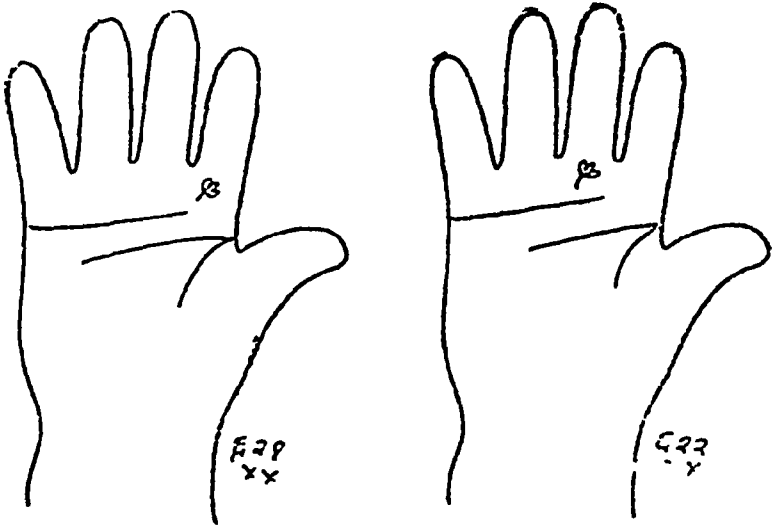
चित्र ६२२—यदि शनि-क्षेत्र पर वरुण-चिह्न हो तो जातक प्रतापी, ऐश्वर्यवान, परोकारी, भाग्यशाली, यात्रा-प्रेमी, धर्मात्मा, दानी, सुखी, दार्शनिक तथा तार्किक होता है। यदि शनि-क्षेत्र अशुभ हो तो वैराग्य-वान, साधु-सन्यासी अथवा एकान्तवासी और निराश-जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चित्र ६२३–यदि सूर्य-क्षेत्र पर वरुण-क्षेत्र चिह्न हो तो जातक बुद्धिमान, पराक्रमी, विद्वान, उच्च पदाधिकारी, महत्वाकाक्षी, सौभाग्यशाली तथा शासन की शक्ति रखने वाला होता है। यदि सूर्य-क्षेत्र अशुभ हो तो भी जातक समाज मे आदरणीय स्थान प्राप्त करने वाला तथा यशस्वी हाता है, परन्तु उसकी आर्थिक स्थिति सुदृढ नही होती।
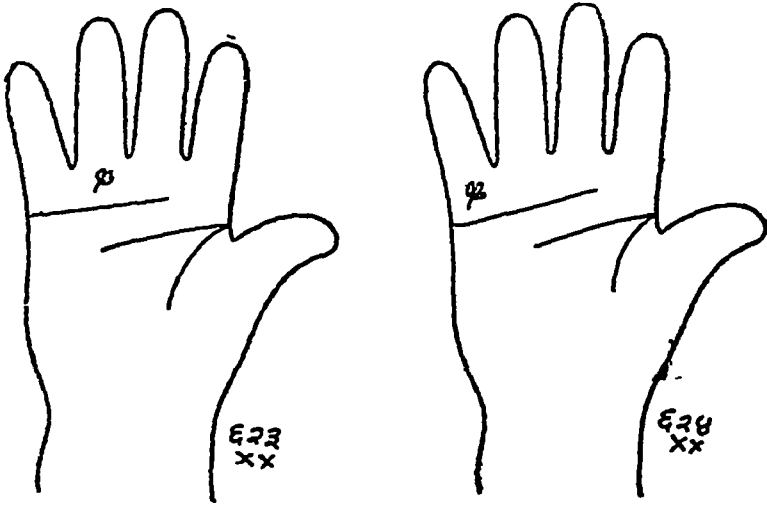
चित्र ६२४—यदि बुध-क्षेत्र पर वरुण-चिह्न हो तो जातक ज्ञान-विज्ञान का ज्ञाता अथवा कुशल व्यवसायो, आविष्कारक, क्रीडा-प्रेमी, सौदर्य-प्रेमी, बुद्धिमान, यशस्वी, धनी तथा सुखी होता है। यदि बुध-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक अस्थिर चित्त वाला, निर्द्वन्द्व, चपल, खिलाड़ी तथा आर्थिक दृष्टि से मध्यम होता है।

चित्र ६२५—यदि मगल-क्षेत्र पर वरुण-चिह्न हो तो जातक विद्वान्, नीति कुशल, साहसो, पराक्रमी, प्रतापी, उद्यमी, वात का धनो, दृढ़-निश्चयी तथा युद्ध-क्षेत्र मे वीरता प्रदर्शित करने वाला उच्च-

पदाधिकारी होता है। यदि मगल-क्षेत्र अशुभ हो तो कामी होता है और उक्त गुणो मे कमी आ जाती है। दोनो ही मगल-क्षेत्रो पर इस चिह्न का प्राय. एक जैसा प्रभाव होता है।
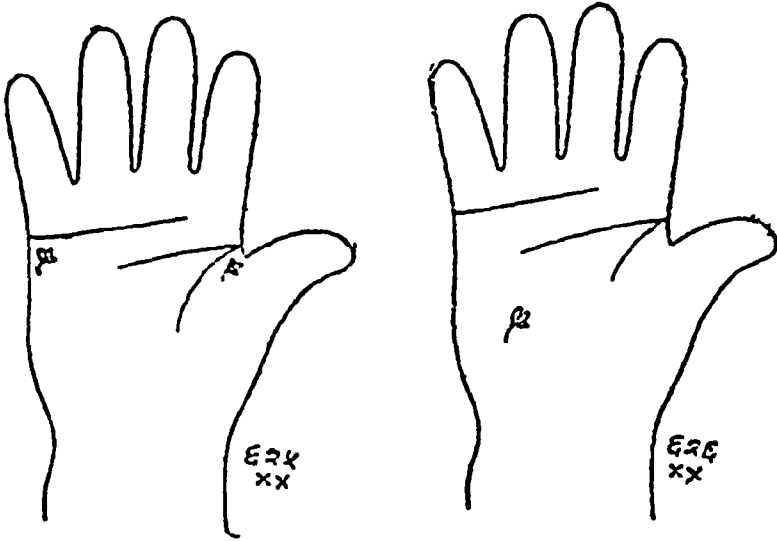
चित्र ६२६—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर वरुण-चिह्न हो तो जातक सुन्दर, मधुरभाषी, प्राकृतिक-सौंदर्य का प्रेमी, धर्मात्मा, विद्वान्, कलाकार, दार्शनिक, प्रतिभाशाली कवि अथवा लेखक, यशस्वी, उदार, परोपकारी, स्त्रियो को विशेष रूप से आकर्षित करने वाला, यात्रा प्रेमी तथा सुखी होता है। यदि चन्द्र-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक व्यभिचारी, कामी तथा आचार-विचार-हीन होता है । ऐसे चिह्न वाली स्त्रिया भी पर-पुरुष-गामिनी होती है।

चित्र ६२७—यदि शुक्र-क्षेत्र पर वरुण-चिह्न हो तो जातक परोपकारी, सगीतज्ञ, स्त्रियो को विशेष प्रिय, न्यायी, प्रतिष्ठित, यशस्वी, विशुद्ध प्रेमी, जल-यात्रा का शौकीन तथा सुखी-जीवन व्यतीत करने वाला

होता है। शुक्र-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक कामासक्त, व्यभिचारी तथा मद्यपी होता है, जिसके कारण उसे अपयश की प्राप्ति होती है। फिर भी उसमे उक्त गुण कुछ कम मात्रा मे अवश्य पाये जाते हैं।
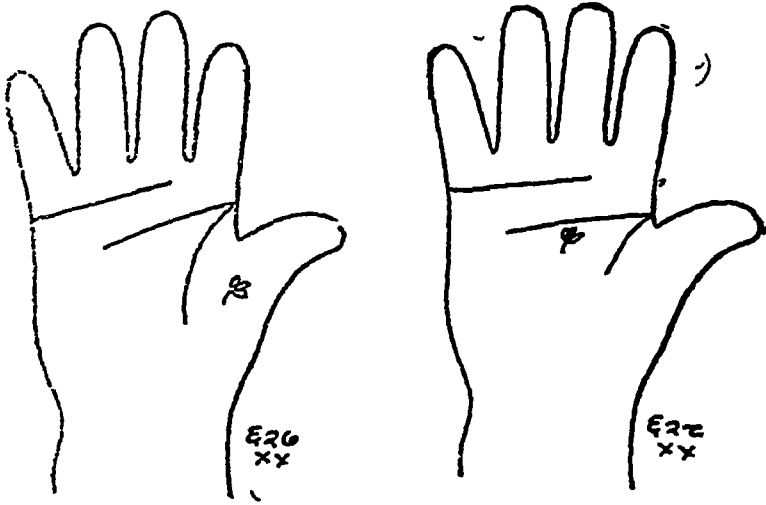
चित्र ६२८—यदि राहु-क्षेत्र पर वरुण-चिह्न हो तो जातक भाग्यवान, विद्वान्, धनी, परोपकारी, सुखी-जीवन व्यतीत करने वाला, यात्रा-प्रेमी धर्मात्मा तथा व्यवहार-कुशल होता है। यदि राहु-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक युवावस्था मे ऐश्वर्यों का 'भोग करने वाला, अपव्ययी तथा अधार्मिक होता है और उसे वृद्धावस्था मे अधिक कष्ट उठाना पड़ता है।

चित्र ६२९—यदि केतु-क्षेत्र पर वरुण-चिह्न हो तो जातक अत्यन्त भाग्यशाली, धनी, माता-पिता का भक्त, सुखी, इष्ट-मित्र, वाहन, स्त्री-पुत्रादि के सुख से युक्त तथा समाज में सम्मानित होता है। यदि केतु-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक लोभी, चिन्तित तथा उदास प्रकृति का होता है, यद्यपि उसे धन आदि की कोई कमी नही होती।
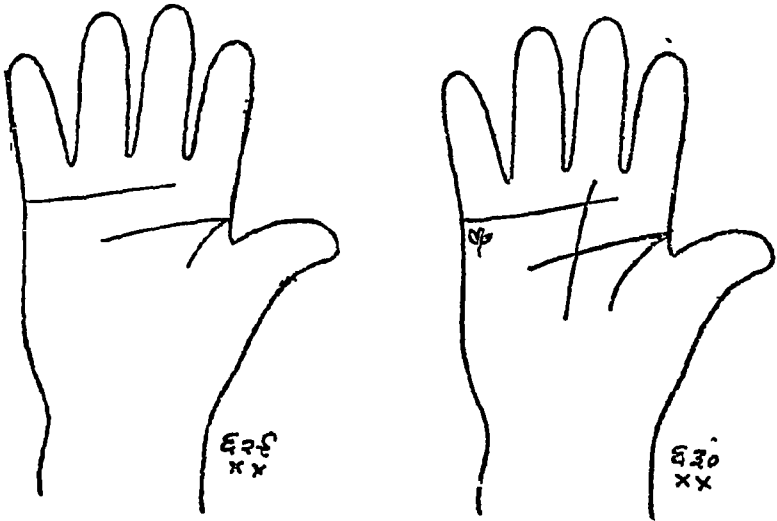
चित्र ६३०—यदि प्रजापति-क्षेत्र पर वरुण-चिह्न हो तो जातक शारीरिक, मानसिक एव आध्यात्मिक शक्ति से पूर्ण, उच्च-कोटि का ज्ञानी, विज्ञानी, गुप्त विद्याओ का ज्ञाता, योगी अथवा वैज्ञानिक होता है। उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे सफलता प्राप्त होती है। यदि प्रजापति-क्षेत्र अशुभ हो तो उक्त गुणो मे कुछ कमी आ जाती है।

चित्र ६३१—यदि इन्द्र-क्षेत्र पर वरुण-चिह्न हो तो जातक दार्शनिक, वैज्ञानिक, उच्च विचारो वाला, शास्त्रज्ञ, धर्मात्मा, ज्ञानी, परोपकारी, ईश्वर-भक्त, सुखी तथा अत्यन्त यशस्वी होता है। यदि इन्द्र-क्षेत्र अशुभ हो तो उक्त शुभ प्रभाव एव लक्षणो मे कुछ कमी आ जाती है।

'इन्द्र-चिह्न' का प्रभाव

'इन्द्र' अथवा 'प्लेटो-ग्रह' भी आधुनिक-युग के खगोल शास्त्रियों की नवीन खोज है। इस ग्रह के चिह्न के प्रभाव का वर्णन भी आधुनिक विद्वानो के नवीन मतानुसार किया गया है।
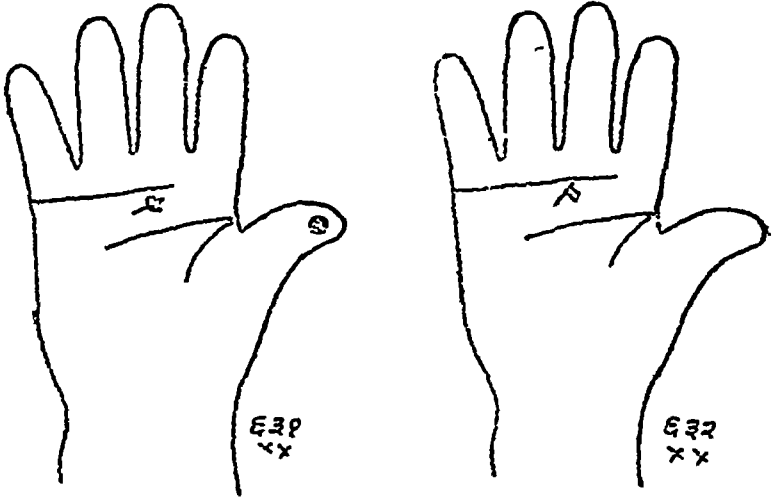
चित्र ६३२—यदि इन्द्र-चिह्न इन्द्र-क्षेत्र पर हो तो जातक अत्यधिक सम्पत्तिशाली, धर्मात्मा, परोपकारी, दयालु, दानी, यात्रा-प्रेमी, सुखी, शान्त, विनम्र, सच्चरित्र तथा समाज मे अत्यन्त प्रतिष्ठित व यशस्वी होता है। यदि इन्द्र-क्षेत्र अशुभ हो तो उक्त सद्‌गुणो एव सौभाग्य में कमी आ जाती है और वह सामान्य परन्तु सुखी-जीवन व्यतीत करता है।

चित्र ६३३—यदि इन्द्र-चिह्न गुरु-क्षेत्र पर हो तो जातक बुद्धिमान्, भाग्यशाली, महाविद्वान्, वेदान्ती, तार्किक, उच्चपदाधिकारी, युद्ध-क्षेत्र मे विजय प्राप्त करने वाला तथा दार्शनिक प्रवृत्ति का होता है। यदि गुरु-क्षेत्र अशुभ हो तो उक्त प्रभाव में कमी आ जाती है, जिसके कारण जातक अधिक उन्नति नही कर पाता।

चित्र ६३४—यदि इन्द्र-चिन्ह शनि-क्षेत्र पर हो तो जातक बुद्धिमान, भाग्यशाली, परोपकारी, धार्मिक, ईश्वर-भक्त, दानी, शान्त, विनीत, समाज मे सम्मान प्राप्त करने वाला, सच्चरित्र, सुखी, धनी, उदार तथा शुभ-गुण-सम्पन्न होता है। यदि शनि-क्षेत्र अशुभ हो तो

उक्त शुभ प्रभाव में कमी आ जाती है और जातक दीर्घसूत्री, अशान्त, रूखा, ईर्ष्यालु तथा द्वेषी स्वभाव वाला बन जाता है।
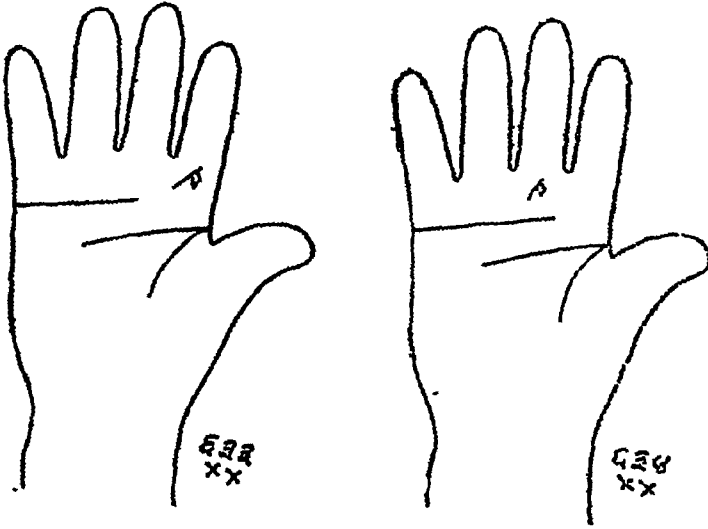
चित्र ६३५—यदि इन्द्र-चिह्न सूर्य-क्षेत्र पर हो तो जातक प्रतिभाशाली कवि अथवा लेखक, अत्यन्त विद्वान, यशस्वी, उच्चपद प्राप्त करने वाला, सद्‌गुणी तथा सुखी होता है। यदि सूर्य-क्षेत्र अशुभ हो तो उक्त शुभ प्रभाव मे कमी आ जाती है, जिसके कारण जातक को किसी क्षेत्र मे पूर्ण सफलता नही मिल पाती।

चित्र ६३६—यदि इन्द्र-चिन्ह बुध-क्षेत्र पर हो तो जातक ज्ञान-विज्ञान का ज्ञाता, आविष्कारक, परोपकारी, दयालु, दानी, मित्र-स्त्री-पुत्र, वाहन, रत्न, धन आदि के सुख से सम्पन्न यशस्वी होता है। यदि बुध-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक लाटरी, सट्टा, जुआ आदि खेलता है, यद्यपि उसमें उसे हानि नहीं होती। उसके शुभ गुणों मे भी न्यूनता आ जाती है।
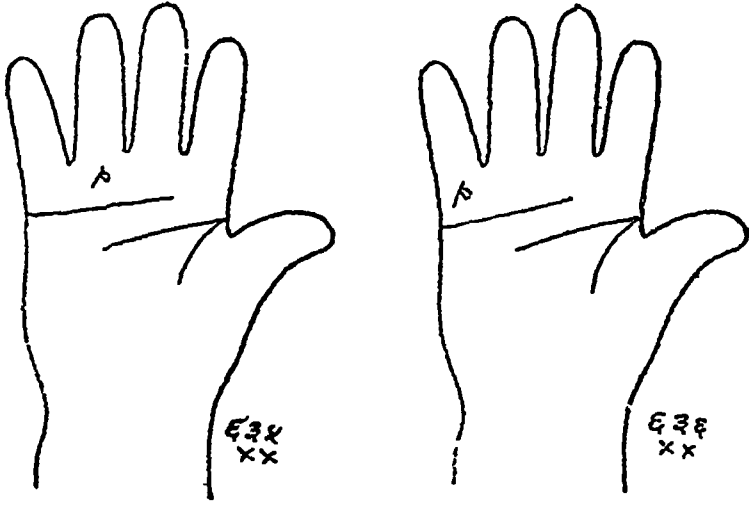
चित्र ६३७—यदि इन्द्र-चिन्ह मंगल-क्षेत्र पर हो ता जातक शूर-वीर, प्रतापो, युद्ध-क्षेत्र में विजयो, सेना अथवा पुलिस विभाग में उच्च-

पद प्राप्त करने वाला, दृढ-प्रनिज्ञ, यशस्वी तथा प्रबल पराक्रमी होता है। यदि मगल-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक प्रसिद्ध डाकू, लुटेरा, हिंसक आदि वन जाता है। वह स्वतत्र एव स्वच्छद प्रकृति का अत्यन्त साहसी होता है। दोनो मगल-क्षेत्रों पर इस चिन्ह का एक ही जैसा प्रभाव होता है।
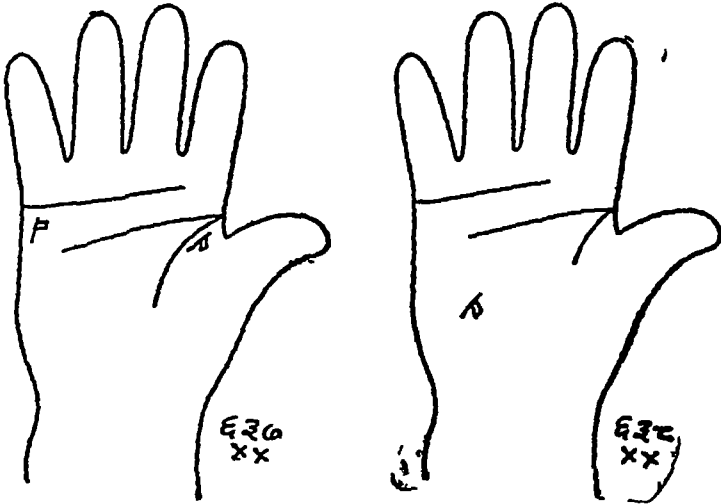
चित्र ६३८—यदि इन्द्र-चिन्ह चन्द्र-क्षेत्र पर हो तो जातक सुन्दर, स्त्रियों को आकर्षित करने वाला अथवा लेखक, यशस्वी, मधुर भाषी, विनम्र, यात्रा-प्रेमी, मिलनसार तथा सुखी-जीवन व्यतीत करने वाला होता है। यदि चन्द्र-क्षेत्र अशुभ हो तो उक्त' सद्‌गुणो में कमी आ जाती है तथा जातक मे व्यभिचार की प्रवृत्ति भी पाई जाती है।

चित्र ६३९—यदि इन्द्र-चिन्ह शुक्र-क्षेत्र पर हो तो जातक सगीतज्ञ, आदर्श प्रेमी, सुन्दर वस्त्राभूषणो को धारण करने वाला, सुगधित वस्तुओ का व्यवसायी; नीतिज्ञ, धनी तथा सुखी होता है। यदि शुक्र-

क्षेत्र अशुभ हो तो ऐसे चिन्ह वाले व्यक्ति अस्थिर चित्त तथा मलिन विचार वाले, पर-स्त्री-गामी एव कृत्रिमता से पूर्ण पाये जाते है।
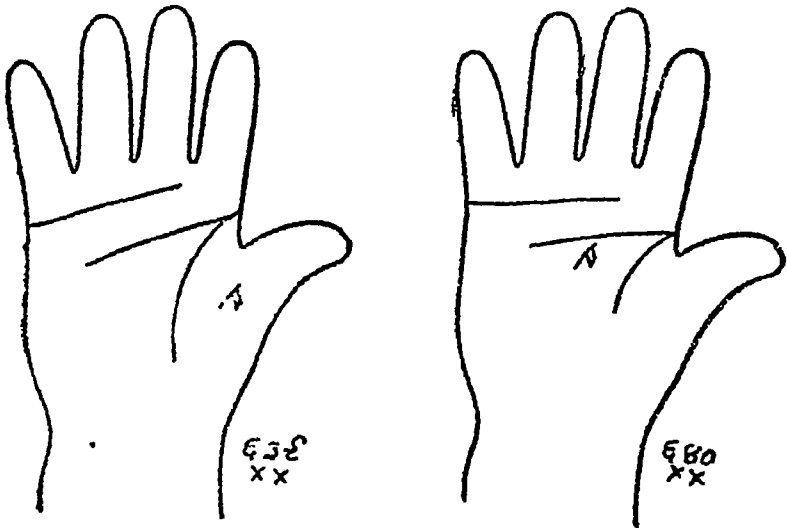
चित्र ६४०—यदि इन्द्र-चिन्ह राहु-क्षेत्र पर हो तो जातक विद्वान, धनवान, परोपकारी, शुभ कार्यो मे धन खर्च करने वाला, ठेकेदार का काम करने वाला, दानी, उदार, यशस्वी तथा सुखी होता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्तियो के मित्रो की सख्या अधिक होती है। यदि राहु-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक कृपण, व्यभिचारी, निन्द्यकर्म करने वाला होता है, परन्तु वह ऐश्वर्य पूर्ण जीवन अवश्य व्यतीत करता है।

चित्र ६४१—यदि इन्द्र-चिह्न केतु-क्षेत्र पर हो तो जातक गुणवान, भाग्यवान, धनी, पुरातत्व विद्या का ज्ञाता, विद्वान, शान्त, सरल तथा सुखी-जीवन व्यतीत करने वाला होता है। यदि केतु-क्षेत्र अशुभ हो तो जातक के उक्त सद्गुणो मे कमी आ जाती है और वह अधिक काल्पनिक हो जाता है।
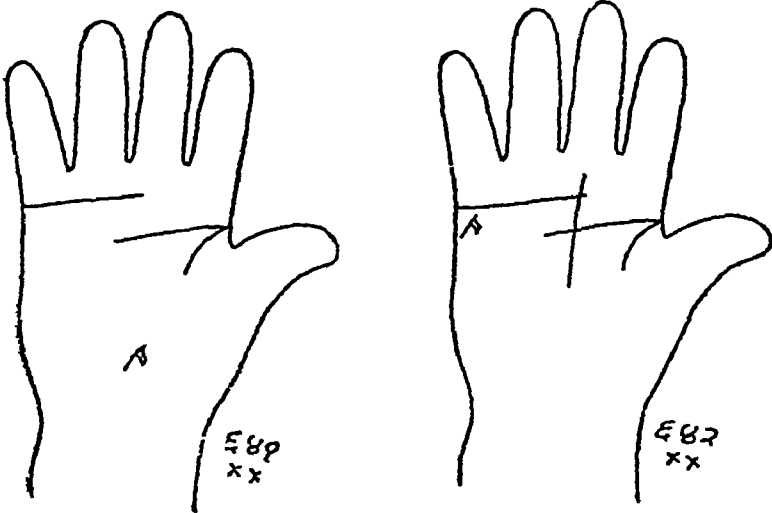
चित्र ६४२—यदि इन्द्र-चिह्न प्रजापति-क्षेत्र पर हो तो जातक कुशाग्र बुद्धि, विद्वान, साहसी, वैज्ञानिक अथवा सैनिक-विभाग में उच्च पद प्राप्त करने वाला, युद्ध-क्षेत्र मे विजयी, दृढ निश्चयी, धनो तथा गुणवान होता है। यदि प्रजापति-क्षेत्र अशुभ हो तो उक्त शुभ प्रभाव मे कुछ कमी आ जाती है।

चित्र ६४३—यदि इन्द्र-चिह्न वरुण-क्षेत्र पर हो तो जातक सर्व-साधारण पर प्रभाव रखने वाला, प्रतिभाशाली कवि, लेखक, धनी, बुद्धिमान, दयालु, परोपकारी, सम्पत्तिवान, सहृदय तथा सब लोगो को अत्यन्त प्रिय होता है। यदि वरुण-क्षेत्र अशुभ हो तो उक्त शुभ प्रभाव मे कुछ कमी आ जाती है।

शंख, चक्र और शक्ति का वर्णन

सम्पूर्ण हथेली पर फैली हुई अत्यन्त सूक्ष्म लहरदार रेखाओ द्वारा अंगूठे तथा उगलियो के अग्रभाग पर शंख, चक्र तथा शुक्ति (सीप) के आकार के चिह्न बनते हैं। ये चिह्न जातक के जीवन पर विशेष प्रभाव डालने वाले सिद्ध होते हैं।

इन चिह्नो के सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वानो के ग्रंथ मे विशेष उल्लेख नही मिलता, परन्तु प्राच्य (भारतीय) ग्रंथों मे इनके प्रभाव का विस्तृत विवरण दिया गया है। अत. प्रस्तुत प्रकरण में प्राच्य (भारतीय) विद्वानों के मतानुसार ही शख, चक्र तथा शुक्ति के प्रभाव का सचित्र वर्णन किया जा रहा है।

चित्र संख्या ६४४ में वामावर्त तथा दक्षिणावर्त शंख, चक्र तथा शुक्ति (सीप) के स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है।

स्मरणीय है कि ये चिह्न अत्यन्त सूक्ष्म लहदार रेखाओ द्वारा निर्मित होते है, अतः सामान्य दृष्टि से इन्हें ठीक-ठीक देख पाना संभव नही होता। मुख्यत शख और शुक्ति मे अन्तर कर पाना कठिन होता है। इसी प्रकार वामावर्त तथा दक्षिणावर्त शख के अन्तर को भी देखने मे कठिनाई होती है। अत. हस्त-परीक्षक को चाहिए कि वह सूक्ष्म-दर्शक यन्त्र अथवा आतशी-शीशे की सहायता से ही शख, चक्र तथा शुक्ति की यथार्थ स्थिति का ज्ञान प्राप्त करे। ऐसा करने से भूल होने की कोई गुंजायश नही रह जायगी।
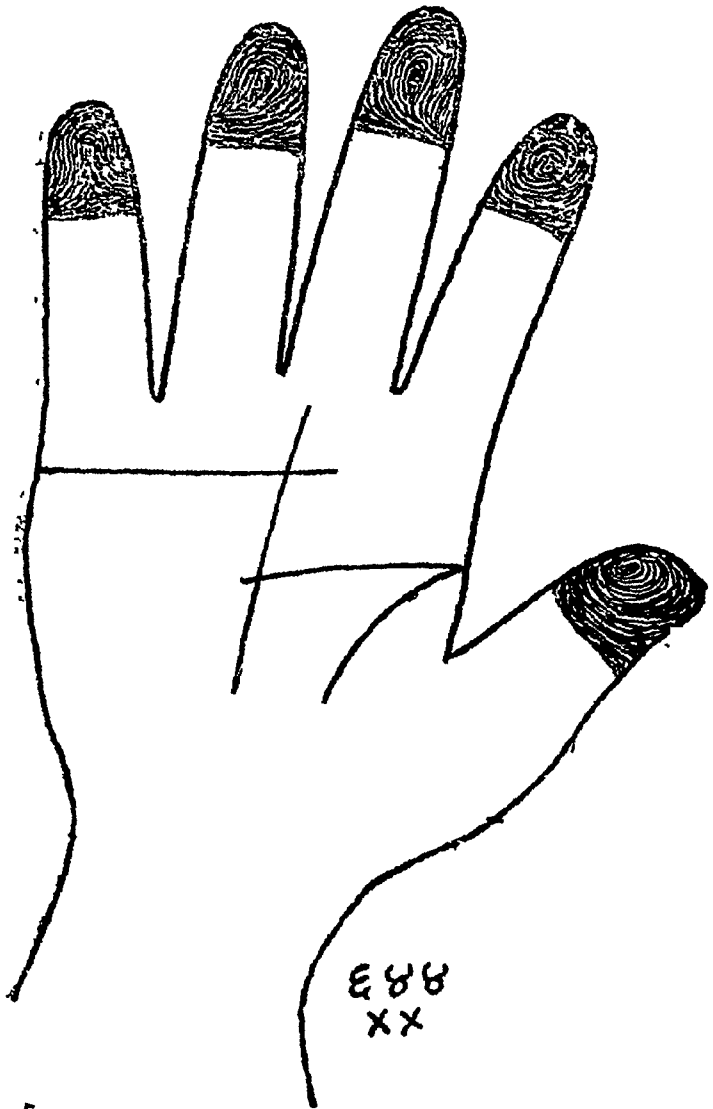
[शख, चक्र एवं शुक्ति के स्वरूप मे]

उक्त चिह्नो के स्वरूप को सामने लिखे अनुसार समझना चाहिए। यहां यह भी ध्यान मे रखने की बात है कि चित्र मे शख, चक्र तथा शुक्ति के यथार्थ स्वरूप को एकदम ज्यो-का-त्यो देना सम्भव नही हो सकता। अत विवरण के साथ दिये गए चित्रो को प्रतीकात्मक ही समझना चाहिए और उन्ही के अधार पर यथार्थ स्वरूप का निश्चय कर लेना चाहिए।

चित्र ६४५—दक्षिणावर्त शंख—उगलियो के अग्रभाग पर शख के समान आकृति यदि दाईं ओर को मुख किये हुए हो तो उसे 'दक्षिणावर्त शख' कहा जाता है। यह चिह्न अगूठे के अग्रभाग पर भी हो सकता है।

चित्र ६४६—वामावर्त शंख—अगूठे अथवा उगलियो के अग्रभाग पर शख के समान आकृति यदि बाईं ओर को मुख किये हुए हो तो उसे 'वामावर्त शख' कहा जाता है।
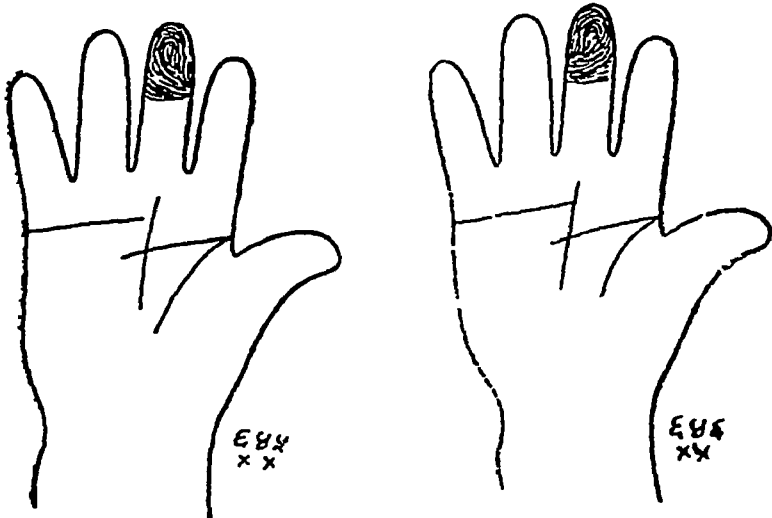
चित्र ६४७—चक्र—अगूठे अथवा उगलियो के अग्रभाग पर जो गोल चक्र की भांति कुण्डलाकृति चिह्न होता है, उसे 'चक्र' कहते हैं।

चित्र ६४८—**शुक्ति (सीप)**—अगूठे अथवा उगलियों के अग्रभाग पर शख और चक्र की आकृति से भिन्न फैला हुआ-सा जो एक अन्य चिह्न होता है उसे 'शुक्ति' या 'सीप' कहते है।
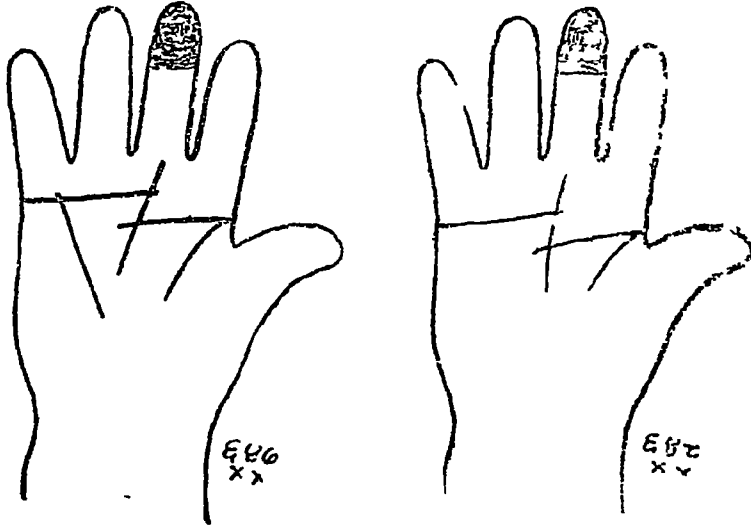
टिप्पणी—शख तथा शुक्ति (सीप) की आकृति मे मुख्य भेद यही होता है कि शख-चिह्न की रेखाए नीचे की ओर जहा एकत्र-सी होती है वहां शुक्ति (सीप) चिह्न की रेखाए फैली हुई-सी होती है। अतः शख अथवा सीप का निर्णय करते समय हस्त-परीक्षक को सावधानी से काम लेना चाहिए।

कुछ विद्वान शुक्ति-चिन्ह को नही मानते। वे केवल शंख और चक्र—केवल इन्ही दो चिह्नो को मानते है। सीप के समान फैली हुई रेखाओ की गणना भी वे शख-चिह्न के अन्तर्गत ही करते है। अस्तु, जो पाठक केवल दो ही चिह्नो को मानना चाहे; उन्हे प्रस्तुत प्रकरण मे वर्णित शुक्ति (सीप) चिह्न के प्रभाव को भी शख-चिह्न के समान ही समझ लेना चाहिए, परन्तु हमारी सम्मति मे तीन चिह्न मानकर, उनका अलग-अलग विचार करना ही अधिक ठीक रहता है।

स्मरणीय है कि दोनों हाथो मे दो अगूठे तथा आठ उगलिया—कुल मिलाकर दस होते है। शख, चक्र अथवा शुक्ति इन सभी अगूठे तथा उगलियो के प्रथम पर्वो पर प्रत्येक जातक के हाथ मे न्यूनाधिक सख्या मे विद्यमान रहते हैं। किसी भी अगूठे या उगली के प्रथम पर्व पर शख, चक्र अथवा शुक्ति का चिह्न एक से अधिक की सख्या मे नही होता। प्रथम पर्व के अतिरिक्त अगूठा या उगलियो के अन्य पर्वो पर ऐसे चिह्न नही पाये जाते है।

इन चिन्हो के प्रभाव के सम्वन्ध मे भारतोय शास्त्रकारो ने निम्न-लिखित वर्णन किया है—

यस्याथ चक्रमंगुष्ठे यवः पूर्णश्च दृश्यते।
तदापितामहा दीनां मर्जितं धन माप्नुयात्॥
ते नैव विपरीतन्तु धन लाभं भवेन्न ही।
तर्जन्यामथ चक्रं च मित्र द्वारा धनं भवेत्॥
ते नैव विपरीतन्तु व्ययोभवति निश्चितं।
मध्यमायांस्थिते चक्रे देव द्वारा धनं लभेत्॥
अनामिकाया भवेच्चक्रं सर्व्वं द्वारा लभेद्धनं।
ते नैव विपरीतन्तु व्ययो भवति निश्चितं।
कनिष्ठिकायां भवेच्चक्रं वाणिज्येन धनं लभेत्।
ते नैव विपरीतन्तु व्ययोभवति निश्चितं॥

उक्त श्लोको के भावार्थ को आगे चित्रो सहित स्पष्ट किया जा रहा है—

चित्र ६४६—यदि अंगूठे के अग्र भाग पर-चक्र-चिह्न हो तथा 'यव' का चिह्न सम्पूर्ण बना हुआ हो तो जातक अपने पिता तथा पितामह द्वारा सचित धन को उत्तराधिकार मे प्राप्त करता है।
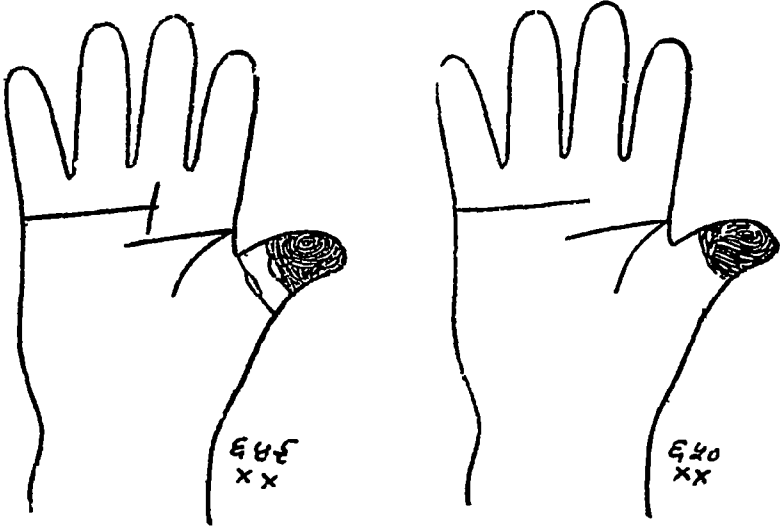
चित्र ६५०—यदि अंगूठे के अग्रभाग पर शंख का चिह्न हो तो जातक को अपने पिता तथा पितामह द्वारा सचित धन का लाभ नहीं होता।

चित्र ६५१—यदि तर्जनी उंगली के अग्रभाग पर चक्र-चिह्न हो तो जातक को अपने मित्र से अथवा मित्र की सहायता द्वारा धन का लाभ होता है।

चित्र ६५२—यदि तर्जनी उगली के अग्रभाग पर शख का चिह्न हो तो जातक को अपने मित्र से अथवा मित्र के कारण धन की हानि उठानी पडती है।

चित्र ६५३—यदि मध्यमा उंगली के अग्रभाग पर चक्र-चिह्न हो तो जातक को देवता द्वारा अर्थात् देव-पूजा, देवालय पर अधिकार, यज्ञ, याग अथवा देवता की कृपा द्वारा धन का लाभ होता है।

चित्र ६५४—यदि मध्यमा उगली के अग्रभाग पर शख-चिह्न हो तो जातक को देवला अथवा देवता के सम्बन्ध द्वारा धन की हानि उठानी पडती है।

चित्र ६५५—यदि अनामिका उगली के अग्रभाग पर चक्र-चिह्न हो तो जातक को हर प्रकार के व्यवहार एव उद्योग द्वारा धन का लाभ होता है।
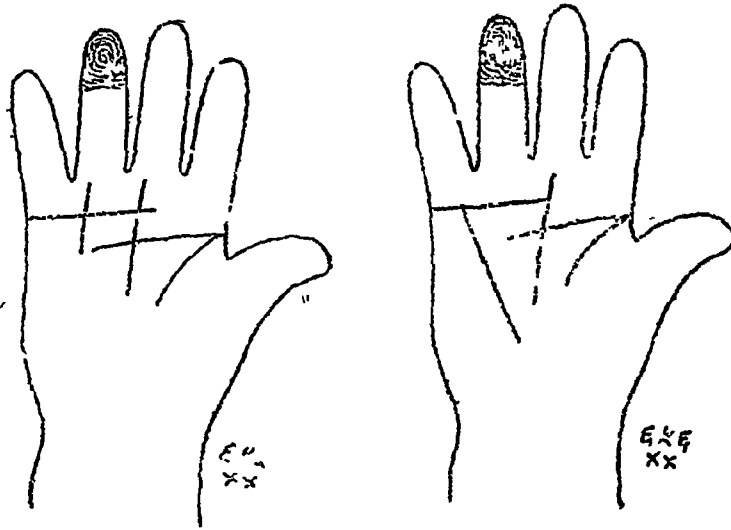
चित्र ६५६—यदि अनामिका उगली के अग्रभाग पर शंख का चिह्न हो तो जातक को हर प्रकार के व्यवहार-कार्य एवं उद्योग मे धन की हानि उठानी पड़ती है अथवा धन का अत्यधिक व्यय होता रहता है।

चित्र ६५७—यदि कनिष्ठा उंगली के अग्रभाग पर चक्र-चिह्न हो तो जातक को व्यवसाय एवं तैयार माल के द्वारा धन का लाभ होता है।
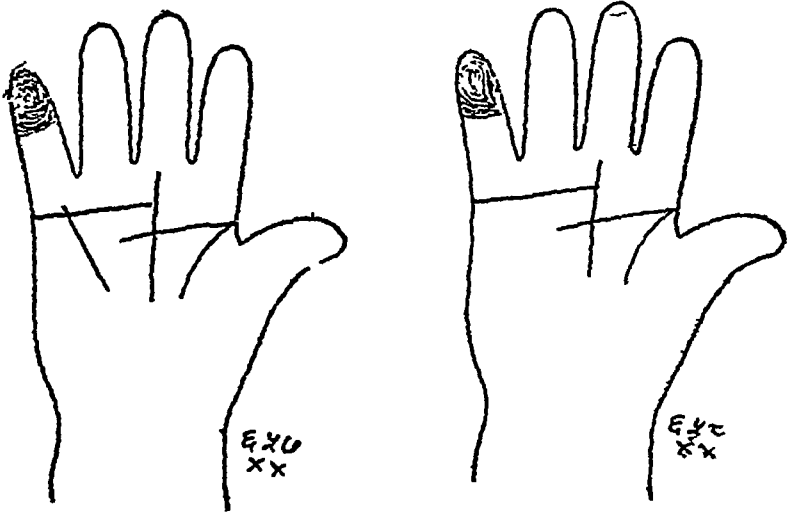
चित्र ६५८—यदि कनिष्ठा उगली के अग्रभाग पर शख का चिह्न हो तो जातक को व्यवसाय एवं तैयार माल के द्वारा धन की हानि उठानी पडती है।

अन्य प्राच्य ग्रन्थो के मतानुसार अगूठा तथा उगलियो पर शंख, चक्र तथा शुक्ति का प्रभाव नीचे लिखे अनुसार होता है—

चित्र ६५६—यदि किसी पुरुष के अगूठे के अग्रभाग पर चक्र-चिह्न हो तो जातक ऐश्वर्यवान्, प्रभावशाली, बुद्धिमान, यशस्वी, क्रियाशील, विद्वान तथा गुणवान होता है। वह अनेक प्रकार के सुखो का उपभोग करने वाला होता है, परन्तु यदि चक्र-चिह्न पूर्ण न हो तो अधिक सफलता प्राप्त नही होती।

चित्र ६६०—यदि किसी स्त्री के अगूठे पर चक्र-चिह्न हो और अंगूठे का मध्य भाग मोटा हो, तो वह दुष्टा, कुलक्षिणी तथा व्यभिचारिणी होती है।
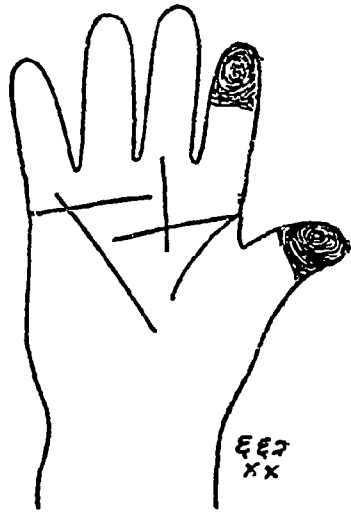
चित्र ६६१—यदि अगूठे पर दक्षिणावर्त शंख का चिह्न हो तो जातक अत्यन्त सौभाग्यशाली होता है। उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में

सफलता प्राप्त होती है। यदि वामावर्त शख का चिह्न हो तो वह जातक के लिए हानिकारक सिद्ध होता है।

चित्र ६६२—यदि अगूठा और तर्जनी उगली—इन दोनों के अग्रभाग पर चक्र-चिह्न हो तथा इनकी पेरियो के मध्यभाग (सन्धि स्थान) में यव-चिन्ह हो तो जातक की समस्त कामनाए पूर्ण होती है और वह यश, सुख, धन आदि सब कुछ प्राप्त करता है।
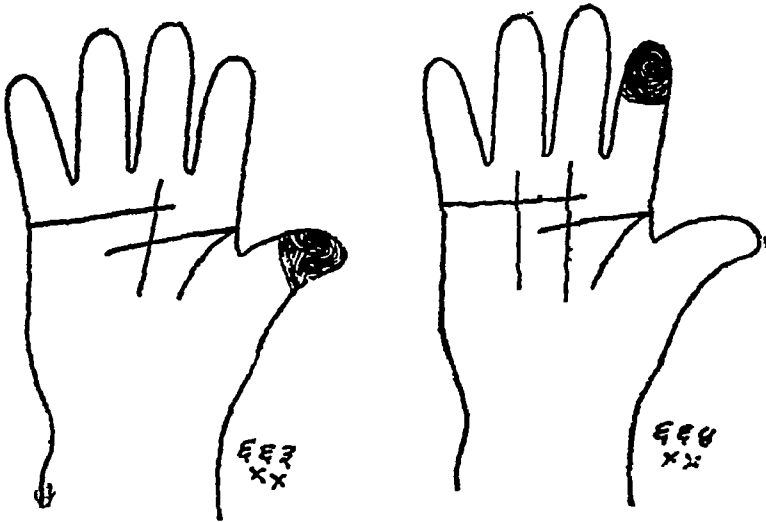
चित्र ६६३—यदि अगूठे के अग्रभाग पर शुक्ति का चिह्न हो तो जातक का सम्पूर्ण जीवन दु ख भोगते हुए ही व्यतीत होता है। इस लक्षण को जीवन मे असफलता देने वाला तथा अशुभ फलकारक समझना चाहिए।

चित्र ६६४—यदि तर्जनी उगली के अग्रभाग पर चक्र-चिह्न हो तो जातक को अपने पिता, मित्र अथवा भाई द्वारा धन का लाभ होता है। ऐसा जातक महत्वकाक्षी, धन का लोभी तथा सांसारिक सुखो का

उपभोग करने वाला होता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति कुशल व्यवसायी, चिकित्सक, नेता, वकील आदि हो सकते है; क्योकि ये दूसरो पर अपना विश्वास खूब जमा सकते हैं।
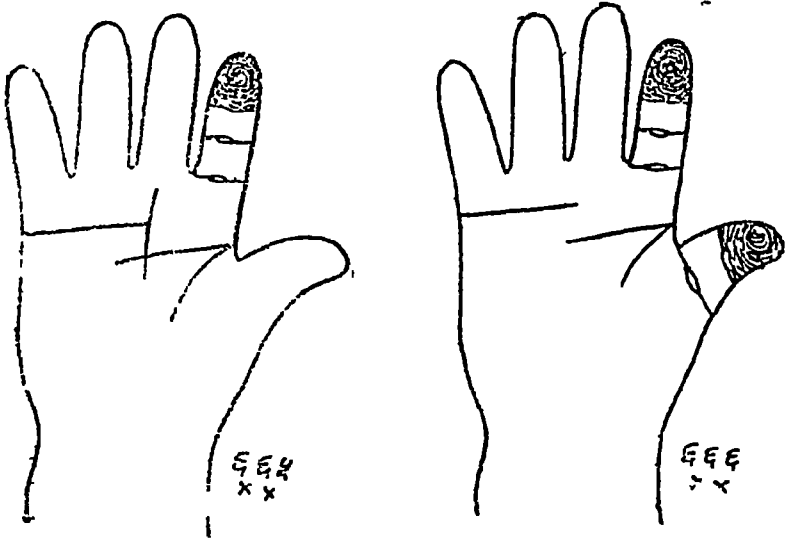
चित्र ६६५—यदि तर्जनी उंगली के अग्रभाग पर चक्र-चिह्न हो तथा सधिभाग पर यव-चिह्न हो तो जातक को यश एवं सुख प्राप्त होता है। यदि चन्द्र-चिह्न पूर्ण न हो तो सफलता प्राप्त नही होती।

चित्र ६६६—यदि अगूठा और तर्जनी उंगली—इन दोनो के अग्रभाग पर चक्र-चिह्न हो तथा इनके मध्यभाग (सधियो) मे यव-चिह्न हो तो यह चिह्न जातक के लिए सिद्धियां प्रदान कराने वाला होता है।

चित्र ६६७ - यदि अगूठा और तर्जनी उगली—इन दोनो के अग्रभाग पर शख अथवा शुक्ति का चिह्न हो तो जातक का जीवन दुख एव निराशा से पूर्ण रहता है।
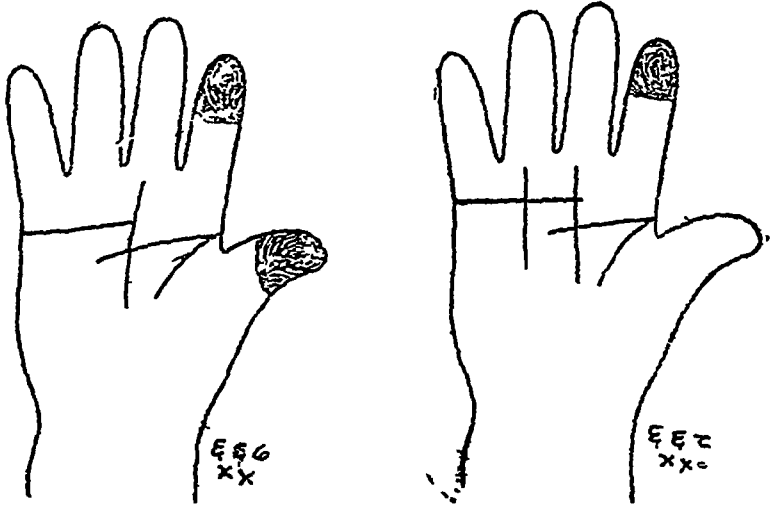
चित्र ६६८—यदि तर्जनी उगली के अग्रभाग पर दक्षिणावर्त शख हो तो जातक एक-सा जीवन बिताना चाहता है। वह अस्थिर, निरुद्योगी
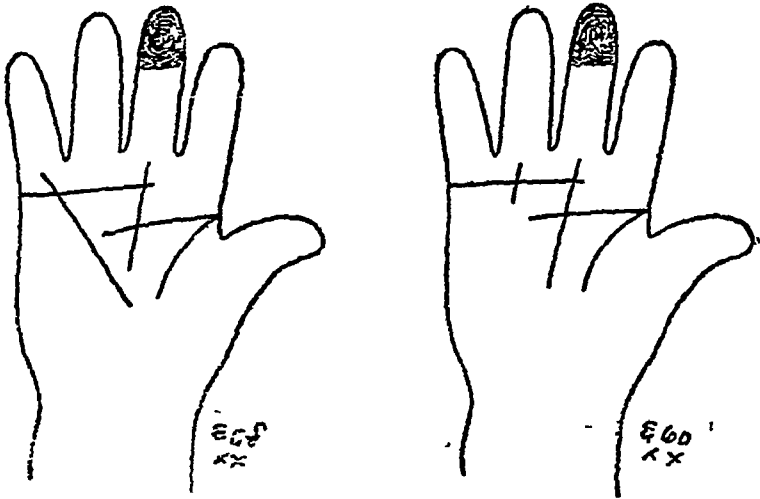
तथा अधिक खर्च करने वाला भी होता है। यदि वामावर्त शख हो तो ऐसे चिह्न वाला जातक अपने मित्रों तथा परिचितो द्वारा ठगा जाता है और हानि उठाता रहता है।

चित्र ६६९—यदि मध्यमा उगली के अग्रभाग पर चक्र-चिह्न हो तो जातक देवता अथवा देवता से सम्बन्धित किसी कार्य द्वारा धन अर्जित करता है। साथ ही वह अपने पराक्रम तथा उद्योग से भी सम्पत्तिवान बनता है। यदि चक्र पूर्ण न हो तो अधिक लाभ नही होता।

चित्र ६७०—यदि मध्यमा उगली के अग्रभाग पर शुक्ति-चिह्न हो जो जातक का दैव-कोप से अथवा स्वयं उसी की बुद्धि-हीनता से बहुत-सा धन नष्ट हो जाता है।
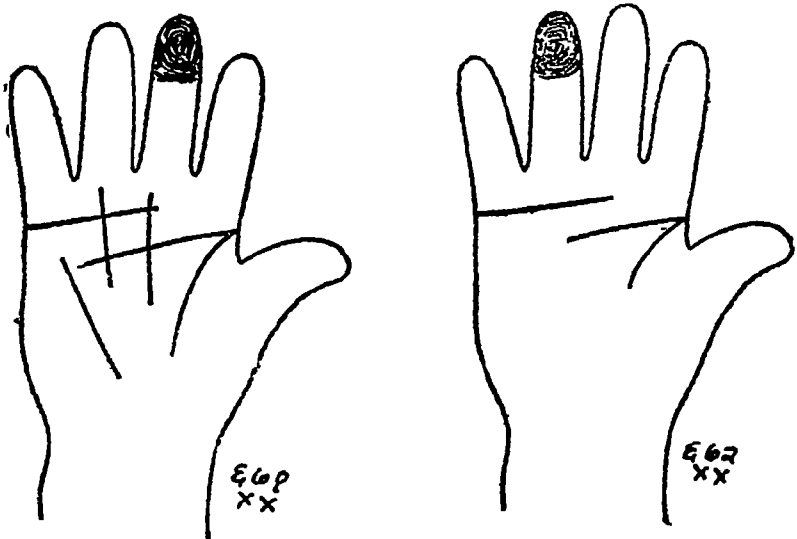
चित्र ६७१—यदि मध्यमा उगली के अग्रभाग पर दक्षिणावर्त शख का चिह्न हो तो जातक बड़ा विद्वान्, यशस्वी तथा शास्त्रज्ञ होता है, परन्तु अधिक धनवान नही होता। उसका लाभ-खर्च बराबर रहता है।

यदि वामावर्त शंख का चिह्न हो तो ऐसे व्यक्ति का दान नही लेना चाहिए अन्यथा उसका स्वय का सचित धन भी नष्ट हो जाएगा। ऐसे चिह्न वाले व्यक्तियो को अपने परिश्रम की कमाई पर ही सन्तोष करना चाहिए।

चित्र ६७२—यदि अनामिका उगली के अग्रभाग पर चक्र-चिह्न हो तो जातक मित्र द्वारा अथवा अन्य अनेक उपायो द्वारा धन कमाने वाला, प्रतिष्ठित, यशस्वो, सुखी तथा ऐश्वर्यवान होता है। चक्र पूर्ण न हो तो सफलता कम मिलती है।
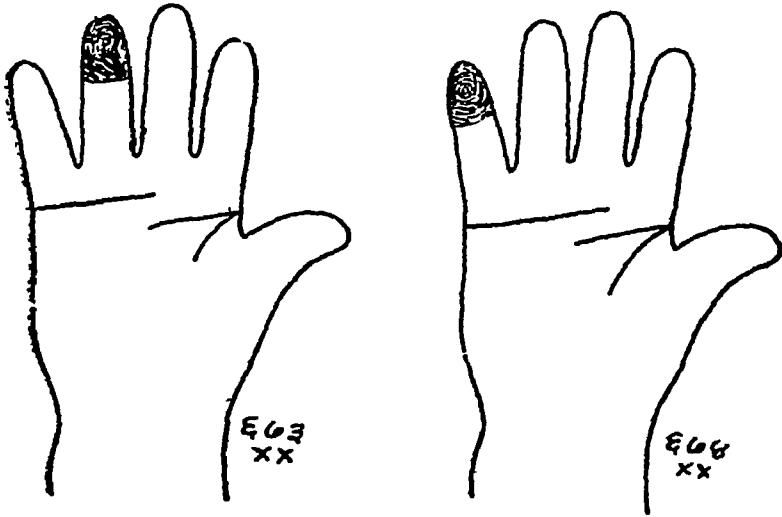
चित्र ६७३—यदि अनामिका उगली के अग्रभाग पर दक्षिणावर्त शंख का चिह्न हो तो जातक का धन अनेक प्रकार से खर्च एव नष्ट हो जाता है। उसकी लाभ-हानि वरावर रहती है, परन्तु यदि वामावर्त शंख हो तो वह अत्यन्त हानिकारक तथा दुर्भाग्य का सूचक होता है। ऐसे व्यक्ति यदि सोने को भी हाथ लगायें तो वह भी मिट्टी हो जाता है।

चित्र ६७४—यदि कनिष्ठा उगली के अग्रभाग पर चक्र-चिह्न हो तो जातक व्यवसाय द्वारा धनोपार्जन करता है। ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति शास्त्रज्ञ तथा ग्रथ-लेखक भी होता है ।

चित्र ६७५—यदि कनिष्ठा उगली के अग्रभाग पर दक्षिणावर्त शख का चिह्न हो तो जातक को व्यवसाय मे लाभ-हानि बराबर रहती है, परन्तु यदि वामावर्त शख का चिह्न हो तो उसे व्यवसाय मे मूलधन तक की हानि उठानी पड़ती है ।
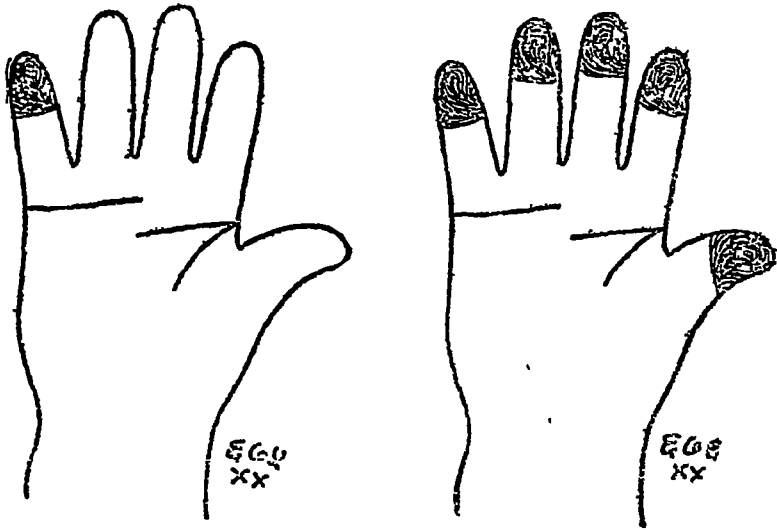
चित्र ६७६—यदि सभी उगलियों तथा अगूठे पर दक्षिणावर्त चक्र के चिह्न हों तो वे जातक के लिए अत्यन्त शुभ फल एव सौभाग्यकारक होते है ।

चित्र ६७७—यदि चारों उगलियो के मूल मे यव-चिन्ह हो तो जातक आजीवन सुख भोगने वाला तथा आकस्मिक रूप से लाभ प्राप्त करने वाला होता है ।

चित्र ६७८—सभी उगलियो के अग्रभाग पर 'चक्र' का होना अत्यन्त सौभाग्य का लक्षण समझना चाहिए। ऐसे चिह्न-वाला व्यक्ति अत्यन्त बलवान, यशस्वी, धनी तथा सर्वगुण सम्पन्न होता है। यहा सभी उंगलियो से तात्पर्य दोनो हाथ की सभी उगलियो तथा अगूठो से अर्थात् दसो उगलियो से है।
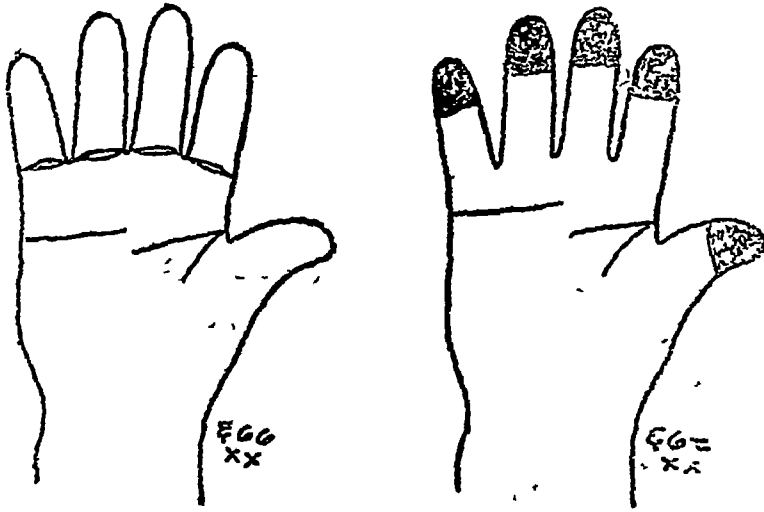
चित्र ६७९—यदि सभी उगलियों के अग्रभाग पर शख-चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति राजा अथवा योगी होता है। यहा सभी उगलियो से तात्पर्य दोनो हाथ की सभी उगलियो तथा अगूठो से है।

चित्र ६८०—यदि किसी स्त्री के हाथ मे अंगूठे की जड से मध्य-भाग तक स्थूल तथा चक्राकार-रेखा (चक्र) हो तो वह दुष्ट-प्रकृति वाली, व्यभिचारिणी, निर्लज्ज, दयाहीन, स्वतन्त्र तथा रति-कर्म मे प्रचण्ड-वेग वाली होती है।
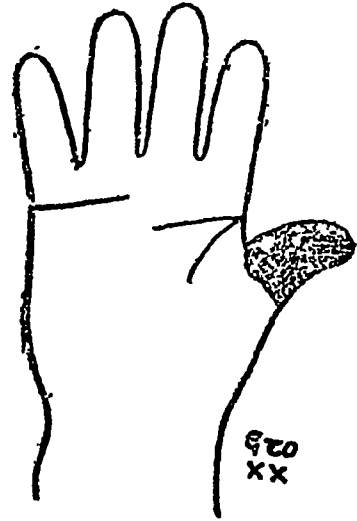
चित्र ६८१—यदि अनामिका और तर्जनी—इन दोनों उगलियो पर चक्र-चिह्न हो तो ऐसा व्यक्ति मेल-मिलाप के काम मे चतुर, एजेण्ट, वकील, डाक्टर आदि होता है।
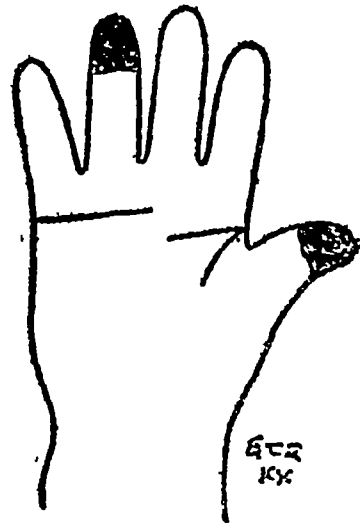
चित्र ६८२—यदि अगूठा और अनामिका उगली इन दोनों पर चक्र-चिह्न हो तो जातक अपने घर का व्यवसाय एव सम्पत्ति की व्यवस्था करने मे कुशल होता है। यदि अगूठे का चक्र रेखाओ द्वारा कट गया हो तो वह दूसरो को सम्पत्ति की रक्षा करने मे कुशल होता है।

चित्र ६८३—यदि अनामिका और मध्यमा उगली पर चक्र-चिह्न हों तो जातक दान, धर्म, यज्ञ आदि करने वाला और उनमे सफलता प्राप्त करने वाला होता है।
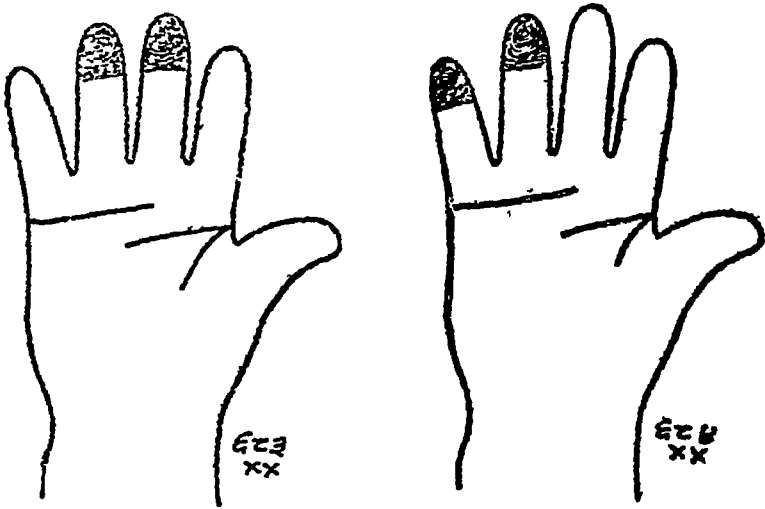
चित्र ६८४—यदि अनामिका और कनिष्ठा उगली पर चक्र-चिह्न हो ता जातक सफल व्यवसायी होता है।

विशेष

दोनो हाथो की सभी उगलियों तथा अगूठों पर कौन-कौन-सा चिह्न कितनी सख्या मे रहने से जातक के जीवन पर उसका क्या प्रभाव पडता है—इसे आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चक्र—यदि केवल एक उंगली पर चक्र-चिह्न हो तो जातक चतुर, वाचाल और सुखी होता है।

यदि दो उंगलियों पर चक्र-चिह्न हों, तो जातक सुन्दर, गुणवान तथा राज्य द्वारा पूजित होता है।

यदि तीन उंगलियों पर चक्र-चिह्न हों तो जातक व्यवसायी, धनी तथा विलासी होता है।

यदि चार उंगलियों पर चक्र-चिह्न हो तो जातक दरिद्री होता है।

यदि पांच उंगलियों पर चक्र-चिह्न हो तो जातक ज्ञानी तथा विलासी होता है।

यदि छह उंगलियों पर चक्र-चिह्न हो तो जातक भ्रमणशील तथा विषयी होता है।

यदि सात उंगलियों पर चक्र-चिह्न हो तो जातक पुण्यात्मा होता है। वह दरिद्र होने पर भी सुखी तथा सन्तुष्ट बना रहता है।

यदि आठ उंगलियों पर चक्र-चिह्न हो तो जातक रोगी, परन्तु विद्वान और चतुर होता है।

यदि नौ उंगलियों पर चक्र-चिह्न हो तो जातक राजा अथवा मन्त्री होता है।

यदि दसों उंगलियों पर चक्र-चिह्न हों तो जातक राजा, योगी, सिद्ध-पुरुष अथवा अल्पायु होता है।

शंख—यदि केवल एक उंगली पर शंख-चिह्न हो तो जातक अध्ययनशील तथा शूर-वीर होता है। ऐसे व्यक्ति सर्वत्र सम्मानित होते हैं तथा सुखी-जीवन व्यतीत करते हैं।

यदि दो उगलियो पर शंख-चिह्न हो तो जातक दरिद्र अथवा सन्यासी होता है। ऐसे व्यक्ति की महत्वाकाक्षाए पूर्ण नही हो पाती। गृहस्थाश्रम छोडकर सन्यासी हो जाने पर भी उसे सिद्धि प्राप्त नहीं होती।

यदि तीन उगलियो पर शख-चिह्न हो तो जातक स्त्री के लिए रोने वाला, इधर-उधर घूमने वाला, दरिद्र तथा दु खी होता है। ऐसे व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन निष्फल चला जाता है तथा उसकी सभी कामनाए अपूण रह जाती हैं।

यदि चार उगलियो पर शख-चिह्न हो तो जातक प्रतापी, राजा के समान सुखी अथवा दरिद्र होता है। ऐसे व्यक्ति के बारे मे निश्चय करने के लिए उसके हाथ के अन्य लक्षणो को भी देखना चाहिए।

यदि पाच उगलियो पर शख-चिह्न हो तो जातक विदेशो मे धन-सम्पत्ति पाने वाला तथा सर्वत्र यश, मान एव प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाला होता है।

यदि छह उगलियो पर शख-चिह्न हो तो जातक गुणवान, धनो, विद्वान तथा सुखी होता है। उसका सम्पूर्ण जीवन आनन्दमय व्यतात होता है।

यदि सात उगलियो पर शख-चिह्न हो तो जातक दरिद्र होता है, परन्तु कुछ विद्वानो के मतानुसार ऐसे व्यक्ति राजलक्षणी होते हैं अर्थात वे धनी एव यशस्वी होते है।

यदि आठ उगलियो पर शख-चिह्न हो तो जातक सामान्यतः सुखी, जीवन व्यतीत करने वाला होता है, परन्तु कुछ विद्वानो के मत से ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति अवगुणी तथा दरिद्री होते हैं।

यदि नौ उगलियों पर शख-चिह्न हो तो जातक स्त्रैण-स्वभाव का एव दरिद्र होता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति का जावन दु.खमय ही व्यतीत होता है।

यदि दसो उगलियो पर शंख-चिह्न हो तो जातक राजा अथवा योगी होता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति अत्यन्त गुणवान, विद्वान, दूर-दर्शी, बुद्धिमान तथा यश-कीर्ति सम्पन्न होते हैं।

शुक्ति (सीप)—यदि केवल एक उगली पर शुक्ति-चिह्न हो तो जातक गुणवान तथा धनवान होता है।

यदि दो उगलियो पर शुक्ति-चिह्न हो तो जातक श्रेष्ठ वक्ता तथा धनी होता है। ऐसे व्यक्ति सर्वत्र सम्मान प्राप्त करते है तथा अपनी वाणी द्वारा जन-समाज को आकर्षित करके राजनीति आदि के क्षेत्र मे सफल होते है।

यदि तीन उगलियो पर शुक्ति-चिह्न हों तो जातक धनवान अथवा योगी होता है—इसका निश्चय करने के लिए हाथ के अन्य लक्षणो को भी ध्यानपूर्वक देखना चाहिए।

यदि चार उगलियो पर शुक्ति-चिह्न हो तो जातक दरिद्र परन्तु सद्गुण सम्पन्न होता है। ऐसे व्यक्तियो का जीवन अभावपूर्ण होते हुए भी सुख तथा सन्तोष युक्त बना रहता है।

यदि पाच उगलियो पर शुक्ति-चिह्न हो तो जातक धनवान, पण्डित तथा वेदान्ती होता है। ऐसे व्यक्ति सर्वत्र सफलता प्राप्त करते है तथा समाज द्वारा सम्मानित भी किए जाते है।

यदि छह उगलियो पर शुक्ति-चिह्न हो तो जातक योगी तथा गुण-वान होता है। ऐसे व्यक्ति के सम्बन्ध में ठीक-ठीक निर्णय करने के लिए हाथ के अन्य लक्षणो को भी देखना चाहिए।

यदि सात उगलियो पर शुक्ति-चिह्न हो तो जातक दरिद्रो परन्तु गुणवान होता है। इसके लिए भी हाथ के अन्य लक्षणो से मिलान करना उचित है।

यदि आठ उगलियो पर शुक्ति-चिह्न हो तो जातक धनवान होता है, परन्तु कुछ विद्वानो के मतानुसार ऐसे चिह्न वाला व्यक्ति सामान्य जीवन व्यतीत करता है।

यदि नौ उगलियो पर शुक्ति-चिह्न हो तो जातक गुणवान, धनी तथा सुखी होता है. परन्तु कुछ विद्वानो के मतानुसार ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति सामान्य श्रेणी के होते हैं।

यदि दसो उगलियो पर शुक्ति-चिह्न हो तो जातक राजा अथवा योगी, गुणवान,धना और धर्मात्मा होता है।

यदि एक ही उगली पर दो शुक्तिया हो तो जातक दरिद्री होता है।

❁

करतल में विविध-चिह्न

भारतीय मत

पाश्चात्य मतानुसार हाथ पर पाये जाने वाले विविध-चिह्नो के प्रभाव का वर्णन इस पुस्तक के पिछले पृष्ठो मे विस्तार पूर्वक किया जा चुका है। इस प्रकरण मे प्राच्य (भारतीय) मतानुसार हाथ पर पाये जाने वाले विविध प्रकार के चिह्न और उनके प्रभाव का वर्णन किया जा रहा है।

चित्र सख्या ६८५ मे प्राच्य (भारतीय) मतानुसार हाथ पर पाये जाने वाले विविध-चिह्नो के स्वरूप को एकत्र करके प्रदर्शित किया गया है।

यहा यह स्मरणीय है कि प्राचीन सामुद्रिक विज्ञानो ने जिन चिह्नो का वर्णन किया है, उनमे से अधिकांश चिह्न आजकल प्राय: किसी भी स्त्री-पुरुष के हाथ पर देखने को नही मिलते है। दूसरे, यह निश्चित करना भी कठिन होगा कि जिन आकृतियों का प्राचीन ग्रन्थो मे उल्लेख किया गया है, वे किन रेखाओ के पारस्परिक सयोग द्वारा निर्मित हो सकती है। हाथी, घोडा, सिह आदि के चिह्नो मे तो अन्तर स्पष्ट करना भी प्राय असभव सा ही रहेगा। फिर भी चूकि इन चिह्नो का प्राचीन ग्रन्थों मे उल्लेख पाया जाता है और हम सामुद्रिक शास्त्र की प्राच्य तथा पाश्चात्य—दोनो पद्धतियो से पाठको को परिचित कराना चाहते है, अत इस प्रकरण मे उन सबका ही सचित्र विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है। इनके सम्बन्ध मे पाठको को अपनी बुद्धि से ही निर्णय करना चाहिए।

[भारतीय मतानुसार करतल पर पाये जाने वाले विविध चिन्ह]

विविध हस्त-चिह्नो के सम्बन्ध मे प्राचीन ग्रन्थो में निम्नानुसार उल्लेख पाया जाता है—

"मीनायुगांकितपारिर्णनित्यं सत्रप्रदोभवति ।
वज्राकाराधनिनां विद्याभाजांतुमीनपृच्छनिभाः ॥
शंखातपत्रशिविका गजाश्वपद्मोयमानृपतेः ।
कलशमृणालपतकांकुशोपमाभिर्भवति भूपालाः ॥
दामिनिभैश्चगवाढ्यः स्वस्तिक रूपमिरैश्वर्यम् ।
चक्रासि परशुतोमर शक्तिधनुःकुन्तसन्निभारेखाः ॥
कुर्वन्ति चमूनाथं यज्वानमुलूखलाकाराः ॥
मकरध्वज कोष्ठागार सन्निभाभिर्मट्टाधनो पेताः ।
वेदीनिभेन चैवाग्नि होतिरणो ब्रह्मतीर्थेन ।
वापीदेव कुलाद्यै धर्मेकुर्वन्ति चत्रिकोणभिः ॥
गरिककंकरण योनीनांरमुंड घटकादिकं ।
करे वैयस्यचिह्नानि राजमंत्री भवेन्नरः ॥
रविचन्द्र लतानेत्र अष्टकोण त्रिकोणकं ।
मंदिरंगज अश्वानां चिह्ने धनी सुखी नरः ॥"

उपर्युक्त श्लोको के भावार्थ का सचित्र विवरण नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चित्र ६८६—यदि हाथ मे मछली के समान दो चिह्न हो तो पुरुष-जातक प्रतिदिन अन्नदान करने वाला अथवा किसो अन्न-क्षेत्र का प्रबन्धक अथवा यज्ञ करने वाला होता है ।
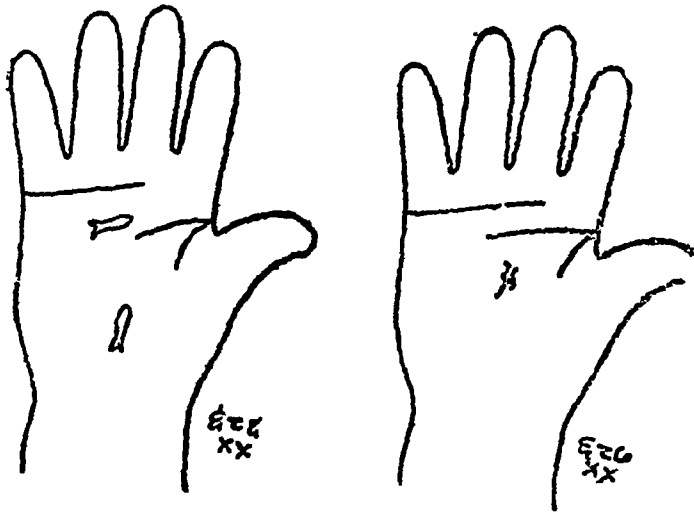
चित्र ६८७—यदि हाथ मे वज्र के समान चिह्न हो ता पुरुष जातक धनवान होता है ।
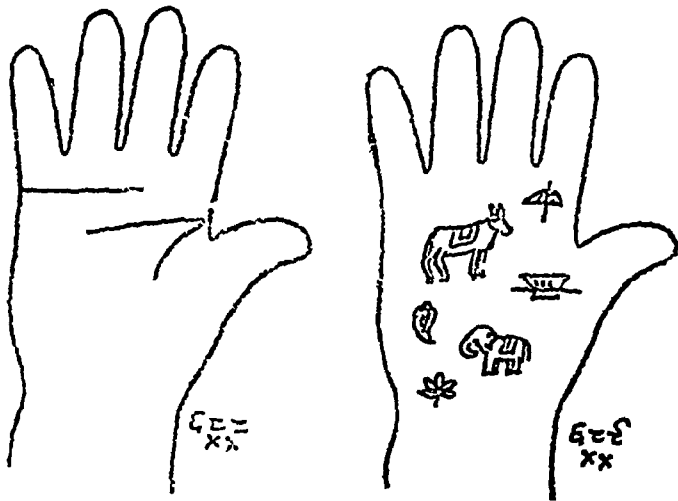
चित्र ६८८—यदि हाथ मे मछली की पूछ जैसी रेखा हो तो पुरुष-जातक विद्वान तथा बुद्धिमान होता है।

चित्र ६८९—यदि हाथ मे शंख, छत्र, पालकी, हाथी, घोड़ा अथवा कमल के समान चिह्न हो तो पुरुष-जातक राजा होता है। चित्र मे इन सभी चिह्नो को प्रदर्शित किया गया है।
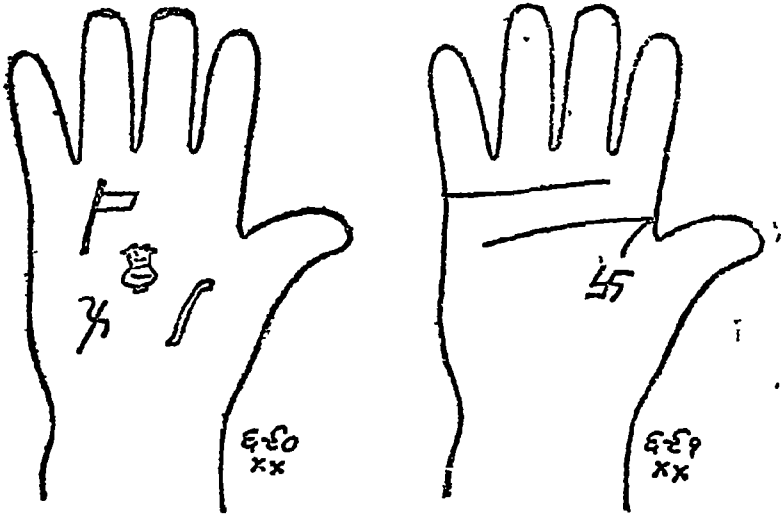
चित्र ६९०—यदि हाथ मे कलश, कमल की डडी, पताका अथवा अकुश के समान चिह्न हो तो पुरुष-जातक धनवान होता है। चित्र मे इन सभी चिह्नो को प्रदर्शित किया गया है।

चित्र ६९१—यदि हाथ मे स्वस्तिक के समान चिह्न हो तो पुरुष-जातक ऐश्वर्यशाली होता है।

चित्र ६९२—यदि हाथ मे तलवार, फरसा, तोमर, बरछी, धनुष अथवा भाला—इन शस्त्रो मे से कोई चिह्न हो तो पुरुष-जातक सेनापति तथा अत्यन्त बलवान होता है। चित्र मे इन सभी चिह्नो को प्रदर्शित किया गया है।
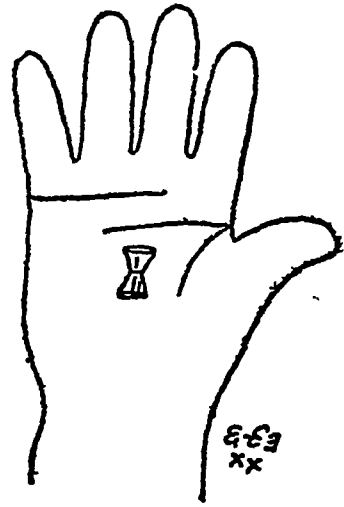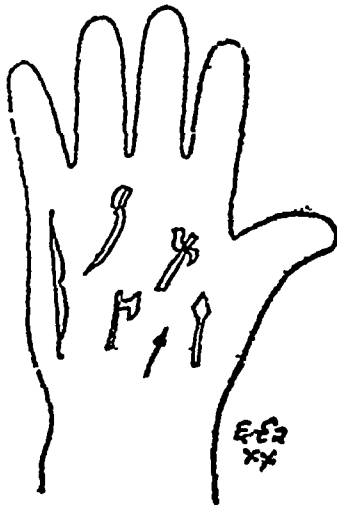
६६३—यदि हाथ मे ऊखल जैसा चिह्न हो तो पुरुप-जातक यज्ञ करने वाला होता है ।
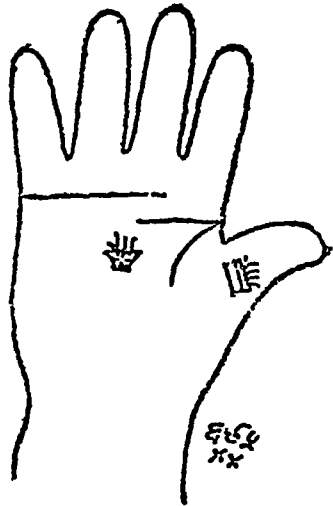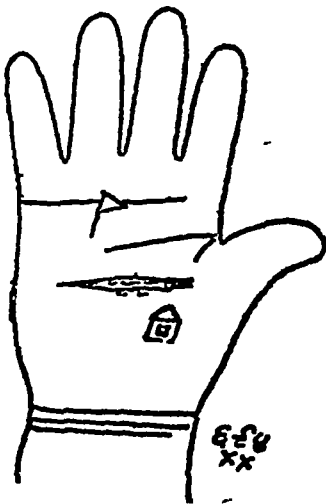
चित्र ६९४—यदि हाथ में मगर, ध्वजा अथवा कोठार जैसा चिह्न हो तो पुरुष-जातक बहुत धनी होता है। चित्र मे इन सभी चिह्नों को प्रदर्शित किया गया है।

त्रिच ६९५—यदि अगूठे के मूल मे वेदी अथवा यज्ञ भूमि के समान चिह्न हो तो पुरुष जातक अग्निहोत्री होता है।
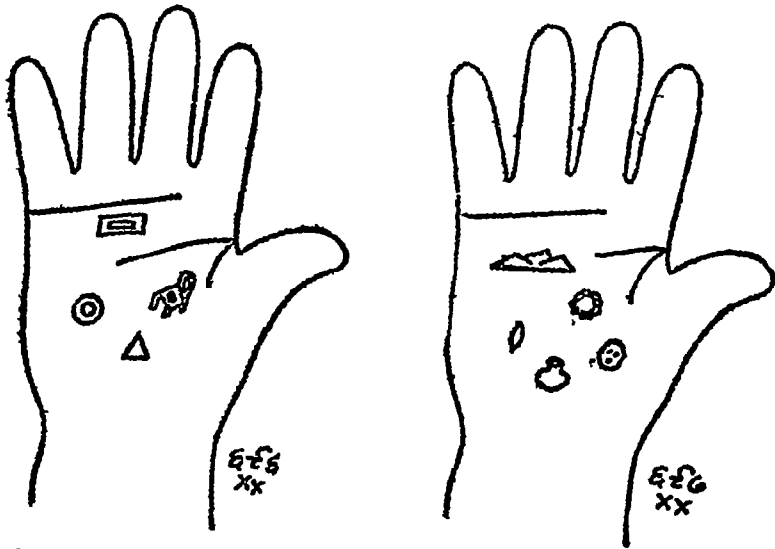
चित्र ६९६—यदि हाथ मे बावडी, तालाब, सिंहासन अथवा त्रिकोण के समान चिह्न हो तो पुरुष-जातक धर्मात्मा होता है। चित्र मे इन सभी चिह्नो को प्रदर्शित किया गया है।

त्रिच ६९७—यदि हाथ मे पर्वत, कंकण, योनि, नरमुण्ड अथवा घट जैसा चिह्न हो तो पुरुष-जातक राजा का मन्त्री होता है। चित्र में इन सभी चिह्नो का प्रदर्शित किया गया है।

चित्र ६९८—यदि हाथ में सूर्य, चन्द्र, लता, नेत्र, अष्टकोण अथवा त्रिकोण जैसा चिह्न हो तो पुरुष-जातक धनवान तथा सुखी होता है।

टिप्पणी—उक्त फलादेश पुरुष-जातक के हाथ में पाये जाने वाले चिह्नो का है। स्त्रियो के हाथ मे पाये जाने वाले चिह्नो के फलाफल के विषय मे प्राचीन शास्त्रो मे निम्नलिखित उल्लेख मिलता है—

"मत्स्येन सुभगानारो स्वस्तिकेनवसुप्रदा।
पद्मेन भूपते पत्नी जनयेद्भूपति सुतं॥
चक्रवर्ती स्त्रियाः पाणीनद्यावर्तः प्रदक्षिणः।
शंखातपत्र कमठान्पमातृत्व सूचकाः॥
तुलामानाकृतौ रेखे वणिक् पत्निनत्वहेतुके।
गजवाजि वृषाकाराः करेवामे स्रगीदृशां॥
रेखाप्रासाद वज्राभा ब्रू युस्तीर्थं करं सुतं।
कृषीवलस्यापत्नीस्याच्छकटेने युगेन वा॥
चामरांकुशकोदडै राजपत्नीभवेद् ध्रुवं।
त्रिशूलासिगदाशक्तिं दुन्दुभ्या कृति रेखयाः॥
नितंत्रिनो कीर्तिमती त्यागेनपृथिवीतले।
कंक मंडूक जंबूक वृकवृश्चिक भोगिनः॥
शशभोष्ट्र विडालाःस्यु करस्था दुःखदाः स्त्रियाः॥"

उपर्युक्त श्लोको के भावार्थ का सचित्र विवरण नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चित्र ६९९—यदि किसी स्त्री के हाथ मे मछली जैसा चिह्न हो तो वह सौभाग्यवती होती है।

चित्र ७००—यदि किसी स्त्री के हाथ में स्वस्तिक के समान चिह्न हो तो वह धनवता होता है।
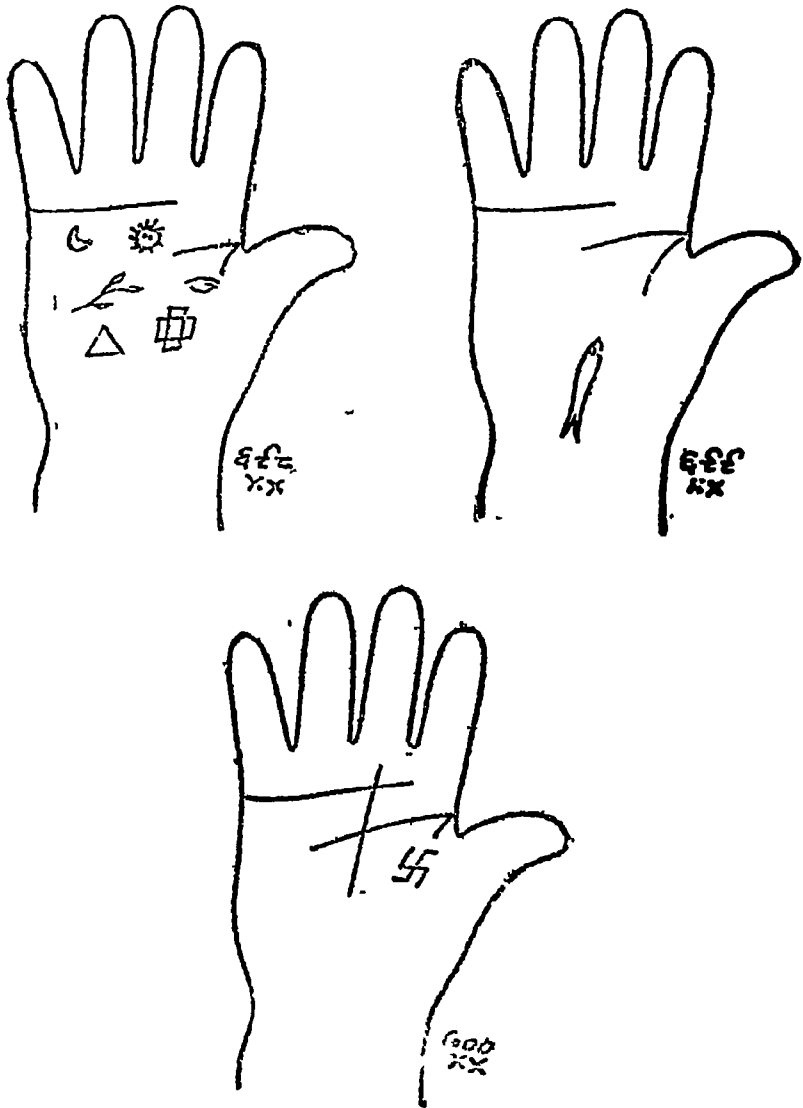
चित्र ७०१—यदि किसी स्त्री के हाथ में कमल जैसा चिह्न हो तो वह राजा की पत्नी तथा राज्य करने वाले पुत्र को जन्म देने वाली माता होती है।
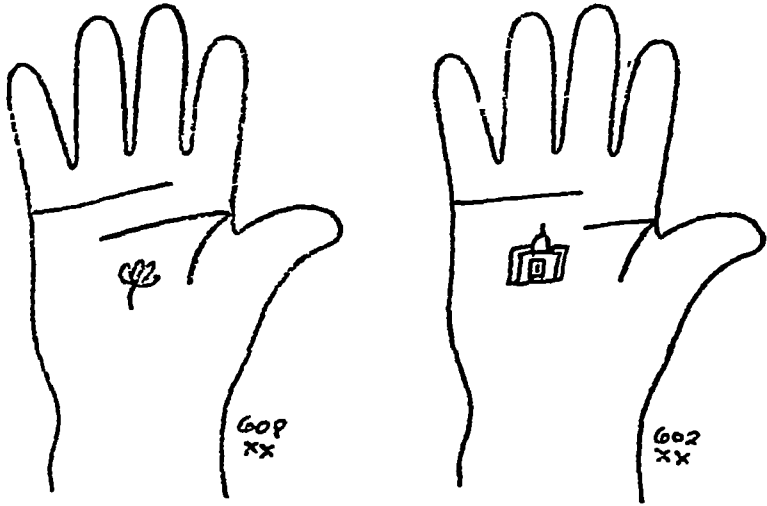
चित्र ७०२—यदि किसी स्त्री के हाथ मे 'राजमहल' जैसा चिह्न हो तो वह चक्रवर्ती राजा की पत्नी बनती है ।
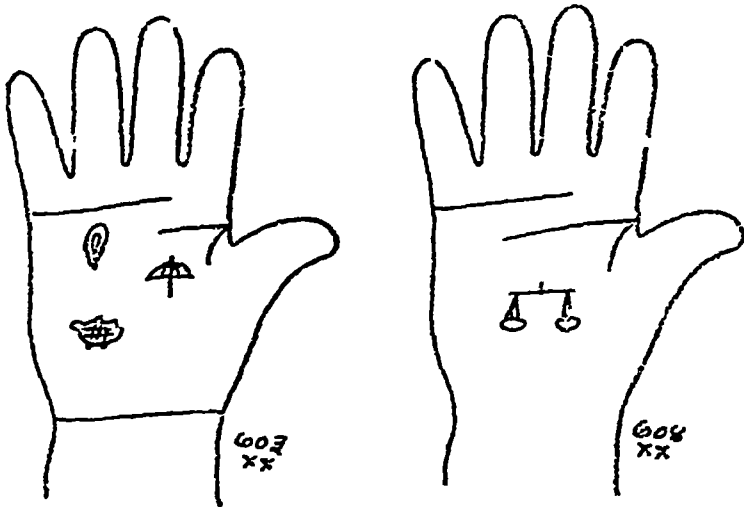
चित्र ७०३—यदि किसी स्त्री के हाथ में शख, छत्र अथवा कछुए जैसा चिह्न हो तो वह राजमाता होती है। चित्र मे इन सभी चिह्नों को प्रदर्शित किया गया है।

चित्र ७०४—यदि किसी स्त्री के हाथ में 'तराजू' के समान चिह्न हो तो वह किसी वैश्य (व्यवसायी) की पत्नी होती है।

चित्र ७०५—यदि किसी स्त्री के हाथ मे हाथी, घोड़ा; बैल, देव-मदिर अथवा वज्र जैसा चिह्न हो तो वह शास्त्रज्ञ पुत्र को जन्म देने वाली तथा तीर्थ-यात्रा करने वाली होती है। चित्र में इन सभी चिह्नो को प्रदर्शित किया गया है।
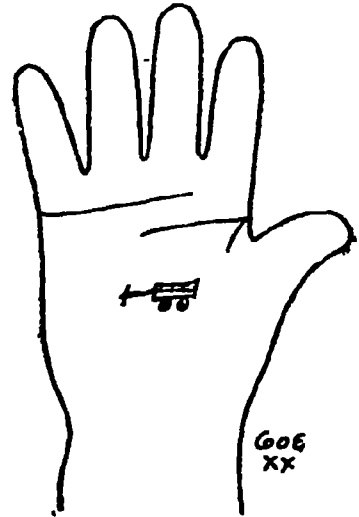
चित्र ७०६—यदि किसी स्त्री के हाथ में 'बैलगाड़ी' के समान चिह्न हो तो वह कृषक की पत्नी होती है। चित्र में इस चिह्न को प्रदर्शित किया गया है।

चित्र ७०७—यदि किसी स्त्री के हाथ मे चवर, अकुश अथवा धनुप जंसा चिह्न हो तो वह निश्चित रूप से किसी राजा की पत्नी होती है।
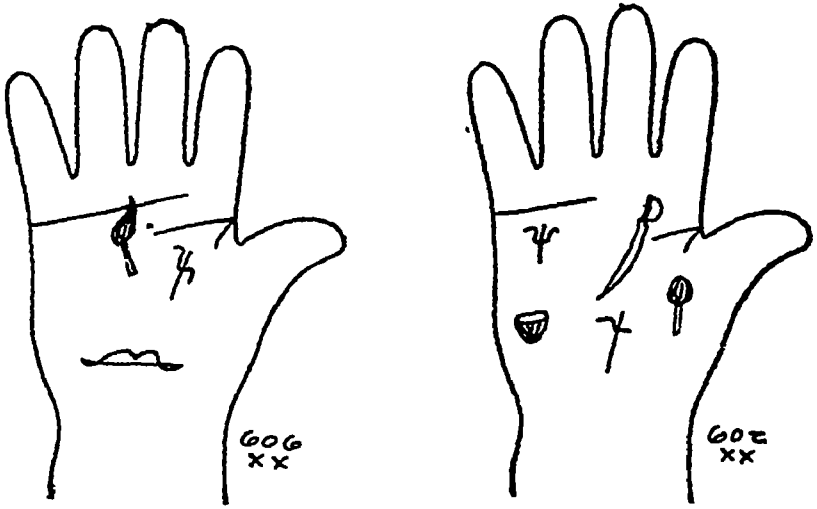
चित्र ७०८—यदि किसी स्त्री के हाथ मे त्रिशूल, तलवार, गदा शक्ति अथवा दुन्दुभी (नगाडे) के समान चिह्न हो तो वह बहुत दान करने के कारण कीर्तिमयी होती है। चित्र मे इन सभी चिह्नो को प्रदर्शित किया गया है।

चित्र ७०९—यदि किसी स्त्री के हाथ में ककपक्षी, मेढक सियार विच्छू, सर्प अथवा त्रिल्ली के समान चिह्न हो तो वह अभागिनी एवं दूसरो को दुःख देने वाली होती है। चित्र मे इन सभी चिह्नों को प्रदर्शित किया गया है।

चित्र ७१०—यदि किसी स्त्री के हाथ मे गधा अथवा ऊट के समान चिह्न हो तो वह दुर्भाग्यशाली, दुःखिनी, कर्कशा तथा दुष्ट स्वभाव की होती है। चित्र मे इन सभी चिह्नो को प्रदर्शित किया गया है।

अन्य भारतीय विद्वानों के मतानुसार हथेली पर पाये जाने वाले विविध चिह्नो का प्रभाव निम्नानुसार होता है। फलादेश स्त्री तथा पुरुष—दोनो के लिए है।
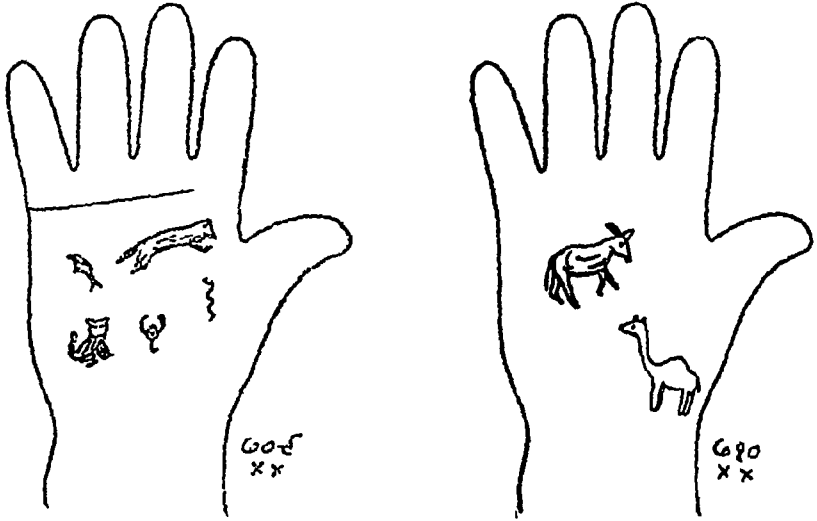
चित्र ७११—यदि हथेली पर 'पालकी' का चिह्न हो तो जातक बहुत धनवान, नौकर-चाकरो से युक्त तथा उत्तम वाहन (सवारी) का सुख प्राप्त करने वाला होता है।

चित्र ७१२—यदि हथेली पर 'रथ' का चिह्न हो तो जातक धनी, शत्रुजयी, भू-स्वामी, उपवन आदि का स्वामी तथा वाहन (सवारी) सुख प्राप्त करने वाला होता है।

चित्र ७१३—यदि हथेली पर 'कलश' का चिह्न हो तो जातक देवालय, धर्मशाला आदि वनवाने वाला, विजयी, यशस्वी तथा तीर्थ-यात्रा करने वाला होता है।
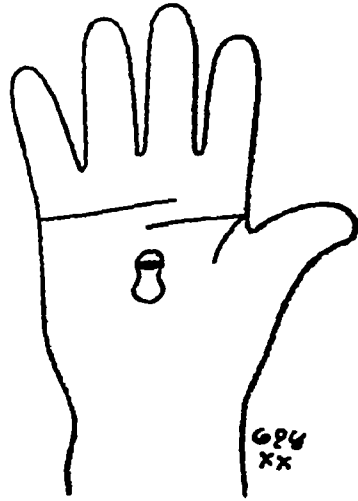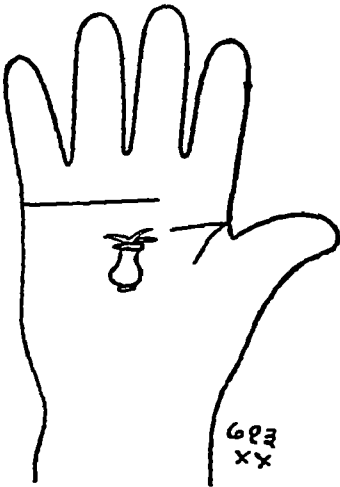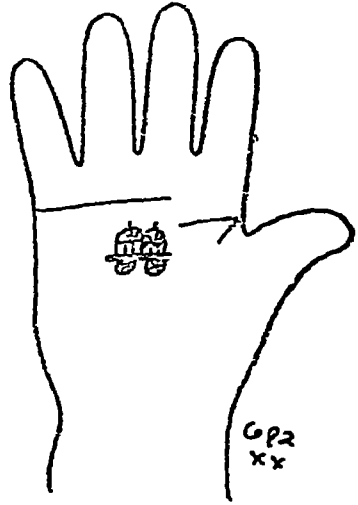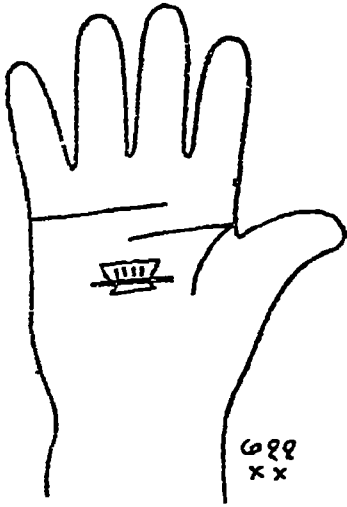
चित्र ७१४—यदि हथेली पर 'कमडल' का चिह्न हो तो जातक धर्मात्मा, दूर देशो की यात्रा करने वाला, सुखी, धनी तथा साधु-सेवी होता है।

चित्र ७१५—यदि हथेली पर हाथी जैसा चिह्न हो तो जातक वैभव सम्पन्न, सुखी, अत्यन्त धनी तथा हाथियो के व्यवसाय से लाभ उठाने वाला होता है।
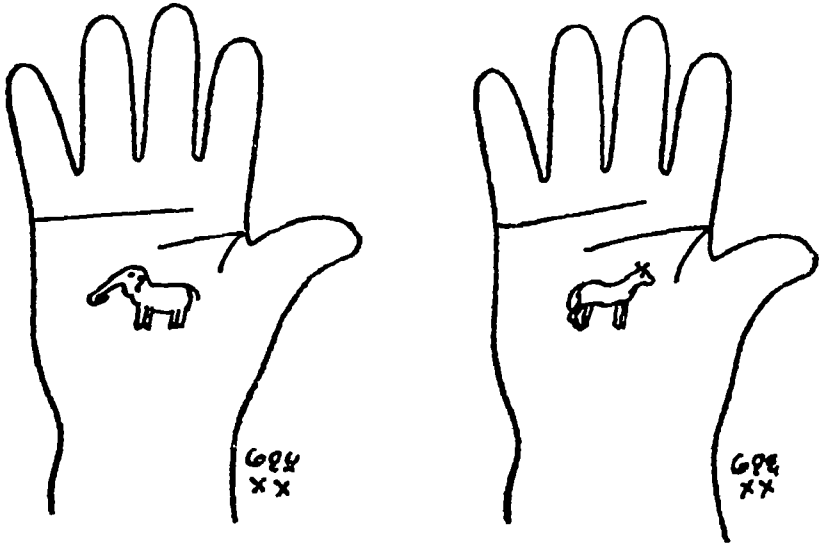
चित्र ७१६—यदि हथेली पर 'घोड़े' जैसा चिह्न हो तो जातक सेना मे उच्चपद प्राप्त करने वाला, वाहन के सुख से युक्त, सम्माननी, यशस्वी तथा धनी होता है।

चित्र ७१७—यदि हथेली पर 'सिंह' जैसा चिह्न हो तो जातक शूर-वीर, साहसी, युद्ध क्षेत्र मे विजय प्राप्त करने वाला, वैभव सम्पन्न तथा उच्च पदाधिकारी होता है।

चित्र ७१८—यदि हथेली पर 'मोर' जैसा चिह्न हो तो जातक संगीतज्ञ, भोगी, यशस्वी, प्रतिष्ठित तथा धनी होता है।
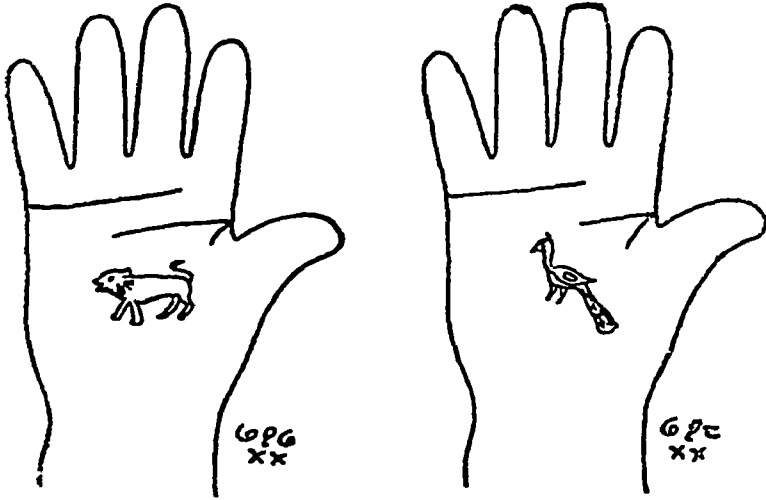
चित्र ७१९—यदि हथेली पर 'कच्छप' जैसा चिह्न हो तो जातक समुद्र पार देशो की यात्रा करने वाला, यशस्वी तथा ऐश्वर्यशाली होता है। उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे सफलता प्राप्त होती है।
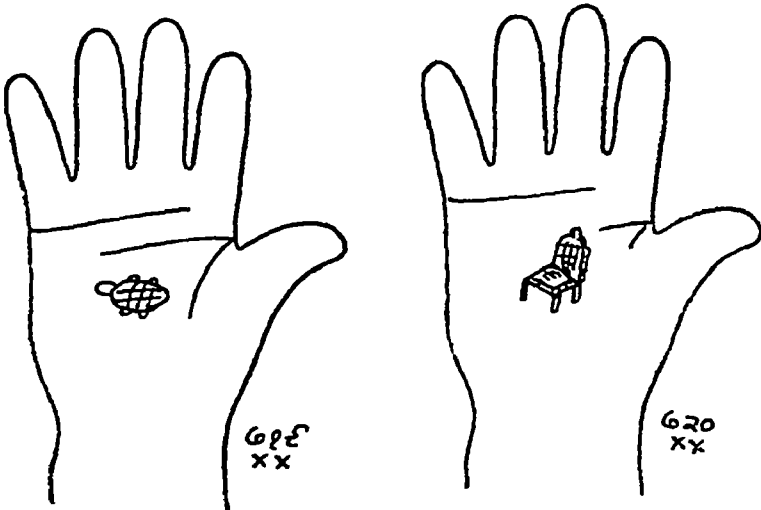
चित्र ७२०—यदि हथेली पर 'सिंहासन' जैसा चिह्न हो तो जातक राजा का मन्त्री अथवा उच्च पदाधिकारी, शासन करने वाला, धनी तथा ऐश्वर्य सम्पन्न होता है।

चित्र ७२१—यदि हथेली पर 'चवर' जैसा चिह्न हो तो जातक राज-सी वैभवयुक्त, धर्मात्मा, देवालय आदि का निर्माण कराने वाला, दानी, परोपकारी तथा यशस्वी होता है।
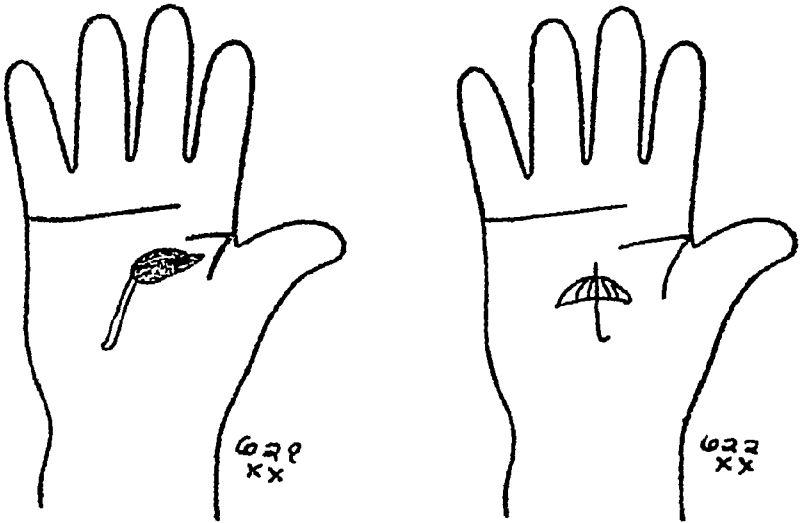
चित्र ७२२—यदि हथेली पर 'छत्र' जैसा चिह्न हो तो जातक राजा अथवा राजा के समान अधिकार सम्पन्न, धर्मात्मा, सर्वमान्य एवं यशस्वी होता है।

चित्र ७२३—यदि 'हथेली' पर 'जलयान' (जहाज) जैसा चिह्न हो तो जातक समुद्र-यात्रा करने वाला, भाग्यवान तथा दीर्घायु होता है।

चित्र ७२४—यदि हथेली पर 'ध्वजा' जैसा चिह्न हो तो जातक धर्मात्मा, यशस्वी, प्रतापी तथा अपने कुल की कीर्ति उज्ज्वल करने वाला होता है।

चित्र ७२५—यदि हथेली पर 'धनुष' जैसा चिह्न हो तो जातक शूर-वीर साहसी, विजयी, युद्ध-क्षेत्र मे कभी न हारने वाला तथा शत्रुओ को पराजित करने वाला होता है।
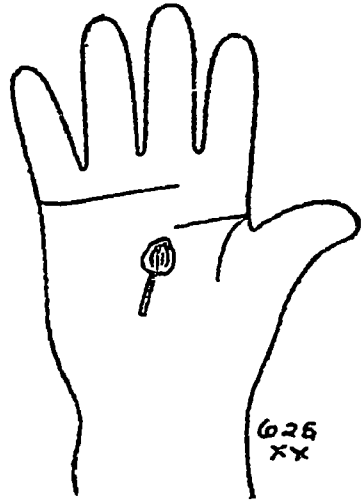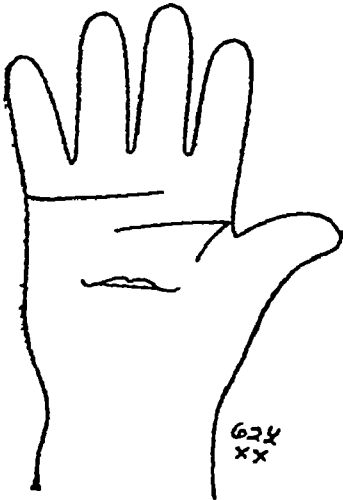
चित्र ७२६—यदि हथेली पर 'गदा' जैसा चिह्न हो तो जातक दूसरो पर शासन करने वाला, वीर विजयी तथा साहसी होता है।

चित्र ७२७—यदि हथेली पर 'सूर्य' जैसा चिह्न हो तो जातक वीर, तेजस्वी तथा सात्विक अधिकारो से युक्त होता है।
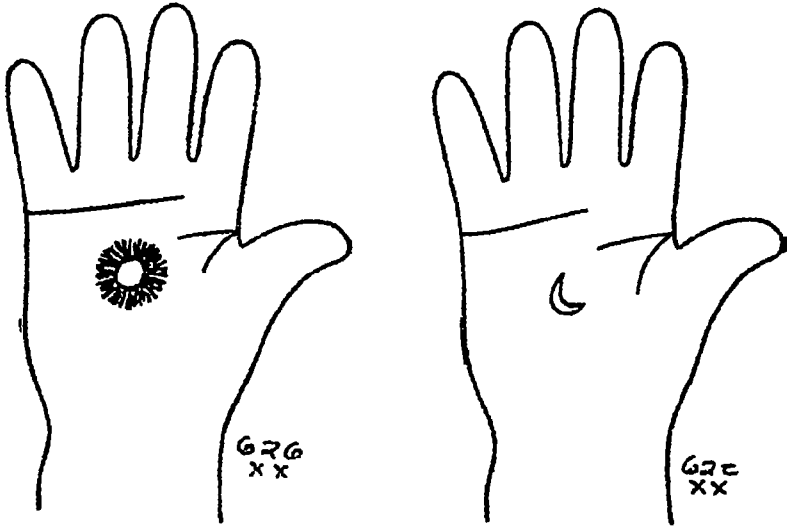
चित्र ७२८—यदि हथेली पर 'चन्द्रमा' जैसा चिह्न हो तो जातक सौभाग्यशाली, धनी, सुन्दर तथा विलासी होता है। उसे सुन्दर स्त्रियां बहुत प्रेम करती है।

चित्र ७२९—यदि हथेली पर 'विमान' जैसा चिह्न हो तो जातक देवालय आदि का निर्माण कराने वाला, तीर्थ-यात्री, धार्मिक, सद्गुणी, धनवान तथा यशस्वी होता है।

चित्र ७३०—यदि हथेली पर 'लक्ष्मी' जैसा चिह्न हो तो जातक अत्यन्त भाग्यवान धनवान, गुणवान, मान-प्रतिष्ठा सम्पन्न, विद्वान तथा विविध प्रकार के ऐश्वर्यो का उपभोग करने वाला होता है।
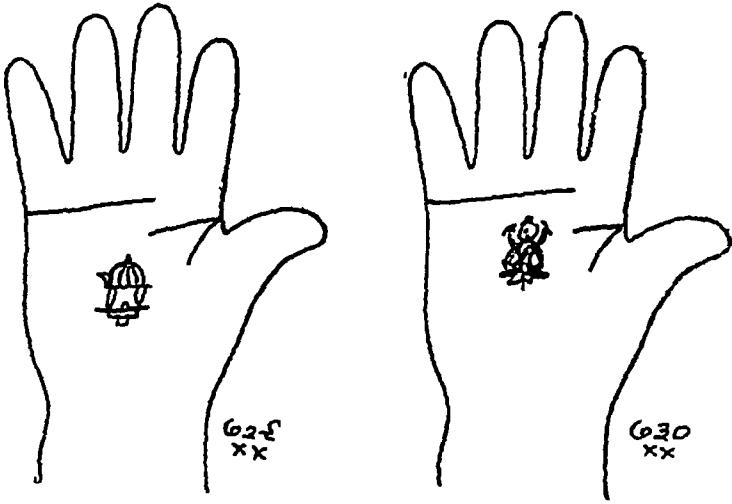
चित्र ७३१—यदि हथेली पर 'वेदी' जैसा चिह्न हो तो जातक धर्मात्मा, यज्ञकर्ता, मन्त्रविद्, सात्विक, ऐश्वर्यों से युक्त, यशस्वी, धनी तथा सर्वगुणसम्पन्न होता है।
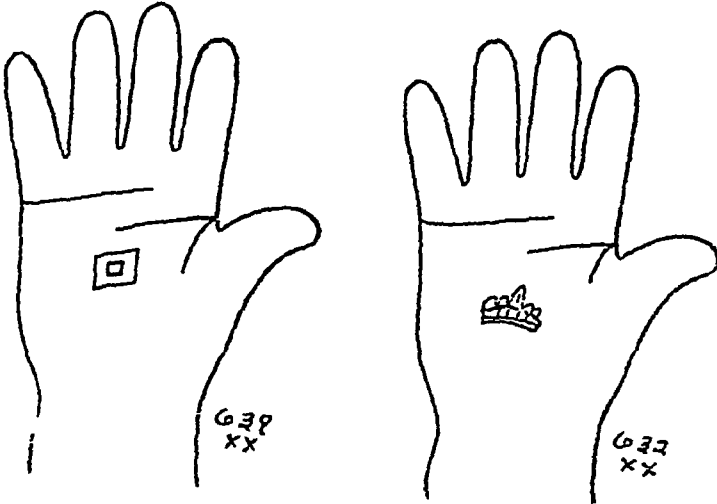
चित्र ७३२—यदि हथेली पर 'मुकुट' जैसा चिह्न हो तो जातक अत्यन्त यशस्वी, धर्मात्मा, विद्वान्, चतुर, राजा अथवा राजा के समान प्रतिष्ठित, उच्च पद को प्राप्त करने वाला, सद्गुण-सम्पन्न तथा वैभवशाली होता है।

चित्र ७३३—यदि हथेली पर 'चक्र' जैसा चिह्न हो तो जातक धर्मात्मा, राजा अथवा राजा के समान ऐश्वर्यशाली, अत्यन्त धनी विद्वानों का सहायक तथा यशस्वी होता है। अनेक सुन्दर स्त्रियां उससे प्रेम करती हैं।
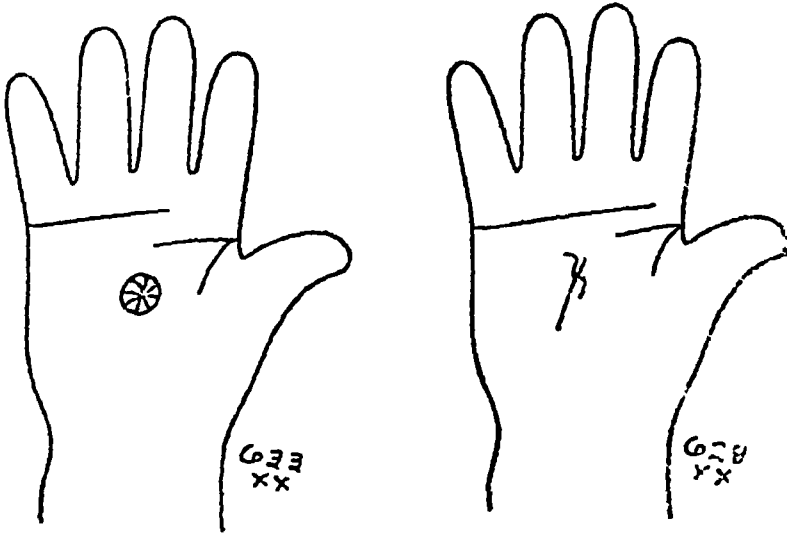
चित्र ७३४—यदि हथेली पर 'वज्र' जैसा चिह्न हो तो जातक विजयी, साहसी, वीर, शासन करने वाला, ऐश्वर्यवान् तथा उच्च-पदाधिकारी होता है।

चित्र ७३५—यदि हथेली पर 'श्रीवत्सा' जैसा चिह्न हो तो जातक धर्मात्मा, सुखी, ऐश्वर्यशाली तथा हर समय प्रसन्न रहने वाला होता है। उसकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती रहती हैं।
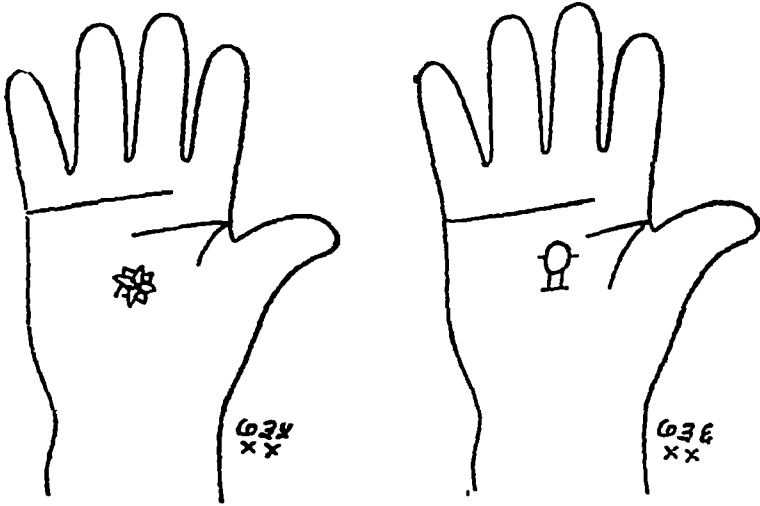
चित्र ७३६—यदि हथेली पर 'दर्पण' जैसा चिह्न हो तो जातक देवालय, धर्मशाला आदि का निर्माण कराने वाला, उच्चपद पर प्रतिष्ठित होने वाला, धनी, यशस्वी तथा सुखी होता है। ऐसे चिह्न वाले व्यक्ति वृद्धावस्था मे गृहस्थी से विरक्त होकर धर्म-प्रचार का कार्य करते है।

चित्र ७३७—यदि हथेली पर 'तोरण' जैसा चिह्न हो तो जातक बाग-बगीचा, मकान, जायदाद आदि का स्वामी, भाग्यशाली, धनी, यशस्वी तथा गुणवान होता है।

चित्र ७३८—यदि हथेली पर 'पद्म' जैसा चिह्न हो तो जातक धर्मात्मा, विजयी, राजा अथवा राजा के समान वैभवशाली, यशस्वी तथा शक्तिशाली होता है।
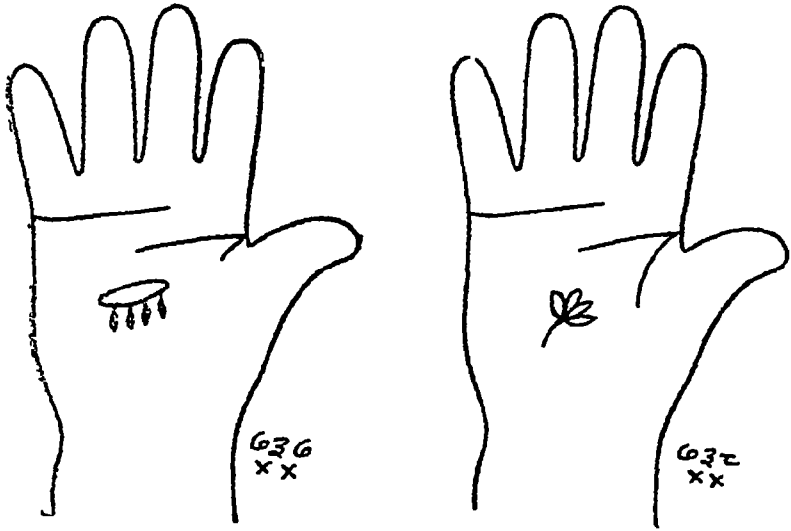
चित्र ७३९—यदि हथेली पर 'सरोवर' जैसा चिह्न हो तो जातक कृषि तथा भूमि का स्वामी, धनवान तथा परोपकारी होता है।
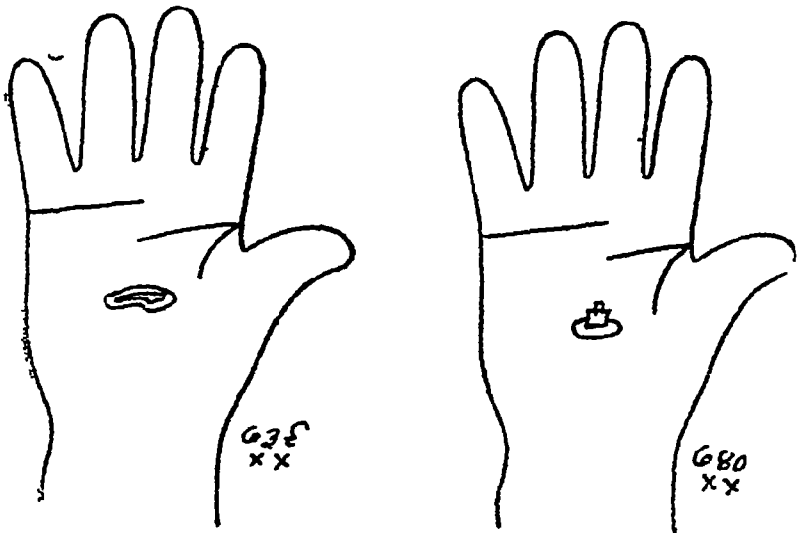
चित्र ७४०—यदि हथेली पर 'बावड़ी' जैसा चिह्न हो तो जातक परोपकारी, धर्मात्मा, वीर, साहसी, धनवान तथा ऐश्वर्यशाली होता है और सुखी-जीवन व्यतीत करता है।

चित्र ७४१—यदि हथेली पर 'पर्वत' जैसा चिह्न हो तो जातक बड़े-बड़े भवनों का निर्माण कराने वाला, रत्न आदि का व्यवसाय करने वाला, धनी, यशस्वी तथा सुखी होता है।
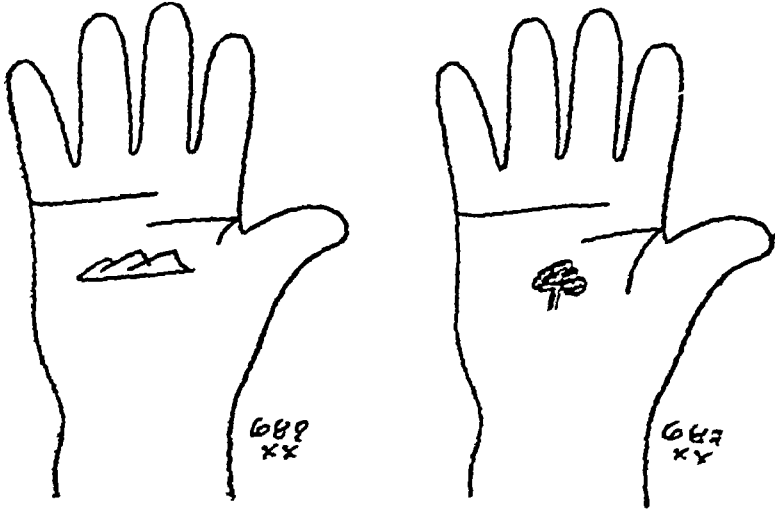
चित्र ७४२—यदि हथेली पर 'कल्पवृक्ष' जैसा चिह्न हो तो जातक अत्यन्त धनी, परोपकारी, धर्मात्मा, दयालु, दानी, भोग युक्त तथा सुखी-जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चित्र ७४३—यदि हथेली पर 'मछली' जैसा चिह्न हो तो जातक समुद्र-यात्रा करने वाला, धनी, यशस्वी सुखी तथा ऐश्वर्यपूर्ण जीवन व्यतीत करने वाला होता है।
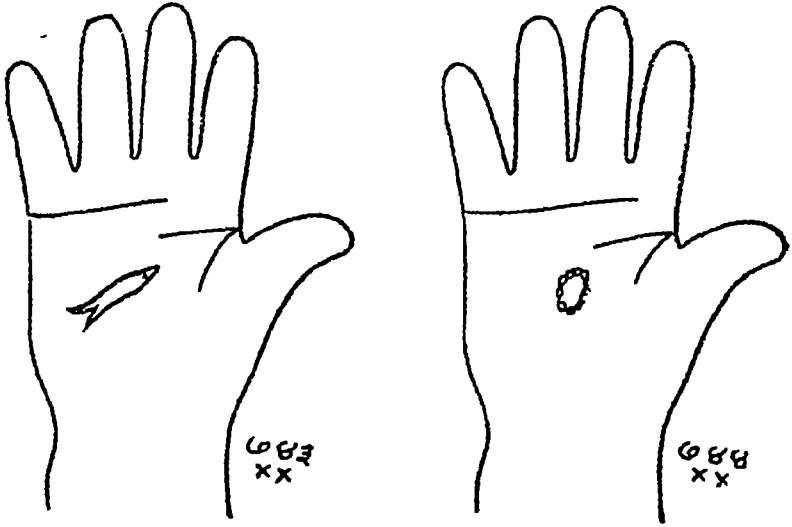
चित्र ७४४—यदि हथेली पर 'पुष्पमाला' जैसा चिह्न हो तो जातक धार्मिक कार्यों मे रुचि रखने वाला, धार्मिक कार्यों मे धन खर्च करने वाला, धनवान, यशस्वी, विजयी तथा सुखी होता है।
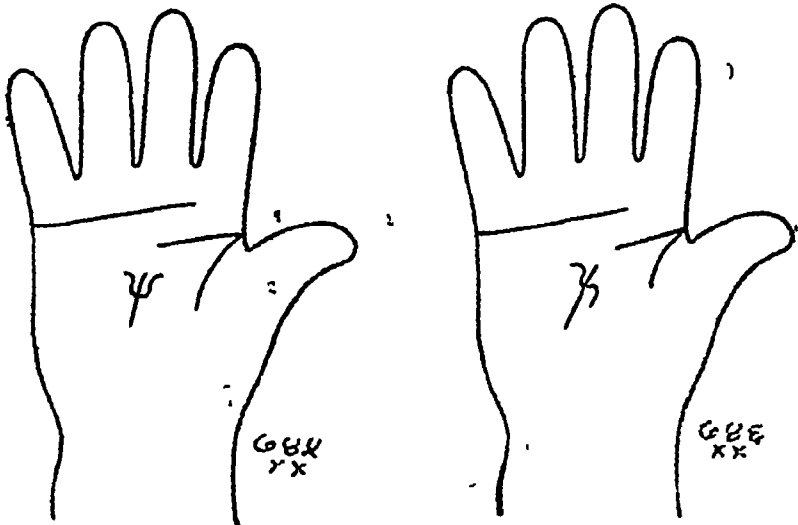
चित्र ७४५—यदि हथेली पर 'त्रिशूल' जैसा चिह्न हो तो जातक धर्मात्मा-प्रकृति का, गुणवान, विद्वान, यशस्वी तथा सुखी-जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चित्र ७४६—यदि हथेली पर 'अंकुश' जैसा चिह्न हो तो जातक विनयी, सद्‌गुणी तथा धनवान होता है। उसकी मनोकामनाएं पूर्ण होती रहती हैं।

चित्र ७४७—यदि हथेली पर पतंग जैसा चिह्न हो तो जातक लोक-प्रसिद्ध, विजयी, प्रतापी, सुखी तथा उच्च पद प्राप्त करने वाला होता है।
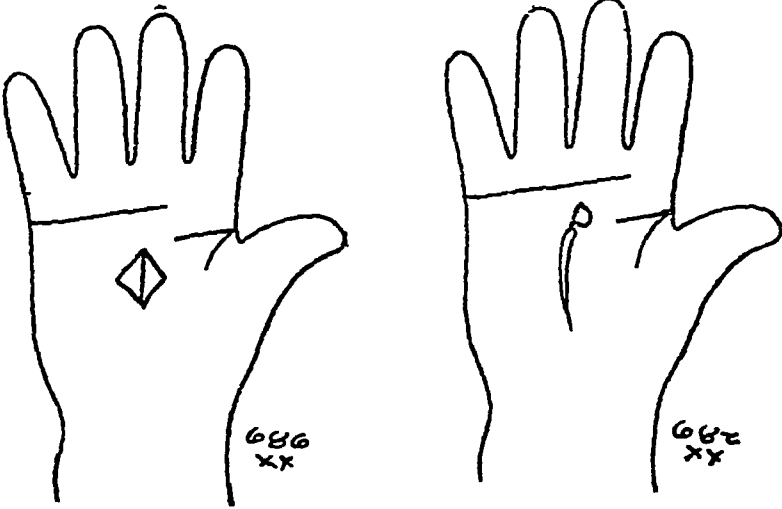
चित्र ७४८—यदि हथेली पर 'तलवार' जैसा चिह्न हो तो जातक राज्य द्वारा सम्मानित, विजयी, शूरवीर, साहसी तथा सौभाग्यशाली होता है।

चित्र ७४९—यदि हथेली पर 'स्वस्तिक' जैसा चिह्न हो तो जातक बुद्धिमान, विद्वान्, राजा का मन्त्री अथवा उच्च पदाधिकारी, वैभव सम्पन्न, सुखी, यशस्वी तथा सद्गुणी होता है।
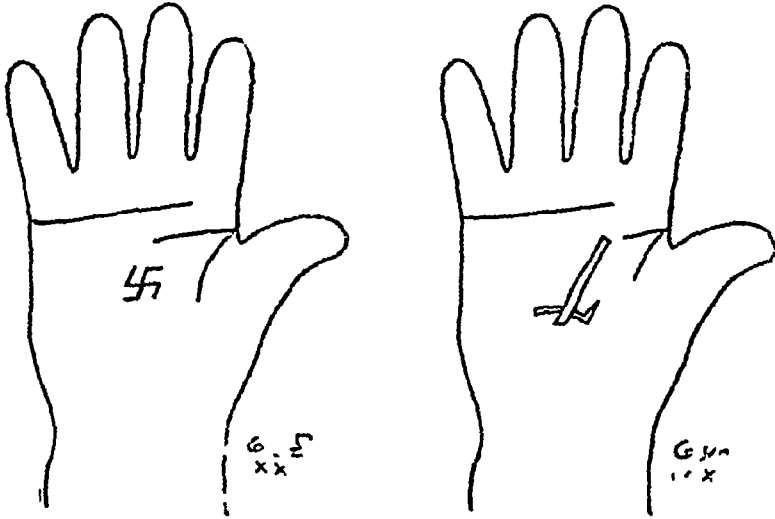
चित्र ७५०—यदि हथेली पर 'हल' जैसा चिह्न हो तो जातक कृषि कर्म द्वारा धनोपार्जन करने वाला, धनी तथा सुख-सम्पन्न होता है।

चित्र ७५१—यदि हथेली पर 'षट्कोण' जैसा चिह्न हो तो जातक भूमि स्वामी, पृथ्वी द्वारा लाभ प्राप्त करने वाला, धनी तथा ऐश्वर्य-शाली होता है।

चित्र ७५२—यदि हथेली पर 'त्रिकोण' जैसा चिह्न हो तो जातक वाहन का सुख प्राप्त करने वाला, गाय भैंस आदि पशुओं को रखने वाला, धनो, प्रतिष्ठित तथा भूमि द्वारा लाभ प्राप्त करने वाला होता है।
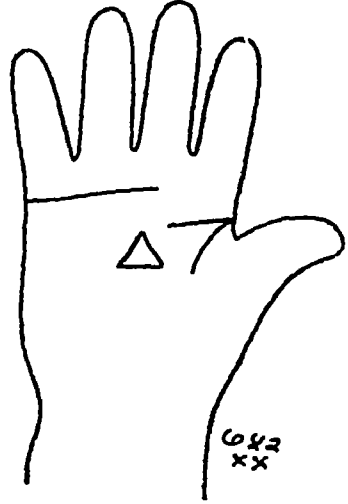
चित्र ७५३—यदि हथेली पर 'नन्द्यावर्त-स्वस्तिक, जैसा चिह्न हो तो जातक धर्मात्मा, तीर्थयात्री, धनी, ऐश्वर्य सम्पन्न तथा यशस्वी होता है।
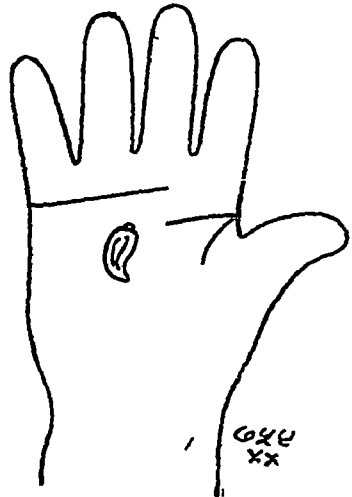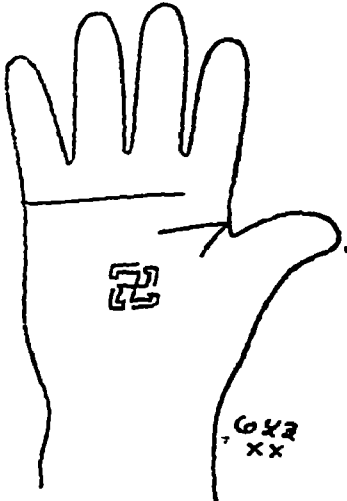
त्रित्र ७५४—यदि हथेली पर 'शख' जैसा चिह्न हो तो जातक समुद्र यात्रा करने वाला, कुशल व्यवसायी, धर्मात्मा, देवालय आदि के निर्माण मे धन व्यय करने वाला, पुण्यवान्, यशस्वी, धनी तथा सुखी-जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

चित्र ७५५—यदि दाए हाथ के अंगूठे के मध्यभाग मे यव-चिह्न हो तो जातक सुन्दर वक्ता, लोकप्रिय नेता, बुद्धिमान, धनी, यशस्वी तथा उच्चपद प्राप्त करखे वाला होता है।

विशेष

प्राच्य मतानुसार पूर्वोक्त हस्तचिह्नो के विषय मे भारतीय विद्वानों के मत का साराश निम्नलिखित है—

(१) हथेली पर जो शुभ-चिह्न बताये गए है, उनमें से जिस व्यक्ति के हाथ पर एक या दो चिह्न होते है, वह अत्यन्त विद्वान्, धर्मात्मा, उदार, धैर्यवान, सद्गुणी, परोपकारी, शास्त्रज्ञ, यज्ञ आदि धार्मिक-

कृत्य करने वाला, स्त्री-सन्तति, वाहन, धन आदि के सुख से पूर्ण होता है।

(२) मत्स्य, शख, धनुप, खडग, कमल, कमण्डलु, पालकी; वृक्ष, चक्रमन्दिर अथवा अष्टकोण जैसे एक या दो चिह्न वाले व्यक्ति राजा, महाराजा अथवा अत्यन्त धनी और भाग्यशाली होते हैं।

(:) मन्दिर, पर्वत, कुण्ड, चतुष्कोण, पर्वत, माला, स्वस्तिक, विमान, गदा अथवा पताका जैसे एक या दो चिह्न वाले व्यक्ति महात्मा, उदार, ज्ञानी, ध्यानी, वैरागी, धर्मात्मा, विद्वान, सद्गुणी, तीर्थयात्री, योगाभ्यासी तथा भाग्यशाली होते है।

(४) वैराग्यवान् मनुष्यो के हाथ मे माला, पर्वत, ध्वजा अथवा त्रिकोण मे से कोई एक चिह्न अवश्य पाया जाता है।

(५) खड्ग, तोमर, छत्र, रथ, मुद्रा, कमल, पखा, हाथी अथवा चक्र आदि मे से एक या दो चिह्न वाले व्यक्ति राजा अथवा राजा के समान धनी और सुखी होते हैं।

(६) तराजू अथवा चतुष्कोण-चिह्न वाले व्यक्ति कुशल व्यवसायी, धनी तथा यशस्वी होते है।

(७) अष्टकोण, चतुष्कोण अथवा कटार जैसे चिह्न वाले व्यक्ति धनवान तथा सुखी होते है।

(८) यदि अष्टकोण-चिह्न के ऊपर ध्वजा, पर्वत, खड्ग, चक्र आदि में से कोई एक चिह्न हा तो ऐसा व्यक्ति भू-स्वामी, सम्पत्तिवान तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

(९) तलवार, धनुष तथा चक्र-चिह्न वाले व्यक्ति साहसी, निडर, वलवान तथा पराक्रमी होते है।

(१०) रथ, चक्र, मत्स्य अथवा शंख जैसे चिह्न वाले व्यक्ति विद्वान, यशस्वी तथा धनवान होते है।

(११) सूर्य, चन्द्र, हाथी, घोडा तथा नेत्र—इनमे से एक या दो चिह्न जिस व्यक्ति की हथेली पर हो, वह राजा के समान धनी, सुखी ऐश्वर्यशाली तथा पराक्रमी होता है।

(१२) वज्र तथा गुणन (क्रास) चिन्ह वाला व्यक्ति प्रत्येक व्यवसांय के सफलता प्राप्त करता है।

(१३) मकड़ी, चक्र, शख अथवा ध्वजा जैसे चिन्ह वाला व्यक्ति शास्त्रों का विद्वान तथा ज्ञानी होता है।

(१४) जिस स्त्री के हाथ में पद्म चिन्ह होता है, वह महारानी, रानी अथवा किसी अत्यन्त धनी और ऐश्वर्यशाली व्यक्ति की पत्नी होती है।

(१५) यदि किसी व्यक्ति के हाथ में अकुश, कुण्डल तथा छत्र ये तीनो चिन्ह एक साथ हो, तो वह निश्चित रूप से चक्रवर्ती सम्राट अथवा वैसे ही ऐश्वर्य से सम्पन्न होता है।

(१६) हथेली मे मत्स्य-चिन्ह हो तो जातक शतपति, वज्र-चिन्ह हो तो सहस्रपति, पद्म-चिन्ह हो तो लक्षपति, शख-चिन्ह हो तो कोटिपति तथा मत्स्य अथवा मकर-चिन्ह हो तो सहस्रपति होता है।

(१७) हथेली मे मत्स्य-पुच्छ चिन्ह हो तो विद्वान और धनवान होता है तथा अपने पितामह द्वारा सचित धन को प्राप्त करता है।

(१८) हथेली पर छत्र अथवा पद्म-चिन्ह हो तो जातक कोटिपति, ताल पत्र हो तो लक्षपति एव शिविका अथवा अश्व चिन्ह हो तो राजा होता है।

(१९) जिस व्यक्ति की हथेली मे पद्म-चिन्ह हो, वह विपुल सम्पत्ति का स्वामी होता है।

(२०) हथेली मे मृणाल अथवा अकुश का चिन्ह होने पर जातक निधिपति तथा कुभ का चिन्ह होने से विपुल सम्पत्तिवान् होता है।

(२१) हथेली मे ओखली-चिन्ह होने से याज्ञिक, प्रकोष्ठ, ध्वज मकर चिन्ह होने से अत्यन्त धनो, जाल-चिन्ह होने से याज्ञिक, सूत्र-चिन्ह होने से गायो का स्वामो। दन्त-चिन्ह होने से भूपति, देवता, नदी अथवा त्रिकोण-चिन्ह होने से धर्मात्मा होता है।

(२२) त्रिशूल-चिन्ह हथेलो पर जहा भी हो, शुभ होता है। यदि यह चिन्ह भाग्य-रेखा तथा चन्द्र-क्षेत्र के वीच मे हो तो जातक राज्य द्वारा सम्मानित, दान ', अतिथि सेवी, धर्मात्मा, भूस्वामी, वुद्धिमान, यशस्वी तथा सर्व प्रिय होता है। यदि मस्तक-रेखा तथा जीवन-रेखा के वीच मे हो तो जातक आध्यात्मिक-शक्ति सम्पन्न, अत्यन्त यशस्वी, धनो तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

आवश्यक—हस्त-चिन्हो पर विचार करते समय हाथ की आकृति ग्रह-क्षेत्रो को उच्चता अथवा अनुच्चता, अन्य रेखाओ की स्थिति तथा उगलियो आदि की वनावट पर भी पूर्ण ध्यान देना आवश्यक है। यदि कोई ग्रह-क्षेत्र अपने स्थान से हटा हुआ हो अथवा किसो अन्य ग्रह-क्षेत्र की ओर झुका हुआ हो तो उसके फलादेश में भी अन्तर आ जाता है। इन सव विषयो की सम्यक जानकारी प्राप्त करने के हेतु 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के 'आपका हाथ' शीर्षक पहले खण्ड का गम्भीर अध्ययन करना आवश्यक है।

+

१२१०७० टैक्निकल प्रिंटिंग प्रेस सोनीपत (निकट दिल्ली) मे मुद्रित।

शरीर-लक्षण-विज्ञान

(तिल-मस्सा-लहसन विचार)

वृहद् सामुद्रिक विज्ञान

खण्ड ११

बृहद् सामुद्रिक विज्ञान खण्ड-११

शरीर-लक्षण-विज्ञान

(तिल-मस्सा-लहसन विचार)

[मनुष्य-शरीर के विभिन्न अङ्गों की आकृतियो को देखकर उसके स्वभाव, चरित्र एव शुभाशुभ का ज्ञान प्राप्त कराने वाली सैकडो चित्रो से सुसज्जित अपूर्व पुस्तक, तिल, मस्सा, लहसन, भौंरी आदि के विचार सहित।]

लेखक

राजेश दीक्षित

देहाती पुस्तक भण्डार,

चावड़ी बाजार, दिल्ली-६

●

प्रकाशक
देहाती पुस्तक भण्डार
चावडी बाजार, दिल्ली-६

●

लेखक
राजेश दीक्षित

●

मूल्य
स्वदेश में : साढ़े दस रुपये
विदेश में : पचीस शिलिंग

●

मुद्रक
टैक्निकल प्रिंटिंग प्रेस
सोनीपत (निकट दिल्ली)

दो शब्द

'वृहद सामुद्रिक विज्ञान' का ग्यारहवा खन्ड 'शरीर-लक्षण-विज्ञान' आपके हाथ मे है। इस खण्ड मे शरीर के मुख्य विभाग—उन्मान, मान, गति, सहति, सार, वर्ण, स्नेह स्वर, प्रकृति, सत्व, अनूक, क्षेत्र तथा मृणा, शरीर का चेतना यन्त्र, मनुष्य का मस्तिष्क और उसकी बनावट, विभिन्न मानसिक शक्तियां तथा मस्तिष्क मे उसके क्षेत्र, ललाट पर पाई जाने वाली रेखाए, कार्तिकेयन प्रणाली द्वारा हस्त-परीक्षा, मानव शरीर के विभिन्न अग और उनकी बनावट का जातक के चरित्र, स्वभाव तथा जीवन पर प्रभाव आदि विषयो के साथ ही तिल, मस्सा, लहसन तथा भौंरी के सम्बन्ध मे प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानो के विभिन्न मतो का एकत्र सङ्कलन किया गया है।

किसी भी विषय को समझने मे पाठको को तनिक भी असुविधा न हो, इस उद्देश्य से पाठय सामग्री मे सम्बन्धित लगभग साढे तीन सौ चित्र देकर इस पुस्तक की उपयोगिता को अधिकाधिक बढाने का प्रयत्न किया गया है।

प्राचीन शास्त्रकारो ने कहा है कि केवल हाथ की रेखाओ को देखकर ही किसी मनुष्य के चरित्र, स्वभाव अथवा जीवन मे घटने वाली घटनाओ के शुभा शुभ का सही-सही ज्ञान प्राप्त नही किया जा सकता इस हेतु उसके अन्य शारीरिक लक्षणो को देखना भी आवश्यक है। इसीलिए सामुद्रिक शास्त्र वेत्ताओ ने हस्त परीक्षा को मुख्य विद्या न मानकर, अङ्ग ल ण शास्त्र का ही एक अग माना है। अत जो महानुभाव हस्त-परीक्षा के जिज्ञासु हों, उन्हे शारीरिक-लक्षणों का भी पूर्ण ज्ञान कर लेना अत्यन्त आवश्यक है।

प्रस्तुत खण्ड मे केवल पुरुषों से सम्बन्धित शारीरिक-लक्षणो का ही प्रस्तुती-

करण किया गया है। स्त्रियो के शारीरिक लक्षणो के सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त करने के लिए 'स्त्री सामुद्रिक' शीर्षक अगले खण्ड को पढना चाहिए।

जिन महानुभावो एव विद्वानो की कृतियो द्वारा इस पुस्तक सामग्री-चयन मे सहयोग लिया गया है, उन सभी के प्रति हम श्रद्धा-सहित नतमस्तक है।

महोली की पौर, मथुरा
श्रावण कृष्ण २, स २०२५ वि

—राजेश दीक्षित

समर्पण
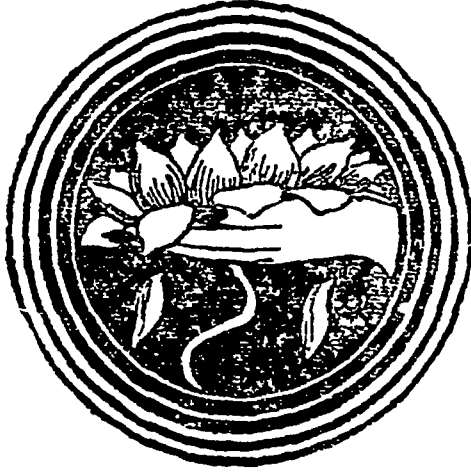
दैनिक 'अमर उजाला' आगरा
के यशस्वी सम्पादक
सुहृदयवर
श्री डोरीलाल जी अग्रवाल
को सस्नेह

कराग्रे वसते लक्ष्मीः

कर मध्ये सरस्वती ।

कर मूले स्थितो ब्रह्मा

प्रभाते कर दर्शनम् ॥

विषय-सूची

मनुष्य-शरीर के अन्य अंग

शरीर-लक्षण विज्ञान

"यज्जातकं व्यास पराशराख्यो,
श्री सूर्य कात्यायन छागलेयैं।
कृतंतदैवाद्य महंब्रवीमी,
युक्तं सुसामुद्रिक युक्तिभेदैः।"

नवरंध्राणि हस्तांघ्रि, पृष्ट नाभि शिरोवपुः ।
कंठ वक्षोदरोर्वादि, सहरेखं परीक्षयेत् ॥

× × ×

शरीरावर्त गतिच्छाया, स्वर वर्ण गंध सत्वानि ।
दृष्टि शीलादि चिह्नानि, विज्ञाय फलमीरयेत् ॥

अंग-विद्या अथवा लक्षण-शास्त्र

'अग-विद्या' अथवा 'लक्षण-शास्त्र' 'सामुद्रिक-विज्ञान' का ही एक महत्वपूर्ण विभाग है। जिस प्रकार हाथ की रेखाओ को देखकर जातक के भूत-भविष्य तथा वर्तमान काल मे घटने वाली घटनाओ के सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त की जाती है, उसी प्रकार अग-विद्या द्वारा जातक की मुखाकृति, शरीर की बनावट, हाव-भाव, चाल-ढाल तथा अन्य क्रिया-कलापो को देखकर उसके स्वभाव, चरित्र, रुचि एव अन्य विषयो के सम्बन्ध मे ज्ञान प्राप्त होता है।

भारतीय लक्षण-शास्त्र बहुत प्राचीन है। आज से सहस्रो वर्ष पूर्व लिखे गए पुराण, स्मृति, रामायण, महाभारत आदि सस्कृत ग्रन्थो मे मनुष्य शरीर के विभिन्न शुभ-अशुभ लक्षणो का उल्लेख पाया जाता है।

आधुनिक काल मे पाश्चात्य विद्वानो ने भी इस दिशा मे महत्वपूर्ण अनुसन्धान किए हैं; परन्तु चूकि प्रत्येक दिशा के निवासियो की शारीरिक बनावट एव मुखाकृति भिन्न-भिन्न प्रकार की होती है, अत. भारतीय स्त्री-पुरुषो के लिए पाश्चात्य लक्षण-शास्त्र की उपयोगिता उतनी अधिक ठीक नही बठ पाती जितना कि भारतीय विद्वानो का मत ठीक रहता है।

अत. हम यहा पर भारतीय मत को प्रधानता देते हुए, भारत-वासियो पर ठीक लागू होने वाली पश्चिमी विद्वानो की मान्यताओं का समन्वय स्थापित करते हुए मनुष्य की आकृति एव उसके विभिन्न शारीरिक-लक्षणो के प्रभाव का वणन करेंगे।

शरीर के मुख्य विभाग

शरीर के किन-किन विभागो को देखकर जातक के चरित्र, स्वभाव आदि की परीक्षा करनी चाहिए। इस सम्बन्ध मे 'वृहत् सहिता' का एक श्लोक यह है—

"उन्मान मानगति संहति सारवर्ण,
स्नेहं स्वरं प्रकृति सत्व मनूकमादौ।
क्षेत्रं मृजां च विधिवत्कुशलोविलोक्य,
सामुद्र विद्वदति यातमनागतं वा॥"

भावार्थ—(१) उन्मान (शरीर की ऊचाई), (२) मान (शरीर का वजन), (३) गति (चाल), (४) सहति (शारीरिक अगों का एक दूसरे से मिलान अर्थात् जोड़), (५) सार (मेद, मज्जा, चर्म, हड्डी, शुक्र, रुधिर एव मास), (६) वर्ण (शरीर का रग), (७) स्नेह (त्वचा की चिकनाई) (८) स्वर (कण्ठ से निकलने वाली आवाज), (९) प्रकृति (मनुष्य का स्वभाव), (१०) सत्व (मनुष्य के विशेष गुण अथवा चित्त के धर्म), (११) अनूक (पूर्व जन्म को सूचित करने वाली मुखाकृति), (१२) क्षेत्र (शरीर के विभिन्न भाग अथवा अवयव तथा (१३) मृजा (शरीर की कान्ति)—इन्हे कुशलता पूर्वक देखकर सामुद्रिक शास्त्र का विद्वान जातक के भूत तथा भविष्य का ज्ञान प्राप्त कर सकता है।

अब हम उक्त तेरह विभागो के सम्बन्ध में भारतीय विद्वानो के मत का क्रमिक उल्लेख करते है केवल 'क्षेत्र' अर्थात् शरीर के विभिन्न अवयवो का वर्णन सबसे अन्त मे किया जाएगा।

उन्मान

सीधे खड़े होने पर मनुष्य के शरीर की जो ऊचाई हो, उसे 'उन्मान' कहा जाता है।

शरीर की ऊचाई नापने की विधि यह है कि एक धागा लेकर खड़े हुए मनुष्य के चरणतल से मस्तक के सर्वोच्च भाग की ऊचाई नापी जाए। जितनी ऊचाई हो धागे पर वही चिन्ह लगाकर तोड दिया जाए। तत्पश्चात् जिस मनुष्य के शरीर का नाप लिया गया है, उसके हाथ की मध्यमा उगली के द्वितीय पर्व की जितनी चौड़ाई हो, उसे एक 'अगुल' के वरावर मानकर, उसके अनुपात से पूर्वोक्त माप वाले धागे को नापा जाए। यदि उक्त परिमाण के अनुसार धागे की लम्वाई १०८ अगुल की हो तो उसे 'उत्तम', यदि १०० अगुल की हो तो उसे 'मध्यम' और यदि ६० अगुल की हो तो उसे निकृष्ट समझना चाहिए।

कुछ विद्वानो के मतानुसार क्रमश १०८, ६६ तथा ८४ अगुल की लम्वाई उत्तम, मध्यम तथा निकृष्ट होती है।

कुछ विद्वान अगुल के परिमाण के लिए मध्यमा उगली के मध्य पर्व की अपेक्षा अगूठे के मध्य भाग की चौड़ाई को एक अगुल के वरा-वर मानने की वात कहते है।

उन्मान के अनुसार १०८ अगुल लम्बाई के शरीर वाला व्यक्ति उच्च पद प्राप्त करने वाला, दीर्घजीवी तथा सुखी होता है। मध्यम तथा 'निकृष्ट' ऊचाई के शरीर वाले क्रमश. मध्यम तथा निकृष्ट फल प्राप्त करते हैं।

उक्त परिमाण के अनुसार लम्वाई जितनी न्यूनाधिक हो, उसका फल भी उतना ही न्यूनाधिक समझना चाहिए। 'उत्तम' श्रेणी को

लम्बाई से अधिक लम्बा शरीर तथा न्यूनतम लम्बाई से भी कम लम्बा शरीर अच्छा नही माना जाता।

मान

शरीर का मान अर्थात् भार (वजन) के अनुसार शुभाशुभ फल ज्ञात करने के लिए २० वर्ष से कम की आयु वाली स्त्री तथा २५ वर्ष से कम की आयु वाले पुरुष के शरीर का मान (वजन) लेना व्यर्थ होता है, क्योकि इससे कम आयु वाले स्त्री-पुरुषो के शरीर का वजन निश्चित नही किया जा सकता।

परिपक्वावस्था वाले मनुष्य के शरीर का वजन यदि 'डेढ भार' हो तो वह उच्च पद प्राप्त करने का अधिकारी होता है। 'एक भार' वजन वाला व्यक्ति अत्यन्त धनी होता है तथा 'आधा-भार' वजन वाला व्यक्ति सुखी होता है। इससे कम भार वाला व्यक्ति दुःखी जीवन व्यतीत करता है।

'एक भार' का वजन कितना होता है इसे जानने के लिए निम्नलिखित तालिका को ध्यान में रखना चाहिए।

५ गुंजा (घुंघची)	का	१ माशा
१६ माशे	का	१ कर्ष
४ कर्ष	का	१ पल
१०० पल	का	१ तुला
२० तुला	का	१ भार

गति

'गति' मनुष्य के चलने का ढंग अर्थात् 'चाल' को कहा जाता है। गति के सम्बन्ध मे विभिन्न ग्रन्थो के मत का सार संक्षेप निम्नानुसार समझना चाहिए।

(१) हंस, तोता अथवा गिद्ध जैसी चाल वाला व्यक्ति राजा अथवा विपुल ऐश्वर्यशाली होता है।

(२) हाथी, सिंह तथा बैल जैसी चाल वाला व्यक्ति भाग्यवान होता है।

(३) नेवले जैसी चाल वाला व्यक्ति धनी होता है।

(४) सियार, गधा, भैंसा, गिरगिट, खरगोश अथवा हरिण जैसी चाल वाला व्यक्ति सम्मान-हीन एवं दुःखी जीवन व्यतीत करता है।

(५) कौए तथा उल्लू जैसी चाल वाला व्यक्ति दुःखी, भयभीत तथा शोकाकुल बना रहता है।

(६) कुत्ता, ऊंट, सुअर तथा मेढा जैसी चाल वाला व्यक्ति भाग्य-हीन होता है।

(७) व्याघ्र तथा मोर जैसी चाल वाला व्यक्ति राजा होता है।

(८) मेढक जैसी चाल वाला व्यक्ति दरिद्र होता है।

(९) जिनके चलते समय शब्द न हो, वे व्यक्ति उच्च पद को प्राप्त करते हैं।

(१०) जिनके चलते समय शब्द हो, वे व्यक्ति दरिद्री होते हैं।

संहति

शरीर के एक अंग के दूसरे अंग से 'मिलान' को 'संहति' कहा जाता है।

(१) यदि शरीर के सभी अंग अपने-अपने उचित स्थान पर एक-दूसरे से ठीक-ठाक मिले हुए हों तो जातक सुखी और दीर्घायु होता है।

(२) यदि शरीर के अगो की 'सहति' ठोक न हो और उनमे कही शिथिलता, ढीलापन अथवा ऊचाई-नीचाई हो तो उसे दरिद्रता का लक्षण समझना चाहिए।

सार

शरीर के (१) मेद (चरबी), (२) मज्जा (हड्डी के भीतरी भाग), (३) चमडी (त्वचा), (४) हड्डी, (५) शुक्र (वीर्य), (६) रक्त तथा (७) मांस—इन सातों को 'सार' कहा जाता है।

(१) मेद—जिस व्यक्ति के शरीर मे 'मेद' (चरबी) की अधिकता हो। वह सुन्दर, धनी, स्थिरमति, नित्य प्रसन्न रहने वाला तथा कम क्रोध करने वाला होता है।

(२) मज्जा—जिस व्यक्ति मे 'मज्जा' को अधिकता हो वह धन-सन्तान युक्त होता है।

(३) त्वचा—जिस व्यक्ति के शरीर की चमड़ी (त्वचा) चिकनी हो, वे धनी होते है। जिनकी त्वचा कोमल हो, वे सुन्दर होते है और जिनकी त्वचा पतली हो, वे बुद्धिमान होते है।

शरीर की त्वचा के सम्बन्ध में पाश्चात्य विद्वानो का मत निम्नलिखित है—

(क) यदि शरोर की त्वचा चिकनी और कोमल हो अर्थात् 'शिशु' की त्वचा की भाति मुलायम एव तरोताजा दिखाई दे, ऐसे व्यक्ति भावुक, स्नेहशील तथा मधुरभाषी होते हुए भी तुनुक मिजाज तथा सवेगात्मक प्रवृत्ति के होते हैं। उनकी शारीरिक तथा मानसिक प्रतिक्रियाओ मे बाल्यावस्था जैसी अपरिपक्वता होती है। वे अपनी सहायता के लिए अन्य व्यक्तियो पर निर्भर रहते है। यदि कोई उनकी भावुकता का मजाक बनाये तो उनके हृदय को अत्यधिक ठेस पहुंचती है।

(ख) यदि शरोर की त्वचा चिकनी और दृढ (ठोस) हो, जो देखने में स्वच्छ चमकीली तथा लचीली हो, तो ऐसा व्यक्ति सौदर्य प्रमी होता है। ऐसे व्यक्ति का किसी भी क्षेत्र अथवा रूप मे मलिनता अथवा गन्दगी पसन्द नही होती। वह स्वभाव का शान्त तथा मृदु सगीत का प्रेमी होता है। सौदर्य की रक्षा के लिए वह निरन्तर प्रयत्नशील वना रहता है। ऐसे व्यक्ति रईसी तवियत के, सुसस्कृत, सुरुचि-सम्पन्न, आचार-विचारो मे मार्मिक तथा कलात्मक रुचि के होते हैं।

(ग) यदि शरीर की त्वचा रुखी हो तो ऐसा व्यक्ति रुखे स्वभाव का, शक्तिशाली, वात-चीत तथा वेष-भूषा मे फूहड़, अशिष्ट, परिहास करने वाला, खुलकर हँसने वाला, परिश्रमी दौड़-धूप तथा खेल-कूद मे रुचि लेने वाला एव स्पष्ट वक्ता होता है। उसकी आवाज ऊची तथा भारी होती है। उसे तोखी आवाज वाले वाद्य-यन्त्र अच्छे लगते हैं। ऐसा व्यक्ति वस्तुओ की खरीद करते समय उसकी सुन्दरता अथवा कोमलता पर ध्यान न देकर उनके टिकाऊपन पर अधिक ध्यान देता है।

(घ) रूखी और कड़ी त्वचा वाले व्यक्ति मे शारीरिक शक्ति अपरमित होती है। ऐसे व्यक्ति की आवाज बुलन्द होती है। वह चिकनी-चुपड़ी वातो को पसन्द नही करता। वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे शक्ति प्रयोग का हामी, अपने विचारो पर अत्यधिक दृढ़ तथा स्पष्ट-वक्ता होता है। अपने किसी उद्देश्य अथवा स्वार्थ को पूरा करने के लिए भी वह किसी के आगे झुकना अथवा खुशामद करना पसन्द नही करता। वह कठिन परिश्रम करता है, परन्तु फिर एकाएक कुछ समय अथवा दिनो के लिए आलसी भी वन जाता है।

(ङ) रूखी और लटकती हुई त्वचा वाला व्यक्ति मानसिक रूप से अधिक सक्रिय नही होता, यद्यपि उसमे शारीरिक तथा वाणी को

शक्ति पर्याप्त मात्रा मे पाई जाती है। वह शारीरिक शक्ति का अनिच्छा से तथा वाणी की शक्ति का अतिटेक से प्रयोग करता है। वह अपनी बात सुनने पर जोर देता है, उस समय यदि कोई व्यक्ति उसे डाट-डपट कर चुप करना चाहे तो वह लडने पर उतारू हा जाता है। ऐसा व्यक्ति अपने पक्ष पर, फिर चाहे वह गलत हो क्यो न हो, दृढतापूर्वक अडा रहता है। उसकी गति विधिया धीमी और सुस्त होती है।

(च) काली और चिपचिपी त्वचा वाला व्यक्ति विवेकयुक्त तथा निर्णयात्मिका बुद्धि का होता है। वह प्रत्येक कार्य को वडी सावधानी से करता है। हर समय सावधान वने रहने की प्रवृत्ति के कारण वह लाभ के अनेक अवसरो को चूक जाता है. जिसके कारण उसके आत्मविश्वास मे कमी आ जाती है और हीनता की भावना उत्पन्न होती है। ऐसे व्यक्ति प्रतिकूल परिस्थितियो मे खिन्न तथा चिडचिडे हो जाते है। दूसरो की प्रगति तथा उन्नति को देखकर नाक-भौंह सिकोडने का उनका स्वभाव होता है।

(छ) भूरी, मट मैली अथवा काले रग की त्वचा वाले व्यक्ति निराशावादी तथा अशान्त प्रकृति के होते है, परन्तु उनमे निरीक्षण की अद्भुत शक्ति पाई जाती है। वह सव बातो को शान्तिपूर्वक समझने का प्रयत्न करता है। तथा क्षुब्ध होता हुआ नही जान पड़ता। ध्यान को केन्द्रित करने मे ऐसे व्यक्ति अधिक कुशल होते है। सकट के समय वे विश्वसनीय तथा धार्मिक विचारो के वन जाते है। ऐसे व्यक्ति की स्मरण शक्ति भी तीव्र पाई जाती है।

(४) हड्डी—जिस व्यक्ति के शरोर की हड्डिया मोटी होती है, वे शक्तिशाली, सुन्दर तथा विद्वान होते है। पतली हड्डियों वाले व्यक्ति दुर्बल तथा प्रायः कम पढे-लिखे और असुन्दर आकृति वाले होते है। जिनकी हड्डियो में दृढता हो, वे दीर्घजीवी होते हैं ।

चित्र सख्या २ मे मनुष्य के शरीर को भीतरी हड्डियो को प्रदर्शित किया गया है। चित्र मे दी गई सख्याओ का विवरण नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

(१) खोपडी, (२ और ३) जवडे, (४) गर्दन का जोड, (५) हसली, (६) कन्धे की हड्डी, (७, ८ और १०) पसलिया, (९) वाजू की हड्डी, (११) पहुचे की हड्डी, (१२) कूल्हे की हड्डी, (१३) उगलियों की हड्डी, (१४) घुटने की चिपनी, (१५) पिंडली की हड्डी, (१६) टखने, (१७) तलवे की हड्डिया, (१८) पाव के अगूठे और उगलियो की हड्डिया (१९) पिंडली की हड्डी, (२०) जाघ की हड्डी, (२१) कलाई की हड्डी, (२२) वाह की निचली हड्डी, (२३) वाह के ऊपर की हड्डी तथा (२४) रीढ की हड्डी।

(५) शुक्र—वीर्य सव सारो मे प्रधान है, जिसका वीर्य शक्तिशाली हो, उसके सभी सार वलवान होते है।

शुक्र की अधिकता वाले व्यक्ति सुन्दर, वलवान, वुद्धिमान, स्थिरमति, साहसी तथा दीर्घजीवी होते है। ऐसे व्यक्ति की आखो की ज्योति तीव्र होती है तथा चेहरे पर तेज पाया जाता है।

वीर्य के सम्वन्ध मे विभिन्न विद्वानो के मत इस प्रकार है।

(क) जिसके वीर्य मे पुष्प जैसी गन्ध आती हो, वह राजा होता है।

(ख) जिसके वीर्य मे मधु (शहद) जैसी गन्ध आती हो, वह वहुत धनी होता है।

(ग) जिसके वीर्य मे मछली के शरीर जैसी गन्ध आती हो, वह वहुत पुत्रवान होता है।

(घ) जिसके शरीर मे मास जैसी गध आती हो, वह वहुत भोगी (विषयी) होता है।
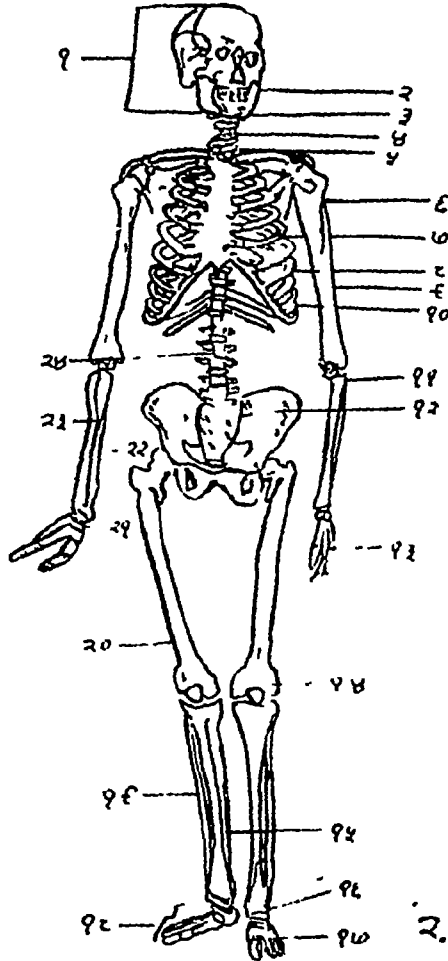
[मनुष्य शरीर के विभिन्न अग]

(ड) जिसके शरीर मे मद्य (शराब) जैसी गन्ध आती हो, वह यज्ञ करने वाला होता है ।

(च) जिसके वीर्य मे क्षार जैसी गन्ध आती हो, वह निर्धन होता है ।

(छ) यदि वीर्य का रग कुछ पीलापन लिए हुए श्वेत हो तो वह शुभ तथा श्रेष्ठ होता है।

(ज) जिस व्यक्ति को सहवास के समय वीर्य स्खलन मे अधिक देर लगे, वह अल्पायु होता है और जिसे थोडी देर लगे, वह दीर्घायु होता है।

(६) रक्त—जिस व्यक्ति के शरीर मे 'रक्त' की अधिकता होती है, उनके होठ, मसूडे, जीभ, पलक के भीतरी भाग, तालु, हथेली, तथा पावो के तलवो मे लालिमा पाई जाती है। ऐसे व्यक्ति तेजस्वी, परिश्रमी, दीर्घायु, प्रसन्न मुख तथा सुखी होते है।

जिनके शरीर मे रक्त की कमी होती है, वे निस्तेज, कान्तिहीन, आलसी, स्वल्पायु तथा दु खी होते है।

(क) यदि रक्त का रग लाल कमल के रग का हो तो ऐसा व्यक्ति धनवान् होता है।

(ख) यदि रक्त का रग शुद्ध प्रवाल जैसा लाल हो तो वह व्यक्ति धन-ऐश्वर्य सम्पन्न, अधिकारी तथा उत्तम कोटि का पुरुष होता है।

(ग) यदि रक्त का रग लाख के समान लाल वर्ण का हो तो उसे अत्यन्त श्रेष्ठ समझना चाहिए।

(घ) यदि रक्त के रग मे ललाई के साथ श्यामता भी हो तो ऐसा व्यक्ति पाप-कर्म करने वाला होता है।

(ङ) यदि रक्त के रग मे ललाई के साथ कुछ पीलापन भी हो तो उस व्यक्ति को मध्यम श्रेणी का समझना चाहिए।

(च) यदि रक्त के रग मे कुछ सफेदी अथवा नीलापन हो तो ऐसा व्यक्ति दु खी रहता है और उसके कन्याएं अधिक होती है।

(छ) यदि रक्त का रग काला अथवा श्वेत हो तो उसे अशुभ रोग तथा अल्पायु-कारक समझना चाहिए।

(७) गंध—मनुष्य के शरीर से निकलने वाली गध के विषय मे शास्त्रकारो ने नीचे लिखे अनुसार कहा है—

(१) जिसके शरीर से प्याज, लहसुन, सडे हुए मास, मछली, नीम, अण्डा, चर्बी, पिष्ठा अथवा मूत्र जैसी गध आती हो, वह व्यक्ति क्रूर कर्म करने वाला, हिंसक स्वभाव का तथा विश्वास के अयोग्य होता है। इसे दुर्भाग्य का लक्षण समझना चाहिए।

(२) यदि शरीर से चन्दन, कस्तूरी; अगरु, कपूर, चमेली, तमाल, गुलाब पुष्प अथवा प्रथम वर्षा के समय पृथ्वी से निकलने वाली गध जैसी गध आती हो तो उसे सौभाग्य का लक्षण समझना चाहिए। ऐसे व्यक्ति धनी, सुखी भोगी तथा ऐश्वर्य-सम्पन्न होते है।

(८) मांस—जिस व्यक्ति के शरीर मे मास अधिक हो, उसका स्पर्श सुखकर हो तथा ऐसा जातक खूब सोता भी हो तो वह धनी, सरल तथा दीर्घायु होता है। शरीर मे मास कम होने पर इसके विपरीत फल समझना चाहिए।

वर्ण

शरीर अथवा मुख के रग ३ प्रकार के वताये गए है।

(१) गौर, (२) श्याम और (३) कृष्ण।

इन तीन मुख्य रगो के अनेक भेद होते है। परन्तु वे सभी भेद इन्ही तीनो रगो के अन्तर्गत आ जाते है। शरीर के रग के सम्बन्ध मे विद्वानो का मत नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

(१) कमल पुष्प की केशर के समान वर्ण वाला व्यक्ति 'गौर' होता है।

(२) प्रियगु के पुष्प के समान वर्ण वाला व्यक्ति 'श्याम' होता है।

(३) काजल की भांति काले वर्ण वाला व्यक्ति 'कृष्ण' होता है।

गौर तथा श्यामवर्ण शुभ माने जाते है तथा कृष्ण वर्ण अशुभ माना गया है।

गौर वर्ण वाले व्यक्ति दयालु स्वभाव के होते है। श्वेत अथवा पीले वर्ण वाले व्यक्ति रोगी होते है तथा काले वर्ण वाले व्यक्ति बलवान होते है। चमकदार काला वर्ण अशुभ माना जाता है।

स्नेह

'स्नेह' अर्थात् चिकनाई को शरीर के निम्नलिखित पाच स्थानो में देखना चाहिए—

(१) वाणी, (२) जिह्वा, (३) दात, (४) आख तथा (५) नाखून।

उक्त सभी स्थानो पर यदि चिकनापन हो तो जातक धनी, सन्ततिवान, सौभाग्यशाली, स्वस्थ तथा सुखी होता है। यदि इन स्थानो पर चिकनाई न होकर रूखापन हो तो जातक निर्धन होता है।

जिसकी वाणी में स्निग्धता (कोमलता) होती है, वह व्यक्ति लोकप्रिय, यशस्वी तथा सुखी होता है।

जिसकी जिह्वा मे स्निग्धता होती है वह प्रिय भाषण करने वाला होता है।

जिसके दातो मे स्निग्धता होती है, उसे श्रेष्ठ भोजन प्राप्त होता है।

जिसकी आखो मे स्निग्धता होती है, वह सब लोगो का प्रिय तथा सौभाग्यशाली होता है।

जिसके नाखूनो मे स्निग्धता होती है, वह धनी तथा स्वस्थ होता है।

शरीर के अन्य अगों की चिकनाई के सम्बन्ध मे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) जिसके केशों तथा नखों मे स्निग्धता होती है, उसके सभी कार्य बिना प्रयत्न के ही सिद्ध हो जाते है।

(२) जिसकी त्वचा चिकनी होती है, उसे शय्या-सुख तथा अन्य प्रकार के सुख प्राप्त होते है।

(३) जिसके पाव चिकने होते है, उसे वाहन-सुख प्राप्त होता है।

(४) जिसके चेहरे पर स्निग्धता होती है, उसे सब प्रकार के सुख प्राप्त होते है।

स्वर

कण्ठ से जो ध्वनि (आवाज) निकलती है, उसे 'स्वर' कहा जाता है। यहा पर स्वर का आशय सगीत के स्वर से न होकर, सामान्य वार्तालाप के समय निकलने वाले कण्ठ-स्वर से है।

प्राचीन आचार्यो ने कण्ठ-स्वर के निम्नलिखित भेद कहे है—

(१) **गंभीर**—जो अपने आदि, मध्य तथा अन्त मे एक-सा हो।

(२) **दुन्दुभि**—जिसे सुनकर सब लोगो को प्रसन्नता प्राप्त हो।

(३) **स्निग्ध**—जिसमे हर्ष, क्रोध, भय, दैन्य आदि किसी प्रकार का भाव प्रकट न हो तथा जो सुनने वालों को रुचिकर लगे।

(४) **महान्**—अनेक लोगो द्वारा वार्तालाप करते समय जो स्वर सब लोगो की आवाज से अलग तथा अच्छा सुनाई दे।

(५) **अनुनादी**—जिसे दूर से धीरे-धीरे बोलने पर भी भली भाति सुना जा सके।

उक्त पाचों प्रकार के स्वर 'शुभ' माने गए हैं। जिन लोगों के स्वर

इस प्रकार के होते है, वे विद्वान, दानी, भोगी, यशस्वी, गुणी, सुखी, पुण्यात्मा तथा स्त्री-पुत्र, धन आदि सब प्रकार के सुखो को प्राप्त करने वाले होते है।

निम्नलिखित ७ प्रकार के स्वर 'अशुभ माने गए है—

(१) विस्वर—वोलते समय घरघराहट-सी होना अर्थात् आवाज का एक-सा न निकलना।

(२) अति स्वर अथवा चण्ड स्वर—अर्थात् जोर जोर-से वोलना, जैसाकि किसी को डाटते अथवा धमकाते समय वोला जाता है।

(३) भग्न स्वर अथवा खण्डित स्वर—वोलते समय बीच-बीच मे हकलाना।

(४) क्षार स्वर—वोलते समय तुतलाना अथवा किसी अक्षर को छोड़ जाना।

(५) रुक्ष स्वर—यह स्वर पूर्वोक्त 'स्निग्ध स्वर' के विपरीत होता है।

(६) जर्जरित स्वर—फूटे कासे जैसी आवाज का निकलना।

(७) निम्न स्वर—आवाज का अत्यन्त धीमा होना, जैसे वह कण्ठ मे ही अटकी रह जाए।

उक्त सातो प्रकार के स्वर अशुभ माने जाते है।

इसके अतिरिक्त वोलने के ढग के सम्बन्ध मे प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानो के मत का सार-सक्षेप नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) स्वर का कठोर अथवा वाक्यो का कटु (कड़वा) होना तथा वोलते समय मुह से थूक के छीटे निकलना—इन्हे कुलक्षण समझना चाहिए। ऐसे व्यक्ति हठी; क्रोधी, निर्दय, कठोर, स्वार्थी, कृपण, ठक, उच्छृंखल तथा तामसिक वृत्ति के होते हैं।

(२) मेघ ध्वनि-हस चक्रवाक अथवा कौवा पक्षी के स्वर के समान जिनकी आवाज हो—ऐसे लोग राजा होते है।

(३) पानी मे घडे को डुबाते समय जो आवाज होती है, वैसे स्वर वाले व्यक्ति उच्चपद को प्राप्त करते है।

(४) दुन्दुभि, मृदग हाथी, वैल तथा सिह जैसे स्वर वाले व्यक्ति राजा (ऐश्वर्यशाली) होते है।

(५) गधा, कुरर तथा वालको के समान जिनका कण्ठ-स्वर हो— वे व्यक्ति क्रूर तथा दुःखी होते है।

(६) भेडिया, ऊट, सुअर, कौआ तथा उल्लू की आवाज से जिनका कण्ट-स्वर मिलता है, वे लोग दुष्ट स्वभाव के होते है।

(७) जो व्यक्ति विना हिचकिचाहट के, सामान्य रूप से तेजी से तथा सावधानी के साथ बोलता है, वह शारीरिक दृष्टि से स्वस्थ तथा सावधान होता है। वह हसमुख, सुखी, प्रसन्न तथा व्यवहार-कुशल होता है।

(८) जो व्यक्ति ऐसी तेजी से बोलता है कि शब्द दौडते हुए से जान पड़े, वह सजीव तथा उत्साह पूर्ण व्यक्तित्व वाला एव निरन्तर गतिशील होता है। वह किसी तरह के विवाद मे पडना पसन्द नहीं करता। ऐसे व्यक्ति कभी-कभी चिड़चिड़े तथा व्यग्र-स्वभाव के भी पाए जाते है, परन्तु वे उद्दण्ड नही होते।

(९) धीमी तथा नपी-तुली आवाज से बोलने वाला व्यक्ति सतर्क, परिश्रमी, शकालु तथा अनिश्चयं-स्वभाव का होता है।

(१०) रुक-रुक कर धीमी आवाज मे बोलने वाला व्यक्ति सतर्क, भीरु तथा दूसरो पर निर्भर रहने वाला होता है। उसमे आत्म-विश्वास की कमी पाई जाती है।

(११) हकलाकर बोलने वाला व्यक्ति हीनत्व भावना से पीडित तथा स्नायविक गडबड़ी का शिकार होता है। परन्तु यदि उसे उत्साहित किया जाए तो वह उन्नति करता है तथा अपने स्वामी के प्रति वफादार सिद्ध होता है।

(१२) बोलते समय खासने अथवा मठारने वाला व्यक्ति उत्तेजित, अधीर तथा आवेशपूर्ण स्वभाव का एव महत्वाकाक्षी होता है।

(१३) जिसकी आवाज हु कारयुक्त अर्थात् भारी और बादलों की गरज जैसी हो, उसे यदि सब लोगो पर हुक्म चलाने दिया जाए तो वह सन्तुष्ट रहता है। यदि उसकी कोई बात काट दी जाए तो वह क्रोध मे भर जाता है। वह रूखे तथा अशोभनीय व्यवहार वाला तथा निर्बलो की मजाक उड़ाने वाला होता है।

(१४) जिसकी आवाज कुत्ते के भौकने जैसो हो, वह अनुशासन प्रिय, व्यवस्था-प्रिय तथा निश्चित नियमो पर चलने वाला होता है। वह कठोर तथा रूखे व्यवहार का आदि होता है, भले ही उससे दूसरे लोग अप्रसन्न क्यो न रहे।

(१५) बच्चो की तरह बोलने वाला व्यक्ति सरल, लज्जालु, आमोद-प्रमोद प्रिय तथा आलसी स्वभाव का होता है।

(१६) दूसरे लोगो के बातचीत करते समय बीच-बीच मे टोकने-वाला व्यक्ति जिद्दी सवेगात्मक तथा रूखे स्वभाव के होते है। यद्यपि उनके पास अच्छे विचार पर्याप्त मात्रा मे होते हैं, परन्तु यदि उनके विचारो को पूर्ण रूप से स्वीकार न किया जाए तो उनका दृष्टिकोण शत्रुतापूर्ण हो जाता है।

(१७) अस्पष्ट शब्दो का उच्चारण करने वाले व्यक्ति लापरवाह स्वार्थी, सच्चे, ईमानदार, कुछ-कुछ दिवास्वप्न देखने वाले तथा अधिक सम्वेदनशील होते हैं।

(१८) असम्बद्ध शब्दों का उच्चारण करने से जो मुंह से गोली 'पट्र-पट्र' जैसी ध्वनि निकलने लगती है, ऐसे शब्द बोलने वाले व्यक्ति शीघ्र उत्तेजित हो जाने वाले, जल्दी ही घबरा जाने वाले परन्तु अच्छे स्वभाव के होते हैं।

(१९) बहुत अधिक बोलने वाले व्यक्ति शारीरिक रूप से अधिक सक्रिय, मानसिक रूप से आलसी, साहसी, बाहरी लोगों से कपटपूर्ण बाते करनेवाले तथा अपने प्रिय विषयो के बारे मे ही घुमा-फिरा कर बोलते रहने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति अत्यधिक आग्रही होते है। और वे अपनी बात को सामान्यतः अन्य लोगों से मनवा भी लेते हैं।

(२०) उपदेश के रूप मे बोलने वाले व्यक्ति उदार, कोमल, कुछ आडम्बर प्रिय, सत्यवादी तथा यात्रा प्रेमी होते है। वे दूसरो की भलाई करने के लिए भी प्रयत्नशील बने रहते है।

(२१) लच्छेदार बाते करने वाले व्यक्ति घमडी, तुनुक मिजाज तथा दुर्बल इच्छा शक्ति वाले होते हैं। यदि उन्हे किसी काम मे थोड़ी सी भी सफलता मिल जाए तो यह समझने लगते हैं कि जैसे सारा ससार उन्ही के बल-बूते पर चल रहा है। ऐसे व्यक्ति सफलता पाकर अपनी औकात को भूल जाते है तथा असभ्य हो जाते हैं इन्हे अनेक-बार अपमान भी सहन करना पड़ता है।

प्रकृति

'प्रकृति' से तात्पर्य मनुष्य के 'स्वभाव' से है।

कुछ मनुष्य सतोगुणी कुछ रजोगुणी और कुछ तमोगुणी स्वभाव के होते है।

सामान्यतः मनुष्य को अपना स्वभाव पृथ्वी के पाच मुख्य तत्वो (१) पृथ्वी, (२) जल, (३) अग्नि, (४) आकाश और (५) वायु से प्राप्त होता है,

प्रत्येक मनुष्य का शरीर इन्ही पच तत्त्वो से निर्मित है। अतः उसके शरीर मे जिन-जिन तत्त्वो की न्यूनाधिकता होती है, उन्ही के अनुरूप उनकी प्रकृति भी बन जाती है।

भारतीय आचार्यो ने मनुष्य की प्रकृति को दस श्रेणियो मे वाटा है। वे निम्नानुसार है—

(१) मही प्रकृति—इस प्रकृति के लोगो के शरीर से पुष्पो जैसी गन्ध निकलती है। उनको श्वास भी सुगन्धित होती है। वे स्थिर स्वभाव वाले तथा सौभाग्यशाली होते हैं।

(२) ताप-प्रकृति—इस प्रकृति वाले व्यक्ति पानी अधिक पीते हैं। वे प्रिय-भाषण करने वाले, सुस्वादु भोजन के प्रेमी तथा रसिक स्वभाव के होते हैं।

(३) अग्नि-प्रकृति—इस प्रकृति वाले व्यक्ति चपल, क्रूर, क्रोधी; कठोर तथा अधिक भोजन करने वाले होते हैं।

(४) वायु-प्रकृति—इस प्रकृति वाले व्यक्ति चचल तथा दुर्बल स्वभाव के होते हैं। उन्हे वहुत जल्दी क्रोध आ जाता है।

(५) आकाश प्रकृति—इस प्रकृति वाले व्यक्ति कुशल गायक, सुकुमार शरीर वाले, निपुण तथा अधिकतर अपना मुह खुला रखने वाले होते है।

(६) देव-प्रकृति—इस प्रकृति वाले व्यक्ति स्वल्पक्रोध करने वाले त्यागी तथा स्नेही होते हैं।

(७) मानव-प्रकृति—इस प्रकृति वाले व्यक्ति सुशील. आभूषण तथा सगीत आदि के प्रेमी तथा व्यवहार कुशल होते हैं।

(८) निशाचर-प्रकृति—इस प्रकृति वाले व्यक्ति क्रोधी, उग्र, पापी तथा दुष्ट स्वभाव के होते है।

(६) पिशाच-प्रकृति—इस प्रकृति वाले व्यक्ति मलिन, चपल, बातूनी तथा मोटे अथवा अधिक अग वाले शरीर के होते है।

(१०) पशु-प्रकृति—इस प्रकृति वाले व्यक्ति डरपोक, तथा बहुत अधिक भोजन करने की इच्छा रखने वाले तथा अधिक खाने वाले होते है।

सत्त्व

मनुष्य के विशेष गुण अथवा चित्त के धर्म विभिन्न प्रकार के होते है। परन्तु यहा सत्त्व से तात्पर्य मनुष्य की सद् वृत्तियो से ही समझना चाहिए।

'सत्त्व' अर्थात् सद्वृत्तियो वाले मनुष्य मनोविकारों से रहित, तेजस्वो सौभाग्यशाली, सुन्दर, धनी तथा शुभ गुण सम्पन्न होते है। जिस व्यक्ति मे सत्त्व नही होता, वह सदैव दुःखी, चिन्तित तथा पराजित बना रहता है।

अनूक

पूर्व जन्म को स्वीकृत करने वाली मनुष्य की आकृति को 'अनूक' कहा जाता है।

भारतीय शास्त्रकारो के मतानुसार मनुष्य के पूर्वजन्म के कर्मो का प्रभाव उसकी आकृति पर पड़ता है, फलस्वरूप जिन लोगो ने पिछले जन्म मे शुभकम किये होते है, उनके चेहरे मनुष्य जन्म मे सिंह, बैल आदि श्रेष्ठ पशु-पक्षियो की आकृतियो से मिलते-जुलते होते है और जिन्होंने अशुभ कर्म किये होते है, उनके चेहरे, गधा, उल्लू आदि अशुभ पशु-पक्षियो की आकृति से मिलते जुलते हैं।

एक मान्यता यह भी है कि मनुष्य अपने पूर्व जन्म मे पशु-पक्षी को

जिस योनि में होता है, उसका प्रभाव मनुष्य जन्म लेने पर उसकी आकृति पर भी परिलक्षित होता है। तथा उस आकृति के अनुरूप मनुष्य का स्वभाव भी उन पशु-पक्षियो के स्वभाव से वहुत कुछ मिलता-जुलता है।

पाश्चात्य विद्वानो के मतानुसार भी मनष्य के चेहरे जिस पशु-पक्षी की आकृति से मिलते-जुलते है, उसमे उन्ही पशु-पक्षियो के गुण स्वभाव तथा चरित्र की विशेपताए पाई जाती हैं। इस सम्वन्व मे आगे एक अलग प्रकरण मे विस्तार पूर्वक प्रकाश डाला गया है।

क्षेत्र

मनुष्य के शरीर को १० क्षेत्रो अर्थात् १० भागो में वाटकर, शरीर के जिस भाग मे शुभ लक्षण पाये जायें उसके अनुरूप आयु वाले भाग में सुख-समृद्धि तथा जिसमे अशुभ लक्षण पाये जाये। उसके अनुरूप आयुभाग में कष्ट होगा—ऐसा समझना चाहिए।

चित्र सख्या ३ मे शरीर के १० क्षेत्रो को प्रदर्शित किया गया है। इन क्षेत्रो मे शरीर के विभिन्न विभाग इस प्रकार गिने जाते है—

पहला भाग—दोनो पाव (टखनो सहित)।

दूसरा भाग—दोनों पिंडली और घुटने।

तीसरा भाग—दोनो घुटनो से लेकर कमर तक का हिस्सा।

चौथा भाग—कमर से नाभि तक का हिस्सा।

पांचवां भाग—पेट।

छठा भाग—हृदय तथा स्तन प्रदेश।

सातवां भाग—वाहु तथा हंसली की हड्डी।
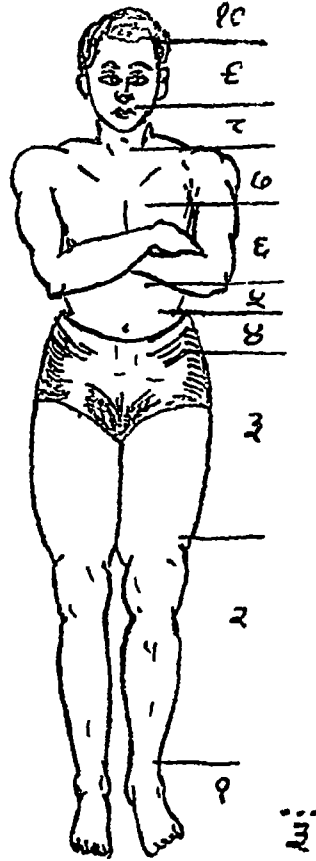
[शरीर के दस विभाग अर्थात् क्षेत्र]

आठवां भाग—कधे, कठ तथा होठ।

नवां भाग—आखे, भौहे तथा ललाट।

दसवां भाग—सिर।

जीवन का कौनसा भाग शुभ तथा अशुभ जाएगा: इसे जानने की विधि यह बताई गई है कि हस्त परीक्षा द्वारा जातक की आयु का

निर्णय करने के उपरान्त जो आयु आए उसे दस भागो मे बाटकर, प्रत्येक आयु भाग के शरीर के विभिन्न क्षेत्रों मे क्रमश: स्थापित करना चाहिए। अर्थात् यदि किसी जातक की आयु ८० वर्ष की निश्चित होती हो तो ८ वर्ष के १० आयु खण्डो में उसे विभाजित करके प्रत्येक आयु-खण्ड को शरीर के प्रत्येक विभाग में क्रमशः आरोपित करके, उस आयु खण्ड मे सम्बन्धित शरीर के विभाग पर दृष्टि डालकर शुभाशुभ फल ज्ञात करना चाहिए।

जैसे किसी व्यक्ति की आयु ८० वर्ष की निश्चित होती है और उसके शरीर के अन्य अंगों के शुभ होने पर भी यदि उसका पेट अशुभ लक्षण-युक्त है तो उसके जीवन का पाचवां आयु-खण्ड अर्थात् ३२ से ४० वर्ष तक का जीवन अच्छा व्यतीत नही होगा। इसी भाति सभी जगह समझ लेना चाहिए।

शरीर का जो भाग जैसे शुभ अथवा अशुभ लक्षणो से युक्त होता है, उस आयु खण्ड मे जातक के ऊपर उसका वैसा ही शुभ अथवा अशुभ प्रभाव पडता है।

सूखे, मांस-हीन, ढीले, खुरदरे अथवा नसे उभरे हुए अग अशुभ माने जाते हैं।

मृजा

'मृजा' अर्थात् शरीर की कान्ति भी (१) पृथ्वी, (२) जल, (३) अग्नि, (४) आकाश और (५) वायु—इन पांच तत्वो की न्यूनाधिकता के फल स्वरूप वैसी ही पाई जाती है। शरीर की कान्ति द्वारा जातक के भीतरी गुण-अवगुणो का तथा उसके अनुसार जीवन पर पड़ने वाले शुभाशुभ प्रभाव का पता चलता है।

'वाराह मिहिर' के मत से जातक के जीवन मे जिस समय जिस ग्रह की महादशा अथवा अन्तरदशा चलती है, उसी के अनुसार

उसके शरीर की कान्ति बदलती रहती है। यह विश्य ज्योतिष से सम्बन्धित है। अत विस्तारमय से उसका उल्लेख यहां नही किया जाता।

शरीर की कान्ति के अनुसार जातक के जीवन चरित्र एव स्वभाव का परिज्ञान प्राप्त करने के सामान्य नियम निम्नलिखित है —

(१) शरीर की कान्ति अग्नि प्रधान अर्थात् उत्तम तेजयुक्त हो तो जातक प्रतापी, शत्रुजयी एव पदवृद्धि प्राप्त करने वाला होता है।

(२) यदि शरीर की कान्ति मृदु, स्निग्ध एव विशेष लावण्य लिए हुए हो तो जातक जल प्रधान अथवा समुद्रीय वस्तुओ के व्यवसाय से धनोपार्जन तथा लोकप्रियता प्राप्त करता है।

(३) यदि शरीर की कान्ति अग्नि के समान लालिमा लिए हुए हो तो जातक मे सहनशक्ति की कमी होती है।उसकी दृष्टि कुछ वक्र बनी रहती है तथा स्वभाव मे तेजो और उग्रता आ जाती है। ऐसे व्यक्ति युद्ध क्षेत्र मे विजय प्राप्त करने वाले होते हैं।

(४) यदि शरीर को कान्ति मे कुछ श्यामता हो तो जातक अधिक क्रियाशील होता है। उसके शरीर मे से स्वाभाविक रूप से सुगन्ध निकलती रहती है तथा केश, रोम तथा नख चिकने और मुलायम प्रतीत होते हैं।

(५) यदि शरीर की कान्ति कुछ पीलापन लिए हुए गौर तथा शान्त हो तो जातक सन्तोषी तथा धार्मिक प्रवृति का होता है। धन, विद्या तथा धर्म के क्षेत्र में उसे सफलताए प्राप्त होती है।

(६) यदि शरीर की कान्ति मे अधिक लावण्य तथा आकर्षण हो तो जातक को स्त्री सहवास तथा धनागम का सुख प्राप्त होता है।

(७) यदि शरीर की कान्ति विवर्ण, रुखापन लिए हुए तथा मलिन

हो तो जातक दरिद्रता, शोभ तथा सकटो से ग्रस्त रहता है। उसमे हिंसात्मक प्रवृत्ति वढ जाती है।

(८) यदि शरीर की कान्ति श्यामवर्ण, भस्मवर्ण तथा जली हुई मिट्टी जैसी अथवा विवर्ण हो तो उसे दु ख एव दुर्भाग्यदायक अशुभ लक्षण समझना चाहिए।

इस सम्बन्ध मे शास्त्र का वचन है—

"क्षेत्र वंशाज्जायन्ते मनुजानां जगति दश दशा क्रमशः।
क्षेत्रष्व शुभेष्वशुभा दशा शुभेषु च शुभा प्रायः॥"

अर्थात् शरीर का जो क्षेत्र जैसे शुभ-अशुभ लक्षणो से युक्त होता है, वैसा ही फल उस आयु भाग मे जातक को प्राप्त होता है।

पशु-पक्षियों की आकृति से समानता रखने वाले चेहरे

बहुत से स्त्री-पुरुषो के चेहरे विभिन्न पशु-पक्षियो की आकृति से मिलते-जुलते है। यदि ध्यान-पूर्वक देखा जाए तो प्रत्येक स्त्री-पुरुष का चेहरा किसी न किसी पशु अथवा पक्षी की आकृति से समानता रखता हुआ अवश्य प्रतीत होगा।

मनुष्य का चेहरा जिस पशु अथवा पक्षी की आकृति से मिलता-जुलता है, उस पशु अथवा पक्षी के स्वभाव तथा गुण उस मनुष्य मे भी विशेष रूप से पाये जाते है। यदि किसी मनुष्य का चेहरा दो भिन्न पशु अथवा पक्षियो की आकृति से मिलता-जुलता हो तो उसमे उन दोनो भिन्न पशु अथवा पक्षियो के स्वाभाविक गुणों का सम्मिश्रण समझना चाहिए। उदाहरण के लिए यदि किसी पुरुष का सम्पूर्ण चेहरा सिह की आकृति से मिलता-जुलता हो, परन्तु उसकी नाक तोते जैसी हो तो उस व्यक्ति मे सिह के स्वाभाविक गुणो के साथ ही तोते के गुण भी अल्प-मात्रा मे अवश्य परिलक्षित होगे। इसी के नियम के अनुसार सभी चेहरो की परीक्षा करनी चाहिए। नाक, कान, आख तथा मुख चेहरे के ये चार ही मुख्य अग ऐसे होते है, जिनमे किसी एक पशु अथवा पक्षी की आकृति से अलग भिन्नता पाई जा सकती है। जैसे बैल के समान चेहरे वाले मनुष्य की आखे बिल्ली जैसी हो सकती है, घोड़े के समान चेहरे वाले व्यक्ति के कान बन्दर जैसे हो सकते है अथवा बिल्ली जैसी आकृति वाले मनुष्य का मुंह ऊट के समान (चौड़ा)

हो सकता है। अस्तु, चेहरे की परीक्षा करते समय इन सभी बातो को ध्यान मे रखना चाहिए।

इस प्रकरण मे हम पशु-पक्षियों से मिलती-जुलती आकृति के चेहरे वाले मनुष्यो के चरित्र तथा स्वभाव के सम्बन्ध मे सक्षिप्त विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं। मनुष्य तथा पशु-पक्षियों की आकृति मे किस प्रकार समानता पाई जाती है, इसे स्पष्ट करने के लिए पशु-पक्षियो की आकृति से मिलते-जुलते स्त्री-पुरुषो के कुछ चेहरो के चित्र भी यहा दिए गए है। इससे पाठको को विभिन्न चेहरो की परीक्षा करने मे सुविधा रहेगी। जिन पशु-पक्षियो के चेहरो से मिलते-जुलते मनुष्य के चेहरो के चित्र यहा नही दिये गये हैं, उनके विषय मे अनुमान से काम चलाकर सही निष्कर्ष निकाल लेना चाहिए।

सिंह के समान आकृति

सिंह के समान आकृति वाला मनुष्य (चित्र सख्या ४) स्थिर विचार तथा दृढ चरित्र वाला, महत्वाकाक्षी, यशस्वी, उदार, शान्त,

४

बुद्धिमान, शालीन, गम्भोर, साहसी तथा बलवान होता है। उसकी आकृति, वेशभूषा, वचन तथा कर्म सभी से बडप्पन को गन्ध आती है। ऐसे लोग व्यर्थ ही किसी को परेशान नही करते, परन्तु शत्रु यदि बार बार क्षमा किये जाने पर भी अपनी शत्रुता पूर्ण कार्यवाहियो से बाज नही आता तो उसे ऐसा बदला देते है कि वह हमेशा के लिए ठण्डा हो जाता है।

ऐसी आकृति वाले व्यक्ति शरीर से हृष्ट-पुष्ट, ब लष्ठ, सुन्दर तथा निर्भय स्वभाव के होते है। वे किसी बात की न तो चिन्ता करते हैं और न किसी सकट के आने पर उससे घबराते ही है। विपत्तियो का सामना करना तथा मुसीबतों पर विजय पाना उनके लिए खेल जैसा होता है।

ऊंट के समान आकृति

ऊट के समान आकृति वाला मनुष्य (चित्र सख्या ५) अत्यन्त परिश्रमी होता है। वह स्वभाव से गम्भीर तथा शान्त दिखाई देता है,

५

परन्तु उसमे दूसरो के प्रति प्रेम अथवा सहानुभूति का सर्वथा अभाव

पाया जाता है। ऐसे लोग दूसरों से बातें करते समय ऐसे शब्दों का प्रयोग करते हैं जो उन्हें चुभने वाले हो। सभ्य समाज में ऐसे व्यक्तियों को अच्छी दृष्टि से नहीं देखा जाता।

घोड़े के समान आकृति

घोड़े के समान आकृति वाला मनुष्य (चित्र संख्या ६) स्वभाव का उदार परन्तु घमण्डी होता है। वह यात्रा-प्रेमी तथा चलते समय

६

लम्बे डग रखने वाला होता है। ऐसी आकृति वाले लोगों के शरीर प्रायः लम्बे तथा वलिष्ठ होते है। ये लोग परिश्रम करने से नहीं घबराते।

भेड़ के समान आकृति

भेड़ के समान आकृति वाले मनुष्य (चित्र संख्या ७) स्वभाव के सरल, विनम्र, भले, परन्तु जिद्दी और अनुकरण (नकल) करने की आदत वाले होते हैं। वे स्वयं अपना कोई मत निश्चित नही कर पाते अपितु दूसरों के बताये हुए रास्ते पर चलना अधिक पसन्द करते हैं।

बैल के समान आकृति

बैल के समान आकृति वाले मनुष्य (चित्र सख्या ८) अत्यन्त परिश्रमी होते है। वे प्राय: दूसरे लोगो के लिए ही परिश्रम करते रहते है

अर्थात् जिस प्रकार बैल के परिश्रम का लाभ किसान उठाता है, उसी प्रकार बैल के समान आकृति वाले पुरुष के परिश्रम का लाभ भी अन्य लोग उठाया करते है। ऐसे व्यक्ति अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह

करने मे जागरूक रहते है तथा जिम्मेदारी के किसी भी काम को प्राणपण से पूरा करते है। खाली समय मे ये लोग लापरवाह तथा आलसी स्वभाव के वन जाते है। उस समय इन्हे हिलना-डुलना तक पसन्द नही होता।

कौए के समान आकृति

कौए के समान आकृति वाले मनुष्य (चित्र सख्या) अत्यन्त चतुर, अशिष्ट, लोभी तथा वेहया होते है इनके मन मे प्रत्येक वस्तु को

६
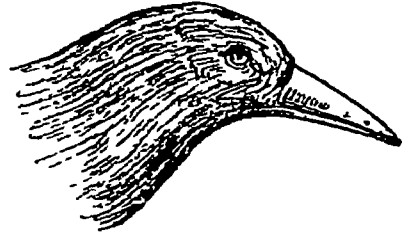
अपने लिए झपटने की इच्छा वनी रहती है। ऐसे लोग उद्दण्ड प्रकृति के होते है और समाज मे इन्हे अच्छी दृष्टि से नही देखा जाता।

ईगल के समान आकृति

ईगल (चील जैसा पक्षी) के समान आकृति वाले मनुष्य (चित्र सख्या) साहसो, विचारो मे दृढ तथा श्रेष्ठ चरित्र के होते है। ये लोग साहसी, वुद्धिमान तथा दूरदर्शी होते हैं। परन्तु इनमे भी दूसरो की वस्तु पर स्वय अधिकार करने की इच्छा तथा चालाकी आदि की वृत्तिया सक्षिप्त मात्रा मे पाई जाती हैं।
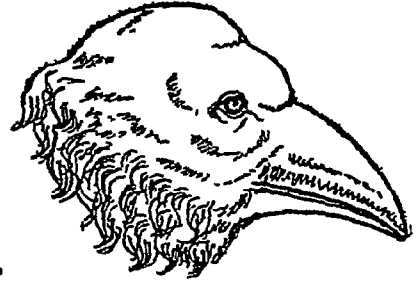
१०

तोते के समान आकृति

तोते के समान आकृति वाले मनुष्य (चित्र सख्या) बहुत बातूनी, लोभी तथा चिडचिड़े स्वभाव के होते है । इन लोगो का ज्ञान ऊपरी
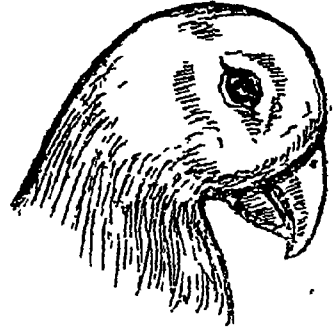
११

और दिखावटी होता है इनमे विचार शीलता का अभाव पाया जाता है यो, दूसरो की नकल उतारने मे ऐसे लोग कुशल पाये जाते है ।

भेड़िये के समान आकृति

भेड़िये के समान आकृति वाले मनुष्य (चित्र सख्या) ढोंगी,

वहाने वाज तथा झगड़ालू स्वभाव के होते हैं इनके हृदय मे कोमलता का अभाव रहता है। इनमे धोखा देने की प्रवृत्ति विशेष पाई जाती
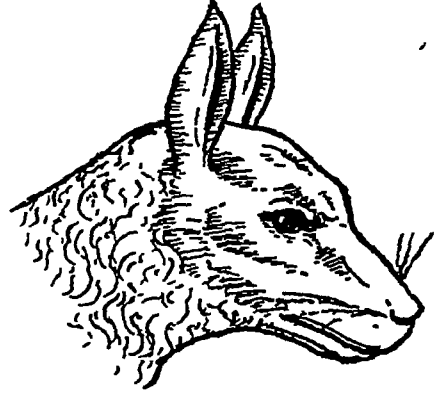
१२

है। ऐसे लोग मन-ही-मन दुखी तथा उदास रहते हैं और परिश्रम द्वारा द्रव्योपार्जन करने के स्थान पर कही से आकस्मिक धन-लाभ की आशा मे प्रतीक्षा रत वने रहते है।

वनमानुष के समान आकृति

१३

वनमानुष के समान आकृति वाले मनुष्य (चित्र सख्या १३) लोभी,

चालाक, फुर्तीले, नकलची प्रवृति के तथा दूसरों पर अपना रौब जमाने की चेष्टा करने वाले होते है। ऐसे व्यक्तियो की दृष्टि बडो पैनी होती है, परन्तु इनमे गम्भीरता एव बुद्धिमत्ता कम ही पाई जाती है।

भैंसे के समान आकृति

भैंसे के समान आकृति वाले मनुष्य (चित्र सख्या १४) शरीर से हृष्ट-पुष्ट, शक्तिशाली, परन्तु आलसी और जड़बुद्धि होते है। इनमें
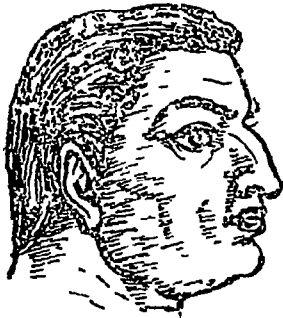
१४

विचार-शक्ति एव गम्भीरता की बहुत कमी पाई जाती है। इनके शरीर की त्वचा मोटी होती है।

हिरन के समान आकृति

हिरन के समान आकृति वाले मनुष्य (चित्र सख्या १५) स्वभाव के चचल, विचारों मे अस्थिर तथा फुर्तीले होते हैं। ये लोग यात्रा तथा बनाव-सिगार के प्रेमी होते है। देखने मे भी ये अत्यन्त सुन्दर प्रतीत होते है। प्राय: इस प्रकार के चेहरे पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियों में अधिक दिखाई देते है।

१५
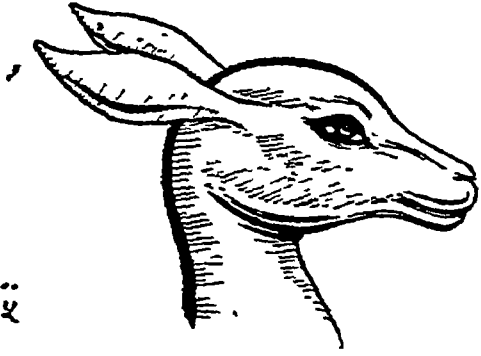
बिल्ली के समान आकृति

बिल्ली के समान आकृति वाले मनुष्य घमण्डी खुशामदी, ऊपर से भल मन साहत तथा विनम्रता प्रदर्शित करने वाले, परन्तु भीतर से चतुर-चालाक एवं स्वार्थी होते हैं। इन लोगो के हृदय में किसी के भी प्रति सच्चा स्नेह नहीं होता।

कुत्ते के समान आकृति

कुत्ते के समान आकृति वाले मनुष्य स्वामिभक्त, साहसी तथा सच्चा स्नेह करने वाले होते है। इनमें दूरदर्शिता, गम्भीरता, उत्तर-दायित्व का निर्वाह करने की भावना तथा प्रत्येक निर्णय को शीघ्र क्रियान्वित कर देने आदि के गुण विशेष रूप से पाये जाते हैं।

गधे के समान आकृति

गधे के समान आकृति वाले मनुष्य अपने आप में ही मस्त रहने वाले होते हैं। उनमे आलस्य की मात्रा अधिक पाई जाती है। वे

परिश्रम का काम करने के लिए तब तक तैयार नही होते हैं, जब तक कि उन्हे वैसा करने के लिए विवश न किया जाये। ऐसे लोगों मे कला, साहित्य, विज्ञान अथवा अध्ययन के प्रति कोई रुचि नही पाई जाती। ये लोग सुस्त तथा निरुद्यमी प्रकृति के होते है। बुद्धि तथा ज्ञान की मात्रा भी इनमें बहुत कम पाई जाती है।

उल्लू के समान आकृति

उल्लू पक्षी के समान आकृति वाले मनुष्यों मे काल्पनिकता का अभाव रहता है, परन्तु वे प्रत्येक बात एव कार्य मे सयम का परिचय अवश्य देते हैं। प्रत्येक वस्तु को करीने से रखना इनका स्वाभाविक गुण होता है। इनमे साहस की भी कमी पाई जाती हैं, परन्तु ऐसा होते हुए भी ये किसी से दबकर नही रहते।

सूअर के समान आकृति

सूअर के समान आकृति वाले मनुष्य मे कोमलता तथा दयालुता का अभाव पाया जाता है। ऐसे लोग अत्यधिक लापरवाह प्रकृति के होते हैं। खाने-पीने का इन्हे बहुत अधिक शौक होता है और ये लोग भोजन भी बहुत अधिक परिमाण में करते हैं!

फैरट के समान आकृति

फैरट (एक प्रकार का जगली चूहे जैसा जानवर) के समान आकृति वाले मनुष्य अत्यन्त चालाक, झगडालू तथा अशान्त स्वभाव वाले होते हैं। इन लोगों मे प्रत्येक विषय की जानकारी प्राप्त करने की भावना अत्यधिक पाई जाती है।

चीते के समान आकृति

चीते के समान आकृति वाले मनुष्य खूंख्वार स्वभाव के, फुर्तीले,

चालबाज तथा विश्वासघाती होते है। ऐसे लोगो को हिंसात्मक कार्यो मे आनन्द आता है। इनमे दूरदर्शिता, निर्णायक बुद्धि की तीव्रता तथा गतिशीलता आदि गुण विशेष मात्रा मे पाये जाते है, परन्तु ये अपने इन गुणो का उपयोग दूसरे लोगो को धोखा देने, ठगने अथवा हानि पहुंचाने के कामो मे करते है। ऐसे लोग कब किस के प्रति क्या कर बैठेंगे, इसका कोई ठिकाना नही होता।

आवश्यक निर्देश

इस अध्याय मे कुछ ही प्रमुख पशु-पक्षियो की आकृति से मिलते-जुलते चेहरे वाले मनुष्यो के स्वभाव एव चरित्र के विषय मे सक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया गया है।

इसी के अनुसार अन्य पशु-पक्षियों की आकृति से मिलते-जुलते चेहरे वाले लोगो के गुण स्वभाव तथा चरित्र आदि के विषय मे, उसी पशु पक्षी के स्वाभाविक गुण-धर्म के आधार पर अनुमान लगा लेना चाहिए।

चेतना यन्त्र, मनुष्य का सिर और मस्तिष्क

चेतना-यन्त्र

मनुष्य के शरीर मे अनेक प्रकार के अवयव होते है उनमें से प्रत्येक अवयव का एक-एक मुख्य-कर्तव्य निश्चित है। उदाहरण के लिए आमाशय का कार्य भोजन को पचाना, त्वचा का कार्य शरीर मे उचित परिमाण मे गर्मी रखने का प्रयत्न करना तथा रक्ताशय का कार्य रक्त का सचार करना है।

चेतना-यन्त्र का कार्य यह है कि शरीर के सभी अवयव ठीक समय पर अपने उचित कर्तव्य का पालन करते रहे। चेतना-यन्त्र के द्वारा ही शरीर के हृदय, फेफडे, गुर्दे और कलेजा आदि अपना-अपना काम करते हैं। चेतना यन्त्र शरीर के सभी अवयवों का संचालन तथा सभी भागो का नियन्त्रण करता है।

जब हम किसी बात का स्मरण करते हैं तो यह कार्य भी चेतना यन्त्र के एक भाग द्वारा ही होता है।

चेतना-यन्त्र के मुख्य भाग दो है—

(१) मस्तिष्क।

(२) पीठ का बांसा।

मस्तिष्क हड्डी के एक खोल मे जिसे 'खोपड़ी' कहा जाता है सुरक्षित

रहता है तथा पीठ का बांसा रस्सी की तरह भेजे का लम्बा खिंचा हुआ भाग होता है। यह रस्सी कनिष्ठा उगली के बराबर मोटी होती है।
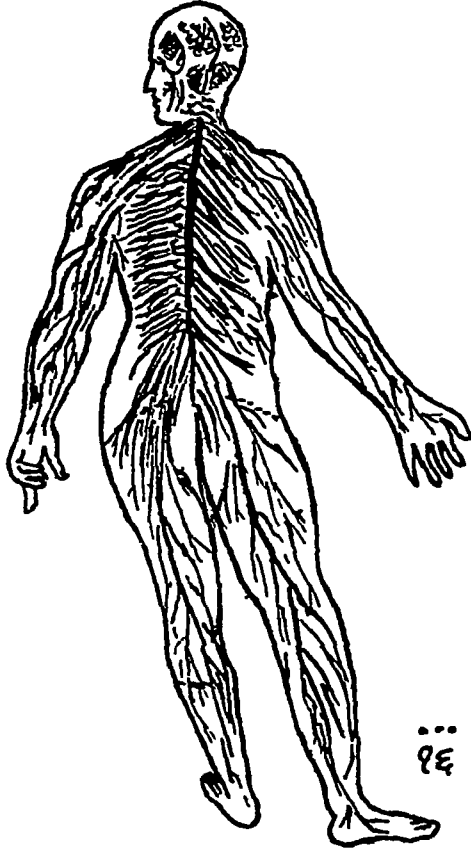
[साधारण चेतना-यन्त्र]

चित्र सख्या १६ मे शरीर के साधारण चेतना यन्त्र के स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है।

पीठ का बांसा भेजे के निचले भाग मे जुडा रहता है तथा खोपड़ी मे एक बड़े छेद द्वारा बाहर निकला होता है।

मेरुदण्ड की २४ हड्डिया एक दूसरी के ऊपर कमर से लगी रहती हैं। इन सबके बीच मे एक छेद होता है, जिससे मेरुदण्ड मे हड्डियों की एक मजबूत नली सी बन जाती है। पीठ का बासा इसी नली मे कमर के नीचे तक चला जाता है।

भेजे तथा पीठ के बासे में से रेशम के धागे से भी अधिक महीन तथा कुछ मोटे विभिन्न आकार-प्रकारो के सूक्ष्म तन्तु निकले रहते है। ये चेतना तन्तु शरीर के सम्पूर्ण भाग मे फैले रहते है। ये इतने घने होते है कि यदि शरीर मे किसी स्थान पर एक महीन सुई भी चुभाई जाए तो वह किसी न किसी तन्तु को अवश्य चुभती है और दर्द होता है।

मस्तिष्क और पीठ का बासा दोनो ही धागे के समान असख्य छोटे-छोटे तन्तुओं से बने हुए होते है। प्रत्येक तन्तु-रेशे के छोर पर एक गांठ के समान बढाव होता है। इसे 'चेतना-गाठ' अथवा'चेतना-अणु'कहा जाता है। ये छोटे-छोटे चेतना-अणु मस्तिष्क तथा पीठ के बासा मे सर्वत्र विद्यमान रहते हैं।

इन चेतना-अणुओ की सहायता से ही मस्तक विचार करता है, स्मरण करता है, स्नायुओ को गतिमान बनाये रखता है तथा शरीर के सभी भागो का प्रबन्ध करता है।

मस्तिष्क मे केवल शरीर के अन्य भागो से सन्देश आता ही नही है, अपितु वह बाहर आज्ञाएं भी भेजता है, जिसके कारण नसें गतिवान् हो जाती हैं।

यदि हमारी इच्छा घूमने-फिरने की हो तो मस्तिष्क स्नायुओं को आज्ञा देता है कि टागों को चलाया जाए। यदि आंखो द्वारा यह सन्देश

मिले कि समीप ही कोई सर्प है, तो मस्तिष्क द्वारा स्नायुओ को तुरन्त यह आदेश मिलता है कि शरीर को तुरन्त गतिवान बना दिया जा ग अर्थात् उस स्थान से दौडा कर हटाया जाय ।

यदि उंगली की नसो द्वारा मस्तिष्क तथा पीठ के वासा को यह सन्देश मिले कि हाथ को उगली किसी गर्म वस्तु को स्पर्श कर रही है तो मस्तिष्क तथा पीठ के वांसा द्वारा बांह के स्नायु को तुरन्त यह आदेश दिया जाता है कि वह उगली को उस स्थान से हटा दे ।

इसी प्रकार चेतना-तन्तुओ द्वारा सभी अवयवो से सन्देश प्राप्ति एव आदेश-वितरण का काय किया जाता है ।

मस्तिष्क द्वारा विचार, स्पर्श ज्ञान तथा स्मृति का कार्य सम्पन्न होता है । इसी के द्वारा शत्रुता एव प्रेम भाव का निर्णय किया जाता है। इसे शरीर के प्रत्येक भाग का यह सर्वोपरि सचालक और शासक समझना चाहिए ।

मस्तिष्क के किस भाग का शरीर के किस अवयव से विशेष सम्बन्ध रहता है, इसे नोचे दिये गए चित्र सख्या १७ मे प्रदर्शित किया गया है ।

१७
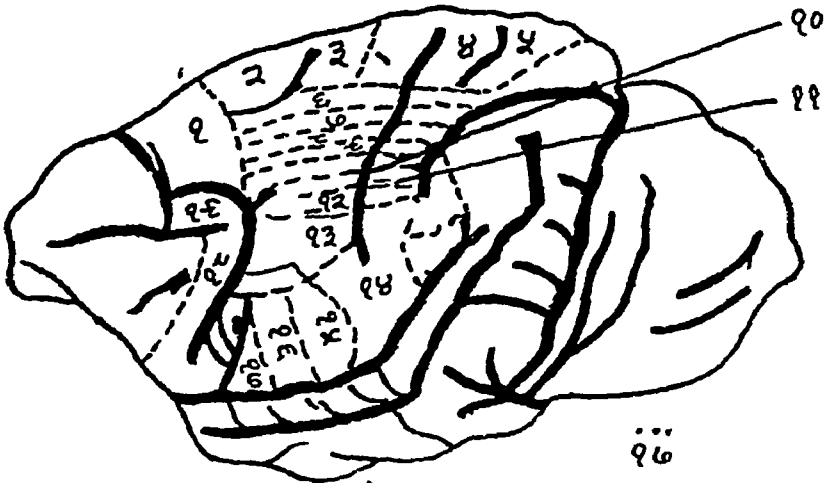
पीछे चित्र मे जिन स्थानो पर क लिखे गये हैं, उनके अनुसार मस्तक के उस भाग का मुख्य सम्बन्ध शरीर के निम्नलिखित भागो से समझना चाहिए।

(१) सिर को घुमाने की क्रिया।

(२) नितम्ब प्रदेश।

(३) घुटने और टखने।

(४) पाव के अगूठे।

(५) पाव की उगलिया।

(६) कधे।

(७) कुहनिया।

(८) हाथ की कलाइया।

(९) हाथो की उगलिया।

(१०) तर्जनी उगली।

(११) हाथ के अगूठे।

(१२) आंख की पलके।

(१३) मु ह का भीतरी भाग।

(१४) मुख-ओठ से वेष्टित भाग।

(१५) चबाने की क्रिया।

(१६) नाक का भीतरी भाग जहां उसका कण्ठ के साथ योग होता है।

(१७) कण्ठ का भीतरी भाग, जहां से शब्द का उच्चारण किया जाता है।

(१८) नेत्र प्रन्त अर्थात् आंखो को घुमाकर बगल से देखने की क्रिया।

(१९) सिर तथा आखो का युगवत् सचालन।

सिर

मस्तिष्क के बाहरी आवरण को 'सिर' कहा जाता है सिर की बनावट जिस प्रकार की होतो है मानवचित गुणो की न्यूनाधिकता उसी मात्रा

मे पाई जातो है। यदि सिर 'उच्च' श्रेणी का है तो उस व्यक्ति का

मस्तिष्क-शक्ति प्रबल होती है और उसीके अनुपात मे उसमें अन्य मानवीय गुण भी अधिक होगे। यदि सिर मध्यम श्रेणी का है तो मस्तिष्क शक्ति तथा अन्य मानवीय-गुण मध्यम मात्रा मे होगे और यदि सिर की बनावट निम्न श्रेणी की है तो मस्तिष्क-शक्ति तथा अन्य मानवीय गुण भी निम्न श्रेणी के ही होगे।

चित्र सख्या १८ मे सिर की तीन मुख्य (१) उत्तम (२) मध्यम तथा (३) निम्न श्रेणी की बनावटो का स्वरूप प्रदर्शित किया गया है।

उक्त चित्र में काली रेखा द्वारा सिर की जो सामान्य आकृति प्रदर्शित की गई है वह उत्तम कोटि की है। इसमे सिर के सभी भाग यथोचित अनुपात में उन्नत तथा पिचके हुए है। ऐसे सिर वाला व्यक्ति गुणवान्, योग्य, विचारवान, बुद्धिमान, साहसी, शिष्ट तथा विश्वास-पात्र होता है।

इसी चित्र मे दानेक्षर 'क' शीर्षक रेखा से सिर की जो आकृति दिखाई गई है। उसमे बुद्धि-कोष का आकार अधिक पिचका हुआ है। अत निष्कर्ष रूप मे ऐसे सिर वाला व्यक्ति सामान्य बुद्धि का होगा और उसमें विद्या, साहस, गुण, क्षमता, विचारशक्ति योग्यता आदि मानवीय-गुणों की भी कमी होगी।

इसी चित्र में दानेक्षर 'ख' शीर्षक रेखा द्वारा जो आकृति प्रदर्शित की गई है उसमे बुद्धि कोष का स्थान सामान्य से अधिक पुष्ट है। अत: ऐसे सिर वाले व्यक्ति का अत्यधिक बुद्धिमान होना निश्चित है, परन्तु बुद्धि-कोष के अत्यधिक उन्नत होने पर भी अन्य क्षेत्रो के असन्तुलित हो जाने के कारण, ऐसा व्यक्ति अन्य मानवीय गुणो से भी युक्त हो, यह आवश्यक नही है। ऐसे सिर वाले लोगों मे दया, क्षमा, चतुराई, प्रेम, सहनशीलता आदि गुणो की कमी पाई जाती है। अक्सर

यह भी देखा जाता है कि ऐसे सिर वाले लोग अपनी तीव्र-बुद्धि का उपयोग दूसरे लोगो को धोखा देने अथवा हानि पहुचाने के कार्यों में भी करते है। यदि किसी अच्छी दिशा मे मुड जाऐं तो ऐसे लोग अपनी तीव्र-मस्तिष्क शक्ति का उपयोग नवीन आविष्कार अथवा अनुसधान के कार्यों मे भी कर सकते है। शरोर के अन्य लक्षणो को देखकर ही इन सबके विषय में अन्तिम निष्कर्प निकाला जा सकता है।

सिर का परिमाण

सिर का परिमाण बडा या छोटा हो तो केवल उसी से यह नही समझ लेना चाहिए कि मनुष्य कम या अधिक बुद्धिमान अथवा गुणवान होगा।

सिर का परिमाण बडा होना बुद्धिमत्ता का लक्षण अवश्य है, परन्तु उसके लिए निम्नलिखित बातो पर भी ध्यान देना आवश्यक है—

(१) सिर का परिमाण—अर्थात् उसकी लम्बाई और ऊचाई की न्यूनाधिकता।

(२)सिर का वजन–अर्थात् सिर का वजन मे हल्का अथवा भारी होना बुद्धिमान् तथा महान् व्यक्तियो के सिर वजन मे सामान्य लोगों की अपेक्षा अधिक भारी होते हैं।

(३) वैशिष्ट्य पूर्ण—अर्थात् ज्ञान तथा प्रवृत्ति-कोषो का अधिक वैशिष्ट्य पूर्ण होना। जिस प्रकार सूत के डोरे की अपेक्षा रेशमी डोरा अधिक चिकना, मुलायम, सुन्दर तथा मजबूत होता है, उसी प्रकार महान् व्यक्तियो के ज्ञान तन्तु तथा प्रवृत्ति कोष भी सामान्य व्यक्तियो को अपेक्षा अधिक विशिष्टता लिए होते है। इस विशिष्टता का अनुमान सिर के विभिन्न भागो के उन्नत होने से लगाया जा सकता है। शरीर के अन्य लक्षण मुख, नेत्र, वाणी आदि से भी विशिष्टता का ज्ञान

प्राप्त किया जाता है। सिर के विभिन्न भागो के उन्नत होने से जातक मे किन-किन गुणों की विशेषता पाई जाती है, इसका वर्णन आगे किया जायेगा।

सिर का माप

सिर के कम या अधिक माप के अनुसार भी मनुष्य के कम या अधिक विद्वान्, गुणवान, साहसी आदि होने का अनुमान लगाया जाता है सिर का माप लेने का तरीका यह है—

एक फीता (इची टेप) लेकर सिर के चारों ओर इस तरह से लपेटें कि दोनो कानो के ऊपर का हिस्सा, ललाट तथा सिर का पिछला हिस्सा माप के भीतर पूरी तरह आ जाए।

यदि माप की परिधि मे सिर २१" (इक्कीस इन्च) का हो तो उसे बुद्धिमान् तथा गुणवान व्यक्ति का मस्तक समझना चाहिए। यूरोप आदि देशों मे सिर का माप २२ इन्च होना अच्छा समझा जाता है। यदि सिर इससे भी बड़ा २२ से २४½" तक का हो तो माप जितना बड़ा हो, उसे उतना ही अधिक अच्छा तथा वैशिष्ट्य पूण समझना चाहिए।

२४½" से बडे माप का सिर हो तो उसे किसी बीमारी का लक्षण समझना चाहिए। २४½" से अधिक बड़े माप के सिर अच्छे नही माने जाते। इसी प्रकार २१ इच से कम माप का सिर भी अच्छा नही माना जाता। यदि सिर का नाप १८ इन्च से भी कम हो अथवा मस्तिष्क सिर के पीछे नीचे की तरफ हो तो ऐसे जातक मे बुद्धि तथा मस्तिष्क शक्ति की अत्यधिक कमी समझनी चाहिए।

पुरुष के सिर की अपेक्षा स्त्रियो के सिर का नाप कुछ छोटा होता है। जो गुण, तथा बुद्धि पुरुष के 21 इन्चें वाले सिर मे पाये जायेंगे, वही बुद्धि और गुण स्त्रियों के २० इन्च के सिर मे मिलेगे।

कुछ लोगो के सिर तो वहुत वडे होते हैं, परन्तु फिर भी उनमें बुद्धि की कमी अथवा मूर्खता के लक्षण पाये जाते हैं। ऐसी स्थिति मे यह समझना चाहिए कि उस वड़े सिर वाले व्यक्ति के ज्ञान-कोषो मे या तो क्षमता का अभाव है अथवा सिर का आकार ठीक नही है। परन्तु वड़े सिर वाले लोग वहुत कम सख्या मे भी मूर्ख पाये जाते हैं। इसी प्रकार छोटे सिर वाले लोग वहुत कम सख्या मे बुद्धिमान् देखे जाते हैं।

ज्ञान-कोष जितने अधिक विकसित और पुष्ट होते हैं मस्तिष्क का आकार उतना ही अधिक वड़ा होता है और उसीके अनुपात से मस्तिष्क का वाहरी आवरण भी वड़ा होता है। यदि किसी युवा पुरुष के सिर का माप १७ इन्च से कम हो तो यह निश्चित रूप से मान लेना चाहिए कि उसके मस्तिष्क का पूर्ण विकास नही हो पाया है।

सिर के आकार की वृद्धि वाल्यावस्था से लेकर १६-२० वर्ष की आयु तक होती रहती है। २० वर्ष की आयु मे पहुचने पर मनुष्य के सिर का आकार प्राय अन्तिम रूप से निश्चित हो जाता है। परन्तु कुछ अपवाद ऐसे भी पाये जाते हैं, जिनमे सिर की वृद्धि ४० वर्ष की आयु तक हुई है। परन्तु वह वृद्धि वहुत कम परिमाण मे ही होती है अतः २० वर्ष की आयु तक के परिमाण को अन्तिम मानकर कोई निष्कर्ष निकाला जा सकता है।

ललाट

आख की दोनो भौहों से ऊपर तथा सिर के केशो से निचले खुले हुए भाग को 'ललाट' कहा जाता है।

ललाट केवल चौड़ा और ऊचा हो, तभी मनुष्य बुद्धिमान होगा, यह जरूरी नही है। ललाट की चौडाई तथा ऊचाई के साथ ही उसके उभार की परीक्षा भी करनी चाहिए।

ललाट को नापने की विधि नीचे दिये गए चित्र में प्रदर्शित की गई है।
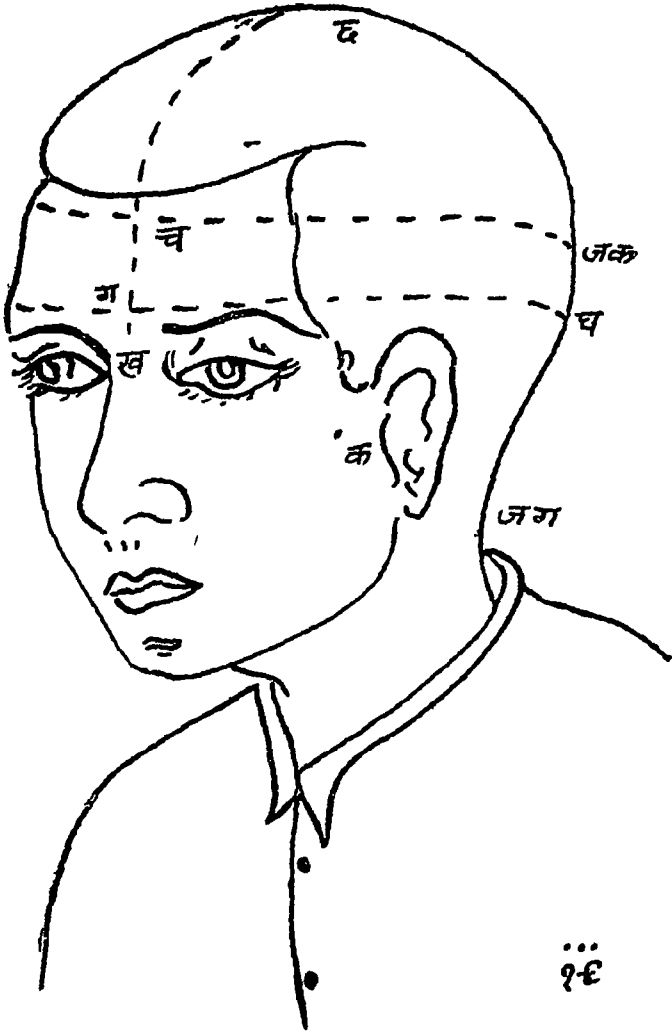
(क) उक्त चित्र मे जिस स्थान पर 'ग' अक्षर लिखा हुआ है। उस स्थान पर फीते का एक सिरा रखकर उसे 'घ' अक्षर तक ले जाए,

तत्पश्चात् सिर का एक चक्कर पूरा करके उसी 'ग' अक्षर तक वापिस चले आएं। यह ललाट के निचले भाग की एक लम्बाई हुई।

(ख) उक्त चित्र मे जिस स्थान पर 'घ' अक्षर लिखा हुआ है, उस स्थान पर फीते का एक सिरा रखकर उसे 'ज क' अक्षर तक नापे, तदुपरान्त सिर का एक चक्कर पूरा करके उसी 'च' अक्षर तक वापिस चले आये। यह ललाट के ऊपरी भाग की दूसरी लम्बाई हुई।

उक्त दोनो लम्बाइयो को नापने के उपरान्त निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुचना चाहिए।

(१) यदि पहली लम्बाई की अपेक्षा दूसरी लम्बाई आधी या पौन इन्च अधिक हो तो जातक परिश्रमी तथा कुशल व्यवसायी होता है।

(२) यदि दोनो लम्बाइयों का नाप २२½ इन्च के लगभग हो तो जातक विद्वान्, साहित्यकार तथा अध्ययनशील होता है।

(३) यदि दोनो लम्बाइयो का नाप २३ इन्च अथवा इससे अधिक हो तो जातक वैज्ञानिक अथवा आविष्कारक होता है।

(४) यदि दूसरी लम्बाई का नाप पहली लम्बाई की अपेक्षा १ इन्च के लगभग अधिक हो तो जातक विचारशील होते हुए भी क्रियाशील नहीं होता, अत. वह अपने विचारो एव निश्चयो को कार्यरूप मे परिणित नही कर पाता। केवल स्वप्नलोक मे विचरण करता रहता है। ऐसे लोग सांसारिक-सफलताए प्राप्त नही कर पाते।

ललाट की दूसरी लम्बाई का नाप नीचे लिखे अनुसार लेना चाहिए।

(क) चित्र मे कान के बीच वाले जिस स्थान पर 'क' अक्षर लिखा हुआ है वहा से 'छ' अक्षर तक नापते हुए फीते को दूसरे कान के मध्य-भाग तक नापें।

(ख) चित्र मे दोनो भौहो के बीच जिस स्थान पर 'ख' अक्षर लिखा हुआ है वहां से ऊपर के 'छ' अक्षर तक नापते हुए फीते को सिर के पीछे की ओर उस स्थान पर ले जायें जहां 'जग' अक्षर लिखे हुए है

तथा जिस स्थान पर सिर गर्दन से मिलता है।

उक्त दोनों लम्बाइयां भी अनुपात मे बराबर होनी चाहिए। यदि दोनों लम्बाइया समान हों तो उन्हे ठीक समझना चाहिए। यदि दोनो में कुछ अन्तर हो तो उसके प्रभाव को नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

(१) यदि पहली लम्बाई की अपेक्षा दूसरी लम्बाई आधी इन्च अधिक हो तो जातक मे आदर्श-वादिता, महत्वाकांक्षी तथा बौद्धिक-विकास के गुण अधिक होते हैं तथा प्रबन्ध-पटुता एव स्वार्थ वृत्ति कम होती है।

(२) यदि पहली लम्बाई को अपेक्षा दूसरी लम्बाई १ इन्च अथवा उससे कुछ अधिक हो तो एसा व्यक्ति न्याय-प्रिय तथा शीघ्र प्रसन्न होने वाला होता है।

(३) यदि पहली लम्बाई को अपेक्षा दूसरी लम्बाई २ इन्च अथवा उससे भी अधिक हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यधिक आदर्शवादी हो जाता है और उसे किसी के काम से सन्तोष नहीं मिल पाता।

(४) यदि दूसरी लम्बाई की अपेक्षा पहली लम्बाई अधिक हो तो ऐसा व्यक्ति स्वार्थी, सावधान, चतुर, लालची, सग्रहशील, सब बातो को गुप्त रखने वाला तथा दूसरो का बुरा चाहने वाला होता है। वह आत्मिक-सुख अथवा नैतिकता का हामो बिल्कुल नही होता। ऐसे व्यक्ति मे राजसिक तथा तामसिक गुण प्रचुर मात्रा मे पाये जाते है। यदि मष्तिक का भीतरी विकास भी अच्छा न हो तो ऐसे व्यक्तियो की चोरी, डकैती, अत्याचार, हिंसा आदि के कार्यों में प्रवृत्ति हो जाती है।

सिर का आकार

सिर के 'परिमाण' के सम्बन्ध मे पहले लिखा जा चुका है। अब यहा सिर के आकार के सम्बन्ध में लिखा जा रहा है।

सिर के आकार से तात्पर्य उसकी लम्बाई, चौड़ाई, आगे अथवा पीछे की ओर झुकाव, गोलाई अथवा चपटापन आदि बातो से है।

सिर के आकार से मनुष्य के स्वभाव तथा चरित्र के विषय मे ज्ञान प्राप्त होता है।

चित्र सख्या २० मे विभिन्न आकार वाले ६ सिरों को प्रदर्शित किया गया है। इनमे क्रमशः पहले सिर वाले व्यक्ति को सबसे अधिक बुद्धिमान्, दूसरे को उससे कम; तीसरे को उससे भी कम क्रमशः इसी प्रकार सबको एक दूसरे से न्यून बुद्धि वाला समझना चाहिए।

२०
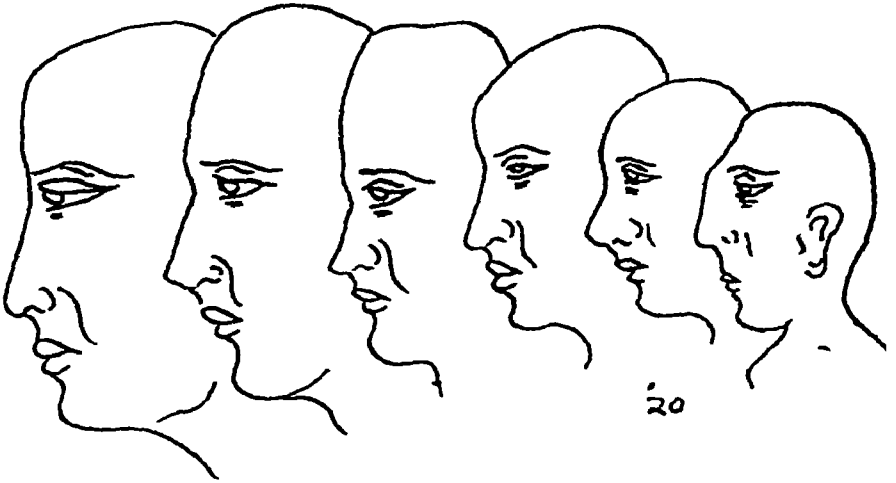
इन सिरों को ध्यान पूर्वक देखने से सिर के परिमाण तथा 'आकार' का अन्तर स्पष्ट हो जायेगा। साथ ही आगे की ओर उठे हुए पीछे की ओर मुडे हुए तथा सिर के उतार-चढाव एव छोटे वडे पन आदि के विषय में भी भली भाति जानकारी प्राप्त हो जायेगी।

इन चित्रो को ध्यान मे रखकर विभिन्न लोगो के सिर की परीक्षा करने पर उनके प्रभाव तथा अन्तर को जानने मे सहायता मिलेगी।

सिर के आकार के अनुसार मनुष्य के विषय मे जानकारी प्राप्त करने का सामान्य तरीका निम्नानुसार है—

(१) **लम्बा सिर**—ऐसा सिर आखों की भौहों से लेकर सिर के पिछले भाग तक लम्बाई लिए हुए होता है, ऐसे सिर पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियों में अधिक पाये जाते है।

ऐसे सिर वाला जातक अत्यधिक मैत्री पूर्ण तथा कुछ-कुछ गर्वीले स्वभाव का होता है। वह अपने पारिवारिक जोवन तथा सामाजिक बन्धनो के प्रति प्रेम रखता है। ऐसे सिर वाली स्त्री अपने कार्य तथा सौन्दर्य की प्रशसा सुनना तो पसन्द करती है, परन्तु उसमें यह विवेक बुद्धि भी होती है कि वह निष्कपट सराहना तथा चापलूसी के अन्तर को भली भांति समझ ले। ऐसे सिर वाली स्त्रियां भविष्य की योजनाएं बनाती, आवश्कता से बहुत समय पूर्व ही आशा लगाये रखती तथा अपने अधिकारों की रक्षा के लिए सतर्क बनी रहती है। वे अपने निकटतम मित्र, पारिवारिक अथवा प्रियजनो की रक्षा के लिए भी सदैव उद्यत रहती हैं।

(२) **छोटा सिर**–इस प्रकार का सिर भौहो से लेकर सिर के पिछले भाग तक छोटा होता है। ऐसे सिर वाले व्यक्ति वहुत फुर्तीले तथा बहुमुखी प्रतिभा वाले होते हैं। वे सरलता से अपने बहुत से मित्र बना लेते है परन्तु अपनी स्वार्थ-वृत्ति के कारण उन्हें शीघ्र ही खो बैठते है। ऐसे सिर वाले लोग यात्रा-प्रेमी मृदुभाषी दूसरो के भी मनोभाव तथा स्वभाव को पहिचान कर उनके अनुकूल बन जाने वाले तथा सरल स्वभाव के भी होते है। ऐसे व्यक्ति यदि अपनी अत्यधिक स्वार्थ-वृत्ति पर किसी प्रकार नियन्त्रण पा सके तो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे सफलता प्राप्त कर सकते है। परन्तु ऐसा हो पाना बहुत कठिन रहता है।

(३) ऊंचा सिर–ऐसे सिर वाला व्यक्ति परोपकारी, धार्मिक विचारो का, ईमानदार, विश्वास-पात्र, सयमी तथा मानवीय गुणो से परिपूर्ण होता है। वह अपने सभी साथियो को सुख पहुचाने का इच्छुक रहता है। उसका व्यक्तित्व सौम्य तथा गौरवपूर्ण होता है, वह अपने व्यक्तिगत जीवन मे भी नियमो का पालन करने वाला, आदतो मे शिष्ट तथा सर्वत्र सम्मानीय होता है।

(४) गोल सिर–जो लगभग पूर्ण रूप से गोल दिखाई देता हो, ऐसे सिर वाला व्यक्ति अत्यधिक आत्मविश्वासी होने के कारण कुछ-कुछ उतावला, उच्छृ खल तथा चचल होता है। उसके मन मे नये-नये काम करते रहने की उमगे उठा करती हैं। वह अधिक समय तक किसी एक ही काम मे लगा नही रह सकता। वह बारम्बार अपने भाग्य की परीक्षा करना चाहता है। फलतः बार-बार व्यवसाव एव विचार बदलते रहने के कारण उसे जीवन मे सफलताए बहुत कम प्राप्त हो पाती हैं।

(५) वर्गाकार सिर—इस प्रकार का सिर आगे और पीछे की ओर चपटा होता है। ऐसे सिर वाले व्यक्ति सतर्क और अन्ध विश्वासी होते हैं। किसी नये कार्य को आरम्भ करने मे उन्हे भय लगता है, अत. वे नये क्षेत्र मे जाने की इच्छा नही रखते। भले ही उनको उन्नति क्यो न हो रही हो, फिर भी वे उसे ठुकरा कर अपने पुराने पद अथवा काम से ही चिपके रहते है। ऐसे लोग बोल-चाल में भी फूहड होते हैं। वे अपनी प्रशसा करने वाले व्यक्ति को भी झिड़कते और उपेक्षित करते हैं। परन्तु ऐसे लोग अत्यधिक परिश्रमी एव लगनशील वृत्ति के अवश्य पाये जाते है।

(६) ऊंचा और चौड़ा सिर—ऐसा सिर ऊचा तथा पीछे की ओर चौड़ा होता है। ऐसे सिर वाले व्यक्ति लड़ाकू स्वभाव के होते है,

परन्तु उनकी लड़ाई केवल अपने अधिकारो की रक्षा के लिए ही होती है। वे जान बूझकर स्वय किसी से लड़ाई मोल लेना नही चाहते। ऐसे व्यक्ति व्यवहार मे रूखे तथा मु ह फट होते है। वे अधिक आशावादी, गुप्त बातों को छिपाने मे कुशल और विश्वास पात्र भी होते है।

(७) **नीचा और फैला हुआ (चौड़ा) सिर**—ऐसा सिर कानो के ऊपर को ओर नोचा तथा कानों के बोच में चौडा होता है। ऐसे सिर वाले लोग व्यावहारिक प्रकृति के, भौतिकवादी, नियमित कार्यो को खूब करने वाले, परिश्रमी; स्वार्थ-परक तथा अपनी इच्छानुसार चलने वाले होते हैं। ऐसे लोग अपने सम्पर्क द्वारा दूसरे लोगो को भी प्रसन्न कर सकते है, क्योकि इनके साथ व्यवहार करना सरल होता है। इनमे कल्पना-शक्ति तथा तर्क-शक्ति की कमी पाई जाती है।

(८) **ऊचा और सकरा सिर**—ऐसे सिर वाले व्यक्ति बडे लगन-शील तथा आशावादी होते है। वे दैवी शक्ति अथवा भाग्य पर बहुत भरोसा करते है। ऐसे लोग किसी नये रास्ते पर चलना पसन्द नही करते, अपितु उन्ही विधियो तथा तरीको पर चलना चाहते है, जिनकी अन्य लोग पहले से परीक्षा कर चुके हैं। फलस्वरूप ऐसे व्यक्ति किसी भी क्षेत्र मे अग्रगामी अथवा अन्वेषक नही बन पाते। इन लोगो मे कभी-कभी उद्दण्डता के लक्षण भी पाये जाते हैं।

मस्तिष्क के विभिन्न क्षेत्र तथा मानसिक शक्तियां

मस्तिष्क-विज्ञान (Phrenology) के पश्चिमी विद्वानो के मतानुसार सम्पूर्ण मस्तक बनावट का निरीक्षण करके मानव-चरित्र का विश्लेषण किया जा सकता है। उनका मत है कि 'मन' का निर्माण पैंतीस विभिन्न स्थानीय मानसिक-शक्तियो अथवा चारित्रिक लक्षणों से हुआ है और उनमें से प्रत्येक लक्षण एक विशिष्ट अग अथवा मस्तिष्क के क्षेत्र मे स्थित है। खोपड़ी के स्वरूप मे प्रतिबिम्बित इनमे से प्रत्येक मानसिक शक्ति के आकार तथा विकास का सावधानी से निरीक्षण करके जातक की विशिष्टताओ का वर्णन किया जा सकता है।

विभिन्न मानसिक-शक्तियो की जानकारी प्राप्त करने के लिए खोपड़ो को ३५ भागो मे विभक्त किया गया है। चित्र सख्या २१, २२ तथा २३ मे इन विभागो को प्रदर्शित किया गया है। प्रत्येक विभाग मे उसकी सख्या लिख दी गई है, उससे सम्बन्धित मानसिक शक्ति का वर्णन अगले पृष्ठो मे यथास्थान पर किया गया है।

कुछ मानसिक शक्तियो के लिए दो-दो स्थान निश्चित किये गये है और उन दोनो स्थानो मे एक सी सख्या लिखी गई है।

उसका कारण यह है कि खोपड़ी को दाये तथा बाये दो अर्द्धांशों मे बटा हुआ माना गया है, अतः कुछ मानसिक-शक्तियां इन दोनो अर्द्धांशो मे अपने सम्बन्धित स्थानो मे पाई जाती है। अस्तु, मस्तिष्क-विज्ञान का अभ्यास करते समय किसी व्यक्ति के चरित्र के सम्बन्ध मे
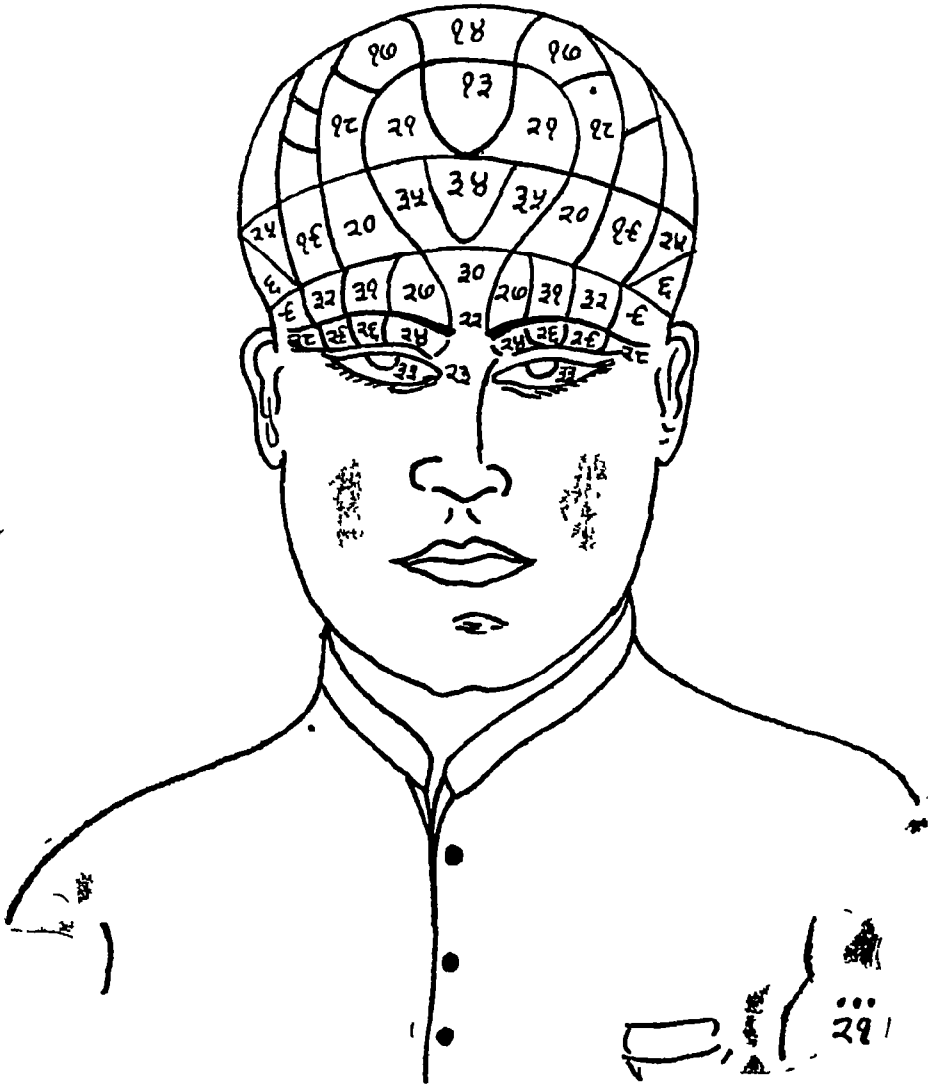
[खोपडी का अग्रभाग और उसके विभिन्न उपविभाग]
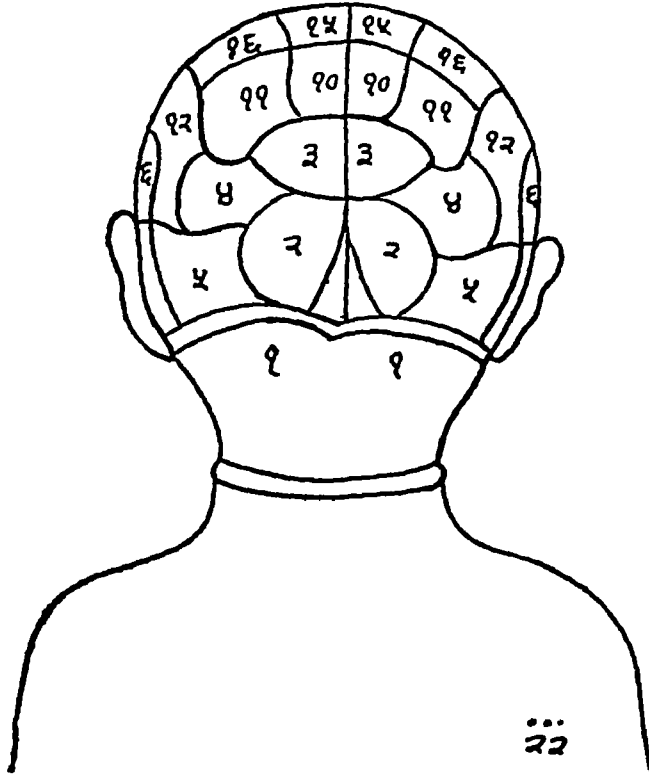
[खोपडी का पृष्ठ भाग और उसके विभिन्न उपविभाग]

किसी निर्णय पर पहुचने से पूर्व उसकी खोपडी के दाए और बाए दोनो भागो की मानसिक स्थितियो के आधार पर ध्यान देना आवश्यक है।

मस्तक के उभार कुछ तो स्पष्ट रूप से आखो द्वारा ही देखे जा सकते हैं,-परन्तु कुछ की सही जानकारी प्राप्त करने के लिए उंगलियो द्वारा उस स्थान का स्पर्श करना आवश्यक है।

मस्तिष्क-विज्ञान (Phrenology) के प्रतिपादक गल (Gull)
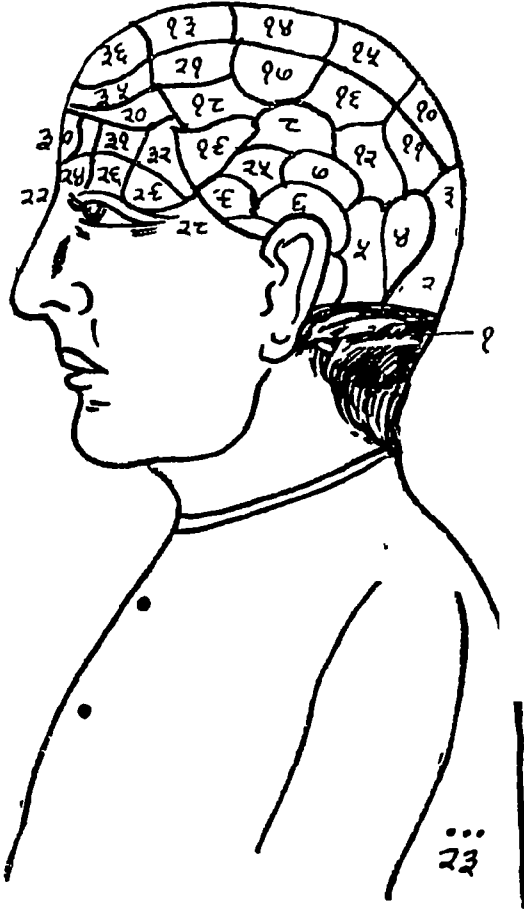
[खोपडी का दाया भाग और उसके विभिन्न उपविभाग]

तथा स्पर्जिम (Spurzheim) बन्धुओं का कहना है कि ३५ मानसिक-शक्तियों में २५ ऐसी है, जिनके उभार को जानने के लिए स्पर्श करना आवश्यक नही है, परन्तु निम्नलिखित दस मानसिक-शक्तियों की जानकारी के लिए उगलियो की सहायता लेना आवश्यक होता है। उगलियों द्वारा वृत्तियों का निरीक्षण करते समय उगलियों की

सवेदन-शीलता को इतना विकसित करना चाहिए। जिससे कि वे मस्तिष्क के उभार के साधारण से साधारण अन्तर को भी ठीक से जानने मे समर्थ हो सकें।

कई मानसिक-शक्तियो का क्षेत्र एक-दूसरे के बहुत समीप स्थित होता है, अतः परीक्षा करते समय सही क्षेत्र का ज्ञान एव सावधानी रखना अत्यन्त आवश्यक है।

जिन १० मानसिक-शक्तियो के उभार का उगलियो की सहायता से पता लगाना आवश्यक होता है, उनकी सख्या तथा नाम निम्न-लिखित हैं —

(१) काम-वासना, (२) वात्सल्य-प्रेम, (३) समाज तथा देश-प्रेम की भावना (४) मैत्री-भावना, (१२) सतर्कता एव सदेहशीलता को प्रवृत्ति, तथा (१६) जागरूकता एव न्याय-प्रियता—इन छै विभागो की अवस्थिति सिर के पिछले हिस्से मे होती है।

(१७) आशावादिता—इस विभाग की अवस्थिति सिर के अगले हिस्से मे है।

(५) झगडालू प्रवृत्ति अथवा युद्ध-प्रियता, (६) विध्वसक वृत्ति तथा (७) गोपनीयता की वृत्ति—इन तीन विभागो की अवस्थिति कानो के पिछले हिस्से मे है।

सिर के किस स्थान मे किस मानसिक वृत्ति के विषय मे क्या ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है तथा इन विभागो के उन्नत होने से जातक के हाथ की बनावट तथा रेखाओ के स्वरूप पर क्या प्रभाव पडता है इसका विस्तृत विवरण आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

यहा एक बात यह निरन्तर स्मरण रखने योग्य है कि किसी मान-सिक शक्ति के उभार को देखकर केवल उसी के आधार पर यह

निष्कर्ष नही निकाल लेना चाहिए कि उस व्यक्ति में उस शक्ति से सम्बन्धित विशेषताएं अवश्य ही होंगी। किसी भी अन्तिम परिणाम पर पहुंचने के लिए पूरी खोपडी का निरीक्षण तथा विश्लेषण करके यह पता लगाना आवश्यक है कि एक शक्ति के उभार को किसी दूसरी शक्ति के उभार ने व्यर्थ तो नही बना दिया है और यदि व्यर्थ बना दिया है तो वह कितने अश मे बनाया है। इस प्रकार सम्पूर्ण शक्तियो के उभार की परीक्षा करने के उपरान्त ही किसी मानसिक शक्ति के प्रभाव सम्बन्धी अन्तिम निष्कर्ष पर पहुचना ठीक रहता है।

पाठको की सुविधा के लिए अब हम प्रत्येक मानसिक-शक्ति के क्षेत्र, उसके महत्व, तथा उसका हाथ एव हाथ की रेखाओ के स्वरूप पर पडने वाले प्रभाव का अलग-अलग सचित्र विवरण प्रस्तुत कर रहे हैं, जो इस प्रकार है—

(१) काम-वासना

चित्र २४ मे प्रदर्शित सख्या १ का भाग यदि अधिक उन्नत और पुष्ट हो तो जातक मे काम-वासना आवश्यकता से अधिक पाई जाती है। इस मानसिक शक्ति का कार्य शारीरिक-प्रेम की भावना तथा वासनात्मक प्रवृत्ति को उत्पन्न करना है। यह उभार मनुष्य को उत्साह, बल तथा पु सत्व शक्ति प्रदान करता है।

यह स्थान यदि सामान्य रूप से पुष्ट हो तो मनुष्य मे प्रेम-शीलता तथा कामवासना भी सामान्य रूप से बलवान होती है। ऐसे लोग विपरीत सैक्स (यदि जातक पुरुष है तो स्त्री के लिए और स्त्री है तो पुरुष के लिए) के प्रिय बनने के हेतु तथा उन्हे इच्छित वस्तुए भेंट करने के लिए अत्यधिक परिश्रम के कार्यो द्वारा धनो-पार्जन करते हैं। कभी-कभी उनका निजि आकर्षक व्यक्तित्व ही स्त्रियो को आकर्षित करने के लिए पर्याप्त होता है। प्रत्येक स्थिति मे, इस उन्नत स्थान

वाले व्यक्ति के जीवन पर सैक्स अथवा प्रेम-वासना का प्रभाव सबसे अधिक रहता है।
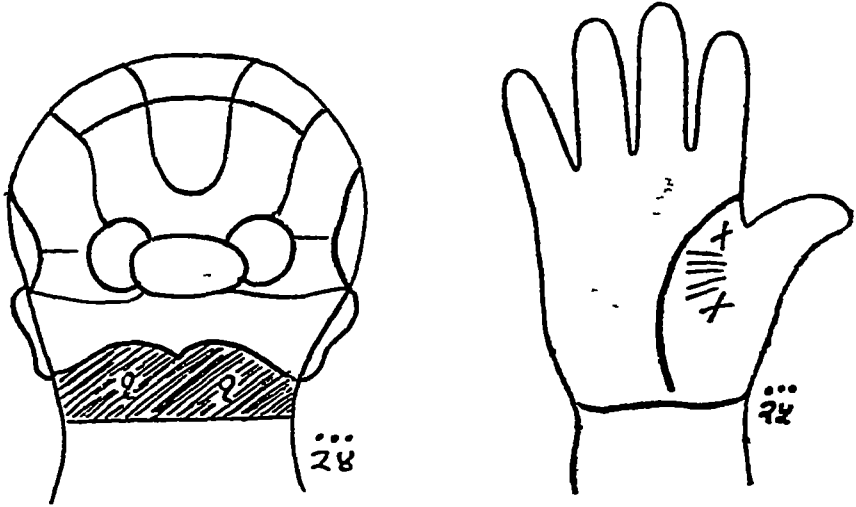
ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली मे शुक्र-क्षेत्र उभरा हुआ रहता है। शुक्र-क्षेत्र पर कम या अधिक रेखाएं अथवा क्रास चिन्ह् भी होते है (चित्र सख्या २५) यदि शुक्र-क्षेत्र को कुछ रेखाए अपूर्ण रूप से घेरे हुए हो, वे टूटी हुई हों अथवा दुहरी तिहरी हो तो जातक का आदर्श गिरा हुआ होता है। वह अपनी वासना तुष्टि के लिए उचित अनुचित का विचार भी नहीं करता, फलत. वह लोक निन्दित तथा जीवन के अन्य क्षेत्रो मे असफल भी होता है।

(२) वात्सल्य-प्रेम

चित्र २६ मे प्रदर्शित सख्या २ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो तो जातक मे वात्सल्य-प्रेम की भावना अधिक पाई जातो है अर्थात्

ऐसे व्यक्ति अपनी सन्तानो को सामान्य से अधिक प्रेम करते है और उनके लालन-पालन पोषण तथा रक्षा में अधिक रुचि लेते है। यह स्थान पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियो के मस्तिष्क मे अधिक उन्नत पाया जाता है। इसी कारण पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियों मे वात्सल्य भावना अधिक पाई जाती है।
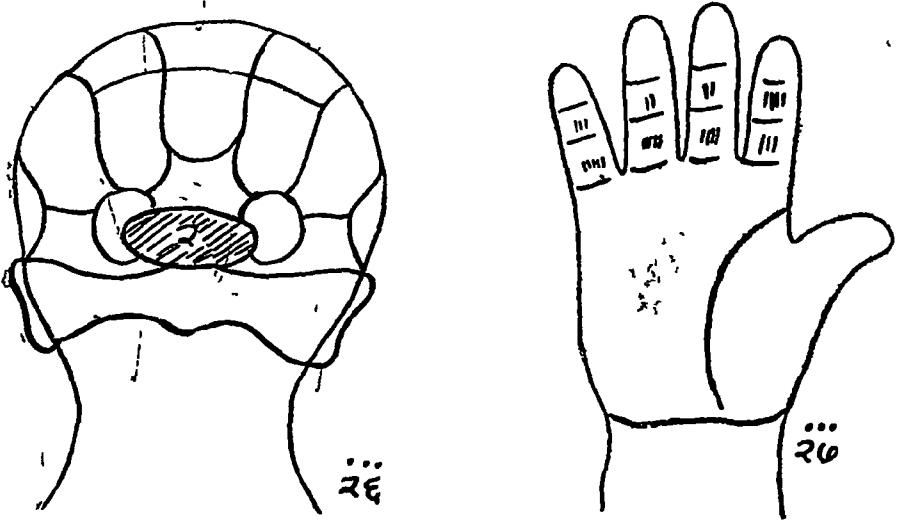
यदि मस्तक के इस भाग पर उभार बहुत अधिक हो तो ऐसे मस्तक वाली स्त्री केवल अपने बच्चो के लिए ही जोवित रहती है। यदि उसके स्वय बच्चे न हुए तो या तो वह किसी दूसरे के बच्चे को गोद ले लेगी या फिर अपने सम्बन्धियो एव पड़ोसियो के बच्चो का पालन-पोषण करने मे रुचि लेगी ऐसी स्त्रो के हृदय मे प्रत्येक बच्चे के लिए अपार स्नेह पाया जाता है। उन्हे बच्चो को छोड़कर किसी उत्सव, मेल, तमाशे आदि मे जाने की इच्छा ही नही होती। उन्हे बच्चे भी बहुत अधिक स्नेह करते है।

ऐसे उन्नत स्थान वाले जातक की हथेली में बुध-क्षेत्र अधिक उभरा रहता है तथा शुक्र स्थान भी उन्नत होता है, परन्तु उस पर 'क्रास' आदि

के चिन्ह नही होते । इन लोगो की उगलियो पर छोटी-छोटी खडी तथा स्पष्ट रेखाएं पाई जाती है। (चित्र सख्या २७) ऐसे लोगो के सन्ताने चाहे कम हो अथवा अधिक हो वे सभी को समान रूप से अत्यधिक स्नेह करते है ।

(३) समाज तथा देश-प्रेम की भावना

चित्र २८—मे प्रदर्शित सख्या ३ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो तो जातक को अपने घर, जाति, समाज तथा देश के लोगों से अत्यधिक प्रेम होता है।
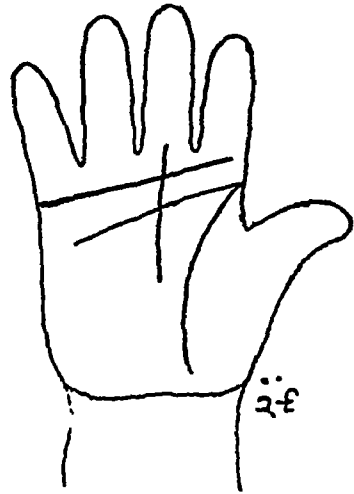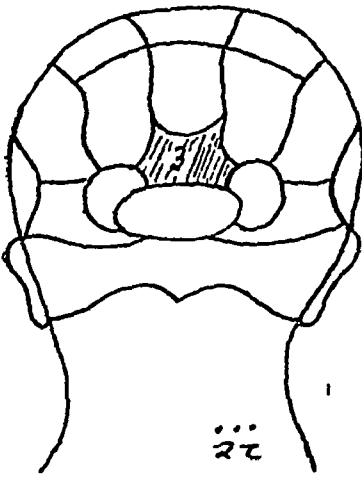
ऐसे व्यक्ति बाहर सैर-सपाटा करने की अपेक्षा अपने घर मे रहना ही अधिक पसन्द करते हैं। यदि इस प्रकार के उन्नत भाग वाले हाथ मे यात्रा-रेखा भी बलवान हो तो ऐसे व्यक्ति समाज अथवा राष्ट्र सेवा के कार्य के लिए यात्रा भी करते हैं।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली मे बृहस्पति का क्षेत्र विशेष रूप से उन्नत होता है। ऐसे लोग अपने घर में रहने, दावतें देने तथा अपने निवास-स्थान को प्रत्येक स्थिति मे सजाये रखने के शौकीन होते है।

यदि ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति के हाथ मे सूर्य-रेखा तथा यात्रा-रेखा का अथवा दोनो मे से किसी एक रेखा का अभाव हो, हथेली मुलायम हो और उंगलिया चमचाकार न हो तथा नाखून छोटे हों तो जातक स्वाभाविक रूप से शासक वृत्ति का होता है। वह अपने घर तथा समाज के लोगो पर शासन करने मे कुशल होता है।

(४) मैत्री-भावना

चित्र ३०—मे प्रदर्शित सख्या ४ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो तो जातक मे मिलनसारी एव मित्रता की प्रवृत्ति अधिक होनी है।
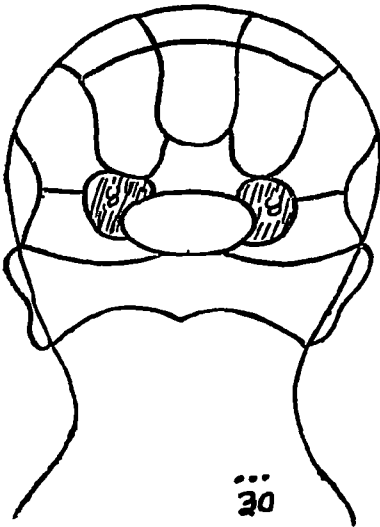
ऐसे लोगों के मित्रो को संख्या बहुत होती है और वे अपने मित्रों के लिए कुछ कष्ट उठाने के लिए भी प्रस्तुत बनें रहते है।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली मे शुक्र तथा वृहस्पति के स्थान पुष्ट तथा उन्नत होने हैं, सूर्य-रेखा अच्छी होती है अगूठा कुछ छोटा होता है, उ गलियां वर्गाकार आकृति की होती है, हृदय-रेखा कांटेदार अथवा तीर की नोक के समान आकृति वाली होती है तथा मस्तक-रेखा का ढलान चन्द्र-क्षेत्र की ओर होता है।

चित्र ३१ मे इस प्रकार के स्थान तथा हथेली वाले व्यक्ति के हाथ मे यदि सूर्य-रेखा स्पष्ट तथा अच्छे रूप मे हो तो जातक उदार, भावुक तथा कवि-वृत्ति का भी हो जाता है। ऐसे लोग मित्रो से हर समय घिरे हुए पाये जाते है।

(५) झगड़ालू प्रवृत्ति अथवा युद्ध-प्रियता

चित्र ३२ मे प्रदर्शित सख्या ५ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति कभी दवकर नही रहते। वे किसी से झगडा हो जाने
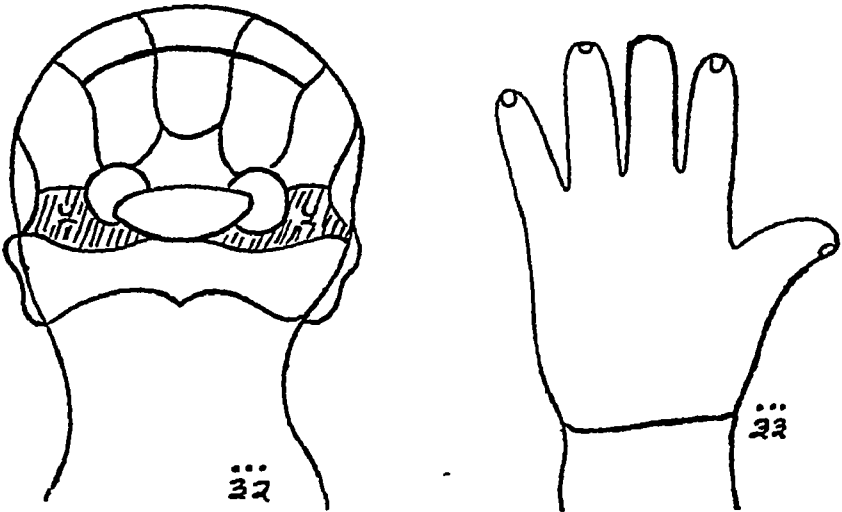
पर शान्त नही होते। उन्हे जितना अधिक दवाने का प्रयत्न किया

जाता है, उनके मन पर उसकी उतनी ही अधिक तीव्र प्रतिक्रियां होती है। कठिनाइयों के कारण ये लोग घबराते नही हैं, बल्कि और भी उग्र-से-उग्रतर होते चले जाते है। ऐसे लोग यदि किसी से मुकद्दमे-बाजी मे फस जाते हैं तो फिर सर्वोच्च न्यायालय तक उसका पीछा नही छोडते।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेलो मे मगल के दोनो क्षेत्र अत्यधिक उभरे हुए तथा रेखा-विहीन होते हैं। चन्द्र-क्षेत्र चमकीला और चिकना होता है तथा नाखून सामान्यत छोटे आकार के पाये जाते है (चित्र सख्या ३३)।

ऐसे लोग जिद्दी स्वभाव के भी होते हैं और जब अपनी हठ पर अड जाते है, तब किसी के समझाने से भी नही समझ पाते।

(६) विध्वंसक-वृत्ति

चित्र ३४ मे प्रदर्शित सख्या ६ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति दूसरो को नुकसान पहुचाने तथा वस्तुओ को नष्ट-भ्रष्ट करने मे विशेष रुचि लेने वाले होते है। ऐसे व्यक्ति पुराने मकानों को तुडवाकर नया बनवाने, पेड़-पौधो को कटवाने, मैदानो को साफ कराने तथा बिखरे हुए कागजो को फाडने अथवा जला देने मे आनन्द का अनुभव करते है।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली मे मगल तथा चन्द्रमा के स्थान अधिक उन्नत होते है, हाथ मे रेखाएं कम होती हैं, हृदय-रेखा अधिक गहरी तथा लाल रंग की होती है और वह हथेली के एक सिरे से दूसरे सिरे तक सीधी चली जाती है तथा अगूठे का पहला पर्व अधिक मांसल होता है (चित्र सख्या ३५)।

ऐसे लोग निर्माण की अपेक्षा विध्वस के कार्यों में अपनी शक्ति
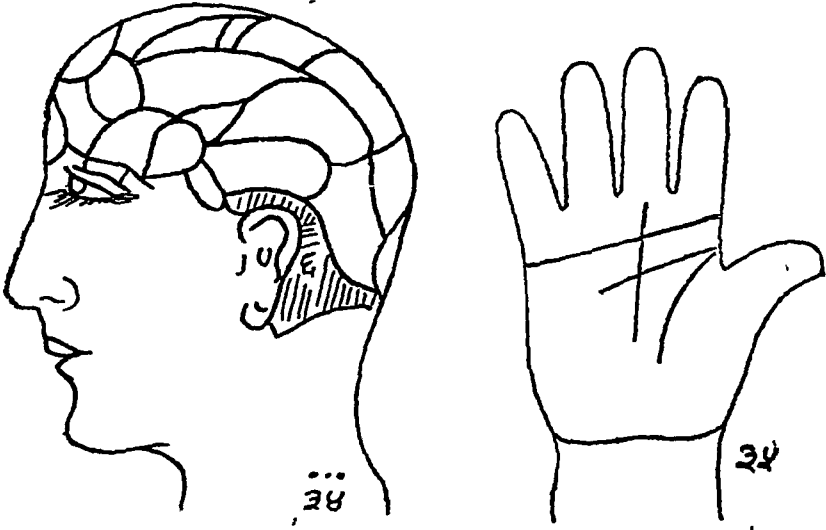
और सामर्थ्य को अधिक व्यय करते हैं। पुरानी कोई वस्तु उन्हे अच्छी नही लगती। वे हर जगह और हर क्षेत्र मे नवीनता लाने के इच्छुक बने रहते है।

(७) गोपनीयता की वृत्ति

चित्र ३६ मे प्रदर्शित सख्या ७ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो तो ऐसा व्यक्ति अपने विचारो को किसी दूसरे के समक्ष बिना किसी विशेष कारण के व्यक्त नही करता। ऐसे व्यक्ति चाहे कितने ही मिलनसार अथवा हसमुख प्रतीत क्यो न होते हो, उनके मन के भेद को कोई नही पा सकता।

ऐसे व्यक्ति यदि कोई मकान बनवाते हैं तो उसमे गुप्त तहखाना अथवा अलमारी आदि अवश्य बनवायेगे। छोटी-से-छोटी वस्तु को भी ताले मे बन्द करके रखना उनका स्वभाव होता है। उनके पास कितनी

धन-सम्पत्ति आदि है—इस सम्बन्ध मे उनकी पत्नी तथा पुत्रादि को भी यथार्थ जानकारी प्राप्त नही हो पाती ।
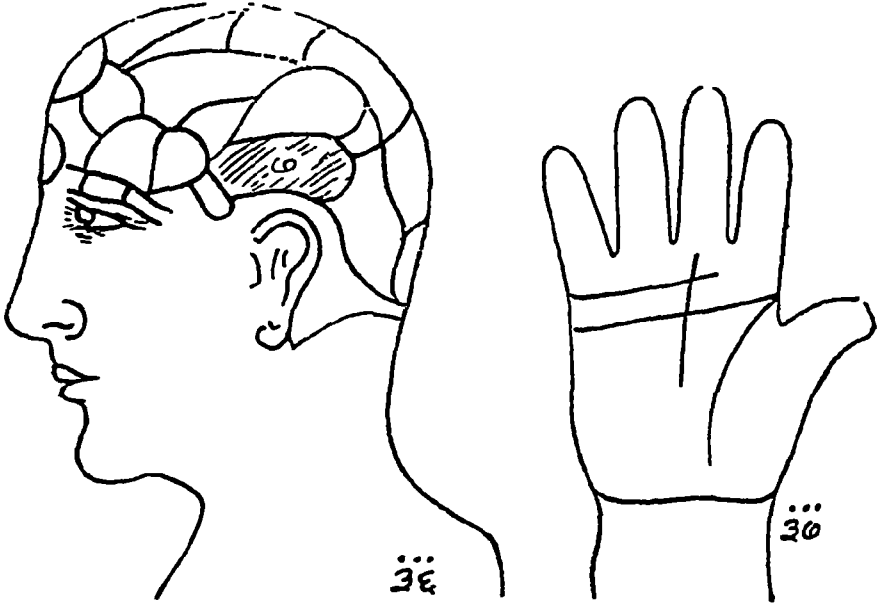
ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली मे मस्तिष्क-रेखा बहुत संकरी (पतली) तथा सीधी पाई जाती है और वह सम्पूर्ण हथेली को काटती हुई एक सिरे से दूसरे सिरे तक चली जाती है । हाथ की सभी उंगलियो की दूसरी गाठे उभरी हुई होती है, सभी उगलिया लम्बी होती हैं तथा हृदय-रेखा पतली और छोटी होतो है । ऐसे व्यक्ति किसी भी गुप्त भेद को छिपाये रखने मे अत्यन्त कुशल होते है (चित्र संख्या ३७) ।

(८) स्वार्थ एवं अधिकार वृत्ति

चित्र ३८ मे प्रदर्शित संख्या ८ का स्थान यदि उन्नत और विशेप रूप से पुष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति मे स्वार्थ तथा लोभ की भावना अत्यधिक

पाई जाती है। ऐसे व्यक्ति धन प्राप्ति के लिए निरन्तर प्रयत्नशील बने रहते हैं तथा किसी भी प्रकार के कष्ट को कष्ट अनुभव नही करते।

वे प्रत्येक वस्तु पर अपना अधिकार जमाना चाहते है तथा अपनी मृत्यु के दिन तक भी अपने पुत्र एवं स्त्री आदि को भी स्व-उपार्जित सम्पत्ति पर किसी प्रकार का अधिकार नही करने देते। वे अपनी सम्पत्ति, जमीन, जायदाद, रुपया आदि को निरन्तर बढाते रहते हैं और अपने स्वार्थ को पूरा करने के लिए किसी भी काम को करने में नही हिचकते।
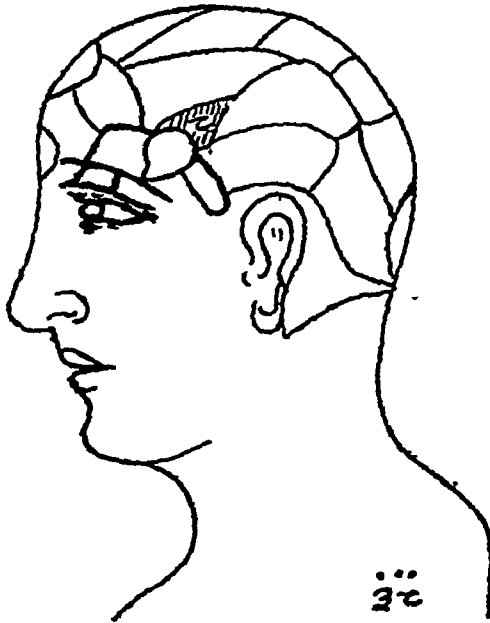
ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली मे बुध-क्षेत्र अधिक उभरा हुआ होता है, मस्तक-रेखा अपने मोड़ वाले स्थान पर द्विजिह्वकार होती

है और उसका एक सिरा बुध-क्षेत्र को छूता हुआ निकल जाता है। उगलियां गठोली, चमचाकार तथा सामान्य रूप से मुडी हुई होती है।
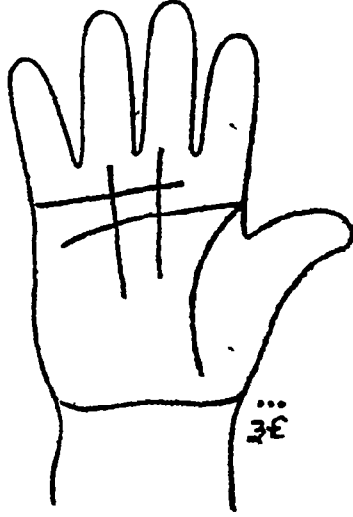
अंगूठा लम्बा होता है। हृदय-रेखा गुलाबी रग की होती है तथा सूर्य-रेखा सुस्पष्ट दिखाई देती है। ऐसे जातक विलक्षण शक्तियो से सम्पन्न होते हैं (चित्र सख्या ३९)।

(९) सृजनात्मक तथा अन्वेषक प्रवृत्ति

चित्र ४० मे प्रदर्शित संख्या ९ का स्थान यदि उन्नत और विशेष रूप से पुष्ट हो, तो ऐसे व्यक्ति नई वस्तुओं के सृजन तथा अन्वेषण मे अभिरुचि रखने वाले होते है।

अन्य लक्षणों द्वारा यदि ऐसे व्यक्ति का विद्वान होना सिद्ध होता हो, तो उसकी सृजनात्मक प्रवृत्ति साहित्य-निर्माण (ग्रंथ-लेखन) के काम में लगेगी और यदि उसमें लोभ एवं सग्रह-शीलता के लक्षण हों तो वह नये भवनों का निर्माण-कार्य करेगा। इसी प्रकार यदि व्यावसायिक

बुद्धि का विशेष लक्षण प्रतीत हों तो वह नये कल-कारखाने खड़े करेगा और यदि विज्ञान की ओर झुकाव के लक्षण हो तो वह नवीन आविष्कारो के लिए प्रसिद्धि प्राप्त करेगा ।
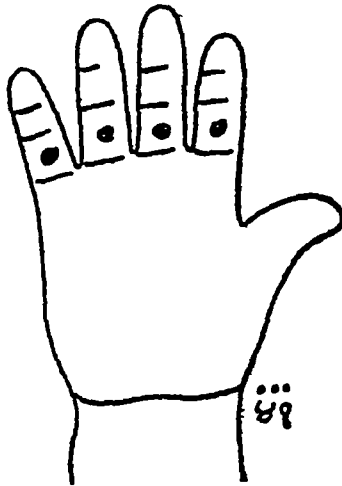
ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की उगलिया चमचाकार होती हैं तथा उनके प्रथम पर्वों मे छोटे-छोटे उभार होते है । अन्य रेखाए विविध प्रभाव वाली हुआ करती है (चित्र सख्या ४१) ।

(१०) आत्म-सम्मान की भावना

चित्र ४२ मे प्रदर्शित सख्या १० का स्थान यदि उन्नत और विशेष रूप से पुष्ट हो, तो ऐसे व्यक्ति आत्म-सम्मानी होते है । यदि यह भाग अत्यधिक उन्नत हो तो उनमे अहकार की मात्रा भी विशेष रूप से पाई जाती है ।
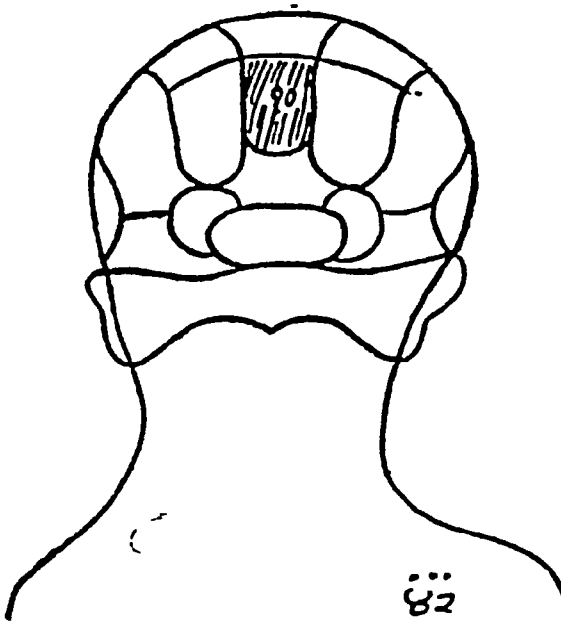
ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली मे यदि बृहस्पति-क्षेत्र अधिक उन्नत हो, शनि का क्षेत्र उन्नत अथवा रेखांकित हो, मस्तक-रेखा एवं जीवन-रेखा अपने उद्गम स्थान पर एक दूसरे से पूर्णतः

अलग तथा लम्बी हो, उंगलियां बडी, चमचाकार एवं गांठदार हों, अंगूठा वड़ा तथा कड़ा हो, मगल का क्षेत्र सामान्य रूप से उठा हुआ हो तथा शनि का क्षेत्र भी समान स्थिति मे हो तो (चित्र संख्या ४३)
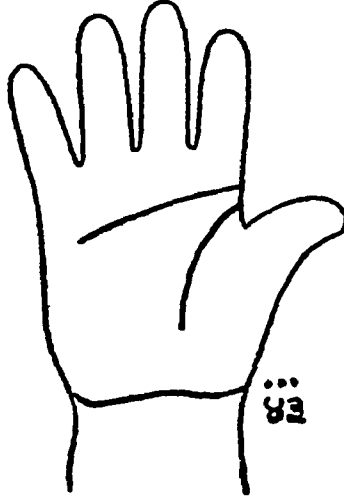
जातक में धृष्टता के लक्षण भी पाये जाते है। ऐसे व्यक्ति स्वतन्त्रता-प्रिय, स्वाभिमानी, अहंकारी तथा विद्रोही-भावना से सम्पन्न होते है।

(११) आत्म-प्रशंसा की प्रवृत्ति

चित्र ४४ में प्रदर्शित संख्या '११' का स्थान यदि उन्नत और विशेष रूप से पुष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति आत्म-प्रशंसक होते हैं, साथ ही यह भी चाहते हैं कि वह व्यक्ति (जातक) जो भी छोटा या वड़ा काम करता है, अन्य सव लोग भी उसकी प्रशंसा किया करें। ऐसे व्यक्ति चापलूसी पसन्द होते हैं तथा खुशामद, प्रशसा एवं चापलूसी द्वारा इनसे अपना स्वार्थ सिद्ध किया जा सकता है। धनिक वर्ग तथा अधि-कारी वर्ग के लोगों का यह स्थान प्राय. उन्नत पाया जाता है।
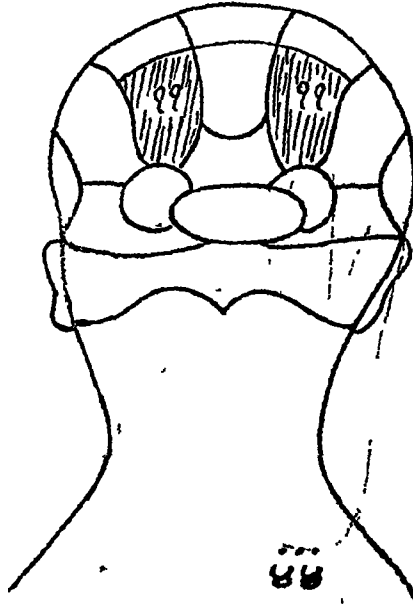
ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति के हाथ की पहली उंगली प्राय: अधिक लम्बी (लगभग दूसरी उंगली के बराबर) होती है। सभी उंगलियां
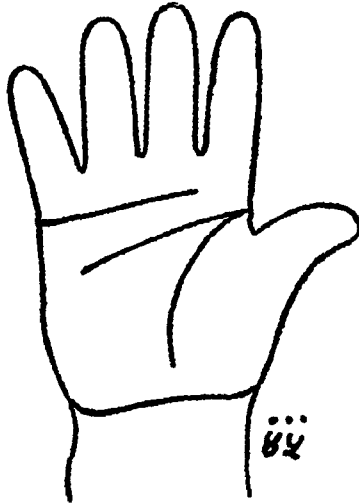
चिकनी तथा नुकीली होती है। शुक्र-क्षेत्र उन्नत हो तथा सूर्य और बुध-क्षेत्र भी उन्नत हो तो जातक मे भावुकता के साथ ही आत्म-प्रशंसा करने एव दूसरो के मुह से अपनी प्रशंसा सुनने की रुचि विशेप रूप से पाई जाती है (चित्र सख्या ४५)।

(१२) सतर्कता एव सन्देहशीलता की प्रवृत्ति

चित्र ४६ मे प्रदर्शित सख्या १२ का स्थान यदि उन्नत और विशेप रूप से पुष्ट हो, तो ऐसे व्यक्ति अत्यधिक सतर्क एव सन्देहशील स्वभाव के होते हैं। ये लोग प्रत्येक काम का आगा-पीछा सोचते है तथा अपने सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक व्यक्ति पर सन्देह करते है और यह सोचते है कि उस व्यक्ति के कारण उन्हे किसी प्रकार का नुकसान न पहुंचे।

४६
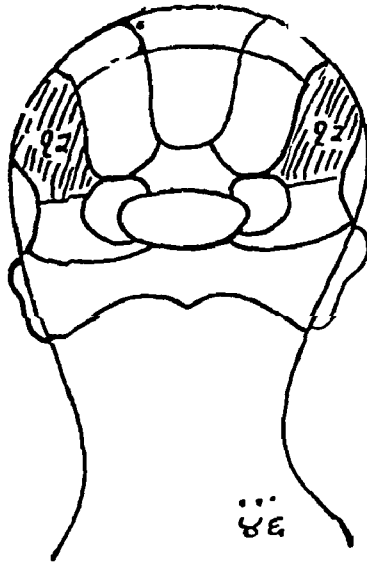
जिन लोगों का यह भाग सामान्य रूप से उन्नत होता है, उनकी शंकाशीलता दूरदर्शिता के गुण में वदल जाती है और यदि यह भाग

अत्यधिक उन्नत हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यधिक शक्की होता है और वह प्रत्येक व्यक्ति तथा कार्य के विषय में इतना अधिक सन्देह तथा
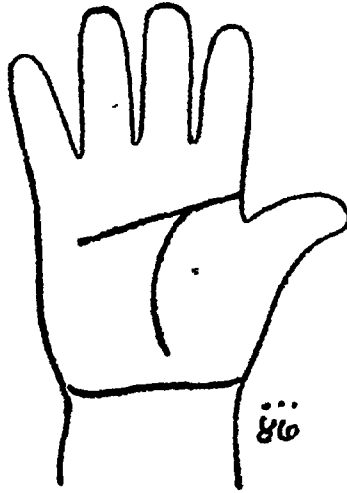
अविश्वास करता है कि इस प्रवृत्ति के कारण उसे अपने कार्यों में सफलता प्राप्त नहीं हो पाती। यदि यह स्थान अत्यधिक नीचा हो तो ऐसे व्यक्ति सभी लोगो पर सहज ही में विश्वास कर लेते हैं, जिसके कारण उन्हें धोखा खाना पड़ता है।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति को उगलियां गठीली होती है तथा अगूठा अनुपात से अधिक लम्बा होता है। इनकी हथेली में मस्तक-रेखा जीवन-रेखा से बहुत दूर तक मिली हुई चलती है और वह सीधी तथा लम्बी होती है। मगल का क्षेत्र दबा हुआ (निम्न) होता है (चित्र संख्या ४७)।

(१३) दयालुता की प्रवृत्ति

चित्र ४८ में प्रदर्शित सख्या १३ का स्थान यदि उन्नत और विशेष रूप से पुष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति सज्जन और दयालु स्वभाव के

होते हैं, वे दूसरों के प्रति उपकार करते रहते हैं और उसका कोई बदला नहीं चाहते।
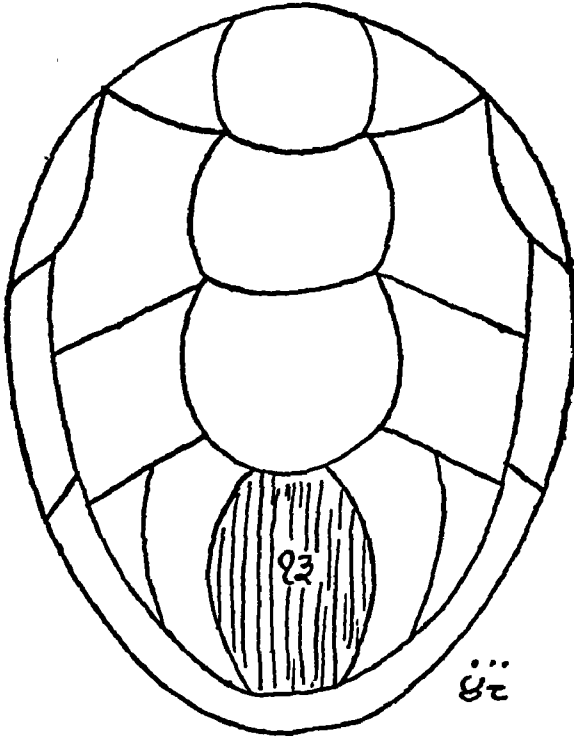
ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति का शुक्र-क्षेत्र उठा हुआ होता है तथा 'क्रास' अथवा रेखाओ के चिन्ह होते है। बृहस्पति का क्षेत्र सौम्य होता है और उस पर आई हुई हृदय-रेखा काटेदार अथवा तीर की नोक जैसी सुन्दर होती है। मस्तक-रेखा लम्बी तथा चन्द्र-क्षेत्र की ओर कुछ झुकी हुई होती है। चन्द्र तथा मगल के क्षेत्र भी उन्नत होते है, परन्तु उन पर कोई रेखा अथवा क्रास-चिन्ह नही होता। ऐसे व्यक्ति में उदारता, कृपालुता, दयालुता, सज्जनता आदि सभी सद्गुण विशेष
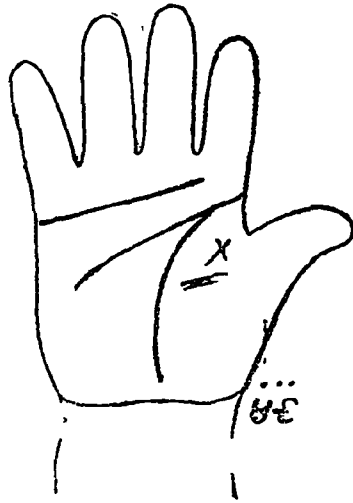
रूप से पाये जाते हैं। अन्य लोग भी ऐसे व्यक्तियों के सद्गुणों को प्रशंसा करते है (चित्र संख्या ४६)।

(१४) धार्मिक एवं श्रद्धा की भावना

चित्र ५० मे प्रदर्शित सख्या १४ का स्थान यदि उन्नत और विशेष रूप से पुष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति गुरुजन, देवता, ईश्वर, शास्त्र एवं अन्य बड़ों के प्रति सम्मान तथा श्रद्धा की भावना रखने वाले होते है।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति के हाथ की उंगलियां अधिक लम्बी तथा चिकनी होती है। नाखून बडे होते है, उगलियों के पर्व चौकोर होते है। पहलो उंगली कुछ लम्बी तथा नुकीली होती है और उसके पहले पर्व में गांठ नही होती। मगल का क्षेत्र अस्पष्ट होता है। हथेली में कई गहरे चतुष्कोण चिन्ह होते है। चन्द्र-क्षेत्र रेखा-हीन उन्नत होता है तथा शनि का क्षेत्र भी उभरा हुआ होता है, जिसके कारण जातक
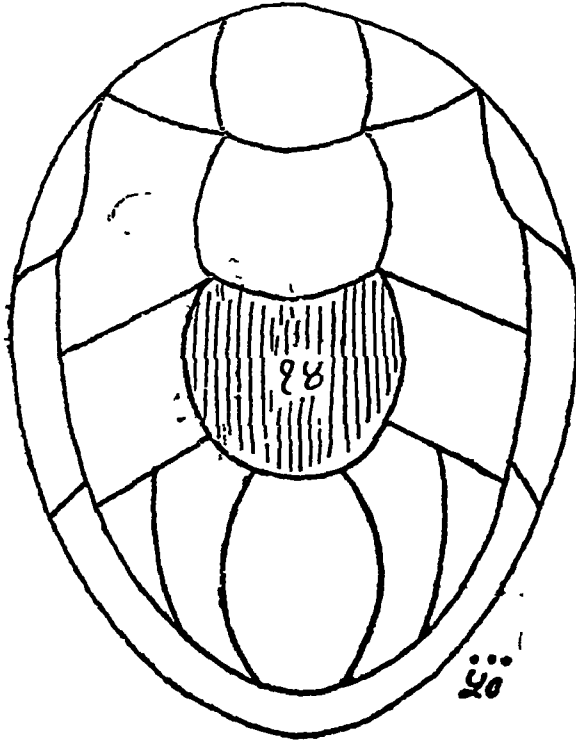
के हृदय में जीवन मे आने वाले दु:खो के प्रति भय की भावना बनी रहती है। ऐसे लक्षणों वाले व्यक्ति ईश्वर मे आस्था रखने वाले, नियम एवं कानूनों का पालन करने वाले, विनम्र, श्रद्धालु तथा धार्मिक विचारों के होते हैं (चित्र संख्या ५१)।
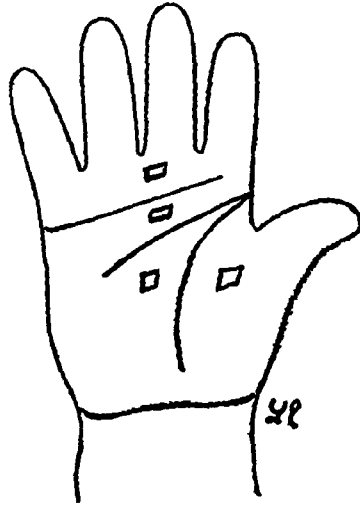
(१५) दृढ़ता की भावना

चित्र—५२ में प्रदर्शित संख्या १५ का स्थान यदि उन्नत और विशेष रूप से पुष्ट हो तो ऐसे व्यक्ति अपने विचारों में दृढ़ रहने वाले होते है। वे जो कुछ भी निश्चय एक बार कर लेते है उसका अन्त तक निर्वाह करते हैं। इन लोगों में किसी प्रकार की अस्थिरता नहीं पाई जाती।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली में मस्तक-रेखा लम्बी होती है। कभी-कभी वह सम्पूर्ण हथेली को पार करती हुई-सी भी दिखाई देती है। उंगलियां लम्बी तथा चतुष्कोण कृति की होती है। उंगलियों के भीतरी भाग में तीसरे पर्व की हड्डी प्रायः पतली होती है। अंगूठा सामान्य रूप से चौड़ा तथा लम्बा होता है। मंगल के दोनों क्षेत्र भली-भांति उभरे हुए होते हैं। सूर्य-रेखा पुष्ट तथा बलवान होती है चन्द्र-क्षेत्र क्षीणप्रायः होता है। तथा बृहस्पति-क्षेत्र रेखा-हीन होता है।

६७
९५
५२
५२
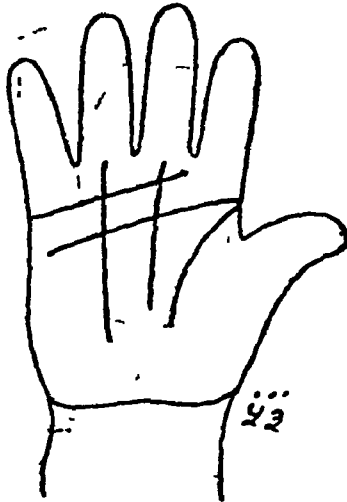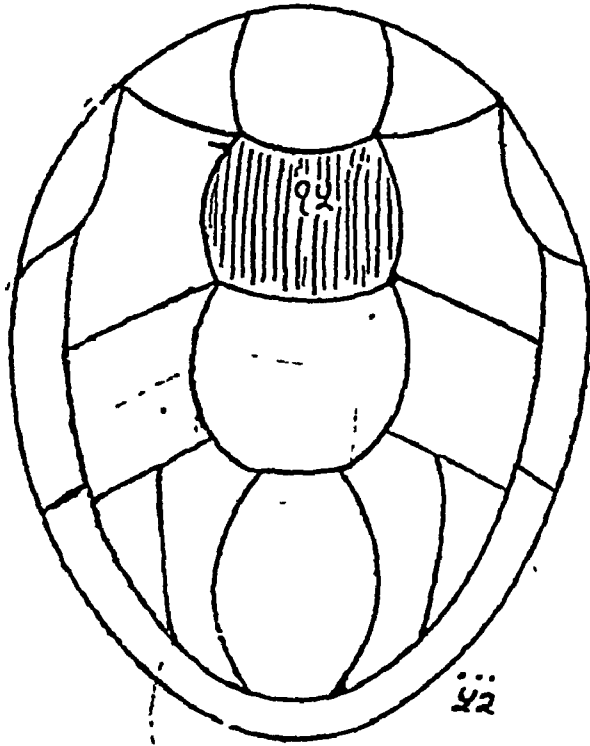
मस्तिष्क के उक्त क्षेत्र निम्न होने पर जातक के विचारों में अस्थिरता पाई जाती है और वे कभी किसी निश्चय पर दृढ़ नहीं रह पाते।

(१६) जागरूकता एवं न्याय-प्रियता

चित्र ५४ में प्रदर्शित संख्या १६ का स्थान यदि उन्नत और विशेष रूप से पुष्ट हो, तो ऐसे व्यक्ति जागरूक, कर्त्तव्य-परायण तथा
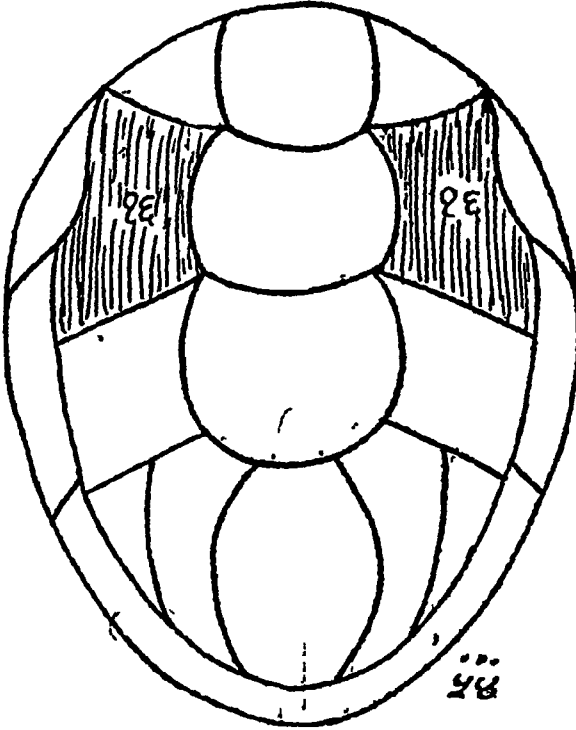
न्याय-प्रिय होते है। उनमें ईमानदारी की भावना विशेष रूप से पाई जाती है। वे बलवान आत्मा वाले तथा जागरूक प्रवृत्ति के होते हैं तथा अपने प्रत्येक कार्य का सम्पादन उचित रीति से करते हैं।

ऐसे उच्च स्थान वाले व्यक्ति के हाथ की उंगलियां पर्व-ग्रंथियों से हीन तथा चतुष्कोण कृति की होती है। उगलियो के नाखून छोटे होते है। मस्तक-रेखा सामान्य रूप से सीधी होती है। शुक्र तथा बृहस्पति के क्षेत्र पुष्ट होते हैं। मगल का क्षेत्र रेखा-हीन होता है तथा बुध का क्षेत्र दबा हुआ (नीचा और लुप्त प्राय) रहता है।

ऐसे लक्षणों वाले व्यक्ति अच्छे खेलों के प्रति रुचि रखने वाले, सच्चे, ईमानदार, प्रत्येक काम को समय पर करने वाले, न्याय का पक्ष लेने वाले तथा दूरदर्शी होते है (चित्र संख्या ५५)।

(१७) आशावादिता

चित्र ५६ में प्रदर्शित संख्या १७ का स्थान यदि उन्नत और विशेष रूप से पुष्ट हो, तो ऐसे व्यक्ति आशावादी स्वभाव के होते है। वे कठिन परिश्रम द्वारा प्रतिकूल परिस्थिति को भी अपने अनुकूल बना लिया करते हैं। ऐसे लोग किसी भी प्रकार की कठिनाई अथवा संकट

उपस्थित होने पर भी अपने धैर्य को नहीं खोते, फलतः अन्त में उन्हें सफलता प्राप्त हो जाती है।
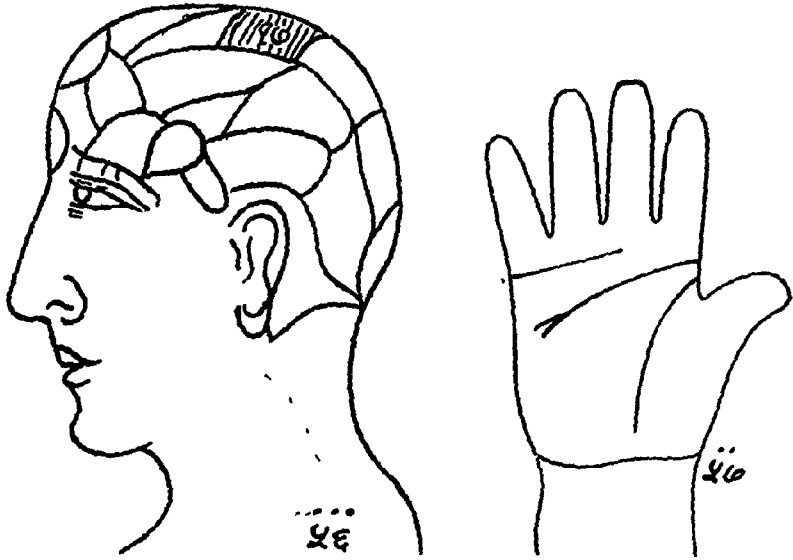
ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति के हाथ में बृहस्पति का क्षेत्र उभरा हुआ होता है, उगलिया चिकनी तथा नुकीली होती है, मस्तक-रेखा पतली तथा चन्द्र-स्थान की ओर मुड़ी हुई रहती है, जा अन्त में कांटे-दार अथवा तीर के चिन्ह से युक्त (द्विजिव्ह) हो जाती है। हृदय-रेखा अधिक लम्बी होती है। मस्तक-रेखा तथा जोवन-रेखा एक-दूसरी से प्रायः अलग होती है। चन्द्र एवं शुक्र-क्षेत्र पूर्ण रूप से उन्नत होते है तथा शनि और बुध के क्षेत्र अवनत (अपुष्ट) होते है। अंगूठा छोटा तथा नुकीला होता है तथा अनामिका उंगली मध्यमा उंगली के बराबर लम्बी होती है (चित्र संख्या ५७)।

(१८) धार्मिक भावना

चित्र ५८ मे प्रदर्शित संख्या १८ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो तो जातक मे धार्मिक-भावना विशेष रूप से पाई जाती है। यदि यह क्षेत्र अत्यधिक उन्नत हो तो जातक धार्मिक दृष्टि से अन्धविश्वासी भी हो जाता है।
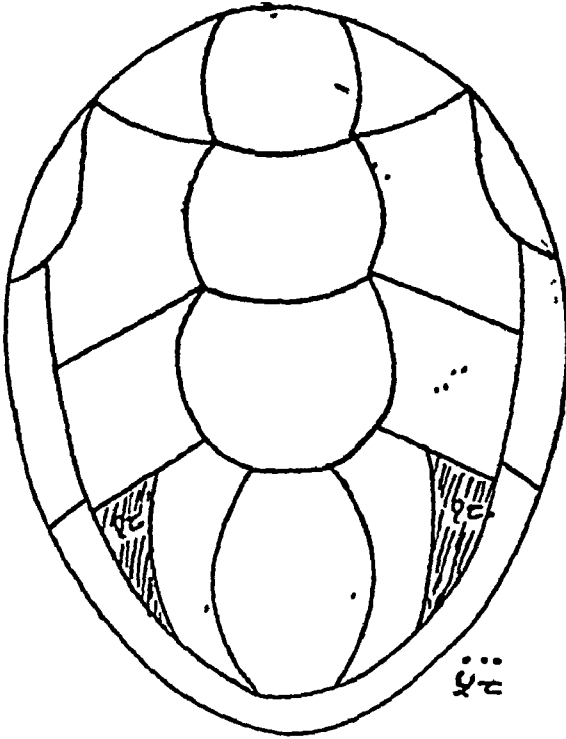
ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली अत्यधिक कोमल होती है और उस पर रेखाएं भी अधिक पाई जाती हैं। उंगलियां नुकीली और चिकनी होती हैं। अंगूठा छोटा होता है तथा अन्तर्ज्ञान रेखा बड़ी तथा स्पष्ट होती है (चित्र संख्या ५९)।

योद्धा अथवा व्यवसाय वृत्ति वाले लोगों के हाथों में मंगल-क्षेत्र बड़ा तथा परिपुष्ट होता है। ऐसे लोगों के हाथों में अन्तर्ज्ञान सम्बन्धी योग्यता के विषय में स्पष्ट रूप से उठी हुई सूर्य-रेखा द्वारा जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

५६

६०
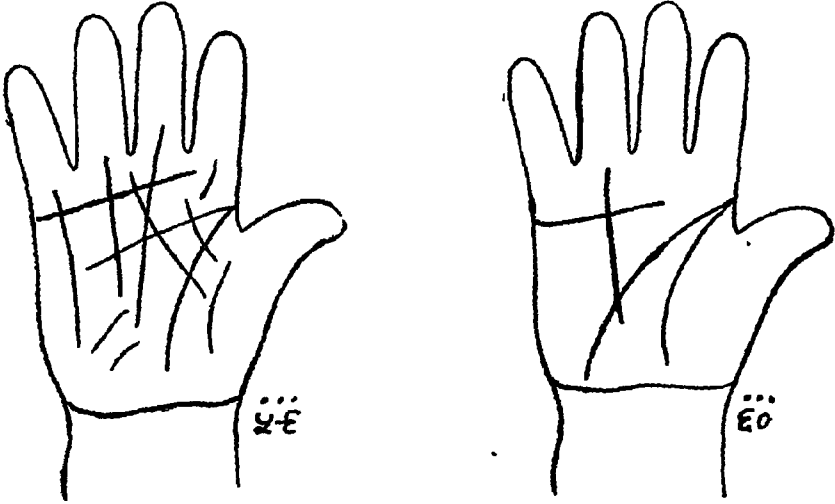
ऐसे व्यक्तियों का चन्द्र-क्षेत्र विशेष रूप से उठा हुआ होता है तथा मस्तक-रेखा झुकी हुई मणिबन्ध-रेखा के समीप तक चली जाती है और मंगल-रेखा कुछ अस्पष्ट-सी होती है। ऐसे हाथों की शिराएं प्रभावशाली नहीं होतीं (चित्र संख्या ६०)।

अन्तर्ज्ञान सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने की दूसरी विधि शुक्र-क्षेत्र पर कटे हुए रेखा-चिन्हों का निरीक्षण करना है। ऐसा चिन्ह स्त्री-जातकों की यौन-सम्बन्धी बीमारियों की ओर इंगित करता है। इस प्रकार के हाथ कोमल, चिकनी एवं छोटी उंगलियो तथा अंगूठे वाले होते हैं। ऐसे हाथों मे शनि, बुध तथा चन्द्र-क्षेत्र विशेष उन्नत अथवा रेखांकित पाये जाते हैं। हथेली में छोटी-छोटी अनेक अस्पष्ट

रेखाएं होती हैं, मस्तक-रेखा झुकी हुई तथा टूटी-फूटी होती है तथा हृदय-रेखा भी हीन होती है, फिर भी ऐसे हाथो मे अन्तर्ज्ञान रेखा बहुत स्पष्ट दिखाई देती है। हृदय-रेखा प्राय: शृंखलाकार होती है तथा मस्तक-रेखा
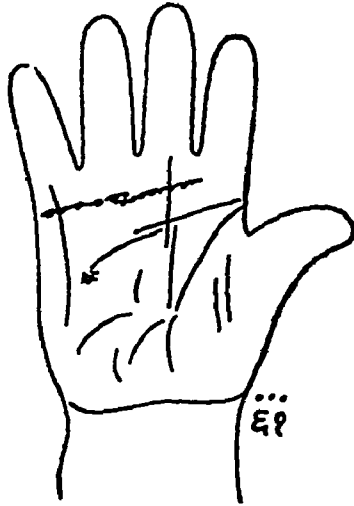
झुकी हुई और अग्रभाग पर नक्षत्र-चिन्ह युक्त होती है (चित्र संख्या ६१)। स्त्री जातको के रोग-मुक्त हो जाने पर ऐसी रेखाएं प्राय: लुप्त हो जाती है। गर्भावस्था अथवा अन्य बोमारियों के समय ऐसे लक्षण उनके हाथ मे देखे जाते है, परन्तु प्रसव के पश्चात् लुप्त होने लगते हैं।

(१६) सौन्दर्य-प्रेम एवं आदर्शवादिता

चित्र ६२ में प्रदर्शित संख्या १६ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो, तो जातक आदर्श-सौन्दर्य प्रेमी होता है। उसकी सौन्दर्य-प्रियता वासनात्मक नहीं होती। वह काव्य, कला, संगीत, चित्रकारी अथवा साहित्य—सभी में सौन्दर्य के उत्कृष्ट रूप का दर्शन करना चाहता है।
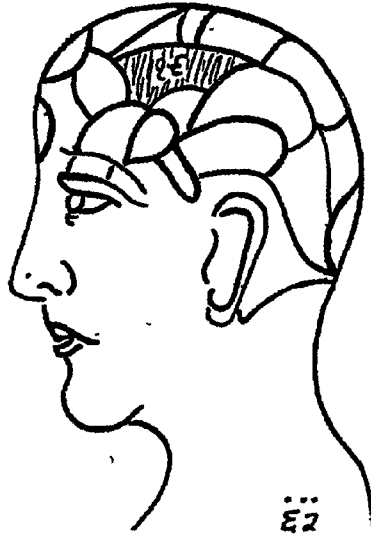
ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति को हथेली मे यदि सूर्य-क्षेत्र अधिक उन्नत हो, सूर्य-रेखा स्पष्ट हो और उसका उद्गम सूर्य-क्षेत्र से ही
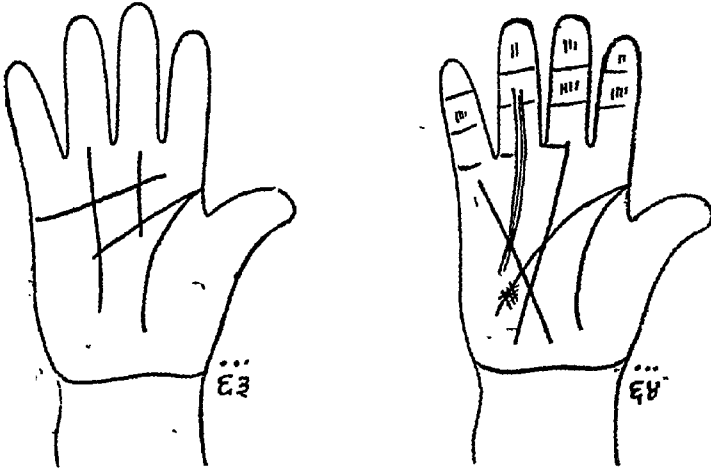
हुआ हो, उंगलियां चिकनी, आंशिक रूप से चौकोर तथा कोई-कोई सूच्याकार भी हों तो जातक क्षणिक-भावुक भी होता है (चित्र संख्या ६३)।

यदि उक्त प्रकार की उंगलियों-वाले जातक का अंगूठा मिश्रित प्रकार का हो, उंगलियो के निचले सभी पर्व उभरे हुए तथा रेखा-हीन हों, मस्तक-रेखा बड़ी हो और चन्द्र-क्षेत्र की ओर झुकी हुई हो तथा उसमें जाल की भांति अनेक सूक्ष्म शाखा-रेखाएं अधिक संख्या मे हों, एक रेखा चन्द्र-क्षेत्र के मूल से उत्पन्न होकर सीधी बुध-क्षेत्र पर पहुंचती हो और भाग्य-रेखा को स्पर्श करती हुई त्रिकोण बनाती हो, हाथ की केवल तीसरी उंगली लम्बी तथा चमचाकार हो, उसका नाखून चौड़ा हो अथवा लम्वाई के साथ समुचित प्रकार का हो, उंगलियो के दूसरे और तीसरे पर्व पर अनेक क्षीण रेखाए दिखाई देती हो तथा उनमे से कुछ रेखाएं सूर्य-रेखा की भांति चन्द्र-क्षेत्र से मिली हुई प्रतीत होती हों (चित्र संख्या ६४) तो जातक द्रवित-स्वभाव वाला, दयालु, गौरव एवं प्रतिष्ठा युक्त, सौन्दर्य प्रेमी तथा आदर्शवादी होता है।

(२०) हास्य-विनोद की प्रवृत्ति

चित्र ६५ मे प्रदर्शित सख्या २० का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो तो जातक हाजिरजवाव, हास्य-विनोद का प्रेमी तथा मजाकिया प्रवृत्ति का होता है। यदि यह भाग अनुन्नत हो तो जातक में हंसी-मजाक एव विनोद की प्रवृत्ति का अभाव रहता है।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति के हाथो की उंगलियां लम्बी तथा सुन्दर होती है। नाखून वहुत छोटे होते है तथा शुक्र एव मंगल का स्थान पूर्ण रूप से वढ़ा हुआ रहता है। ऐसे लोगो की हथेली में मस्तक-

रेखा जीवन-रेखा से बिल्कुल अलग पाई जाती है तथा प्रायः बृहस्पति का क्षेत्र भी उन्नत होता है। किन्ही-किन्ही लोगों के हाथों में बुध का क्षेत्र भी उठा रहता है (चित्र संख्या ६६)।

६६

ऐसे व्यक्ति दूसरे लोगो के साथ शीघ्र ही घुल-मिल जाते है। इनमे कुछ लोगो का तिरस्कार करने तथा कुछ की नकल उतारने की भावना भी पाई जाती है।

(२१) बनावटीपन तथा नकल करने की प्रवृत्ति

चित्र ६७ में प्रदर्शित संख्या २१ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो, तो जातक में दूसरो की नकल करने की प्रवृत्ति पाई जाती है तथा उसमे बनावटीपन की भावना अधिक होती है।

ऐसे व्यक्ति के हाथ मे यदि -विद्वता के अन्य विशिष्ट लक्षण भी हो तो जातक साहित्य-लेखन अथवा यन्त्र-निर्माण में अन्य लोगो का
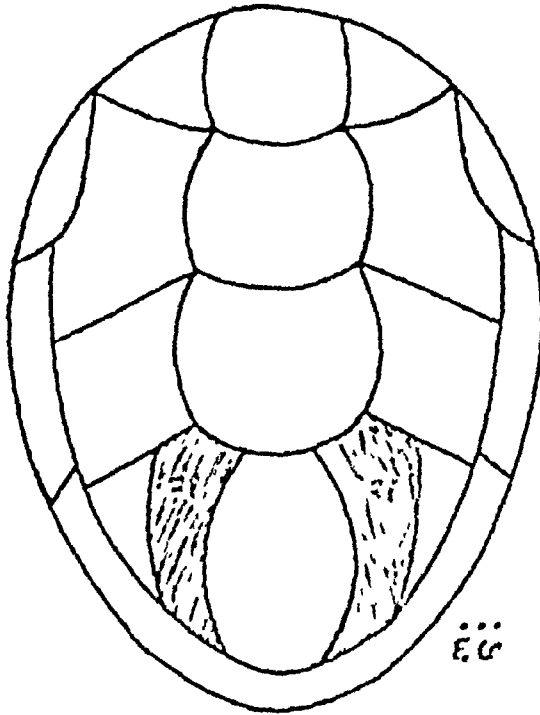
अनुकरण करता है। यदि शिक्षा के साधन न हों तो जातक दूसरों की नकल करने, लोगों का मजाक बनाने तथा चुहलबाजी करने में प्रवीण होता है।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली में बुध का क्षेत्र ऊंचा उठा हुआ रहता है, साथ ही शुक्र-क्षेत्र एवं सूर्य-क्षेत्र भी उन्नत होते हैं। हाथ की उंगलियां लचीली तथा मिश्रित प्रकार की होती हैं। सूर्य-रेखा अच्छी होती है। हृदय-रेखा गहरी होती है तथा मस्तक-रेखा के मोड़ पर एक तीर जैसा बड़ा चिह्न पाया जाता है जो शुभ होता
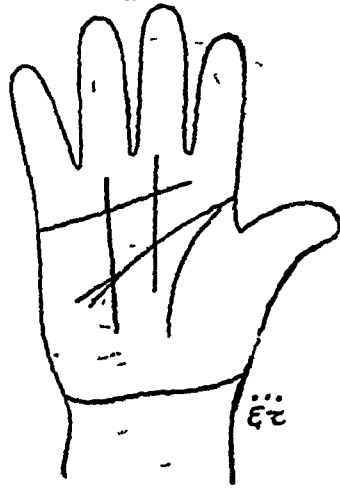
है ऐसे व्यक्ति के हाथ में यदि मंगल का क्षेत्र भी उन्नत हो तो उसे अत्यन्त शुभ फलकारक समझना चाहिए (चित्र संख्या ६८)।

(२२) वर्गीकरण तथा वस्तु-निर्देशक की प्रवृत्ति

चित्र ६६ मे प्रदर्शित संख्या २२ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो, तो जातक में विश्लेषणात्मक बुद्धि विशेष पाई जाती है। वह उलझी हुई गुत्थियों को सुलझाने तथा संयुक्त विचारो अथवा वस्तुओं को अलग-अलग करने मे निपुण होता है।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली मे बुध-क्षेत्र उन्नत होता है। उंगलियां लम्बी तथा चिकनी होती हैं। वर्गीकरण की प्रवृत्ति वाले व्यक्ति के हाथ की उंगलियां गांठदार तथा चमचाकार होती है।

अन्वेषण की वृत्ति वाले व्यक्ति की हथेली कोमल होती है तथा उंगलियो के नाखून छोटे होते है। मस्तक-रेखा लम्बी होती हुई बुध-

क्षेत्र की ओर झुकी रहती है। वृहस्पति का क्षेत्र उन्नत होता है तथा अन्तर्ज्ञान रेखा स्पष्ट दिखाई देती है। ऐसे व्यक्तियों का चन्द्र-क्षेत्र भी अच्छा होता है (चित्र सख्या ७०)।
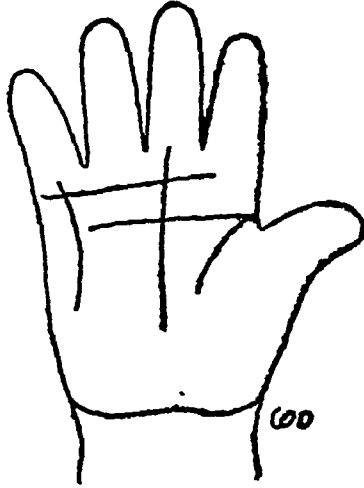
(२३) नियम-निष्ठा तथा स्मरण-शक्ति

चित्र ७१ मे प्रदर्शित सख्या २३ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो, तो जातक की स्मरण-शक्ति वहुत अच्छी होती है। वह बहुत समय पूर्व देखी गई वस्तुओ अथवा आकृतियों को भी भली-भांति स्मरण रखता है। उसे कविता, श्लोक आदि याद बने रहते है। एक वार देखे हुए मनुष्य को ऐसे जातक दूसरी वार तुरन्त पहचान लेते हैं। साथ ही वस्तुओ की आकार के दृष्टिकोण से ठीक-ठीक परख कर लेने में भी ऐसे लोग प्रवीण होते हैं।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति को हथेली में जीवन-रेखा कुछ झुक-कर हाथ के भीतर मुड़ी हुई सी शुक्र-क्षेत्र तक चली गई हो, सूर्य-रेखा

७१
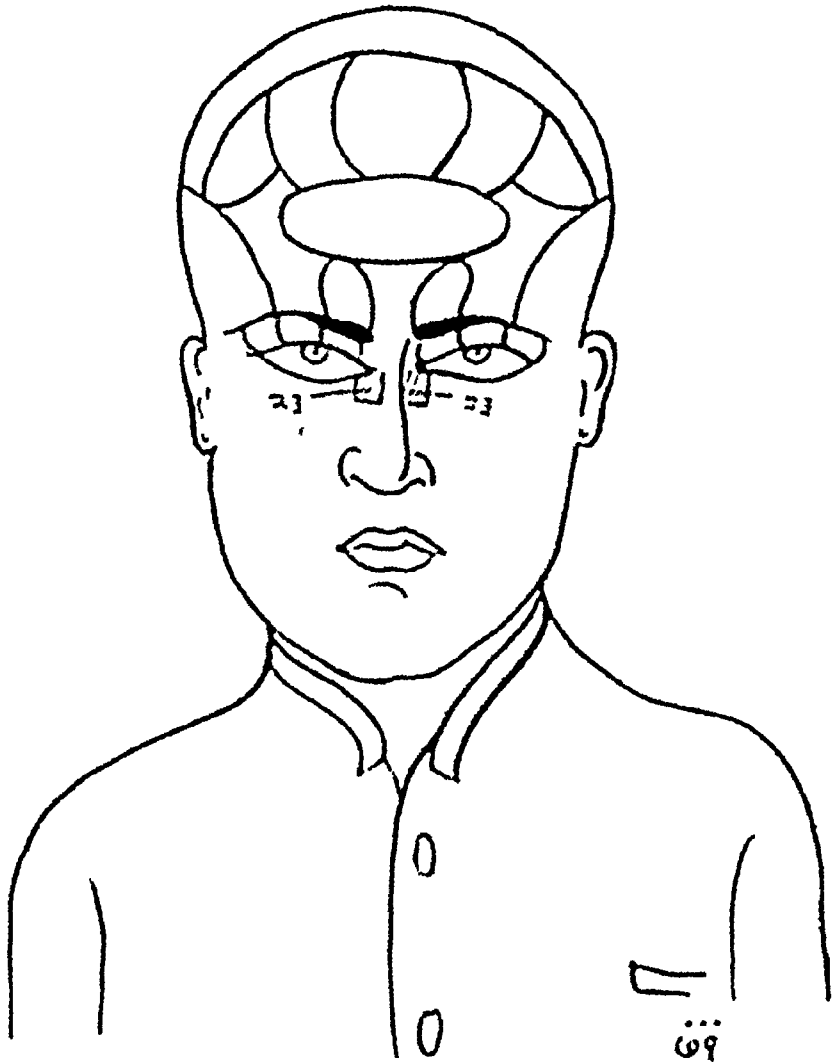
[illegible] की [illegible] उंगलियां निकली तथा माथा रूप में चौकोर हो (चित्र संख्या ७१) तो नाटक कला के प्रति सम्मान रखने वाला होता है।

ऐसे लोग प्राय: चित्रकार अथवा संगीतज्ञ होते हैं। वे आदर्शवादी, व्यावहारिक, नियमों के प्रति निष्ठा रखने वाले तथा अच्छी स्मरण शक्ति वाले होते हैं।

(२४) उचित न्याय एवं परिमाण की स्मृति

चित्र ७३ मे प्रदर्शित संख्या २४ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो, तो जातक की परखने की शक्ति उत्तम होती है। वह किसी भी विषय में उचित न्याय करने वाला तथा किसी भी वस्तु के परिमाण (लम्वाई-चौड़ाई) को भली-भांति स्मरण रखने वाला होता है अर्थात् वस्तुओं के परिमाण के सम्वन्ध मे उसकी स्मरण-शक्ति तीव्र होती है।

(२५) स्पर्श-शक्ति

चित्र ७४ में प्रदर्शित संख्या २५ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो, तो जातक की स्पर्श-शक्ति उत्तम होती है। वह किसी भी वस्तुअ

२४

२४

६३
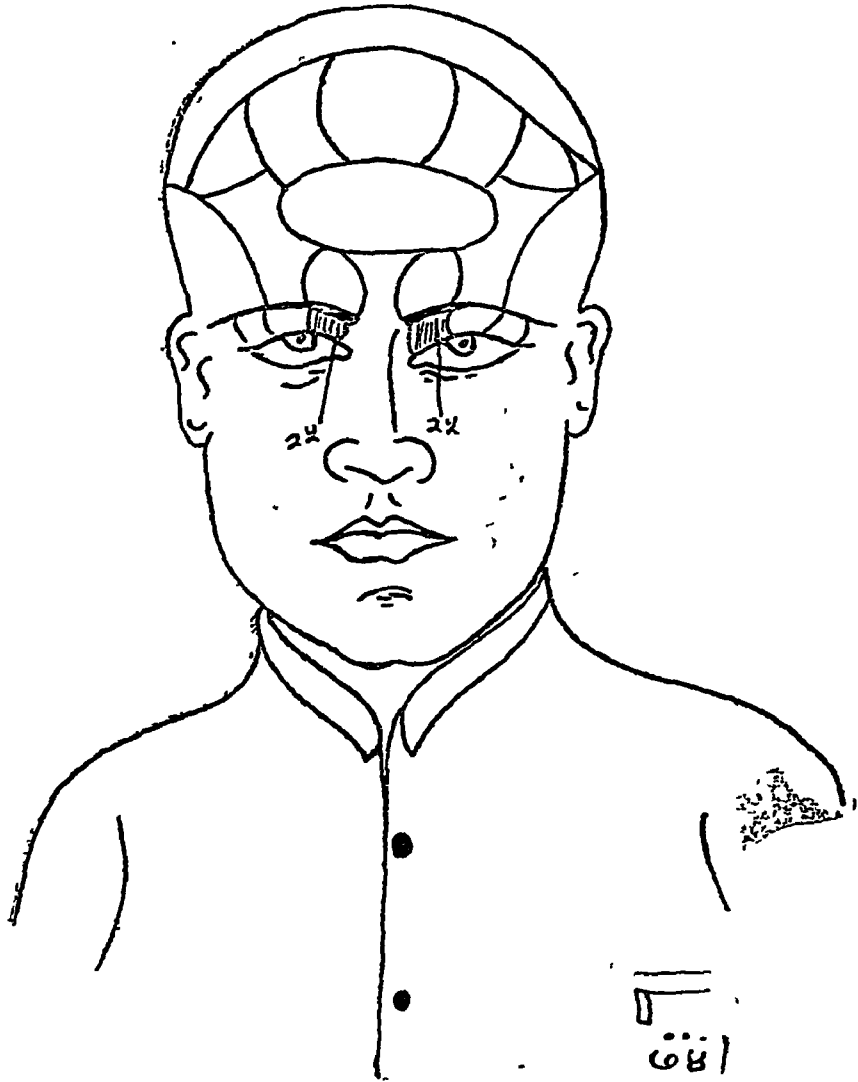
को छूकर अथवा उसे हाथ मे लेकर उसके वजन आदि का अनुमान भला-भांति लगा लेता है।

ऐसे व्यक्तियों की उंगलियां चमचाकार हों और उनके अग्रभाग गोलाई लिए हों, उंगलियां भीतर की ओर झुकी हुई हों तथा उनके पर्व गेंद की तरह उभरे हुए हों, तो जातक में श्रेष्ठ स्पर्श-शक्ति, पूर्ण सम-सीमान्तता तथा धैर्य—ये सभी गुण विशेष मात्रा में पाये जाते हैं।

(२६) रंगों का परिज्ञान

चित्र ७५ में प्रदर्शित संख्या २६ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो तो जातक रंगों का परिज्ञान भली-भांति कर सकता है। वह रंगों के सूक्ष्मतम अन्तर का बड़ा पारखी होता है। ऐसे व्यक्ति रत्नों के रंगों की परीक्षा करने में भी अत्यन्त कुशल होते है।

कौन-सा जातक किस रंग का विशेष अनुभवी होता है—इसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

यदि केवल मंगल का क्षेत्र अधिक उन्नत तथा विकसित हो तो जातक लाल रंग का विशेष पारखो होता है। यदि बृहस्पति और मगल—दोनों क्षेत्र उन्नत हों, तो जातक भड़कोले रंगों का विशेषज्ञ होता है। यदि सूर्य-क्षेत्र उन्नत हो तो पक्के रंगों का, शनि-क्षेत्र उन्नत हो तो गहरे रंगों का, बुध-क्षेत्र उन्नत हो तो हल्के रंगों का और यदि चन्द्र-क्षेत्र उन्नत हो तो चांदी जैसे भूरे अथवा हल्के नीले रंग का विशेषज्ञ होता है। ऐसे उन्नत (चन्द्र-क्षेत्र वाले) जातक कंजी आंखों वाले होते है।

यदि शुक्र-क्षेत्र उन्नत हो तो जातक हल्के गुलाबी रंग का विशेष पारखी होता है।

(२७) स्थान-रुचि एवं भ्रमणेच्छा

चित्र ७६ में प्रदर्शित संख्या २७ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट
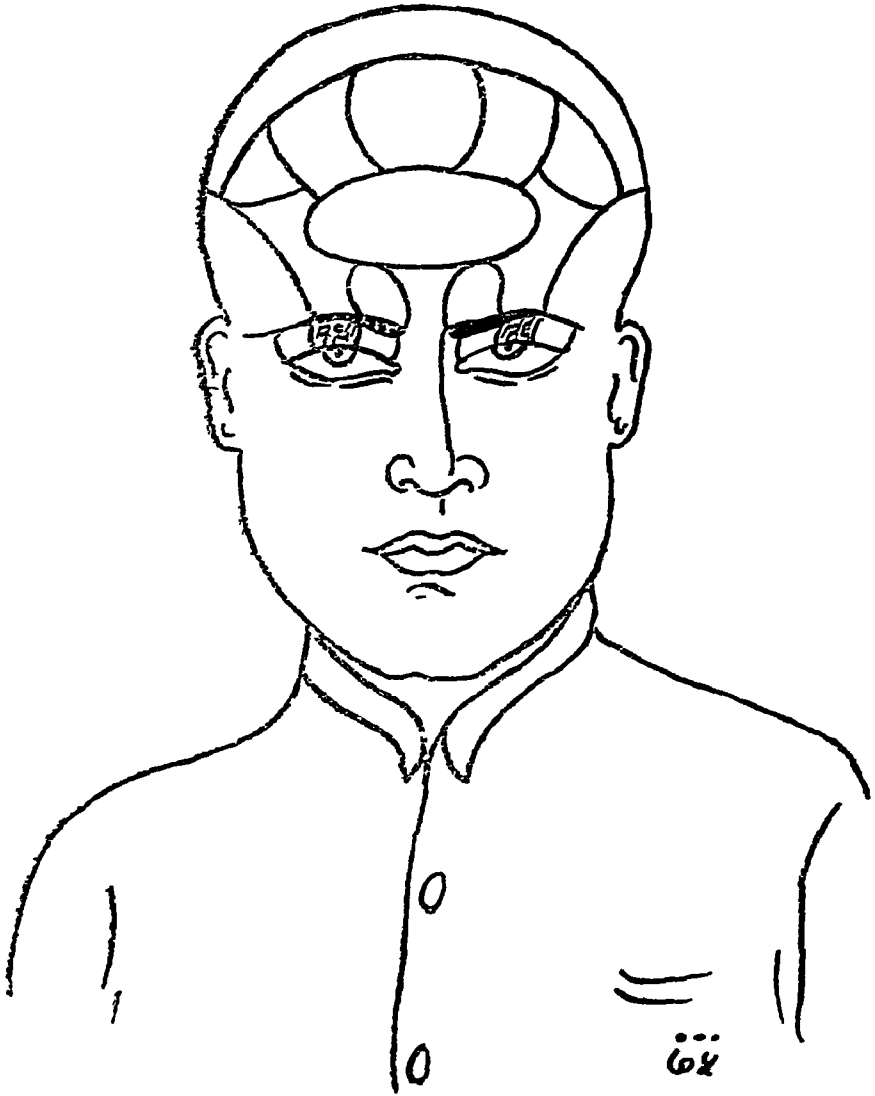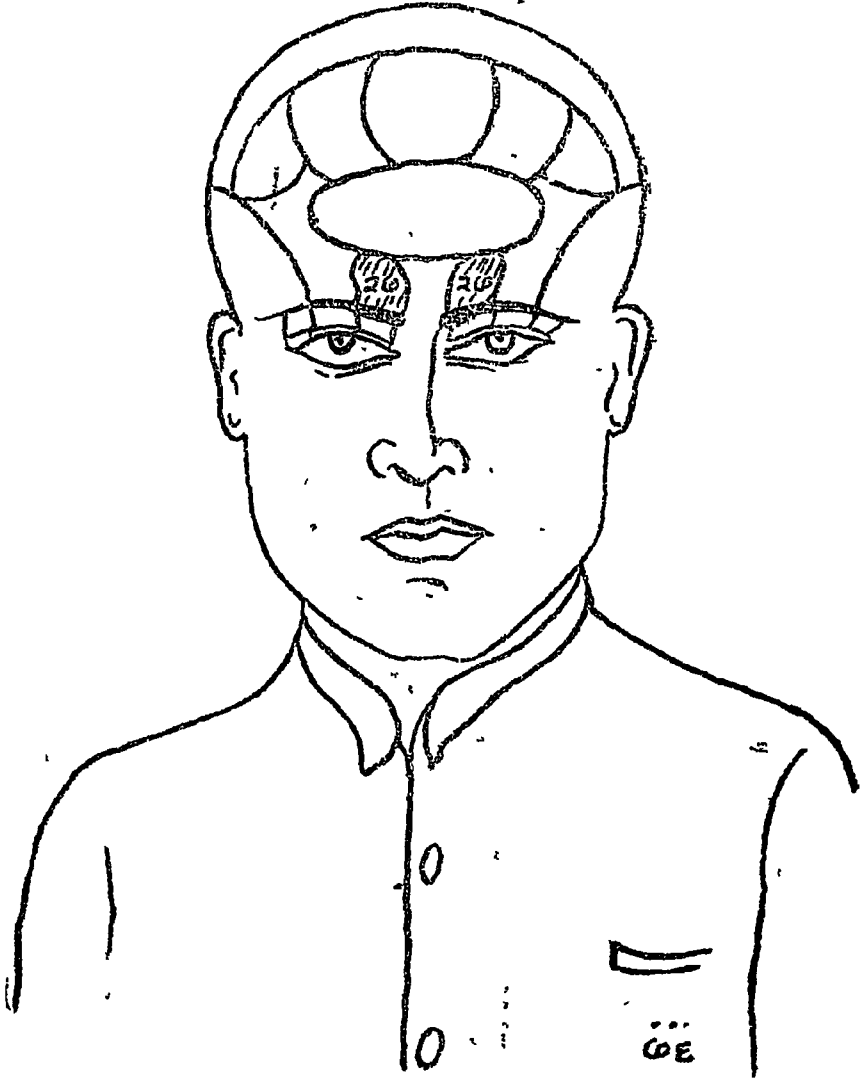
हो, तो जातक भ्रमण-शील एवं यात्रा-प्रेमी होता है। उसमें स्थान-परिवर्तन की विशेष रुचि पाई जाती है।

ऐसे जातक के हाथ मे यदि चन्द्र-क्षेत्र ऊंचा उठा हुआ हो तथा सूर्य-रेखा अच्छी हो तो उसे थल यात्रा एव जल-यात्रा करने का शौक होता है।
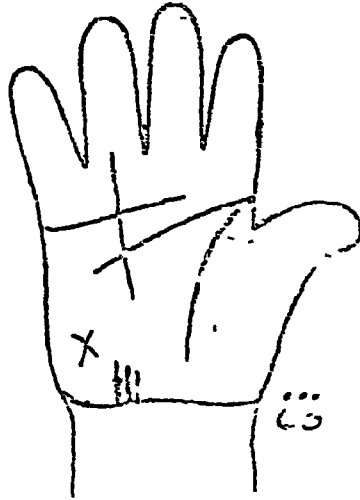
यदि चन्द्र-क्षेत्र के समीप मणिवन्ध-रेखा के ऊपर की ओर कुछ रेखाए उठी हुई हों अथवा चन्द्र-क्षेत्र पर क्रास-चिन्ह हो (चित्र संख्या ७७) तो जातक को जल-यात्रा के समय किसी दुर्घटना का सामना करना पड़ता है।

मणिवन्ध-रेखा से चन्द्र-क्षेत्र की ओर उठी हुई रेखाएं यात्रा-रेखाएं होती है। इन रेखाओं पर यदि द्वीप-चिन्ह हो अथवा चन्द्र-क्षेत्र पर क्रास-चिन्ह हो तो जातक को थल-यात्रा एव जल-यात्रा के समय आकस्मिक दुर्घटनाओं का शिकार बनना पड़ता है।

(२८) गणितज्ञता एवं मूल्यांकन वृत्ति

चित्र ७८ मे प्रदर्शित संख्या २८ का स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो, तो जातक किसी भी वस्तु का मूल्यांकन करने में निपुण होता है और उसकी तर्क-बुद्धि श्रेष्ठ होती है।

ऐसे उन्नत स्थान वाले जातक के हाथ की उंगलियां चौकोर हों, उसकी दोनों गांठें उन्नत हों, अंगूठा लम्बा हो, मस्तक-रेखा सीधी हो

तथा वृहस्पति का क्षेत्र उन्नत हो तो जातक बहुत बड़ा व्यापारी अथवा बैंकर होता है(चित्र संख्या ७६)। यदि किसी नौकरी करने वाले व्यक्ति

के हाथ में ऐसे लक्षण दिखाई दें तो उसका शनि-क्षेत्र भी अवश्य उन्नत होगा। ऐसे लोग रुपयो के लेन-देन का काम करते हैं। जैसे बैंक के खजान्ची, कलैक्टर तथा धन इकट्ठा करने का अन्य कार्य करने वाले लोग। ऐसे लोग गणित (हिसाव-किताव) के भी अच्छे जानकार होते हैं।

(२६) प्रबन्ध-पटुता

चित्र ८० में प्रदर्शित संख्या २६ का स्थान यदि अधिक उन्नत और पुष्ट हो, तो जातक प्रवन्ध-कुशल होता है। उसके विचारों, कार्यों तथा व्यवहार में सर्वत्र सुव्यवस्था दिखाई देती है। वह हर काम को तरीके से करता है तथा प्रत्येक वस्तु को ठीक ढंग से रखने का आदी होता है।

८०
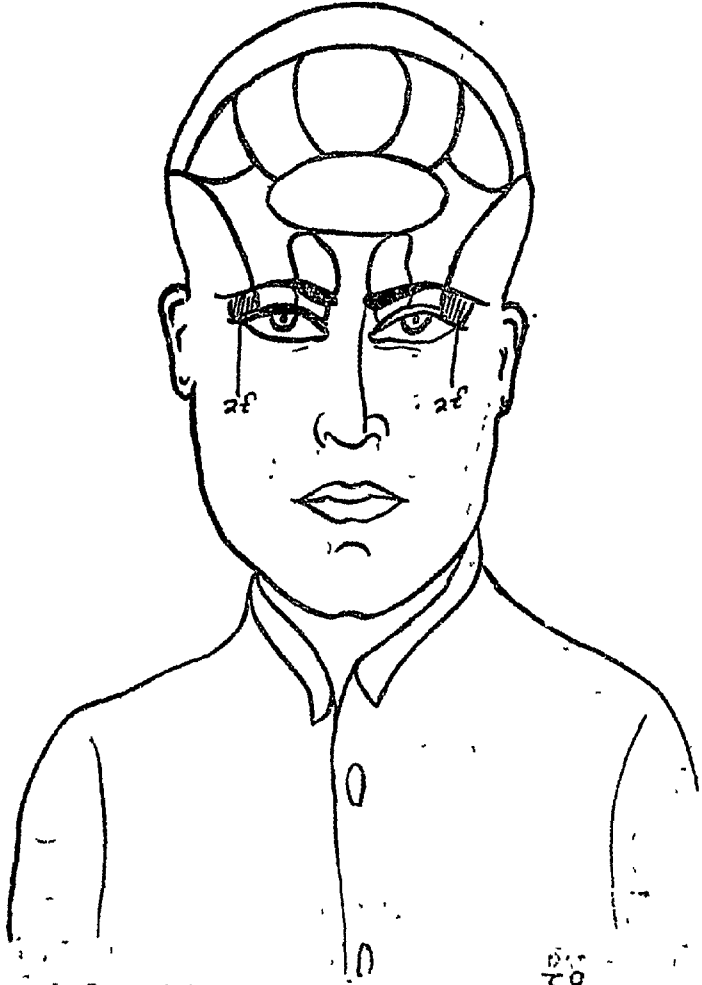
ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति के हाथों की उंगलियां लम्बी तथा गांठदार होती है। उनके पर्व चौकोर तथा नाखून छोटे होते है। सामान्यतः बृहस्पति का क्षेत्र मुख्य रूप से उभरा हुआ होता है।

(३०) घटनाओं की स्मृति

चित्र ८१ मे प्रदर्शित सख्या ३० का स्थान यदि अधिक उन्नत और पुष्ट हो, तो जातक को पुरानी घटनाओ की अच्छी स्मृति बनी रहती है। वह घटनाओ के प्रति रुचि रखने वाला होता है।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति के हाथ मे शुक्र-क्षेत्र का उभार अच्छा होता है। सामान्य रूप से चन्द्र, बृहस्पति तथा बुध के क्षेत्र भी अच्छे रहते है।

(३१) घटना-काल की स्मृति

चित्र ८२ मे प्रदर्शित सख्या ३१ का स्थान यदि अधिक उन्नत और पुष्ट हो; तो जातक को पुरानी घटनाओं के घटने का समय तथा समय-सम्बन्धी अन्य बातों की अच्छी जानकारी रहती है।

जातक के हाथ पर इस विषय से सम्बन्धित कोई अन्य विशेष चिह्न नही पाये जाते। केवल चन्द्र, बृहस्पति, शुक्र तथा बुध-क्षेत्र की स्थिति को ध्यान में रखकर ही कोई विशेष निर्णय करना चाहिए।

(३२) स्वर-ज्ञान

चित्र ८३ मे प्रदर्शित सख्या ३२ का स्थान यदि अधिक उन्नत और पुष्ट हो, तो जातक गायन-वादन मे कुशल तथा भिन्न-भिन्न रागों, रसो एव तालों का सूक्ष्म-ज्ञान रखने वाला और उनका उचित विश्लेषण करने मे कुशल होता है।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्तियों की उगलियो की लम्बाई, गाठे, उनके अग्रभाग, नाखूनो की बनावट तथा ग्रह-क्षेत्रो की उन्नत स्थिति की भिन्नता के अनुरूप उनकी स्वर सम्बन्धी योग्यता का पृष्ठ १२६-१२७ दिये गए अनुसार विश्लेषण करना चाहिए।

30
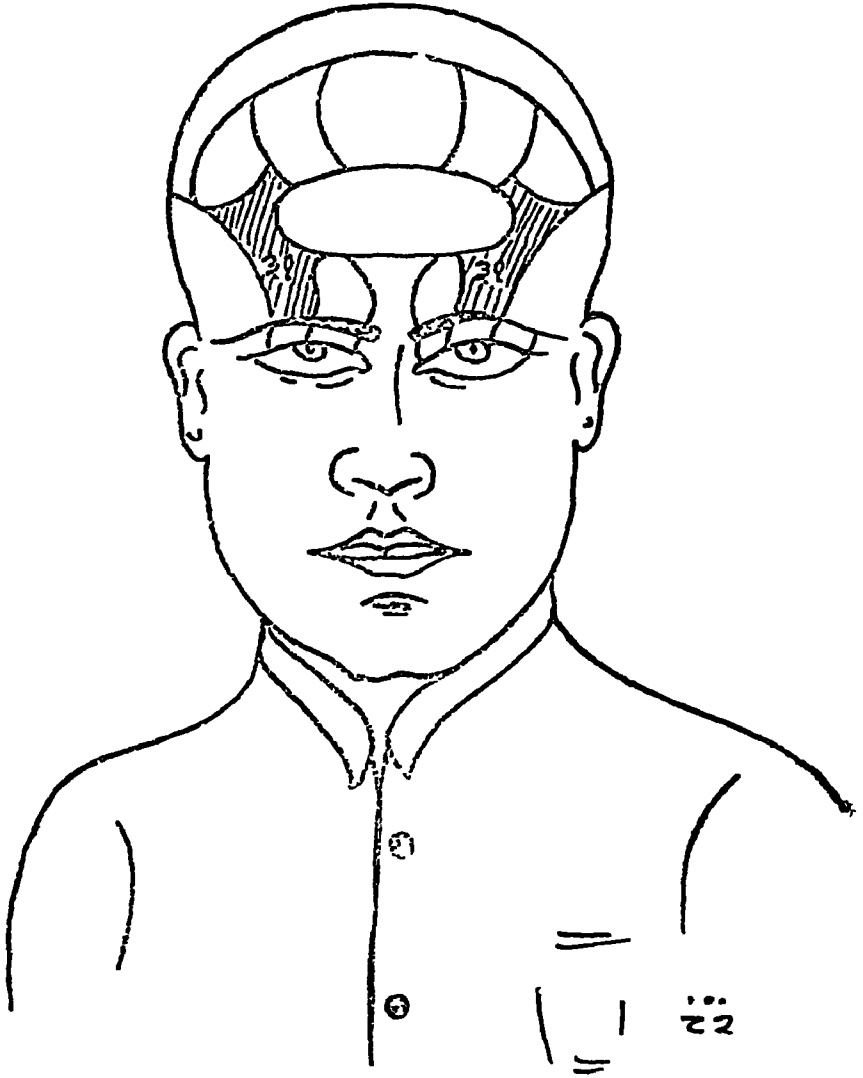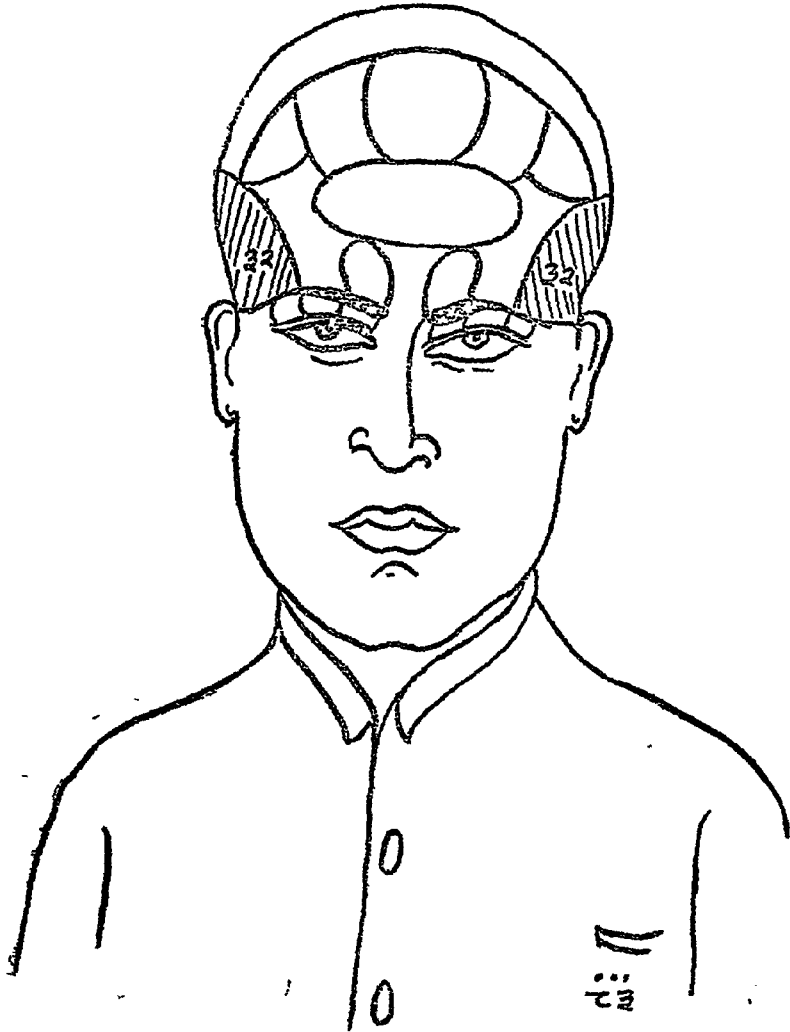
यदि चन्द्र-क्षेत्र उन्नत हो तो जातक कल्पना प्रधान संगीत का (Hramony) विशेषज्ञ होता है। इसके लिए उंगलियों का गांठदार, चिकना, उन्नत पर्व वाली तथा पीछे की ओर झुका होना आवश्यक है।

यदि शुक्र-क्षेत्र अधिक उन्नत हो, तो जातक भाव-प्रधान संगीत (Melody) का विशेषज्ञ होता है।

यदि वृहस्पति का क्षेत्र पुष्ट हो, तो जातक तीखे-स्वर वाले पीतल के बाजे, यान्त्रिक-संगीत; धार्मिक संगोत, (भजन आदि) तथा शान्ति पूर्ण ध्वनियो का श्रेष्ठ ज्ञाता होता है।

यदि शनि-क्षेत्र उन्नत हो तो जातक मृत्यु-गीत (मर्सिया) का, सूर्य-क्षेत्र उन्नत हो तो विशुद्ध, साधारण एव भावात्मक सगीत का, बुध-क्षेत्र उन्नत हो तो यान्त्रिक सगीत एवं नृत्य-संगीत (Orchestral) का तथा मगल-क्षेत्र अधिक उन्नत हो, तो युद्ध के प्रयाण गीतों का विशेषज्ञ होता है।

उंगलियां यदि लम्बी हों तो जातक शीघ्रता से बोलने वाला, मिश्रित प्रकार की हो तो रुचि में परिवर्तन रखने वाला तथा छोटी उंगलियो के साथ सूर्य-रेखा सूर्य की उंगली (अनामिका) के मूल तक पहुंच रही हो तो सभी प्रकार के सौन्दर्य का रागात्मक वर्णन करने में कुशल होता है।

(३३) भापा-ज्ञान

चित्र ८४ मे प्रदर्शित सख्या ३३ का स्थान यदि अधिक उन्नत और पुष्ट हो तो जातक का भाषा-ज्ञान अच्छा होता है। अर्थात् ऐसे जातक भापा सीखने मे पटु होते हैं और वे कई भाषाओं के जानकार भी होते हैं।

ऐसे उन्नत क्षेत्र वाले जातक के हाथ मे यदि चन्द्र-क्षेत्र पूर्ण रूप से विकसित हो तथा मस्तक-रेखा खूब लम्बी हो (चित्र संख्या ८५) तो जातक को स्मरण-शक्ति अत्यन्त तीव्र होती है।
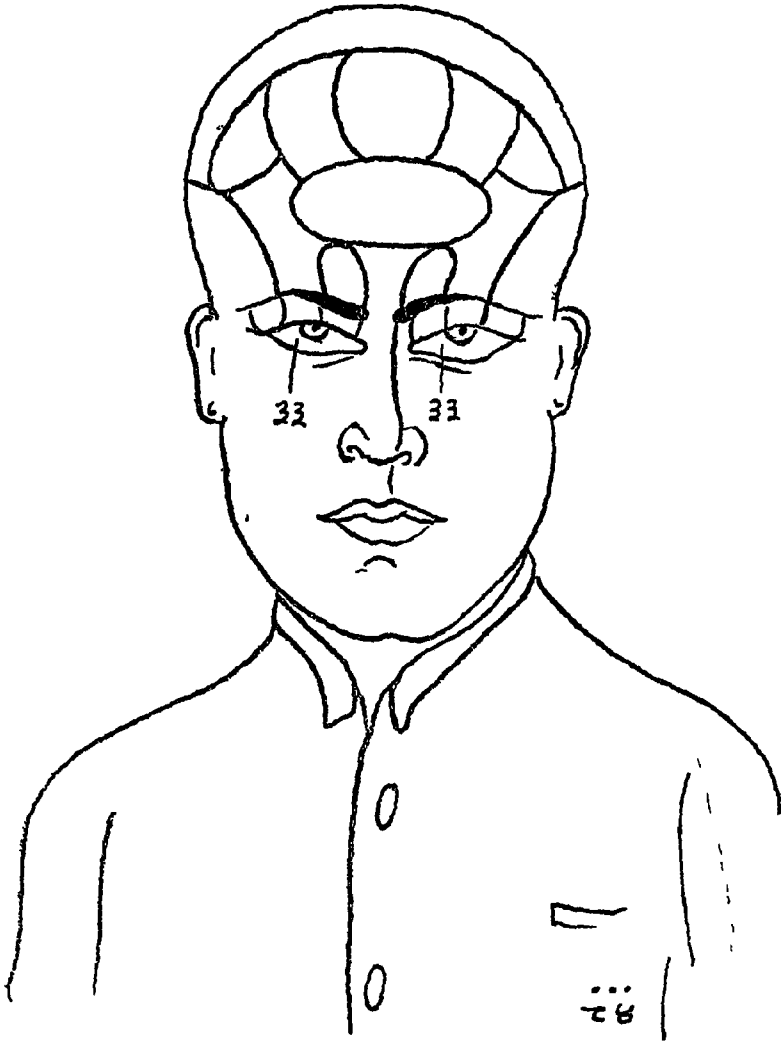
इसी के साथ यदि मंगल-क्षेत्र भी पुष्ट हो तो उसे जातक की कार्य-क्षमता का प्रतीक समझना चाहिए।

यदि शुक्र-क्षेत्र उन्नत हो तो जातक सब लोगों के हृदय को जीत लेने की शक्ति रखता है। यदि मंगल, बृहस्पति तथा शुक्र के क्षेत्र उन्नत हों तो जातक की वक्तृत्व शक्ति स्पष्ट तथा श्रेष्ठ होती है।
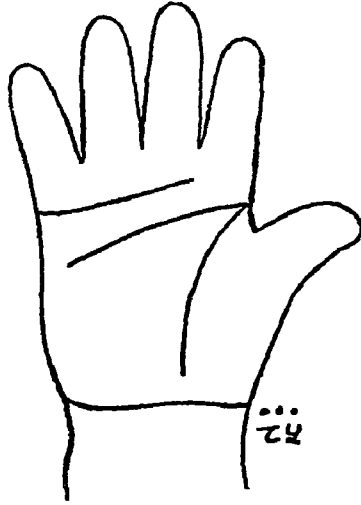
यदि चन्द्र-क्षेत्र उन्नत हो तो जातक धारा प्रवाह वार्तालाप तो कर सकता है, परन्तु अच्छा व्याख्याता अथवा भाषणकर्ता नहीं बन पाता। इसी प्रकार यदि सूर्य-क्षेत्र उन्नत हो तो जातक प्रतापी तो बनता है, परन्तु अपने स्वभाव को स्थिर रखने वाला नहीं बन पाता।

(३४) विश्लेषण एवं वर्गीकरण की प्रवृत्ति

चित्र ८६ में प्रदर्शित संख्या ३४ का स्थान यदि अधिक उन्नत और पुष्ट हो तो जातक विभिन्न विषयो का विश्लेषण, तुलनात्मक विवेचन एवं आलोचना करने मे विशेष सक्षम होता है।

ऐसे उन्नत स्थान वाले जातक की हथेली में सूर्य-क्षेत्र उन्नत हो, सूर्य-रेखा स्पष्ट हो तथा बुध-क्षेत्र का झुकाव सूर्य-क्षेत्र की ओर हो तो
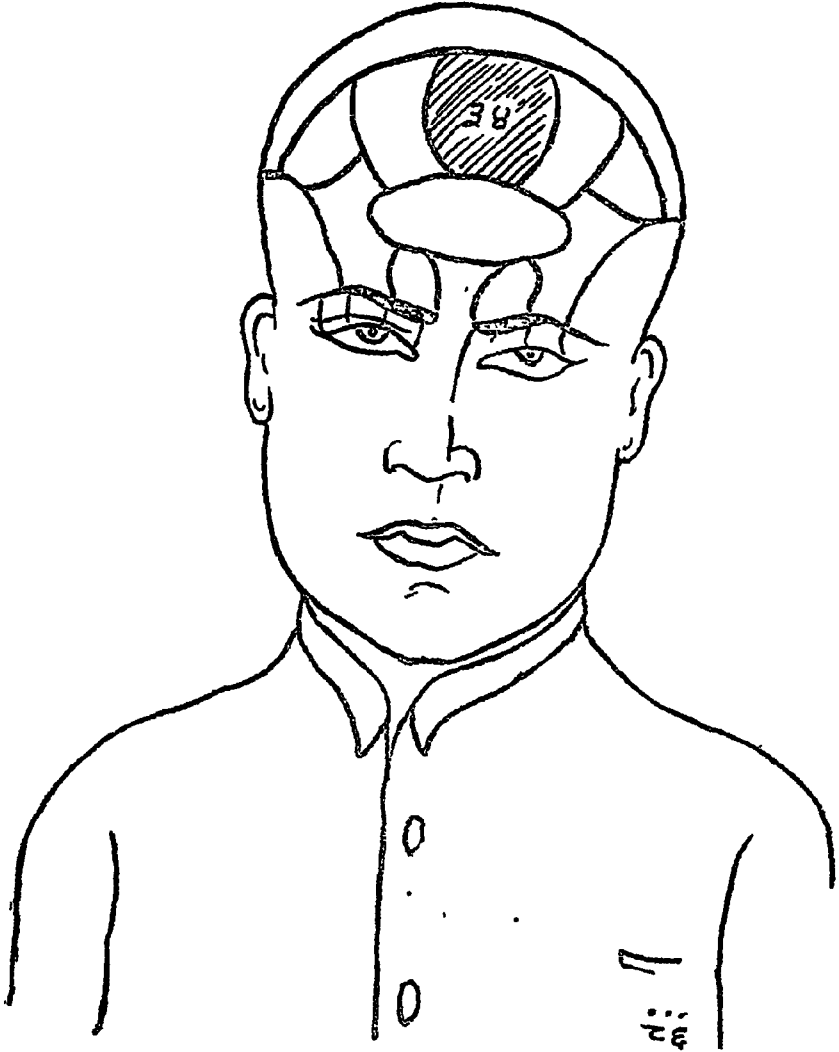
जातक मे उक्त गुण और अधिक स्पष्ट होते है। चन्द्र तथा शुक्र-क्षेत्र उन्नत हो तो जातक की कल्पना-शक्ति भी अच्छी होती है।

३५
३५
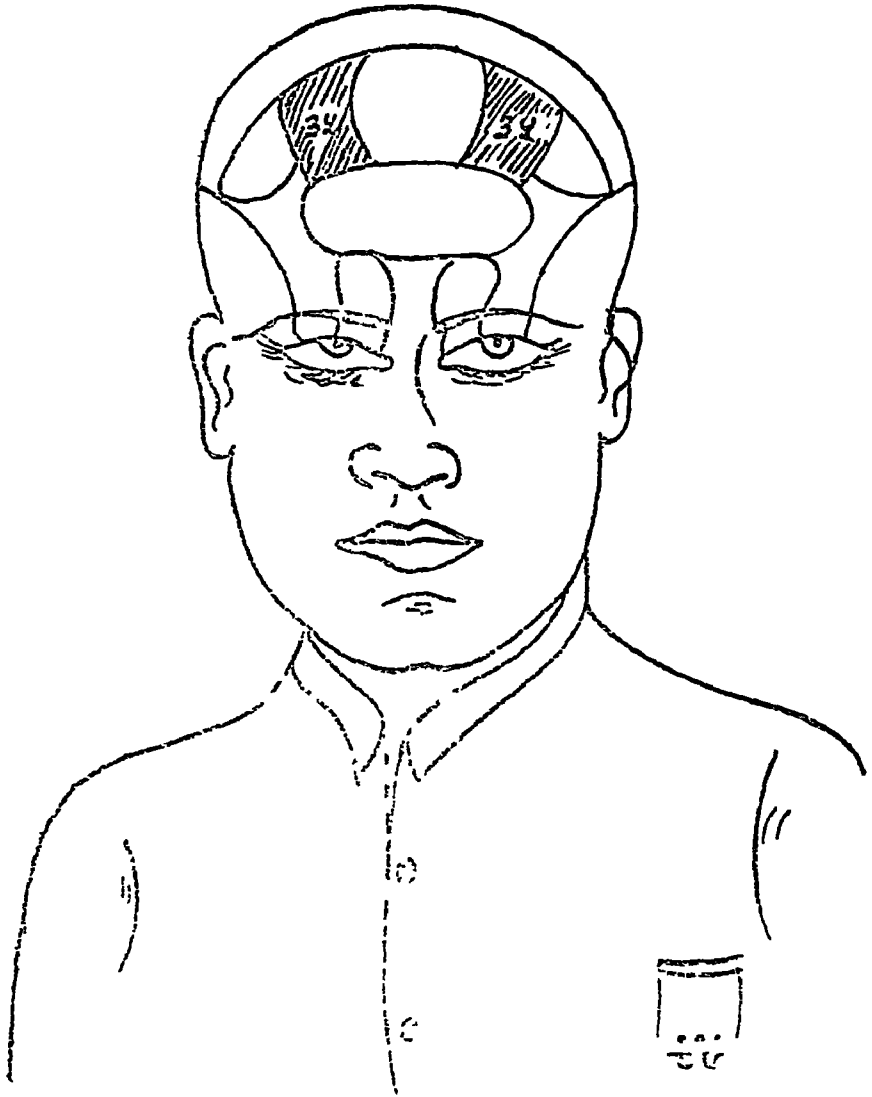
यदि हृदय-रेखा अच्छी और लम्बी हो तथा मस्तक-रेखा भी अच्छी स्थिति में चन्द्र-क्षेत्र की ओर कुछ झुकी हुई हो तो जातक विश्लेषण, वर्गीकरण एवं आलोचना के क्षेत्र में विशेष सफलता प्राप्त करता है।

(३५) जिज्ञासा-वृत्ति

चित्र ८७ मे प्रदर्शित संख्या ३५ का स्थान यदि अधिक उन्नत और पुष्ट हो तो जातक में सहज जिज्ञासा-वृत्ति पाई जाती है।

ऐसे व्यक्ति दर्शन-शास्त्र का विशेष अध्ययन करते है तथा आध्यात्मिक एव दार्शनिक अनुसंधानों मे रुचि लेते है।

चित्र ८८
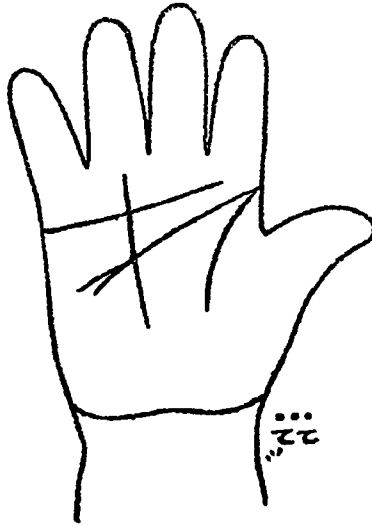
ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति के हाथ मुलायम होते है, उंगलियां लम्बी, गांठदार तथा चमसाकार होती हैं, नाखून छोटे होते है, चन्द्र-क्षेत्र उन्नत होता है मस्तक-रेखा कांटेदार अथवा तीर की नोंक के समान चन्द्र-क्षेत्र की ओर झुकी-सी होती है। सूर्य-क्षेत्र सामान्य होता है अथवा नीचे की ओर दबा हुआ रहता है, परन्तु जिज्ञासा यदि सौम्य

सूर्य-क्षेत्र के कारण ही जाग्रत हो तो उस स्थिति मे मस्तक-रेखा सीधी तथा लम्बी होती है और सूर्य-रेखा भी बहुत स्पष्ट होती है। ऐसे व्यक्ति की उंगलियां चिकनी होती है तथा उनके नाखून छोटे होते हैं (चित्र संख्या ८८)। ऐसे लक्षणों वाला व्यक्ति यदि विना पढा-लिखा मूर्ख भी हो तो भी, वह आध्यात्मिक-ज्ञान को सहज ही मे प्राप्त कर लेता है।

●

अन्य विषयों का ज्ञान

मस्तक के विविध उन्नत भागो की मानसिक वृत्तियों द्वारा जातक के जीवन-चरित्र तथा योग्यता पर पड़ने वाले प्रभाव का वर्णन पीछे किया जा चुका है।

मस्तिष्क-विज्ञान के कुछ अन्य विद्वानो ने उक्त पैंतीस स्थानों के अतिरिक्त तीन अन्य स्थानों का भी उल्लेख किया है, जो जातक की विभिन्न मानसिक-वृत्तियों पर प्रभाव डालने वाले सिद्ध होते है। उन स्थानों, मानसिक वृत्तियों तथा स्थान के उभार सम्बन्धी प्रभाव के विषय में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) खान-पान की प्रवृत्ति

चित्र संख्या ८९ मे प्रदर्शित 'अ' स्थान यदि उन्नत और पुष्ट हो
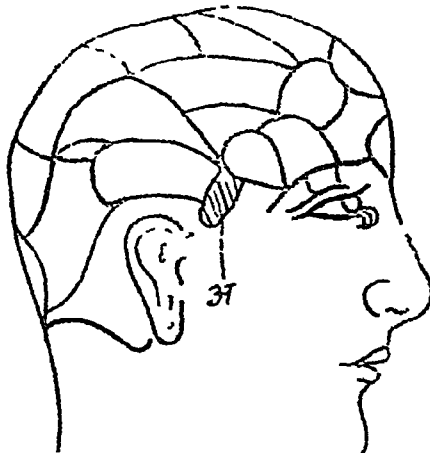
तो जातक खान-पान का वहुत अधिक शौकोन होता है। ऐसे व्यक्ति तगड़े शरावी भो हो सकते हैं। इन लोगो को नक़ली अथवा असली भूख हर समय वनी रहती है और ये अच्छी-अच्छी चीजे खाने के लिए हर समय लालायित वने रहते है।

ऐसे उन्नत-स्थान वाले लोगो की प्रत्येक उगली का तीसरा पर्व भातर की ओर उठा (भूला) हुआ रहता है,उगलियां चिकनी तथा नुकीली होतो हैं, मस्तक-रेखा तुलनात्मक रूप से छोटी तथा सीधी होती है।
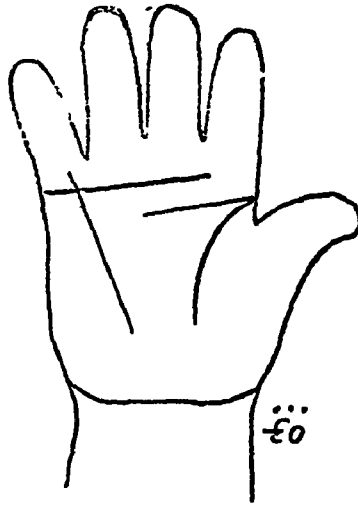
हृदय-रेखा सौम्य और लम्वी होती है। स्वास्थ्य-रेखा भी सरल तथा स्पष्ट होती है। चन्द्र-स्थान अन्य गृह-क्षेत्रों से अधिक उन्नत होता है। अंगूठा चौड़ा तथा छोटा होता है तथा मगल का क्षेत्र स्पष्ट रूप से उभरा हुआ दिखाई देता है (चित्र सख्या ९०)। ऐसे व्यक्ति मगलीय-स्वभाव के होते हैं।

(२) एकाग्रता की भावना

चित्र ९१ में प्रदर्शित संख्या १० तथा ३ के बीच वाला स्थान यदि अधिक उन्नत हो तो जातक में एकाग्रता की भावना विशेष रूप से पाई जाती है। ऐसे व्यक्ति ध्यान अथवा समाधि लगाने में विशेष प्रवीण होते है।

९१
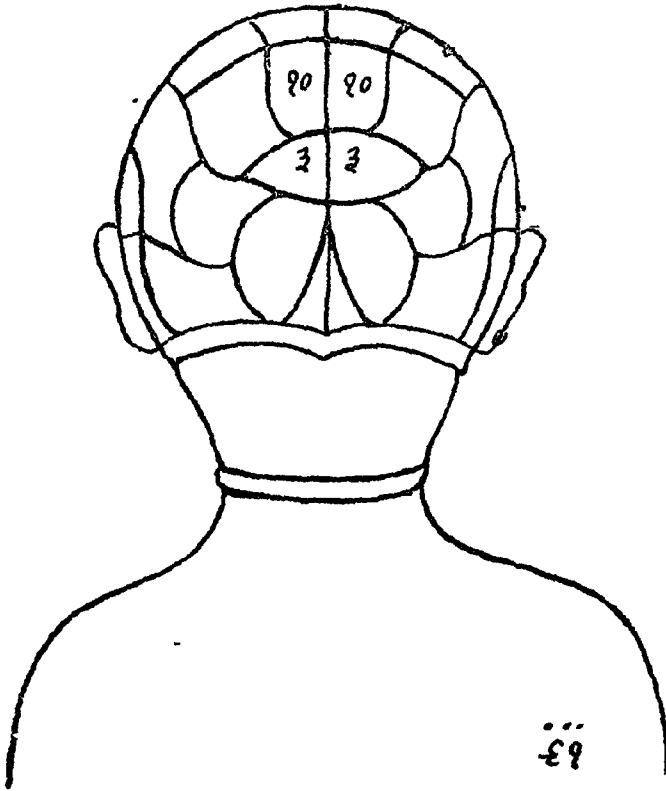
ऐसे व्यक्ति कभी-कभी अपने काम में इतने तल्लीन हो जाते है कि चीख-पुकार करके भी उनके ध्यान को बंटा पाना मुश्किल होता है।

ऐसा व्यक्ति अपने विचारो को स्वयं क्रियान्वित करने मे तथा अपनी सुचिन्तित योजनाओ को दूसरों द्वारा क्रियान्वित कराने में विशेष कुशल होता है। वह अपने मित्रों तथा साथियों का चुनाव बड़ी सावधानी से करता है तथा अपनी महत्वाकांक्षा का प्रदर्शन बिल्कुल नहीं करता।
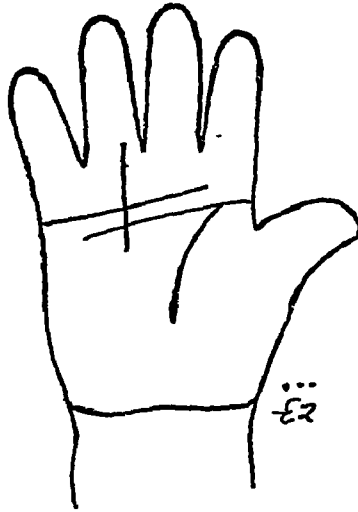
ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति के हाथ की उंगलियां चौकोर होती हैं तथा अंगूठा औसत लम्बाई का होता है। मस्तक-रेखा संकरी, सीधी तथा लम्बी होती है। बुध-क्षेत्र का झुकाव सूर्य-क्षेत्र की ओर होता है तथा सूर्य-रेखा अपने निश्चित स्थान पर ठीक दिखाई देती है (चित्र संख्या ६२)।

ऐसे कुछ जातकों के हाथ मे मगल तथा चन्द्रमा—इन दोनों के क्षेत्र समान रूप से उन्नत भी पाये जाते हैं और ये दोनो ही क्षेत्र रेखा-हीन होते है। बृहस्पति का क्षेत्र भी कुछ उठा हुआ होता है, परन्तु वह इतना उन्नत नही होता कि बुध अथवा सूर्य-क्षेत्र को प्रभावित कर सके। ऐसे व्यक्ति की हथेली सम्वेदनशील होती है।

(३) भाषा की स्मृति

यदि आंख के नीचे की वर्तुलाकार हड्डी कुछ उठी (फूली) हुई-सी हो तो जातक मे विविध प्रकार की भाषाओं को स्मरण रखने की विशेष क्षमता पाई जाती है।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली मे चन्द्र-क्षेत्र भी उच्च पाया जाता है तथा उसी के आधार पर इस सम्बन्ध मे निश्चय किया जाता है।
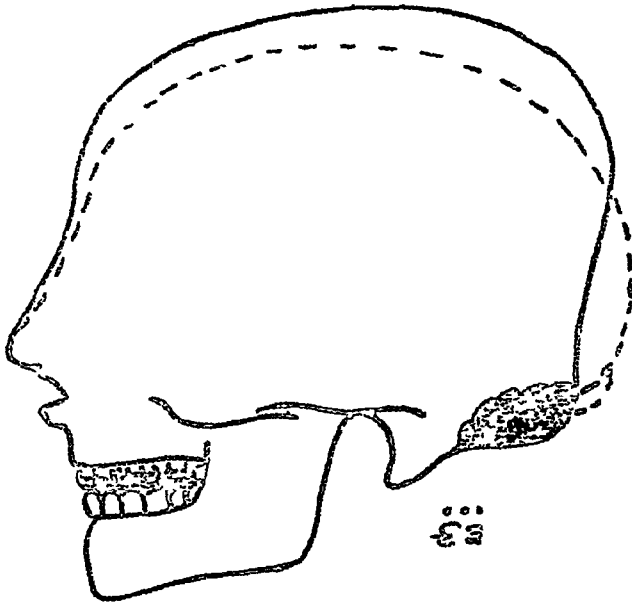
[स्त्री की खोपड़ी]

ललाट और उसकी रेखाएं

सिर के खुले हुए अग्रभाग को, जिसे सामान्य बोल-चाल की भाषा मे 'माथा' कहते है, 'ललाट' कहा जाता है। इस ललाट पर भी अनेक रेखाए पाई जाती है, जो अपने फलस्वरूप जातक के जीवन को प्रभावित करती है।

ललाट की आकृति तथा उस पर पाई जाने वाली रेखाओ के सम्बन्ध मे प्राच्य तथा पाश्चात्य—दोनो ही स्थानो के विद्वानो द्वारा विचार किया गया है। उनके मत के साराश को इस प्रकरण मे दिया जा रहा है। सर्वप्रथम भारतीय विद्वानो के मत का उल्लेख किया जाता है।

प्राच्य-मत

ललाट की आकृति के सम्बन्ध मे विभिन्न भारतीय ग्रथो निम्नानुसार उल्लेख पाये जाते है—

"ललाटेनार्ध चन्द्रेण भवन्ति पृथिवीश्वराः।
विपुलेन ललाटेन महानगपतिः स्मृतः॥
श्लक्ष्णेन तु ललाटेन नरो धर्मरतस्तथा॥"

(भविष्य पुराण)

× × ×

"निःस्वा विषम भालेन दुःखिता ज्वर जर्ज्जराः।
परकर्म करा नित्यं प्राप्यन्ते वधबंधनम् ॥"

(समुद्र ऋषि)

× × ×

"शुक्ति विशालैराचार्याः शिरा सन्नतैरधर्मरताः ॥"

(वृहत् संहिता)

× × ×

"श्री वत्स कार्मुकाद्या यस्य शिरारोमभिः कृताभाले ।
रेखाभिर्वा नृपतिर्भोगी व जायते सपदि ॥"

(समुद्र तिलक)

× × ×

भावार्थ—जिस पुरुष का ललाट अर्द्धचन्द्र के आकार का हो वह भू-सम्पत्ति का स्वामी तथा ऐश्वर्य युक्त होता है।

जिस व्यक्ति का ललाट उन्नत और फैला हुआ हो, वह राजा अर्थात् उच्च पद को प्राप्त करने वाला होता है।

जिस व्यक्ति का ललाट चिकना हो, वह धर्म में रुचि रखने वाला होता है।

× × ×

यदि ललाट-ऊंचा नीचा (विषम) हो तो जातक दुःखी, ज्वर-पीड़ित तथा दूसरों की सेवा (नौकरी) करने वाला व्यक्ति कष्ट प्राप्त करता है।

× × ×

यदि ललाट सोप की भांति ऊंचा तथा विशाल (फैला हुआ) हो तो जातक उच्च कोटि का विद्वान् होता है।

× × ×

यदि ललाट पर नसे उभरी हुई दिखाई देती हो तो मनुष्य अधर्म-परायण अर्थात् पाप-कर्म करने वाला होता है।

× × ×

यदि ललाट मे रेखाओ, नसों अथवा रोम द्वारा श्रीवत्स, धनुष आदि के शुभ-चिन्ह हों तो जातक राजा (ऐश्वर्यवान), भोगी तथा उच्च पद प्राप्त करने वाला होता है।

ललाट के सम्बन्ध मे विविध मतों का सारांश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) यदि ललाट नीचा हो, तो ऐसे व्यक्ति को पुत्र-सुख अल्प मात्रा मे मिलता है। इसे दरिद्रता का लक्षण भी समझना चाहिए।

(२) यदि ललाट ऊंचा-नीचा हो तो जातक दरिद्र होता है।

(३) यदि दोनो आंखो के ऊपरी भाग वाली ललाट की हड्डी बड़ी, फैली हुई तथा ऊंची उठी हुई हो अर्थात् ललाट लम्बा-चौड़ा और उभरा हुआ हो तो ऐसे व्यक्ति धन-ऐश्वर्य से सम्पन्न तथा अत्यधिक मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करने वाले होते है।

(४) यदि ललाट बहुत नीचा हो और उसमे नसे उभरी हुई दिखाई देती हों तो जातक पाप-कर्मों मे लीन बना रहता है।

(५) यदि ललाट की नसो द्वारा 'स्वस्तिक' जैसा चिन्ह बनता हो तथा ललाट ऊचा हो तो जातक धनवान होता है।

(६) अधिक उन्नत ललाट वाले व्यक्ति स्वतन्त्रता प्रिय तथा शासन करने वाले होते है।

(७) नीचे ललाट वाले व्यक्ति क्रूर-कर्म करने वाले तथा हिंसक वृत्ति के होते है। यदि अन्य लक्षण भी अशुभ हों तो उन्हे जेल-यात्रा करनी पड़ती है अथवा अत्यधिक कठिनाइयों से संघर्ष करना पड़ता है।

(८) संकरे (कम चौडे) अथवा गोल ललाट वाले व्यक्ति कृपण होते हैं।

(९) ऊंचे-नीचे (विषम) ललाट वाले व्यक्ति दया-रहित होते है।

(१०) जिनके ललाट में त्रिशूल, वज्र अथवा धनुप के चिन्ह हों, वे सबके स्वामी अर्थात् उच्च पद वाले एव स्त्रियों के प्रिय होते है।

(११) अत्यधिक लम्बे-चौडे तथा ऊपर को उठे हुए ललाट वाला व्यक्ति मूर्ख होता है:

(१२) जिसका ललाट ऊपर की ओर से ढलवां तथा स्वच्छ हो, जिस पर रेखा दिखाई न देती हो, परन्तु क्रोध के समय रेखा उभरती हो, ऐसा व्यक्ति अत्यन्त बुद्धिमान् होता है।

(१३) नाक के बराबर ऊंचा तथा नाक की लम्बाई से दूने चौड़े ललाट तथा श्रेष्ठ कनपटी वाला व्यक्ति श्रेष्ठ पुरुप होता है।

(१४) हँसते समय जिसके ललाट में भृकुटी के बीच दो खडी रेखाए बन जाती हो, उसे श्रेष्ठ समझना चाहिए। ऐसा व्यक्ति सद्-गुणी तथा सुखी होता है।

(१५) यदि ललाट पर नीली नसों के उभरने के कारण तिलक जैसा चिन्ह बन जाये और ललाट का आकार अर्द्धचन्द्रमा जैसा हो तो ऐसा व्यक्ति लक्ष्मीवान् होता है।
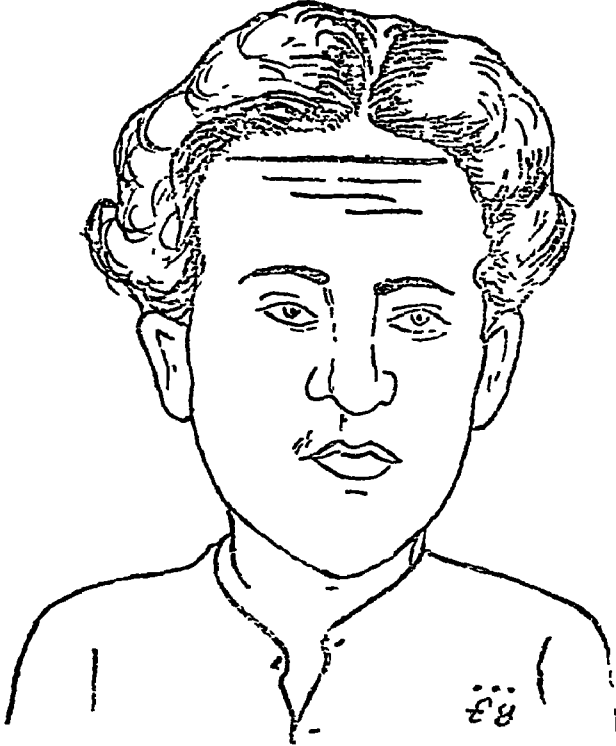
(१६) यदि कपाल की सबसे ऊपर की रेखा केशों के समाप अखण्ड, सीधी तथा उत्तम हो तो जातक बुद्धिमान् होता है। यदि रेखा टेढ़ी अथवा खण्डित हो तो लोभी होता है (चित्र सख्या ६४)।

(१७) यदि पहली रेखा से नीचे वाली दूसरी रेखा अखण्ड तथा उत्तम हो तो जातक ईमानदार होता है। यदि रेखा अच्छी न हो तो भोगी होता है (चित्र संख्या ६५)।

(१८) यदि पूर्वोक्त रेखा से नीचे की तीसरी रेखा अखण्ड और सुन्दर हो तो जातक सैनिक वृत्ति का साहसी तथा बलवान् होता है। यदि यह रेखा खण्डित हो तो जातक झगडालू प्रकृति का, क्रोधी तथा उग्र स्वभाव का होता है (चित्र सख्या ६६)।

(१९) पूर्वोक्त तीसरी रेखा से नीचे दांई भृकुटी के ऊपर वाली रेखा यदि उत्तम हो तो जातक धन-सम्पत्ति सम्पन्न होता है। यह रेखा यदि खण्ड़ित हो तो लोभी (कृपण) होता है (चित्र संख्या ९७)।

(२०) पूर्वोक्त रेखा के सामने बाईं भृकटी के ऊपर वाली रेखा यदि उत्तम हो तो जातक देशाटन करने वाला (यात्रा-प्रेमी) होता है। यदि यह रेखा खण्डित हो तो वह असत्यवादी (झूठा) होता है (चित्र संख्या ९८)।
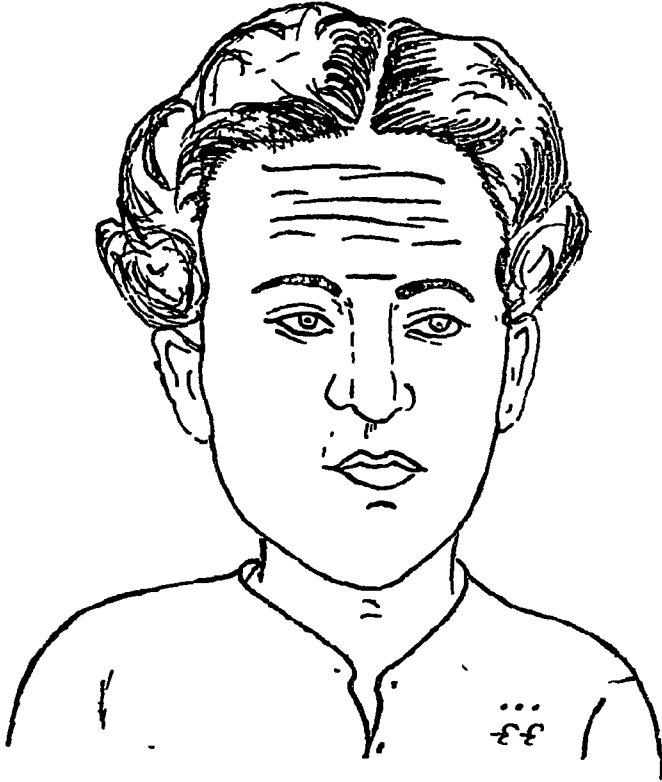
(२१) दोनों भौहों के बीच वाली रेखा यदि उत्तम हो तो ज़ातक सबको प्रिय होता है। यदि यह रेखा खण्डित हो तो वह दुःख भोगने वाला होता है (चित्र संख्या ९९)।

(२२) यदि ललाट के नीचे नासिका के ऊपर (दोनों भृकुटियों के वीच में) तीन रेखाए हो तो ऐसा जातक अत्यधिक बोलने वाला (वकवास करने वाला) होता है (चित्र मंख्या १००)।

ललाट की रेखाओं द्वारा आयु-विचार

ललाट की रेखाओ द्वारा जातक की आयु का निश्चय करने के सम्वन्ध में भी भारतीय विद्वानों के मत अलग-अलग पाये जाते हैं। यहां पर उन सवके मतों का सारांश दिया जा रहा है।

'शब्द कल्पद्रुम' में लिखा है—

"तिस्रोरेखाः शत जीविनां ललाटायताः स्थितायदिता ।
चतुस्रभिरवनीशत्व' नवतिश्चायुः सपंचाब्दा ॥
विच्छिन्नाभिश्चगम्यागामिनो नवति रप्य रेखेण ।
केशांतोपगताभि रेखाभिरशीति वर्षायुः ॥

पंचभिरायूः सप्ततिरेकाग्रावस्थिता भिरपिषष्टिः ।
बहुरेखेण शतार्धं चत्वारिंश चवक्राभिः ॥
त्रिंशद्भ्रूलग्नाभिर्विंशति कचैश्व वाम वक्राभिः ।
क्षुद्राभि स्वल्पायुर्न्यूनाभिश्चांतरेकल्प्यं ॥
त्रिशूलं पट्टिशंवापि ललाटेयस्य दृश्यते ।
धनपुत्र समायुक्तः सजीवेत् शरदः शतम् ॥"

उक्त श्लोकों का भावार्थ नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

(१) यदि ललाट के ऊपर कानों तक लम्बी, अखण्ड तथा एक जैसी तीन रेखाएं स्पष्ट दिखाई देती हों, तो जातक की आयु १०० वर्ष की होती है।

(२) यदि ललाट पर चार अखण्ड रेखाएं हों तो जातक राजा (ऐश्वर्यवान्) होता है और वह ९५ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है।

(३) यदि ललाट की रेखाएं विच्छिन्न हों अथवा ललाट रेखा-विहीन हो तो ऐसा व्यक्ति ९० वर्ष की आयु तक जीवित रहता है तथा अगम्यागमन करने वाला होता है।

(४) यदि ललाट की रेखाएं केश पर्यन्त गई हों, तो जातक की आयु ८० वर्ष की होती है।

(५) यदि ललाट पर पांच रेखाएं स्पष्ट दिखाई देती हों तो जातक की आयु ७० वर्ष की होती है।

(६) यदि सब रेखाएं अपने अन्तिम भाग मे एकत्रित हो गई हों तो ऐसे जातक की आयु साठ वर्ष की समझनी चाहिए।

(७) यदि ललाट पर पांच से अधिक बहुत-सी रेखाएं हों तो जातक की आयु ५० वर्ष की समझनी चाहिए। (चित्र संख्या १०१)।

(८) यदि ललाट पर पांच से अधिक बहुत-सी रेखाएं टेढ़ी-मेढ़ी हों तो जातक ४० वर्ष तक जीवित रहता है।

(९) यदि ललाट की रेखा भ्रू भाग से मिली हुई हो तो जातक की आयु ३० वर्ष की होती है।

(१०) यदि ललाट-रेखा ललाट के बाए भाग मे टेढ़ी होकर नीचे की ओर झुक गई हो तो जातक की आयु २० वर्ष की समझनी चाहिए।

(११) यदि ललाट पर बहुत महीन-महीन रेखाएं हों (चित्र संख्या १०२) तो जातक अल्पायु होता है।

(१२) यदि ललाट पर केवल एक या दो बहुत छोटी-छोटी रेखाए ही हों तो जातक की आयु बहुत कम होती है।

(१३) यदि ललाट पर त्रिशूल अथवा पट्टिश के समान चिन्ह हो तो जातक सौ वर्ष तक जीवित रहता है।

'भविष्य पुराण' का मत इससे भिन्न पाया जाता है। वह इस प्रकार है—

(१) यदि ललाट पर पांच पूर्ण रेखाए हों तो जातक ऐश्वर्यवान् होकर १०० वर्ष तक जीवित रहता है।

(२) यदि ललाट पर चार रेखाएं हो तो जातक को आयु ८० वर्ष की होती है।

(३) यदि ललाट पर तोन सम्पूर्ण रेखाए हो तो जातक ७० वर्ष तक जीवित रहता है।

(४) यदि ललाट पर दो सम्पूर्ण रेखाएं हो तो जातक ६० वर्ष की आयु पाता है।

(५) यदि ललाट गर केवल एक रेखा सम्पूर्ण हो तो केवल ४० वर्ष की आयु होती है।

(६) यदि ललाट पर एक भी रेखा न हो तो जातक की आयु २५ वर्ष की समझनी चाहिए।

सभी भारतीय शास्त्रकार इस बात पर एकमत है कि यदि ललाट की रेखाए छोटी तथा कटी हुई हो तो जातक अल्पायु तथा व्यभिचारो होता है। रेखाओं का टेढा-मेढा, कटा-टूटा अथवा छोटा होना अच्छा लक्षण नही समझना चाहिए।

ललाट की रेखाओं द्वारा आयु गणना किसी भी मत से क्यों न की जाये, रेखाओ की लम्बाई, छोटाई, अखण्डता एव खण्डता के अनुपात से ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए।

स्त्रियों के ललाट के सम्बन्ध मे 'बृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के अगले 'स्त्री-सामुद्रिक' शीर्षक खण्ड में वर्णन किया गया है।

पाश्चात्य-मत

पाश्चात्य विद्वानों ने ललाट तथा उसकी रेखाओं के सम्बन्ध मे अपना जो मत व्यक्त किया है, उसका सार-संक्षेप नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) ललाट पर केशों के नीचे जो सबसे पहली रेखा होती है, उसके स्वामी शनि है, अतः उसे 'शनि-रेखा' कहा जाता है।

(२) शनि-रेखा के नीचे दूसरी रेखा के स्वामी बृहस्पति है, अतः उसे 'गुरु-रेखा' कहा जाता है।

(३) गुरु-रेखा के नीचे तीसरी रेखा के स्वामी मंगल है, अतः इसे 'मंगल-रेखा' कहा जाता है।

(४) दाईं ओर की भौंह पर जो रेखा होती है, उसके स्वामी सूर्य है, अत. उसे 'सूर्य-रेखा' कहा जाता है।

(५) बाईं भौंह पर जो रेखा होती है, उसके स्वामी चन्द्रमा है, अतः उसे 'चन्द्र-रेखा' कहा जाता है।

(६) दोनों भौंहो के बीच में जो रेखा होती है, उसके स्वामी शुक्र है, अतः उसे शुक्र-रेखा' कहा जाता है।

(७) नासिका के सेतु पर जो रेखा होती है, उसके स्वामी बुध हैं, अतः उसे 'बुध-रेखा' कहा जाता है।

यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति के ललाट पर ये सातों ही रेखा अवश्य पाई जाए। किसी के ललाट पर कम और किसी के ललाट पर

अधिक रेखाएं होती है। जातक के ललाट पर इनमे से जो भी रेखाएं हों, उन्ही के अनुसार उनके फल का विचार करना चाहिए। चित्र संख्या १०३ मे ललाट की इन रेखाओ को प्रदर्शित किया गया है।

उक्त मुख्य रेखाओं का फल निम्नानुसार बताया गया है—

शनि रेखा यदि यह रेखा सीधी, स्पष्ट तथा अखण्ड हो तो जातक निश्चयात्मक बुद्धि वाला, समझदार, दूरदर्शी तथा गभीर होता है। यदि यह रेखा टेढी-मेढी अथवा टूटी-फूटी हो तो अगभीर, उदासीन शिकायती तथा चिड़चडे स्वभाव का होता है।

गुरु-रेखा—यह रेखा सरल, सीधी, स्पष्ट तथा अखण्ड हो तो जातक ईमानदार होता है। यदि यह रेखा टूटी-फूटी, छोटी अथवा दोष-युक्त हो तो अनियमित रूप से कार्य करने वाला एवं भक्ष्याभक्ष्य का विचार न रखने वाला होता है।

मंगल-रेखा—यदि यह रेखा सीधी, स्पष्ट और अखण्ड हो तो जातक सब कार्यो मे सफलता प्राप्त करने वाला, शक्तिशाली तथा साहसी होता है। यदि यह रेखा दोष पूर्ण हो तो उसके कार्य सफल नही हो पाते अथवा उनमें विघ्न उपस्थित होते हैं। साथ ही दोष पूर्ण मंगल-रेखा वाला व्यक्ति भीरु स्वभाव का भी होता है।

सूर्य-रेखा—यदि यह रेखा अखण्ड तथा स्पष्ट हो तो जातक बुद्धि-मान तथा सफलता प्राप्त करने वाला होता है। यदि रेखा दोप पूर्ण हो तो कृपण होता है।

चन्द्र-रेखा—यदि यह रेखा अखण्ड तथा स्पष्ट हो तो जातक विचारवान तथा यात्रा-प्रेमी होता है। दोष पूर्ण हो तो मन्दबुद्धि वाला होता है।

शुक्र-रेखा—यदि यह रेखा अखड तथा स्पष्ट हो तो जातक स्त्री-
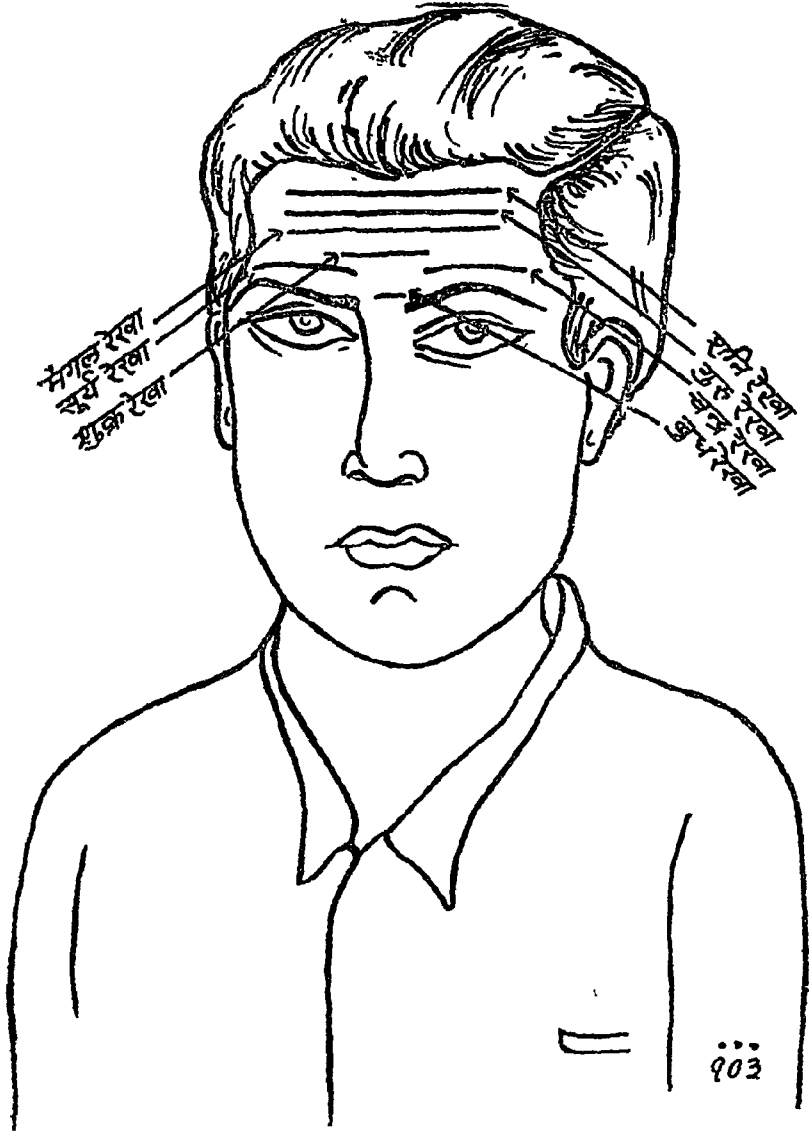
[ललाट की रेखाए]

सुख सम्पन्न, सच्चा प्रेमी तथा श्रेष्ठ स्वभाव वाला होता है। यदि रेखा दोप पूर्ण हो तो सच्चा प्रेमी नही होता।

वुध-रेखा—यदि यह रेखा स्पष्ट तथा अखड हो तो जातक विद्वान् तथा श्रेष्ठ भाषणकर्त्ता होता है। यदि दोप पूर्ण हो तो बातूनी एवं विवादी होता है।

उपर्युक्त सातो रेखाओ के मिश्रित फलादेश को नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) यदि गुरु की रेखा वृत्ताकार चिन्ह युक्त स्पष्ट, परन्तु टेढ़ी हो तो जातक सासारिक दुःखो से पीडित तथा भ्रमित चित्त वाला होता है।

(२) यदि गुरु की रेखा वीच मे टेढी तथा स्पष्ट हो तो जातक ज्ञानी, धनी, यशस्वी तथा सरल स्वभाव का होता है।

(३) यदि शनि की रेखा टेढी तथा मगल की रेखा धनुषाकार हो तो जातक मद्यपी, मूर्ख तथा स्त्री-हीन होता है।

(४) यदि शनि, गुरु तथा मगल की तीनो रेखाएं स्पष्ट, चमकीली तथा निर्दोष हो तो जातक सरल, सर्वप्रिय, नीतिमान, सौभाग्यशाली, सच्चरित्र, यशस्वी, विद्वान तथा ऐश्वर्य-सम्पन्न होता है।

(५) यदि शनि-रेखा छिन्न-भिन्न हो, गुरु-रेखा छोटी हो, मंगल-रेखा दोष पूर्ण हो तथा सूर्य और चन्द्रमा की रेखाए छोटी, परन्तु निर्दोष हो तो जातक गुणवान्, यशस्वी तथा परिश्रमी होते हुए भी चिन्ताशील, चचल स्वभाव का तथा सौभाग्य विहीन होता है।

(६) यदि शनि तथा मंगल की रेखाए सीधी हो और उन दोनों के वीच गुरु की रेखा टेढी हो तो जातक महावलशाली, मानी, सौभाग्यवान तथा सम्पत्तिवान होता है।

(७) यदि शनि-रेखा स्पष्ट और सरल हो तथा गुरु-रेखा सर्पाकार हो तो जातक धनभिलाषी, व्यवसायी तथा धूर्त होता है।

(८) यदि मस्तक में बहुत-सी छिन्न-भिन्न रेखाएं हों तो जातक स्त्री-विहीन, दुर्भाग्यशाली तथा अनेक प्रकार के दुःख भोगने वाला होता है।

(९) यदि शनि-रेखा अपने दोनों किनारों पर खडित हो, गुरु की रेखा टेढ़ी और तीन खंडों वाली हो तथा मगल-रेखा छोटी हो तो जातक का धन नष्ट होता है। इस लक्षण को अत्यन्त अनिष्टकर समझना चाहिए।

(१०) यदि शनि-रेखा सीधी हो, परन्तु वीच मे दो छोटी-छोटी रेखाओं से कटी हो, साथ ही गुरु तथा मंगल की रेखाएं भी अपने मध्य भाग में टूटी हुई हों (चित्र संख्या १०४) तो जातक की सम्पत्ति नष्ट होती हैं तथा उसे और भी अनेक प्रकार की हानियां उठानी पड़ती हैं।

(११) यदि शनि तथा गुरु की रेखाएं धनुषाकार हों और मंगल की रेखा गहरी हो तो जातक दुर्जन तथा नीच प्रकृति का होता है।

(१२) यदि शनि की रेखा लम्बी और गहरी हो तथा गुरु की

रेखा वक्राकार हो (चित्र संख्या १०५) तो जातक अपनी स्त्री से अनाहत होकर भय एवं कष्ट प्राप्त करता है।

(१३) यदि शनि-रेखा बीच में कटी हुई हों, गुरु-रेखा नीचे तथा ऊपर के भाग मे टूटी हुई और टेढ़ी हो तथा मंगल की रेखा सर्पाकार और टूटी हुई हो तो जातक हत्यारा, वेश्यागामी, जुआरी, स्त्रियों का अपहरण करने वाला तथा मनमौजी होता है और किसी समय भय के कारण उसका अपने आप ही प्राणान्त हो जाता है।

(१४) यदि ललाट मे केवल एक ही गहरी तथा धनुषाकार-रेखा हो, तो ऐसा जातक पर्यटनशील, नीच तथा अधम स्वभाव का होता है।

(१५) यदि शनि-रेखा बीच में टूटी हुई हो तथा गुरु-रेखा अपने बाये भाग में तीन शाखाओं वाली हो तो जातक मिथ्याभाषी, चचल स्वभाव वाला, परन्तु प्रभावशाली होता है।

(१६) यदि ललाट मे चार रेखाएं हों और उनमें पहली तथा चौथी रेखा बीच मे कटी हुई हो (चित्र सख्या १०६) तो जातक बुद्धि-मान्, सच्चरित्र एवं सरल स्वभाव का होता है।

(१७) यदि शनि-रेखा सांप के फन के समान हो तथा मगल-रेखा और गुरु-रेखाए टेढी हों, तो जातक किसी ऊचे स्थान से गिरकर मृत्यु को प्राप्त होता है। यदि अन्य लक्षण दोर्घजीवन के हों तो ऊचाई से गिरकर गम्भीर रूप से घायल होता है।

(१८) यदि शनि-रेखा टेढी तथा बोच में से टूटी हुई, गुरु-रेखा अपने निचले भाग मे भग्न तथा छोटी हो, मगल-रेखा ऊपरी भाग मे अलग तथा सीधी हो, सूर्य-रेखा बीच में कटी हुई और टेढो हो, शुक्र-रेखा छोटी हो तथा चन्द्र-रेखा दो रेखाओं से कटी हुई हो तो जातक कभी धनी, कभी, दरिद्र कभी सुखी और कभी दुःखी बना रहता है।

१०६

(१६) यदि ललाट पर केशों के नीचे अर्द्ध चन्द्राकार छोटी-छोटी सात रेखाएं हों तथा गुरु एवं मंगल रेखाएं बड़ी तथा सर्पाकार हों

(चित्र संख्या १०७) तो जातक भ्रान्त, दुःखी, भय तथा चिन्ताओं से ग्रस्त एवं चंचल स्वभाव वाला होता है। वह किसी समय पानी में भी डूबता है।

(२०) यदि शनि तथा मंगल-रेखाए बीच मे टूटी हुई हो और गुरु-रेखा दोनो के बीच मे झुकी हुई हो (चित्र सख्या १०८) तो जातक बुद्धिमान्, धनवान्, दूरदर्शी तथा सौभाग्यशाली होता है।

(२१) यदि शनि तथा गुरु की रेखाएं परस्पर मिली हुई तथा बीच मे से टूटी हुई हो तो ऐसा जातक किसी की हत्या करता है और स्वयं भी प्राणदण्ड पाकर अपना जीवन समाप्त कर बैठता है।

(२२) यदि शनि की रेखा गहरी तथा झुकी हुई हो, गुरु की रेखा छोटी हो, मगल की रेखा टेढी हो तथा उस पर मस्सा भी हो तो ऐसा

जातक वज्र के समान कठोर हृदय वाला एवं हिंसक (हत्यारा) होता है ।

(२३) यदि शनि की रेखा सीधी हो, गुरु की रेखा अपने निचले भाग में टेढ़ी हो तथा मंगल की रेखा छोटी (चित्र संख्या १०६) तो जातक धनी और भाग्यशाली होता है ।

(२४) यदि ललाट में सर्पाकृति की एक ही रेखा हो तथा दोनों भौहों के बीच में बहुत-सी सीधी रेखाएं हों तो जातक बहुत अच्छा वक्ता, शक्तिशाली तथा स्त्रियों के साथ विहार करने में रत बना रहता है ।

(२५) यदि ललाट पर अनेक रेखाएं छिन्न-भिन्न स्थिति में हों

तो जातक महत्वाकांक्षी, अनेक प्रकार का काम करने वाला तथा सब लोगों द्वारा सम्मानित होता है।

(२६) यदि मंगल तथा शनि की रेखाए अपने निचले तथा ऊपर के भाग मे सर्पाकार हो तथा दोनो के बीच में एक वज्राकार चिन्ह भी हो तो ऐसी रेखाओ वाला जातक निश्चित रूप से मृत्युदण्ड पाता है और उसकी मृत्यु फांसी लगकर होता है।

(२७) यदि शनि की रेखा लम्बी हो, गुरु की रेखा टेढ़ी हो, मगल की रेखा बीच में से टूटी हुई हो, सूर्य-रेखा लम्बी, गहरी तथा कुछ टेढ़ापन लिये हुए हो (चित्र सख्या ११०) तो ऐसा जातक अत्यन्त धनी, दानी,

दयालु, विलासी, बुद्धिमान्, सबको सुख देने वाला, यशस्वी तथा सौभाग्यशाली होता है।

(२८) यदि शनि तथा गुरु की रेखाए बीच में से टूटी हुई हों, मगल-रेखा लम्बी तथा सीधो हो, सूर्य-रेखा छोटी हो तथा शुक्र-रेखा अपनी बाईं ओर को कुछ टेढ़ी हो तो ऐसा व्यक्ति सच्चरित्र, सौभाग्यशाली, शास्त्रों का ज्ञाता, निश्छल, धनवान्, प्रत्युत्पन्नमति चतुर परन्तु परम क्रोधी होता है।

(२९) यदि शनि की रेखा छोटी और टेढ़ी हो, गुरु की रेखा बीच में से टूटी तथा सर्पफण के समान हो एव मगल की रेखा शाखायुक्त तथा लचीली हो तो ऐसा जातक महामूर्ख तथा मनुष्यों की हत्या करने वाला होता है।

(३०) यदि शनि को रेखा गहरी हो, गुरु की रेखा छोटी हो, मंगल की रेखा गहरी तथा पतली हो तथा सूर्य की रेखा झुकी हुई, गहरी एवं दो रेखाओं से कटो हुई हो (चित्र संख्या-१११), तो ऐसा जातक कामी, क्रोधी, कलहप्रिय, लड़ाकू प्रवृत्ति तथा युद्ध-क्षेत्र में किसी हथियार द्वारा प्राण गंवाने वाला होता है।

(३१) यदि शनि-रेखा टेढी तथा अपने निचले भाग में टूटी हुई हो, गुरु की रेखा छोटी हो, मगल की रेखा गहरी तथा टेढी हो एवं सूर्य की

रेखा बीच में से टूटी हुई तथा वक्राकार हो (चित्र संख्या ११२), तो

ऐसा जातक उपद्रवी, मूर्ख, छली, शठ, धूर्त, मनमौजी, कठोर स्वभाव वाला, असत्यवादी तथा झगड़ालू प्रकृति का होता है।

(३२) यदि शनि-रेखा स्थान-स्थान पर टूटी हुई तथा टेढ़ी हो, गुरु की रेखा लम्बी तथा सीधी हो, मंगल की रेखा बीच से कटी हुई तथा टेढ़ी हो, सूर्य की रेखा धनुषाकार हो तथा शुक्र की रेखा बीच में से कटी

हो (चित्र संख्या ११३) तो ऐसा जातक सत्यवादी, सरल, विनम्र, विजयी, नेता, रसज्ञ तथा रमणियों में प्रीति रखने वाला होता है।

(३३) यदि शनि-रेखा अपने दायें भाग मे टूटी तथा टेढ़ी हो, गुरु की रेखा गहरी तथा लचीली (झुकी हुई) हो तथा मंगल की रेखा छोटी

तथा टेढ़ी हो तो पुरुष कपटी होते हुए भी विनयी स्वभाव का होता है।

(३४) यदि शनि की रेखा बीच मे से टूटी हुई तथा टेढ़ी हो, गुरु की रेखा वीच मे से टेढ़ी तथा अपने दायें भाग में टूटी हुई हो मंगल तथा सूर्य को रेखाएं अपनो दाईं ओर को सर्पाकार हों (चित्र संख्या ११४) तो जातक प्रत्युत्पन्न मति, परन्तु धन-हीन होता है।

(३५) यदि शनि की रेखा लम्बी, गहरी तथा कुछ झुकी हुई हो और उसके दायें भाग मे मस्सा हो, गुरु की रेखा ऊपरी भाग में अलग तथा टेढ़ी हो तथा मंगल की रेख सर्पाकार हो तो ऐसा जातक पवित्रा-

त्मा, निरभिमानी, ज्ञानी परन्तु महाखिन्न स्वभाव का एवं भ्रमित-बुद्धि का होता है। वह किसी ऊंचे स्थान से गिरता है तथा भयभीत होकर सांघातिक कष्ट पाता है।

(३६) यदि शनि तथा गुरु की रेखाएं ललाट के ऊपरी भाग मे अर्द्ध-चन्द्राकार चिन्ह से युक्त हो तथा सूर्य एव चन्द्रमा की रेखा परस्पर मिल रही हों (चित्र सख्या ११५) तो ऐसा जातक परम सौभाग्यशाली होता है।

(३७) यदि शनि की रेखा ऊपरी भाग में कटी तथा झुकी हुई हो, गुरु की रेखा लम्बी तथा झुकी हुई हो, मंगल-रेखा बीच में से

कठी हुई तथा टेढ़ी हो तथा दोनों भौहों के बीच मे त्रिशूलाकार चिन्ह हो तो ऐसा जातक परम-स्नेही, सदैव प्रसन्न रहने वाला, सबका मनोरजन करने वाला तथा वनिता विलासी होता है, परन्तु वह किसी समय ऊपर से गिरकर अथवा किसी अन्य कारण से शरीर में गहरी चोट पाता है।

(३८) यदि शनि-रेखा सर्पाकार हो, गुरु-रेखा छोटी हो तथा मंगल रेखा अपनी दाईं ओर तीन शाखा वाली तथा बाईं ओर एक शाखा

वाली हो (चित्र सख्या ११८)तो ऐसा जातक विश्वासघाती, धूर्त, छली, अत्यन्त चंचल, ऐश्वर्य-विहीन परन्तु लोगो द्वारा सम्मानित होता है।

(३९) यदि शनि-रेखा धनुषाकार हो, गुरु-रेखा सर्पाकार हो तथा मंगल-रेखा टेढ़ी होकर अपने बायें भाग में कटी-फटी हो तो जातक मनुष्यघाती होता है।

(४०) यदि गुरु-रेखा आकार में तो छोटी हो परन्तु उसका मुंह सर्पाकार और बड़ा हो, साथ ही वह शनि-रेखा के समीप पहुंच रही हो तथा बुध की रेखा टेढी हो तो जातक कलह-प्रिय, विवादी एवं हिंसक-वृत्ति का होता है।

(४१) यदि शनि-रेखा पतली हो, गुरु-रेखा दाये भाग में दीर्घाकार हो, मंगल-रेखा बीच मे छिन्न-भिन्न और टेढ़ी हो तथा अपने निचले भाग में गहरी होकर बाये कान तक चली जाए तो ऐसा व्यक्ति जुआरी, व्यभिचारी, क्रोधी तथा दूसरों का अनिष्ट करने वाला होता है।

(४२) यदि शनि-रेखा छोटी हो, गुरु की रेखा वीच में से कटी हुई परन्तु स्पष्ट हो, मंगल-रेखा लम्बी, टेढी तथा एक ओर को झुकी हुई हो तथा शुक्र-रेखा अपने दाये भाग मे कटी हुई तथा मध्य भाग में टूटी हुई हो (चित्र सख्या ११७) तो ऐसा जातक मानी, अभिमानी, दानी, क्रोधी, मित्रों द्वारा तिरस्कृत, व्यभिचारी तथा कामातुर होता है।
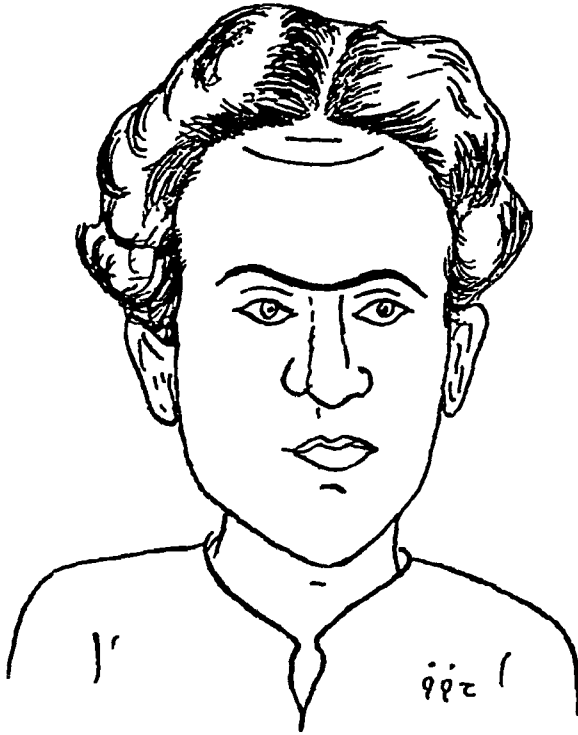
(४३) यदि शनि-रेखा गहरी तथा छोटी हो, गुरु-रेखा झुकी हुई हो तथा भौहों के वीच का हिस्सा केश युक्त हो अर्थात् भौहे परस्पर मिली हुई हों (चित्र सख्या ११८) तो जातक धनी, ऐश्वर्यवान्, यशस्वी तथा अनेक भार्याओ वाला होता है।

(४४) शनि-रेखा छोटी, गुरु-रेखा टेढ़ी हो तथा निकटवर्ती अर्द्धाकृति से युक्त हो, दाईं भौह पर एक छोटी-सी शृंखलाकार रेखा हो, दोनों भौहें परस्पर मिली हुई एवं घने बालों वाली हों तो ऐसे जातक के मस्तक में चोट लगती है अथवा उसे सर्प आदि दुष्ट जीव डसते हैं। ऐसे व्यक्ति पर विष प्रयोग भी होता है, जिसके कारण वह भयभीत तथा क्रुद्ध बना रहता है।

(४५) यदि शनि-रेखा गहरी तथा टेढ़ी हो, गुरु-रेखा लम्बी तथा झुकी हुई हो और सूर्य-रेखा बीच में से टूटी हुई हो (चित्र संख्या ११९)

तो जातक सुन्दर, सुखी, उदार, विद्वान्, यशस्वी, महापुरुषों का सेवक,

धर्मात्मा, भाई-बन्धुओं के लिए सुखदायक तथा सौभाग्यशाली होता है।

(४६) यदि शनि-रेखा अपने निचले तथा ऊपरी भाग मे अलग हो गुरु-रेखा कटी हुई तथा छोटी हो; बुध की रेखा छिन्न-भिन्न तथा टेढ़ी हो, भौहो के बीच का भाग स्पष्ट रेखाओं से युक्त हो, तो ऐसा जातक विद्वान्, गुणवान्, मधुरभाषो, परिणामदर्शी, प्रत्युत्पन्नमति, साहसो, चतुर, कला-कुशल, ग्लानि रहित तथा सौभाग्यशाली होता है।

(४७) यदि शनि-रेखा धनुपाकार हो, गुरु की रेखा टेढ़-मेढ़ी हो; मंगल-रेखा लम्बी तथा अपने वाम भाग मे टेढी हो, सूर्य-रेखा शाखा-

युक्त अपने बाईं ओर को टेढी हो तथा शुक्र-रेखा बीच में कटी हुई हो (चित्र संख्या १२०) तो ऐसा जातक अत्यन्त पराक्रमी, शान्ति-रहित, अत्यन्त लोभी तथा अपने सभी कार्यों मे असफलता प्राप्त करने वाला होता है।

(४८) यदि शनि-रेखा अपने निचले भाग में टूटी हुई तथा सीधी हो, गुरु-रेखा के बाये भाग में धनुषाकार चिन्ह हो तथा उसका निचला, मध्य का तथा ऊपरी भाग भग्न हो, मगल की रेखा शाखायुक्त होकर अपने निचले भाग मे अलग हो, सूर्य-रेखा सर्पाकार हो तथा शुक्र-रेखा अपने उपरी भाग में गहरी तथा बीच मे कटी हुई हो (चित्र सख्या १२१) तो ऐस जातक गुणवान्, विद्वान्, दानी, धर्मात्मा, उपदेशक,

यशस्वी, सुवक्ता, यात्रा-प्रेमी तथा धनवान होता है। उसे अपने जीवन मे किसी भी विघ्न-बाधा का सामना नहीं करना पड़ता।

(४६) यदि ललाट मे त्रिशूल अथवा मछली पकडने की वंशी जैसा चिन्ह हो तो जातक धन-पुत्रादि से युक्त होकर सौ वर्ष की परमायु प्राप्त करता है।

(५०) एक प्राचीन कहावत के अनुसार ललाट पर एक रेखा वाला व्यक्ति धनी, दो रेखाओ वाला विद्वान् पण्डित, तीन रेखाओं वाला राजा (ऐश्वर्यशाली) तथा चार रेखाओं वाला योगी होता है। आयु प्रमाण के लिए यह कहावत है कि एक रेखा वाला तीस वर्ष की, दो रेखाओ वाला चालीस वर्ष की, तीन रेखाओ वाला साठ वर्ष की तथा चार रेखाओ वाला अस्सी वर्ष की आयु प्राप्त करता है।

आवश्यक निर्देश

(१) ललाट की बनावट तथा विभिन्न रेखाओ की स्थिति पर भली-भांति विचार करने के उपरान्त ही किसी निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए।

(२) यदि किसी जातक की हथेली पर आयु-रेखा न हो तो उसकी आयु के सम्बन्ध मे ललाट-रेखाओं द्वारा विचार करना चाहिए।

मुख-मण्डल पर विभिन राशियों का निवास

सामुद्रिक-विद्या के पश्चिमी विद्वानों ने मनुष्य के मुखमण्डल पर बारह राशियों की स्थिति बताई है। उनमे से अधिकांश राशियों की अवस्थिति ललाट प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रो मे होती है। पाश्चात्य विद्वानो ने इन राशियो के 'प्रतीक-चिन्ह भी निर्धारित किए हैं। चित्र संख्या १२२ में मुखमण्डल पर द्वादश राशियो की अवस्थिति को प्रदर्शित किया गया है।

राशियों की अवस्थिति के विषय में निम्नानुसार समझना चाहिए—

मेष—इस राशि का स्थान बाएं कान के ऊपरी भाग में है। इसके प्रतीक-चिन्ह का स्वरूप अंकुश जैसा होता है।

वृष—इसका स्थान ललाट के मध्य भाग में है। इसका प्रतीक-चिन्ह हिन्दी के चार के अंक (४) जैसा होता है।

मिथुन—इसका स्थान बाएं कान के ऊपरी भाग में मेष राशि के समीप ही है। इसका प्रतीक चिन्ह दो खड़ी रेखाओं जैसा होता है।

कर्क—इसका स्थान ललाट के ऊपरी भाग में है। हिन्दी के सात के दो अंकों को परस्पर उलट कर रख दिया जाये। ऐसा इसका प्रतीक-चिन्ह होता है।

सिंह—इसका स्थान दायी भौंह के ऊपर है। इसका प्रतीक-चिन्ह ऋ की मात्रा में जुड़े हुए वृत्ताकार चिन्हों जैसा होता है।

कन्या—इसका स्थान ललाट के ऊपरी भाग में दाईं ओर को है। अंग्रेजी के N तथा P इन दो अक्षरों के संयुक्त रूप जैसा इसका प्रतीक-चिन्ह कहा गया है।

तुला—इसका स्थान दाएं कान के ऊर्ध्वभाग में है। धनुषाकार आकृति के नीचे एक पड़ी रेखा जैसा इसका प्रतीक-चिन्ह बताया गया है।

वृश्चिक—इसका स्थान नाक के ऊर्ध्वभाग में दोनों भौंहों के बीच वाले भाग से कुछ ऊपर की ओर है। इसका प्रतीक-चिन्ह अंग्रेजी के M अक्षर की भांति होता है।

धन—इसका स्थान दाएं नेत्र के ऊपरी भाग में है। इसका प्रतीक चिन्ह खजूर वृक्ष की शाखा जैसा बताया गया है।

मकर—इसका स्थान चिवुक (ठोड़ी) के ऊपरी भाग में है। अंग्रेजी के V तथा P अक्षरों के सम्मिलित रूप जैसा इसका प्रतीक-चिन्ह कहा गया है।
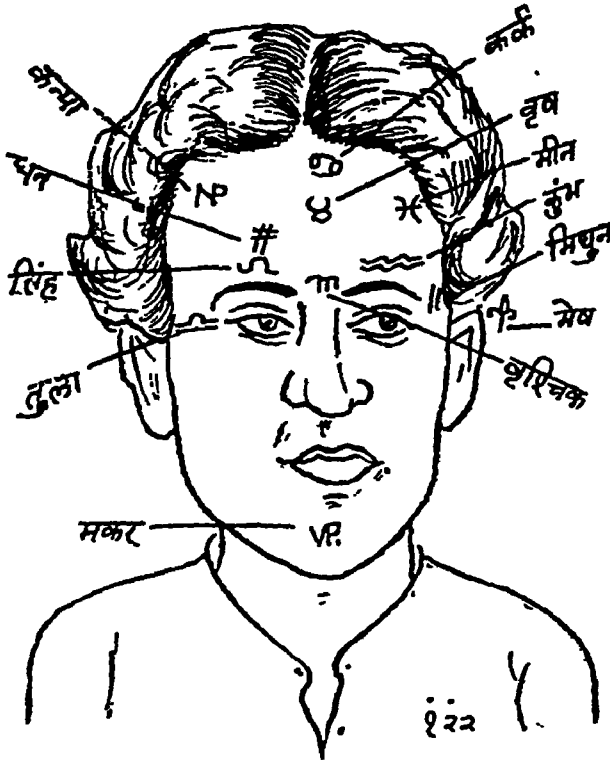
[मुख-मण्डल पर विभिन्न राशियो का स्थान]

कुम्भ—इसका स्थान बाईं ओर की भौह के ऊपरी भाग में है। इसका प्रतीक-चिन्ह दो लहरदार रेखाओं जैसा माना गया है।

मीन—इसका स्थान ललाट के ऊर्ध्व भाग मे बाईं ओर है। इसका प्रतीक-चिन्ह हिन्दी के ३ और ६ अंक के सम्मिलित रूप जैसा बताया गया है।

मुख-मण्डल पर विभिन्न ग्रहों का स्थान

पाश्चात्य विद्वानों ने विभिन्न राशियों की भांति ही (१) सूर्य, (२) चन्द्र, (३) मंगल, (४) बुध, (५) गुरु, (६) शुक्र तथा (७) शनि—इन सात ग्रहों की अवस्थिति भी मुख-मण्डल पर बताई है, जिसे चित्र संख्या १२३ में उनके प्रतीक-चिन्हों के साथ प्रदर्शित किया गया है।
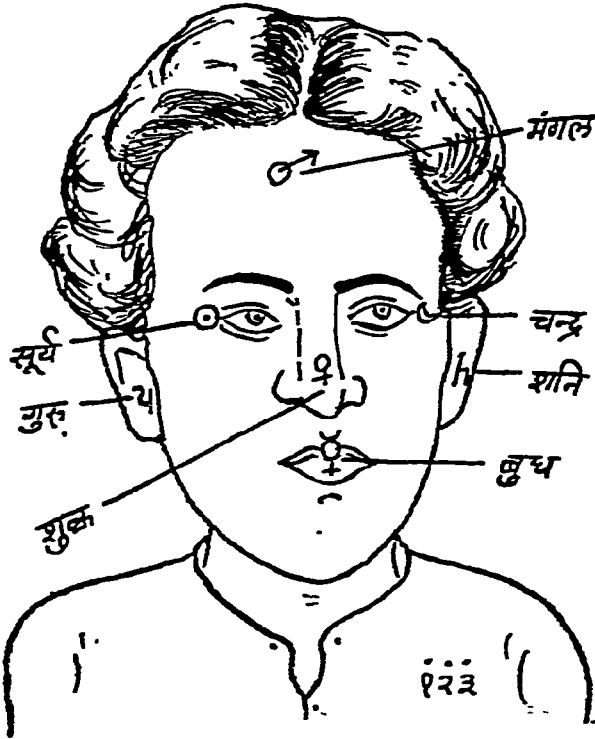
[मुख मण्डल पर विभिन्न ग्रहों का स्थान]

संक्षेप में मुख-मण्डल पर ग्रहों की स्थिति के विषय में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

सूर्य—इसका निवास दाएं नेत्र मे है।

चन्द्र—इसका निवास बाए नेत्र में है।

मंगल—इसका निवास ललाट में है।

बुध—इसका निवास मुख में है।

गुरु—इसका निवास दाएं कान मे है।

शुक्र—इसका निवास नासिका में है।

शनि—इसका निवास बाएं कान मे है।

हाथ के द्वारा चरित्र-परीक्षा

हाथ की बनावट तथा हाथ की रेखाओं तथा चिह्न द्वारा मनुष्य के चरित्र, स्वभाव आदि की परीक्षा करना भी 'लक्षण-शास्त्र' का ही एक अंग है, परन्तु यह विषय (हस्त-परीक्षा) बहुत बड़ा है और उस पर प्राच्य (भारतीय) तथा पाश्चात्य (पश्चिमी) विद्वानों के मत का उल्लेख करते हुए 'वृहद्-सामुद्रिक-विज्ञान' के पिछले १० खण्डों में पर्याप्त प्रकाश डाला जा चुका है। अतः यहां उसकी पुनरावृत्ति न करके हस्त-रेखाओं की परीक्षा द्वारा मनुष्य के चरित्र, स्वभाव तथा जीवन में घटने वाली घटनाओं के सम्बन्ध मे 'कार्तिकेयन-पद्धति' का उल्लेख इस प्रकरण में किया जा रहा है।

'वृहद्-सामुद्रिक-विज्ञान' के 'जीवन-रेखा' खण्ड में 'जीवन-रेखा' के सम्बन्ध में 'कार्तिकेयन-पद्धति' के विद्वानों का विस्तृत उल्लेख किया जा चुका है, अतः यहां उस रेखा का सक्षिप्त विवरण मात्र देकर अन्य रेखाओं के विषय में इस प्रणाली के विद्वानों के मत का सचित्र विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है।

प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानों द्वारा दाएं अथवा बाएं हाथ की उंगलियों तथा उनके मूल भाग पर पाई जाने वाली विभिन्न छोटी-छोटी रेखाओं की स्थति और प्रभाव आदि के सम्बन्ध में जितना वर्णन किया गया है, कार्तिकेयन-पद्धति मे उससे कहीं बहुत अधिक बाते पाई जाती हैं। अतः हस्त-परीक्षा के अभ्यासियो तथा जिज्ञासुओं के लिए 'कार्तिकेयन-प्रणालो' का ज्ञान अत्यधिक लाभदायक सिद्ध होगा—ऐसा

हमारा विश्वास है। पाश्चात्य प्रणाली द्वारा मान्य हाथ की विभिन्न मुख्य-रेखाओं तथा ग्रह-क्षेत्रो को चित्र संख्या १२४ तथा १२५ मे पाठकों के स्मरण रखने मात्र की दृष्टि मे प्रदर्शित किया जा रहा है, ताकि 'कार्तिकेयन-प्रणाली' के अन्तर को भली-भांति समझा जा सके।

कार्तिकेयन- प्रणाली

हस्त-परीक्षा को कार्तिकेयन-प्रणाली के जन्मदाता भगवान् शंकर
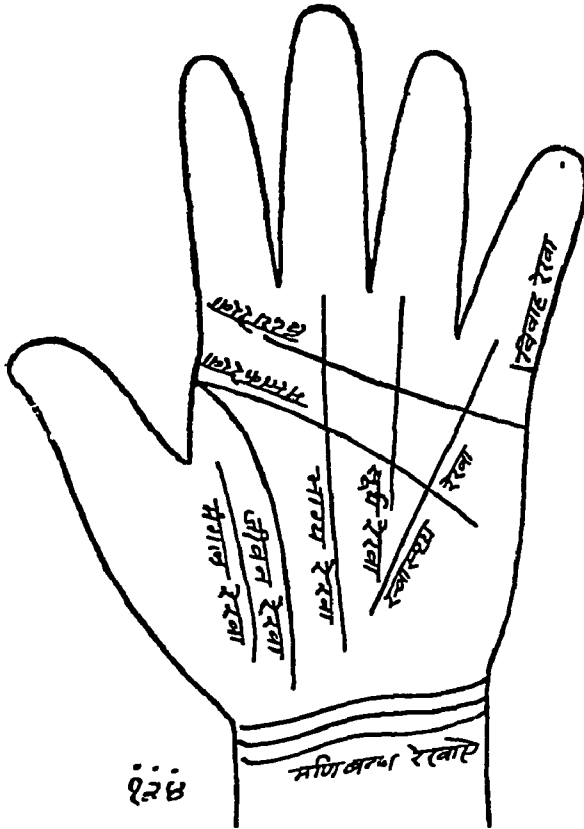
[पाश्चात्य-प्रणाली के अनुसार हाथ पर विभिन्न मुख्य_रेखाओ की स्थिति]

के पुत्र 'स्वामी कार्तिकेय' माने जाते हैं। स्वामी कार्तिकेय का एक नाम 'स्कन्द' भी है। अतः इस पद्धति को 'स्कन्द-प्रणाली' भी कहते हैं।

[पाश्चात्य-प्रणाली के अनुसार हथेली पर ग्रह-क्षेत्रों की स्थिति]

कार्तिकेयन-प्रणाली का प्रचलन दक्षिण भारत के मालावार-क्षेत्र में अत्यधिक है। वहां के हस्त-परीक्षक अन्य किसी मत को स्वीकृत न करके हस्त-परीक्षा के सम्बन्ध में केवल कार्तिकेयन-पद्धति को ही प्रमाण मानते हैं और इसी के आधार पर वे आश्चर्यजनक फलादेश करते हुए पाये जाते हैं।

काल-गणना

कार्तिकेयन-प्रणाली में हाथ की रेखाओं द्वारा काल-गणना के लिए हाथी की पूंछ के वाल का प्रयोग किया जाता है। अर्थात् हाथी की पूंछ के वाल की चौड़ाई जितने रेखा-स्थान को जातक के जीवन का एक वर्ष का समय माना जाता है। हाथ की पूंछ के वाल की चौड़ाई विभिन्न आकार की हो सकती है, परन्तु यहां पर उसका अभिप्राय औसत चौड़ाई का वाल समझना चाहिए। इस विधि से वर्ष के सूक्ष्मांशो को भी ज्ञात किया जा सकता है।

हथेली पर मुख्य रेखाओं तथा विभिन्न स्थानों की स्थिति

कार्तिकेयन-प्रणाली के अनुसार हथेली पर मुख्य रेखाओं तथा विभिन्न स्थानो की जो स्थिति मानी गई, है उसे चित्र संख्या १२६ में प्रदर्शित किया गया है।

इनके स्थानादि के सम्वन्ध मे शास्त्र में निम्नलिखित वर्णन पाया जाता है—

(१) 'करभ' तथा 'रोहिणी-रेखा' के ऊपर मणिवन्ध से आवृत्त तथा वन्ध-रेखा से नीचे के क्षेत्र को 'स्थान' कहा जाता है।

(२) जिस स्थान पर पहुंचा तथा हथेली मिलते है, उस मणिबन्ध के जोड़ वाले स्थान को 'सन्धि' कहा जाता है।

(३) जो रेखा सन्धि-स्थान पर रहती हुई हाथ को चारो ओर से घेरे रहती है, उसे 'मणिबंध-रेखा' कहा जाता है।

(४) जो रेखा पितृ-स्थान के नीचे से आरंभ होकर धर्म-स्थान की ओर वढ़ती है, उसे 'प्रथम-वध-रेखा' कहा जाता है। यह रेखा दोनो हाथों पर पाई जाती है।

(५) जो रेखा करभ स्थान, धर्म तथा जप के स्थान के समीप से आरम्भ होकर मातृ-पितृ स्थान के बीच में कहीं पहुंचती है, उसे
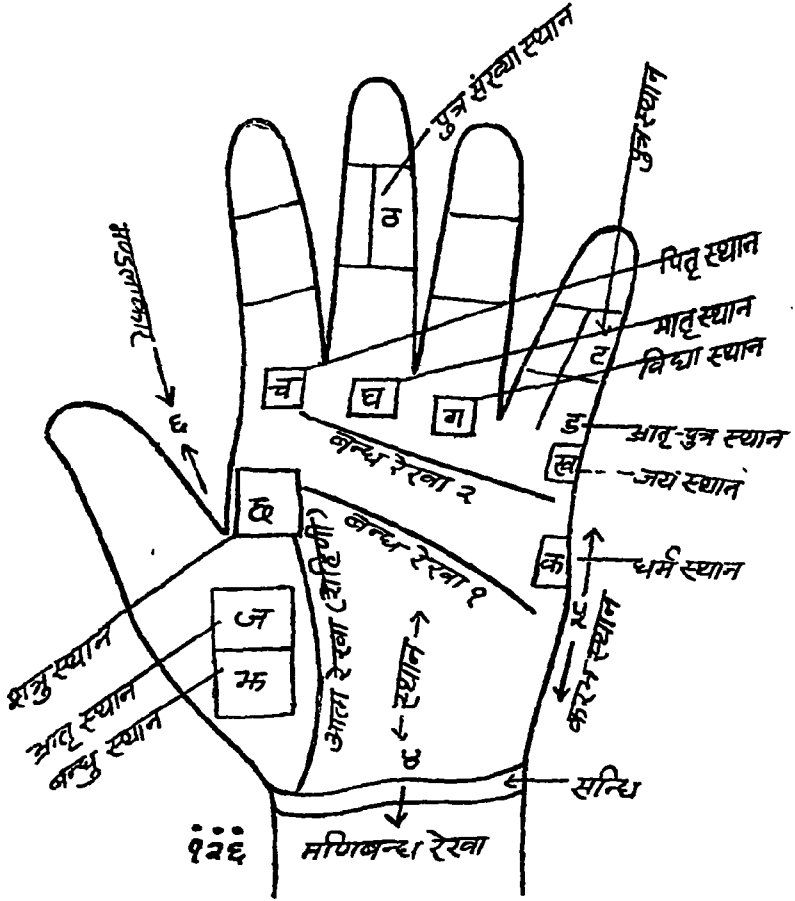
[कार्तिकेयन-प्रणाली के अनुसार हथेली पर विभिन्न रेखाओं तथा स्थानों की स्थिति]

'द्वितीय बंध-रेखा' कहते है। यह रेखा भी दोनों हाथो पर पाई जाती है।

(६) कुछ हाथों में यव-रेखा, मणिबंध-रेखा तथा कनिष्ठा उंगली के बीच तक के भाग मे किसी भी स्थान पर पाई जाती है। कनिष्ठा उंगली की सीध मे नीचे वाले इस क्षेत्र को 'करभ-स्थान' कहा जाता है।

(७) 'करभ-स्थान' से लगभग एक अंगुल की दूरी पर 'धर्म-स्थान' की स्थिति है। धर्म-स्थान के ऊपर तथा कनिष्ठा उंगली के समीप 'जप-स्थान' होता है।

(८) कनिष्ठा तथा अनामिका उंगलियों के मध्य भाग में जो एक स्थान उभरा हुआ-सा रहता है, उसे 'विद्या-स्थान' कहा जाता है।

(९) मध्यमा उंगली के नीचे तथा तर्जनी उंगली के वामपार्श्व मे जो उभरा हुआ स्थान होता है, उसे 'मातृ-स्थान' समझना चाहिए।

(१०) तर्जनी उंगली तथा द्वितीय यव-रेखा के मध्य का स्थान पितृ-स्थान होता है।

(११) पितृ-स्थान के नीचे तथा रोहिणी-रेखा के ऊपर अंगुष्ठ मूल में जो गड्ढा होता है, उसे 'शत्रु-स्थान' समझना चाहिए।

(१२) अंगूठे के मूल में जो उभरा हुआ स्थान रहता है, उसके ऊपर के अर्द्धभाग को 'भ्रातृ-स्थान' तथा नीचे के अर्द्ध भाग को 'बंधु-स्थान' समझना चाहिए।

(१३) कनिष्ठा उंगली के मध्य पर्व के आधे वाम भाग को 'पुत्र-स्थान' तथा उसी के ठीक नीचे वाले मूल पर्व के आधे वाले भाग को 'भ्रातृ-पुत्र-स्थान' (भाई के लड़के अर्थात् भतीजो का स्थान) समझना चाहिए।

(१४) मध्यमा अगुली के मध्य पर्व के आधे वाम भाग को 'पुत्र-संख्या-स्थान' अथवा 'संतान-संख्या-स्थान' समझना चाहिए।

(१५) अंगूठे के मूल भाग से हथेली के किनारे वाले पितृ-स्थान तक के बीच वाले क्षेत्र को 'मण्डलाकार' कहते हैं।

(१६) चारों उंगलियों के मूल का क्षेत्र, 'पितृ-स्थान' तथा अंगूठे के मूल का क्षेत्र—इस सम्पूर्ण स्थान को 'अस्पष्ट वंच' के नाम से पुकारा जाता है।
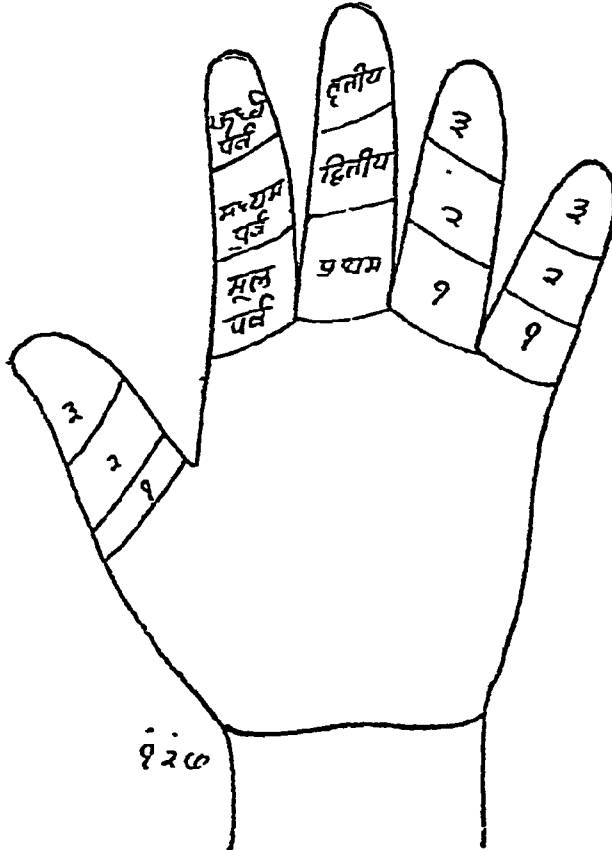
[उंगलियों के विभिन्न पर्व]

(१७) दसों उंगलियों में से प्रत्येक में तीन-तीन संधियां होती हैं, उन संधियों को 'पर्व' कहा जाता है। हथेली के समीप वाली सन्धि

को 'पहला पर्व', मध्य की सन्धि को 'दूसरा पर्व' तथा उंगली के सबसे ऊपर के भाग को 'तीसरा पर्व' कहा जाता है। अगूठे मे भी तीन ही पर्व माने जाते है।

चित्र सख्या १२७ मे उगलियों के विभिन्न पर्वों को प्रदर्शित किया गया है।

हाथ की रेखाओं का वर्णन

अब हम कार्तिकेयन-प्रणाली के आधार पर हाथ को रेखाओ की स्थिति और उनके प्रभाव का वर्णन करते हैं। जो निम्नानुसार है—

दाएं हाथ की रेखाएं

दाएं हाथ में पाई जाने वाली रेखाओ के नाम तथा उनके प्रभाव के सम्बन्ध में 'कार्तिकेयन-पद्धति' के विद्वानो के मत का साराश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

रोहिणी

रोहिणी-रेखा दाए हाथ मे मणिवध से आरम्भ होकर हथेली के बीच से होती हुई सीधी तर्जनी उंगली के मूल भाग तक जाती है (चित्र सख्या १२८)। इस रेखा का रग रक्तिम होता है। इस प्रकार की विना झुकी तथा अभग्न रेखा वाला जातक सौ वर्ष की आयु तक जीवित रहता है। यदि किसी स्थान पर इस रेखा मे कोई अन्तर दिखाई दे, तो उसे किसी असाध्य-रोग अथवा दुघटना का लक्षण समझना चाहिए।

यह रेखा दोनो हाथो मे पाई जाती है। यदि दोनो ही हाथों मे यह रेखा समान स्थानो पर टूटी हुई दिखाई दे, तो उसी वयोमान मे जातक की मृत्यु हो जाती है। इस रेखा के विषय में 'वृहद सामुद्रिक विज्ञान' के 'जीवन-रेखा' शीर्षक खण्ड मे विस्तृत प्रकाश डाला जा
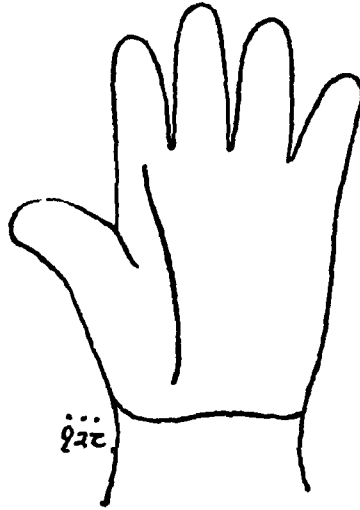
चुका है । अतः स्थिति एवं प्रभाव के सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए उक्त खण्ड का अध्ययन करना चाहिए ।

आशा

यह रेखा वृत्ताकार होती है तथा हथेली के मध्य भाग में पाई

जाती है (चित्र संख्या १२६)। यह रेखा जिस व्यक्ति के हाथ में हो, वह तीनों लोको में विजय प्राप्त करने वाला तथा त्रिलोको को अपने वशीभूत करने वाला होता है।

बाला

यह रेखा या तो रोहिणी-रेखा के मूल भाग से निकलती है अथवा उसके कुछ दाईं ओर से निकलकर आगे बढती हुई धर्म-स्थान की ओर मुड़ जाती है (चित्र संख्या १३०)। इस रेखा का रंग सुनहरा
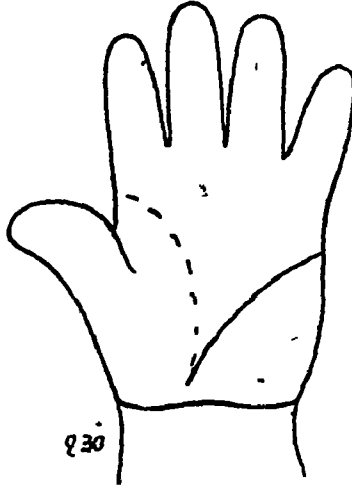
होता है। यह स्पर्श में कोमल होती है। इस रेखा के प्रभाव से वृद्ध-पुरुषों में भी युवकोचित प्रवृत्तियां पाई जाती हैं। यह रेखा प्रसन्नता, उत्साह तथा आनन्द को देने वाली होती है। ऐसी रेखा वाला व्यक्ति श्रेष्ठ जौहरी होता है। उच्च कोटि के जौहरियों के हाथ में ऐसी रेखा पाई जाती है।

मही

यह रेखा कनिष्ठा उगली के मूल से उत्पन्न होकर करभ-स्थान तक जाती है (चित्र सख्या १३१)। यह रेखा बहुत स्पष्ट तथा वक्र (टेढ़ी) होती है। जिस व्यक्ति के हाथ में यह रेखा होती है, वह सभी शास्त्रों का ज्ञाता होता है। यदि हाथ में अन्य लक्षण भी शुभ हो तो यह रेखा
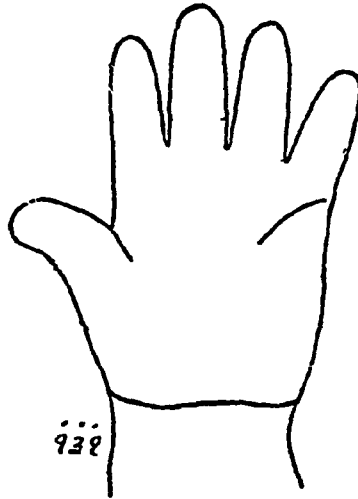
राजयोग-कारक भी बन जाती है, परन्तु इस रेखा का शुभ फल तभी होता है जबकि यह किसी अन्य रेखा अथवा रेखाओ द्वारा कटी हुई न हो। कुछ विद्वानों के मतानुसार इस रेखा का फल तभी प्राप्त होता है जबकि अन्य रेखाओं के द्वारा इसके प्रभाव की पुष्टि हो सके।

हृद्गत सत्वदा जाया

बंध-रेखा तथा मही-रेखा के मध्य भाग में कुछ वक्राकृति लिये हुए जो रेखाएं दिखाई देती है, उन्हें 'हृद्गत सत्वदा जाया' रेखा कहा जाता है (चित्र संख्या १३२)। इन रेखाओं द्वारा जातक की पत्नियों

के सम्बन्ध मे जानकारी प्राप्त की जाती है। अर्थात् ये रेखाए संख्या मे जितनी होती है, जातक की उतनी ही स्थाई अथवा अस्थाई पत्नियां होती हैं। कुछ विद्वान् इन रेखाओ को 'जाया-रेखा' (पत्नी-रेखा) के
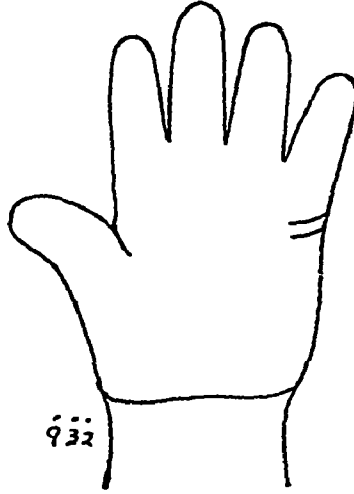
नाम से भी पुकारते है। नौकरी, आनन्द, सन्तानों का जन्म तथा स्त्री-सुख आदि विषयों का इन रेखाओ द्वारा ज्ञान प्राप्त किया जाता है।

इन्दिरा

यह रेखा मणिबध-रेखा से आरम्भ होकर ऊपर को उठती है तथा 'रोहिणी-रेखा' के दाई ओर मध्यमा उंगली के नीचे 'द्वारा-रेखा' तथा 'वध-रेखा' तक पहुचती है (चित्र सख्या १३३)। यह रेखा जातक को सभी क्षेत्रो में सफलता प्रदान करती है। यदि अन्य किसी रेखा से संयोग होने के कारण इस रेखा की आकृति 'मत्स्य' जैसी हो जाय तो जातक दीर्घायु, अच्छा स्वास्थ्य, धन तथा विद्या प्राप्त करता है।
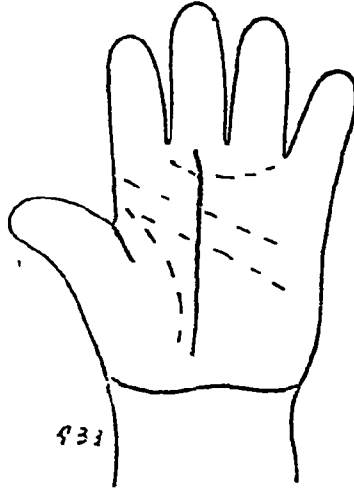
पुंजिका

धर्म-स्थान से नीचे पाये जाने वाले रेखाओं के समूह को 'पुंजिका'
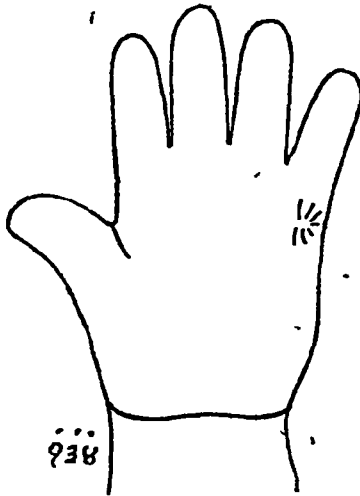
नाम से पुकारा जाता है (चित्र संख्या १३४)। इस रेखा के प्रभाव से युवावस्था में जातक की बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

कन्धु

यह रेखा करभ-स्थान के ऊपर, धर्म-स्थान के समीप, तर्जनी उंगली की ओर झुकी हुई पाई जाती है, (चित्र संख्या १३५)। यह रेखा

१३५
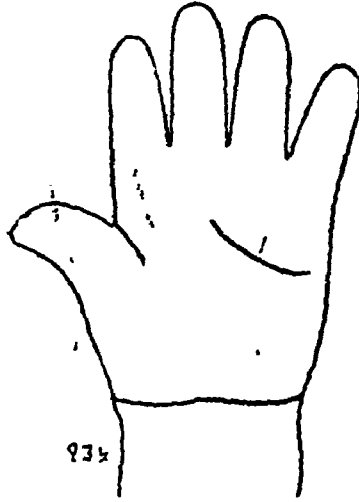
जिस व्यक्ति के हाथ में होती है वह सदैव दुःखी तथा रोगी बना रहता है, भले ही उसकी चिकित्सा स्वयं धनवन्तरि ही क्यो न करे। यह रेखा जातक को मस्तक सम्बन्धी रोगो से भी पीड़ित रखती है। स्त्रियों के लिए यह रेखा सन्तोषदायक तथा शुभ मानी गई है।

कमला

यह रेखा इन्दिरा-रेखा के बाईं ओर हथेली के मध्य भाग पर और कभी-कभी इन्दिरा रेखा के समान ही लम्बी तथा रक्तिम वर्ण वाली होती है (चित्र संख्या १३६)।

जिस व्यक्ति के हाथ मे यह रेखा होती है, वह दीर्घजीवी तथा विपुल-सम्पत्ति का स्वामी होता है। यहां दीर्घजीवन से तात्पर्य सम्पन्नता पूर्ण चौंसठ वर्षो से समझना चाहिए।
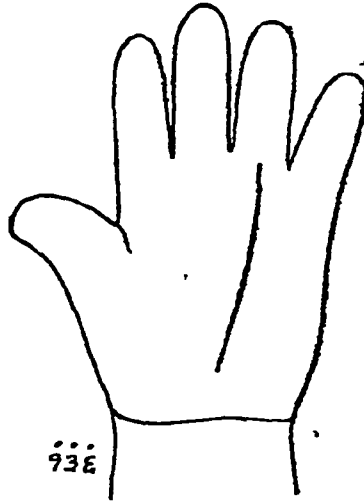
काम हरिन्तका

यह रेखा अनामिका उंगली के मूल के मध्य भाग तथा वन्ध-रेखा के बीच में स्थित रहती है (चित्र संख्या १३७)।
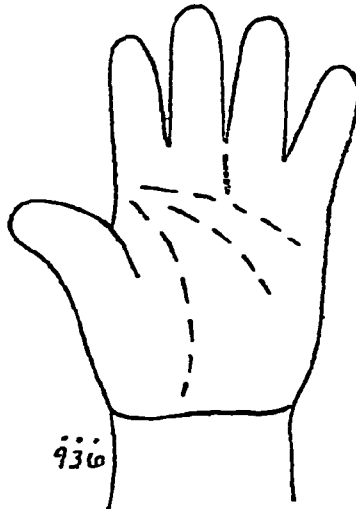
इस रेखा वाला व्यक्ति श्रेष्ठ पुत्रो का सुख तथा विविध प्रकार के आनन्द प्राप्त करता है। यदि यह रेखा किसी स्त्री के हाथ मे हो तो उसे सुख धन तथा सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

रतिप्रदा

यह रेखा कनिष्ठा उंगली के मूल भाग में स्थित रहती है। यह आकार मे छोटी, पतली परन्तु स्वर्ण के समान आभायुक्त होती है
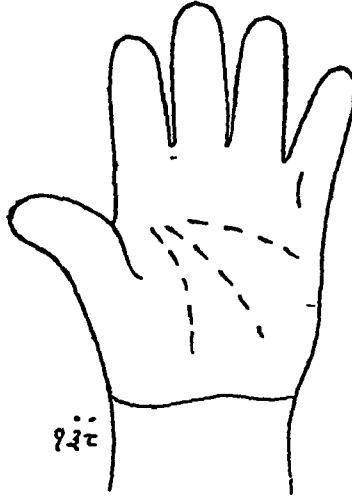
(चित्र संख्या १३८)। यह रेखा विवाह सम्बन्धो सुख तथा रति के आनन्द को देने वाली कही गई है।

हेमवल्ली

यह रेखा अनामिका उंगली के मूल भाग में कुछ टेढ़ापन लिये हुए स्थित रहती है (चित्र संख्या १३९)। इस रेखा का रंग स्वर्ण के समान चमकदार होता है। यह रेखा सम्भोग सुख को प्रदान करने वाली कही गई है।
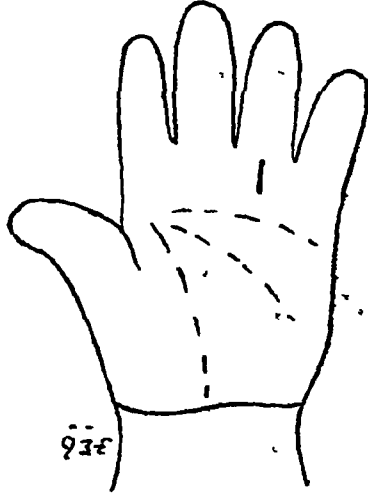
ऐसी रेखा वाला जातक विविध सहवास-सुखों को प्राप्त करता है।

पत्

यह रेखा मध्यमा उंगली के मूल भाग मे स्थित रहती है तथा कुछ मोटी होती है (चित्र संख्या १४०)।
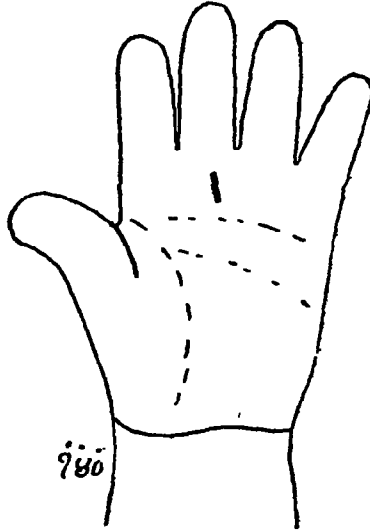
ऐसी रेखा वाला जातक भ्रातृ-सुख, अनन्त ज्ञान तथा अन्य सभी प्रकार के आनन्दों का उपभोग करता है। अन्तकाल मे यह रेखा जातक को ब्रह्मपद (निर्वाण अथवा मोक्ष) देने वाली कही गई है।

पवित्र तनु

इस रेखा की अवस्थिति तर्जनी उगली के मूल भाग मे रहती है। यह रेखा आकृति में पतली; कुछ टेढी तथा श्वेत रंग की होती है (चित्र संख्या १४१)।

१४१
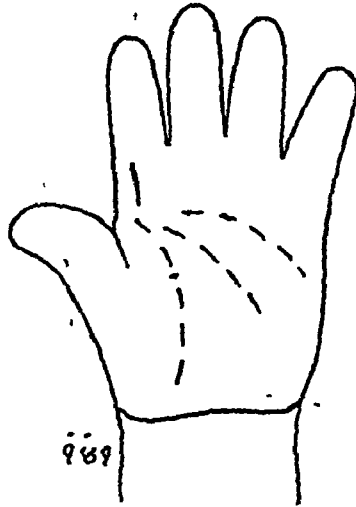
जिस जातक के हाथ मे यह रेखा पाई जाती है, वह मनसा-वाचा-कर्मणा शुद्ध स्वभाव का होता है।

इस रेखा वाले जातक का चरित्र तथा स्वभाव निर्मल एवं पवित्र होता है, वह समस्त सद्गुणों की खान तथा अवगुणों से रहित होता है।

कृता

यह रेखा अंगुष्ठ मूल एवं संधि-रेखा से कुछ अलग हटकर स्पष्ट होती है। यह आकार में टेढ़ी तथा छोटी होती है (चित्र संख्या १४२)। इसका रंग लालिमा लिए होता है।

१४२
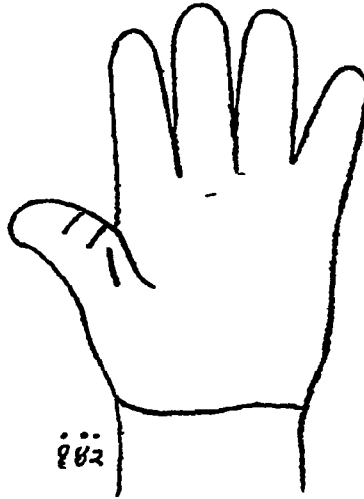
यह रेखा जातक के कर्मों का शुभ फल प्रदान करने वाली होती है तथा स्त्री और पुरुष-दोनों में समान रूप से प्रभाव डालकर उनमे उत्साह तथा शक्ति का संचार करती है।

महामति

यह रेखा कनिष्ठा तथा अनामिका अंगुली के मध्य भाग मे पाई जाती है। यह छोटी-बड़ी कई तरह के आकार की हो सकती है (चित्र संख्या १४३)।

यदि इस रेखा का झुकाव दाई ओर (कनिष्ठा उंगली की ओर)
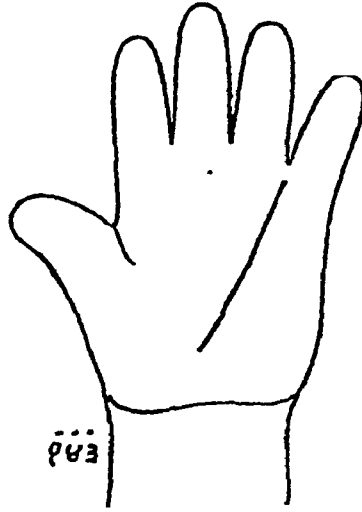
अधिक हो तो जातक श्रेष्ठ पहलवान होता है। ऐसी रेखा वाले स्त्री-पुरुष अत्यन्त बुद्धिमान, गुणवान तथा विद्वान् होते हैं।

पति

कनिष्ठा उंगली तथा मध्यमा उगली के बीच से आरम्भ होकर जो रेखाए नीचे की ओर बढ़ती हैं, उन्हें 'पति-रेखा' कहा जाता है। इन रेखाओं में जो भी रेखा अधिक लम्बी होती है, उसे 'महापति-रेखा' कहा जाता है और जो रेखा लम्बाई मे सबसे कम होती है, उसे 'अल्प-पति रेखा' कहा जाता है (चित्र संख्या १४४)। जो रेखा इन 'महापति' तथा 'अल्पति' रेखाओं से छोटी होती है, उसे 'पतिरेखा' कहते है। यह रेखाएं गहरी, चौड़ी तथा चमकदार होती हैं। पति-रेखा यदि अनामिका उंगली के नीचे से आरम्भ हो तो यह अधिक सन्तान देने वाली होती है। यह रेखाएं काम-शक्ति मे वृद्धि करने वाली होती है।

१४४
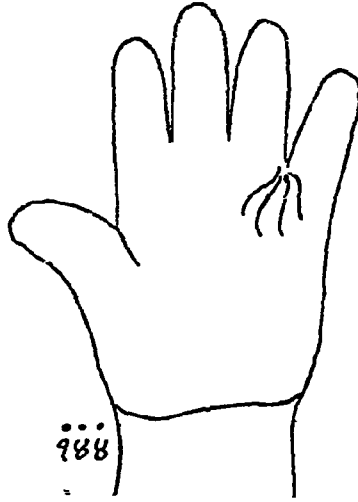
श्लेशा

यह रेखा तर्जनी तथा मध्यमा उंगली के बीच से नीचे की ओर जाती है (चित्र संख्या १४५)।

१४५
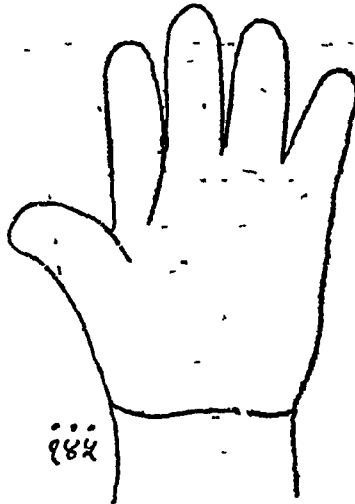
इस रेखा के प्रभाव से जातक हर समय विभिन्न प्रकार की चिन्ताओं मे डूबा रहने वाला होता है।

यह रेखा क्लेश को देने वाली कही गई है।

हार

यह रेखा मध्यमा उगली के मूल भाग मे प्रतिपदा के चन्द्रमा की भाति पाई जाती है। (चित्र सख्या १४६)।
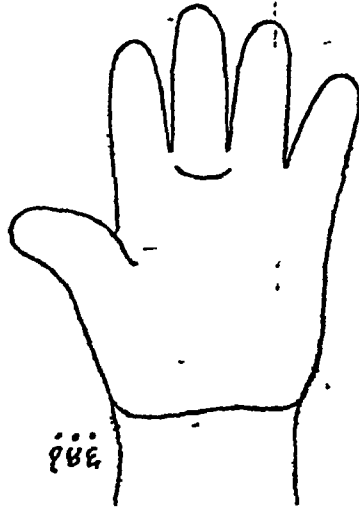
इस रेखा वाला पुरुष जातक राजाओं का प्रिय होता है तथा ऐसी रेखा वाली स्त्रियां मूल्यवान रत्नाभूषणों को धारण करने वाली तथा गौरव-गर्विता होती हैं।

यदि इस रेखा का उभार अत्यन्त स्पष्ट हो तो जातक को राजकीय सेवा का अवसर प्राप्त होता है। कुछ विद्वान इस रेखा को 'चन्द्र-रेखा' के नाम से भी पुकारते है।

मन्दोष्णादा

यह रेखा आकृति में 'हार' रेखा जैसी ही होती है, परन्तु यह तर्जनी तथा अनामिका अगुलियों के नीचे रहकर मध्यमा उगली के क्षेत्र को घेरे हुए दिखाई देती है (चित्र संख्या १४९)।
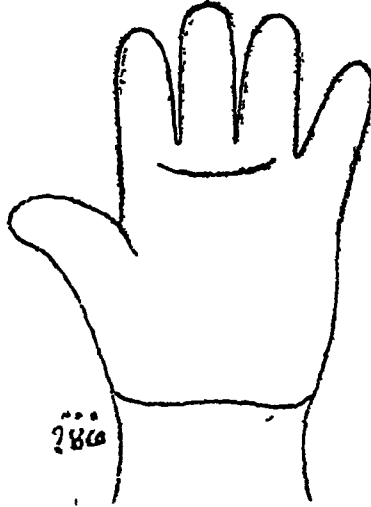
इस रेखा वाले व्यक्तियो का शरीर स्पर्श करने में अत्यन्त शीतल होता है। यह रेखा जातक को मन्द-बुद्धि बनाती है तथा व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक कठिनाइयां उपस्थित करती है।

टिप्पण—यह रेखा 'शुक्र-मुद्रिका' जैसी ही होती है।

निष्ठा

यह रेखा अनामिका उगली के मूल से आरम्भ होकर कनिष्ठा उंगली के मूल तक बढ़ती हुई तथा जप-स्थान को काटती हुई, धर्म-स्थान की ओर चली जाती है (चित्र संख्या १४८)। इसकी आकृति पतली होती है।
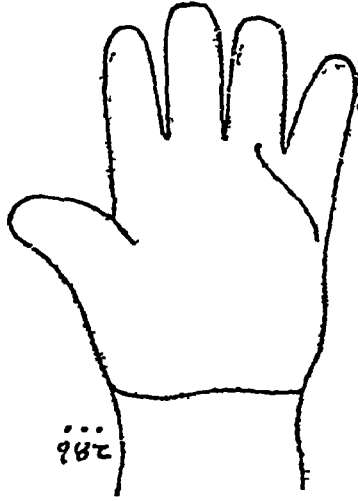
यह रेखा जितनी बड़ी आकृति की होती है, जातक उतना ही दीर्घ-जीवी होता है। ऐसी रेखा वाला जातक धार्मिक-भावनाओं से परिपूर्ण रहता है।

धात्री

यह रेखा मणिबंध से आरम्भ होकर 'रोहिणी-रेखा' के बाए पार्श्व में जाती है। उसी के संयोग से अथवा किन्ही अन्य रेखाओं के योग से

यह रेखा मत्स्य अथवा शंख की आकृति ग्रहण कर लेती है (चित्र संख्या १४९)।

इस रेखा मे अनेक ऊपर की ओर उठी हुई उप-रेखाएं भी पाई जाती है।

यह रेखा जातक को सब प्रकार के ऐश्वर्य तथा भू-सम्पत्ति देने वाली कही गई है।
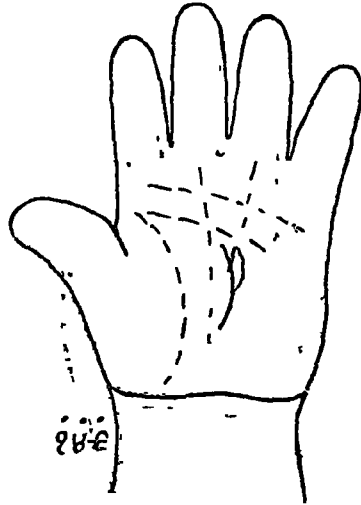
गोपी

यह रेखा मणिबंध से आरम्भ होकर सम्पूर्ण हथेली को पार करता
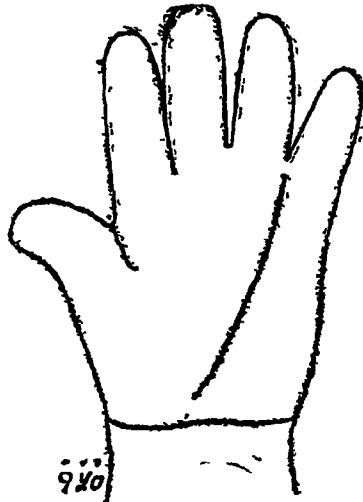
हुई अनामिका तथा कनिष्ठा उंगली के मूल के मध्य भाग में जांकर समाप्त होती है (चित्र संख्या १५०)।

यह रेखा जातक को राजा अथवा राज्य के भय से मुक्त करती है तथा जीवन को उन्नत बनाती है।

प्रियव्रता

यह रेखा करभ-स्थान से निकलकर ऊर्ध्वगामी होती हुई कनिष्ठा उंगली के मूल तक जाती है (चित्र संख्या १५१)। यह रेखा धर्म के फल को प्रदान करने वाली कही गई है। ऐसी रेखा वाला जातक धर्मात्मा तथा पुण्यात्मा होता है।

१५१
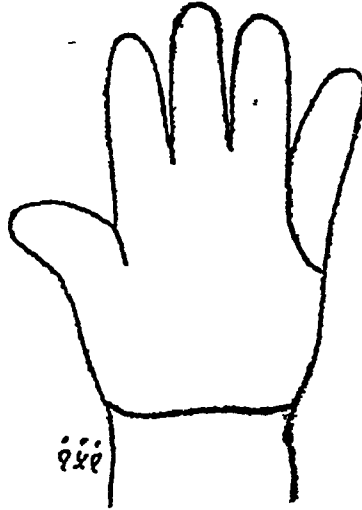
यह रेखा पूर्व जन्म के शुभ कर्म तपस्या के आधार पर श्रेष्ठ गुणा को देने वाली होती है। कुछ विद्वान् इस रेखा को 'मागधी' नाम से भी पुकारते है।

धेनुका

यह रेखा मणिबंध से आरम्भ होकर 'इन्दिरा-रेखा' के वाम-पार्श्व
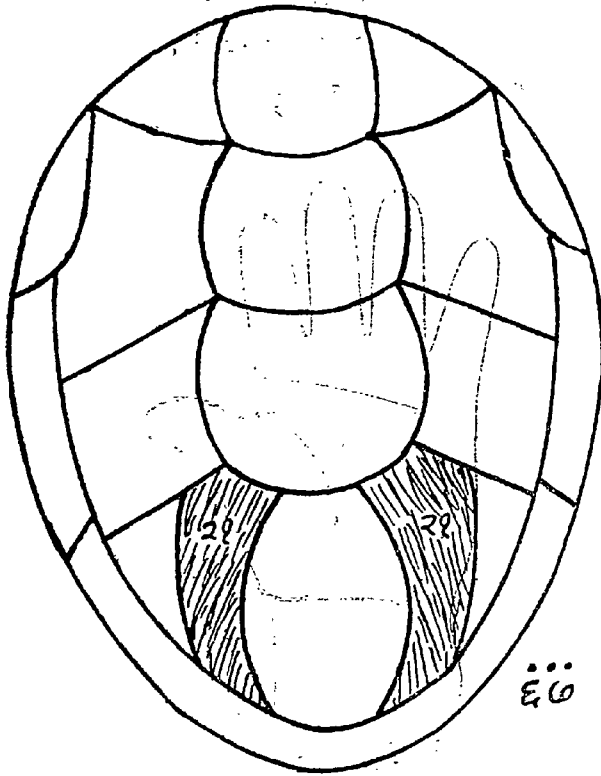
अनुकरण करता है। यदि विद्वता के लक्षण न हों तो जातक दूसरों
की नकल करने, लोगों का मजाक बनाने तथा चुहलबाजी करने में
प्रवीण होता है।

ऐसे उन्नत स्थान वाले व्यक्ति की हथेली में बुध का क्षेत्र ऊंचा
उठा हुआ रहता है, साथ ही शुक्र-क्षेत्र एवं सूर्य-क्षेत्र भी उन्नत होते
हैं। हाथ की उंगलियां चिकनी तथा मिश्रित प्रकार की होती हैं।
सूर्य-रेखा अच्छी होती है। हृदय-रेखा गहरी होती है तथा मस्तक-
रेखा के मोड़ पर एक तीर जैसा बड़ा चिन्ह पाया जाता है जो शुभ होता
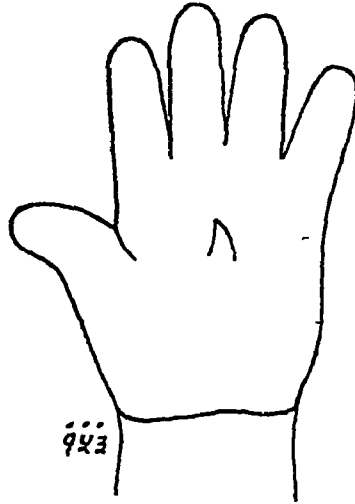
धनप्रदा

यह रेखा मणिबंध से आरम्भ होकर 'इन्दिरा-रेखा' के वाम पार्श्व
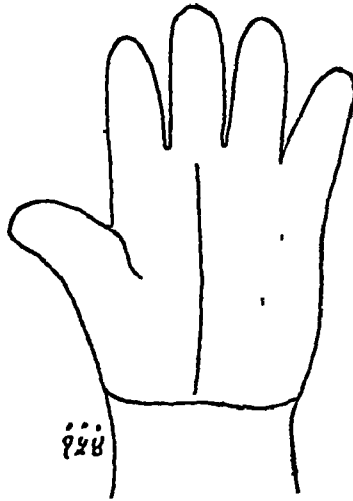
मे होती हुई मध्यमा उंगली के मूल स्थान तक सीधी चली जाती है (चित्र सख्या १५४)।

यह रेखा जातक की इच्छा के अनुसार, धन प्रदान करने वाली तथा सुख-सम्पत्ति मे वृद्धि करने वाली होती है।

गोदा

यह रेखा 'रोहिणी-रेखा' के वाम पार्श्व से उत्पन्न होकर, ऊर्ध्वगामिनी बनकर कनिष्ठा उगली के मूल स्थान तक जाती है (चित्र सख्या १५५)।
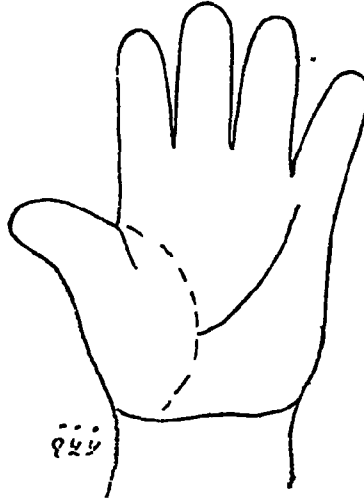
यदि यह रेखा टूटी-फूटी न होकर स्पष्ट आकृति की हो तो जातक को धन-धान्य से पूर्ण करने वाली सिद्ध होती है।

कुछ विद्वानों के मतानुसार इस रेखा का प्रारम्भ कभी-कभी आत्म-रेखा से होते हुए भी देखा गया है।

हन्त्री

यह रेखा धर्म-स्थान से आरम्भ होकर इन्दिरा तथा रोहिणी-

रेखाओं को काटती हुई अगूठे के मूल भाग तक जाती है (चित्र संख्या १५६)।

१५६
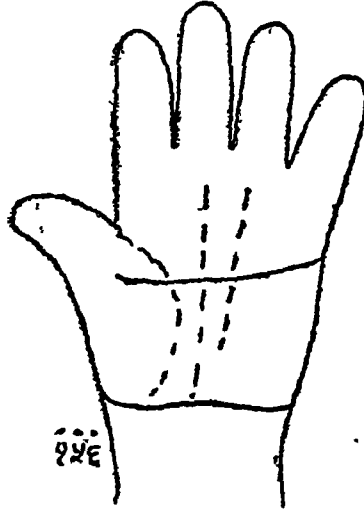
यह रेखा जातक के सम्पूर्ण धन-धान्य एव सम्पत्ति का नाश कर देने वाली कही गई है।

गोमती

यह रेखा रोहिणी-रेखा के मूल भाग से आरम्भ होकर हथेली के मध्य भाग को पार करती हुई अनामिका उगली के मध्य पर्व तक जा पहुंचती है (चित्र संख्या १५७)।

ऐसी रेखा वाला जातक समस्त ज्ञान-विज्ञान एव कलाओं का ज्ञाता तथा ऐश्वर्यवान् होता है। कुछ विद्वान इस रेखा को 'विद्या-रेखा' अथवा 'ज्ञान-रेखा' भी कहते हैं।
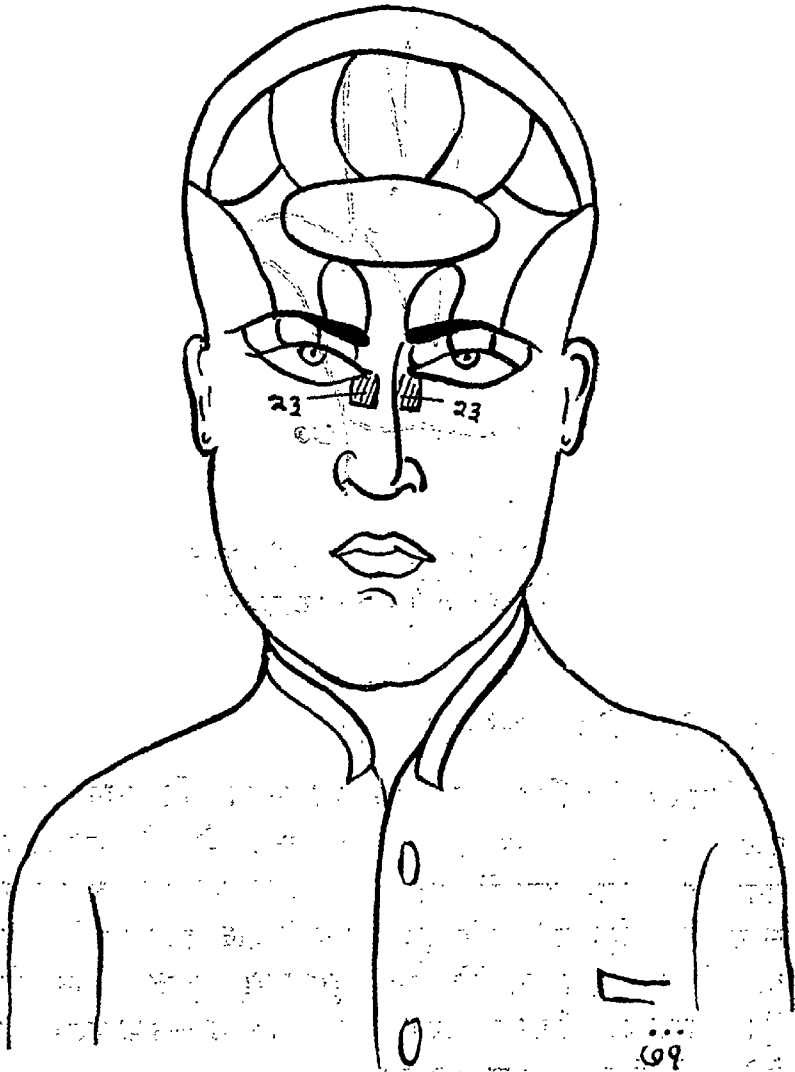
सुन्दर हो और उंगलियां चिकनी तथा सामान्य रूप से चौकोर हों (चित्र संख्या ७२) तो जातक कला के प्रति सम्मान रखने वाला होता है।

यह रेखा जिस व्यक्ति के हाथ में होती है, उसे प्रचुर मात्रा मे धन प्राप्त होता है।

कुछ विद्वान् इस रेखा को 'विद्याधार-रेखा' भी कहते है।

ऊर्ध्व-रेखा

यह रेखा मणिबन्ध से आरम्भ होकर सम्पूर्ण हथेली को पार करती हुई मध्यमा उगली के ऊपर तक जाती है (चित्र संख्या १५६)। यह
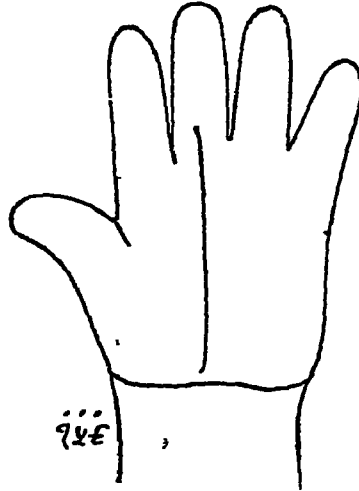
रेखा यदि शाखा-रहित और अविच्छिन्न हो तो जातक सौ वर्ष की आयु तक सुखी तथा सम्पन्न-जीवन व्यतीत करता है तथा मृत्यु के पश्चात् परम-पद को पाता है।

ऊर्ध्व पद प्राप्त कराने वाली होने के कारण ही इसका नाम 'ऊर्ध्व-रेखा' पड़ा है। यदि यह रेखा शाखायुक्त अथवा टूटी-फूटी हो तो इसका फल अशुभ होता है।

माधवी

यह तिर्यक्-रेखा अंगूठे के ऊपरी भाग पर पाई जाती है (चित्र संख्या १६०)।

यदि यह रेखा अनेक शाखाओं मे विभक्त हो अर्थात् अगूठे के ऊपरी भाग पर यदि ऐसी एक से अधिक रेखाएं हों, तो यह और भी प्रभावशाली सिद्ध होती है।

ऐसी रेखा जिस व्यक्ति के होती है, वह व्यक्ति सदैव प्रसन्न बना रहता है तथा मद्यपान से घृणा करता है।

मति

यह रेखा अंगूठे के मूल भाग में पाई जाती है (चित्र संख्या १६१)।

यदि यह रेखा आकृति में लहरदार हो, तो जातक मन्द-बुद्धि होता है। यदि इस रेखा में से कुछ शाखा-रेखाएं ऊपर की ओर जा रही हो तो जातक की आकृति (चेहरा) भी खराब होती है सामान्यतः इस

१६१
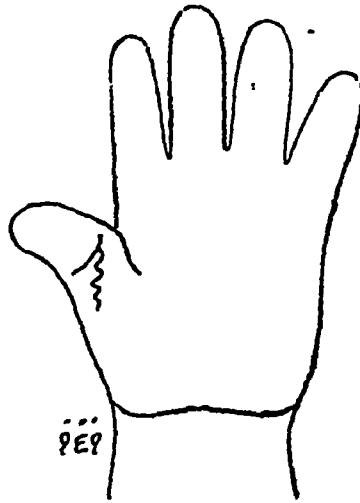
रेखा का प्रभाव मति-भंगकारक है। यदि सधि-स्थान पर ऐसी दो से अधिक रेखाए हो तो वे परिचायत्मक परिणाम देने वाली होती है।

कुण्ड

यह रेखा अंगूठे के मूल भाग मे पाई जाती है। इसकी आकृति

१६२
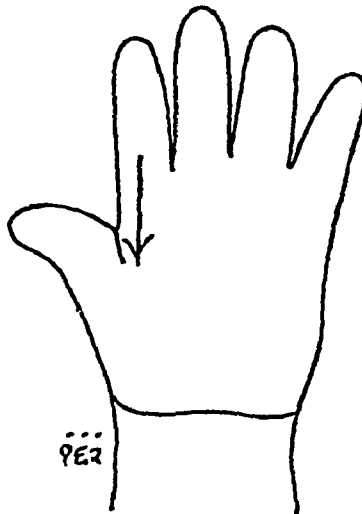
भाले जैसी होती है अर्थात् इस रेखा के मूल से दो अन्य रेखाएं निकल-कर दोनों ओर को इस प्रकार फैल जाती है कि वहां तीर की नोंक अथवा भाले जैसा चिन्ह बन जाता है (चित्र सख्या १६२)।

यह रेखा यदि तर्जनी उगली की ओर झुकी हुई हो तो भाइयों की संख्या में वृद्धि की सूचक होती है। सामान्यतः यह रेखा मित्र, शुभ-चिन्तक, भाई-बन्धु, पुत्र तथा सम्बन्धियों को देने वाली कही गई है।

अपने नाम के अनुरूप ही यह रेखा जातक को कण्डु (खुजली) आदि त्वचा-रोग भी देती है। कुछ विद्वानों के मतानुसार यह रेखा सीप अथवा शंख जैसी आकृति की भी होती है, परन्तु उससे इसके प्रभाव में कोई अन्तर नहीं पड़ता।

कनिष्ठा

यह रेखा अगूठे के नीचे भ्रातृ-स्थान से आरम्भ होकर तर्जनी उगली की ओर मुड़ जाती है। यदि ऐसी रेखाए एक से अधिक हों (चित्र संख्या १६३) तो उनसे जातक के भाई-बहनों की सख्या का पता चलता है। मोटी रेखाए भाइयो की तथा पतली रेखाएं बहनों की सूचक समझनी चाहिएं।

यदि ये रेखाएं बधु-स्थान के सिरे से परे तर्जनी, मध्यमा, अनामिका अथवा कनिष्ठा उगलियों की ओर जाएं, परन्तु उगलियों का स्पर्श न करती हों, तो उन्हे भी भाइयों की संख्या का सूचक ही समझना चाहिए, परन्तु यदि ये रेखाए नीचे (मणिबन्ध) की ओर जा रही हो तो ऐसा फल नही होता।

यदि ये रेखाए अपरिपक्वास्था में भ्रातृ-स्थान पर स्थित हों तो इन्हे सम्बन्धियों की सूचक समझना चाहिए।
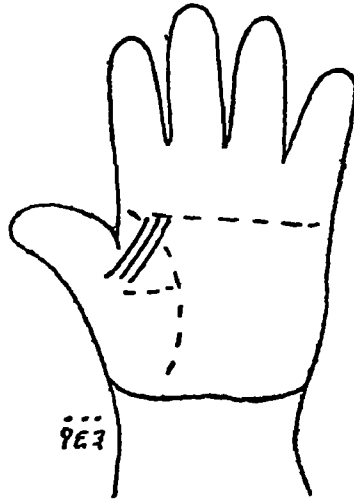
सौराष्ट्रिका

यह रेखा अंगूठे के मूल पर्व से आरम्भ होकर उसके ऊपरी पर्व तक फैली रहती है (चित्र सख्या १६४)।
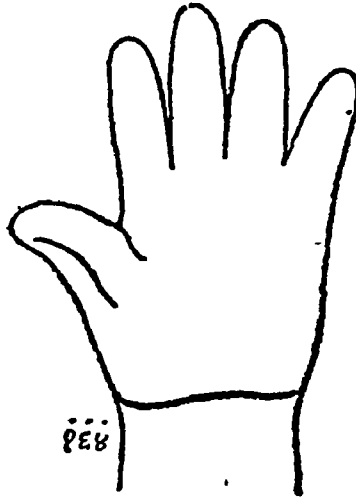
जातक के हाथ में ऐसी जितनी भी रेखाए होती है, उसके उतने ही शत्रु होते है। यदि यह रेखा 'स्फुरत्तनु-रेखा' का (जिसका वर्णन आगे किया गया है) स्पर्श करती हो तो जातक शत्रुओं द्वारा दु:ख प्राप्त करता है।

यदि ये रेखाए एक से अधिक सख्या में हो और उनमें से कोई रेखा मण्डलाकार होकर नीचे की ओर जाए तो जातक अपने पद से नीचे गिर जाता है।

यदि इन रेखाओं को किसी अन्य रेखा द्वारा काट दिया गया हो, तो जातक द्वारा धर्म-परिर्वतन कर लेने की सम्भावना रहती है।

यदि यह रेखा देखने मे लहरदार हो, तो जातक स्वतन्त्र-प्रकृति का होता है, वह पराधीन नही रहता। ऐसी रेखा यदि किसी राजा के हाथ में हो तो वह सम्पन्नता एव परोक्षता प्रदान करने वाली होती है।

स्फुरत्तनु

यह रेखा मणिबन्ध से आरम्भ होकर रोहिणी-रेखा के दाईं ओर
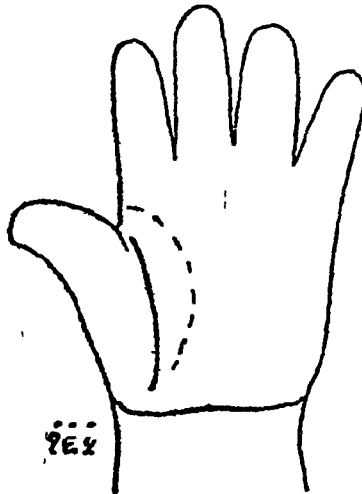
होती हुई शत्रु-स्थान तक जाती है, (चित्र संख्या १६५)। यह रेखा मण्डलाकार मोड़ लेती है।

यह रेखा शरीर की कान्ति बढाने वाली तथा मंगल वस्तुओं को प्रदान करने वाली होती है।

रुक्मप्रभा

यह रेखा अंगूठे के ऊर्ध्व पर्व पर पाई जाती है (चित्र संख्या १६६)। इसकी आकृति दीप-शिखा जैसी होती है।

१६६
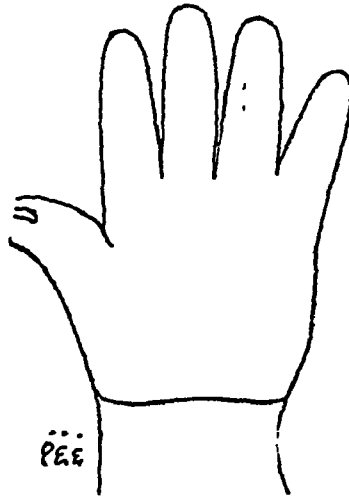
जिस व्यक्ति के हाथ मे यह रेखा पाई जाती है, वह विश्व नेता के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त करता है। इस रेखा का प्रभाव अत्यन्त शुभ, यश, धन, मान-प्रतिष्ठा तथा सुख की वृद्धि करने वाला होता है।

भवित्री

यह रेखा अंगूठे के ऊपरी अथवा मध्य भाग से आरम्भ होकर नाखून के सिरे तक पाई जाती है (चित्र संख्या १६७)। यदि यह रेखा गहरी, श्याम वर्णयुक्त तथा पुरानी हो तो इसके प्रभाव से जातक तीनों
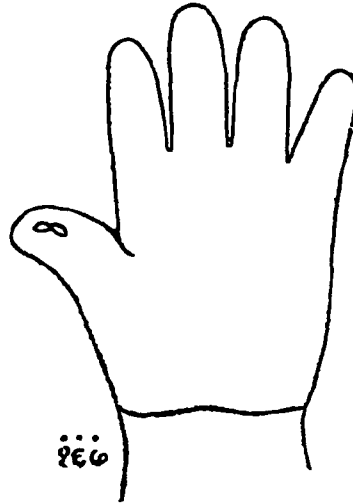
लोकों का प्रिय होता है अर्थात् उसे ससार के सभी प्राणी स्नेह करते हैं।

कपिला

यह रेखा अगूठे के मूल भाग से कुछ ऊपर की ओर जाती हुई तथा मोटापन लिये हुए दिखाई देती है (चित्र संख्या १६८)।

ऐसी रेखा वाला व्यक्ति धन-धान्य, स्वास्थ्य, सन्तान, स्त्री, सम्बन्धीजन आदि सब प्रकार के सुखो को विपुल मात्रा में प्राप्त करता हुआ सौ वर्ष तक जीवित रहता है।

कामवल्ली

यह रेखा 'कपिला' (जिसका वर्णन ऊपर किया जा चुका है) तथा 'युक्ता' (जिसका वर्णन आगे किया जाएगा) के ऊपरी भाग मे पाई जाती है। यह रेखा अपने मध्य भाग से घुमावदार अर्थात् कोण जैसे आकार की होती है (चित्र सख्या १६९)।
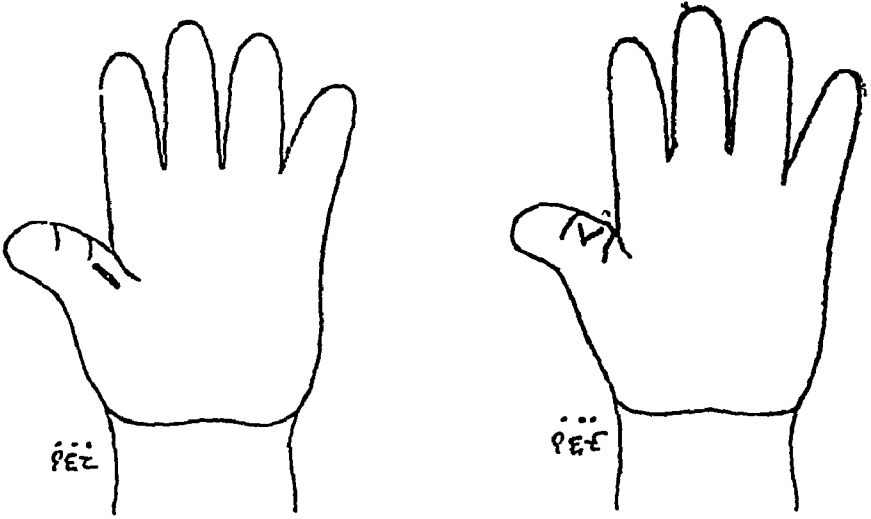
यह रेखा मन-वाछित फल प्रदान करती है। इस रेखा के प्रभाव से जातक स्त्रियो को वशीभूत करने वाला, अत्यन्त आकर्षक, समृद्ध तथा यशस्वी होता है ।

कन्दली

यह रेखा अगूठे के ऊपरी भाग पर पाई जाती है तथा आकार मे कुछ मोटी होती है (चित्र सख्या १७०) ।

यदि पुरुप जातक के हाथ मे यह रेखा हो तो उसे सम्राट् अथवा विपुल ऐश्वर्यशाली बनाती है ।

यदि किसी स्त्री के हाथ मे यह रेखा हो तो उसे दाम्पत्य-सुख तथा अन्य सभी प्रकार के सुख विपुल मात्रा में प्राप्त होते है। कुछ विद्वान् इस रेखा को 'युक्ता' के नाम से भी पुकारते है ।
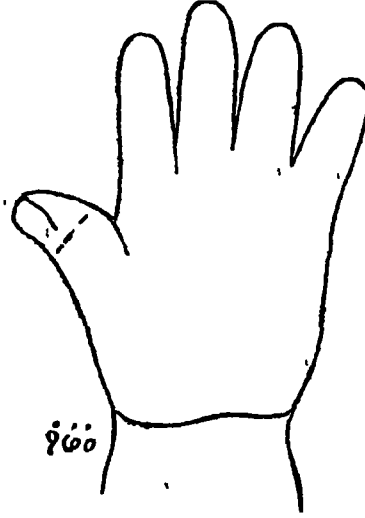
युक्ता

यह रेखा अंगूठे के प्रथम तथा द्वितीय पर्व के बीच में पाई जाती है। इसका आकार सन्धि-रेखा के समान अर्द्ध चन्द्राकार होता है (चित्र संख्या १७१)।
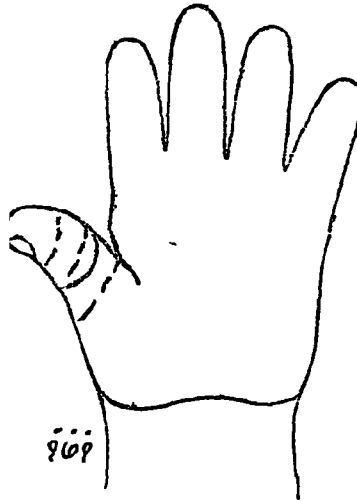
यह रेखा जिस व्यक्ति के हाथ में हो वह सम्राट् अथवा विपुल ऐश्वर्यवान् होता है। ऐसे जातक अपने बुद्धिमत्तापूर्ण कार्यों द्वारा पर्याप्त ख्याति अर्जित करते हैं।

गुलिनी

यह रेखा तर्जनी उगली के मध्य भाग मे अथवा उसके कुछ नीचे की ओर गोलाई लिये हुए पाई जाती है (चित्र सख्या १७२)।
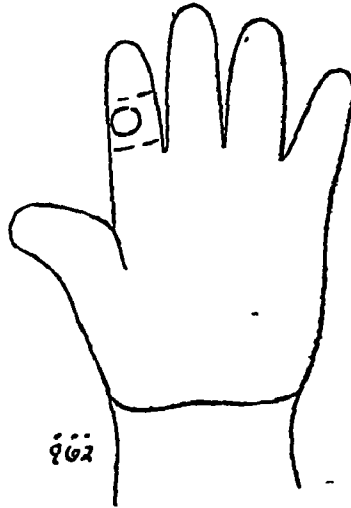
इस रेखा के प्रभाव स्वरूप जातक के जीवन तथा ख्याति मे कुछ कमी आ जाती है। यदि यह रेखा मध्य पर्व से कुछ ऊपर को ओर हो तो जातक दीर्घ-जीवन तथा यश—दोनो को ही प्राप्त करता है।

अरुणा

यह रेखा गुलिनी से ऊपर अर्थात् तर्जनी उगली के मध्य पर्व मे पाई जाती है (चित्र सख्या १७३)। इस रेखा का रग लाल होता है।

यदि किसी स्त्री के हाथ में यह रेखा हो तो उसके शरीर का रंग कुछ लालिमा लिये हुए होता है। यदि यह रेखा गहरी हो तो जातक को अशुभ फल प्रदान करती है।

१७३
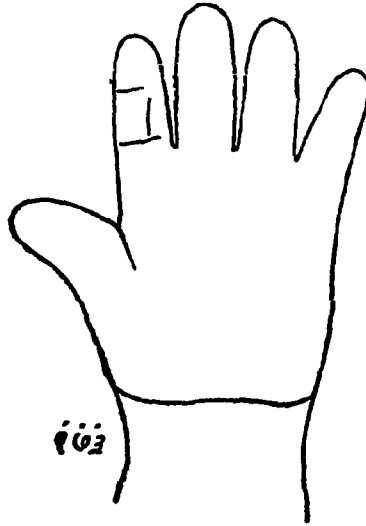
इस रेखा के प्रभाव के सम्बन्ध में विशेष विवरण नही मिलता, परन्तु इस रेखा वाला व्यक्ति अभिनयात्मक प्रवृत्ति का होता है। यह रेखा ऊर्ध्वगामी होती है।

वीरकण्टका

तर्जनी उंगली के द्वितीय पर्व में छोटी-छोटी पांच सीधी खड़ी रेखाओं को 'वीरकण्टक-रेखा' कहा जाता है (चित्र सख्या १७४)।

ये रेखाएं योद्धाओं को युद्ध क्षेत्र में सफलता प्रदान करने वाली होती हैं, परन्तु यदि इन रेखाओं की संख्या कम हो तो वे योद्धाओं को कण्टक स्वरूप अर्थात् हानि पहुंचाने वाली होती हैं।
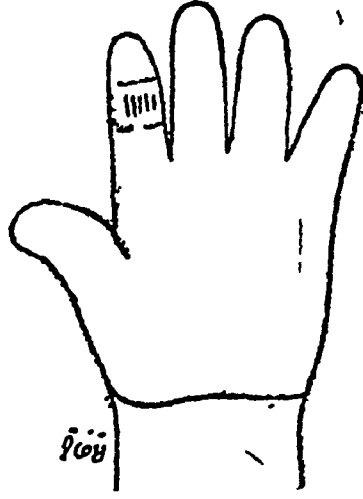
हस्ता

यह रेखा तर्जनी उंगली के पहले पर्व में एक ओर को खड़ी रहती है। यह आकार में पतली तथा रग में पीलापन लिए होती है (चित्र सख्या १७५)।
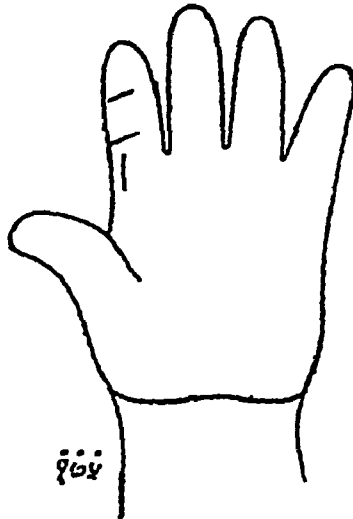
इस रेखा वाला व्यक्ति खुले हाथों से दान करने वाला होता है। इस रेखा के प्रभाव से जातक अवगुण तथा हाथ के रोगों से मुक्त भी रहता है।

महिष्ठः

यह रेखा तर्जनी उंगली के द्वितीय पर्व के मध्य भाग मे अथवा उससे कुछ नीचे की ओर पाई जाती है (चित्र संख्या १७६)।

१७६
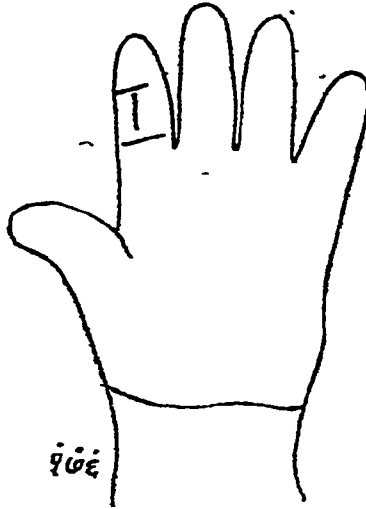
यह रेखा अपने नाम के अनुरूप ही जातक को शुभ फल देने वाली कही गई है।

शुर्निणी

यह रेखा तर्जनी उगली के द्वितीय पर्व के मध्य भाग मे द्वीप के आकार की होती है अथवा यो कहिए कि महिष्ठ. रेखा के चारों ओर घेरा बनाती है (चित्र सख्या १७७)।

यह रेखा जातक को शारीरिक-शक्ति प्रदान करती है, परन्तु उसकी अवनति का कारण भी वन जाती है।
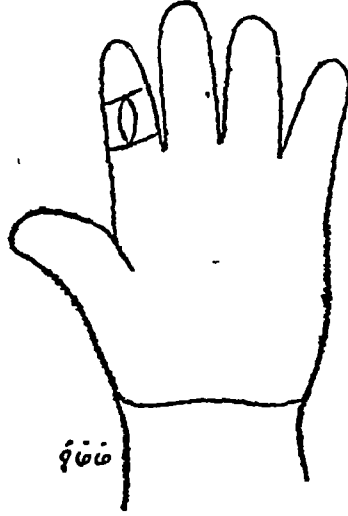
ऐसी रेखा वाला पुरुष स्थूल शरीर का होता है तथा ऐसी रेखा वाली स्त्रियों में सन्तानोत्पादन शक्ति अधिक पाई जाती है।

धन्त्रिनी

यह रेखा तर्जनी उगली के तीनों पर्वों पर फैली रहती है, परन्तु मध्य भाग मे न रहकर, उगली के दाए किनारे पर होती है (चित्र सख्या १७८)।

यह रेखा जातक को ख्याति-रहित गर्व तथा धन-रहित दीर्घायु प्रदान करती है।
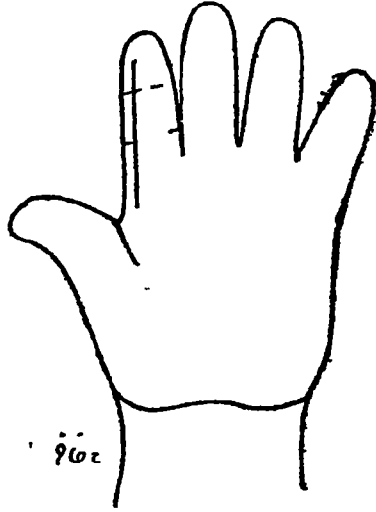
ऐसी रेखा वाला जातक दरिद्र होता है ।

रागदन्तिका

यह रेखा तर्जनी उंगली के मूल से निकलकर नीचे हथेली को ओर, रोहिणी-रेखा के ठीक विपरीत दशा में बढ़ती है। यदि इस रेखा में
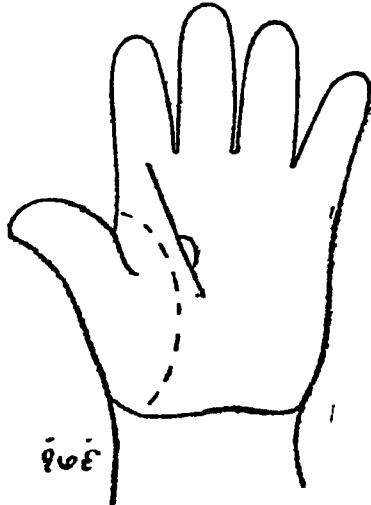
'मत्स्य' की आकृति बन जाए (चित्र संख्या १७९) तो वह जातक को त्रैलोक्य-विजयी बना देती है।

सामान्य रूप से यह रेखा स्त्री-पुरुषो को मनवांछित फल प्रदान करने वाली होती है। ऐसी रेखा वाले स्त्री-पुरुष पान खाने के अधिक शौकीन होते हैं।

गौ

यह रेखा तर्जनी उंगली के प्रथम पर्व पर पाई जाती है तथा कुछ टेढ़ापन लिए रहती है। यह आकार मे मोटी, श्वेत रंग वाली, लम्बी तथा स्पर्श मे मुलायम होती है (चित्र संख्या १८०)।
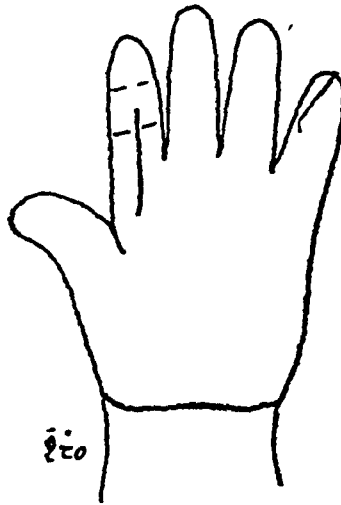
ऐसी रेखा वाला जातक अनेक गायों को पालता है। यदि किसी स्त्री के हाथ मे ऐसी रेखा हो तो उसे विशेष ख्याति प्रदान कराती है।

कालहृत्

यह रेखा तर्जनी उंगली के अग्रभाग पर रहती है। यह आकार मे छोटी, श्याम वर्ण की तथा कुछ टेढापन लिए रहती है (चित्र संख्या १८१)।
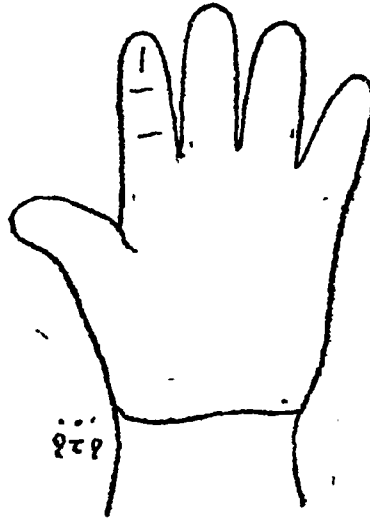
यदि यह रेखा स्पष्ट और अभग्न हो तो जातक के दुःख और परेशानियों को समाप्त करने वाली तथा उसे आजीवन आनन्द प्रदान करने वाली होती है।

कृता

यह रेखा तर्जनी उंगली के मध्य पर्व पर कुछ टेढ़ापन लिये हुए पाई जाती है। यह स्थूल (मोटी अथवा गहरी) तथा जर्जर (लहरदार अथवा टूटी-फूटी) होती है (चित्र संख्या १८२)।

यह रेखा जातक को प्रतिदिन दुःख देने वाली कही गई है। यह

१८२
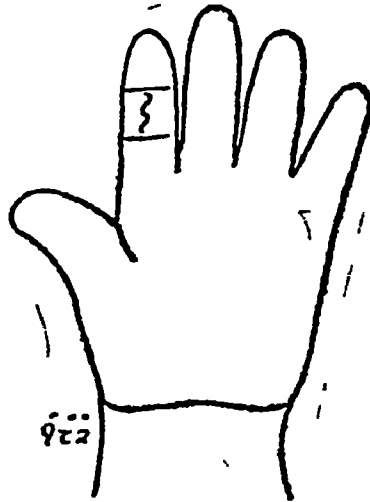
रेखा जातक के पूर्व जन्म कृत पापो के परिणाम स्वरूप प्रकट होती है।

विष्णुगी:

यह रेखा तर्जनी उगली के मध्य पर्व के मध्य भाग से कुछ नीचे की

१८३
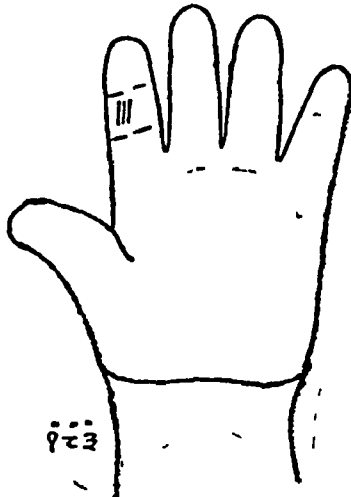
ओर, सीधी दक्षिण पार्श्व में होती हुई ऊपर की ओर बढ़ती है। यह रेखा 'वीर कण्टक रेखा', जिसका वर्णन पहले किया जा चुका है, को काटती है (चित्र संख्या १८३) ।

यह रेखा जिस जातक के हाथ मे होती है, वह सदैव ही अनेक प्रकार के रोगों से ग्रस्त बना रहता है तथा अनेक प्रकार के दुःख, कष्ट तथा चिन्ताओं का सामना करता है, परन्तु ऐसी रेखा वाला व्यक्ति भगवद्-भजन करने वाला अवश्य होता है।

वरिष्ठा

यह रेखा तर्जनी रेखा के प्रथम पर्व में स्थित रहती है। यह अत्यन्त चमकदार; दुहरी तथा अन्य अनेक लगभग समान आकृति वाली छोटी-छोटी रेखाओं से घिरी रहतो है। (चित्र संख्या १८४)।
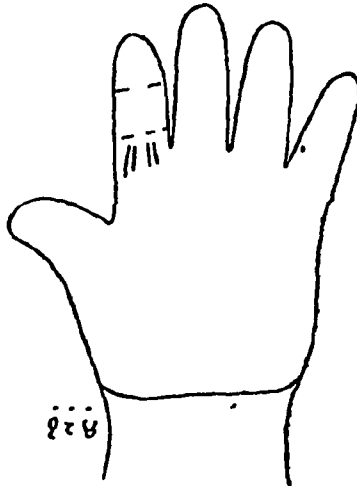
इन रेखाओं द्वारा जातक अपने अनेक सम्बन्धियों से घिरा रहता है तथा अपने उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सम्बन्धियों की निरन्तर सहायता भी लेता रहता है।

देवी

यह रेखा तर्जनी उंगली के अग्रभाग पर स्थित गहरी, कटी हुई तथा चक्करदार होती है (चित्र संख्या १८५)। यह रेखा जातक को चमकदार आकृति तथा निम्न कोटि का शुभ फल प्रदान करती है।
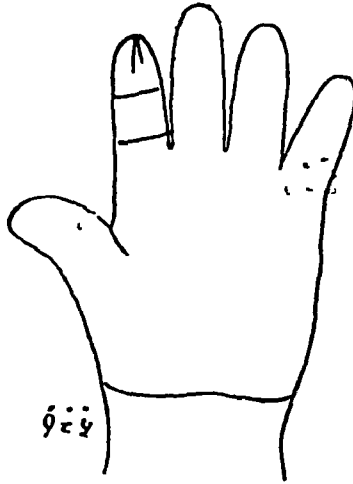
ऐसी रेखा वाला जातक चतुर, आत्मज्ञानी, निपुण, सर्वप्रिय परन्तु धूर्त होता है।

महोत्पाता

यह वर्तुलाकार रेखा तर्जनी उगली के मध्य पर्व पर स्थित पाई जाती है (चित्र संख्या १८६)। यह रेखा अन्य (सन्धि) रेखाओं से जुड़ी हुई हो या न हो, दोनों ही स्थितियो मे एक जैसा प्रभाव प्रदर्शित करती है।

इस रेखा के फलस्वरूप जातक जीवन भर दुःख और सङ्कटों से घिरा रहता है। वह सदैव दुष्ट-वचन वोलता है। विद्वानों की दृष्टि मे ऐसा व्यक्ति पापी होता है।
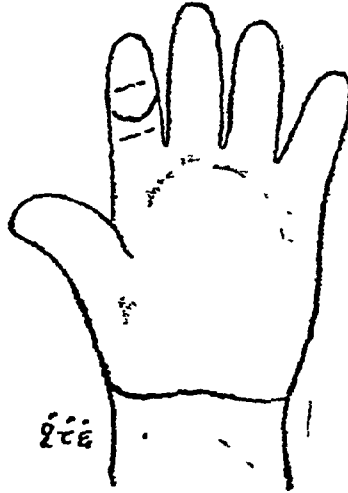
यदि यह रेखा जातक के दोनों हाथों मे हो तो वह दुष्ट होने के साथ ही कृतघ्नी भी होता है ।

स्मृतिः

यह रेखा मध्यमा उंगली के मूल स्थान पर पाई जाती है तथा प्रथम
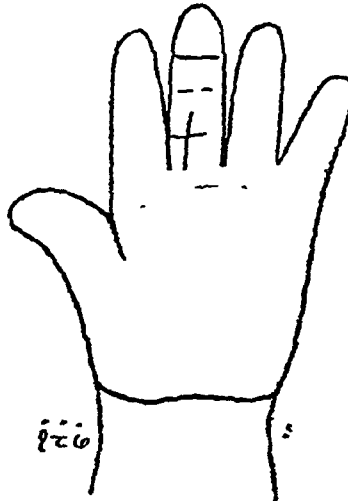
पर्व की सन्धि रेखा को काटती है। यह लम्बरूपा, चमकदार अथवा वर्तुलाकार होती है (चित्र संख्या १८७)।

ऐसी रेखा वाला जातक अध्ययनशील तथा तीव्र स्मरण-शक्ति-सम्पन्न होता है। वह अतीत की स्मृतियों को बनाए रखता है।

ऊह्या

यह रेखा पूर्वोक्त 'स्मृति-रेखा' के ऊपरी भाग मे पाई जाती है। यह कांटेदार, चमकीले धब्बों वाली तथा तिर्यक् (टेढ़ी) प्रकार की होती है (चित्र संख्या १८८)।
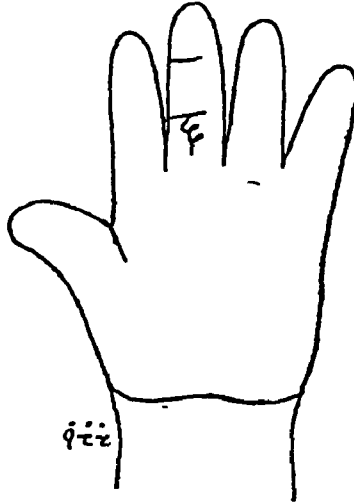
ऐसी रेखा वाला जातक वैदिक-विषयों का श्रेष्ठ जानकार होता है और उसमे तर्क-विचार तथा कल्पना-शक्ति विशेष मात्रा में पाई जाती है।

केलिका

यह रेखा मध्यमा उगली के मध्य पर्व पर कुछ तिर्यक् (टेढ़े) आकार की होती है (चित्र संख्या १८९)। इसकी बनावट बहुत स्पष्ट होती है।

१८९
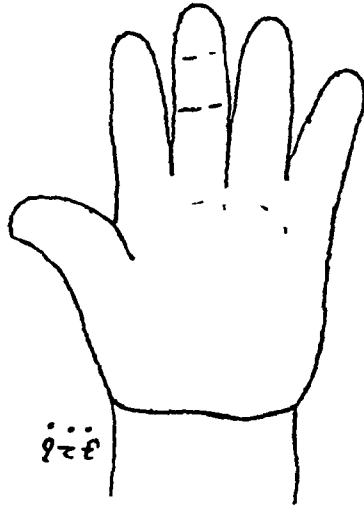
यह रेखा इन्द्रिय-निग्रह, स्वतन्त्र-वृत्ति तथा क्रीड़ा-वृत्ति को जन्म देने वाली होती है।

वृत्ति

यह रेखा मध्यमा उगली के ऊर्ध्व पर्व पर युग्म-रूप में, लम्बरूपा तथा मुकुट के समान पाई जाती है (चित्र सख्या १९०)।

१९०
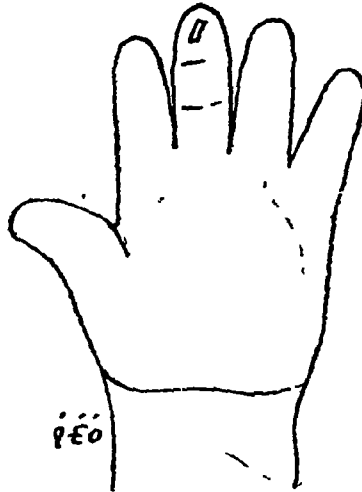
ऐसी रेखा वाला जातक धार्मिक तथा जातीय-नियमों का पालन करने वाला, शंकालु तथा विपुल सुखों का उपभोग करने वाला होता है।

आश्रयपावनी

यह रेखा मध्यमा उगली के मध्य पर्व के मध्य भाग में पाई जाती है। यह आकृति में मोटी तथा 'केलिका रेखा' (जिसका वर्णन पहले किया जा चुका है) के नीचे होती है (चित्र संख्या १९१)।

१९१
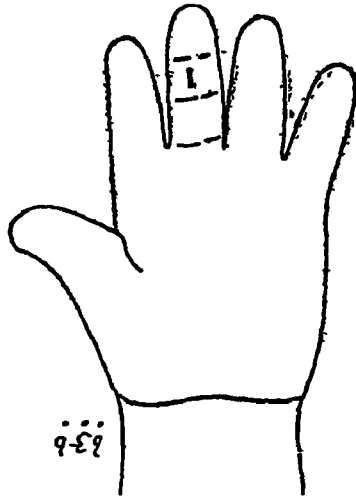
यह रेखा जातक को अपने आश्रयदाताओं से स्वतन्त्रता प्रदान करने वाली होती है।

राजी

यह रेखा मध्यमा उंगली के मध्य पर्व पर आड़े रूप मे पाई जाती है। इसकी आकृति शृंखलाकार होती है। (चित्र संख्या १९२) और यह अंगूठी की तरह चमकती है।

ऐसी रेखा वाले जातक के शरीर की त्वचा अत्यन्त कोमल होती है।
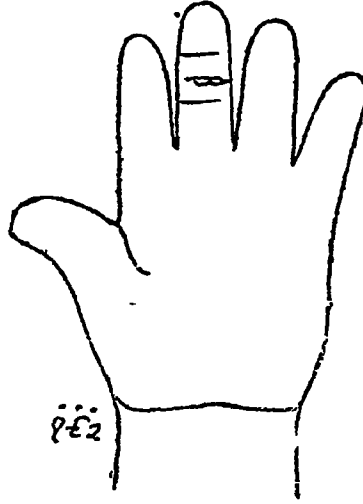
यह प्रचुर धन तथा प्रसन्नता को प्रदान करने वाली कही गई है।

नीडा

यह रेखा मध्यमा उगली के ऊर्ध्व पर्व पर होती है तथा उगली के नाखून तक उची उठी हुई चली जाती है (चित्र सख्या १९३)। सामा-

न्य रूप से यह रेखा जातक को दीर्घ जीवन तथा विपुल धन प्रदान करती है। उसे कृषि-कार्यो द्वारा अत्यधिक सम्पत्ति प्राप्त होती हैं, परन्तु यदि यह रेखा थोड़ी-सी भी झुकी हुई हो तो अशुभ फल प्रदान करने वाली हो जाती है।
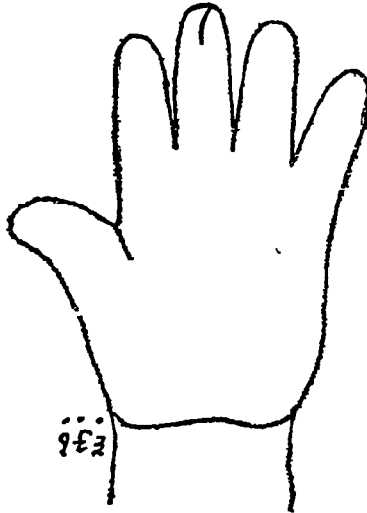
जाला

यह रेखा मध्यमा उगली के ऊर्ध्व भाग में शीर्ष स्थान पर पाई जाती है तथा अनेक रेखाओ द्वारा आवृत्ति होती है। ऐसी रेखा लहर-दार अथवा वृत्ताकार रूप मे भी पाई जाती है (चित्र संख्या १६४)।
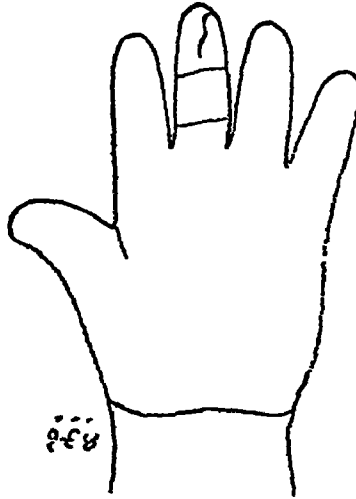
ऐसी रेखा वाला जातक अनेक प्रकार के रत्नों तथा गहरे समुद्र से प्राप्त मोतियो आदि का स्वामी तथा प्रचुर धन-धान्य से युक्त बना रहता है।

मरालि नेत्रिका

यह रेखा अनामिका उंगली के मूल प्रदेश के ऊपरी भाग मे स्थित

कुछ तिर्यक् (टेढ़े) स्वरूप की, श्याम वर्ण तथा आकार में छोटी-सी होती है (चित्र संख्या १९५)। यह रेखा स्त्रियों को परम सौभाग्य देने वाली होती है।

अपने नाम के अनुरूप ही यह रेखा जातक को मनोहर सौन्दर्य प्रदान करती है।

गोघ्नी

यह रेखा पूर्वोक्त 'मरालि नेत्रिका' रेखा से कुछ ऊपर पाई जाती है। यह रेखा गहरी तथा ऊपरी भाग में कुछ मुड़ी हुई द्विजिह्व आकार की होती है (चित्र संख्या १९६)।

यह रेखा समस्त शुभ-अशुभ कर्मों तथा सम्पूर्ण शास्त्रों के ज्ञान को हानि पहुंचाने वाली होती है।

ऐसी रेखा वाला जातक यदि गायों को पालता है, तो वे सब नष्ट हो जाती हैं।
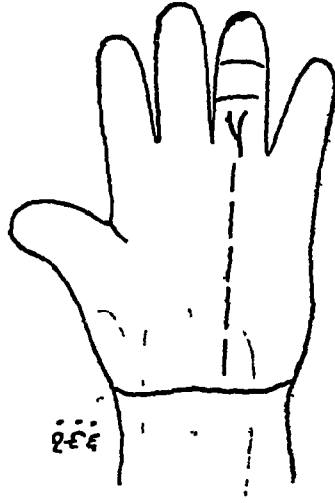
वृत्ता

यह रेखा पूर्वोक्त 'गोघ्नी-रेखा' के सिरे को चीरती हुई अनामिका उंगली के द्वितीय पर्व की सन्धि-रेखा पर स्थित रहती है (चित्र संख्या १९७)।
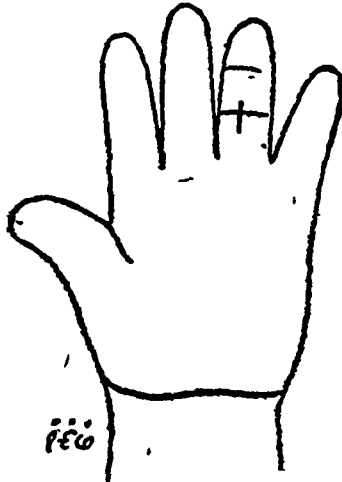
ऐसी रेखा वाला जातक वर्णाश्रम धर्म तथा जातीय नियमों का पालन करने वाला होता है।

शतहृदा

यह रेखा मध्यमा उंगली के मूल पर्व पर वर्तुलाकार रूप में पाई जाती है (चित्र संख्या १९८)।
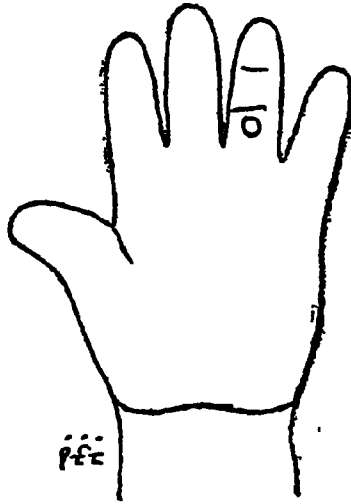
इस रेखा के प्रभाव से जातक की मित्रता चंचल-वृत्ति के लोगों के साथ ही होती है। ऐसे जातक के अनेक शत्रु पाये जाते है।

सेदुरा

यह रेखा कनिष्ठा उंगली के मध्य पर्व पर अन्य रेखाओं से आवृत पाई जाती है। यह आकृति मे कृश होती है (चित्र सख्या १९९)।

यह रेखा जातक के शरीर को स्फूर्ति प्रदान करने वाली तथा धन-

धान्य, स्वास्थ्य, पुत्र, मित्र एवं बंधु-बान्धवों की वृद्धि कर सौभाग्य देने वाली होती है।
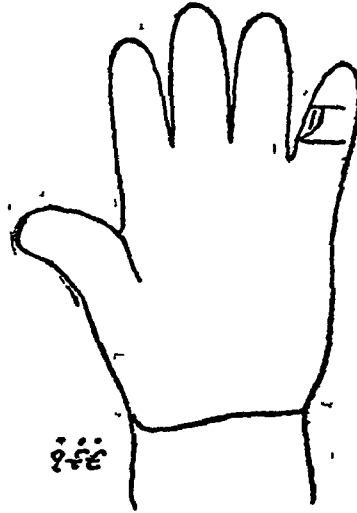
रात्रि

यह रेखा कनिष्ठा उंगली के मूल पर्व पर पाई जाती है। इस रेखा का रंग काला होता है (चित्र संख्या २००)।

यह रेखा जातक की बुद्धि का नाश करने वाली, मोह तथा मति-भ्रम करने वाली होती है।

इस रेखा के फलस्वरूप जातक में अनेक प्रकार के अशुभ लक्षण पाये जाते हैं।

अत्युच्चा

यह रेखा कनिष्ठा उंगली के अग्रभाग में, अन्य रेखाओं से आवृत्त, तिर्यंत् आकृति में परन्तु स्पष्ट रूप में पाई जाती है (चित्र संख्या २०१)
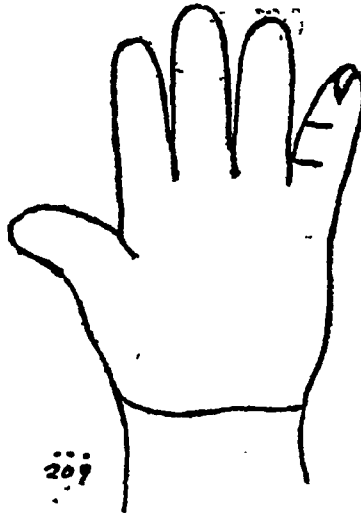
ऐसी रेखा वाला जातक स्वस्थ तथा दीर्घजीवी होता है। यह रेखा जातक को सम्पूर्ण कार्यों में सफलता तथा उच्च जीवन बिताने का अवसर प्रदान करती है।

कमठध्वस्तिका

यह रेखा कनिष्ठा उंगली के ऊर्ध्व पर्व पर पाई जाती है। यह किंचित् तिर्यक तथा मोटी होती है (चित्र सख्या २०२)।
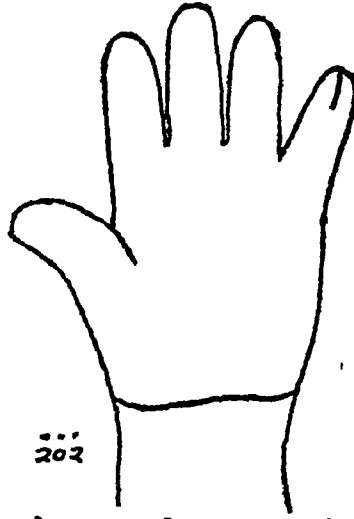
यह रेखा जातक को अवसर के अनुकूल कर्कश तथा जड्ड बनाने का कार्य करती है और उसे विभिन्न क्षेत्रों मे विजय प्रदान करती है।

अमला

यह रेखा कनिष्ठा उंगली के ऊर्ध्व पर्व पर सन्धि-रेखा के ऊपर यव
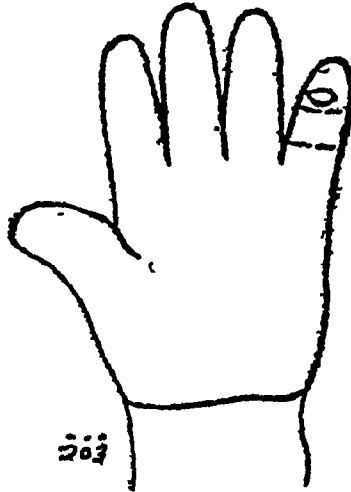
अथवा द्वीप जैसी आकृति की होती है अर्थात् उक्त स्थान पर सन्धि-रेखा के समीप दो छोटी-छोटी रेखाएं ऊपर-नीचे अर्द्ध चन्द्राकार रूप में मिलकर ऐसी आकृति ग्रहण करती है (चित्र संख्या २०३)।

यह रेखा जातक के मन को निर्मल बनाये रखती है।

वाणी

यह रेखा तर्जनी उंगली के ऊर्ध्व पर्व पर यव अथवा द्वीप जैसी आकृति की होती है (चित्र संख्या २०४)।
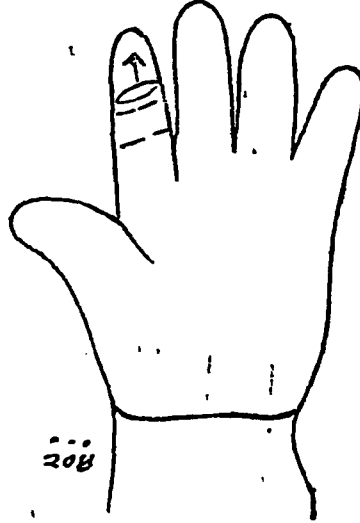
ऐसी रेखा वाला जातक विद्वान्, धनवान, गुणवान तथा सम्पन्न होता है। वह मिष्टभाषी तथा राज्य अथवा राजाओं के द्वारा सम्मान प्राप्त करने वाला भी होता है।

हेमवेत्रिका

यह रेखा अंगूठे के मूल पर्व स्थित स्वर्ण के समान चमकदार होती

है। यह चाहे एक रेखा से संयुक्त हो अथवा दो रेखाओं से—इसका प्रभाव एक जैसा ही होता है (चित्र संख्या २०५)।
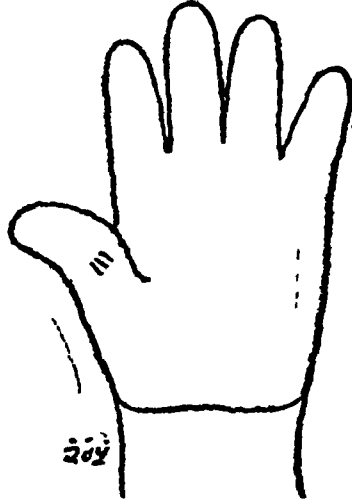
यह रेखा जातक को सब प्रकार की धन-सम्पत्ति प्रदान करने वाली होती है। इस रेखा के प्रभाव से जातक का शरीर भी स्वर्ण के समान कान्तिमय होता है। यह रेखा चूंकि धन प्रदान करने वाली होती है, अतः कुछ विद्वान् इसे 'श्री रेखा' भी कहते हैं।

बाएं हाथ की रेखाएं

बाएं हाथ में पाई जाने वाली रेखाओं के नाम तथा उनके प्रभाव के सम्बन्ध में 'कीर्तिकेयन पद्धित' के विद्वानों के मत का सारांश नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

रोहिणी

'रोहिणी-रेखा' जिस प्रकार दाएं हाथ में पाई जाती है, उसी प्रकार बांएं हाथ में भी पाई जाती है।

वाएं हाथ में भी रोहिणी-रेखा का प्रभाव ठीक दाएं हाथ की तरह ही होता है।

कोर्पंरा

यह रेखा अनामिका उंगली के मूल प्रदेश से नीचे की ओर बढ़ती है। यह रेखाएं संख्या में तीन, चार या पांच तक होती है (चित्र संख्या २०६) परन्तु प्रत्येक स्थिति में (चाहे जितनी संख्या होने पर भी) इनका प्रभाव एक जैसा ही होता है।
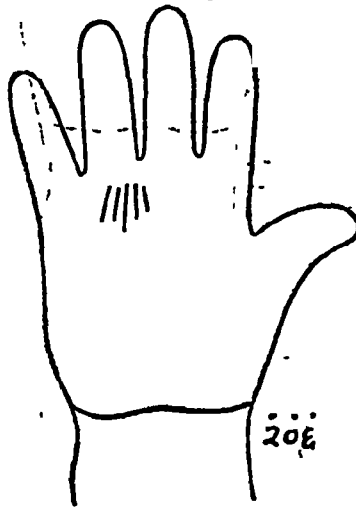
यह रेखाएं जातक को यशपूर्ण यात्राएं, सब प्रकार के सुख, काव्यात्मकता तथा कान्तिमय व्यक्तित्व प्रदान करती है। ये रेखाएं अपना बचाव चाहने वाले व्यक्ति को स्वतन्त्र सहायता प्रदान करती है तथा इनके प्रभाव से जातक निश्चित रूप से जिज्ञासु एवं अनुसंधानात्मक वृत्ति का भी होता है।

करिनी

यह रेखा पितृ-स्थान से प्रारंभ होकर तर्जनी उंगलो के मूल तक जाती है। यह हाथी के सू ड के समान चक्राकृति की तथा तर्जनी उंगली की प्रथम सन्धि-रेखा का कुछ स्पर्श-सी करती है (चित्र संख्या २०७)।
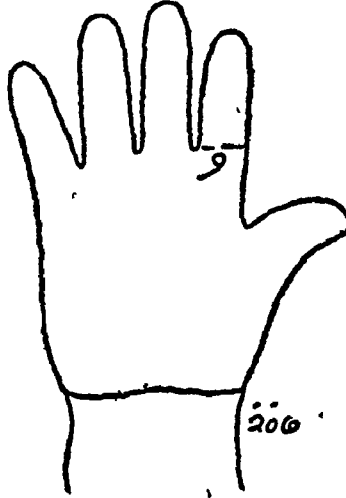
यह रेखा जातक के गुप्त दोषों को सर्वसाधारण के वीच प्रकट कर देती है। यदि यह रेखा अन्य उप-रेखाओं के साथ किसी अन्य उंगली की ओर मोड़ लेती हो तो जातक बहुत पक्का शराबी होता है। यह रेखा 'मद' की ओर जातक के आकर्षण को प्रकट करती है।

मेहा

इस रेखा को दाएं हाथ की 'इन्दिरा-रेखा' का स्थानापन्न समझना चाहिए। यह मणिवन्ध से आरम्भ होकर मध्यमा उंगली के मूल तक निर्वाध रूप से जाती है (चित्र संख्या २०८)।
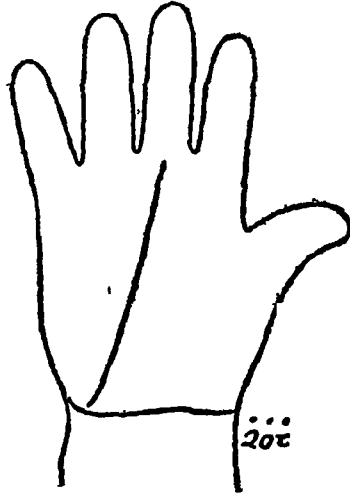
यह रेखा जातक को सम्पूर्ण सुख, यश,आनन्द तथा प्रसन्नता प्रदान करने वाली कही गई है।

लोहिका

यह रेखा 'रोहिणी' के मूल से निकलकर अंगूठे के बीच में होती

हुई सीधी उसके नाखून तक चली जाती है। इस रेखा में एक या दो सींग जैसी रेखाए भी निकली हुई रहती है (चित्र संख्या २०९)।

इस रेखा के प्रभाव से जातक विद्या तथा वैभव को प्राप्त करता है।

करिदन्तुग

यह रेखा अंगूठे के निम्न भाग से उदय होकर नाखून की ओर जाती है तथा इसमें हाथी के दांत जैसी दो शाखा-रेखाएं भी निकली रहती हैं (चित्र संख्या २१०)।
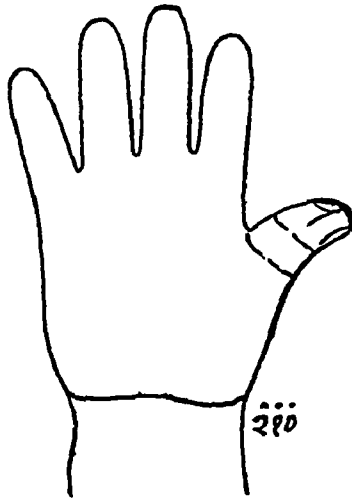
इस प्रकार की रेखाओं वाले जातक के दांत बाहर की ओर निकले रहते है। जिस व्यक्ति के हाथ में यह रेखा हो, उसके शारीरिक अंग टेढे-मेढे होते हैं तथा उसकी आकांक्षाएं घुटी-घुटी रहती है।

बालहृदया

यह रेखा अंगूठे के मूल भाग से आरम्भ होकर संपूर्ण अंगूठे को पार करती हुई ऊपर तक चली जाती है (चित्र संख्या २११)।

२११
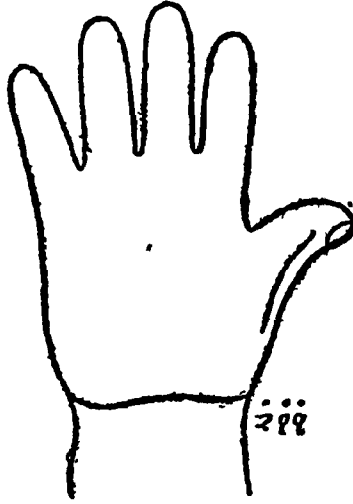
यह रेखा हृदय की मधुरता, अक्षय-यौवन, पुत्र, कीर्ति तथा सौभाग्य प्रदान करने वाली होती है। यह वृद्ध तथा तरुण—सभी के हृदय में यौवन का उत्साह भरे रहती है। ऐसी रेखा वाला व्यक्ति बालकों के समान क्रीड़ा-प्रिय होता है तथा उसकी काल्पनिक प्रवृत्तियां श्रेष्ठ होती हैं।

वसुप्रेखा

इस रेखा का प्रारम्भ पूर्वोक्त 'बालहृदया-रेखा' से होता है अर्थात् यह रेखा 'बालहृदया-रेखा' के अधोभाग से ऊपर की ओर जाती है। (चित्र संख्या २१२)।

इस रेखा के प्रभाव से जातक धनवान होता है तथा वह धन कहीं
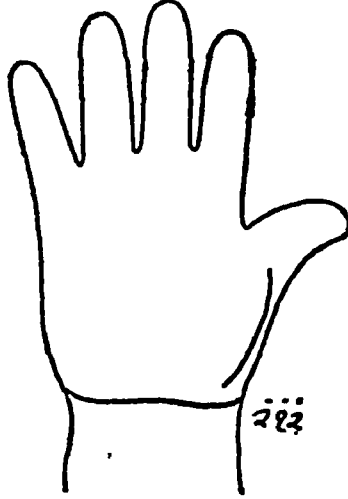
खो न जाए अथवा चोरी न चला जाय—इस भय से उसकी विशेष रूप से देखभाल करता रहता है ।

चेतसा

यह रेखा 'रोहिणी-रेखा' के मूल भाग से निकलकर शत्रु-स्थान पर समाप्त होती है (चित्र संख्या २१३) ।
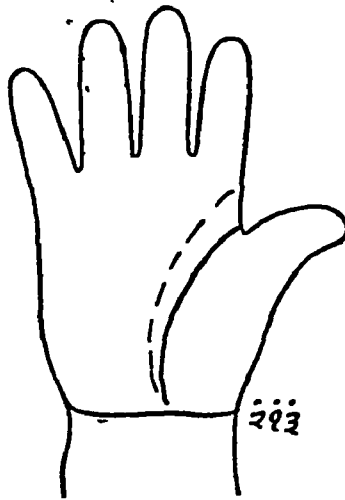
यह रेखा जातक को दीर्घजीवन, धन-धान्य तथा आरोग्य प्रदान करती है। ऐसी रेखा वाले जातक में धन कमाते रहने की प्रवृत्ति विशेष रूप से पाई जाती है।

धनः

यह रेखा यव अथवा द्वीप जैसी आकृति की होती है जो बाएं हाथ के अंगूठे की दोनों सन्धियों पर मिल जाती है (चित्र संख्या २१४)।

यह रेखा जातक को कृषि-सम्बन्धी सम्पत्ति तथा अन्य प्रकार के लाभ प्रदान करती है। यह रेखा जिस जातक के हाथ में होती है वह बहुत धन सचय कर लेता है। यह रेखाएं अव्यवस्थित अथवा बीच मे से टूटी हुई हो, तो जातक को कालान्तर में खेती-वाड़ी द्वारा लाभ प्राप्त होता है।

यवक्या

यह रेखा 'धनि-रेखा' से कुछ नीचे ही बाएं हाथ के अंगूठे पर खड़ी, परन्तु कुछ तिर्यक् स्थिति में पाई जाती है (चित्र संख्या २१५)।

२१५

ऐसी रेखा वाला जातक व्यवसाय तथा कृषि-कार्य—दोनों के माध्यम से धनोपार्जन करता है। यह रेखा जातक को प्रचुर धन-धान्य तथा सम्पत्ति प्रदान करती है।

रागवर्धिरा

यह रेखा 'यवक्या-रेखा' से कुछ ही नीचे ऊपर की ओर जाती है। इस रेखा की आकृति लहरदार तथा वर्ण लालिमा लिये हुए होता है। (चित्र संख्या २१६)।

यह रेखा जातक की अभिलाषाओं को पूरा नहीं होने देती तथा उसकी अभीप्सित वस्तुओं एवं प्रियजनो से विछोह करा देती है।

मद्यन्तिका

यह रेखा पूर्वोक्त 'रागवधिरा' नामक रेखा से कुछ नीचे की ओर बाएं हाथ के अंगूठे के मूलभाग में होती है (चित्र संख्या २१७)।

यह रेखा जातक के पैतृक-गर्व अर्थात् अपने कुल का गर्व, धन, सम्पत्ति, सम्पन्नता एवं प्रचुर मात्रा मे प्रसन्नता प्रदान करती है।

हेमवती

यह रेखा वाएं हाथ के अंगूठे के मूल भाग से कुछ ऊपर स्वर्ण जजीर जैसी आकृति की पाई जाती है (चित्र संख्या २१८)।
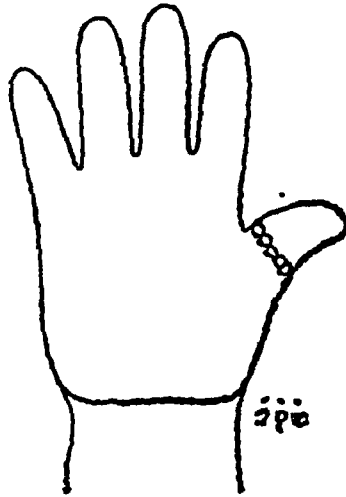
इस रेखा के प्रभाव से जातक निष्कपट, सरल, यशस्वी तथा स्वर्णाभूपणों को धारण करने वाला होता है।

रतिः

यह रेखा वाए अंगूठे के मूल भाग मे, युग्म रूप मे सन्धि-रेखा के नीचे स्थित पाई जाती है (चित्र सख्या २१९)।

यह रेखा जातक की कामुकता (यौन-सम्वन्ध) को दृढ़ करने वाली तथा अन्य प्रकार के सुख और आनन्द को देने वाली होती है।

हृद्या

यह रेखा पूर्वोक्त 'रतिः रेखा' के नीचे (बाएं हाथ के अंगूठे को
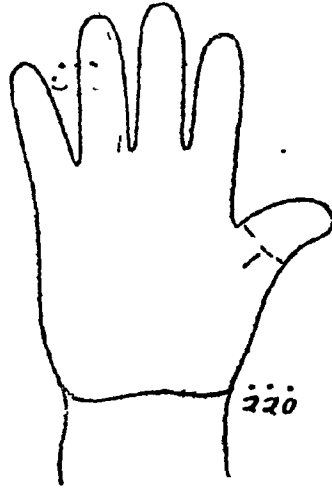
प्रथम सन्धि-रेखा से नीचे) कुछ तिर्यंक् (तिरछे) रूप मे स्थित रहती है (चित्र संख्या २२०)।

इस रेखा के प्रभाव से जातक सर्वलोक अत्यन्त प्रिय (विश्व-प्रिय) होता है, परन्तु यदि यह रेखा कहीं-कहीं दोषपूर्ण (टूटी-फूटी) हो तो जातक के जीवन में ऐसे अवसर भी आ सकते हैं, जबकि उसे कुछ अपयश भी प्राप्त हो।

२२१

वसुघ्नी
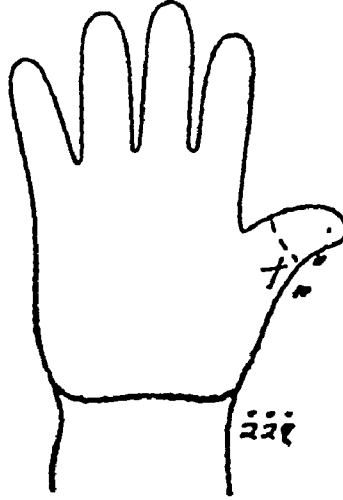
यह रेखा बाएं अंगूठे की प्रथम ग्रन्थि-रेखा के नीचे गुणक-चिन्ह की भांति होती है और 'रोम विस्रमु' नामक रेखा को (जिसका वर्णन आगे किया गया है) काटती है अर्थात् जो एक आड़ी रेखा 'रोम विस्रमुः रेखा' को काटती है, उसे 'वसुघ्नी' कहते हैं (चित्र संख्या २२१)।

यह रेखा 'रोम विस्रमु. रेखा' के प्रभाव को नष्ट करने वाली कही गई है। रोम विस्रमु रेखा के प्रभाव के विषय मे आगे लिखा जा रहा है।

रोम विस्रसुः

यह रेखा पूर्वोक्त 'वसुघ्नी-रेखा' के तल भाग से आरम्भ होकर हाथ के पृष्ठ-भाग के उस प्रदेश तक पहुंचती है; जोकि रोम युक्त होता है। अर्थात् यह रेखा बाएं हाथ के अंगुष्ठ मूल की प्रथम-सन्धि रेखा से आरम्भ होकर पृष्ठ के रोम प्रदेश तक जाती है।
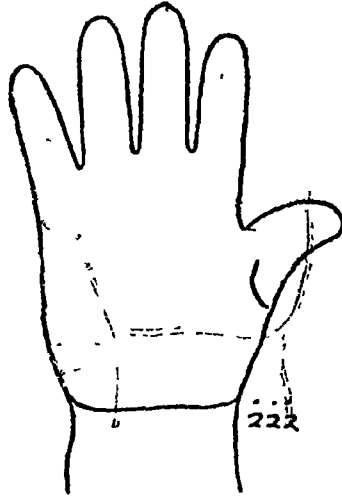
इस रेखा के प्रभाव से जातक को रोम (केश या बाल) सम्बन्धी-क्षीणता का शिकार होना पड़ता है।

गजाह्वया

यह रेखा बाएं हाथ के अंगूठे की प्रथम-सन्धिरेखा या उसके समीप से निकलकर कुछ नीचे की ओर तथा कुछ ऊपर की ओर झुकती हुई स्पष्ट रूप से पृष्ठ भाग की ओर ऐसे मुड़ जाती है; जैसे वह उस भाग को देख रही हो (चित्र संख्या २२३)।
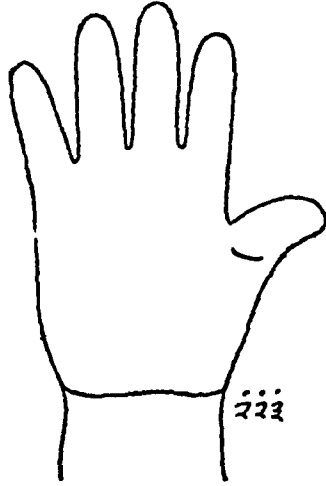
ऐसी रेखा वाला जातक कुशाग्र-बुद्धि तथा अजेय होता है, परन्तु वह दूसरे लोगों के आश्रित ही बना रहता है।

धरणी

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के मूल पर्व के मध्य भाग पर
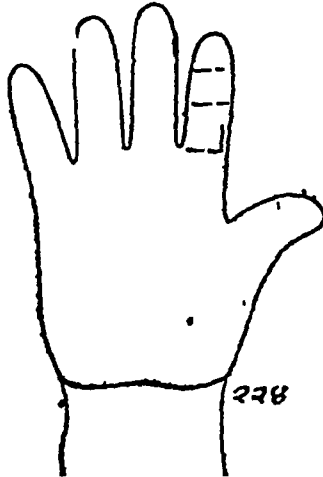
स्थित एक ओर को कुछ ऊपर की ओर उठी हुई रहती है (चित्र संख्या २२४)।

यह रेखा पुरुष-जातक को भूमि से सम्बन्धित प्रचुर सम्पत्ति प्रदान करती है तथा स्त्रियों में मितव्ययिता का गुण उत्पन्न करती है।

मेचक:

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के प्रथम पर्व के मध्य भाग मे स्थित गहरी तथा प्रायः श्याम वर्ण की होती है। कभी यह रेखा श्वेत रंग की भी पाई जाती है (चित्र संख्या २२५)।
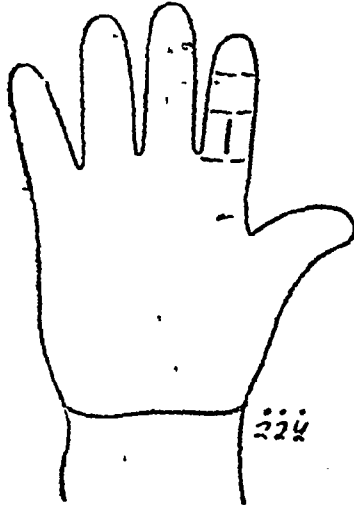
जिस व्यक्ति के हाथ में ऐसी रेखा होती है, वह अपने प्रत्येक प्रयत्न द्वारा प्रचुर धन सम्पत्ति उपार्जित करता रहता है।

मोचिका

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के मध्यपर्व पर ऊपरी सन्धि-रेखा के नीचे कुछ तिर्यक् आकृति की होती है (चित्र संख्या २२६)।

इस रेखा के प्रभाव स्वरूप चोरी करने के अपराध में दण्ड पाने वाला बन्दी भी मुक्त हो जाता है। अर्थात् ऐसी रेखा वाला व्यक्ति यदि चोरी भी करे तो भी उसे दण्ड नही भोगना पड़ता। किन्हीं-किन्हीं हाथों
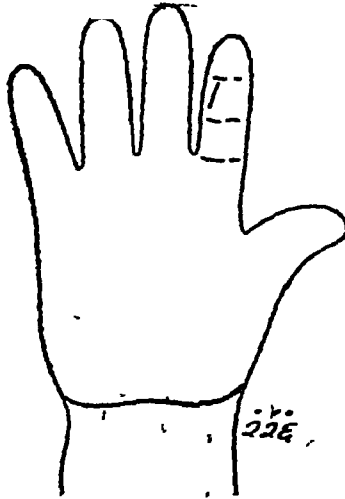
में जब यह रेखा कुछ निचले भाग में होती है तब अनेक शाखाओं से युक्त भी दिखाई देती है।

मुचिः

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उगली के मूल स्थान मे नीचे की ओर कुछ मुड़ी हुई-सी दिखाई देती है (चित्र सख्या २२७)।

यह रेखा जातक को निर्धनता एव रोगों से मुक्ति प्रदान करती है।

२२७

सामान्यतः यह रेखा स्वास्थ्य, यश, कान्ति तथा धन प्रदान करने वाली मानी जाती है।

असिध्नी

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के मूल पर्व से कुछ ऊपर को ओर बढ़ती हुई पाई जाती है (चित्र संख्या २२८)।

२२८
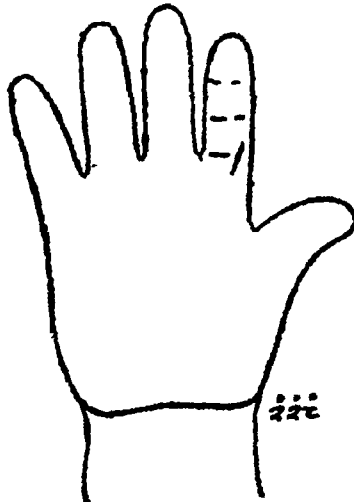
यह रेखा तलवार की तरह टेढ़ी होती है।

इस रेखा प्रभाव से जातक की २३ वर्ष की अल्पायु मे ही मृत्यु का योग बनता है—ऐसा कीर्तिकेयन-मत के विद्वानों का कहना है।

टिप्पणी—हाथ के अन्य लक्षणों तथा रेखाओ का मिलान करने के उपरान्त ही अल्पायु योग का निश्चय करना चाहिए।

सुरुचिः

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के नीचे पूर्वोक्त 'असिघ्नी-रेखा' वाले स्थान से कुछ ऊपर की ओर पाई जाती है (चित्र संख्या २२६)।
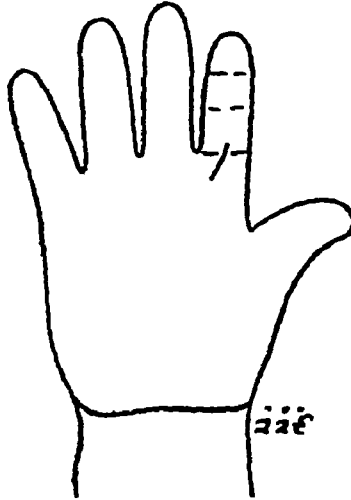
यह रेखा जातक को सुन्दर शरीर तो प्रदान करती है, परन्तु इसे अकाल मृत्यु की सूचक भी समझना चाहिए।

पाटी

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली की दूसरी सन्धि-रेखा से आलिंगनबद्ध अर्द्ध चन्द्राकार जैसी होती है (चित्र संख्या २३०)।
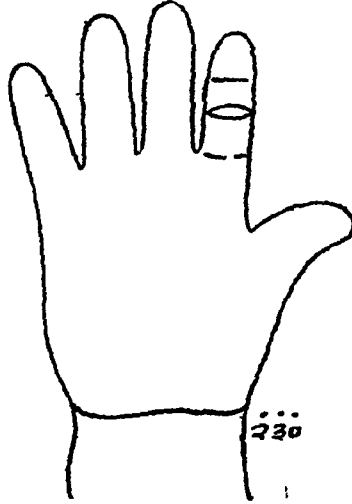
ऐसी रेखा वाला जातक अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। ऐसी विजय को 'पाटी सन्धि' कहा जाता है अर्थात् जातक का शत्रु उस समय स्वयं ही झुककर जातक से सन्धि कर लेता है, जब वह अनुभव कर लेता है कि जातक उसे हराकर मानेगा। इसे 'युद्ध-स्तर पर शत्रुओं से मेल हो जाने' की संज्ञा भी दी जा सकती है।

त्रुटिः

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के ऊर्ध्व पर्व की सन्धि-रेखा तथा पूर्वोक्त 'पार्टी-रेखा' के बीच तिर्यक् रूप से अवस्थित रहती है। (चित्र संख्या २३१)।

ऐसी रेखा वाले जातक को भोजन प्राप्त करने में भी अनेक कठिनाइयां उठानी पड़ती है। ऐसी रेखा वाले व्यक्ति की पारिवारिक-

परिस्थितियां ऐसी वन जाती है और उसका खर्च ऐसा होता है कि वह सदैव चिन्तित वना रहता है।
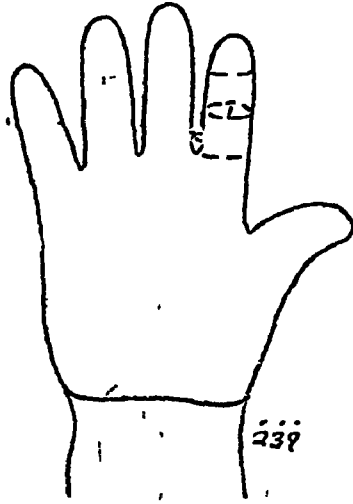
तएडु:

यह रेखा वाएं हाथ की तर्जनी उगली के ऊर्ध्व पर्व पर ऊपर की ओर, स्थित होती है तथा उगली के नख तक पहुचती है (चित्र सख्या २३२)।
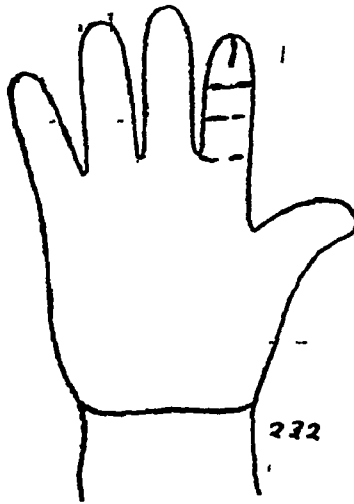
ऐसी रेखा वाला व्यक्ति किसी कार्य अथवा क्रीड़ा मे रत रहते समय भी विभिन्न प्रकार के विचारों की शृंखला में उलझा रहता है।

प्रियंगवी

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के ऊर्ध्व पर्व के मध्य भाग में तिर्यक् (तिरछे) रूप मे स्थित रहती है (चित्र संख्या २३३)।
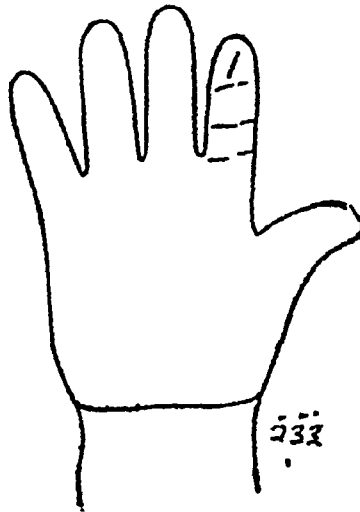
ऐसी रेखा वाले जातक की सभी आकांक्षाएं पूर्ण होती है और ऐसा व्यक्ति गौ प्रिय (गायो का भक्त) भी होता है।

ज्योत्स्नी

यह रेखा पूर्वोक्त 'प्रियंगवी' रेखा के नीचे बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के ऊर्ध्वपर्व में किंचित् तिर्यक् भाव में अवस्थित रहती है (चित्र संख्या २३४)।

यह रेखा असम्भाव्य-विवाह (जिस विवाह के होने की कोई
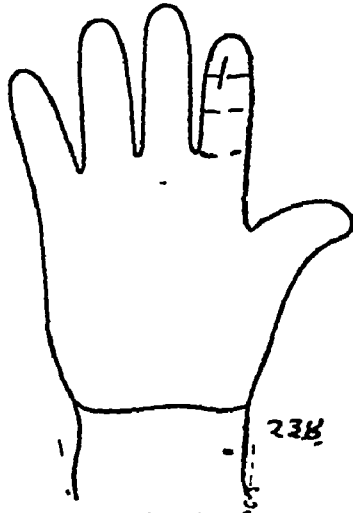
सम्भावना न हो) को कराने वाली होती है। इस रेखा के प्रभाव से जातक के हृदय में स्त्रियो के प्रति मधुर भावनाओं का उदय होता है।

हताशा

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के ऊर्ध्व पर्व में पूर्वोक्त
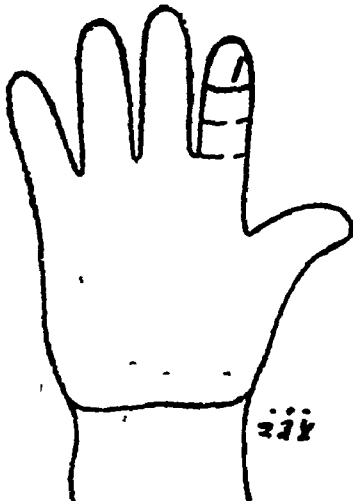
'ज्योत्स्नी-रेखा' के कुछ ऊपरी भाग में तिर्यक् (तिरछी) तथा कुछ स्थूल आकृति की पाई जाती है (चित्र संख्या २३५)।

इस रेखा के प्रभाव से जातक के पुत्र की अकाल मृत्यु होती है और यह सम्भावना भी रहती है कि रक्त-वमन के कारण ही उसकी मृत्यु हो। इस रेखा के इस प्रभाव के सम्बन्ध में कोई सन्देह नहीं करना चाहिए। मृत्यु का समय कभी भी आ सकता है।

देवद्विट्

बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के प्रथम पर्व की सन्धि-रेखा से कुछ ही ऊपर पृष्ठ भाग स्थित रोम-स्थान के विपरीत मांसल स्थान पर पाई जाती है (चित्र संख्या २३६)।

२३६
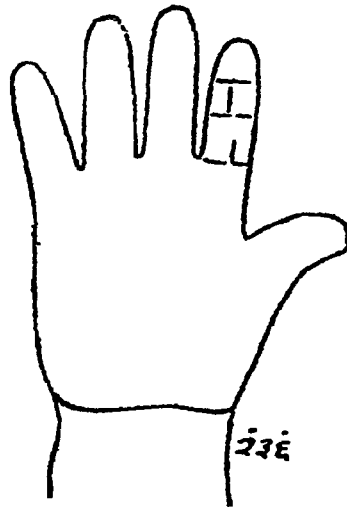
जिस व्यक्ति के हाथ में यह रेखा होती है, वह नास्तिक, मूर्तियों का खण्डन करने वाला तथा देवताओं का द्वेषी होता है।

कपर्दिः

यह रेखा वाएं हाथ की तर्जनी उंगली पर पूर्वोक्त 'देवद्विट्-रेखा' के स्थान से कुछ नीचे की ओर अर्द्धचन्द्राकार स्वरूप मे पर्व सन्धि-

२३७
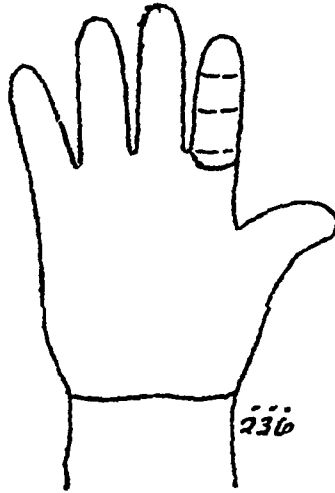
रेखा से मिली हुई पाई जाती है। यह अपने दोनों सिरों पर कुछ मुडी हुई-सी रहती है (चित्र सख्या २३७)।

इस रेखा के प्रभाव से जातक की स्त्री की मृत्यु का (भार्या-भग) योग वनता है। इस रेखा के प्रभाव से जातक के केश (वाल) कड़े होते हैं।

अपराजिता

यह रेखा वाए हाथ की तर्जनी उंगली के पृष्ठ भाग पर स्थित होती है और ऊपर की ओर जाती हुई दिखाई देती है (चित्र संख्या २३८)।

इस रेखा के प्रभाव से जातक के बच्चों की मृत्यु हो जाती है। यह रेखा जातक के सम्पूर्ण सुखों पर अपना दुष्प्रभाव डालती है।

२३८

२३९
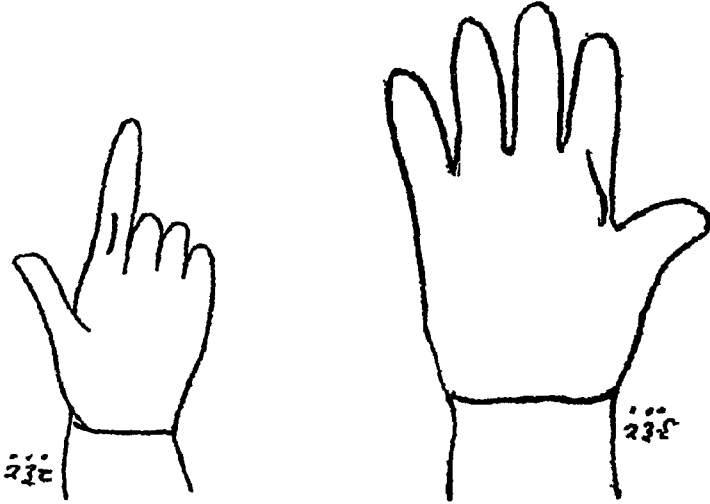
दुग्धा

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के मूल से उत्पन्न होकर नीचे की ओर झुकती है अर्थात् अधोमुखी होती है (चित्र संख्या २३९)।

यह रेखा जातक को अल्पायु बनाती है। ऐसी रेखा वाला जातक दूध पीने का प्रेमी अवश्य होता है।

मुग्धा

यह रेखा बाएं हाथ की तर्जनी उंगली के मूल भाग मे पूर्वोक्त 'दुग्धा-रेखा' के उद्गम स्थान से कुछ नीचे की ओर वृत्ताकार रूप में अथवा घूमकर जाती हुई गोलाकार-सी दिखाई देती है (चित्र संख्या २४०)।

यह रेखा पुरुष जातक को अत्यन्त सम्मान देती है, परन्तु स्त्रियों के लिए विपरीत फल प्रदान करती है। जिस जातक के हाथ में यह
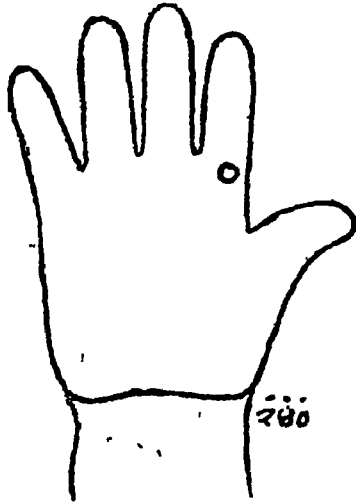
रेखा होती है, उसमे आकर्पण-शक्ति विशेष रूप से पाई जाती है। फलतः ऐसे व्यक्ति की ओर सब लोग अधिक आकर्षित होते हैं।

सोर्मिः

वाएं हाथ की तर्जनी उगली के मूल भाग पर यदि पूर्वोक्त 'मुग्धा'
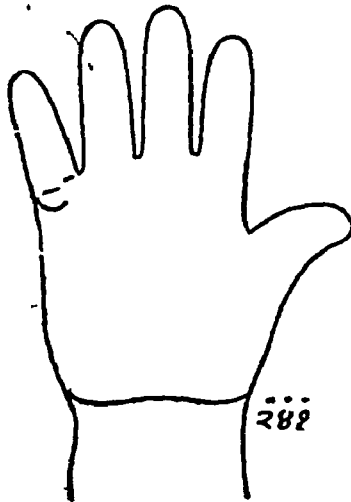
रेखा का पूर्ण वृत्त न बन पाये और वह अर्द्ध चन्द्राकृति हो (चित्र संख्या २४१) तो उस रेखा को 'सोर्मि:' कहते है।

यह रेखा जातक को समस्त मनोकामना को पूर्ण करने वाली कही गई है। इस रेखा वाले जातक के शारीरिक अंग भी बड़े होते हैं। कुछ विद्वानों के मतानुसार यह रेखा उक्त आकृति की कनिष्ठा उंगली के नीचे भी पाई जाती है और ऐसा हो प्रभाव करती है।

अम्रुका

पूर्वोक्त 'सोर्मि:' रेखा के समोप वाले स्थान से उद्भूत होकर तर्जनी उंगली के रोमयुक्त पृष्ठ भाग की ओर जाने वाली तथा कुछ स्थूल आकार की होती है (चित्र संख्या २४२)।
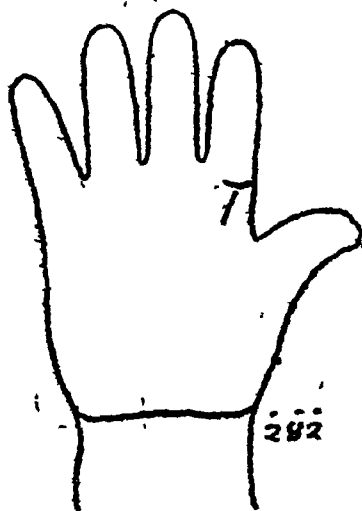
यह रेखा साहस तथा ऐन्द्रिक (काम वासना) सम्बन्धित से सुखों को देने वाली कही गई है। यह स्त्रियों की प्रत्येक अभिलाषा को पूर्ण करती है, परन्तु कुछ विद्वानों के मतानुसार इस रेखा का प्रभाव केवल पुरुषों पर हो हाता है, स्त्रियों पर नही होता।

कोर्पर स्थितिः

यह रेखा वाएं हाथ की 'मध्यमा' उंगली के ऊर्ध्वपर्व से उत्पन्न होकर सन्धि-रेखा को पार करती हुई मध्य पर्व तक आती है (चित्र संख्या २४३)।
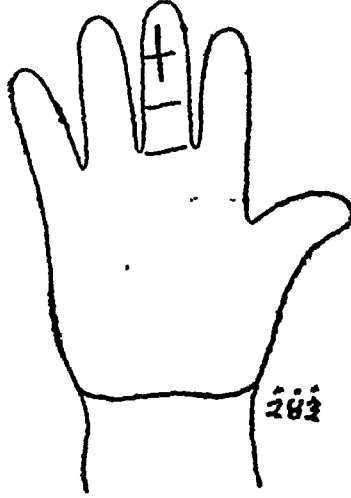
इस रेखा के प्रभाव से जातक विभाजित प्रज्ञा वाला होता है। उसके भाग्य में निरन्तर दुःख ही वदे रहते हैं।

इस रेखा के प्रभाव का विचार करते समय पूर्व कथित 'कोर्परा-रेखा' के प्रभाव का भी अध्ययन करना चाहिए।

कर्मेन्द्रियी

यह रेखा वाए हाथ की मध्यमा उंगली के मूल पर्व पर के मध्य-भाग मे पाई जाती है (चित्र सख्या २४६)।

यह रेखा स्त्री-जातक को सुख की सम्पूर्ण वस्तुएं प्रदान करती है। यह सौम्य-स्वभाव, आनन्द तथा प्रसन्नता देने वाली कही गई है।

इस रेखा का महत्व केवल स्त्रियो के लिए ही कहा गया है, पुरुष

२४४
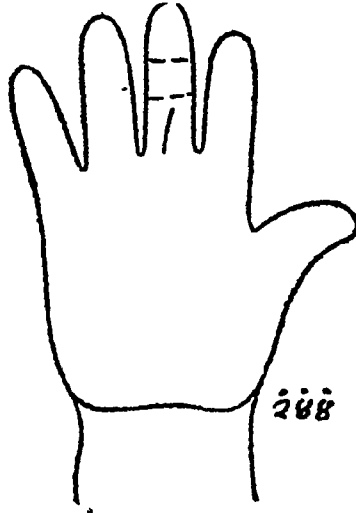
के हाथ में यदि यह रेखा हो तो उसकी सन्यास-वृत्तियों को जागृत करती है ।

श्लथा

यह रेखा बाए हाथ की मध्यमा उगली के मूल पर्व के पार्श्व भाग

२४५

से उद्‌भूत होकर तिरछी होती हुई मध्य भाग तक आकर मोड लेती है (चित्र संख्या २४५)।

यह रेखा स्निग्ध वर्ण, विजय तथा सफलता प्रदान करने वाली कही गई है।

गुर्वी

यह रेखा स्त्रियों के बाएं हाथ की मध्यमा उगली के मूल पर्व पर ऊपर की ओर मध्य भाग मे स्थित होती है (चित्र संख्या २४६)।
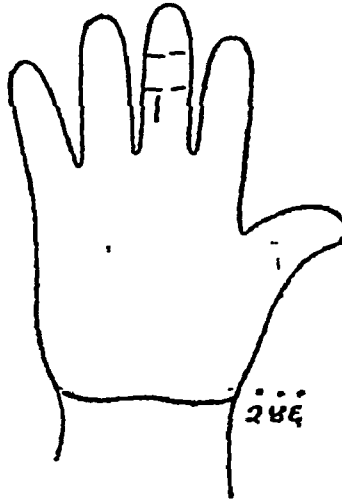
यह रेखा गात्र-गौरव (स्थूल-शरीर) को देने वाली तथा भाग-प्रसग से सम्बन्धित चिन्ताएं एव क्लेश उत्पन्न करने वाली होती है। इस रेखा का प्रभाव केवल स्त्रियों पर पड़ता है। जिस स्त्री के हाथ मे ऐसी रेखा हो, उसकी भोगेच्छा प्रवल तथा अशान्त होती है। ऐसी स्त्रियां अनेक अवैध सम्बन्ध करने वाली चरित्रभ्रष्टा होती है।

दमना

यह रेखा बाएं हाथ की मध्यमा उंगली के मध्य पर्व के उच्च स्थान पर तिर्यक् (तिरछे) रूप में स्थित रहती है (चित्र संख्या २४७), परन्तु एकदम ऊपर की ओर नहीं होती।
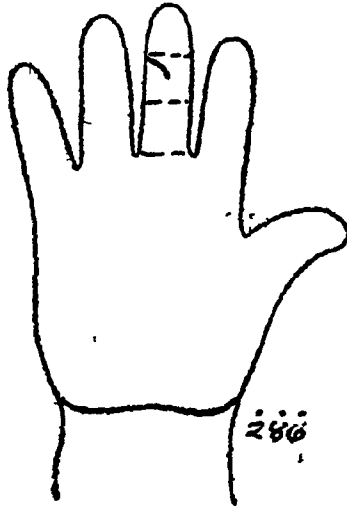
यह रेखा जिन स्त्री-पुरुषों के हाथ में होती है, वे सदैव अस्वच्छ, अपवित्र तथा मैले-कुचैले रहते हैं।

वंशबंधिनी

यह रेखा बाएं हाथ की मध्यमा उंगली के मध्य पर्व पर सीधी खड़ी रहती है (चित्र संख्या २४८)।

इस रेखा के प्रभाव से जातक के सम्बन्धियों की संख्या में अधिक वृद्धि होती है।

दूसरे शब्दों में ऐसी रेखा वाला जातक अपने अधिक सम्बन्धियों
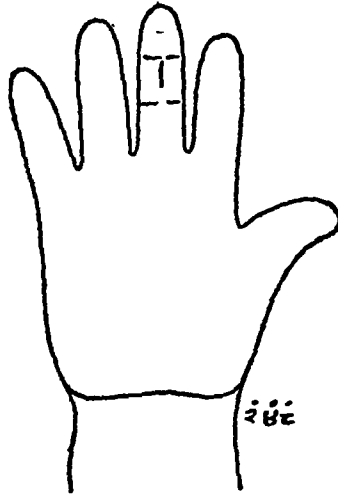
के कारण परेशान तथा घिरा "हुआ-सा" रहता है जैसे किसी ने उसे बन्धन में डाल दिया हो।

पूता

यह रेखा बाएं हाथ की मध्यमा उंगली के ऊर्ध्व पर्व पर संधि-रेखा
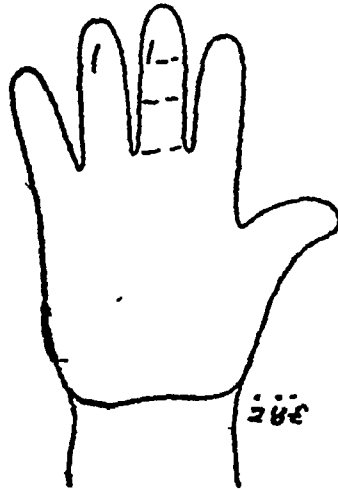
के समीप अथवा उसके मध्य भाग में पहुंचती हुई पाई जाती है (चित्र संख्या २४९)।

इस रेखा के प्रभाव से जातक अनेक विषयों का ज्ञाता, बहुमुखी प्रतिभा-सम्पन्न तथा बुद्धिमान होता है।

कुछ विद्वानों ने इस रेखा को 'लूटा' नाम से भी सम्बोधित किया है।

प्रियालिका

यह रेखा बाएं हाथ की मध्यमा उंगली के ऊर्ध्व पर्व के मध्य भाग में सीधी खड़ी हुई पाई जाती है (चित्र संख्या २५०)।
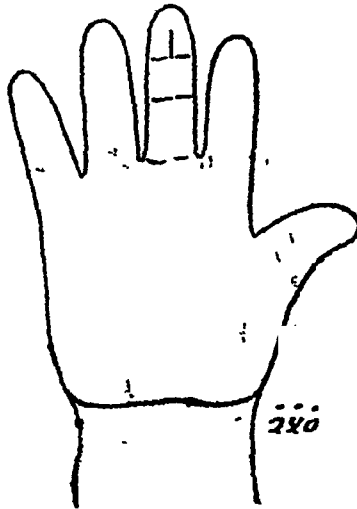
इस रेखा के प्रभाव से जातक अपने सम्बन्धियों तथा संसार के सभी लोगों का 'प्रिय' बनता है अर्थात् ऐसे व्यक्ति विश्व-प्रिय होते हैं। यह रेखा स्त्री-पुरुषों को समान रूप से फलदायक कही गई है।

देवी

यह रेखा बाएं हाथ की मध्यमा उंगली के ऊर्ध्व पर्व के उच्चतम शिखर पर स्थित रहती है (चित्र संख्या २५१)।
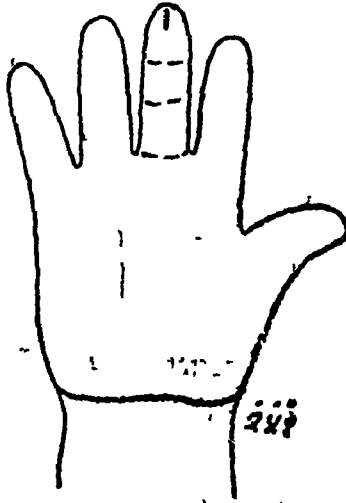
यह रेखा जातक के मन की चंचल-स्थिति पर प्रकाश डालती है।

इस रेखा के प्रभाव से जातक की स्थिति तथा स्थान में निरन्तर परिवर्तन होते रहते है।

महापूर्वा

यह रेखा बाएं हाथ की मध्यमा उंगली के, मध्य पर्व की सन्धि-रेखा पर पाई जाती है (चित्र संख्या २५२)। इसका सिरा कुछ लम्बा होता है।

यह रेखा पुरुष-जातक को महान् यश प्रदान करने वाली तथा स्त्री-जातक को यौन-सुख प्रदान करने वाली कही गई है।

महान्-यश से तात्पर्य यह है कि इस रेखा के प्रभाव से जातक अपने
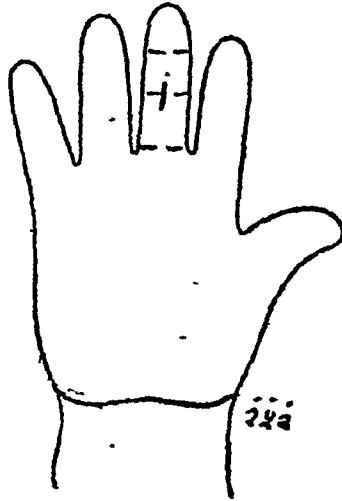
परिश्रम के फलस्वरूप प्रभावशाली बनता है तथा स्त्रियां अपने कर्तव्य-पालन के फलस्वरूप दाम्पत्य-सुख का पूर्ण उपभोग करती हैं।

देविका

गह रेखा बाएं हाथ की अनामिका उंगली के मूल पर्व पर सन्धि-

रेखा वाले स्थान पर स्थित होतो है (चित्र संख्या २५३)। यह रेखा गहरी होतो है।
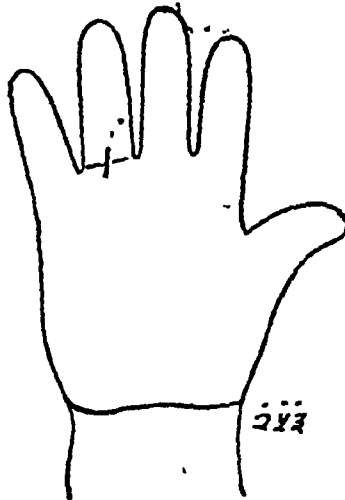
ऐसी रेखा वाला जातक जीवन में मनोवांछित ऐश्वर्य तथा अन्त मे मुक्ति को प्राप्त करता है अर्थात् मनुष्य जीवन के अन्त के बाद वह जातक मोक्ष पद प्राप्त कर लेता है, उसका पुनर्जन्म नही होता।

परिस्त्रीर्णा

यह रेखा बाए हाथ की अनामिका उंगली के मूल पर्व में पूर्वोक्त 'देविका-रेखा' वाले स्थान से कुछ ऊपर को ओर स्थित रहती है (चित्र संख्या २५४)।

ऐसी रेखा वाला जातक अपने पारिवारिक-जीवन की सनातन जटिलताओ मे घिरा रहता है। यह रेखा जातक के घर में धन-धान्य तथा सम्पत्ति की वृद्धि करने वाली कही गई है।
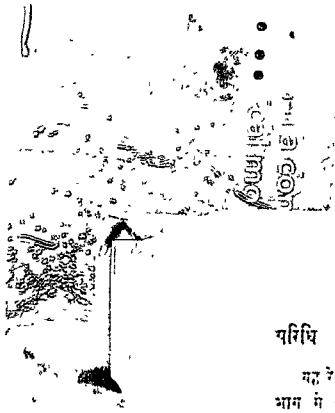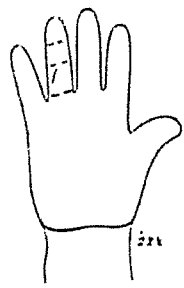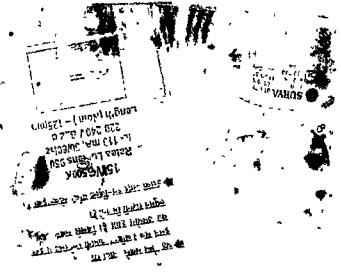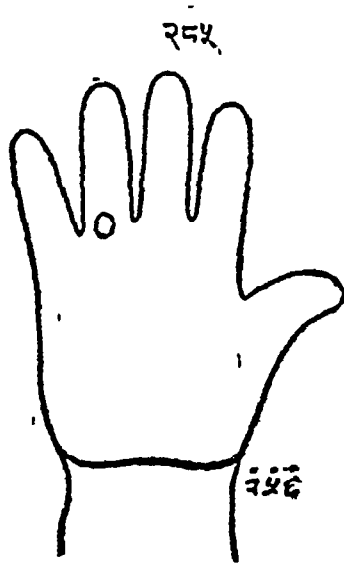
पद' से तात्पर्य राज्य में किसी अत्यन्त ऊंचे पद को ग्रहण करने से भी है।

सिंहिका

यह रेखा बाएं हाथ की अनामिका उंगली के मूल पर्व में कुछ तिर्यक् (तिरछे) रूप में स्थित रहती है (चित्र संख्या २५७)।

यह रेखा राजाओं को शत्रुओं पर विजय तथा ब्राह्मणों को सत्य की खोज अथवा तत्त्व-निर्णय में सहायता प्रदान करने वाली होती है। अन्य वर्ण वालों को यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विजय एवं सफलता प्रदान करती है।

मनुः

यह रेखा बाएं हाथ की अनामिका उंगली के प्रथम पर्व में द्वितीय मणि-रेखा के नीचे तथा पूर्वोक्त 'सिद्धिका-रेखा' से कुछ ऊपरी भाग में पाई जाती है (चित्र संख्या २५८)।

यह रेखा आकार में छोटी तथा पतली होती है और बहुत कम हाथों में पाई जाती है।
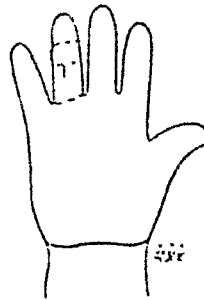
जिस व्यक्ति के हाथ में यह रेखा होती है, वह मन्त्राभ्यास करने वाला तथा मन्त्रों का ज्ञाता होता है।

यविष्ठा

यह रेखा बाएं हाथ को मध्यमा उंगलो के प्रथम तथा द्वितीय पर्व को अलग करने वालो पहलो सन्धि-रेखा पर पूर्वोक्त 'मनु-रेखा' से कुछ ऊपर वाले स्थान पर पाई जाती है (चित्र संख्या २५६)।

२५६
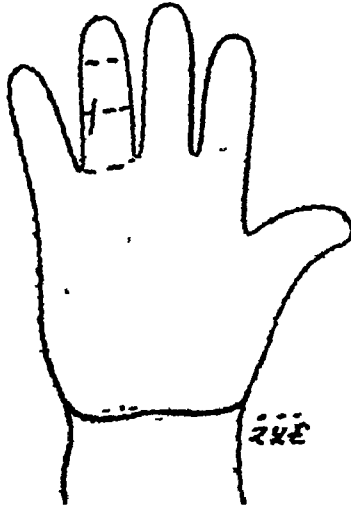
यह रेखा जातक को असाधारण प्रकार की ज्ञान-शक्ति प्रदान करती है। इस रेखा के प्रभाव से जातक को मन्त्र-सिद्धि प्राप्त होती है और वह उस मन्त्र-सिद्धि के द्वारा लाभ उठाता है।

भूति

यह रेखा बाएं हाथ की मध्यमा उंगली के मध्य पर्व के मध्य भाग में स्थित रहती है। यह रेखा कुछ पतली होती है (चित्र संख्या २६०)।

ऐसी रेखा वाला जातक श्रेष्ठ व्यवहार तथा उत्तम चरित्र वाला
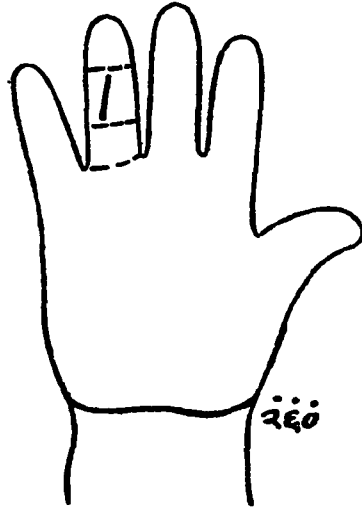
होता है । यह जातक को अभिलाषित वस्तुएं प्रचुर मात्रा में प्रदान करती है ।

अधिका

यह रेखा बाए हाथ की मध्यमा उंगली के ऊर्ध्व पर्व के ऊपरी
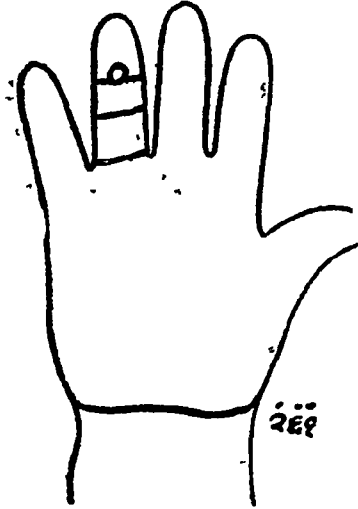
भाग में, सन्धि-रेखा के ठीक ऊपर पतली तथा वर्तुलाकार आकृति में स्थित होती है (चित्र संख्या २६१)।

इस रेखा के प्रभाव स्वरूप जातक तर्क-शक्ति मे प्रवीण तथा युक्ति-विज्ञ होता है।

दण्डी

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के मूल पर्व की सन्धि-रेखा के मध्य भाग में स्थित रहती है (चित्र संख्या २६२)।

इस रेखा के प्रभाव से जातक नेतृत्व-शक्ति-सम्पन्न तथा सैन्य संचालक होता है।

२६२
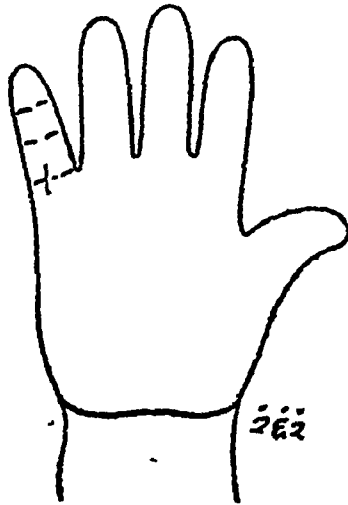
कुछ विद्वानों ने इस रेखा का फल दूरदर्शित तथा सम्भाषण-कला में प्रवीनता भी बताया है। कुछ विद्वान् इस रेखा को 'दण्डिनी' नाम से भी पुकारते हैं।

रुता

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के मूल से आरम्भ होकर वाम पार्श्व में होती हुई ऊपर की ओर जाती है। (चित्र संख्या २६३)।

२६३
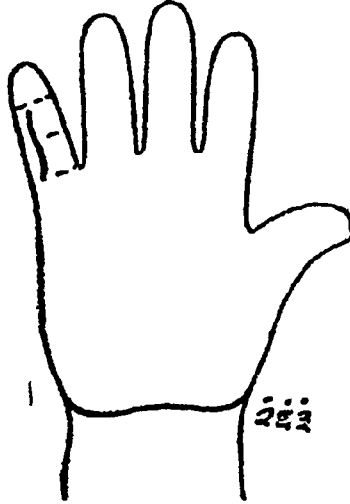
यह रेखा जातक को शत्रुओं पर विजय दिलाने वाली कही गई है। ऐसी रेखा वाले जातक के शत्रुओं की स्त्रियां रुदन करती रहती हैं।

वास्तोष्पति

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के मूल से आरम्भ होकर वाम पार्श्व में होती हुई ऊपर की ओर जाती है (चित्र संख्या २६४)। ऐसी रेखा जिस व्यक्ति के हाथ में होती है, वह व्यक्ति सजा हुआ मकान प्राप्त-करता-है अर्थात् ऐसी रेखा वाले व्यक्ति भली भांति सजे हुए मकान के स्वामी तथा ऐश्वर्यशाली होते हैं।
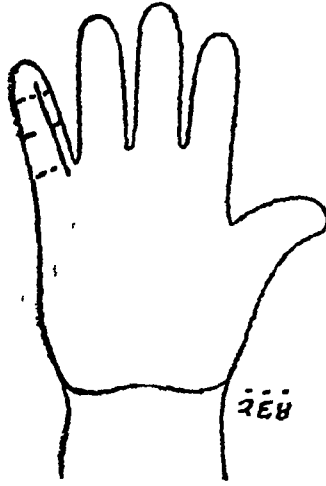
केशगण्डस्थला

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के मूल भाग से आरम्भ
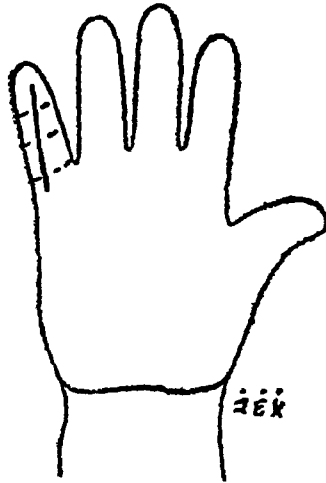
होकर पर्वों के मध्य भाग में से होती हुई ऊपर की ओर जाती है (चित्र संख्या २६५)।

ऐसी रेखा वाला व्यक्ति अपने जीवन का क्रमशः धीरे-धीरे विकास करता है। जिन लोगों के हाथ में ऐसी रेखा होती है, उनमें से कुछ व्यक्तियों के सिर पर एक गुम्मट (मांस का छोटा-सा गोल पिण्ड) उत्पन्न हो जाता है।

कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसी रेखा वाले जातक और उसके पिता के बीच मतभेदों की एक चौड़ी खाई बनी रहती है अथवा उसके और पिता के बीच झंझट और परेशानियों का सिलसिला चलता रहता है।

पतिः

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उगली के प्रथम पर्व पर उत्पन्न होकर द्वितीय सन्धि रेखा से जाकर मिल जाती है (चित्र संख्या २६६)।

२६६
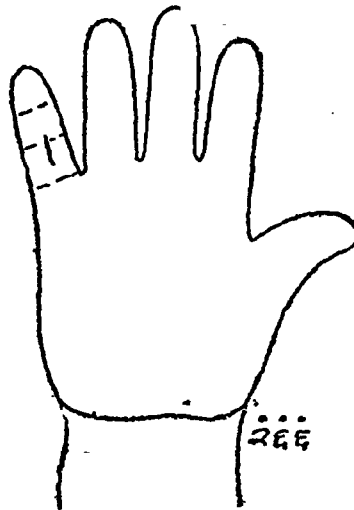
यह रेखा पुरुष जातक को कल्याण एवं कैवल्य पद प्रदान करती है तथा स्त्री जातक को सन्तान एवं दाम्पत्य-सुख देती है। ऐसी रेखा वाली स्त्रियां सद्गृहणी होती है।

पंगुः

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के मध्य पर्व पर सन्धि रेखा के ऊपर उससे मिली हुई दिखाई देती है (चित्र संख्या २६७)।
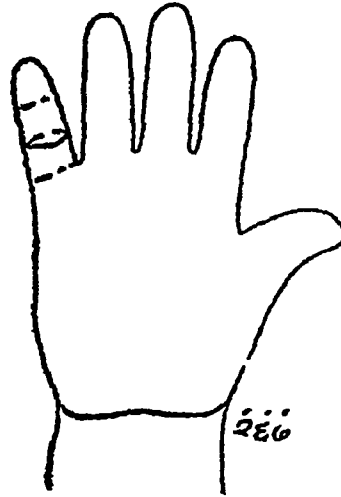
ऐसी रेखा वाला जातक लंगड़ा होता है।

कुछ विद्वान् इस रेखा को 'क्लेशा' के नाम से भी पुकारते है तथा इसे जातक के लिए क्लेश-दायिनी बताते हैं।

अनन्तकः

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के मध्य पर्व के मध्य भाग में गहरी दिखाई देती है (चित्र संख्या २६८)।

ऐसी रेखा जिस व्यक्ति के हाथ में होती है, वह जातक अग्नि-दुर्घटना का शिकार होता है। यह दाह्य-तैल-जन्म कष्ट को भी सूचित

२६८
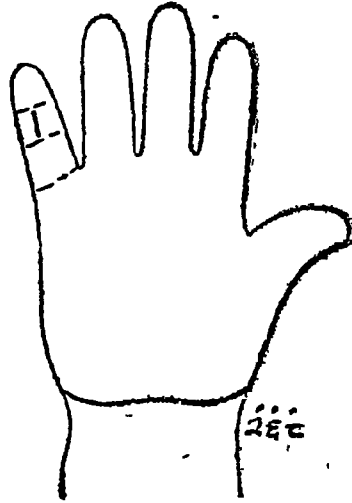
करती है अर्थात् इस रेखा के प्रभाव से जातक अग्नि में जलने आदि से उत्पन्न हुए कष्टों को भोगता रहता है, परन्तु उसकी मृत्यु नहीं होती है।

श्रीवल्ली

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा ऊंगली के ऊर्ध्व पर्व के उच्चत्तम
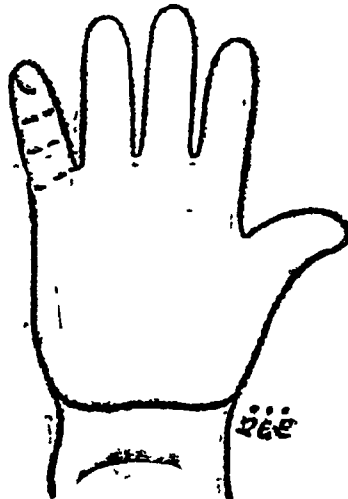
स्थान पर अर्द्ध चन्द्राकार तिर्यक रूप में पाई जाती है। (चित्र संख्या २६६)।

ऐसी रेखा वाला जातक धनी, परन्तु कुरूप आकृति का होता है। *यह जातक की टांग में फोड़ा, तथा कृमि-पीड़ा को उत्पन्न करती है।* ऐसी रेखा वाला जातक व्रण आदि के कष्ट को भोग कर ७० वर्ष की आयु में मृत्यु को प्राप्त हो जाता है। जिस प्रकार वेल सूख जाने पर भी वृक्ष को नहीं छोड़ती है, उसी प्रकार यह रेखा भी जातक के जीवन पर निरन्तर प्रभाव डाले रखती है। कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसी रेखा वाले जातक की आयु ७३ वर्ष की होती है।

रोहितं

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के सर्वोच्च भाग पर नाखून की ओर बढ़ती हुई पाई जाती है तथा अरुण वर्ण की होती है। (चित्र संख्या २७०)।
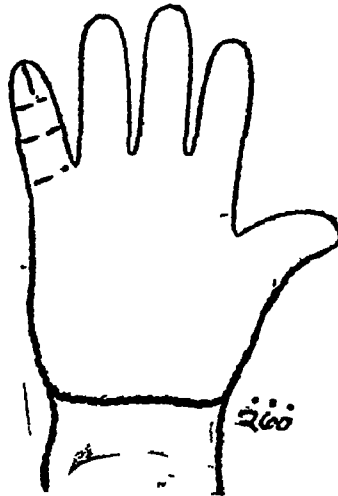
इस रेखा के प्रभाव से जातक अग्नि-दुर्घटना तथा रक्त-वमन आदि का शिकार बनता है। प्राय: १४ अथवा २८ वर्ष की आयु में यह रोग होने की सम्भावना रहती है। इस रेखा का प्रभाव विशेषकर स्त्रियों पर अधिक होता है।

कम्बु:

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के नाखून के नीचे मांसल पार्श्व भाग पर पाई जाती है (चित्र संख्या २७१)।
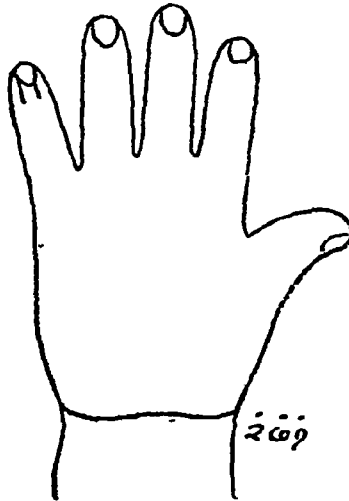
इस रेखा के प्रभाव से जातक को 'गल घोंट' (जिसमें गला घुट-सा जाता है रोग होने की संभावना रहती है।

इस रेखा का प्रभाव भी स्त्रियों पर अधिक होता है।

सिरा

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के नाखून के नीचे वृत्ताकार रुप में पाई जाती है। (चित्र संख्या २७२)।

ऐसी रेखा वाले जातक स्नायविक-रोगों से ग्रस्त रहते हैं। इस
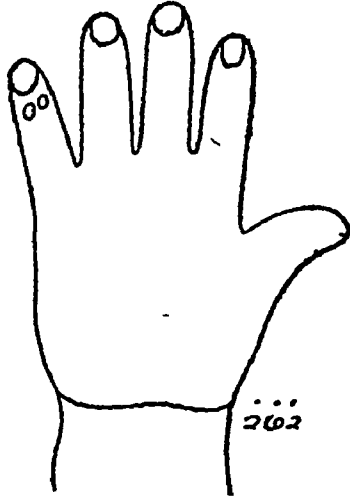
रेखा के प्रभाव से जातक की मान-हानि होने की संभावना भी रहती है।

नीरा

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के नाखून के नीचे उंगली के ऊर्ध्व पर्व के पृष्ठ भाग पर पाई जाती है।

इसमें दो शिराएं होती हैं जो परस्पर मिली हुई दिखाई देती है। (चित्र संख्या २७३)।

ऐसी रेखा जिस जातक के हाथ पर दिखाई दे, वह दीर्घ-जीवन प्राप्त करता है।

श्ववृत्ता

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के मध्य पर्व पर द्वितीय सन्धि-रेखा के ऊपर पाई जाती है। यह रेखा अपने दोनों पार्श्वों के दोनों सिरों पर वर्तुलाकार मुड़ी हुई रहती है (चित्र संख्या २७४)।

यह रेखा जातक को अभिलाषित सम्पत्ति प्रदान करती है।
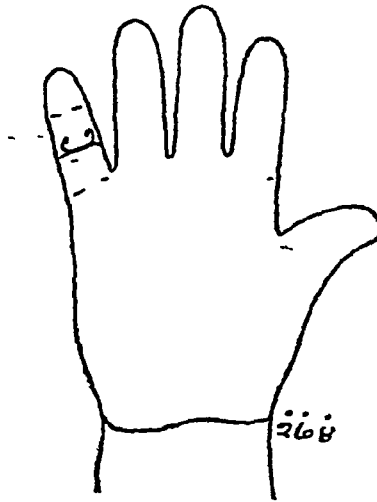
यदि इस रेखा का कोई भाग यदि सन्धि-रेखा बन गया हो तो उसका प्रभाव नष्ट हो जाता है। उस स्थिति में यह रेखा जातक के हृदय में स्वामी-भक्ति की भावना को भरती है। ऐसी रेखा वाला जातक कुत्ते के समान स्वामि भक्त होता है।

लामा

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के मूल पर्व में स्थित होती है तथा इसकी दो शिराएं रहती हैं (चित्र सख्या २७५)।
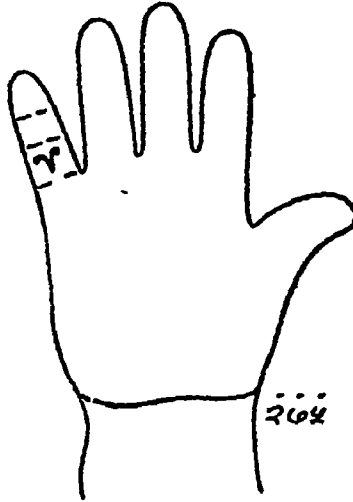
इस रेखा के प्रभाव से जातक या तो प्रभावशाली वक्ता (भाषण-कर्ता) बनता है या फिर बहरा हो जाता है। ऐसी रेखा वाले जातक के ऊपर लक्ष्मी की विशेष कृपा बनी रहती है अर्थात् वह धनवान् होता है।

मातुलानी

यह रेखा पूर्वोक्त 'लामा-रेखा' के नीचे, बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के मूल पर्व पर पाई जाती है। यह रेखा आकार में छोटी तथा पतली होती है (चित्र संख्या २७६)।

इस रेखा के प्रभाव से जातक अपने मामा के घर की स्त्रियों का दास जैसा बन जाता है।

२७६
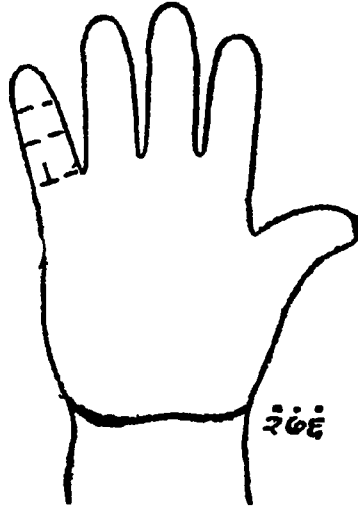
अन्य विद्वानों के मतानुसार ऐसी रेखा वाला जातक अपने जीवन के निम्नस्तर से ऊंचा नहीं उठ पाता। उसमें हीनता की भावना अत्यधिक मात्रा में पाई जाती है।

माधवी

यह रेखा बाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के मूल भाग में एक तरफ

२७७
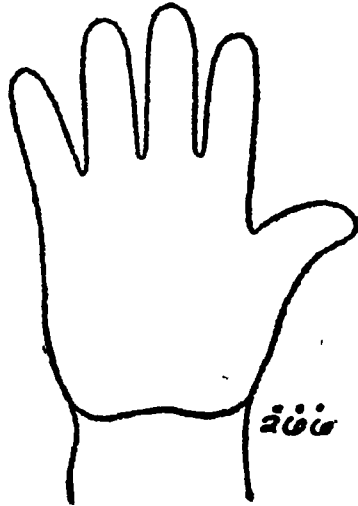
दाईं ओर को झुकी हुई 'मही-रेखा' के समीप तक जाती है। इसकी आकृति पतली होती है (चित्र संख्या २७७)।

ऐसी रेखा वाले व्यक्ति सत्कर्मों का अनुष्ठान करते है तथा उन्हें अनन्त सौभाग्य की प्राप्ति होती है। जिस व्यक्ति के हाथ में यह रेखा हो, उसकी मृत्यु वसन्त ऋतु में होती है—ऐसा विद्वानो का कहना है।

महिष्ठा

यह रेखा वाएं हाथ की कनिष्ठा उंगली के प्रथम पर्व के मध्य भाग में स्थित ऊपर की ओर वढती हुई दिखाई देती है (चित्र संख्या २७८)।
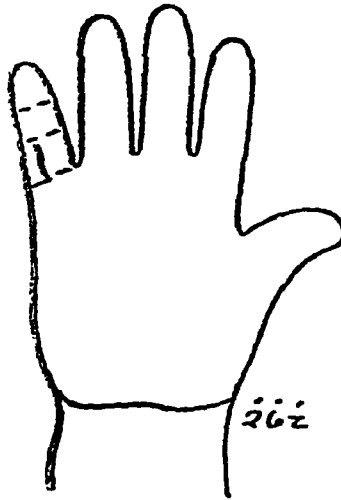
जिस व्यक्ति के हाथ मे ऐसी रेखा होती है वह राजाओं का प्रिय तथा शीलगुण युक्त होता है।

कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसा जातक केवल मध्य आयु (५० वर्ष) तक ही जीवित रहता है।

रुक्मकण्ठिका

यह रेखा बाएं हाथ की हथेली पर धर्मस्थान से उत्पन्न होकर 'माधवी रेखा' के कुछ नीचे की ओर स्थित रहती है (चित्र संख्या २७९) ।
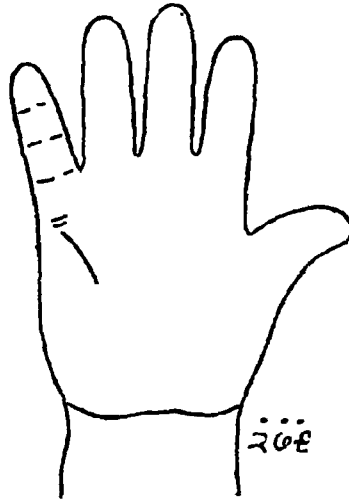
ऐसी रेखा वाले जातक को मनवांछित लाभ होता रहता है। ऐसा व्यक्ति या तो स्वर्ण भूषणों को स्वयं धारण करता है अथवा उसके पास बहुत-सा सोना (स्वर्ण) होता है।

रोहिष्ठा

यह रेखा बाएं हाथ की हथेली पर पूर्वोक्त 'रुक्म-कण्ठिका' रेखा से कुछ नीचे की ओर पाई जाती है (चित्र संख्या २८०)।

जिस व्यक्ति के हाथ में यह रेखा होती है, वह विपुल सम्पत्ति, रत्न, मोती तथा आभूषणादि का स्वामी होता है। यह रेखा अत्यन्त ऐश्वर्य प्रदान करने वाली कही गई है।

२८०
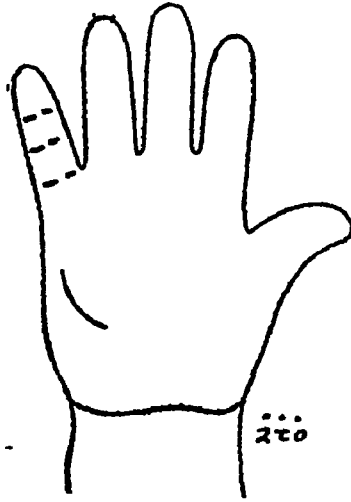
विशेष टिप्पणी—यदि किसी रेखा की वृद्धि बीच मे ही रुक जाए अथवा कोई रेखा बीच में ही टूट जाए अथवा उसमें कोई अन्य दोष हो तो उसका प्रभाव भी उसी के अनुसार कम होता है। जिन रेखाओं के रंग का वर्णन किया गया है, वे यदि उसी रंग की न हों तो या तो अपना पूर्ण प्रभाव प्रदर्शित नही करती या फिर उनका प्रभाव नष्ट हो जाता है—ऐसा विद्वानों का मत है।

रेखाओं के विशेष योग

अब हम कुछ विशिष्ट रेखा योगों का वर्णन कार्तिकेयन-प्रणाली के आधार पर करते हैं।

(१) यदि मणिबंध पर तीन रेखाए हथेली की ओर झुकी हुई हों

(चित्र संख्या २८१) तो ऐसा व्यक्ति राजा अर्थात् विपुल ऐश्वर्य का स्वामी होता है।

(२) यदि कनिष्ठा उंगली के नीचे धरातल पर दो स्पष्ट छोटी-छोटी रेखाएं हों तो ऐसे जातक के दो पत्नियां होती है। एक
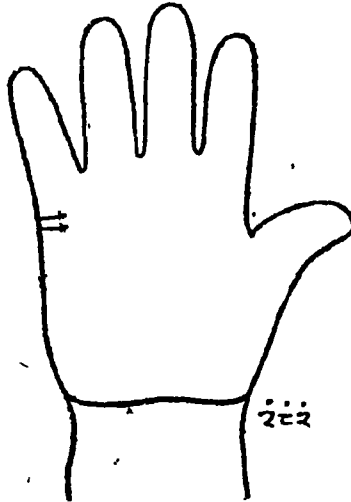
विवाह के समय से तथा दूसरी पहली पत्नी की मृत्यु हो जाने के वाद से।
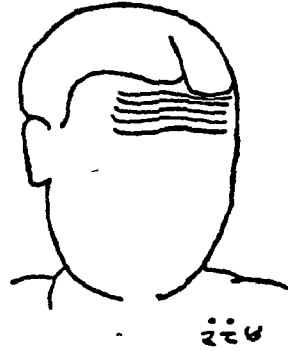
(३) यदि कोई रेखा कनिष्ठा उंगली के मूल स्थान से उठकर धरातलीय स्तर पर अभग्न स्थिति में तर्जनी उंगली के मूल तक चली जाय (चित्र संख्या २८३) तो जातक की आयु का परिमाण १०० वर्ष का होता है। परन्तु यदि यह रेखा वीच में ही खण्डित अथवा अन्य प्रचार के दोषों से युक्त हो तो जातक की आयु में उतनी ही कमी आ जाती है।

(४) यदि जातक के ललाट पर पांच धरातलीय (पड़ी) रेखाएं हों उनमें से कोई टूटी-फूटी न हो तथा उनके रग में कोई परिवर्तन नही हुआ हो (चित्र संख्या २८४) तो जातक की आयु सौ वर्ष की होती है। यदि किसी रेखा मे कोई त्रुटि दिखाई दे तो प्रति रेखा दस वर्ष के हिसाब से आयु को कम कर देना चाहिए। यदि केवल दो ही रेखाएं मस्तक पर हों तो जातक वलिदानी स्वभाव का होता है।

(५) यदि अंगूठे पर चार स्पष्ट रेखाएं हों, (चित्र संख्या २८५) तो जातक चिरंजीवी, धन-धान्य से सम्पन्न तथा परम यशस्वी होकर सुखी जीवन व्यतीत करता है।
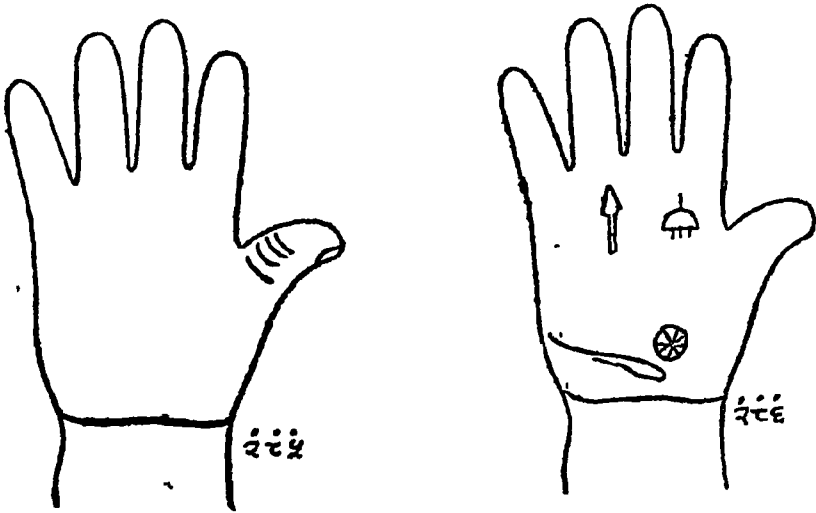
यदि अंगूठे पर मछली का चिह्न हो तो उक्त शुभ फल सौ गुना अधिक मात्रा में प्राप्त होता है। यदि अंगूठे पर मकर जैसी आकृति हो तो हजार गुना फल मिलता है। यदि कमल अथवा शख जैसी आकृति हो तो करोड़ गुना फल मिलता है।

(६) यदि हथेली पर अथवा पांव के तलवे में कुंडल, चक्र, त्रिशूल अथवा मयूर जैसी आकृति हो (चित्र संख्या २८६) तो जातक राजा अथवा परम ऐश्वर्यवान होता है।

(७) यदि अंगूठे के मध्य भाग में स्पष्ट यव चिह्न दिखाई दे (चित्र संख्या २८७) तो जातक सुखी-जीवन व्यतीत करने वाला तथा सुरुचि-पूर्ण स्वादिष्ट भोजनों का सेवन करने वाला होता है।

२८७

२८८
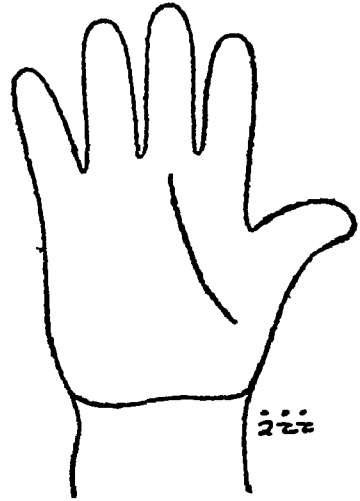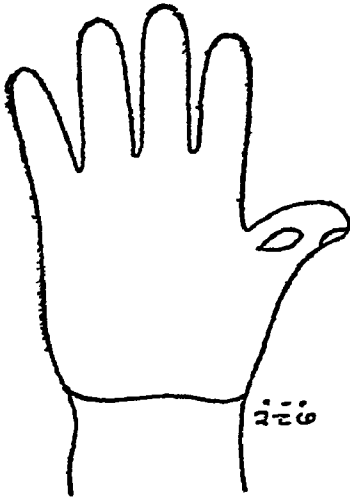
(८) अंगूठे के मूल भाग से निकल कर मध्यमा उगली के मूल तक यदि कोई रेखा पहुंच रही हो (चित्र संख्या २८८) तो वह भी जातक को श्रेष्ठ भोजन तथा सव प्रकार के सुख प्रदान करती है।

(९) अंगूठे के मूल से निकलने वाली रेखाएं सन्तान सूचक होती

२८९

२९०
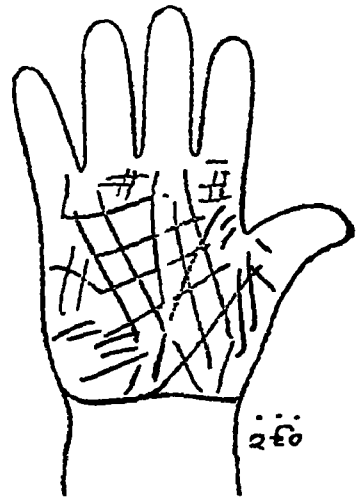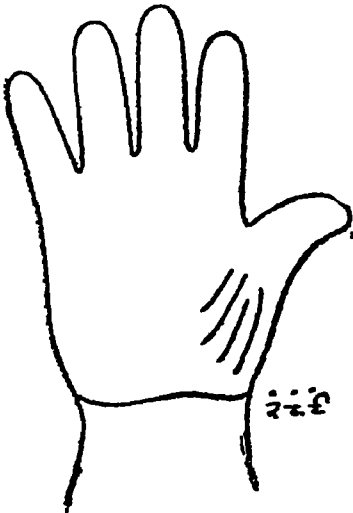
है। (चित्र संख्या २८९)। इनमें जो गहरी रेखाएं हों उन्हें पुत्र जन्म की सूचक तथा जो पतली रेखाए हों उन्हें कन्याओं के जन्म की सूचक समझना चाहिए। निर्दोष रेखाएं दीर्घजीवी तथा कटी-फटी दोष युक्त रेखाएं अल्पायु सन्तान की सूचक होती है।

(१०) हाथ में अधिक रेखाओं का होना (चित्र संख्या २९०) अत्यधिक चिन्ताओं का द्योतक होता है। अत्यधिक कम रेखाएं भी जातक को धन-हीन बनाती हे।

(११) जिस स्थान पर एक रेखा दूसरी रेखा को काटती है (चित्र संख्या २९१) उस आयु में जातक को किसी बीमारी अथवा दुर्घटना
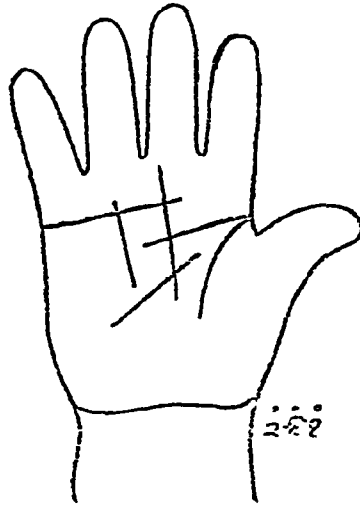
का शिकार बनना पड़ता है। काल निर्धारण के लिए हाथी की पूंछ के बाल से नापना चाहिए।

आवश्यक—(१) कार्तिकेतन पद्धति द्वारा हस्त परीक्षा के सारांश को इस प्रकरण में दिया गया है। हस्त-परीक्षक को चाहिए कि वह

भारतीय अथवा पाश्चात्य विधि से हस्त-परीक्षा करते समय इस कार्तिकेयन पद्धति के फलादेश को भी ध्यान में अवश्य रक्खे। इससे उसे अधिक सही निष्कर्ष निकालने में सहायता मिल सकेगी।

(२) हाथ की रेखाओं द्वारा विभिन्न प्रकार के योगों का ज्ञान अर्थात् कौन व्यक्ति राजा होगा, कौन मन्त्री, व्यवसायी, लेखक, चिकित्सक, कलाकार नौकर आदि होगा—इस विषय को प्रस्तुत खन्ड की पृष्ठ सख्या बढ जाने के भय से यहां नहीं दिया जा रहा है। वृहद सामुद्रिक विज्ञान के अगले तथा अन्तिम खन्ड 'स्त्री-सामुद्रिक' के अन्तर्गत 'परिशिष्ट के रूप में इस विषय पर विस्तार-पूर्वक प्रकाश डाला जायेगा।

मनुष्य-शरीर के अन्य अङ्ग

मनुष्य-शरीर के मुख्य अंग सिर और ललाट की बनावट तथा उसके प्रभाव, ललाट की रेखाएं तथा हस्त-रेखाओं द्वारा कार्तिकेयन-पद्धति से मनुष्य के शुभाशुभ का ज्ञान आदि विषयों पर पिछले प्रकरणों में पर्याप्त प्रकाश डाला जा चुका है, अब हम मानव-शरीर के अन्य अंगों की बनावट तथा उसको जातक के जीवन, चरित्र तथा स्वभाव आदि पर प्रभाव विषयों का वर्णन करते है ।

मानव-शरीर के विभिन्न अंग

मनुष्य-शरीर के विभिन्न अंगों को चित्र संख्या २९२ में प्रदर्शित किया गया है । चित्र में जो विभिन्न संख्याएं दी गई हैं, उन अगों का विवरण नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) मस्तक या ललाट, (२) कनपटी, (३) गाल, (४) जबड़ा, (५) गर्दन, (६) ठोड़ी, (७) गला, (८) हंसली, (९) हाथ, (१०) सामने की बांह, (११) ऊपरी हाथ का बाज, (१२) दाईं कुहनी, (१३) बाईं कुहनी, (१४) बगल, (१५) दाईं छाती, (१६) छाती या हृदय-स्थान, (१७) कन्धा, (१८) बाईं छाती, (१९) बांह, (२०) पेट, (२१) कलेजा, (२२) तिल्ली, (२३) कमर, (२४) नितम्ब, (२५) नाभि, (२६) कूल्हा, (२७) ऊपरी जांघ (२८) घुटना, (२९) पिंडली, (३०) टखना, (३१) पांव, (३२) टांग का पूरा हिस्सा ।
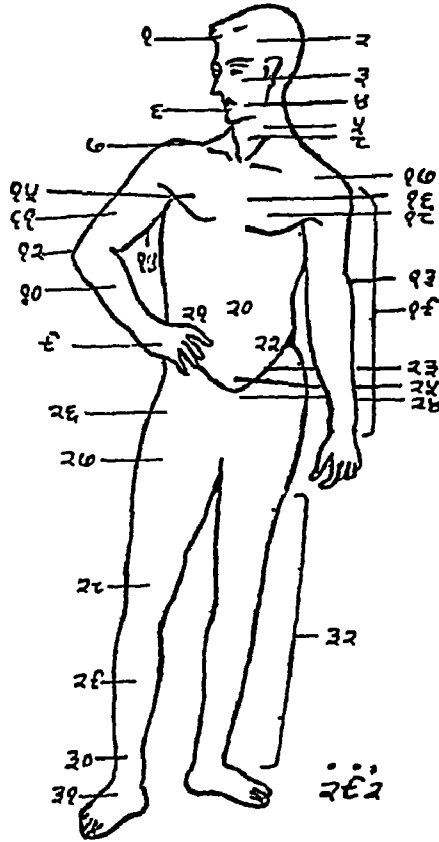
[मनुष्य-शरीर के विभिन्न अंग]

चित्र मे प्रदर्शित अंगो के अतिरिक्त मनुष्य-शरीर में शिश्न, वृषण, गुदा तथा और भी अनेक अंग होते है। सिर और हाथों के वाद पावों का उनमें मुख्य स्थान है, अतः अव हम सर्वप्रथम पांवों का वर्णन करते हैं। अगले प्रकरण में पाव की बनावट, उनमें पाई जाने वाली रेखाओं तथा पांव से सम्वन्धित अन्य विषयों पर विचार किया जायेगा, तदुपरान्त शरीर के अन्य अंगो के सम्बन्ध में लिखा जायेगा।

मनुष्य के पांव और उनके लक्षण

प्राचीन शास्त्रकारों ने पांव के २० भेद बताए है, परन्तु उन सबको निम्नलिखित ५ श्रेणियों में विभाजित किया जा सकता है—

(१) सर्वोत्तम।

(२) उत्तम।

(३) मध्यम।

(४) अधम।

(५) निकृष्ट।

सर्वोत्तम—इस श्रेणी के पांव वे होते हैं, जिनका रंग कमल के समान लाल होता है, तलवे कोमल होते हैं, नाखूनों का रंग तांबे के समान रक्ताभ होता है, उंगलियां परस्पर सटी हुई होती है तथा उनका ऊपरी भाग कछुए की पीठ की भांति उन्नत होता है, जिस पर नसें दिखाई नहीं देतीं।

ऐसे पांवों के तलवों में पसीना नहीं आता, गुल्फ छिपे रहते है, एड़ियां सुन्दर होती है तथा ऊपरी भाग में उष्णता बनी रहती है।

ऐसे पांव वाले व्यक्ति राजा-महाराजा, विपुल ऐश्वर्यवान्, धनवान्, गुणवान्, यशस्वी, सौभाग्यशाली, दीर्घायु तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाले महापुरुष होते है। इनकी सभी आकांक्षाएं पूर्ण होती रहती हैं।

उत्तम—इस श्रेणी के पांव 'सर्वोत्तम कोटि' से कुछ ही कम होते हैं। इनकी उंगलियां लम्बी तथा परस्पर मिली हुई, नाखून सामान्यतः लम्बे तथा त्वचा स्पर्श में कोमल होती है। शेष सभी गुण पूर्वोक्त प्रकार के ही समझने चाहिएं। ऐसे पांवों वाले व्यक्ति नीतिज्ञ, कार्य-कुशल, तीक्ष्ण बुद्धि, अच्छी सलाह देने वाले, साहित्य-प्रेमी, यशस्वी, धनी, यात्रा-प्रिय, तथा सर्वत्र सम्मान एवं सुख प्राप्त करने वाले होते हैं।

मध्यम—इस श्रेणी के पांवों के तलवे कोमल तथा गेरुए रग के, नाखून सर्पाकार तथा हल्के गुलाबी गेरुआ अथवा पीले रंग के होते हैं। उन पर नसें सामान्य रूप से उभरी होती है तथा उगलियों पर बहुत ही सामान्य बाल होते है।

ऐसे पांवों वाले व्यक्ति परिश्रमी, व्यवहार-कुशल, निर्भीक, दूर-दर्शी, विद्वान्, गणित अथवा विज्ञान में रुचि रखने वाले, साहित्यिक, पारिवारिक-चिन्ताओं से ग्रस्त तथा एक सीमित-क्षेत्र में यश-सम्मान प्राप्त करने वाले होते हैं। उंगलियां कुछ मिली तथा कुछ छितरी हुई होती हैं।

अधम—इस श्रेणी के पांवों के तलवे कुछ-कुछ भूरापन लिए हुए श्वेत रंग के होते है, त्वचा स्पर्श मे कठोर, रूखी, तथा ठण्डी होती है। इनके भाग पर पसीना आता है। उंगलियां चौड़ी होती है और उनके ऊपर बाल जमे रहते है। नाखून चपटे, लम्बे अथवा अधिक चौड़े होते हैं। गुल्फ बाहर की ओर निकला रहता है। नाखूनों का रंग पीला अथवा सफेद होता है।

ऐसे पावों वाले व्यक्ति अपने कुल के अभिमान में डूबे रहने वाले, विद्याओं के विशेष-प्रेमी, परिश्रम द्वारा भाग्योन्नति की इच्छा रखने वाले, कामुक-प्रवृत्ति के तथा दरिद्री होते है।

निकृष्ट—इस श्रेणी के पांवों के तलवों का रंग मिट्टी जैसे रंग का होता है। एड़ी मोटी तथा स्थान-स्थान पर फटी हुई, त्वचा स्पर्श में कठोर, ऊपरी भाग पर नसें उभरी हुई। उंगलियां टेढ़ी-मेढ़ी तथा उनके ऊपर अधिक बाल जमे हुए, गुल्फ बाहर की ओर काफी निकले हुए तथा नाखून छोटे, चपटे और कालापन अथवा नीलापन लिए हुए रहते हैं।

ऐसे पांवों वाले व्यक्ति दरिद्री, बीमारियों से ग्रस्त रहनेवाले, दास-वृत्ति के, लम्बे समय तक अपने घर से दूर रहने वाले, मिथ्याभिमानी, क्रोधी, निश्चिन्त, गंवार, मूर्ख तथा कुसंगति मे रहने वाले होते है।

स्कन्द पुराण में लिखा है—

"पादौ समांसलौ रक्तौ समौ सूक्ष्मौ सुशोभनौ।
समगुल्फौ स्वेदहीनौ स्निग्ध वैश्वर्य सूचकौ।"

अर्थात् मांसल, रक्ताभ, सुन्दर, समान गुल्फ वाले, स्वेद-हीन, स्निग्ध तथा छोटे पांव ऐश्वर्य के सूचक होते है।

परन्तु अन्य ग्रन्थ में लिखा है—

"विशाल चरणो धनी"

अर्थात् बड़े पांवों वाला व्यक्ति धनी होता है। अधिकांश विद्वानों के मत से पांव का छोटा होना शुभ लक्षण नहीं है। अब यहां पर विचार करने की बात यह रह जाती है कि पांव छोटा या बड़ा—इसका निश्चय कैसे किया जाए ?

शरीर के अनुपात से पांव की छोटाई-बड़ाई ज्ञात करने का तरीका शास्त्रकारों ने यह बताया है—

"आपार्ष्णि ज्येष्ठान्तं तलमत्र चतुर्दशांगुलायाम।
विस्तारेण षडङ्गुल मंगुष्ठो व्यङ्गुलायामः॥
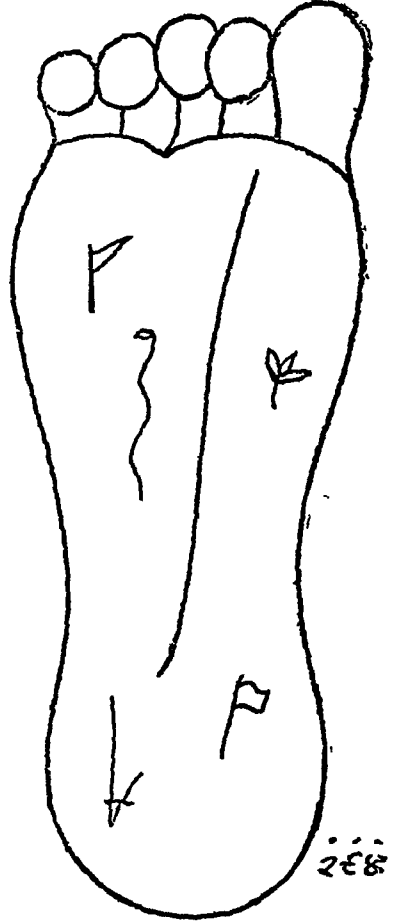
वाया पात्र   दायां पाव

पञ्चांगुल परिणाहः पादोनं तन्नखोऽङ्गुलं दैर्घ्यात ।
अङ्गुष्ठ समा ज्येष्ठा मध्या तत्षोडशांशोना ॥

अष्टांशोनानामा कनिष्ठिका षष्ठभाग परिहीना ।
सर्वासाम्पयासां नखाः स्वपर्व त्रिभाग मिताः ॥
सत्र्यंगुलि परिणाहा प्रथमाङ्गुली विस्तृताङ्गुली भवति।
अष्टाष्ट भागहीनाः शेषाः क्रमशः परिज्ञेयाः ॥"

भावार्थ—पांव की एड़ी से पांव की तर्जनी उंगली तक पांव की लम्बाई चौदह उगल होनी चाहिए। लम्बाई के उंगल का परिमाण यह है कि जिस व्यक्ति का पांव हो, उसी के हाथ की मध्यमा उंगली के द्वितीय अर्थात् बीच वाले पर्व की जितनी चौड़ाई हो, उसे एक उंगल के बराबर मानना चाहिए।

इसी अनुपात से पांव की चौड़ाई ६ अगुल, पांव के अंगूठे की लम्बाई २ अगुल, पांव के अगूठे का परिणाह (अर्थात् यदि धागे को अगूठे के चारो ओर लपेटा जाए तो उस धागे की लम्बाई) ४ अगुल होनी चाहिए।

इससे अधिक लम्बा तथा मोटा पांव सामान्य से 'अधिक बड़ा' समझना चाहिए और तथा इससे छोटा तथा पतला पांव सामान्य से 'कम लम्बा' समझना चाहिए।

पांव की प्रदेशिनी (तर्जनी)उगली की लम्बाई पांव के अंगूठे के बराबर होनी चाहिए। मध्यमा उंगली की लम्बाई तर्जनी उंगली से सोलहवां भाग कम, अनामिका की लम्बाई मध्यमा से आठवां भाग कम तथा कनिष्ठका की लम्बाई मध्यमा से छठा भाग कम होनी चाहिए। अर्थात् अंगूठे और तर्जनी की लम्बाई तो बराबर की हो उसके बाद क्रमशः सभी उगलियां एक दूसरी से कम लम्बी रहनी चाहिए।

इन सभी उगलियों के नाखून, पांव की उंगली के पर्व की लम्बाई

से एक तिहाई लम्बे होने चाहिए। प्रदेशिनी (तर्जनी) उंगली की मोटाई का परिणाह तीन अगुल का होना चाहिए। प्रदेशिनी उंगली जितनी मोटी हो, मध्यमा उंगली उससे आठवां भाग कम मोटी, मध्यमा की मोटाई से अनामिका उगली आठवां भाग कम मोटी तथा अनामिका की मोटाई से कनिष्ठा उगली की मोटाई का आठवां भाग कम होनी चाहिए।

इस प्रकार पाव की न्यूनाधिक लम्बाई का आनुपातिक परिमाण ज्ञात कर लेने के वाद उसके प्रभाव के सम्बन्ध में विचार करना उचित रहता है।

प्राच्य विद्वानों के मतानुसार पांवो के शुभ-अशुभ लक्षण इस प्रकार है—

(१) जो पांव मांसल, कछुए की पीठ की भांति उन्नत तथा नस-विहीन हो अर्थात् जिसके ऊपर नसे दिखाई न देती हों, उसे श्रेष्ठ समझना चाहिए।

(२) जिन पावों के तलवे कमल पुष्प की भाति गुलावी रंग के तथा मुलायम होते है, वे शुभ कहे जाते हैं।

(३) पांवों की उंगलियों का आपस मे एक दूसरी से मिले हुए होना, नखों का सुन्दर होना, एड़ियों का मांसल तथा गोलाई लिए हुए होना तथा टखनो को हड्डियों का दवा रहना—शुभ लक्षण है।

(४) पावो मे पसीना आना, टखनों की हड्डियों का अधिक निकला रहना तथा पाव के ऊपरी भाग पर नसो का दिखाई देना—अशुभ लक्षण समझना चाहिए।

(५) पांव यदि स्पर्श करने पर कुछ उष्ण (गरम) प्रतीत हों तो उसे शुभ और यदि शीतल (ठण्डे) प्रतीत हों तो उसे शुभ लक्षण समझना चाहिए।

(६) पांव आगे से बहुत चौड़े तथा पीछे से बहुत सिकुड़े हुए हों, सूखे से प्रतीत हों अथवा जिनकी उंगलियां छितरी हुई हों तो उन्हें अशुभ समझना चाहिए। ऐसे पांवों वाला जातक दुःखी तथा दरिद्र होता है।

(७) जिनके पांवों के तलवों का रंग सफेद हो वह व्यक्ति अभक्ष्य-भक्षण करने वाला होता है।

(८) जिसके पांवों के तलवों का रंग पीला हो, वह व्यक्ति कामी तथा व्यभिचारी होता है।

(९) पांवों की उंगलियों के नाखून पीलापन अथवा सफेदी लिए हों तथा रूखे हों तो ऐसे व्यक्ति अपने जीवन में अनेक प्रकार के कष्ट भोगते है।

(१०) जिनके पांव बीच में कुछ अधिक उठे हुए (ऊंचे) हों, वे यात्राएं अधिक करते हैं।

(११) जिनके पांवों का रंग कषाय वर्ण का हो उनका वंश आगे नहीं चलता।

(१२) जिनके पांवों का रंग जली हुई मिट्टी के रंग जैसा हो, वे लोग पापी तथा हिंसक-स्वभाव के होते हैं। ऐसे लोग ब्रह्म-हत्या तक कर बैठते है।

(१३) जिनके पांवों के तलवों में रेखाएं न हों, जो कठोर, फटे हुए अथवा रूखे हों, ऐसे व्यक्ति दुःखी रहते हैं।

(१४) जिनके पांव के तलवे मांस-रहित से प्रतीत हों, वे लोग रोगी बने रहते हैं।

(१५) जिनके पांव के तलवों का मध्य भाग उठा हुआ हो, वे लोग यात्रा-प्रेमी होते हैं।

(१६) जिनके पांव की उंगलियो के नख सूप के समान फैले हुए, लम्बे, टेढे अथवा श्वेत रग के हों, वे लोग दरिद्र होते हैं।

(१७) जिनके पांव के तलवों का रंग काला अथवा कत्थई हो, उनका वश नष्ट हो जाता है।

(१८) यदि पांव के तलवे मे पाई जाने वाली लम्बी ऊर्ध्व-रेखा सरल, सुन्दर, स्पष्ट, निर्दोष तथा एड़ी से लेकर तर्जनी उंगली के मूल तक गई हो, तो ऐसा व्यक्ति राजा अथवा परम ऐश्वर्यशाली होता है। इस रेखा की लम्बाई तथा बनावट जिस प्रकार की हो, वैसा ही उसका न्यूनाधिक शुभ अथवा अशुभ फल समझना चाहिए।

(१९) जिस पुरुष के पांव मे अंकुश के समान रेखा हो, वह जीवन पर्यन्त सुखो का उपभोग करता है।

(२०) जिन लोगो के पांवों के तलवे मे ध्वजा, कमल, वज्र, तलवार, शख, छत्र, धनुष, शक्ति, बाण, चामर, कुण्डल, व्यजन, सर्प, आदि के चिन्ह स्पष्ट हों, वे व्यक्ति भाग्यशाली होते हैं। यदि ये चिन्ह अस्पष्ट हों अथवा किन्ही अन्य रेखा के द्वारा कटे हुए हों तो जातक को अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में इनके शुभ फल तथा ऐश्वर्य का भोग प्राप्त होता है।

(२१) यदि पांव के तलवों में तोता, चूहा, शृगाल, कौवा, साही आदि की आकृति बनी हो तो उसे अशुभ लक्षण समझना चाहिए। ऐसी आकृतियो वाले जातक दरिद्री होते हैं।

(२२) यदि किसी पांव में पर्व-रेखा के भीतर कोई अन्य रेखा दिखाई दे तो उसे खेती से लाभ प्राप्त होता है।

पांव का अंगूठा

पांव के अंगूठे के सम्बन्ध में 'सामुद्र तिलक' में लिखा है—

"वृत्तो भुजग फणाकृति स्तुंगो मांसल शुभोऽङ्गुष्ठः।
सशिरो ह्रस्वाश्चिपिटो वक्रो विपुलः स पुनर शुभः ॥"

भावार्थ—"पांव का अंगूठा यदि सर्प के फण के समान गोल आकृति वाला, उन्नत तथा मांसल हो तो उसे शुभ समझना चाहिए। यदि अंगूठे पर नसे दिखाई देती हों, वह बहुत छोटा या बहुत बड़ा, टेढ़ा अथवा चिपटा हो तो उसे अशुभ जानना चाहिए।"

पांव के अंगूठे के विषय में अन्यत्र इस प्रकार कहा गया है—

"वृत्तैस्ताम्रनखै रक्तै रंगुष्ठै राज्यभागिनः ।
अङ्गुष्ठा पृथुला येषां ते नारा भाग्यवर्जिताः ॥
क्लिश्यन्ते विकृताङ्गुष्ठास्ते नरा वन गामिनः ।
चिपिटैर्विक्षतैर्भग्नैरङ्गुष्ठैः रतिनिन्दिताः ॥
वक्रैः रूक्षैस्तथा ह्रस्वैरङ्गुष्ठैः क्लेश भागिनः ॥"

भावार्थ :—पांव का अंगूठा यदि गोल, ताम्रवर्ण नख वाला तथा लालिमा लिए हुए हो तो ऐसे व्यक्ति राज्याधिकार (ऐश्वर्य) प्राप्त करते है। जिन लोगों के पांव का अंगूठा बड़ा होता है, वे भाग्यहीन होते हैं। टेढ़े-मेढ़े अंगूठे वाले व्यक्ति जंगलों में (इधर-उधर) भटकने वाले तथा कष्ट पाने वाले होते है। चपटे, कटे-फटे तथा टूटे हुए अंगूठे वाले व्यक्ति रति-निन्दित होते हैं तथा टेढ़े, रूखे और अधिक छोटे अंगूठे वाले व्यक्ति क्लेश उठाते है।

पांवों की उंगलियां

पुरुषों के पावों की उगलियो के सम्बन्ध मे शास्त्रकारो ने लिखा है—

"प्रदेशिनी यदा दीर्घा अंगुष्ठं च व्यति क्रयेत् ।
स्त्री भोगंलभते नित्यं पुरुषो नात्र संशयः ॥
मध्यमा यांतु दीर्घायां भार्याहानिर्विनिर्दिशेत् ।
अनामिकातु दीर्घायां विद्याभोगी भवेन्नरः ॥
सच ह्रस्वाभवेद्यस्य तत्वेद्या परदारगं ।
यस्य प्रदेशिनी स्थूला भर्तिश्चैव कनिष्ठिका ॥
ह्रस्वा क्लेशाप भोगायां गुल्ठाद्दीर्घा प्रदेशिनीः ।
समातुमध्यमा श्रेष्ठा श्रिये दीर्घा कनिष्ठिका ॥
आयतयामध्यमया कार्यविनाशो ह्रस्वया दुखं ।
धनया समया पुत्रोत्पत्ति स्तोकं नृणामायुः ।
असंहताभिह्रस्वापि रंगुलीभिस्तु मानवः ।
दासोवादासकर्मोवा समुद्र वचनं यथा ॥
अंगुल्यपि समादीर्घा संहृता श्चसमुन्नता ।
तेषां प्रदक्षिणावर्ता पृथिव्यास्तेन संशयः ॥
दीर्घा कनिष्ठिका पिस्याद्यस्य स्वर्णभाजनं सनरः ।
यदि सापिपुनर्लध्वी परदारापरायणः सततम् ॥"

भावार्थ—यदि पांव की तर्जनी उगली अंगूठे से आगे निकली हुई (लम्बी) हो तो जातक को स्त्री-भोग का सुख नित्य प्राप्त होता है।

यदि यह तर्जनी उंगली छोटी हो तो क्लेशकारक होती है। यदि अंगूठे के बराबर की हो तो मध्यम फल समझना चाहिए। अंगूठे से बड़ी तर्जनी उगली शुभ फल देने वाली समझनी चाहिए।

यदि मध्यमा उगली अगूठे से बड़ी हो तो जातक की पत्नी की हानि (मृत्यु) होती है। यदि तर्जनी के बराबर लम्बी हो तो श्रेष्ठ फल देने वाली कही गई है। (अधिक मोटी हो तो फल अशुभ होता है)।

यदि अनामिका उगली लम्बी हो तो पुरुष विद्यानुरागी होता है। यदि छोटी हो तो पर-स्त्री गामी होता है। (इसकी लम्बाई का विचार मध्यमा उंगली की लम्बाई से करना चाहिए)।

यदि तर्जनी उंगली स्थूल तथा कनिष्ठा उंगली लम्बी हो तो जातक सुखी और धनी होता है।

यदि कनिष्ठा उगली छोटी हो तो पर-स्त्री-गामी होता है।

यदि कनिष्ठा उगली छोटी तथा लट्ठ के समान मोटी हो तो जातक को बाल्यावस्था में ही मातृ-वियोग का दु:ख उठाना पड़ता है।

यदि मध्यमा उंगली अधिक लम्बी हो तो अपयश प्राप्त होता है। यदि अधिक छोटी हो तो जातक दु:खी रहता है। यदि अन्य उंगलियो के समान ही लम्बी हो तथा सभी उंगलियां परस्पर मिली हुई हों तो जातक पुत्रोत्पत्ति की क्षमता से युक्त, परन्तु अल्पायु होता है।

यदि पांव की सभी उगलियां छोटी-छोटी और फैली हुई हों तो जातक दास अथवा दास वृत्ति जैसा काम करने वाला होता है।

यदि सब उगलियां समान आनुपातिक लम्बाई, पुष्ट, ऊंची उठी हुई तथा एक दूसरी से मिली हुई हों तो उन्हें शुभ फलदायक समझना चाहिए।

पांवो की उंगलियों के सम्वन्व में अन्य विद्वानो के मत का सार-सक्षेप यह है—

(१) यदि पांवों की उंगलियां समान आनुपातिक लम्वाई की हों, कुछ दाईं ओर को झुकी हुई हों, कोमल, उन्नत, अग्रभाग पर गोल, चिकनी, चमकदार तथा परस्पर मिली हुई हों तो ऐसा जातक अत्यन्त ऐश्वर्यशाली, उच्च-पदाधिकारी तथा यशस्वी होता है।

(२) यदि मध्यमा उंगली अनामिका उंगली से छोटी हो तो स्त्री-हानि होती है।

(३) यदि अनामिका उंगली मध्यमा से वड़ी हो तो जातक को स्वर्ण का लाभ होता है।

पांव की उंगलियों के नाखून

(१) यदि पांव की उंगलियों के नाखून लाल रंग के, शख की भाति घुमाव वाले तथा चमकदार हों तो ऐसे जातक उच्च-पद प्राप्त करते हैं।

(२) यदि पांवों के नाखून चिकने तथा श्वेत-विन्दु-चिन्ह से युक्त हों तो जातक सौभाग्यशाली होता है। उंगलियों के नाखूनों पर श्वेत-विन्दु-चिन्हों के विषय मे विद्वानों के विभिन्न मत है। कुछ लोग इन्हे शुभ तथा कुछ लोग अशुभ मानते हैं।

(३) कुछ विद्वानों के मतानुसार यदि दाएं पांव के नाखूनो मे सफेद, पीले, काले अथवा लाल रग के विन्दु-चिन्ह हों तो उन्हे 'उत्पात जनक' समझना चाहिए। यदि दाएं पाव के अगूठे के नख मे ऐसे चिन्ह हों तो जातक के धन का विनाश होता है तथा उसे अपयश प्राप्त होता है। यदि तर्जनी उंगली के नाखून पर ऐसे चिन्ह हों तो जातक का किसी से झगड़ा होता है। यदि मध्यमा उंगली के नाखून पर ऐसे चिन्ह हो तो

वे जातक के लिए चिन्ता एव उद्वेगजनक होते हैं। यदि अनामिका उगली के नाखून पर ऐसे चिन्ह हों तो ये जातक के लिए शुभ होते है। यदि कनिष्ठा उंगली के नाखून पर ऐसे चिन्ह हो तो नवीन सन्तान का जन्म होता है अथवा पुत्र को धन-लाभ होता है। बाएं पांव के नाखूनो में इसका उल्टा फल समझना चाहिए।

पांव का ऊपरी भाग

पांव का ऊपरी भाग मांसल, उन्नत तथा कोमल हो तो उसे शुभ समझना चाहिए। यदि इस भाग पर नसे दिखाई देती हों, पसीना आता हो अथवा बाल (केश) हों तो उसे अशुभ लक्षण समझना चाहिए।

गुल्फ (टखने)

पांव के टखने मांस से ढके हुए हों तो उन्हे शुभ समझना चाहिए। टखनों का टेढ़ा होना अशुभ होता है। शूकर की गुल्फ जैसे गुल्फ वाले व्यक्ति कष्ट उठाते है। तथा भैसे के टखनों की भांति टखने वाले व्यक्ति पापी तथा दु:खी होते है। यदि गुल्फों पर रोम हों तो सन्तान का अभाव होता है अथवा पुत्र-सुख कम प्राप्त होता है।

एड़ी

यदि एड़ी बड़ी हो तो जातक दीर्घायु होता है। पांव के अनुपात के बराबर हो तो कभी दु.खी और कभी सुखी रहता है। यदि एड़ी छोटी हो तो जातक दरिद्र होता है और यदि एड़ी उठी हुई हो तो शत्रुओ पर विजय पाता है। एड़ी गुदगदी हो तो उत्तम होती है और कड़ी हो तो सन्तान-सुख में कमी रहती है।

अन्य बातें

(१) यदि पुरुष के दाएं पांव के तलवे मे पसीना आता हो तो उसे

अशुभ तथा भयकारक समझना चाहिए। ऐसे लोगो को यात्राए करनी पड़ती हैं।

(२) यदि पुरुष के दाए पाव के तलवे मे पसीना आता हो तो उसे शुभ लक्षण समझना चाहिए।

(३) यदि पांव मे खुजली मचे तो रोग, यात्रा अथवा धन की हानि आदि अशुभ फल होते है। पांव की खुजली का प्रभाव एक पखवाड़े (१५ दिन) के भीतर प्रकट हो जाता है।

पिडली, जांघ और टांग

(१) यदि पांव को पिंडलियां गोल, गुदगुदी तथा रोमरहित हो तो उन्हे शुभ अथवा अशुभ समझना चाहिए।

(२) गोल, छोटो, गुदगुदी तथा हाथी की सूड की भाति ढलवां जांघो वाला व्यक्ति भाग्यशाली होता है। पतली जाघो वाले मनुष्य दरिद्र होते हैं।

(३) ऊपर के धड़ से अधिक लम्बी टागे शुभ होती है, ऐसा व्यक्ति शीघ्रगामी होता है। यदि टांगे कम लम्बी हों तो शूरवीर होता है।

(४) टांगों का निचला आधा भाग हिरन अथवा घोडे जैसा हो तो जातक भाग्यवान होता है!

(५) व्याघ्र अथवा सिंह जैसी पिंडलियों वाले व्यक्ति धनी होते हैं।

(६) मछली जैसी जांघ वाले व्यक्ति ऐश्वर्यवान होते हैं।

(७) सियार कुत्ता, गधा अथवा रीछ जैसो जाघो वाले व्यक्ति दुर्भाग्यशाली तथा कौए जैसी टांगो वाले दुःखी होते है।

(८) जांघ का अधिक बड़ा तथा मोटा होना तथा पिडलियों पर अधिक रोमो का होना दरिद्रता का लक्षण समझना चाहिएं।

(९) कम तथा मुलायम रोमों वाली जांघें शुभ तथा सौभाग्यदायक होती हैं।

रोमें

(१) यदि रोम-कूप से ही एक ही रोम निकले तो जातक अत्यन्त उच्च-पद प्राप्त करता है। यदि एक रोम-कूप में से दो-दो रोम निकले तो जातक परम-विद्वान् तथा बुद्धिमान् होता हैं। यदि एक रोम-कूप में से तीन अथवा अधिक रोम निकले तो जातक दुःखी तथा दरिद्र होता है।

(२) भ्रमर के समान काले, चिकने, पतले, सुन्दर तथा मुलायम रोमों वाला व्यक्ति अत्युच्चपद प्राप्त करता है। अधिक घने रोमों वाला व्यक्ति विद्वान् तथा बुद्धिमान् होता है। रोम-हीन अगों वाला व्यक्ति संन्यासी होता है। पीतवर्ण रोमों वाला व्यक्ति पापी होता है। मोटे तथा रूखे रोमों वाला व्यक्ति अधम होता है। यदि रोम अपने अग्रभाग में चिरे हुए हों तो जातक धनी होता है।

यह फलादेश शरीरस्थ किसी भी अंग पर पाए जाने वाले रोगों के सम्बन्ध में लागू होता है। पांव के रोगों पर भी यही फल समझना चाहिए।

घुटने

(१) जिस व्यक्ति के घुटने भीतर को धंसे हुए हों, वह अपनी स्त्री अथवा अन्य स्त्रियों के वश में रहता है तथा उसकी मृत्यु परदेश में होती है।

(२) खूब मोटे तथा मांसल घुटनों वाला व्यक्ति ऐश्वर्यशाली, भू-स्वामी तथा दीर्घजीवी होता है।

(३) हाथी के समान घुटनों वाला व्यक्ति भोगी होता है।

(४) घोड़े के समान घुटनों वाला व्यक्ति दुर्गति को प्राप्त होता है।

(५) तालफल जैसे घुटनों वाला व्यक्ति अत्यन्त दुःख प्राप्त करता है।

(६) टेढे-मेढे, विकराल अथवा बहुत छोटे घुटनों वाला व्यक्ति दरिद्र होता है।

(७) ऊंचे-नीचे तथा कमजोर घुटनों वाला व्यक्ति दरिद्र होता है तथा दास-वृत्ति (नौकरी) करता है।

(८) यदि घुटनों पर मांस एक जैसा न हो—कहीं कम और कहीं अधिक हो तो ऐसा व्यक्ति निर्धन होता है। ऐसे घुटनो को अशुभ समझना चाहिए।

अन्य अङ्गों के लक्षण

शरीर के अन्य अंगों के लक्षण नियमानुसार समझना चाहिए।

आंखें

आंखों के सम्बन्ध में प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानों के मत का सार यह है—

(१) जिस जातक की आंखे आगे को बहुत उभरी हुई हों, वह किसी काम को समाप्त किए बिना अधूरा नही छोड़ता। वह छोटी से छोटी बातों को भी विस्तार से स्मरण रखता है।

(२) बड़ी गोल तथा स्वच्छ आंखों वाले व्यक्ति विपरीत-यौन वालों को अपनी ओर अधिक आकर्षित करते हैं। ऐसे व्यक्ति निर्भीक, अग्रगामी तथा साहसी होते हैं।

(३) जिनकी दोनों आंखें दूर-दूर हों, वे स्पष्टवादी तथा खरे होते है। उनका दृष्टिकोण सीधा और साफ होता है।

(४) यदि आंखे एक-दूसरी के समीप हों तो जातक चालाक और चंचल होता है।

(५) तिरछी आंखों वाला व्यक्ति कांइयां तथा तिकड़मी होता है, परन्तु वह दूसरों के अधिकारों का भी ध्यान रखता है।

(६) अनार के पुष्प जैसे नेत्रों वाला व्यक्ति भू-स्वामी होता है।

(७) व्याघ्र के समान नेत्रों वाला व्यक्ति क्रोधी होता है।

(८) मुर्गे जैसे नेत्रों वाला व्यक्ति झगड़ालू होता है।

(९) बिल्ली जैसे नेत्रों वाला व्यक्ति चालाक, धूर्त, हिंसक और अधम परन्तु धनी होता है।

(१०) मोर अथवा नेवले जैसे नेत्रों वाला व्यक्ति मध्यम श्रेणी के होते है।

(११) काली आंखों वाला व्यक्ति वासनात्मक प्रवृत्ति का, काइयां तथा तिकड़मी होता है।

(१२) भूरी आंखों वाला व्यक्ति सज्जन, स्वार्थ-हीन तथा अस्थिर स्नेह वाला होता है।

(१३) नीली आंखों वाला व्यक्ति लोक-प्रिय तथा दृढ निश्चयी होता है।

(१४) स्लेटी रंग की आंखों वाला व्यक्ति मनमौजी तथा रगीन तबियत वाला (आशिक मिजाज) होता है। ऐसे लोग विलासी भी होते है।

(१५) आंखों की सफेदी गाय के दूध जैसी हो और पुतलिया काली हों तो उसे अत्यन्त शुभ लक्षण समझना चाहिए।

(१६) गधा, भैंसा अथवा सर्प जैसी आंखो वाले व्यक्ति की मृत्यु शस्त्राघात से होती है।

(१७) ऊट जैसी आंखों वाले व्यक्ति पापी तथा निर्दयी होते है।

(१८) बड़े और टेढ़े नेत्रों वाले पुरुष स्त्रियों के वश में रहते है।

(१९) बैल अथवा कौच जैसे नेत्रों वाले व्यक्ति राजा अथवा परम ऐश्वर्यशाली होता है।

(२०) हंस अथवा घोड़े जैसे नेत्रों वाले व्यक्ति प्रजा-पालक, नेतृत्व-शक्ति सम्पन्न तथा लोकप्रिय होते है।

(२१) औड़ी आंखों वाले व्यक्ति क्रूर होते हैं।

(२२) हरिण जैसी आंखों वाले पुरुष पाप-बुद्धि होते हैं।

(२३) नेत्र-प्रान्तो मे कुछ लालिमा हो तो उसे शुभ लक्षण समझना चाहिए।

(२४) एक ओर को ढालू अथवा टेढ़े नेत्रों वाले व्यक्ति चोर होते है।

(२५) हाथी जैसी आंखों वाले व्यक्ति सेनापति होते है।

(२६) कमलदल जैसी आंखों वाले व्यक्ति धनवान् होते हैं।

(२७) जिनकी आंखों की पुतलियां अत्यधिक काली हों, वे महा-दुष्ट होते हैं।

(२८) एक आंख वाले (काने) व्यक्ति धूर्त और चालाक होते हैं।

(२९) मेंढक अथवा कौए जैसी आंखों वाले व्यक्ति अधम, परन्तु दीर्घजीवी होते हैं।

(३०) मटमैली आंखों वाले व्यक्ति भी अधम परन्तु दीर्घजीवी होते हैं।

(३१) उन्नत नेत्रों वाले व्यक्ति सौभाग्य-शाली होने पर भी अल्पायु होते हैं।

भ्रू (भौंह)

भौहो के सम्बन्ध में प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानों के मत का सार संक्षेप निम्नानुसार समझना चाहिए।

(१) यदि भौंहे द्वितीया के चन्द्रमा के समान टेढ़ी तथा गोलाई लिये हुए हों, (चित्र संख्या २९५) तो उन्हे शुभ समझना चाहिए, ऐसी

भौहों वाला जातक धनवान तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

(३) नाक के ऊपरी भाग से आरम्भ होकर दोनों दिशाओं में गोलाई लिए हुए एक दूसरी से अलग बडी, उन्नत, लम्बी, पतली, श्याम रंग वाली तथा मुलायम रोएं वाली भौहे प्राच्य विद्वानों के

मतानुसार शुभ होती है (चित्र सख्या २९७) पाश्चात्य-विद्वानों के मत में ऐसी भौहों वाला जातक अधिक निर्भीक तथा स्पष्टवादी होता है।

(७) यदि भौहों पर रोम बहुत अधिक, बहुत कम, बहुत कड़े अथवा पीले रग के हों तो ऐसी भौंहों को अशुभ समझना चाहिए।

(८) हल्की तथा कमानोदार भौंहों वाला व्यक्ति कलात्मक रुचि का तथा कोमल हृदय वाला होता है।

(९) यदि भौहे आंखो से अधिक ऊची उठी हुई हो तो जातक निर्बल मन का तथा अनिश्चयी होता है।

(१०) यदि भौहें बहुत नोची हो और उनमे वक्रता का अभाव हो तो जातक दृढ संकल्प वाला होता है।

(११) मोटी और सोधी भौहों वाला व्यक्ति व्यवहारिक स्वभाव का होता है और वह किसी भी काम को आरम्भ करके उसे पूरा किए विना चैन नही लेता।

(१२) विषम, घनी और झाड़ीदार भौहे व्यक्ति के ढीले-ढालेपन को प्रकट करती है। ऐसा व्यक्ति उल्लेखनीय रूप से चतुर, दूसरो को प्रभावित करने वाला, विलक्षण विचारो वाला, परन्तु अस्थिर व्यक्तित्व का होता है।

वरौनी

सूक्ष्म, सुदृढ़, सघन तथा एकदम कालो वरौनियो वाले जातक दीर्घायु, सौभाग्यशाली तथा घनी होते है। भिन्न प्रकार की वरौनियों वाले व्यभिचारी तथा पापो होते हैं।

पलकें

(१) जिस व्यक्ति की पलक नही झपकती, वह धनहीन होता है। पांच सैकिण्ड मे एक वार पलक गिराने वाले व्यक्ति निर्धन, दस सैकिंड

में एक बार पलक गिराने वाले दूसरों के आश्रित, पन्द्रह सैकिण्ड में एक बार गिराने वाले धनी, तथा बीस या पच्चीस सैकिण्ड में एक बार पलक गिराने वाले व्यक्ति धनी, भोगी तथा दीर्घायु होते हैं।

दृष्टि

(१) जिनकी दृष्टि में चिकनाई हो वे धनवान् तथा भोगी होते है।

(२) जिनकी दृष्टि में दैन्य हो वे दरिद्र होते है।

(३) जिनकी दृष्टि गूढ़ हो वे महत्ताशाली होते है।

(४) मोची दृष्टि से देखने वाले क्रूर तथा अविचारी होते हैं।

(५) सूक्ष्म दृष्टि से देखने वाले निर्धन होते हैं।

(६) स्थूल दृष्टि से देखने वाले भाग्यशाली होते हैं।

(७) नासिका के अग्रभाग पर दृष्टि रखने वाले व्यक्ति विद्वान् होते हैं।

(८) जिनकी दृष्टि में श्यामता हो, वे भाग्यवान होते है।

(९) ऊची दृष्टि से देखने वाले पुण्यात्मा होते है।

(१०) नीची दृष्टि से देखने वाले पापी होते है।

(११) तिरछी दृष्टि से देखने वाले क्रोधी होते है।

(१२) सीधी दृष्टि से देखने वाले सामान्य तथा सरल होते हैं।

(१३) सर्प जैसी दृष्टि से देखने वाले क्रूर होते है।

(१४) मुर्गे तथा बिल्ली की दृष्टि से देखने वाले पापी होते है।

कान

(१) छोटे कानों वाले व्यक्ति भीरु, कृपण, परन्तु परिमार्जित रुचि के और स्नेही-प्रकृति के हाते है।

(२) पाश्चात्य मतानुसार कान जितने बड़े होते है, जातक के स्वभाव में उतनी ही रूक्षता होती है ।

(३) कान सिर के समीप स्थित हों तो जातक भावुक स्वभाव का होता है, परन्तु सकट के समय अच्छे साहस का परिचय देता है ।

(४) कान सिर से वाहर की ओर निकले हुए हो तो व्यक्ति कृपण तथा असस्कृत रुचि का होता है ।

(५) प्राच्य मतानुसार बड़े कानों वाले व्यक्ति धनी होते हैं।

(६) लम्वे तथा मांसल कानो वाले व्यक्ति सुखी होते है ।

(७) जिनके कानो के ऊपर रोएं हों, वे दीर्घायु होते हैं ।

(८) चपटे कानो वाला व्यक्ति अधिक सुख भोगता है ।

(९) मांसहीन कानों वाला व्यक्ति अपमृत्यु का शिकार होता है ।

(१०) जिसके कानों मे नसे दिखाई देती हों वह व्यक्ति हिंसक स्वभाव का होता है ।

(११) मुलायम, गोल तथा सुन्दर कानों वाला व्यक्ति सुखी होता है ।

(१२) चूहे जैसे कानों वाला व्यक्ति बुद्धिमान् होता है ।

(१३) भाले की नोक जैसे कानो वाला व्यक्ति सेनापति होता है ।

(१४) कुरूप कानो वाले व्यक्ति अल्पायु तथा दरिद्र होते हैं ।

(१५) कान वड़े हो परन्तु कान के छिद्र छोटे हों तो ऐसे व्यक्ति राजा अथवा अत्यन्त ऐश्वर्यशाली होते है ।

(१६) जो कान कनपटी के साथ सुन्दरतापूर्वक जुड़े हुए हों, वे श्रेष्ठ माने जाते हैं ।

नाक

(१) तोते जैसी नाक वाले व्यक्ति राजा होते हैं अथवा उच्चपद प्राप्त करते हैं।

(२) बड़ी नाक वाले व्यक्ति भोगी होते हैं।

(३) सीधी नाक वाले व्यक्ति धर्मात्मा होते हैं।

(४) टेढ़ी-मेढ़ी अथवा आगे से मोटी नाक वाले व्यक्ति पापी होते हैं।

(५) सूखी हुई-सी नाक वाले व्यक्ति दीर्घजीवी होते हैं।

(६) टेढ़ी नाक वाले व्यक्ति चोर होते हैं।

(७) चपटी नाक वाले पुरुष की मृत्यु स्त्री के कारण होती है।

(८) आगे से कुछ झुकी हुई नाक वाले व्यक्ति धनी होते हैं।

(९) जिनकी नाक दाईं ओर को झुकी हुई हो, वे क्रूर होते हैं।

(१०) जिनकी नाक आगे से दो भागों में विभक्त-सी हो, वे निर्धन होते हैं।

(११) बहुत बड़ी या बहुत छोटी नाक वाले व्यक्ति निर्धन होते है।

(१२) नाक के छिद्र छोटे हों तो उन्हें शुभ समझना चाहिए।

(१३) नीचे को ओर झुकी हुई नाक वाला व्यक्ति मनमौजी होता है।

(१४) छोटी तथा चपटी नाक वाला व्यक्ति विनोदी स्वभाव का तथा दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

(१५) नाक के छिद्र बड़े हों तो जातक विषयासक्त होता है।

छींकना

(१) धनी लोग केवल एक वार छीकते हैं।

(२) एक साथ दो या तीन वार छीकने वाला व्यक्ति दीर्घजीवी होता है।

(३) एक साथ चार वार छीकने वाला व्यक्ति दरिद्र होता है।

(४) इससे भी अधिक वार एक साथ छीकना अशुभ तथा दोष-युक्त माना गया है।

होंठ और अधर

ऊपर के होंठ का 'होंठ' अथवा 'ओष्ठ' कहा जाता है तथा नीचे के होठ को 'अधर' कहा जाता है। इन दोनों के लक्षणों को नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) जिनके अधर विम्ब फल के समान लाल, पतले तथा सीधे हों, वे धनाढ्य तथा ऐश्वर्यशाली होते हैं।

(२) जिनके अधर पएल-पुष्प की भांति लाल हो, वे विद्वान् होते हैं।

(३) जिनके अधर मूंगे के समान कांतियुक्त हों, वे उच्च अधि-कारी होते हैं।

(४) जिनके अधर कोमल, चिकने तथा मुलायम हो, वे धनी तथा सुखी होते हैं।

(५) ऊपर का होठ कटा हुआ, रूखा तथा भद्दे रंग का हो तो जातक दरिद्र होता है।

(६) ऊपर का होठ मोटा हो तो जातक भाग्यशाली होता है, परन्तु यदि अधिक बडा हो तो भीरु स्वभाव का होता है।

(७) ऊपर का होंठ छोटा हो तो जातक भोगी होता है, यदि अधिक छोटा हो तो दुःखी होता है।

(८) मोटे होंठ विषय-लोलुपता के चिन्ह समझने चाहिए, परन्तु उसका स्नेह निष्कपट होता है।

(९) जिसका निचला होंठ (अधर) बाहर की ओर निकला हुआ हो, वह भोजन-भट्ट होता है, परन्तु दूसरों के प्रति उदार दृष्टिकोण रखने वाला होता है।

(१०) यदि ऊपर का होंठ नीचे की ओर लटका हुआ हो तो ऐसा व्यक्ति झमेलों में नहीं पड़ना चाहता, परन्तु किसी विपत्ति के समय वह उत्तरदायित्व का निर्वाह करने वाला तथा औरों के लिए सहायक भी सिद्ध हो सकता है।

(११) जिस व्यक्ति के होठ दोनों किनारों पर नीचे की ओर मुड़े हों, वो मनहूस तथा निराशावादी होता है। यों, उसमे दृढ़ता, सच्चाई तथा ईमानदारी पूर्ण मात्रा में पाई जाती है।

(१२) यदि दोनों होठ परस्पर सटे हुए न रहते हों और जिनके कारण मुंह हर समय खुला हुआ प्रतीत होता हो, तो ऐसे होठो वाले जातक मे गम्भारता का अभाव होता है। वो जोवन के सुखो का शौकीन, परन्तु निम्न श्रेणी की वुद्धि वाला होता है।

(१३) जिसके दोनों होंठ दृढता से बन्द रहते हो, वह व्यक्ति दृढ़ निश्चयी होता है। ऐसे व्यक्ति पर पूरा भरोसा किया जा सकता है।

(१४) ऊपर का होंठ आगे की ओर निकला हुआ हो तो जातक बुद्धिमान् तथा मधुरभाषी होता है।

(१५) नीचे का होंठ बहुत पतला तथा अधिक लम्बा हो तो जातक दरिद्र होता है।

(१६) ऊपर का होंठ फटा हुआ हो तो उसे दरिद्रता का लक्षण समझना चाहिए ।

(१७) यदि होठ इस प्रकार खुले रहते हो कि उनके भीतर से दांतो का ऊपरी मसूढा दिखाई दे तो जातक स्वार्थी होता है ।

दांत

(१) श्वेत, चमकीले, एकसार पक्तिवद्ध, समान आकार के स्वच्छ सुन्दर दांतों वाला व्यक्ति सुखी तथा धनवान् होता है ।

(२) लम्बे, बड़े तथा वाहर निकले हुए दातों वाला व्यक्ति विद्वान् होता है। यदि ऐसे दांत वडे हों तो दीर्घायु और सब पर दया करने वाला होता है, यदि छोटे हों तो अल्पायु होता है।

(३) दांतों के मसूढ़े दिखाई न देते हो तो जातक सत्यवादी होता है।

(४) चूहे के समान छोटे, अत्यन्त तीक्ष्ण तथा परस्पर मिले हुए दांतो वाला व्यक्ति भाग्यवान होता है।

(५) यदि दात पर दांत रहते हों तो जातक वन्धु नाशक होता है।

(६) राक्षस अथवा बन्दर के समान विकृत, रूखे तथा थोड़े-थोड़े अन्तर पर रहने वाले दांत अशुभ होते हैं। टेढे तथा विषम(कोई छोटा तथा कोई वड़ा) दोनो अशुभ फलकारक होते हैं।

(७) चिकने दातो वाला व्यक्ति धनवान् तथा गुणवान होता है।

(८) मुंह मे सब मिलाकर २८ दातो वाला व्यक्ति सुखी, २९ दांतों वाला व्यक्ति दु.खी, ३० दातो वाला कभी सुख और कभी दुःख पाने वाला, मतान्तर से धनी, ३१ दातो वाला भोगी तथा ३२ दांतों वाला ऐश्वर्यवान् , गुणवान, विद्वान्, यशस्वी, सुखी तथा राजा अथवा राजा के समान होता है।

जिह्वा

(१) जीभ का अग्रभाग चिकना, छोटा, नीचा तथा लाल हो तो जातक विद्वान् तथा श्रेष्ठ वक्ता होता है।

(२) कमल-पत्र की भांति फैली हुई उचित परिमाण वाली लाल रंग की जीभ हो तो जातक उच्चपद प्राप्त करता है।

(३) जिसकी जीभ का रंग पीला हो, वह व्यक्ति दुःखी तथा मूर्ख होता है।

(४) जीभ का रंग काला हो तो जातक दास वृत्ति करता है।

(५) जीभ का रंग सफेदी लिए हो तो जातक आचारहीन होता है।

(६) यदि सम्पूर्ण जीभ का रंग एक समान न हो; यह दो रंग की-सी दिखाई देती हो तो जातक पापी होता है।

(७) मोटी जीभ वाला रूखे स्वभाव का होता है।

तालु

(१) तालु का रंग काला हो तो जातक दुःखी, निर्धन तथा कुल को नष्ट करने वाला होता है।

(२) तालु में कुछ पीलापन हो तो उसे शुभ समझना चाहिए।

(३) लाल रंग का तथा बड़े आकार का तालु शुभ होता है।

(४) तालु का रंग सफेद हो तो जातक धनी होता है।

(५) उत्तम रंग वाले, उत्तम आकृति वाले तथा चिकने तालु को शुभ तथा खुरदरे, फटे, रूखे तथा विकृत तालु को अशुभ फलदायक समझना चाहिए।

कपोल

(१) कमलदल के समान कान्तियुक्त, भरे हुए तथा उन्नत कपोलों

(गाल) वाला व्यक्ति ऐश्वर्यशाली, उच्चपदाधिकारी, धनी, सुखी तथा भोगी होता है।

(२) भीतर को धसे हुए, मास हीन तथा कम रोएं वाले गालों वाला जातक दीन, दुःखी, पापी, दास वृत्ति करने वाला तथा भाग्यहीन होता है।

चिवुक और हनु

होंठ के नीचे वाले भाग को 'चिवुक' अथवा ठोड़ी, तथा दोनों गालों के नीचे एवं ठोड़ी के दोनो ओर के भाग को 'हनु' कहते है।

(१) गोल तथा भरी हुई ठोड़ी (चिवुक) कही गई है। ऐसी ठोड़ी वाला व्यक्ति भाग्यशाली तथा सुखी होता है। ऐसे व्यक्ति जीवन के आनन्द का पूरा-पूरा उपभोग करते हैं।

(२) पतली, बहुत बड़ो तथा दो भागो बंटी हुई ठोड़ो वाला व्यक्ति दरिद्री होता है।

(३) कोमल तथा मोटी ठोड़ो वाला व्यक्ति सुखो होता है।

(४) चपटी ठोड़ो वाला जातक कठोर हृदय का तथा लोभी होता है।

(५) नुकीली ठोडी वाला जातक बुद्धिमान्, अहङ्कारी तथा विवेक-शील होता है।

(६) छोटी ठोड़ो वाला व्यक्ति डरपोक होता है।

(७) गुदगुदी ठोड़ी वाला जातक भोगी होता है।

(८) गुदगुदी ठोड़ी मे गड्ढा भी हो तो जातक सुख एव विविध प्रकार के भोगो का उपभोग करने वाला होता है।

(९) अधिक बड़ो, अधिक कृश तथा अधिक छोटी ठोड़ी वाला व्यक्ति निर्धन तथा भ्रमणशील होता है।

(१०) ठोड़ी और होंठ के मध्य भाग (हनु-प्रदेश) में गहरा गड्ढा हो तो ऐसे जातक की बुद्धि अत्यन्त तीव्र होती है।

(११) हनु-प्रदेश दीर्घ हो तो जातक में दृढ़ता होती है।

(१२) हनु-प्रदेश टेढा हो तो दुर्भाग्य का लक्षण समझना चाहिए।

(१३) यदि हनु-प्रदेश के दोनो भाग बड़े हों तो जातक विजयी तथा यशस्वी होता है

ग्रीवा (गर्दन)

(१) चपटी, शुष्क तथा शिरा युक्त ग्रीवा (गर्दन) वाला व्यक्ति दरिद्र होता है।

(२) भैसे के समान मोटी गर्दन वाला व्यक्ति शूर-वीर होता है।

(३) बैल जैसी गर्दन वाले व्यक्ति की मृत्यु शस्त्राघात से होतो है।

(४) जिसकी ग्रीवा में तीन रेखाएं पड़ती हों वह राजा अथवा परम ऐश्वर्यशाली होता है।

(५) बहुत छोटी (कोत) गर्दन वाले व्यक्ति साहसी, बलवान, अविश्वासी, धूर्त तथा आक्रामक प्रवृत्ति के होते हैं।

(६) लम्बी गर्दन वाले व्यक्ति भीरु स्वभाव के होते हैं। यदि ऐसी गर्दन पतली भो हो तो जातक डरपोक स्वभाव का होने के साथ ही लज्जाशील भी होता है। यह अपने से श्रेष्ठ व्यक्तियों के आदेश को तुरन्त मान लेता है।

(७) यदि गर्दन आगे की ओर झुकी हुई हो तो जातक व्यवहार-कुशल होता है।

(८) यदि गर्दन पीछे की ओर हो तो जातक भौतिक-जीवन से कम सम्बन्ध रखने वाला, काल्पनिक-वृत्ति का होता है।

(९) यदि गर्दन एकदम सीधी हो तो जातक मध्यम श्रेणी का होता है ।

(१०) टेढ़ी, सूखी तथा पतली गरदन वाले व्यक्ति निर्धन होते हैं ।

(११) बहुत अधिक लम्बी गरदन वाले व्यक्ति भोगी होते हैं ।

(१२) गोल घड़े के आकार की गर्दन हो तो जातक धनी तथा दीर्घजीवी होता है ।

(१२) टेढ़ी गर्दन वाला व्यक्ति चुगलखोर होता है ।

(१४) चपटी गर्दन वाला व्यक्ति दरिद्री होता है ।

(१५) गर्दन के पिछले भाग मे रोएं हो, नसे उभरी हुई हों अथवा वह भाग टेढ़ा-मेढ़ा या अधिक बड़ा हो तो जातक रोगी तथा निर्धन होता है ।

कांख

(१) उन्नत, पुष्ट, सुगन्धित, मांसल तथा बिना पसीने वाली कांख हो तो जातक ऐश्वर्यशाली होता है ।

(२) नीची, गड्ढेदार तथा विषम कांख होने से जातक निर्धन, कपटी तथा बेईमान होता है ।

(३) सम कांख हो तो जातक भोगी होता है ।

कंधा

(१) ऊंचे, बड़े तथा मांसल कंधों वाला व्यक्ति वीर तथा साहसी होता है ।

(२) हाथी, सुअर अथवा बैल जैसे कंधों वाला जातक महाधनी, महाभोगी तथा उच्च पद पाने वाले होता है ।

(३) मांसहीन, गड्ढेदार अथवा छोटे कंधों वाला व्यक्ति दुःखी रहता है।

(४) कंधे पर रोएं हों तो उन्हें दरिद्रता का लक्षण समझना चाहिए।

(५) बकरे को भांति अथवा केले के खम्भे की भांति कंधों वाले व्यक्ति अत्यन्त बलवान धनी, तथा यशस्वी होते है।

बाहु (भुजा)

(१) हाथी के सूंड के समान गोल तथा घुटनों तक लम्बी भुजाओं वाला जातक शूर-वीर, प्रतापी तथा परम ऐश्वर्यमान होता है।

(२) समान मोटी भुजाओं वाला व्यक्ति देशाटन करने वाला होता है।

(३) बाहुओं में नसे दिखाई दें, उनमें अधिक रोम हों अथवा छोटी हों तो जातक दरिद्री होता है।

(४) सामान्य रोमयुक्त भुजाओं वाला व्यक्ति दीर्घायु तथा धनी होता है।

(५) ऊंची-नीचो बाहुओं वाला जातक चोर होता है।

(६) छोटी बाहुओं वाला व्यक्ति सेवावृत्ति (नौकरी) करता है।

हंसली

(१) हंसली निकली हुई हो अर्थात् हड्डी ऊपर को अधिक उभरी हुई हो तो जातक दरिद्री होता है।

(२) हंसली मांसल तथा उन्नत हो तो जातक धनी तथा भोगी होता है।

वक्षःस्थल (छाती)

(१) छाती समतल हो तो जातक धनवान होता है।

(२) छातो पुष्ट और मोटी हो तो जातक शूर-वीर होता है।

(३) छाती ऊंची-नीची हो तो जातक को मृत्यु शस्त्राघात से होती है।

(४) छातो जितनी अधिक चौड़ी, उन्नत, कठोर तथा स्थिर हो उसे उतना ही शुभ समझना चाहिए।

(५) चौडी तथा रोम युक्त छाती वाला व्यक्ति वीरो, बहादुर और दयालु होता है।

(६) छाती पर जितने अधिक बाल हों, वे उतने ही शुभ होते हैं।

(७) छाती के रोएं ऊपर (गरदन की) ओर जाते है तो जातक में वीरता अत्यधिक होती है।

(८) पतली छातो वाला व्यक्ति धन-हीन होता है।

(९) यदि छाती पर रोम न हों तो ऐसा जातक निर्दयी, डरपोक, चंचल तथा धोखेबाज, विश्वास न करने योग्य होता है। वह किसी भी उत्तरदायित्व का गभीरता पूर्वक निर्वाह नही कर सकता।

उर-स्थल (हृदय)

(१) उर-स्थल एक समान हो तो जातक धनी होता है।

(२) उर-स्थल कृश हो तो जातक दरिद्र होता है।

(३) उर-स्थल ऊंचा-नीचा हो तो जातक की मृत्यु शस्त्राघात से होती है।

(४) उर-स्थल और कण्ठ का सन्धि-भाग ऊंचा-नीचा हो तो जातक क्रूर स्वभाव का होता है।

(५) उर-स्थल गहरा हो तो जातक दरिद्र और उन्नत हो तो धनी होता है।

(६) उर-स्थल बिना रोम का हो तो शुभ है। यदि मृदु रोम हों तो वह भी शुभ माना गया है।

स्तनाग्र-भाग

(१) स्तनाग्र भाग ऊचा हो तो जातक धनी होता है।

(२) स्तनाग्र भाग सम हो तो जातक दुःख भोगता है।

(३) स्तनाग्र भाग असमान हो तो जातक दुःखी होता है।

(४) कठिन, पुष्ट तथा गहरे स्तनों वाला जातक सुखी होता है।

पेट (उदर)

(१) म.र, मण्डूक तथा हरिण जैसे पेट वाला व्यक्ति राजा होता है।

(२) व्याघ्र तथा सिंह जैसे पेट वाला व्यक्ति धनी, सियार जैसे पेट वाला अधम तथा घोड़े जैसे पेट वाला जातक दरिद्र होता है।

(३) उदर छाती के बराबर हो तो जातक धन-ऐश्वर्य सम्पन्न होता है।

(४) घड़े की तरह पेट वाला व्यक्ति बहुभोजी होता है।

(५) सांप की तरह पेट का होना अशुभ समझना चाहिए।

(६) बहुत पतले पेट वाला मनुष्य पापी होता है।

(८) पेट में बल (सलवटे) पड़ना शुभ लक्षण है। यदि सीधी बल

पड़ती हों तो जातक सुखी तथा सदाचारी होता है। यदि ऊंची-नीची अथवा टेढ़ी वल पड़ती हो तो व्यभिचारी होता है। एक सीधी वल पड़ती हो तो जातक विद्वान् होता है, दो सीधी वल पड़ें तो भोगी, तीन पड़ें तो अनेक शास्त्रो का ज्ञाता होता है तथा चार पड़े तो पुत्रवान् होता है, परन्तु एक भी वल न पड़े तो उसे भी शुभ लक्षण ही समझना चाहिए।

नाभि

(१) वर्तुलाकार, गहरी तथा विस्तीर्ण नाभि वाला जातक वीर, गुणी, विद्वान्, सुखी तथा ऐश्वर्य सम्पन्न होता है।

(२) ऊंची उठी हुई, छोटी अथवा अदृश्य नाभि वाला जातक दरिद्र होता है।

(३) यदि नाभि पर रोम हों तो अधिक सन्ताने होती है।

(४) यदि नभि के बीच मे घुमाव अथवा रेखा हो तो उसे अशुभ लक्षण समझना चाहिए।

(५) नाभि का घुमाव बाई ओर को हो तो जातक दुष्ट एवं कपटी स्वभाव का होता है परन्तु यदि दाई ओर को हो तो अत्यन्त बुद्धिमान् तथा विद्वान् होता है।

(६) यदि नाभि नीचे की ओर अधिक फैली हो तो जातक विशेष धनी होता है, परन्तु यदि ऊपर की तरफ अधिक फैली हो तो उसे धन तथा सम्मान-दोनों ही प्रचुर परिमाण मे मिलते है। नाभि गहरी तथा मध्य मे कुछ उठी हुई सी भी हो तो जातक अत्यन्त प्रभावशाली होता है।

कुक्षि

(१) कुक्षि छोटी हो तो पुरुष ऐश्वर्यशाली होता है।

(२) कुक्षि सम हो तो जातक भोगी होता है।

(३) कुक्षि नीची हो तो धन का नाश होता है।

(४) कुक्षि हाथी के समान हो तो जातक कपटी होता है।

(५) पुरुष की कुक्षि पर दक्षिणावर्त भौंरी हो तो श्रेष्ठ और वामावर्त्त हो तो क्लेशदायक समझना चाहिए।

पार्श्व

(१) मांसल तथा मुलायम पार्श्व हो तो शुभ समझना चाहिए।

(२) विस्तृत, कोमल तथा मांसल पार्श्व वाला जातक धनी तथा सुखी होता है।

(३) टेढ़े-मेढ़े गड्ढेदार पार्श्व वाला मनुष्य दरिद्र होता है।

(४) पार्श्व के बाल (रोम) बराबर के तथा कोमल हों और वे दाईं ओर को घूमे हुए हो तो सौभाग्य का लक्षण और इसके विरुद्ध हो तो दुर्भाग्य का लक्षण समझना चाहिए।

पीठ

(१) सिंह के समान पीठ वाला व्यक्ति धनवान, परन्तु बंधन पाने वाला, व्याघ्र जैसी पीठ वाला, सेनानायक, कछुए जैसी पीठ वाला ऐश्वर्यशाली तथा घोड़े जैसी पीठ वाला पृथ्वीपति होता है।

(२) चिकनी, मांसल, रोम-हीन तथा जिनके बीच में गड्ढा न हो, ऐसी पीठ वाले जातक धनी होते हैं।

(३) पीठ के ऊपर केशों का होना दरिद्रता कारक समझना चाहिए।

कटि (कमर)

(१) सिंह जैसी कमर वाला व्यक्ति राजा समान, बन्दर अथवा हाथी के बच्चे जैसी कमर वाला धनहीन तथा कुत्ता, सियार अथवा रीछ जैसी कमर वाला व्यक्ति निर्धन होता है।

(२) छोटी कमर वाला जातक दुर्भाग्यशाली होता है।

(३) मोटी तथा बड़ी कमर वाला व्यक्ति (मतान्तर से) धनी होता है।

(४) यदि कमर पर बहुत अधिक रोएं हों तो जातक दरिद्र होता है।

(५) जिसकी कमर ऊंट अथवा गधे की तरह कटी हुई हो, वह दरिद्री होता है।

नितम्ब

(१) अत्यन्त मोटे नितम्बों वाला व्यक्ति निर्धन होता है।

(२) मांसल तथा सामान्यतः पुष्ट नितम्बों वाला जातक सुखी रहता है।

(३) जिसके नितम्ब मेंढक के समान हों, वह धनी तथा ऐश्वर्यशाली होता है।

शिश्न (पुरुष–जननेन्द्रिय)

(१) छोटी, पतली, काली, कोमल तथा जिस पर पतली नसें दिखाई देती हों, ऐसी जननेन्द्री उत्तम मानी गई हैं। इस प्रकार के शिश्न वाला व्यक्ति धनी, सुखी तथा भोगी होता है।

(२) स्थूल, अधिक बड़ी; जिस पर मोटी नसें दिखाई देती हों, तो उस जननेन्द्री को अशुभ एव निर्धनता कारक समझना चाहिए।

(३) शिश्न का झुकाव बाईं ओर को हो तो जातक दरिद्र होता है, नीचे की ओर हो तो भी निर्धन होता है।

(४) शिश्न सीधा तथा कठोर हो तो जातक पुत्रवान होता है।

(५) मोटी गांठों वाले शिश्न का स्वामी सुखी रहता है।

(६) शिश्न ढीला हो तो जातक की प्रमेह आदि रोगों से मृत्यु होती है।

(७) शिश्न को सुपारी (शिश्न का अग्रभाग) में नीचे थोथे के रंग जैसी रेखा हो और वह कपास के पुष्प जितनी ऊची हो तो ऐसा व्यक्ति पृथ्वीपति होता है।।

(८) शिश्नाग्र भाग खुरदरा अथवा कड़ा हो तो जातक दरिद्र होता है।

अण्डकोष

(१) यदि एक हो अण्डकोष हो तो जातक को जल में अथवा जलीय तत्त्वों के कारण मृत्यु होती है।

(२) एक अण्डकोष छोटा, दूसरा बड़ा हो तो जातक विषयी होता है।

(३) दोनों अण्डकोष एक समान हों तो सुखी, धनी और ऐश्वर्य-शाली होता है।

(४) यदि अण्डकोष गोल, छोटे, सीधे तथा लम्बे हों, तो जातक धनी होता है।

(५) अण्डकोष ऊपर की ओर चढे हुए हों, तो जातक अल्पायु होता है।

(६) अण्डकोष ढीले हो तो जातक धनहीन होता है।

मूत्र की धार

(१) मूत्र-धार सशब्द हो तो जातक सुखी होता है।

(२) मूत्र-धार निःशब्द हो तो जातक दरिद्र होता है।

(३) मूत्र की धार केवल दाईं ओर को ही गिरे तो जातक सुन्दर तथा पुत्रवान होता है।

(४) मूत्र की धार चारो ओर को प्रदिक्षा की तरह गिरे तो जातक राजा होता है, परन्तु यदि बिखरी हुई गिरे तो धनहीन होता है।

हंसी

(१) आंखें बन्द करके हँसने को दुष्टता का लक्षण समझना चाहिए।

(२) कम्प-रहित हास्य शुभ माना जाता है।

रुदन

रोते समय आंसू तो गिरे, परन्तु चेहरे पर दैन्यभाव न हो तो उसे शुभ समझना चाहिए। रोते समय दैन्य एवं कण्ठ में रूखापन आ जाए तो उसे अशुभ समझना चाहिए।

मुख

आंख, नाक, कान, ओठ, ठोड़ी, ललाट आदि अंगो सहित गर्दन के ऊपरी भाग को मुख अथवा चेहरा कहा जाता है। इसके सम्बन्ध मे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) चन्द्रबिम्ब के समान गोलमुख वाला व्यक्ति धर्मात्मा होता है।

(२) मृग के पेट के समान मुख वाला भाग्यहीन होता है।

(३) छोटे मुख वाला लोभी, चौड़े मुंह वाला घमण्डी तथा मन्द भागी एवं लम्बे, टेढ़े, नीचे तथा कुरूप मुंह वाला व्यक्ति दरिद्र होता है।

इसके अतिरिक्त जिस मनुष्य का मुख जिस पशु-पक्षी की आकृति से मिलता-जुलता हो, वह वैसे ही स्वभाव का होता है—इस सम्बन्ध में पहले ही लिखा जा चुका है।

(४) जिस पुरुष का मुंह देखने में स्त्री के मुंह जैसा प्रतीत हो वह सन्तानहीन होता है।

मस्तक के केश

(१) सिर के बाल चिकने, काले, नुकीले, लम्बे, कोमल तथा शाखा रहित हों तो उन्हें शुभ समझना चाहिए।

(२) यदि सिर पर बाल बहुत कम हों तो जातक दीर्घायु होता है।

(३) यदि सिर गजा हो तो जातक धनवान्, संन्यासी या फिर दरिद्र होता है।

(४) यदि केश घने हों तो जातक बुद्धिमान् होता है।

(५) यदि केशों का रग लाल हो तो जातक स्त्रियों में आसक्त बना रहता है।

आवश्यक ज्ञातव्य

'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के प्रस्तुत 'शरीर-लक्षण विज्ञान' खण्ड मे जो भी लक्षण दिये गए हैं वे सब केवल पुरुषों के लक्षण है। स्त्रियों के लक्षणों के विषय में जानने के लिए 'स्त्री-सामुद्रिक' शीर्षक अगला खण्ड पढ़ना चाहिए।

शरीर में नक्षत्रों तथा ग्रहों का वास

मनुष्य शरीर के विभिन्न भागो मे विभिन्न ग्रहों तथा नक्षत्रो का वास माना गया है, उन्हें अगले पृष्ठों पर क्रमशः चित्र संख्या २९९
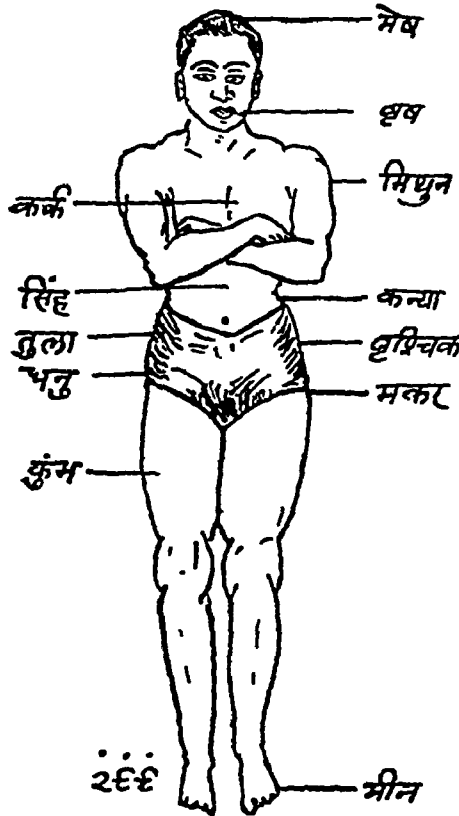
[मनुष्य-शरीर मे विभिन्न ग्रहो के स्थान]

तथा चित्र संख्या ३०० में प्रदर्शित किया गया है। किस अंग मे किस ग्रह अथवा नक्षत्र का वास रहता है—इसे चित्रों के साथ ही प्रकट कर दिया गया है।

३००
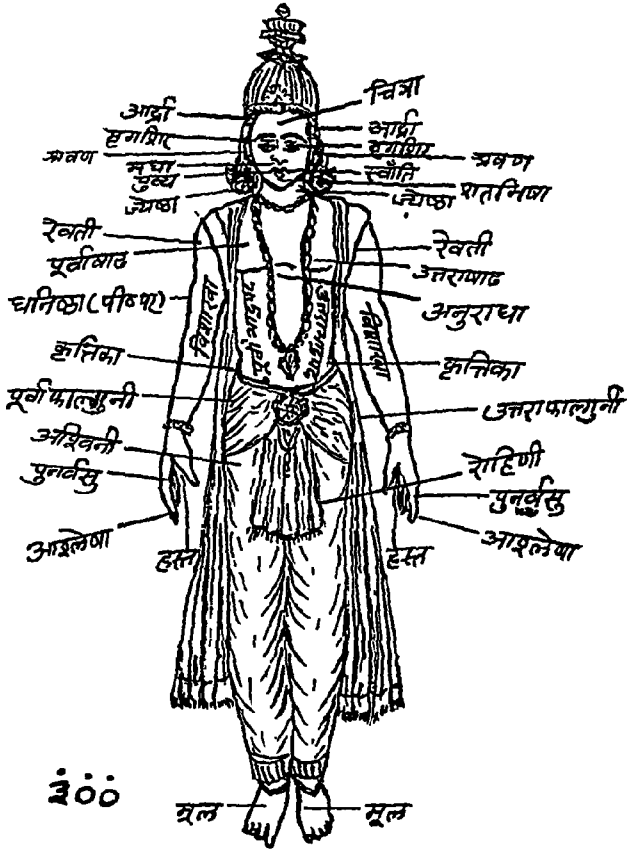
[मनुष्य-शरीर मे विभिन्न नक्षत्रो के स्थान]

तिल-विचार

तिल दो रग के होते हैं—

(१) शहद के समान लाल रग वाले और

(२) काले रग वाले।

शहद के समान लाल रंग वाले तिल प्राय. शुभ तथा काले रंग के तिल (अगानुसार) अशुभ माने जाते है। ये तिल-चिह्न भी मनुष्य-शरार पर विभिन्न ग्रहो के प्रभाव के कारण ही प्रकट होने हैं।

रंग के अतिरिक्त तिल के दो मुख्य प्रकार और भो बताये गए है :

(१) उत्तर वाले तिल।

(२) विना उत्तर वाले तिल।

उत्तर वाले तिल मुख के जिस स्थान पर होते हैं, वैसा ही तिल-चिह्न शरीर के किसी अन्य अग-विशेप पर भी दैवी-नियमानुसार निश्चित रूप से पाया जाता है। अग्रेजी मे ऐसे उत्तर वाले तिल-चिह्न को 'सिस्टर-मार्क' कहा जाता है।

विना उत्तर वाले तिल शरीर के किसी भी भाग पर हो सकते हैं और उनका कोई उत्तर वाला दूसरा तिल-चिह्न नही होता।

तिलो के फलाफल के सम्बन्ध मे प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानों ने अलग-अलग खोजे की है। यहां पर उक्त दोनों ही मतों को उद्धत किया जाता है।

प्राच्य (भारतीय) मत

प्राच्य मत के अनुसार मनुष्य के ललाट पर (१) शनि, (२) गुरु, (३) मंगल, (४) सूर्य, (५) शुक्र, (६) बुध तथा (७) चन्द्र—इन सात ग्रहों की सात रेखाएं होती हैं। इनमें से प्रत्येक रेखा पर पांच-पांच तिल होते हैं, जिनका शुभाशुभ फल उनकी स्थिति के अनुसार अलग-अलग होता है। जिन लोगों के ललाट में उक्त सातों रेखाएं स्पष्ट न हों उनके ललाट पर स्थित तिलों का विचार करते समय चित्र सख्या ३० के अनुसार सम्पूर्ण ललाट पर सात रेखाओं की कल्पना करके, चित्र में प्रदर्शित स्थानों के तिलों से जातक के ललाट पर तिल वाले स्थान को निश्चित कर उसके प्रभाव के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करनी चाहिए।

ललाट की उक्त सात रेखाओं के अतिरिक्त मनुष्य के चेहरे पर दाएं और बाएं कपोल, नेत्र, नासिका, कान, मुख तथा चिबुक आदि स्थानों पर दिखाई देने वाले कुल तिलों की सख्या सौ बताई गई है।

यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक व्यक्ति के चेहरे पर उक्त सौ तिलों की संख्या अवश्य ही विद्यमान हो। बहुत-से लोगों के चेहरों पर तो एक भी तिल नहीं पाया जाता और कुछ लोगों के चेहरों पर एक-दो, चार या पांच आदि को न्यून सख्या में ही तिल दिखाई देते हैं। चेहरे के तिलों की संख्या सौ कहने का तात्पर्य केवल यही है कि यदि किसी व्यक्ति के चेहरे पर सर्वत्र तिल पाये जाएं तो उनकी संख्या सौ से अधिक नहीं होगी तथा वे उन्ही स्थानों पर पाये जायेगे, जिन्हे चित्र में प्रदर्शित किया गया है।

उत्तर-चिह्न वाले तिल

अब हम प्रत्येक ग्रह की रेखा तथा अन्य स्थानों पर स्थित तिलों के प्रभाव तथा उनके उत्तर वाले तिलों का वर्णन करते है।
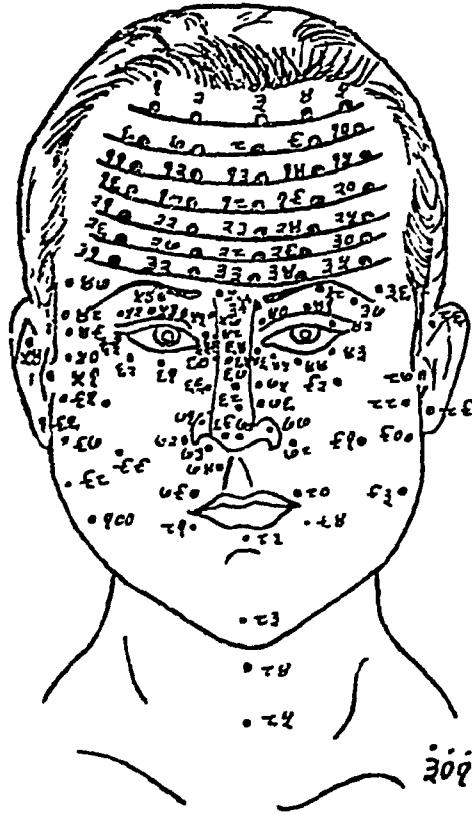
[मनुष्य के चेहरे पर पाये जाने वाले १०० तिल और उनका स्थान]

शनि-रेखा स्थित तिलों का फल

तिल संख्या १—ललाट-स्थित शनि-रेखा के दाईं ओर रेखा के ऊपर अथवा उसके नीचे तिल का चिह्न हो तो उसका उत्तर-चिह्न (अर्थात् दूसरा जवाबी तिल) वक्षःस्थल के दाईं ओर होता है।

यदि यह तिल लाल रंग का हो तो वह पुरुष अत्यन्त परिश्रमी,

तीक्ष्ण-बुद्धि, व्यवसाय कुशल, दृढ़ निश्चयी तथा धनोपार्जन में सक्षम होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो पुरुष अधिक बोलने वाला, अत्यन्त चतुर और कुशल व्यापारी होता है।

यदि ऐसा तिल किसी स्त्री के ललाट पर हो तो वह बुद्धिमती, गुणवती, धनवती तथा दीर्घायु होती है, परन्तु वह किसी वंश परम्परागत व्याधि से सामान्यतः दुःखी भी बनी रहती है। ऐसी स्त्री को विवाहोपरान्त स्वार्थी, चतुर तथा कलंकिनी स्त्रियों के सम्पर्क से बचे रहना चाहिए अन्यथा वे स्त्रियां उसके लिए हानि पहुंचाने वाली सिद्ध हो सकती है।

तिल संख्या २—शनि-रेखा के दाईं ओर इस तिल का चिह्न होने पर दाईं ओर के उरु स्थान में भी उत्तर-चिह्न अवश्य होता है।

यह तिल यदि लाल रंग का हो तो पुरुष स्त्रियों से विशेष प्रेम रखने वाला होता है तथा अपने प्रत्येक कार्य को बड़ी सरलता से सिद्ध कर लेता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो पुरुष किसी स्त्री के प्रेम में पड़कर मान-हानि तथा अपयश को प्राप्त करता है और उसे प्रायः सभी कामों में असफलता का सामना करना पड़ता है।

यदि ऐसा तिल किसी स्त्री के ललाट पर हो तो वह सदैव दुःखी बनी पहती है और उसकी इच्छाएं पूर्ण नहीं हो पाती। यदि तिल का रग काला हो तो उसे और भी अधिक कष्ट भोगना पड़ता है।

तिल संख्या ३—शनि-रेखा के मध्य भाग में स्थित इस तिल का उत्तर-चिह्न पेट के मध्य भाग पर होता है।

यह तिल चाहे लाल रग का हो अथवा काले रग का, स्त्री-पुरुष-

दोनो को ही एक जैसा फल प्रदान करता है। इस तिल के प्रभाव से जातक भीरु (डरपोक) प्रकृति का होता है।

तिल संख्या ४ और ५—शनि-रेखा के बाएं भाग में स्थित इन तिलो का उत्तर-चिह्न पीठ पर बाईं ओर के भाग पर होता है।

ये तिल चाहे लाल रंग के हों अथवा काले, स्त्री-पुरुष दोनो—पर अपना समान प्रभाव प्रदर्शित करते हैं। इन तिलों के फलस्वरूप जातक यात्रा-प्रेमी होता है और वह लम्बी-लम्बी यात्राए करता है।

शुक्र रेखा स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ६ और ७—गुरु-रेखा के दाए भाग मे स्थित इन तिलों का उत्तर-चिह्न शरीर के दाए पार्श्व तथा उरु-सन्धि पर पाया जाता है।

ये दोनों तिल चाहे लाल रंग के हों अथवा काले, स्त्री-पुरुष दोनों पर अपना समान प्रभाव प्रदर्शित करते हैं। ये दोनों तिल जातक के लिए उन्नति-कारक तथा शुभ फलदायक माने जाते हैं।

तिल संख्या ८—गुरु-रेखा के मध्य भाग पर स्थित इस तिल का उत्तर चिह्न वक्षस्थल के नीचे पाया जाता है।

यह तिल चाहे लाल रंग का हो अथवा काला, स्त्री पुरुष—दोनो पर अपना समान प्रभाव प्रदर्शित करता है। इस तिल के फलस्वरूप जातक बुद्धिमान तथा चतुर होता है।

तिल संख्या ९ और १०—ये दोनो तिल गुरु-रेखा के बाए भाग मे होते हैं और इनका उत्तर-चिह्न वक्षस्थल के नीचे अथवा पेट के बाईं ओर पाया जाता है।

ये दोनों तिल चाहे लाल रंग के हों अथवा काले, स्त्री-पुरुष—दोनों

पर अपना समान प्रभाव प्रदर्शित करते हैं। इन तिलों के फलस्वरूप जातक श्रेष्ठ भोजन तथा सुखी जीवन का उपभोग करता है।

मंगल-रेखा स्थित तिलों का प्रभाव

तिल सख्या ११ और १२—मंगल-रेखा के दाएं भाग में स्थित इन तिलों का उत्तर-चिह्न दाईं भुजा पर पाया जाता है।

ये दोनों तिल चाहे लाल रंग के हों अथवा काले, स्त्री-पुरुष—दोनों पर अपना समान प्रभाव प्रदर्शित करते है। ये दोनों ही तिल जातक को श्रेष्ठ, यशस्वी तथा शूरवीर बनाने वाले माने गए हैं।

तिल संख्या १३—मंगल-रेखा के मध्य भाग में स्थित इस तिल का उत्तर-चिह्न पेट के वाम भाग पर होता है।

यह तिल चाहे लाल रंग का हो अथवा काला, स्त्री-पुरुष-दोनों को समान रूप से प्रभावित करता है। इस तिल के फलस्वरूप जातक भीरु स्वभाव का तथा निस्सन्तान होता है और उसे दत्तक पुत्र लेना पड़ता है।

तिल संख्या १४ और १५—मंगल-रेखा के बाए भाग में स्थित इन तिलों का उत्तर-चिह्न पीठ के बाएं भाग में नीचे की ओर तथा बाईं भुजा के ऊपर पाया जाता है।

यह तिल चाहे लाल रंग के हों अथवा काले, स्त्री-पुरुष—दोनों को समान रूप से प्रभावित करते हैं। इन तिलों के फल स्वरूपजातक दुःखी जीवन व्यतीत करता है, उसे समय पर भोजन भी प्राप्त नहीं होता तथा वह किसी-न-किसी लड़ाई-झगड़े का शिकार बना रहता है।

सूर्य-रेखा स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या १६ और १७—सूर्य-रेखा के दाएं भाग में स्थित इन

तिलों का उत्तर-चिह्न पीठ के दाए भाग तथा कमर के दाएं भाग में पाया जाता है।

ये दोनो तिल चाहे लाल रंग के हो अथवा काले 'स्त्री-पुरुष'-दोनों को समान रूप से प्रभावित करते हैं।

इन तिलो के फलस्वरूप जातक का जीवन परेशानी मे व्यतीत होता है और उसकी जमीन-जायदाद अथवा सम्पत्ति की हानि होती है। इन तिलों का प्रभाव अशुभ फलदायक समझना चाहिए।

तिल संख्या १८—सूर्य-रेखा के मध्य भाग मे स्थित इस तिल का उत्तर-चिह्न पेट के मध्य भाग मे पाया जाता है।

यह तिल चाहे लाल रंग का हो अथवा काला, स्त्री-पुरुष--दोनो पर अपना समान प्रभाव डालता है।

इस तिल के फलस्वरूप जातक धन-धान्य तथा ऐश्वर्य से सम्पन्न होकर सुखी एवं शान्त जीवन व्यतीत करता है।

तिल संख्या १९ और २०—सूर्य-रेखा के बाएं भाग में स्थित इन तिलो के उत्तर-चिह्न वक्षःस्थल के बाईं ओर तथा बाए कन्धे के नीचे पाये जाते है।

ये दोनों तिल चाहे लाल रंग के हो अथवा काले, स्त्री-पुरुष दोनों को समान रूप से प्रभावित करते है।

इन तिलों के प्रभावस्वरूप दम्पति (पति-पत्नी) के बीच प्रेम की मात्रा कम होती है। उनमे परस्पर झगड़ा होता रहता है तथा किसी एक को दूसरे के द्वारा विशेष हानि उठानी पड़ती है।

शुक्र-रेखा स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या २१ और २२—शुक्र-रेखा के दाएं भाग मे स्थित इन

तिलों के उत्तर-चिह्न पेट के दाईं ओर तथा वक्ष स्थल के मध्य भाग में पाये जाते है।

ये दोनों तिल चाहे लाल रंग के हों अथवा काले, स्त्री-पुरुष–दोनों को समान रूप से प्रभावित करते हैं। इनके फलस्वरूप पति-पत्नी में परस्पर विशेष स्नेह पाया जाता है और वे प्रत्येक कार्य को एक-दूसरे की सम्मति लेकर करते है।

तिल संख्या २३—शुक्र-रेखा के मध्य भाग पर स्थित इस तिल का उत्तर-चिह्न वक्ष-स्थल पर पाया जाता है।

यह तिल चाहे लाल रग का हो अथवा काला, स्त्री-पुरुष–दोनों को समान रूप से प्रभावित करता है। इसके फलस्वरूप पति-पत्नी मे पारस्परिक प्रेम अधिक होता है, वे सुखी जीवन व्यतीत करते है तथा उनमे साहस की मात्रा भी अधिक पाई जाती है।

तिल संख्या २४ और २५—शुक्र-रेखा के बाए भाग मे स्थित इन तिल-चिह्नों के उत्तर-चिह्न बाए कधे तथा पेट के बाईं ओर पाये जाते है।

यदि इन तिलों का रंग काला हो तो पुरुष कामी होता है तथा स्त्री व्यभिचारिणी होती है। यदि तिलों का रग लाल हो तो वे स्त्री के लिए शुभ फलदायक हो जाते है और उसे अपने पति का सुख अच्छी मात्रा में प्राप्त होता है, परन्तु पुरुष के लिए उसके प्रभाव मे कोई अन्तर नहीं आता।

बुध-रेखा स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या २६ और २७—बुध-रेखा के दाए भाग में स्थित इन तिलों के उत्तर-चिन्ह दाईं ओर के वक्ष:स्थल पर पाये जाते हैं।

ये दोनों तिल चाहे लाल रग के हों अथवा काले, स्त्री-पुरुष–दोनों को समान रूप से प्रभावित करते है।

इनके फलस्वरूप जातक के सभी कार्य सरलतापूर्वक सम्पन्न हो जाया करते है और उन्हे कभी किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव नही होता।

तिल संख्या २८—बुध-रेखा के मध्य भाग मे स्थित इस तिल का उत्तर-चिन्ह वक्ष.स्थल के मध्य भाग मे पाया जाता है।

यह तिल चाहे लाल रग का हो अथवा काला, स्त्री-पुरुष—दोनों को समान रूप से प्रभावित करता है।

इसके फलस्वरूप जातक की बुद्धि तीव्र होती है और उसे प्रत्येक कार्य मे सफलता प्राप्त होती है।

तिल संख्या २६ और ३०—बुध-रेखा के वाए भाग मे स्थित इन तिलो के उत्तर-चिन्ह पसली के वाए भाग मे पाये जाते है।

ये दोनो तिल चाहे लाल रग के हो अथवा काले, स्त्री-पुरुष—दोनों को समान रूप से प्रभावित करते हैं।

इन तिलों के प्रभाव स्वरूप जातक स्वभाव से कायर होता है और उसे कोई शुभ फल प्राप्त नही होता।

चन्द्र-रेखा स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ३१ और ३२—चन्द्र-रेखा के दाए भाग मे रेखा के ऊपर अथवा नीचे स्थित इन तिलो के उत्तर-चिन्ह कमर के दाए भाग में पाये जाते हैं।

ये दोनों तिल चाहे लाल रग के हों अथवा काले, स्त्री-पुरुष—दोनों को समान रूप से प्रभावित करते है।

इनके फलस्वरूप जातक यात्रा-प्रेमी होता है और यात्राओ के द्वारा उसे लाभ भी प्राप्त होता है। इनका प्रभाव उत्तम कहा गया है।

तिल संख्या ३३—चन्द्र रेखा के मध्य भाग पर स्थित इस तिल का उत्तर-चिन्ह गुदा के ऊपर होता है।

यह तिल चाहे लाल रंग का हो अथवा काला, स्त्री-पुरुष—दोनों को समान रूप से प्रभावित करता है।

इस तिल के प्रभाव से जातक को गुदा सम्बन्धी गुदा रोग होते हैं तथा सदैव ही संकटों का सामना करना पड़ता है। ऐसे तिल वाले पुरुष जातक अल्पायु होते है तथा स्त्रियां आत्महत्या करने को बाध्य हो जाती है।

तिल संख्या ३४ और ३५—चन्द्र-रेखा के बाए भाग में स्थित इन तिलों के उत्तर-चिन्ह पेट के बाएं भाग में पाये जाते हैं।

ये दोनों तिल चाहे लाल रंग के हों अथवा काले, स्त्री-पुरुष—दोनों को समान रूप से प्रभावित करते हैं।

इनके फलस्वरूप जातक दूसरे लोगों को हानि पहुंचाकर स्वयं प्रसन्न होने वाले स्वभाव का होता है।

टिप्पणी—ललाट की रेखाओं पर स्थित तिल-चिन्हों के प्रभाव का वर्णन ऊपर किया जा चुका है। अब हम मुंह के अन्य स्थानों पर स्थित तिलों के प्रभाव के विषय में लिखते हैं। इन सभी तिलों को चित्र संख्या में प्रदर्शित किया गया है, अतः चित्र को देखकर इन तिलों के ठीक-ठीक स्थान के विषय मे ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए।

बाईं कनपटी पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ३६—बाईं कनपटी (बाएं कान के ऊपर का भाग) पर स्थित तिल का उत्तर-चिन्ह बाईं उरु अथवा कमर पर पाया जाता है।

यह तिल किसी भी रंग का हो, स्त्री-पुरुष के जीवन पर बुरा

प्रभाव डालने वाला होता है । ऐसे तिल वाले जातकों को अपने जीवन मे अनेक कठिनाइयो का सामना करना पड़ता है तथा बहुत ही कष्ट में अपने दिन बिताने पड़ते है ।

बाईं भौंह पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ३७, ३८ और ३९—बाईं भौंह पर स्थित इन तिलों के उत्तर-चिन्ह क्रमश. पेट के वामभाग, कमर तथा जंघा पर पाये जाते है ।

इन तिलों का रग काला हो तो पुरुष अहकारी स्वभाव का होता है तथा स्त्री भी अभिमानिनी एव रोगिणी होती है ।

यदि तिलों का रग लाल हो तो पुरुष अच्छे कुल में जन्म लेकर शुभ कर्म करने वाला, एकान्त-प्रिय तथा अल्प सम्पत्ति वाला होता है तथा स्त्री सुन्दर, परन्तु तुच्छ विचारो वाली होती है ।

बाईं बरौनी पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ४०, ४१ और ४२—बाईं आंख की बरौनी पर स्थित इन तिलो के उत्तर-चिन्ह क्रमश. बाईं उरु, बाए पुट्ठे तथा बाएं नितम्ब पर पाये जाते हैं ।

ये तिल किसी भी रग के क्यो न हों, स्त्री-पुरुष पर अपना एक जैसा प्रभाव प्रदर्शित करते हैं । इन तिलों के फलस्वरूप जातक किसी एक स्थान पर स्थित नही रह पाता और उसे प्रत्येक क्षेत्र में प्राय: असफलता और कष्टो का सामना करना पडता है ।

बाईं नेत्र-पंक्ति के नीचे स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ४३, ४४, ४५, और ४६—बाईं नेत्र-पंक्ति के नीचे स्थित इन तिलों के उत्तर चिन्ह क्रमश: गुदा के बाए भाग मे, ऊपर-नीचे, मध्य में तथा दाए किनारे की ओर पाये जाते हैं ।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुष के लिए समान रूप से आयु-घातक सिद्ध होते हैं। विशेषकर इनके प्रभाव से स्त्री रोगी बनी रहती है और उसे आत्मघात करने की इच्छा पैदा होती है। यदि उत्तर-चिन्ह वाले गुदा पर स्थित तिल लाल रंग के हों तो उनका प्रभाव शुभ फलदायक हो जाता है।

दाईं कनपटी पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ४७—दाईं कनपटी (दाएं कान के ऊपर का भाग) पर स्थित तिल का उत्तर-चिन्ह दाईं बाहु पर पाया जाता है।

यह तिल किसी भी रंग का हो, स्त्री-पुरुष के लिए समान रूप से फलदायक होता है। इसके प्रभाव से स्त्री-पुरुष में परस्पर प्रेम की वृद्धि तथा सुख-शान्ति की प्राप्ति होती है।

दाएं कान और आंख की बरौनी के मध्य स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ४८, ४९, ५० और ५१— दाएं कान और आंख की बरौनी के मध्य स्थित तिलों के उत्तर-चिन्ह पेट के तथा पार्श्व के दाएं भागों में पाये जाते हैं।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुष पर समान रूप से प्रभाव डालने वाले होते हैं। इन तिलों के फलस्वरूप जातक श्रेष्ठ भोजन प्राप्त करने वाला, कम साहसी तथा असफलताओं से घबरा जाने वाले स्वभाव का होता है।

दाईं भौंह तथा बरौनी के मध्य स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ५२, ५३, ५४, ५५ और ५६—दाईं भौंह तथा बरौनी के मध्य-स्थित तिलों के उत्तर-चिन्ह शरीर के दाएं भाग में कमर तथा कमर के निचले हिस्से में पाये जाते हैं।

ये तिल किसी भी रंग के क्यो न हों, स्त्री-पुरुषों पर समान रूप से प्रभाव डालते हैं। इन तिलों के फलस्वरूप जातक को अपने जीवन में विभिन्न प्रकार के अच्छे-बुरे परिवर्तनों का सामना करना पड़ता है। उसे कष्ट भी उठाने पड़ते है तथा उसकी नेत्र-ज्योति क्षीण होती है।

नासिका के ऊपरी दाए भाग में स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ५७, ५८ और ५९—नासिका के ऊपरी दाए भाग में स्थित तिलों के उत्तर-चिन्ह नाभि के मध्य भाग में अथवा वक्ष.स्थल के नीचे पाये जाते हैं।

इन तिलों का रग यदि लाल हो तो वे शुभ फलदायक होते हैं। ऐसे पुरुष सम्पत्तिशाली होते हैं तथा स्त्रियां अपने किसी सम्बन्धी से धन प्राप्त करके सुखी जीवन व्यतीत करने वाली होती है। यदि तिलों का रग काला हो तो जातक की आयु के ३५ से ४५वें वर्ष के बीच में कोई दुर्घटना घटित होती है अथवा उसे किसी कष्टप्रद बीमारी का शिकार होना पड़ता है।

दाई बरौनी पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ६०, ६१, ६२, और ६३—दाईं आंख की बरौनी के नीचे स्थित तिलों के उत्तर-चिन्ह के दाईं ओर के स्तन पर पाये जाते हैं।

ये तिल किसी भी रंग के क्यो न हों, स्त्री-पुरुषों पर अपना एक-सा प्रभाव प्रदर्शित करते है।

इन तिलों के फलस्वरूप जातक धनवान् तथा तीक्ष्ण बुद्धि वाला होता है।

नासिका के ऊपरी मध्य भाग पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९ और ७०—नासिका के

ऊपरी मध्य भाग पर स्थित तिलों के उत्तर-चिन्ह गुदा के दाएं भाग तथा कन्धे के ऊपरी भाग मे पाये जाते हैं।

इन तिलों का रंग यदि काला हो तो पुरुष दुष्ट प्रकृति का होता है और उसे निरन्तर यात्रा करनी पड़ती है तथा स्त्री ३० वर्ष की आयु में जलोदर नामक रोग अथवा जल-सम्बन्धी किसी अन्य भय से पीड़ित होती है। यदि इन तिलों का रंग लाल हो तो वे स्त्री-पुरुषों के लिए शुभ फलदायक सिद्ध होते हैं।

नासिका के दाएं भाग पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल सख्या ७१, ७२, ७३ और ७४—नासिका के दाएं नथुने पर स्थित इन तिलों के उत्तर-चिन्ह पुरुष की गुदा और शिश्न के मध्य भाग तथा स्त्री के गुप्तांग पर दाईं ओर पाए जाते है।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुषों पर समान रूप से प्रभाव डालते है। इनके फलस्वरूप स्त्री-पुरुषों में परस्पर आसक्ति, प्रेम एवं वासना की अत्यधिक वृद्धि होती है, परन्तु जीवन के अन्य क्षेत्रों में असफलता प्राप्त होती है।

नासिका के बाएं भाग पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ७५, ७६, ७७ और ७८—नासिका के बाएं नथुने पर स्थित इन तिलों के उत्तर-चिन्ह पुरुष की गुदा और शिश्न के मध्य भाग तथा स्त्री के गुप्तांग पर बाईं ओर पाए जाते है।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुषों पर समान रूप से प्रभाव डालते हैं। इनके फलस्वरूप जातक युवावस्था में अनेक प्रकार के दुःख, विपत्ति, संकट एवं चिन्ताओं का शिकार बनता है, परन्तु प्रौढ़ावस्था आरम्भ होने पर अपने पराक्रम द्वारा सभी कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करके सुख-सम्पत्ति को प्राप्त कर लेता है।

ऐसे पुरुषों को स्त्री से प्रेम नहीं होता।

कण्ठ (गर्दन) पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ८४ और ८५—कण्ठ गर्दन पर स्थित तिलों के उत्तर-चिन्ह उरु-सधि पर पाए जाते है।

तिल का रंग काला हो तो जातक के पानी में डूबने अथवा किसी ऊचे स्थान से गिरने का भय रहता है। तिल का रग लाल हो तो जातक को सुख-सौभाग्य की प्राप्ति होती है। इन तिलो के प्रभाव-स्वरूप जातक बुद्धिमान् तथा धार्मिक विचारो वाला अवश्य होता है।

बाएं कान के ऊपरी भाग में स्थित तिल का प्रभाव

तिल संख्या ८६—बाएं कान के ऊपरी भाग में स्थित तिल का उत्तर-चिन्ह पेट के बाएं हिस्से पर पाया जाता है।

यह तिल किसी भी रंग का क्यों न हो, स्त्री-पुरुषों पर समान रूप से प्रभाव डालता है। इसके फलस्वरूप जातक अल्पायु होता है। ऐसे तिल वाली स्त्री के प्रथम गर्भ से कन्या का जन्म होता है।

बाएं कान के मध्य तथा निम्न भाग में स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ८७, ८८, ८९ और ९०—बाएं कान के मध्य तथा निम्न भाग में स्थित तिलों के उत्तर-चिन्ह बाएं पार्श्व मे पाए जाते हैं।

ऊपरी ओठ पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ७९ और ८०—ऊपरी ओठ पर स्थित तिलों के उत्तर-चिन्ह दाएं घुटने पर पाए जाते हैं।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुषों पर समान रूप से प्रभाव डालते हैं। इनके फलस्वरूप जातक अत्यधिक विलासी तथा शौकीन तबीयत का होता है तथा अपनी सम्पत्ति को विलासिता मे ही नष्ट कर देता है।

निचले ओठ पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ८१ और ८२—निचले ओठ (अधर) पर स्थित तिलों के उत्तर-चिन्ह जांघ पर पाए जाते है।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुषों पर समान रूप से प्रभाव डालते हैं। इनके फलस्वरूप जातक निर्धन तथा लोभी होते हैं और वे दरिद्रावस्था में ही अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं।

चिबुक (ठोड़ी) स्थित तिल का प्रभाव

तिल सख्या ८३—चिबुक (ठोड़ी या ढुड्डी) के मध्य भाग में तिल हो तो उसका उत्तर-चिन्ह जांघ पर पाया जाता है।

यह तिल किसी भी रंग का क्यों न हो, स्त्री-पुरुष के ऊपर समान रूप से प्रभाव डालता है। इसके फलस्वरूप जातक अशुभ फल प्राप्त करता है।

ये तिल लाल रग के हो तो जातक की आयु में वृद्धि करते और यदि काले रग के हो तो उसकी आयु मे परिवर्तन के सूचक होते है। इन तिलो के प्रभाव स्वरूप स्त्री के प्रथम गर्भ से पुत्र का जन्म होत है।

बाएं गाल (कपोल) पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल सख्या ९१, ९२ और ९३—बाएं गाल (कपोल) पर स्थित इन तिलों के उत्तर-चिन्ह बाईं उरु अथवा कूल्हे पर पाए जाते हैं।

ये तिल किसी भी रग के क्यो न हो, स्त्री-पुरुप के जीवन को

समान रूप से प्रभावित करते हैं। इनके फलस्वरूप जातक के जीवन मे धन की कमी बनी रहती है, फिर वह शान्तिपूर्वक अपनी गृहस्थी को चलाता रहता है।

दाएं कान पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ९४, ९५, ९६ और ९७—दाएं कान के ऊपरी, मध्य तथा निम्न भाग मे स्थित इन तिलो के उत्तर-चिन्ह पेट के दाएं भाग पर पाए जाते है।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, स्त्री-पुरुष के जीवन पर एक जैसा प्रभाव डालते है।

इन तिलो के फलस्वरूप जातक का स्वभाव सरल होता है। विवाह के पश्चात् वह सुखी जीवन व्यतीत करता है तथा युवावस्था से ही उसकी भाग्योन्नति आरम्भ हो जाती है। ऐसे जातक धार्मिक विचारों वाले, शान्त, सुखी तथा सन्तोषी होते हैं।

दाएं गाल (कपोल) पर स्थित तिलों का प्रभाव

तिल संख्या ९८, ९९ और १००—दाएं गाल (कपोल) पर स्थित इन तिलो के उत्तर-चिन्ह दाएं कूल्हे पर पाए जाते है।

ये तिल किसी भी रंग के क्यों न हों, इनके प्रभाव से पुरुष बुद्धिमान, प्रसन्नचित तथा बहुत-से मित्रो वाला होता है, परन्तु स्त्री पति के रहते हुए भी पति का सुख अल्प मात्रा में प्राप्त करने वाली तथा रोग-ग्रस्त होती है। उसके पति की मृत्यु उससे भी पहले ही हो जाती है।

आवश्यक टिप्पणी

ऊपर जिन तिलों का फलादेश कहा गया है, उनके सम्बन्ध मे यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि ये सभी फलादेश पुरुष के अंगों पर पाए

जाने वाले तिलों के प्रभाव के हैं। पुरुष के दाएं अंग पर पाए जाने वाले तिल का जो प्रभाव होता है, वही प्रभाव स्त्री के बाएं अंग पर पाए जाने वाले तिल का होता है। पुरुष के दाएं अंग पर पाए जाने वाले तिल यदि शुभ प्रभाव देने वाले हों तो स्त्री के दाएं अंग पर पाए जाने वाले वही तिल अशुभ प्रभाव देने वाले होगे। इसी प्रकार पुरुष के बाएं अंग पर पाए जाने वाले जो तिल अशुभ-प्रभाव देने वाले होते हैं; स्त्री के बाएं अंग पर पाए जाने वाले वे ही तिल शुभ-प्रभाव देने वाले सिद्ध होते हैं।

तिलों के सम्बन्ध में सामान्य नियम ये है—

(१) पुरुष के दाएं अग मे पाए जाने वाले काले तिल प्रायः शुभ-फल देने वाले होते है।

(२) पुरुष के बाएं अंग मे पाए जाने वाले काले तिल प्रायः अशुभ-फल देने वाले होते है।

(३) स्त्री के दाए अग में पाए जाने वाले काले तिल प्रायः अशुभ-फल देने वाले होते है।

(४) स्त्री के बाएं अंग में पाए जाने वाले काले तिल प्रायः शुभ-फल देने वाले होते है।

(५) पुरुष के दाएं अग तथा स्त्री के बाए अंग में पाए जाने वाले लाल रंग के तिल शुभफल देने वाले होते है।

(६) पुरुष के बाएं अंग तथा स्त्री के दाएं अग में पाए जाने वाले लाल रंग के तिलों का अशुभ-फल भी न्यून मात्रा मे होता है।

(७) तिलों के उत्तर-चिन्हों के विषय में यह बात स्मरण रखनी चाहिए कि उत्तर-चिन्ह के रूप मे दूसरे स्थान पर तिल ही हो—यह आवश्यक नहीं है। उत्तर वाले तिल के स्थान पर मस्सा अथवा लहसन का चिन्ह भी हो सकता है।

बिना उत्तर-चिन्ह वाले तिल

उत्तर-चिन्ह वाले तिलों का वर्णन ऊपर किया जा चुका है। अब हम भारतीय मतानुसार शरीर के विभिन्न-अंगों पर पाए जाने वाले उन तिलो के प्रभाव के विषय मे लिखते हैं, जिनके उत्तर-चिन्ह शरीर के किसी अन्य स्थान पर नही पाए जाते।

सिर तथा ललाट पर पाए जाने वाले तिलों का प्रभाव

(१) यदि पुरुष के मस्तक के मध्य भाग मे तिल हो तो वह सुखी धनवान तथा प्रतिष्ठित होता है।

(२) यदि पुरुष के सिर के दाएं भाग में तिल हो तो वह हंसमुख तथा उच्च-पदाधिकारी होता है और उसकी प्रतिष्ठा मे वृद्धि होती रहती है।

(३) यदि पुरुष के सिर के बाए भाग मे तिल हो तो उसे जीवन में अनेक प्रकार की कठिनाइयां उठानी पडती है। वह झगड़ालू प्रकृति का, गुणहीन तथा संकुचित मनोवृत्ति का होता है। फलस्वरूप सब लोग उसे घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

(४) यदि पुरुष-ललाट के दाई ओर तिल हो तो उसे धन-सम्पत्ति प्राप्त होती है, परन्तु यदि बाईं ओर तिल हो तो उसका शुभफल न्यून हो जाता है फिर भी वह एकदम निष्फल नही होता।

भौंह तथा आंखों के स्थान पर स्थित तिलों का प्रभाव

(१) यदि पुरुष की दोनों भौंहो के किसी स्थान पर तिल हो तो वह यात्रा-प्रेमी होता है और यात्रा द्वारा ही लाभ उठाता है।

(२) यदि पुरुष की दोनो भौहों के किसी स्थान पर लाल रंग का तिल हो तो वह व्यक्ति उच्च कुल मे जन्म लेने वाला, साहित्य-प्रेमी,

राजनीतिज्ञ, धार्मिक नेता, दीर्घायु तथा शुभाशुभ घटनाओं का अनुभव करने वाला होता है। यही तिल काले रग का हो तो जावक में उपर्युक्त सभी गुण तो पाए जाते हैं, परन्तु वह फिजूल खर्ची, सम्पत्ति को नष्ट करने वाला तथा निरर्थक जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

(३) यदि पुरुष की आंखों के ऊपर अथवा नीचे के हिस्से में तिल हो तो वह धनवान, बुद्धिमान, तन्त्र शास्त्र का अभ्यासी, एकान्त सेवी तथा स्त्री से घनिष्ट-प्रेम करने वाला होता है; परन्तु अपनी आयु के पूर्व भाग में किसी स्त्री द्वारा धोखा खाने के कारण वह उससे घृणा भी करता है।

(४) यदि किसी पुरुष की आंख के बीच में तिल हो तो वह नेता अथवा अधिकारी होता है।

मुंह के किसी स्थान पर स्थित तिलों का प्रभाव

(१) यदि किसी पुरुष के मुंह पर तिल हो तो उसे बहुत धन मिलता है।

(२) यदि किसी पुरुष के दाएं गाल पर लाल रग का तिल हो तो वह धनवान होता है। यदि काले रंग का तिल हो तो उसे सुन्दर पत्नी मिलती है। यदि बाएं गाल पर लाल रंग का तिल हो तो धनवान होने के साथ ही वह अपनी असावधानीवश असाध्य-बीमारी का शिकार बनता है। यदि बाए गाल पर काले रंग का तिल हो तो अपनी असाध्य-बीमारी के कष्ट से छुटकारा पाने के लिए आत्मघात तक कर लेता है।

(३) यदि किसी पुरुष के ऊपरी ओठ पर तिल हो तो वह धनवान होता है और उसकी बात ऊंची बनी रहती है।

(४) यदि किसी पुरुष के निचले ओठ पर तिल हो तो वह लोभी होता है।

(५) यदि किसी पुरुष के कान पर तिल हो तो वह रत्नाभूषणो को धारण करता है।

(६) यदि किसी पुरुष को गर्दन (कण्ठ) पर तिल हो तो वह दीर्घायु तथा ऐश्वर्यमय जीवन व्यतीत करने वाला होता है।

वक्षःस्थल पर स्थित तिलों का प्रभाव

(१) यदि किसो पुरुष को छाती पर दाईं ओर को तिल हो तो उसे अच्छी पत्नी प्राप्त होती है।

(२) यदि किसी पुरुष की छाती पर बाईं ओर को तिल हो तो उसे लाभ कम होता है, परन्तु होता अवश्य है।

हाथों पर स्थित तिल-चिन्हों का प्रभाव

(१) यदि किसी पुरुष के दाएं हाथ पर तिल हो तो वह अपने बाहुबल से द्रव्योपार्जन करता और उसका सुख भोगता है।

(२) यदि किसी पुरुष के बाएं हाथ पर तिल हो तो धनोपार्जन के सम्बन्ध में उसका प्रभाव कम होता है, परन्तु उसके प्रयत्न एकदम व्यर्थ नहीं जाते।

(३) यदि किसी पुरुष के दाए कन्धे पर तिल हो तो वह अधिक विद्वान अथवा श्रेष्ठ कलाकार (दस्तकार) होता है।

(४) यदि किसी पुरुष के बाएं कन्ध पर तिल हो तो वह कम विद्वान अथवा निम्न श्रेणी का कलाकार (दस्तकार) होता है।

(५) यदि किसी पुरुष के हाथ के पजे पर तिल हो तो वह बहुत दिलेर तबीयत का तथा धनवान् होता है।

(६) यदि किसी पुरुष के दाएं हाथ की हथेली पर तिल हो तो वह कोषाध्यक्ष होता है।

(७) यदि किसी पुरुष के बाएं हाथ की हथेली पर तिल हो तो वह अपव्ययी होता है।

(८) यदि किसी पुरुष के दाएं हाथ के पिछले भाग (कर-पृष्ठ) पर तिल हो तो वह मितव्ययी होता है और बाएं हाथ के पृष्ठ भाग पर तिल हो तो धनवान होता है।

(९) यदि किसी पुरुष के हाथ की रेखाओं पर काले रंग का तिल हो तो वह उन रेखाओं के बुरे प्रभाव को और अधिक बढा देता है। यदि लाल रंग का तिल हो तो वह रेखाओं के अच्छे प्रभाव में और अधिक वृद्धि करता है तथा रेखाओं के बुरे प्रभाव मे कमी लाता है अथवा उनके कुप्रभाव को नष्ट कर देता है।

हाथ की रेखाओं पर स्थित तिलों के शुभाशुभ प्रभाव का वर्णन 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के 'हस्त-चिन्ह-विचार' नामक खण्ड में विस्तार पूर्वक किया जा चुका है, अत: इस सम्बन्ध में विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए उक्त खण्ड का अध्ययन करना चाहिए।

(१०) यदि किसी पुरुष की दाईं भुजा अथवा कुहनी पर लाल रंग का तिल हो तो वह सैनिक अथवा पुलिस विभाग में विशेष उन्नति तथा सफलता प्राप्त करता है। ऐसे लोग घुड़दौड़, लाटरी, सट्टा, धातु अथवा पशुओं के व्यवसाय में भी पर्याप्त लाभ उठाते हैं।

(११) यदि किसी पुरुष की बाईं भुजा पर काले रंग का तिल हो तो उसे धन-सम्पत्ति, जायदाद आदि की हानि उठानी पड़नी है। घुड़सवारी करने से भी उसे गिरने और चोट पहुंचने की आशंका रहती है तथा निरर्थक-यात्राएं करने से भी घाटा पड़ता है।

पांवों के किसी भाग में स्थित तिलों का प्रभाव

(१) यदि किसो पुरुष की दाईं जांघ पर तिल हो तो उसे सवारी का सुख मिलता है और सेना में भी सफलता प्राप्त करता है।

(२) यदि किसा पुरुष के दाएं पांव पर तिल हो तो वह अनेक स्थानों एवं देशो की यात्रा करता है तथा लाभ उठाता है। ऐसे लोग विशेष बुद्धिमान होते हैं।

(३) यदि किसी पुरुष के वाएं पांव पर तिल हो तो वह अधिक खर्चीला होता है।

स्त्रियों के विभिन अगों पर तिलों का प्रभाव

पुरुष के दाएं अंग पर स्थित तिलों का जो प्रभाव होता है, वही फल स्त्रियों को भी प्राप्त होता है—यदि तिल उनके वाएं अंग में हो।

स्त्रियों के विभिन्न अगों पर पाए जाने वाले तिलों का विशेष प्रभाव भारतीय मत से नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए। यहां पर जिन स्थानों पर दाएं वाएं अग का उल्लेख नही किया गया है, वहां पर स्त्रियो का वायां अंग ही समझना चाहिए। दाए अंग पर होने से वह तिल अशुभ अथवा न्यून प्रभावकारी सिद्ध होगा।

(१) यदि किसी स्त्री के सिर के मध्य भाग में तिल हो तो वह पति का पूर्ण सुख प्राप्त करने वाली, शुद्ध हृदय तथा विपुल ऐश्वर्य-सम्पन्न रानी के समान होती है।

(२) यदि किसी स्त्री के सिर के दाईं ओर तिल हो तो वह समाज में प्रतिष्ठित तथा सुयोग्य होते हुए भी उदासीन-स्वभाव की वनी रहती है। ऐसी स्त्रिया विवाहोपरान्त अधिक समय तक विदेश अथवा परदेश में रहती हैं और उन्हे सन्तान का अल्प-सुख प्राप्त होता है।

(३) यदि किसी स्त्री के ललाट पर तिल हो तो उसे धनवान पति मिलता है।

(४) यदि किसी स्त्री के सिर के वाईं ओर तिल हो तो उसे दुर्भाग्य का सूचक समझना चाहिए।

(५) यदि किसी स्त्री की दोनों भौंहों में से किसी स्थान पर काले रंग का तिल हो तो उसका स्वभाव ओछा होता है। उसे सिर दर्द का रोग रहता है तथा उसका विवाह भी किसी बेमेल पुरुष के साथ होता है।

(६) यदि किसी स्त्री की आंखों के ऊपर अथवा नीचे के हिस्से मे तिल हो तो वह अनुचित प्रकारों से धन का संचय करने वाली तथा सन्तान-विहीना होती है। उसके शरीर में ज्वर जैसी उष्णता हर समय बनी रहती है तथा उचित प्रकार से स्वास्थ्य की देखभाल न कर पाने के कारण अल्पायु मे ही मृत्यु को प्राप्त हो जाती है।

(७) यदि किसी स्त्री की आंख में तिल हो तो उसके ऊपर पति की शुभ-दृष्टि बनी रहती है।

(८) यदि किसी स्त्री के बाएं गाल पर तिल हो तो वह ऐश्वर्य-शाली जीवन व्यतीत करती है।

(९) यदि किसी स्त्री के दाए गाल पर काला तिल हो तो वह असाध्य रोगों का शिकार बनती है। उसका चाल-चलन अच्छा नही होता तथा उसकी प्रकृति भी झगड़ालू होती है।

(१०) यदि किसी स्त्री के कान पर तिल हो तो वह वहुत-से आभूषणों को धारण करती है।

(११) यदि किसी स्त्री के कण्ठ (गले) पर तिल हो तो वह अपने घर में हुकूमत करने वाली होती है।

(१२) यदि किसी स्त्री के बाएं गाल पर अथवा ओठ पर लाल रग का तिल हो तो वह धन-धान्य, पुत्र, सौभाग्य आदि से सम्पन्न होकर सुखी जीवन व्यतीत करती है।

(१३) यदि किसी स्त्री की छाती पर तिल हो तो वह पुत्रवती होती है।

(१४) यदि किसी स्त्री के हाथ पर तिल हो तो वह अपने पति की प्रिय होती है।

(१५) यदि किसी स्त्री की बाईं भुजा पर तिल हो तो वह अत्यन्त सुन्दरी, बुद्धिमती, गुणवती तथा काव्य, साहित्य, सगीत व अभिनय आदि कलाओं में निपुण होती है और इन कलाओं के द्वारा धन तथा यश अर्जित करती है।

(१६) यदि किसी स्त्री की जांघ पर तिल हो तो उसके घर में नौकर-चाकर बने रहते हैं।

(१७) यदि किसी स्त्री के पांव में तिल हो तो वह यात्राएं बहुत करती है।

(१८) यदि किसी स्त्री के गुप्तांग पर तिल हो तो वह अत्यधिक कामुक एवं विलासिनी होती है।

टिप्पणी—स्त्री के बाएं अग का तिल विशेष प्रभावशाली होता है, परन्तु दाए अग का तिल, जिसके फल के विषय में अलग से वर्णन नही किया गया है, वह भी न्यून फलदायक अवश्य होता है।

पाश्चात्य-मत

शरीर के विभिन्न अगो पर पाए जाने वाले तिलो के शुभाशुभ फल के सम्बन्ध मे भारतीय विद्वानो के मत का उल्लेख किया जा चुका है। अब हम तिलों के सम्बन्ध मे पाश्चात्य विद्वानो के मतो का सार-सक्षेप प्रस्तुत करते है।

प्राच्य विद्वानो की ही तरह पाश्चात्य विद्वानों ने भी 'उत्तर वाले' तथा 'बिना उत्तर वाले'—यह दो प्रकार के तिल माने है। इसी तरह उन्होने तिलो के रग भी दो प्रकार के बताए हैं तथा उन रगो के अनुसार फल-भेद का भी वर्णन किया है।

पाश्चात्य मतानुसार स्त्री और पुरुषों के विविध अंगों पर पाए जाने वाले तिलों का वर्णन करने के हेतु हमने पाठकों की सुविधा के लिए उन्हें विभिन्न वर्गों में क्रमानुसार विभाजित कर दिया है जो इस प्रकार हैं—

(१) ललाट-प्रदेश के तिल।

(२) नेत्र-प्रदेश के तिल।

(३) नासिका-प्रदेश के तिल।

(४) कानों के समीप वाले तिल।

(५) कपोल-प्रदेश के तिल।

(६) हनु-प्रदेश के तिल।

(७) चिबुक-प्रदेश के तिल।

(८) अन्य स्थानों के तिल।

'ललाट-प्रदेश' से 'चिबुक-प्रदेश' तक के तिल 'उत्तर वाले तिल' होते हैं अर्थात् इन तिलों का उत्तर-चिन्ह शरीर के अन्य भागों पर भी पाया जाता है। 'अन्य स्थानों के तिल' 'उत्तर वाले' नहीं होते, अतः उनका कोई उत्तर-चिन्ह नहीं पाया जाता। अन्य स्थानों वाले तिलों का सम्बन्ध यदि पूर्वोक्त 'उत्तर वाले' तिलों से स्थापित हो तो उनका प्रभाव 'उत्तर वाले तिलों' के समान ही समझना चाहिए, परन्तु यदि पूर्वोक्त 'ललाट-प्रदेश' से 'चिबुक-प्रदेश' तक के तिलों का उत्तर-चिन्ह शरीर के अन्य निश्चित स्थानों पर न मिले तो इन तिलों का प्रभाव या तो न्यून मात्रा में होता है अथवा बिल्कुल नही होता। उत्तर-चिन्ह वाले तिलों का वर्णन भी प्रत्येक तिल के साथ ही किया गया है।

पाठकों की सुविधा के लिए हमने विभिन्न प्रदेशों पर पाये जाने वाले तिलों पर क्रम-संख्या देकर, उसी क्रम के अनुसार चित्रमय फलादेश का वर्णन किया है। यदि किसी व्यक्ति के किसी प्रदेश पर कोई

तिल चित्र मे प्रदर्शित स्थान से कुछ हटा हुआ दिखाई दे तो वह तिल जिस क्रम संख्या वाले तिल के सबसे अधिक समीप बैठता हो, उसी के अनुसार उसका भी फल समझ लेना चाहिए। तिलों का ठीक-ठीक स्थान निर्धारित करते समय चित्रो की सहायता लेने से किसी भूल की गुंजायश नहीं रहेगी।

पाश्चात्य मतानुसार विभिन्न प्रदेशों में पाये जाने वाले विभिन्न रंग के तिलो का प्रभाव स्त्री अथवा पुरुष पर कैसा पड़ता है—इसका वर्णन एक साथ कर दिया गया है। इसमे पुरुष अथवा स्त्री के दाईं अथवा बाईं ओर तिल होने के सम्बन्ध मे भारतीय मत वाला सिद्धान्त लागू नही होता।

ललाट-प्रदेश के तिल

सिर से नीचे के भाग को 'माथा' अथवा 'ललाट' कहा जाता है। इस प्रदेश मे कुल १२ स्थानों पर पाये जाने वाले तिलों को चित्र संख्या ३०२ मे विभिन्न क्रम संख्याओ द्वारा प्रदर्शित किया गया है। उन विभिन्न संख्याओ वाले तिलो के प्रभाव आदि के विषय में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तिल सख्या १—इस तिल का उत्तर-चिन्ह तिल बाईं ओर की रीढ़ के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग की भांति कुछ लालिमा लिये हुए हो तो ऐसे पुरुष को किसी के उत्तराधिकार के रूप मे सम्पत्ति प्राप्त होती है तथा जमीन-जायदाद से लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति प्रतिष्ठित होते हुए भी झगड़ालू स्वभाव के होते है।

यदि यह तिल काले रंग का हो तो पुरुष जातक के जीवन के अन्तिम २० वर्षो मे स्वास्थ्य अच्छा नही रहता।

परिधि

यह रेखा बाएं हाथ की अनामिका उंगली के प्रथम पर्व के मध्य भाग में कुछ तिर्यक् (तिरछे) रूप में स्थित पाई जाती है-(चित्र संख्या २५५)।
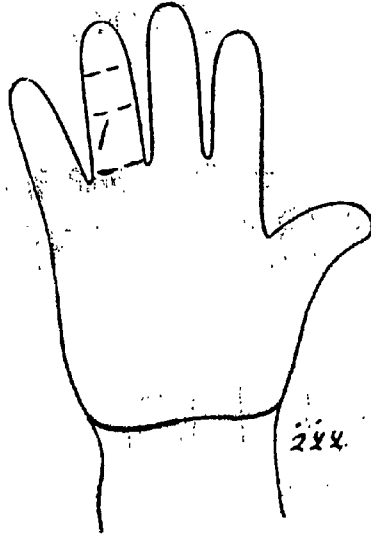
ऐसी रेखा वाला जातक यज्ञ-हवन तथा अन्य धार्मिक कृत्यों को करते रहने वाला तथा नित्य-नियमों का पालन करने वाला होता है। यह रेखा जातक को अन्तिम युक्ति मोक्ष प्रदान करने वाली कही गई है।

वर्तुला

यह रेखा बाएं हाथ की अनामिका उंगली के मूल भाग में वर्तुलाकार रूप में स्थित रहती है (चित्र संख्या २५६)। यह देखने में अत्यन्त स्पष्ट होती है।

ऐसी रेखा वाला जातक मन्त्री-पद को प्राप्त करता है। 'मन्त्रो-

आदि धातुओं अथवा जानवरों के व्यवसाय अथवा ठेकेदारी के काम से लाभ उठाता है। सेना की नौकरी मे भी उसे सफलता प्राप्त होती है। यदि हाथ की रेखाओं द्वारा भी पुष्टि होती हो तो ऐसे तिल वाले जातक को आकस्मिक धन-लाभ भी होता है।

यदि यह तिल काले रंग का हो तो उसे अशुभ फलकारक समझना चाहिए।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर यह तिल हो तो वह कला-कुशल परन्तु कठोर-वचन कहने वाली होती है। इस दोष को कम करने के के लिए 'पन्ना' नामक रत्न धारण करना चाहिए।

तिल सख्या ३—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाईं भुजा पर कुहनी के ऊपर तथा कन्धे के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रग का हो तो पुरुष जातक को किसी मित्र द्वारा किये गए विश्वासघात के कारण कष्ट प्राप्त होता है और वह धनवान् नही हो पाता।

यदि तिल का रंग काला हो तो उसे और भी अधिक अशुभ फल-दायक समझना चाहिए।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर यह तिल (चाहे जिस रग का) हो तो वह पति-सुख मे कमी करने का सूचक होता है। ऐसी स्त्री स्वय भी अच्छे स्वभाव की नहीं होती।

तिल सख्या ४—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) पेट के दाए भाग के नीचे कमर तथा जाघ के बीच मे होता है।

यदि यह तिल शहद के रग का हो तो पुरुष जातक को रुचि पठन-पाठन एवं ज्ञानोपार्जन की दिशा मे अधिक होती है, वह धनी नही हो पाता। ऐसा पुरुष किसी स्त्री के द्वारा धोखा खाता है, जिसके कारण वह सम्पूर्ण स्त्री-जाति के प्रति ही विरक्त हो जाता है।

यह रेखा राजाओं को शत्रुओं पर विजय तथा ब्राह्मणों को सत्य की खोज अथवा तत्त्व-निर्णय में सहायता प्रदान करने वाली होती है। अन्य वर्ण वालों को यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में विजय एवं सफलता प्रदान करती है।

मनुः

यह रेखा बाएं हाथ की अनामिका उंगली के प्रथम पर्व में द्वितीय सन्धि-रेखा के नीचे तथा पूर्वोक्त 'सिंहिका-रेखा' से कुछ ऊपरी भाग में पाई जाती है (चित्र सख्या २५८)।
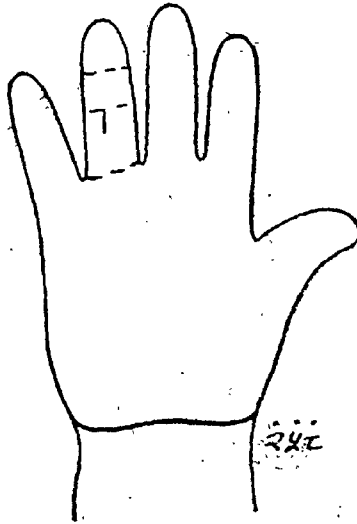
यह रेखा आकार में छोटी तथा गहरी होती है और बहुत कम हाथों में पाई जाती है।

जिस व्यक्ति के हाथ में यह रेखा होती है, वह मन्त्राभ्यास करने वाला तथा मन्त्रों का ज्ञाता होता है।

किसी अन्य दुर्घटना का शिकार होना पड़ता है। दीर्घायु के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त करने के लिए जीवन-रेखा की स्थिति पर ध्यान देना चाहिए।

तिल संख्या ७—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाई ओर की पसली के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रग का हो तो पुरुप-जातक स्वेच्छाचारी, अपव्ययी, ऐयाश, कामो, दुराग्रही तथा व्यभिचारी होता है। वह अनुचित कार्य करने में भी नही झिझकता, परन्तु अपनी मिलनसारी तथा शिष्ट स्वभाव से अन्य लोगों पर अच्छा प्रभाव बनाये रखता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक को चालीस वर्ष की आयु मे कोई शिरोरोग होने को सम्भावना रहती है। इसकी पुष्टि के लिए जीवन-रेखा तथा मस्तक-रेखा की स्थिति को देखना चाहिए।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर यह तिल हो तो वह स्वेच्छाचारिणी तथा अपव्ययो होती है। ऐसी स्त्री की दुष्ट वृत्तियां तीस वर्ष की आयु के बाद और अधिक बढ जाती है तथा वह अपने पति से द्वेष रखकर पर पुरुप गामिनी होती है।

तिल संख्या ८—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाएं हाथ की कलाई के ऊपर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो ऐसा पुरुष धनी तथा ऐयाश होता है, परन्तु उसका स्वभाव अच्छा नही होता।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नही होता।

यदि किसी स्त्रो के ललाट पर ऐसा तिल हो तो वह पति-विद्वेषिणी कुलटा तथा दुष्टा होती है। उसे छूत को कोई भयंकर बीमारी (उपदश आदि) भी हो सकती है।

तिल संख्या ६—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाईं पसली के निचले भाग में होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक को व्यवसाय के द्वारा धन का अधिक लाभ होता है और ३५ वर्ष की आयु मे उसे यात्रा द्वारा विशेष आर्थिक सफलता प्राप्त होती है। इसकी पुष्टि के लिए हथेली में यात्रा-रेखाओं की स्थिति को भी देखना चाहिए।

यदि तिल का रंग काला हो तो यात्रा का परिणाम अनिष्टकर होता है।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर ऐसा तिल हो तो उसकी कल्पना शक्ति तीव्र होती है। पति का सुख सामान्य रहता है तथा उसकी एक सन्तान को कोई कठिन रोग होता है। शेष सभी सन्ताने स्वस्थ रहती हैं।

तिल संख्या १०—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) वक्ष.स्थल के दाएं भाग में होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक कुलीन, धनी, परोपकारी, यशस्वी तथा मान-प्रतिष्ठा युक्त होता है। यह अत्यन्त शुभ फलदायक कहा गया है।

यदि तिल का रग काला हो तो जातक अपव्ययी होता है, जिसके कारण उसे वृद्धावस्था में आर्थिक कष्ट उटाना पड़ता है तथा लम्बी बीमारियां भी भोगनी पड़ती है।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर ऐसा तिल हो तो उसे स्नायुओं की पीड़ा होती है। वह कर्कश स्वभाव की होती है तथा उसे पति का पूर्ण सुख भी प्राप्त नहीं होता।

तिल संख्या ११—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) वक्षः स्थल के बाएं भाग में होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक जल्दबाज तथा लापरवाह होता है। उसे ३० वर्ष और ४० वर्ष को आयु के बीच किसो अनिष्ट कर परिणाम को भोगना पड़ता है।

यदि तिल का रग काला हो तो कोई विशेष फल नही होता।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर ऐसा तिल हो तो उसका विवाह अल्पायु मे ही हो जाता है और वह कई पुत्रों की माता होती है। उसके लिए 'मू गा' तथा 'मोती' नामक रत्न पहनना शुभ रहता है।

तिल संख्या १२—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाए नितम्ब पर होता है।

यदि यह तिल शहर के रग का हो तो ऐसा पुरुष-जातक पारिवारिक लोगो से विवाद मे उलझता है। विवाहोपरान्त उसके भाग्य मे विशेष परिवर्तन होता है।

यदि तिल का रग काला हो तो ३० से ४० की आयु के बीच जातक को उदर-विकार अथवा रक्त-विकार का शिकार होना पड़ता है।

यदि किसी स्त्री के ललाट पर ऐसा तिल हो तो उसे कन्ठ-रोग होने की आंशका रहती है तथा उसकी वृत्तियां अत्यन्त चचल होती हैं। हाथ की रेखाओ द्वारा भी इन लक्षणों की पुष्टि कर लेना आवश्यक है।

नेत्र-प्रदेश के तिल

दोनो आंखो के समीपवर्ती स्थान को नेत्र-प्रदेश कहा जाता है। इस प्रदेश मे कुल ८ स्थानो पर पाये जाने वाले तिलों को चित्र संख्या ३०३ मे, विभिन्न क्रम संख्याओ द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इन विभिन्न संख्याओ वाले तिलों के प्रभाव आदि के विषय मे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए —

[नेत्र-प्रदेश के तिल]

तिल संख्या १—इस तिल का उत्तार-चिन्ह (तिल) पेट के बाएं भाग पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक पेट तथा दिल की बीमारियों से ग्रस्त बना रहता है। ऐसे व्यक्ति का स्वास्थ्य प्रायः जीवन भर खराब बना रहता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो दूर की यात्रा करने से अनिष्टकर परिणाम प्राप्त होता है।

यदि किसी स्त्रो के नेत्र-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह मानसिक तथा शारीरिक दोनों प्रकार के दुःखों से दु खी वनी रहतो है और उसके लिए भी इसका प्रभाव अच्छा नही होता।

तिल स ख्या २—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) वक्षःस्थल के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुप जातक निर्बुद्धि होता है। उसके स्वभाव मे उद्दन्डता रहती है तथा उसके पांव मे भी कुछ विकार होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नही देता।

यदि किसी स्त्री के नेत्र-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह अपने माता-पिता मे श्रद्धा रखने वालो, पाक-विद्या मे प्रवीण परन्तु मूर्ख और आलसी होती है। उसकी मृत्यु भी अपने जन्म-स्थान से वहुत दूर विदेश मे होती है।

तिल स ख्या ३—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) वाए उसके निचले भाग मे होता है।

यदि यह तिल शहद के रग का हो तो पुरुप जातक कुछ झगडालू प्रकृति का तथा मुकद्दमेबाज होता है और अनेक प्रकार के कष्ट भी पाता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो वह पुरुप के लिए शुभ फलदायक होता है।

यदि किसो स्त्री के नेत्र प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह उसके लिए अशुभ फल देने वाला होता है। इस तिल के फलस्वरूप वह दुःख

और कष्ट पाती रहती है। यदि शरीर के अन्य लक्षण तथा हस्त-रेखाओं से भी पुष्टि होती हो तो ऐसे तिल वाली स्त्री अपनी चौबीस से तीस वर्ष की आयु के बीच किसी पर पुरुष से गुप्त प्रेम-सम्बन्ध भी स्थापित करती है।

तिल संख्या ४—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाए अथवा दाएं पांव पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक के लिए बहुत शुभ होता है। ऐसे व्यक्ति भाग्यशाली होते है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक भाग्यहीन, विपत्तियों वाला तथा वृद्धावस्था में अपस्मार आदि रोगों के कारण कष्ट पाने वाला होता है।

यदि किसी स्त्री के नेत्र प्रदेश पर पट तिल हो और शरीर के अन्य लक्षणों तथा हस्त-रेखा में भी पुष्टि होती हो तो वह व्यभिचारिणी होती है। उसका गुप्त-प्रेम किसी निम्न श्रेणी के व्यक्ति से होता है, जिसका परिणाम अभिष्ट कर रहता है।

तिल संख्या ५—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बगल (कांख) के नीचे बाई भुजा के भीतर की ओर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक को आकस्मिक रूप से धन का लाभ होता है। ऐसे व्यक्ति विदेशों के लिए निर्यात-आयात के व्यवसाय द्वारा प्रचुर धन उपार्जित कर सकते है।

यदि तिल का रंग काला हो तो उपर्युक्त फल का विपरीत परिणाम होता है, अतः उसे अशुभ समझना चाहिए।

यदि किसी स्त्री के नेत्र-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसे अपने पति अथवा अन्य सम्बन्धियों द्वारा धन का लाभ होता है, परन्तु उसका स्वास्थ्य कमजोर रहता है।

तिल संख्या ६—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाए हाथ की कुहनी के नीचे होना है।

यदि यह तिल शहद के रग का हो तो पुरुष जातक घुड़दौड, खेल-कूद आदि का विशेष प्रेमी होता है। उसे उच्चपदाधिकारियों द्वारा धन-सम्मान एव सहायता की प्राप्ति होती है। यदि हाथ की रेखाओं द्वारा पुष्टि होती हो तो ऐसे पुरुष को ३७ से ४७ वर्ष की आयु के बीच नेत्र-विकार होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक को लाटरी,सट्टे अथवा शेयर के व्यवसाय मे हानि उठानी पड़ती है।

यदि किसी स्त्री के नेत्र-प्रदेश पर ऐसा तिल हो उसे बाल्यावस्था में चोट लगने अथवा अग्नि से जलने का भय रहता है, परन्तु ३० वर्ष की आयु के बाद उसे किसी के उत्तराधिकार के रूप मे धन की प्राप्ति होती है।

तिल संख्या ७—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाईं ओर कमर पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक को विदेशों से अयात-निर्यात के व्यवसाय मे विशेष धन-लाभ होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक को धार्मिक-संस्थाओं अथवा मुकद्दमेबाजी आदि के द्वारा हानि पहुंचने की आंशका रहती है।

यदि किसी स्त्री के नेत्र-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह दीर्घायु होती है तथा सुखी-जीवन व्यतीत करती है। स्त्रियो के लिए इस स्थान पर किसी भी रंग का तिल क्यों न हो, शुभ फल देने वाला माना गया है।

तिल संख्या ८—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) सीने की हड्डी के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक विलासी प्रवृत्ति का होता है और उसका अनेक स्त्रियों से शारीरिक-सम्बन्ध रहता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नही होता।

यदि किसी स्त्री के नेत्र-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह पुरुषों की तरह ही घर से बाहर के कामों में दक्ष होती है। ऐसे तिल वाली स्त्री विलासिनी भी होती है और उसके अनेक पुरुषों से सम्बन्ध हो सकते है। इसकी पुष्टि के लिए शरीर के अन्य लक्षण तथा हस्त-रेखाओं की स्थिति पर भी विचार करना चाहिए।

तिल संख्या ६—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाएं कन्धे पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रग का हो तो पुरुष-जातक को अपने मित्रों तथा सम्बन्धियो द्वारा धोखा दिए जाने अथवा हानि पहुंचाये जाने की आशका रहेगी।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक पर-स्त्री से प्रेम-सम्बन्ध के कारण अपनी प्रतिष्ठा को हानि पहुंचाता है।

यदि किसी स्त्री के नेत्र-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसे अग्नि अथवा बिजली का भय बना रहेगा तथा उसका स्वास्थ्य भी खराब होगा। यदि अन्य लक्षणों तथा हस्त-रेखाओं द्वारा भी पुष्टि होती हो तो ऐसी स्त्री का चरित्र भी ठीक नही होता अर्थात् वह पर पुरुष-गामिनी हो सकती है।

नासिका-प्रदेश के तिल

नाक के ऊपर तथा उसके समीपवर्ती प्रदेश में कुल ८ स्थानों पर पाये जाने वाले तिलों को चित्र संख्या ३०४ में, विभिन्न क्रम-सख्याओं द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इन विभिन्न संख्याओं वाले तिलों के प्रभाव आदि के विषय में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—
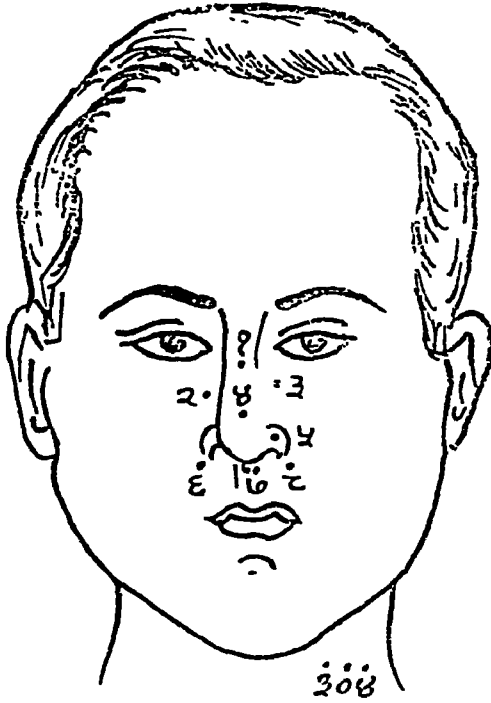
[नासिका प्रदेश के तिल]

तिल संख्या १—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाईं ओर के पुट्ठे पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक वाक्-चतुर तथा कला-कुशल होता है, परन्तु वह ऐसी स्त्रियो प्रेम-जाल मे फसा रहता है, जो उसके द्वारा अपने स्वार्थो की सिद्धि करती रहती है।

यदि तिल का रग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के नासिका-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसे शुभ-लक्षण समझना चाहिए। ऐसी स्त्रियां परम सौभाग्यशाली, सम्पत्ति-शालिनी, यशस्विनी तथा दीर्घायु प्राप्त करने वाली होती है।

तिल संख्या २—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाईं बगल के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रग का हो तो पुरुष जातक को जीवन के प्रथम तथा मध्यभाग में सुख तथा वृद्धावस्था मे कष्ट प्राप्त होता है। ३० से ३५ वर्ष की आयु के बीच उसे शारीरिक कष्ट भी होता है।

यदि तिल का रग काला हो तो कोई विशेप फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के नासिका-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो अच्छे स्वभाव की होती है, परन्तु उसी के कारण उसके पति को कष्ट अवश्य भोगना पडता है।

तिल संख्या ३—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाई जांघ पर होता है।

यदि यह कुछ तिल शहद के रंग का चमकदार सा हो तो पुरुष-जातक के लिए शुभ होता है, परन्तु यदि चमकदार न हो तो भाग्य-जातक हीन तथा जीवन के प्राय: सभी क्षेत्रो में असफलता प्राप्त करने वाला होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक को विजली अथवा किसी अन्य दुर्घटना के कारण मृत्यु हो जाने की आशंका रहती है।

यदि किसी स्त्री के नासिका-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो यह बुद्धिमती होती है, परन्तु अपने ही किसी सम्बन्धी अथवा सुपरिचित व्यक्ति के विश्वासघात के कारण उसे आर्थिक अथवा जमीन-जायदाद सम्बन्धी हानि उठानी पड़ती है।

तिल संख्या ४—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाई जांघ पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक सग्रहशील तथा

बुद्धिमान होता है और उसे उत्तराधिकार में किसी की सम्पत्ति भी प्राप्त होती है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक को उदर एवं यकृत्-सम्बन्धी विकार बने रहते हैं।

यदि किसी स्त्री के नासिका-प्रदेश पर ऐसा तिल हो उसका शरीर दुर्बल होता है। प्रसव के समय उसे अत्यधिक कष्ट एव भय का सामना करना पड़ता है। ऐसे तिल वाली स्त्री की नाक का अग्रभाग यदि कटा हुआ सा अथवा हड्डी से, अलग जैसा प्रतीत होता हो, तो वह अच्छे चरित्र की नही होती।

तिल संख्या ५—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाएं घुटने के ऊपर दाईं जांघ पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष जातक को कृषि, जमीन जायदाद अथवा अपने बड़े-बूढो द्वारा आर्थिक लाभ प्राप्त होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक को ४० से ५० वर्ष की आयु के बीच किसी दुर्घटना का शिकार बनना पडता है। यदि हाथ की रेखाएं, विशेषकर जीवन-रेखा अच्छी हो तो उसकी प्राण-रक्षा हो जाती है।

यदि किसी स्त्री के नासिका-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसे अशुभ फलकारक समझना चाहिए। ऐसी स्त्री सदैव दु:खी बनी रहती है।

तिल संख्या ६—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाएं सीने के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक अपव्ययी, अनेक प्रकार के दोषो तथा दुर्गुणो से युक्त होता है। उस पर फौजदारी के मुकद्दमे चलते है तथा न्यायालय द्वारा दण्ड प्राप्ति की सम्भावना रहती

है। ऐसे व्यक्तियों को घृणित तथा अपराध पूर्ण कार्यों से बचे रहने का प्रयत्न करना चाहिए। इस तिल का प्रभाव बहुत अशुभ फलकारक होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेप फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के नासिका-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसे बहुत ही अशुभ समझना चाहिए। ऐसी स्त्री का चरित्र भ्रष्ट होता है। वह स्वयं ही अपनी स्थिति का सर्वनाश कर लेती है। इसकी पुष्टि के लिए हाथ को रेखाओं की स्थिति पर ध्यान देना भी आवश्यक है।

तिल संख्या ७—इस तिल का उत्तार-चिन्ह (तिल) पेट के बाए भाग पर पसली के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक को सरकारी अधिकारियों द्वारा कष्ट प्राप्त होता है। यदि ऐसे पुरुष की पत्नी अथवा कन्या स्वरूपवान हो तो उच्च स्थिति के लोग उसके द्वारा अपनी वासनापूर्ति की इच्छा से जातक को कष्ट पहुंचाते है।

यदि तिल का रग काला हो तो उसे और भी अनिष्टकर प्रभाव वाला समझना चाहिए।

यदि किसी स्त्री के नासिका-प्रदेश पर ऐसा तिल हो उसका स्वास्थ्य दुर्बल होता है तथा चित्त दुःखी बना रहता है। मूंगा धारण करने से इस दोष का कुछ परिहार हो जाता है।

तिल संख्या ८—इस तिल का उत्तार-चिन्ह (तिल) पीठ पर बाईं बगल के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरष-जातक ऊपर के दिखाने में बहादुर और साहसी परन्तु भीतर से कमजोर हिम्मत वाला होता है। उसे स्त्रियों के कारण, मुकद्दमेबाजी के कारण अथवा अन्य प्रकार के झगड़ों के कारण कष्ट उठाने पड़ते है।

यदि तिल का रंग काला हो तो तथा हाथ को रेखाओं से भी पुष्टि होती हो जातक के पानी मे डूबने का भय रहता है।

यदि किसी स्त्री के नासिका-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो तथा हस्त रेखा एवं अन्य लक्षणो से भी पुष्टि होती हो तो वह चरित्र-भ्रष्ट होती है।

कानों के समीप वाले तिल

दोनो कानो के समीपवर्ती कुल ५ स्थानो पर पाये जाने वाले तिलों को चित्र सख्या ३०५ मे विभिन्न क्रम-सख्याओ द्वारा प्रदर्शित किया
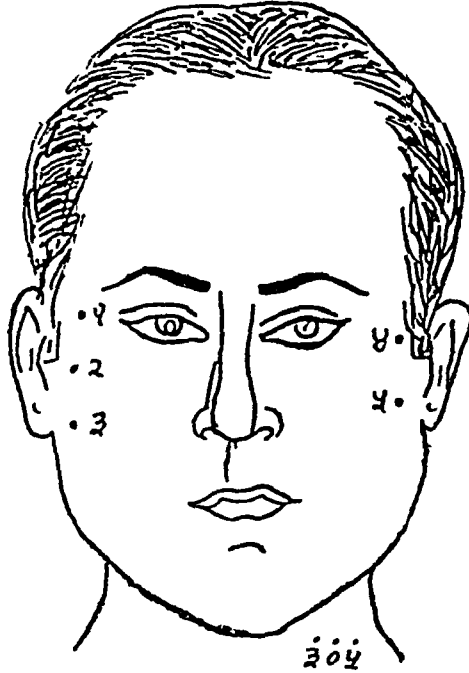
[कानो के समीप वाले तिल]

गया है। इन विभिन्न सख्याओं वाले तिलो के प्रभाव आदि के विषय में आगे लिखे समझना चाहिए।

तिल संख्या १—यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक का स्वभाव कुछ उद्दण्डतापूर्ण होता है। उसके सन्तान-सुख में बाधा पड़ती है तथा उसका बड़ा पुत्र आज्ञाकारी नहीं होता, परन्तु ऐसे तिल वाले जातक को अपने किसी कुटुम्बी द्वारा विरासत मे धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक के साथ उसका ही दिल कोई विश्वासघात करके हानि पहुंचाता है।

यदि किसी स्त्री के चेहरे पर ऐसा तिल हो, उसे अशुभ फलदायक समझना चाहिए। उसकी मृत्यु पानी या कफ के विकार द्वारा होती है।

तिल संख्या २—यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक चिन्तित, उदास, निर्धन, परन्तु सदाचारी होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के कान के पास ऐसा तिल हो तो आचार-व्यवहार खराब होता है, जिसके कारण उसे अपयश मिलता है। उसकी चारित्रिक अधोगति के सम्बन्ध में ठीक ज्ञान प्राप्त करने के लिए हथेली की सूर्य, हृदय तथा मस्तिष्क-रेखा एवं अन्य लक्षणों से विचार करना चाहिए।

तिल संख्या ३—यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक को अपने किसी कुटुम्बी द्वारा विरासत में धन-सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। उसका भाग्योदय विवाह के बाद होता है। यह तिल अत्यन्त शुभ फलदायक माना गया है।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के चेहरे पर ऐसा तिल हो तो वह ऐश्वर्यशालिनी, गुणी तथा बुद्धिमती होती है, परन्तु अन्य स्त्रियों के साथ उसकी पटरी नहीं बैठती।

तिल संख्या ४—यदि यह तिल शहद के रग का हो तो पुरुष-जातक अत्यन्त बुद्धिमान तथा चतुर होता है। वह व्यवसाय तथा अन्य कार्यों के द्वारा प्रचुर धन उपार्जित करता है।

यदि यह तिल काले रग का हो तो उसे घोर समझना चाहिए। ऐसा तिल जातक की आर्थिक स्थिति को बिगाड़ता है तथा उसके पांव मे चोट लगने का भय रहता है।

यदि किसी स्त्री के चेहरे पर ऐसा तिल हो तो वह विवाह से पहले चंचल चित्त वाली रहती है, परन्तु विवाहोपरान्त श्रेष्ठ पति-सुख प्राप्त करती है।

तिल संख्या ५—यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुप-जातक अपने सम्बन्धियो से झगड़ मुकद्मे आदि के कारण परेशानी उठाता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक अपने ही गलत आचरणों के कारण दुःख पाता है।

यदि किसी स्त्री के कान के समीप ऐसा तिल हो तो वह सच्चरित्र नही होती। यदि उसके हाथ का अगूठा छोटा हो तथा शुक्र-क्षेत्र अत्यधिक उन्नत हो तो वह अत्यन्त कामातुरा तथा व्यभिचारिणी होती है।

कपोल प्रदेश के तिल

दोनो कपोल प्रदेश के कुल ७ स्थानो पर पाये जाने वाले तिलों को चित्र सख्या ३०६ मे विभिन्न क्रम सख्याओ द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इन विभिन्न सख्याओ वाले तिलों के प्रभाव आदि के विषय में अग्र-लिखित अनुसार समझना चाहिए।

[दोनो कपोल प्रदेश के तिल]

तिल संख्या १—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाईं पसली के नीचे कमर के आस-पास होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक विदेश में सामान्य नौकरी आदि करके अपना जीवन यापन करता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक की ३० वर्ष की आयु में किसी से घोर शत्रुता होती है।

यदि किसी स्त्री के कपोल पर ऐसा तिल हो तो वह धार्मिक विचारों वाली तथा सदाचारिणी होती है। उसे सर्वत्र यश तथा मान-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती रहती है।

तिल संख्या २—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) पेट पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक अपनी चतुराई तथा वक्तृत्व-शक्ति के बल पर उच्च पद प्राप्त करने मे सफल होता है। उसकी उन्नति मे किसी उच्च अधिकारी की पत्नी का भो सहयोग रहता है।

यदि तिल का रग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के कपोल पर ऐसा तिल हो तो वातचीत में कुशल, चंचल स्वभाव वाली तथा अपव्ययी होती है। वह स्वय से सम्बन्धित लोगो को कष्ट भी पहुचाती रहती है।

तिल संख्या ३—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) वक्षःस्थल के वाम भाग के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रग का हो तो पुरुष-जातक अनियमित आहार-विहार के कारण रोगी होकर कष्ट उठाता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो उसे और भी अधिक अशुभ तथा भयंकर शारीरिक कष्टदायक समझना चाहिए।

यदि किसी स्त्री के कपोल पर ऐसा तिल हो तो उस पर भी प्रायः वही प्रभाव होता है, जो पुरुष जातक के लिए बताया गया है।

तिल संख्या ४—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाईं ओर की जांघ की सधि पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रग का हो तो पुरुष-जातक के जीवन का प्रारभिक तथा मध्य भाग सामान्य आर्थिक स्थिति में व्यतीत होता है, परन्तु अन्तिम तीसरे भाग मे धन की विशेष प्राप्ति होती है। ऐसे जातक के धन को हानि स्त्रियों के कारण भी होती है।

यदि तिल का रग काला हो तो जातक के किसी ऊचे स्थान से गिरने की संभावना रहती है।

यदि किसी स्त्री के कपोल पर ऐसा विल हो तो वह चचल-स्वभाव वाली तथा घूमने-फिरने की बहुत शौकीन होती है।

तिल संख्या ५—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाईं ओर की छाती के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रग का हो तो पुरुष जातक का विशेष भाग्योदय अपनी जन्म-भूमि से बाहर किसी परदेश के स्थान मे होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक अपनी चतुराई तथा अन्य उपायों द्वारा धनोपार्जन करता है। परन्तु पचास-पचपन वर्ष की आयु में सट्टे आदि के द्वारा उसे अकस्मात् ही आर्थिक हानि उठानी पड़ती है।

यदि किसी स्त्री के बाए कपोल पर ऐसा तिल हो तो वह अत्यधिक विलासिनी होती है और अनेक व्यक्ति, विशेषकर उससे कम आयु के लोग, उसके प्रेमी होते हैं। ऐसी स्त्रियों की काम-वासना अत्यन्त प्रबल होती है।

तिल संख्या ६—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) वक्षःस्थल पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक अस्थिर-चित्त वाला होता है तथा स्त्रियों के प्रभाव में अधिक रहता है, जिसके कारण वह नैतिकता से दूर हट जाता है और उसके सम्मान को भी हानि पहुंचती है।

यदि तिल का रग काला हो तो कोई विशेष फल नहीं होता।

यदि किसी स्त्री के कपोल पर ऐसा तिल हो तो वह दुराग्रही, जिद्दी, स्वतन्त्र-प्रकृति की तथा स्वेच्छाचारिणी होती है। उसे किसी

भयंकर रोग का शिकार वनना पड़ता है, परन्तु कुछ समय बाद वह उससे मुक्त हो जाती है।

तिल संख्या ७—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाएं नितम्ब पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रग का हो तो पुरुष-जातक का भाग्योदय विवाह के वाद होता है। यदि हाथ मे विवाह की दो रेखाएं हों अर्थात् जातक के दो विवाह होने के लक्षण दिखाई दे, तो पहली स्त्री के बाद जातक दूसरा विवाह तो कर लेता है, परन्तु उसे वैवाहिक-सुख की प्राप्ति नही होती।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक के विदेश मे जाकर किसी वाहन अथवा पशु से टकरा जाने के कारण दुर्घटना होने की संभावना रहती है।

यदि किसी स्त्री के कपोल पर ऐसा तिल हो तो उसका विवाह किसी धनवान् पुरुष के साथ होता है, परन्तु उसका स्वय का स्वास्थ्य अच्छा नही रहता। कोई-न-कोई बीमारी उसे घेरे ही रहती है।

हनु प्रदेश के तिल

गालो के नीचे वाले हिस्से को 'हनु-प्रदेश' कहते है। यह भाग ठोड़ी के ऊपर होता है। इस प्रदेश के कुल ९ स्थानो पर पाये जाने वाले तिलों को चित्र सख्या ३०७ मे विभिन्न क्रम सख्याओं द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इन विभिन्न सख्याओ वाले तिलो के प्रभाव आदि के विपय मे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तिल संख्या १—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) पेट के दक्षिण भाग मे नीचे की ओर होता है।

यदि यह तिल शहद के रग का हो तो पुरुष-जातक इन्द्रिय-लोलुप,

धोखे-बाज; मिथ्यावादी तथा विश्वास न करने योग्य (विश्वासघाती) होता है उस पर फौजदारी मुकद्दमे चलते है। तथा उसके यश को दाग लगता है।
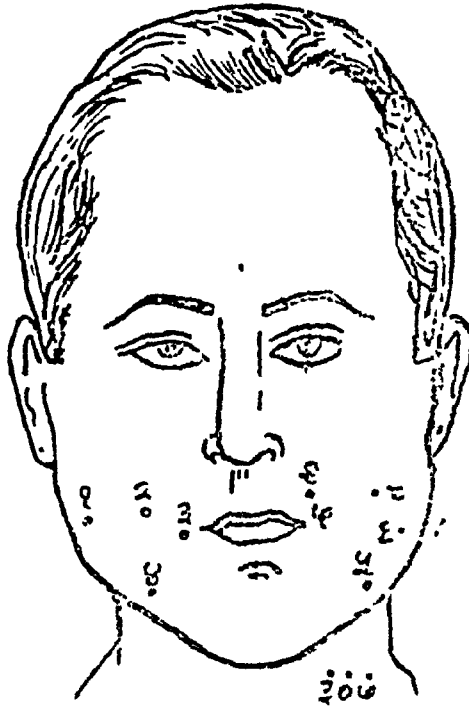
[हनु-प्रदेश के तिल]

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक निर्धन होता है तथा अनियमित जीवन बिताने के कारण रोगी भी बना रहता है।

यदि किसी स्त्री के हनु-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसे सन्तान का सुख कम प्राप्त होता है तथा उसका चरित्र भी अच्छा नहीं होता। स्त्रियों के सम्बन्ध में इस तिल का प्रभाव घोर अशुभ समझना चाहिए।

चरित्र-हीनता आदि लक्षणों की पुष्टि हस्त-रेखाओं को देखकर भी कर लेनी चाहिए।

तिल संख्या २—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाईं पसली के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक अनुदार, कलुषित हृदय तथा विचारो वाला एवं दरिद्र होता है।

यदि तिल का रग काला हो तो जातक को किसी पशु से भय अथवा अन्य दुर्घटना का शिकार होना पडता है।

यदि किसी स्त्री के हनु-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह कलह-प्रिया तथा चरित्रहीन होती है। चरित्रहीनता के लक्षण की पुष्टि पांवो की उगलियो की बनावट तथा हाथ की रेखाओ को देखकर भी कर लेनी चाहिए।

तिल संख्या ३—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) पेडू के समीप होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक एकान्त-प्रेमी, अध्ययन-शील, विद्वान् तथा भाग्यशाली होता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो कोई विशेप फल नही होता।

यदि किसी स्त्री के हनु-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह पतिव्रता एवं सौभाग्यशालिनी होती है। स्त्री के लिए काले अथवा लाल रग के तिल से प्रभाव मे कोई विशेप अन्तर नही पड़ता। यदि ऐसे तिल वाली स्त्री के अन्य शारीरिक लक्षण भी शुभ हो तथा हाथ की रेखाएं भी श्रेष्ठ गुण वाली हो तो वह अत्यन्त यशस्विनी एव ऐश्वर्यशालिनी भी होती है।

तिल संख्या ४—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाए घुटने पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक दुर्बल-चित्त वाला तथा विषय-भोग मे लीन रहने वाला होता है। वह किसी भी कार्य को करने में कुशल नहीं होता, अत: उसे जीवन के सभी क्षेत्रों मे असफलताओं, निराशाओ, सकटो, अपयशों एवं दरिद्रता का शिकार बनना पड़ता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो उसका फल अत्यन्त अशुभ होता है। ऐसा व्यक्ति अत्यधिक कामासक्त बना रहता है। उसकी विवेक-बुद्धि नष्ट हो जाती है।

यदि किसी स्त्री के हनु-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसे अस्वास्थ्य का सूचक समझना चाहिए।

तिल संख्या ५—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाए घुटने के भीतरी भाग मे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक के अनेक शत्रु होते है और वे उसे हानि पहुंचाने का प्रयत्न करते रहते हैं, जिसके कारण उसकी भाग्योन्नति मे बाधा पहुंचती रहती है।

यदि तिल का रग काला हो तो जातक अपने अनुचित आचार-विचार एव व्यवहारों के कारण हानि उठाता रहता है।

यदि किसी स्त्री के हनु-प्रदेश पर ऐसा तिल हो वह कामासक्त होने के साथ हो भाग्यशालिनी भी होती है।

तिल संख्या ६—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाईं जांघ पर भीतरी हिस्से में होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक भाग्यवान होता है, परन्तु उसे अपनी अट्ठाईस से बत्तीस वर्ष की आयु के बीच के समय में किसी विशेष कठिनाई अथवा मुसीबत का सामना करना पड़ता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक का वैवाहिक-जीवन दुःख-पूर्ण होता है।

यदि किसी स्त्री के हनु-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह धनी एवं सुखी-जीवन व्यतीत करने वाली होती है। परन्तु उसे अपने जीवन के प्रारम्भिक भाग मे पति का सुख अल्प मात्रा में प्राप्त होता है। बाद मे वह सुख भी उसे पर्याप्त मिलने लगता है।

तिल संख्या ७—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाईं जांघ के नीचे के हिस्से मे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक के पानी मे डूबने, ऊपर से गिरने अथवा किसी अन्य प्रकार की दुर्घटना मे फस जाने की सम्भावना रहती है।

यदि तिल का रग काला हो तो वह अपना कोई विशेष प्रभाव प्रदर्शित नही करता।

यदि किसी स्त्री के हनु-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसका स्वास्थ्य ठीक नही रहता और वह भाग्यहीना भी होती है। तीस अथवा इकत्तीस वर्ष की आयु मे उसे किसी भयानक शारीरिक-रोग अथवा मानसिक कष्ट होने की आशंका भी रहती है।

तिल संख्या ८—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) पीठ पर नीचे की ओर होता है।

यदि यह तिल शहद के रग का हो तो पुरुष-जातक विदेश-यात्रा का प्रेमी होता है और विदेशो से व्यवसाय द्वारा अर्थोपार्जन भी करता है।

यदि तिल का रंग काला हो तो जातक अपनी ही दुर्बुद्धि के कारण अपने भाग्य को नष्ट कर लेता है।

यदि किसी स्त्री के हनु-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसका स्वास्थ्य ठीक नही रहता और उसका चरित्र भी प्राय: अच्छा नही होता। चरित्रहीनता की पुष्टि के लिए शरीर के अन्य लक्षणों तथा हस्त-रेखाओं की स्थिति पर भी भली-भांति विचार कर लेना चाहिए।

तिल संख्या ६—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाई जांघ के नीचे होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग हो तो पुरुष-जातक लोभी तथा क्षुद्र-हृदय का होता है। उसकी वृद्धावस्था सुखपूर्वक नहीं बीतती। इस तिल को अशुभ फलकारक ही समझना चाहिए।

यदि तिल का रग काला हो तो जातक किसो ऊंचे स्थान से गिरता है अथवा किसो अन्य प्रकार की दुर्घटना का शिकार होता है।

यदि किसी स्त्री के हनु-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो युवावस्था की अपेक्षा वृद्धावस्था में उसको आर्थिक स्थिति मे परिवर्तन हो जाता है अर्थात् यदि युवावस्था मे धनाढ्य हो तो वृद्धावस्था मे दरिद्र हो जाती है और युवावस्था मे दरिद्र हो तो वृद्धावस्था मे धनाढ्य हो जाती है।

चिबुक-प्रदेश के तिल

हनु-प्रदेश के नीचे चिबुक-प्रदेश (ठोड़ी) पर पाए जाने वाले कुल ५ तिलों को चित्र सख्या ३०८ में विभिन्न क्रम संख्याओ द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इन विभिन्न संख्याओं वाले तिलों के प्रभाव आदि के विषय मे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

तिल संख्या १—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) दाई जांघ पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक गुणवान तथा विद्वान् होता है। बड़े लोगो की सहायता एव सम्पर्क के द्वारा उसकी भाग्योन्नति होती है।

यदि तिल का रग काला हो तो जातक धनवान एव दीर्घायु होता है।

यदि किसी स्त्री के चिवुक-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह धनवान होती है तथा वाहर से सच्चरित्र भी दिखाई देती है, परन्तु यथार्थ में उसका चरित्र शुद्ध नही होता। उसकी चरित्रहीनता की पुष्टि के लिए हस्त-रेखाओ तथा शरीर के अन्य लक्षणो पर भी विचार करना चाहिए।

[चिवुक-प्रदेश के तिल]

तिल संख्या २—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) वाई जांघ पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रग का हो तो पुरुप-जातक वुद्धिमान तथा

धनोपार्जन करने में अत्यधिक कुशल होता है, परन्तु वह वातव्याधि से पीड़ित बना रहता है। यदि हाथ मे जीवन-रेखा, मस्तक-रेखा तथा हृदय-रेखा द्वारा अल्पायु-योग की पुष्टि होती हो तो ऐसे व्यक्ति की आयु कम होती है।

यदि तिल का रग काला हो तो जातक को किसी ऊंचे स्थान से गिर कर चोट लगने की सम्भावना रहती है।

यदि किसी स्त्री के चिबुक-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह अधिक बुद्धिमती नही होती। वह या तो किसी ऊचे स्थान से गिर कर चोट खाती है या फिर उसे प्रसव के समय अथवा बाद में प्रसव-सम्बन्धी किसी रोग का शिकार होना पड़ता है।

तिल संख्या ३—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) पीठ के बाएं भाग में नीचे की ओर होता है।

यदि यह तिल शहद के रंग का हो तो पुरुष-जातक बुद्धिमान, मित्रों मे मित्रता का निर्वाह करने वाला तथा शत्रुओं से शत्रुता का बदला लेने वाला होता है। उसे किसी धनी-महिला की विरासत द्वारा सम्पत्ति भी प्राप्त होती है।

यदि तिल का रंग काला हो तो उसका कोई विशेष फल नही होता।

यदि किसी स्त्री के चिबुक-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो जीवन के मध्य भाग में उसके किसी निकट-सम्बन्धी की मृत्यु हो जाती है। किसी समय किसो अनुचित औषधि का प्रयोग कर लेने के कारण वह अपने स्वय के स्वास्थ्य को भी हानि पहुचा बैठती है।

तिल संख्या ४—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) बाई जांघ पर भीतर की ओर होता है।

यदि यह तिल शहद के रग का हो तो पुरुष-जातक का विवाह किसी निर्धन परिवार मे होता है। यदि हाथ की रेखाओं तथा शरीर के अन्य अगो के लक्षण शुभ न हो तो ऐसे व्यक्ति को व्यवसाय अथवा सट्टे मे धन की अत्यधिक हानि भी उठानी पड़ती है।

यदि तिल का रंग काला हो तो वह और भी अधिक अशुभ प्रभाव प्रदर्शित करता है। ऐसे जातक को धन-हानि के कारण अन्य अनेक कठिनाइयो तथा मुसीबतो का भी सामना करना पड़ता है।

यदि किसी स्त्री के चिबुक-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो वह धूर्ता, दुष्टा एव मायाविनी होती है। यदि शरीर के अन्य लक्षणो तथा हस्त-रेखाओ से पुष्टि होती हो तो वह चरित्रहीन भी होती है। इस तिल का प्रभाव अनिष्टकर ही होता है।

तिल संख्या ५—इस तिल का उत्तर-चिन्ह (तिल) वक्षस्थल पर होता है।

यदि यह तिल शहद के रग का हो तो पुरुष-जातक भाग्यशाली एव सभा मे बैठकर अपनी बुद्धिमत्ता एव चातुर्य्य का प्रदर्शन करने वाला होता है। अपनी पत्नी, रिश्तेदार महिला अथवा अन्य स्त्रियो की सहायता द्वारा उसके भाग्य की वृद्धि होती है। यदि भाग्य-रेखा भी अच्छी हो तो ऐसा व्यक्ति विशेष बलवान होता है।

यदि तिल का रग काला हो तो कोई विशेष फल नही होता।

यदि किसी स्त्री के चिबुक-प्रदेश पर ऐसा तिल हो तो उसकी नेत्र-दृष्टि दुर्बल होती है तथा अन्य प्रकार के नेत्र-विकार भी हो जाते हैं। ऐसी स्त्री अपने पति को बहुत कष्ट देने वाली होती है।

अन्य स्थानों पर पाये जाने वाले तिल

मुखमण्डल के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर पाये जाने वाले तिल बिना

उत्तर-चिन्ह वाले होते है। उनका फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) यदि ग्रीवा के दाईं ओर तिल हो तो पुरुष बुद्धिमान् होता है और स्त्री प्रसन्न रहती है।

(२) यदि ग्रीवा के बाईं ओर तिल हो तो स्त्री-पुरुष दोनों को एक-सा फल प्राप्त होता है। वे या तो किसी ऊंचे स्थान से गिरते है अथवा पानी मे डूबते है।

(३) यदि ग्रीवा के मध्य भाग में तिल हो तो जातक चाहे स्त्री या पुरुष हो—उसकी आकस्मिक रूप से मृत्यु होती है।

(४) यदि पुरुष के दाए स्तन के नीचे तिल हो तो शुभ होता है। स्त्री के दाए स्तन के नीचे हो तो उसे पैतृक सपत्ति मिलती है।

(५) यदि पुरुष के बाएं स्तन के नीचे तिल हो तो वह परिश्रमी परन्तु कठोर स्वभाव का होता है। स्त्री के बाएं स्तन के नीचे हो तो वह पतिव्रता होती है।

(६) यदि पुरुष के दाए कन्धे पर तिल हो तो वह धनवान होता है।

(७) यदि पुरुष के बाएं कन्धे पर तिल हो तो अशुभ फलदायक होता है।

स्त्री के लिए किसी भी कन्धे पर तिल-चिन्ह का होना अशुभ फल-दायक ही होता है।

चित्र संख्या ३०६ में उक्त सातों तिलों के सातों स्थानों को प्रदर्शित किया गया है।

(८) यदि पुरुष के दाए पांव पर तिल हों तो वह सभी विषयों का श्रेष्ठ जानकार होता है। स्त्री के दाएं पांव पर हो तो वह सुखी रहती है

१
३
२
६
७
४
५

(६) यदि बाएं पांव पर तिल हो तो वह स्त्री-पुरुष दोनों के लिए ही अशभ होता है।

विशेष ज्ञातव्य

यदि मुह या शरीर के अन्य भागों पर एक से अधिक तिल हों, तो उन सबके प्रभाव पर विचार करने के उपरान्त जो निष्कर्ष निकले उसी का फलादेश करना चाहिए।

मस्सा, लहसन और भौंरी विचार

मस्सा

मस्से के तीन भेद कहे गए हैं—

(१) शरीर की त्वचा पर काले रंग का बाहर की ओर निकला (उठा) हुआ मांस बिन्दु ।

(२) त्वचा के भीतर दवा हुआ, परन्तु कुछ उभरा हुआ रोमयुक्त मांस-बिन्दु ।

(३) गेहुंआ रंग का मांस-बिन्दु, जो त्वचा के ऊपर रक्त विकार के कारण उभर आता है और कुछ समय बाद स्वयं ही अथवा औषधोपचार से कटकर गिर जाता है ।

आकार के अनुसार मस्सा यदि राई अथवा बाजरे के दाने के बराबर हो तो वह अच्छा होता है । इससे बड़े आकार का हो तो वह शुभ नहीं होता ।

'वाराह मिहिर' के मतानुसार मस्सा यदि शरीर की त्वचा के वर्ण का हो अथवा उज्ज्वल कान्तियुक्त हो तो उसे ब्राह्मण के लिए विशेष शुभ समझना चाहिए ।

क्षत्रिय के शरीर पर यदि कुछ लालिमा लिये हुए श्वेत (उज्ज्वल कान्ति) का मस्सा हो, तो वह शुभ होता है ।

वैश्य के लिए कुछ लालिमा अथवा पीलापन लिये हुए उज्ज्वल कान्ति वाला मस्सा शुभ होता है ।

शूद्र के लिए उपर्युक्त तीनों रंगों मे से किसी रग का अथवा काले रंग का मस्सा हो तो वह शुभ होता है।

शरीर के किसी अंग पर मस्सा होने से उसका क्या प्रभाव होता है—इसे आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए। यहां एक बात अवश्य ध्यान में रखने योग्य है कि मस्सों के प्रभाव का वर्णन करते समय दाईं अथवा बाईं ओर का उल्लेख नही किया गया है, अतः इस सम्बन्ध में सामान्य नियम यह समझना चाहिए कि पुरुष-शरीर पर दक्षिण भाग पर तथा स्त्री शरीर के वाम भाग पर स्थित मस्से को शुभ तथा पुरुष के वाम भाग पर तथा स्त्री-शरीर के दक्षिण भाग पर स्थित मस्से को अशुभ समझना चाहिए।

एक बात यह भी स्मरण रखने योग्य है कि जब कभी मस्से का जन्म होता है अर्थात् मस्से का उद्गम आरम्भ हो जाता है, उस समय जातक के मन में चिन्ताएं उत्पन्न होना आदि उसके प्रभाव आरम्भ हो जाते हैं। तदुपरान्त जब मस्सा पूर्ण हो जाता है तब वह अपना प्रभाव प्रदर्शित करना आरम्भ कर देता है।

पश्चिमी विद्वानों ने मस्सा तथा लहसन आदि का प्रभाव भी तिल के समान ही माना है, परन्तु भारतीय विद्वानों ने इन सबके प्रभाव के विषय में अलग-अलग वर्णन किया है। यहां पर 'भारतीय मत' को ही दिया जा रहा है। चित्र संख्या ३१० में चेहरे के विशेष स्थानों पर मस्सों को दिखाया गया है।

(१) यदि सिर के ऊपरी भाग पर मस्सा हो तो जातक को विपुल धन की प्राप्ति होती है।

(२) यदि सिर के पिछले भाग पर मस्सा हो तो उसे सौभाग्य का लक्षण समझना चाहिए।

(३) यदि ललाट पर मस्सा हो तो धन का आगम अधिक होता है।

(४) यदि मस्तक पर मस्सा हो तो जातक को हर जगह लाभ, यश एवं सम्मान की प्राप्ति होती है।

(५) यदि भौह के ऊपर मस्सा हो तो उसे दुर्भाग्य का लक्षण समझना चाहिए।

[चेहरे पर विभिन्न स्थानो पर मस्से]

(६) यदि दोनों भौहो के बीच मे मस्सा हो तो जातक स्वयं तो दुष्ट प्रकृति का होता है, परन्तु उसे प्रियजनों का साथ एवं सहयोग विशेष रूप से प्राप्त होता है।

(७) यदि आंख की पलकों के ऊपर मस्सा हो तो वह जातक को दु:ख देने वाला होता है।

(८) यदि नेत्र पर मस्सा हो तो जातक को अपने प्रियजनो के दर्शन का सुख प्राप्त होता है।

(९) यदि कनपटो अथवा भौह के ऊपर ललाट एव आंख को हड्डो के संगम-स्थल पर मस्सा हो तो जातक सर्वस्व त्याग कर सन्यास ग्रहण करता है।

(१०) जिस स्थान से आंख से आसू गिरते है, उस स्थान पर मस्सा हो तो जातक के हृदय में चिन्ता उत्पन्न होतो है।

(११) यदि नाक पर मस्सा हो तो नवीन वस्त्र प्राप्त होता है।

(१२) यदि गाल पर मस्सा हो तो पुत्र की प्राप्ति होती है।

(१३) यदि होठ पर मस्सा हो तो उत्तम भोजन की प्राप्ति होती है।

(४) यदि चिबुक पर मस्सा हो तो भी श्रेष्ठ भोजन प्राप्त होता है

(१५) यदि हनु-प्रदेश पर मस्सा हो तो जातक को विपुल धन की प्राप्ति होती है।

(१६) यदि कान पर मस्सा हो तो जातक को आध्यात्मिक-ज्ञान अथवा आभूषणो की प्रा'प्त होती है।

(१७) यदि कण्ठ पर मस्सा हो तो जातक को खाने-पीने के अच्छे पदार्थ प्राप्त होते है।

(१८) यदि हसली (सिर और गर्दन के जोड़ वाला भाग) पर मस्सा हो तो लोहे के शस्त्र अथवा औजार द्वारा ग्रीवा पर चोट लगती है।

(१६) यदि हृदय अथवा वक्ष-स्थल पर मस्सा हो तो जातक को पुत्र की प्राप्ति होती है।

(२०) यदि पसली अथवा उसके नीचे मस्सा हो तो जातक को दुःख प्राप्त होता है।

(२१) यदि कन्धे पर मस्सा हो तो जातक निरर्थक भ्रमण करता है।

(२२) यदि काख पर मस्सा हो तो जातक के धन का अनेक प्रकार से नाश होता है।

(२३) यदि पीठ पर मस्सा हो तो दुःख एवं चिन्ताओं से छुटकारा मिलता है।

(२४) यदि बाहु पर मस्सा हो तो शत्रुओं का नाश होता है तथा वस्त्राभूषणो की प्राप्ति होती है।

(२५) यदि कलाई पर मस्सा हो तो जातक स्वयं बन्धन को प्राप्त होता है।

(२६) यदि उगलियों पर मस्सा हो तो उसे धनागम तथा सुख-सौभाग्य का लक्षण समझना चाहिए।

(२७) यदि पेट पर मस्सा हो तो वह दुःख-क्लेश कारक होता है।

(२८)यदि नाभि पर मस्सा हो तो उत्तम भोजन एवं पेय-पदार्थों की प्राप्ति होती है।

(२९) यदि नाभि के नीचे मस्सा हो तो चोरी के कारण जातक के धन की हानि होती है।

(३०) यदि वस्ति प्रदेश पर मस्सा हो तो जातक को धन-धान्य की प्राप्ति होती है।

(३१) यदि पेडू पर मस्सा हो तो सुन्दर स्त्री तथा पुत्र की प्राप्ति होतो है।

(३२) यदि अण्डकोष पर मस्सा हो तो सौभाग्य की प्राप्ति होती है।

(३३) यदि अण्डकोष के निचले भाग पर मस्सा हो तो धन की प्राप्ति होती है।

(३४) यदि जांघ पर मस्सा हो तो स्त्री तथा वाहन का लाभ होता है।

(३५) यदि घुटनों पर मस्सा हो तो जातक को शत्रुओ के कारण हानि उठानी पड़ती है। यह अशुभ होता है।

(३६) यदि पिंडलियों पर मस्सा हो तो शस्त्राघात से पीड़ा होती है।

(३७) यदि टखनों पर मस्सा हो तो जातक को बन्धन का दुःख अथवा यात्रा में कष्ट उठाना पड़ता है।

(३८) यदि नितम्ब पर मस्सा हो तो धन का नाश होता है।

(३९) यदि एड़ी पर मस्सा हो तो किसी से अनुचित सम्बन्ध स्थापित होता है तथा यात्रा करनी पड़ती है।

(४०) यदि पांव की उगलियों पर मस्सा हो तो बन्धन का दुःख भोगना पड़ता है।

(४१) यदि पांव के अंगूठे पर मस्सा हो तो जातक को अन्य लोगों द्वारा सम्मान प्राप्त होता है।

लहसन

शरीर की त्वचा पर कुसुम के रग के समान लाल अथवा काले

दाग को लहसन कहा जाता है। लहसन छोटे-बड़े कई आकार-प्रकार के होते है। लहसन का आकार जितना बड़ा होता है, उसका प्रभाव भी उतना ही अधिक होता है ।

स्थान-भेद से लहसन का फल भी वही होता है, जो तिलो का बताया जा चुका है । केवल एक ही बात यहां विशेष रूप से कहनी है कि जिस पुरुष के दाईं भुजा पर लहसन होता है, वह अत्यन्त धनवान् होता है ।

[लहसन का स्वरूप]

चित्र संख्या ३११ मे लहसन के एक स्वरूप को प्रदर्शित किया गया है।

भौंरी

बालों का एक जो चक्कर-सा बन जाता है, उसे भौरी कहते हैं। भौरी दो प्रकार की होती है—

(१) दक्षिणावर्त।

(२) वामावर्त।

दक्षिणावर्त भौरी में बालों का चक्कर दाईं ओर मुंह किए होता है और वामावर्त में बालो के चक्कर का मुंह बाईं ओर को होता है।

भौरी शरीर के उसी स्थान पर पाई जाती है, जहां बाल अधिक होते है।

दक्षिणावर्त भौरी पुरुष के दाएं अंग में हो तो वह शुभ फल देने वाली होती है। वामावर्त भौरी किसी भी (दाएं अथवा बाए) अंगों में हो, वह पुरुष के लिए अशुभ फलकारक ही सिद्ध होती है।

चित्र संख्या ३१२ में भौरी के दोनों स्वरूपों को प्रदर्शित किया गया है।

भौरी का पुरुषों पर क्या प्रभाव होता है—इसे संक्षेप में बताया जा चुका है। स्त्री के विभिन्न अगों पर पाई जाने वाली भौरी के फल का प्राचीन आचार्यो ने कुछ विस्तार पूर्वक वर्णन किया है, उसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) स्त्री की नाभि, कान तथा उर-स्थल में दक्षिणावर्त भौरी शुभ फलदायक होती है।

(२) स्त्री की पीठ के बाए से दाएं भाग मे स्थित दक्षिणावर्त भौरो सुख देने वाली होती है।

(३) स्त्री के सीमन्त अथवा ललाट में यदि दक्षिणावर्त भौंरो हो

तो। उसे दूर से ही त्याग देना चाहिए, क्योकि ऐसी भौरी वाली स्त्री एक वर्ष के भीतर ही पति को मारने वाली होती है।

(४) यदि स्त्री के मस्तक में वामावर्त भौरी एक अथवा दो की सख्या मे हों तो वह दस दिन के भीतर ही अपने पति का नाश करने वाली होती है, अतः ऐसी स्त्री से विवाह नही करना चाहिए।

[भौरी के स्वरूप दक्षिणावर्त और वामावर्त]

(५) स्त्री की नाभि के समान ही पीठ के बीचो-बीच भाग मे स्थित दक्षिणावर्त भौरी आयु तथा पुत्र की वृद्धि करने वाली होती है।

(६) जिस स्त्री के कटिभाग में अथवा गुह्य स्थान मे वामावर्त भौरी हो, वह अपने पति तथा सन्तान का नाश करने वाली होती है।

(७) यदि स्त्री की योनि के मस्तक पर (ऊपर) दक्षिणावर्त भौंरी हो तो वह राजपत्नी अथवा किसी ऐश्वर्यशाली पुरुष की पत्नी होती है। ऐसी भौंरी यदि सघन हो तो वह बहुत से पुत्रों का सुख देखने वाली होती है।

(८) स्त्रो के पेट अथवा पीठ पर भौरी का होना शुभ नहीं होता। यदि इन स्थानों मे से कहीं एक भौंरी हो तो वह स्त्रो अपने पति को मारने वाली होती है और यदि दो भौरी हों तो व्यभिचारिणी भी होती है

(९) यदि स्त्री के कण्ठ में दक्षिणावर्त भौरी हो तो उसे दुःख तथा वैधव्य को देने वाली समझना चाहिए।

(१०) यदि स्त्री की कमर के बीच में भौरी हो तो उसे त्याग देना चाहिए, क्योंकि वह अपने पति के लिए अशुभ कारक होती है। ऐसो स्त्री व्यभिचारिणी भी होती है।

(११) यदि किसी स्त्री की नाभि में भौंरी हो तो वह पतिव्रता होती है।

(१२) यदि स्त्री के पीठ में भौरी हो तो वह पति का नाश करने वाली अथवा व्यभिचारिणी होती है।

(१३) जिस स्त्री के कन्धे पर भौरी हो, वह धनवती होती है।

(१४) स्त्रियों के मस्तक मे भौरी चाहे दक्षिणावर्त मे हो, चाहे वामावर्त में—वह अशुभ फलकारक होती है।

(१५) यदि स्त्री सुलक्षण हो, परन्तु भौरी का कुलक्षण हो गया हो तो वह स्त्री भी कुलक्षणी हो जाती है—ऐसा विद्वानों का मत है।

विशेष ज्ञातव्य

तिल, भौरी, लहसन और मस्सा—ये चारो ही एक साथ जिस

पुरुप के शरीर पर दाईं ओर तथा जिस स्त्री के शरीर पर बाईं ओर दिखाई दे, वह पुरुप अथवा स्त्री यदि जगल मे भी जाकर रहने लगे तो भी लक्ष्मी उसके पीछे-पीछे भागी-भागी फिरती है अर्थात् ऐसे स्त्री-पुरुष कही भी क्यों न रहें, बड़े धनवान तथा भाग्यवान बने रहते हैं—यह प्राचीन भारतीय विद्वानों का कहना है।

इस सम्बन्ध मे वृजभापा का दोहा बहुत प्रसिद्ध है, जो इस प्रकार है—

तिल भौंरी लहसन मसौ, होय दाहिने अंग।
जाइ बसै वनखण्ड में, तऊ लच्मी संग॥

१२१२७० टैक्निकल प्रिंटिग प्रेस, सोनीपत (निकट दिल्ली) में मुद्रित

लिखने को सुविधा के लिए

लिखने की सुविधा के लिए

लिखने की सुविधा के लिए

लिखने की सुविधा के लिए

(२) यदि भौंहें बड़ी तथा परस्पर मिली हुई हों (चित्र संख्या २९६) तो प्राच्य विद्वानों के मतानुसार इसे शुभ लक्षण समझना चाहिए। ऐसा व्यक्ति कलात्मक रुचि का, सौन्दर्य प्रमी भोगी तथा सुखी जीवन व्य-

२९६

तीत करने वाला होता है। परन्तु पाश्चात्य विद्वानों के मत से दोनों भौंहों के बीच में स्थान जितना कम होता है, जातक उतना ही कम स्पष्ट वादी तथा सन्देहशील होता है। यहां तक कि कभी-कभी वह बेईमानी भी कर बैठता है।

स्त्री-सामुद्रिक
(Woman Palmistry)

[बृहद् विशाल सामुद्रिक विज्ञान-१२]

(४) यदि दोनों भौंहें बीच में से खण्डित हों अर्थात् उनके रोएं बीच में से उड़े हुए दिखाई दें अथवा अन्य किसी कारण से वे एकसार

२९८

रोएं वाली न हो (चित्र संख्या २९८) तो ऐसा जातक निर्धन तथा दुःखी जीवन व्यतीत करने वाला होता है। यदि केवल एक ही भौंह खण्डित हो तो अशुभ फल आधे परिमाण में होता है।

(५) यदि भौंहें ऊंची-नीची हों तो मनुष्य दरिद्री होता है।

(६) यदि भौंहें बीच में झुकी हुई हों तो उसका पर-स्त्रियों से प्रेम होता है।

वृहद् विशाल सामुद्रिक विज्ञान खण्ड-१२

स्त्री-सामुद्रिक

Woman Palmistry

[प्राच्य तथा पाश्चात्य सिद्धान्तो के आधार पर हस्त-रेखाओं के विशेष-योग एवं अनेक उपयोगी विषयो सहित स्त्रियो के शारीरिक-लक्षणो द्वारा उनके स्वभाव, चरित्र, रुचि तथा जीवन मे घटने वाली घटनाओ का परिज्ञान कराने वाली सैकड़ो चित्रो से सुसज्जित अत्युपयोगी पुस्तक]

लेखक
राजेश दीक्षित

देहाती पुस्तक भण्डार
दिल्ली-६

प्रकाशक
देहाती पुस्तक भण्डार

●
लेखक
राजेश दीक्षित

●
मूल्य
भारत में : पन्द्रह रुपये
विदेश में : चालीस शिलिंग

●
मुद्रक :
टैक्निकल प्रिंटिंग प्रेस,
सोनीपत (निकट दिल्ली)

समर्पण

●

अपने परम-आत्मीय

कर्नल मदन मोहन लाल त्रिपाठी

एवं

श्रीमती लक्ष्मी त्रिपाठी

को सस्नेह

●

आत्म-निवेदन

प्रस्तुत पुस्तक 'बृहद् विशाल सामुद्रिक विज्ञान' का बारहवा तथा अन्तिम भाग है। इसमे प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार शारीरिक अंगों की बनावट के आधार पर विभिन्न स्त्रियो के स्वभाव, चरित्र, रुचि तथा शुभाशुभ फल का परिज्ञान कराने वाली सहस्रों विधियो का सचित्र विवरण सकलित किया गया है।

जलवायु की भिन्नता तथा अन्य भौगोलिक परिस्थितियो के कारण खण्ड विभिन्न देशीय स्त्री-पुरुषों की आकृति, स्वभाव तथा चरित्र आदि मे अत्यधिक अन्तर पाया जाता है। यूरोपीय तथा भारतीय स्त्री-पुरुषो मे भी यह अन्तर स्पष्ट परिलक्षित होता है। अतः भारतीय स्त्री-पुरुषों के शारीरिक लक्षण तथा उनकी परीक्षा-प्रभाव आदि के सम्बन्ध में भारतीय विद्वानो का मत जितना ठीक उतरता है, यूरोपीय विद्वानों के सिद्धांत उतने सही नही बैठते। सामुद्रिक विद्या के अभ्यासियों को चाहिए कि किसी भी स्त्री-पुरुष के शरीर की परीक्षा करते समय इस अन्तर को अवश्य ध्यान में रखें।

स्त्रियो के हाथ की रेखाओ का फल भी प्रायः वही होता है, जो पुरुषों के हाथ की रेखाओ का होता है। यदि स्त्री के हाथ में किसी रेखा का प्रभाव पुरुष से भिन्न होता है, तो उनका वर्णन 'बृहद् विशाल सामुद्रिक विज्ञान' के पिछले खण्डो मे यथा स्थान कर दिया गया है। अस्तु, स्त्रियों के हाथ की रेखाओं की परीक्षा करने के लिए 'बृहद् विशाल सामुद्रिक विज्ञान' के पिछले सभी खण्डो का अध्ययन करना चाहिए। हां, कुछ ऐसे विशेष अन्तरों तथा रेखाओं का वर्णन प्रस्तुत खण्ड में अवश्य किया गया है, जिनका प्रभाव केवल स्त्रियों पर ही पड़ता है और जिनका उल्लेख अन्य खण्डो में नहीं किया जा सकता है।

प्रस्तुत पुस्तक के 'परिशिष्ट भाग' में हस्त-रेखाओं के विशेष-योग, हस्त-परीक्षा, अंग-सामुद्रिक तथा चरित्र-परीक्षा सम्बन्धी उन विषयो का समावेश

किया गया है, जिन्हें 'वृहद् विशाल सामुद्रिक विज्ञान' के अन्य खण्डो मे स्थान नही दिया जा सकता था। इस प्रकार इस खण्ड की समाप्ति के साथ ही 'वृहद् सामुद्रिक विशाल विज्ञान' को सर्वाङ्गपूर्ण बनाने का प्रयास किया गया है।

यहा एक बात हम विशेष रूप से कहना चाहते है—वह यह है कि जिस प्रकार 'अग विद्या' तथा 'हस्त-परीक्षा' ये दोनो एक ही सामुद्रिक-शास्त्र के दो महत्वपूर्ण अग हैं, उसी प्रकार (१) ज्योतिष, (२) अक विद्या, (३) प्रश्न-विद्या तथा (४) शकुन-विद्या आदि भी इस शास्त्र के सहयोगी विषय हैं। श्रेष्ठ फलादेश वही व्यक्ति कर सकता है, जो सामुद्रिक शास्त्र के अतिरिक्त उक्त ज्योतिष आदि विद्याओ की भी थोडी-बहुत जानकारी रखता हो, अस्तु सामुद्रिक-शास्त्र का भली-भाति अध्ययन एवं अभ्यास करने के साथ ही इन विद्याओं का यत्किंचित् ज्ञान भी अवश्य प्राप्त कर लेना चाहिए। अक-विद्या सम्बन्धी जानकारी के लिए 'वृहद् अंक ज्योतिर्विज्ञान' प्रश्न के लिए 'वृहद् प्रश्न शास्त्र' तथा शकुन के लिए 'वृहद् शकुन-शास्त्र' नामक हमारी लिखी पुस्तकें जिज्ञासुओ के लिए अत्यधिक उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। इन विद्याओं के सम्बन्ध मे और अनेक नवीन तथा प्राचीन पुस्तकें बाजार मे उपलब्ध होती हैं, उनमे जो श्रेष्ठ तथा प्रामाणिक हो, उनका अध्ययन-मनन करना हितकर सिद्ध होगा।

'वृहद् विशाल सामुद्रिक विज्ञान' हमारे कई वर्षो के अध्ययन, चिन्तन तथा परिश्रम का परिणाम है। इस ग्रंथ का लेखन कार्य जिस दृढ सकल्प को लेकर प्रारम्भ किया गया था, प्रसन्नता का विषय है कि परमपिता परमात्मा की असीम अनुकम्पा से अब वह पूरा हो सका है। प्रस्तुत ग्रन्थ के लिए सामग्री चयन में हमे सैंकड़ो प्राच्य तथा पाश्चात्य विद्वानो के ग्रंथो, हस्तरेखाविदो तथा अन्य महानुभावो से सहायता प्राप्त हुई है। उन सभी के प्रति हम अपनी हार्दिक कृतज्ञता प्रकट करते हैं। इस ग्रथ मे जो कुछ अच्छा है, उसका सम्पूर्ण श्रेय उन्ही ग्रथों तथा विद्वानो का है। इसके विपरीत जो भी त्रुटियां हैं, उन्हे हमारा स्वयं का दोष समझना चाहिए। ऐसी सभी त्रुटियों के लिए हम सुधी-पाठकों से क्षमा प्रार्थी हैं। साथ ही यह निवेदन भी करना चाहते हैं कि विद्वान पाठको

की इस ग्रंथ में जो भी त्रुटियां दिखाई दें, उनकी सूचना हमें अवश्य देने की कृपा करें, ताकि ग्रंथ के आगामी संस्करण में उनका निराकरण किया जा सके।

पुस्तक में वर्णित किसी विषय के सम्बन्ध में किन्ही महानुभाव को यदि कोई विशेष जानकारी प्राप्त करनी हो तो वे हमसे निःसंकोच पत्र-व्यवहार कर सकते हैं।

आशा है, सुधीजन हमारे इस श्रम को स्नेह पूर्वक अपनाने की कृपा करेंगे।

महोली की पौर,
मथुरा

विद्वज्जन किङ्कर
—राजेश दीक्षित

विषय सूची

स्त्री के शारीरिक अङ्ग और उनके लक्षण १७–९७

स्त्रियों के पांव ९९–११४

पदतल की रेखाएं ११५–१३१

स्त्रियों के हाथ १३२–१७८

विविध-विषय १७९–२१०

स्त्रियों की विभिन्न जातियां २११–२३७

देश भेदानुसार स्त्रियों के लक्षण २३८—२४३

परिशिष्ट खण्ड

विभिन्न वर्ग वाले व्यक्तियों के लक्षण ३३१–३५२

आधुनिक विद्वानों के मतानुसार स्त्री-पुरुषों के लक्षण ३५३–३८०

स्त्री-सामुद्रिक

"आदौपादतलं रेखा स्ततांगुष्ठाङ्गुली नखा।
पृष्ठं गुल्फ द्वयं पार्ष्णि जंघे रोमाणि जानुनि।।
उरुं कटि नितम्ब स्पिग् गुह्य जघन वस्तिके।
नाभिः कुक्षिद्वयं पार्श्वोदर मध्य वलित्रय।।
रोमाली हृदयं वक्षो वक्षोजद्वय चूचुकं।
जतृस्कंधांशकक्षोदोर्मनिबंध कर द्वयं।।
पाणिपृष्ठं पाणितलं रेखांगुष्ठांगुली नखा।
पृष्ठिः कृकाटिका कंठं चिबुकं च हनुद्वयं।।
कपोलौ वक्त्र मधरोत्तरोष्ठौ द्विज जिह्विकाः।
घंटिका तालु हसितं नासिका क्षुतमक्षिणी।।
पक्ष्मभ्रू कर्णभालानी मौलिसीमंत मौलिजाः।
षष्ठि षडुत्तरा योषिदंग लक्षण सत्खनिः।।"

स्त्री के शारीरिक अङ्ग और उनके लक्षण

सम्पूर्ण ससार मे अरवो की सख्या में स्त्री-पुरुप रहते हैं। शारीरिक वनावट मे सामान्यत. एक जैसे होते हुए भी, उन सभी की रुचि, स्वभाव, कर्म तथा चरित्र आदि में आका-शपाताल का अन्तर पाया जाता है। लक्षण-शास्त्र के अन्वेपी-विद्वानो ने विभिन्न स्त्री-पुरुषो के शारीरिक अ गो की वनावट का सूक्ष्म निरीक्षण करने के उपरान्त उनकी चरित्र-परीक्षा के जो सिद्धान्त निश्चित किए है, वे सभी सामुद्रिक-शास्त्र के अभिन्न अग है, क्योकि उनके आधार पर किसी स्त्री अथवा पुरुप के स्वभाव, चरित्र, रुचि, कर्म तथा जीवन में घटने वाली घटनाओं के सम्बन्ध में आवश्यक जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

पुरुपो की शरीर-परीक्षा विपयक सिद्धान्तों का विस्तृत वर्णन 'वृहद्-सामुद्रिक-विज्ञान' के 'शरीर-लक्षण विज्ञान' नामक ग्यारहवे खण्ड मे किया जा चुका है। प्रस्तुत 'स्त्री-सामुद्रिक' नामक वारहवे खण्ड में स्त्रियो के शारीरिक-लक्षणों की परीक्षा, उनके हस्त-रेखा सम्वन्धी विशेप योग तथा अन्य आवश्यक विपयों का वर्णन किया जा रहा है।

स्त्रियो के शारीरिक अ गो की परीक्षा के लिए, हमने सम्पूर्ण विपय को कई प्रकरणो में अलग-अलग वाट दिया है। पहले प्रकरण मे स्त्रियों के स्वर, वर्ण, गति, सत्त्व, गन्ध, हास्य, छीक, केश तथा दृष्टि के लक्षणो का वर्णन करने के उपरान्त सिर से लेकर गुह्य-प्रदेश तक के विभिन्न अ गो के लक्षणो का वर्णन किया गया है।

दूसरे प्रकरण में स्त्रियों के पांव के सभी उपाअंगों—अंगूठा, उंगली, नख, गुल्फ, पिंडली जांघ पद-तल की रेखाओं के विषय में लिखा गया है। तीसरे प्रकरण में हाथों की बनावट, अंगूठा, उंगलियां, कर पृष्ठ, नाखन तथा करतल में पाये जाने वाले चिन्ह एवं स्त्रियों के हाथ में पाई जाने वाली विभिन्न रेखाओं के विशेष प्रभाव आदि विषयों का समावेश किया गया है।

इनके अतिरिक्त अन्य जिन विषयों का वर्णन करना आवश्यक है, उन सब का भी यथा स्थान समावेश कर दिया गया है।

अंग परीक्षक को चाहिए कि वह स्त्री-शरीर की परीक्षा करते समय केवल एक या दो अंगों की बनावट को देखकर ही अपना कोई निश्चित मत न बना ले। उसे चाहिए कि सम्पूर्ण अंगों कि बनावट का सूक्ष्म अध्ययन करने के उपरान्त उन सब के शुभाशुभ फल के समन्वयस्वरूप जो निष्कर्ष निकलता हो केवल उसी को अन्तिम रूप में ग्रहण करे।

स्वर-लक्षण

जिस स्त्री का कण्ठ-स्वर हंस, कोकिल, मोर, वीणा अथवा बासुरी के स्वर जैसा हो, उसका विवाह उच्चपदाधिकारी अथवा ऐश्वर्य-शाली व्यक्ति के साथ होता है। वह सुखी तथा वैभवपूर्ण जीवन व्यतीत करती है।

जिस स्त्री का कण्ठ-स्वर मेघ, सारस अथवा दुन्दुभि जैसा हो, वह अत्यन्त ऐश्वर्यशालिनी होती है।

जिस स्त्री का कण्ठ-स्वर कौए, गधे अथवा फूटे हुए कांसे के बर्तन के स्वर जैसा हो, वह रुग्ण, व्याधियुक्ता, दरिद्रा तथा दुःखिनी होती है।

जिस स्त्री की वाणी मे कठोरता अथवा दीनता न हो, जो कुटिल वचन (चुभने वाले शब्द) न कहती हो, जिसका स्वर श्रुति मधुर स्निग्ध, एवं चातुर्य्य पूर्ण हो, जिसे सुनकर सन्तोष, सुख एवं सान्त्वना प्राप्त हो, उसे शुभ समझना चाहिए।

वर्ण-लक्षण

जिस स्त्री के शरीर का वर्ण स्वर्ण अथवा केशर जैसा हो, उसे अत्यन्त श्रेष्ठ समझना चाहिए।

दूब की नई कोंपल की भांति श्याम वर्ण भी शुभ होता है ।

यदि चिकनाई तथा कान्ति युक्त काला वर्ण हो तो यह भी शुभ माना गया है।

रूखा, कान्तिहीन तथा अत्यधिक गहरा काला वर्ण शुभ नही होता।

गति-लक्षण

जो स्त्री सिंह, हाथी, हंस, चकवा, गाय, अथवा बैल जैसी चाल चलती है, वह अत्यधिक ऐश्वर्यशालिनी होती है।
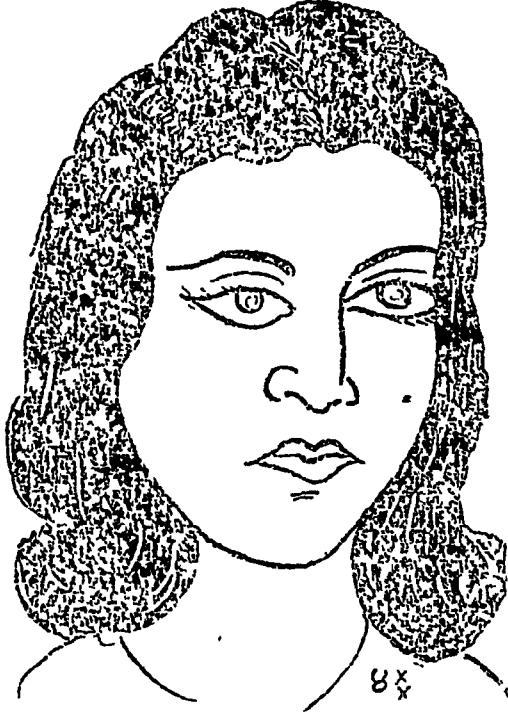
जो स्त्री कुत्ता, सियार अथवा कौए की चाल से चलती है, उसे निन्दनीय समझना चाहिए।

हिरन की चाल से चलने वाली स्त्री दासी होती है ।

अधिक शीघ्रता से चलने वाली स्त्री का चरित्र अच्छा नही होता ।

सत्त्व और कान्ति-लक्षण

विपत्ति के समय न घबराने वाली तथा सुख-सम्पत्ति के समय न इतराने वाली, सदैव गभीर रहने वाली तथा दया, क्षमा, सत्य, स्थिरता परोपकार और गुणो से युक्त स्त्री श्रेष्ठ होती है ।

५५

जिसके शरीर की कान्ति को देखकर नेत्रो को सुख एव सन्तोष की प्राप्ति हो । उस स्त्री को सौभाग्यवान् एव श्रेष्ठ समझना चाहिए ।

जिसे देखकर मन में उद्वेग तथा अशान्ति का उदय हो उसे कुलक्षणी समझना चाहिए ।

जिसे देखकर मन में घृणा के भाव उत्पन्न हो, उसे निष्कृट समझना चाहिए

गन्ध-लक्षण

जिस स्त्री के शरीर से स्वाभाविक रूप से कस्तूरी जैसी गन्ध निकलती हो, वह अत्यधिक उच्च पद को प्राप्त करती है ।

जिस स्त्री के शरीर से चम्पा, केवड़ा, अशोक, बकुल, चमेली अथवा कमल जैसी गध निकलती हो वह अनेक भोगो को भोगती है तथा दीर्घजीवी वहु-सन्ततिवान होती है ।

जिस स्त्री के शरीर से लाख अथवा तूवी के फूल जैसी गध निकलती हो व गर्भधारण करने योग्य नही होती । ऐसी स्त्री को दुर्भागा कहा जाता है ।

जिस स्त्री के शरीर से हरताल अथवा गोमूत्र जैसी गन्ध आती हो, वह कुलक्षणी होती है, उसके साथ नही रहना चाहिए।

जिस स्त्री के शरीर से मछली अथवा छछूंदर के समान तीव्र गंध आती हो, उसका साथ तुरन्त छोड़ देना चाहिए।

जिस स्त्री के शरीर से रक्त, शहद, दूध, अन्न अथवा नीम जैसी गंध आती हो, उसके साथ विवाह नही करना चाहिए।

हसित-लक्षरण

जिस स्त्री के हसते समय दांत दिखाई न दे, कपोल कुछ फूल

जायं तथा आंखें वन्द न हो, उसे शुभ लक्षण समझना चाहिए, इसके विपरीत अशुभ समझना चाहिए।

यदि हंसते समय स्त्री के गालों पर गड्ढा पड़ता हो तो उसे अशुभ लक्षण समझना चाहिए, ऐसी स्त्रिया प्राय: चरित्रहीना होती हैं।

छींक-लक्षण

जिस स्त्री को छीकने में देर लगे और दो-तीन छीकें एक साथ आएं, उसे दीर्घायु का लक्षण समझना चाहिए। इसके विपरीत अशुभ लक्षण समझना चाहिए।

केश-लक्षण

स्त्री के चिकने, काले, नुकीले, कोमल, शाखारहित तथा लम्बे केश शुभ माने जाते है। यदि केश बहुत अधिक हों, छीदे हों अथवा बिल्कुल न हों तो अशुभ समझना चाहिए। केश घने हों तो स्त्री

बुद्धिमान होती है। बिल्कुल न हो तो कपटी होती है। लम्बे केश वाली स्त्री दीर्घायु तथा छोटे केशो वाली अल्पायु होती है। केशो का रग लाल, पीला अथवा धूमल हो तो उन्हे अच्छा नही समझना चाहिए भूरे रग के मोटे कडे तथा छोटे केशो वाली स्त्री दुराचारी व परि-

चार का नाश करने वाली तथा पति को दुख देने वाली होती है। कबरे रंग के बालो वाली स्त्री अत्यन्त व्यभिचारिणी होती है। यदि बालो का रग कुछ ललाई लिए हो और वे मोटे हो तो ऐसी स्त्री तुरन्त विधवा होती है।

वर्तमान युग में स्त्रिया भी केशो को कटवाने लगी है। अतः उपर्युक्त लक्षणो के सम्बन्ध में केशो की स्वभाविक लम्बाई को ध्यान में रखना चाहिए। काट-छाट कर छोटे किए गये केशों पर स्वाभाविक लम्बाई के केशो वाला नियम लागू नही होता ।

विभिन्न प्रकार के केशो वाली स्त्रियो के स्वभाव एव चरित्र के सम्वन्ध में पाश्चात्य विद्धानों का मत नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) जो स्त्री अपने केशों को खूब कसकर उनका कडी गाठ वाला जूड़ा बांधती है, वह सामान्यत: बहुत कठोर तथा भावुकता-विहीन स्वभाव की होती है वह अपने क्रिया कलापों में बहुत नियमित तथा सन्तुलित होती है साथ ही दूसरो से भी अपने समान काम करने की आशा रखती है। उसे अपने जैसे स्वभाव की स्त्रियो का साथ ही अधिक अच्छा लगता है। ऐसी ही स्त्री आधुनिक विषयो पर अधिकार पूर्वक आलोचना एव चर्चा करती हुई देखी जाती हैं।

(२) जो स्त्री अपने केशों को कटवा-छटवा कर हल्के गुच्छों के रूप में (बॉवकट स्टाइल) में रखती है, उसमें स्फूर्ति एव शक्ति

प्रचुरमात्रा मे पाई जाती है। ऐसो स्त्रिया हल्के-फुल्के विषयों पर वार्तालाप करती हुई अधिक पाई जाता हैं, परन्तु गम्भीर विषयों पर बातचीत करने मे भी वह पीछे नही रहती। ऐसी स्त्री समान्यतर झंझट-विहीन हल्का फुल्का जीवन व्यतीत करना अधिक पसन्द करती है और कभी भी अधिक चिन्तित नही होती।

(३) जो स्त्री अपने केशों पर इस प्रकार कघी करती है कि उसके केश आगे की ओर भौहो के पास तक आ जाय उसका व्यक्तित्व चमकीला तो होता है, परन्तु वह चकाचौंध पैदा करने वाला नहीं होता। ऐसी स्त्री चापलूसी पसन्द होती है और उसे अपनी प्रशंसा सुनना अच्छा लगता है। यद्यपि वह अस्थिर चित्त वाली नही होती,

फिर भी उसकी मनोदशा अन्तर्मुखी होती है। ऐसी स्त्रिया ऊपर से सरल सीधे स्वभाव की दिखाई देती है, परन्तु कभी-कभी उनकी जबान बहुत तेज चला करती है।

(४) जो स्त्रिया अपने केशो को पुरुषो के केशो की तरह छटवाती हैं, उनके स्वभाव में पुरुषोचित्त लक्षण अधिक पाये जाते है। वे पुरुषो

की भाति ही परिश्रम के कार्य करती है तथा उनसे प्रतिस्पर्धा करने में आनन्द का अनुभव करती है। ऐसी स्त्रिया पुरुषों की भाति वस्त्र का पहनना भी पसन्द करती हैं।

दृष्टि-लक्षण

सरल तथा सीधे हृदय वाली पुण्यात्मा स्त्रिया सदैव ऊपर की ओर दृष्टि रखती है। नीचे की ओर दृष्टि रखने वाली स्त्री पापिनी होती है तथा तिरछी दृष्टि से देखने वाली क्रोध करने वाली होती है।

जो स्त्री आखो मे आंखे डालकर बाते करे वह निर्लज्ज तथा चरित्रहीना होती है। जो छिप-छिप कर देखे वह विपयासक्ता होती है।

जिस स्त्री की दृष्टि मे स्निग्धता तथा मुस्कराहट हो, वह दयालु स्नेहिल तथा मेल स्वभाव वाली होती है। जिस स्त्री की दृष्टि मे शरारत की सी झलक दिखाई दे, वह चचल अस्थिर स्वभाव तथा कामुक-प्रवृत्ति वाली होती है।

सोते समय दांत का बजना

जो स्त्री सोते समय दात किटकिटाती हो, उसे अन्य शुभ लक्षणो से युक्त होनें पर भी अच्छा नही समझना चाहिए। जो स्त्री सोते समय बक-झक करती है, वह भी अच्छी नही होती।

सिर-लक्षण

यदि स्त्री का सिर हाथी के कुभ के समान गोलाकार हो तो वह ऐश्वर्य एव सौभाग्य को प्राप्त करती है। यदि सिर अधिक मोटा हो तो विधवा होती है। सिर लम्बा हो तो कुलटा होती है और चौडा

हो तो दुर्भाग्यशाली होती है। जिस स्त्री का सिर वहुत लम्वा-चौड़ा हो या तो विधवा होती है या फिर व्यभिचारिणी होती है।

जिस स्त्री का सिर वहुत छोटा हो, वह दुर्भाग्यवती होती है।

ललाट-लक्षण

चित्र १५—जिस स्त्री का ललाट नस-विहीन, लोम-रहित, अर्द्ध-चन्द्राकार तीन अगुल परिमाण का तथा उन्नत हो वह सुख सौभाग्य तथा आरोग्य का उपभोग करती है, जिसका ललाट लम्वा होता है

उसके देवर की मृत्यु हो जाती है। जिसका ललाट रोम तथा नशों से युक्त होता हो, वह रोगिणी वनी रहती है। जिस स्त्री का ललाट

अर्द्धचन्द्राकार तथा विशाल हो, वह अत्यन्त सुख प्राप्त करती है तथा पति से अत्यन्त प्रेम करती है।

चित्र १६—जिस स्त्री के ललाट पर त्रिशूल का चिह्न हो उसकी सेवा हजारो स्त्रिया करती है तथा सभी स्त्री-पुरुष उसकी आज्ञा का पालन करते रहते हैं। जिस स्त्री के ललाट पर तेजस्वी प्रकाश चमकता हो, वह किसी राजा को रानी अथवा परम ऐश्वर्यशाली व्यक्ति की पत्नी होतो है।

चित्र १७—जिस स्त्री के ललाट पर त्रिकोण युक्त रेखाएं हो वह राज्य सम्पत्ति को प्राप्त करनें वाली सौभाग्यशालिनी एव ऐश्वर्य-शालिनी होती है।

चित्र १८—जिस स्त्री के ललाट पर केवल मात्र एक रेखा हो अथवा श्रीवत्स या स्वस्तिक चिह्न हो वह सब प्रकार के सुख प्राप्त करती है ।

जिस स्त्री का ललाट सीधा तथा सरल हो, वह सबको सुख देने वाली होती है ।

चित्र १९—जिस स्त्री के ललाट में एक दीर्घाकार रेखा हो, जिसे कि 'प्रलम्बिनी रेखा' कहा जाता है, उसके देवर की मृत्यु हो जाती है । यदि ऐसी एक लम्बी रेखा उदर अथवा दोनों नितम्बो में हो तो उस स्त्री के पति की मृत्यु हो जाती है ।
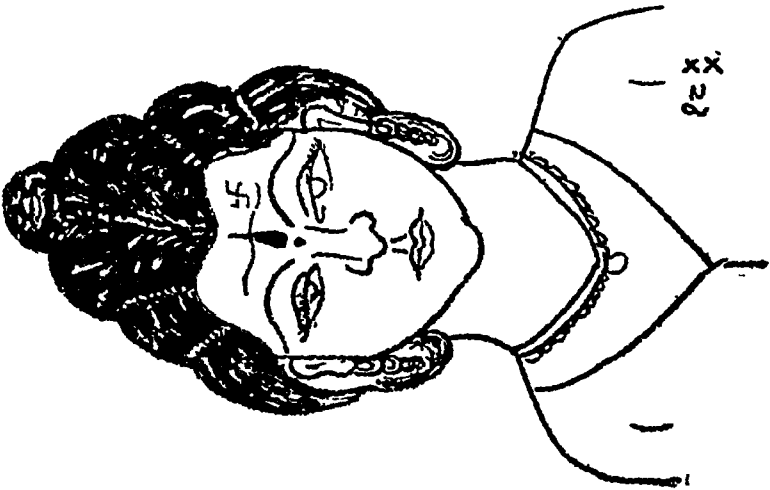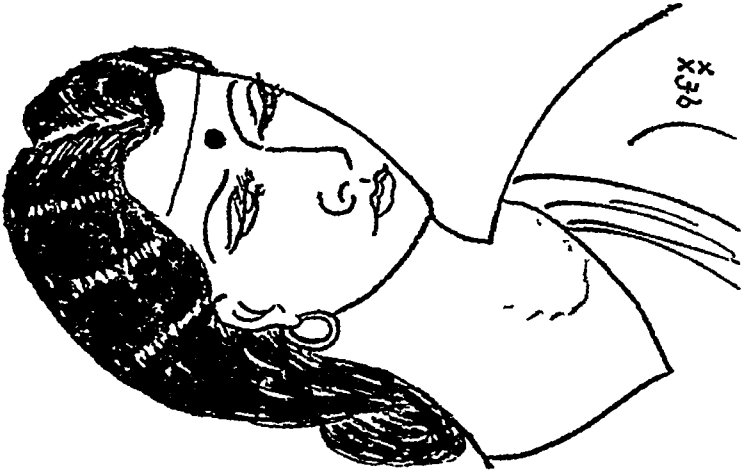
चित्र २०—जिस स्त्री के ललाट अथवा माग मे दक्षिणावर्त हो वह कुलक्षणी होती है। शास्त्रकारों का कहना है कि ऐसी स्त्री के साथ विवाह नही करना चाहिए।

चित्र २१—जिस स्त्री का ललाट लम्बा हो वह व्यभिचारिणी होती है—ऐसा शास्त्रकारो का कहना है। जिस स्त्री का ललाट वहुत चौड़ा हो, वह भी व्यभिचारिणी होती है।

चित्र २२—जिस स्त्री के ललाट में काला अथवा पीले रंग का त्रिशूलाकार चिह्न हो वह पाच-पुत्रो को जन्म देने वाली तथा धन-धान्य को वढ़ाने वाली होती है।
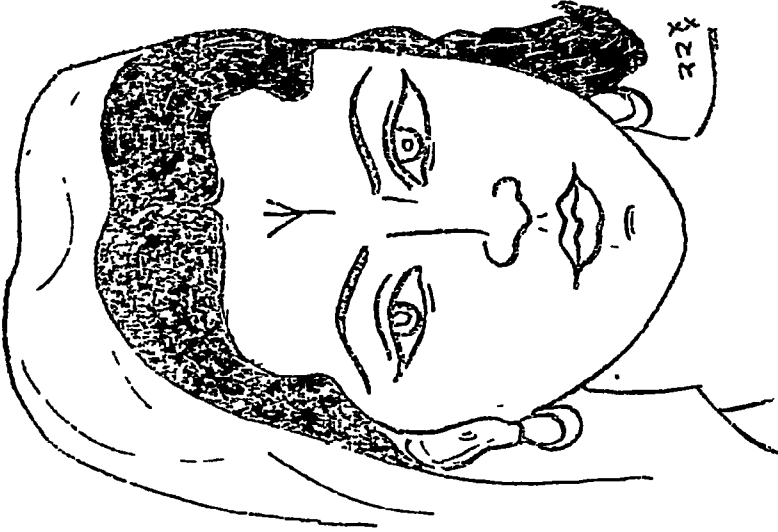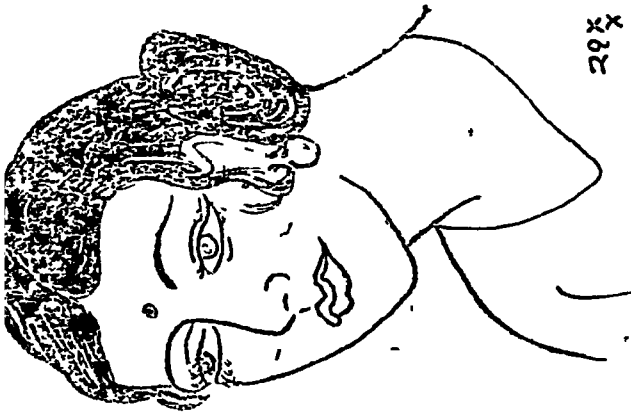
चित्र २३—जिस स्त्री का ललाट अत्यधिक ऊचा न होकर लोम-विहीन हो, भौहें अर्द्धचन्द्राकार हों और जिसकी आखे एक-दूसरी से अधिक अन्तर पर हों, वह सरल, निष्कपट तथा सच्ची होती है।

भ्रू-लक्षण

चित्र २४—जिस स्त्री की भौहें अर्द्धचन्द्राकार ऊची उठी हुई, मुलायम केशों वाली तथा परस्पर मिली हुई न हों उसे शुभ तथा सौभाग्यवती समझना चाहिए। ऐसी भौहो वाली स्त्री सुखी रहती है।

चित्र २५—जिस स्त्री की भौहे आधी टेढ़ी तथा सूक्ष्म हों वह सुखी रहती है। जिस स्त्री की भौहे अत्यन्त काले रग की हों, वह सबको सुख देने वाली होती है।

चित्र २६—जिस स्त्री की भौहों के रोम बड़े-बड़े हों, वह वन्ध्या होती है। जिस स्त्री की भौहे अत्यधिक झुकी हुई न हों, वह धन-धान्य तथा पुत्रों की वृद्धि करने वाली होती है।

चित्र २७—जिस स्त्री की भौहे छोटी तथा परस्पर मिली हुई हों, उन्हें अशुभ समझना चाहिए।

चित्र २८—जिस स्त्री की भौहें अर्द्धचन्द्राकार लम्बी तथा परस्पर मिली हुई हों, वह चित्रकला, गणित अथवा अन्य ललितकलाओं में अभिरुचि रखने वाली होती है।

जिस स्त्री की भौहों के रोम पीलापन लिये हुए हों, उन्हे अशुभ समझना चाहिए।

जिस स्त्री की भौंहें सीधी तनी हुई हों, वह अपने पति से प्रेम नहीं करती है।
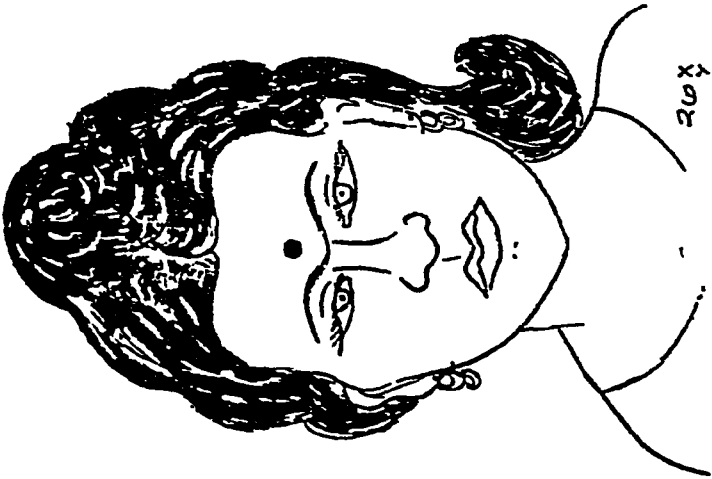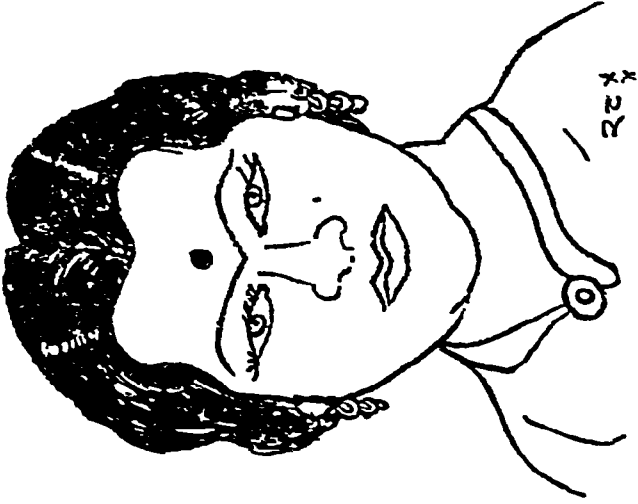
पलक तथा बरौनी-लक्षण

चित्र २६—जिस स्त्री की आंखों की पलकें तथा बरौनियां चिकनी, काली तथा सूक्ष्म परन्तु सघन हों, वह अत्यन्त भाग्यवान होती है।

जिस स्त्री की पलकें पीले अथवा भूरे रग की, विरल तथा मोटी हों, उन्हे निन्दनीय समझना चाहिए।

नेत्र-लक्षण

जिस स्त्री की आखे पीले रग की हो, उसे व्यभिचारिणी समझना चाहिए। लाल रग की आंखों वाली स्त्री कामातुरी होती है। आंख की पुतली का रग गहरा काला हो तो स्त्री वन्ध्या तथा व्यभिचारिणी होती है।

चित्र ३०—कमल के आकार की बडी-बड़ी आंखों वाली, जिनमें कुछ-कुछ लालिमा हो तथा जिनकी वरौनिया सुन्दर हो, वह स्त्री सुख तथा सौभाग्य को प्राप्त करती है।

जिस स्त्री की आंखें हिरण , खरगोश अथवा सूअर के समान हों, वह अनेक प्रकार के सुखों का उपयोग करती है ।

जिस स्त्री की आखे भेड़ अथवा भैंसे की तरह कंजी हों,वह सुख-सौभाग्य विहीना होती है । ऐसी स्त्री अत्यधिक कामातुरा होती है ।

जिस स्त्री की आंखें गाय के समान पीले रंग की हों, वह दुश्चरित्रा होती है ।

जिस स्त्री की आंखें कबूतर जैसी हों, उसका स्वभाव अच्छा नहीं होता ।

जिस स्त्री की आंखें हाथी के समान छोटी हों, वह सुख-सौभाग्य को प्राप्त नही कर पाती।

जिस स्त्री की आखें एक-दूसरी के अधिक समीप हों, वह चालाक तथा धोखेबाज होती है।

जिस स्त्री की आखें एक-दूसरी से अधिक दूर हों, वह अधिक मूर्खा होती है।

जिस स्त्री की आंखे खोखली-सी हों, वह दुष्ट स्वभाव की होती है।

जिस स्त्री की आंखें लाल रग की हों, वह विधवा होती है।

जिस स्त्री की आखे ऊंची (ऊपर की ओर चढ़ी हुई-सी हों) वह अल्पायु होती है।

जिस स्त्री की आंखें गोल हों, वह व्यभिचारिणी होती है।

जिसकी आंखो के अन्त में लाल अथवा काला तिल हो, वे शुभ होती हैं।

गाय के दूध के समान स्वच्छ, चिकनी तथा काली पलकों वाली आंखे जिस स्त्री की हों, वह सुख-सौभाग्य प्राप्त करती है।

जिस स्त्री की बाई आख कानी हो, वह पु श्चली (व्यभि-चारिणी) होती है।

जिस स्त्री की दाई आंख कानी हो, वह बन्ध्या होती है।

जिस स्त्री की आंखे कुछ पीताभा लिये हुए रसीली हो, वह धन-धान्य एवं सुख-सम्पत्ति से पूर्ण बनी रहती है।

जिस स्त्री की आंखो का रग पीला हो वह महा पापिष्ठा होती है।

जिस स्त्री की आखें लम्बी हों, उसे सर्वत्र सम्मान प्राप्त होता है और उसका पति भी उससे अत्यन्त प्रेम करता है। ऐसी आंखों को उत्तम समझना चाहिए।

जिस स्त्री की आंखें छोटी होती है, वह अपने पति को तुरन्त ही वश में कर लेती है।

चित्र ३१—जिस स्त्री की आखें पीलापन लिये हुए तथा भीतर की ओर धसी हुई हों, वह वहुत समय तक दुःख भोगती हुई जीवित रहती है।

३१

चित्र ३२—जिस स्त्री की आखे बाहर की ओर बहुत अधिक निकली हुई हों, उसकी आयु मध्यम होती है।

जिस स्त्री की आंखें औड़ी अथवा घूमी हुई हों, वे मद्य-मांस की प्रिय तथा चंचल-स्वभाव वाली (व्यभिचारिणी) होती है।

वृहत संहिता के अनुसार जिन स्त्रियों की आंखें औड़ी हों तथा उनकी पुतली पीली अथवा मटमैली हो और जो वार-बार चंचल दृष्टि से इधर-उधर देखती हो, वे पर-पुरुष गामिनी होती हैं।

जिस स्त्री की आखे नील-कमल की भांति लावण्य युक्त हो, वह धन-धान्य तथा सौभाग्य से युक्त होती है।

जिस स्त्री की आखे पीली हों अथवा गाय की आंखो जैसी पिंगल वर्ण हों, वह चरित्रहीना होती है।

चित्र ३३—जिस स्त्री की आख की पुतली शहद जैसे वर्ण की हो, वह अत्यधिक ऐश्वर्यशालिनी होती है।

जिस स्त्री की आंखों की पुतली का रंग काला हो, आंखों के कोये कुछ लालिमा लिये हुए हों, आंखों का भीतरी अन्य सब भाग गाय के दूध की भांति श्वेत, चिकना तथा कान्ति युक्त हो, वह सौभाग्यवती, सुलक्षणा, सच्चरित्रा तथा ऐश्वर्य सम्पन्न होती है।

कान के लक्षण

चित्र ३४—जिस स्त्री के कान लम्बे व सुन्दर, घुमावदार तथा कोमल हों,उन्हें शुभ समझना चाहिए।

यदि स्त्री के कान टेढ़े-मेढ़े अथवा दुवले-पतले हों और उनमें नसें निकली हुई हों तो उन्हें अशुभ समझना चाहिए।

कुच्चियों (कान की लौर) से रहित, छोटे, असमान तथा जिनमें छिद्र दिखाई न दे ऐसे कान अशुभ होते हैं।

गधा, ऊंट, नेवला तथा उल्लू जैसे अथवा कठोर कानों वाली स्त्रियां दुःख भोगती हैं।

छोटे कानों वाली स्त्री दुर्भागिनी तथा धन का नाश करने वाली होती है।

नासिका-लक्षण

नासिका के अशुभ लक्षणों के सम्बन्ध में समुद्रऋषि का मत अग्रलिखित है—

दीर्घेण नासिकाग्रेण नारी भवति कोपना।
ह्रस्वेण च भवेद्दासी परकर्म्मकरी सदा ॥
चिपिटा नासिका यस्या वैधव्यमधिगच्छति॥

भावार्थ—जिस स्त्री की नाक का अगला भाग बहुत बड़ा होता है, वह अत्यधिक क्रोध करनें वाली होती है। जिस स्त्री की नाक बहुत छोटी हो, वह पराया काम करने वाली दासी होती है। जिस स्त्री की नाक बहुत चपटी हो, वह विधवा होती है।

अन्य शास्त्रकारों के मतानुसार स्त्री की नासिका की बनावट तथा प्रभाव के सम्बन्ध में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

जिस स्त्री की नाक टेढ़ी हो, वह पति को प्रिय नहीं होती।

जिस स्त्री की नाक छोटी तथा चपटी हो, वह विधवा होती है तथा पर-पुरुष से प्रेम करती है।

भली-भांति उन्नत, न अधिक मोटी और न अधिक पतली, न अधिक चौड़ी और न अधिक चपटी, न अधिक लम्बी और न अधिक छोटी तथा जो टेढ़ी भी न हो ऐसी सुन्दर नासिका वाली स्त्री धन्य होती है। वह सब प्रकार के सुख तथा धन-धान्य आदि को प्राप्त करने वाली,सच्चरित्रा तथा गुणवती होती है।

चित्र ३५—नाक का अग्र भाग मोटा अथवा अधिक ऊंचा हो तो उसे अशुभ लक्षण समझना चाहिए।

बहुत बड़ी नाक वाली स्त्री झगड़ालू स्वभाव की होती है। सीधी नाक वाली स्त्री धन की वृद्धि करती है।

नाक के छिद्र (नथुने) अधिक फूले हुए हों तो उसे अशुभ समझना चाहिए।

नाक के छिद्र छोटे तथा गोल हो, तो वे शुभ होते है।

खुरदरे तथा मलिन अग्रभाग वाली नाक की स्त्री पति को वश में नही रख पाती तथा वैधव्य का दुख भोगती है।

यदि नाक का अग्रभाग कुछ लालिमा लिये हुए हो और वह कुछ नीचे की ओर झुका हुआ हो तो पति-सुख में बाधा पड़ती है।

तालु-लक्षण

जिस स्त्री के मुख के भीतर का तालु (तलुआ) लाल, चिकना तथा कोमल हो, वह सौभाग्यवती होती है।

जिस स्त्री के तालु का रग पीला हो, वह सन्यासिनी हो जाती है। ऐसी स्त्री को सन्तान सुख प्राप्त नही होता।

जिस स्त्री के तालु का रंग श्वेत हो, वह विधवा होती है। गरुण पुराण के मतानुसार श्वेत रग के तालु वाली स्त्री विधवा तो नहीं

चित्र ३६—जिस स्त्री का तालु खुरदरा हो, वह अत्यधिक विषयी होती है तथा अनेक पुरुषो का सेवन करने पर भी उसे तृप्ति नही मिलती।

जिस स्त्री के तालु का रग लाल हो, उसे सर्वत्र यश मिलता है। ऐसी स्त्री दान देने वाली होती है तथा उसका पति सदैव उसके वशीभूत बना रहता है।

गर्ग मुनि के अनुसार जिन स्त्रियों के तालु मासल तथा लाल हों और जिनमें किसी प्रकार के धब्बे न हो, वे सन्ततिवान् तथा सौभाग्यशालिनी होती है।

जिह्वा-लक्षण

जिस स्त्री की जीभ श्याम रग की हो, वह शखिनी जाति की तथा कुलक्षणा होती हे। ऐसी स्त्री अत्यन्त कलहकारिणी होती है।

जिस स्त्री की जीभ सफेद रग की हो, वह दासी होती है। ऐसी जीभ वाली स्त्री की मृत्यु जल विकार के कारण अथवा पानी में डूबने से होती है।

चित्र ३७—लम्बी, सीधी, पतली तथा तावे के समान लाल रंग वाली जीभ सर्वोत्तम होती है। ऐसी जीभ वाली स्त्री सम्पूर्ण सुखो का उपभोग करती है।

कोमल तथा लाल रग की जीभ वाली स्त्री को सदैव सुन्दर, सरस तथा मिष्ठान भोजन प्राप्त होता है। ऐसी स्त्री पुत्रवान् तथा सौभाग्यशालिनी होती है।

जिस स्त्री की जीभ सदैव आर्द्र (गीली) रहती हो, वह भोग-विलास में कुशल तथा गृहस्थी का सुख भोगने वाली होती है।

छोटी, टेढी, मोटी, फटी हुई, फीकी तथा लालिमा रहित जीभ अशुभ तथा निन्दित मानी गई है। ऐसी जीभ वाली स्त्री कुलक्षणी एव दरिद्रा होती है।
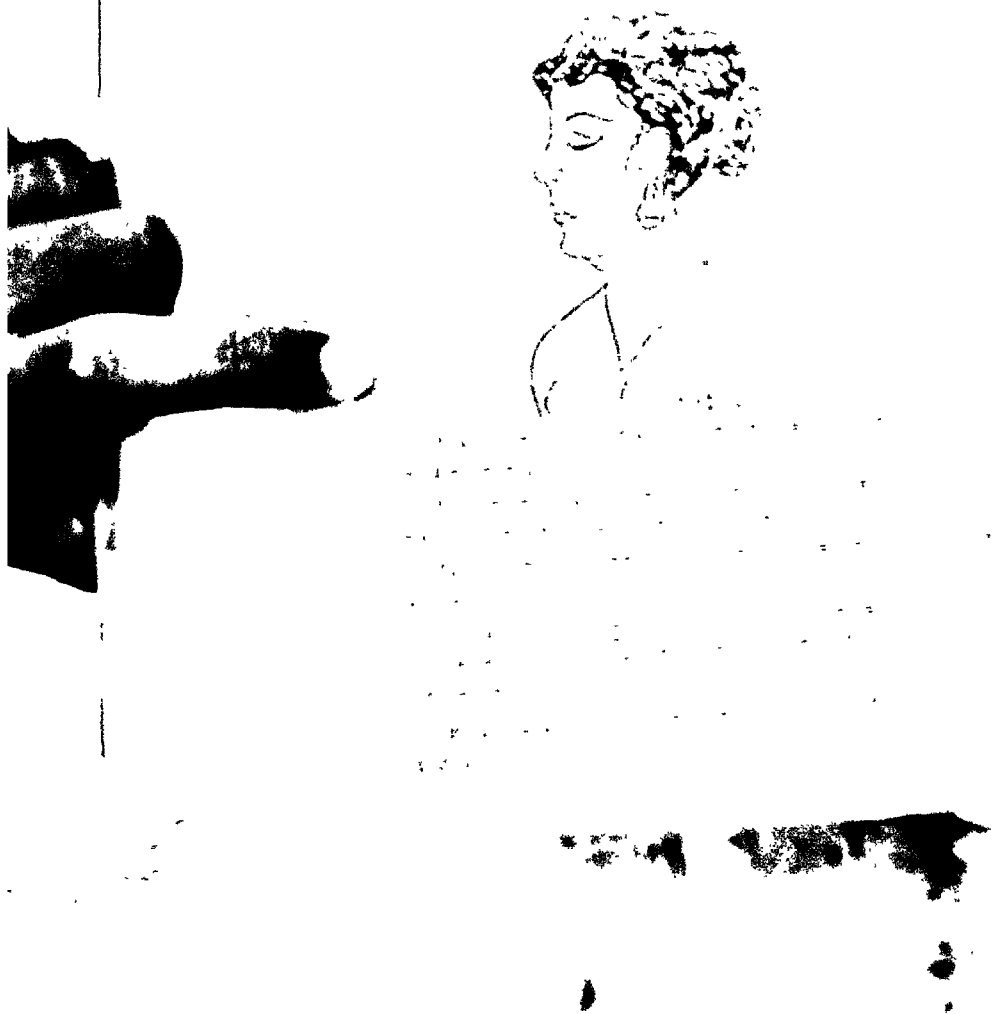
चित्र ३८—निष्कर्ष रूप में जिस स्त्री की जीभ पतली, मध्यम माप की, कोमल तथा लाल रंग की हो, उसे शुभ तथा चौड़ी, लम्बी, मोटी और अन्य प्रकार के रंग वाली जीभ अशुभ समझनी चाहिए।

दन्त-लक्षण

चित्र ३९—जिस स्त्री के दांत चिकने, एक-दूसरे से मिले हुए, अनार के दाने, शंख अथवा कुन्द के फूल जैसी आकृति के, चन्द्रमा की भांति श्वेत और उज्जवल हों तथा आगे की ओर निकले हुए न हों, वह सदैव सुन्दर तथा सरस भोज्य एवं पेय पदार्थों का सेवन करती है। ऐसी स्त्री ऐश्वर्यशालिनी, धनी, सुखी तथा प्रसन्न रहने वाली होती है।

जिस स्त्री के दांत अत्यन्त पतले, बहुत छोटे, रूखे अथवा फटे हों, वह मूर्ख तथा दुर्बुद्धि होती है।

विषम, कराल, ऊंचे-नीचे तथा काले दांतों वाली स्त्री भयानक होती है।

जिस स्त्री के दांत बहुत बड़े होते हैं और बाहर की ओर निकले रहते हैं, उसका पति अल्पायु होता है।

कोई दांत आगे निकला हो और कोई पीछे हो, कोई मोटा अथवा बड़ा हो और कोई छोटा हो तो इसे भी अशुभ लक्षण समझना चाहिए।

पीले अथवा काले रंग के दांतों वाली स्त्री कष्ट भोगती है।

सीप जैसे आकार के अर्थात् बीच में चौड़े तथा नीचे की ओर नुकीले दांत अशुभ होते है।

बहुत चौड़े, बहुत बड़े तथा भयंकर दांतों वाली स्त्री का विवाह या तो होता नही और यदि होता भी है तो उसके पति की मृत्यु जल्दी हो जाती है।

जिस स्त्री के दांतो के बीच में सन्धि हो अर्थात् जिसके दांत एक-दूसरे से अलग-अलग हों, वह कुलटा होती है।

जिस स्त्री के दांत परस्पर भिड़ते हो, अर्थात् जो अपने दांतो को किट-किटाती रहती हो, उस स्त्री को सन्तान-सुख नही होता। ऐसी स्त्री दु खी तथा दरिद्रा भी होती है।

जिस स्त्री के मुंह में ऊपर-नीचे बराबर की संख्या में कुछ-कुछ उन्नत ३२ श्वेत, चिकने तथा सुन्दर दात हों, वह अत्यन्त शुभ लक्षण-वती एव सुख-सौभाग्य से सम्पन्न होती है।

जिस स्त्री के मुह में ३० दात हो, वह पति को अत्यन्त प्रिय तथा भाग्यशालिनी होती है। जिस स्त्री के दात ओठ से बाहर निकले हुए हो, वह विधवा होती है।

जिस स्त्री के दांत अनार के दाने जैसे हो, वह पतिव्रता होती है।

जिस स्त्री के ऊपर के दांतो की पक्ति नीचे के दांतो की पंक्ति के ऊपर आती हो, उसे सौभाग्यशालिनी समझना चाहिए।

जिस स्त्री के दांत ऊंचे, उठे हुए तथा एक-दूसरे से सटे हुए हों, वह डरपोक तथा बुद्धिहीन होती है।

जिस स्त्री के मुह में ३२ दात एक जैसी लम्बाई के हों, वह किसी अत्यन्त ऐश्वर्यशाली व्यक्ति की पत्नी होती है तथा अपने पति का प्रेम अधिक मात्रा में प्राप्त करती है।

जिस स्त्री के दांत छीदे (अलग-अलग) हों, उस पर भी पति का प्रेम अधिक होता है।

जिस स्त्री के दांतों में गुलाबी रंग की चमक हो, वह यदि नीच कुल में उत्पन्न हो तो भी विवाह कर लेने योग्य कही गई है, क्योंकि ऐसी स्त्री धन-धान्य की वृद्धि करने वाली होती है।

चित्र ४०—स्त्री के दांत आगे से कुछ गोलाई लिये हुए, तेज तथा दृढ़ हों, तो उन्हें श्रेष्ठ तथा शुभ समझना चाहिए।

मृणाल अथवा चांदी के समान उज्जवल एवं परस्पर मिले हुए दांतों वाली स्त्री धन्य कही गई है।

अधर तथा ओष्ठ-लक्षण

नीचे के ओठ को 'अधर' कहा जाता है तथा ऊपर के ओठ को 'ओष्ठ' अथवा 'होठ' कहते हैं। स्त्री के अधर तथा ओष्ठ के लक्षणों के विषय में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

जिस स्त्री का अधर तांवे के रग जैसा लाल, कुछ उन्नत और कुछ झुका हुआ हो, वह अनेक प्रकार के भोगों को भोगती है।

यदि अधर का रग विवर्ण (उड़ा-उड़ा सा) हो, तो ऐसी स्त्री दु:ख भोगती है।

यदि अधर अधिक स्थूल (मोटा) हो तो स्त्री कलह-कारिणी होती है।

सूखा, लम्बा अर्थात् नीचे की ओर लटका हुआ, पतला अथवा टेढा अधर दुर्भाग्य सूचक होता है।

काले तथा मोटे अधर वाली स्त्री विधवा तथा कलहप्रिया होती है।

फटे हुए, रूखे, विवर्ण, विषम तथा असुन्दर अधर अशुभ होता है।

चित्र ४१—पाटल पुरुष की भांति लाल, गोलाई लिये हुए, चिकने तथा वीच में एक रेखा युक्त अधरवाली स्त्री का विवाह किसी उच्च श्रेणी के पुरुष के साथ होता है—यह 'स्कन्द पुराण' का मत है, परन्तु कुछ विद्वानों ने अधर के वीच एक रेखा का होना दुर्भाग्य-सूचक माना है।

बिम्ब फल के समान लाल अधर वाली स्त्री ऐश्वर्य-शालिनी होती है।

मासल, चिकने, लाल तथा जो फटे हुए न हों, ऐसे सुन्दर अधर वाली कन्या किसी राजा की रानी अथवा ऐश्वर्यशाली पुरुष की पत्नी होती है।

जिस स्त्री के ऊपर का ओठ नीचे के अधर की भाति शुभ-लक्षण युक्त हो, वह शुभ होता है।

यदि ऊपर का ओठ कठोर तथा पैना हो, तो ऐसी स्त्री अत्यन्त क्रोध करने वाली होती है।

यदि ऊपर का ओठ चिकना हो, तो स्त्री सुस्वादु पदार्थों का सेवन करने वाली तथा विविध प्रकार के भोगों का उपयोग करने वाली होती है।

यदि ऊपर का ओठ बीच में कुछ ऊंचा तथा रोम रहित हो तो स्त्री धनवती होती है।

चित्र ४२—जिस स्त्री के दोनो ओठ लाल रंग के तथा धनुष जैसी ऊर्ध्वगोलावृति हों, वह सुख-सम्पत्ति को बढ़ाने वाली तथा पति को अत्यन्त सुख देने वाली होती है।

जिस स्त्री के ओठ मोटे हो तथा खुले रहते हों, वह कुटुम्ब को दुःख देने वाली होती है।

जिस स्त्री के ऊपर वाले ओठ के ऊपरी भाग में पुरुषो की मूंछों के समान रोएं हों, वह वन्ध्या होती है। ऐसी स्त्री के साथ समागम करने वाला पुरुप अन्त में नपुंसक हो जाता है। ऐसे रोमों वाली स्त्री अपने पति के लिए भी शुभ नही हाती ।

कुछ विद्वानों के मतानुसार जिस स्त्री के ओठ के ऊपरी भाग में 'पुरुष की मूछों के समान रोएं हों, वह कुलटा (व्यभिचारिणी) होती है अथवा छोटी आयु में ही विधवा हो जाती है।

कपोल-लक्षण

'कपोल' गालों को कहते हैं। इनके लक्षणों को नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए:—

जिस स्त्री के कपोल पुष्ट, मांसल तथा उन्नत हों, उन्हें शुभ समझना चाहिए। अपुष्ट, पिचके, खुरदरे, मांस-विहीन अथवा रोमयुक्त कपोल अशुभ होते हैं।

चित्र ४३—जिस स्त्री के कपोल गुलाब के पुष्प की भांति अरुणाई युक्त तथा उभरे हुए हों, उसे पति का पूर्ण प्रेम प्राप्त होता है। अन्य अनेक पुरुष भी उसके ऊपर मोहित होते हैं।

कोमल, विषमता रहित तथा उन्नत कपोलो वाली स्त्री पतिव्रता, धर्मात्मा एव यशस्विनी होती है ।

गहरे कपोलों वाली स्त्री पर-पुरुष-गामिनी होती है और अपने पति को कष्ट देने वाली सिद्ध होती है ।

जिस स्त्री के कपोलो की चमड़ी वहुत मोटी, रूखी तथा कठोर हो, वह धन तथा कुटुम्ब का नाश करने वाली होती है ।

जिस स्त्री के कपोल कान्तियुक्त, तेजयुक्त, गोल, कुछ पीलापन तथा कुछ लालिमा लिये हुए, पुष्ट तथा उन्नत हों, वह धन-धान्य, सम्पत्ति तथा सन्ततिवान् एव सवको सुखदायक होती है ।

चिबुक तथा हनु-लक्षरग

ठोढी को 'चिवुक' तथा उसके ऊपरी भाग, जो दोनो गालों के नीचे तथा चिवुक के ऊपर दोनो ओर को होता है, उसे 'हनु' कहा जाता है ।

स्त्री के चिवुक तथा हनु के लक्षणो के सम्वन्ध मे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चित्र ४४—यदि स्त्री का हनु स्थूल, कृश, टेढ़ा, अधिक वड़ा, रोमयुक्त तथा वहुत छोटा हो तो उसे अशुभ समझना चाहिए ।

यदि हनु भाग चिवुक से मिला हुआ तथा मासल हो तो वह शुभ होता है ।

स्त्रियो का हनु भाग यदि चिवुक से मिला हो, तो ऐसी स्त्री लोभ रहित होती है ।

गोल, पुष्ट, कोमल तथा दो अगुल के आकार का चिवुक शुभ माना गया है । अत्यधिक मोटा, अधिक चौड़ा, रोम युक्त तथा दो भागो मे वटा हुआ चिवुक शुभ नही होता ।

यदि स्त्री की ठोढ़ी पर पुरुष की भांति केश हों, तो वह अपने शत्रुओं का पराभव करने वाली परन्तु लक्ष्मी को दूर करने वाली अर्थात् दरिद्रा और लोक-निन्दित होती है।

जिस स्त्री की ठोढ़ी बहुत लम्बी, मोटी तथा रोम युक्त हो, वह विधवा होती है।

कंठ तथा ग्रीवा-लक्षण

मांसल, गोल तथा चार अंगुल परिणाम का कंठ शुभ माना गया है।

चित्र ४५—अधिक मांसल, चपटी, लम्बी अथवा गहरी ग्रीवा अशुभ होती है।

जिस स्त्री की ग्रीवा टेढ़ी हो, वह दानी होती है ।

जिस स्त्री की ग्रीवा अधिक मोटी हो, वह विधवा होती है ।

जिस स्त्री की ग्रीवा चपटी हो, वह बाँझ होती है ।

जिस स्त्री की ग्रीवा छोटी हो, वह सन्तान रहित होती है ।

जिस स्त्री की ग्रीवा में तीन रेखाएं हों, उसे अत्यन्त भाग्यशालिनी समझना चाहिए । यदि ये रेखाएं बीच में से टूटी हुई हों, तो हानिकारक एवं अशुभ जानना चाहिए ।

जिस स्त्री की ग्रीवा दुर्बल (पतली) हो वह अधम होती है ।

जिस स्त्री की गर्दन अधिक लम्बी हो, वह व्यभिचारिणी होती है।

चार अगुल परिमाण की तीन रेखाओ वाली, गोल, सुन्दर तथा जो अधिक दीर्घ, ह्रस्व, पतली, मोटी अथवा चपटी न हो ऐसी ग्रीवा सर्वश्रेष्ठ तथा लाभदायक होती है ।

उपजिह्वा-लक्षण

गले की घंटी यदि मांसल, सीधी तथा उन्नत हो, तो उसे शुभ समझना चाहिए।

चित्र ४६–यदि गले की घंटी रोम युक्त, शिरायुक्त, चौड़ी, टेढ़ी अथवा लम्बी हो, तो उसे अशुभ समझना चाहिए।

मुख-लक्षण

गर्दन से सिर तक के सम्पूर्ण भाग को 'मुख' या 'मुह' कहा जाता

है। मुख के लक्षणों के विषय में सामुद्रिक शास्त्रियों का मत निम्नानुसार है—

जिस स्त्री का मुंह पूर्ण चन्द्र की भांति आकर्षक,गौर वर्ण, शीतल तथा कान्तियुक्त हो, वह सुख, सौभाग्य, धन, सन्तति तथा सब प्रकार के भोगों को प्राप्त करती है।

जिस स्त्री का मुंह सुन्दर तथा चमकीला हो और जिसकी त्वचा चिकनी तथा कोमल हो, वह भाग्यशालिनी होती है।

जिन स्त्रियों के मुख से बकुल, गुलाब, मालती तथा कमल जैसे पुष्पों की सुगन्ध आती है, वे सुस्वादु भोजन तथा पेय-पदार्थों का निरन्तर सेवन करती हैं।

जिन स्त्रियों का मुंह एकदम चौकोर हों, वे चालाक तथा धोखेबाज होती हैं।

जिन स्त्रियों का मुंह बिल्कुल गोल तथा बहुत बड़ा हो, वे विश्वास करने योग्य नहीं होतीं।

चित्र ४८—जिन स्त्रियों का मुंह सामान्य गोलाई लिये हुए स्निग्ध, मांसल, सम तथा सुगन्ध युक्त हो, उन्हें सौभाग्यशालिनी समझना चाहिए।

जिन स्त्रियों का मुंह बेडौल तथा बहुत बड़ा हो वे दुर्भाग्यशीला होती हैं।

जिन स्त्रियों का मुंह घोड़े जैसा हो, उन्हें सन्तान का सुख प्राप्त नहीं होता।

जिन स्त्रियों का मुंह कुत्ता, सुअर, उल्लू, भेड़िया अथवा मगर के मुंह से मिलता-जुलता हो वे क्रूरकर्म करने वाली, पापिनी तथा दुष्ट होती हैं। उन्हें भाई-बंधु अथवा सन्तान का सुख नहीं मिलता।

४८४

जिस कन्या का मुह अपने पिता के मुह जैसा हो, वह सौभाग्य-शालिनी होती है। इसी प्रकार जिस पुत्र का चेहरा अपनी माता के चेहरे से मिलता हो, वह सुख-समृद्धि, सौभाग्य एवं शुभ फल को देने वाला होता है।

यदि स्त्री का मुंह पुरुष जैसा प्रतीत हो तो उसे अशुभ समझना चाहिए।

स्कन्ध-लक्षण

चित्र ४६—जिस स्त्री के कधे पर 'शख' अथवा 'चक्र' का चिह्न हो, उसे 'पद्मनी' समझना चाहिए। एसी स्त्री समस्त शुभ गण तथा सुख सौभाग्य से युक्त होती है।

जिस स्त्री की पीठ रोम-युक्त हो, वह निश्चित रूप से वैधव्य का दुःख भोगती है।

कक्ष-लक्षण

चित्र ५१—पतले रोमो वाली, ऊंची, चिकनी तथा मांसल काख शुभ होती है। गहरी नसों वाली, गहरी—जिसमें पसीना आता हो और दुर्गन्ध आती हो—स्त्री की ऐसी कांख अशुभ होती है।

जिस कांख में रोम अधिक घने तथा मोटे हो, उसे भी अशुभ माना जाता है।
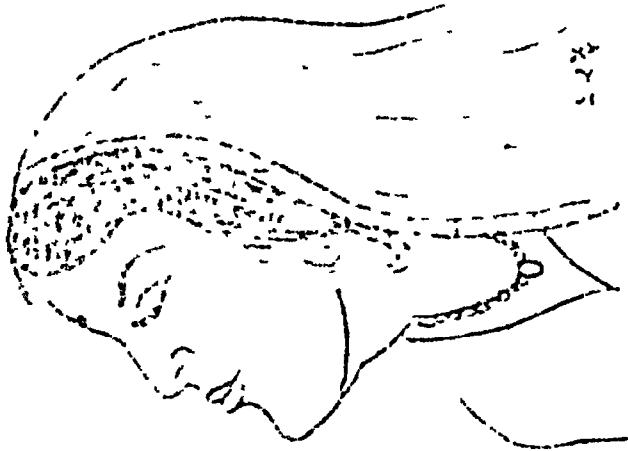
हंसली-लक्षण

चित्र ५२—मोटी तथा मांसल हंसली वाली स्त्री धन-धान्य से पूर्ण बनी रहती है। ढीली हड्डी वाली, गहरी तथा विषम (ऊंची-नीची) हसली वाली स्त्री दरिद्रा होती है।

भुजा-लक्षण

चित्र ५३—जिस स्त्री की भुजाए मासल, छिपी हुई हड्डियों तथा गाठो वाली, कोमल, रोम-शिरा-विहीन तथा सीधी हों, वे शुभ होती हैं।

यदि स्त्री की भुजाएं शिरायुक्त हो तो उसे अशुभ समझना चाहिए।

जिनकी भुजाओं पर मोटे रोम हों, ऐसी स्त्री विधवा होती है।

जिस स्त्री की भुजाएं छोटी हों, उसे दुर्भाग्यशालिनी एवं दुर्गुणी समझना चाहिए। जिस स्त्री की भुजाएं चारों ओर नसों से घिरी हों अर्थात् उन पर सब ओर से नसें उभरी हुई हों, वे अनेक प्रकार के दुःख भोगती हैं।

जिस स्त्री के हाथ अत्यधिक लम्बे हों, वह दरिद्रा होती है।

वक्षःस्थल-लक्षण

चित्र ५४—जिस स्त्री का वक्षःस्थल (छाती) रोम युक्त हो, वह पति-घातक होती है।

जिस स्त्री की छाती अधिक लम्बी-चौड़ी हो वह व्यभिचारिणी होती है।

जिस स्त्री की छाती विषम (ऊंची-नीची) हो, उसे अशुभ एवं दुर्भाग्यदायक समझना चाहिए।

जिस स्त्री की छाती सम हो, वह सुखी रहती है।

स्त्री का वक्षःस्थल १८ अंगुल चौड़ा, मोटा, उन्नत तथा रोम-शिरा-विहीन हो तो उसे अत्यन्त शुभ समझना चाहिए।

स्तन–लक्षण

चित्र ५५—स्त्री के स्तन कठोर-गोल, दृढ, स्थूल तथा परस्पर समान हों, तो उन्हे शुभ समझना चाहिए।

स्त्री के स्तन यदि मोटे, विरल तथा सूखे से हों, तो उन्हें अशुभ तथा दुःखप्रद समझना चाहिए।

जिस स्त्री के स्तन अत्यन्त कठोर तथा ऊंचे उठे हुए हों, उस पर पति का प्रेम अधिक रहता है।

जिस स्त्री के स्तन सदैव उष्ण रहते हों, उसे काम-क्रीड़ा में निपुण तथा गुणवती समझना चाहिए।

जिस स्त्री के स्तन सदैव शीतल रहते हों उसे दुर्भागिनी समझना चाहिए।

जिस स्त्री के दोनों स्तनों के बीच बिल्कुल स्थान न रहता हो, अर्थात् दोनों स्तन मिले हुए हों, वह दुर्भागिनी तथा कुटुम्ब का नाश करने वाली होती है।

जिस स्त्री के स्तन की सम्पूर्ण बिटनी काले रंग की हो, उसे धन का नाश करने वाली समझना चाहिए।

जिस स्त्री के स्तन की बिटनी के काले रंग में कुछ लाल रंग की चमक हो, उसे उत्तम समझना चाहिए।

जिस स्त्री के स्तन चपटे हो, वह वंध्या होती है।

जिस स्त्री का दाया स्तन कुछ अधिक उन्नत हो, वह श्रेष्ठ पुत्र का जन्म देने वाली सौभाग्यवती होती है।

जिस स्त्री का बाया स्तन कुछ अधिक उन्नत हो, वह सौभाग्यवती कन्या को जन्म देने वाली होती है।

चित्र ५६—जिस स्त्री के स्तन स्वर्ण-कलश की भाति उन्नत तथा बीच में श्यामवर्ण की बिटनी वाले हों, उसे उत्तम समझना चाहिए।

जिस स्त्री के स्तन रहट के समान हों, उसका स्वभाव कुटिल होता है।

जिस स्त्री के स्तनों की विटनी मोटी हो, जो पर्याप्त अन्तर पर हों तथा किनारे पर चौडे हों वे अशुभ फलदायक होते है।

चित्र ५७—जिस स्त्री के स्तन मूल में मोटे तथा वाद में क्रमश: पतले होते हुए अग्रभाग में नुकीले हो गए हो, वह अपने जीवन के प्रारम्भिक काल मे बहुत सुख भोगकर वाद में बहुत दु.ख उठाती है।

जिस स्त्री के स्तनो की घु डी लम्वी हो, उसे व्यभिचारिणी समझना चाहिए।

जिस स्त्री के स्तनो की घु डी गोल हो, उसे शुभ समझना चाहिए।

जिस स्त्री के स्तनो के अग्रभाग पुष्ट, कठोर, श्याम वर्ण तथा बहुत गोल हों, उन्हे शुभ समझना चाहिए।

जिस स्त्री के स्तनो के अग्रभाग भीतर की ओर छिपे हुए, दीर्घ अथवा पतले हो वह अनेक प्रकार के दु ख भोगती है।

जिस स्त्री के स्तन चलते समय परस्पर मिल जाते हों, उन्हें अशुभ समझना चाहिए।

जिस स्त्री के स्तनो पर रोयें हों, उसे डाकिनी के समान समझना चाहिए।

जिस स्त्री के स्तन मास-विहीन तथा नरम हो, उसे शखिनी समझना चाहिए।

जिस स्त्री के स्तन की घु डी से प्रसव के समय भी दूध बहता हो, उसे पुत्रादि का नाश करने वाली समझना चाहिए।

५७x
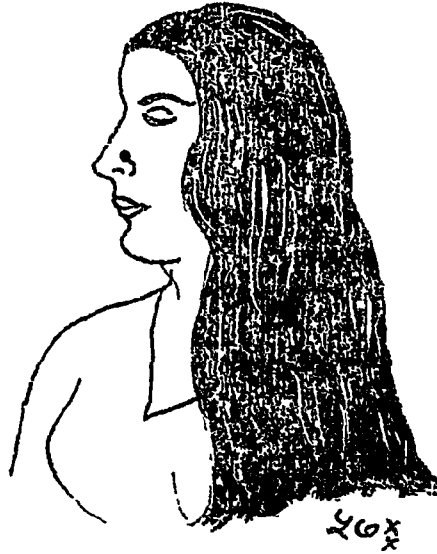
जिस स्त्री के बाए स्तन पर तिल अथवा मस्से का चिन्ह हो, उसे दुर्भागिनी तथा सदैव झगड़ा करने वाली समझना चाहिए।

चित्र ५८—जिस स्त्री के दाए स्तन पर श्रीवत्स अथवा स्वस्तिक का चिन्ह हो, वह अपने पति द्वारा अत्यन्त सुख प्राप्त करती है।
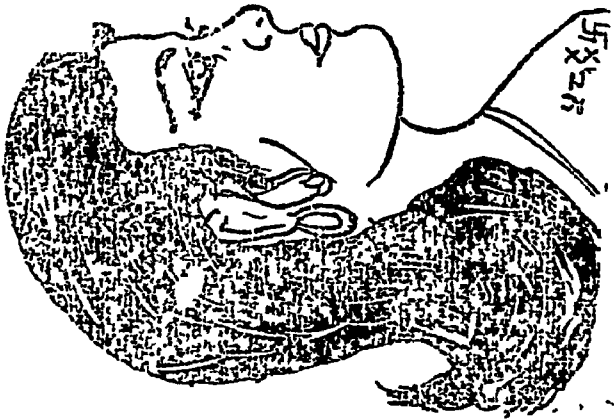
जिस स्त्री के बाएं स्तन पर ऊखल अथवा मूसल का चिन्ह हो, वह व्यभिचारीणी, दुष्टा तथा कुल का नाश करने वाली होती है।

चित्र ५९—जिस स्त्री के दोनों स्तनों के बीच वाले भाग मे मन्दिर जैसा चिन्ह हो, वह राजा की रानी अथवा अत्यन्त वैभवशाली पुरुष की पत्नी होती है।

उदर-लक्षण

जिस स्त्री का पेट रोम युक्त, लम्बा तथा चौड़ा हो, वह वन्ध्या होती है।

जिस स्त्री का पेट हल्का तथा पतला हो उसे श्रेष्ठ समझना चाहिए।

जिस स्त्री का पेट घड़े की भांति ऊंचा हो और स्तन तथा पेट की ऊंचाई एक जैसी हो, वह शङ्खिनी तथा दुर्भागिनी होती है।

जिस स्त्री के पेट पर अधिक बाल हों, वह राक्षसी जैसी होती है। ऐसी स्त्री अपने कुटुम्ब का नाश करने वाली तथा पर-पुरुष के साथ व्यभिचार करने वाली होती है।

जिस स्त्री के पेट पर बहुत महीन (बेमालूम) रोम हों, उसे उत्तम समझना चाहिए।

जिस स्त्री के पेट पर तीन रेखाए हों, वह सुलक्षणा तथा सुख-सौभाग्य से सम्पन्न होती है।

चित्र ६०—जिस स्त्री का पेट गहरा हो तथा ऊपर से दिखाई न दे उसे श्रेष्ठ समझना चाहिए।

जिस स्त्री के पेट पर तीन रेखाएं तो हों, परन्तु उनमें से एक रेखा खण्डित हो, तो ऐसी स्त्री विधवा होती है।
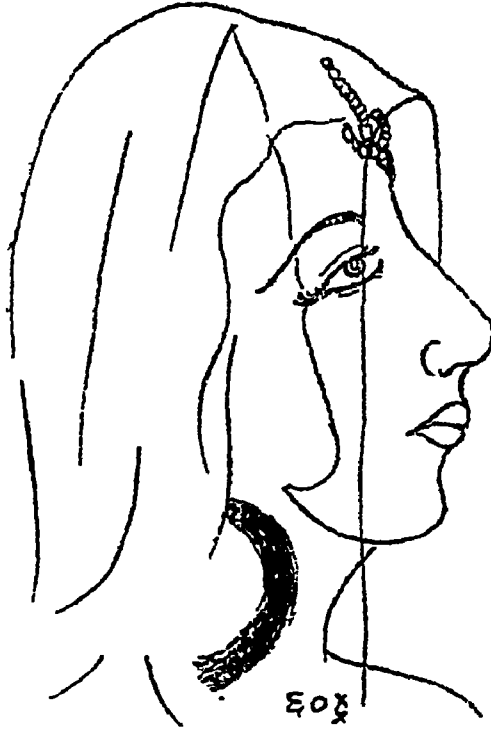
जिस स्त्री के पेट पर दाईं ओर धनुष जैसा चिन्ह हो, वह रानी के समान सुख भोगती है।

जिस स्त्री का पेट घड़े के समान हो, वह दरिद्रा होती है।

जिस स्त्री का पेट मृदंग, काशीफल अथवा यव के आकार का हो, वह अपना उदर भी अत्यन्त कठिनाई से भर पाती है।

जिस स्त्री का पेट बहुत चौड़ा हो, वह सन्तान-हीन तथा दुर्भाग्य-शालिनी होती है।

जिस स्त्री का पेट लम्बा हो, वह अपने श्वसुर एव देवर का नाश करती है।

जिस स्त्री का पेट कृश हो, वह भाग्यशालिनी होती है।

पार्श्व-लक्षण

जिस स्त्री की पसलियां मांसल, कोमल तथा परस्पर समान हों, वह सुख-सौभाग्य प्राप्त करती है।

जिस स्त्री की पसलियों की हड्डियां दिखाई न देती हों, वह भाग्यवान होती है।

जिस स्त्री के दोनों पार्श्व उन्नत न हों, विपरीत इसके उनकी हड्डियां दिखाई देती हों, उन्हें अशुभ समझना चाहिए।

जिस स्त्री के दोनों पार्श्व रोम युक्त हों, वह बुरे स्वभाव की तथा सन्तान-हीना होती है।

कुक्षि-लक्षण

जिस स्त्री की कोख चौड़ी हो, वह अनेक पुत्रों को जन्म देती है।

जिस स्त्री की कोख गड्ढेदार ऊंची हो, वह बाझ होती है।

जिस स्त्री की कोख गड्ढेदार हो वह दासी होती है।

जिस स्त्री की कोख ढीली खाल वाली हो, वह सन्यासिनी होती है।

जिस स्त्री की कोख मेंढक के पेट जैसी हो, वह पृथ्वीपालक तथा ऐश्वर्यशाली पुत्र को माता होती है।

वस्ति-लक्षण

जिस स्त्री का पेड़ू विशाल, कोमल तथा कुछ ऊंचा हो, वह सुख प्राप्त करती है।

जिस स्त्री का पेढ़ू रोम-शिरा युक्त तथा रेखाओ से अंकित हो, उसे अशुभ समझना चाहिए।

नाभि-लक्षण

जिस स्त्री की नाभि गहरी, रोम तथा रेखाओं से युक्त एवं दक्षिणावर्त हो, उसे शुभ तथा सुख-सम्पत्ति दायक समझना चाहिए।

जिस स्त्री की नाभि बहुत ऊंची तथा वामावर्त हो और जिसका मध्य भाग स्पष्ट दिखाई देता हो, उसे अशुभ तथा क्लेशदायक समझना चाहिए।

नितम्ब-लक्षण

जिस स्त्री के नितम्व ऊंचे, मांसल तथा चौड़े हो, वह अत्यन्त भोगवान होती है।

यदि स्त्री के नितम्ब गोल, कोमल, घने तथा उन्नत हों तो वह रति क्रिया में प्रवीण होती है।

यदि स्त्री के नितम्व दवे हुए, सूखे, छोटे तथा वेढगे हों तो उन्हें अशुभ समझना चाहिए।

कटि-लक्षण

स्त्री की कमर यदि २४ अगुल परिमाण की हो तो उसे शुभ समझना चाहिए।

छोटी तथा रोम युक्त कमर दुःख देने वाली होती है। ऐसी कमर वाली स्त्री विधवा होती है।

लम्वी, चपटी तथा मांस-हीन कमर वाली स्त्री अनेक प्रकार से दु.ख उठाती है।

ऊंचे तथा बड़े नितम्बों वाली चौकोर कमर की स्त्रियां धनवती होती हैं।

जघन देश-लक्षण

जिनका जघन-देश वामावर्त, निर्मांस अथवा टेढ़ा हो, वे स्त्रियां विधवा होती हैं।

जिन स्त्रियों का जघन-देश गहरा, संकरा अथवा रूखा होता है, वे अनेक प्रकार के दुःख भोगती हैं।

यदि जघन देश चौड़ा, ऊंचा, मांसल, कोमल दक्षिणावर्त तथा कोमल रोमों से युक्त हो तो उसे शुभ तथा श्रेष्ठ समझना चाहिए।

भग-लक्षण

स्त्री का गुप्तांग कछुए की पीठ अथवा हाथी के जंघे के समान उन्नत हो तो उसे शुभ समझना चाहिए।

जिस स्त्री का गुप्तांग बांई ओर को कुछ अधिक ऊंचा होता है। वह कन्याओं को अधिक जन्म देती है।

जिस स्त्री का गुप्तांग, दाईं ओर को कुछ अधिक ऊंचा होता है, वह पुत्रों को अधिक जन्म देती है।

जिस स्त्री की योनि चूहे के रोमों की भांति रोम युक्त हो, जिसका मार्ग छिपा हुआ हो जो पुष्ट, उन्नत, लिपटी हुई तथा कमल पत्र अथवा पीपल के पत्ते जैसे आकार की हो, उसे शुभ समझना चाहिए।

हिरन के खुर अथवा चूहे के उदर जैसी अधिक रोम युक्त, विस्तृत मुख वाली तथा जिसकी भगनासा स्पष्ट दिखाई देती हो, ऐसी योनि दुखदायक होती है।

जिस स्त्री की योनि तीन रेखाओं से युक्त हो, वह वन्ध्या होती है।

जिस स्त्री की योनि का आकार खपरैल जैसा हो, वह दासी होती है।

जिस स्त्री की योनि का आकार बांस अथवा बेंत के पत्ते जैसा हो, जो हाथी के समान रोमों से युक्त हो तथा जिसकी भगनासा बड़ी हो, उसे अशुभ समझना चाहिए।

नीचे की ओर मुखवाली, दीर्घ, कुटिल (टेढ़ी) अथवा विकट (बहुत बड़ी) योनि वाली स्त्री दुर्भाग्यशालिनी तथा निकृष्ट कोटि की होती है।

रोम राजि-लक्षण

जिस स्त्री के शरीर पर रोम-राजि कपिल वर्ण मोटी, टेढ़ी तथा छिन्न-भिन्न सी हो, वह स्त्री दुर्भागा चोर एव विधवा होती है।

जिस स्त्री का हृदय-स्थल रोम राजि रहित होता है, वह ऐश्वर्य-शाली तथा अपने पति की प्रिय होती है।

रोम तथा आवर्त-लक्षण

स्त्री के नाभि, कान तथा हृदय पर रोम रेखाएं दक्षिणावर्त हों तो उन्हे शुभ समझना चाहिए।

जिस स्त्री की पीठ के मध्य भाग में नाभि के समान गोलाकार आवर्त-चिह्न हो, वह पुत्रवती तथा दीर्घजीवी होती है।

जिस स्त्री के गुप्तांग के ऊपरी भाग में अथवा उसके नीचे दक्षि-णावर्त हो, वह राजरानी होती है।

जिस स्त्री के गुप्तांग के ऊपरी अथवा नीचले भाग में रोम अथवा

रेखाओं द्वारा छकड़े जैसा चिह्न हो, वह अत्यधिक सुख एवं सम्मान प्राप्त करती है।

जिस स्त्री की गुदा का आवर्त, गुदा को बेधकर उदर तथा ऊपर तक आ गया हो, वह अपनी सन्तानों तथा पति का हनन करने वाली होती है।

जिस स्त्री की पीठ में उदर को बेधकर दो आवर्त से बने हों, उन्हें अशुभ समझना चाहिए।

यदि किसी स्त्री के पूर्वोक्त प्रकार का एक ही आवर्त हो, वह अपने पति को नष्ट करती है।

यदि किसी स्त्री के दूसरा आवर्त भी हो तो वह विधवा तथा दुखी होती है।

जिस स्त्री के सिर अथवा ललाट पर दक्षिणावर्त चिह्न हो, उसे तत्काल त्याग देना चाहिए। यह लक्षण महा अशुभ होता है।

यदि नाभि घुमावदार हो तथा पीठ पर आवर्त चिह्न हो, तो ऐसी स्त्री का पति अल्पजीवी होता है।

यदि नाभि में आवर्त चिह्न हो तो ऐसी स्त्री पतिव्रता होती है।

यदि पाव में दांई ओर को आवर्त चिह्न हो तो उसे शुभ लक्षण समझना चाहिए।

यदि नाभि, कान, अथवा हृदय पर दक्षिणावर्त चिह्न हो तो वह शुभ होता है।

यदि कण्ठ, सीमन्त अथवा ललाट पर आवर्त चिह्न हो तो उसे अत्यन्त अशुभ समझना चाहिए।

यदि सिर के ऊपर एक अथवा दो आवर्त चिह्न हों तो उन्हे अत्यन्त अशुभ समझना चाहिए।

यदि स्त्री के बाये हाथ में आवर्त चिह्न हो तो उसे अशुभ लक्षण समझना चाहिए।

जिस स्त्री के कटि प्रदेश में आवर्त चिह्न हो, वह स्वच्छन्दचारिणी, अपने मन का काम करने वाली, पर-पुरुष गामिनी होती है।

जिस स्त्री के गले की घंटी के मध्य भाग में दक्षिणावर्त चिह्न हो, वह अपने विवाह के एक वर्ष के भीतर ही पति की मृत्यु का कारण बनती है।

जिस स्त्री के सिर के मध्यभाग में रोमों का एक ही दक्षिण अथवा वाम आवर्त चिह्न हो, अथवा आवर्त चिह्न प्रतीत होते हों उसका पति विवाह के दस दिन के भीतर ही मर जाता है।

जिस स्त्री की कमर में आवर्त चिह्न हो वह व्याभिचारिणी होती है।

जिस स्त्री की पीठ में आवर्त चिह्न हो, वह पति का विनाश करती है अथवा वेश्यावृत्ति अपना लेती है।

जिस स्त्री के दाये हाथ में रोमों का दक्षिणावर्त चिह्न हो, वह धर्मात्मा होती है।

जिस स्त्री के दाये हाथ में रोमो का वामावर्त चिह्न हो, वह अशुभ एव दुर्गुणों से युक्त होती है।

टिप्पणी—शरीर पर 'आवर्त चिह्न' रोमो में घुमाव से बनता है। लोक भाषा में उसे 'भोंरी' भी कहा जाता है। यदि रोये दाई ओर को चक्र की भाति घूमे हुए हो तो दक्षिणावर्त और बाई ओर को चक्र की भाति घूमे हुए हो तो वामावर्त होता है।

भौंरी के सम्बन्ध मे विशेष विवरण 'शरीर लक्षण विज्ञान' नामक खण्ड में दिया गया है।

स्त्री के शरीरस्थ तिलों व मस्सों का प्रभाव

स्त्री-पुरुष के चेहरे तथा अन्य स्थानों पर पाये जाने वाले तिलों के प्रभाव का वर्णन वृहद-सामुद्रिक-विज्ञान के ग्यारहवे खण्ड के शरीर लक्षण विज्ञान में विस्तारपूर्वक किया जा चुका है। अतः इस सम्बन्ध में प्राच्य तथा पाश्चात्य मत की विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिये उक्त खण्ड का अध्ययन करना चाहिये।

भारतीय सामुद्रिक वेत्ताओं ने स्त्री शरीर पर पाये जाने वाले तिलों के सम्बन्ध मे जो बातें विशेष रूप से कही हैं, केवल मात्र उन्हीं का उल्लेख यहां पर किया जा रहा है।

"तभ्रुवोरतर्ललाटेवा मशको राज्य सूचकः।
वामेकपोलेमशकः शोणो मिष्टान्नदः स्मृतः॥
तिलक लांछन वपि हृदि सौभाग्य कारणं।
यस्यादक्षिण वक्षोगे शोणे तिलैच लांछने॥
कन्या चतुष्टय सूते सूते साच सुतत्रयां।
तिलकं लांछनं शोण यस्यावामेकुचेभवेत्॥
एक पुत्र प्रसूयादौतत साविधवामवेत्।
गुह्यस्य दक्षिणे भागे तिलकं यदि धौषितः॥
दयाक्षिति पते; पत्नीसूतेवाक्षितिपसुतं।
नाशाग्रेवशकः शोणो महिष्या एव जायते॥
कृष्णः स एव भर्तृघ्न्या पुंश्चल्याश्चप्रकोतिता।
नाभरेधस्तात्तिलकं सशको लांछनां शुभ॥
मशकस्तिलक चिह्नं गुल्फदेशे दरिद्रकृत्।
करे कर्णे कपोलेवा कंठे वामें भवदि॥
एषांभयाणांमेकंतु प्राग्गार्भेपुत्रदंभवेत्॥"

इन श्लोकों के भावार्थ को चित्रों सहित नीचे दिया जा रहा है।

चित्र ६१—यदि किस स्त्री की भौहों के मध्मभाग में तिल चिह्न हो तो उसे राज्य (ऐश्वर्य) प्राप्ति का लक्षण समझना चाहिएँ। यदि स्त्री के बांये कपोल पर लाल रंग का तिल हो तो वह मिष्ठान भोजन प्राप्त करने वाली होती है। चित्र में उक्त दोनों स्थानों पर तिल चिह्नों को प्रदर्शित किया गया है।

चित्र ६२—यदि किसी स्त्री के हृदय-स्थान पर तिल हो तो उसे सौभाग्य-दायक समझना चाहिए। यदि दांये स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो ऐसी स्त्री चार कन्या तथा तीन पुत्रो को जन्म देती है।

यदि बांये स्तन पर लाल रंग का तिल हो तो स्त्री पहले पुत्र को जन्म देने के बाद विधवा हो जाती है। चित्र में इन तीनों स्थानों के तिलों को प्रदर्शित किया गया है।

चित्र ६३—यदि किसी स्त्री के गुप्त-स्थान के दांये भाग में तिल हो तो वह किसी राजा की पत्नी होती है अथवा ऐसे पुत्र को जन्म देती है, जो राज्यपद को प्राप्त करे। यदि किसी स्त्री की नासिका के अग्रभाग पर लाल रग का तिल हो तो वह रानी होती है। परन्तु यदि उस तिल का रग काला हो तो पातिघ्नी तथा व्याभिचारणी होती है।

चित्र ६४—यदि किसी स्त्री की नाभि के निचले भाग में तिल चिह्न हो तो उसे शुभ समझना चाहिए। यदि गुल्फ स्थान में तिल हो तो वह दारिद्रय-कारक होता है। हाथ, कान, कपोल, कंठ अथवा बांई ओर के किसी अंग में तिल हो तो ऐसी स्त्री अपने प्रथम गर्भ से पुत्र को जन्म देती है।

चित्र ६५—जिस स्त्री के वाये गाल पर लाल रंग का तिल हो तो वह सदैव सुमधुर श्रेष्ठ भोजन प्राप्त करती रहती है।
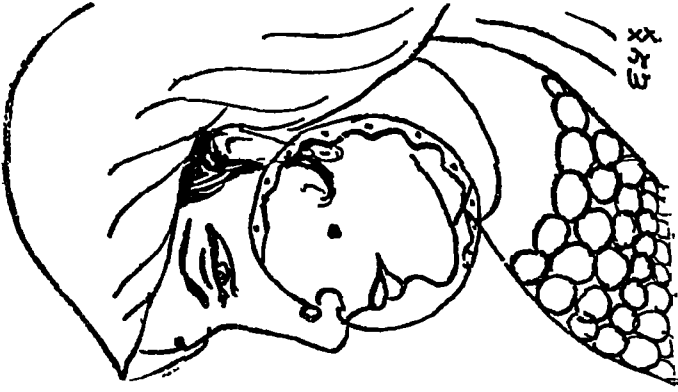
चित्र ६६— जिस स्त्री के ललाट पर काले रंग का चमकीला तिल हो, वह पांच पुत्रों की माता तथा सौभाग्यवती होती है ऐसी स्त्री स्वभाव से धार्मिक तथा दयालु प्रकृति की होती है।

चित्र ६७—जिस स्त्री की नाक के अग्रभाग पर लाल रंग का तिल हो तो उसका विवाह किसी उच्च अधिकारी के साथ होता है। परन्तु यदि तिल का रग काला हो तो ऐसी स्त्री कुलक्षणी होती है। कुछ विद्वानों का यह भी कहना है कि नासिका के अग्रभाग पर काले रंग के तिल वाली स्त्री अपनें पति को मारकर व्यभिचार वृत्ति अपनाती है।
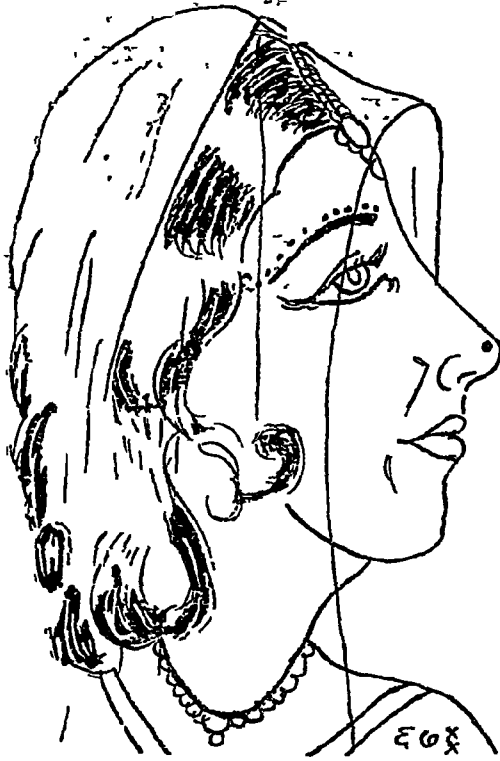
चित्र ६८—जिस स्त्री के हृदय स्थान पर तिल अथवा मस्से का का चिह्न हो उसे शुभ समझना चाहिए।

जिस स्त्री के पांव के टखने पर तिल अथवा मस्से का चिह्न हो, वह दरिद्रा होती है।

चित्र ६९—जिस स्त्री के दांये स्तन पर लाल रंग का तिल हो वह पहले चार कन्याओं को जन्म देने के बाद तीन पुत्रों को जन्म देती है।

जिस स्त्री के बांये स्तन पर लाल रंग का तिल हो वह एक पुत्र को जन्म देने के बाद विधवा हो जाती है।
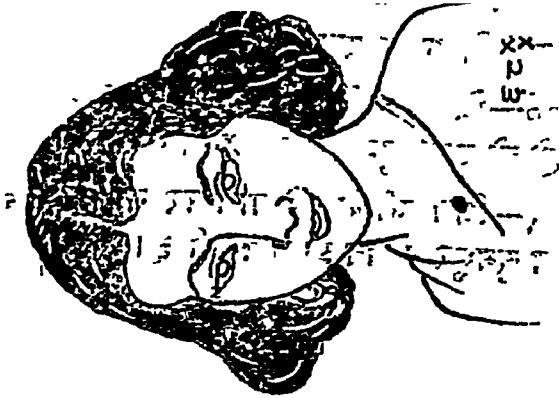
जिस स्त्री की गुदा के दांई ओर तिल का चिह्न हो तो वह राजा की रानी अथवा पृथ्वी-पालक पुत्र की माता होती है।

जिस स्त्री की नासिका के अग्रभाग में लाल रंग का मस्सा हो तो वह महारानी अथवा विपुल ऐश्वर्यशाली पुरुष की पत्नी होती है।

जिस स्त्री के हाथ, कपाल, कंठ अथवा कान के वामभाग में मस्सा अथवा तिल हो तो वह अपने पहले गर्भ से पुत्र को जन्म देती है।

जिस स्त्री के वाम पार्श्व में अथवा बांये हाथ में चमकदार तथा बड़ा तिल-चिह्न हो तो वह पुत्र-पौत्रों की वृद्धि करने वाली होती है।

जिस स्त्री की बांई ओर की कोखपर लाल रग का तिल हो तो वह सुखी-जीवन व्यतीत करती है।

स्त्री शरीरस्थ मस्सों का प्रभाव

तिल और मस्सों का प्रभाव एक जैसा बताया गया है, परन्तु कुछ विशेष स्थानों पर मस्सों का जो विशेष प्रभाव होता है, उनके सम्वन्ध में यहां लिखा जा रहा है।

चित्र ७०—जिस स्त्री के कण्ठ, ओठ, दांये हाथ अथवा बाये कान पर मस्सा हो तो उसके पुत्र उच्चपद प्राप्त करते हैं।

चित्र ७१—जिस स्त्री के बांये गाल पर लाल रंग का मस्सा हो तो वह सदैव सुमधुर भोजन प्राप्त करती है।

चित्र ७२—जिस स्त्री की दोनों भौहों के मध्यभाग में मस्सा हो तो वह स्वयं किसी बहुत ऊंचे पद को प्राप्त करती है।

मुद्रा-चिह्न

जिस स्त्री के करतल में एक मुद्रा होती है, वह राजरानी का पद प्राप्त करती है।

जिस स्त्री के करतल में दस मुद्राएं हों तो वह अत्यन्त धनवती होती है।

जिस स्त्री के करतल में दो मुद्राएं हों, वह धन-सम्पन्न होती है।

जिस स्त्री के करतल में तीन मुद्राएं हों तो वह रोगिणी होती है।

जिस स्त्री के एक करतल में दो तथा दूसरे करतल में तीन मुद्रायें हों, वह दुःखी रहती है।

जिस स्त्री के करतल में एक भी मुद्रा नहीं होती, वह दुःख भोगती है।

जिस स्त्री के करतल में अनेक मुद्राएं हों, वह सन्तानवती तथा अनेक स्त्रियों की स्वामिनी है।

स्त्रियों के पांव

पुरुषों की ही भांति भारतीय सामुद्रिक शास्त्रियों ने स्त्रियों के पांव की बनावट तथा उसके शुभाशुभ फल के सम्बन्ध में विस्तृत वर्णन किया है। उनके मत का सार-संक्षेप इस प्रकरण में दिया जाता है।

स्त्रियों के पांव की उंगलियां

स्त्रियों के पांव की उंगलियों के सम्बन्ध में शास्त्रकारों ने कहा है—

"मृदवो ङ्गुलयः शास्ताघनावृत्ताः समुन्नताः ।
दीर्घङ्गुलिभिः कुलटा कृशाभिरतिनिर्धना ।।
ह्रस्वायुष्याच ह्रस्वाभिर्भुग्नाभिर्भुग्नवर्तिनी ।
चिपिटाभिर्भवेद्दासी विरलाभिर्दरिद्रिणी ।।
परस्परं समारूढ़ाः पादांगुल्यो भवतिही ।
हृत्वावहुनपिपतीन्पर प्रैष्यातदा भवेत् ।।
यस्याः पथिमायांत्यारयोभूमेः समुच्छलेत् ।।
सर्पाशुला प्रजायेत कुलभय विनाशिनी ।।
पादे प्रदेशिनी यस्या अङ्गुष्टाप्रव्यतिक्रमेत् ।
नसाभर्तु ग्रहेतिष्टे स्वच्छन्दा कामचारिणी ।।
पादे मध्यमिका यस्य अङ्गुष्ठं च व्यतिक्रमेत् ।
दुःशीला दुर्भगाश्चैव तस्मात्तां परिवर्जयेत् ।।
यस्यास्त्वनामिका ह्रस्वा तां विदुः कलहप्रियां ।
भूमि न स्पृशतेयश्य खादतेसा पतिद्वयं ।।
यस्याः कनिष्टिकाभूमिनगच्छंत्या परिपृशेत् ।

सानिहंत्यपतिं योषा द्वितियं कुरुते पतिं ॥
अनामिका मध्यमा च यस्या भूमिं न संस्पृशेत् ।
पतिद्वयं निहत्याद्या द्वितीया च पतित्रयम् ॥
पतिहीनत्व कारिण्यौ हीनेतेद्वे इमे यदि ॥"

भावार्थ—स्त्री के पाव की उंगलिया कोमल, गोल, ऊंची उठी हुई तथा एक-दूसरी के समीप रहने वाली हों तो उन्हे शुभ समझना चाहिए।

जिस स्त्री के पांव की सभी उंगलियां अधिक लम्बी हों, वह कुलटा होती है।

जिस स्त्री के पांव की उंगलियां बहुत पतली हों, वह अत्यन्त दरिद्रा होती है।

जिस स्त्री के पांव की उंगलियां छोटी हों, वह अल्पायु होती है।

जिस स्त्री के पांव की उंगलियां टूटी-फूटी आकृति की हों, वह कुटिल तथा कपटी होती है।

जिस स्त्री की उंगलियां चपटी हों, वह दासी होती है।

जिस स्त्री के पांव की उंगलियां विरल (फैली हुई) हों, वह दरिद्रा होती है।

जिस स्त्री के पांव की उंगलिया परस्पर एक-दूसरी के ऊपर चढ़ी हुई हों, वह स्त्री अपने बहुत से पतियों को मारकर, दूसरे की दूती होती है।

जिस स्त्री के मार्ग में चलते समय वहुत धूलि उड़ती हो, उसे 'पांशुला' स्त्री कहा जाता है। ऐसी स्त्री को अपने तीनों कुलों का नाश करने वाली समझना चाहिए।

जिस स्त्री के पाव की तर्जनी उगली अंगूठे से भी आगे को ओर निकली हुई हो, उसे स्वच्छन्दा तथा कामचारिणी (व्यभिचारिणी) समझना चाहिए। ऐसी स्त्री अपने पति के घर में नही टिकती।

जिस स्त्री के पाव की मध्यमा उगली अगूठे से भी आगे निकली हुई हो, वह दुःशीला तथा दुर्भागा होती है। ऐसी स्त्री के साथ विवाह नही करना चाहिए।

जिस स्त्री के पाव की अनामिका उगली छोटी हो, उसे कलह-प्रिय (झगड़ालू स्वभाव वाली) समझना चाहिए।

जिस स्त्री के पाव की अनामिका उगली पृथ्वी पर न टिकती हो, अर्थात् चलते समय पृथ्वी से ऊची उठी हो, वह अपने दो पतियों को मारकर तीसरा पति करती है।

जिस स्त्री के पाव की कनिष्ठा उगली चलते समय पृथ्वी पर न टिकती हो अर्थात् पृथ्वी से ऊची उठी रहती हो, वह अपने पति के मरने के बाद दूसरा पति करती है।

जिस स्त्री के पाव की मध्यमा उगली चलते समय पृथ्वी का स्पर्श न करती हो, वह अपने तीन पतियों के मरने के बाद चौथा पति करती है।

जिस स्त्री के पांव की अनामिका उगली चलते समय पृथ्वी का स्पर्श न करती हो, वह अपने दो पतियो के मरने के बाद तीसरा पति करती है।

जिस स्त्री के पाव की अनामिका तथा कनिष्ठा—ये दोनों ही उंगलिया छोटी हो, वह पति-विहीन होती है।

'भविष्य पुराण' में इसी बात को निम्नानुसार कहा गया है—

"यस्याः कनिष्ठिका भूमिं न गच्छन्त्या परिस्पृशेत् ।
अनामिका मध्यमा च यस्या भूमिंन सस्पृशेत् ।।
पतिद्वयं निहन्त्याद्या द्वितीया च पति त्रयम् ।
पतिहीनत्व कारिण्यौ हीने ते द्वे इमे यदि ।।
प्रदेशिनी भवेद्यस्या अङ्गुष्ठादतिरेकिणी ।
कन्यैव कुलटा सा स्यादेष एव विनिश्चयः ।।"

इस मत के अनुसार यदि कनिष्ठा, अनामिका तथा मध्यमा—ये तीनों उंगलियां भूमि का स्पर्श न करें तो स्त्री दो पतियों के मरने के बाद तीसरा पति करती है और यदि तर्जनी उंगली पांव के अगूठे से बहुत आगे की ओर निकली हुई हो तो ऐसी स्त्री कुलटा होती है।

स्त्रियों के पांव की उंगलियों के प्रभाव के सम्बन्ध में भविष्य पुराण का कथन नियमानुसार है—

"अङ्गुल्यः संहतावृत्ता ऋज्व्यः सूक्ष्मनखास्तथा ।
कुर्वन्त्यन्तमैश्वर्यं राजभोगं च योषिताम् ।।
ह्रस्वाश्च जीवितं ह्रस्वं विरला वित्तहानये ।
दारिद्रय मूलभुग्नास्तु प्रेष्यत्वं पृथुलासु च ।।"

भावार्थ—यदि स्त्री के पांव की उंगलियां परस्पर मिली हुई, सीधी, गोल हों तथा उनके नाखून पतले और छोटे हों तो ऐसी स्त्रियां अनन्त ऐश्वर्यशालिनी होती है और वे राजसी भोगों का उपभोग करती हैं। यदि स्त्री के पांव की उगलियां बहुत छोटी हों तो उन्हें अल्पायु होने का लक्षण समझना चाहिए। यदि पाव की उंगलियां विरल हों, अर्थात् एक-दूसरी से मिली हुई न होकर अलग-अलग (छोटी) हों तो ऐसी स्त्री को धन की हानि उठानी पड़ती है। उंगलियां जिस स्थान से निकलती है, उस ओर से यदि उनका पहला

पर्व टेढा हो तो दरिद्रता का लक्षण समझना चाहिए। यदि पांव की उगलियां बहुत मोटी हों तो एसी स्त्री दासी होती है। अथवा घर में दासी के समान काम करती रहती है।

'विवेक विलास' 'गरुड़-शास्त्र' आदि ग्रंथों में स्त्री के पांव की उंगलियों के सम्बन्ध में जो मत पाये जाते हैं, उनका सार-संक्षेप नियमानुसार समझना चाहिए—

"दीर्घाङ्गुलीभिः कुलटा कृशाभिरतिनिर्धनाः।"

× × ×

"यस्या अनामिका ह्रस्वा तां विद्यात्कलहप्रियाम्॥
अङ्गुष्ठं तु व्यतिक्रम्य यस्याः पादे प्रदेशिनी।
कुमारी कुरुते जारं यौवनस्यैव का कथा॥"

× × ×

"यात्पादांगुलिरेकापि भवेद् हीना कथंचन।
येन केनापि सा सार्धं प्रायः कलह कारिणी॥"

× × ×

"ह्रस्वायुज्या च ह्रस्वाभिर्भुग्नाभिर्भुग्नवर्तिनी॥"

भावार्थ— यदि स्त्री के पांव को उंगलियां बहुत लम्बी हों तो वह कुलटा होती है। यदि पतली हों तो अत्यन्त निर्धन होती है।

जिस स्त्री के पांव की अनामिका उंगली छोटी हो, वह बहुत झगड़ालू स्वभाव की होती है। जिस स्त्री की तर्जनी उंगली अंगूठे से अधिक बड़ी हो वह कौमार्यावस्था में ही चरित्रहीन हो जाती है, युवावस्था में तो उसके लिए कहा ही क्या जाय?

जिस स्त्री के पांव की एक भी उंगली अपनी निश्चित लम्बाई से छोटी हो, वह कलहकारिणी होती है।

स्त्री के पांव की उंगलियां यदि छोटी हों तो उसे अल्पायु तथा टेढ़ी हों तो उसे टेढ़े स्वभाव वाली (झगड़ालू तथा पति के प्रतिकूल) चलने वाली समझना चाहिए।

उपर्युक्त अतिरिक्त स्त्रियों के पांव की उंगलियों के सम्बन्ध में शास्त्रकारों तथा विद्वानों के विभिन्न मतों का सार-सक्षेप में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(१) यदि पांव की उंगलियां पतली, लम्बे पर्व वाली तथा एक-दूसरी पर चढ़ी हुई हों तो वे पति सुख में कमी प्रकट करती हैं तथा इसे दरिद्रता का लक्षण भी समझना चाहिए।

(२) यदि पांव की उंगलियां परस्पर छिद्रयुक्त हों तो धन जमा नहीं होता।

(३) जिस स्त्री के चलते समय पदाघात के कारण पृथ्वी से धूलि उड़ती हो वह कुल का विनाश करने वाली होती है। इसे अत्यन्त अशुभ लक्षण समझना चाहिए।

(४) जिस स्त्री के पांव की कोई सी भी उंगली पृथ्वी का स्पर्श न करे उसे अधमा (निकृष्ट कोटि की स्त्री) समझना चाहिए।

(५) यदि तर्जनी उंगली अंगूठे से अधिक आगे निकली हो तो ऐसी स्त्री दुःखी तथा दुर्भाग्यशालिनी होती है।

(६) यदि मध्यमा उंगली पृथ्वी का स्पर्श न करे तो स्त्री कार्याकार्य का विचार न करने वाली स्वच्छन्द प्रकृति की होती है।

(७) यदि अनामिका उंगली पृथ्वी का स्पर्श न करे तो उसे अशुभ लक्षण समझना चाहिए।

(८) यदि अनामिका उंगली पृथ्वी का स्पर्श न करे तो ऐसी

स्त्री के दो पति अल्पजीवी होते है और तीसरे के साथ वह सुख-चैन का जीवन व्यतीत करती है।

(९) समुद्र ऋषि के मतानुसार जिस स्त्री के पाव की कनिष्ठा उंगली पृथ्वी का स्पर्श न करे तो वह पहले पति को मारकर दूसरे के साथ रहती है।

(१०) यदि कनिष्ठा उगली पृथ्वी का स्पर्श न करे साथ ही वह अनामिका उगली वहुत दूर भी हो अर्थात् इन दोनो उंगलियों के बीच अधिक अन्तर हो, भौहे झुकी हो तथा गाल पिचके हुए हों ऐसी स्त्री व्यभिचारिणी एव दुर्भाग्यवान होती है।

(११) यदि अनामिका उंगली वहुत छोटी हो, स्त्री झगड़ालू प्रकृति की होती है।

(१२) विष्णुधर्मोत्तर पुराण के अनुसार जिस स्त्री के पाव की कनिष्ठा उगली भूमि का स्पर्श न करे उसे साक्षात् मृत्यु समझना चाहिए अर्थात् ऐसी स्त्री के साथ विवाह करने वाले पुरुष की मृत्यु वहुत शीघ्र हो जाती है।

(१३) 'गरुड़ पुराण' के अनुसार यदि कनिष्ठा अथवा अनामिका उंगली भूमि का स्पर्श न करे और तर्जनी उगली अंगूठे से अधिक वड़ी हो तो स्त्री व्यभिचारिणी होती है।

(१४) यदि पाव की उगलियां वहुत मोटी हों तो उसे निर्धनता का लक्षण समझना चाहिए। ऐसी स्त्री जीवन भर कठोर परिश्रम करती रहती है।

(१५) यदि स्त्री के पाव की उगलिया कोमल, सघन, उन्नत, सुन्दर, तथा गोलाई लिए हुए हों तो उन्हे शुभ समझना चाहिए।

(१६) यदि पाव की उंगलिदा अगूठे के समान उन्नत पर्व वाली

अागे से नुकोलो, कोमल तथा बराबर को हों, तो ऐसी स्त्री रत्न तथा स्वर्ण की स्वामिनो होती है। इसके विपरोत होने पर दरिद्रा होती है।

स्त्रियों के पांव का अंगूठा

स्त्रियों के पांव के अंगूठे के सम्बन्ध में स्कन्द पुराण के 'काशी खण्ड' में लिखा है—

> "उन्नतो मांसलोऽङ्गुष्ठो वर्त्तुलोऽतुल भोगदः।
> वक्रो ह्रस्वश्च, विकटो दुःख दौर्भाग्यसूचकः॥
> विधवा विपुलाङ्गुष्ठा दीर्घाङ्गुष्ठेन दुर्भगा॥"

भावार्थ—जिस स्त्रो के पांव का अंगूठा उन्नत मांसल तथा गोल हो, वह विपुल भोगों को प्राप्त करती है अर्थात् ऐश्वर्यशालिनी होती है। यदि पांव का अंगूठा छोटा अथवा विकट (बेढ़ंगा) हो तो उसे दुःख एवं दुर्भाग्य का सूचक समझना चाहिए। यदि पाव का अंगूठा बहुत बड़ा हो तो स्त्री विधवा होती है और यदि अधिक लम्बा हो तो वह दुर्भाग्यकारक होता है।

'सामुद्रिक तिलक' आदि अन्य ग्रथों में स्त्रियों के पाव के अंगूठे के सम्वन्ध में जो अभिमत प्रकट किया गया है, उसका सार-संक्षेप नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

(१) यदि स्त्री के पांव का अगूठा, छोटा, चपटा अथवा टेढा हो तो कुल क्षय होता है अर्थात् स्त्री या तो विधवा हो जाती है या निस्संतान रहती है अथवा उसकी सन्तान जीवित नहीं रहती।

(२) यदि अंगूठा छोटा और गोल हो तो वह स्त्री अपने पति से द्वेष रखती है।

(३) यदि पाव का अगूठा लम्बा हो तो ऐसी स्त्री पति का अप्रिय करने वाली होती है।

(४) यदि पांव का अगूठा अधिक लाल रग का हो तो उस स्त्री का पति उसे आदर सम्मान नही देता।

(५) यदि स्त्री के पाव का अगूठा कुछ गोलाई लिए हुए हो तो उसे अपने पति का हनन करने वाली समझना चाहिए।

(६) यदि किसी स्त्री के पाव का अगूठा पूरी तरह गोल हो तो वह पतिव्रता होती है

स्त्रियों के पांव नाखून

स्त्रियों के पाव के नाखूनो के सम्बन्ध में भविष्य पुराण में लिखा है—

"सुभगत्व नखैः स्निग्धैराताम्रैश्च धनाढ्यता।
पुत्राःस्यु रुन्नतैरेभिः सुसूक्ष्मैश्चापि राजता॥
पाण्डुरैः स्फुटितै रूक्षैर्नीलैः धूम्रैस्तथाम्बरैः।
निःस्वता भवति स्त्रीणां पीतैश्चाभक्ष्यभक्षणम्॥"

भावार्थ—यदि स्त्री के पांव के नाखून चिकने हो तो सौभाग्यशालिनी होती है रक्ताभ वर्ण के हों तो धन-सम्पन्न होती है और उन्नत हो तो अनेक पुत्रो की माता होती है। यदि नाखून सुन्दर तथा पतले हो तो ऐश्वर्यवती होती है। यदि नाखून सफेदी लिए हुए, फटे, रूखे, नीलापन लिए हुए, खुरदरे अथवा विवर्ण हो तो दरिद्रता का लक्षण समझना चाहिए। यदि नाखूनो का रंग पीलापन लिए हुए हो तो स्त्री उचित-अनुचित का विचार किये विना भक्ष्याभक्ष्य का सेवन करती रहती है।

स्त्रियों के पादतल (तलुए)

स्त्रियों के पादतल (पांव के तलवो के सम्बन्ध में 'सामुद्रिक तिलक' में लिखा है—

"असितं दौर्भाग्याय श्वेतं दुःखाय योषाणाम् ।
शूर्पाकृतिभिश्चेद्यः कुटिलैः स्युर्दुर्भगा श्चरणतलैः ॥"

भावार्थ—यदि स्त्री का पादतल काले रंग का हो तो उसे दुर्भाग्य का लक्षण समझना चाहिए। यदि पादतल का रंग श्वेत हो तो स्त्री को दुःख प्राप्त होता है यदि पादतल शूर्प (सूप) की आकृति का अथवा कुटिल (टेढा) हो तो ऐसी स्त्री दासी होती है और कष्ट भोगती है ।

स्त्रियों के पदतल के सम्बन्ध में अन्य मतों का साराश इस प्रकार है—

(१) स्त्रियों के पदतल चिकने, मांसल, कोमल तथा सम हों—तो उन्हें शुभ समझना चाहिए।

(२) पदतल में थोड़ी-सी उष्णता (गरमाई) रहे तो वह शुभ लक्षण है।

(३) यदि पदतल में पसीना आता हो तो उसे अशुभ लक्षण समझना चाहिए।

(४) रूखे, विवर्ण, खुरदरे, बीच में खण्डित, जिनमें परछाई-सी दिखाई दे जो सूप की आकृति के हों अथवा जो बहुत सूखे हों—ऐसे पदतल दुःख तथा दौर्भाग्य देने वाले होते है।

(५) यदि पांव के तलवों का मध्य भाग पृथ्वी का स्पर्श न करे तो उसे अशुभ समझना चाहिए।

स्यित्रों के पाद पृष्ठ

स्त्रियों के पाद पृष्ठ (पाव के ऊपरी भाग) के विषय में शास्त्र-कारो के मत का साराश निम्नानुसार समझना चाहिए—

(१) जिस स्त्री के पाद पृष्ठ उन्नत हों वह किसी उच्चाधिकारी की पत्नी तथा वैभवशालिनी होती है।

(२) जिस स्त्री के पाद पृष्ठ पर पसीना न आता हो नसे दिखाई न देती हों, जो चिकना, मांसल तथा कोमल हो, उसे शुभ समझना चाहिए।

(३) यदि स्त्री के पाद पृष्ठ का मध्य भाग नीचा हो तो वह दरिद्रा होती है। यदि पाद पृष्ठ पर नसे उभरी हुई हो तो वह यात्रा करने वाली होती है। यदि पाद पृष्ठ पर रोंये हो तो वह दासी होती है और यदि पाद पृष्ठ मास से रहित हो तो वह दुर्भाग्यशालिनी होती है।

स्त्रियों के गुल्फ (टखने)

स्त्रियों के गुल्फ (टखनो) के सम्बन्ध में शास्त्रकारों का मत नीचे लिखे अनुसार है—

(१) जिस स्त्री के पाव के गुल्फ चिकने तथा गोल हों और जिन पर नसे दिखाई न देती हों वे धनाढ्य होती है और उनके दोनों कुल (पति-कुल तथा पित्र-कुल) के लोग सम्पन्न होते हैं।

(२) मांसल, शिरा-विहीन, चिकने तथा गोल गुल्फ शुभ होते है।

(३) ऊचे-नीचे, बाहर की ओर निकले हुए, ढीले तथा रूखे गुल्फ दुर्भाग्य-सूचक होते है।

गिर्ग ऋसि का मत गुल्फों के सम्बन्ध में यह है—

> "अत्युन्नताभ्यन्तरत: शिराला।
> गुल्फा विशालाश्च भवन्ति यासाम्॥
> प्रजान विन्दन्ति धनं न भार्या।
> एता गुल्फ दोषैर्विधवा भवन्ति॥"

भावार्थ—अत्यन्त उन्नत, बाहर की ओर निकले हुए तथा जिनमें नसें दिखाई देती हों, ऐसे गुल्फ वाली स्त्री निस्सन्तान, निर्धन तथा विधवा होती है।

'समुद्र ऋषि' का कहना है—

> "गुल्फैश्च महिषा करिर्बन्धनं वधमाप्नुयात्।
> निगूढ़ गुल्फा या नारीसात्यन्तं सुखमेधते॥"

भावार्थ—यदि स्त्री के पांव के गुल्फ भैंसे की तरह बाहर को निकले हुए हों तो वह बन्धन को प्राप्त होती है अर्थात् या तो वह जेल-यात्रा करती है अथवा परतन्त्र बनी रहती है। इसके विपरीत जिस स्त्री के गुल्फ निगूढ़ (मासल) होते हैं वह अत्यन्त सुख प्राप्त करती है।

स्त्रियों की पांव की एड़ी

स्त्रियों के पांव की एड़ी के सम्बन्ध में स्कन्द पुराण का मत निम्नानुसार है—

> "उन्नत पार्ष्णि: दुःशीला महापार्ष्णि स्तु बन्धकी।
> दीर्घपार्ष्णि: परिक्लिन्ता समपार्ष्णि स्तु शोभना॥"

भावार्थ—बहुत उन्नत एड़ी वाली स्त्री दुःशीला होती है, बहुत बड़ी एड़ी वाली स्त्री बन्धकी (व्यभिचारणी) होती है। बहुत दीर्घ

एड़ी वाली स्त्री दुःखी रहती है तथा सम (वरावर) की एड़ी शुभ होती है।

'विवेक विलास' में लिखा है

"कृपणा स्यान्महापार्ष्णि दीर्घ पार्ष्णिस्तु कोपना।
दुःशीलोन्नत पार्ष्णिश्च निन्द्या विषम पार्ष्णिका ॥"

भावार्थ—वहुत बड़ी एड़ी वाली कृपण होती है, अधिक चौड़ी एड़ी वाली स्त्री क्रोध करने वाली होती है, उन्नत एड़ी वाली स्त्री दुःशीला होती है तथा विषम (उंची-नीची) एडी वाली स्त्री निन्दनीय होती है।

संक्षेप में, सम अर्थात् वरावर की एड़ी शुभ होती है। यदि एड़ी वहुत अधिक लम्बी अथवा चौड़ी हो तो उसे दुर्भाग्य-सूचक समझना चाहिए। जिस स्त्री की एड़ी वहुत वड़ी हो, वह व्यभिचारिणी होती है।

स्त्री की जांघे, घुटने तथा पिंडलियां

जिस स्त्री की जांघें रोम-विहीन, सम, चिकनी, गोल, नस विहीन तथा मनोहर हों, वह राजरानी (ऐश्वर्यशालिनी) होती है। जिसकी जाघो के रोम कूप मे से एक ही रोम निकले, वह वैभवशालिनी होती है, दो रोम निकलें वह सुखी-जीवन व्यतीत करती है और तीन रोम निकलें तो विधवा होकर दु.ख प्राप्त करती है।

जिन स्त्रियो के उरु नस-विहीन, हाथी की सूंड़ की भाति गोल चिकने तथा रोम-रहित हो, वे श्रेष्ट होतीं हैं। जिनके उरु रोम युक्त हों वे विधवा हो जाती हैं। जिनके उरु चपटे हों वे दुर्भाग्य-शालिनी होती हैं, जिनके उरु के बीच नसों के द्वारा गड्ढा सा दिखाई दे वे दु.ख प्राप्त करती हैं। जिनकी उरुओं का मांस कठोर हो, व दरिद्रा होती हैं।

जिस स्त्री के दोनों घुटने गोल तथा मांसल हों, वह धनी तथा सुखी होती है। जिसके घुटने मास विहीन हों वह स्वच्छन्द चारिणी (व्याभिचारिणी) होती है जिसके घुटने अत्याधिक पुष्ट हों, वह दरिद्रा होती है।

स्त्रियों के पांवों के सम्मिलित लक्षण

स्त्रियों के पावों के सम्मिलित लक्षणों के सम्बन्ध में भविष्य पुराण में यह लिखा है—

"प्रतिष्ठितातलाः सम्यक् रक्ताम्भोजसमत्विषः।
तादृशाश्चरणाधन्या बोषितां भोग वर्द्धना.॥
करालैरति निर्मांसै रूक्षै रथ शिराततैः।
दारिद्रयं दुर्भगत्वं च प्राप्नुवन्ति न संशयः॥"

भावार्थ—जिन स्त्रियों के पांव के तलुए चलते समय भूमि से भली-भांति संलग्न रहे तथा जिनका रग लाल कमल के समान हो वे धन्य हैं। ऐसी स्त्रिया धन ऐश्वर्य आदि भोगों की स्वामिनी होती है। अत्यन्त कराल, मास-विहीन, रूखे तथा नसें दिखाई देने वाले पांव, दारिद्रय एवं दुर्भाग्य के सूचक होते है।

गरुड़ पुराण में लिखा है—

"यस्याः स्निग्धौ समौ पादौ तनु ताम्रनखौ तथा।
श्लिष्टाङ्गुली चान्नताग्रौ तौ प्राप्य नृपतिर्भवेत्॥
निगूढ गुल्फोपचितौ पद्मकान्ति तलौशुभौ।
अस्वेदनौ मृदुतलौ मत्स्याङ्कुश यवाङ्कितौ।
वज्राब्ज हलचिह्नौ च दास्याः पादौ ततोन्यथा॥"

भावार्थ—जिस स्त्री के दोनों पांव चिकने और सम हों, नख ताम्र-वर्ण के तथा पतले हों उगलियां परस्पर भिड़ी हुई हों, पांव अपने

अग्रभाग में उन्नत हों, गुल्फ मांसल हों, पांव के तलुए पद्म जैसी कान्ति के हो, उनमे पसीना न आता हो, कोमल हो और उनमें मत्स्य, अकुश, यव, वज्र, कमल तथा हल के आकार के चिह्न हों तो उन्हें अत्यन्त श्रेष्ठ समझना चाहिए।

स्त्री के अन्य शुभाशुभ लक्षणो के सम्वन्ध में शास्त्रों के वचन निम्नानुसार हैं—

वाराह मिहिर ने भी इन लक्षणो को शुभ वताते हुए कहा है कि जो पुरुष ऐसे पांवों वाली कन्या के साथ विवाह करता है, वह राजा हो जाता है। वाराह मिहिर ने स्त्री के पदतल में तलवार के अकार का चिह्न होना भी शुभ वताया है।

स्थूल पादा च कन्या सर्वांगेषु च लोमशा।
स्थूलोष्ठदन्ता यस्याः स्मुर्विधिवांतां विनिर्दिशेत्॥
यस्या हस्तौ च पादौ च मुख च विकृतं भवेत्।
उत्तरोष्ठे च रोमाणि सा क्षिप्रं भक्षयेत्पतिम्॥

भावार्थ—जिस स्त्री के पांव मोटे हों, सर्वांग में रोएं हों तथा ओठ और दांत मोटे हो, वह विधवा हो जाती है। जिसके हाथ, पांव तथा मुख विकृत आकार के हो, ऊपर के ओठ पर रोएं हों, वह अपने पति की शीघ्र मृत्यु का कारण वनती है।

पादौ यस्याः स्फुटितौ रोमश चिमिटांगुली निगूढ़ नखौ।
कच्छप पृष्ठ नखौ वा सा दुःख दरिद्रता हेतुः॥
विपुल मुखी विपुल कुचा विपुल पदा विपुल कर्णहृन्नासा।
विपुलाङ्गुलिका प्रायो भर्तृघ्नी जायते योषित्॥

भावार्थ—जिस स्त्री के पांव फटे हुए से हो, रोम युक्त हों, पांव की उंगलियां चिपटी हों तथा उनके नाखूनो पर चारो ओर चमड़ा

ऊपर की ओर चढ़ा हुआ सा हो तथा जो नाखून कछुए की पीठ की भांति ऊंचे हों—उन्हें दरिद्रता का लक्षण समझना चाहिए।

बहुत बड़े मुंह, बड़े स्तन, बड़े पांव, बड़े कान, बड़ी छाती, बड़ी नाक तथा बड़ी उंगलियों वाली स्त्री पति का हनन करने वाली होती है अर्थात् उसका पति मर जाता है।

कूर्म पृष्ठ नखाः यस्याः स्निग्धभाव विर्वजिता।
वाह्यांगुलितलौ पादौ तां कन्यां परिवर्जयेत्॥
स्थूल पादा च या कन्या दासी तां च विनिर्दिशेत्।
तथैवोत्कट पादा च वर्जनीया प्रयत्नतः॥

भावार्थ—जिस स्त्री के नाखून कछुए की पीठ की भांति बीच में ऊंचे उठे हुए हों, जिनमें चिकनापन न हो अर्थात् जो खुरदरे और रूखे हों एवं जिसके पांव की उंगलियां बाहर की ओर निकली हों—ऐसी कन्या से विवाह नही करना चाहिए।

जिस कन्या के पांव बहुत मोटे हों, वह दासी होती है। जिसके पांव बहुत उत्कट हों अर्थात् बड़े बेडौल और भयानक हों उससे भी विवाह नहीं करना चाहिए।

वक्रां गुलितलौ पादौ कन्यांता परिवर्जयेत्॥

भावार्थ—जिस कन्या के पांव की उंगलियां तथा तलुए टेढ़े हों उसके साथ विवाह नहीं करना चाहिए।

पदतल की रेखाएं

स्त्री तथा पुरुषो के पदतल (पाव के तलुए) में भी विभिन्न प्रकार की रेखाए तथा चिह्न पाये जाते हैं। पाश्चात्य विद्वानों ने पद-तल की रेखाओं के सम्बन्ध में विचार नही किया है, परन्तु भारतीय सामुद्रिक शास्त्रकारो ने हाथ तथा ललाट की रेखाओं की भांति ही पदतल की रेखाओ तथा चिह्नो के शुभा-शुभ प्रभाव के सम्बन्ध में भी अपने विचार प्रकट किये हैं। यद्यपि इस विषय की सामग्री अधिक नही पाई जाती, परन्तु जितनी कुछ वर्तमान काल में उपलब्ध है, पाठकों की जानकारी के लिए उसका सार सक्षेप इस प्रकरण में प्रस्तुत किया जा रहा है।

स्त्रियों के पदतल की रेखाएं तथा चिह्न

स्त्रियों के पदतल में पाई जाने वाली रेखाओं तथा चिह्न के सम्वन्ध में 'स्कन्द पुराण' 'सामुद्रिक तिलक', 'गर्ग सहिता' 'गरुड़ पुराण' अदि में जो कुछ कहा गया है, उसे नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चित्र ७४—जिस स्त्री के पांव की तर्जनी उंगली में एक स्पष्ट रेखा हो उसका विवाह शीघ्र होता है और उसका पति अत्यधिक स्नेह करता है।

चित्र ७५—जिस स्त्री के पदतल में चक्र ध्वजा, छत्र, स्वस्तिक अथवा पद्म चिह्न होता है, वह अत्यधिक ऐश्वर्यशालिनी होती है और उसका विवाह किसी उच्च पदाधिकारी पुरुष के साथ होता है।
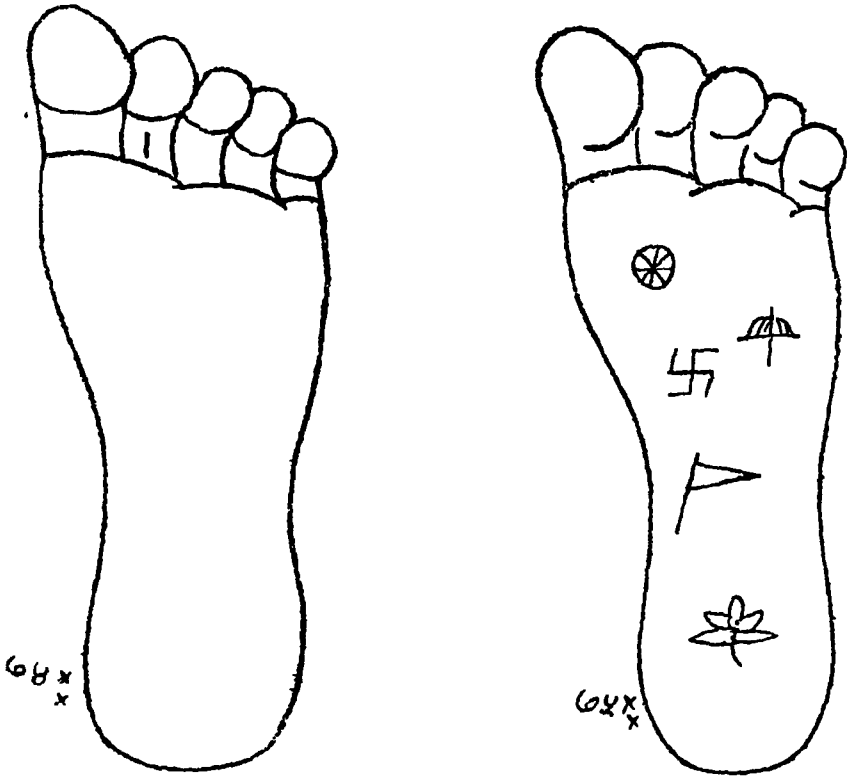
चित्र ७६—जिस स्त्री के पदतल में माला, अंकुश अथवा दांई ओर को घुमा हुआ आवर्त चिह्न हो उसका विवाह श्रेष्ठ तथा सम्माननीय कुल में होता है और उसे राजा के समान ऐश्वर्यशाली पति की प्राप्ति होती है।

चित्र ७७—यदि स्त्री के पदतल में चक्र, शंख अथवा मत्स्य चिह्न हो तो उसका पति पृथ्वी पति (भूमि स्वामी) होता है।
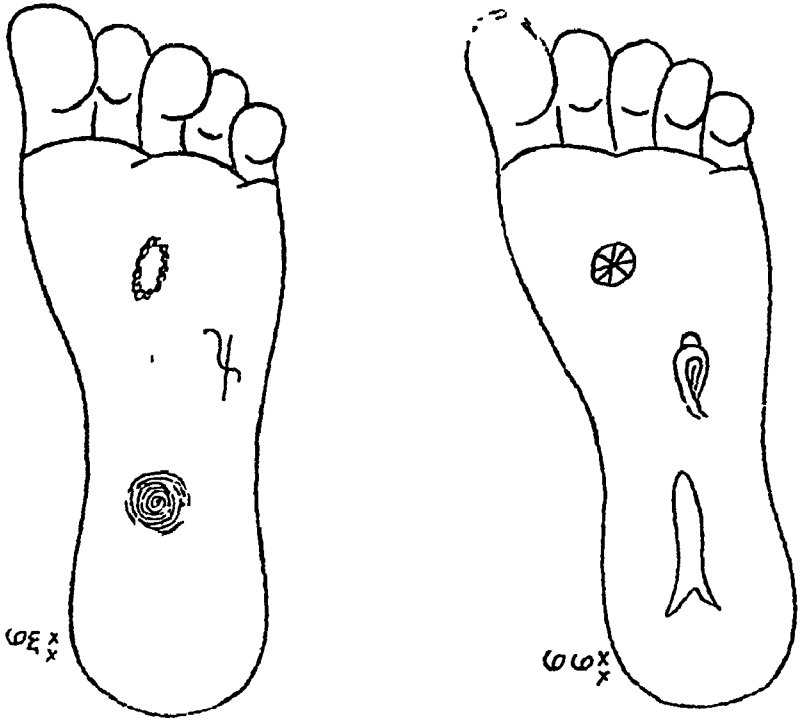
चित्र ७८—जिस स्त्री के पदतल के मध्य भाग से एक रेखा चल कर मध्यमा उंगली तक सीधी चली जाय वह अखण्ड सुख एवं भोगों का उपभोग करती है। ऐसी ऊर्ध्व रेखा वाली स्त्री अपने पति को अत्यन्त प्रिय होती है तथा उसका पति भी अत्यधिक धनी होता है।

चित्र ७९—जिस स्त्री के पदतल में सर्प अथवा चूहे के आकार की रेखा हो, वह दुःख एवं दारिद्रय को भोगती है।
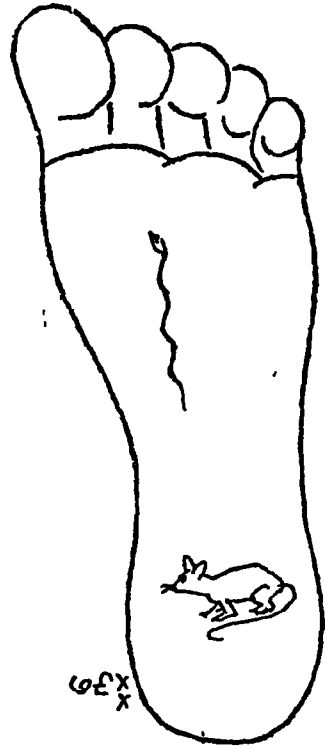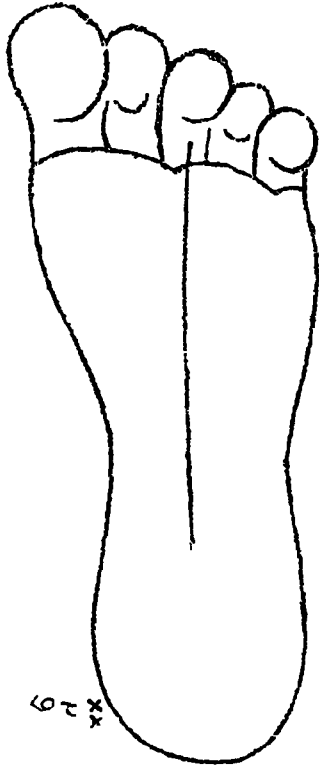
चित्र ८०—जिस स्त्री के पदतल में घोड़ा, हाथी, यव, तोमर, पर्वत, अंकुश, स्तंभ, कुण्डल, बिल्व, रथ, अथवा वेदी जैसे एक अथवा अनेक चिह्न हों, वह अत्यन्त प्रतिष्ठित एव उच्च पदाधिकारी व्यक्ति की पत्नी होती है। पदतल में ऐसे चिह्नों वाली स्त्री अपने जीवन के सब प्रकार के सुख, आनन्द एव ऐश्वर्यों का उपभोग करती है।

चित्र ८१—जिस स्त्री के पांव में कुत्ता, सियार, भैंसा, उल्लू अथवा कौआ जैसी आकृति के चिह्न हों, वह अनेक प्रकार के दुःख भोगती है।

जिस स्त्री के पांव में चन्द्र, सूर्य, नक्षत्र, पृथ्वी, चक्र, चामर, व्यजन, तोरण, सिंह, वछड़ा, स्वस्तिक, पूर्ण कुंभ, मत्स्य, हंस, कमल पद्म तथा छत्र जैसा चिह्न हो, वह सब प्रकार के गुण, सौभाग्य ऐश्वर्य तथा समृद्धि की स्वामिनी तथा सन्ततिवान होती है।

टिप्पणी—स्त्रियों के पदतल में पाये जाने वाले जिन शुभ चिह्नों का वर्णन ऊपर किया गया है, वे जितनी अधिक संख्या में हों उतना
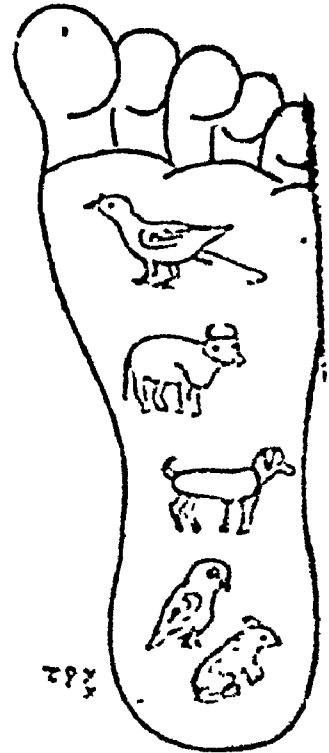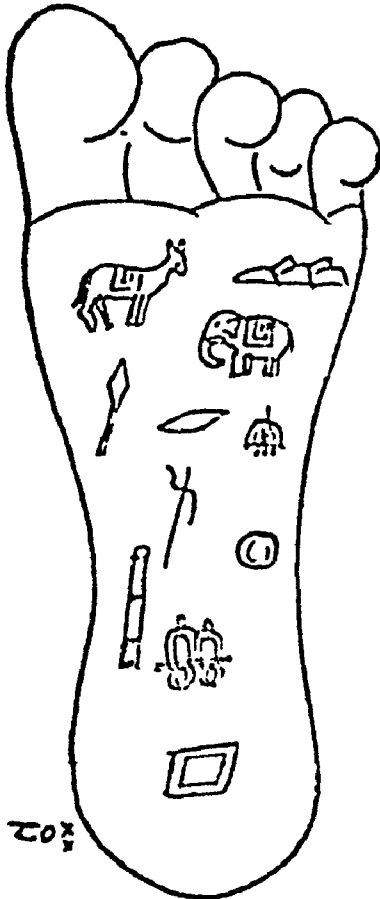
[स्त्री के पाँवों में विविध प्रकार के चिह्न]

ही अधिक शुभ फल प्राप्त होता है। इसी प्रकार जिन अशुभ चिह्नों का वर्णन किया गया है, वे जितनी अधिक संख्या में हों, उतना ही अशुभ फल प्राप्त होता है। न्यूनाधिक संख्या में शुभ अथवा अशुभ चिह्न होने से फल भी न्यूनाधिक ही समझना चाहिए।
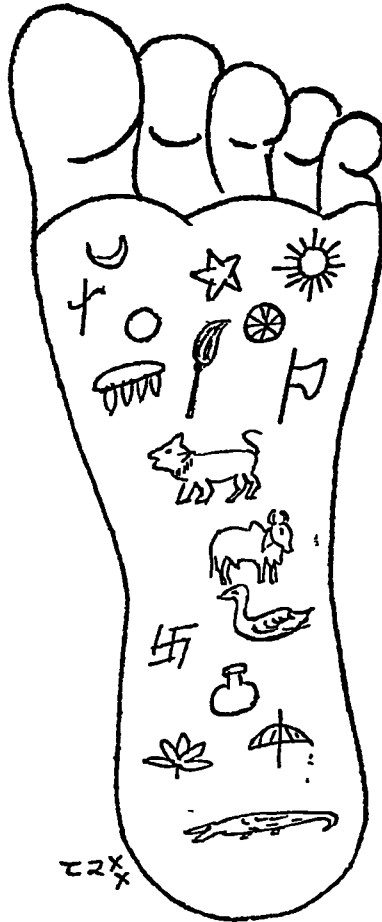
[स्त्रियों के पांवों में विविध प्रकार के चिह्न]

पुरुष तथा स्त्री के पदतल की रेखाएं

अब 'स्कन्द शारीरिक' के मतानुसार पदतल की विभिन्न रेखाओं के शुभाशुभ फल का वर्णन किया जाता है। यह फलादेश पुरुष तथा स्त्री दोनों पर लागू होता है। पुरुष के दाएं पाव में तथा स्त्री के बाएं पांव में इन रेखाओं तथा चिह्नों की अवस्थिति का प्रभाव अधिक होता है। पुरुष के बाएं तथा स्त्री के दाएं पांव में यदि ये रेखाएं अथवा चिह्न हों तो उनका फल कुछ न्यून रह जाता है, परन्तु पूर्णतः समाप्त नही हो जाता।

पदतल में पाई जाने वाली रेखाओं के नाम तथा उनके प्रभाव को नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

ऊर्ध्व-रेखा

चित्र ८३—जिस प्रकार हथेली में भाग्य रेखा होती है, उसी प्रकार पदतल में ऊर्ध्व रेखा पाई जाती है। यह ऊर्ध्व रेखा जितनी अधिक लम्बी, गहरी, स्पष्ट तथा निर्दोष हो जातक उतना ही अधिक सुखी तथा भाग्यशाली होता है। यदि यह रेखा ऐड़ी के निचले भाग से आरभ हुई हो तो और भी अधिक शुभ फल देती है।

चित्र ८४—यदि पदतल में ऊर्ध्व रेखा के नीचे तीन रेखाएं हों अर्थात् तीन रेखाएं आकर परस्पर एक स्थान पर मिल रही हों और वहा से एक रेखा पाव की उगलियो की ओर सीधी लम्बी चली जाय तो ऐसी रेखा वाला जातक पूर्ण ऐश्वर्यशाली होता है। उसे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सुख तथा सफलता की प्राप्ति होती है।
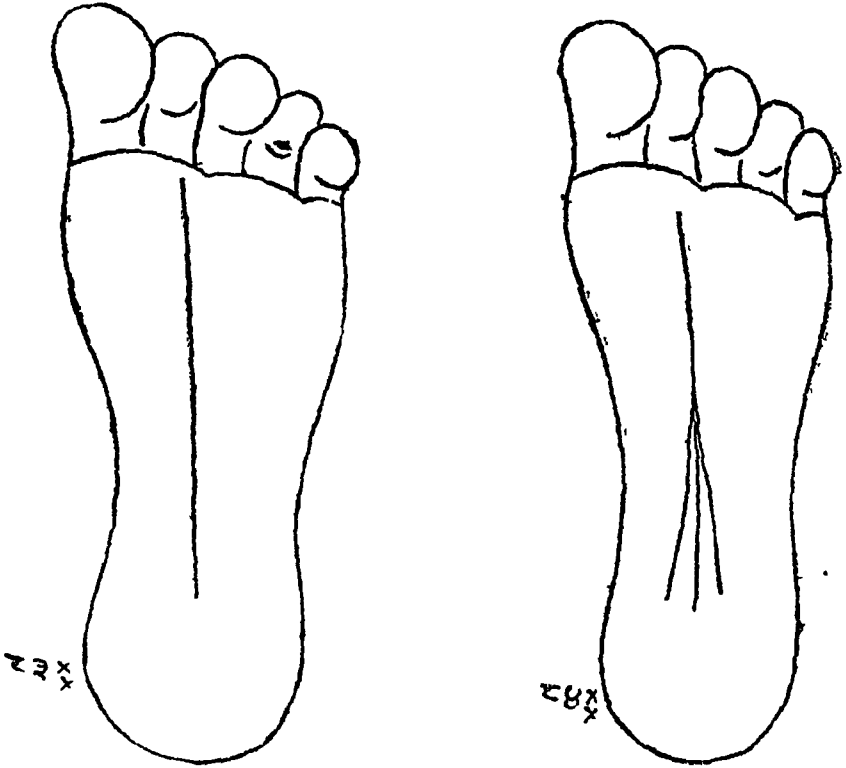
मदाघूर्णा-रेखा

चित्र ८५—यदि पांव की ऐड़ी से लेकर पिंडली तक (हाथ की तर्जनी उंगली के बराबर लम्बी) जो बिना कटी रेखा जो किसी-किसी पांव में दिखाई देती है, उसे 'मदाघूर्णा' कहा जाता है। ऐसी रेखा वाला जातक मद्य पीने वाले लोगों के संसर्ग में रहता है तथा अपने स्वजन बन्धु-बाधव पुत्र आदि से विरोध रखता है।

मद-रेखा

चित्र ८६—जो रेखा पांव के तलुए से मध्य-उंगली तक जाती है, उसे मद रेखा कहते हैं ऐसी रेखा जिस व्यक्ति के पांव में हो वह मद
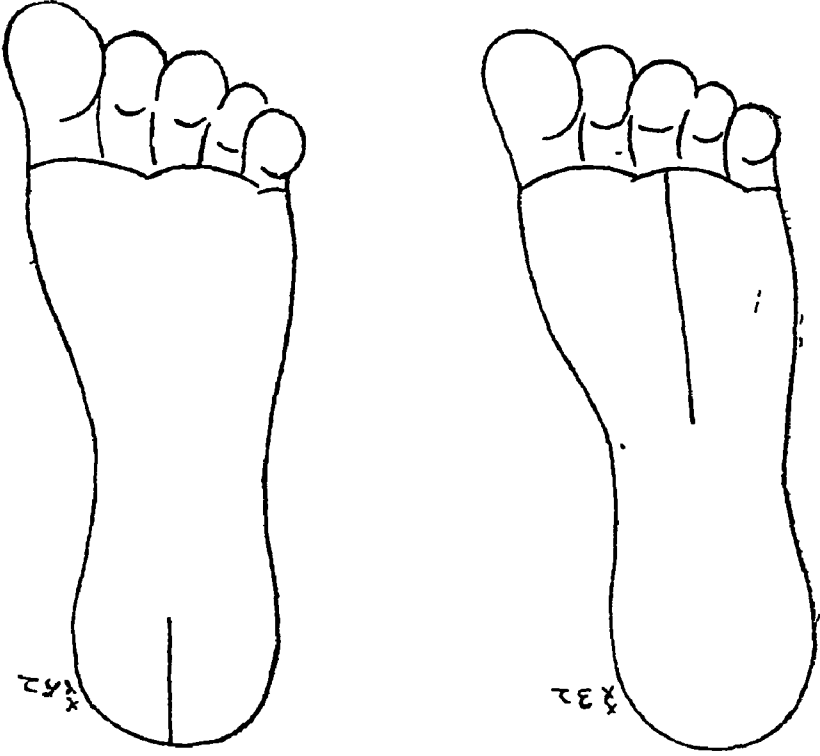
तथा अन्य सभी वस्तुओं का दान करने की सामर्थ्य रखने वाला होता है। यह रेखा पदतल के केवल चौथाई भाग में होती है तथा इसे शुभ माना जाता है।

अलसा-रेखा

चित्र ८७—यदि पूर्वोक्त 'पद रेखा' स्पष्ट हो तथा मध्यमा उंगली की ओर जाकर अनामिका उगली की ओर को जाय तो उसे 'अलसा रेखा' कहा जाता है ऐसी रेखा जिस व्यक्ति के पदतल में होती है, वह आलसी होता है।
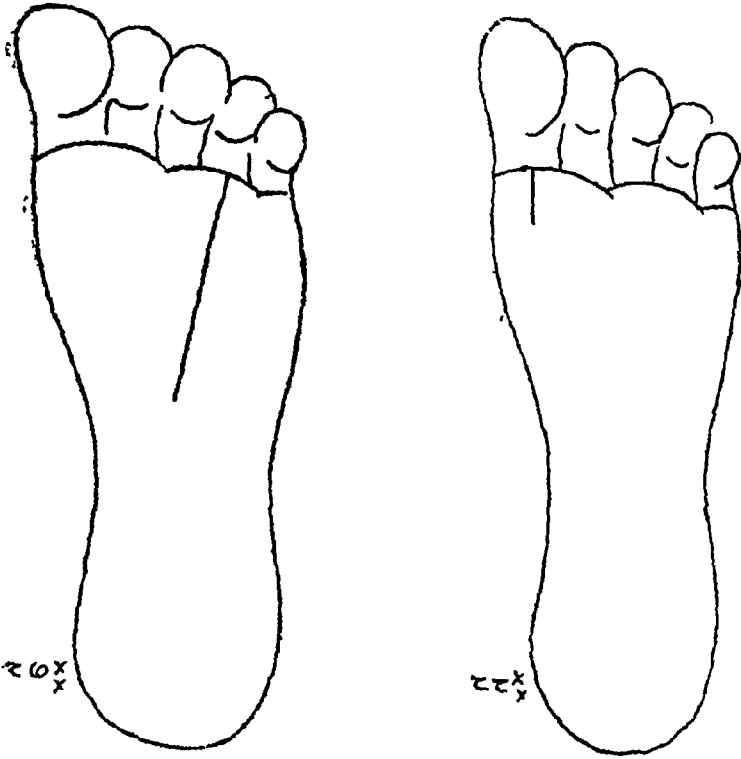
द्वास्था-रेखा

चित्र ८८—बाएं पांव के अंगूठे के नीचे स्थित बंधनी रेखा के नीचे यदि कोई रेखा हो तो उसे 'द्वास्था रेखा' कहा जाता है यह रेखा जिस व्यक्ति के पांव में होती है, वह धनवान, धर्मात्मा, यशस्वी तथा गुणवान होता है। यह रेखा जितनी अधिक लम्बी होती है उतनी ही अधिक शुभ फल प्रदान करती है।

बालिका-रेखा

चित्र ८९—पूर्वोक्त 'द्वास्था रेखा' से एक अंगुल की दूरी पर यदि कोई रेखा हो तो उसे 'बालिका-रेखा' कहा जाता है। ऐसी रेखा जिस व्यक्ति के पांव में सुन्दरवर्ण वाली हो वह द्वास्था रेखा के समान ही शुभ फल को प्राप्त करता है। यदि इस रेखा का रंग काला हो तो जातक कृपण (लोभी) होता है।
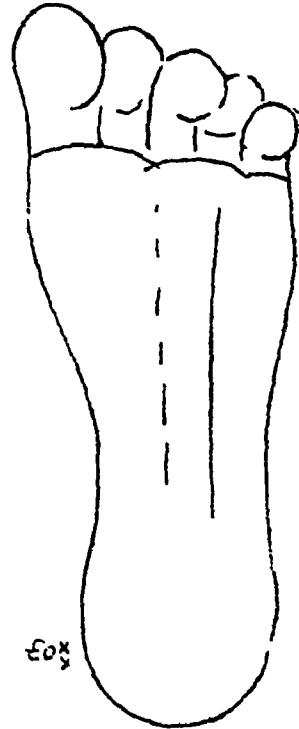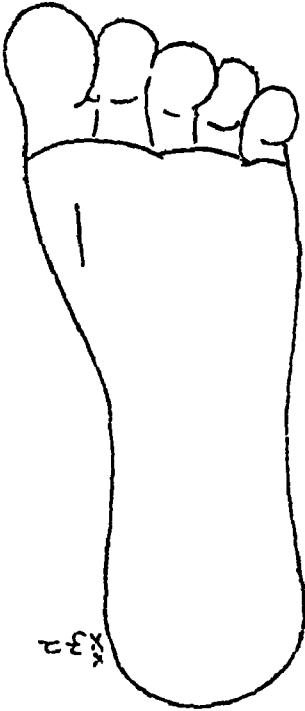
शाकटायिनी-रेखा

चित्र ९०—ऊर्ध्व रेखा की भांति ही पदतल के मध्य में यदि कोई अन्य रेखा हो तो उसे 'शाकटायिनी रेखा' कहा जाता है।

'शाकटायिनी रेखा' भी ऊर्ध्व रेखा की भांति ही शुभ फल प्रदान करती है। ऐसी रेखा वाला जातक धन-धान्य, कीर्ति, यश तथा हर प्रकार के सुख-समृद्धि एवं वैभव का उपभोग करने वाला होता है।

यदि यह रेखा मूंगे के समान कान्ति वाली हो तो पुरुष जातक उच्चपदाधिकारी होता है। तथा स्त्री जातक किसी उच्चपदाधिकारी की पत्नी अथवा महारानी होती है।

शंकु-रेखा

पदतल में ऐड़ी के नीचे जो रेखा होती है। उसे 'शंकु' रेखा कहा जाता है।

ऐसी रेखा जिस जातक के पांव में होती है वह अपनी पूर्व प्रवृत्तियों से विच्छेद कर लेता है अर्थात् बाल्यावस्था एवं युवावस्था के प्रारंभ में उसकी जिन कार्यों में प्रवृति अथवा रुचि होती है, आयु के बढ़ जाने पर वह उन कार्यों को छोड़कर, उनसे भिन्न कार्यों को करने लगता है।

आत्रोटन-रेखा

चित्र ६२—पांव के अंगूठे से लगभग एक अंगुल की दूरी पर जो रेखा प्रारंभ होती है, उसे 'आत्रोटन रेखा' कहा जाता है।

यह रेखा जिस व्यक्ति के पदतल में होती है, वह आलस्य-हीन होता है।
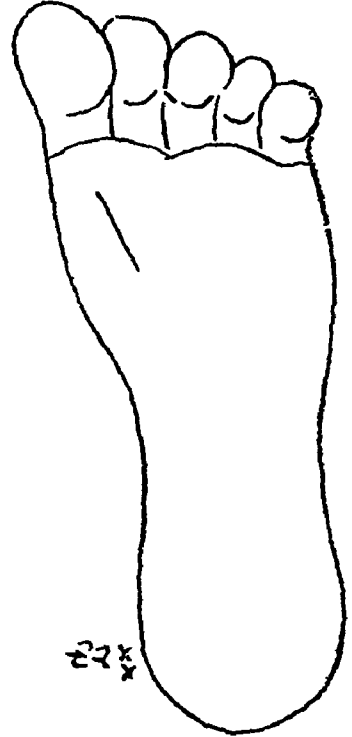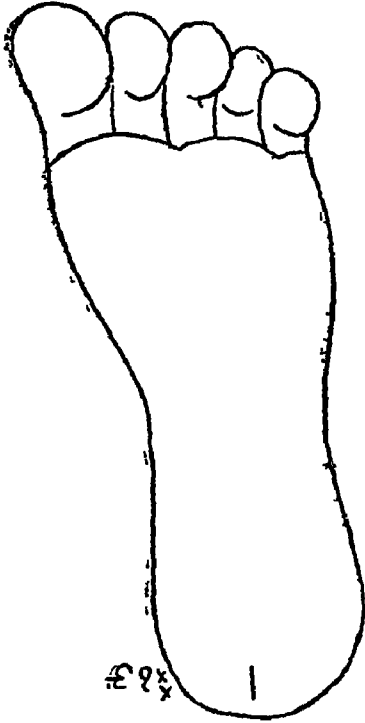
कन्दु-रेखा

चित्र ९३—ऐड़ी के नीचे चार अंगुल लम्बी कोई रेखा हो तो उसे 'कन्दु रेखा' कहा जाता है ऐसी रेखा जिस जातक के पांव में होतो है वह चाहे स्त्री हो या पुरुष चोर होता है।
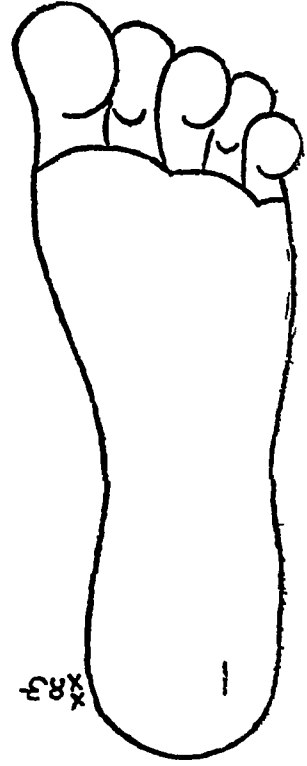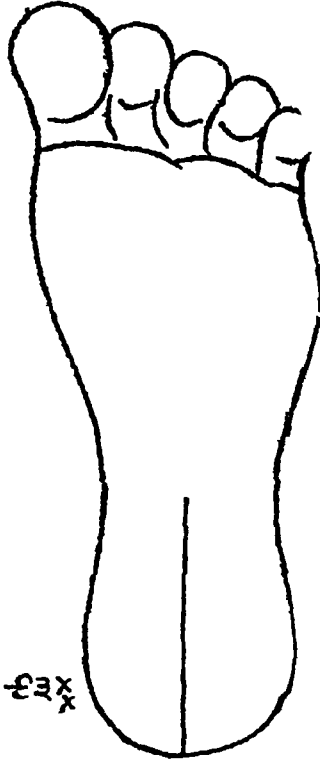
अन्य रेखाएं तथा लक्षण

पदतल में पाई जाने वाली अन्य रेखाओं तथा लक्षणों का शुभा-शुभ फल नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चित्र ९४— यदि ऐड़ी में किसी स्थान पर एक अंगुल लम्बी कोई रेखा हो तो पुरुष जातक को स्त्री का सुख तथा स्त्री जातक को पुरुष का सुख प्राप्त होता है।

चित्र ९५—यदि बाएं पाव की एड़ी पर तीन रेखाए हों तो जातक श्रेष्ठ आयु धार्मिकता तथा रति-सुख को प्राप्त करने वाली होती है।
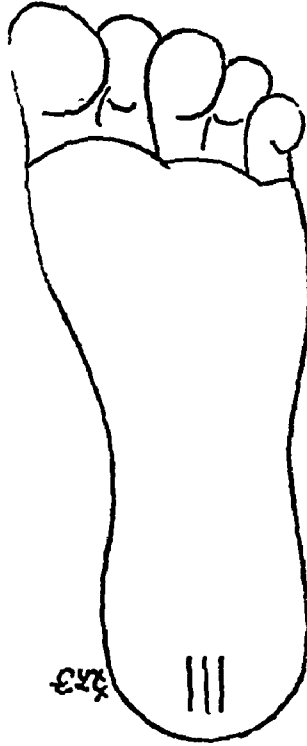
(३) यदि पाव के तलुए तथा उंगलिया भली-भाति पृथ्वी का स्पर्श करते हों तो ऐसा पुरुष जातक स्त्री प्रिय होता है तथा ऐसी स्त्री पुरुष-प्रिय होती है। यदि अन्य लक्षण अशुभ हो तो उनके तारतम्य के अनुसार फलादेश करना चाहिए।

(४) स्त्री के पांव के तलुए जर्जर हों तथा चलते समय अप्रिय शब्द करते हो वह स्वय दूती अर्थात् व्यभिचार के लिए पुरुष को स्वयं ही आमन्त्रित करने वाली होती है।

(५) यदि पाव के तलवों मे नसें दिखाई दे तो जातक को मोह तथा अनादर की प्राप्ति होती है।

(६) यदि पांव की उंगलियों में नसें दिखाई देती हों तो जातक के पास धन नही ठहर पाता।

(७) यदि पांव की ऐड़ी ऊंची-नीची हो तो वह जातक को अशुभ फल प्रदान करती है।

९६ ४/४
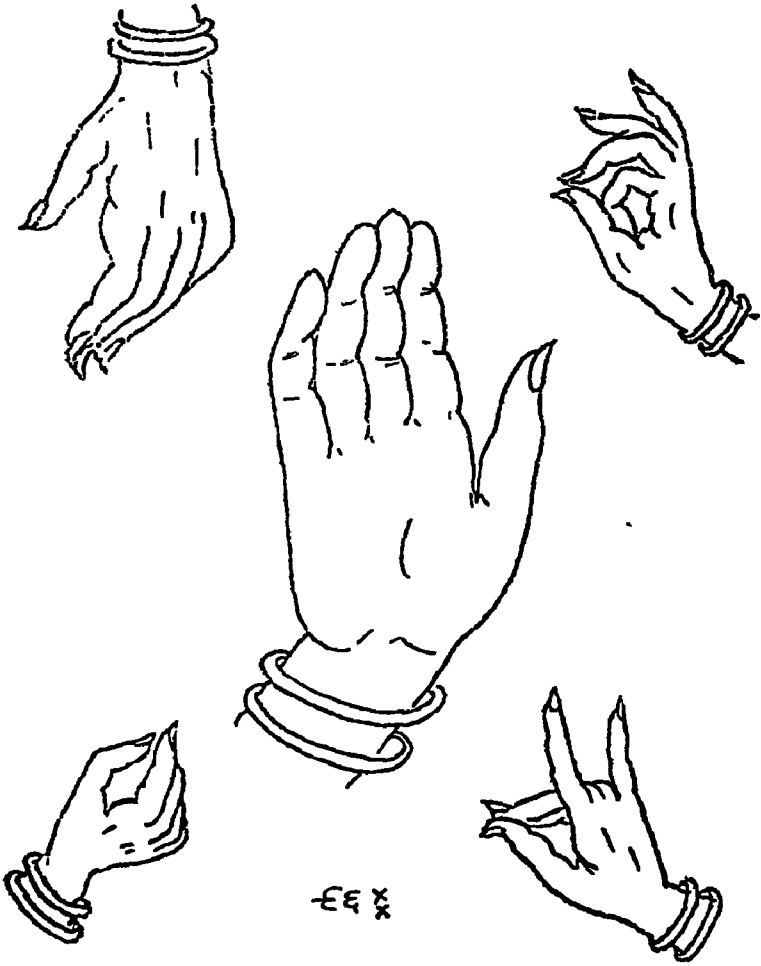
[स्त्रियों के हाय]

स्त्रियों के हाथ

स्त्रियों के हाथों की बनावट के सम्बन्ध में शास्त्रकारों ने कहा है—

अम्भोज मुकुलाकार मंगुष्टांगुलि संमुखं।
हस्तद्वयं मृगाक्षीणं बहुभोगाय जायते ॥

× × ×

शुष्कैः शिरालैर्विषयैश्च हस्तै
र्भवांतिनार्यः सुखवित्तहीनाः ।

× × =

निगूढ मणिबंधनौ तरुणपद्म
गर्भोपमौ करौ नृपतियोषितां ।

भावार्थ—जिन स्त्रियों के हाथ की आकृति अगूठा तथा उगलियों को सीधा करके मिलाने पर कमल-पुष्प की परिपक्व-कली जैसी दिखाई दे, वे स्त्रियां ऐश्वर्यवती तथा बहुत भोगों का सुख भोगने वाली होती हैं।

जिन स्त्रियों के हाथ सूखे हुए से हों, जिनके ऊपर नसें दिखाई देती हों, जो विषम (असमान) आकृति के हों तथा अशुभ प्रकार के रेखा-चिन्ह हों, वे स्त्रिया सुख तथा धन से हीन दुर्भाग्यशालिनी होती है।

जिन स्त्रियो के हाथ का मणिवन्ध-स्थान (निगूढ बे मालूम तथा अस्पष्ट) हो अर्थात् हाथ और कलाई दोनो का जोड एक जैसा दिखाई देता हो और जिसका रग परिपक्व कमलपुष्प की गर्भ-

केशर के समान आरक्त गौरवर्ण हो, वे राजा अर्थात् ऐश्वर्यशाली लोगों की स्त्रिया (पत्निया) होती है।

स्त्रियों का कर पृष्ठ

स्त्रियो के कर पृष्ठ (हथेली के पिछले भाग) के सम्बन्ध में शास्त्रकारो ने कहा है—

"विरोमं विशिरं शस्तं पाणिपृष्ठं समुन्नातं।
वैधव्यं हेतु रोमाढ्यं निम्नसिस्नायुत त्यजेत् ॥"

भावार्थ—रोम-हीन, शिरा-हीन, मांसल तथा उन्नत कर-पृष्ठ शुभ होता है। यदि कर पृष्ठ पर रोम हो तो स्त्री विधवा होती है। नीचा तथा जिस पर नसें दिखाई देती हों, ऐसा कर पृष्ठ अशुभ होता है।

'सामुद्र तिलक' मे कहा है—

रामशिरा परिहीनं घनमांसं पाणिपृष्ठमवहस्तम्।
स्निग्धं सममबलानां समुन्नतं शस्यते प्रायः ॥"

भावार्थ—रोम-शिरा हीन, मांसल, चिकना, सम और सम्मुन्नत कर-पृष्ठ स्त्रियों के लिए शुभ होता है।

स्त्रियों के हाथ के नाखून

स्त्रियों के हाथ के नाखूनो के विषय में 'भविष्य पुराण' मे कहा जाता है—

"वन्धु जीवाहणे स्तुङ्गं नखैरैश्वर्य माप्नुयान्।
खरैर्वक्रं विवर्णाभैः श्वेत पीतैरनोशताम् ॥

भावार्थ—'वन्धूक पुष्प के समान लाल रग के, तथा कुछ ऊंचे उठे हुए नखो वाली स्त्री ऐश्वर्यशालिनी होती है। टेढे, खुरदरे,

विवर्ण, श्वेत, पीत अथवा चकत्तेदार नाखून होने से स्त्री दरिद्रा होती है।

'स्कन्द पुराण' में लिखा है—

"नखेषु विन्दवः श्वेताः प्रायः स्युः स्वैरिणी स्त्रियः।
पुरुषा अपि जायन्ते दुःखिना पुष्पितैर्नखैः ॥"

भावार्थ—जिन स्त्रियों के नखों पर श्वेत रंग के बिन्दु होते हैं, वे प्रायः व्यभिचारणी होती है। यदि पुरुषों के नखों पर श्वेत बिन्दु हों तो उन्हें दुःख-दायक समझना चाहिए।

परन्तु 'गर्ग संहिता' में नखों पर (श्वेत-बिन्दु) चिह्न होना शुभ बताया गया है। उसमें लिखा है—

"श्लक्ष्णाः सुवर्णा क्षतजप्रभाश्च
वैडूर्यमुक्ताफल सन्निभाश्च ॥
पुष्पान्वितः सौख्यकराभवन्ति
कुशेशयाभाश्च नखाः करेषु ॥"

भावार्थ—चिकने, सुन्दर रंग के, अरुणाभायुक्त, वैडूर्य अथवा मोती के समान चमकदार तथा 'श्वेत-बिन्दु' युक्त चिन्ह सुख देने वाले होते हैं।

स्त्रियों के हाथ की उंगलियां

स्त्रियों के हाथ की उंगलियों के सम्बन्ध में 'स्कन्दपुराण' के 'काशीखण्ड' में लिखा है—

चिपिटाः स्थपुटा रुक्षाः पृष्ठरोमयुजोऽशुभाः।
अतिह्रस्वाः कृशा रक्ता विरला रोग हेतु काः॥
दुखायाङ्गुलयः स्त्रीणां बहु पर्व समन्विताः॥

भावार्थ—चपटी, मोटी, रूखी तथा जिनके पृष्ठ भाग पर रोम हों—ऐसी उंगलियां अशुभ होती हैं। अत्यन्त छोटी, पतली, गहरे,

लाल रंग की तथा विरल (छीदी) उंगलियां रोग देने वाली होती हैं। यदि उंगलियों में तीन से अधिक पर्व हों तो उस स्त्री को दुःख प्राप्त होता है।

स्त्रियों की उंगलियों के सम्बन्ध में 'भविष्य पुराण' में जो उल्लेख पाया जाता है। उसका साराश निम्नानुसार समझना चाहिए—

(क) यदि उंगलियां गोलाई लिए हुए हों, (२) उनके पर्व बराबर हो, (३) वे आगे से पतली, (४) कोमल त्वचा युक्त तथा (५) गांठ-रहित हों—तो ऐसी स्त्री सुख भोगने वाली होती है।

(ख) यदि उंगलिया बहुत छोटी हों तथा (२) दोनो हाथों से अंजुलि बनाने पर उनके बीच मे छिद्र रहे तो ऐसी स्त्री अपने पति के घर को खाली कर देती है, अर्थात् वह धन का सचय करने वाली नही होती।

स्त्रियो के हाथ के अगूठे के विषय में शास्त्रकारो का मत नीचे लिखे अनुसार है—

(१) स्त्रियो के हाथ में गोल, सीधा तथा गोल नाखून वाला कोमल अंगूठा शुभ होता है।

(२) जिस स्त्री के अगूठे अथवा उगलियो में यव-चिह्न हो तथा उस यव-चिह्न के ऊपर तथा नीचे की रेखा बराबर हो (चित्र संख्या ६७) हो तो ऐसी स्त्री धन-धान्य से अत्यधिक सम्पन्न तथा सुख भोगने वाली होती है।

(३) यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा चौड़ा तथा फैला हुआ हो तो वह विधवा होती है।

(४) यदि किसी स्त्री के हाथ का अंगूठा लम्बा हो तो यह भाग्य हीना होती है।
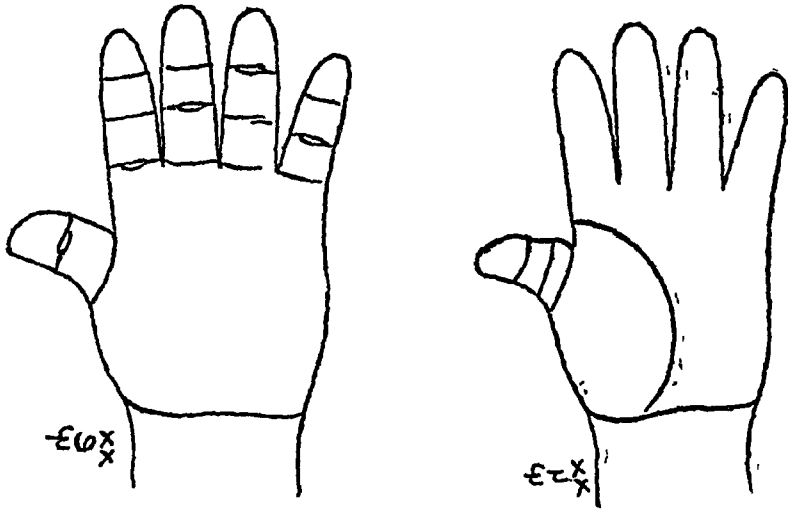
(५) यदि स्त्री के हाथ के अंगूठे का पहला पर्व छोटा तथा कमजोर हो, साथ ही शुक्र क्षेत्र उन्नत हो (चित्र संख्या ९८) तो ऐसी स्त्री पर-पुरुष के बहकाय में शीघ्र आ जाती है और चरित्र-भ्रष्ट हो जाती है।

(६) यदि स्त्री के हाथ के अंगूठे का पहला पर्व बलवान हो तो उसके विचारों में दृढ़ता रहती है और वह किसी के बहकावे में शीघ्र नही आती।

(७) यदि अगूठा अधिक लचकदार हो और पीछे की ओर काफी मुड़ जाता हो तो ऐसी स्त्री अन्य स्त्री अथवा पुरुषों से जल्दी मित्रता स्थापित कर लेती है।

स्त्रियों के करतल की रेखाएं

हाथ की रेखाओं के सम्बन्ध में वृहद् सामुद्रिक विज्ञान के पिछले ग्यारह खण्डों में विस्तारपूर्वक सब कुछ लिखा जा चुका है। यहां पर हम स्त्रियों के हाथ में पाई जाने वाली केवल उन्ही रेखाओं तथा

चिन्हों का विवरण विशेष रूप से प्रस्तुत कर रहे है। जिनका प्रभाव केवल स्त्रियो पर ही होता है। पुरुषों पर नही होता वे निम्नानुसार है—

चित्र ९९—यदि किसी स्त्री के हाथ के अंगूठे पर चक्र हो और अगूठे का मध्य भाग मोटा हो तो ऐसी स्त्री व्यभिचारिणी तथा कुलक्षणी होती है।

चित्र १००—यदि किसी स्त्री के हाथ के अगूठे की दूसरी सन्धि पर नक्षत्र चिह्न हो तो वह अत्यन्त धनवती एव ऐश्वर्यशालिनी होती है।
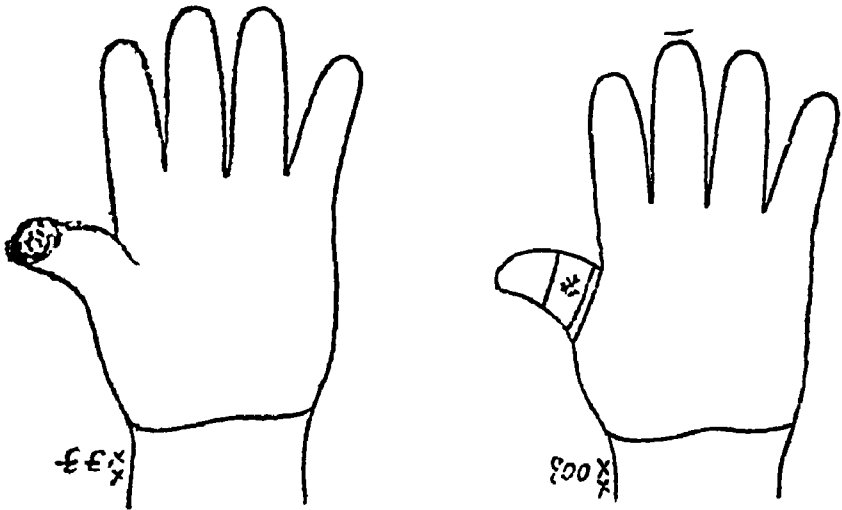
चित्र १०१—यदि किसी स्त्री की उगली के नख पर श्वेत-बिन्दु चिह्न हो तो वह प्राय स्वतन्त्रचारिणी होती है। इस सम्बन्ध में शास्त्र का कहना यह है—'नखेषु बिन्दवः श्वेताः प्राय स्युः स्वैरिणी स्त्रियः।'

चित्र १०२—यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध-क्षेत्र पर छोटी-छोटी कई खड़ी रेखाएं हों तो वह बहुत बातूनी होती है।
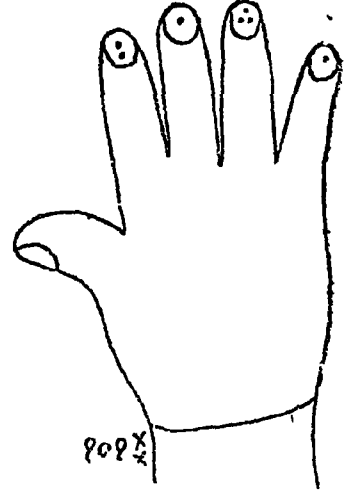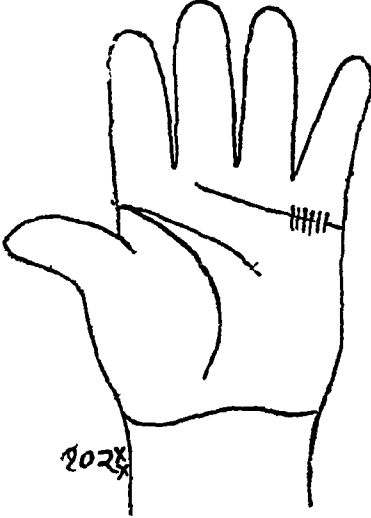
यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध का पर्वत सूर्य के पर्वत की ओर झुका हुआ हो तो उसे वैधव्य का कष्ट भोगना पड़ता है। उसका पति दुराचारी तथा व्यसनी भी होता है।

चित्र १०३—यदि किसी स्त्री के दाएं हाथ में भाग्य रेखा के दांई ओर अथवा बाएं हाथ में भाग्य रेखा के बाईं ओर वृहद चतुष्कोण में नक्षत्र चिह्न हो तथा हृदय-रेखा टूटी हुई हो तो उसका किसी पुरुष अथवा अपने पति से अत्यधिक प्रेम होता है।

चित्र १०४—यदि किसी स्त्री के हाथ में वृहद त्रिकोण के भीतर वृत्त-चिह्न हो तो उसे किसी पुरुष के कारण बहुत कठिनाइयां उठानी पड़ती हैं। यदि उसकी हथेली में चन्द्र-क्षेत्र भी उच्च हो तो उसका स्वभाव झगड़ालू प्रवृत्ति का तथा चिड़चिड़ा होता है।
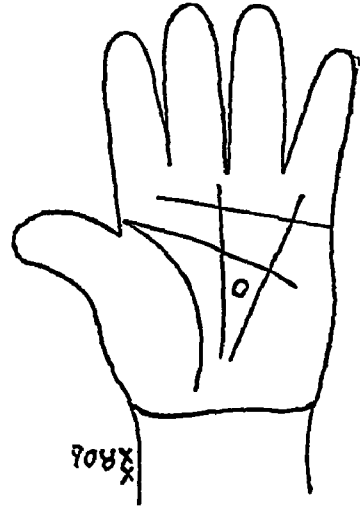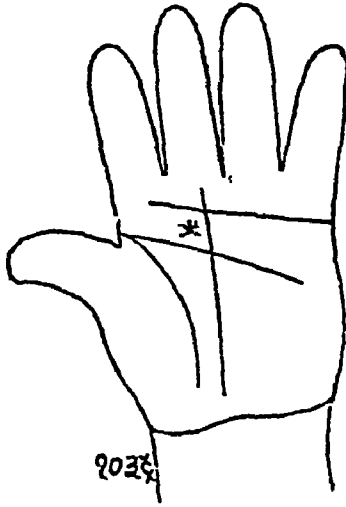
चित्र १०५—यदि किसी स्त्री के हाथ के अगूठे के पहले पर्व पर नाखून के बिलकुल पास क्रास-चिह्न हो और शुक्र क्षेत्र अधिक उन्नत हो अथवा जल-चिह्न युक्त हो तो उसका किसी अन्य पुरुप से अनुचित सम्बन्ध होता है।

चित्र १०६—यदि किसी स्त्री के हाथ की तर्जनी उगली के द्वितीय पर्व पर नक्षत्र चिह्न हो तथा उसके दोनो ओर एक-एक खड़ी रेखा भी हो तो ऐसी स्त्री पतिव्रता होती है।

चित्र १०७—यदि किसी स्त्री के हाथ की तर्जनी उंगली के द्वितीय पर्व पर पूर्वोक्त नक्षत्र चिह्न हो तथा उसके दोनो ओर एक-एक खड़ी रेखा न होकर वगल मे एक अर्द्धवृत्त चिह्न हो तो वह स्त्री पतिव्रता होती है।

चित्र १०८—यदि स्त्री के हाथ की उगलियों के पर्वो पर रेखाएं हो तो वह आभूषण पहनने की इच्छुक रहती है तथा उसे इच्छानुसार आभूषणों की प्राप्ति भी होती है।
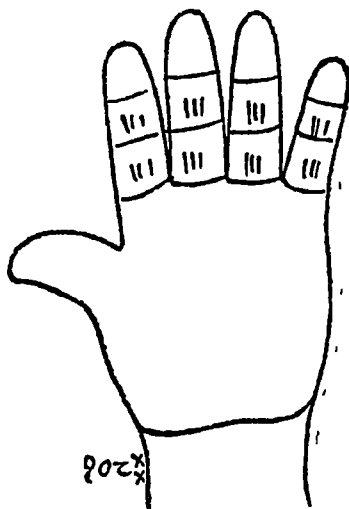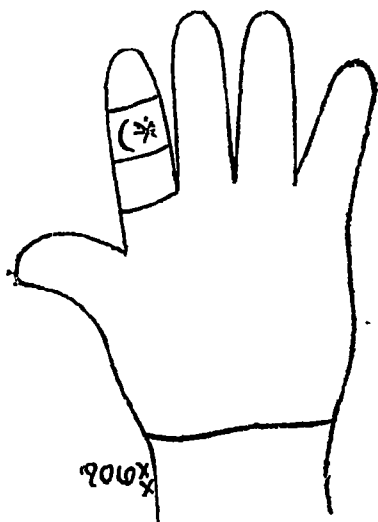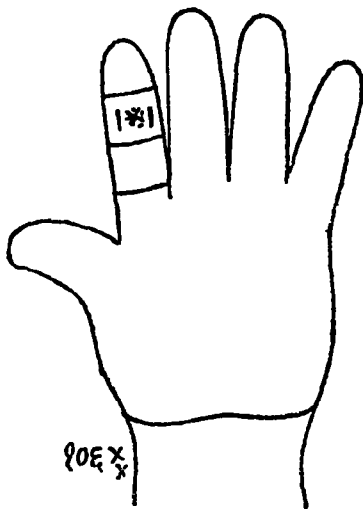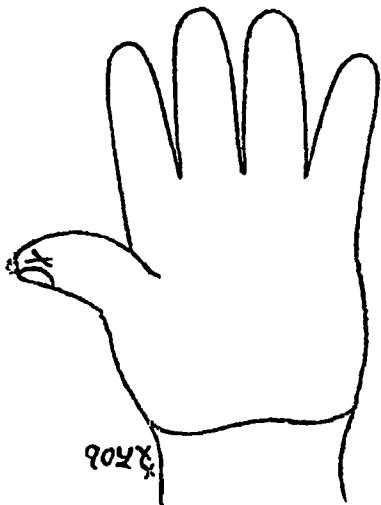
चित्र १०६—यदि जीवन-रेखा शुक्र क्षेत्र के ऊंचे भाग से मिली हुई-सी गई हो तथा थोड़ी दूर जाकर शुक्र-क्षेत्र के मध्यभाग में ही समाप्त हो गई हो तो ऐसी रेखा वाली स्त्री को प्रसव के समय अधिक कष्ट भोगना पड़ता है और कभी प्रसव के समय उसकी प्राण हानि की आशका भी बनी रहती है।

चित्र ११०—जिस स्त्री के हाथ पर मगल-रेखा होती है उसे उत्तराधिकारी के रूप में किसी स्वजन सम्बन्धी की सम्पत्ति प्राप्त होती है।
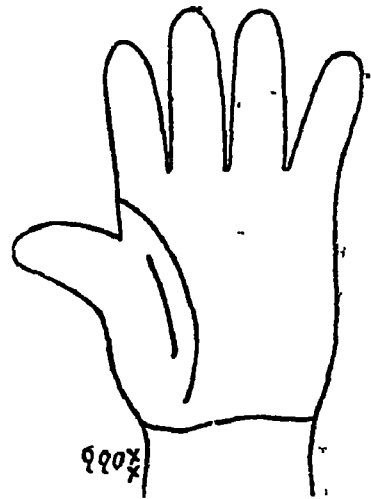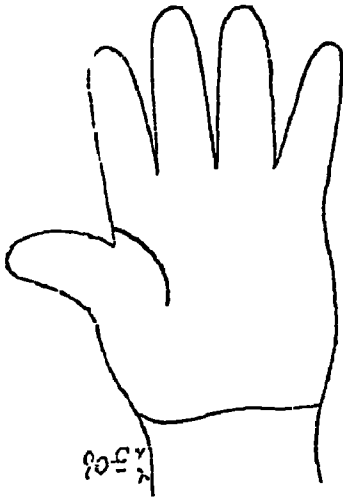
चित्र १११—पुरुषो की अपेक्षा स्त्रियों के हाथ मे प्राय: अधिक रेखाए पाई जाती हैं क्योकि उनके ज्ञानतन्तु अधिक निर्बल होते है, उनके मनोविकार स्वाभाविक रूप से अधिक तीक्ष्ण तथा सासारिक संसर्ग से कम सुधरे हुए होते है, अधिक रेखाओ वाले एक स्त्री-हस्त को प्रदर्शित किया गया है। जिस स्त्री के हाथ में बहुत अधिक रेखाएं होती हैं, वह विधवा होती है—ऐसा सांमुद्रिक शास्त्र के विद्वानो का कहना है।

चित्र ११२—हथेली के ऊपर की रेखाएं लालिमा लिए हुए रंग की हों, हाथ का पंजा छोटा तथा अंगूठा ठिगना हो हाथ पर रेखाएं थोड़ी हों और वे हथेली के मध्य भाग में तथा स्पष्ट हों तो ऐसे लक्षणों वाली स्त्री सुखी, धनी, सुलक्षण तथा सौभाग्यवती होती है।

१११
११२
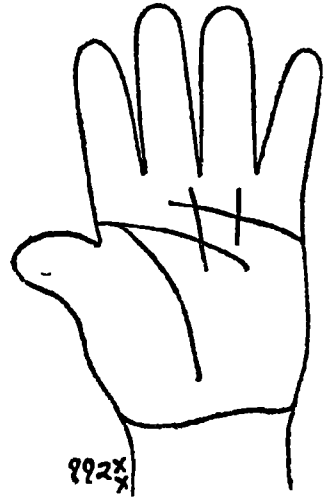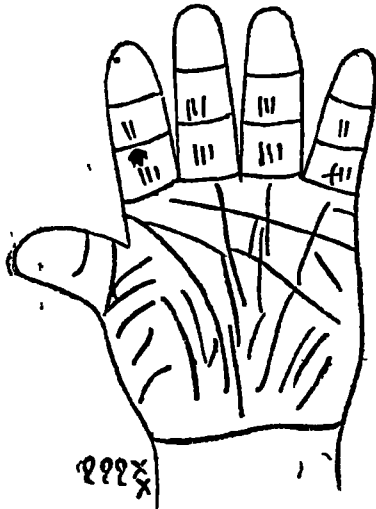
चित्र ११३—यदि किसी स्त्री के हाथ में भाग्य-रेखा का उदय चन्द्र पर्वत से हुआ हो और वह स्पष्ट रूप से आगे बढ़ती हुई शनि के पर्वत पर चली गई हो तो ऐसी स्त्री विवाह के बाद अपने पति के अधीन रहती है। यदि स्त्री के दाएं हाथ में भी ऐसी ही रेखा हो तो उसको उन्नति तथा भाग्योदय में सहायता प्राप्त होती है।

चित्र ११४—यदि स्त्री के हाथ में भाग्यरेखा मध्यमा उंगली के तीसरे पर्व के ऊपर चढ़ी हुई हो तो उसे द्रव्य प्राप्त होता है। परन्तु फल की पुष्टि तभी होती है, जबकि तर्जनी उंगली के तीसरे पर्व पर भी एक रेखा टूटी हुई हो।
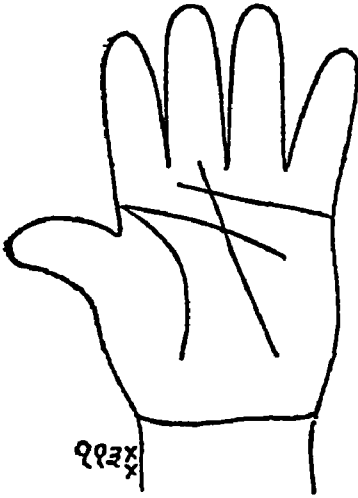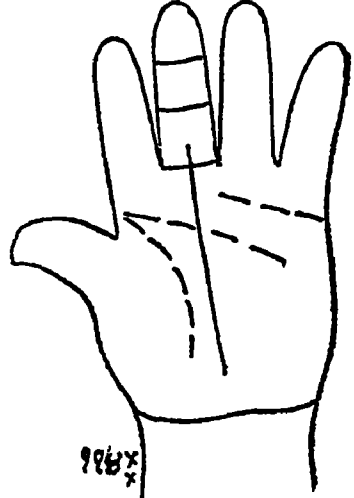
११५—यदि स्त्री के हाथ में भाग्य रेखा चन्द्र पर्वत से उत्पन्न होकर गुरु-पर्वत पर गई हो तो वह धनी पुरुष की पत्नी होती है तथा उसे सुख, यश एवं देशाटन आदि के लाभ प्राप्त होते रहते है।

चित्र ११६— यदि हृदय-रेखा में नीचे के भाग की ओर महीन बाल के समान शाखाएं निकली हुई हों और उन शाखाओं के मुख मुड़े हुए अथवा टेढ़े हों अथवा अन्य रेखाओं द्वारा छेदन किए हुए हों तो ऐसे लक्षण वाली स्त्री व्यभिचारिणी होती है।

चित्र ११७—यदि पूर्वोक्त प्रकार की रेखा पर विन्दु-चिन्ह भी हो तो स्त्रो प्रेमान्धता के कारण दु.ख प्राप्त करती है।

चित्र ११८—यदि पूर्वोक्त प्रकार की रेखा पर 'क्रास-चिन्ह' हो तो भी प्रेम-सम्वन्ध के कारण स्त्री को कष्ट प्राप्त होता है।
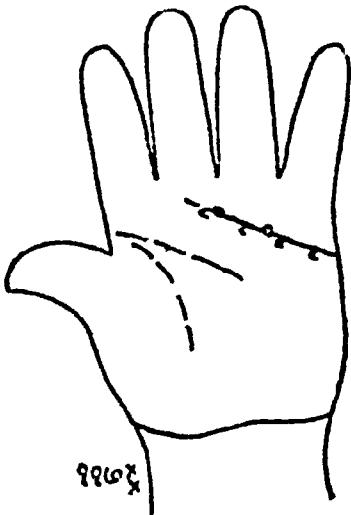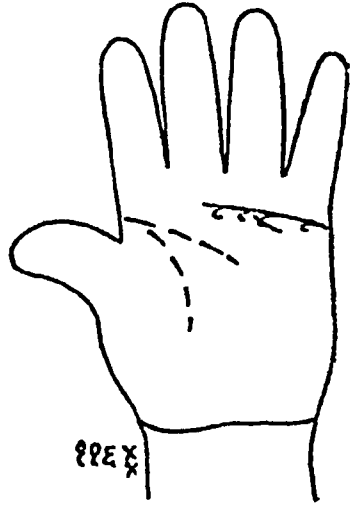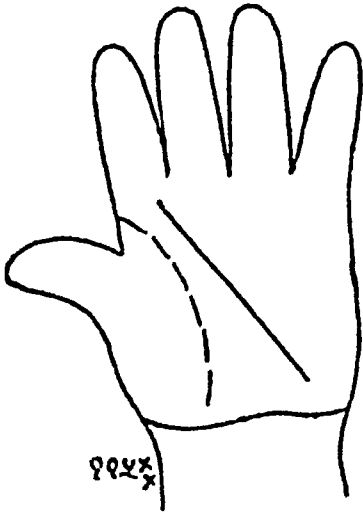
चित्र ११९—यदि विवाह-रेखा में से एक शाखा हृदय-रेखा की ओर लटकी हुई हो परन्तु हृदय-रेखा से मिली न हो तो ऐसी स्त्री का पति शराबी होता है और उसके नशे में अपनी पत्नी को दुःख देता है।

स्त्री के हाथ और पाव की उगलियां यदि टेढी-बाकी हो तो वैधव्य अथवा सन्तान-हीनता का लक्षण समझना चाहिए।

चित्र १२०—जिस स्त्री के हाथ की तर्जनी उंगली के ऊपर की रेखा टूटी हुई हो तो वह विधवा होती है।
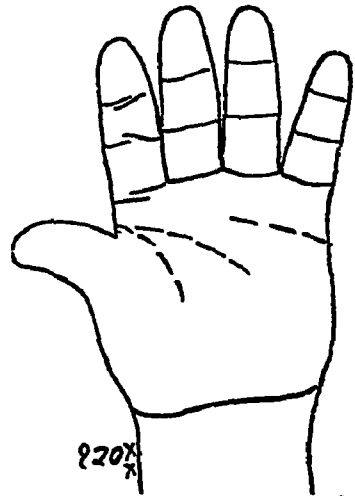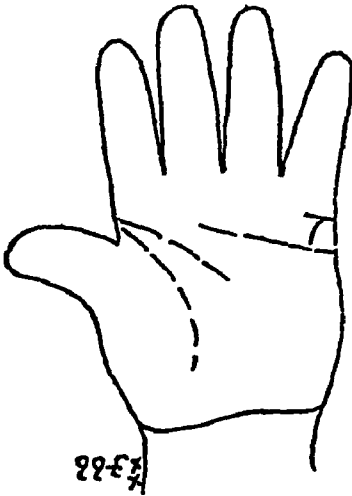
चित्र १२१—जिस के हाथ की मध्यमा उंगली के ऊपर की रेखाएं टूटी हुई सी हों, वह कपटी स्वभाव की होती है।

चित्र १२२—जिस स्त्री के हाथ की अनामिका उगली के ऊपर की रेखाएं टूटी हुई सी हों तो वह बहुत झगड़ालू स्वभाव वाली होती है।
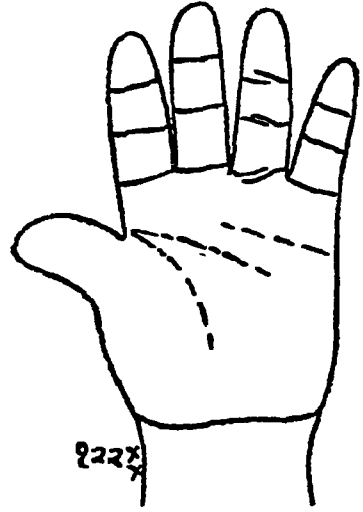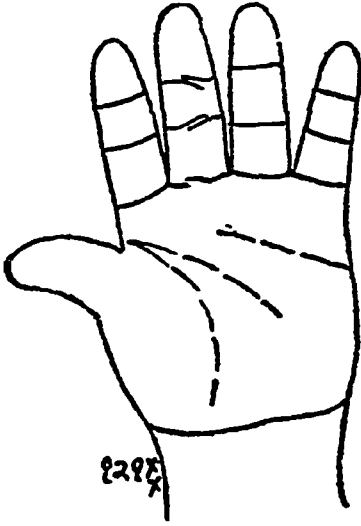
चित्र १२३—जिस स्त्री के हाथ की कनिष्ठा उंगली के ऊपर की रेखाएं टूटी हुई सी हों वह आजीवन दुःखी बनी रहती है।

चित्र १२४—यदि मुख्य-रेखाओं (आयु-रेखा, मस्तक रेखा भाग्य
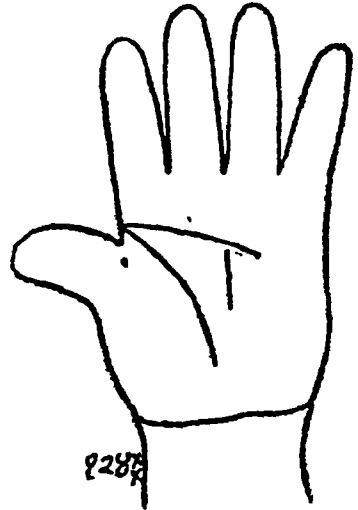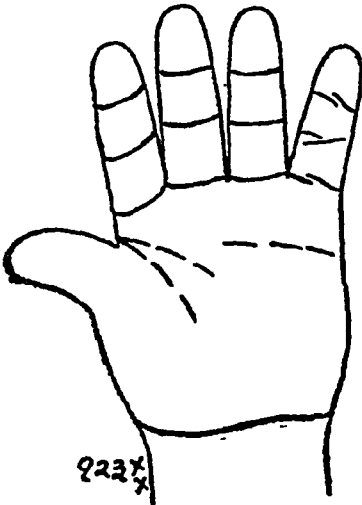
रेखा, हृदय-रेखा तथा सूर्य रेखा) में से कोई दो रेखाएं स्त्री के हाथ पर न हों तो ऐसी स्त्री दरिद्रा होती है।

चित्र १२५—यदि मणिवन्ध पर तीन रेखाएं सम्पूर्ण हों (बीच में टूटी न हों) तथा सुन्दर हों तो ऐसी स्त्री भाग्यशालिनी होती है और रत्न तथा स्वर्ण के आभूषणों को अपने हाथों में पहनती है।

चित्र १२६—यदि मणिवन्ध की पहली रेखा हथेली की ओर बढ़ी हुई हो तथा उसी ओर को गोलाई लिए हुए भी हो तो स्त्री को प्रसव के समय कठिनाई होती है
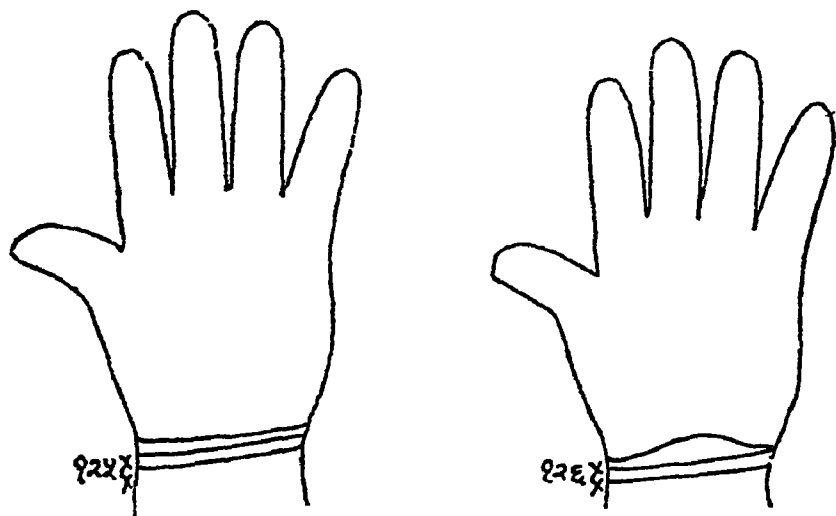
चित्र १२७—यदि जीवन-रेखा चौड़ी तथा उथली हो और शनि क्षेत्र विस्तृत हो साथ ही चन्द्र-क्षेत्र के निचले तृतीय भाग में स्त्री रोग के चिन्ह भी हों तो ऐसी स्त्री अत्यधिक निराश रहने वाली होती है तथा उसके मन में आत्महत्या करने की भावना अधिक तेजी से उत्पन्न होती है।

चित्र १२८—यदि जीवन-रेखा पर 'द्वीप'-चिन्ह हो तथा शनि-क्षेत्र पर 'जाल-चिह्न' हो तो स्त्री को उदर तथा यकृत् सम्बन्धी रोग होते हैं। ४२ से ४६ वर्ष की आयु के बीच जीवन-रेखा पर इस प्रकार का द्वीप-चिह्न पाया जाता है।
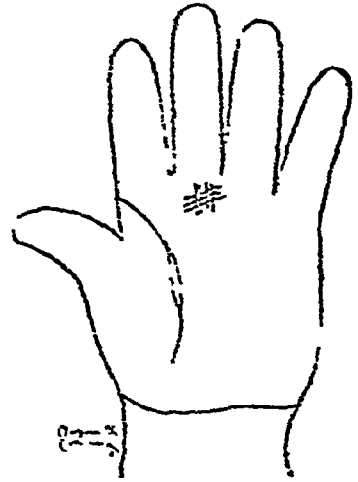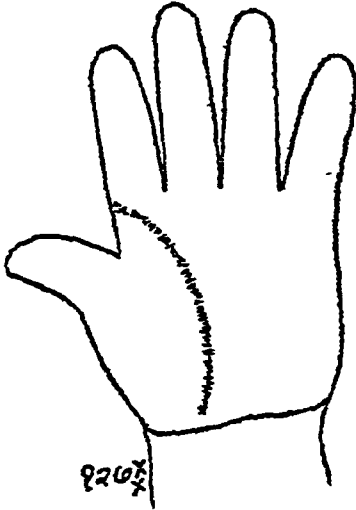
चित्र १२९—यदि द्वीप-चिह्न के बाद जीवन-रेखा गहरी हो तो स्त्री का स्वास्थ्य बाद में ठीक रहता है, परन्तु यदि द्वीप-चिह्न के बाद जीवन रेखा अधिक पतली, चौड़ी अथवा शृंखलाकार हो तो साथ ही चन्द्र-क्षेत्र के निचले भाग में जाल-चिह्न हो तो उसे स्त्री-रोग अवश्य होते हैं। जीवन-रेखा के द्वीप से चन्द्र क्षेत्र के जाल-चिह्न तक कोई रेखा जाती हो तो इस लक्षण की पुष्टि समझनी चाहिए।

चित्र १३०—जिस स्थान पर स्वास्थ्य-रेखा तथा मस्तक-रेखा मिलती हैं, उस स्थान पर यदि नक्षत्र-चिह्न हो तो भी स्त्री-रोग की पुष्टि होती है।
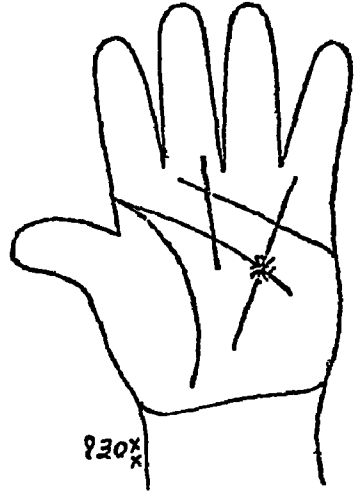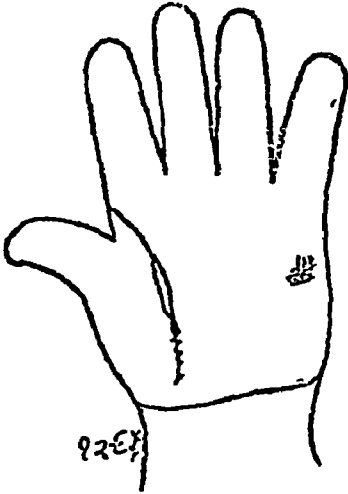
चित्र १३१—यदि जीवन-रेखा चन्द्र-क्षेत्र के नीचे तृतीयांश में जाती हो तो स्त्री को मासिक धर्म सम्बन्धी रोग होते है।

चित्र १३२— यदि मस्तक-रेखा लम्बी तथा सुन्दर हो और
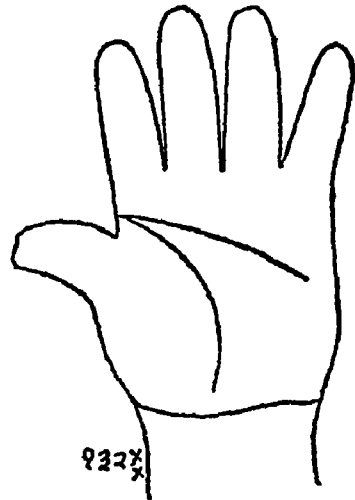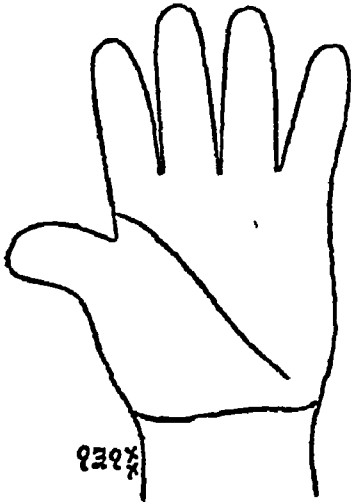
होती, परन्तु निर्धन अवश्य होती है। समुद्रऋषि के मतानुसार श्वेत रंग के तालु वाली स्त्री दासी होती है।

यदि तालु का रंग काला हो और वह खुरदरा भी हो तो सन्तान-सुख का अभाव होता है। समुद्रऋषि के मतानुसार श्याम रंग के तालु वाली स्त्री दुःख भोगती है तथा जिसके तालु का रंग कालापन तथा रूखापन लिये हुए हो, वह सन्यासिनी (गृहस्थ जोवन से विरक्ता) हो जाती है। कुछ विद्वानों के मतानुसार ऐसी स्त्री पति को बहुत कष्ट देती हैं।

जिसके तालु में रूखापन रहता हो, वह दुर्बल सन्तान को जन्म देने वाली होती है।

चित्र १३६—यदि हृदय-रेखा शृंखलाकार हो अथवा अस्पष्ट हो तथा मस्तक-रेखा भी ऐसी ही हो, साथ ही शुक्र क्षेत्र उन्नत तथा विस्तृत हो और उस पर आड़ी काटने वाली बहुत-सी रेखाएं हों तो ऐसी स्त्रियां सदैव ही अन्य पुरुषों से सम्बन्ध करने की इच्छुक रहती हैं अथवा अनेक पुरुषों से उनके सम्बन्ध हो चुके होते हैं।
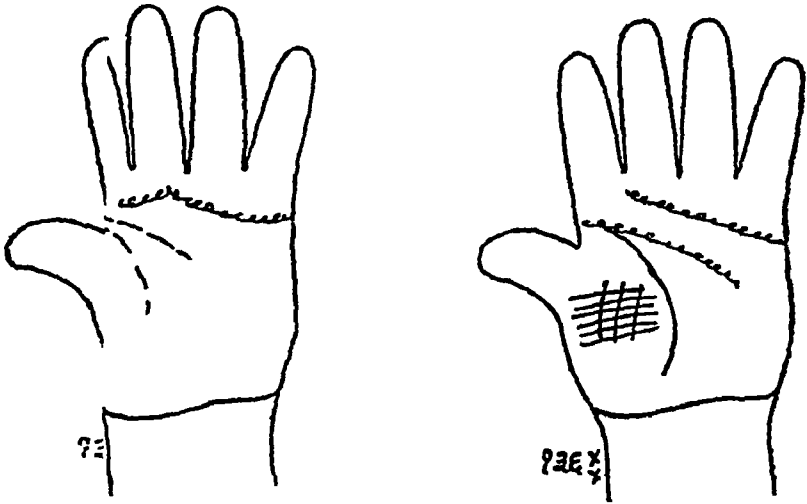
चि १३७—यदि हृदय-रेखा गुरु क्षेत्र से आरभ हुई हो तथा चन्द्र से निर हुई भाग्य-रेखा आकर हृदय-रेखा में विलीन हो गई हो तो ऐसखाओं वाली स्त्री को अत्यधिक प्रेम करने वाला पति प्राप्त होता

रण रहे कि पाश्चात्य विद्वान हृदय-रेखा का प्रारम्भ कनिष्ठा उंगलीमूल से न मानकर उक्त स्थान पर उसकी समाप्ति मानते हैं। देखें रेखा खण्ड।

जिस स्त्री की जीभ बीच में संकरी तथा आगे की ओर चौड़ी हो, वह सदैव दुःख पाती है।

जिस स्त्री की जीभ सरल तथा तीखी हो, वह शत्रुओं का नाश करने वाली तथा अपनी कीर्ति बढ़ाने वाली होती है।

जिस स्त्री की जीभ बहुत लम्बी हो, वह बिना विचारे ही भक्ष्याभक्ष्य का सेवन करती रहती है।

जिस स्त्री की जीभ बहुत लम्बी होने के साथ ही बहुत चौड़ी भी हो, वह नशा करने वाली (मद्य आदि का सेवन करने वाली) तथा लापरवाह प्रकृति की होती है।

गर्ग मुनि के मतानुसार स्त्री की जिह्वा का छोटा होना शुभ माना गया है।
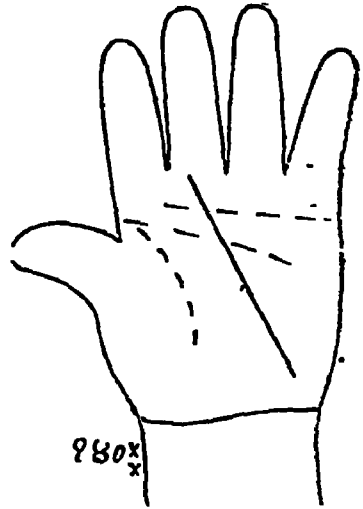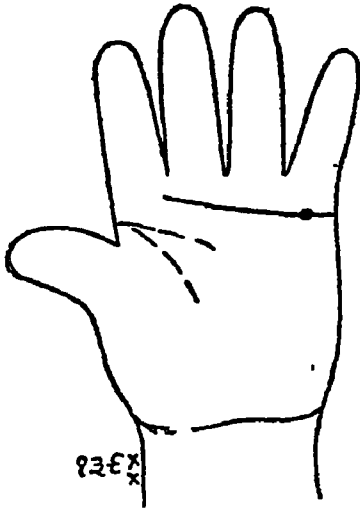
चित्र १४१—यदि भाग्य-रेखा आरम्भ में शृंखलाकार अथवा किसी अन्य दोष से युक्त हो और वाद में उसमें सम्मिलित होने वाली किसी रेखा के कारण वह गहरी और पुष्ट हो जाय तो उसी
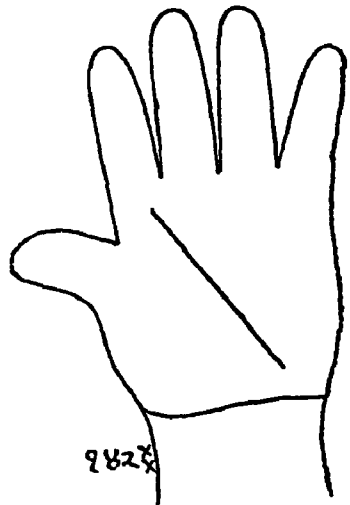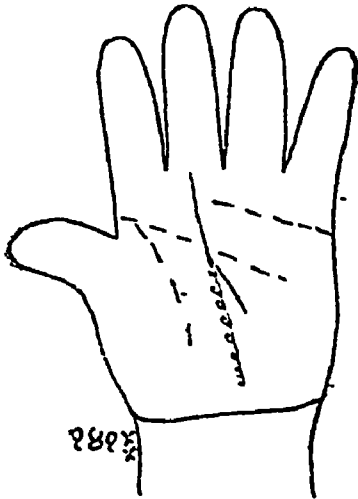
वयोमान में उसका विवाह किसी धनी कुल में होता है। तत्पश्चात् उसका भाग्योदय भी होता है।

चित्र १४२—यदि भाग्य-रेखा चन्द्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर सुन्दर तथा गहरे रूप में बृहस्पति के क्षेत्र तक चली जाय तो उस स्त्री का अपने पति अथवा किसी अन्य पुरुष की सहायता से भाग्योदय होता है।

चित्र १४३—जिस स्थान पर स्वास्थ्य-रेखा मस्तक-रेखा को काटती हो वहां अथवा उसके समीप ही कोई नक्षत्र चिह्न हो तो स्त्री को गर्भाशय सम्बन्धी रोग होता है।

चित्र १४४—यदि पूर्वोक्त प्रकार की रेखा तथा चिह्न के रहते हुए चन्द्र-क्षेत्र के नीचे के तृतीयांश में जाल चिन्ह भी हो तो स्त्री को संतान उत्पन्न करने में कठिनाई होती है। यदि जीवन-रेखा का घुमाव बहुत कम हो तथा शुक्र-क्षेत्र छोटा और नीचा हो तो प्रायः सन्तान होती ही नहीं है।
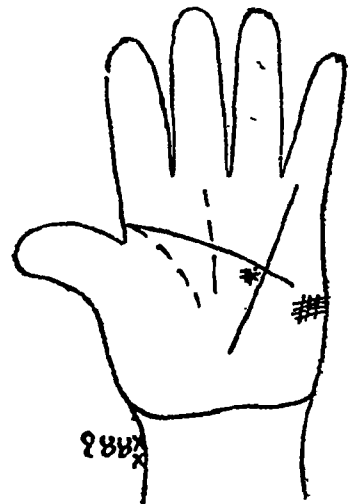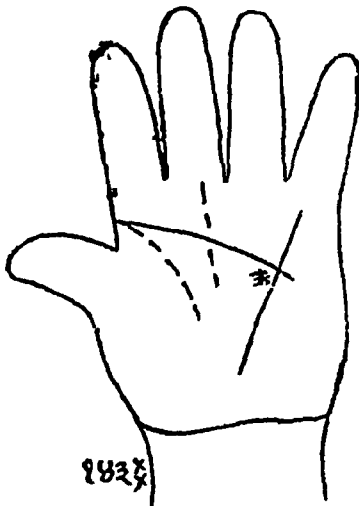
चित्र १४५—कनिष्ठा उगली के नीचे तथा हृदय-रखा के ऊपर हाथ के वाहरो भाग से प्रारम्भ होकर वुध-क्षेत्र के ऊपर जितनी रेखाए आई हो उस स्त्री के उतने ही पति होते है अथवा उतने ही पुरुपो से उसका लम्वा शारीरिक सम्वन्ध रहता है।

चित्र १४६—यदि स्त्री के हाथ मे विवाह-रेखा द्वीप-चिन्ह युक्त हो तो उसे व्यभिचार का लक्षण अथवा दाम्पत्य-जीवन में कलह का लक्षण समझना चाहिए।
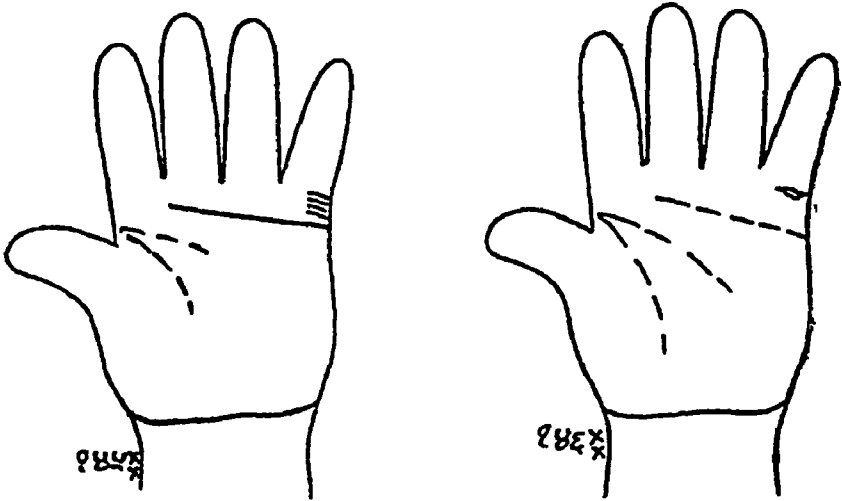
चित्र १४७—यदि विवाह-रेखा स्पष्ट तथा सुन्दर हो, साथ ही चन्द्र क्षेत्र से आई हुई कोई प्रभाव-रेखा भाग्य-रेखा में आकर मिल जाय तो ऐसी स्त्री का विवाह किसी धनी कुल में होता है तथा उसे अपने सम्वन्धियो के अतिरिक्त वाहरी व्यक्ति से भाग्योदय में सहायता प्राप्त होती है।

चित्र १४८—यदि विवाह-रेखा मे से पतली-पतली शाखायें निकलकर हृदय-रेखा की ओर गई हो तो जातक स्त्री के पति का स्वास्थ्य खराव रहने के कारण दाम्पत्य सुख में वाधा पड़ती है।
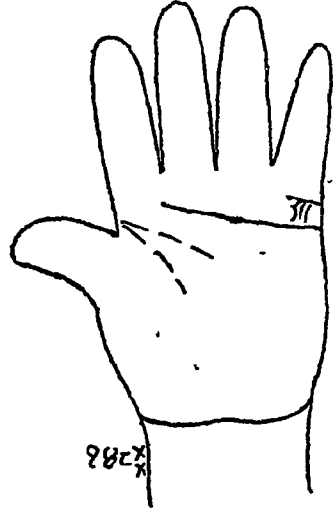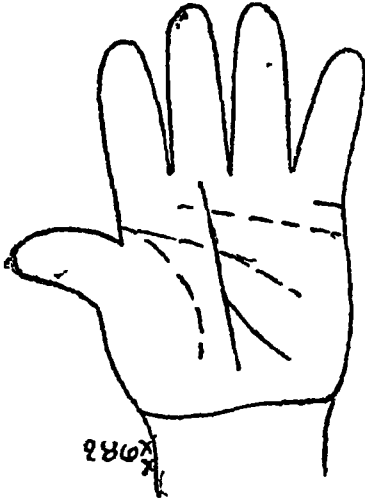
चित्र १४९—यदि विवाह-रेखा पर काला-दाग चिन्ह हो तो स्त्री विधवा होती है।

चित्र १५०—यदि जीवन-रेखा से प्रारम्भ होकर कोई प्रभाव-

रेखा मंगल के द्वितीय क्षेत्र पर आये अर्थात् जीवन-रेखा द्वारा घिरे हुए शुक्र-क्षेत्र से ऐसी रेखा निकली हो तो स्त्री को अपने जीवन के प्रारम्भिक भाग मे किसी गुप्त प्रेम के कारण घोर दु.ख उठाना पड़ता है।
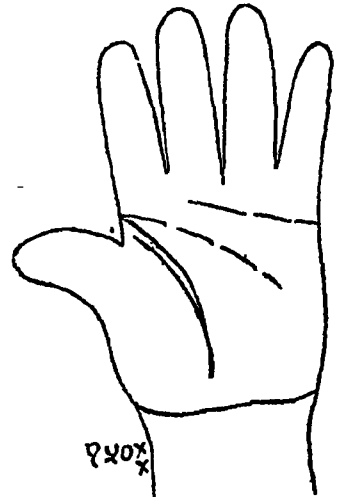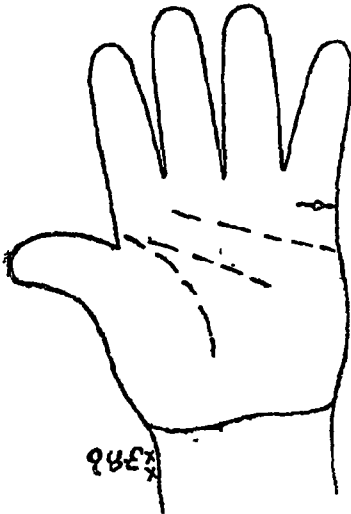
चित्र १५१—यदि शुक्र-क्षेत्र से कोई प्रभाव-रेखा निकलकर, जीवन-रेखा को काटती हुई तथा जीवन रेखा में से निकली हुई किसी ऊर्ध्वगामी छोटी रेखा को भी काटती हुई मुडकर शनि क्षेत्र पर पहुचे तो ऐसी स्त्री की अपने पति से वहुत कलह वनी रहती है और उनका विवाहविच्छेद भी हो जाता है।

चित्र १५२—यदि शुक्र-क्षेत्र से कोई प्रभाव-रेखा निकलकर जीवन तथा भाग्य-रेखा को काटती हुई चन्द्र क्षेत्र पर पहुचे तो पुरुष द्वारा हस्तक्षेप करने के कारण स्त्री के भाग्य को हानि पहुचती है।
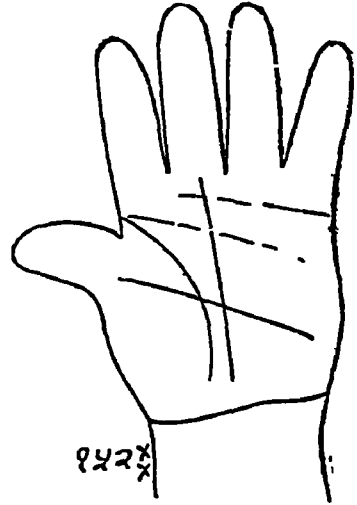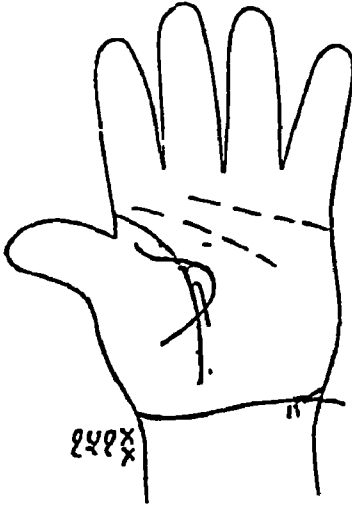
चित्र १५३—यदि शुक्र-क्षेत्र से प्रारम्भ होकर कोई रेखा जीवन-रेखा को काट दे तथा वहा पर इस रेखा की लम्बी द्वीप जैसी आकृति

हो जाय तो स्त्री का अपने पति के अतिरिक्त किसी अन्य विवाहित पुरुष से प्रेम होता है।

चित्र १५४—यदि शुक्र-मेखला बुध-क्षेत्र की ओर बढ़कर विवाह रेखा को काट दे अथवा उसका स्पर्श करे तो स्त्री असहिष्णु प्रकृति की होती है और अपने पति के चरित्र के सम्बन्ध में सदैव शंकालु तथा क्रुद्ध बनी रहती है।
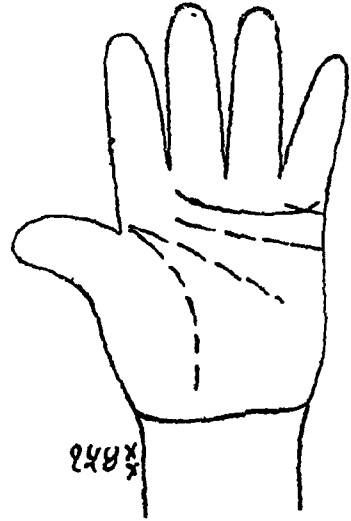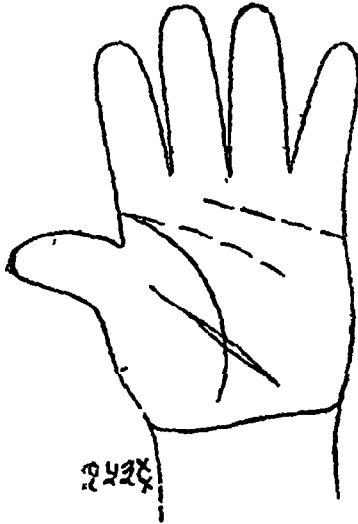
चित्र १५५—स्त्री के हाथ में मणिबन्ध-रेखा से हृदय-रेखा के बीच वाले स्थान तक जितनी सुन्दर तथा स्पष्ट दिखाई देने वाली रेखाएं हों तो उतने ही उसके पति होते हैं यह प्राच्य विद्वानों का मत है।

चित्र १५६—यदि स्त्री के दाएं हाथ में पति-रेखा (विवाह-रेखा) हृदय-रेखा (भारतीय मतानुसार आयु रेखा) का छेदन करती हो तो उसे विधवा कारक योग समझना चाहिए।
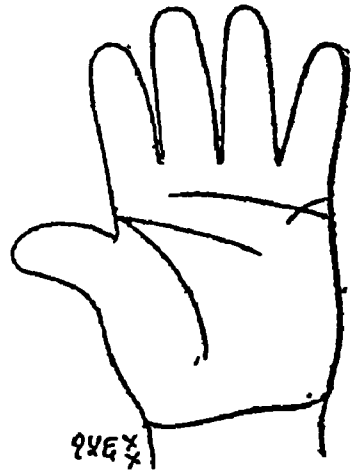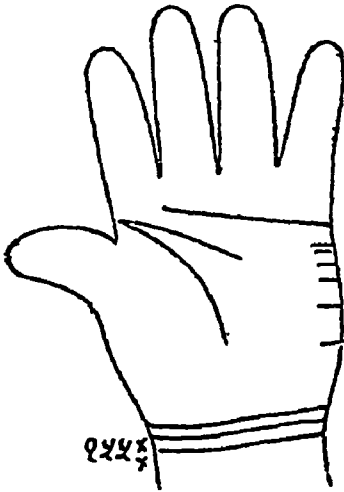
चित्र १५७—अंगूठे के मूल में रहने वाली तथा शुक्र-पर्वत पर बाहर से भीतर की ओर आई हुई सभी रेखाएं सन्तान दायक रेखा मानी गई हैं, परन्तु ये ही रेखायें यदि भीतर की ओर न आकर बाहर की ओर पीछे लम्बी जाती हुई जान पड़े तो उन्हें स्त्री के
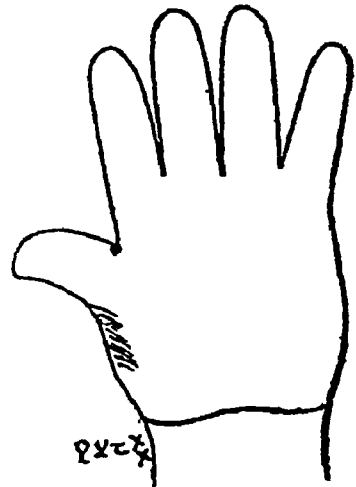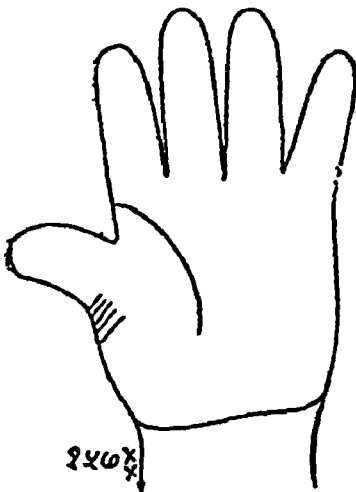
स्वेच्छाचारिणी (पर-पुरुष-रता) होने का प्रमाण मानना चाहिए।

चित्र १५८—अंगूठे के मूल में जितनी रेखाएं हों, उन्हें सन्तान रेखा माना जाता है। जितनी पतली रेखाएं हों स्त्री उतनी ही कन्याओं तथा जितनी मोटी रेखायें हों उतने ही पुत्रों को जन्म देती है। जितनी रेखा छोटी तथा कटी हुई हों, उतनी ही सन्ताने अधिक समय तक जीवित नही रहती और जितनी बड़ी तथा बिना कटी हुई रेखाएं हों, उतनी ही संताने दीर्घायु होती है।

चित्र १५६—यदि किसी स्त्री के हाथ में अंगूठे के मूल से निकल कर कोई रेखा कनिष्ठा उंगली तक गई हो तो उसे अपने पति की हत्या करने वाली समझना चाहिए। ऐसी स्त्री के साथ विवाह करने से शास्त्रकारों ने निषेध किया है।

चित्र १६०—यदि किसी स्त्री के हाथ में अंगूठे के मूल भाग में बड़ी वर्तुलाकार रेखा हो तो वह बहुत सुन्दर सन्तानों को जन्म देने वाली तथा परम ऐश्वर्यशालिनी होती है।

१५६

१६०
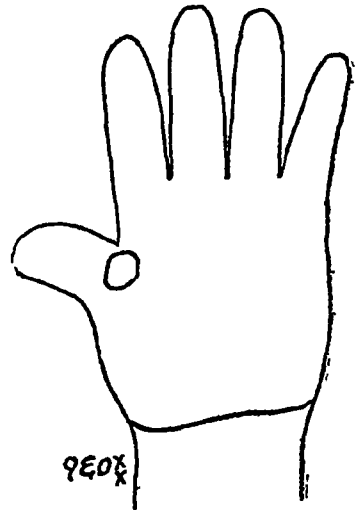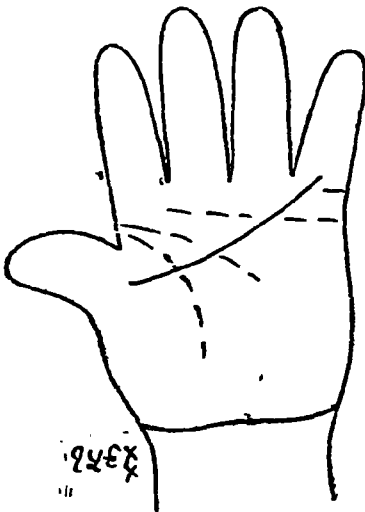
चित्र १६१—यदि स्त्री के हाथ में सूर्य-रेखा के ऊपर क्रास-चिन्ह हो तो अत्यन्त सुंदरी होने पर भी उससे सम्बन्ध नही करना चाहिए, क्योंकि ऐसी स्त्री धन के लोभ के कारण अनेक लोगों के प्राण लेनें से भी नही चूकती।
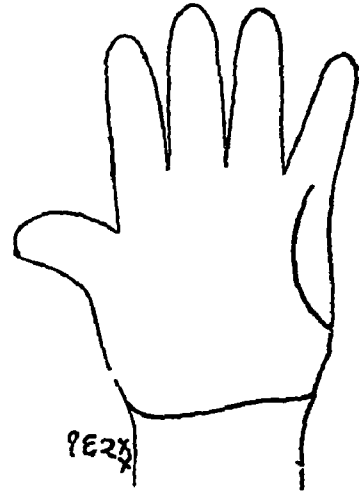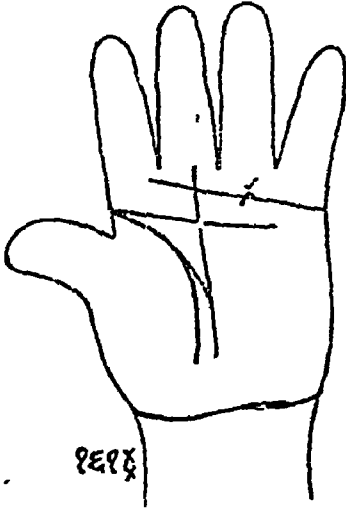
चित्र १६२—यदि चन्द्र-क्षेत्र के मध्यभाग से कोई रेखा निकलकर बुध के पर्वत पर गई हो. तो ऐसी रेखा के प्रभाव से स्त्री साधारण पढी-लिखी होने पर भी दैवीशक्ति के कारण सच्ची भविष्यवाणी करने वाली तथा मोहिनी-विद्या में पटु होती है। ऐसी स्त्रियों को सच्चे सिद्ध होनें वाले स्वप्न दीखा करते हैं। इस रेखा को दैव-रेखा कहा जाता है।

चित्र १६३—यदि स्त्री के हाथ में बुध-क्षेत्र पर अर्द्धवृत्त अथवा चूल्हे के आकार का चिह्न हो तो वह कर्कशा, झगड़ालू, कुलटा, व्यभिचारिणी तथा घमडिनी होती है। वह अन्य स्त्रियों को तो सतीत्व-रक्षा का उपदेश करती है, परन्तु स्वय पर-पुरुष-गामिनी

होती है। ऐसी स्त्रियां अपने पति से सम्बन्ध-विच्छेद (तलाक) भी कर लेतीं हैं।
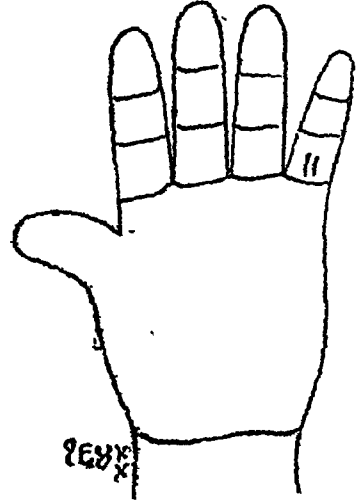
चित्र १६४—यदि स्त्री की कनिष्ठा उंगली के तृतीय पर्व पर दो जुड़ी रेखाएं हों, तो वह निश्चित रूप से व्यभिचारणी होती है तथा सन्तान का क्रय-विक्रय करती है।

चित्र १६५—यदि स्त्री की कनिष्ठा उंगली के प्रथम पर्व पर अर्द्धवृत्त चिन्ह उंगली की ओर मुंह किये हो तो ऐसी स्त्री विदुषी, नेत्री, यशस्विनी तथा गुणवती होती है, परन्तु उसे संतान का सुख अल्पमात्रा में प्राप्त होता है। उसकी सन्तानें प्रायः छोटी आयु में ही मर जाया करती हैं।

चित्र १६६—यदि स्त्री की कनिष्ठा उंगली के प्रथम पर्व पर जाल-चिन्ह हो तो जाल-चिन्ह में जितनी रेखाएं कटी हों, स्त्री उतनी ही संख्या में गर्भपात करती है। ऐसी स्त्री पैतृक-सम्पत्ति का उपभोग तो करती है, परन्तु वह पतिव्रता न होकर कुलटा होती है।
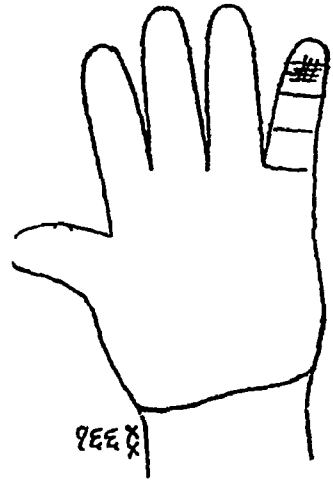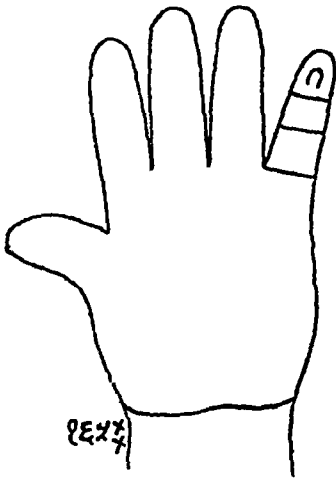
चित्र १६७—यदि स्त्री की कनिष्ठा उंगली के प्रथम पर्व पर सम-द्विकोण-चिन्ह हो, तो वह साक्षात् गृहलक्ष्मी होती है तथा घर में धन-धान्य की वृद्धि करती है। वह गुणवती, बुद्धिमान, सास-श्वसुर आदि के द्वारा सम्मानित तथा उचित सलाह देने वाली होती है।
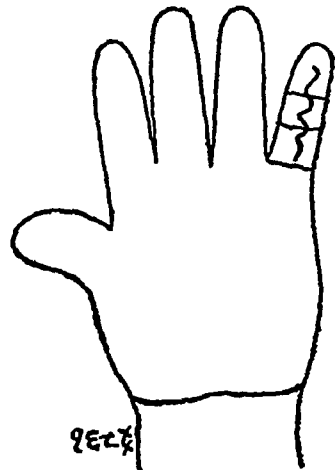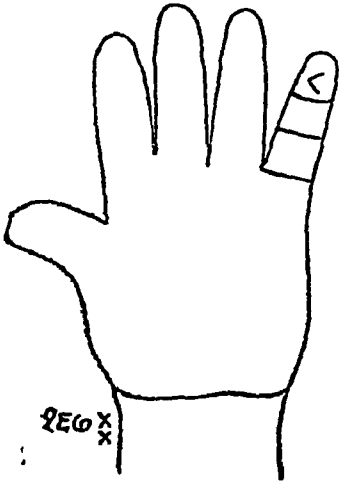
चित्र १६८—यदि स्त्री की कनिष्ठा उंगली पर सर्प के समान लहरदार-रेखा हो, तो वह पुत्र को जन्म देने के उपरान्त स्वयं रोग-ग्रस्त होकर मृत्यु को प्राप्त हो जाती है।

चित्र १६९—स्त्री के हाथ में बुध-क्षेत्र पर तीन से अधिक शुद्ध तथा सीधी रेखाएं हों तो वह नर्स का कार्य करती है। उसका अपने पति से विरोध रहता है तथा उसका चरित्र अच्छा नही होता। ऐसी स्त्री विवाह होने से पूर्व ही सन्तान को जन्म देती है। यद्यपि वह धनोपार्जन में दक्ष होती है परन्तु उसके हृदय में दया-ममता नही होती।
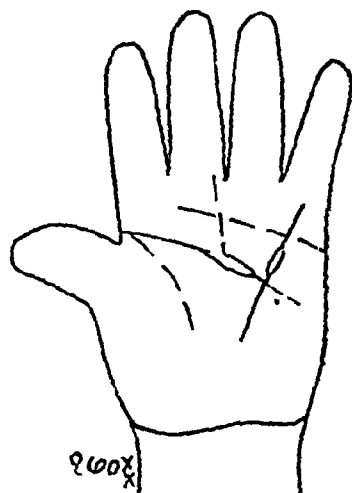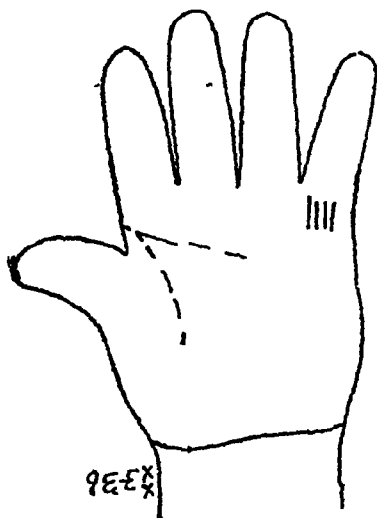
चित्र १७०—यदि स्त्री के हाथ में स्वास्थ्य-रेखा तथा मस्तक-रेखा पर 'यव' (द्वीप) चिह्न हो, तो उसे प्रसव-काल में कष्ट होता है। वह रोग तथा विपत्तियों की शिकार भी बनती है।

चित्र १७१—यदि किसी स्त्री के हाथ में स्वास्थ्य-रेखा के ऊपर (जिस स्थान पर कि स्वास्थ्य-रेखा मस्तक-रेखा को पार करती है)

न॰॥त्र-चिह्न हो, तो वह प्रसव-काल में मृत्यु को प्राप्त करती है—यह पाश्चात्य विद्वानो का मत है।
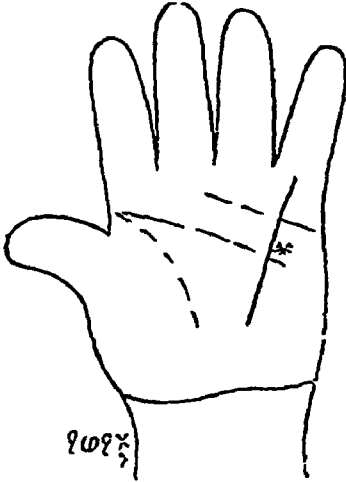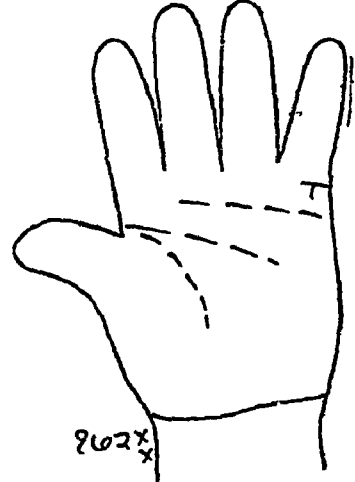
चित्र १७२—यदि किसी स्त्री के हाथ में बुध-क्षेत्र से निकली हुई एक सरल तथा सोधी-रेखा विवाह-रेखा का स्पर्श कर रही हो, तो वह अपने पति को व्यभिचार-मार्ग से हटाकर सदाचारी वनाती है। प्रारभ मे ऐसी रेखा वाली स्त्रियो को बहुत कष्ट भोगना पड़ता है, परन्तु वाद में वह सव प्रकार से सुखी-जीवन व्यतीत करती है। परन्तु ऐसी रेखा के साथ ही हृदय-रेखा का सरल, स्पष्ट तथा सुन्दर होना भी आवश्यक है। यदि हृदय-रेखा मे कोई कमी हुई तो शुभ-फ़ल मे न्यूनता आ जायगी और हृदय-रेखा से प्राप्त वयोमान में कोई भारी धक्का लगने के कारण उसकी मृत्यु हो जाने की सभावना भी वनी रहेगी।

चित्र १७३—यदि स्त्री के हाथ में विवाह-रेखा या रेखाएं शाखा युक्त हों तथा कनिष्ठा उंगली के मूल में जाकर उन पर द्विभुज के समान 'फोर्क' (Fork) हो, तो ऐसी स्त्री व्यभिचारिणी होती

है। वह अन्तर्जातीय-विवाह करती है परन्तु कुछ समय बाद ही — अपने पहले प्रेमी या पति को विष दे देती है और धन के लोभ के कारण दूसरे पुरुष के साथ विवाह कर लेती है। इसी प्रकार वह दूसरे को भी विष देकर हत्या कर सकती है तथा फिर किसी अन्य पुरुष के साथ केलि-क्रीड़ा में मग्न हो जाती है। ऐसी स्त्री को पति-घातिनी तथा अत्यन्त भयानक समझना चाहिए।
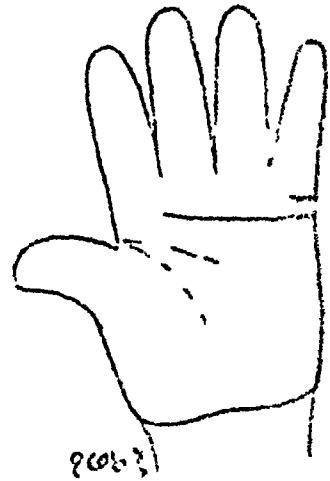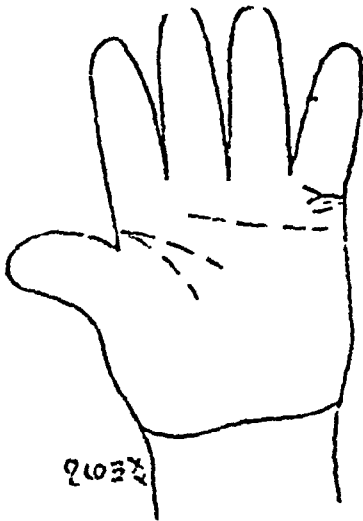
चित्र १७४—स्त्री के हाथ में विवाह-रेखा की जितनी शाखाएं हृदय-रेखा का स्पर्श कर रही हों, उसके उतने ही पतियों अथवा प्रेमियों की मृत्यु होती है। ऐसी रेखाओं वाली स्त्री अनेक पुरुषों के साथ भोगविलास में मग्न रहती है, परन्तु वह किसी भी एक पुरुष के पास स्थिर नहीं रह पाती। ऐसी स्त्रियां महाभयंकर रोगों से ग्रस्त, निराश तथा हताश स्वभाव वाली होती हैं। वह जीवन भर रोग-मुक्त नहीं रह पाती।

चित्र १७५—यदि विवाह-रेखा पर नक्षत्र-चिह्न हो, तो ऐसी स्त्री के पति को आकस्मिक मृत्यु होती है और वह विधवा-जीवन व्यतीत करती है।
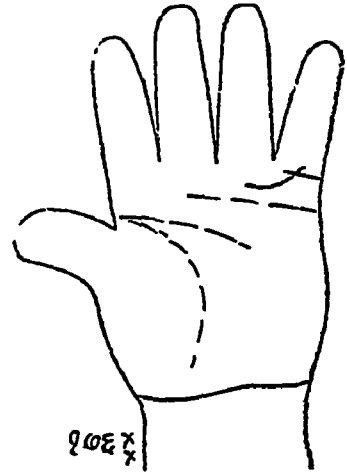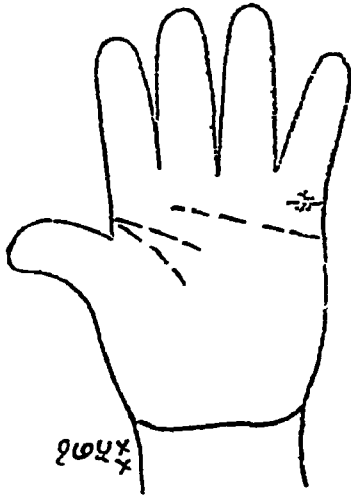
चित्र १७६—यदि स्त्री के हाथ मे सूर्य-क्षेत्र से बुध-क्षेत्र की ओर आने वाली कोई रेखा विवाह-रेखा को काट दे और उस पर नक्षत्र-चिह्न भी हो, तो ऐसी स्त्री अपने किसी अन्य प्रेमी द्वारा पति को मृत्यु के घाट उतरवा देती है और स्वयं उसके साथ परदेश मे भाग जाती है। कुछ समय बाद वह उस प्रेमी को भी विष देकर मार डालती है तथा स्वय तीर्थ स्थान मे जाकर कुत्सित-मार्ग को त्याग कर अपने जीवन के शेष भाग को सुसंगति, भगवद्भजन तथा आध्यात्मिक विषयों के चिन्तन मे बिताती है।

चित्र १७७—यदि विवाह-रेखा पर खजूर के पत्ते के समान चिह्न हो अर्थात् विवाह-रेखा मे से कई महीन तथा छोटी रेखाएं हृदय-रेखा की ओर झुकी हुई हो और उनमे से एक रेखा घूमकर
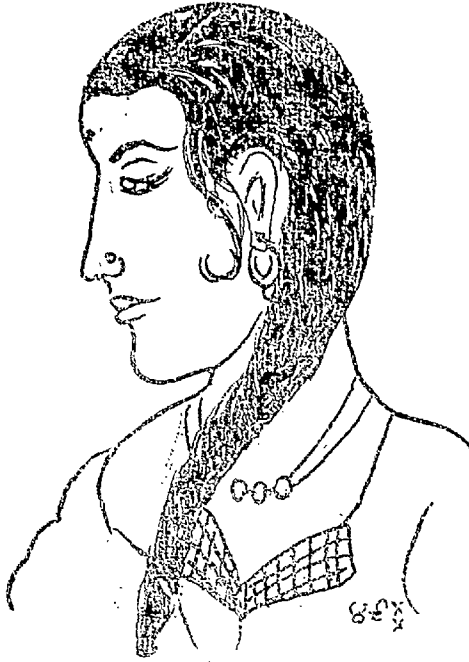
जिस स्त्री के कन्धे के निचले भाग में स्वस्तिक चिह्न हो, वह सदैव धन-सम्पत्ति को प्राप्त करने वाली तथा श्रेष्ठ पुत्रों को जन्म देने वाली होती है। मोटे, टेढ़े तथा रोमयुक्त कंधों वाली स्त्री दासी अथवा विधवा होती है। सुदृढ़, छिपी हुई सन्धि वाले, अग्रभाग में कुछ झुके हुए तथा मांसल कंधों वाली स्त्री सुख-सौभाग्य प्राप्त करती है।

पीठ-लक्षण

जिसका पृष्ठ वंश (पीठ की हड्डी) भीतर की ओर छिपी हो तथा जो मांसल एवं सीधी हो, ऐसी पीठ शुभ होती है।

चित्र ५०—यदि पीठ टेढ़ी, नस युक्त तथा झुकी हुई हो तो उसे अशुभ एवं दुःखदायक समझना चाहिए।
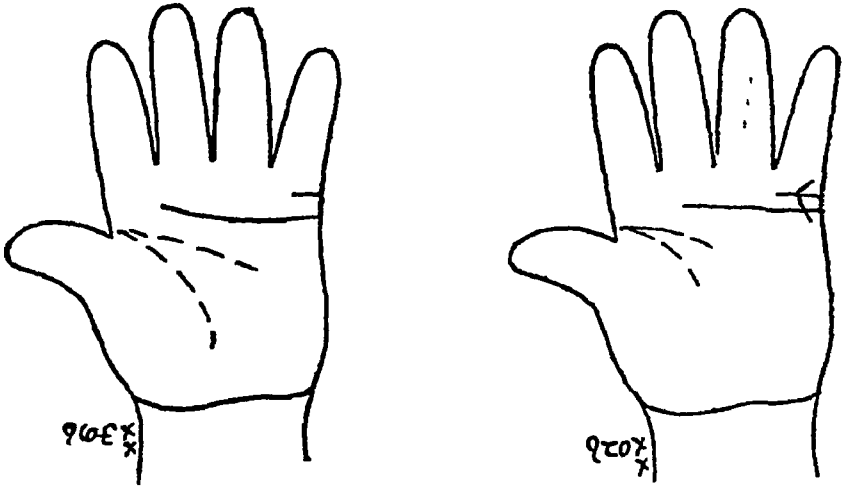
चित्र १८०—यदि विवाह-रेखा पर समकोण वनाती हुई एक सीधी रेखा हृदय-रेखा को पार करती हुई मंगल-क्षेत्र पर जा पहुचे, तो ऐसी रेखा वाली स्त्री का पति व्यसनी, जुआरी, अफीमची, दुर्गुणी तथा रुधिरविकारी होता है।

चित्र १८१—यदि चन्द्र-क्षेत्र से एक सीधी और स्पष्ट प्रभाव-रेखा निकलकर भाग्य-रेखा का स्पर्श करे अथवा उसे काट दे, तो ऐसी स्त्री अपना विवाह केवल वासना पूर्ति के लिए करती है। विवाह के वाद कुछ समय तक तो उसे सुख मिलता है, परन्तु वाद मे उसे पति द्वारा त्याग दिया जाता है। ऐसी स्थिति में वह वेश्यावृत्ति करने पर भी उतारू हो सकती है।।

चित्र १८२—यदि विवाह-रेखा द्वीप-चिह्न युक्त हो तथा रेखा उस द्वीप से भी आगे निकल रही हो, तो ऐसी स्त्री पर-पुरुष-गामिनी पति से विरोध रखनें वाली तथा धन-ऐश्वर्य से सम्पन्न होती है।
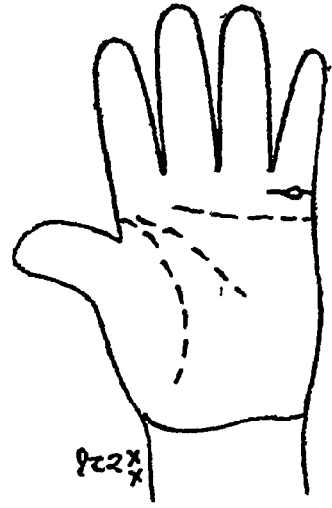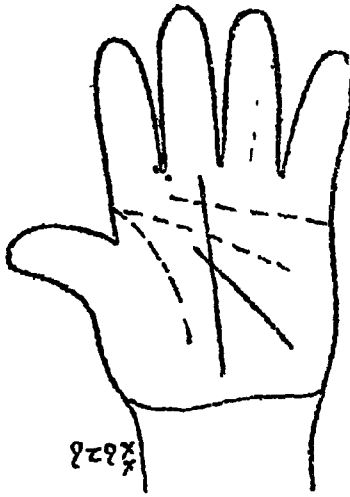
यदि गुरु तथा शुक्र के पर्वत उन्नत हों, तो स्त्री व्यभिचारिणी नहीं होती, अपितु धनाढ्य, पति परायण, मधुरभाषिणी, गुणवती तथा गृहकार्य में कुशल होती है।

चित्र १८३—यदि जीवन-रेखा के भीतर स्थित प्रभावित-रेखा द्वीप युक्त अथवा द्विजिह्व होकर जीवन-रेखा पर समाप्त हो, तो ऐसी स्त्री का पति व्यसनी, दुराचारी तथा कलही होता है और जिस वयोमान में उक्त रेखा द्रिजिह्व हुई हो, उस वर्ष में उसका वियोग हो जाता है।

चित्र १८४—यदि स्त्री के हाथ में सूर्य-क्षेत्र पर क्रास-चिह्न हो तो वह सुन्दरी, धन की लोभिन, निर्लज्ज, सुगन्धित पदार्थो का सेवन करनें वाली, प्राणघातिनी, अत्याचारिणी तथा कुलटा होती है। ऐसी स्त्रिया नित नये लोगों को अपने प्रेम-जाल में फसानें
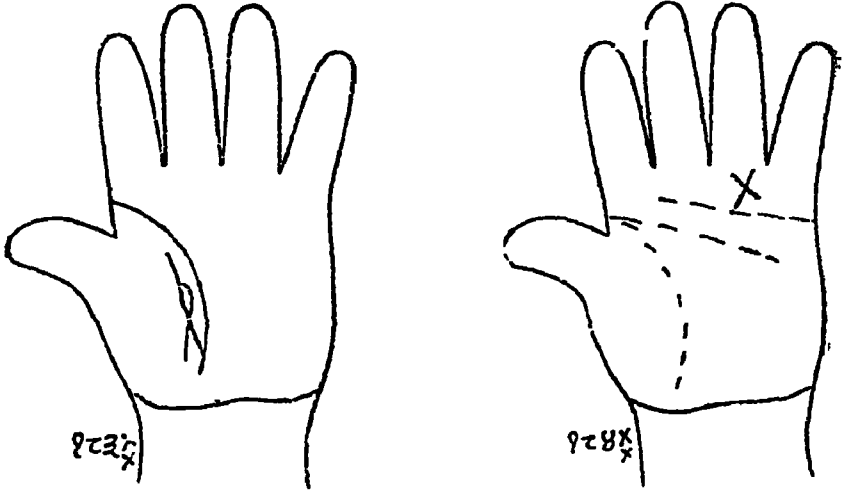
वाली तथा तलाक देने वाली, व्यभिचारिणी तथा लोक-निन्दित होती हैं।

चित्र १८५—यदि बुध-क्षेत्र मे आने वाली विवाह-रेखा सूर्य-रेखा को काट रही हो, तो ऐसी स्त्री का वेमेल विवाह होता है। ऐसी रेखा वाली स्त्री का पति मूर्ख, कपटी, दुराचारी तथा वेश्यागामी होता है। स्त्री अपने पति को कुमार्ग से हटने के लिए प्रेरित करती है परन्तु उसे सफलता नही मिलती और वह स्वय भी अपयश की भागिनी वनती है।

चित्र १८६—यदि भाग्य-रेखा अपनी शाखा के द्वारा हृदय-रेखा के ऊपर तथा नीचे दो त्रिकोण वनाये, तो ऐसे चिह्न वाली स्त्री धन संग्रह करने में निपुण, धार्मिक विचारो से रहित, लोभी तथा चरित्र-हीना होती है।

चित्र १८७—पूर्वोक्त प्रकार का त्रिकोण हाथ में हो और नीचे के त्रिकोण का एक कोण मस्तक-रेखा का तथा ऊपर का कोण

१८५ x/x

१८६ x/x
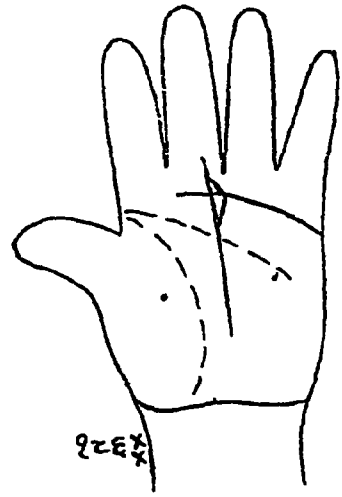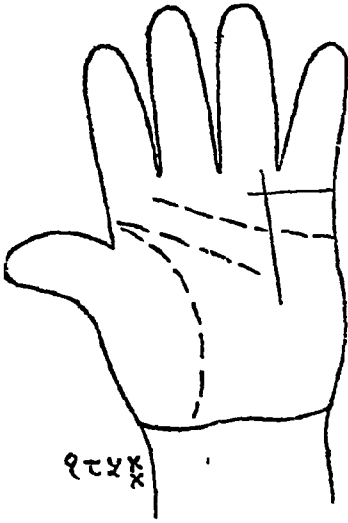
अनामिका उंगली के मूल का स्पर्श कर रहा हो तो ऐसी स्त्री का जीवन किसी संकट में पड़कर भाररूप तथा दुःखमय हो जाता है।

१८७ x/x

१८८ x/x
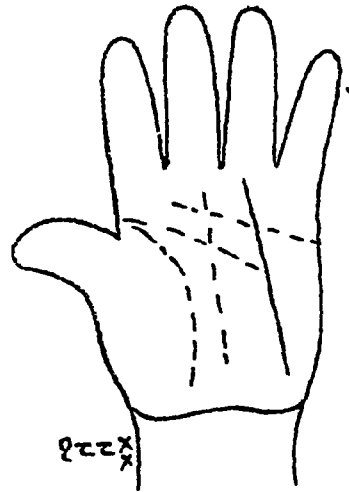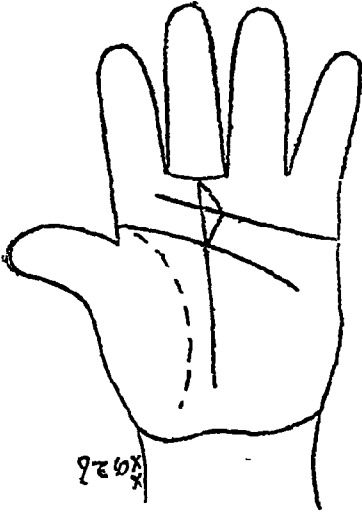
चित्र १८८— यदि किसी स्त्री के हाथ में सूर्य-रेखा चन्द्र-पर्वत से निकलकर सूर्य के पर्वत पर जाती हो तो वह सुशिक्षिता, गुणवती एवं यशस्विनी होती है। ऐसी स्त्री सार्वजनिक एवं लोपयोगी कार्यो को करने में विशेप रुचि रखती है तथा उसे अपने पति की ओर से भी यथेष्ठ सम्मान तथा स्नेह प्राप्त होता है।

चित्र १८९—यदि किसी स्त्री के हाथ की कनिष्ठा उगली के नीचे स्थित विवाह-रेखा में शाखाएं निकली हुई दिखाई देती हों तो वे शाखाए सख्या में जितनी होगी—उस स्त्री के उतनी ही सौतें भी होंगी अर्थात् उसका पति उतनी ही स्त्रियो से या तो विवाह करेगा अथवा सम्वन्ध वनाये रहेग।।

१८९ १९०
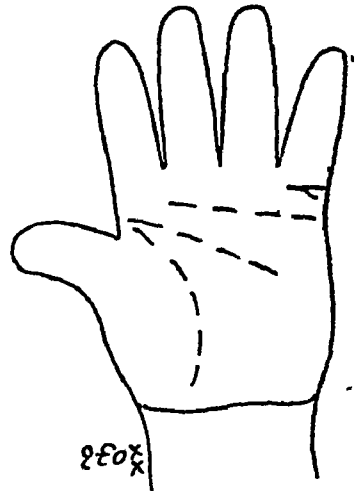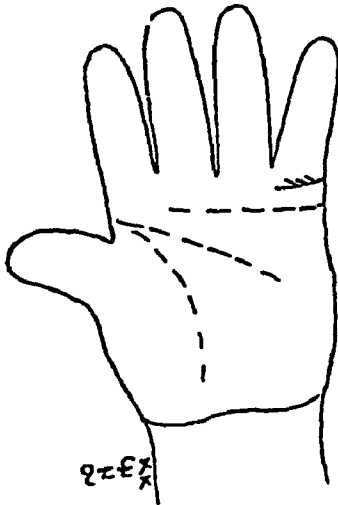
चित्र १९०—यदि स्त्री के हाथ की विवाह-रेखा मे दाएं ओर को कोई शाखा निकली हुई हो, तो उसका अपने पति के साथ विशेष प्रेम होता है।

स्त्रियों के करतल के चिन्ह

स्त्रियों के करतल (हथेली) में पाए जाने वाले चिन्हों के प्रभाव के सम्बन्ध में भारतीय शास्त्रकारों ने निम्नानुसार कहा है—

मत्स्येन शुभगानारी स्वस्तिकेन वसु प्रदा।
पद्मेन भूपतेपत्नी जनयेद्भूपति सुतं॥
चक्रवर्ति स्त्रिया पाणौनद्यावर्तः प्रदक्षिणः।
शंखातपत्र कमठानृपमातत्व सूचकाः॥
तुलामानाकृतौ रेखे पणिक पत्नित्व हेतुके।
गजवाजि वृषाकारा. करेवामेसगहर्शा॥
रेखा प्रासाद वज्राभा सूयुस्तीर्थकरं सुतं।
कृषीबलस्या पत्नीस्याच्छकटेन युगेन वा॥
चामराकुशको दंडे राजपत्नी भवेद्ध्रुवं।
त्रिशूलासिगदाशक्ति दुंदुम्याकृति रेखया॥
नितंबिनी कीर्तिमती त्यागेन पृथिवीत से।
कंकमंडूक जंबूक वृक वृश्चिक भोगिन.॥
ससभोष्ट्र विडालाःस्युः करस्थदुःखदा स्त्रियाः॥

इन श्लोकों का भावार्थ नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

चित्र १६१—यदि किसी स्त्री के हाथ में मछली के आकार की रेखा हो, तो उसे सौभाग्यवती समझना चाहिए। ऐसी स्त्री सुख-सौभाग्य को प्राप्त करती है।

चित्र १६२—यदि किसी स्त्री के हाथ में स्वस्तिक के समान चिन्ह हो, तो वह धनी होती है और यदि कमल जैसा चिन्ह हो, तो स्वयं राजा की पत्नी होती है तथा राज्य करने वाले पुत्र को जन्म देती है।
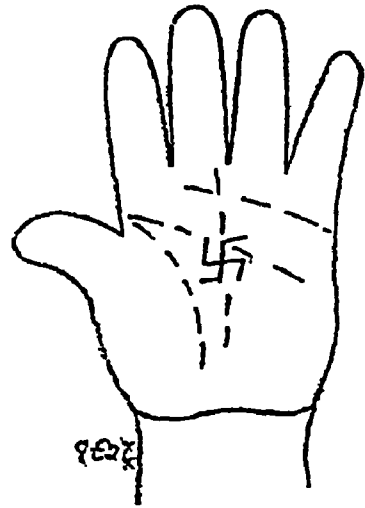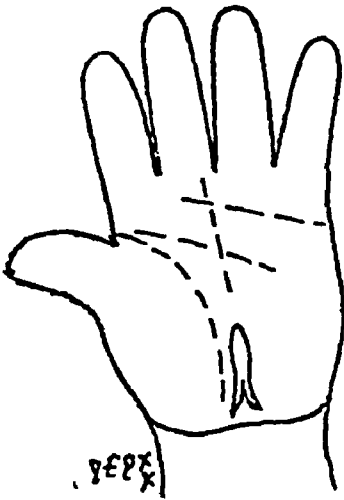
चित्र १९३ - यदि किसी स्त्री के हाथ में राजमहल जैसा चिन्ह हो तो वह चक्रवर्ती राजा की स्त्री होती है । यदि हथेली में

शंख, छत्र अथवा कच्छप के आकार के चिन्ह हों, तो वह राज-माता होती है अर्थात् उसका पुत्र राजा होता है।

चित्र १६४—यदि किसी के हाथ में तराजू के समान रेखा हो, तो वह वैश्य की पत्नी होती है अर्थात् उसका पति व्यवसाय करने वाला होता है।

चित्र १६५—यदि किसी स्त्री के हाथ में हाथी, घोडा, वृषभ (बैल), प्रासाद (मन्दिर) अथवा वज्र के आकार की रेखा हो, तो वह स्त्री तीर्थाटन करने वाली होती है तथा शास्त्रज्ञ पुत्र को जन्म देती है।
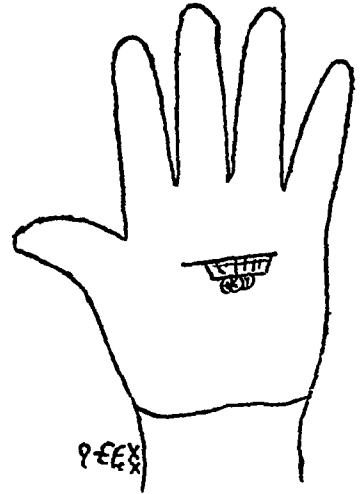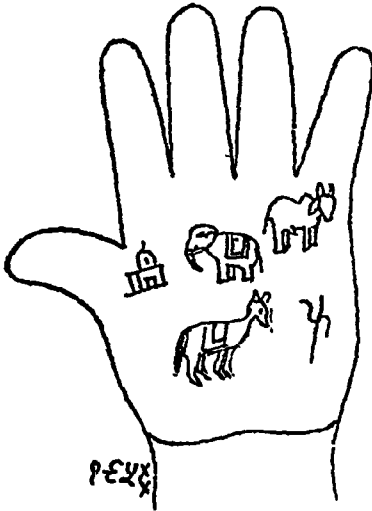
चित्र १६६—यदि किसी स्त्री के हाथ में शकट (बैलगाडी) जैसा चिह्न हो, तो वह किसी किसान अथवा कृषि से सम्बन्धित व्यवसाय करने वाले की पत्नी होती है।

चित्र १९७—यदि किसी स्त्री के हाथ में चामर, अंकुश तथा धनुष के समान चिन्ह हो, तो वह अवश्य ही किसी राजा अथवा अत्यधिक ऐश्वर्यशाली व्यक्ति की पत्नी होती है।

चित्र १९८—यदि किसी स्त्री के हाथ में त्रिशूल, तलवार, गदा, शक्ति अथवा दुन्दुभी (नगाडा) के आकृति की रेखा हो, तो वह स्त्री अत्यधिक दान देने के कारण विपुल यश एव कीर्ति को प्राप्त करती है।

चित्र १९९—यदि किसी स्त्री के हाथ में मेंढक, विच्छू अथवा सर्प की आकृति जैसा चिन्ह हो, तो वह स्त्री दुर्भाग्यशाली होती है।

चित्र २००—यदि किसी स्त्री के हाथ में सियार, ऊंट, गधी, बिल्ली जैसी आकृति हो, तो वह स्त्री दुःख देने वाली, दुःख भोगने वाली तथा अभागिनी होती है।
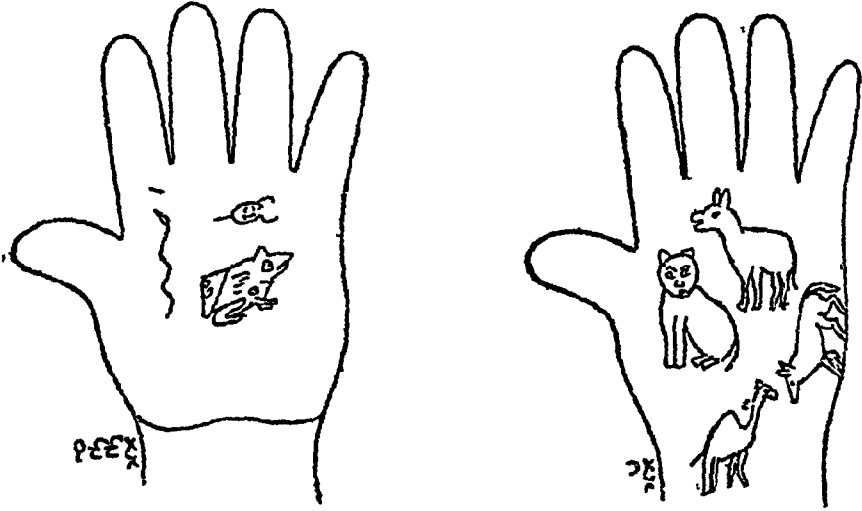
आवश्यक टिप्पणी

स्त्रियों के हाथ की विशेष रेखाएं तथा चिन्हों के शुभाशुभ फल का वर्णन पिछले पृष्ठों में किया गया है। हाथों की बनावट, रेखाओं तथा हस्त-चिन्हों के फलादेश का वर्णन 'वृहद सामुद्रिक विज्ञान' के विभिन्न खण्डों में विस्तारपूर्वक किया जा चुका है। अतः उनके सम्बन्ध में अधिक जानकारी प्राप्त करने के लिए सभी खण्डों का अध्ययन तथा मनन करना चाहिए।

हाथ की मुख्य-मुख्य रेखाओं—हस्त-चिन्ह तथा हथेली पर ग्रह क्षेत्रों की अवस्थिति सम्बन्धित चित्र इसी पुस्तक के परिशिष्ट खण्ड में दिये गए हैं, उन्हें देखकर सम्बन्धित बातों की जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिए।

●

विविध विषय

रूपाकृति, वेश-भूषा, रंगो को पसन्दगी तथा अन्य चेष्टाओं एवं लक्षणों के अनुसार स्त्री के स्वभाव एव चरित्र की परीक्षा से सम्बन्वित विपयो को नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

रूपाकृति द्वारा चरित्र-परीक्षा

(१) पतले शरीर वाली स्त्री पति को दुःख देने वाली तथा उससे विगाड़ रखने वाली होती है। ऐसी स्त्रियों का मस्तिष्क वहुत क्रियाशोल होता है, परन्तु उनमें जीवन-शक्ति कम होती है, अत: वे स्वभाव से सुस्त तथा व्यवहार में ठण्डी होती है। ऐसी स्त्रियां प्राय. वहुत वातूनी होते हुए भी अपने मित्र अधिक नही वनाती, परन्तु जव किसी को अपना मित्र वना लेती हैं तव फिर मित्रता का निर्वाह करने मे कोई कमी नही रहने देती। अपनी इच्छा के प्रतिकूल किसी घटना के घटने पर ये अपने मानसिक-सन्तुलन को खो वैठती है और जव कोई वड़ी घटना घट जाती है तभी अत्यधिक उत्तेजित भी होती हैं।

सामान्यत. वहुत पतले शरीर वाली स्त्रिया परिश्रम के कार्यों से घवराती हैं और अन्तर्मुखी स्वभाव वाली होती हैं।

(२) अत्यधिक लम्वे शरीर वाली स्त्रियां प्रतिकूल परिस्थितयों का भी मुस्कराहट के साथ सामना करती है। उन्हे क्रोध वहुत कम आता है। वे किसी काम में जल्दवाजी नही करती। उनका स्वभाव सामान्यत: अच्छा होता है। वाहर से दिखाने के लिए वे अपने

मिजाज को खुरखुरा बना लेती हैं, जिसकी ओट में उनका अच्छा स्वभाव प्राय: छिप जाया करता है।

(३) लम्बे और भारी शरीर वाली स्त्रियों की प्रकृति सामान्यत: गम्भीर होती है। वे जितने समय तक हसमुख रहती है, उतने ही समय तक चिड़चिड़ी भी बनी रहती हैं। ऐसी स्त्रिया अपने मुंह से प्रत्येक शब्द को तौलकर निकालती है, अत: वे बहुत कम बात करती हैं। उनमें अपने कुल का अभिमान भी अधिक होता है। ये यदि एक बार किसी को अपना प्रिय बना ले तो सकट के समय में भी उसका साथ नही छोड़ती।

(४) बलिष्ठ और ठिगने शरीर वाली स्त्रियां हंसमुख, मिलनसार, हठी, उद्धत तथा कुछ तुनुकमिजाज भी होती है। वे क्षमाशील होती हैं और किसी के प्रति उनके मन में अधिक समय तक मैल नही रहता। ये अपनी गलतियों को मानने तथा उसके लिए क्षमा-याचना करने लिए भी सदैव प्रस्तुत बनी रहती है।

(५) लम्बी टांगों तथा छोटे धड़ वाली स्त्रियां चंचल-प्रकृति की होती है। वे हमेशा कुछ-न-कुछ करती रहती है। यात्रा करने तथा अनजाने स्थानों में जाने का उन्हे बहुत शौक होता है। वे जीवन को प्यार करती है तथा प्रसन्नता पूर्वक समय व्यतीत करने की आदी होती है। उन्हे नियमित तथा नीरस कार्यो में बाधकर रखना कठिन होता है।

(६) छोटी टांगों तथा लम्बे धड़ वाली स्त्रियां हसमुख स्वभाव की होती है। वे सासारिक कठिनाइयों एव सघर्षो का निर्भयता से मुकाबला करती हैं और किसी भी पराजय को स्थायी रूप से स्वीकार नही करती। उन्हें अपने पारिवारिको तथा सगे-सम्बन्धियो से मेल-जोल

रखना अच्छा लगता है। असफलताओं को वे चुनौती के रूप में स्वीकार करती है और उद्देश्य की प्राप्ति के लिए कठिन परिश्रम करने में भी पीछे नही रहती।

(७) भारी भरकम, मोटे तथा ठिगने शरीर वाली स्त्रिया रति-क्रीड़ा मे विशेष रुचि रखने वाली तथा खुशमिजाज होती है। वे

कठिन परिश्रम के कार्यों को भी अपनी सामर्थ्य के अनुसार करती हैं तथा घर की व्यवस्था को बनाये रखने में कुशल होती है।

वेश-भूषा द्वारा चरित्र-परीक्षा

(१) जो स्त्रियां प्रचलित फैशन के विरुद्ध भिन्न प्रकार की पोशाक पहनती हैं, वे अपने व्यक्तित्व की सत्ता को अलग से प्रदर्शित करती हैं। ऐसी स्त्रियां दूसरों के निर्देश पर नही चलतीं तथा अपनी स्वतन्त्र बुद्धि तथा स्वतन्त्र विचारों के अनुसार कार्य करती है।

(२) श्वेत तथा सामान्य वस्त्र पहनने वाली स्त्री सामान्यतः व्यवहार में रूखी, सख्त तथा गभीर स्वभाव की होती है। ऐसी स्त्री दूसरों को उपदेश, निर्देश, उचित सम्मति तथा सुझाव देने में प्रवीण होती है।

(३) भड़कीले तथा चटकदार वस्त्र पहनने वाली स्त्रियां चंचल प्रकृति की, अधिक कामुक तथा अगम्भीर होती हैं। उन्हें बातें करना, हंसना, मनोरंजक आदि कार्य अधिक प्रिय होते हैं।

(४) जो स्त्रियां अपने पांव के मोजे सावधानी से पहनती है तथा अन्य वस्त्रों को भी बहुत तरीके के साथ धारण करती है, उनकी निरीक्षण शक्ति बहुत तीव्र होती है। वे एक काम को पूरा किये बिना दूसरे में हाथ नही डालती। ऐसी स्त्रियां गुणवान, बुद्धिमान तथा शिष्ट होती हैं।

(५) जो स्त्रियां अपनी पोशाक के विषय में लापरवाह होती हैं, वे अव्यवस्थित चित्त तथा अल्पबुद्धि वाली होती है। वे किसी भी काम को समय पर नही कर पाती। उनका प्रत्येक विचार, कार्य तथा व्यवहार असंतुलित एवं अव्यवस्थित होता है।

(६) जो स्त्रियां हल्का मेकअप करती हैं, वे अपने मन की बात को भली-भांति व्यक्त नही कर पाती। वे थोडे ही परिश्रम से थक जाती हैं, परन्तु जिस कार्य को भी करती है, उसका निर्वाह भली-भांति करती हैं।

(७) जो स्त्रिया भारी मेकअप करती हैं, वे आक्रामक प्रवृत्ति की तथा सतर्क दृष्टि वाली होती हैं। वे घर को व्यवस्थित रखती हैं तथा आय और व्यय के बीच सतुलन बनाये रखती हैं।

(८) जो स्त्रियां भडकदार मेकअप करती है, वे उच्छृंखल स्वभाव की होती हैं। वे खेल तथा मनोरंजन के कार्यो मे अग्रणी रहती है, परन्तु घरेलू काम-काज करने में उनका मन अधिक नही लग पाता। किसी भी उत्तदायित्व का निर्वाह करना उन्हे बहुत कठिन लगता है। वे चिन्ता-फिक्र से रहित हसी-खुशी का स्वच्छन्द जीवन व्यतीत करना चाहती है।

(९) जो स्त्रिया मेकअप बिल्कुल नही करतीं, वे कल्पनाशील, विचारशील, गभीर, स्वतन्त्र प्रवृत्ति की तथा महत्वाकांक्षी होती है। वे स्वय को सामान्य स्त्रियो से भिन्न समझती है तथा उन्हे अपने व्यक्तित्व का गर्व भी होता है। ऐसी स्त्रिया यदि किसी अवसर पर मेकअप कर लेती हैं, तो उनके सौंदर्य का आकर्षण सामान्य से अधिक बढ जाता है।

(१०) भीनी सुगन्ध वाले इत्र तथा सेन्ट का व्यवहार करने वाली स्त्री सद्‌गुणी, विचारवान, लज्जाशीला तथा बुद्धिमती होती है। तीव्र गन्ध वाले सेन्ट आदि का व्यवहार करने वाली स्त्री सवेदात्मक होती है, उसके जीवन में एक के बाद दूसरे सकट घिरे रहते हैं। ऐसी स्त्री पुरुषों के चरित्र को पहचानने मे अक्सर गलती कर बैठती है। ऐसी स्त्री अधिक समय तक चुप बैठी नही रह सकती। शारीरिक श्रम के कारण यदि यह कभी थक भी जाये तो थोड़ा-सा

विश्राम करने के उपरान्त पुनः सक्रिय हो जाती है। ऐसी स्त्रियों के मित्रों की संख्या अधिक होती है, परन्तु उनमें सच्चे मित्र बहुत कम ही निकलते हैं। 'यू.डी. कोलोन' सुगन्धि का उपयोग करने वाली स्त्री में अधिक गतिशीलता पाई जाती है।

रंगों की पसंदगी द्वारा चरित्र की परीक्षा

(१) जो स्त्री श्वेत (सफेद) रंग को पसद करती है, वह सज्जन, सरल, दयालु, भली, सच्ची, स्वार्थ-रहित, न्याय-प्रिय तथा मानवीय गुणो से सम्पन्न होती है।

ऐसी स्त्री दूसरो की सहायता एव सेवा करने के लिए सदैव तैयार वनी रहती है। वह स्वभाव से गम्भीर होती है तथा दिखावा पसद नही करती।

ऐसी स्त्री व्यवस्था प्रिय तथा साफ-सुथरी रहने वाली होती है। वह व्यवहार तथा वार्तालाप में रूढिवादी होती है तथा यश-सम्मान प्राप्ति से दूर रहना चाहती है।

ऐसी स्त्री की आवाज बुलन्द तथा दृढ होती है, जिससे उसका आत्म-विश्वास प्रकट होता है। ऐसी स्त्री कभी किसी से अनुचित लाभ उठाने का प्रयत्न नही करती तथा वाहरी शान-शौकत अथवा तड़क-भडक के प्रभाव में नही आती।

(२) जो स्त्री पीले रग को पसन्द करती है, वह गप-शप में रुचि रखने वाली, हर समय कुछ न कुछ वोलती रहने वाली तथा जिज्ञासु प्रवृत्ति की होती है। उसके शिष्टाचार गम्भीरता पूर्ण होते हैं तथा स्वर में रहस्यात्मकता होती है। किसी गम्भीर विषय पर वार्तालाप के समय वह ऊब जाती है, परन्तु दूसरे लोगो के विषय मे छोटी-छोटी वार्ते करने में अपना अत्यधिक समय लगा देता है।

ऐसी स्त्री यद्यपि स्वभाव से उदार नही होती, परन्तु कभी उमंग आ जाने पर दूसरो की अत्यधिक सहायता भी कर बैठती है।

(३) जो स्त्री नारंगी रग को पसन्द करती है, वह स्नेहमयी, मैत्रीपूर्ण तथा आनन्द-प्रिय स्वभाव की होती है एव अपने मैत्री सम्वन्धों में सतुलन वनाये रखती है।

ऐसी स्त्री कभी रूखी अथवा कर्कश नहीं होती। वह अपराधों को शीघ्र क्षमा कर देती है तथा वैसी घटनाओं को जल्दी ही भुला भी देती है, जो उसे कभी बहुत कष्ट कर सिद्ध हुई हों।

ऐसी स्त्री अपने अधिकार की प्राप्ति के लिए इस प्रकार मांग और प्रयत्न करती है कि अन्य किसी को बुरा नहीं लगता।

(४) जो स्त्री गुलाबी रंग को पसन्द करती है, उसकी चाल-ढाल में गम्भीरता तथा व्यवहार में तटस्थता पाई जाती है।

ऐसी स्त्रियां प्रसन्न तथा उल्लसित हृदय वाली होती हैं, परन्तु चंचलता में गम्भीरता का समावेश पाया जाता है, अतः वे शालीनता एवं शान्ति की प्रतिमूर्ति जैसी होती है।

ऐसी स्त्रियां कुछ लज्जालु, भीरु, शांत तथा सतर्क स्वभाव की होती है, परन्तु उग्र अथवा तुनुकमिजाज नही होती।

(५) जो स्त्री लाल रंग को पसन्द करती है, वह प्रसन्न, उत्फुल्ल, उग्र, निर्भीक तथा उत्तेजित स्वभाव वाली होती है।

ऐसी स्त्रियां साहसी होती है तथा अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को आनन्दपूर्ण बनाने की इच्छुक रहती हैं।

ऐसी स्त्रियां भविष्य के लिए चिंतित नहीं होतीं। उनकी महत्व-कांक्षाएं अदम्य होती हैं। वे जो भी काम करती है, उसमें जी-जान से जुट जाती हैं। वे दुर्भाग्य को अपनी शक्ति, उत्साह एवं परिश्रम से परास्त कर देती है।

ऐसी स्त्रियां दूसरों की चिंता अथवा परवाह नहीं करती। वे स्वतन्त्र रूप से काम करने वाली होती हैं और अपनी मनचाही बात को पूरा करने के लिए प्रयत्नशील बनी रहती हैं।

ऐसी स्त्रिया एक दिन में ही सम्पूर्ण सुख को प्राप्त कर लेने की इच्छुक होती हैं तथा भविष्य के लिए योजनाए नही बनाया करती।

(६) जो स्त्रिया भूरा रग पसन्द करती है, वे व्यवस्था-प्रिय, अकाल्पनिक एव नियमित जीवन विताने की अभ्यस्त होती हैं।

ऐसी स्त्रिया सत्य बोलने वाली, धार्मिक विचारो की, नियमो का पालन करने वाली तथा गृह-कार्य करने मे कुशल होती हैं। वे अच्छी पत्नी तथा माता के उत्तरदायित्व का पूर्ण निर्वाह करती है।'

ऐसी स्त्रिया अपनी नियमित परिपाटी तथा परम्परा के विरुद्ध कोई कार्य नही करती और जब तक उनके स्वयं के ऊपर किसी की त्रुटियों का प्रभाव न पड़े, तब तक वे सभी के प्रति अत्यन्त सहिष्णु बनी रहती हैं।

(७) जो स्त्रियां हरा रंग पसन्द करती है, उनकी जीभ कैंची की तरह चलती है। उनके मन में उमग भरी रहती है। वे चुस्त तथा फुर्तीली होती है और उनमें चतुराई अधिक पाई जाती है।

ऐसी स्त्रियों की बात-चीत में विनोद एव परिहास का पर्याप्त स्थान रहता है। वे अपने चारों ओर घटने वाली घटनाओं का ज्ञान रखती है। छीटाकसी तथा मजाक करने एव ताना मारने में ये लाजवाव होती हैं। इनमें से कुछ स्त्रिया आलसी तथा असहनशील भी होती है।

(८) जो स्त्रियां पीला रंग पसंद करती है, वे कभी प्रसन्न दिखाई देती हैं तो दूसरे ही क्षण निराशा के गर्त में जा गिरती है। वे अपने सवेगों पर नियन्त्रण नही कर पाती। अतः अनिश्चित तथा घबराई हुई सी स्थिति में बनी रहती हैं।

ऐसी स्त्रिया स्वभाव की अच्छी होती है, अतः अधिकाश व्यक्ति उनके साथ सहानुभूति रखते हैं। वे दूषित विचारों तथा क्रियाकलापो से दूर रहती हैं। उन्हे बहुत बार तथा बहुत समय तक यह भी पता नहीं चल पाता कि उन्हे कौनसी चीज या बात परेशान कर रही है।

ऐसी स्त्रियों को लोग प्रायः झक्की समझते है।

(९) जो स्त्रियां बैंगनी रंग को पसन्द करती है, उनके मन में वैभव-विलास की तीव्र लालसा रहती है।

ऐसी स्त्रियां व्यक्तिगत रूप में महत्वाकांक्षिणी नही होती, परन्तु उनके पति उन्हे सुखी तथा संतुष्ट बनाये रखने के लिए दिन-रात धन कमाने में जुटे रहते हैं।

ऐसी स्त्रिया चाहती है कि सब लोग उनके नाज उठाते रहे तथा देखभाल करते रहे, परन्तु इनमें से कुछ ही स्त्रियो की ऐसी इच्छा पूरी हो पाती है।

(१०) जो स्त्रियां स्लेटी रंग पसन्द करती है, वे शात, कुशल, परिश्रमी तथा अपने काम से ही काम रखने वाली होती है।

ऐसी स्त्रिया पक्षपात से रहित तथा विरक्त भाव से युक्त होकर कार्य करने मे गर्व का अनुभव करती है। वे अपने विषय की विशेषज्ञा होती है। अनावश्यक प्रदर्शन करना उन्हे रुचिकर नही होता।

ऐसी स्त्रियो का मस्तिष्क उत्कृष्ट कोटि का होता है। यदि उन्हे अपनी प्रतिभा का समुचित उपयोग करने का अवसर मिले, तो व्याव-सायिक अथवा अन्य क्षेत्रो में वे बहुत अच्छा काम कर दिखाती है। इनमें से कुछ स्त्रिया विमुख तथा कठोर स्वभाव की भी होती है।

(११) जो स्त्रिया काला रग पसद करती है, वे सामन्यत. उदास एव निराश प्रकृति का होती है। कभी-कभी उनके स्वभाव मे चिड़चिडापन भी दिखाई देता है।

ऐसी स्त्रिया कठोर, अनाकर्षक, मु हफट तथा रूखी होती हैं। वे विवादो से उदासीन रहकर, अपने ही विचारो में डूबी रहती है। ऐसी स्त्रियो को क्रोध भी अधिक आता है।

परन्तु जो स्त्रिया चमकदार काले रग को पसन्द करती हैं, उनका स्वभाव उपर्युक्त से विपरीत होता है। वे आत्मविश्वासी होती हैं तथा अपने समय को अच्छे से अच्छे तरीके से विताना चाहती है।

टिप्पणी—इस प्रकरण में वर्णित उपर्युक्त सभी सिद्धात पाश्चात्य सामुद्रिक वेत्ता तथा चरित्र-परीक्षको के मत के अधार पर दिये गए

है। अब हम भारतीय विद्वानों के मतानुसार स्त्रियों के शुभाशुभ लक्षणों का वर्णन करते हैं।

स्त्रियों के शुभ लक्षण

(१) 'मनुस्मृति' के अनुसार जिस कन्या के शरीर का कोई अंग छोटा-बड़ा अथवा न्यूनाधिक न हो, जिसकी चाल हाथी अथवा हस के समान हो, जिसके शरीर के रोम, सिर के केश तथा दांत पतले हों, जिसके शरीर की त्वचा कोमल हो तथा जिसका नाम सौम्य हो ऐसी सुलक्षणा कन्या के साथ विवाह करना चाहिए।

(२) 'पृथ्वी चन्द्रोदय' के अनुसार जिस कन्या का कण्ठ स्वर हस के समान तथा शरीर का वर्ण (रग) मेघ की भाति (चिकनाई लिये हुए सांवला) हो, उसके साथ विवाह करने से गार्हस्थ सुख की प्राप्ति होती है।

(३) नारद मुनि के अनुसार जिस कन्या (स्त्री) के नेत्र तथा ग्रीवा मृग के समान हो तथा वाणी और गति (चाल) हंस के समान हो, वह राजरानी होती है। जिस स्त्री की वाणी कोमल हो, चलते समय पांवों की आवाज न हो, जिसके पांव के तलवे कोमल हों, जिसका वर्ण (रग) कुमुद पुष्प की भांति हो तथा जिसका मुख सुन्दर हो—ऐसी स्त्री किसी सम्माननीय एव ऐश्वर्यशाली व्यक्ति की पत्नी होती है।

(४) 'गरुड़ पुराण' के अनुसार जिस स्त्री के केश अत्यन्त सुन्दर हों और उनका अग्रभाग कुछ टेढ़ापन लिये हुए हो और जिसका मुख गोल हो तथा नाभि में दाईं ओर को घुमाव हो—वह कुल की वृद्धि करने वाली होती है।

जिस स्त्री के शरीर तथा मुख की कांति स्वर्ण की भांति हो तथा हाथों का रंग लाल कमल जैसा हो और वे कोमल भी हों, वह पतिव्रता होती है।

जिस स्त्री का मुख पूर्ण चन्द्र के समान हो, जिसके शरीर की काति उदीयमान सूर्य के समान, ओष्ठ विम्बाफल के समान तथा नेत्र विशाल (बड़ं) हों, वह जीवन के सम्पूर्ण सुखों को प्राप्त करती है।

(५) 'विष्णु धर्मोत्तर पुराण' के अनुसार जिस स्त्री के सम्पूर्ण अंग सुन्दर हों, जिसकी चाल हाथी के समान हो, जिसके शरीर के रोम महीन हों,जिसका शरीर पतला हो, कमर पतली हो परन्तु जाघें पुष्ट तथा भारी हों, जिसकी दृष्टि कबूतर जैसी तथा वाणी कोकिल जैसी हो, जिसके केश काले तथा सुन्दर हों और जिसके शरीर का रग चिकनाई लिये हुए मनोहर हो उसे प्रशंसा के योग्य समझना चाहिए।

(६) विभिन्न विद्वानो ने स्त्री के शुभ लक्षण निम्नलिखित बताये है—

(क) जिस स्त्री के नख, रोम, त्वचा तथा नेत्र सुन्दर हों, वह क्षमाशीला होती है।

(ख) जिस स्त्री के तालु, नख, जिह्वा, होंठ, नेत्र तथा गुह्य अग लाल वर्ण हों, वह धन-धान्य से युक्त होती है।

(ग) जिस स्त्री के नेत्र बड़े हों, कूल्हे लम्बे-चौड़े हों, छाती चौड़ी हो, कमर बड़ी हो तथा योनि चौड़ी हो, वह समाज में यश, प्रतिष्ठा तथा सम्मान प्राप्त करती है।

(घ) जिस स्त्री के मुख, नेत्र, भुजा, उगलियां तथा केश लम्बे हों और शरीर पतला हो, वह दीर्घायु होती है।

(ङ) जिस स्त्री के मुख, स्तन, जाघ, घुटने, ग्रीवा, नाभि तथा सिर गोल,हो वह पुण्यवती तथा धन्या होती है।

(च) जिस स्त्री का सिर समान, गोल तथा छाते के आकार का हो, वह दीर्घायु होती है तथा राज्यसुख का उपभोग करती है।

स्त्रियों के अशुभ लक्षण

(१) 'मनुस्मृति' के अनुसार जो कन्या सूरजमुखी हो अर्थात् जिसके सम्पूर्ण शरीर एव शरीर के केश तथा रोएं आदि एकदम सफेद रंग के हों, जिसके शरीर में कोई अग अधिक हो, जिसके शरीर पर रोएं या तो विल्कुल ही न हो अथवा वहुत अधिक हों, जिसकी आंखों के डिम्व पीले रग के हों, और रोगिणी तथा वाचाल हो, जिसका नाम नक्षत्र, नदी, पर्वत, पक्षी अथवा सर्प वाचक हो अथवा जिसका नाम अन्त्यज (शूद्र) अथवा दास के नाम पर हो अथवा जिसके नाम को सुनते ही हृदय में भय उत्पन्न हो—ऐसी कुलक्षण कन्या से विवाह नही करना चाहिए।
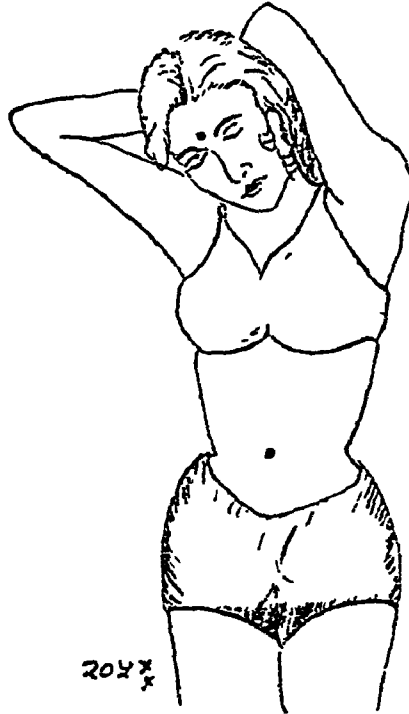
(२) बोधायन ऋषि के मतानुसार जिसकी भौहें परस्पर मिली हुई हों, नेत्र पीले रंग के हों, जिसके शरीर पर अधिक रोम हों, जिसके दांत काले अथवा मैले हों और जो यमज (जुड़ली) हो अर्थात् जो अपनी माता के गर्भ से अपने साथ ही किसी अन्य भाई अथवा बहिन को लेकर उत्पन्न हुई हो—ऐसी कन्या के साथ विवाह नही करना चाहिए ।

(३) शातातप ऋषि के मतानुसार अगहीन, व्यभिचारिणी, कुत्सित रोग वाली (यक्ष्मा, दमा, कुष्ठ आदि की मरीज) तथा जो किसी अन्य पुरुष के साथ विवाह करने की इच्छुक हो—ऐसी कन्या के साथ विवाह नही करना चाहिए ।

(४) 'विष्णुपुराण' के मतानुसार जो शारीरिक दृष्टि से क्षीण तथा दुर्बल हो, जिसका स्वर घर्घर अथवा कौए के स्वर जैसा हो, जिसकी आखें गोल हों अथवा भली-भाति खुलती न हो—ऐसी कन्या के साथ विवाह नही करना चाहिए ।

(५) 'गरुड़ पुराण' के मतानुसार जिस स्त्री के बाल टेढे हों तथा आंखें एकदम गोल हों, उसका पति अल्पायु होता है और वह स्वयं भी दु:ख भोगती है । जिस स्त्री के पांव का अंगूठा तथा अनामिका, उंगली पृथ्वी का स्पर्श न करे, उसका पति अल्पायु होता है और वह स्वयं स्वेच्छाचारिणी होती है । जिस स्त्री के पांवों में तथा स्तनों में रोम हो तथा दोनों ओठ उठे हुए हों, उसका पति अल्पायु होता है । ऐसी स्त्रियो के साथ विवाह नही करना चाहिए ।

(६) 'भविष्य पुराण' के मतानुसार सूरजमुखी, रोगिणी, गालों में गढे वाली, नीले रग के ओठ वाली, भूरी आंखो वाली तथा जिसके शरीरपर रोए बिल्कुल न हो, उस स्त्री को कुलक्षणी समझना चाहिए ।

(७) पृथ्वी चन्द्रोदय के मतानुसार जो स्त्री अधिक छोटी, अधिक ऊंची, अधिक दुवली अथवा अधिक मोटी हो तथा जिसकी आखों की पुतलियां पीले रंग की हों उसके साथ विवाह नहीं करना चाहिए।

(८) 'वृहद् भारतीय पुराण' के मतानुसार जिस स्त्री के कुल में कोई वंशपरम्परागत संक्रामक रोग (राजयक्ष्या, कुष्ठ आदि) हो, जो स्वयं रुग्णा हो, जिसके सिर पर केश या तो वहुत घने हो या बिल्कुल ही न हो, जो बौनी अथवा वहुत लम्वे शरीर वाली हो, जिसके शरीर में कोई अंग कम या अधिक हो, जो पागल हो, देखने में कुरूप हो अथवा क्रोधी स्वभाव की हो, जिसके पाव के टखने वहुत स्थूल हों पिंडलिया वहुत वडी हो, होठ के ऊपर मूंछो जैसे वाल हों, जिसकी आकृति पुरुष जैसी हो, जो बिना बात के ही हंसती रहती हो तथा जो दूसरे के घर में रहती हो—ऐसी कन्या से विवाह नही करना चाहिए।

(९) 'नागरखण्ड' के मतानुसार जिस स्त्री के तीन स्तन हों अथवा पीठ पर भौंरी हो उसके साथ किसी भी स्थिति में विवाह नहीं करना चाहिए।

(१०) अन्य विद्वानो के मतानुसार जो कन्या झगड़ालू, वहस करने वाली, वड़े दांतो वाली, भ्रमण की शौकीन, निष्ठुर स्वभाव वाली तथा वहुत अधिक भोजन करने वाली हो और जिसके शरीर की हड्डिया वहुत वड़ी हो—उसके साथ विवाह नही करना चाहिए।

जिस स्त्री के चेहरे का रग पीला अथवा लाल हो, जो अधिक रोती हो, वहुत धूर्त (चालाक) हो, जिसे खासी, दमा आदि का जीर्ण, रोग हो। जो सवसे द्वेष रखती हो, औरो की निन्दा करती हो, अधिक सोती

हो तथा अपशब्दों का उच्चारण करती हो, जिसका स्वभाव चोरी करने अथवा धोखा देने का हो, जिसके शरीर पर बाल हों, जिसकी नाक बहुत बड़ी हो, जो घमंडिन हो तथा बाहर से भोली और भली दीखने पर भी भीतर से कुटिल हो—उसके साथ विवाह नही करना चाहिए।

जिस स्त्री की पिंडलियों पर वहुत बाल हों, जिसके टखने निकले हुए हों, हंसते समय जिसके गाल पर गढ्डे पड़ते हों, जिसके चेहरे पर रूखापन हो, जिसकी हथेली तथा पांव के तलुए पीतवर्ण हों, जिसके नाखून सफेद रंग के तथा नेत्र लाल रंग के हों—ऐसी स्त्री कुलक्षणी होती है, अतः उसके साथ विवाह नही करना चाहिए।

(११) विभिन्न विद्वानों ने स्त्रियों के अशुभ लक्षण निम्नलिखित वताये हैं—

(क) जिस स्त्री का मुंह बड़ा तथा चौड़ा हो, होठ लम्बे तथा मोटे हों, आंखें बड़ी तथा भयंकर हों एवं कान, पाव, उगलियां मोटी और बड़ी हों, वह स्त्री पति घातिनी होती है।

(ख) जिस स्त्री के नेत्र, नख, रोम, कंठ, होठ, तालु तथा जीभ का रंग काला हो, वह दुष्चरित्रा होती है।

(ग) जिस स्त्री के ललाट, ग्रीवा, होठ, नाक, स्तन, कुक्षि (कोख) तथा योनि—ये सभी अंग लम्बे हो—वह दुर्भाग्यवती कुलक्षणा होती है

(घ) जिस स्त्री के हंसते समय मुह से लार तथा आखो से आसू टपके, वह अपने शील (चरित्र) की रक्षा नही कर पाती अर्थात् दुश्चरित्रा होतो है।

(ङ) जिस स्त्री की आंखें चचल हो तथा हंसते समय गालों में गढ्डे पड़ते हों, वह पतिघातिनी तथा व्यभिचारिणी होती है।

(च) वहुत छोटे मुंह वाली स्त्री धोखेबाज होती है, वहुत लम्बे मुंह वाली स्त्री दु:ख भोगती है तथा सूखे अथवा टेढ़े मुंह वाली स्त्री धन-धान्य तथा सौभाग्य से हीन होती है।

(छ) जो ऊंचे, कड़वे तथा तीव्र के स्वर में बोलती हो, जिसकी भौंहे फड़कती रहती हों तथा जो आचार-विचारहीन हो वह भाग्य-हीना दरिद्रता होती है।

(ज) जो स्त्री सोते समय दात पीसती हो अथवा बड़बड़ाया करती हो, वह यदि अन्य शुभ लक्षणों से युक्त हो तो भी त्याग देनी चाहिए ? ऐसी स्त्री दुर्भाग्यशीला होती है।

(झ) जिसका मुह, आख, नाक, कटि तथा रोम—सब बन्दर जैसे हों, वह अनुचित, नियम विरुद्ध तथा उल्टे कामो को करती है।

(ञ) जिस स्त्री के कण्ठ में दाई ओर भौरी हो वह दु.ख भोगती है तथा विधवा हो जाती है। यदि उक्त भौरी गले की घटी के समीप दाई ओर को कुछ झुकी हुई तथा टेढ़ी हो, वह अपने विवाह के एक वर्ष के भीतर ही विधवा हो जाती है तथा किसी अन्य पुरुष के आश्रय में चली जाती है।

(ट) जिस स्त्री के पांव की कनिष्ठा तथा अनामिका उगली पृथ्वी का स्पर्श न करे, जिसके अगूठे पर तर्जनी उगली चढी हुई हो अथवा जिसका अगूठा तर्जनी उगली पर गिरता हो, वह स्त्री कुलटा, पर-पुरुष गामिनी तथा पति को छोड़ देने वाली होती है।

(ठ) जिस स्त्री के पाव की कनिष्ठा उगली अन्य उगलियों के अनुपात में अधिक छोटी हो, वह मर्यादा में नही रहती।

(ड) जिस स्त्री के पांव की अनामिका उगली कनिष्ठा उगली से छोटी हो वह कैसी भी सुन्दर क्यों न हो, फिर भी उसे त्याग देना चाहिए, क्योंकि ऐसी स्त्री पति को धोखा देकर तथा उसे छोड़कर चली जाती है।

(ढ) जिस स्त्री के पांव की मध्यमा उंगली छोटी हो, वह किसी भी पुरुष के साथ निर्वाह नही कर पाती।

(ण) जिस स्त्री के पांव की तर्जनी उंगली सबसे छोटी हो, उसे विवाह करने के बाद भी छोड़ देना चाहिए, क्योंकि ऐसी स्त्री सदैव पर-पुरुष रता बनी रहती है।

(त) जिस स्त्री की जांघ ऊपर की ओर मोटी हो और वहां शिराए अथवा नाड़ियां दिखाई देती हो तथा उसी स्थान पर बहुत रोम भी हों साथ ही जिसका पेट घड़े जैसा हो, वह दुर्भाग्यवती होती है।

(थ) जिस स्त्री की गुह्य तथा गुदा वामावर्त, निम्न तथा अत्यन्त कृश हो, नाभि, ग्रीवा तथा कंधे छोटे हों, एवं योनि बड़ी तथा लम्बी हो—वह अपने कुल का नाश करने वाली होती है।

(द) जिस स्त्री के हंसते समय गालों में गड्ढ़ा-सा पड़ता हो और जिसका ललाट बहुत लम्बा हो, वह व्यभिचारिणी, पर-पुरुष के साथ रहने वाली अथवा देवर को मारने वाली होती है।

(ध) जिस स्त्री के कपोल लाल वर्ण के, मोटे तथा बडे हों, कलहकारिणी तथा कुभाषिणी होती है।

(न) जिस स्त्री के नेत्र बिल्ली की भांति पीतवर्ण, नीचे की ओर झुके हुए तथा चंचल हों, साथ ही जिसके अन्य अगों में भी चचलता भरी हो—वह व्याभिचारिणी होती है।

(प) जिस स्त्री का पेट श्याम वर्ण तथा बड़ा हो, वह श्वसुर-घातिनी होती है।

(फ) जिस स्त्री के होठ पर मूंछ की तरह बाल हों, वह अपने मातृ कुल को सुखदायक होती हुई भी पति के लिए अत्यन्त दु.ख-दायक तथा अशुभ सिद्ध होती है।

(व) जिस स्त्री के स्तनों के ऊपर केश हों, जिसके दोनों कान विपम (छोटे-बड़े) हों तथा जिसके बीच के दो दांत बड़े हों, वह अशुभ तथा दुःखदायिनी होती है।

(भ) जिस स्त्री के दांत के नीचे से मांस (मसूढा) ऊंचा उठा हुआ-सा दिखाई देता हो, वह चौर-कर्म (चोरी) करने में प्रवीण होती है।

(म) जिस स्त्री के ऊपर का होठ बड़ा, मोटा तथा ऊंचा हो एवं जिसके बाल रूखे तथा भ्रमर के समान काले हों, वह कलह-प्रिय होती है।

भावी व्यभिचारिणी स्त्रियों के लक्षण

जो स्त्री आगे चलकर व्यभिचारिणी हो जाती है, उसके प्रारम्भिक लक्षण नीचे लिखे अनुसार होते हैं—

व्यभिचारिणी स्त्रियो के साथ रहने वाली, अनेक पुरुपो के बीच रहने वाली, सदैव मातृ घर मे ही निवास करने वाली, गुरुजनों की वात न मानने वाली, स्वतन्त्र विचरण करने वाली, पति के परदेश रहते हुए भी शृ गार करने वाली, जिसका पति निरन्तर परदेश में रहे, वस्त्राभूपणो की लालची, धर्म-कर्म मे विश्वास न रखने वाली, मेले, तमाशे, सिनेमा आदि की शौकीन, अश्लील एव कामोत्तेजक पुस्तको को पढने वाली तथा अधिक आयु हो जाने पर भी जिसका विवाह न हुआ हो—ऐसी स्त्रिया व्यभिचारिणी हो जाती है।

व्यभिचारिणी स्त्रियों के लक्षण

जिस स्त्री के पांव की कनिष्ठा उ गली से पहले की दोनों उ गलिया—अनामिका तथा मध्यमा पृथ्वी पर न टिकती हो, जो तिरछी दृष्टि से देखती हो, जिसकी आखे पिंगल वर्ण की हों तथा जो विना वात के हसती हो—वह स्त्री व्यभिचारिणी होती है।

जिस स्त्री के पांव की कनिष्ठा उ गली पृथ्वी पर न टिके, वह अपने पहले पति को मारकर दूसरे पुरुप के साथ एकान्त मे रमण करती है।

जिस स्त्री के पाव की अनामिका उ गली पृथ्वी पर न टिकती हो, वह अपने दो पतियों को मारकर अन्य पुरुपो के साथ रमण करती है।

जिस स्त्री की मध्यमा उंगली छोटी हो, वह निरन्तर पर-पुरुपों के सम्पर्क में रहती तथा व्यभिचारिणी होती है।

जिस स्त्री के पांव की मध्यमा उंगली पृथ्वी का स्पर्श न करे, वह अपने तीन पतियो को मारकर पर-पुरुप गमन करती है।

जिस स्त्री के पांव की तर्जनी उगली अंगूठे से वड़ी हो, वह भी दुश्चरित्रा होती है।

जिस स्त्री के बाएं पैर की तर्जनी उगली अंगूठे से बड़ी हो अथवा जिसकी मध्यमा उंगली तर्जनी उंगली से वड़ी हो अथवा जिसकी कनिष्ठा उगली भूमि का स्पर्श न करती हो—वह स्त्री व्यभिचारिणी होती है।

जिसके पांव की उंगलिया आरम्भ में मोटी तथा बाद में पतली हों अथवा जिसके पाव की उंगलिया एक के ऊपर एक चढी हुई हो, वह स्त्री अपने वहुत से पतियों को मारकर अन्त में दासी का काम करती है तथा व्यभिचारिणी होती है।

जिस स्त्री के चलते समय पृथ्वी पर रेत के कण उछलते हों, वह व्यभिचारिणी तथा कुल को नष्ट करने वाली होती है।

विरक्ता स्त्री के लक्षण

जो शैया पर सोते समय अपने पति की ओर पीठ किये रहे, शैया पर लेटे रहने के समय पति के मुख का चुम्बन लेने की इच्छा न करे, पति द्वारा चुम्बन लेनें पर अपने मुंह को तुरन्त पोंछ ले, पति की ओर क्रुद्ध दृष्टि से देखे, पति से वाद-विवाद करे तथा अपशव्द कहे, पति का कोई काम न करे, पति को सम्मान न दे, मंगल-कार्य के समय भी क्रोध का प्रदर्शन करे, सखियों का सग भूल जाय तथा

विचित्र वेशभूषा बनाये रहे—ऐसी स्त्री को पति से विरक्त (विमुख) रहने वाली समझना चाहिए।

अनुरागवती स्त्री के लक्षण

आंख फाड़-फाड कर देखने वाली, निर्लज्ज होकर हसने वाली, स्तन तथा अन्य गुप्त रखे जाने योग्य अगो को बार-बार दिखाने वाली, पहले मु ह खोलकर बात करने वाली, फिर तुरन्त ही लज्जा का प्रदर्शन करने वाली, किसी की ओर देखते हुए भी अनदेखे जैसा

बहाना बनाने वाली, मार्ग में अधिक भ्रमण करने वाली, राह चलते हुए पुरुषो की ओर देखने वाली, अन्य स्त्रियों को देखकर हंसी-मजाक करने वाली, अपनी सहेलियो को अत्यधिक प्रेम का प्रदर्शन करते हुए गले से लगाने वाली, आंचल को बार-बार उघाड कर अपने स्तनों पर दृष्टि पात करने वाली, अपने होठों को अपने ही दातों से चबाने वाली, शरीर को अधिक मरोडने वाली, चचल हरिणी की भाति इधर-उधर घूमने वाली तथा जिसका शरीर कापता हो—ऐसी स्त्री अनुरागवती होती है।

रति इच्छुक स्त्री के लक्षण

जो स्त्री अपने शरीर को मरोड़े, बार-बार आखों को फाड-फाड़ कर देखे, हाथी की भाति झूमती फिरे, निर्लज्ज होकर दरवाजे पर दौड-दौड़ कर जा खड़ी हो, मार्ग चलते हुए लोगो को देखकर हसे, किसी भी वात अथवा वस्तु के लिए अत्यधिक हठ का प्रदर्शन करे तथा पति के अधिक समय तक बिछुड़े रहने के कारण जिसके शरीर में कामोत्तेजना अत्यधिक हो—उसे रति क्रिया (मैथुन) की इच्छुक समझना चाहिए।

शीघ्र वशीभूत होने वाली स्त्री के लक्षण

'वात्स्यायना' के मतानुसार निम्नलिखित प्रकार की स्त्रियां पर-पुरुषों के शीघ्र वशीभूत हो जाती है—

(१) घर के दरवाजे पर खड़ी होकर वाहर की ओर देखने वाली, (२) मकान की छत पर चढकर सड़क की ओर झाकने वाली, (३) युवा पड़ोसी के घर में जाकर गप्पें उड़ाने वाली, (४) निरन्तर किसी पुरुष की ओर देखती रहने वाली, (५) किसी की दृष्टि पड़ते

ही वगले झांकने वाली, (६) जिसके लिए विना किसी विशेष कारण के ही घर में सौत ला दी गई हो, (७) पति से शत्रुता अथवा द्वेष रखने वाली, (८) जिसे ऊंच-नीच का ज्ञान न हो, (९) सन्तान रहित, (१०) सदैव पिता के घर में रहने वाली, (११) जिसके वच्चे मर-मर जाते हों, (१२) बहुत वातूनी, (१३)

भायेला जोड़ने वाली, (१४) नट की स्त्री, (१५) बाल-विधवा, (१६) स्वय दरिद्रा होते हुए भी बहुत भोग चाहने वाली, (१७) बहुत देवरों वाली, (१८) स्वयं को योग्य तथा पति को हीन मानने वाली, (१९) स्वयं को चतुर मानकर पति की मूर्खता से उद्विग्न होने वाली, (२०) अत्यधिक लोभिन, (२१) जिसकी सगाई पहले किसी अन्य पुरुष के साथ हुई हो, परन्तु वाद में विवाह किसी दूसरे पुरुप के साथ हो जाय, (२२)अपनी सम बुद्धि, शील, मेधा तया स्वभाव वाले पुरुष की प्रशसक, (२३) किसी अन्य पुरुष से प्रेम करने वाली, (२४)जिसे विना कसूर के अपमानित किया गया हो,(२५)जिसे अपनी बरावर वाली स्त्रियों से नीचे गिरा-या गया हो, (२६) जिसका पति परदेश में रहता हो, (२७)जिसका पति मैला-कुचैला रहता हो, (२८) जिसका पति ईर्ष्यालु स्वभाव का हो, (२९) जिसका पति चोक्ष (एक जाति विशेष)जाति का हो (३०) जिसका पति नपु सक हो, (३१) जिसका पति दीर्घसूत्री हो, (३२) जिसका पति कायर हो, (३३) जिसका पति कुबड़ा हो, (३४) जिसका पति कुरूप हो, (३५) जिसका पति मणिकार हो अर्थात् मणियों के गहने पिरोने का काम करता हो और उसकी स्त्री उसके साथ ही दुकान पर वैठती हो, (३६) जिसका पति गवार हो, (३७) जिसका पति रोगी हो तथा (३८) जिसका पति वुड्डा हो-ऐसी स्त्रिया पर-पुरुषो द्वारा व्यभिचार कर्म के लिए शीघ्र वशीभूत की जा सकती हैं।

स्नेहपूर्ण स्त्रियों के लक्षण

काम-शास्त्र के विद्वानों के मतानुसार यदि स्त्री में अग्र लिखित लक्षण दिखाई दें, तो यह समझना चाहिए कि वह जिस पुरुष के

सामने इन लक्षणों को प्रदर्शित कर रही है, उसके प्रति अपने मन में स्नेह रखती है और उसके साथ सहवास करने को इच्छुक है—

(१) जो दृष्टिपात करते ही लज्जित हो जाय, (२) जो अपना मुह फेर कर कनखियो से देखे, (३) जो पात्र के अगूठे से पृथ्वी को कुरेदे, (४) जो दृष्टिपात करने पर स्थिर खडी रहे, (५) जो देखते ही मुस्कराने लगे, (६) जो देखते ही कटाक्ष करे, (७) जो सामना होने पर धीरे-धीरे चले, (८) जो अपने शारीरिक अ गो का प्रदर्शन करे, (६) जो किसी वहाने से अपने शरीर के छिपाने योग्य अवयवो को दिखाये, (१०) जो नायक के मित्रो से प्रेम करे, (११) जो नायक के सम्बन्ध मे अन्य लोगो से पूछताछ अथवा वार्तालाप करे, (१२) जो दृष्टि पडने पर अपने वक्षस्थल को दिखाये अथवा उस पर अपने हाथ रख ले, (१३) जो साक्षात्कार होने पर अ गड़ाई लेने लगे, (१४) जो साक्षात्कार होने पर जम्हाई लेने लगे, (१५) जो नायक के सामने शृ गार किये बिना न आये, (१६) जो नायक के ऊपर फूल आदि फेककर मारे, (१७) जो नायक के सामने अपने हाथ को दूसरे हाथ से मसले, (१८) जो किसी वहाने से नायक के घर आती-जाती हो, (१९) नायक को देखते ही जिसके मुह तथा हाथ-पाव पर पसीना आ जाय, (२०) जो नायक के सामने अपने बाहुमूल, कांख, उदर अथवा स्तनो को स्वयं देखने अथवा दिखाने लगे, (२१) जो नायक से सामना होने पर अपने वस्त्रो को संभालने लगे, (२२) जो नायक के सामने अपने वालो पर हाथ फेरे अथवा उन्हे खोले-बाधे, (२३) जो नायक के सामने दातो से अपने होठ को दबाये, (२४) जो नायक के सामने अपने बालक को चूमना आरम्भ कर दे (२५) जो नायक के सामने कभी लजाये और कभी लज्जा हटा दे, (२६) जो नायक के सामने हंसे, सखी का आलिगन करे, प्रत्युत्तर मांगे, किसी वहाने से सिर

खुजलाये, झूठी लज्जा अथवा प्रिय वचन बोले तथा (२७) जो नायक का रास्ता रोके—ऐसी स्त्री नायक के प्रति स्नेहपूर्ण होती है और उसके साथ सहवास करने की इच्छुक रहती है।

सुलक्षणा स्त्री के लक्षण

सत्यवादिनी, पतिव्रता, धर्म-कर्म में निरत, लज्जाशील, नीतिज्ञ, नीची दृष्टि वाली, मधुर भाषिणी, सुन्दर अगों वाली, स्वरूपवती, छोटे पांवों वाली, समान उदर वाली, सुन्दर स्तनों वाली, कमान जैसी कमर वाली, सीधी बाहुओं वाली तथा ऊंच-नीच का विचार रखने वाली स्त्री सुलक्षणा होती है।

त्याज्या स्त्री के लक्षण

शास्त्रकारों ने निम्नलिखित स्त्रियों को त्याज्या कहा है, अर्थात् इन स्त्रियों के साथ किसी पुरुष को (उनके पति के अतिरिक्त) रमण नहीं करना चाहिए।

(१) गुरु के कुटुम्ब की स्त्री, (२) क्षत्रिय, वैश्य तथा शूद्र के लिए ब्राह्मण की स्त्री, (३)अपनें कुल तथा गोत्र की स्त्री, (४)मित्र की पत्नी, (५)दुष्ट पुरुष की स्त्री(६) बहुत गोरी अथवा बहुत काले वर्ण की स्त्री, (७) रोगिणी, (८)दुःखिता,(९)निर्लज्ज,(१०)क्रोध करने वाली, (११) रजस्वलता, (१२)विधवा,(१३)दासी,(१४) पुरोहित की स्त्री, (१५) अपने हित-चिन्तक की स्त्री, (१६) पति द्वारा त्याज्या स्त्री, (१७) वृद्धा, (१८) अल्पवयस्का, (१९)अपरि-चिता, (२०)अत्यन्त दुर्बल,(२१)सती अर्थात् पतिव्रता, (२२)प्रकट रूप में व्यभिचारीणी, (२३)सन्यासनी,(२४) अत्यन्त दरिद्र अर्थात्

कंगालिणी, (२५) भिक्षुणी, (२६) कुलीन तथा (२७) अपने स्वामी की स्त्री—इन सबको त्याज्य समझना चाहिए।

उक्त स्त्रियों के अतिरिक्त (१) मालिन, (२)तेलिन,(३)तमोलिन, (४)मनिहारिन, (५)अहीरिन, (६)नटनी, (७) धाय, (८) पटविन, (९)चमारिन,(१०) शूद्रा, (११)धोबिन, (१२)सुनारिन, (१३) नाइन, (१४) हत्यारिन, (१५) पगली तथा (१६) बहरी स्त्रियां भी त्याज्य कही गई हैं।

स्त्रियों की विभिन्न जातियां

रूप, गुण, स्वभाव, चरित्र, शारीरिक अंगो की बनावट तथा प्रकृति के अनुसार काम-शास्त्र के विद्वानों ने स्त्रियो के अनेक प्रकार के भेद कहे हैं, जिन्हे सामान्य भाषा मे 'स्त्रियों की जातियां' कहा जाता है।

पाठकों की जानकारी के लिए इस प्रकरण में कामशास्त्रोक्त स्त्रियो की विभिन्न जातियां (भेदों) का वर्णन किया जा रहा है।

स्त्रयों की चार मुख्य जातियां

कामशास्त्र के प्राचीन आचार्यों—नन्दिकेश्वर, गोणिकापुत्र आदि ने स्त्रियों की चार मुख्य जातिया बताई हैं, वे इस प्रकार हैं—

(१) पद्मिनी।
(२) चित्रिनी।
(३) शंखिनी।
(४) हस्तिनी।

पद्मिनी के लक्षण

जिस स्त्री का मुख खिले हुए कमल के समान सुन्दर हो, जिसके रज मे से विकसित कमल पुष्प जैसी गन्ध आती हो, जिसके नेत्र हरिणी के समान चचल हो, जिसके शरीर का रग चम्पे के पुष्प जैसा हो, जिसकी नाक तिल के फूल जैसी हो, जिसकी चाल हंसिनी के समान हो, जिसके शारीरिक अ ग पतले हों, जिसके उदर के मध्य

भाग में सिपली पड़ती हो, जो श्वेत वस्त्र धारण करती हो, जिसके दोनों स्तन नारियल की भाति उन्नत, कठोर तथा छोटे हों, जो गुरु, ब्राह्मण, देवता तथा धर्म में श्रद्धा रखती हो, जिसकी वाणी श्रुति मधुर हो, जिसके अंग-प्रत्यंग अत्यन्त सुन्दर हों, जिसका मुख पूर्ण-चन्द्र जैसा हो, जिसके ओठ बिम्बाफल के समान सुन्दर लाल वर्ण के हो, जिसके चेहरे पर प्रसन्नता तथा ओठों पर मुस्कुराहट बनी रहती हों, जो अपने से बड़ी आयु के पुरुषों को पिता तुल्य, बराबर वालों को भाई के समान तथा छोटों को पुत्र जैसा समझती है, जिसे भोग (मैथुन) की इच्छा कम हो, जो अल्प भोजन करती हो, जो पति-व्रता, सत्यवादिनी, लज्जाशीला, मानिनी तथा कुछ लम्बे शरीर वाली हो, जिसके मुख तथा शरीर से कमल-पुष्प जैसी गन्ध आती हो, जिसके

[पद्मिनी स्त्री]

नाक, कान, ओठ तथा हाथों की उगलियां छोटी, पतली तथा सुन्दर हों, जो गुणवती, बुद्धिमती, विद्यावती तथा सुलक्षणावती हो—ऐसी स्त्री पद्मिनी जाति की होती है।

चित्रिणी के लक्षण

जिसका शरीर न अधिक लम्बा हो और न अधिक ठिगना हो, जिसके शरीर के अन्य अ ग पतले हो, परन्तु स्तन तथा जघा तथा कमर विशाल हो, जिसके राज से मधु के समान मीठी गध आती हो, जिसकी दृष्टि चचल हो, जो चित्र-विचित्र रगों के वस्त्रो से अनुराग रखती हो, जिसकी गर्दन शख के समान हो, जिसकी वाणी चकोर अथवा मोर जैसी हो, जो नृत्य-संगीत आदि ललित कलाओं में अधिक रुचि रखती हो, जो शृ गार तथा हाव-भावों की प्रेमिन हो, जो बुद्धिमती, विदुषी तथा गुणवती हो, जिसका मस्तक गोल हो तथा चाल हाथी के समान हो, जो वाक विलास मे प्रवीण हो, जो नृत्य, उत्सव आदि मे विशेष रुचि रखती हो और जो साधु-सज्जनों की सेवा करने वाली, पतिव्रता, सबको सम्मान देने वाली, तीर्थ-व्रत आदि करने वाली तथा अपने पति एवं सेवको पर अधिक स्नेह करने वाली हो उसे चित्रिणी जाति की स्त्री समझना चाहिए।

सामुद्रिकशास्त्रियो के मतानुसार ऐसे लक्षणो वाली स्त्रियां दरिद्रा घर मे जन्म लेकर भी राज रानी अर्थात् ऐश्वर्यशाली पुरुष की पत्नी होती हैं। अधिक सख्या में जन्म लेने पर भी इनकी केवल तीन ही सन्ताने जीवित रहती है। ऐसी स्त्रियों के भाइयों की सख्या भी तीन होती है। चित्रिणी जाति की स्त्रियां केवल ४८ वर्ष की आयु तक जीवित रहती है तथा इन्हे पति, पुत्र, धन, सम्मान आदि सब प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं।

[चित्रिणी स्त्री]

शंखिनी के लक्षण

जिस स्त्री के शरीर का मध्यभाग तथा पांव लम्बे हों, नसें ऊपर को उभरी हुई हों, जिन्हें लाल रंग के वस्त्र अधिक प्रिय हों, जिसके गुप्तांग पर रोएं अधिक हों, जिनका शरीर बेडौल, पतला अथवा मोटा हो, रज से क्षार के समान गंध आती हो, जिसका शरीर प्रायः गरम रहता हो, जिसका भोजन सामान्य हो, जिसकी वाणी गधे के स्वर जैसी हो, जिसके चलते समय पृथ्वी पर, धम-धम शब्द होता हो, जिसकी नाक

[शखिनी स्त्री]

के नथुनें मोटे हो तथा आंखे टेढी हो, जो सदैव अप्रसन्न तथा क्रुद्ध बनी रहती हो, जो रात-दिन का विचार किए बिना हर समय सह-वास (रति-क्रिया) के लिए प्रस्तुत रहती हो, जो दूसरों की चिंता

न करके केवल अपना पेट पालने की इच्छा रखती हो, जो मादक द्रव्यों का सेवन करने से परहेज न करती हो, जिसके हाथ की रेखाएं छिन्न-भिन्न हों तथा उंगलियों तथा अंगूठे के अग्रभाग पर शंख-चिह्न अधिक हों, जो मैथुन के उपरान्त भोजन करने की इच्छा रखती हो, जो अपने पति तथा सहेलियों से भी कलह करती हो, जो दूसरों की सलाह पर न चलकर स्वच्छन्द विहार करने वाली हो, जिसका कण्ठ स्वर घरघराता हुआ हो, जिसके हृदय में किसी भी व्यक्ति के लिए ममता, क्षमा अथवा सहिष्णुता न हो तथा जो देखने में सुन्दर प्रतीत होते हुए भी मन तथा चरित्र की खराब हो, ऐसी स्त्री शंखिनी जाति की होती है।

शंखिनी स्त्रियां प्राय: थोड़ी आयु में ही विधवा हो जाती है। इनके सामने ही पति-कुल तथा पितृ-कुल के अनेक प्राणियों का विनाश होता है। ये स्वयं अनेक प्रकार के दु:ख भोगती हैं तथा दीर्घ काल तक जीवित रहती हैं। इसके मन में बारम्बार मरने की इच्छा होती है, परन्तु मरती नही है। ऐसी स्त्रियां व्यभिचारिणी होती है, वे अनेक पुरुषों से सम्बन्ध स्थापित करती हैं तथा वेश्यावृत्ति अपनाकर अपनी उदरपूर्ति करती हैं।

हस्तिनी के लक्षण

जिस स्त्री का शरीर मोटा हो, पांव की उंगलियां ऊंची, टेढी तथा छोटी हों, गर्दन मोटी हो, जिसके केशों का रंग कुछ लालिमा अथवा पीताभा लिये हुए हो, जिसके रज से हाथी के मद जैसी गंध आती हो, जो अधिक भोजन करने वाली, लज्जाविहीन, बिखरी वाणी वाली तथा अधिक भोगेच्छा वाली हो, जो सदैव हंसती रहती हो, जिसके स्तन तथा कपोल मोटे हों, आंखें छोटी तथा पीलापन लिये हुए हों, होठ मोटे और लम्बे हों, मस्तक ऊंचा हो, चाल हाथी के समान हो तथा शरीर का रंग गोरा हो, जिसे क्रोध अधिक आता हो, जिसका कण्ठ-

स्वर क्रूर तथा गम्भीर हो तथा जो रति-क्रिया में दुसाध्य अर्थात् प्रचण्ड वेग वाली हो—ऐसी स्त्री हस्तिनी जाति की होती है।

[हस्तिनी स्त्री]

हस्तिनी जाति की स्त्री मे लज्जा, विनम्रता, दया तथा क्षमा, साधुता आदि सद्गुण अल्पमात्रा में होते हैं। इन्हे क्रोध अधिक आता है। ये विना किसी रोग के ही रोगिनी वनी रहती है तथा औषधियों का सेवन करती रहती है। ये अपनी संतानो को सदैव त्रास देती रहती हैं ये झगड़ालू, कलहकारिणी तथा उद्दण्ड स्वभाव की होती है।

ऐसी स्त्रियो को सुन्दर तथा गुणवान पति प्राप्त होता है और वह इनके लिए वहुत धन, अलंकार-वस्त्र आदि भी देता रहता है, फिर

भी ये उससे संतुष्ट नही रहतीं। अपने परिवार में हर समय कोई-न-कोई झगड़ा-टण्टा करती रहती हैं। ये अपनी भोगेच्छा की पूर्ति में सन्तान को विघ्नरूप समझती है। ऐसी स्त्रियां १०-१२ अथवा १५-१६ सन्तानों तक को जन्म देती हैं, उनमें कन्याओं की संख्या अधिक होती है। इन्हे केवल एक ही दीर्घायु पुत्र की प्राप्ति होती है। इनकी अधिकाश सन्तानें या तो अल्पायु में ही मर जाती है या गर्भ ही खण्डित हो जाता है।

ऐसी स्त्रियां प्राय: कम आयु में ही विधवा हो जाती हैं, परन्तु ये स्वय ७३ वर्ष की लम्बी आयु तक जीवित बनी रहती है। इन्हे केवल एक भाई तथा दो बहनों का सुख प्राप्त होता है । विवाह के बाद ३, ८, १२ अथवा १६वी वर्ष में इनके पति का भाग्योदय होता है तथा २०, ३० अथवा ४० वर्ष की आयु में इन्हें अपने पति, पुत्र, भाई, स्वय के शरीर अथवा धन-हानि द्वारा कष्ट प्राप्त होता है।

ऐसी स्त्रियां विधवा हो जाने के बाद पर-पुरुषगामिनी (व्यभिचारिणी) बन जाती हैं, क्योंकि अपनी अदम्य कामोत्तेजना को दबा पाने की सामर्थ्य इनमें नही होती। ऐसी कुछ स्त्रिया कौमार्यावस्था अथवा पति के जीवन काल में भी पर-पुरुषगमन करती हुई पाई जाती हैं।

हस्तिनी जाति की स्त्रिया दुष्ट स्वभाव की, दुर्गुणी तथा अविश्वसनीय होती हैं, परन्तु इन्हे बातें बनाकर सहज में ही फुसलाया, बहकाया और बेवकूफ बनाया जा सकता है।

वात्स्यायन द्वारा वर्णित स्त्रियों के तीन मुख्य भेद

काम-सूत्र के लेखक 'वात्स्यायन' ने स्त्रियों के केवल तीन ही मुख्य भेद कहे हैं। व निम्नानुसार हैं—

(१) हरिणी, (२) बड़वा तथा (३) हस्तिनी।

हरिणी के लक्षण

जिस स्त्री का मस्तक समतल हो, केश घने तथा घु घराले हों, पेट पतला हो, नितम्ब भारी हो, खिले हुए कमल दल जैसे अत्यन्त मनोहर नेत्र हो, नासिका के छिद्र छोटे हो, ओठ पतले तथा रक्ताभ हो, हाथ तथा पांव का रग किन्चित् ललिमा लिये हुए हो, भुजाएं कोमल तथा सीधी हो, कान, कपोल तथा ग्रीवा लम्वी हो, उरु तथा जघाए अधिक मोटी न हो, पाव के टखने वरावर के हो, चाल मतवाले हाथी जैसी हो, स्तन उन्नत तथा कठोर हों, शरीर पतला हो, स्वभाव चचल तथा सुकुमार हो, जो कभी-कभी थोड़ा क्रोध करती हो, जो रति-क्रिया मे चचलता दिखाती हो, जिसके रज से पुरुष जैसी गन्ध आती हो, जिसकी उगलिया सीधी हो, जिसके गुप्ताग (योनि) की गहराई ६ अंगुल हो, जिसका शरीर सीधा हो तथा सभी अग सुन्दर हों, जो आलस्य युक्त मधुर वचन बोलने वाली तथा अल्प भोजन करने वाली हो—ऐसी स्त्रियां 'हरिणी' जाति की समझनी चाहिए।

बड़वा के लक्षण

जिसका मस्तक (ललाट) ऊंचा-नीचा हो, जिसके केश मोटे, सीधे तथा घने हो, नेत्र चचल हो, दोनो कान तथा मुह स्थूल तथा लम्बे हो, दात मोटे-मोटे हों, स्तन कठोर तथा मोटे हो, भुजाए वहुत सुन्दर तथा मोटी हो, पेट छोटा हो, हाथ कमल के समान कोमल हो, छाती (वक्षस्थल) वडी हो, नाभि गहरी तथा गोल हो, घुटने सुन्दर तथा टेढे हो, जाघे मोटी तथा वरावर की हो, कटि भाग वहुत वडा हो तथा उसका मध्य-भाग झुका हुआ अर्थात् पतला हो, पावो का रग लाल हो तथा योनि की गहराई ६ आगुल की हो, जो ठहर-ठहरकर परन्तु मधुर वाणी मे वोलती हो, जिसका चित्त ईर्ष्या से उद्विग्न रहता हो, जिसका

मन चचल तथा शरीर कोमल हो, जो बहुत सोने वाली, भोजन में अधिक रुचि रखने वाली एवं वायु तथा श्लेष्मा प्रकृति वाली हो, जिसके रज से मास जैसी गन्ध आती हो और वह हल्दी के समान पीले रग का हो, सहवास तथा स्खलन के समय तीव्र वेग वाली तथा अपने प्रियतम (पति) से स्नेह करने वाली स्त्री 'बड़वा' जाति की होती है।

हस्तिनी के लक्षण

जिसके ललाट, कपोल, कान तथा नासिका छिद्र बडे-बड़े हों, भुजाए तथा दोनो जंघाए छोटी तथा मोटी हों, जिसकी गर्दन कुछ झुकी हुई, टेढी तथा मोटी हो, जिसके दात वड़े अथवा स्पष्ट हों, जिसके केश काले तथा मोटे हो, जो निरंतर रत से दुःख का अनुभव करने वाली, हाथी के समान गम्भीर स्वर में बोलने वाली, छिपकर पापकर्म करने वाली, अत्यधिक दोप पूर्ण कार्यों को सहसा ही कर डालने वाली तथा दण्ड से कावू मे आने वाली हो, जिसके रज से हाथी मद जैसी गन्ध आती हो, जिसके गुप्तांग की गहराई १२ अगुल की हो तथा जो रति-क्रिया में प्रचण्ड वेग वाली तथा हर समय मैथुन की इच्छा रखने वाली हो—ऐसी स्त्री 'हस्तिनी' जाति की होती है।

अवस्थानुसार स्त्रियों के भेद

कामशास्त्र के आचार्यो ने आयु के आधार पर स्त्रियो के चार भेद किए है, जो इस प्रकार है—

(१) वाला।
(२) तरुणी।
(३) प्रौढा।
(४) वृद्धा।

वाला की संगति का प्रभाव

सोलह वर्प तक की आयु की स्त्री 'वाला' संज्ञक होती है। यदि इसका सेवन किया जाय अर्थात् इसके साथ सहवास (मैथुन) किया जाय तो पुरुप के वल एव आयु की वृद्धि होती है। ग्रीष्म तथा शरद ऋतु में इसका सेवन अत्यन्त हितकर होता है।

तरुणी की संगति का प्रभाव

सत्रह से तीस वर्ष तक आयु की स्त्री 'तरुणी' सञ्ज्ञक होती है। इसका सेवन वल-क्षयकारक कहा जाता है। हेमन्त तथा शिशिर ऋतु में इसका सेवन करना चाहिए।

प्रौढ़ा की संगति का प्रभाव

इकत्तीस से पचास वर्ष तक की आयु की स्त्री 'प्रौढ़ा' संज्ञक होती है। इसका सेवन शीघ्र वृद्धा अवस्था को लाने वाला होता है। वर्षा तथा बसन्त ऋतु में इसका सेवन करना चाहिए।

वृद्धा की संगति का प्रभाव

पचास वर्ष से अधिक आयु की स्त्री 'वृद्धा' संज्ञक होती है। इसका सेवन मृत्यु के मुख में ले जाने वाला होता है। यह सहवास के सर्वथा अनुपयुक्त कही गई है।

शारीरिक वनावट के अनुसार स्त्रियों के भेद

'रति रहस्य' के निर्माता कोक्कोक-कवि ने शारीरिक वनावट के आधार पर स्त्रियो के तीन भेद बताये हैं, जो इस प्रकार हैं—

(१) श्लथा।
(२) घना।
(३) मध्यमा।

श्लथा के लक्षण

लम्बी, श्यामवर्ण, पतली, दबी हुई (छोटी) आंखों वाली तथा सुरत-रहित स्त्रिया 'श्लथा' संज्ञक होती हैं। ये आभ्यन्तर-रत की अभिलाषिणी होती हैं।

घना के लक्षण

मोटी और टेढ़े वर्ण स्वभाव वाली तथा सूरत में अत्यन्त रुचि रखने वाली स्त्रियां 'घना' संज्ञक होती हैं। इन्हें 'बाह्य-रत' विशेष प्रिय होती है।

मध्यमा के लक्षण

पूर्वोक्त दोनो लक्षण जिन स्त्रियों में पाये जायें वे 'मध्यमा' संज्ञक होती हैं। इन्हें आभ्यन्तर-रत तथा बाह्य-रत दोनो ही प्रिय होते हैं।

प्रकृति के अनुसार स्त्रियों के भेद

कामशास्त्रज्ञो ने प्रकृति के अनुसार स्त्रियो के तीन भेद कहे हैं, जो इस प्रकार हैं—

(१) श्लेष्मा।
(२) पित्तला।
(३) वातला।

श्लेष्मा के लक्षण

जिसकी हड्डियां, गाठें, टखने आदि ढके रहे अर्थात् जिसका शरीर मांसल हो, जो मृदु-मधुर बोलने वाली तथा कमल के समान कोमल शरीर वाली हो, वह कफ-प्रकृति वाली 'स्त्री-श्लेष्मा' संज्ञक होती है। ऐसी स्त्रियों का योनि द्वार बहुत द्रव-युक्त होता है और वे शीघ्र स्खलित हो जाती हैं। इनका सेवन शिशिर तथा वसन्त ऋतु में सुखदायक रहता है।

पित्तला के लक्षण

जिस स्त्री की हड्डियां, गांठें, टखनें आदि शारीरिक अवयव दिखाई देते हों अर्थात् मासल न हों तथा जिसके शरीर में उष्णता अधिक हो, वह स्त्री 'पित्तला' संज्ञक होती है। ऐसी स्त्री का योनि-

द्वार उष्ण रहता है और स्खलन मध्यकाल मे होता है। वर्षा तथा शरद ऋतु मे उनका सेवन सुखदायक रहता है।

वातला के लक्षरण

जिस स्त्री का शरीर रूखा-सा हो, कभी ठडा और कभी उष्ण रहता हो, उसे 'वातला' सज्ञक समझना चाहिए।

इनका योनि-द्वार संकुचित होता है और स्खलन अधिक देर में होता है। वसन्त तथा ग्रीष्म ऋतु में इनका सेवन करना अधिक आनन्ददायक रहता है।

'गुरणपताका शास्त्र' के अनुसार स्त्रियों के भेद

'गुणपताका शास्त्र' मे स्त्रियो के तीन अन्य भेद कहे गये हैं, जो इस प्रकार हैं—

(१) उत्तमा।
(२) मध्यमा।
(३) अधमा।

उत्तमा के लक्षरण

जिस स्त्री के नाखून, नेत्र तथा दांत स्निग्धता लिये हुए हों, जो पश्चातापरहित, मानिनी, मृदुर-स्थित स्नेह करने वाली, मृदु, शीतल तथा उन्नत (मासल) योनि वाली तथा सुन्दरी हो, उसे 'उत्तमा' समझना चाहिए। यह 'श्लेष्मा' (कफ) प्रकृति की होती है।

मध्यमा के लक्षरण

जो स्त्री मोटे स्तनो वाली, लाल रंग के नख तथा नेत्रो वाली, गौरवर्ण, प्रिय, क्षण भर में रुष्ट तथा क्षण भर में तुष्टहो जाने वाली,

प्रत्येक कार्य में चतुर, उष्ण शरीर वाली, बहुत समझदार तथा ढीली योनि वाली हो, उसे 'मध्यमा' समझना चाहिए। ऐसी स्त्री के पसीने में कड़वी गंध आती है। यह पित्त प्रकृति की होती है।

अधमा के लक्षण

जो स्त्री स्वभाव से कठोर, बहुत बकवास करने वाली, बहुत खाने वाली, बिखरे तथा रूखे केशों वाली, सहवास-क्रिया में अत्यन्त प्रवीण, कठोर, खुरदरी योनिवाली, भ्रमण में रुचि रखने वाली, कठोर अंगों वाली, काले नख तथा श्याम नेत्रों वाली हो, उसे 'अधमा' समझना चाहिए। ऐसी स्त्री वातप्रकृति की होती है।

स्त्रियों की इक्कीस जातियां

सामुद्रिक तथा कामशास्त्र के कुछ विद्वानों ने स्त्रियों की कुल २१ जातियां बताई हैं, वे इस प्रकार हैं—

(१) पद्मिनी, (२) चित्रिणी, (३) हस्तिनी, (४) शंखिनी, (५) सद्मिनी, (६) मैत्रायणी, (७) कलहकारिणी, (८) गृहस्थिनी, (९) आतुरा, (१०) भयातुरा, (११) डाकिनी, (१२) हसिनी, (१३) बहुवशिनी, (१४) कृपणी, (१५) घातिनी, (१६) प्रेमिणी, (१७) कृशतन्वी, (१८) मदमस्तिनी, (१९) कुलच्छेदनी, (२०) नारकी तथा (२१) स्वर्गिणी।

इनमें से पहली चार—(१) पद्मिनी, (२) चित्रिणी, (३) हस्तिनी तथा (४) शंखिनी के लक्षण पहले बताये जा चुके हैं। पाठकों की जानकारी के लिए शेष १७ जातियों का वर्णन यहां किया जा रहा है।

सङ्गिनी के लक्षण

'सङ्गिनी' स्त्री अत्यन्त चंचल तथा सरल स्वभाव वाली होती है। इसके मन पर चिन्ता तथा दुख का प्रभाव अत्यधिक पड़ता है। किसी अपरिचित पक्षी की बोली सुनकर भी यह भयभीत हो जाती

है। ऐसी स्त्री सदैव हंसमुख, लज्जाशीला, मृदुभाषिणी, किसी से द्वेष न रखने वाली, गुणवती, गृहकार्य में निपुण तथा पति की सेवा करने वाली होती है। यह अपने पितृ-कुल तथा पति-कुल—दोनों के यश में वृद्धि करती है।

मैत्रायणी के लक्षण

'मैत्रायणी' स्त्री गौरवर्ण, अत्यन्त सुन्दरी, स्वल्पाहारी, कार्य-कुशल तथा रति-क्रिया में प्रवीण होती है। यह सब कामों को अभिनयात्मक रुचि के साथ करती है तथा सबके प्रति मित्रवत् सद्व्यवहार रखती है। यह नीतिज्ञ, धर्मात्मा तथा पति-परायण होती है। इसके सौदर्य को देखकर अनेक पुरुष आसक्त होते हैं, परन्तु यह पर-पुरुष की ओर दृष्टि उठाकर भी नहीं देखती। परन्तु ऐसी श्रेष्ठ स्त्री को अपने पूर्वजन्मार्जित कर्मों के फलस्वरूप अच्छा पति नही मिलता।

कलहकारिणी के लक्षण

'कलहकारिणी' स्त्री का शरीर स्थूल, दांत बड़े तथा वर्ण काला होता है। क्रोध के कारण इसकी भौहे हर समय ऊपर को चढ़ी रहती हैं। इसका स्वभाव झगड़ालू होता है। पर निन्दा, ईर्ष्या, द्वेष, लोभ तथा मलिनता इसके स्वाभाविक गुण होते है। यह निर्भय प्रकृति की, साहसी, निर्लज्ज, किसी से प्रेम न रखने वाली, द्वेषी, दुष्ट तथा कलहकारिणी होती है। ऐसी स्त्री स्नान आदि नही करती, पान आदि खाते समय उसके मुंह से लार गिरती है तथा मैली-कुचैली बनी रहती है। वह अपने पति को बदनाम करती तथा उसके प्रति कटु शब्दों का उच्चारण करती है। किसी समय अपने पति को धोखे से मार-कर बाद में स्वय अपनी करनी पर पछताती है।

गृहस्थिनी के लक्षण

'गृहस्थिनी' स्त्री श्यामलागी, मधुरभापिणी, सत्यवादिनी, मितभापी तथा स्थिर चित्त वाली होती है। यह गृहस्थी के कामों को करने में कुशल तथा पति से विशेप प्रेम रखने वाली होती है। यह अधिक श्रृगार आदि नही करती। इसे काम, क्रोध, कुकर्म तथा दुर्गणो से घृणा होती है। यह अपने पति से किसी वात को नही छिपाती तथा उसे क्रुद्ध देखकर अपने मीठे शब्दो द्वारा शान्त कर देती है।

आतुरा के लक्षण

'आतुरा' स्त्री सामान्य रूप-रंग वाली होती है। वह प्रत्येक कार्य को शीघ्रता से करती है। फलतः कभी तो काम ठीक होता है और कभी विगड़ भी जाता है। यह कभी तो वडो का सम्मान करती है और कभी शान्त वैठी रहती है। इसी प्रकार कभी किसी के प्रति विशेप स्नेहप्रदर्शित करती है तो कभी निष्ठुरा वन जाती है। इसके स्वभाव मे एकरूपता नही होती, फलत. यह कभी वुद्धिमती तो कभी मूर्खो जैसी प्रतीत होती है। यह काम करने में आलस्य नही करती तथा रति-क्रिया मे भी रुचि रखने वाली होती है।

भयातुरा के लक्षण

'भयातुरा' स्त्री सदैव भयभीत वनी रहती है। इसके शरीर का वर्ण गोरा होता है। यह कोमलागी, लज्जाशीला, मृदु तथा मधुर-भापिणी एवं सवको प्रिय होती है। यह कभी अकेली नही रहती। संकोच पूर्वक वार्तालाप करना इसके स्वभाव में होता है। छोटी से

छोटी घटना एवं बात-चीत का इसके हृदय पर विशेष प्रभाव पड़ता है।

डाकिनी के लक्षण

'डाकिनी' स्त्री हंसकर बात करने वाली तथा मीठी वाणी बोलने वाली होती है, परन्तु उसके हृदय में हलाहल भरा रहता है। इसकी प्रीति भी प्राणघातक होती है। यह ऊपर से वहुत भली दिखती है, परन्तु यथार्थ में दुष्टा, कुटिल, विश्वासघातिनी, धर्म तथा पाप-पुण्य का विचार न करने वाली, सन्तानों की हत्या करने वाली, क्रूर तथा

महातापिन होती है। इसकी आखो का रंग लाल होता है। यह ऊपर से देखने मे जितनी सुन्दर होती है भीतर से उतनी ही कालमूर्ति रहती है। ऐसी स्त्री का पति जीवित रहते हुए भी नरक का दुख भोगता है।

हंसिनी के लक्षण

'हंसिनी' स्त्री की चाल हस जैसी होती है। यह चतुर, सज्जन, मन्दगामिनी, मृद-मधुर भाषिणी, कठोर स्तनो वाली, उज्जवल गौर वर्ण तथा कान्ति युक्त शरीर वाली, धीर-गभीर, मानिनी, सौदर्य-पूर्णा स्वल्प निद्रा एव स्वल्प भोजन करने वाली तथा रति-क्रिया मे अधिक रुचि लेने वाली होती है। ऐसी स्त्री इन्द्रलोक की अप्सरा जैसी मनोहर, सत्यवादिनी, पतिव्रता तथा सच्चे स्नेह का निर्वाह करने वाली होती है।

बहुवंशिनी के लक्षण

'बहुवशिनी' स्त्री के शरीर का रग कुछ सावला होता है। इसका आकार छोटा तथा सौदर्य आकर्षक होता है। यह सत्यवादिनी, पति-परायणा, कुल-मर्यादा का पालन करने वाली, स्वभाव से सरल, सबसे मेल रखने वाली तथा बहुत सन्तानो को जन्म देने वाली होती है। यह अपने स्वभाव तथा वार्तालाप से सब लोगो को वश मे कर लेती है।

कृपणी के लक्षण

'कृपणी' स्त्री अत्यधिक लोभिन होती है। यह शरीर से दुर्बल, कार्य-कुशल, मीठी वाणी बोलने वाली परन्तु निर्लज्ज होती है। यह धन का सग्रह करने के लिए अपने प्राणो तक की बाजी लगा देती

है। यह न तो पेट भर कर स्वयं खाती है और न पति अथवा पुत्रों को ही खिलाती है। किसी भी काम में धन खर्च करना इसे बहुत बुरा लगता है। धन-प्राप्ति के लिए यह पर-पुरुष के साथ व्यभिचार कर्म में भी प्रवृत्त हो जाती है। भिक्षुकों को दुतकारना तथा अतिथि को घर में न ठहरने देना इसके स्वभाव में होता है। अपने पास धन होते हुए भी यह स्वयं को दरिद्रा प्रदर्शित करती है तथा दूसरों को अच्छा खाते-पहनते हुए देखकर अपना सिर नीचे झुका लेती है। ऐसी स्त्री लोक में निन्दित होती है तथा सब लोग उसे घृणा की दृष्टि से देखते हैं।

घातिनी के लक्षण

'घातिनी' स्त्री अत्यन्त चालाक, क्रूर तथा पाप कर्म करने वाली होती है। यह अपने अवगुणों को छिपाकर दूसरों को विश्वास में लेती है और बाद में उनके साथ विश्वासघात करती है। ऐसी स्त्री पराये धन का हरण करने में चतुर तथा बालघातिनी होती है। यह झूठ बोलने में अत्यन्त प्रवीण होती है। फिर भी स्वयं को सच्चा बताने में नहीं चूकती। यदि यह किसी व्यक्ति पर अपना स्नेह प्रदर्शित करे तो समझ लेना चाहिए कि यह उस पर किसी घात को लगाना चाहती है और अवसर पाते ही उसे ठग लेगी अथवा कोई अन्य प्रकार का धोखा देगी।

प्रेमिणी के लक्षण

'प्रेमिणी' स्त्री का शरीर दुबला-पतला होता है। यह क्रोध, लोभ, मोह आदि दुर्गुणों से रहित तथा स्नेह का निर्वाह करने में कुशल होती है। इसके ओठ गुलाबी रंग के तथा केश लम्बे तथा सुन्दर होते है। यह सच्चरित्रा, सत्यवादिनी, स्नेहशीला, मधुर भाषिणी, प्रसन्न-

वदना तथा अपनें पति को प्राणों से भी अधिक प्रेम करनें,वाली होती है। जो व्यक्ति इसके साथ थोड़ी-सी भी भलाई करता है, यह उसके ऊपर अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देती है। यह प्रीति का निर्वाह करने में कुशल तथा अधिक चिन्ता करने वाली होती है।

कृशतन्वी के लक्षण

'कृशतन्वी' स्त्री का शरीर दुबला-पतला होता है। इसका मन दुर्बल तथा चिन्तापूर्ण होता है। यह क्रोधी स्वभाव की तथा कटु-वचन बोलने वाली होती है। यह स्वयं को बहुत होशियार समझती है, परन्तु बोलते समय इसकी वाणी तथा शारीरिक अग कांपते है। शरीर का रंग काला होता है तथा आकृति कुरूप होती है।

मदमस्तिनी के लक्षण

'मदमस्तिनी' स्त्री सदैव मद में चूर तथा काम-विह्वला बनी रहती है। यह पति को केलिक्रीड़ा में हरा कर पर-पुरुष गमन करती है तथा हर समय विषय-वासना में लीन रहकर खाना-पीना तक भूल जाती है। यह महापापिन, नि.शंग, निर्द्वन्द्व, निर्भय तथा भक्ष्याभक्ष्य का सेवन करने वाली होती है। यह कभी भी एक स्थान पर जमकर नही बैठती। इधर-उधर भ्रमण ही करती रहती है। ऐसी स्त्रियां अपनी काम-पिपासा की शान्ति के लिए अन्त में वेश्या तक वन जाती है।

कुलच्छेदिनी के लक्षण

'कुलच्छेदिनी' स्त्री जिस घर में रहती है, उसे दरिद्र बना देती है। यह धन-धान्य का नाश करने वाली, पाप कर्म करने वाली, चरित्र-हीना तथा कुल को नष्ट तथा कलंकित करने वाली होती है। ऐसी स्त्री अपने पति को तो वश में रखती है, परन्तु अन्य कुटुम्बियों से निरन्तर स्वयं लड़ती-झगड़ती रहती है तथा उनमें आपस में झगड़ा करा देती है। इन्हे पाप-पुण्य का कोई विचार नही होता। अपनी तथा कुल की यश-प्रतिष्ठा को धूलि में मिलाकर भी ये स्वयं को दूसरों से ऊंचा समझती रहती हैं।

नारकी के लक्षण

'नारकी' स्त्री की भुजाए बडी होती हैं, आखे छोटी होती है तथा नाक बहुत बडी और चौडी होती है। बात-चीत करते समय इसके मुंह से थूक गिरता है। यह धर्म-पुण्य, चरित्र आदि का कोई विचार नही रखती। इसकी वेशभूषा तथा खान-पान मलिन होता है। दूसरो को आपस में लड़ा देना, झूठी शपथ खाना, धोखा देना आदि इसका स्वाभाविक गुण होता है।

स्वर्गिणी के लक्षण

'स्वर्गिणी' स्त्री रूप-गुण सम्पन्न, स्वच्छ वस्त्र धारण करने वाली, धर्मात्मा, मधुरभाषिणी, सत्यवादिनी, स्नेहशीला, पतिव्रता, गुरुजनों का सम्मान करने वाली, शीलवती तथा सर्वगुण सम्पन्ना होती है। कोई भी अवगुण इसके पास तक नही फटकता। यह अच्छे काम करने वाली तथा सर्वत्र प्रशसा, यश एव सम्मान प्राप्त करने वाली होती है। ऐसी स्त्री जहा रहती है, वह घर धन-धान्य, सुख-शान्ति आदि से परिपूर्ण बना रहता है।

देवी स्त्री के लक्षण

सामुद्रिक शास्त्र के विद्वानो ने स्त्रियो की एक विशेप जाति का वर्णन भी किया है। उनके मतानुसार जो स्त्री अत्यन्त सुन्दरी, सर्वगुण सम्पन्ना, प्रियवादिनी तथा श्रेष्ठ आचार-विचारो वाली हो, जो अनेक प्रकार की क्रीडाओं मे तत्पर बनी रहती हो, जो निरन्तर यात्रा करने की इच्छा रखती हो, जो अपने दोनों हाथो से आठ हाथो जितना काम कर लेती हो, जिसके केश खुले रहते हो तथा-जिसे देखने मात्र से ही श्रद्धा, सम्मान, स्नेह, आदर
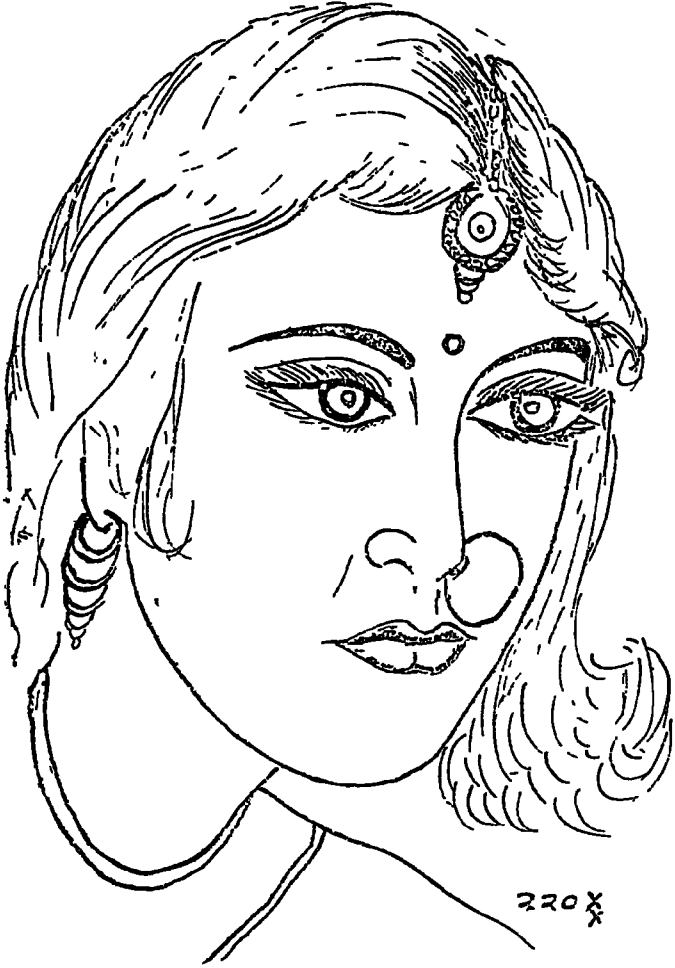
भावों का हृदय में उद्‌गम होता हो, ऐसी स्त्री 'देवी' संज्ञक होती है। यह देवी स्त्री पद्मिनी जाति की स्त्रियों में पाई जाती है तथा सर्व-श्रेष्ठ एवं सर्वोत्तम होती है।

आवश्यक टिप्पणी—इस प्रकरण में जितनी जाति की स्त्रियों के लक्षणों का वर्णन किया गया है, वर्तमान काल में ज्यों के त्यों अथवा सम्पूर्ण रूप से किसी एक स्त्री में मिलने दुर्लभ है, अत: जिस स्त्री में जितने लक्षण अधिक मिलते हों, उसे उसी जाति की स्त्री समझना चाहिए।

●

देश-भेदानुसार स्त्रियों के लक्षण

देश-भेदानुसार स्त्रियों के स्वभाव, रूप, आकृति, चरित्र तथा रुचियों की विभिन्नताओं का वर्णन रति-रहस्य, नागर-सार्वस्व आदि प्राचीन काम-विषयक ग्रन्थों में किया गया है।

वर्तमान युग के 'हेवेलाक एलिस' आदि पाश्चात्य विद्वानों नें भी विभिन्न यूरोपीय देशों की निवासिनी स्त्रियों के चरित्र तथा स्वभाव आदि का स्थान-भेद के आधार पर वर्णन किया है।

पाठकों की जानकारी के लिए इस प्रकरण में प्राच्य विद्वानों के मतानुसार भारत के विभिन्न भागों में रहने वाली स्त्रियों के स्वभाव, रुचि, प्रकृति आदि का वर्णन किया जा रहा है, परन्तु चरित्र परीक्षक को चाहिए कि वह इन विवरणों के आधार पर नारी-चरित्र की परीक्षा करते समय इस बात को हर समय ध्यान में रक्खे कि आधुनिक युग में यातायात के साधनों की सुगमता एव आर्थिक तथा अन्य कारणों से एक देश (स्थान) के निवासी स्त्री-पुरुष दूसरे देश (स्थान) में जाकर वहुतायत से रहने लगे है, अतः प्राचीन विद्वानो द्वारा मान्य यह नियम केवल उन्ही स्त्रियों पर लागू हो सकते है, जो वंश परम्परा से उसी देश (स्थान) की मूल निवासिनी हों और जिन्होंने आधुनिक सभ्यता एव शिक्षा-दीक्षा से अभी तक स्वय को अलिप्त ही वनाये रक्खा है।

(१) मध्य देश (हिमालय तथा विन्ध्याचल के पर्वत के बीच का क्षेत्र) की स्त्रिया पवित्र आचार-विचार तथा सुगठित शरीर वाली होती हैं। वे नखक्षत (नखों से खुरचना), दन्तक्षत (दांतों से काटना) एव चुम्बन आदि काम-क्रीड़ा में रुचि नही रखती।

(२) अवन्ति तथा वाल्हिकी देश की स्त्रिया भी मध्यदेश की स्त्रियों जैसी होती है, परन्तु ये विचित्र सूरत में अनुराग रखने वाली एव चित्र की भांति निश्चल रमण में अनुरक्त रहने वाली होती हैं।

(३) आभीर तथा मालव देश की स्त्रिया आलिगन में चपल, चुम्बन से वशीभूत होने वाली तथा 'ताड़न' (छाती पर थपथपाना) से प्रसन्न रहने वाली होती है। ये दन्तक्षत तथा नखक्षत जैसी काम-क्रीड़ाओ में अनुराग नही रखती ।

(४) जेहलम, सिधु, सतलज तथा चिनाव नदियों के तट पर बसे हुए देशों की तथा व्यास और रावी नदी के बीच वाले देश (पजाव) में उत्पन्न होने वाली स्त्रियां मुख-रत तथा औपरिष्टक से प्रसन्न रहती हैं।

(५) गुर्जर (गुजरात) देश की स्त्रिया अत्यधिक केश-पाश वाली, कृश शरीर, मोटे-स्तन तथा सुन्दर नेत्रों वाली होती हैं। उनकी वाणी मधुर होती है। ये बाह्य (चुम्बन, आलिगन आदि) तथा आभ्यातर (सहवास क्रिया) दोनो प्रकार की काम-क्रीड़ाओं में अनुराग रखती है, परन्तु कोई-कोई स्त्री बाह्योपचार (चुम्बन-आलिगन) के प्रति विरक्ति का भाव भी प्रदर्शित करती हैं।

(६) लाट देश वाली स्त्रिया अत्यन्त कोमल शरीर वाली, परतु प्रचण्ड वेग वाली होती हैं। वे मन्द-ताडन, नखक्षत, दन्तक्षत आदि काम-क्रीडा की क्रियाओ के निरतर किये जाने पर द्रवित होती है। वे आलिगन में अत्यन्त आसक्त तथा सुरतोत्सव (रति-क्रीड़ा) में नृत्य करने वाली होती है।

इनके सम्बन्ध मे जानकारी करने के लिए वात्स्यायन का 'काम सूत्र' पढ़ें। यह पुस्तक हमारे यहा से मगाई जा सकती है।

(७) आन्ध्र देश की स्त्रियां सुकुमार शरीर वाली, लोक-मर्यादा का अतिक्रमण करने वाली, लज्जाहीना, काम-पीड़िता तथा रति-क्रिया में अत्यन्त प्रवीण होती हैं।

(८) भूटान तथा अयोध्या क्षेत्र में उत्पन्न होने वाली स्त्रियां प्रचण्ड वेग वाली होती हैं। वे ताड़न आदि क्रियाओं से प्रसन्नता प्राप्त करती हैं तथा सुरत कर्म की पण्डित होती हैं।

(९) पटना तथा महाराष्ट्र देश की स्त्रियां अक्षेपायुक्त ग्राम्य शब्दों का उच्चारण करने वाली, निर्लज्ज, एकान्तवास प्रिय तथा रति-क्रिया के समय चौसठ कलाओं का प्रयोग करने वाली होती हैं।

(१०) द्रविड़ देश की स्त्रियां अन्तर्वाह्य-रत तथा वहिर्वाह्य रत (आलिगन, चुम्वन आदि) से प्रसन्न होने वाली तथा प्रथम सहवास मे ही तृप्त लाभ करने वाली होती हैं।

(११) दक्षिण कोंकण प्रान्त की पूर्व दिशा के वनवास देश की स्त्रिया अपने शारीरिक-दोपो को छिपाने वाली, दूसरे के शारीरिक दोपों पर हसने वाली तथा दन्त-क्षत, नख-क्षत आदि उद्दीपन की क्रियाओं को अत्यधिक सहन करने वाली होती है।

(१२) कामरूप (आसाम) देश की स्त्रिया सिरस के फूल के समान कोमल अगों वाली, मधुरभापिणी, कामोत्सव में अत्यधिक रस लेने वाली, प्रियजन के हाथ का स्पर्श पाते ही द्रवित होने वाली तथा सुरत-मुख की अभिलापिणी होती है।

(१३) उड़ीसा, अग, वंग (वगाल) तथा कलिंग देश की स्त्रिया दन्त-क्षत, नख-क्षत आदि क्रियाओं में अनुराग रखने वाली तथा काम-क्रीड़ा के समय प्रचण्ड वेग से तृप्ति लाभ करने वाली होती हैं।

(१४) कुरुदेश (थानेसर के समीप) तथा मरुदेश (मारवाड़) की स्त्रियां सहवास क्रिया में निपुण नही होती।

(१५) सिहल (श्रीलंका) देश की स्त्रिया अत्यन्त चतुर, सम्पूर्ण कलाओ मे प्रवीण तथा रतिक्रिया में सिद्ध हस्त होती है।

(१६) काश्मीर देश की स्त्रियां अत्यन्त सुन्दर, स्वच्छ वस्त्र धारण करने वाली तथा काम-क्रिया में प्रवीण होती हैं।

(१७) जालंधर देश की स्त्रियां आचार-विचारहीन तथा बड़ी कठिनाई से सहवास के लिए प्रस्तुत होती हैं।

(१८) गौड़ (बगाल का एक भाग) तथा बंगाल देश की स्त्रियां सुन्दर, अत्यन्त कोमल, मधुरभाषिणी, लावण्यमयी, तीर्थ यात्रा की अभिलाषिनी, प्रसन्नवदना, चुम्बन, आलिंगन आदि क्रियाओं में रुचि रखने वाली तथा रति-क्रिया में प्रवीण होती हैं।

(१६) नेपाल तथा चीन देश की स्त्रियां युवा पुरुषों को देखते ही काम माहित हो जाती हैं। वे मन्द-रत की अपेक्षा रखने वाली तथा सामान्य आलिंगन, नख-क्षत, दन्त-क्षत आदि क्रियाओं को पसन्द करने वाली होती हैं।

विशेष टिप्पणी—देश-भेदानुसार स्त्रियों के उर्पयुक्त लक्षण प्राचीन काम-विषयक ग्रन्थों के आधार पर दिये गए हैं। इस सम्बन्ध में जो पाठक विशेष जानकारी प्राप्त करने के इच्छुक हों, उन्हे 'काम सूत्र', 'रति रहस्य', 'अनग रंग', 'नागर-सर्वस्व' आदि ग्रन्थों का अध्ययन करना चाहिए।*

●

* ये सभी पुस्तकें हमारे यहा से मगाई जा सकती हैं।

परिशिष्ट खण्ड

'वृहद सामुद्रिक विज्ञान' के विभिन्न खण्डों में रेखा, हस्त-चिन्ह, अंग-लक्षण आदि विषयों का विस्तृत वर्णन किया जा चुका है। अब हम प्रस्तुत अन्तिम खण्ड के इस 'परिशिष्ट भाग' में हस्त-परीक्षा द्वारा जातक को होने वाले विभिन्न प्रकार के रोगों का ज्ञान, नौकरों का चुनाव करते समय उनके हाथ की परीक्षा करने की विशेष विधियां, हस्त परीक्षा द्वारा विशिष्ट योगों की जानकारी, उद्योग-धन्धों का चुनाव तथा ग्रह क्षेत्रों की स्थिति के अनुसार जातक के चरित्र एवं स्वभाव का ज्ञान आदि उन विषयों का वर्णन करते हैं, जिन्हे विषयानुसार अन्य खण्डों में समाहित नहीं किया जा सका है।

हस्त-परीक्षक को चाहिए कि वह इस प्रकरण में वर्णित विशिष्ट योगों की पूर्ण जानकारी रखें, क्योंकि इनके ज्ञान द्वारा चमत्कार पूर्ण फलादेश किये जा सकते हैं।

रोग-परीक्षा

हस्त-परीक्षा द्वारा जातक को होने वाले रोगों का ज्ञान निम्नानुसार प्राप्त किया जा सकता है—

उदर-रोग

चित्र २२३—यदि जातक की हथेली में चन्द्र-पर्वत के ऊपर नक्षत्र जैसा चिह्न हो तो वह उदर-रोगो से ग्रस्त बना रहता है।

हृदय-रोग

चित्र २२४—यदि हृदय-रेखा पर काला दाग-चिह्न हो तो जातक को आकस्मिक मूर्च्छा तथा हृदय सम्बन्धी रोग होते है।
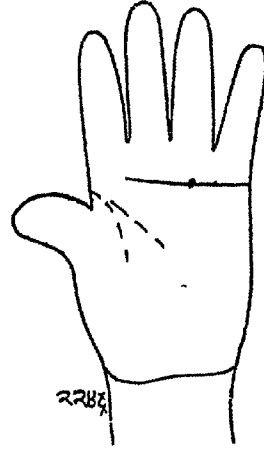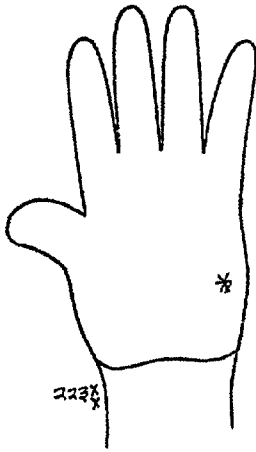
चित्र २२५—यदि हृदय-रेखा पर वड़े द्वीप-चिह्न हों तो भी जातक को हृदय-रोगो का शिकार वनना पडता है।
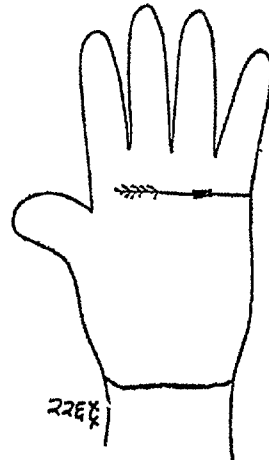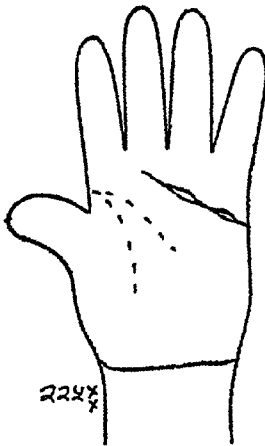
चित्र २२६—यदि हृदय-रेखा पर पीले रंग का दाग-चिह्न हो और वह मध्यमा उंगली से मंगल के प्रथम क्षेत्र तक पंखदार आकृति की हो अथवा जंजीर जैसी आकृति की ओर झुकी हुई हो तो जातक हृदय-रोग का स्थायी रूप से मरीज होता है।

आंतों का रोग

चित्र २२७—हथेली मुलायम हो, हाथ की रेखाएं पीले रंग की हों, नाखून लाल रंग के परन्तु धब्बेदार हों तथा स्वास्थ्य-रेखा टूटी हुई हो तो जातक को आंतों की बीमारी होती है।
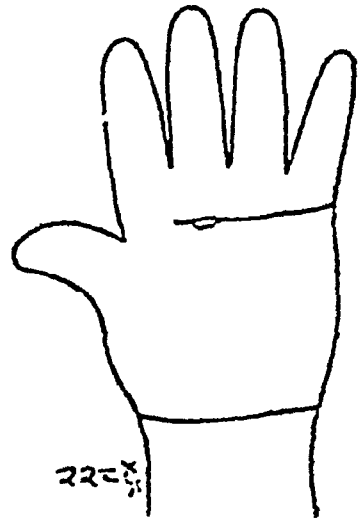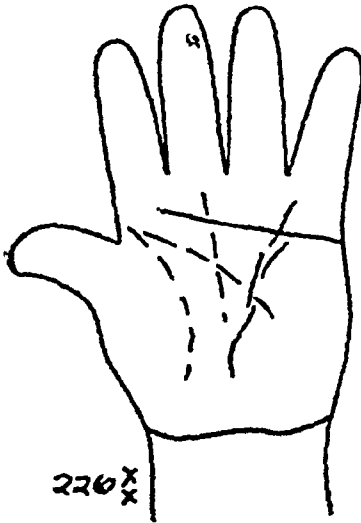
रीढ़ का रोग

चित्र २२८—यदि हृदय-रेखा पर शनि-क्षेत्र के नीचे द्वीप-चिह्न हो तो जातक को रीढ़ की बीमारी होती है।

गुरदे का रोग

चित्र २२६—यदि मस्तक-रेखा पर मगल-क्षेत्र के समीप सफेद रग के दाग हों तो जातक को गुरदे की बीमारी होती है।
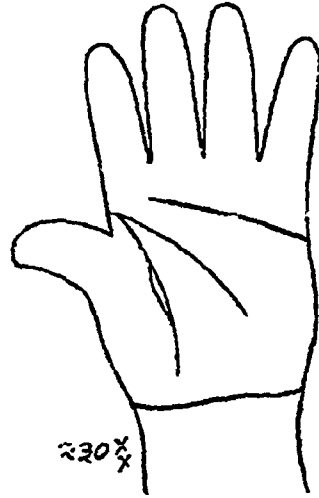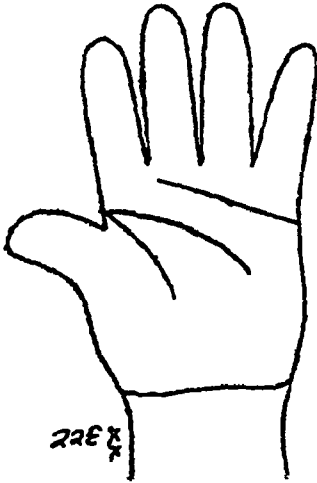
वश परम्परागत रोग

चित्र २३०—यदि जीवन-रेखा पर यव (द्वीप) चिह्न हो तो जातक परम्परागत रोग(खानदानी बीमारी) का शिकार होता है।

दिल धड़कने का रोग

चित्र २३१—यदि जीवन-रेखा के भीतर द्वीप तथा वृत्त-चिह्न हो तथा शनि-पर्वत के नीचे मस्तक-रेखा का रग पीला हो तो जातक को दिल के धड़कने की बीमारी होती है।
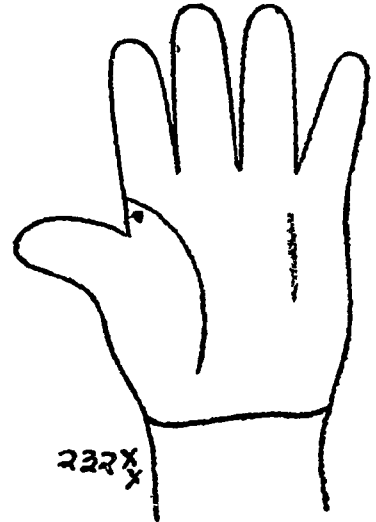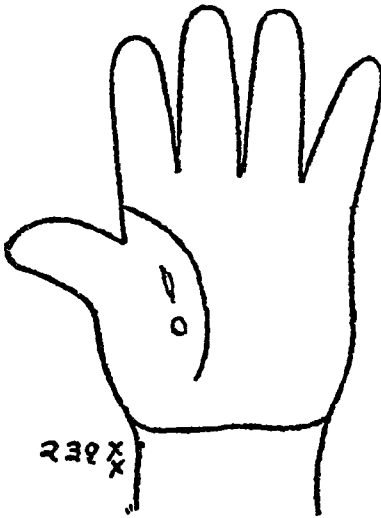
चित्र २३२—यदि आयु-रेखा के समीप मंगल के प्रथम क्षेत्र पर काले रंग का बिन्दु-चिह्न हो तो भी जातक को दिल धड़कने का रोग होता है।

दमे का रोग

चित्र २३३—यदि हथेली के बीच वृहद् चतुष्कोण का आकार छोटा हो, स्वास्थ्य-रेखा बिगड़ी हुई हो और वह मस्तक-रेखा से मिल गई हो तथा शुक्र-क्षेत्र से एक महीन रेखा निकलकर जीवन-रेखा को काटती हुई मगल-क्षेत्र पर पहुंची हो तो ऐसी रेखाओं वाले जातक को दमा (श्वास) की बीमारी होती है।

पाण्डु-रोग

चित्र २३४—यदि स्वास्थ्य-रेखा पर नक्षत्र-चिह्न तथा द्वीप-चिह्न हो और उसी स्थान पर काले तिल जैसा एक दाग भी हो तो जातक पाण्डु (पीलिया) रोग का रोगी होता है।
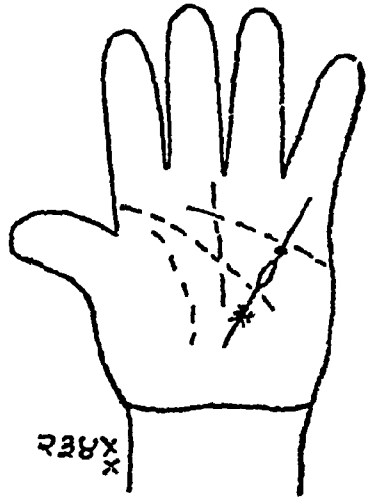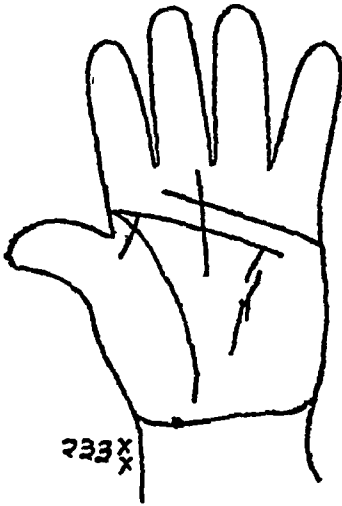
फेफड़े का रोग

चित्र २३५—यदि शनि-क्षेत्र के नीचे मस्तक-रेखा जंजीर जैसी आकृति की हो तथा मध्यमा उंगली के नीचे मेहराव जैसी आकृति की रेखा हो तो जातक को फेफड़े तथा गले की बीमारी होती है।
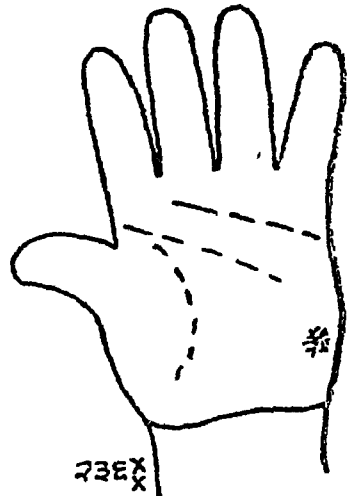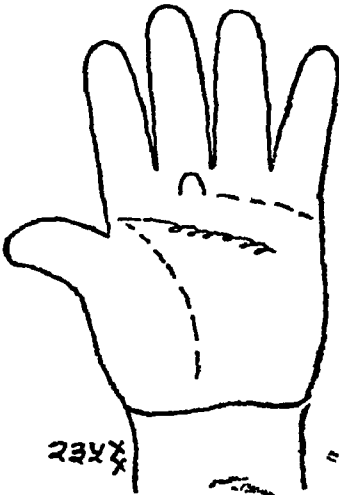
जलन्धर रोग

चित्र २३६—यदि चन्द्र-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक को जलन्धर रोग होता है।

मस्तिष्क सम्बन्धी रोग

चित्र २३७—यदि मस्तक-रेखा पर बहुत-सी छोटी-छोटी रेखाएं आर-पार हों और उस पर दांत जैसे चिह्न हो तो जातक को सिरदर्द तथा अन्य मस्तिष्क सम्बन्धी रोग होते हैं।
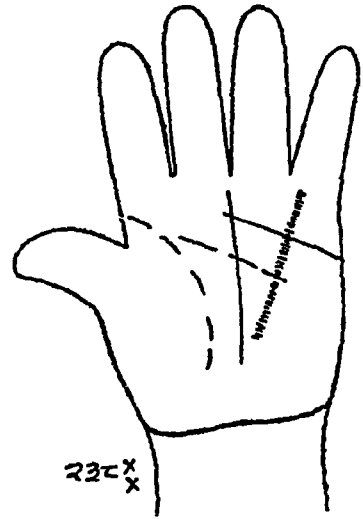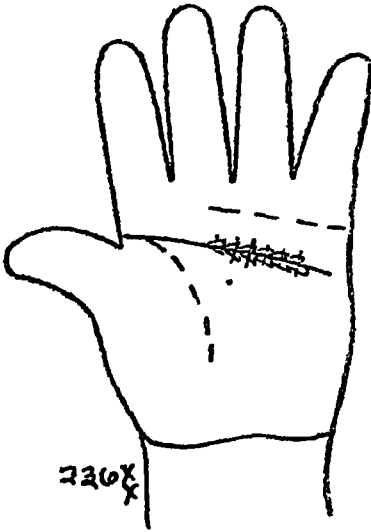
गठिया रोग

चित्र २३८—यदि हथेली की त्वचा अत्यधिक कोमल हो तो जातक को सन्धिवायु का विकार (गठिया रोग) होने की सम्भावना रहती है।

यदि स्वास्थ्य-रेखा घिसी हुई-सी दिखाई दे तो भी जातक को गठिया रोग होने की सम्भावना रहती है।

चित्र २३९—यदि चन्द्र-क्षेत्र से कोई रेखा निकलकर जीवन-रेखा को छेदती हुई आगे बढ जाय तो भी जातक को गठिया रोग होता है।
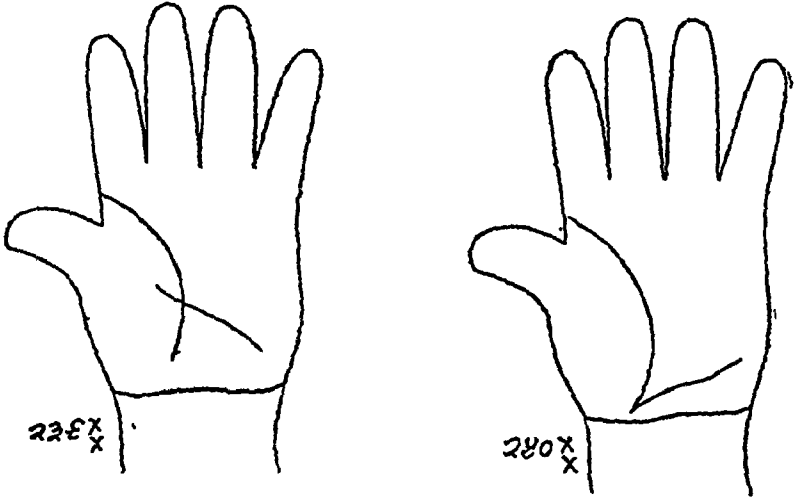
चित्र २४०—यदि जीवन-रेखा के अन्त में से एक शाखा निकलकर चन्द्र-क्षेत्र पर चली गई हो तो जातक को गठिया रोग होता है।

मृगी रोग

चित्र २४१— यदि उगलिया टेढी और नुकीली हो तथा उनके नीचे से पर्वत दवे हुए हों तो जातक को मृगी-रोग होने की सम्भावना रहती है।
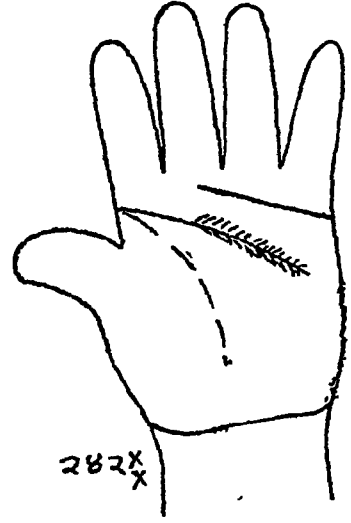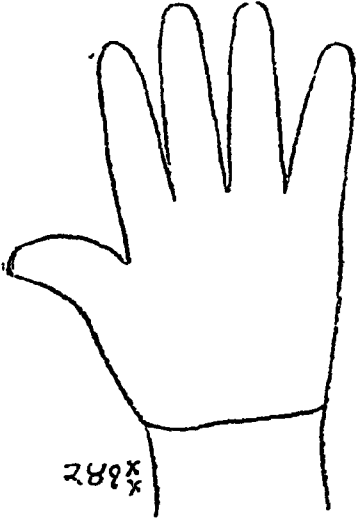
यक्ष्मा रोग

चित्र २४२—यदि उगलियों के नाखून ऊचे तथा झुके हुए हों और मस्तक-रेखा शनि की उगली के नीचे से बुध की उंगली के नीचे तक पंखदार रेखा जैसी आकृति की हो तो जातक को यक्ष्मा (तपेदिक) की बीमारी होती है।

चित्र २४३—यदि उगलियों के नाखून फावड़े की भांति चौड़े तथा टेढ़े झुके हुए हों और स्वास्थ्य-रेखा पर एक जैसी आकृति के बहुत-से छोटे-छोटे द्वीप-चिह्न हों तो जातक को यक्ष्मा रोग होता है।

(२) यदि तर्जनी उंगली का नाखून भीतर की ओर अत्यधिक झुका हुआ हो, तो ऐसे नख वाले व्यक्ति को तपेदिक (क्षय) की बीमारी होती है।

अम्ल पित्त रोग

यदि चन्द्र-पर्वत अत्यधिक उन्नत हो तो जातक को अम्लपित्त का विकार रहता है।

त्वचा रोग

यदि हथेली की त्वचा अत्यधिक कोमल हो तथा नख बांसुरी जैसे हो तो जातक को त्वचा सम्बन्धी बीमारियां होती हैं।
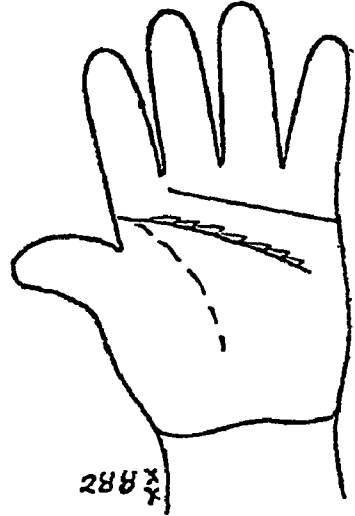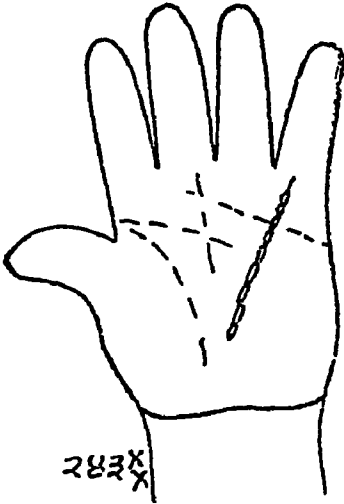
वहरा पन

चित्र २४४—यदि मस्तक-रेखा पर आरी के दांते के समान चिह्न हो तो जातक को वहरेपन की वीमारी होती है।

बदहजमी

चित्र २४५—(१) यदि चन्द्रमा का पर्वत अत्यधिक उन्नत हो तो जातक को बदहजमी की शिकायत रहती हैं।

(२) यदि उंगलियों के नाखूनों पर धब्बे हों तो भी जातक को बदहजमी का शिकार होना पड़ता है।
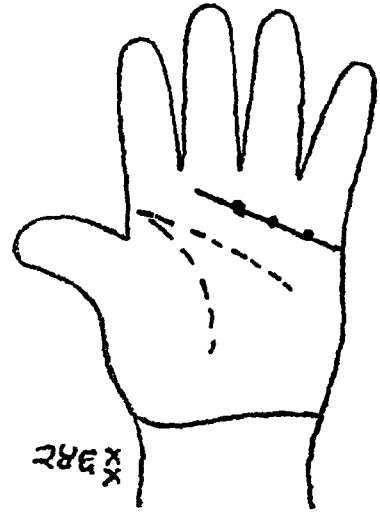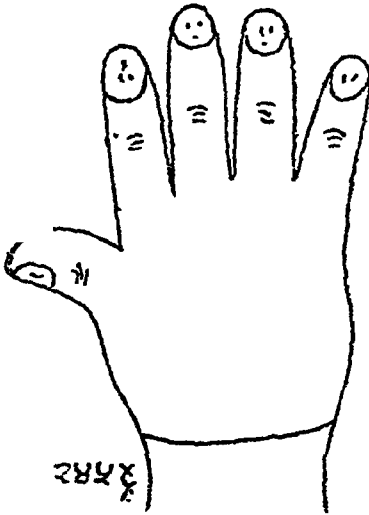
दृष्टि दौर्बल्य

चित्र २४६—यदि हृदय-रेखा पर विन्दु-चिह्न हों तो जातक को दृष्टि दौर्बल्य की शिकायत रहती है अर्थात् उसकी आंखों की रोशनी क्षीण हो जाती है।

ज्वर पीड़ा

चित्र २४७—(१) यदि हथेली का मध्य भाग नरम तथा शुष्क चमड़े वाला हो तो जातक को ज्वर-पीड़ा होती है।

(२) यदि अनामिका उंगली के पृष्ठ भाग पर किसी भी पर्व पर काला दाग-चिह्न हो तो भी जातक ज्वर से पीड़ित होता है।
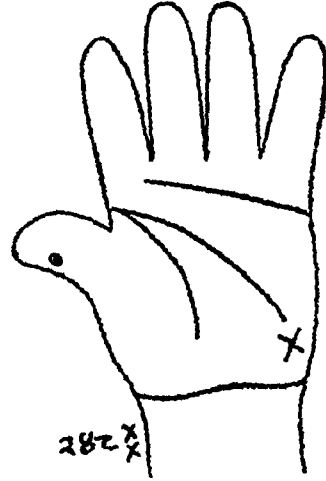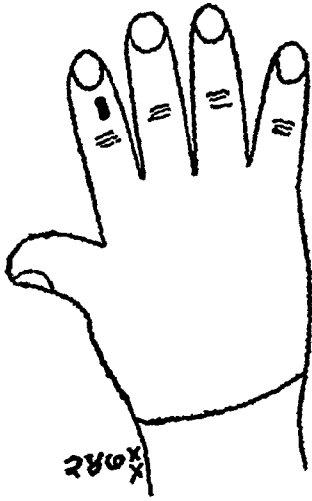
उन्माद रोग

चित्र २४८—यदि चन्द्र-पर्वत पर क्रास-चिह्न हो तथा मस्तक-रेखा ढलावदार एवं लम्बी हो चन्द्र-क्षेत्र बहुत ऊंचा अथवा बहुत नीचा हो, शनि-क्षेत्र निम्न हो अथवा शनि की उंगली टेढी हो तो इसे उन्माद रोग अर्थात् पागलपन का लक्षण समझना चाहिए।

प्ल्युरिसी रोग

चित्र २४९—यदि जीवन-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तथा उसमें से एक शाखा रेखा निकलकर गुरु-पर्वत पर गई हो तो जातक को प्ल्युरिसी रोग (पेट और पसली में दर्द) होता है।
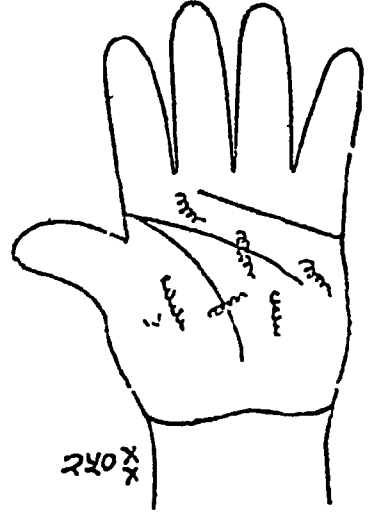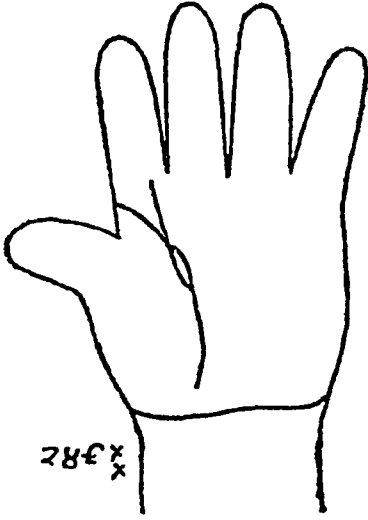
हिस्टीरिया रोग

चित्र २५०—यदि हथेली की त्वचा कोमल हो तथा हथेली में जजीर जैसी आकृति की छोटी-छोटी बहुत-सी महीन रेखाएं हों तो जातक को हिस्टीरिया रोग होता है। यदि हाथ का बाहरी आकार सिकुड़ा हुआ हो,तो भी यह रोग होता है। यह बीमारी केवल स्त्रियों को हुआ करती है।

पक्षाघात रोग

चित्र २५१—यदि शनि के पर्वत पर नक्षत्र-चिह्न हो, हृदय-रेखा पर आड़ी रेखाएं हों, हथेली की त्वचा कोमल हो तथा नख चपटे हों, तो जातक को पक्षाघात (लकवा) की बीमारी होती है।

चित्र २५२—स्वास्थ्य-रेखा तथा मस्तक-रेखा जिस स्थान पर मिलती हो वहां पर लाल रंग का तिल अथवा तिल जैसा चिह्न हो
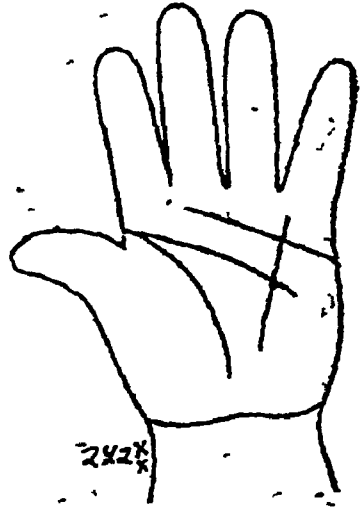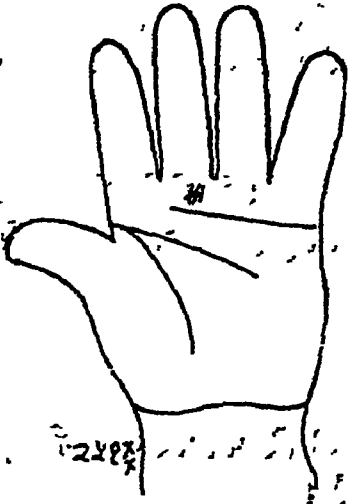
तथा स्वास्थ्य रेखा विभिन्न रंगों वाली हो तो जातक को अर्द्धांगवाय (पक्षाघात) की बीमारी होती है।

चित्र २५३—पूर्वोक्त लक्षणों के साथ ही शनि-पर्वत के स्थान
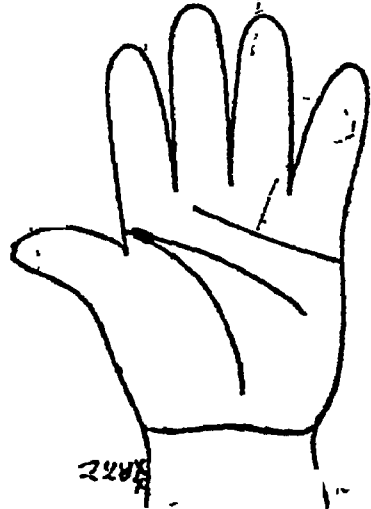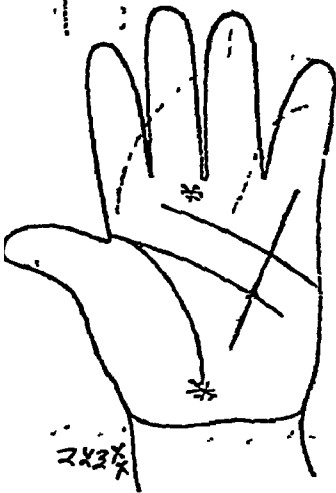
ऊपर नक्षत्र-चिह्न हो तथा जीवन-रेखा जहां समाप्त होती है, उस स्थान पर भी नक्षत्र-चिह्न हो तो पक्षाघात के रोग के कारण जातक की मृत्यु हो जाने की सम्भावना रहेगी।

चित्र २५४—मस्तक-रेखा तथा जीवन-रेखा ये दोनों जिस पर मिलती हैं, वहां पर लाल रंग का दाग-चिह्न हो तो भी जातक को पक्षाघात का रोग होता है।

अन्धापन

चित्र २५५—यदि तर्जनी उंगली के तीसरे पर्व पर नक्षत्र-चिह्न हो तो जातक दुर्गुणी तथा अन्धा होता है।
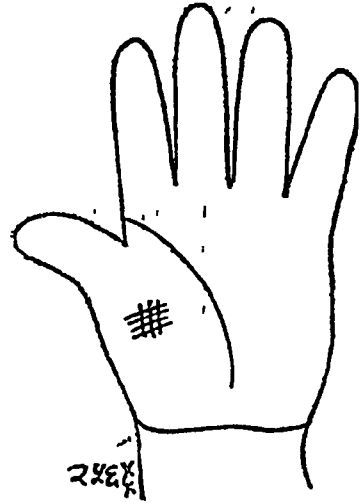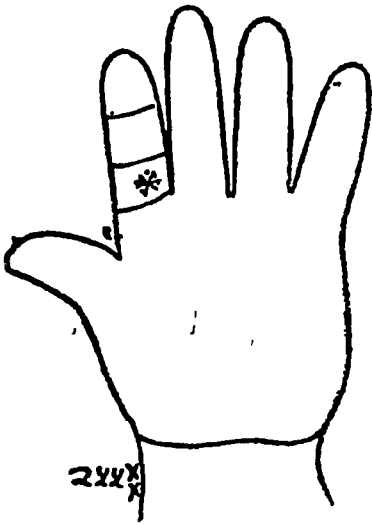
चित्र २५६—यदि शुक्र-पर्वत पर लाल चिह्न हो तो भी जातक अन्धा होता है।

चित्र २५७—यदि बुध-पर्वत के नीचे हृदय-रेखा पर एक द्वीप-चिह्न हो तो भी जातक अंधा हो जाता है।

चित्र २५८—यदि मध्यमा उंगली के तीसरे पर्व पर त्रिकोण जैसा चिह्न हो तो भी जातक अंधा होता है।
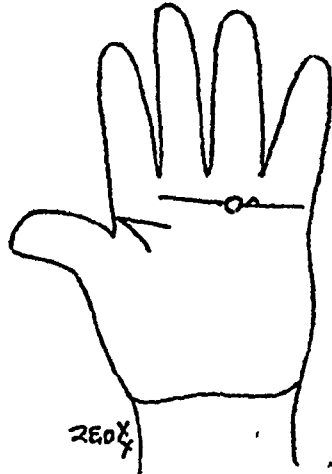
चित्र २५६—यदि शुक्र-क्षेत्र से लेकर हृदय-रेखा तक बड़ा द्वीप-चिह्न दिखाई देता हो तो भी जातक अन्धा हो जाता है।

चित्र २६०—यदि सूर्य-क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा पर वृत चिह्न हो अथवा आरी के दाते जैसा चिह्न हो तो दृष्टि से बहुत अधिक काम लेने के कारण जातक अन्धा हो जाता है।

चित्र २६१—यदि सूर्य क्षेत्र के नीचे हृदय-रेखा पर नक्षत्र चिह्न हो तो जातक किसी घटना के कारण अन्धा हो जाता है।
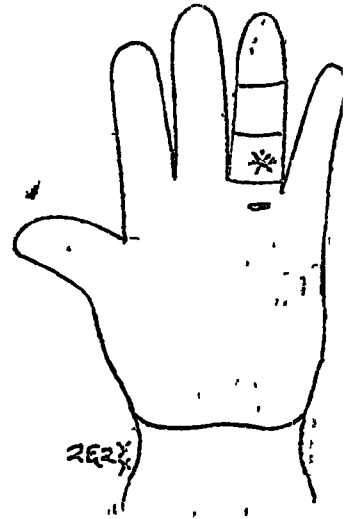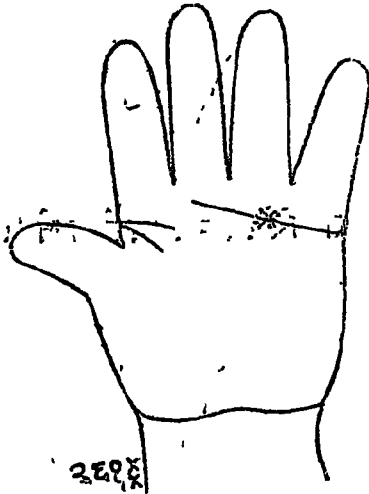
चित्र २६२—यदि अनामिका उगली के तृतीय पर्व पर नक्षत्र-चिह्न हो तथा सूर्य-क्षेत्र पर नीले रग का दाग-चिह्न हो तो जातक के नेत्रों में पीड़ा बनी रहती है।

खांसी

चित्र २६३—हथेली का मध्य भाग छोटा हो, स्वास्थ्य-रेखा बिगड़ी हुई हो और मस्तक-रेखा से मिल रही हो तथा शुक्र-क्षेत्र से मही
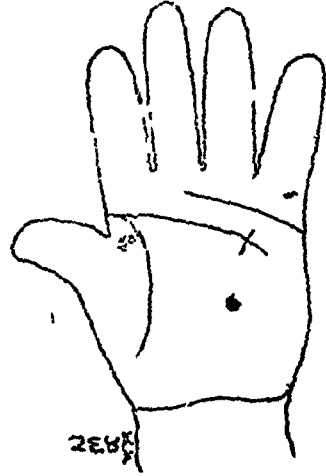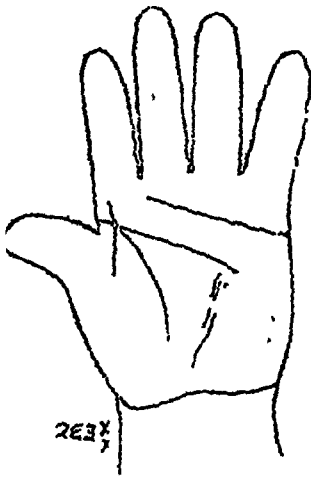
रेखा निकलकर जीवन-रेखा को पार करती हुई मंगल-क्षेत्र पर पहुंच रही हो, तो जातक को खासी की बीमारी होती है।

तिल्ली

चित्र २६४—यदि मस्तक-रेखा सूर्य-क्षेत्र पर पहुंचकर क्रास-चिह्न बनाये तथा मगल-क्षेत्र पर नक्षत्र-चिह्न हो तथा शुक्र का क्षेत्र निम्न हो तो जातक को तिल्ली बढ़ जाने तथा सन्तप्त विषम ज्वर की बीमारी होती है।

दांत-रोग

चित्र २६५—शनि-क्षेत्र उन्नत हो और उस पर अधिक रेखाएं हों स्वास्थ्य-रेखा तथा भाग्य-रेखा लहरदार एवं लम्बी हों तथा उंगलियों के द्वितीय पर्व लम्बे हों तो जातक को दांत और मसूढ़े सम्बन्धी रोग होते हैं।

२६५

२६६
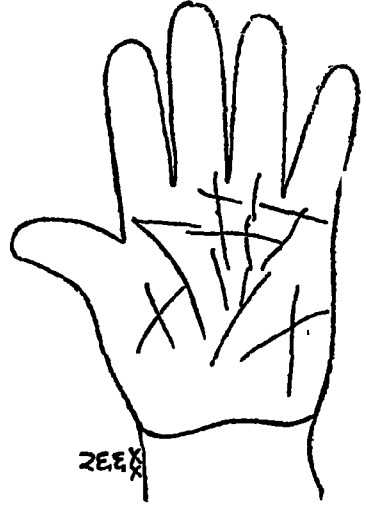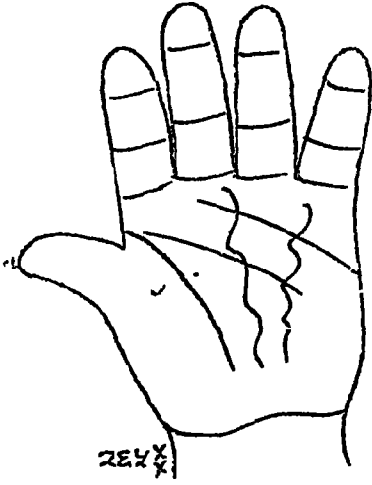
पांव की बीमारी

चित्र २६६—यदि शनि-क्षेत्र उच्च हो, मस्तक-रेखा शनि-क्षेत्र के नीचे टूटी हुई हो तथा हाथ में रेखाएं भी अधिक हों तो जातक को पांव अथवा टांगों की बीमारी होती है।

फोड़ा-फुन्सी

चित्र २६७—स्वास्थ्य-रेखा पर द्वीप-चिह्न हो तथा मस्तक-रेखा घूमकर उससे मिल गई हो, तो जातक को फोड़ा-फुन्सी का रोग होता है।

गुर्दे की बीमारी

चित्र २६८—यदि दोनों हाथों में हृदय-रेखा टूटी हुई हो तथा मंगल क्षेत्र पर मस्तक-रेखा के ऊपर श्वेत बिन्दु अथवा दाग-चिह्न हो तो जातक को गुर्दे की बीमारी होती है।
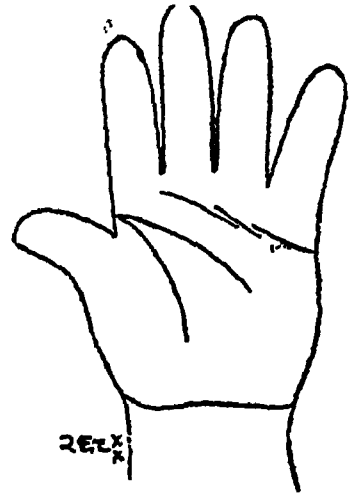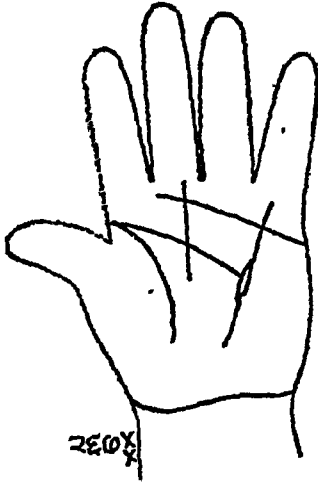
निरन्तर बीमार रहना

चित्र २६९—अनामिका उंगली के किसी भी पर्व पर यदि काले रंग का बिन्दु-चिह्न अथवा तिल हो तो जातक निरन्तर बीमार बना रहता है।
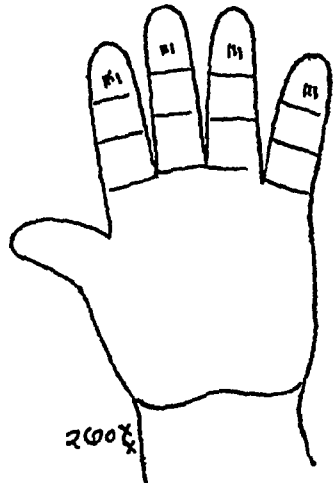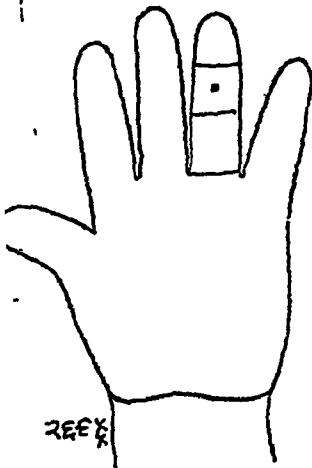
चित्र २७०—(१) यदि उंगलियों के प्रथम पर्व पर छोटी-छोटी रेखाएं हों तो जातक हर समय बीमार रहता है।

(२) चौड़ी, मलिन अथवा पीले रंग की रेखाएं हों तो जातक के शरीर में रक्त की कमी तथा दुर्बलता समझनी चाहिए।

(३) यदि चन्द्र-पर्वत उन्नत हो तथा नखों के ऊपर छोटे-छोटे लाल रंग के अर्धचन्द्र-चिह्न हों तो जातक को रक्त विकार रहता है।

चित्र २७१—यदि मस्तक-रेखा पर काले अथवा नीले रंग का दाग-चिह्न हो तथा स्वास्थ्य-रेखा पर लाल रंग का दाग-चिह्न हो तो जातक को विषमज्वर तथा उदर-ज्वर की शिकायत रहती है।
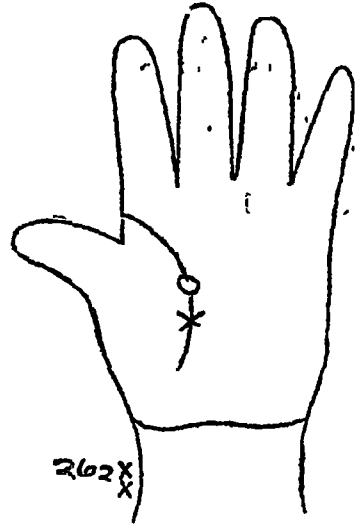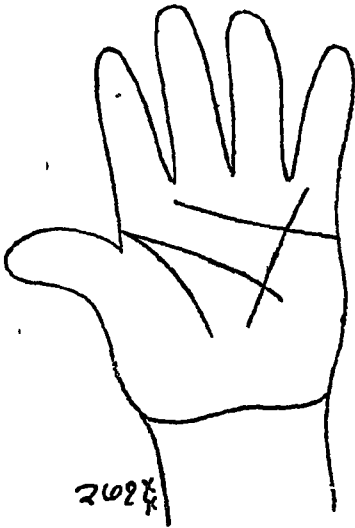
चित्र २७२—यदि जीवन रेखा पर 'क्रास-चिह्न' अथवा वृत्त-चिह्न हो तो जातक को लाल ज्वर की बीमारी होती है।

चित्र २७३—(१) यदि मस्तक-रेखा टूटी हुई अथवा द्वीप-युक्त हो तो जातक को मस्तिष्क सम्बन्धी ज्वर बना रहता है।
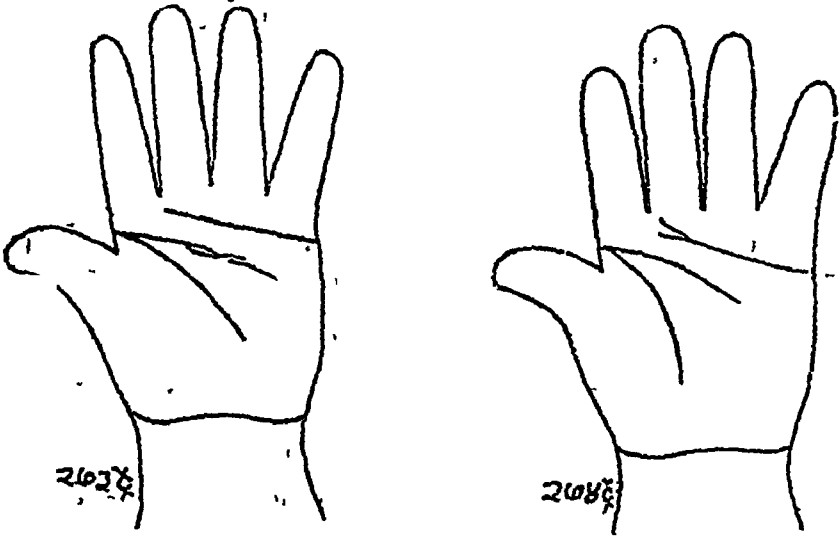
(२) यदि हाथ की रेखाओं का रंग अनियमित रहता हो तो जातक का स्वास्थ्य कभी एकसा ठीक नहीं रहता।

(३) यदि हथेली की त्वचा खुश्क हो तथा रेखाओ का रंग गहरा लाल हो तो जातक को हर समय ज़्वर वना रहता है। ऐसे व्यक्ति को छूत से भी वचे रहना चाहिए।

(४) यदि हथेली को त्वचा तथा रेखाओं का रग पीला हो तो जातक की पित्त प्रकृति होती है और उसे भीतरी रोग वने रहते है।

नौकरों का चुनाव

नौकरों का चुनाव करते समय यदि उनके हाथ की वनावट को भी ध्यान में रखा जाय तो उससे काम के लिए उपयुक्त व्यक्ति मिलने की सम्भावना रहेगी। विभिन्न कार्यों के लिए नौकरों का चुनाव करते समय उनके हाथ में किन-किन विशेष लक्षणों को देखना

चाहिए, इस सम्बन्ध में नीचे लिखा जा रहा है। यह मत पश्चिमी विद्वानों के सिद्धान्त पर आधारित है।

विश्वासपात्र क्लर्क का चुनाव

चित्र २७४—जिस व्यक्ति के गुरु की उंगली (तर्जनी) सीधी हो तथा हृदय-रेखा द्विजिह्व हो वह व्यक्ति विश्वासपात्र, गुप्त भेदों को छिपाने वाला तथा उत्तरदायित्व का पालन करने वाला होगा।

ऐसे व्यक्ति की उंगलियां अधिक फैली हुई नहीं होनी चाहिए। यदि उंगलियां अधिक फैली होंगी तो वह गुप्त भेदों को छिपाने में असमर्थ रहेगा। यदि कनिष्ठा उंगली के नीचे वाला मंगल का क्षेत्र उन्नत हो तो ऐसा व्यक्ति स्वभाव का अत्यधिक गम्भीर भी होगा।

कोचवान का चुनाव

जिस व्यक्ति का हाथ गोल, चपटा, पतला तथा वर्गाकार हो साथ ही हथेली चौड़ी तथा रेखाओं से युक्त हो, मंगल के दोनों पर्वत उठे हुए हों और सूर्य का पर्वत बुध के पर्वत की ओर झुका हुआ हो तो ऐसा व्यक्ति अच्छा कोचवान (सईस) सिद्ध होता है। वह अपने मन को स्थिर रखकर घोड़ों के साथ अच्छा व्यवहार करेगा तथा घोड़े भी उसके नियन्त्रण में बने रहेंगे।

एजेन्ट या फेरी करने वाले का चुनाव

जिस व्यक्ति की कनिष्ठा उंगली लम्बी तथा सीधी हो और उसका पहला पर्व भी लम्बा हो, उसमें प्रभावोत्पादक भाषण शक्ति होती है। ऐसे व्यक्ति का गुरु-क्षेत्र भी उन्नत होता है। ऐसे लोग फेरी लगाकर माल बेचने अथवा एजेन्टों का काम करने में निपुण सिद्ध होते हैं।

नौकरानी का चुनाव

(१) गोल, पतली, सीधी एवं चपटी उंगली तथा दृढ़ हथेली वाली स्त्री घर का काम करने में कुशल होती है।

(२) नुकीली उंगलियों वाली स्त्री घरेलू कामों को ठीक-ठीक नहीं कर पाती, परन्तु वह सिलाई, कढ़ाई तथा सजावट आदि के हल्के काम करने में प्रवीण होती है। यदि बुध का पर्वत प्रधान हो तो ऐसी उंगलियों वाली स्त्री सुई द्वारा किये जाने वाले कामों को बहुत अच्छा करती है, परन्तु वह कुछ नखरेबाज तथा लापरवाह भी अवश्य होती है।

रसोई करने वाली का चुनाव

जिस स्त्री की सभी उंगलियों के तीसरे पर्व बहुत मोटे हों तथा दूसरी सन्धियों में गांठें हों, वह रसोई बनाने का काम अच्छा करती है। यदि उसकी तर्जनी उंगली प्रधान हो, नाखून छोटे तथा चौरस हों तो वह अपने काम को शान्तिपूर्वक करना चाहती है। अपने काम में किसी अन्य व्यक्ति द्वारा हस्तक्षेप करना उसे सहन नहीं होता।

धाय का चुनाव

चित्र २७५—गोल, पतली तथा चपटी उंगलियों वाली स्त्री जिसकी हथेली में सूर्य-पर्वत बुध-पर्वत को दबाए हुए हो तथा शुक्र का पर्वत पूर्ण उन्नत हो तथा हृदय-रेखा की स्थिति उत्तम हो, वह नम्र, चंचल तथा मधुर स्वभाव वाली एवं बच्चों से प्यार करने वाली होती है।
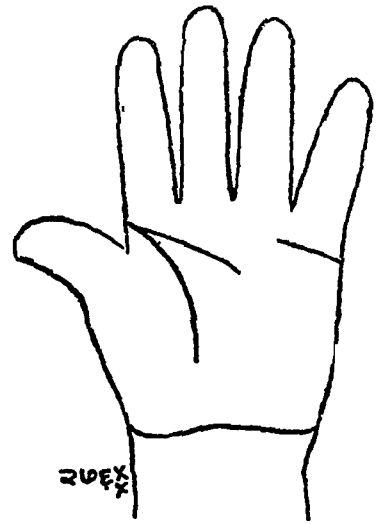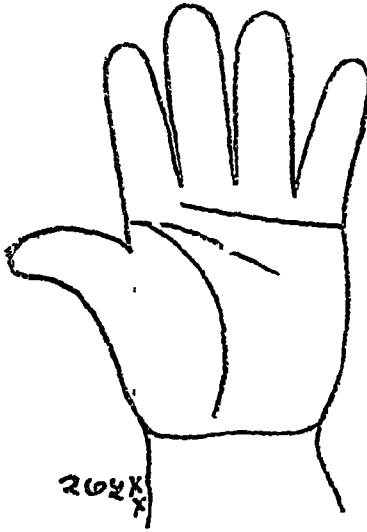
चित्र २७६—जिस स्त्री के हाथ की उंगलियों तथा नाखूनों का रंग लाल हो अथवा नाखून अपने आधार स्थान पर चौरस हों अथवा छोटे हों, तर्जनी उंगली टेढ़ी हो, हृदय-रेखा छोटी तथा शाखा रहित हो, हाथ चपटा और कठोर हो एवं सूर्य तथा शुक्र के पर्वत नीचे दबे हुए हो, वह बच्चों पर स्नेह प्रकट नही करती, अपितु उनकी दीनता पर प्रसन्न होकर अपनी दुष्टता का प्रदर्शन करती है। उसके सुपुर्द जो भी बच्चे किये जाएंगे, उनकी हालत खराब बनी रहेगी, अतः ऐसी स्त्री को धाय के काम पर नही रखना चाहिए।

विशिष्ट योगों का ज्ञान

हस्त-परीक्षा द्वारा यह ज्ञान प्राप्त करना कि कौनसा जातक किस विशेष व्यवसाय अथवा कार्य को कर सकता है तथा किस प्रकार की रेखाओं वाले व्यक्ति की रुचि, स्वभाव तथा चरित्र आदि कैसे होते है—इसे आगे लिखे अनुसार समझना चाहिए।

चिकित्सक योग

चित्र २७७—यदि मंगल तथा वुध के पर्वत उन्नत हों, उंगलियां लम्बी, समकोण होकर अग्रभाग में गोल, पतली अथवा चपटी हों, साथ ही सभी उंगलियो को दूसरी गांठे पुष्ट हों, वुध-क्षेत्र पर तीन-चार खड़ी रेखाए हों, हथेली मुदृढ़ हो, मूर्य-रेखा तथा मस्तक-रेखा गहरी, उन्नत एवं स्पष्ट हो तो ऐसा व्यक्ति कुशल वैद्य, डाक्टर अथवा हकीम और सर्जन होता है।
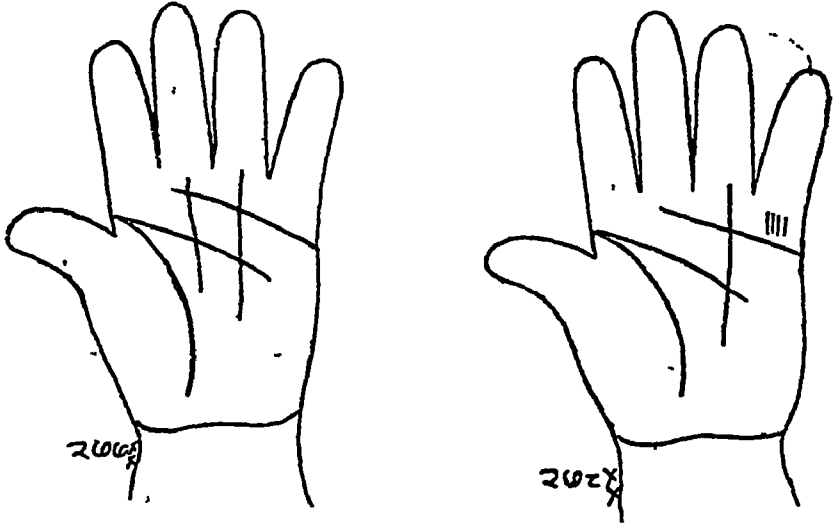
चित्र २७८—यदि चन्द्र-पर्वत उन्नत तथा वड़ा हो, सूर्य-रेखा स्पष्ट एव वलवान हो तथा वुध-क्षेत्र पर तीन-चार स्पष्ट खडी रेखाएं भी हो तो ऐसा व्यक्ति नाड़ी विशेषज्ञ होता है।

चित्र २७९—यदि सूर्य रेखा प्रवल हो, वुध का पर्वत उन्नत हो और उस पर छोटी-छोटी खड़ी तीन रेखाए हो, उगलिया

लम्बी हों और उनका प्रथम पर्व गांठदार हो, हृदय-रेखा तथा मस्तक-रेखा उन्नत एवं स्पष्ट हो तथा चन्द्र और शुक्र-पर्वत समान आकार के तथा उन्नत हों तो ऐसा व्यक्ति किसी रोग का विशेषज्ञ (स्पेशलिस्ट) तथा प्रसिद्ध कुशल चिकित्सक होता है ।
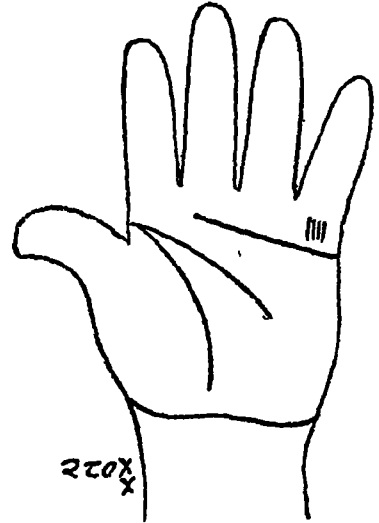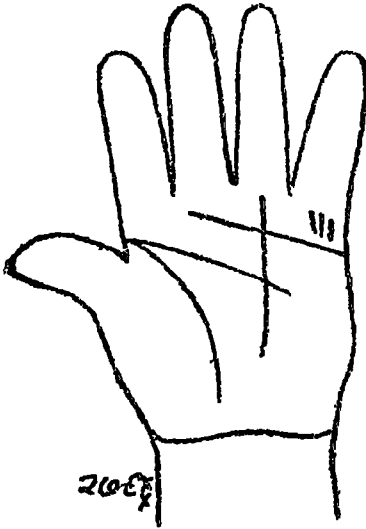
चित्र २८०—हाथ की उंगलियां गोल, पतली अथवा चपटी तथा वे अलग-अलग हों, बुध का पर्वत बड़ा और उन्नत हो तथा उस पर तीन-चार खड़ी रेखाएं हों, अंगूठा दृढ़ हो तथा मस्तक-रेखा कुछ ढलान लिए हो, तो ऐसा व्यक्ति साधारण कोटि का वैद्य, डाक्टर अथवा हकीम होता है ।

चित्र २८१—चन्द्र-पर्वत अधिक उन्नत तथा मोटा हो और सूर्य-रेखा स्पष्ट तथा बलवान हो साथ ही बुध-क्षेत्र पर तीन खड़ी रेखाएं भी हों तो ऐसा व्यक्ति रामबाण जैसी गुणकारक औषधियों का शोधक (आविष्कारक) होता है ।
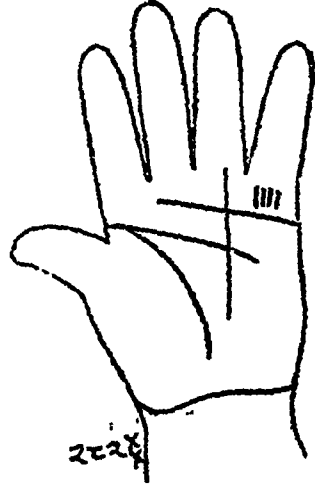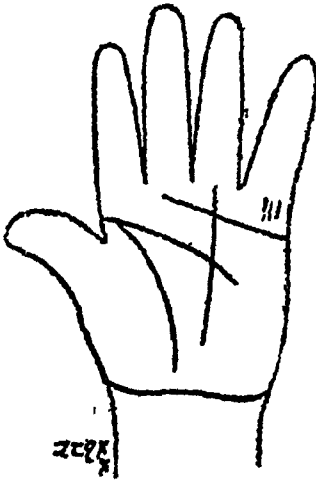
चित्र २८२—यदि हथेली कठोर हो, उंगलियों की नोंक मोटी हो, सूर्य-रेखा स्पष्ट तथा अच्छी हो तथा बुध-क्षेत्र पर तीन-चार खड़ी रेखाएं भी हो तो ऐसा जातक जानवरों का कुशल चिकित्सक (वेटेरनरी सर्जन) होता है।

चित्र २८३—यदि बुध-पर्वत पर छोटी-छोटी खड़ी रेखाएं हों, मगल का पर्वत उन्नत हो तथा उस पर दो खड़ी रेखाएं हों तो ऐसा जातक रसायनवेत्ता अथवा रसो का निर्माता होता है।

धाय योग

जिस स्त्री का हाथ गोल, पतला तथा चपटा हो तथा हथेली दृढ़ हो, बुध-क्षेत्र पर तीन-चार खड़ी रेखाएं हों और शुक्र तथा चन्द्र-पर्वत अच्छे उठे हुए हों, वह धाय अथवा नर्स होती है।

२८३

२८४
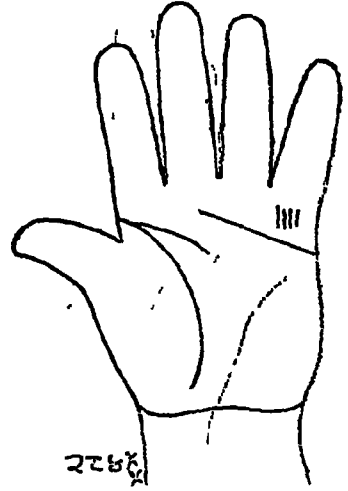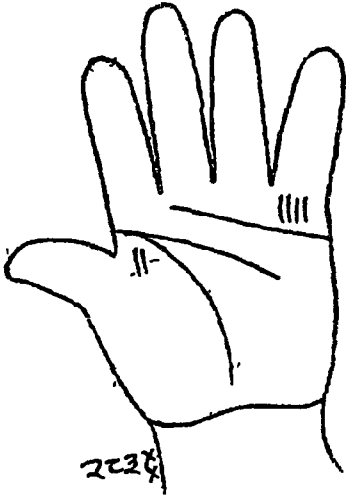
कानून ज्ञाता योग

चित्र २८५—जिसकी उगलियां लम्बी तथा पास-पास रहने वाली हो, अगूठा लम्बा तथा सीधा हो, मस्तक-रेखा सीधी तथा

२८५

२८६
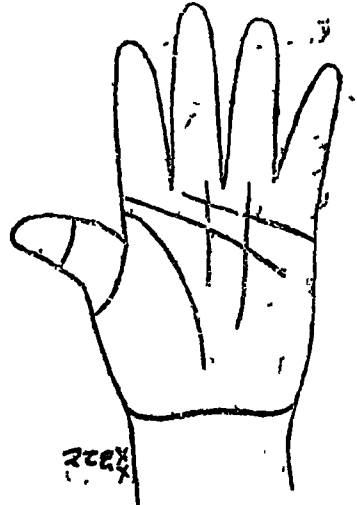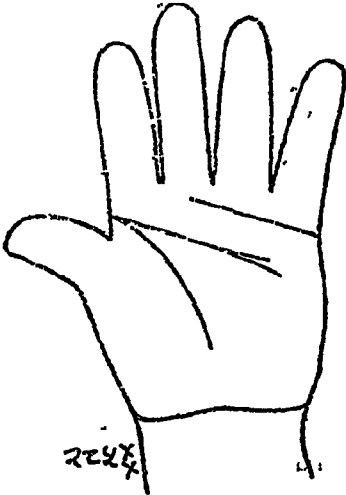
द्विजिह्व हो एवं हथेली चपटी हो, ऐसा व्यक्ति कानून को जानने वाला (वकील) होता है।

(२) उपर्युक्त प्रकार के हाथ में चारों उंगलियां अलग-अलग रहती हों, अनामिका गोल, पतली तथा चपटी हो, कनिष्ठा उंगली का प्रथम पर्व लम्बा हो, अन्य उंगलियां चौकोर आकृति की हों, गुरु, चन्द्र, बुध, सूर्य तथा शनि इन पांचों ग्रहों के पर्वत उन्नत हों, अंगूठे का दूसरा पर्व लम्बा हो तथा मस्तक-रेखा जीवन-रेखा से मिली हुई न हो, बल्कि स्वतन्त्र रूप से अलग हो साथ ही मस्तक-रेखा तथा सूर्य रेखा लम्बी हों तो जातक उच्च कोटि का वकील अथवा बेरिस्टर होता है।

न्यायाधीश योग

चित्र २८७—हाथ की उंगलियां लम्बी तथा नोंकदार हों, हथेली के मध्य में वृहद् चतुष्कोण चौड़ा हो, मस्तक-रेखा श्रेष्ठ हो, कनिष्ठा उंगली का प्रथम पर्व लम्बा हो, तर्जनी उंगली सीधी हो तथा सूर्य का पर्वत श्रेष्ठ रूप से उठा हुआ हो तो ऐसा जातक दयावान एवं न्याय-प्रिय न्यायाधीश (जज आदि) होता है।

धर्माचार्य योग

(१) यदि अंगूठा भारी तथा पीछे की ओर मुड़ा हुआ हो तो ऐसा व्यक्ति धार्मिक विचारों का तथा धर्मज्ञ होता है।

(२) यदि सूर्य की उंगली (अनामिका) निर्बल तथा न्यून हो तो ऐसे व्यक्ति दिखावे से दूर रहते हैं।

(३) यदि गुरु की उंगली (तर्जनी) अच्छी हो तो वह व्यक्ति धार्मिक विषयों में रुचि रखने वाला होता है।

२८७

२८८
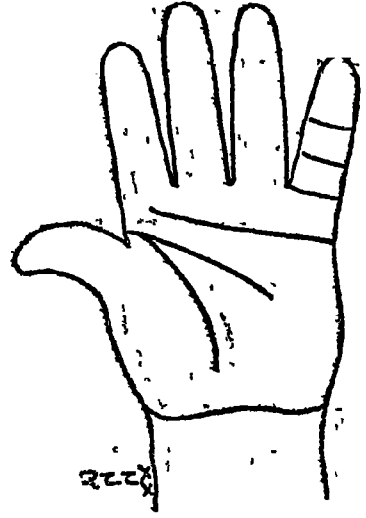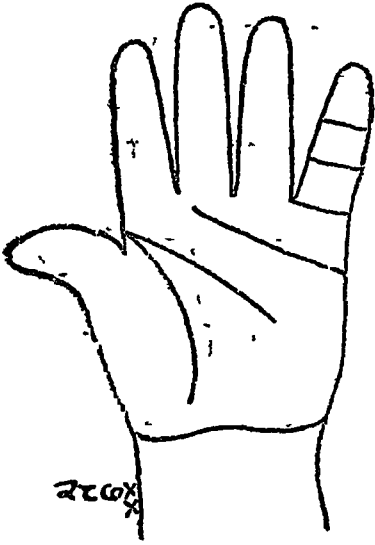
(४) यदि सभी उंगलियां अलग-अलग हों. हथेली चौड़ी तथा मोटी हो, हाथ चौरस, गोल, पतला अथवा चपटा हो तो ऐसे व्यक्ति स्वतन्त्र रूप से धर्मोपदेशक होते हैं।

(५) चित्र २८८—हाथ की सभी उंगलियां एक दूसरी के पास-पास हों, कनिष्ठा उंगली प्रधान कोंणदार, तथा नुकीली हो और उसका पहला पर्व लम्बा हो, अनामिका उगली पुष्ट तथा श्रेष्ठ हो, चन्द्र तथा शुक्र के पर्वत पुष्ट तथा उन्नत हों, अंगूठा कमजोर हो, हृदय-रेखा शनि क्षेत्र पर होती हुई गुरु के पर्वत तक लम्बी चली गई हो तो ऐसे व्यक्ति उच्च कोटि के धर्माचार्य तथा धर्मोपदेशक होते हैं । ईसाई पादरियों के हाथ प्रायः इसी प्रकार के पाये जाते है ।

(६) चित्र २८९—यदि तर्जनी उंगली प्रधान हो, चन्द्र का पर्वत पुष्ट हो, कनिष्ठा उंगली नुकीली हो तथा मस्तक-रेखा लम्बी और

कुछ ढलाव लिये हुए हो तो ऐसा व्यक्ति ब्रह्मज्ञानी अथवा वेदान्ती होता है।

मुख्त्यार योग
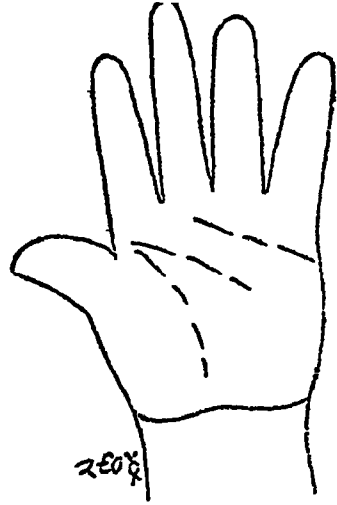
चित्र २९०—यदि शनि की उंगली (मध्यमा) लम्बी हो तथा गुरु की उंगली (तर्जनी) सीधी तथा अप्रधान हो तो ऐसा व्यक्ति किसी की ओर से मुकद्दमे मे मुख्त्यारी का काम करता है।

चित्रकार योग

(१) यदि हाथ वड़ा हो, उगलियां लम्बी हों तथा अनामिका उंगली का प्रथम पर्व उन्नत और पुष्ट हो तो ऐसा जातक छोटे-छोटे चित्र वनाने वाला होता है।

(२) चित्र २९१—यदि उंगलियां लम्बी हों मस्तक-रेखा सीधी हो तथा अनामिका उगली चौरस हो तो ऐसा व्यक्ति ऐतिहासिक घटनाओं के चित्र वनाता है।

२९१

२९२
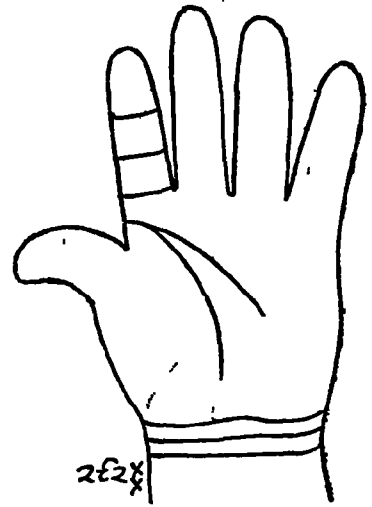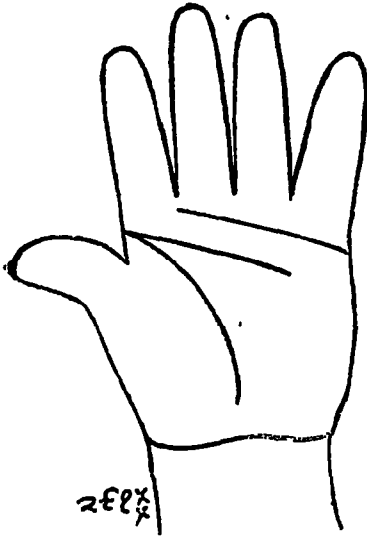
(३) चित्र २९२—यदि चन्द्र क्षेत्र उन्नत तथा पुष्ट हो और वह मणिबन्ध-रेखा को दबा रहा हो, मस्तक-रेखा लम्बी तथा ढलाव लिये हुए हो, उंगलियां नुकीली तथा बिना गांठों की हों, तर्जनी उंगली श्रेष्ठ तथा पुष्ट हो और उसका पहला पर्व चौड़ा, पतला तथा चपटा हो तो ऐसा जातक काल्पनिक चित्र बनाने वाला होता है।

(४) यदि सूर्य की उगली चौरस हो तो चित्रकार सच्ची घट-नाओं के चित्र बनाता है।

(५) यदि शनि की उगली (मध्यमा) टेढ़ी होकर अनामिका की ओर झुकी हुई हो तो चित्रकार रुग्णावस्था के उदासीन भाव के चित्र बनाता है।

(६) यदि मंगल के दोनों क्षेत्र उन्नत हों तो चित्रकार युद्ध अथवा पशुओं के युद्ध आदि विषयो के चित्र बनाता है।

(७) यदि हाथ छोटा हो, उंगलियां नुकीली तथा चिकनी हों,

तर्जनी उंगली अधिक बलवान हो तथा बुध-क्षेत्र परिपुष्ट हो तो ऐसा व्यक्ति ठप्पे से छपाई का काम करने वाला होता है ।

(८) यदि उंगलिया गोल, पतली तथा चपटी हों, तर्जनी उंगली लम्वी तथा सीधी हो सूर्य का पर्वत उन्नत हो तथा बुध के पर्वत पर चढा हुआ (झुका हुआ) सा प्रतीत होता हो तो ऐसा चित्रकार पशुओं के चित्र अधिक वनाता है ।

(९) छोटे हाथ वाला व्यक्ति छोटे परन्तु महत्वपूर्ण चित्र वनाता है ।

संगीतज्ञ योग

(१) यदि शुक्र का पर्वत उन्नत हो तो जातक मधुर रागो से प्रेम रखता है ।

(२) यदि अंगूठे के वाहरी कोण अधिक उन्नत हों तो जातक समयानुकूल रागों का प्रेमी होता है ।

(३) यदि अंगूठे के कोंण नीचे को ओर दवे हुए हों तो जातक की वाणी प्रभावशाली होती है ।

(४) वड़े तथा कोमल हाथ वाले व्यक्ति का अंगूठा यदि उपर्युक्त प्रकार का हो तो वह सारंगी, वेला आदि वाद्य-यन्त्रों को वजाने में कुशल होता है ।

(५) गोल, पतली, चपटी अथवा चौरस उगलिया, चौड़ी हथेली तथा कोमल और छोटे हाथ वाले व्यक्ति पियानो तथा आरगन बाजा वजाने में कुशल होते हैं ।

(६) वड़े हाथ वाले व्यक्ति वडा वाजा तथा छोटे हाथ वाले व्यक्ति छोटा वाजा वजाने में प्रवीण होते हैं ।

(७) गायक के हाथ में भी उक्त प्रकार के लक्षण होते है। साथ ही अंगूठे का निम्न कोण चिकना तथा उसके ऊपर का शुक्र-क्षेत्र दृढ़ होता है।

अभिनेता योग

चित्र २९३—(१) यदि उंगलियां चौकोर हों, शुक्र का पर्वत उन्नत हो तथा उस पर गहरी रेखाएं फैली हुई हों, साथ ही मस्तक-रेखा की एक शाखा बुध के पर्वत से जा मिली हो तो ऐसा व्यक्ति नाटक में अभिनय करने वाला होता है।

(२) अनामिका उंगली गोल, चपटी तथा पुष्ट हो, अन्य उंगलियां भी गोल तथा चपटी हों, सभी उंगलियां अलग-अलग रहने वाली तथा लम्बी हों, अंगूठा सिरे पर पीछे की ओर मुड़ा हुआ हो तथा चन्द्रमा और बुध के पर्वत उन्नत हों तो ऐसा व्यक्ति नाटक का सूत्रकार (संचालक) होता है।
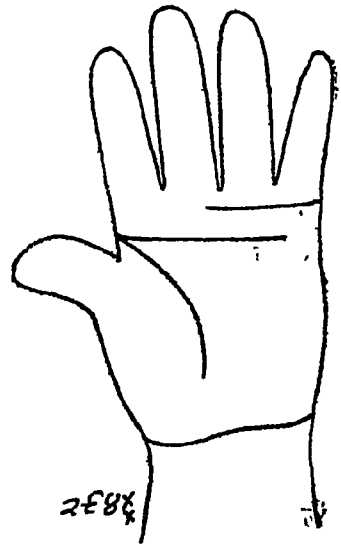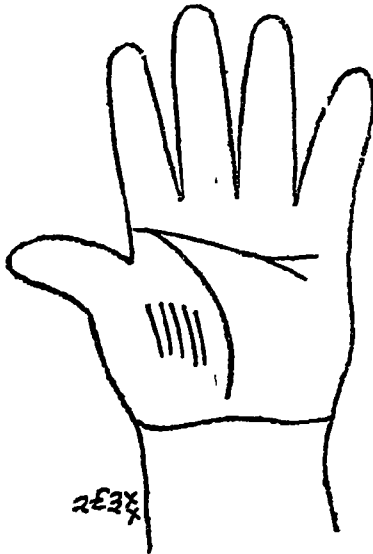
चित्र २६४—जिस सूत्रकार के हाथ में बुध का क्षेत्र अधिक ऊंचा हो तथा कनिष्ठा उगली का नख छोटा हो, वह सुखांत अभिनय करने वाला होता है।

चित्र २६४—जिस सूत्रधार के हाथ में मध्यमा उंगली प्रधान हो तथा शनि का पर्वत अपने स्थान से हटकर सूर्य के पर्वत की ओर झुका हुआ हो, वह दुखात अभिमय करने में कुशल होता है।

(५) जिस सूत्रधार के हाथ में मस्तक रेखा बुध क्षेत्र की ओर झुकी हुई हो वह प्राय: अधिक सफलता तथा यश प्राप्त करता है।

(६) गायकों के जो लक्षण वताये गये है, उनके अतिरिक्त मस्तक-रेखा ऊंची उठी हुई तथा उंगलियां चौरस हों तो ऐसे व्यक्ति संगीत, रासलीला आदि करने वाले होते हैं।

सैनिक योग

चित्र २६५—(१) यदि उगलियां छोटी गोल, चपटी, पतली तथा चौरस हों, मंगल के दोनों क्षेत्र उन्नत हो तथा वुध क्षेत्र ुष्ट हो, अंगूठा भारी हो और उस पर कुछ रेखाए भी हो, हथेली की त्वचा कठोर हो तथा हथेली चपटी तर्जनी उंगली लम्बी तथा प्रवान हो तो ऐसा व्यक्ति सैनिक अथवा नेता होता है। यदि शनि क्षेत्र भी उन्नत हो तो वह सैनिकों का अनुकरण करने वाला होता है।

(२) यदि उक्त लक्षणों के अतिरिक्त चन्द्र क्षेत्र उन्नत तथा दृढ़ हो तथा हथेली चौड़ी हो तो जातक समुद्री सैनिक (जल सेना का सैनिक) होता है।

चित्र २८६—(३) यदि हथेली पर चन्द्र-रेखा जीवन रेखा से मिलती हो, वुध तथा गुरु के पर्वत उन्नत हो एवं हृदय-रेखा स्पष्ट हो तो ऐसा व्यक्ति समुद्री जहाज का चालक होता है।
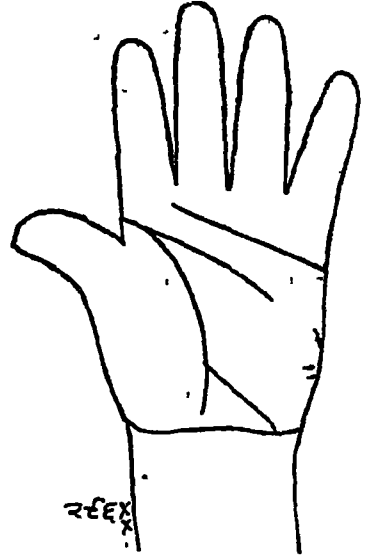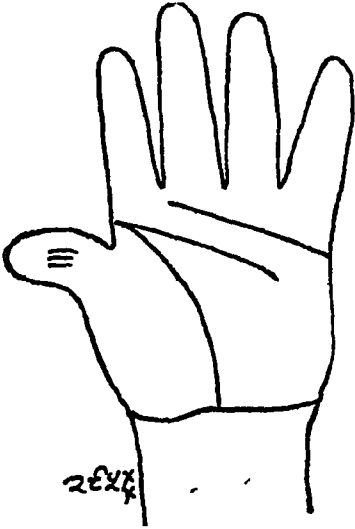
चित्र २९७–(४) यदि चन्द्र क्षेत्र उन्नत तथा पुष्ट हो तथा मस्तक रेखा मंगल के द्वितीय पर्वत पर पहुंच रही हो तो ऐसा व्यक्ति समुद्री सैनिक जहाज का चालक होता है।
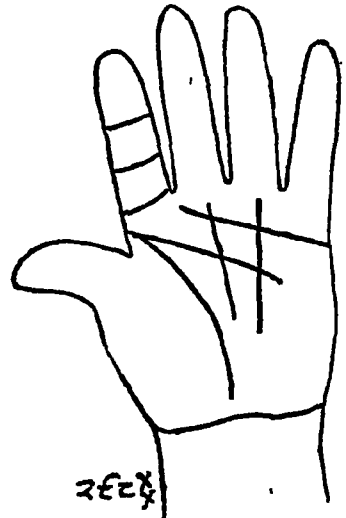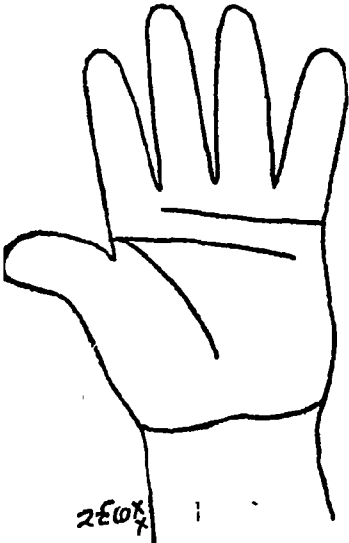
(५) यदि गुरु, शनि, सूर्य तथा बुध ये चारों ही पर्वत उन्नत हों तथा सूर्य क्षेत्र के नीचे मुद्रा चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति 'वायुयान' चालक होता है।

कारीगर योग

चित्र २९८—गुरु पर्वत अधिक उन्नत हो, उंगलियां चौकोर हों, अनामिका उंगली अच्छी, सीधी तथा लम्बी हो और उसका प्रथम पर्व भी लम्बा हो, सूर्य रेखा उत्तम तथा स्पष्ट हो तर्जनी उंगली नुकीली हो चन्द्र का पर्वत उन्नत हो तथा तर्जनी एवं मध्यमा उंगलियों में अन्य उंगलियों की अपेक्षा कुछ अधिक दूरी हो तो ऐसा व्यक्ति अच्छा कारीगर होता है।

दर्जी योग

हाथ वड़ा हो, उंगलियां चौरस हों, अनामिका उंगली अच्छी हो तथा उसका प्रथम पर्व लम्बा और सिरा गोल, चपटा तथा पतला हो, तो ऐसा व्यक्ति अच्छा दर्जी अर्थात् सिलाई का काम जानने वाला होता है।

ईंट चुनने वाले का योग

चित्र २९९—यदि तर्जनी उंगली लम्बी, सीधी, गोल, चपटी तथा पतली हो, विशेषकर उसका पहला पर्व लम्बा हो, मस्तक रेखा सीधी हो तथा मध्यमा उंगली लम्बी हो तो ऐसा व्यक्ति ईंट चुनने वाले राज का काम अच्छा करता है।

हुंडी वाले का योग

चित्र ३००—यदि मध्यमा तथा अनामिका उंगलियां समान लम्बाई की हों तथा हाथ गोल, पतला और चपटा हो एवं मस्तक रेखा सीधी हो तो ऐसा व्यक्ति हुंडी के लेन-देन का काम करता है।
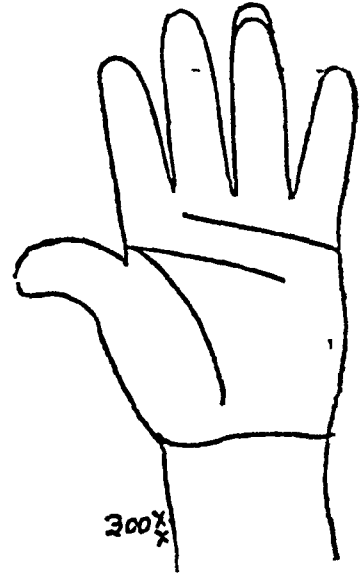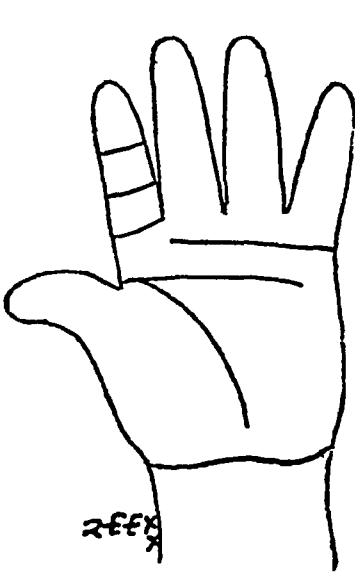
सम्राट् योग

चित्र ३०१—जिस व्यक्ति की नाभि गहरी हो, नासिका का अग्रभाग सीधा हो, वक्ष स्थल लालिमा लिए हुए हो पदतल कोमल तथा रक्त वर्ण हो एव हाथ की सभी मुख्य रेखाएं स्पष्ट सुन्दर तथा अखंडित हों तो ऐसा व्यक्ति सम्राट होता है।

राज योग

चित्र ३०२—जिसके हाथ की हथेली गुलावी रंग की हो, ग्रहक्षेत्र उन्नत हो तथा हाथ पर अश्व, वृक्ष, मृदंग, दण्ड, घट अथवा स्तम्भ का चिन्ह हो वह व्यक्ति राजा होता है।

उपर्युक्त लक्षणों के अतिरिक्त जिस व्यक्ति का ललाट चौड़ा तथा विशाल हो, आंखें कमल दल सरीखी हों, मस्तक गोल हो तथा भुजाएं घुटनों तक पहुंचती हों, ऐसा व्यक्ति महाराजा होता है।
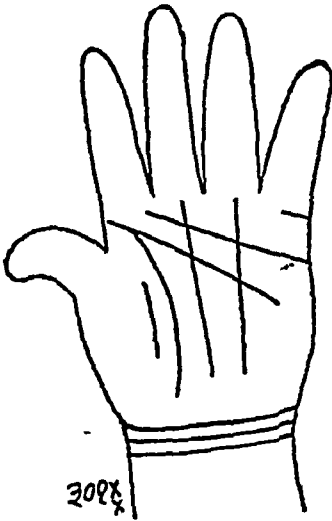
टिप्पणी—वर्तमान युग में सम्राट 'राजा, महाराजा आदि नहीं रहे, अतः ऐसे लक्षणों वाले व्यक्ति को विपुल ऐश्वर्यशाली, परम ऐश्वर्य शाली तथा महा ऐश्वर्यशाली समझना चाहिए।

ऐश्वर्यदायक योग

चित्र ३०३—जिस व्यक्ति के हाथ में धनुष, चन्द्र, ध्वजा, रथ अथवा चतुष्कोण चिन्ह हो, जिसकी भाग रेखा मणिबन्ध से निकलकर सीधी शनि क्षेत्र पर पहुंच रही हो, जिसके अंगूठे में यव चिन्ह हो तथा जिस के हाथ में सरोवर, अंकुश, वीणा, मछली, छाता अथवा हाथी का चिन्ह हो वह व्यक्ति ऐश्वर्यशाली होता है।

लक्ष्मीदाता योग

चित्र ३०४—जिस व्यक्ति के हाथ में तलवार, दर्पण, पर्वत अथवा हल का चिन्ह हो उसके घर में लक्ष्मी का निवास हर समय रहता है।
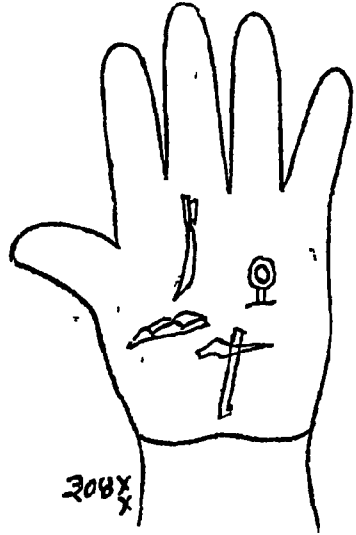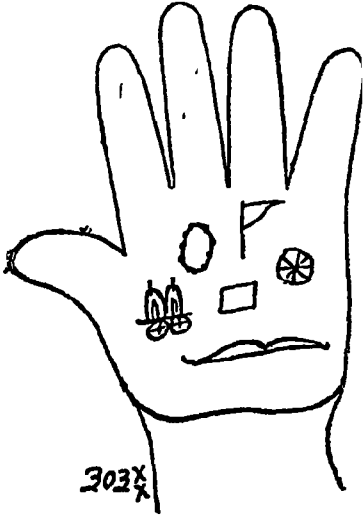
मन्त्री योग

चित्र ३०५—यदि सूर्य रेखा मस्तक रेखा से मिल रही हो तथा
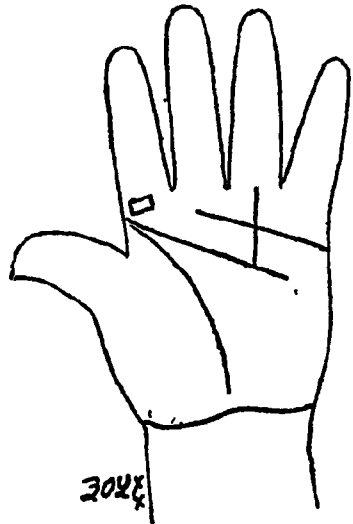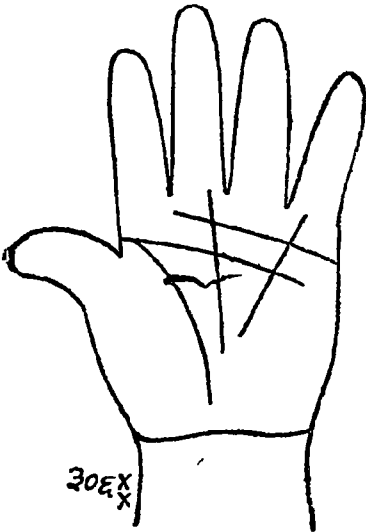
मस्तक रेखा सीधी तथा स्पष्ट स्थिति में गुरु क्षेत्र की ओर झुकी हुई हो और वहां पर चतुष्कोण चिन्ह बना रही हो तो ऐसा व्यक्ति मंत्री अथवा उच्चकोटि का नेता होता है।

उच्चाधिकारी योग

चित्र ३०६—(१) यदि गुरु तथा सूर्य के पर्वत उठे हुए हों तथा भाग्य रेखा और स्वास्थ्य रेखा पुष्ट स्पष्ट तथा सीधी हो तो ऐसा व्यक्ति राज्यपाल होता है।

चित्र ३०७—(२) यदि शनि क्षेत्र पर 'त्रिशूल चिन्ह' हो चन्द्र-रेखा भाग्य-रेखा से मिल रही हो भाग्य रेखा हथेली के मध्य भाग से आरम्भ हुई हो शाखा सूर्य तथा उसकी एक शाखा गुरु के पर्वत पर तथा दूसरी के पर्वत पर जा रही हो तो ऐसा व्यक्ति उच्च अधिकारी होता है।
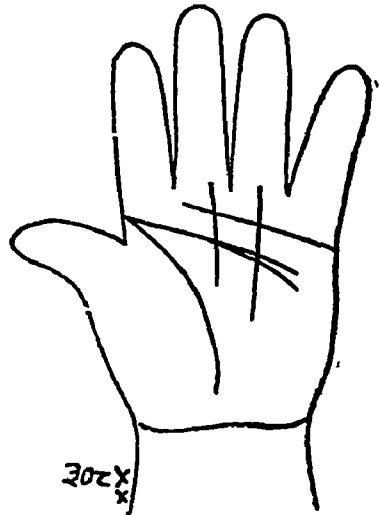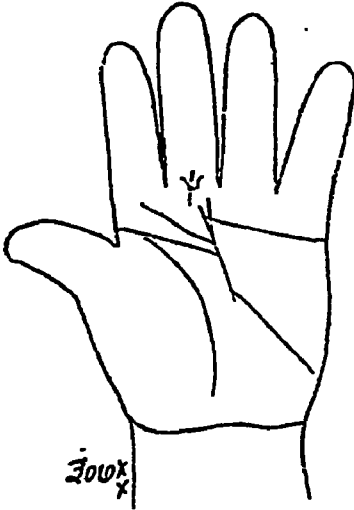
राजदूत योग

चित्र ३०८—यदि गुरु तथा मंगल के पर्वत उन्नत हों, मस्तक रेखा द्विजिह्व हो, कनिष्ठा उंगली लम्बी और नुकीली हो तथा उंगलियों के नाखून चमकदार हों तो ऐसा व्यक्ति राजदूत का पद प्राप्त करता है।

पदाधिकारी योग

चित्र ३०९—(१) यदि बाएं हाथ की तर्जनी तथा कनिष्ठा उंगलियों की अपेक्षा दाएं हाथ की ये दोनों उंगलियां मोटी तथा बड़ी हों मंगल का पर्वत अधिक उन्नत हो तथा सूर्य-रेखा प्रबल हो तो ऐसा व्यक्ति कलक्टर या कमिश्नर का पद प्राप्त करता है।

चित्र ३१०—(२) यदि गुरु, शनि, सूर्य तथा बुध के पर्वत उन्नत हों, उंगलियां लम्बी हों और उनके ऊपरी भाग मोटे हों, सूर्य रेखा प्रबल हो तथा मध्यमा ऊंगली का द्वितीय पर्व लम्बा हो तो ऐसा व्यक्ति शिक्षा विभाग में किसी उच्च अधिकारी का पद ग्रहण करता है।

३०९

३१०
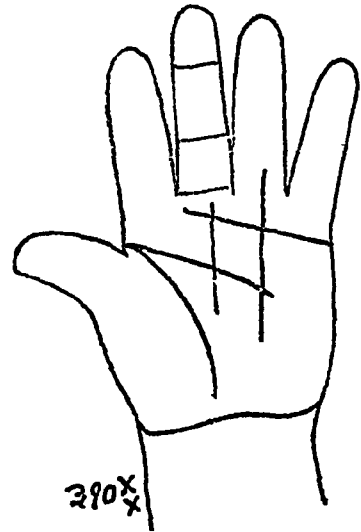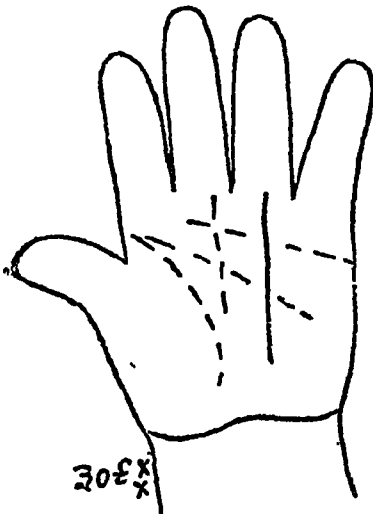
दार्शनिक योग

चित्र ३११–यदि गुरु पर्वत उन्नत हो, तर्जनी उंगली लम्बी हो, कनिष्ठा उगली लम्बी तथा नुकीली हो, साथ ही मस्तक रेखा लम्बी तथा नीचे की ओर झुकी हुई हो तो ऐसा व्यक्ति दार्शनिक, वेदान्ती अथवा ब्रह्मज्ञानी होता है।
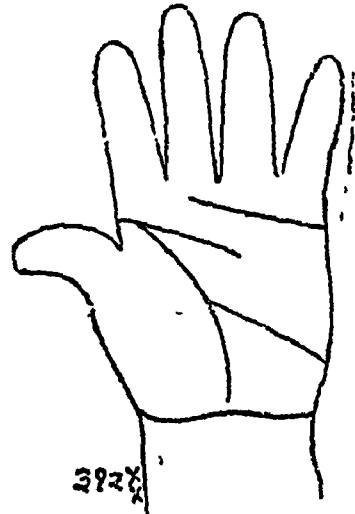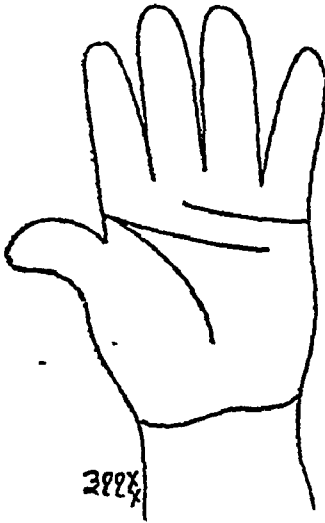
महापुरुष योग

चित्र ३१२—(१) चन्द्र रेखा जीवन-रेखा से मिलकर जब हथेली में 'बड़ा चतुष्कोण' बना रही हो तो ऐसी रेखाओं तथा चतुष्कोण वाला व्यक्ति 'महापुरुष' होता है।

चित्र ३१३—(२) सूर्य-रेखा अथवा स्वास्थ्य रेखा यदि चन्द्र रेखा से मिले तो उसे पुष्करिणी रेखा कहा जाता है। यह पुष्करिणी रेखा, जिस व्यक्ति के हाथ मे हो वह व्यक्ति भी महापुरुष होता है।
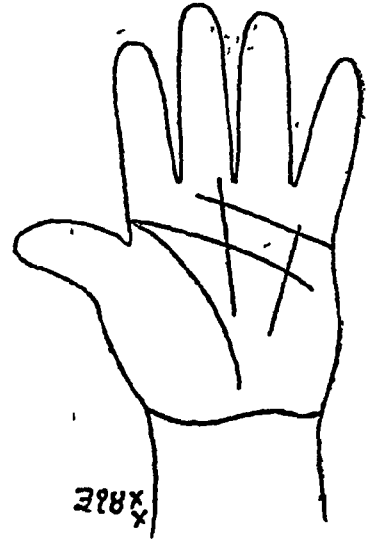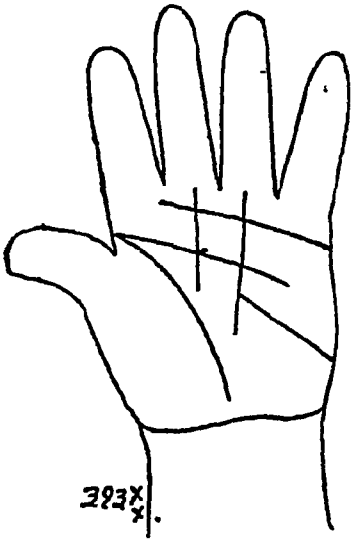
चित्र ३१४—(३) स्वास्थ्य-रेखा के मिलने से हथेली में जो छोटा चतुष्कोण बनता है, उसे 'वसु-रेखा' कहा जाता है। ऐसी वसु-रेखा जिस व्यक्ति के हाथ में हो वह व्यक्ति भी महापुरुष होता है।

चित्र ३१५—(४) जिस व्यक्ति के हाथ में शुक्र-क्षेत्र पर कोई रेखा अथवा चिन्ह न हो तथा जीवन रेखा मणिबन्ध रेखा से मिल रही हो तो ऐसे व्यक्ति को सांसारिक वासनाओं से अलग रहने वाला मुक्ति साधक 'त्यागी' महापुरुष समझना चाहिए।

गणितज्ञ योग

चित्र ३१६—(१) यदि हाथ की उंगलियां लम्बी, समकोण तथा गाठों वाली हों, उनका प्रथम तथा द्वितीय पर्व सुदृढ हो, हथेली पतली हो, मस्तक रेखा सीधी तथा लम्बी हो तो ऐसा व्यक्ति अच्छा गणितज्ञ होता है।
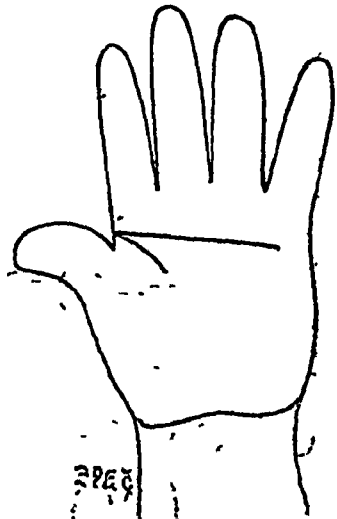
चित्र ३१७—(२) यदि मध्यमा उंगली मोटी हो, उसका दूसरा पर्व लम्बा हो, तथा चन्द्र-रेखा मस्तक-रेखा से मिल रही हो तो ऐसा व्यक्ति गणित-शास्त्र का श्रेष्ठ ज्ञाता होता है।
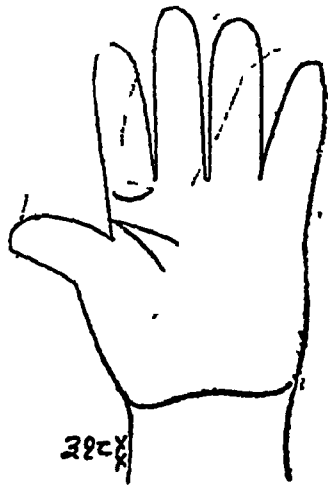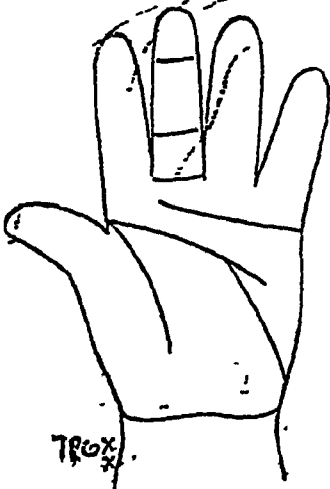
ज्योतिषी योग

चित्र ३१८—(१) यदि गुरु क्षेत्र के नीचे 'बृहस्पति' मुद्रिका हो, बुध, शुक्र तथा शनि के क्षेत्र उन्नत हों तथा उंगलियां लम्बी और पुष्ट पर्वों वाली हों तो ऐसा व्यक्ति फलित-ज्योतिष का विद्वान होता है।

चित्र ३१९—(२) यदि चन्द्र-रेखा मस्तक-रेखा से मिल रही हो, चन्द्र तथा शनि-क्षेत्र उन्नत हों, मस्तक रेखा अथवा भाग्य-रेखा के समीप त्रिकोण अथवा चतुष्कोण हो तथा अन्य रेखाएं भी शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति ज्योतिष विज्ञान का जानकार होता है।

३१९

३२०
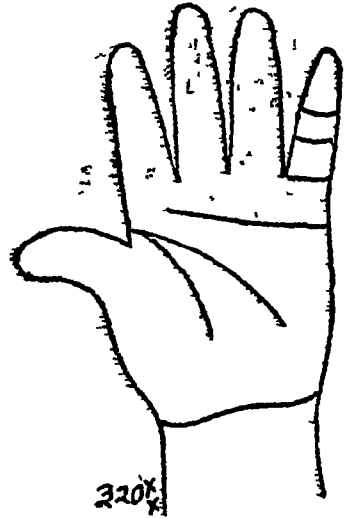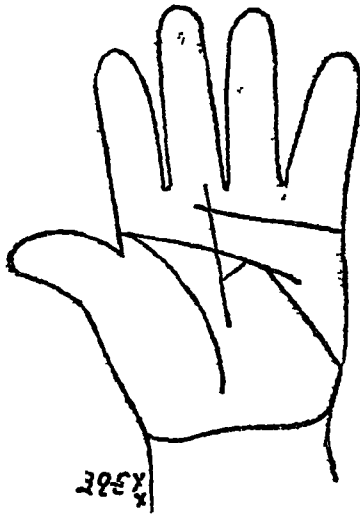
साहित्यकार योग

चित्र ३२०—(१) यदि कनिष्ठा उंगली पुष्ट तथा नोंकदार हो, उसका पहला पर्व लम्बा हो मस्तक-रेखा चन्द्र-क्षेत्र की ओर कुछ झुकी हुई स्पष्ट एवं सुन्दर हो तो ऐसा व्यक्ति साहित्यकार होता है।

चित्र ३११—(२) यदि उंगलियों के नाखून छोटे हों, तर्जनी उंगली प्रधान हो तथा चन्द्र स्थान निम्न हो शेष सब लक्षण ऊपर लिखे जैसे हों तो जातक साहित्य का आलोचक अथवा प्रेमी होता है।
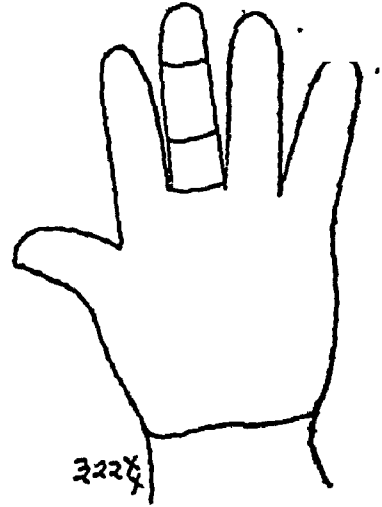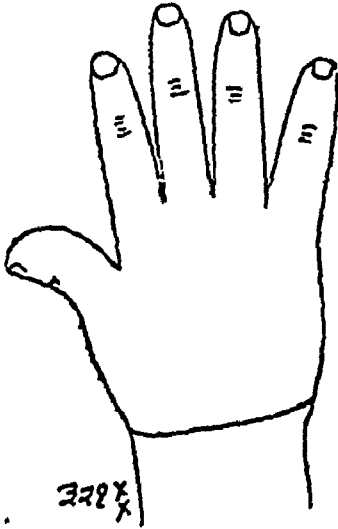
कृषक योग

चित्र ३२२—यदि मध्यमा उंगली लम्बी हो तथा उसका द्वितीय पर्व भी लम्बा हो, साथ ही हाथ कठोर तथा सुदृढ हो एवं हथेली चौड़ी हो तो ऐसा व्यक्ति कृषक अथवा भू-स्वामी होता है।

लाभ प्राप्ति योग

चित्र ३२३—यदि कनिष्ठा उंगली में अनामिका उंगली से अधिक संख्या में ऊर्ध्व रेखाएं हो तथा स्वास्थ्य-रेखा मस्तक-रेखा से मिल रही हो तो जातक को व्यवसाय में विशेष यश तथा लाभ प्राप्त होता है।
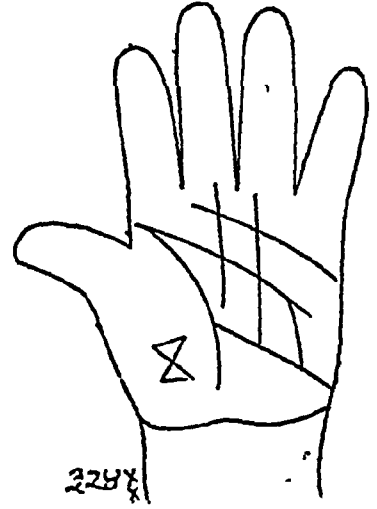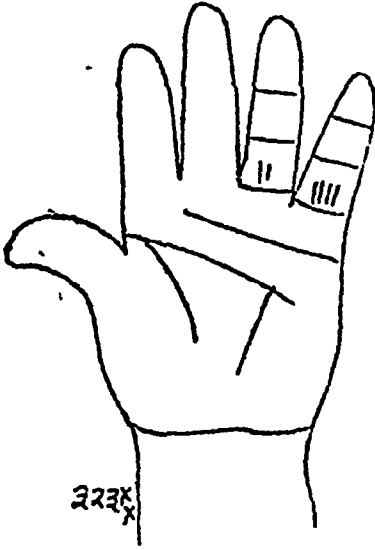
आदर्श पुरुष योग

चित्र ३२४—यदि सूर्य-क्षेत्र से चलकर एक खड़ी रेखा चन्द्र-रेखा में जा मिले तथा चन्द्र-रेखा जीवन-रेखा का स्पर्श कर रही हो, साथ ही मस्तक-रेखा से एक शाखा निकल कर चन्द्र-रेखा में जा मिले तो उसमे हथेली पर एक बड़ा डमरू जैसा चिह्न बन जाता है, इस चिह्न को आदर्श रेखा भी कहा जाता है। यह आदर्श-रेखा जिस व्यक्ति के हाथ में हो अथवा जिसके हाथ में स्वतन्त्र रूप से डमरू का चिह्न हो वह व्यक्ति अत्यन्त आदर्श महापुरुष होता है। ऐसे व्यक्ति ऐश्वर्यवान् तथा यशस्वी होते हुए भी सबसे विरक्त बने रहते हैं।

यान्त्रिक योग

(१) जिस व्यक्ति की उंगलियां नोंकदार तथा मोटी हों, अंगूठा छोटा हो, हथेली चौडी हो हाथ मजबूत हो तथा ग्रह-पर्वत चपटे हों, वह व्यक्ति यान्त्रिक (इंजीनियर) होता है।

(२) जिस व्यक्ति की उगलियां गोल पतली तथा चपटी हों, चन्द्र क्षेत्र उन्नत हो तथा अन्य सब लक्षण ऊपर लिखे अनुसार हों, वह व्यक्ति बिजली तथा कारखानो का इजीनियर (इलैक्ट्रीशियन) होता है।

अग्निहोत्री योग

चित्र ३२५—जिस व्यक्ति के अगूठे के मूल भाग में अथवा शुक्र क्षेत्र पर वेदी चिह्न हो, जो क्रमश. छोटी के बाद बड़ी चार रेखाओं से बना हो वह व्यक्ति अग्निहोत्री होता है।
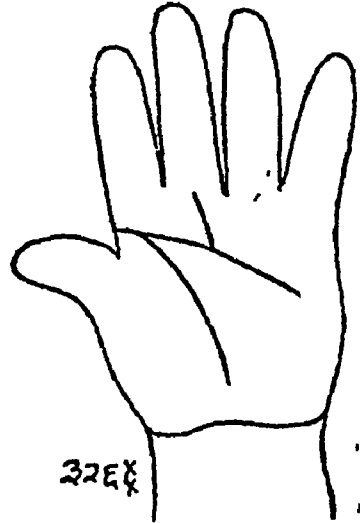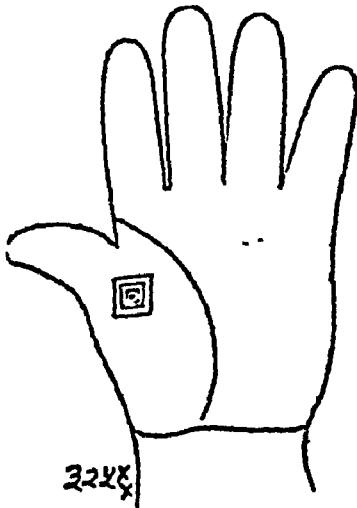
लेखक (क्लर्क) योग

चित्र ३२६—यदि सूर्य पर्वत अधिक उन्नत होकर अनामिका उंगली के प्रथम पर्व से सटा हुआ हो तथा भाग्य-रेखा मस्तक-रेखा से मिली हुई हो तो ऐसा व्यक्ति लेखक (क्लर्क) होता है।

विचारशील योग

चित्र ३२७—यदि हाथ बड़े हों, उंगलियां लम्बी तथा गठीली हों, अंगूठे की गांठ पुष्ट हो तथा सभी उंगलियों के द्वितीय पर्व बड़े हों तो वह व्यक्ति विचारशील होता है तथा प्रत्येक बात के सम्पूर्ण विवरण को जानने का प्रयत्न करता है।
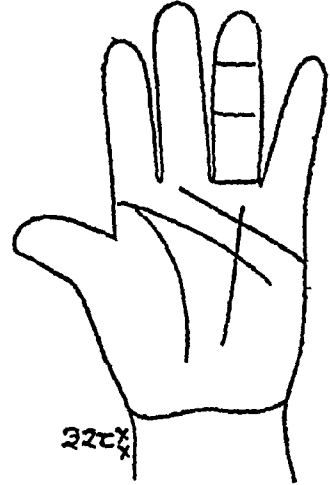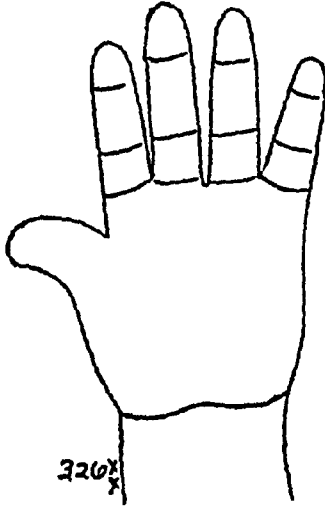
स्वपराक्रमी योग

चित्र ३२८—यदि कनिष्ठा उंगली अनामिका उंगली के तृतीय पर्व का स्पर्श करती हो तथा मंगल-क्षेत्र उच्च हो तो ऐसा व्यक्ति अपने ही पराक्रम से अत्यधिक बलवान होता है तथा अपने प्रत्येक कार्य को पूरा करता है।

भाग्योन्नति कारक-योग

चित्र ३२९—यदि भाग्य-रेखा किसी स्थान पर टूटी हुई हो तथा उस टूटने वाले स्थान से पूर्व ही दूसरी भाग्य-रेखा प्रारंभ हो जाय

तो उस रेखा द्वारा प्राप्त वर्षमान में जातक के भाग्य की पहली स्थिति वदल जाती है तथा भाग्योन्नति कारक दूसरी स्थिति प्रारभ हो जाती है।
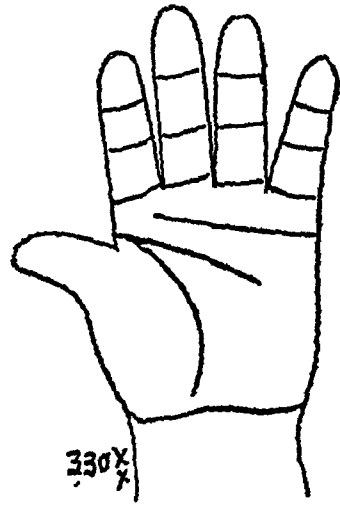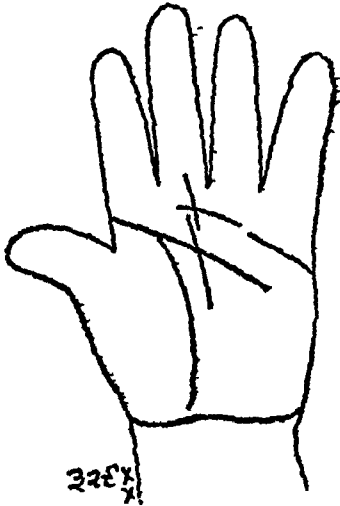
कार्य-सिद्धि योग

चित्र ३३०—यदि हाथ उष्ठा तथा रक्त वर्ण हो और उंगलियों के वीच कोई छिद्र न हो, साथ ही हथेली मांसल हो, नाखून गुलावी रंग के हों तथा उंगलियां वड़ी हों तो ऐसा व्यक्ति अपने प्रत्येक कार्य में सिद्धि प्राप्त करता है।

दीर्घायु-योग

चित्र ३३०—यदि हाथ की सभी उंगलियों के पर्व अलग-अलग हों, उगलियां अरुण वर्ण हों तथा जीवन-रेखा स्पष्ट, लम्बी तथा निर्दोष हो तो ऐसा जातक दीर्घायु प्राप्त करता है।

शान्ति प्रदाता योग

चित्र ३३१—यदि भाग्य-रेखा गुरु तथा शनि-क्षेत्र के मध्य भाग में पूर्ण तथा सुन्दर हो, गुरु का पर्वत उन्नत हो तथा मस्तक रेखा से एक शाखा निकलकर गुरु क्षेत्र पर गई हो तो ऐसा जातक अपना जीवन शान्ति पूर्वक व्यतीत करता है।
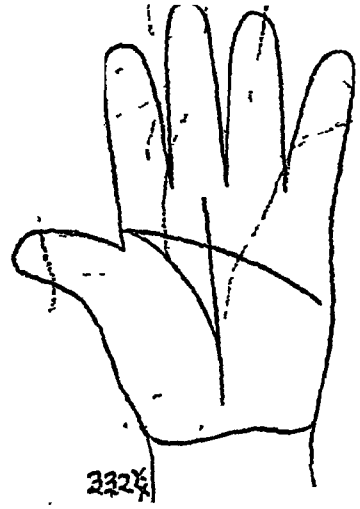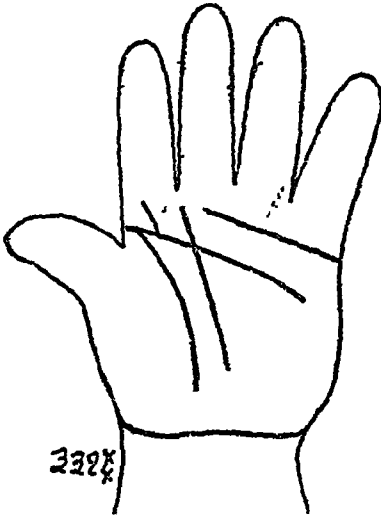
इष्ट साधक योग

चित्र ३३२—मस्तक-रेखा, भाग्य-रेखा तथा जीवन-रेखा के मिलने से बने हुए त्रिकोण को कपि रेखा अथवा हनुमत रेखा कहा जाता है। ऐसी रेखा जिस व्यक्ति के हाथ में हो, वह दुर्गा, काली सरस्वती आदि शक्तियों का साधन करने वाला तथा दृष्टि सिद्धि में सफलता प्राप्त करने वाला होता है।

पतिव्रता योग

चित्र ३३३—जिस स्त्री के हाथ में मंगल रेखा अथवा पर्व में क्रास-चिन्ह हो तथा गुरु का क्षेत्र उन्नत हो, वह पतिव्रता तथा श्रेष्ठ चरित्र वाली होती है।

३३३

३३४
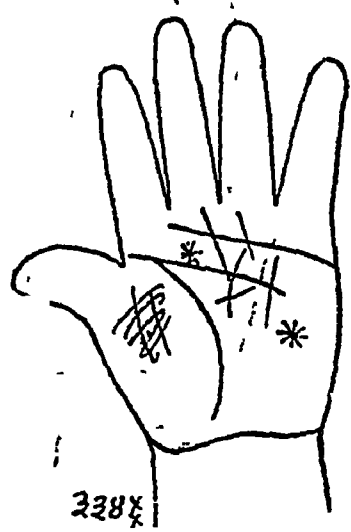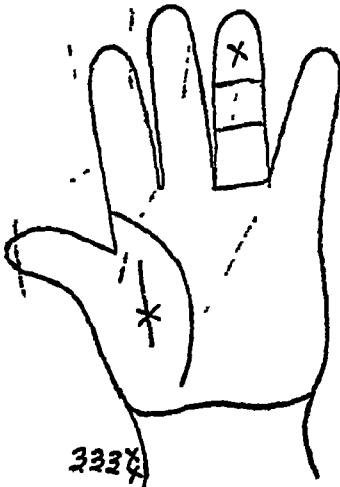
तस्कर योग

चित्र ३३४—यदि हाथ की बनावट निकृष्ट श्रेणी की हो, उंगलियां विशेषकर कनिष्ठा उंगली टेढी हो, बुध क्षेत्र उन्नत हो, हाथ में अधिक रेखाएं तथा नक्षत्र-चिन्ह हो चन्द्र क्षेत्र के नीचे का भाग उठा हुआ हो तथा गुरु क्षेत्र दबा हुआ हो तो ऐसा जातक चोर होता है।

शत्रु वृद्धि योग

चित्र ३३५—मणि बन्ध पर सर्पाकार जैसी एक रेखा होती है। उसे अहि-रेखा कहा जाता है। यह रेखा जिस व्यक्ति के हाथ में हो

उसके शत्रुओं की संख्या बहुत अधिक होती है। यदि इस रेखा के ऊपर चतुष्कोण बना हुआ हो तो जातक अपने शत्रुओं पर विजय पाता रहता है।
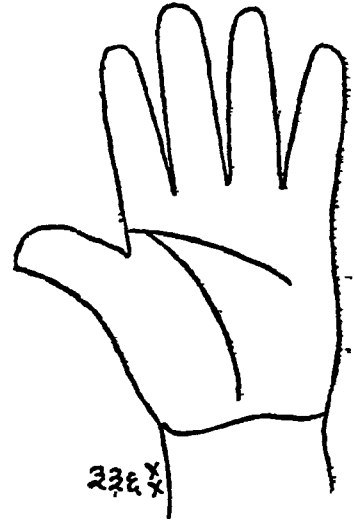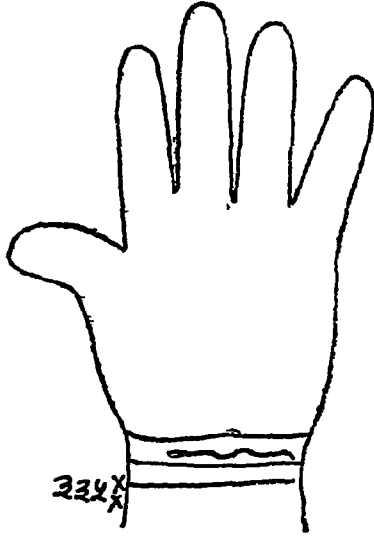
वंचक योग

चित्र ३३६—जिस व्यक्ति की उंगलियों के नाखून छोटे तथा पीले हों, उंगलियां टेढ़ी हों, कनिष्ठा उंगली अनामिका उंगली की ओर झुकी हुई हो तथा हथेली में हृदय-रेखा का सर्वथा अभाव हो वह व्यक्ति वचक (धोखेबाज) होता है।

स्वार्थी योग

चित्र ३३७—यदि हथेली मोटी हो, हथेली का मध्य भाग श्वेत रंग का हो तथा हृदय-रेखा और मस्तक रेखा परस्पर मिली हुई हो तो वह व्यक्ति स्वार्थी होता है।
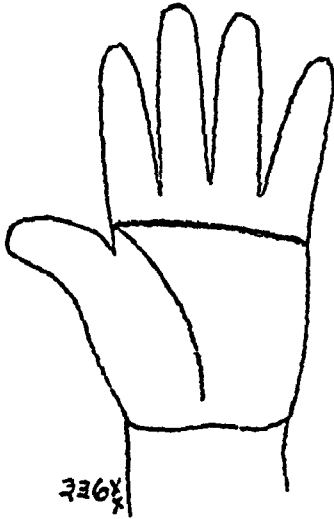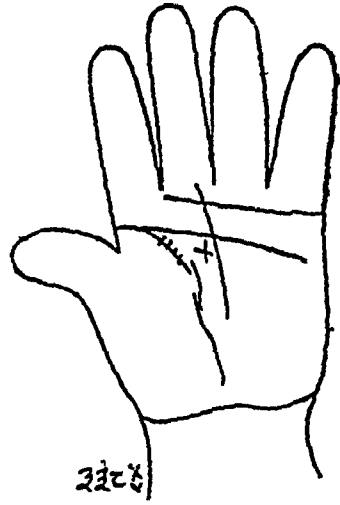
अकाल मृत्यु योग

चित्र ३३८—यदि हथेली में भाग्य-रेखा के समीप तथा जीवन रेखा एव मस्तक-रेखा के बीच क्रास चिन्ह हो तथा जीवन-रेखा भिन्न हो अथवा छोटी-छोटी रेखाओं से कटी हुई हो तो ऐसी रेखा एव चिन्ह वाले व्यक्ति की अकाल-मृत्यु होती है।

चित्र ३३९—यदि मस्तक रेखा मे से उदय होकर एक रेखा गुरु-पर्वत पर स्थित क्रास-चिह्न का स्पर्श करे तो जातक दरिद्र होता है।

चित्र ३४०—यदि मणिवन्ध से दो या तीन रेखाएं उत्पन्न होकर चन्द्र पर्वत पर होती हुई स्वास्थ्य-रेखा में जा मिले तो जातक दरिद्र होता है।
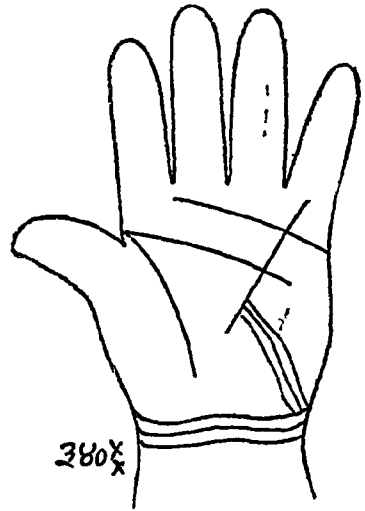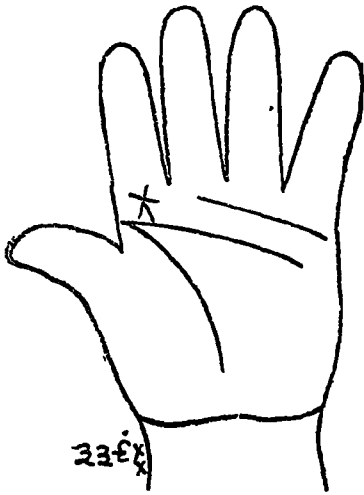
चित्र ३४१—यदि जीवन-रेखा में से बाल के समान महीन-महीन रेखाएं निकलकर नीचे की ओर गई हों तो जातक धन-हीन बना रहता है।
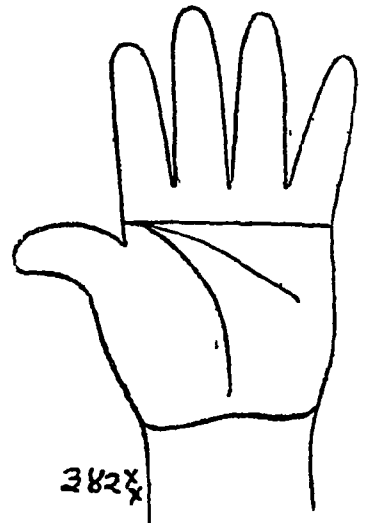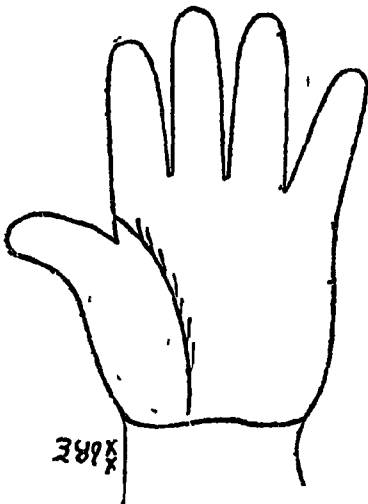
चित्र ३४२—यदि जीवन रेखा से मस्तक-रेखा तथा हृदय-रेखा उत्पन्न होकर चन्द्र पर्वत पर होती हुई स्वास्थ्य-रेखा में जा मिलें तो जातक दरिद्री होता है।

दुर्गुणी योग

(१) यदि हाथ का अंगूठा छोटा हो, उंगलिया लम्बी हों तथा चन्द्रमा का पर्वत उन्नत हो तो एसे मनुष्य को दुर्गणी समझना चाहिए।

चित्र ३४३—यदि बुध का पर्वत अन्य पर्वतों की अपेक्षा अधिक उन्नत हो तथा उसके ऊपर जाल-चिन्ह हो तो ऐसे जातक को दुर्गुणी समझना चाहिए।
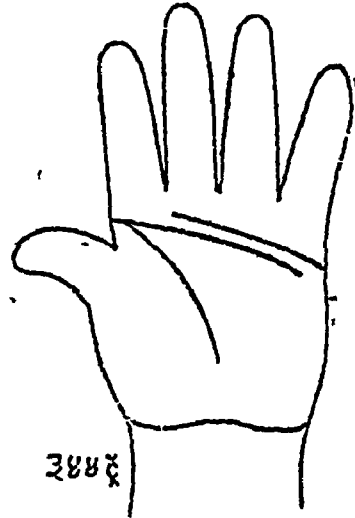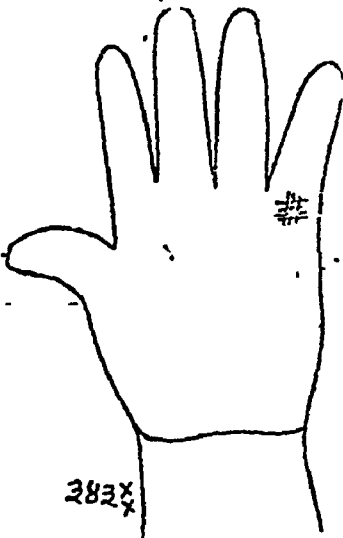
चित्र ३४४—यदि मस्तक-रेखा तथा हृदय-रेखा के बीच का अन्तर बहुत कम हो जिसके कारण बृहद चतुष्कोण बहुत छोटा रह गया हो तथा बुध का पर्वत अधिक उन्नत हो तो ऐसे जातक को दुर्गुणी एव विश्वास न करने योग्य समझना चाहिए।

दारिद्रय योग

चित्र ३४५—यदि भाग्य-रेखा शृंखलाकार हो तो जातक दरिद्र बना रहता है।
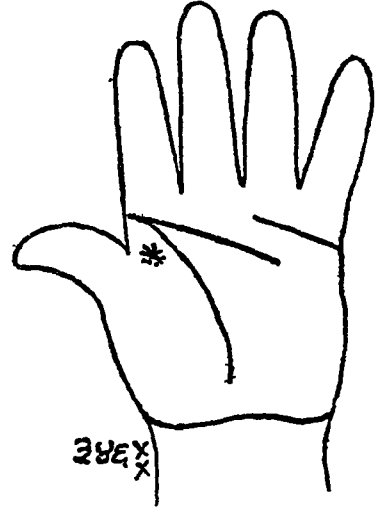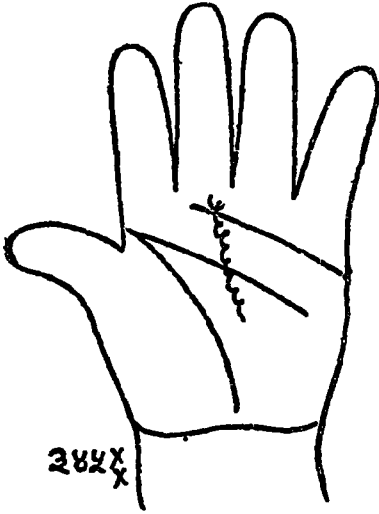
चित्र ३४६—यदि मंगल के पर्वत पर फुली (नक्षत्र) जैसा चिह्न हो, तो जातक के धन का कोई अन्य व्यक्ति अपहरण कर लेता है, जिसके कारण जातक दरिद्र हो जाता है।

चित्र ३४७—यदि जीवन-रेखा तथा भाग्य-रेखा के प्रारंभ में नक्षत्र जैसा चिन्ह हो तो जातक बाल्यावस्था से ही दरिद्रता के संकट में घिरा रहता है।

चित्र ३४७—यदि शुक्र के पर्वत पर नक्षत्र-चिन्ह हो तथा अंगूठे के दूसरे पर्व पर भी नक्षत्र चिन्ह हो तो जातक को अपनी अथवा किसी अन्य स्त्री के कारण कष्ट तथा धन की हानि उठानी पड़ती है, जिसके कारण वह दरिद्र हो जाता है।
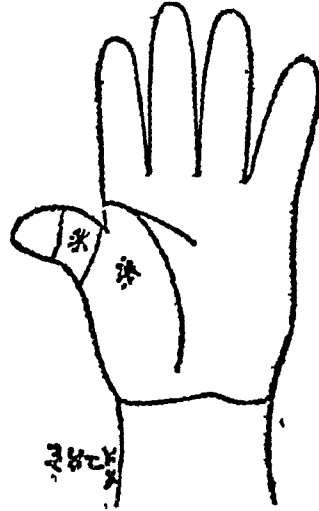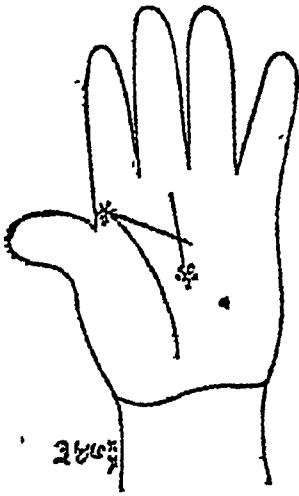
पद प्राप्ति योग

चित्र ३४९—अंगूठे के मूल भाग से निकलकर जीवन-रेखा के बीच मे जो टेढ़ी रेखा हो उसे पद-प्राप्ति कराने वाली रेखा समझना
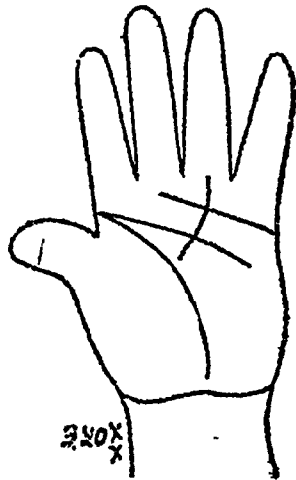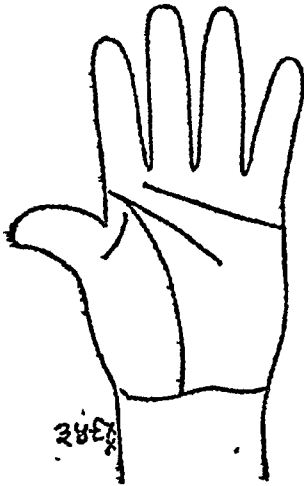
चाहिए। यदि उसी स्थान पर कोई दूसरी रेखा भी हो तो उसे विद्या-दायक रेखा समझना चाहिए।

चित्र ३५०—कुछ विद्वानों के मतानुसार अनामिका उंगली के मूल से जो टेढी रेखा निकलकर जीवन रेखा की ओर जाती हुई दिखाई दे; उसे पद देने वाली रेखा समझना चाहिए।

पराई उन्नति न चाहने वाले का योग

चित्र ३५१—जिस व्यक्ति के हाथ में चन्द्रमा का पर्वत दबा हुआ हो तथा शनि का पर्वत ऊंचा उठा हुआ हो, वह दूसरे व्यक्ति की उन्नति नही चाहता अर्थात् दूसरों को देखकर दुःखी होता है। ऐसा व्यक्ति अन्य सब लोगों की बुरी बातों पर ही दृष्टि रखता है।
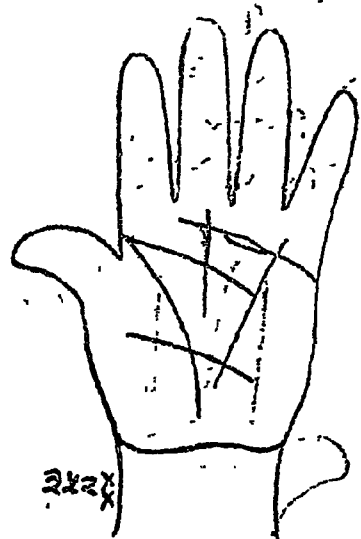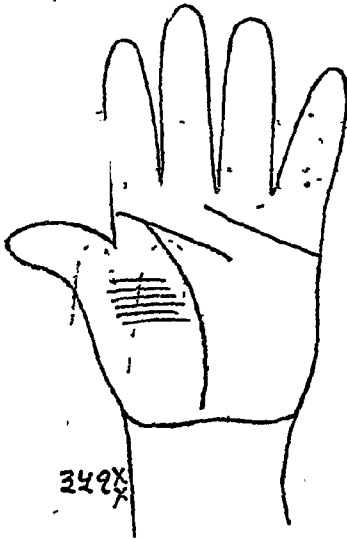
प्रेम-सम्बन्धी योग

चित्र ३५१—(१) यदि शुक्र-स्थान पर आड़ी रेखाएं तो हों, परन्तु वे जीवन रेखा का स्पर्श न कर रही हों तथा चन्द्रक्षेत्र पर होकर

कोई प्राभाविक रेखा भाग्य रेखा से न मिल रही हो तो ऐसे व्यक्ति का विवाह नही होता वह किसी परस्त्री से प्रेम करता है, जिसके कारण वह सकट एवं चिन्ताग्रस्त बना रहता है।

चित्र ३५२—(२) जिसके दोनों हाथों में हृदय रेखा के ऊपर द्वीप-चिह्न हो तथा शुक्र रेखा स्वास्थ रेखा को काटती हुई ऊपर जा रही हो तो ऐसे जातक का निश्चित रूप से किसी से अवैध प्रेम सम्वन्ध होता है।

चित्र ३५३—(३) हृदय रेखा अथवा बुध क्षेत्र के नीचे द्वीप चिन्ह हो तथा शुक्र रेखा बुध क्षेत्र पर जा रही हो तो ऐसे जातक का अवैध प्रेम सम्वन्ध अपने किसी निकट की रिश्तेदार स्त्री के साथ होता है।
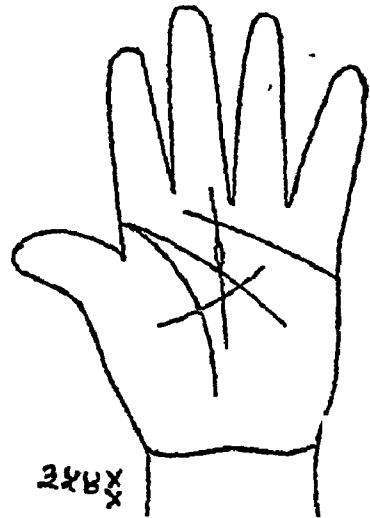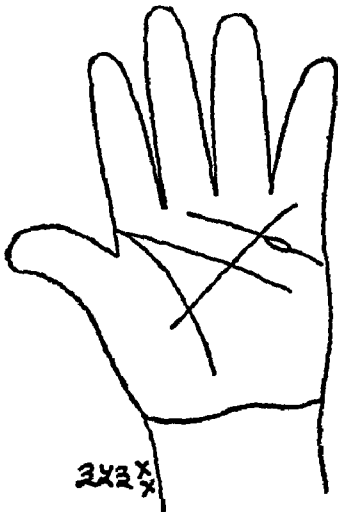
चित्र ३५४—(४) यदि दोनों हाथों में भाग्य रेखा पर द्वीप चिह्न हो तथा शुक्र क्षेत्रीय रेखा जीवन रेखा तथा भाग्य रेखा को

काटती हुई आगे निकल जाय तो ऐसी रेखा वाला जातक किसी विप- रीत लिंगी द्वारा आकर्षित किया जाता है और उसके ऊपर व्य- भिचार का आरोप लगता है।

चित्र ३५५—(५) यदि हाथ की उंगलियों के तृतीय पर्व में यव चिह्न हो तथा दूसरे पर्व के बीच में भी यव चिह्न हो तो ऐसा जातक विषयी दुराचारी तथा विद्याहीन होता है और उसकी मृत्यु पानी में डूबकर होती है।
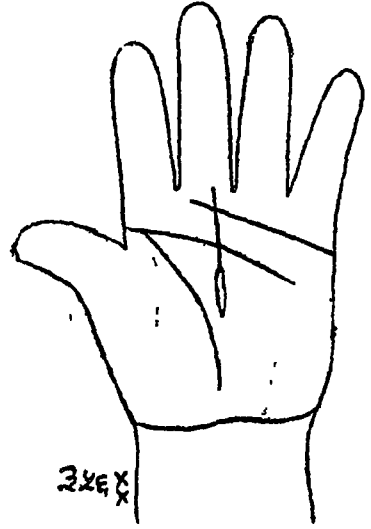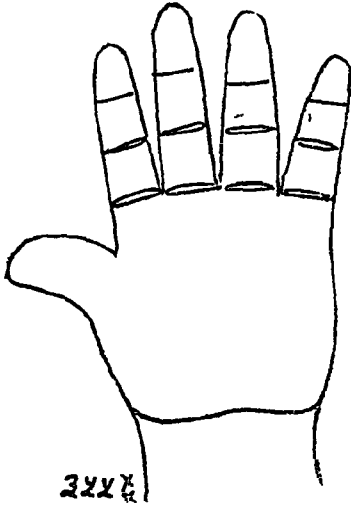
अनाथ योग

चित्र ३५६—यदि भाग्य रेखा के प्रारम्भ में त्रिकोण अथवा द्वीप चिह्न हो तो ऐसे जातक के माता पिता की मृत्यु बाल्यावस्था में ही हो जाती है।

सम्पत्ति नाश योग

चित्र ३५७—यदि दोनों हाथों में दोनों मंगल क्षेत्रों पर काला दाग अथवा तिल चिह्न हो अथवा वह बिन्दु चिह्न राहु-रेखा का स्पर्श कर रहा
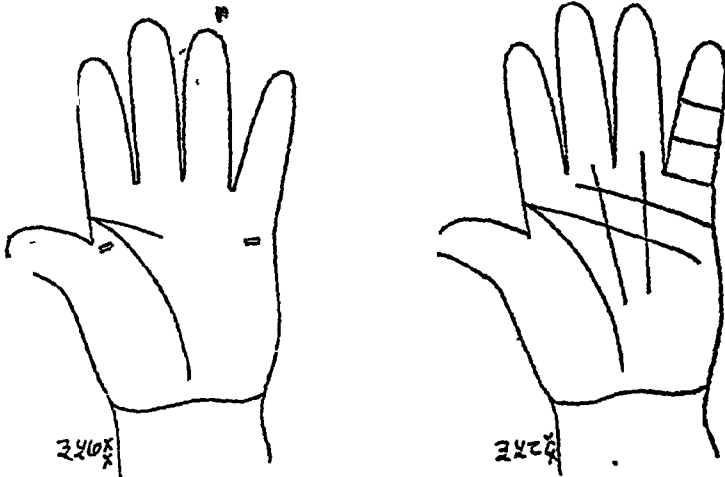
हो, तो ऐसे जातक की सम्पति मुकदमेबाजी में नष्ट हो जाती है।

व्यवसायी योग

चित्र ३५८—(१) जिसका अंगूठा लम्बा हो, मस्तक रेखा स्पष्ट, सुन्दर तथा निर्दोष हो भाग्य-रेखा तथा सूर्य-रेखा अच्छी स्थिति में हो, कनिष्ठा उगली लम्बी हो तथा उसका पहला पर्व पतला और लम्बा हो और बुध का क्षेत्र उन्नत तथा शुभ हो तो ऐसा व्यक्ति व्यवसायी होता है।

चित्र ३५६—(२) जिसके हाथ में पूर्वोक्त सभी लक्षण तो हो साथ ही भाग्य-रेखा अथवा मस्तक रेखा से एक शाखा रेखा निकल कर स्पष्ट तथा निर्दोष रूप में बुध क्षेत्र पर जाती हो तथा उगलियो की लम्बाई हथेली से अधिक हो तो ऐसा व्यक्ति उच्चकोटि का सफल व्यापारी होता है।

मुनीमी योग

चित्र ३६०—(१) यदि बुध का क्षेत्र उन्नत तथा शुभ हो, कनिष्ठा उगली तथा मध्यमा उगली के मध्य पर्व अन्य पर्वो की
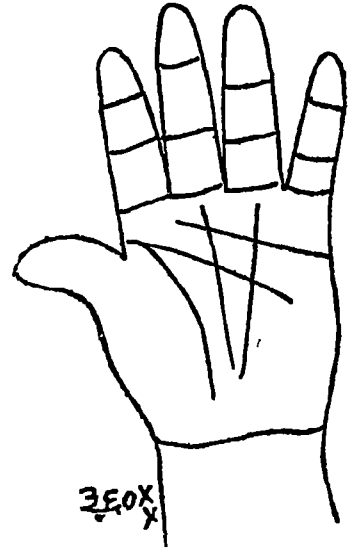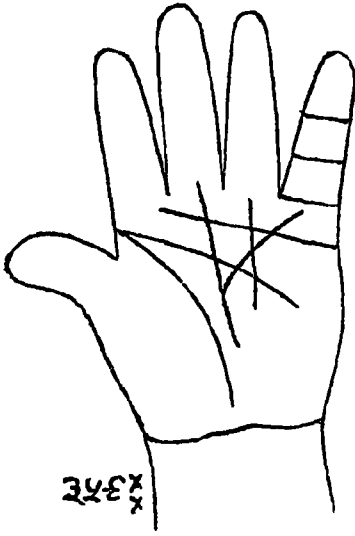
अपेक्षा अधिक लम्बे-चौड़े हों, अंगूठा खूब पुष्ट हो, सूर्य-रेखा बहुत लम्बी हो तथा निर्दोष रूप में सूर्य-क्षेत्र पर पहुच रही हो साथ ही भाग्य-रेखा भी निर्दोष स्थिति में शनि क्षेत्र पर पहुंच रही हो तो ऐसे लक्षणों वाला व्यक्ति मुनीम अथवा अकाउन्टेन्ट होता है।

चित्र ३६१—(२) यदि उक्त लक्षणों के अतिरिक्त जातक के हाथों में एक स्पष्ट तथा सुन्दर चन्द्र क्षेत्र से निकली हुई प्रभाव रेखा स्पष्ट रूप से भाग्य-रेखा की सहायक हो तो ऐसे लक्षणों वाला व्यक्ति बहुत बड़ा अकाउन्टेन्ट अथवा मुनीम होता है तथा फर्म में उच्च पद एवं सम्मान प्राप्त करता है।

कलाकार योग

चित्र ३६२—(१) जिस जातक के हाथों की उंगलिया विशेष रूप से लम्बी तथा उतार चढ़ाव पूर्ण (ढलवां) उनमें गाठे उभरी हुई हों तथा उनके पहले पर्व नुकीले हों, चन्द्र क्षेत्र कुछ उन्नत तथा कठोर

हो, सूर्य-क्षेत्र सुन्दर तथा शुभ हो और उस पर निर्दोष स्पष्ट तथा सुन्दर सूर्य-रेखा विद्यमान हो तो ऐसा व्यक्ति कलाकार होता है।
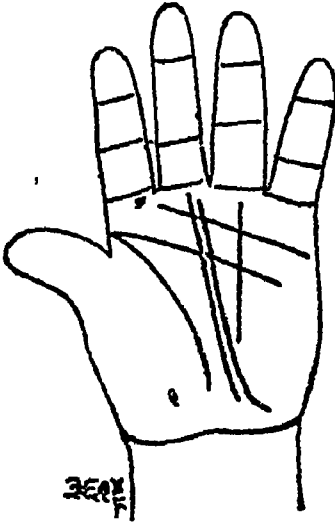
चित्र ३६३—(२) जिस व्यक्ति के हाथ में उपर्युक्त लक्षणों के अतिरिक्त चन्द्र क्षेत्र से निकली हुई कोई प्रभाव-रेखा स्पष्ट रूप से मस्तक-रेखा की सहायता कर रही हो वह व्यक्ति अपनी कला-कृतियों के लिए विशेष रूप से सम्मानित होता है तथा पुरस्कार प्राप्त करता है।

चित्र ३६४—(३) उपर्युक्त लक्षणो के अतिरिक्त यदि शुक्र-क्षेत्र पर शुक्र चिह्न स्पष्ट रूप से अंकित हो तथा सूर्य रेखा पर नक्षत्र-चिह्न भी हो तो ऐसा व्यक्ति रंग विरंगी नवीन प्रकार की कला-कृतियों को जन्म देने वाला होता है और उसके कारण उसे अत्यधिक यश प्राप्त होता है।
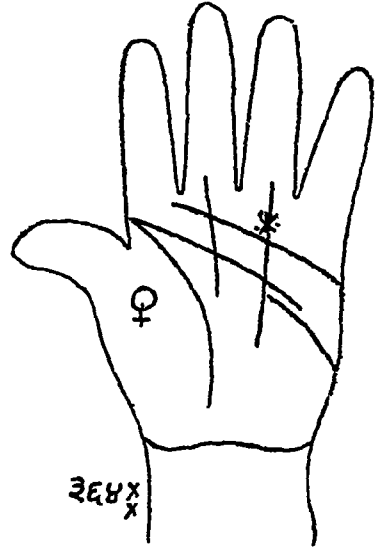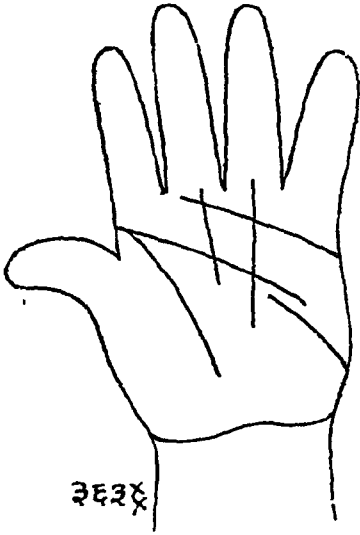
संगतराश योग

चित्र ३६५—जिस व्यक्ति के हाथ में रेखाए बहुत कम हों, हथेली अत्यन्त दृढ़ हो उंगलियां अच्छी तथा चौड़ी हों, मंगल, शुक्र तथा चन्द्र के पर्वत उन्नत हों, हथेली अधिक चौड़ी विस्तृत तथा मजबूत हो तो ऐसा व्यक्ति कुशल सगतराश (पत्थर को मूर्तियां आदि बनाने वाला) होता है।

कवि लेखक योग

चित्र ३६६—कवि लेखक का हाथ साहित्यकार के हाथ से मिलता-जुलता है, उसमें केवल इतनी ही विशेषता होती है कि उसकी कनिष्ठा उ गली अनामिका उंगली के तृतीय पर्व स्थित नाखुन तक पंहुंचती है, उसका ऊपरी पर्व विशेषरूप से लम्बा तथा नुकीला होता है। गुरु, चन्द्र तथा शुक्र के पर्वत विशेष रूप से शुभ तथा उन्नत होते है। वरूण क्षेत्र (चन्द्रक्षेत्र के निचला भाग) से निकलने वाली कोई प्रभा-

वित रेखा भाग्य-रेखा की सहायक होती है, सूर्य रेखा मस्तक-रेखा से निकलकर शुभ सूर्य-क्षेत्र पर पहुंचती है तथा सूर्य रेखा पर नक्षत्र चिन्ह अङ्कित होता है जिस जातक के हाथ में ये सभी लक्षण पाये जायं वह अपने समय का अत्यन्त प्रसिद्ध कवि अथवा लेखक होता है।
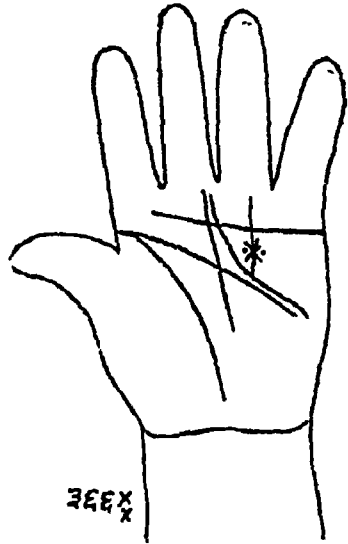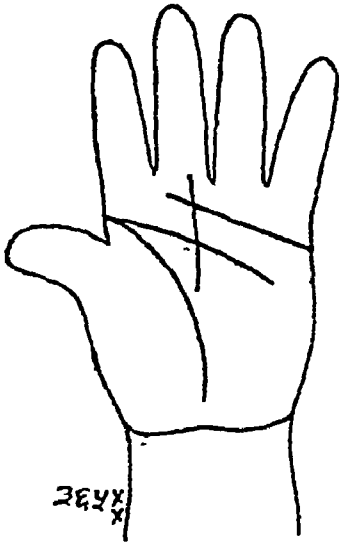
अन्य रेखाओ तथा लक्षणो के प्रभाव से भी लोग कवि अथवा लेखक होते है, उनका वर्णन यथास्थान पर किया जा चुका है।

वैज्ञानिक योग

चित्र ३६७—जिस व्यक्ति के हाथ की सभी उंगलिया लम्बी हों तथा उनकी गाठें उन्नत हों तथा आगे से कुछ टेढी हो, बुध क्षेत्र पर चार-पाच छोटी-छोटी स्पष्ट सुन्दर खड़ी रेखाएं हो, प्रजापति का क्षेत्र निर्दोष तथा उभरा हुआ हो सूर्य-रेखा स्पष्ट तथा निर्दोष स्थिति में प्रजापति क्षेत्र से निकल कर सूर्य-क्षेत्र पर समाप्त हुई हो, हाथ की बनावट शुभ, दृढ तथा लम्बी हो, साथ ही भाग्य-रेखा

लम्बी तथा निर्दोष हो तो ऐसा व्यक्ति सफल वैज्ञानिक तथा नवीन आविष्कारों को करने वाला प्रसिद्ध पुरुष होता है।
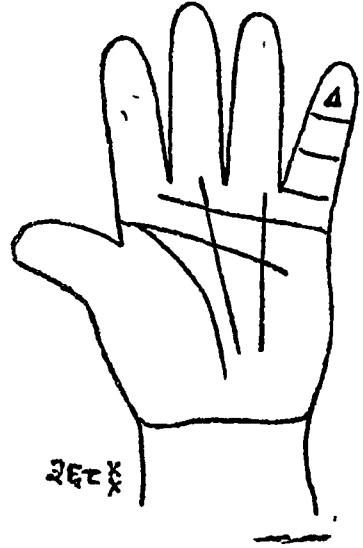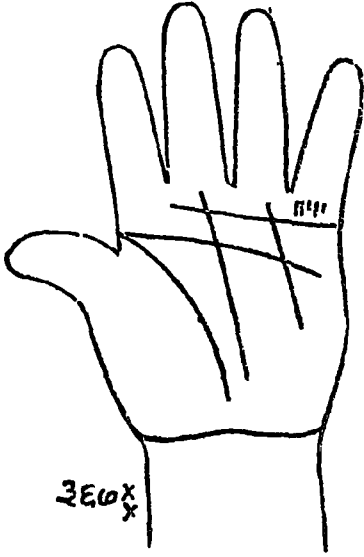
गुप्तचर योग

चित्र ३६८—(१) जिस व्यक्ति के हाथ में शनि तथा बुध क्षेत्र बहुत दबे हुए हों, भाग्य रेखा तथा सूर्य रेखा लम्बी गहरी तथा गुलावी रग की हो, मंगल क्षेत्र शुभ हो, कनिष्ठा उंगली के प्रथम पर्व पर त्रिभुज चिन्ह अथवा जाल चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति गुप्तचर अथवा जासूस होता है।

चित्र ३६९—(२) उपर्युक्त लक्षणों के अतिरिक्त जिस व्यक्ति की हथेली में मस्तक रेखा की सहायता से भाग्य-रेखा पर कोई छोटा सा त्रिभुज चिन्ह भी बनता हो तो ऐसा व्यक्ति रहस्यपूर्ण भेदों का पता लगाने में अत्यन्त कुशल होता है। वह गुप्तचर विभाग में उच्च पद प्राप्त करता है तथा उसे यश, सम्मान एवं पुरस्कारों की प्राप्ति निरन्तर होती रहती है।
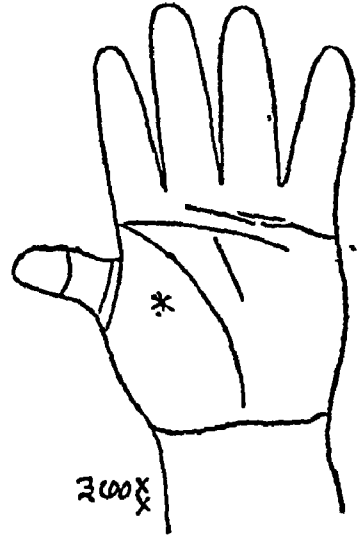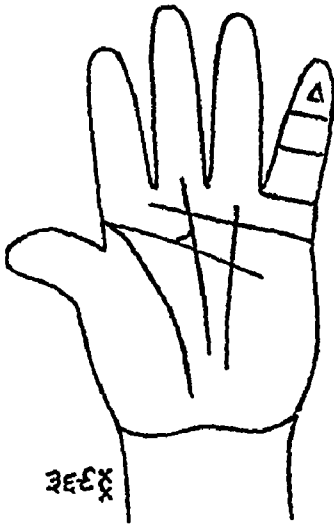
कामी पुरुष योग

चित्र ३७०—(१) जिस व्यक्ति का हाथ कोमल हो, चन्द्र क्षेत्र तथा शुक्र क्षेत्र उभरे हुए विस्तीर्ण गुदगुदे तथा अशुभ हों अंगूठे का मध्म पर्व लम्वा तथा पतला हो, हृदय रेखा टूटी हुई तथा द्वीप चिन्ह युक्त हो और वह मस्तक रेखा के अत्यन्त समीप भी हो, साथ ही शुक्र क्षेत्र पर नक्षत्र चिन्ह भी हो तो जातक वहुत कामी होता हैं उसका अनेक स्त्रियों से सम्वन्ध होता है। फिर भी उसकी वासना तुष्ट नही हो पाती।

चित्र ३७१—(२) उपर्युक्त लक्षणों के अतिरिक्त जिस व्यक्ति की हृदय-रेखा मध्यमा अथवा तर्जनी उंगली के वन्ध पर समाप्त होती हो अथवा चन्द्र क्षेत्र से आरम्भ होने वाली भाग्य-रेखा से निकल कर कोई प्रभाव-रेखा अर्द्धचन्द्रकार रूप में सम्पूर्ण चन्द्र क्षेत्र को घेरे हुए हो तो ऐसा व्यक्ति निकृष्ट कोटि का कामी, अश्लील शब्दों का प्रयोग करने वाला, अपयशी तथा लोक-निन्दत होता है।
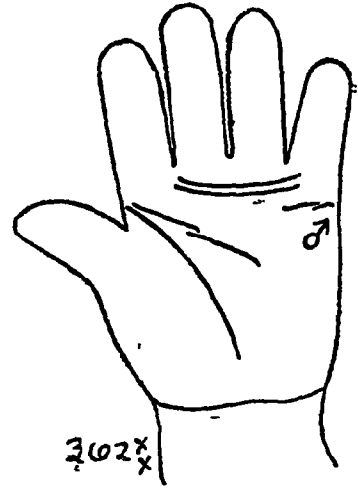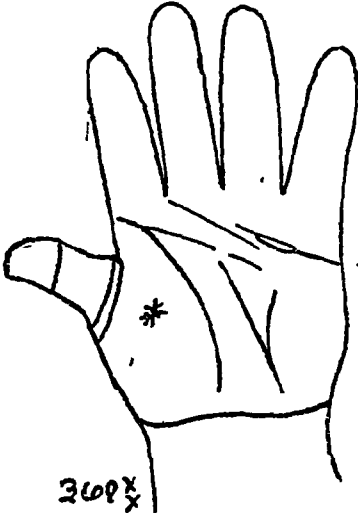
हिंसक योग

चित्र ३७२—जिस व्यक्ति के दाएं हाथ की बनावट निकृष्ट कोटि की हो, हथेली पर हृदय-रेखा का अभाव हो अथवा हृदय-रेखा दोष पूर्ण हो, हाथ में एक अथवा दुहरी शुक्र-मुद्रिका अशुभ शनि क्षेत्र पर स्थित हो, सम्पूर्ण हाथ अत्यन्त कठोर हो अंगूठा अत्यधिक कठोर तथा स्तभ की भांति खड़ा हो, उंगलियां छोटी-छोटी तथा मोटी हों तथा अशुभ मंगल क्षेत्र पर मगल का चिन्ह भी अंकित हो तो ऐसा व्यक्ति हिंसक प्रवृत्ति का नृशस एवं नर हत्यारा होता है। ऐसे हत्यारे व्यक्ति के हाथ की विशेष बनावट को चित्र ३७२ में प्रदर्शित किया गया है।
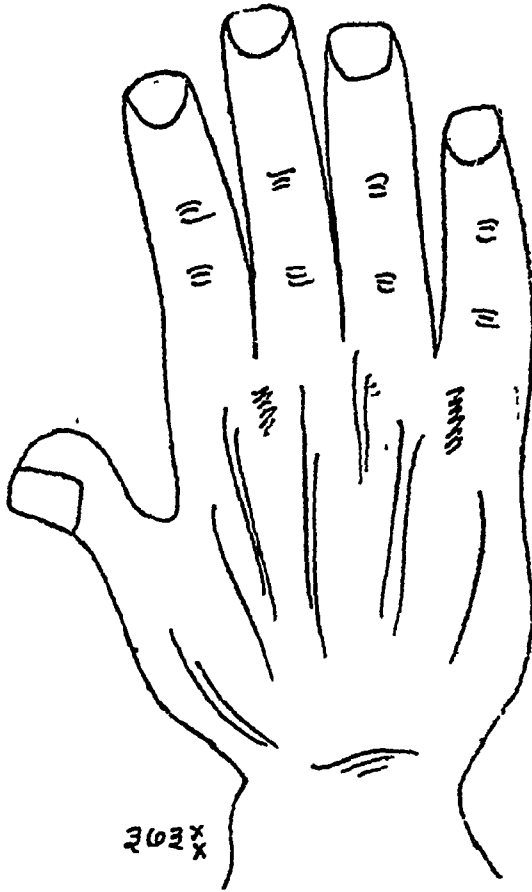
[हत्यारे व्यक्ति के हाथ की विशेष बनावट।]

सेनापति योग

चित्र ३७४—जिस व्यक्ति के हाथ की उंगलिया सामान्यतः चतुष्कोण तथा हाथी की सूंड़ के समान उतार-चढ़ाव वाली हों, गुरु, शुक्र तथा मंगल के पर्वत उन्नत पुष्ट तथा मनोहर हों अथवा त्रिकोण युक्त हों, जीवन-रेखा, भाग्य-रेखा, हृदय-रेखा तथा मस्तक-रेखा के अतिरिक्त सूर्य-रेखा भी प्रबल, पुष्ट तथा सुन्दर हो, वह पुरुष सेनापति होता है।
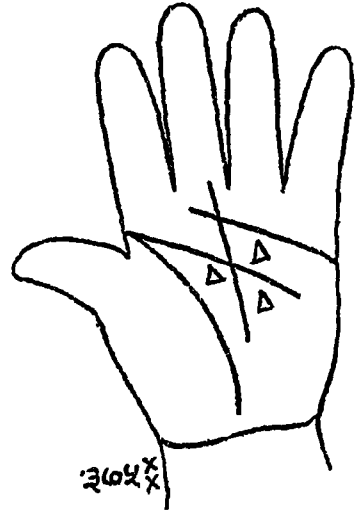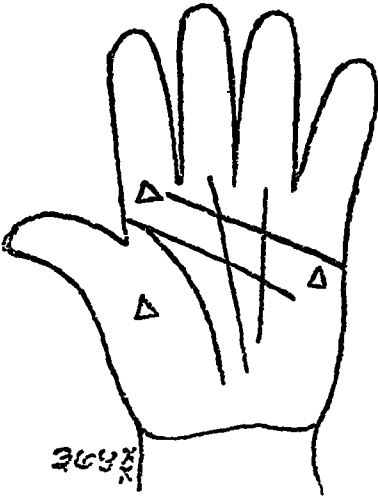
सामुद्रिक योग

चित्र ३७५—जिस व्यक्ति के हाथ की उंगलियां चौकोर लम्बे पर्व वाली तथा पुष्ट हों, बुध तथा शनि के पर्वत उन्नत तथा सुन्दर हों, चन्द्र तथा सूर्य के पर्वत दोष रहित हों, भाग्य-रेखा तथा हृदय-रेखा सबल हो तथा शुभ हथेली पर दो-तीन त्रिकोण चिन्ह भी हों ऐसा व्यक्ति सामुद्रिक शास्त्र का जानकार होता है।

अनायास धन प्राप्ति का योग

चित्र ३७५—यदि चन्द्र क्षेत्र से एक लाल रग की रेखा टेढी हो कर बुध क्षेत्र पर पहुंचे तो जातक को अनायास ही किसी स्थान से अथवा लाटरी, सट्टे, रेस आदि से अथवा पृथ्वी में गड़े हुए धन की प्राप्ति होती है।

३७६ ३७७
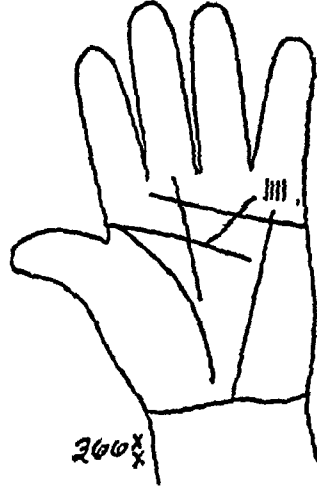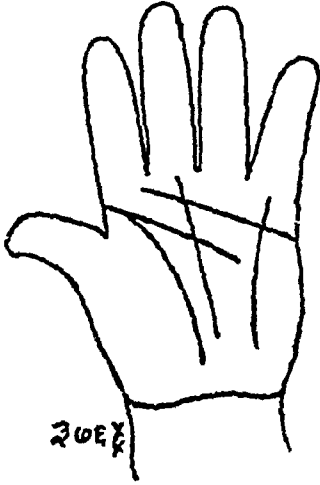
व्यवसाय द्वारा धन-प्राप्ति का योग

चित्र ३७७—बुध क्षेत्र उन्नत, पुष्ट तथा मनोहर हो और उस पर छोटी-छोटी सीधी रेखाए हों, कनिष्ठा उंगली गठीली तथा छोटी हो, मणिवन्ध से एक रेखा उठकर बुध क्षेत्र तक गई हो तथा मस्तक-रेखा से भी एक शाखा रेखा निकलकर बुध क्षेत्र पर गई हो तो ऐसे लक्षणों वाले व्यक्ति को व्यवसाय द्वारा अत्यधिक धन की प्राप्ति होती है।

जल यात्रा द्वारा धन प्राप्ति का योग

चित्र ३७८—यदि मणिबन्ध से कोई रेखा निकलकर मस्तक रेखा के समीप तक जा पहुचे, परन्तु उसका स्पर्श न करे तो जातक को जल यात्रा द्वारा विशेष धन का लाभ होता है।
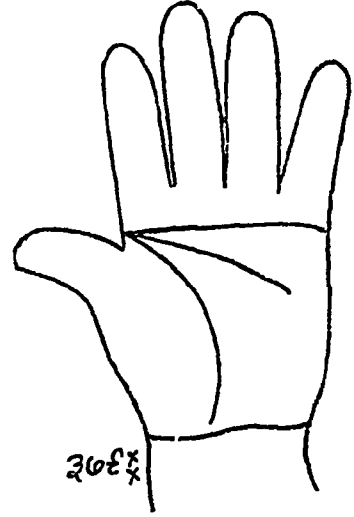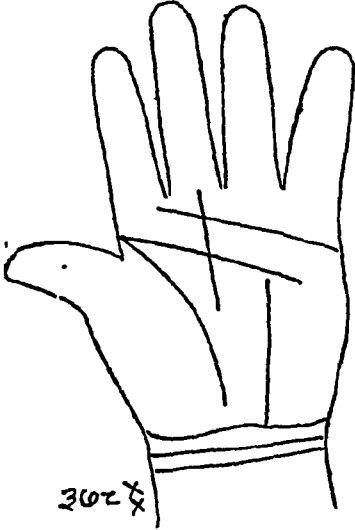
आत्म-हत्या योग

चित्र ३७९—जिस व्यक्ति के हाथ में मगल क्षेत्र पर हृदय रेखा, मस्तक रेखा तीनों ही एक साथ मिल गई हों वह आत्माहत्या कर लेता है।

आवश्यक टिप्पणी—(१) ऊपर जो योग वताये गए हैं, वे यदि दोनों हाथों में एक से मिलते हों, तभी अपना पूर्ण प्रभाव प्रकट करते है। यदि कोई रेखा दाएं हाथ की अपेक्षा वाए हाथ में कम हो अथवा न हो तो उस स्थिति में फलादेश आधे से कुछ ही अधिक ठीक वैठता है। इसी प्रकार यदि वाएं हाथ में कोई विशेष रेखा हो, परन्तु दाएं

हाथ में न हो तो फलादेश आधे से कुछ कम ठीक बैठता है।

(१) यदि अगूठे और उगलियो की बनावट शुभ हो तो भी उनके कारण रेखाओं का प्रभाव पूर्णतः नष्ट नही हो जाता अपितु उनमें कुछ कमी अवश्य आ जाती है।

(३) हथेली पर पाई जाने वाली मुख्य रेखाओं, हस्त-चिन्ह तथा ग्रह क्षेत्रो की अवस्थिति को चित्र सख्या ३८०, ३८१ तथा ३८२ में प्रदर्शित किया गया है।

रोजगार-धन्धे का चुनाव

यदि माता-पिता को प्रारंभ में ही यह पता चल सके कि उसकी सतान किस काम को भली भाति करने के योग्य बन सकती है तो वे उसी के अनुसार उसकी शिक्षा-दीक्षा आरभ करके उसका तथा अपना बहुमूल्य समय नष्ट होने से बचा सकते है।

जो बच्चे आरभ में अपनी व्यवसायिक रुचि अथवा कला, सगीत, अनुसधान आदि की ओर सम्मान प्रकट करने लगते हैं, उनके लिए उपर्युक्त शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध करना अथवा योग्य धन्धे का चुनाव करना सहज होता है, परन्तु जो बालक किसी विशेष उद्योग अथवा कला आदि की ओर अपनी रुचि प्रकट न करे तो उनके हाथ की परीक्षा करके उपयुक्त शिक्षा-दीक्षा अथवा धन्धे का चुनाव करना चाहिए।

नीचे हाथ के उन लक्षणो को दिया जा रहा है, जिनके द्वारा बालक की विभिन्न विषयो अथवा क्षेत्रों में स्वाभाविक रुचि, शक्ति तथा उपयोगिता की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।
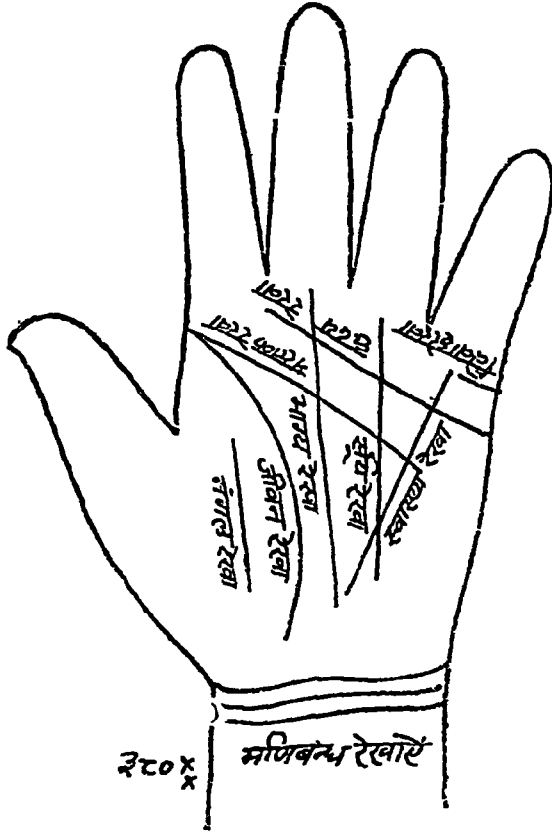
(हथेली पर पाई जाने वाली मुख्य रेखाएं)

यदि बालक की हथेली चौड़ी तथा दृढ़ रेखाओं से रहित हो, हाथ की उंगलियां चौड़ी तथा एक दूसरे से दूर हों, उनके सिरे गोल पतले, चपटे अथवा चौकोर हों तो उसका पढ़ने-लिखने में मन नही लगता। ऐसा लड़का खुली हवा में भ्रमण तथा यात्राएं करना पसद करता है। ऐसे बालक पढ़ लिखकर किसी कार्यालय में वैठ कर काम करने में असमर्थ रहते हैं। इसके विपरीत वे कुशल मल्लाह, सैनिक इन्जीनियर अथवा कृषक वन सकते हैं। वे ऐसे अन्य कार्य भी कर

सकते हैं। जिनमें मानसिक श्रम के साथ ही शारीरिक परिश्रम भी अधिक करना पड़ता है।

(२) जिस बालक की हथेली संकुचित हो तथा उगलिया एक दूसरे के समीप, लम्बी नुकीली तथा कोणदार हो तो वह धैर्यवान एवं कष्ट सहिष्णु होता है। उसे घर में अथवा एकात स्थान में बैठ कर काम करना अच्छा लगता है। ऐसे बालक अपने काम को बांट कर उसे शांत भाव से लग्न के साथ किया करते है।
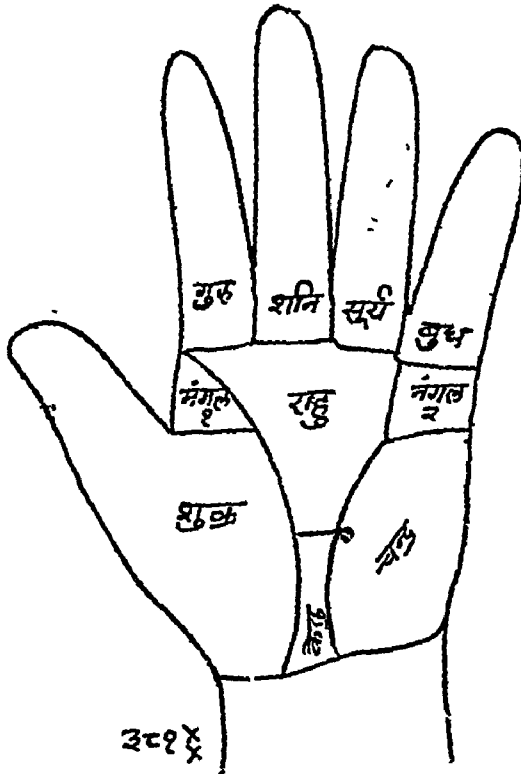
[हथेली मे विभिन्न ग्रह क्षेत्रो की अवस्थिति]
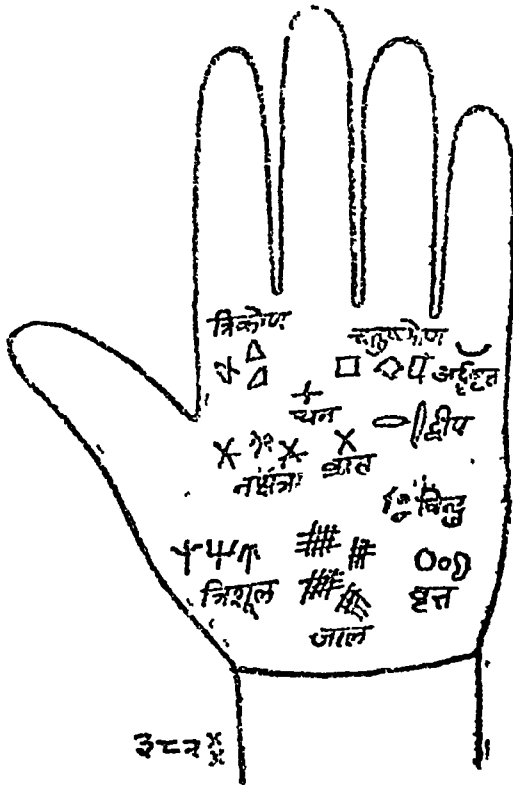
[हथेली पर पाये जाने वाले विविध प्रकार के हस्त-चिन्ह]

(३) जिस बालक के हाथ का अंगूठा दृढ़ हो, कनिष्टा उंगली सोधी, गोल, चपटी तथा पतली हो, उगलियों के नाखून बड़े हों तथा मस्तक रेखा सीधी हो, उसमें व्यवसाय करने को योग्यता रहती है। यदि सभी उगलियां समधरातल मे हों और सूर्य-रेखा तथा भाग्य रेखा अच्छो हों तो ऐसा बालक व्यवसाय के क्षेत्र में अत्यधिक सफलता प्राप्त करता है।

(४) जिस वालक के हाथ में मध्यमा उगली लम्बी हो तथा शनि का पर्वत ऊंचा तथा वड़ा हो, उसमें उन्नति करने की इच्छा कम पाई जाती है ऐसे वालक एकात सेवी होते है। उन्हें भीड़ में रहना अच्छा नही लगता। ऐसे लक्षणों वाले वालक कृषि अथवा पान, जमीन-जायदाद का प्रवन्ध, खान आदि की व्यवस्था, नवीन देशों की सैर, गणित तथा आविष्कार के कार्यों में अधिक रुचि लेते हैं और उनमें सफलता प्राप्त कर सकते हैं। वे चाय काफी आदि की खेती को व्यवस्था करने में भी कुशल होते हैं।
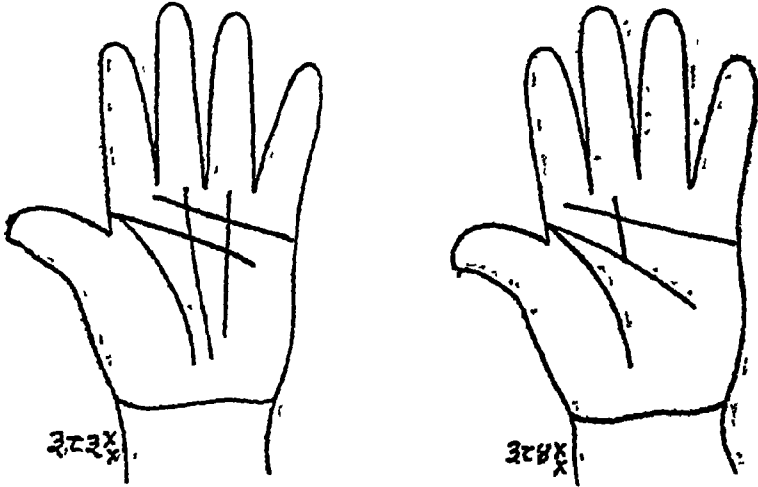
(५) जिस वालक के हाथ में गुरु का पर्वत उन्नत हो तथा तर्जनी उंगली लम्बी हो, वह नेतृत्व करना पसन्द करता है। वह जनसमुदाय में रहना चाहता है। अकेले रहते समय उसका जी घवराता है। ऐसे लक्षण वाले वालक राजनीति अथवा नेतृत्व के अन्य क्षेत्रों में सफल होते हैं। वे पाठशाला, देवालय, मंदिर तथा सामाजिक संस्थाओं के प्रबंध एव सञ्चालन-कार्यों में प्रवीण होते है। मन्त्री, सेनापति राजदूत

आदि का पद प्राप्त होने पर वे उत्तरदायित्वों का कुशलता पूर्वक निर्वाह कर सकते है।

चित्र ३८४—(६) जिस बालक की हथेली में सूर्य का पर्वत अधिक उन्नत हो तथा अनामिका उगली अधिक पुष्ट तथा लम्बी हो, वह साहित्य, शिल्प, अभिनय एवं चिकित्सा के क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है। यदि मस्तक रेखा लम्बी, गहरी तथा निर्दोष हो तो ऐसा व्यक्ति साहित्य के द्वारा अपनी आजीविका का उपार्जन करता है।

(७) जिस बालक के हाथ में मगल के दोनों क्षेत्र उन्नत तथा प्रधान हों, तो अच्छा सैनिक, मल्लाह शिकारी, पशु-चिकित्सक अथवा इंजीनीयर हो सकता है। ऐसा बालक समुद्र-यात्रा. घुडसवारी तथा वाहनों का संचालन (ड्राइवरी) आदि के कार्यो में भी सफलता प्राप्त करता है।

(८) जिस बालक की हथेली में बुध का पर्वत उन्नत हो, तथा कनिष्ठा उंगली अच्छी तथा लम्बी हो, वह प्रत्येक कार्य के लिए उपयुंक्त सिद्ध हो सकता है ऐसे बालक आत्म-विश्वासी, साहसी निर्भय उद्योगी तथा सौभाग्यशाली होते हैं। व्यवसाय, शेयरों की दलाली अध्यापन, गणित, साहित्य, चिकित्सा, विज्ञान इजीनियरी, मुनीमी तथा आविष्कार आदि सभी क्षेत्रों में सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

(९) जिस बालक की हथेली में चन्द्रमा का क्षेत्र अधिक उन्नत हो वह काल्पनिक, अनभ्यासी, असंतुष्ट मनमौजी स्वभाव का होता है ऐसे बालकों के लिए किसी व्यवसाय का चुनाव कर पाना कठिन होता है। केवल लेखन सम्बंधी कार्यो में ही उसे सफलता प्राप्त होती है। अधिक काल्पनिक होने के कारण ऐसा बालक उपन्यास, कविता कहानी नाटक आदि का सृजन करता है, उसमें विचित्र वस्तुओं का

संग्रह करने की रुचि भी पाई जाती है। अतः वह किसी संग्रहालय आदि में भी काम करने के उपयुक्त हो सकता है।

(१०) यदि वालक के हाथ में शुक्र क्षेत्र अधिक उन्नत हो तो वह संगीत, गायन, नृत्य तथा यात्रा का प्रेमी होता है ऐसे वालक घड़ीसाजी, माला अथवा आभूपणों का निर्माण राग-यन्त्रों को वजाना, रगसाजी, रत्न-परीक्षा अभिनय आदि का काम करनें में कुशलता प्राप्त कर सकते है।

अन्य वातें

(१) लम्वे हाथ वाला व्यक्ति क्रियाशील तथा नियमित रूप से काम करनें वाला होता है। छोटे हाथ वाला व्यक्ति अपना अधिक समय सोचने-विचारनें में ही व्यतीत कर देता है।

(२) जिसकी हथेली में गड्ढा हो, वह दुर्भाग्यशाली होता है, उसे सर्वत्र असफलता प्राप्त होती है। जिसकी हथेली उन्नत हो, वह दाता होता है। गोल हथेली वाला व्यक्ति धनवान तथा ऊंची-नीची हथेली वाला व्यक्ति कृपण होता है लाल रंग की हथेली वाला धनी, नीले रंग की हथेली वाला मद्ययी, पीले रंग की हथेली वाला दुश्चरित्र श्वेत रंग की हथेली वाला रोगी तथा काले रंग की हथेली वाला जातक निर्धन होता है।

(३) जिस व्यक्ति के पृष्ट (हाथ की पीठ) पर केश न हों और वह चौड़ा कछुए की पीठ जैसा उन्नत हो तथा उस पर नसें उभरी न दीखती हो, वह सौभाग्य शाली होता है, रूखे सिकुड़े, नीचे दवे हुए, चपटे तथा उभरी हुई नसों वाले कर पृष्ठ जिन पुरुषों के होते हैं, वह लोभी तथा भाग्यहीन होता है यदि किसी स्त्री का कर पृष्ठ इस प्रकार का हो तो वह विधवा हो जाती है।
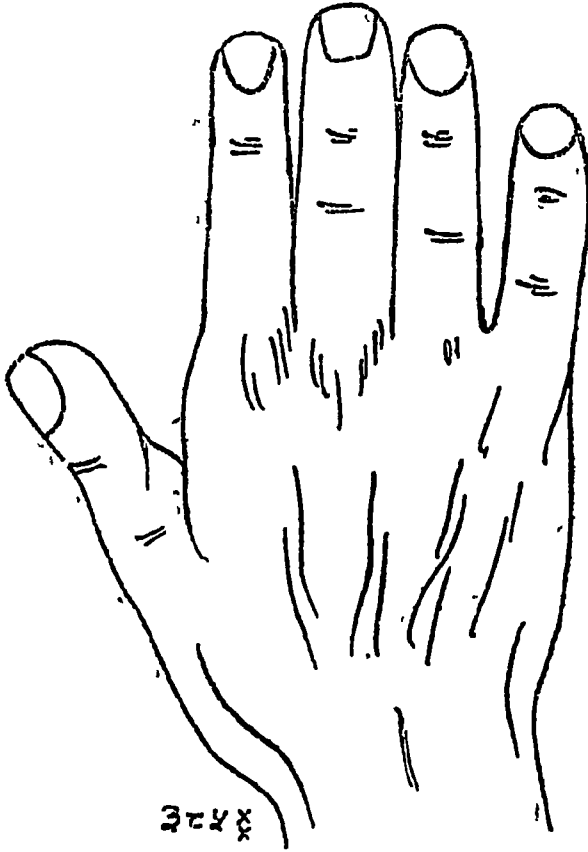
[कर पृष्ठ]

(४) उंगलियों के सम्बन्ध में यथा-स्थान विस्तारपूर्वक वर्णन किया जा चुका है। संक्षेप में उंगलियों की बनावट के आधार पर ज़ातक़ के स्वभाव तथा व्यवसाय आदि के सम्बन्ध में नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(क़) पीछे की ओर झुकी हुई उंगलियों वाले व्यक्ति चालाक, सबकी सलाह मान लेने वाले तथा आत्म-वंचक होते हैं।

(ख) हथेली के भीतर की ओर झुकी हुई उंगलियों वाले व्यक्ति कायर मन्द बुद्धि निरुत्साही होते हैं। वे सदैव ही विचारों में डूबे रहते हैं।

(ग) जिन लोगों की उंगलियों के पृष्ट भाग पर केश (रोये) होते हैं वे क्रोधावेश में अनर्थपूर्ण कार्य भी कर बैठते हैं।

(घ) जिन लोगों की अनामिका तथा कनिष्ठा उंगलियां प्रधान होती हैं वे उत्तम श्रेणी के दर्जी (सिलाई का काम करने वाले) तथा मोची होते हैं। उनकी कारीगरी बहुत अच्छी होती है।

(ङ) लम्बी उंगलियों वाले व्यक्ति के शुक्र, सूर्य तथा बुध क्षेत्र भी उन्नत हों तो वह घड़ीसाजी, रत्न परीक्षा एवं गोटे का काम करने मे कुशल होता है।

(च) गोल, पतली अथवा चपटी गांठदार उंगलियों वाले व्यक्ति माली का काम अच्छा करते हैं। इनकी हथेली कठोर तथा बड़ी होती है और मस्तक रेखा भी लम्बी पाई जाती है।

(छ) जिनकी अनामिका उंगली लम्बी तथा पुष्ट हो, साथ ही चन्द्र क्षेत्र उन्नत हो और बुध क्षेत्र दबा हुआ हो, ऐसे व्यक्ति अच्छे कारीगर होते है।

(ज) नुकीली लम्बी तथा कोणदार उंगलियों वाले व्यक्ति उच्च वर्ग में जन्म लेते हैं, जिन्हें अपने हाथ से अधिक काम करने की आवश्यकता नही होती। परन्तु यदि निम्न वर्ग के किसी व्यक्ति के हाथ में ऐसी उंगलियां हों तो ऐसा जातक दर्जीगीरी अथवा चक्की चलाने का काम करना पसन्द करता है। यदि निम्न वर्ग की स्त्रियों के हाथ में ऐसी उंगलियां हो तो वे भी सिलाई कढ़ाई, गुलदस्ते बनाना आदि साफ सुथरे कार्यों को करती है।

(झ) जिनकी उंगलियों के सिरे गोल, चपटे तथा पतले हों और जिनके हाथ चौड़े, कठोर तथा रेखा विहीन अथवा अन्य रेखाओं वाले हों, वे मजदूरी अथवा शीशे का काम करने वाले होते हैं, ऐसे लोगों में बुद्धि एवं ज्ञान को कमी पाई जाती है।

(ज) गोल, पतली तथा चपटी उंगलियों वाले व्यक्ति चिकित्सक का कार्य अच्छा करते हैं। ऐसी उगलियों वाली स्त्रियां नर्स अथवा धाय का काम करने में कुशल होती हैं।

(५) सिर के बालों के रंग के सम्बन्ध में भी यथा स्थान वर्णन किया जा चुका है। संक्षेप में, सिर के बालों के रंग के आधार पर जातक का स्वभाव नीचे लिखे अनुसार समझना चाहिए—

(क) लाल रंग के बाल तथा सुन्दर गुलाबी रंग के शरीर वाला व्यक्ति प्रत्येक कार्य में शीघ्रता करने वाला, विषयी तथा हटीला होता है।

(ख) काले, धमैले रंग के बालों वाला व्यक्ति गंभीर प्रकृति का होता है, परन्तु वह कभी-कभी उदास भी हो जाया करता है।

(ग) भूरे रंग के बालों वाला व्यक्ति अत्यन्त प्रेमी स्वभाव का होता है।

(घ) सुन्दर, चमकोले, काले, लम्बे, घने परन्तु मुलायम बालों वाला व्यक्ति बुद्धिमान, गुणवान, सत्यवक्ता, गंभीर, चतुर तथा सच्चा स्नेह करने वाला होता है।

(६) पर्वतों (ग्रह क्षेत्रों) के सम्बन्ध में भी यथा स्थान वर्णन किया जा चुका है। संक्षेप में विभिन्न ग्रह क्षेत्रों की स्थिति के विषय में नीचे लिखे अनुसार समझ लेना चाहिए।

(क) जो पर्वत जिस अन्य पर्वत की ओर झुका हुआ होता है, वह

दबे हुए पर्वत के प्रभाव को कम कर देता है तथा अपने प्रभाव को बढ़ाता है।
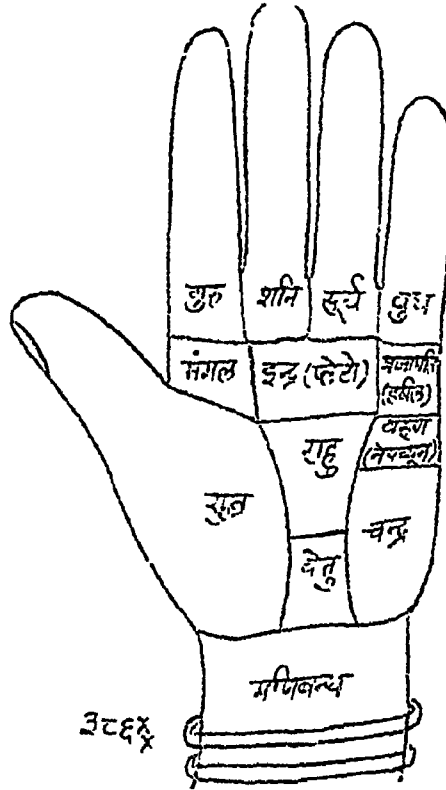
[नवीन मतानुसार हथेली पर १२ ग्रहो के क्षेत्र]

(ख) यदि हाथ में पर्वतों का अभाव हो तो उस स्थिति में उन के फल का भी अभाव हो जाता है।

(ग) अत्यधिक ऊंचे उठे हुए पर्वत अशुभ प्रभाव देते है। उन-का फल उनके गुणो के विपरीत हो जाता है।'

(घ) अपने स्थान पर उचित रूप से भरे हुए तथा स्पर्श करने पर कठोर विदित होने वाले पर्वत अपना पूर्णतया शुभ फल देने वाले होते हैं।

(ङ) जो पर्वत उठे हुए हों, वे पाशविक गुणों की अपेक्षा बुद्धि-मत्ता प्रदान करने वाले होते हैं। नीचे दबे हुए तथा बिना उठे हुए पर्वत जातक को अधिक विषयासक्त बनाते हैं।

(च) यदि हथेली में पर्वतों का बिल्कुल ही अभाव हो तो जातक की प्रकृति मनोविकारों से रहित होती है।

(छ) पुरुषों की अपेक्षा स्त्रियों के हाथ में पर्वत अधिक होते हैं।

(ज) जिस व्यक्ति के हाथ में मंगल, सूर्य तथा शनि के पर्वत अन्य पर्वतों की अपेक्षा अधिक उठे हुए हों वह साहसी, कठोर, क्रोधी लम्पट, पापी, कपटी तथा झगड़ालू प्रकृति का होता है।

(झ) जिस व्यक्ति के हाथ में गुरु, बुध, चन्द्र तथा शुक्र—इन चारों ग्रहों के पर्वत पूर्ण रूप से उठे हुए हों तथा हाथ की आठों मुख्य रेखाएं भी स्पष्ट सुन्दर तथा निर्दोष हों वह अत्यन्त भाग्यवान विद्वान पुण्यात्मा, ऐश्वर्यशाली, यशस्वी, सदाचारी, सुप्रसिद्ध तथा श्रेष्ठ पुरुष होता है।

(ञ) जिस व्यक्ति के हाथ में शुभ तथा अशुभ दोनों प्रकार के पर्वत पूर्ण रूप से भरे हुए हों वह बहुत सम्पत्तिवान् मानी, दानी, पुरुषार्थी तथा प्रसिद्ध पुरुष होता है।

आवश्यक टिप्पणी—इस प्रकरण में जिन विषयों का उल्लेख किया गया है, वे सभी स्त्री पुरुषों पर समान रूप से प्रभाव डालते हैं यह स्मरणीय है।

विभिन्न वर्ग वाले व्यक्तियों के लक्षण

पाश्चात्य मतानुसार जिस व्यक्ति की हथेली में जिस ग्रह का पर्वत अधिक उन्नत होता है उसी ग्रह के विशेष गुण उस व्यक्ति के स्वभाव में पाये जाते है। विभिन्न ग्रहो के प्रभाव वाले व्यक्तियों के रूप-रंग स्वभाव, रुचि, लक्षण तथा शुभाशुभ फल आदि के सम्बन्ध में 'वृहद् सामुद्रिक विज्ञान' के 'हस्त-चिह्न विचार' शीर्षक खण्ड में पर्याप्त प्रकाश डाला जा चुका है। यहां पर हम पाश्चात्य मतानुसार विभिन्न ग्रह वर्गीय व्यक्तियों के स्वभावादि का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करते हुए, प्राच्य (भारतीय) विद्वानों द्वारा वर्णित विभिन्न ग्रह क्षेत्रीय (१) हस (२) शश, (३) भद्र (४) रुचक तथा (५) मालव सज्ञक व्यक्तियो के लक्षणों के विषय में लिखते है।

पौर्वात्य (भारतीय) शास्त्रकारों के मतानुसार जिस व्यक्ति के जन्मकाल में गुरु, शनि, बुध, मगल तथा शुक्र इन पाच ग्रहों में से कोई भी स्व, उच्च, मूल त्रिकोण राशि अथवा केन्द्र में होता है, वह बलवान माना जाता है तथा उसी के गुण धर्मानुसार जातक के शरीर पर भी ग्रह के लक्षणों की प्रधानता पाई जाती है, जो व्यक्ति जिस ग्रह से अधिक प्रभावित होता है. उसी ग्रह-क्षेत्रीय व्यक्ति के नाम से सम्बोधित किया जाता है।

(१) बृहस्पति, (२) शनि, (३) बुध, (४) मंगल तथा (५) शुक्र की प्रधानता वाले जातको को भारतीय शास्त्रकारों ने क्रमशः (१) हंस, (२) शश, (३) चन्द्र, (४) रुचक तथा (५) मालव्य की संज्ञा दी है।

सूर्य अथवा चन्द्र के बलवान होने पर उनसे प्रभावित व्यक्तियों के लिए प्रथक् नामों की कल्पना भारतीय शास्त्रकारों द्वारा नही की गई है। इन—सूर्य अथवा चन्द्र—ग्रहों के बलवान होने पर उनसे सम्बन्धित व्यक्तियों के सम्बन्ध मे किस प्रकार विचार करना चाहिए इस विषय पर आगे यथा-स्थान प्रकाश डाला गया है।

गुरु क्षेत्रीय मनुष्य के लक्षण

पाश्चात्यमतानुसार गुरु क्षेत्रीय व्यक्ति सुन्दर दृढ़ शरीर वाले तथा मध्यम ऊंचाई के होते है। वे ज्यों-ज्यों वृद्ध होते जाते हैं। त्यों

त्यों उनका शरीर अधिक पुष्ट होता चला जाता है। उनकी नाक सीधी और सुडौल होती है दात श्वेत रग के होते हैं, ठोड़ी के बीच में गड्ढा होता है, मुह भरा हुआ होता है तथा वाणी स्पष्ट एवं मधुर होती है। उनके हाथ कोमल तथा बड़े होते है, अगूठा दृढ़ होता है तथा चाल सुन्दर होती है।

गुरु क्षेत्रीय व्यक्ति सरल स्वभाव वाले, सच्ची मैत्री तथा स्नेह का निर्वाह करने वाले, साहसी न्यायी, दानी, दयालु, गुणवान, विद्वान समझदार, धर्मात्मा तथा नियमों का पालन करने वाले होते हैं।

गुरु क्षेत्रीय व्यक्ति समाज में मान-प्रतिष्ठा पाने वाले, खाने-खिलाने के शौकीन, साहित्यिक अभिरुचि वाले सौन्दर्य-प्रिय तथा, नेत्र-शक्ति सम्पन्न होते है।

हंस संज्ञक मनुष्य के लक्षण

पाश्चात्य विद्वानों के मत से जो लोग 'गुरु क्षेत्रीय' होते है, भारतीय विद्वान उन्हीं को 'हस संज्ञक' मनुष्य मानते है।

-'हंस' सज्ञक मनुष्य के लक्षण शास्त्रकारो ने इस प्रकार बताये हैं—

रक्तं पीन कपोलन्मुनतनसं वक्त्रं सुवर्णोपमं।
वृत्तचास्य शिरोक्षिणी मधुनिभे सर्वेचरक्तानखाः॥
स्त्रग्दामांकुश शंख मत्स्य युगलं श्रत्वग कुंभावुलैः।
चिह्नों हंस कल स्वतः सुचरणौ हंसःप्र सन्नेन्द्रियः॥

× × × ×

रति रभसि शुक्रशारता द्विगुण चाप्ठकतैः पलैर्मितिः॥
परिमाण मथाम्यपड्युतान वति. सर्परकीर्तिता बुधैः॥
भुनक्ति हंसा खए सूरसेनात् गांधार गंगा यमुनांतरालं।
शतं दशोनं शरदां नृपत्वं कृत्वा वनांते तमुपैति मृत्यु॥

भावार्थ— 'हंस' संज्ञक मनुष्य के शरीर का रंग आरक्त-गौरा होता है उसके गाल पुष्ट (भरे हुए) होते है नासिका ऊंची उठी रहती है तथा मुख एव मस्तक स्वर्ण के समान कांति युक्त तथा गोल होते है। उसकी आंखे शहद के रंग जैसी तथा सम्पूर्ण नख लाल रंग के होते हैं। ऐसे व्यक्ति के हाथ में माला, रज्जु, अंकुश, मत्स्यद्वय वेदी-श्रुवा, कुम्भ, कमल आदि के चिह्न होते हैं। उसकी वाणी हंस के समान मधुर होती है शरीर के सभी अंग सुन्दर तथा सम्पूर्ण होते हैं। वह सदैव प्रसन्न बना रहता है।'

हंस संज्ञक मनुष्य जल से अधिक प्रीति रखता है अर्थात् जल-यात्रा नौका बिहार अथवा वापी, कूप, तालाब आदि बनवाने वाला होता है। ऐसा व्यक्ति अधिक वीयवान् होता है। उसके शरीर का भार १६०० पल होता है तथा शरीर की लम्बाई ९६ अंगुल की होती है। ऐसे लोग खस (उतर पजाब से आगे का प्रदेश), शूरसेन (मथुरा के समीप का क्षेत्र), गांधार (कन्धार), तथा गंगा यमुना के मध्यवर्ती क्षेत्रों का उपभोग करते हैं' अर्थात् वे या तो इन स्थानों के निवासी होते हैं या फिर इन स्थानों में अधिक आते जाते बने रहते हैं। ऐसे व्यक्ति राजसुख, ऐश्वर्य आदि का उपभोग करके ९० वर्ष की आयु में मृत्यु को प्राप्त होते हैं।

टिप्पणी—पाश्चात्य विद्वानों ने गुरु क्षेत्रीय व्यक्तियों के जो लक्षण बतायें है, प्राच्य विद्वानों ने उनके शरीर के भार तथा लम्बाई आदि अनेक बाता का अधिक वर्णन किया है।

शनि-क्षेत्रीय मनुष्य के लक्षण

पाश्चात्य मतानुसार शनि क्षेत्रीय व्यक्ति लम्बे, पतले, झुके हुए कन्धों वाले, छोटी काली तथा गहरी आंखों वाले एवं लम्बी, नुकीली तथा नीचे की ओर झुकी हुई नाक वाले होते हैं। इनका मुंह बड़ा

होता है, होठ पतले होते हैं। दांत श्वेत रग के परन्तु शीघ्र गिरने वाले होते हैं। ठोड़ी लम्बी होती है। कान बड़े तथा सिर के अधिक समीप होते हैं। जबड़े बड़े तथा पुष्ट होते हैं। गरदन पतली और लम्बी होती है, गालों की हड्डी ऊंची होती है तया हाथ बड़े एवं

लम्बी उंगलियों वाले होते हैं। उनके शरीर का रंग कुछ पीलापन लिए होता है। बाल लम्बे होते हैं तथा कण्ठ-स्वर मंदा एवं धीमा होता है। ऐसे व्यक्ति अपनी शकल-सूरत के प्रति लापरवाह रहते है।

शनि क्षेत्रीय व्यक्ति धीर, वीर, गंभीर प्रकृति के, बलवान, कल्पना शक्ति वाले, अध्ययन-प्रिय, सच्ची मैत्री का निर्वाह करने वाले, अपने घर-कुटुम्ब से अधिक प्रेम रखने वाले, मितव्ययी, धर्म में दृढ़ आस्था रखने वाले, धार्मिक मामलों में कट्टर तथा असहिष्णु विधि नियमों का पालन करने वाले स्वयं के लिए कठोर परन्तु दूसरों के लिए सहनशील तथा कुछ-कुछ अविश्वासी प्रकृति के होते है। ऐसे लोगों की संख्या कम होती है, परन्तु ये जिससे मित्रता का सम्बन्ध स्थापित कर लेते हैं, उसका प्रत्येक स्थिति में निर्वाह करते हैं।

शनि क्षेत्रीय व्यक्ति संगीत एवं गणित के प्रेमी, नवीन वस्तुओं का आविष्कार करने वाले, पुरातत्व विद्, चित्रकार तथा कृषि, सम्पत्ति आदि की व्यवस्था करने में कुशल होते हैं। वे अपने वस्त्रों तथा शरीर की मलिनता पर कम ध्यान देते हैं। उन्हें बहुधा काला रंग प्रिय होता है।

शश संज्ञक मनुष्य के लक्षण

पाश्चात्य विद्वानों के मत से जो लोग शनि-क्षेत्रीय होते हैं, भारतीय विद्वान उन्हीं को 'शश संज्ञक' मनुष्य मानते हैं।

'शश' सज्ञक मनुष्य के लक्षण शास्त्रकारों ने इस प्रकार बताये हैं

ईषद्दंतुरकस्तनु द्विजनखःकोशे क्षणः कोशे क्षणः शीघ्रगो,।
विद्याधातुवनिक क्रियासु निरतः सम्पूर्ण गंडः शठः
सेनानीः प्रिय मैथुनः परजन स्त्रीसक्त चित्तश्चल,
शूरोमातृहितो वनाचल नदी दुर्गेषुसक्तः, शशः ॥

दीर्घांगुलानां शतमष्ट हीनं साशंक चेष्ट पररंध्रविच्च ।
सारोस्य मज्जा मिभृत प्रचारः शशोह्ययं नातिगुरु प्रदिष्ठ. ॥
मध्येकृश खेटक खड्ग वीणा पर्यंक माला लुरेजानुरूपाः ।
शूलोपमा श्चोर्ध्वं गताश्च रेखाः शशस्य पादोयगताकरेवा ॥
प्रात्यंतिको मांडलिकोथत्रायं स्फिकस्राव शूलोभिभवातं मृतिः ॥
ए२ शश:सप्तति हायनोयं वैवस्वतस्यालवमभ्युयेति ॥

भावार्थ—'हस' संज्ञक मनुष्य कुछ उन्नत परन्तु छोटे दात एवं नखो वाला अण्डे जैसी आकृति के नेत्रो वाला, पुष्ट गालों वाला, शीघ्रता पूर्वक चलने वाला, विद्वान, गेरू आदि धातु-उप धातुओं का व्यवसाय करने वाला, परोपकार से विमुख, धूर्त सेनापति तथा वहुत से मनुष्यों पर प्रभुत्व रखने वाला, विषयासक्त, पर-स्त्री-गामी, चंचल चित्त वाला, शूरवीर, मातृ-भक्त, वन, पर्वत, नदी तथा किला आदि में प्रेम रखने वाला तथा अशक्त चित्त वाला होता है।

ऐसे व्यक्ति के शरीर की लम्बाई ९२ अगुल की होती है । वह शंकाशील स्वभाव वाला, व्यवसायी, शत्रुओं की कमजोरी को जानने वाला, शक्तिशाली, स्थिर मज्जा के प्रचार वाला तथा जो अधिक स्थूल न हो, ऐसे शरीर वाला होता है।

'हंस' संज्ञक मनुष्य का शरीर मध्यम भाग में कृश होता है । उसके हाथ तथा पावों में ढाल, तलवार, वीणा, शय्या, माला, मृदंग तथा त्रिशूल के समान चिह्न तथा ऊर्ध्व रेखाएं होती हैं।

उक्त लक्षणों वाला हस संज्ञक मनुष्य गुहावासी लोकों का स्वामी तथा ऐश्वर्यशाली होता है। वह अपने कूल्हे के स्थान पर स्राव तथा शूल रोग की पीडा से पीडित होकर ७० वर्ष की आयु में मृत्यु को प्राप्त करता है।

सूर्य-क्षेत्रीय मनुष्य के लक्षरण

पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार सूर्य-क्षेत्रीय व्यक्ति मध्यम कद वाले, सुडौल शरीर वाले, देखने में सुन्दर, गोल तथा बड़े मस्तक वाले होते हैं। उनकी नाक सीधी होती है, मुंह मध्यम आकार का तथा गोल होता है, ठोड़ी गोल तथा प्रधान होती है। उनकी आंखें नीली, भूरी, लम्बी, घुमैली तथा घुंघराली पलको वाली होती हैं। उनके कान मध्यम आकार के होते है तथा सिर के समीप होते है। उनके शरीर के केश अच्छे, मुलायम, चमकीले तथा सुनहलापन लिए होते हैं। उनकी त्वचा चमकदार होती है। गालों पर लालिमा रहती

३८६

है तथा उनमें गड्ढे स होते है। हाथ कोमल होते है तथा उगलियां सुन्दर एव विभिन्न प्रकार के नख वाली होती है।

सूर्य क्षेत्रीय व्यक्ति स्वभाव के उदार, दयालु, अन्ध-विश्वास-रहित सत्यवादी, धनी, गर्वयुक्त, न्यायी, सभ्य, प्रसन्नमुख तथा स्वतन्त्र प्रवृत्ति के होते है। उनकी मैत्री एव प्रीति चचल होती है। वे बुराइयो से घृणा करते हैं और उनसे दूर रहते हैं।

इस वर्ग के लोग चित्रकारी, रगसाजी, शिल्प आदि कार्यों में रुचि रखते है। चिकित्सा साहित्य अथवा विज्ञान सम्बन्धी व्यवसाय इन्हें प्रिय होते है। ये पीले रग को अधिक पसंद करते हैं तथा अपने प्रत्येक कार्य को धीरता, गम्भीरता, शान्ति, स्नेह एव होशियारी के साथ पूरा करते हैं।

टिप्पणी—सूर्य वर्गीय व्यक्तियों के विषय में भारतीय विद्वानों का मत आगे दिया गया है।

बुध-क्षेत्रीय मनुष्य के लक्षण

पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार बुध क्षेत्रीय व्यक्ति नाटे कद के सुडौल अगों वाले तथा शीघ्रता पूर्वक चलने वाले होते हैं। बोलते समय उनका मुंह अधिक चौड़ा हो जाता है उनके होठ पतले तथा कुछ-कुछ खुले हुए होते है। उनके दांत छोटे-छोटे तथा पंक्ति बद्ध होते है। उनकी ठोड़ी नुकीली होती है, मस्तक ऊंचा होता है तथा नाक सीधी रहती है। उनके शरीर का रग हल्का पीला तथा स्वच्छ होता है। शरीर की त्वचा कोमल होती है बालों का रंग कुछ लालिमा लिए होता है। हाथ लम्बे तथा लचीले होते हैं। उंगलियों के अग्रभाग विभिन्न रूपो वाले होते है। उनकी आंखें भूरी, धुंधली तथा नीली होती है। दृष्टि चचल, तीक्ष्ण तथा गहरी होती है। उनका कण्ठ स्वर प्रायः निर्बल होता है, परन्तु वे शब्दों का उच्चारण

कुछ अधिक शीघ्रता से करते हैं। जिसके कारण वाणी में कभी-कभी हकलाहट भी आ जाती है।

बुध क्षेत्रीय व्यक्ति बातूनी, समझदार चंचल, परिश्रमी, दूरदर्शी होशियार, अक्लमन्द तथा विवेक बुद्धि वाले होते है। उनकी स्मरण शक्ति तीव्र होती है। वे सदैव चौकन्ने बने रहते हैं तथा दूसरे के मन की बात को जान लेनें में चतुर होते है। अतिथि सत्कार तथा दूसरे लोगों की सहायता करनें का गुण इनमें कुछ अधिक पाया जाता है।

इस वर्ग के लोग साहित्य, विज्ञान अनुसंधान, चिकित्सा तथा गणित के क्षेत्र में विशेष योग्यता प्रकट करते हैं। वे हुंडी आदि का व्यवसाय करते है। तथा विलक्षण वस्तुओं के संग्रह करने का उन्हें शौक होता है। ऐसे लोग अपनी उगलियों से काम करनें में चतुर तथा हंसी-मजाक में रुचि रखने वाले होते हैं। इन्हें हरा रंग प्रिय होता है।

भद्र संज्ञक मनुष्य के लक्षण

पाश्चात्य विद्वानों के मत से जो लोग 'बुध क्षेत्रीय' होते है, भारतीय विद्वान उन्ही को 'भद्र सज्ञक' मनुष्य मानते हैं।

'भद्र संज्ञक' मनुष्य के लक्षण शास्त्रकारों ने इस प्रकार वताये है।

"उपचित सम वृत्त लम्बबाहुर्भुज युगल प्रमितः समुच्छ्रयोस्व ।
मृदु तनु घनरोमा नन्धगवो भवतिनरः खलु लक्षणेन भद्रः ॥
त्वक् शुक्रशारः पृथुपीनवक्षाः सत्वाधिको व्याघ्र मुख. स्थिरश्च ।
क्षमान्वितो धर्म परः कृतज्ञो गजेन्द्रगामी बहु शस्त्र वेत्ता ॥
प्राज्ञो वपुष्मान् सुललाट शंखः कलास्वभिज्ञो धृतिमान सुकुक्षिः ।
सरोजगर्भ धुतिपाणिपादो योगी सुनासः समसंतहभ्रूः ॥

नवाबुसिक्तावनि पत्र कुंकुम द्विपेन्द्र दाना गुरु तुल्य गन्धता ।
शिरोरूहाश्चैकज कृष्ण कुंचिता स्तुरंग नागोपम गूड मुह्यता ॥
हलमुशलेगदासि शख चक्र द्विप मकरब्जरथांकितघ्रि हस्तः ।
विभव मणि नोरय वो भुजीति क्षमतिहि नस्वजनं स्वतन्त्र वुद्धिः ॥
अंगुलानि भवतिश्च षडूना न्युच्छ्येण तुलयापि च भारः ।
मध्यदेन्नृपतिर्यदि पुष्टास्न्यादयोस्य सकलाननिनाथ ॥
भुक्त्वा सम्यक् वसुधा शौर्येणोवार्जिता मशीत्यब्दः ।
तीर्थं प्राणां स्त्यक्त्वा भद्रो देवालयं याति ॥"

भावार्थ—'भद्र सज्ञक' मनुष्य की भुजाएं गोल, सुन्दर तथा पुष्ट होती है। इनके शरीर की ऊचाई दोनो हाथों की लम्बाई के वरावर होती है। इनके कपोल कोमल, महीन तथा सघन केशों से युक्त होते है। इनकी त्वचा मजबूत होती है। ये लोग वीर्यवान, पुष्ट वक्ष स्थल वाले तथा सत्व गुण की अधिकता वाले होते हैं । इनके मुख की आकृति व्याघ्र जैसी होती है । ये स्थिर वुद्धि, दयावान, धर्मात्मा उपकारी, मन्दगति, शास्त्रज्ञ, ज्ञानी, दृढ शरीर वाले, उत्तम ललाट तथा ग्रीवा वाले, कमल-केशर की भाति सुन्दर वर्ण तथा तेजस्वी हाथ-पांव वाले, योगाभ्यासी एव सुन्दर नाक वाले होते है। इनकी दोनों भौंहे परस्पर मिली हुई रहती है। इनका हृदय जल सिंचिता नवीन-भूमि, तमाल-पत्र, केशर, हाथी के मद का जल अगरु तथा धूप की सुगन्धि वाले पदार्थो से प्रसन्न वना रहता है अथवा ये लोग इन पदार्थो का व्यवसाय करते है ।

भद्र संज्ञक पुरुपो के एक-एक रोम कूप में एक-एक काले तथा घुंघराले केश रहते है। वे घोडा तथा हाथी के समान दीर्घाकार गुप्तेन्द्रिय वाले होते है।

इनके हाथ तथा पावों मे हल, मूशल, गदा, तलवार, शंख, चक्र, हाथी, मगर, कमल तथा रथ के चिह्न पाये जाते हैं। इनकी सम्पत्ति का अन्य लोग भी उपयोग करते हैं। ये अपने स्वजनों द्वारा किये गये अविवेक पूर्ण कार्यों को क्षमा नहीं करते। ये स्वतन्त्र बुद्धि के होते हैं। इनके शरीर की ऊंचाई ८४ अंगुल तथा शरीर का भार

२००० पल होता है । यदि 'भद्र सज्ञक' पुरुप के शरीर की ऊंचाई १०४ अगुल हो तो वह सम्पूर्ण पृथ्वी का राजा हो सकता है ।

'भद्र सज्ञक' मनुष्य अपने पराक्रम द्वारा सम्पादित की गई पृथ्वी का ८० वर्ष की आयु तक उपभोग करता है। तदुपरान्त किसी पुण्य क्षेत्र में प्राण त्याग कर स्वर्ग लोक में जाता है।

मंगल क्षेत्रीय मनुष्य के लक्षण

पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार मंगल क्षत्रीय व्यक्ति, मध्यम, कद तथा चौरस कधों वाले होते हैं। उनका सिर छोटा होता है । त्वचा कुछ कठोर तथा लाल रग की होती है। गाल मोटे होते है, मस्तक ऊंचा होता है। उनकी आखे भूरी तथा कुछ लालिमा लिए हुए चौड़ी तथा खुली हुई होती है। भौहे आखो के अधिक समीप तथा घनी होती है। मुंह बडा होता है, होठ मोटे होते है तथा दात कुछ छोटे तथा पीले रग के होते है। ऐसे लोगों को ठोड़ी मोटो तथा चौरस होती है कान सिर से कुछ दूर रहते हैं। नाक टेढो होती है। हाथ दृढ़ कठोर तथा मोटी उंगलियों वाले होते है। उनका कण्ठ कठोर तथा भद्दा होता है।

मंगल क्षेत्रीय व्यक्ति प्रत्येक काम को करने में उतावले बने रहते हैं। वे झगडालू, साहसी, रूखे, भयानक, मुस्तैद धैर्यवान तथा भय का कोई कारण उपस्थित होने पर अपने स्वभाव को ठंडा रखने वाले होते है।

ऐसे व्यक्ति शिकार, यात्रा, खेल-कूद, घुड़सवारी, युद्ध, अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग तथा ऐतिहासिक युद्ध सम्बन्धी ग्रंथों को पढने में रुचि रखते हैं। वे उन कार्यों को अवश्य करना चाहते है, जिन्हें करते हुए अन्य लोग डरते हों। उन्हे चमकीला लाल तथा नीला रंग प्रिय होता है।

रुचक संज्ञक मनुष्य के लक्षण

पाश्चात्य विद्वानों के मत से जो लोग 'मगल-क्षेत्रीय' होते हैं, भारतीय विद्वान उन्ही को 'रूचक संज्ञक' मनुष्य मानते हैं।

'रुचक सज्ञक' मनुष्य के लक्षण शास्त्रकारों ने इस प्रकार बताये हैं—

सुभ्रू केशारवत श्याम कंबुग्रीवो व्यादीर्घास्यः।
शूरः क्रूर श्रेष्ठो मन्त्री चौन स्वामी व्यायामी च ॥
यस्मात्र ास्यं रुचकस्य दीर्घं मध्य प्रदेशे चतुरस्त्रतासा।
तनुच्छविः शोणितमांस सारो हंताद्विषां साहस सिद्ध कार्यः ॥
खट्वांग वीणा वृष चाप वज्र शक्तीषु शूलां कित पाणिवादः।
भक्तो गुरु ब्राह्मण देवतानां शतांगुलः स्यात्तुलया सहस्र ॥
मंत्राभिचार कुशल कृश जानु जंघो
विध्यांव सह्यगिरिमुज्जयीनीं च भुक्त्वा।
संप्राप्य सप्तति समारुचको नरेन्द्र।
शस्त्रेण मृत्यु मुपयात्यथवानवलेन ॥"

भावार्थ—'रुचक सज्ञक' मनुष्य को भौहे सुन्दर होती हैं। उसके केश लाल अथवा काले रंग के होते हैं। कंठ पर त्रिवली होती है तथा मुंह लम्बा होता है।

'रूचक संजक' मनुष्य शूरवीर, क्रोधी, परामर्शदाता, चोरों के राजा तथा परिश्रमी होते हैं। इनका मुह जितना लम्बा होता है पेट की चौड़ाई भी उतनी ही होती है। शरीर में त्वचा का भाग सूक्ष्म होता है तथा रक्त एवं मांस की अधिकता होती है।

ऐसा व्यक्ति शत्रु हंता तथा साहस के कामों से अपनी मनो-कामना को सिद्ध करने वाला होता है। इसके हाथ तथा पांवों में

खट्वाग तथा वीणा वृषभ, धनुष, शक्ति, वज्र, चन्द्र तथा त्रिशूल के चिह्न पाये जाते है। यह गुरु ब्राह्मण तथा देवताओं का भक्त होता है। इसके शरीर की ऊंचाई १०० अंगुल तथा भार १००० पल होता है।

ऐसा व्यक्ति मन्त्र-प्रयोग, मारण-मरण आदि के प्रयोगो तथा हठयोग की क्रियाओं में निपुण होता है।

इसके घुटने तथा पिण्डलियां पतली होती हैं। ऐसा व्यक्ति विंध्याचल, सह्य वंत अथवा उज्जयिनी देश में ७० वर्ष तक निवास करके अथवा इन क्षेत्रों से सम्पर्क बनाये रखकर, सुख भोग के उपरान्त शस्त्र अथवा अग्नि द्वारा मृत्यु को प्राप्त होता है।

चन्द्र क्षेत्रीय मनुष्य के लक्षण

पाश्चात्य विद्वानों के मतानुसार चन्द्र क्षेत्रीय व्यक्ति के शरीर की बनावट लम्बी तथा दृढ़ होती है। उसका सिर गोल तथा लम्बे, सीधे और महीन बालों से युक्त होता है। ललाट कनपटी के पास चौड़ा तथा भौहों के ऊपर उभरा हुआ रहता है।

ऐसे लोगों की आंखें बड़ी भूरी, नीली तथा उदास सी होती हैं। इनकी भौहें नाक के ऊपर जुड़ी हुई तथा पतली होती हैं। मुंह छोटा, होंट भरे हुए तथा टेढ़े-मेढ़े होते हैं। ठोड़ी गोल तथा पीछे की ओर हटी हुई सी रहती है। नाक छोटी होती है। हाथ मुलायम ढीले, तथा उंगलियां लम्बी एवं छोटे अंगूठे वाले होते हैं। इनका कण्ठ-स्वर बहुत धीमा होता है।

चन्द्र क्षेत्रीय व्यक्ति अपने विचारों में खोये रहने वाले, काल्पनिक काव्य प्रेमी, सज्जन, वीर, शिष्ट, सहानुभूतिपूर्ण परन्तु मनमौजी होते हैं। वे कभी भी किसी निश्चय पर दृढ नही रह पाते।

ऐसे लोग साहित्य सेवी होते है। साहित्य सृजन तथा लिखने-पढ़ने के काम में उनका मन लगता है पुरानी एवं कलात्मक वस्तुओं का संग्रह करने, चित्रकारी तथा संगीत से उन्हें प्रेम होता है। ये लोग व्यवसाय करना पसन्द नही करते परन्तु यदि हाथ में मस्तक रेखा सीधी हो तो व्यवसाय कर सकते हैं। इन्हें समुद्री हरा, चांदी जैसा श्वेत, खाकी तथा अधिक पीला रंग पसन्द होता है।

टिप्पणी—चन्द्र-वर्गीय व्यक्तियों के विषय में भारतीय विद्वानों का मत आगे दिया गया है।

शुक्र-क्षेत्रीय मनुष्य के लक्षण

पाश्चात्य विद्वानो के मतानुसार शुक्र क्षेत्रीय व्यक्तियो का शरीर कद में कुछ छोटा, परन्तु सुन्दर दृढ़ और पुष्ट होता है। उनके शरीर की त्वचा कोमल, नाजुक तथा श्वेत वर्ण की होती है। उनका चेहरा गोल होता है, आखें बड़ी, स्वच्छ, भूरे रग की तथा देखने में आर्द्र सी प्रतीत होती है। भौहे घु घली तथा धनुषाकार होती है। नाक छोटी, सुडौल परन्तु कुछ घूमी हुई सी होती है। मु ह छोटा होता है। होठ लाल पुष्ट परन्तु कोनो पर कुछ पिचके हुए से होते है। दात सम, श्वेत तथा छोटे होते है। केश लम्बे, मोटे, घु घराले, भूरे अथवा काले तथा कोमल होते है। कान छोटे, गुलाबी रग के तथा सिर के समीप होते है। गाल और ठोढी गोल, कोमल तथा गड्ढेदार होती है। हाथ चौकोर तथा मासल होते है और उनकी उंगलियां चिकनी तथा नुकीली होती हैं और उनके तीसरे पर्व उभरे हुए होते है। उनकी वाणी मधुर, कोमल तथा मनमोहक होती है।

शुक्र क्षेत्रीय व्यक्ति स्वयं कष्ट अथवा हानि उठा कर भी दूसरो का भला करने वाले सहानुभूतिपूर्ण, शान्तिप्रिय, शीघ्र द्रवित हो जाने वाले तथा प्रसन्न रहने वाले होते है। वे अपनी प्रशंसा सुनकर मुदित होते हैं।

ऐसे व्यक्ति सगीत, अभिनय, चित्रकला, वक्तृता, रति, यात्रा, तथा रेशमी वस्त्रादि का संग्रह करने के शौकीन होते है। सौन्दर्य, सुगन्धि एवं पुष्पों से उन्हे प्रेम होता है। वे गुलाबी नीला तथा पीला रंग पसन्द करते है वाद्य यन्त्रो में उन्हे सरगी अधिक प्रिय होती है।

मालव्य संज्ञक मनुष्य के लक्षण

पाश्चात्य विद्वानों के मत से जो लोग शुक्र क्षेत्रीय होते हैं भारतीय विद्वान उन्ही को 'मालव्य सज्ञक' मनुष्य मानते हैं। मालव्य संज्ञक मनुष्य के लक्षण शास्त्रकारों ने इस प्रकार बताये हैं—

"मालव्यो नाग नासा भुज युगलो जानु संप्राप्त हस्तौ।
मांसैः पूर्णांग संधि समरुचिरतनु मध्यभागे कृशश्च॥

पश्चाष्टौ चोर्ध्वं मास्य श्रुति विवरमपि ञ्यंगुलोनघतिर्यक् ।
दीप्ताक्ष सत्कपोलं समशितदशनं नातिमांसोधरोष्ठं ॥
मालवान्तभरुकच्छ सुराष्ट्रान् लाट सिंदु विषय प्रभृतींश्च ।
विक्रमार्जितघनो वतिराज परिमात्र निलयः कृती बुद्धि ॥
सप्तति वर्षो मालव्यो यंत्यक्षति सम्यक् प्राणां स्तीर्थे ।
लक्षणमेतत्सम्यक् प्रोक्त शेप नराणां चातोवक्ष्ये ॥"

भावार्थ—मालव्य संज्ञक पुरुष की दोनों भुजाए हाथी की सूंड के समान तथा घुटनों तक लम्बी होती है। उसके शारीरिक अंगों की संधियां मासल होती है। उसका शरीर न अधिक लम्बा होता है और न अधिक ठिगना। शरीर का मध्य भाग कृश होता है अर्थात् कमर पतली होती हैं। ठोड़ी से ललाट तक मुंह १३ अंगुल होता है तथा कान के विवर १० अंगुल दूर होते हैं। नेत्र स्वच्छ होते है, गाल सुन्दर होते हैं। दांत श्वेत रग के तथा एक समान पंक्तिवद्ध होते है, उनके अधरोष्ठ अधिक मासल नही होते।

ऐसे व्यक्ति श्रेष्ठ वुद्धि वाले, अपने पराक्रम द्वारा धन का सम्पादन करने वाले राजा अथवा राजा के समान ऐश्वर्य वाले होते है। वे मालवा, भरुच (भड़ौच) कच्छ, गुजरात लाट देश (सिन्ध-हैदरावाद) तथा सिन्धु प्रदेश में रहने वाले अथवा इन देशों पर अधिकार रखने वाले होते है। वे ७० वर्ष तक सुख-भोगों का उपयोग करने के पश्चात् किसी पुण्य भूमि में तप करके प्राण त्यागते है। उनके शरीर की ऊंचाई १०८ अ गुल होती है।

सूर्य तथा चन्द्र क्षेत्रीय मनुष्यों के विषय में प्राच्य-मत

सूर्य तथा चन्द्र क्षेत्रीय व्यक्तियो के विषय में भारतीय विद्वानों ने हंस, शश, रुचक जैसी कोई संज्ञा अलग से निश्चत नही की है,

परन्तु सूर्य तथा चन्द्रमा के बलवान होनें पर जातक पर उनका क्या प्रभाव पड़ता है, इस सम्ब्रन्ध में नीचे लिखे अनुसार वताया है—

" सत्वमपीनं सूर्याच्छारीरं मानसंच चन्द्र बलात् ।
यद्राशिमिदयुक्ता वेतौ तल्लक्षण: सपुमान ॥
तद्धातु महाभूत प्रकृति द्युति वर्ण सत्वरूपाद्यैः ।
अवल रविन्द्रयुतैस्तैः संकीर्णा लक्षणैः पुरुषाः ॥ "

भावार्थ—यदि सूर्य बलवान हो तो वह सत्व, रज, तम आदि जिस राशि में वलवान् होता है, मनुष्य में उसी गुण की प्रधानता पाई जाती है।

यदि चन्द्रमा बलवान हो तो वह मनुष्य के शारीरिक गुण एव मानसिक गुणों में बृद्धि करता है।

सूर्य, चन्द्र बलवान होकर जिस राशि के अधिक पड्वर्ग में होते हैं, उस राशि के स्वामी का हंस, शश, रुचक आदि जो भी नाम हो, वह पुरुष भी उसी नाम का होता है तथा उसके जो गुण धर्म तथा लक्षण होते है, वही गुण धर्म तथा लक्षण उस मनुष्य में भी पाये जाते हैं।

उदाहरण के लिए यदि सूर्य वलवान होकर गुरु की राशि के अधिक षड्वर्ग में गया हो तो वह व्यक्ति हस, ज्ञक, पुरुप के लक्षण वाला होगा और शनि की राशि के पड्वर्ग में गया हो तो शश संज्ञक पुरुष के लक्षण वाला होगा। इसी प्रकार पाचों राशियों के पड्वर्ग के विषय में समझना चाहिए।

इसी प्रकार सूर्य तथा चन्द्रमा निर्वल होकर, जिस राशि के पड्-वर्ग में जाते है, उस के स्वामी के लक्षण है, उन्हीं का मित्र फल जातक को प्राप्त होता है। यह विपय ज्योतिप से सम्बन्ध रखता है

अतः इसका विशेष ज्ञान प्राप्त करने के लिए हमारे 'वृद्द् ज्योतिष-विज्ञान' नामक ग्रंथ का अध्ययन करना चाहिए।

आवश्यक ज्ञातव्य

(१) ऊपर जहां-जहां मनुष्य के शरीर की लम्बाई आदि के सम्वन्ध में अंगुल का प्रमाण कहा गया है, वहा पर जातक के अपने ही अंगुल के माप को प्रमाण मानना चाहिए।

(२) कोई भी एक शुद्ध वर्ग का मिल पाना कठिन है। हाथ पर प्रायः दो वर्गों का प्रभाव ही दृष्टिगोचर होता है। अतः उन

दोनों वर्गों में से प्रत्येक के कुछ-कुछ विशेष लक्षण जातक में पाये जाते हैं। यदि दोनों वर्गों के लक्षण परस्पर विरोधी हों तो उन विशेष लक्षणों के फल में या तो सुधार हो जाता है अथवा प्रतिकूलता आ जाती है।

(३) किन्ही दो वर्गो का अन्त तथा आरम्भ मिलने से स्वभाव की कमी पूरी हो जाती है अथवा स्थिति के अनुसार निर्बल वर्ग की पुष्टि हो जाती है।

(४) बुध क्षेत्रीय व्यक्ति चन्द्र क्षेत्रीय व्यक्तियों का आकर्षण करते हैं। शनि तथा सूर्य एक दूसरे के प्रतिकूल स्वभाव वाले होने के कारण चुम्बक की भाति एक दूसरे का आकर्षण करते है। मगल या शुक्र ग्रह एक दूसरे को पसन्द करने वाले है। गुरु ग्रह श्रेष्ठ तथा सज्जन होने के कारण सभी ग्रहों के साथ में भी वनाये रखता है। अर्थात् गुरु क्षेत्रीय व्यक्ति किसी भी ग्रह क्षेत्रीय मनुष्य के साथ में सम्बन्ध स्थापित कर लेता है।

टिप्पणी—उपर्युक्त स्त्री लक्षण तथा फला देश स्त्री पुरुष दोनों के लिए ही एक जैसे समझने चाहिए।

आधुनिक विद्वानों के मतानुसार स्त्री-पुरुषों के लक्षण

आधुनिक विद्वानो ने स्त्री-पुरुषों की रूपाकृति के आधार पर उनके चरित्र, स्वभाव आदि के विषय में निष्कर्ष निकाले है, उनका सार संक्षेप इस प्रकरण मे दिया जा रहा है।

गोल चेहरा

चित्र ३६४—जिस स्त्री अथवा पुरुष का चेहरा गोल तथा भरा हुआ हो एवं गाल फूले हुए हों वह श्रेष्ठ सुख तथा श्रेष्ठ भोजन प्राप्त करता है। वह थोड़े परिश्रम से ही अधिक सफलता पा लेता है। वह हर समय प्रसन्न बना रहता है तथा अपने हृदय में चिन्ताओं को कम स्थान देता है ऐसे व्यक्ति प्रायः लापरवाही के साथ कार्यों को करते है तथा स्वाभिमानी होते है।

लम्बा चेहरा

चित्र ३६५—लम्बे चेहरे वाले स्त्री पुरुष हृदय में कुछ चिन्तित

रहने वाले सुख प्राप्ति के साधनों में कमी पाने वाले मन ही मन उदास तथा क्रुद्ध रहने वाले जिद्दी आत्मग्लानिपूर्ण अल्पधनी तथा बंधु-बाधव इष्ट मित्र आदि की दृष्टि से भी कमजोर स्थिति के होते है।

चौड़ा माथा पतला मुंह

चित्र ३६६—चोड़ा माथा तथा पतले मुंह वाले स्त्री-पुरुष बहुत अकलमन्द होते हैं। वे समाज में भाग्यवान समझे जाते है, परन्तु अपने पारिवारिक जीवन में कुछ दुख का अनुभव करते हैं। ऐसे जातक अपने अभिन्न मित्र एव साथियों की संख्या में कमी पाने

३६६

वाले अपने दुःख की चिन्ता न करने वाले, बहुत दूर तक की सोचने वाले होशियार तथा समझदार होते हैं।

छोटा सिर मोटे गाल

चित्र ३९७—जिन स्त्री-पुरुषों का सिर छोटा हो, चेहरा गोल हो तथा गाल मोटे और फूले हुए हों, वे अच्छा भोजन तथा जीविका का श्रेष्ठ साधन प्राप्त करने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति अधिक बुद्धिमान अथवा ज्ञानवान नही होते परन्तु धन कमाने अथवा संग्रह करने में चतुर होते हैं। ऐसे लोग स्वभाव से बेफिक्र होते हैं। वे किसी से बातचीत करते समय कुछ हिचक जाते है तथा अपने प्रभुत्व में कुछ कमी का अनुभव भी करते हैं।

मोटा सिर और मुलायम बाल

चित्र ३६८—जिस स्त्री पुरुष का सिर मोटा तथा बाल मुलायम हों वह भाग्यशाली तथा प्रतापी होता है। अपनी जाति अथवा समाज में उसका बहुत सम्मान तथा यश होता है। ऐसे लोग चतुर, समझदारी से काम लेने वाले, दूरदर्शी, यशस्वी तथा लाभ उठाते रहने वाले होते है।
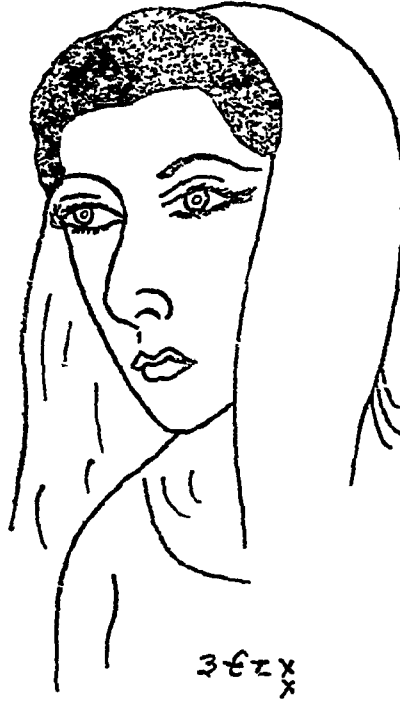
लम्बा-चौड़ा सिर और भरा चेहरा

चित्र ३६९—जिस स्त्री-पुरुष का सिर लम्बा चौड़ा तथा चेहरा भरा हुआ हो वह धनी, ऐश्वर्यशाली, दूरदर्शी, गुणवान, बुद्धिमान,

विद्वान, यशस्वी तथा सुखी होता है। ऐसा व्यक्ति पारलौकिक विषयों का भी ज्ञाता होता है। उसके इष्ट मित्रों की संख्या अधिक होती है उसका शरीर स्वस्थ रहता है तथा पारिवारिक सुख भी उसे पर्याप्त मात्रा में प्राप्त होता है।

ऐसे चेहरे वाले स्त्री-पुरुष अपना सम्पूर्ण जीवन यश एवं सुख प्राप्त करते हुए बिताते है। उनके जीवन में कठिनाइयां बहुत कम आती हैं।

पतला चेहरा

चित्र ४००—जिस स्त्री अथवा पुरुष का चेहरा पतला हो वह अत्यधिक युक्ति एवं परिश्रम करने पर भी अपनी मनचाही स्थिति

को प्राप्त नही कर पाता। ऐसे व्यक्ति गुप्त युक्तियों द्वारा सुख प्राप्ति के प्रयत्नों में लगे रहते है। वे स्वभाव से कुछ दब्बू तथा हीनत्व की भावना वाले होते हैं। ऐसे स्त्री-पुरुषों की नाक यदि आगे से छोटी तथा मोटी हो तो उनमें चतुराई की कमी होती है, परन्तु अहकार अधिक होता है। यदि नाक लम्बी हो और आगे की ओर अधिक झुकी हुई हो तो जातक बड़ा स्वार्थी तथा होशियार होता है। नाक का अग्रभाग यदि कुछ टेढा हो तो वह घर गृहस्थी के सम्बन्ध में कुछ दुख: पाने वाला परन्तु लोगा के सामने बढ-बढ कर बाते बनाने वाला होता है।

कम चौड़ा मस्तक

चित्र ४०१—जिस स्त्री अथवा पुरुप का ललाट कम चौड़ा, छोटा, मोटा तथा गड्ढेदार हो, उसका हृदय संकोर्ण होता है। ऐसा जातक

स्वार्थी, हठी, लापरवाह होता है तथा जीवन में सुख, शक्ति एवं धन अल्प मात्रा में प्राप्त करता है।

बड़ा मस्तक और सुन्दर चेहरा

चित्र ४०२—जिस स्त्री अथवा पुरुष का मस्तक बड़ा तथा चेहरा सुन्दर हो वह मधुरभाषी, दयालु, परोपकारी, यशस्वी, गुणी, सुखी तथा भाग्यवान होता है। वह दूसरों पर अपना अच्छा प्रभाव डालता है। जिसके कारण सब लोग उसे सम्मान देते हैं। ऐसे जातक ईश्वर में निष्ठा रखने वाले, ज्ञानवान तथा सुखी जीवन व्यतीत करने वाले होते हैं।

छोटा मस्तक और सुन्दर चेहरा

चित्र ४०३—जिस स्त्री अथवा पुरुष का मस्तक छोटा तथा चेहरा सुन्दर हो वह भोग-विलास के साधनों को निरन्तर प्राप्त करने वाला मधुर भाषी, हंसमुख, सुखी, आनन्दी तथा धार्मिक मामलों में सामान्य रुचि रखने वाला होता है। ऐसे जातक अधिक विद्वान नहीं होते, परन्तु वे अनेक प्रकार की गुप्त युक्तियों से काम लेकर लाभ तथा सुख पर्याप्त मात्रा में उठाते हैं। ऐसे जातकों के मित्रों की संख्या बहुत होती है।

बीच में उभरा हुआ सिर

चित्र ४०४—यदि किसी स्त्री अथवा पुरुष का सिर चोटी से ऊपरी भाग में टीले की भांति कुछ ऊंचा उभरा हुआ हो तो वह ईश्वरीय शक्ति अथवा किन्ही विशेष तत्वों का ज्ञाता, परमार्थी एवं आदर्श मनुष्य होता है।

यदि यही भाग उन्नत होने के स्थान पर दवा हुआ हो अर्थात सिर के बीच में गड्ढा सा हो तो जातक आदर्श एवं धर्म-कर्म से गिरा हुआ तथा स्वार्थी होता है।

भौंहें

चित्र ४०५—जिस स्त्री अथवा पुरुष की दोनों भौंहें धनुष की भांति टेढापन लिये हुए तथा पतली हों वह गंभीर, ज्ञानी, आदर्श यशस्वी, सुखी तथा भाग्यशाली होता है, उसे भोग-विलास के उत्तम साधन प्राप्त होते रहते हैं तथा समाज में भी सब लोग उसे सम्मान देते है।

छोटी और हल्की भौंहों वाला जातक शीलवान, सन्तोषी, शान्त स्वभाव का, मितभाषी तथा कुछ दब्बू प्रकृति का होता है। वह सामान्य जीवन व्यतीत करता है।

मोटी तथा घनी भौंहों वाला जातक अपने मन में बड़प्पन का अहंकार रखने वाला, क्रोधी तथा हर समय दूसरों पर अपना प्रभाव जमाने की चेष्टा करने वाला होता है।

सीधी तथा एकदम टेढ़ी भौंहों वाला जातक प्रत्येक दृष्टि से सामान्य होता है।

जिसकी दोनों भौंहें परस्पर मिली हुई हों, वह स्वार्थ-साधक, होशियार, बुद्धिमान, दूसरों के मन की बात जान लेने वाला, दूरदर्शी

तथा अपने मन के भेद को छिपाने वाला होता है। ऐसे व्यक्ति धर्म के विषय में अधिक चिन्ता नही करते।

दोनों भौहें अलग हों, बीच का हिस्सा एकदम खाली हो, भौहों के बाल सामान्य हों तथा वे भोहें ऊपर को उभरी हुई सी दिखाई देती हों तो ऐसा जातक निर्मल हृदय का, स्पष्ट वादी, सबसे स्नेह करने वाला, गंभीर, न्यायी, दयालु, यशस्वी तथा ज्ञानवान होता है।

आंखें

चित्र ४०६—कमल के समान बड़े नेत्रों वाले स्त्री-पुरुष बुद्धिमान गुणवान, दूरदर्शी, यशस्वी, धनी, सुखी, तथा धार्मिक, न्यायी तथा दयालु विचारों के होते है।

श्वेत रंग के नेत्रों वाला जातक शान्त, मधुर भाषी, निष्कपट, विचारवान तथा सबको प्रिय होता है।

लाल रंग की आंखों वाले स्त्री पुरुष स्वाभिमानी, अभिमानी, क्रोधी, स्वार्थी, निष्ठुर, झगडालू, हठी तथा दूसरो पर प्रभाव जमाने की इच्छा रखने वाले होते है।

छोटी आखों वाला जातक विद्या, बुद्धि, विवेक, न्याय आदि में न्यूनता पाने वाला, स्वार्थी तथा मान प्रतिष्ठा में कमी पाने वाला होता है।

जो जातक बात करते समय एक आंख मीच सी लेता हो अथवा जिसकी आंखों की पुतली नीली अथवा भूरी हो, वह मन में छिपाव रखने वाला, पक्षपाती, चतुर, स्वार्थी, दिखावे का सज्जन तथा आडम्बरी होता है।

नाक

चित्र ४०७—लम्बी तथा पुष्ट नाक वाले स्त्री-पुरुष बड़े स्वाभिमानी बात वाले तथा दृढ निश्चयी होते हैं।

यदि नाक अधिक पतली हो तथा बीच में कुछ उठी हुई हो तो ऐसा जातक मिथ्या अहंकारी होता है।

यदि नाक के ऊपर कही गड्ढा हो तो जातक कुछ लजीले स्वभाव का तथा कुछ झूठ बोलकर काम निकालने वाला होता है। वह सत्यासत्य की अधिक चिन्ता नही करता।

यदि नाक के दोनो छेद छोटे हों तो जातक अल्प विद्या तथा अल्प ज्ञान वाला होता है। वह सकुचित विचारों का, स्वार्थी तथा पस्तहिम्मत भी होता है।
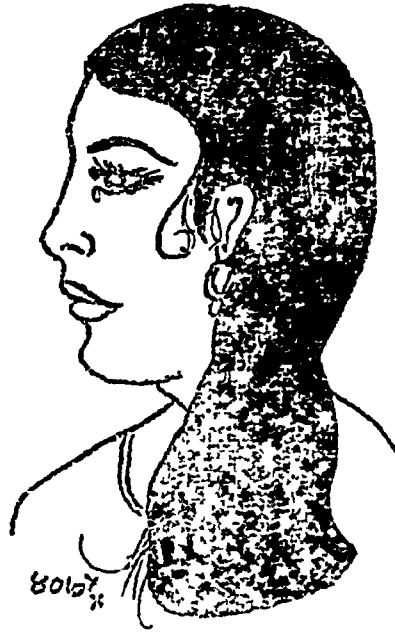
यदि नाक का दायां छिद्र लम्बा तथा नोंकदार हो तो जातक बात का धनी, सामर्थ्यवान परन्तु गृहस्थी के सुख में कुछ कमी पाने वाला होता है।

यदि नाक का बायां छिद्र लम्बा तथा नोंकदार हो तो जातक घर तथा बाहर सर्वत्र सफलता एवं सुख प्राप्त करने वाला होता है।

यदि नाक के दोनों छेद लम्बे तथा नोंकदार हों तो जातक सर्वत्र सम्मान एवं सफलता प्राप्त करने वाला तथा कार्य कुशल होता है।

कान

चित्र ४०८—जिस जातक के कान औसत दर्जे के हों, वह लौकिक व्यवहारों में कुशल तथा उचित अनुचित का ज्ञान रखने वाला होता है॥

वड़े कानों वाला व्यक्ति अल्प बुद्धि वाला होता है, परन्तु वह सतर्क, होशियार, हठी तथा लाभ उठाने में कुशल होता है साथ ही वह स्वय को अन्य लोगों से अधिक बुद्धिमान भी समझता है।

छोटे कानों वाला व्यक्ति जिद्दी, हठी, दब्बू तथा घर और वाहर झझट तथा स्नेह की कमी पाने वाला होता है।

केश

जिस स्त्री-पुरुष के सिर के वाल मुलायम, पतले तथा काले हों, वे सद्गुणी तथा भाग्यवान होते है। उन्हे थोड़े परिश्रम से ही प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त हो जातो है। ऐसे जातक मधुरभाषी सुखो, यशस्वो तथा सर्वत्र आदर, स्नेह, लाभ तथा सम्मान प्राप्त करने वाले होते है।
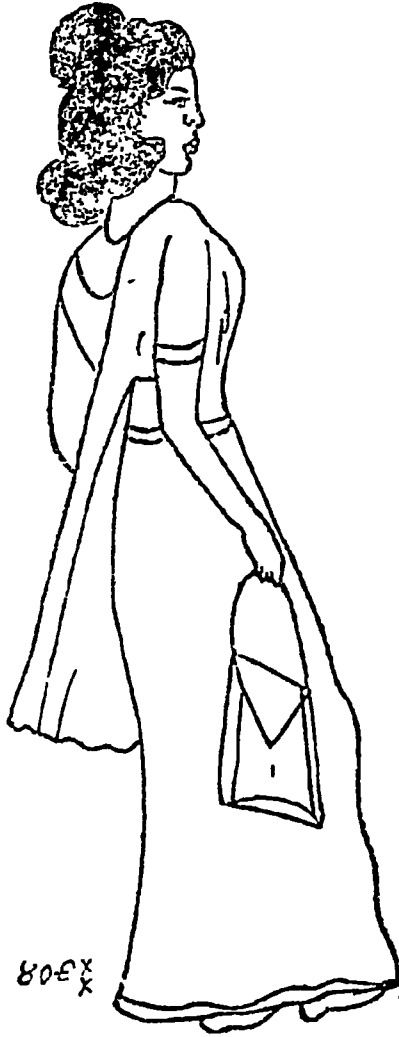
जिन स्त्री-पुरुषों के बाल मोटे तथा कड़े होते हैं, वे कठोर बुद्धि वाले, जिद्दी, लोभी स्वार्थी, भोगी तथा दुःख पाने वाले होते है।

जिन लोगों के कानों के ऊपर बाल होते है, वे अत्यधिक होशियार समझदार, गुणवान, स्वार्थ-साधक, लौकिक कार्य करने में कुशल एवं सर्वत्र यश प्राप्त करने वाले होते है।

ठोड़ी

चित्र ४१०—बिना गड्ढे की लम्बी ठोड़ी वाले व्यक्ति स्थिर विचारों वाले होते है। परन्तु उनके मन में दया और कोमलता कम पाई जाती है। वे नीरस, अहंकारी तथा स्वार्थी होते हैं।

जिनकी ठोड़ी में नीचे की ओर गड्ढा हो, वे लोग दयालु, कोमल हृदय वाले तथा प्रेमी होते है। वे बड़ों के दबाव को इच्छा न रहते हुए मान लेते है तथा सौन्दर्य-प्रिय एवं आनन्दी होते है।

जिनकी ठोड़ी में सामने गड्ढा हो वे विलासी, भोगी, रसिक, मधुरभाषी तथा स्वार्थ-साधक होते हैं। लौकिक सफलता पाने योग्य उनके पास कोई एक विशेष कला भी होती है।

छोटी ठोड़ी वाले व्यक्ति कम सामर्थ्यवान दब्बू तथा सामान्य जीवन व्यतीत करने वाले होते हैं।

शरीर की बनावट

स्त्री-पुरुषों के शरीर की बनावट के सम्बन्ध में नीचे लिखे अनु-सार समझना चाहिए।

लम्बा कद

लम्बे कद वाले स्त्री-पुरुष विवेकशील, गुणी, मधुरभाषी तथा उमंग वाले होते है। वे स्वाभिमानी तथा लापरवाह प्रकृति के होते हैं।

वे मन तथा शरीर की उमंगों को पूरा करने के लिए धर्म-कर्म का विचार भी नहीं करते। स्वार्थ-सिद्धि जिस प्रकार भी हो, वे उसे पूरा करने के लिए हर समय तत्पर बने रहत है।

ऐसे व्यक्ति अपनी स्वतन्त्र इच्छा के अनुसार चलते हैं तथा किसी के दबाव में रहना पसन्द नहीं करते। ये लोग सौन्दर्य के अधिक पारखी नहीं होते।

लम्बे शरीर वाली स्त्रियां मन मौजी तथा कुछ कम पढ़ी-लिखी होती हैं। उन्हें शृंगार-सज्जा से जितना प्रेम होता है, और वे

[लम्बे कद वाली स्त्री]

जितनी आकर्षक दिखाई देती हैं, उतनी बुद्धिमान तथा गुणवान नहीं होती ।

ठिगना कद

चित्र ४१२—ठिगने कद वाले स्त्री-पुरुष में उदारता की कमी होती है । वे अधिक स्वार्थी होते हैं तथा स्वार्थ-सिद्धि के लिए विशेष परिश्रम तथा गुप्त प्रयत्न करते रहते हैं । ऐसे कद वाले व्यक्ति प्रकट में वाणी द्वारा विशेष सज्जनता का प्रदर्शन करते हैं, परन्तु उनकी आन्तरिक भावनाओं को समझ पाना दूसरों के लिए कठिन ही रहता है।

ठिगने कद वाले जातक परिश्रमी तथा मन ही मन चिन्तित बने रहने वाले होते हैं।

सामान्य कद

चित्र ४१३—सामान्य कद वाले स्त्री-पुरुष बहुत आगा-पीछा सोचने वाले, थोड़ी उमग वाला, धर्माधर्म का विचार रखने वाला, लौकिक व्यवहार में कुशल, समयानुसार शक्ति तथा क्रोध का प्रदर्शन करने वाला, मानापमान का ध्यान रखने वाला, परिश्रमी, गुणवान, बुद्धिमान, सज्जन तथा विवेक शील होता है।

सामान्य कद वाले स्त्री-पुरुष अपने प्रत्येक कार्य को नियमित रूप से करते हैं । उनमें आलस्य बिल्कुल नही होता । दया, क्षमा, शान्ति धैर्य आदि सभी सद्गुण उनमें प्रचुर मात्रा में पाये जाते हैं । इसीलिए वे जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफल होते हैं और सर्वत्र उन्हें यश आदर तथा सम्मान की प्राप्ति होती है ।

[ठिगने कद की स्त्री]

[सामान्य कद की स्त्री]

स्थूल-शरीर

मोटे शरीर वाले स्त्री-पुरुष अत्यधिक स्वार्थ-साधक. लापरवाह अधिक भोजन करने वाले, अधिक आराम चाहने वाले, आलसी तथा विनोदी स्वभाव के होते हैं। अपना कार्य निकालने के लिए यदि आवश्यकता हो तो अत्यधिक क्रोध का भी प्रदर्शन करते हैं।

ऐसे व्यक्ति अधिक मुनाफा (लाभ) चाहने वाले, अपने मान-सम्मान का वहुत कम ध्यान रखने वाले, अहभावी लौकिक-सफलताओ को अधिक महत्व देने वाले होते हैं। फलस्वरूप उन्हे लौकिक-सफलताओं के क्षेत्र में सफलता भी मिलती है। ऐसे लोग स्वय तो प्रसन्न रहते ही है दूसरो को प्रसन्न रखने की कला में भी निपुण पाये जाते हैं।

पतला-शरीर

पतले शरीर वाले स्त्री-पुरुष किसी-न-किसी कारणवश चिन्ता-ग्रस्त बने रहते हैं। ऐसे लोग सन्तोषी स्वभाव के होते हैं फलतः लौकिक-सुखों के साधन उन्हें अल्प मात्रा में ही प्राप्त हो जाते हैं।

पतले शरीर वाले जातक स्वाभिमानी तथा हृदय में कुछ क्रोध रखने वाले भी होते है। उन्हें अपने जीवन में सम्मान तथा अपमान दोनो की ही प्राप्ति होती है। ऐसे लोग भाग्य तथा ईश्वर पर विश्वास रखते है। किसी कारण वश मजबूर हो जाने पर ये कपट-पूर्ण कार्य करने में भी पीछे नही रहते। परन्तु सामान्यतः इन्हे कपट छल, फरेब आदि से घृणा होती है।

[स्थूल शरीर वाली स्त्री]

पतने शरीर वाली स्त्री]

शरीर का रंग

गोरे रंग के शरीर वाले स्त्री-पुरुष जीवन के लिए आवश्यक सुविधाओं को सरलता पूर्वक प्राप्त करने वाले, कठिनाइयों को हंसकर झेलने वाले, सुन्दर पदार्थों से प्रेम रखने वाले सरल स्वाभिमानी तथा स्नेही स्वभाव के होते हैं।

काले रंग के शरीर वाले स्त्री-पुरुष धन प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करने वाले गुप्त चालों द्वारा लाभ उठाने वाले दूसरों की उन्नति देखकर कुछ दु.खी होने वाले तथा अपने जीवन में किसी प्रकार की नीरसता अथवा अभाव का अनुभव करने वाले होते हैं। ऐसे व्यक्ति हठी, साहसी, अधिक भोगी तथा धर्म-कर्म की विशेष चिन्ता न करने वाले होते हैं। उन्हें जीवन में कई बार अपमान एवं तिस्कार का सामना भी करना पड़ता है।

सामान्य रंग (गेहुंआ) के शरीर वाले स्त्री-पुरुष सुन्दर तथा श्रेष्ठ कर्म करने वाले, ईश्वर, गुरु, देवता तथा बड़ों की भक्ति करने वाले दूरदर्शी, गुणवान बुद्धिमान, मधुरभाषी, चतुर, ज्ञानी, विलासी, सन्तोषी तथा मानापमान का ध्यान रखने वाले होते हैं। इनका जीवन सामान्यतः सुख-शान्तिपूर्ण व्यतीत होता है।

टिप्पणी—शरीर तथा मुख की आकृति के विषय में आधुनिक विद्वानों के मत का सारांश यहां दे दिया गया है। अन्य अंगों की बनावट के सम्बन्ध में उसी प्रकार समझना चाहिए जैसा कि आरम्भ में बताया जा चुका है।

उपसंहार

सामुद्रिक-विज्ञान अगम-अपार है। सामुद्रिक शास्त्र के अध्ययन एव मनन के अतिरिक्त इस विद्या का सम्यक् रुप से ज्ञान प्राप्त करने के लिए निरन्तर अभ्यास करते रहना आवश्यक है। हजारो-लाखो स्त्री-पुरुषों के शारीरिक-लक्षणों तथा रेखादिको का सूक्ष्म निरीक्षण करने के उपरान्त ही इस विषय की यथार्थ जानकारी प्राप्त की जा सकती है, अतः अंग-परीक्षक तथा हस्त-परीक्षक को चाहिए कि वह इस शास्त्र के एवं मनन के साथ ही निरन्तर अभ्यास तथा शरीर-परीक्षा कार्य में भी संग्लन बना रहे—तभी वह ठीक-ठीक फलदेश कर पाने में समर्थ हो सकेगा।

ग्रंथकर्त्ता का संक्षिप्त-परिचय

मूल निकास-स्थान	:	महावन (जिला मथुरा)
पूर्वजो का निवास स्थान	:	हिरनगऊ (जिला आगरा)
पैतृक निवास स्थान	:	फरिहा (जिला मैनपुरी)
वर्तमान निवास स्थान	:	महोली की पौर, मथुरा
जन्म स्थान	:	कलकत्ता
जन्म तिथि	:	द्वितीय श्रावन कृष्णा अष्टमी गुरुवार, सं० १९८५ वि०

गोत्र : वशिष्ठ अल्ल : दीक्षित ब्राह्मण : सनाढ्य

वंश वृक्ष

पं० मोहकम सिंह दीक्षित
|
पं० धर्मजित् दीक्षित
|
पं० गोकलचन्द्र दीक्षित
|
पं० युगल किशोर दीक्षित
|
पं० सेवाराम दीक्षित — पं० गोविन्द प्रसाद दीक्षित — पं० जोधसिंह दीक्षित

पं० गोविन्द प्रसाद दीक्षित
|
राजेश दीक्षित — भूपेन्द्र दीक्षित — महेन्द्र दीक्षित

राजेश दीक्षित
|
नरेन्द्र दीक्षित — सुरेन्द्र दीक्षित — ज्ञानेन्द्र दीक्षित — हेमेन्द्र दीक्षित

नरेन्द्र दीक्षित
|
शैलेन्द्र दीक्षित

व्यवसाय: काव्य-सृजन ग्रंथ-लेखन, पत्रकारिता।

अब तक ७०० से अधिक पुस्तकें प्रकाशित।